Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

G. K. V.
Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110516

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

110516

गाथाओं के मधुर गायक

वह चाहता तो सत्ता हथिया सकता था

1988
JAN-JUN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशनी हो तो ऐसी

बजाज बल्ब का कांच-खोल पूरी तरह ... है ताकि वह ऊपरी ... से जुड़ा रहे. इसके ... के ... अचानक खराब हो जाने का ... खतरा नहीं. दरअसल हर बजाज बल्ब को क्वालिटी की ... कसौटियों पर खरा उतरना पड़ता है जिसमें ऊपरी टोपी की मजबूती की जांच के लिए टॉर्शन-टेस्ट भी शामिल है.

जब भी बल्बों की बात चलती है, उनकी क्वालिटी, मजबूती और विश्वसनीयता की एक ... गारंटी कौन है—बजाज का नाम

बजाज बल्ब

कम खर्च में चलते ज़्यादा

bajaj group

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध श्रृंखला

पुस्तक महल की 20 पुस्तकों का एक अनूठा प्रोजेक्ट

मूल्य: 12/- प्रत्येक
डाकखर्च: 3/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

- प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री
- प्रत्येक पुस्तक नैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित
- सरस कथा शैली
- फोटोटाइप सैट
- बढ़िया कागज पर आफसैट छपाई

इस श्रृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र **'मिनि एनसाइक्लोपीडिया'** है।

'रोमांचक कारनामे' में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो 'खोजें' में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। 'अनसुलझे रहस्य' में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेत तथा रक्त पिलाने व शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं।

इस श्रृंखला की प्रस्तावित पुस्तकें:

विश्व-प्रसिद्ध.....

1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामें 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व (दो भागों में) 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स (दो भागों में) 9. वैज्ञानिक 10. विनाश-लीलाएं 11. जासूस 12. गुप्तचर संस्थाएं 13. खजाने 14. सभ्यताएं 15. राजनैतिक स्कैंडल 16. खोजी यात्राएं 17. बैंक डकैतियां 18. लूटपाट राजा 19. प्रेम-प्रसंग 20. क्रांतियां

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी पी पी द्वारा मंगाने का पता:

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

पुस्तक महल, 4697/3, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली बचत का अर्थ है बिजली का उत्पादन

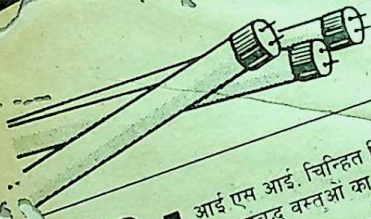

- ट्यूबलाइट का प्रयोग करें। इसके प्रयोग से बिजली कम खर्च होती है तथा रोशनी अधिक होती है।
- आई एस आई. चिन्हित विद्युत उपकरणों तथा अन्य संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करें।

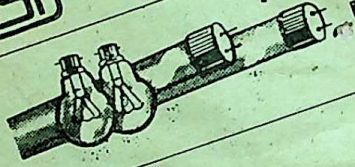

- ट्यूब तथा लैम्प को साफ रखें।

- अपने रेफ्रीजरेटर के दरवाजे को यथाशीघ्र बन्द करें।

- आवश्यकता न होने पर सभी विद्युत उपकरणों को तुरन्त बन्द कर दें।
- कमरा छोड़ते समय बत्तियों, पंखों तथा वातानुकूलनों को बन्द कर दें।

विद्युत विभाग
ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली-110 001 द्वारा जारी

davp 87/231

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांतों का रोग जिनको सताये उनके लिये है घरेलू उपाय

एम डी एच

दंत मंजन

लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी प्रा. लि.
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली 110015, फोन : 537931, 537341 539608

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

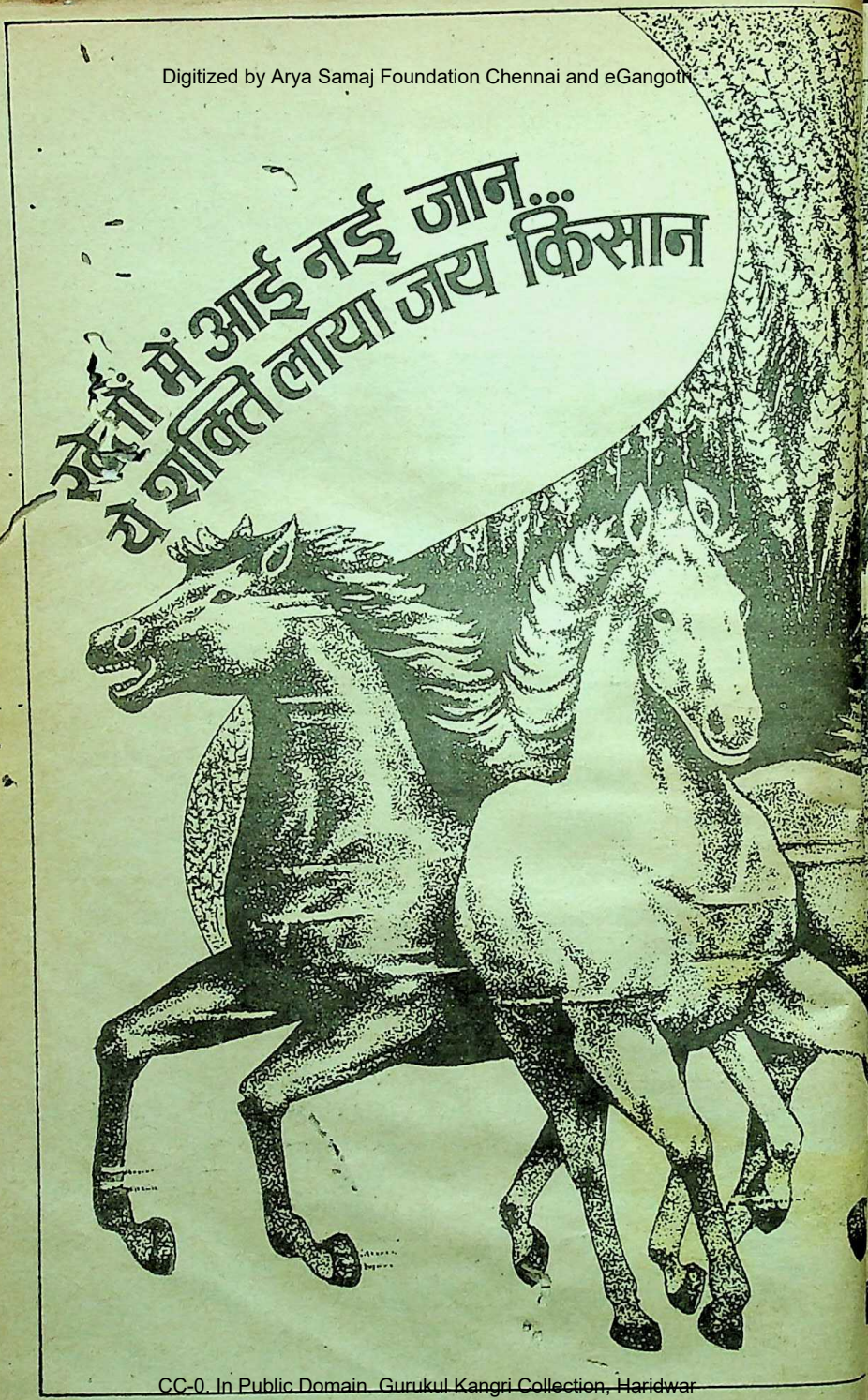

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोषक तत्त्वों की अधिकतम मात्रा वाली जय किसान खादें खुशहाली का झंडा फहरा रही हैं. यही है जय किसान का पावर जो आपको दिलाए ज़्यादा पैदावार... आपकी मेहनत का पूरा-पूरा फल.

आधुनिक तकनीक से बनी जय किसान खादें मिलने का स्थान, जुआरी की पीली दुकान.

जय किसान सम्राट : १८ : ४६ : ०
शुरू की अवस्था में ज़रूरी फ़ॉस्फ़ेट से भरपूर--मज़बूत जड़ों के लिए, भरे-भरे दानों के लिए.

जय किसान यूरिया : ४६ % शुद्ध, सफ़ेद, दानेदार, नाइट्रोजन शक्ति से भरपूर सबसे कम बायुरेट वाली खाद. मिट्टी पर बुरकने और पत्तियों पर ऊपरी छिड़काव के लिए उत्तम.

JAI KISAAN

LINTAS ZUA P 158 1723 Hf

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **कृतविद्य**—क. कुशल, ख. विद्वान, ग. पूर्ण, घ. प्रकट।

२. **अनवधान**—क. अव्यवस्थित, ख. मिथ्या, ग. असावधान, घ. डरपोक।

३. **अनीर्षु**—क. अकेला, ख. जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो, ग. दयालु, घ. जो ईर्ष्या न करता हो।

४. **अविहित**—क. अनुचित, ख. जिसका विधान न किया गया हो, ग. उलटा-पलटा, घ. अविवाहित।

५. **अनाश्वास**—क. आश्वासन के बिना, ख. अविश्वसनीय, ग. बिना सांस लिये, घ. निश्चेष्ट।

६. **सिद्धकाम**—क. सफल, ख. जिसकी कामनाएं पूरी हो गयी हों, ग. चमत्कारी व्यक्ति, घ. विरक्त।

७. **स्वैरकथा**—क. मिथ्या वार्त्ता, ख. स्वच्छंद वार्त्तालाप, ग. अनहोनी बात, घ. नीरस बातचीत।

८. **अतिरंजित**—क. बढ़ाचढ़ाकर पेश की गयी, ख. बहुत सुंदर, ग. सरस, घ. नितांत असत्य।

९. **अंतर्भाव**—क. इच्छा, ख. भेद, ग. आशय, घ. छिपी बात।

१०. **अकलुष**—क. अकेला, ख. स्वच्छ, ग. सच्चा, घ. वीर।

११. **प्रसुप्त**—क. दबा हुआ, ख. आलस में पड़ा, ग. गहरी नींद में सोया हुआ, घ. जिसे नींद न आती हो।

१२. **पाठभेद**—क. पढ़ने के ढंग में फर्क, ख. बोलने का अलग ढंग, ग. मूल रचना की विभिन्न प्रतिलिपियों में अंतर, घ. उच्चारण में भेद।

उत्तर

१. ख. विद्वान, पंडित। अनथक अध्ययन-मनन के फलस्वरूप वह **कृतविद्य** हुआ है।

२. ग. असावधान, लापरवाह। **अनवधान** रहने से कार्य सिद्ध नहीं होता। (संज्ञा—**अनवधानता**)

३. घ. जो ईर्ष्या न करता हो। जो स्वार्थी है वह **अनीर्षु** कैसे हो सकता है?

४. ख. जिसका विधान न किया गया हो, शास्त्र के विरुद्ध। **अविहित** कार्यों का परित्याग ही उचित है।

५. ग. बिना सांस लिये, बिना विश्राम किये। वह **अनाश्वास** अपने कार्य में संलग्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. ख. जिसकी कामनाएं पूरी हो गयी हों। इस संसार में **सिद्धकाम** व्यक्ति विरले ही होंगे।

७. ख. स्वच्छंद वार्त्तालाप, व्यर्थ बातचीत। तुम्हारी **स्वैरकथा** का कोई अंत ही नहीं है।

८. क. बढ़ाचढ़ाकर पेश की गयी, अतिशयोक्तिपूर्ण। यह सारी गाथा **अतिरंजित** है।

९. ग. आशय, मन का भाव। वार्त्ताकार के **अंतर्भाव** को ग्रहण करना चाहिए।

१०. ख. स्वच्छ, बिना दाग का, निर्दोष। उसका जीवन **अकलुष** है।

११. ग. गहरी नींद में सोया हुआ। हमारा देश कभी इतना **प्रसुप्त** नहीं रहा कि उसे आजादी की तड़प महसूस न हुई हो।

१२. ग. मूल रचना की विभिन्न प्रतिलिपियों में अंतर (शब्द, वाक्य आदि में)। कुछ प्राचीन ग्रंथों के विभिन्न संस्करणों में **पाठभेद** मिलता है।

पारिभाषिक शब्द

प्रोफार्मा =प्रपत्र/निदर्शन-पत्र
सब्सटैंटिव =मौलिक/मूल
सब्सटैंशल =सार रूप में
अप्रैंटिस =प्रशिक्षु
ट्रेन्ड =प्रशिक्षित
रिप्रेजेंटेशन =प्रतिनिधित्व
डेलीगेशन =प्रत्यायोजन
रेमिशन =परिहार/माफी
रिबेट =छूट
ग्रेस-मार्क =कृपांक

समस्या पूर्ति— १०२

जड़ हो गया

प्रथम पुरस्कार

श्रवण रंध्र पर आज गूंजती
जन-गण मन की आहें
प्रिय सितार के तार
करूं क्या ? कर ही
जड़ हो गया

—रामलखन सिंह परिहार

४५ ए ब्लाक
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रोद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर-२०८००२

द्वितीय पुरस्कार

कर्मठ हाथों में सजता था
सुमधुर कितना बजता था
तेरे हाथ में आकर, क्या हो गया
कितना चेतन था, जड़ हो गया

—डॉ. आशा श्रीवास्तव

द्वारा रमाकांत श्रीवास्तव
नलकूप कालोनी, सुपर बाजार
होशंगाबाद (म.प्र.)

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

सादगी में ही ईश्वर है

राबिया नाम की एक बहुत बड़ी संत थीं। हमेशा अल्लाह का नाम ही उनकी जुबान पर रहता था। वे बहुत सादगीभरा जीवन व्यतीत करती थीं। उनकी कुटिया में संतों का आना-जाना अकसर लगा रहता था और धार्मिक चर्चाएं करना उनका प्रतिदिन का नियम-सा था।

एक दिन एक संत आया। उसने रात को वहीं विश्राम करना चाहा। उसने देखा, रात को राबिया ने अपने सोने के लिए एक टाट बिछाया और तकिये के स्थान पर एक बड़ी-सी ईंट रख ली। उसने 'अल्लाह' का नाम लिया और थोड़ी ही देर में गहरी निद्रा में लीन हो गयी।

संत को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, यह तपस्विनी कितनी महान है। इसकी जिंदगी कितनी सादगी भरी है। इतने ऊंचे दर्जे की संत है, लेकिन कितना कठोर जीवन जीती है।

इसी चिंतन में वह रातभर सो नहीं सका। प्रातःकाल उठकर उसने राबिया से सवाल किया, "आप इतनी तकलीफभरा जीवन क्यों जी रही हैं ?"

"कैसा तकलीफभरा जीवन, मैं समझी नहीं ?" रात में संत ने जो देखा था और उसकी जो प्रतिक्रिया हुई उसने उसे सब बता दिया। उसने उससे कहा, "मेरे कई धनी दोस्त हैं, वे आपकी मदद कर सकते हैं और आपको एक अच्छा बिस्तर भिजवा सकते हैं। ताकि आपको आराम हो जाए।"

राबिया ने उसको जवाब दिया, "तुम्हारे मन में मेरे लिए इतनी हमदर्दी है, इसके लिए धन्यवाद। लेकिन एक बात का मुझे जवाब दो, मुझे और अमीरों को देनेवाला क्या एक नहीं है ?

संत ने सकुचाते हुए कहा, "जी हां, एक ही है।" "तो फिर", राबिया ने आगे कहा, "क्या वह हमें भूल गया और पैसेवालों की उसे याद रही। अगर उसे हम याद नहीं आते तो हम उसे याद भी क्यों दिलाएं ? मुझे अपना यही हाल पसंद है, क्योंकि उसे भी यही पसंद है।"

संत ने उस महिला संत के आगे सिर झुका दिया।

—राजशेखर

विनम्रता सबसे बड़ा गुण

एक राजकुमार बहुत घमंडी और उद्दंड प्रवृत्ति का था। वह हमेशा लोगों के साथ दुर्व्यवहार ही करता था। उसके राज्य के लोग उसके इस अपमानजनक और कठोर व्यवहार से बहुत परेशान थे। यह बात किसी तरह महात्मा बुद्ध के पास पहुंची उन्होंने राजा से भेंट करनी चाही। विवश होकर राजा को महात्मा बुद्ध से मिलना पड़ा। राजा स्वयं भी अपने राजकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी की कहानी 'अंतर्द्वंद्व' विशेष रूप से पसंद आयी।

— एल. सी. दूलहानी, रायपुर

'कादम्बिनी' के नवम्बर अंक में 'रोशनी का घेरा' शीर्षक से जापानी आख्यान पढ़ा। कहानी में उल्लिखित 'ताइरा क्लान' सेनापति का नाम नहीं है। क्लान अंगरेजी में वंश या कबीले के लिए प्रयुक्त होता है और 'ताइरा' जापान के इतिहास में एक सुप्रसिद्ध कुल का नाम था, जिसके वंशज सेनापति हुआ करते थे।

इसी प्रकार 'डेनोरा' भी जापानी उच्चारण नहीं है। शब्द है 'दान-नो-उरा'।

ताइरा वंश का प्रादुर्भाव आठवीं शताब्दी में हुआ। ११-१२वीं शताब्दी में जापान की राज-सत्ता पर ताइरा वंश का गहरा प्रभुत्व रहा। यह वंश 'हेइके' भी कहलाता है। अंततः दान-नो-उरा नामक स्थान पर मिनामोतो वंश के योद्धाओं द्वारा पूर्ण पराभव के पश्चात यह वंश नामशेष हो गया। 'हेइके मोनोगातारि' नामक उपन्यास की कथा इसी युद्ध पर आधारित है। ताइरा सेनाओं की मृत-आत्माओं के भूत-प्रेत बनने की कथाएं इसके बाद की ही हो सकती है।

जापान के पौराणिक साहित्य का निर्माण इससे पूर्व हो चुका था। जापान का पौराणिक इतिहास कोजिकि और निहोन-शोकि में वर्णित है।

—डॉ. सत्यभूषण वर्मा, नयी दिल्ली

अक्तूबर अंक में 'ख्याल गायन का दरबारीकरण' विद्वत्तापूर्ण लेख पढ़ा। किंतु लेखक ने जो दो सुझाव संगीत को आम आदमी तक पहुंचाने हेतु दिये, उनकी सफलता पर संदेह है। यानी १. कविता पक्ष पर जोर तथा २. ख्याल गायन में समय की सीमा।

ख्याल किसी राग में गाया जाता है, जिसकी उत्पत्ति थाट से होती है। थाट व राग स्वर समूह से ही पहचाने जाते हैं, न कि बंदिश से। अतः कविता पक्ष से पहला स्थान स्वरों का है। स्वर-प्रधान होने के कारण ही संगीत वाद्यों में भी सुरीला लगता है। तराने भी, जिनमें कविता नहीं होती, मधुर लगते हैं, यह सच्चे स्वर लगाने का प्रभाव है। ध्रुपद, धमार, गजल आदि जो शब्द प्रधान हैं, उन्हें वाद्यों में बजाने की चलन नहीं के बराबर है। ख्याल गायकी कल्पना का स्वरों में विस्तार है, उसमें अलंकार, सरस तानें आदि विचित्र आनंद देती हैं। शास्त्रीय संगीत चाहे कितना भी अल्प समय तक गाया जाए, उसका आनंद लेने हेतु संगीत का थोड़ा-बहुत ज्ञान आवश्यक है। वरना आलाप, ध्रुपद-अंग व ख्याल-अंग का रस नहीं लिया जा सकता है। समय का बंधन (पंद्रह मिनट) सहायतार्थ होगा, इसमें संदेह है।

सिने-संगीत में भी जो गाने शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं, अधिक मधुर लगते हैं। यह स्वरों का ही प्रभाव है। कविता पक्ष पर अधिक जोर देने पर तो संगीत तरन्नुम से गाये कविता-पाठ की तरह होगा, तथा स्वर में प्रधानता देने से ही संगीत अधिक रसयुक्त होता है। स्वरों से ही राग का रूप निखरता है। व ख्याल गायकी में स्वरों के विस्तार में कल्पना भी महत्त्व रखती है।

— गौरीशंकर तिवारी, नैनीताल

अक्तूबर अंक में डॉ. मनोहर प्रभाकर का लेख 'गाथाः राजस्थान के यशगायकों की' पढ़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीर्ति-गाथा गायकों की श्रेणी में सेवग जाति का उल्लेख किया गया है, सेवग शाकद्वीपी ब्राह्मण हैं, जो अति प्राचीन जाति है, जिनकी श्रेष्ठता का उल्लेख वेद, पुराणों, महाभारत में किया गया है। राजस्थान में शाकद्वीपीय ब्राह्मणों को सेवग व भोजक के नाम से जाना जाता है। इस बात का उल्लेख कर्नल टॉड-जैसे विदेशी इतिहासकार ने अपने प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ— 'राजस्थान का इतिहास' में किया है। दो हजार वर्ष पूर्व जैसलमेर की ओर पंवार (प्रभार) राजा देवसेन ने यज्ञ करवाने हेतु भोजकों में से सोलह ब्राह्मणों को बुलाकर यज्ञ संपन्न करवाया तथा भोजगां नामक ग्राम आबाद कर इन्हें प्रदान किया, जो जैसलमेर से इक्कीस किलो मीटर दूर स्थित है। इसी संदर्भ में 'वेश्य-कल्पद्रुम' में उल्लेख है कि यदुवंश के नष्ट होने के कारण वे मारवाड़ में यज्ञ हेतु लाये गये। जैनाचार्य श्री रत्नप्रभु सूरिजी द्वारा ऊपलदेव को जैन धर्म की दीक्षा दी गयी थी। तब भी विद्वान होने के कारण इनका सम्मान हुआ। ये जैन समुदाय के वैश्यों के आश्रित गायक नहीं, उनके गुरु थे, जिनका पालन करना जैन समुदाय का कर्तव्य था। बीकानेर के स्वर्गीय महाराजा गंगा सिंह जी के समय ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को लेकर उठे विवाद में भी इनकी महानता को महाराजा गंगा सिंह जी द्वारा स्वीकार कर इन्हें सम्मानित किया गया था। वर्तमान राजस्थान में ये डॉक्टर, न्यायाधीश, शिक्षाविद्, व्यवसायी एवं राजनेता हैं।

— न. म. पांडे, जयपुर

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये: मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये!!!

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है।

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोट:- कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर हैं, अमृतसर के डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगीयों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखे।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-2

'कादम्बिनी' के नवम्बर विशेषांक की प्रशंसा में हमें निम्नलिखित पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूसुफ खां 'गांधी' तामियां, पातालकोट (म.प्र.); आनंद प्रसाद स्वदेशी, पटना; कृष्णदेव तिवारी, वापी; प्रवीण कुमार शर्मा, मंदसौर; कुसुमकांत त्रिवेदी, बरेली; रामनारायण श्रीवास्तव, कोटा।

'कादम्बिनी' का अगस्त अंक अनायास हाथ लग गया। उसमें 'काल-चिंतन' के अंतर्गत नर्क में महर्षि की बात पढ़कर, आनंद आ गया। इसी 'काल-चिंतन' में स्वर्ग-नर्क की बात पढ़कर कहीं पढ़ा एक किस्सा याद आ गया। किस्सा यों था—

स्वर्ग और नर्क के बीच की दीवार को नर्कवासियों ने खोखला कर थोड़ी जगह बना ली थी। स्वर्गवासियों को लगा कि कहीं नर्कवासी चुपके से स्वर्ग में न घुस आएं। उन्होंने नर्कवासियों को डराया-धमकाया और कहा कि इस अवैध रास्ते को बंद कर दो। पर नर्कवासियों ने अनसुनी कर दी। तब एक स्वर्गवासी ने कहा कि हम तुम्हारी शिकायत ब्रह्माजी से करने जा रहे हैं। इस पर नर्कवासी ठहाका मारकर हंस पड़े। 'क्या कहा, शिकायत करोगे ? कर लो शिकायत ! आप लोग हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। सारे वकील हमारी तरफ हैं। स्वर्ग में एक भी वकील नहीं। तुम शिकायत करके क्या बिगाड़ लोगे।'

मेरा ख्याल है, अगस्त अंक का 'काल-चिंतन' पढ़कर वकील अवश्य प्रसन्न हुए होंगे। एक बात और उपरोक्त किस्सा मात्र मनोरंजन के लिए है। वकीलों की मानहानि या अनादर करने का कतई उद्देश्य नहीं है।

— श्यामकृष्ण, कानपुर

आगामी अंक में

- बोलियों के नाम पर भारत को तोड़ने की साजिश
- हिंदी को यहीं रहना है।
- सिंधु-मुद्राओं में यह कौन-सी भाषा छिपी है !
- जहां मछली मारने का पनकौए करते हैं
- प्रतिशोध के शिकार दो मंदिर
- ये अंखियां थक गयीं पंथ निहार
- किसे पसंद नहीं है सौंदर्य और आकर्षण
- दुगड्डा अंचल : क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का प्रशिक्षण-स्थल

यही नहीं और भी कई रोचक-ज्ञानवर्धक लेख, मर्मस्पर्शी कहानियां— भावभीनी कविताएं और सभी लोकप्रिय स्तंभ

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष २८, अंक ३ जनवरी १९८८

कादम्बिनी

आकल्यं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

नवीन पंत
स्थायित्व के लिए संघर्ष २२

रंजन जैदी
मुगल शासनकाल में नव-वर्ष २८

अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र
वह सत्ता हथिया सकता था ४२

डॉ. राकेश कुमार अग्रवाल
अहिच्छत्र के भग्नावशेष ४९

गिरीश भंडारी
संघर्ष सुप्रीम कोर्ट और ५६

महाभारत से
मंत्री कैसा होना चाहिए ६०

डॉ. दिवाकर शास्त्री
विनम्रता पराक्रम का आभूषण ६४

प्रेरणा शर्मा
प्रेमगाथाओं के गायक ६८

डॉ. श्रीराम परिहार
रात की स्लेट पर चंद्र-कविता ८०

रणबीर सिंह
सुपरनोवा ८६

डॉ. एच. एन. मिश्र
उन्हें विरासत में ९४

आनंद गुप्त
बधाई कार्ड नव-वर्ष के ११०

भुवनेश चंद्र शुक्ल
क्या आप खीजते हैं ११२

राम गुप्ता
छत्तीसगढ़ में हर दिन एक त्यौहार ११८

सुरेंद्र मोहन मिश्र
भास्कराचार्य की लीलावती १२२

कमोडोर रेवती रमण
मुगलों की खामखयालियां १२६

पुष्पा सक्सेना
अलविदा ऑलबनी १३४

पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी
पंजाब के झगड़ों का १५६

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य— ८, समस्या पूर्ति— ९, आस्था के आयाम— १०, ज्ञान-गंगा— ११, प्रतिक्रियाएं— १२, काल-चिंतन— १८, वचन-वीथी— ५९, विधि-विधान— ९०, बुद्धि-विलास— १०१, दस्तक— ११६, इनके भी क्यां जुदा-जुदा— १२५, आइए चलें जंगल की ओर— १५४, ज्योतिष समस्या और समाधान— १६७, तनाव से मुक्ति— १७०, प्रवेश— १७२, यह महीना और आपका भविष्य— १७४, हंसिकाएं— १९४, घरेलू उपचार— १९५, नयी कृतियां— १९६, और अंत में— १९८

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

गंगाप्रसाद विमल
बंद दरवाजे के पीछे ३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

रेखा धींगड़ा
वृक्ष से बना मानव..... ७५
कर्तार सिंह दुग्गल
प्लेटो ७६
कांति देव
संरक्षक..... १०२
वसंत वन्हाडपांडे
अग्निकांड..... १४०
अजीज नेसिन
गड़रिया और भेड़ें..... १६२

कविताएं

मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'
न बंधन जहां..... ५५
लीना मल्होत्रा
मैं अस्पृश्य..... ५५
अनिल तिवारी/ ब्रह्मदेव
ये भी सच है/ उनींदी आंखें..... ८९
..... ८९
यश कालड़ा/उषा महाजन
अपूर्ण/कैद..... १५२
कांता डोगरा/अरुणा पांडे
न जाने क्यों ?/अक्षम्य अपराध..... १५३
भुवनेश्वरी देवी
उचटती-सी जिंदगी..... १५३

सार-संक्षेप

विनय जीवन घोष
मिदनापुर के मजिस्ट्रेट..... १७९

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक :
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—
'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि.
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

आवरण : धर्मवीर जयनर (युक्ती)
आनंद आचार्य (ऊंट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलम-चेतन

—गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां !

—गंगा की लहरें !

—महासागर के अतल में पहुंचती आवाजें !

—नहीं. . . नहीं. . . हमने गुलाब की पंखुड़ियां नहीं दीं, अपनी आंखों की पलकें बिछा दी हैं !

□

—हमारे घर मेहमान आये हैं । आये हैं तो हमारी संस्कृति कहती है : हम कहें भगवान आये हैं ।

—मेहमान हों या भगवान आंखों की इतनी पलकें तोड़कर कौन देगा कि वे गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां बन जाएं ।बन भी जाएं तो इतने गुलाब कौन उजाड़ना चाहेगा कि बंजर होती यह धरती सौंदर्य के प्रतीक की भी मुहताज हो जाए ।

□

—सूखे और अकाल की चपेट ने हमें आ घेरा है । इस बेहाल मौसम में जो कुछ सम्हालकर रख सकते हैं हम, रखें, एक फूल ही क्यों न हो ।

□

—जीवन का अंतिम वरण मृत्यु है । शेष होती सांसें और चेतना खोती अपनी जीवनी शक्ति यदि एक फूल ही देख ले, तो वह वैतरणी का काम करेगा ।

—सौंदर्य मनुष्य-जीवन की चेतना रही है ।

—सौंदर्य के बिना न प्रेम है, न रागात्मकता और दोनों को हटा दें तो शेष बचेगा रेगिस्तान ।

—जीवन का प्रथम पृष्ठ हमने पुष्पद्वारों और अभिनय गीतों से खोला था, अंतिम चरण को चेतना-विहीन होते हुए भी पुष्पों से विदा दी जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों में आंसू हों तो भी हमें फूलों में सहेजा जाता है। आखिर क्यों ?

- जिंदगी कभी समतल नहीं होती
- दुख और दर्द आते ही थूं चले जाते हैं, जैसे चीनी का टुकड़ा कहीं पड़ा हो तो दूर छिपे चींटि भी उसे सूंघ लेते हैं और आकर घेर लेते हैं
- हर अच्छाई और ईमानदारी का प्रतिफल कलंक के किसी प्रतीक से ही मिलता है
- पुण्य करते रहिए, भला हो भूल जाइए; याद रखेंगे तो पुण्य घुन की तरह पनपेगा।
- आत्मीयता की खोज में किस क्षण टूटन और घुटन मिले नहीं जानते हम
- इस क्षण के परम आत्मीयजन दूसरे क्षण शत्रुता की अंतिम सीमा तक पहुंच सकते हैं

—ये सब एक क्रूर इतिहास के पृष्ठ हैं। इन्हें झेलना हमारी नियति है।

—नियति को स्वीकार कर लें तो दर्द से बच जाएंगे।

—नियति का स्वीकार्य ही हमें प्रथम और अंतिम सौंदर्यबोध की ओर प्रेरित करता है।

—सौंदर्य का सत्य पुष्पों से अधिक बोधकारक नहीं हो सकता।

□

—बचाकर रखें हम इस सत्य को, न खेलें फूलों से हमेशा और न नष्ट होने दें अपने सांस्कृतिक उपादानों को। सहेजें कि हमारी नेत्र-चेतना के ये अविचल आस्थावान और स्थिर केंद्र बिंदु बने रहें।

—स्वागत के लिए हमारी करबद्ध मुद्राएं पर्याप्त हैं। स्वागत के द्वार हृदय के भीतर होते हैं, प्रदर्शन में नहीं।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—विश्व शांतिमय नहीं है।

—शीत का कुहरा, ग्रीष्म का बवंडर और रसमय वर्षा के बीच तूफानों के आवेग जिस तरह हमें और हमारी धरती को निरंतर कुचलते रहते हैं, उसी तरह हर बड़ी आंख छोटी आंख पर आक्रामक है।

—भयग्रस्त है विश्व

—विनाश के प्रद्विद्वी मानव-चेतना को शांति के क्षणों से वंचित रखते हैं

—तिमिर की तरह आच्छादित हैं हमारे मन और प्राण। उलझे हैं मकड़ी के जाले में हमारे मन और प्राण। प्रतीक्षा है छटपटाहट भरी कि कब मकड़ा आएगा और तन्मयता से चूसेगा हमें, कि हम भयाक्रांत हैं, वह निश्चिंत क्योंकि उसने उलझा लिया है अपने जाल में पहले ही बुरी तरह

—कितना सुखद हो कि साक्षरता के नाम पर अखबारों की सुर्खियां प्रतिदिन सुबह हमें पढ़ने न मिलें।

—गांव हैं, कस्बे हैं, शहर हैं, महानगर भी, जहां साक्षरता के अक्षर बोध प्रतिबिंबित नहीं होते, दिन शांत और सुखमय बीतता है।

—साक्षरता और ज्ञान का विकास मानसिक चेतना के लिए हुआ है।

—ज्ञान नये कल्याणमय विश्व की रचना के लिए है।

—हमारे सृजनकर्त्ताओं ने इसी दृष्टि से महान साहित्य की रचना की है। जिस साहित्य में यदि ज्योति नहीं रही वह समय की चट्टानों से पिसकर वहीं समाप्त हो गया है।

—पिसा हुआ साहित्य अंधकार है, प्रकाश के द्वार तक वह कभी पहुंचा ही नहीं।

—प्रकाश के द्वार तक जो कुछ पहुंचा है रसमय है, प्रेरक है, शांति का संदेहक है और हमारे ज्ञान चक्षुओं का परमश्रेष्ठ भोजन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110516
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

—इसी श्रेष्ठ भोजन से हमारा पोषण होता है और शरीर में रक्त संचार जो हमारी शारीरिक क्षमता का प्रतीक बनता है।

□

—तब सार्थक क्या है : निश्चय ही प्रकाश, ज्ञान, शांति और कल्याण-ज्योति।

—सार्थक वह सब है जो हमारे आकर्षण की परिधि रेखा में आता है : यानी सौंदर्य और प्रेम।

—प्रेम अनश्वर और स्थिर तत्व है।

—प्रेम की सदाशयता से शांति को जन्म मिलता है।

—शांति व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

—प्रभामंडल से आच्छादित व्यक्तित्व समाजग्राही होता है।

—समाज को जिसकी पहचान मिल जाए भाग्य का मधुमेह आपूरित छत्ता उसकी मुट्ठियों में होता है।

□

—क्षमताशील बनकर स्वतंत्र पहचान रखना है, तो व्यर्थ आडंबरों को तोड़ना होगा।

—गुलाब की पंखुड़ियों और आंखों की पलकों को हीरे की तरह सहेजकर रखिए : एक के जाने से सौंदर्य नष्ट होता है, दूसरा ज्योति ले जाता है।

—सौंदर्य और ज्योति : दोनों न रहेंगी तो जीवित चलता हुआ शव शेष होगा जो धरती पर सबसे बड़ा भार बनता है।

—आइए, नये वर्ष में परंपराएं बदलें हम और जिस धरती पर रहते हैं उस पर भार न बनें।

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

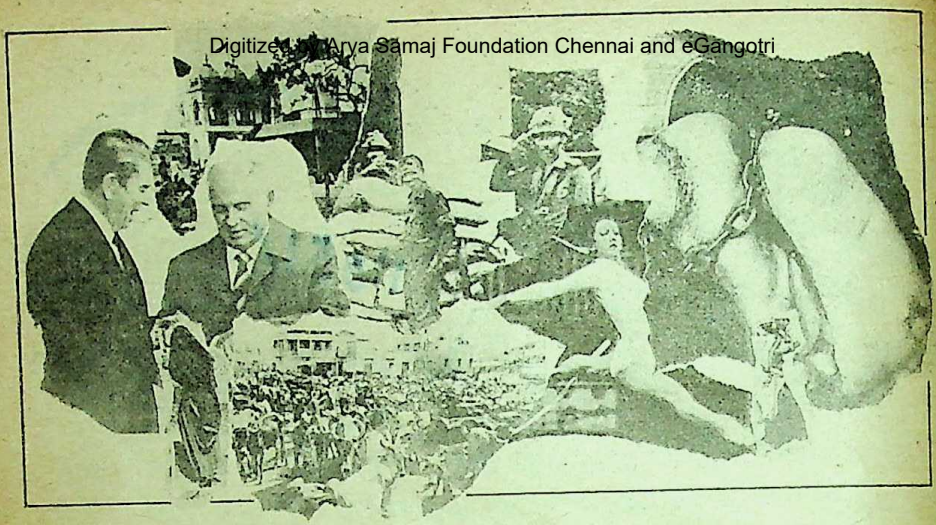

स्थायित्व के लिए संघर्ष— अगला वर्ष

● नवीन पंत

लोकतंत्र में निर्वाचित सभी सरकारें हमेशा सत्ता में बनी रहना चाहती हैं। इसके विपरीत विपक्षी दल सत्तारूढ़ पार्टी को जल्दी से जल्दी सत्ता से हटाकर स्वयं सत्ता पर काबिज होना चाहते हैं। जनता कभी एक दल को और कभी दूसरे दल को सत्ता में भेजकर अपनी निर्णायक भूमिका अदा करती है।

सामान्यतः निर्वाचित सरकारें सत्ता में आने के बाद अपनी निर्धारित अवधि अथवा बहुमत समाप्त होने तक सत्ता में बनी रहती हैं। कभी-कभी सत्तारूढ़ दल का नेता अपनी अवधि समाप्ति से पहले जनादेश प्राप्त करने के लिए मध्यावधि चुनाव भी कराता है। मध्यावधि चुनाव संसद में अपना बहुमत बढ़ाने अथवा नये कार्यक्रमों पर जनता का आदेश प्राप्त करने के लिए कराया जाता है। साठ के दशक में श्रीमती गांधी ने संसद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के लिए मध्यावधि चुनाव कराया था। पिछले वर्ष जून में इंगलैंड की प्रधानमंत्री श्रीमती थैचर ने संसद में पर्याप्त बहुमत रहते हुए दो वर्ष पहले चुनाव कराया था। सन १९७९ में चौधरी चरण सिंह ने संसद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के लिए चुनाव कराया था। जहां श्रीमती गांधी और श्रीमती थैचर पर जनता ने फिर से अपना विश्वास व्यक्त किया वहीं, सन १९७९ में चौधरी चरण सिंह को जनता ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले वर्ष भारत और विश्व के अनेक भागों में स्थायित्व का संकट मंडराता रहा। भारत में सरकार को संसद के भीतर और बाहर कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अंतरराष्ट्रीय जगत में अनेक देश अस्थिरता के दौर से गुजरे हैं। फिलीपींस, दक्षिण कोरिया, फीजी, श्रीलंका, बंगलादेश आदि अनेक राष्ट्र आंतरिक विग्रह के शिकार रहे। क्या नये वर्ष में इस स्थिति में कोई परिवर्तन आएगा ?

विश्वास का अधिकारी नहीं समझा।

आर्थिक प्रगति, विकास और देश में सुख-शांति के लिए केंद्र में स्थिरता आवश्यक है। जाहिर है अगर सरकार आये दिन बदलती है, तो वह जनता की भलाई के किसी अच्छे कार्यक्रम को तेजी से लागू नहीं कर सकती। इसलिए सभी लोकतांत्रिक देशों में निर्वाचित नेता को निर्धारित अवधि तक कार्य करने का पूरा अवसर दिया जाता है।

देश में आजादी के बाद केंद्र सरकार को एक-दो अवसरों को छोड़कर स्थायित्व के लिए कभी संघर्ष नहीं करना पड़ा। पंडित नेहरू के नेतृत्व को कांग्रेस के अंदर या बाहर कभी किसी ने गंभीर चुनौती नहीं दी। नीति संबंधी अनेक प्रश्नों पर, जिनमें तिब्बत सहित भारत की चीन-नीति शामिल है, सरदार पटेल के नेहरूजी से गंभीर मतभेद थे। लेकिन अपने जीवनकाल में पटेल ने नेहरूजी को पूरा समर्थन दिया।

पंडित नेहरू स्वतंत्रता आंदोलन की उपज के नेता थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने उसका सदैव अगले मोर्चे पर नेतृत्व किया। गांधीजी ने नेहरूजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। इस कारण देश की जनता नेहरूजी का अत्यधिक सम्मान करती थी। सन १९६२ में चीन के हाथों भारतीय सेना की अपमानजनक पराजय के बावजूद कृष्ण मेनन के इस्तीफे की मांग तो की गयी, लेकिन नेहरूजी के इस्तीफे की मांग नहीं की गयी।

लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद श्रीमती गांधी देश की प्रधानमंत्री बनीं। उन्हें प्रधानमंत्री बनाने में कामराज के नेतृत्व में सिंडीकेट ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी, श्रीमती गांधी को इसीलिए देश का नेता बनाया गया क्योंकि, वे जवाहरलाल नेहरू की पुत्री थीं।

श्रीमती गांधी शीघ्र ही देश के राजनीतिक क्षितिज पर छा गयीं। सिंडीकेट के साथ संघर्ष, बैंक राष्ट्रीयकरण, प्रिवी पर्स की समाप्ति और बंगला देश के मुक्ति अभियान ने उन्हें नयी बुलंदियों पर पहुंचा दिया। लेकिन इसी के कुछ समय बाद सत्ता के केंद्रीकरण और देश में फैले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापक भ्रष्टाचार के लिए सख्ती कदमों आलोचना की जाने लगी । श्रीमती गांधी का कहना था कि भ्रष्टाचार एक विश्वव्यापी समस्या है और कुछ तत्व इसकी आड़ में देश में अस्थिरता पैदा करना चाहते हैं । इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा श्रीमती गांधी के चुनाव को अवैध घोषित करने के बाद उन्होंने कैसे देश में आपात स्थिति लागू की, नये चुनावों में किस तरह जनता पार्टी सत्ता में आयी, जनता पार्टी की फूट और टूट तथा श्रीमती गांधी की सत्ता में वापसी—इतिहास की ऐसी घटनाएं हैं, जिन्हें सभी जानते हैं ।

श्रीमती गांधी की हत्या के बाद जनता के सभी वर्गों के समर्थन से राजीव देश के प्रधानमंत्री बनाये गये । लोकसभा के चुनावों में पश्चिम बंगाल और आंध्रप्रदेश को छोड़कर लगभग एकमत से देश की जनता ने उन्हें अभूतपूर्व समर्थन दिया । लगभग एक डेढ़ वर्ष तक सभी कुछ ठीक-ठाक चला । लेकिन फिर सभी कुछ गड़बड़ाने लगा । बुद्धिजीवियों, समाचार-पत्रों और विपक्षी राजनीतिज्ञों—सभी को राजीव गांधी में कमियां नजर आने लगीं । यह कहा जाने लगा कि उनके समझौतों से शांति और सद्भावना फैलने के स्थान पर संघर्ष, विग्रह और कटुता फैली है । राजीव गांधी और विपक्ष की 'मधु-यामिनी' समाप्त हो गयी और दोनों पक्ष एक दूसरे को समाप्त करने के लिए कटारें तेज करने लगे ।

सत्ता से जुड़े लोगों द्वारा करों की चोरी, पूंजी का पलायन और हथियारों की खरीद में दलाली जैसे मुद्दों को लेकर सत्ता पार्टी पर चौतरफा प्रहार होने लगे । संसद में अभूतपूर्व बहुमत के बावजूद सरकार के त्यागपत्र और मध्यावधि चुनावों की मांग की जाने लगी । एक बार फिर सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से कहा जाने लगा कि कुछ विदेशी शक्तियां देश में अस्थिरता पैदा करना चाहती हैं ।

फैयरफैक्स जांच तथा बोफोर्स तोप सौदे के विवादों ने एक बार फिर इस सैद्धांतिक प्रश्न को जीवंत बना दिया कि क्या किसी निर्वाचित सरकार को प्रदर्शनों, धरनों, सभाओं और जुलूसों के जरिए सत्ता से बेदखल किया जा सकता है ? निर्वाचित सरकार ने शासन करने का अधिकार खो दिया है, यह जांचने की कसौटी और तरीका क्या हो ?

लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था का सर्वमान्य सिद्धांत जवाबदेही है । जवाबदेही का अर्थ यह है कि सरकार अपने हर कार्य, हर आचरण के लिए जनता के प्रतिनिधियों के सामने जवाबदेह है । इसीलिए सदन में बहुमत दल का नेता सरकार का प्रमुख बनाया जाता है । वह तब तक इस पद पर रहने का अधिकारी है, जब तक उसे सदन में बहुमत का समर्थन प्राप्त है । सदन के इस अधिकार को सीधे आम जनता को देने से क्या लोकतंत्र भीड़तंत्र में परिवर्तित नहीं हो जाएगा ? इसके अलावा, इसके साथ सरकार के स्थायित्व का प्रश्न भी जुड़ा है ।

पिछले चार दशकों के दौरान एशिया-अफरीका के अधिकांश देश स्थायित्व के संघर्ष में उलझे रहे हैं । इस दौरान इन दोनों महाद्वीपों के अनेक देशों में अनेक सत्ता परिवर्तन हुए । अनेक शासनाध्यक्षों को कारावास की कोठरियों में दिन बिताने पड़े, कुछ को गोली से उड़ाया गया और कुछ को अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश छोड़कर विदेशों में शरण लेनी पड़ी । अगर कुछ देशों में अमन-चैन, कानून-व्यवस्था स्थापित करने के बहाने विदेशी सैनिक आये तो कुछ में विदेशी हस्तक्षेप रोकने के बहाने आये । लेकिन, भारत में लोकतांत्रिक पद्धति पर कोई आंच नहीं आयी । यह फैसला हमेशा जनता ने किया कि देश का शासन कौन संभालेगा । कुटिल राजनीतिज्ञों, महत्त्वाकांक्षी कर्नलों-जनरलों और अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए सत्ताधीशों के इशारे पर चुनावों में हेरा-फेरी करने के लिए तैयार थोड़े से नौकरशाहों की इसमें कोई भूमिका नहीं थी ।

भारत और पाकिस्तान एक ही दिन स्वतंत्र हुए । लेकिन जहां भारत में लोकतंत्र के वृक्ष की जड़ें गहरी होती चली गयीं हैं, पाकिस्तान में सैनिक जनरलों ने बार-बार जनता के प्रतिनिधियों को सत्ता से बेदखल किया । इसकन्दर मिर्जा, अयूब खान, याहिया खान और जिया-उल-हक ने अपने-अपने तरीके से लोकतांत्रिक पद्धति को पलीता लगाया । हालांकि, उन्होंने सभी कुछ लोकतंत्र और जनता के नाम पर करने का दावा किया । फ्रांसीसी क्रांति के दौरान एक महिला ने,जिसे मृत्यु दंड के लिए ले जाया जा रहा था,कहा था, 'लोकतंत्र तेरे नाम पर क्या-क्या जुल्म किये जाते हैं ?' कहने को आज पाकिस्तान में जनता के प्रतिनिधियों की जवाबदेह निर्वाचित सरकार है, लेकिन वास्तव में समूची शासन-व्यवस्था पर सेना हावी है । सेना के अफसरों की मर्जी के बिना कुछ नहीं किया जा सकता । बंगलादेश का इतिहास भी कुछ कम दुखद नहीं है । पहले तो इस अभागे देश को अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अग्नि-परीक्षा के मध्य गुजरना पड़ा, जिसमें हजारों आदमी मारे गये । फिर, स्वतंत्रता प्राप्त होने के कुछ ही वर्षों के भीतर षड्यंत्रकारियों ने शेख मुजीब और उनके समूचे परिवार की हत्या कर दी । बंगलादेश में तब से अनेक सरकारों का तख्ता पलटा गया है । अनेक लोगों की हत्या की गयी है । आज भी बंगलादेश में लोकतंत्र बहाली का आंदोलन जारी है । सैकड़ों राजनीतिक कार्यकर्ता जेलों में बंद हैं, समाचार-पत्रों पर कठोर सेंसर लागू है और सरकार को जनता का दमन करने के लिए असीमित, निरंकुश और दमनकारी अधिकार प्राप्त हैं ।

बंगलादेश और पाकिस्तान इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं कि जब एक बार सेना राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए बैरकों को छोड़ देती है, तो फिर उसके लौटने का मार्ग बंद हो जाता है । सैनिक शासन की वकालत करनेवाले लोगों को यह बात साफ समझ लेनी चाहिए कि सैनिक शासक कहीं अधिक निर्दयी, अकुशल, निरंकुश और बेईमान होते हैं ।

पाकिस्तान और बंगलादेश ही नहीं बर्मा, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस और पश्चिम-एशिया तथा अफरीका के अनेक देश वर्षों तक सैनिक शासन, एक पार्टी शासन अथवा तानाशाही के अंतर्गत रहे हैं । इनमें से कुछ अपनी जनता के शानदार संघर्ष के कारण सैनिक, एक दलीय अथवा तानाशाही शासन के जुए को उतार फेक सके हैं, लेकिन कई देश आज भी अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं ।

लोकतंत्र में सरकार की स्थिरता का प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-हित अथवा बहुसंख्यक जनता के हितों के साथ जुड़ा हुआ है । अगर कोई लोकतांत्रिक सरकार लोक-हित अथवा अधिकांश लोगों के हितों की उपेक्षा करके कुछ ही लोगों के हितों की रक्षा करती है, तो उसे सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता । लोक-हित की उपेक्षा करनेवाली सरकार अपनी अधिकांश जनता का समर्थन खो देती है । ऐसी सरकार जितनी जल्दी त्याग-पत्र दे दे, उतना ही अच्छा है ।

इस दृष्टि से बंगलादेश और पाकिस्तान की सरकारों को सत्ता में बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है । लेकिन, जैसा कि पहले कहा गया है, राजनीति में यह आधारभूत सिद्धांत नहीं है । सैनिक शासक तो कभी भी पद नहीं छोड़ना चाहते । जनता को अपनी प्रचंड शक्ति का प्रदर्शन करके उन्हें हटाना पड़ता है । बंगलादेश के राष्ट्रपति ने संसद भंगकर मार्शल लॉ लागू करने का रास्ता प्रशस्त कर लिया है ।

पिछले वर्ष भारत और विश्व के अनेक भागों में स्थायित्व का संकट मंडराता रहा । भारत में राजीव गांधी की सरकार को संसद के भीतर और बाहर कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा । फिलीपींस में मार्कोस के समर्थक सैनिक अफसरों ने राष्ट्रपति एक्विनो के लिए पग-पग पर कठिनाइयां पैदा कीं । दक्षिण कोरिया में सरकार विरोधियों ने देश की शासन प्रणाली के औचित्य तथा नैतिकता के बारे में तीखे और परेशान करनेवाले सवाल उठाये । फीजी में एक सिर-फिरे सैनिक अफसर ने उग्र राष्ट्रवादी भावनाएं भड़काकर संवैधानिक सरकार का तख्ता पलट दिया । अमरीका में ईरान को हथियारों की बिक्री और कांट्रा विद्रोहियों की मदद के प्रश्न पर राष्ट्रपति रेगन की विश्वसनीयता संदेहों के घेरे में आ गयी ।

क्या नये वर्ष में इस स्थिति में परिवर्तन आयेगा ? इस सवाल का साफ जवाब कोई नहीं दे सकता । लेकिन वर्तमान संकेतों के अनुसार हरियाणा और आंध्रप्रदेश में भाई-भतीजावाद, अस्थिरता पैदा करने के बड़े मुद्दे बन सकते हैं । अपने परिवार के सदस्यों को उच्च पदों पर नियुक्त करके चौधरी देवीलाल और एन. टी. रामाराव ने विपक्षी कांग्रेस (इ) को आलोचना के लिए काफी मसाला दे दिया है । अब तक विपक्ष ही सत्तारूढ़ पार्टी पर भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार के आरोप लगाता था । अब ये भूमिकाएं बदल रहीं हैं ।

केंद्र सरकार के लिए 'श्रीलंका समझौता' अगले वर्ष सबसे अधिक परेशानी पैदा कर सकता है । लिबरेशन टाइगर्स ऑव तमिल इलम (लिट्टे) को समझौते की व्यवस्थाओं के बारे में गंभीर संदेह और आशंकाएं हैं । दुर्भाग्यवश, श्रीलंका में लिट्टे और भारतीय शांति सेना की भूमिका एक दूसरे के खिलाफ हो गयी हैं । कोई भी सेना किसी भी दूसरे देश में अनिश्चित काल तक नहीं रह सकती । उससे अनेक तरह की समस्याएं पैदा होती हैं । वियतनाम, अफगानिस्तान और लेबनान इस बात के उदाहरण हैं ।

श्रीलंका समझौते के अलावा हथियारों की खरीद में घोटाला राजीव गांधी की सरकार को परेशान करता रहेगा । चाहे इस बात से कितना ही इनकार क्यों न किया जाए लेकिन कांग्रेस पार्टी राजीव समर्थकों और विश्वनाथ प्रताप सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थकों के बीच पूरी तरह बंट चुकी है। अगर दल-बदल कानून न होता तो यह विभाजन काफी पहले औपचारिक रूप ले चुका होता।

इस समय स्थिति यह है कि पार्टी और संसद में राजीव समर्थकों का जबरदस्त बहुमत है। राजीव समर्थकों में से कितने सैद्धांतिक तथा अन्य आधार पर उनके साथ हैं और कितने स्वार्थ-साधन के लिए नहीं कहा जा सकता। राजीव विरोधी संसद में बहुत ही अल्पमत में हैं। लेकिन, ये लोग अल्पमत में होते हुए सरकार के लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। इसलिए अब सरकार असंतुष्ट सदस्यों के विरुद्ध ऐसी कार्रवाई करना चाहती है कि उनकी संसद की सदस्यता समाप्त हो जाए।

कांग्रेस संसदीय दल में राजीव गांधी विरोधियों की संख्या कितनी है—इस बारे में कोई सूचना नहीं है। तथापि, यह अनुमान है कि ऐसे लोगों की संख्या किसी भी हालत में ५० से कम नहीं है। अगर सभी कुछ अनुकूल चलता है तो ये ५० सदस्य सिमटकर ५-१० रह जाएंगे लेकिन, अगर कहीं कुछ उलट-पलट हो गया तो इनकी संख्या नीचे गिरनेवाले हिम-खंड की तरह कई गुना हो सकती है।

वर्तमान सूखे, बढ़ते मूल्यों और बेरोजगारी ने सरकार के सामने नयी समस्याएं पैदा कर दी हैं। पिछले वर्ष हरियाणा चुनावों के बाद यह कहा जाने लगा था कि राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस कोई चुनाव नहीं जीत सकती। विपक्ष की इस बात को झुठलाने के लिए कांग्रेस ने नागालैंड का चुनाव विश्वासोत्पादक तरीके से जीत लिया है। इससे कांग्रेस (इ) में व्याप्त निराशा के बादल छटे हैं और उनका आत्मविश्वास जागृत हुआ है।

केंद्रीय सरकार के लिए सबसे बड़ी समस्या आर्थिक है। सूखा, श्रीलंका समझौता और भुगतान असंतुलन के कारण सरकार का बजट घाटा काफी बढ़ सकता है। प्रधानमंत्री ने अपने बजट भाषण में इस बात की स्पष्ट घोषणा की थी कि बजट घाटा निर्धारित लक्ष्य से नहीं बढ़ने दिया जाएगा।

इस वर्ष देश के बहुत बड़े भूभाग में मानसून की वर्षा नहीं हुई। इसके परिणामस्वरूप अनाज के उत्पादन में दो करोड़ टन तक की कमी हो सकती है। सौभाग्यवश, देश के अनाज भंडारों में पर्याप्त अनाज था। अब यदि कहीं जाड़े की वर्षा धोखा दे दे तो आर्थिक मोर्चे पर नयी समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि विपक्षी दलों के संयुक्त मोर्चे की अपेक्षा दो खराब मानसून या गरमी और जाड़े की वर्षा का न होना राजीव गांधी के लिए बड़ी चुनौतियां होंगी। इंद्र देवता यदि कृपालु बने रहते हैं, तो केंद्र सरकार की स्थिरता को तत्काल कोई खतरा पैदा होने की कोई आशंका नहीं है, अन्यथा सरकार समस्याओं के घेरे में उलझेगी।

जहां तक अंतरराष्ट्रीय राजनीति और विश्व-शांति का प्रश्न है, वाशिंगटन में अमरीकी राष्ट्रपति रीगन और सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचोव ने मध्यम दूरी प्रक्षेपास्त्र नियंत्रण संधि पर हस्ताक्षर कर एक नव-युग का सूत्रपात किया है। इससे विश्व में शांति और स्थिरता की आशाएं बढ़ी हैं। —२२ मैत्री एपार्टमेंट्स

ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

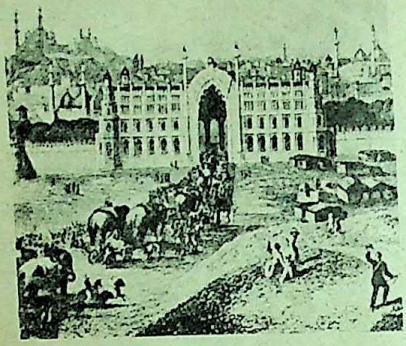

नवाबों के जमाने में निकला करते थे ऐसे शाही जुलूस। हाथी, घोड़े और पालकी के साथ करतब दिखाते चलते थे अखाड़े

मुगल शासनकाल में नव-वर्ष

● रंजन जैदी

नये दिन की खुशी में नृत्य-संगीत और भोज के साथ-साथ मनोरंजन का 'हंगामा'—आज की हमारी नयी 'संस्कृति'। लेकिन एक समय ऐसा था जब यह नया साल मनाया ही नहीं जाता था। पर बाद में जब नवाबों ने एक जनवरी को नया साल मनाना शुरू किया, तो वर्ष की पहली रात का नया रूप देखकर स्वयं अंगरेज भी हैरान रह गये।

मुगलों के शासनकाल में लखनऊ एक बड़ा व्यापारिक केंद्र था। विदेशी-व्यापारी भारत में आकर 'मस्ताम्री' (शाही-स्वीकृति) प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से व्यापार करते थे। उन्हीं दिनों की बात है। एक फ्रांसीसी व्यापारी फेड्रिक ने, जो घोड़ों का व्यापार करता था, केंद्र से 'स मस्ताम्री' प्राप्त कर लखनऊ में अ मुख्यालय स्थापित किया और घोड़ों का व्या करने लगा। इस व्यापार में उसे इतना अधि लाभ हुआ कि उसने लखनऊ के चौक महल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में चार भव्य मकान निर्मित कर लिये। उसका इरादा लखनऊ में स्थायी रूप से बस जाने का था, किंतु वर्ष के अंत में उसकी 'मस्ताग्नी' का समय समाप्त हो गया। उसे 'हुक्म' हुआ कि वह लखनऊ ही नहीं, बल्कि देश की सरहदों से बाहर निकल जाए। फेड्रिक ने दिल्ली और आगरा, दोनों ही जगहों की दौड़-भाग की, किंतु उसे स्वीकृति नहीं मिली। अंत में उसने शाही हुक्म का उल्लंघन कर लखनऊ में ही रहने का प्रयास किया, तब शहर कोतवाल ने शाही हुक्म बजा लाने के उद्देश्य से उसके चारों मकानों पर शाही कब्जा कर लिया और फेड्रिक को गिरफ़्तार कर आगरा भेज दिया, जहां से उसका देश निकाला हो गया।

बादशाह औरंगजेब के जमाने में मुल्ला निजामुद्दीन सहालवी को ये चारों मकान शाही-हुक्मनामे के बाद दे दिये गये, जो आज भी फिरंगी महल के नाम से जाने जाते हैं।

फिरंगी महल में नया साल

सन १६०१ में इसी फिरंगी महल में पहली बार फेड्रिक ने नये साल का जश्न बड़ी धूम-धाम से मनाया था। सन १६०५ में सम्राट अकबर का देहांत हो गया था। सन १६०१ में सम्राट अकबर का पैंतालीसवां 'सने-जुलूस' भी देशभर में मनाया गया था। यूरोपीय यात्री लैकट अपने संस्मरण में लिखता है कि, 'लखनऊ आज भी बहुत बड़ी व्यापारिक-मंडी है। मैं फेड्रिक-पैलेस को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वहां के लोग बताते हैं कि फेड्रिक ने नये वर्ष के दिन जिस प्रकार अपनी खुशियों का प्रदर्शन किया, वह अविस्मरणीय है। बारह सौ हाथियों के हौदों में मशालें जल रही थीं। हाथियों को दूल्हों की तरह सजाया गया था। सौ घोड़ों पर यूरोपीय-वस्त्रों में सजे-धजे स्थानीय युवक हाथों में बैनर लिये बैठे थे, जिनमें लिखा था—'जहांपनाह, जिल्ले सुबहानी आलमगीर शहंशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का पैंतालीसवां 'सने-जुलूस' और सने-ईसवी का नया-साल मुबारक हो।'

फेड्रिक पैलेस के बाहर ६० फुट चौड़े, १२०० फुट लंबे और ६० फुट ऊंचे दो टैंट लगाये गये थे, जहां शहर के संभ्रांत परिवारों को शानदार भोज दिया गया था। भोज से पहले अनेक हाथियों, घोड़ों और पजीर बाजा (भारत में इस बाजे को लानेवाला फेड्रिक नामक यही यूरोपियन था) बजानेवाले जमादारों की टोली का काफिला शहर की बड़ी-बड़ी सड़कों से गुजरता हुआ लौटकर फेड्रिक पैलेस में जिस समय पहुंचा, उस समय वहां ऐसा लग रहा था, जैसे पूरा लखनऊ ढुलकर चौक में समा गया हो।

लैकट ने आगे लिखा है कि फेड्रिक ने इस जश्न पर, प्राप्त दस्तावेजी सबूतों के अनुसार, पांच लाख रुपये खर्च किये थे।

अर्थ 'मस्ताग्नी' का

'मस्ताग्नी' का शाब्दिक अर्थ है— शांति से रहने का इच्छुक। अकबर के शासनकाल में उन यूरोपवासियों को जो भारत में आकर व्यापार करना चाहते थे, एक वर्ष से कम का मस्ताग्नी प्रमाण-पत्र दिया जाता था। क्योंकि, भारतीयों से यूरोपियों को अपनी जान-माल का अकसर खतरा रहा करता था, इसलिए इस प्रमाण पत्र के बाद सरकार विदेशियों को एक विशेष मुद्दत तक अपना संरक्षण प्रदान कर दिया करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैकट सन १६३१ में भारत यात्रा पर आया था। इस समय शाहजहां का शासन था। लैटक आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखता है, 'नये साल के जश्न पर फेड्रिक ने इतनी बड़ी रकम गंवाकर किस सपने को साकार किया होगा, मैं हैरान हूं। लेकिन मुझे खुशी है कि बादशाह अकबर के जमाने का उसका यह 'खब्त' आज भी लखनऊ के घर-घर में जिंदा है और पिछली पीढ़ियों की तरह आनेवाली पीढ़ियां भी इस 'खब्त' को जिंदा रखेंगी।'

इस जश्न के पीछे फेड्रिक का उद्देश्य चाहे कुछ भी रहा हो, किंतु उसके बाद लखनऊ के नवाबों और रईसों में 'नया साल' मनाने का शऊर जरूर जागा। यह शऊर महलों और हवेलियों से निकलकर कच्चे-पक्के मकानों की दीवारें फलांगता हुआ शमादानों की लौ में दाखिल हो गया, किंतु सबके सामने एक ही सवाल मुंह बाये खड़ा रहा कि नये साल का पहला दिन कौन-सा होना चाहिए ?

मुगलों का नया वर्ष

मुगल शहंशाहों के जमाने में वर्ष का आरंभ 'तख्त-नशीनी' के दिन से होता था, जिसे 'सने-जुलूस' कहते थे। सने-जुलूस से नये सन का आरंभ 'खिलाफत' समाप्त होने के बाद बादशाहत के आते ही होने लगा था, किंतु बदलते हुए बादशाहों के साथ 'सन' की स्थिरता संदेहजनक स्थिति में पहुंचने लगी, इसलिए मुसलमानों ने सने-हिजरी को स्वीकार कर लिया और मुगल बादशाहों ने भी सने-हिजरी का कतई विरोध नहीं किया, किंतु मुगल बादशाहों को एक दिक्कत अवश्य झेलनी पड़ी, और वह दिक्कत थी ईरानी कैलेंडर वर्ष की।

सने-हिजरी की तारीख ईरानी कैलेंडर वर्ष की तुलना में ६० वर्ष पीछे है। इसका कारण ईरानी कैलेंडर का अंगरेजी कैलेंडर वर्ष का अनुकरण करना है, जबकि सने-हिजरी का आरंभ मुहम्मद साहब की हिजरत (गमन) के दिन से है।

ईरान में वर्ष का आरंभ 'नौरोज' से होता है। धार्मिक दृष्टि से इस दिन हजरत अली (मुहम्मद साहब के दामाद) का जन्म दिन है। ईरान में यह दिन हर्षोल्लास से मनाया जाता है, जबकि सने-हिजरी का प्रथम दिन शोक का दिन है। इसलिए वर्ष का पहला दिन शोक का दिन माना जाता है। हालांकि, सूडान में सने-हिजरी से लगनेवाले नव वर्ष का प्रथम दिन हर्षोल्लास का दिन समझा जाता है। सने-हिजरी के हिसाब से आज हम १५०८ सने-हिजरी में गुजर रहे हैं, जबकि ईरानी कैलेंडर वर्ष के अनुसार हमें १५६८ में होना चाहिए। सने-हिजरी चाहे अरब कैलेंडर की हो या ईरान की, दोनों में महीने का आरंभ चंद्रमा के उदय से होता है।

उपर्युक्त मतभेदों और विरोधाभासों के बावजूद भारतीय मुसलिम शासकों के शासनकाल में नये वर्ष की महत्ता को पूर्णरूप से स्वीकारा गया है। वर्ष के पहले दिन भले ही ईसाइयों की भांति जश्न न मनाया जाता रहा हो, किंतु जश्न के अनेक रूप इतिहास में अवश्य मिल जाते हैं।

हुमायूं के हिंदू सहायक

सन १५४० में जब मुगल बादशाह हुमायूं को जौनपुर में शेरशाह सूरी ने पराजित कर दिया और हुमायूं मैदान छोड़कर भागता हुआ सुलतानपुर से होकर लखनऊ पहुंचा, तो उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

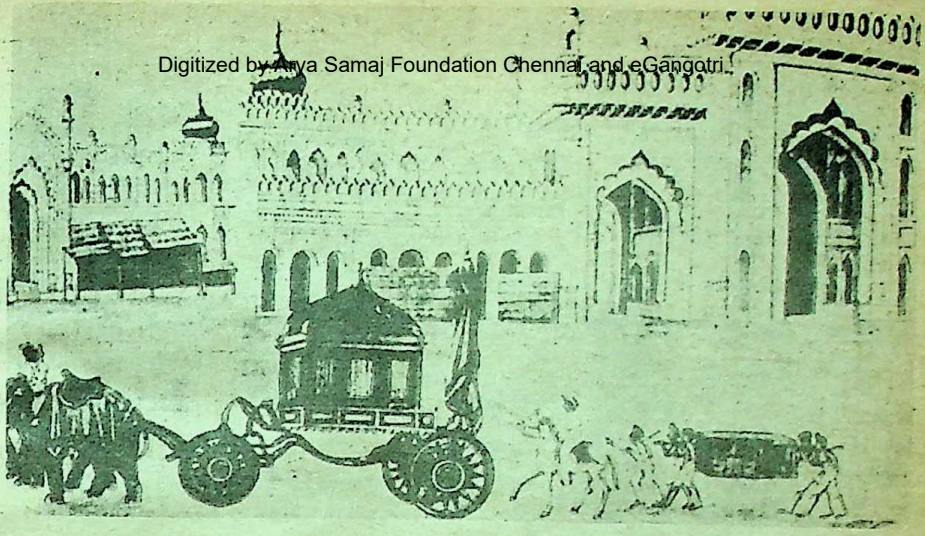

हाथियों की जोड़ी द्वारा खींचे जानेवाले रथ पर सवार मोहम्मद अली शाह
और ब्रिटिश रेज़ीडेंट का एक दुर्लभ चित्र

समय वह बहुत थका हुआ था। शेरशाह उसका पीछा कर रहा था, इसके बावजूद वह लखनऊ में चार घंटे रुका। यह नौरोज का दिन था। इन चार घंटों में उसे अपने स्वर्गीय पिता बाबर की बहन माहम बेगम की बहुत याद आयी क्योंकि, माहम बेगम 'शीआ' थीं और नौरोज बड़े धूमधाम से मनाती थीं। हुमायूं ने अपने हितैषियों को संबोधित करते हुए कहा, 'दुर्भाग्य से आज हम आपके बादशाह नहीं है। खुदा की कसम अगर हमारी हुकूमत होती तो इस वक्त इस जश्ने-नौरोज के दिन हम खजाने का दर खोल देने का हुक्म सादिर कर देते।'

बादशाह के ये शब्द सुनकर लखनऊ के लोग भावुक हो उठे। कुछ ही देर में पंडित सदाशिव पांडेय नामक एक बुजुर्ग ने कायस्थों, ब्राह्मणों और भर तथा पासियों को जुटाकर हुमायूं को दस हजार रुपये तथा पचास घोड़े भेंट किये, जिन्हें पाकर बादशाह भाव-विह्वल हो गया। उसने कहा, 'हमें आप लोगों की मेहमानवाजी याद रहेगी। ये घोड़े हम कुबूल करते हैं, लेकिन ये रुपये हमारी तरफ से नौरोज का इनाम समझकर गरीबों में तकसीम करा दें।'

इसके पश्चात ही हुमायूं पीलीभीत के रास्ते भाग खड़ा हुआ था। हुमायूं के बाद जब अकबर ने सन १५९० में अपने शासनाधीन भारत को बारह प्रांतों में विभाजित किया, तो उसमें एक प्रांत अवध भी था। अवध के सूबेदार यावाली की नियुक्ति के कुछ समय बाद जिला बिजनौर का अब्दुर्रहीम जोड़-तोड़ करते हुए किसी तरह से स्वर्गीय पंडित सदाशिव पांडेय के पुत्र पंडित हरिहर पांडेय का एक पत्र लेकर दिल्ली-दरबार पहुंचा और जैसे-तैसे बादशाह अकबर तक पहुंच गया। पत्र जब पढ़कर बादशाह को सुनाया गया, तो बादशाह गमगीन हो गया। पत्र में लिखा था, 'एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके स्वर्गीय पिताश्री हमारी बस्ती में नौरोज के दिन रुके थे ..... ,' और इसके बाद पूरी कहानी दर्ज की गयी थी। अंत में सिफारिश की गयी थी कि 'यदि हो सके तो इस विपत्ति के मारे व्यक्ति की सहायता करने की कृपा करें। काश, मेरे पिता जीवित होते....।'

इतिहास साक्षी है कि इस बेबाक-पत्र ने अकबर को अत्यंत भावुक कर दिया और अकबर ने अब्दुर्रहीम को एक बड़ी जागीर अता कर दी और कहा, 'बखुदा, मुगलों की तारीख (इतिहास) में जब भी मुवर्रिख (इतिहासकार) हुमायूं के जवाल (पतन) का जिक्र करेगा, तो लखनऊ के मेजबान का जिक्र सुनहरी हर्फों में लिखते वक्त लक्ष्मन टीले के उस बरैहम (ब्राह्मण) खानदान को कभी फरामोश नहीं करेगा, जिसने शहंशाह हुमायूं को गुरबत में पनाह दी थी।'

स्वर्गीय पंडित सदाशिव पांडेय या उनके परिवार के संबंध में इसके अतिरिक्त कोई जानकारी नहीं मिलती, किंतु शेख अब्दुर्रहीम के संबंध में पता चलता है कि वह लखनऊ में जागीर पाकर वहीं बस गया। उसने लछमन टीले या मुहम्मद के टीले पर अपना पंचमहल बनवाया और शेख दरवाजा भी। वहीं उसकी मृत्यु हुई और मकबरे में दफन कर दिया गया। इसी मकबरे का नाम 'नादान महल' है।

नौरोज और सने-जुलूस

सम्राट अकबर ने पंडित हरिहर पांडेय के पत्र से प्रभावित होकर ही हुमायूं की 'इस इच्छा' पर 'नौरोज' को 'सने-जुलूस' में बदल दिया और 'दीने इलाही' मत चलाने के बावजूद वह 'सने-जुलूस' के दिन हुमायूं की याद में अमीरों को जागीरें और खिलअतें देता था। यह सिलसिला सम्राट शाहजहां तक निरंतर चलता रहा, किंतु औरंगजेब के शासनकाल में 'सने-जुलूस' की रीति समाप्त कर दी गयी और उसके समय से नये वर्ष का आरंभ मुहर्रम से समझा जाने लगा। सने-हिजरी का अरबी कैलेंडर वर्ष औरंगजेब-काल से पुनः आरंभ हो गया।

मुगल बादशाह मुहम्मद शाह और उसके पुत्र अहमद शाह के शासनकाल में मराठों का आतंक काफी बढ़ चुका था। बरेली के नवाब हाफिज रहमत खां, नजीबाबाद के नवाब नजीबुद्दौला आदि छोटी-छोटी रियासतों के नवाब मराठों के प्रभाव में थे। दिल्ली पर मुगलों का वर्चस्व कमजोर पड़ता जा रहा था। अवध के नवाब शुजाउद्दौला मराठों के पेशवा के मित्र बन चुके थे, किंतु हैदराबाद के निजाम आसिफ जाह मराठों से समझौता नहीं कर पा रहे थे। ऐसी स्थिति में पूरा देश अजीब-सी अनिश्चितता, अव्यवस्था और आशंकाओं से इस कदर ग्रस्त हो चुका था कि खुशियां परदे के पीछे सरक गयीं थीं। सन १७८३ में गुलाम कादिर रोहेला द्वारा खंजर मारकर शाह आलम की आंखें निकालने-जैसी दिल दहलानेवाली घटनाएं हुईं। दिल्ली लुटी और फिर मराठों के सेनापति सदाशिव भाऊ ने दिल्ली विजय के उद्देश्य से पूना से कूच किया। अनेक पेचीदगियों से ग्रस्त राजनीतिक उथल-पुथल से लाभ उठाने और दिल्ली तख्त को हथियानेवालों की भीड़ में एक ओर अंगरेज, बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश के सूबेदार तथा फ्रांसीसी और पुर्तगाली थे, तो दूसरी ओर हैदराबाद के नवाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसिफ जाह निजामुलमुल्क और सरहद्द पार अहमद शाह अब्दाली-जैसे व्यक्ति थे, इन तमाम परिस्थितियों में देशभर के तीज-त्यौहार दुःख और शोक के घनेरे बादलों में छुप गये थे। ऐसे में खुशियों की कल्पना ही सिमट कर आंसुओं में घुल गयी थी और आम आदमी अपनी जान-माल की चिंता में दिन-रात घुलने लगा था। उसे याद ही नहीं रहा कि नौरोज कब आया और सने-जुलूस का दिन कब शुरू हुआ।

अंगरेजों का प्रभाव

इन परिस्थितियों के बावजूद अवध के नवाब आसिफुद्दौला के गद्दीनशीन होने के बाद तक अवध में कोई बड़ा भूचाल नहीं आया। हां, अंगरेज रेंगते-रेंगते नवाब के निकट अवश्य आ गये थे। अंगरेजों की सलाह पर थोड़ी-सी सेना को छोड़कर शेष को मुक्त कर दिया। नवाब अंगरेज दोस्तों के साथ अंगरेजी कैलेंडर वर्ष का पहला दिन बड़े धूमधाम से अंगरेजी रंगढंग से मनाने लगा। पैसा लुटाने के लिए उन्होंने मुट्ठियां खुली छोड़ दीं। जब आवश्यकता पड़ी, अंगरेजों से मांग लिया। उनके शौक का हाल यह था कि जश्ने-नौरोज के दिन जब वह दरबार में आया, तो दरबारियों की आंखें उनकी खिलअत (वस्त्र) देकर चुंधिया गयीं, क्योंकि उसमें बीस लाख रुपयों के जवाहरात टंके हुए थे। उस दिन शहर और रियासत अवध के विशिष्ट मेहमानों को जो दावत दी गयी, उस पर सल्तनते अवध के दस लाख रुपये खर्च आये। उस दिन नवाब, अमीर, ताल्लुकेदार और जागीरदारों के अलावा आम अमीर-गरीब नागरिकों को मिलाकर ढाई

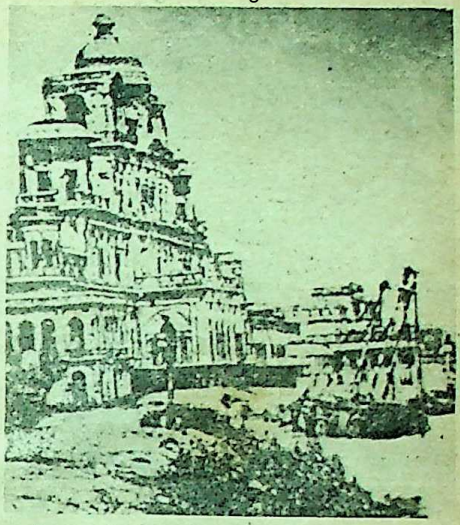

लखनऊ के अतीत का एक जीवंत चित्र : गोमती के किनारे नवाब वाजिद अली शाह का रंगमहल

लाख लोगों की दावत की गयी। दावत में नौ प्रकार के खाने परोसे गये, जिनमें मुजाफर, पुलाव, मुतंजन, शीरमाल, सफेदा, बोरानी के प्याले, शीरे बरंज के ख्वांचे, कोरमा, तली हुई अरबी-गोश्त, शामी-कबाब, मुरब्बा आदि मुख्य रूप से थे ही, इनके अतिरिक्त मिठाइयां अलग से थीं।

इस तरह नवाब आसिफुद्दौला सन ईसवी का नया वर्ष नौरोज की भांति मनाने लगे। वैसे, इस त्योहार को भारत के अन्य सूबों (बंगाल को छोड़कर) ने बहुत बाद तक मान्यता नहीं दी, किंतु अवध में इसे बंगाल के बाद अत्यधिक महत्त्व दिया जाने लगा था और धीरे-धीरे यह त्योहार नवाबों, अमीरों, ताल्लुकेदारों तथा जागीरदारों की हवेलियों में फैशन बनकर प्रवेश कर गया और अपनी जड़ें फैलाता चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये साल की रात

नये साल की रात नवाब के महल में सारी-सारी रात चूनेवाली या कंचनियां जाति की वेश्याएं मुजरे करतीं और छोटे लोगों के लिए 'नागरनियां' कहलानेवाली वेश्याएं इठला-इठला और गा-गाकर उन्हें खुश करतीं। नवाब के सामने रासलीलाएं भी होतीं, जिन्हें देखने के लिए अंगरेज अतिथि भी मौजूद रहते। शाम से ही शराब के प्याले खनकने लगते और पूरा लखनऊ दीपावली की रात की तरह जगमगा उठता।

नये वर्ष के शुरू होते ही ड्योढ़ियों पर नौबत बजायी जाने लगतीं। आधी रात यानी छठी नौबत के बजते ही पूरा शहर मानों पागल होकर नाच उठता और हर कोई एक दूसरे को नव वर्ष की बधाई देने लग जाता। रौशन चौकीवाले शहनाइयां बजाने लगते और फिर तो जैसे भांति-भांति के वाद्य-यंत्रों, जैसे-तुरही, करना, नरसिंघा, बिगुल और डंका आदि की आवाजें गूंजने लगतीं।

आसिफुद्दौला से वाजिद अली शाह तक नाच, रंग, रास और भांड-डोमनियों का ऐसा जोर बढ़ा कि अंगरेजों ने नये साल के जश्न से स्वयं को अलग-थलग कर लिया, क्योंकि वाजिद अली शाह तक इस रात का पूर्ण रूप से अवधीकरण किया जा चुका था। नये वर्ष की रात का यह एक नया रूप देख कर खुद अंगरेज हैरान हो जाते थे, लेकिन उन्हें एक बात की खुशी भी होती थी कि अवध के लोग अपनी सने-हिजरी और विक्रम संवत भूलकर अंगरेजी कैलेंडर वर्ष को अपनाने लगे हैं और लगभग इसे मान्यता तक दे चुके हैं। यह उनकी एक किस्म की सांस्कृतिक विजय थी।

लखनऊ के तत्कालीन रेजीडेंट जान बेली द्वारा लिखवायी गयी पुस्तक 'अमादुस्सादात' से लेकर एडवर्ड टाम्सन द्वारा लिखी पुस्तक 'द अदर साइड ऑव द मिडल' तक हमें जो जानकारी प्राप्त होती है, उसके अंतर्गत मुसलमानों में उन दिनों नव वर्ष के आरंभ से ही तीरअंदाजी, जल बांक, बांका बर्छा, कुश्ती, रुस्तमखानी से लेकर शाही शौक के खेलों की प्रतियोगिताएं शुरू हो जाती थीं। मुगलों के शासनकाल में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन 'नौरोज' के दिन से शुरू होते थे, किंतु नवाब सादत अली खां की गद्दीनशीनी के बाद तो सन ईसवी के लगते ही पूरे अवध में घूम-धड़क्के की शुरूआत होने लगती थी, क्योंकि नवाब आसिफुद्दौला के समय में अंगरेजों का अवध में काफी सम्मान किया जाने लगा था। उसका एक कारण यह भी था कि अंगरेजों की सहायता से नवाब आसिफुद्दौला को रोहेलखंड पर अधिकार करने में मदद मिली थी और जब आसिफुद्दौला पारिवारिक षड्यंत्रों का शिकार होने लगा, तो उसने अंगरेजों की मदद से उन पर काबू पाया। सन १७९७ तक लखनऊ में अंगरेज खुलकर सामने नहीं आये और इसी कारण नये साल का त्योहार अंगरेजों से नहीं जोड़ा जा सका, किंतु जब बिबियापुर की कोठी में अंगरेज गवर्नर जनरल ने दरबार करके सन १७९८ में नवाब सादत अली खां को तख्त पर बिठाया, तो नये सने-जुलूस की खुशी में नवाब ने अवध की आधी रियासत अंगरेजों के हवाले कर दी। —२०९ डी, पाकेट-सी

मयूर विहार, फेज-२, दिल्ली-९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंद दरवाजे के भीतर

● गंगाप्रसाद विमल

अपनी बातें कहने लगता हूं, तो कहीं अंदर से आवाज आती है कि ऐसा तो पहले भी कहा जा चुका है।

बस यहीं से उलझन शुरू होती है। सब कुछ हो रहा है, पहले भी हो चुका है। मसलन जन्म के वक्त मेरी दादी ने मेरी शक्ल देखकर कहा "अरे, बच्चे की शक्ल तो एकदम अपने दादा से मिलती है।" मैं तो सिर्फ संदेह करता हूं कि दादी अपनी कोई छिपी आकांक्षा पूरी कर रही होगी, या दादा के मरने के शोक को खुशी से लौटाने में तब्दील कर रही होगी, या "जैसे मेरे पिता की शक्ल दादा से बिलकुल भी नहीं मिलती थी . . . उसी एक चाह को पूरा कर रही होगी।" अपने पड़ोस के एक बच्चे के जन्म पर रस्मी बधाई देने को मैंने मुंह खोला ही था कि उस बच्चे की दादी ने भी वही कुछ कहा, जो मेरी दादी कह चुकी थी।

और परेशानी यहीं से शुरू होती है। हर शब्द जो उच्चारा जानेवाला है पहले से ही उन लोगों की जुबान के नीचे, हृदय के किसी कोने में या मनोकोष में मौजूद है।

तो क्या हर बात जो मैं कह ही रहा हूं— इतिहास में कहीं कही जा चुकी है। तो मैं क्या हूं . . . बस इतिहास का एक दुहराव मात्र ?

"उगाओ . . . . उगाओ" मेरा एक सिरफिरा दोस्त मेरी फिजूल की चिंताओं को देख मुझे कोसता है, "हथेली पर सरसों उगाओ"।

वह तो बस मेरा तिरस्कार करने, मुझे नीचा दिखाने के लिए मौके तलाशता रहता है। पर ये जो लोग हैं जिन्हें हम-आप दूसरों से सुनते हैं कि वे तंत्र ज्ञाता हैं क्या सचमुच हथेली पर सरसों उगा देते हैं ? तो फिर मुहावरे का क्या हुआ ?

वर्षों पहले अपने हाथ में खाकी लिफाफा उठाये मैं इस बस से उस बस में सफर कर अपने काम-धंधे की जगह पहुंचता था। उस लिफाफे में अध-लिखे खत— या दूसरे ऐसे ही कागज होते थे। वह खाकी लिफाफा मेरी

बंद आंखों के भीतर के दृश्य तो मैं देख ही रहा हूं। न जाने कौन-सी चीज है— शायद स्मृति का सूत्र कि मैं अपने सामने खड़े लोगों का अतीत भी देख रहा हूं— और उस अतीत में जब मैं उन्हें देखता हूं तो मुझे अविश्वास-सा होता है। अविश्वास कि इतने हाड़-मांस के लोग तकलीफों के इस लंबे असहनीय रास्ते से गुजरे होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित कहानियों से अलग लिखने के लिए सुपरिचित गंगाप्रसाद विमल ने इस कहानी में आभ्यन्तरीकरण की विधि अपनायी है। परंपरा की वक्रता से कुछ हटकर यह कहानी सोचने के लिए विवश करती है कि नया क्या है ?—मौलिक क्या है ?

पहचान था। एक बार मैं अपना चश्मा लाइब्रेरी में भूल आया था वहां की एक महिला ने मेरे दफ़्तर में फोन कर पूछा कि क्या लिफाफेवाले साहब आ गये हैं। वही खाकी लिफाफेवाले। मुझे लगा मेरा नाम, कुल, वंश, मेरी लेखनी के उत्पाद्य— सब किसी संज्ञा का आकार नहीं बनाते क्या ? उन दिनों के किसी भी आदमी से आप पूछेंगे तो वह खाकी लिफाफेवाले आदमी के कितने ही किस्से आपको सुना देगा। खैर मेरी एक पहचान थी— पहचान का चिह्न था।

कबीरदास ने कौन-सी पहचान बनायी थी कि लोग उन्हें जानते। उन्होंने बस यही कहा कि "दास कबीरा जतन से राखी। जस की तस धर दीन्ही चदरिया।" दास थे बेचारे। चादर कैसे मैली करते। वाह एक पंक्ति से ही कबीर का वर्ग चरित्र झलकने लगता है।

काश ये बातें मैं ही कर रहा होता पर अफसोस है ये पहले भी कही जा चुकी हैं। पहले भी सुनी जा चुकी होंगी।

. . . टोपीवाला आदमी जा चुका है। वह ठीक दो बजे सड़क से गुजरता है। उसकी टोपी के अंदाज से मैं शहर की अफवाहें पढ़ लेता हूं। जब भी वह तनी हुई टोपी पहनकर निकलता है मुझे मालूम पड़ जाता है कि जरूर मुठभेड़ में कोई आतंकवादी मारा गया है। वह दूसरों के शौर्य पर अपना सीना चौड़ा कर निकलता है। हर शहर में ऐसे कुछ लोग जरूर होते हैं जो अलग-थलग पहचाने जा सकते हैं। पर वे हर शहर में होते हैं। करते भी वे ही बातें हैं जो हमने सुनी हुई हैं।

बस सारी परेशानी की जड़ यही है। जो दूसरे करते, कहते हैं, हम बस उसका होना भर हैं। मेरी इन परेशानियों के लिए जानते हैं आप, गुणीजन क्या कहते हैं ?

वे कहते हैं मैं एक खाली घड़े में से उलटकर कुछ दूसरे खाली घड़े में उंड़ेल रहा हूं।

श्वेतवाराह कल्प नामक एक ग्रंथ में जो कहा गया था उसका भाष्य विष्णु शर्मा से लेकर आज तक के लोगों ने किया है तो हुई न यह दुहराव वाली बात।

यहीं तो है वह पेंच। और आप कहते हैं कि मैं खाली पतीलों से खाली पतीले में कुछ उंड़ेल रहा हूं। वह भी तो खालीपन हो रहा है।

छोड़िए मैं किस्से के बीच बहस ले बैठा। लो तो बहस धकेल रहा हूं परे और लौट रहा हूं किस्से की तरफ।

जैसे ही मैं सोचने के लिए आंखें बंद करता हूं कि धड़ से जैसे भीतर-ही-भीतर एक काले धब्बे के बीच से एक दरवाजा खुल जाता है। आइए . . . आइए मैं आपको उसके भीतर ले चलता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

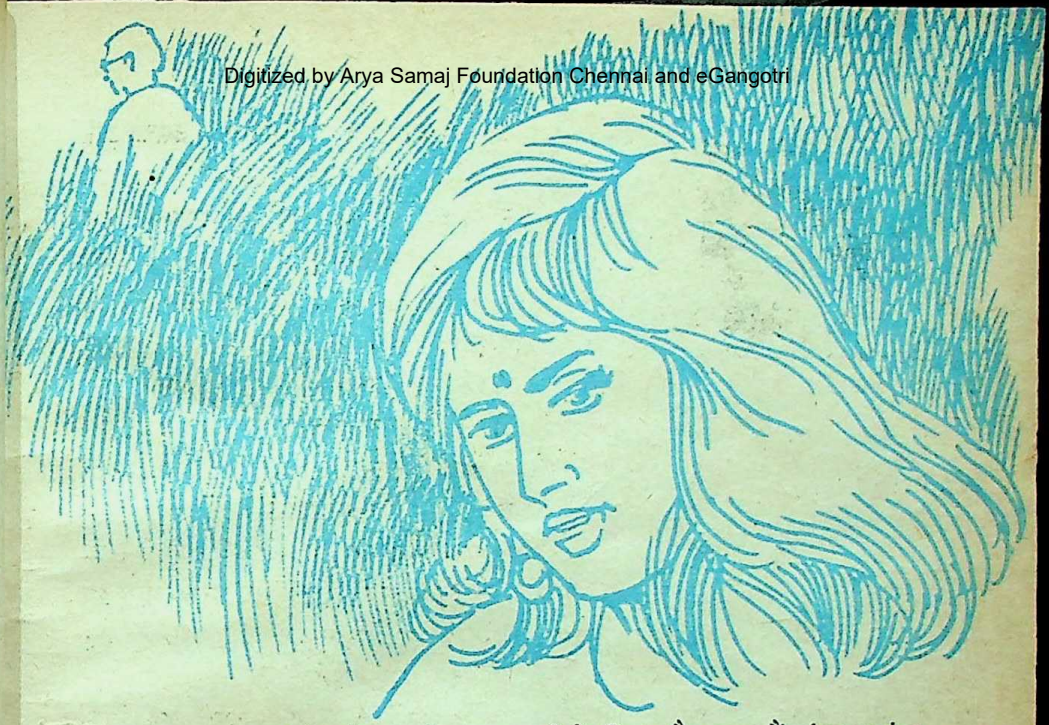

पर वह सब कहा हुआ नहीं है । मैं आपको भीतर ले चलता हूं— यह एक मौलिक किस्म का आमंत्रण है । आप यानी बहुत-से लोग— आप यानी वे लोग जो जीवन से ऊब गये हैं और शब्दों की सतरों में ही कुछ पाने की उम्मीद लगाये बैठे हैं ।

लेकिन याद रहे जब तक मेरी आंखें बंद रहेंगी मैं आपको उस दरवाजे से भीतर ले जा सकता हूं । जैसे ही आंखें खुलेंगी मैं इस दुनिया से लौट आऊंगा— और फिर आप और मैं बिछुड़ जाएंगे । तो दरवाजे के भीतर एक दुनिया है । दूसरी तरह की दुनिया जिसे हमने कभी नहीं देखा । मसलन— दरवाजे के बहुत करीब एक बेहद खूबसूरत लड़की है— थोड़ा उसकी खूबसूरती पर बातचीत की जाए वह एक विरल नस्ल की सुंदरी है । जिसे हम सपनों में देखते हैं । यहां वह सिर्फ आपके लिए है । हां— आप ही के लिए और अगर मैं अंदर जाऊंगा आपके साथ, तो मेरे लिए भी तमाम सुविधाएं होंगी ।

. . . वह प्यार करनेवाली लड़की है । और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह है सिर्फ आपके लिए । और, और वह लड़की— बस उलझन यही है । वह लड़की तो आपके लिए है लेकिन आप . . . . आप जैसे ही दरवाजे से अंदर प्रवेश करते हैं आपकी इच्छाएं, आकांक्षाएं सब खत्म हो जाती हैं । . . . . आप खुदा हो जाते हैं— इन पार्थिव इच्छाओं से ऊपर उठना कैसा लगता होगा ? जब मैं आपकी आंखें देखता हूं तो मुझे पश्चात्ताप होता है । वहां सिर्फ दुःख-ही-दुःख है । काश— मैं वह दरवाजा न खुलवाता और आप वहां न होते । थोड़ी देर के लिए ही सही— बस यह सोचिए कि और अंदर प्रवेश कर अभी क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

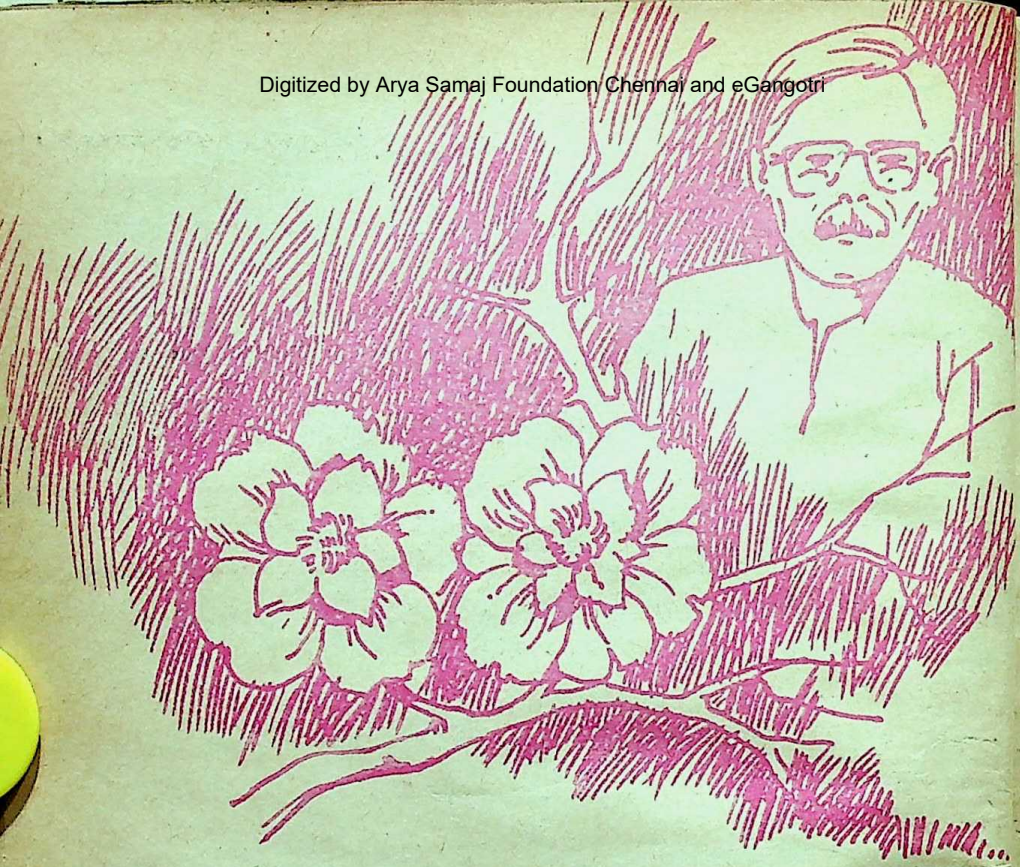

देखना-भोगना होगा। मेरा खयाल है तमाम खोजियों की तरह आप भी जोखिम उठाने के लिए तैयार हो जाएंगे। और आगे की यात्रा जारी रहेगी।

लेकिन वह दरवाजे के पास ही अनिंद्य सुंदरी . . . . उसकी आंखों में कामुकताभरी प्यास है। उसका चेहरा उसकी प्यास को थाम पा रहा है— उसमें पनियाली-सी एक चमक है— और उस चमक का मतलब है समर्पण।

हम लोग दरवाजे के भीतर जाते हैं तो जैसे एक चमत्कार-सा होता है। चारों ओर सपनों में देखी सुंदरता बिखरी पड़ी है। एक उड़ान भाव— कि आप जहां चाहें जा सकते हैं— एक विद्यमानता कि आप हर जगह मौजूद हैं—एक त्रासहीन सुख का अहसास लगता है दुःख किसी टहनी पर उगा फूल है जो मुरझा गया है और मुरझाने के बाद कब का मिट्टी में मिल चुका है।

दरवाजे के भीतर पहुंचकर लगा है अभी और दरवाजे हैं। मैं आप लोगों के चेहरे की ओर देखने लगा हूं। हां— आप सबके चेहरे मेरे जाने-पहचाने हुए हैं। पर यह क्या हुआ कि हम सबके भवितव्यों से दुःख नामक चीज गुम हो गयी है।

अब तो कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कोई बुद्ध थे जो पेड़ के नीचे बैठे थे— और वहीं एक कठोर तपस्या के बाद उन्हें निर्वाण की अनुभूति हुई थी। वह निर्वाण जैसे एक दुहराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ सत्य था। अमौलिक और पार्थिव। पृथ्वी पर ऐसी ही चीज उगती है जिसे बार-बार उगना होता है . . . पर दरवाजे के भीतर हवा की खनक में भी एक मौलिकता है। वह स्वर एक अर्निवच सुख और प्रतीति कराता है— जैसे सतत कोई राग हो . . . .

ओह ! आपके चेहरों को देखकर ही मुझे लगा कि इसमें तो वह आदमी भी है जिसने शादी के बीस साल बाद अपनी बीबी को धक्का मारा था। हां— धक्का— प्राण ले लेनेवाला धक्का। वह पैसेवाले बाप का इकलौता बेटा था। उसे एक गरीब लड़की भा गयी। और उसने आदर्शों का खोल ओढ़ उससे शादी कर ली। लड़की को लगा उसे स्वर्ग मिल गया। सुरक्षा और दैवगुण संपन्न पति। फिर हालत बदली उसकी पत्नी की सबसे छोटी बहन की शादी हुई— बदले हालात में उस लड़की को खूब दहेज मिला। और. . . पति ने सोचा उसने जब शादी की थी तब उसे तो कुछ हासिल नहीं हुआ था। आदर्शों की सख्त केंचुल से एक सांप निकला तभी . . . और उसने गुस्से में अपनी पत्नी को धक्का दिया— कहा "तेरे बाप ने मुझ-जैसे हीरे को कुछ नहीं दिया. . . कुछ नहीं दिया।" बीस साल बाद पत्नी की आंखों के सामने हीरा कोयला पड़ चुका था. . . . अरे वही आदमी अब दरवाजे के भीतर आ गया है।

उर्बीदत्त प्रेसवाला भी। उसने तीन शादियां की थीं। बारह बच्चे पैदा किये. . . और इस्तरी करते-करते उसके हाथ इस्तरी का एक हिस्सा बन गये। लाला गणपतराय की तरह जो सुबह प्रार्थना करते और शाम को हाथ की बोतल सामने रखकर अपनी थकान उतारते. . . इस भीड़ में कितने लोग अंदर आ घुसे हैं . . . मुझे मालूम नहीं. . . मेरी आंखें तो बंद हैं।

भगवान बुद्ध जीवक के कान में कुछ कह रहे हैं। अब भगवान की मूर्ति अपनी बंद आंखों से तमाम मुल्कों में लोगों को कुछ दिखा रही है। कुछ का मतलब. . . सिर्फ उत्सव न मान लीजिए। मेरी इच्छा हुई अपनी कमीज का कुछ हिस्सा दूं और उत्सव में ढीले होते वस्त्रों के अनावृत हिस्से ढक दूं। तभी मुझे नंग-धड़ंग-जैसे बौद्ध भिक्षुक कहते मिले, 'हमारा नंगापन प्राकृत है लेकिन तुम्हारा नंगापन कपड़ों से ज्यादा उजागर होता है. . .'

बंद आंखों के भीतर के दृश्य तो मैं देख रहा हूं। न जाने कौन-सी चीज है— शायद स्मृति का सूत्र कि मैं अपने सामने खड़े लोगों का अतीत भी देख रहा हूं— और उस अतीत में जब मैं उन्हें देखता हूं तो मुझे अविश्वास-सा होता है। अविश्वास कि इतने हाड़-मांस के लोग तकलीफों के इस लंबे असहनीय रास्ते से गुजरे होंगे।

वह पल्लेदार— वह दो-ढाई मन की बोरियां उठाता है। एक-के-बाद-एक, सौ से भी ज्यादा। बस पसीने से लथपथ वह फिर भी हंसे जा रहा है। हठयोग से भी कठिन योग है यह— पर न उसे निर्वाण मिलता है— न सिद्धि। न चमत्कारी शक्ति।

और यहां वे सब लोग इच्छाहीन हो गये हैं। ठीक देवताओं की कतार में खड़े। दरवाजे के क्रम के बाद एक कुआं है. . . मैं कुएं से डरता हूं। हां, बचपन में मैं एक दिन सीढ़ियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान ?

कभी आपने ग़ौर किया है कि सड़क पर दौड़ते यह बुज़ुर्ग ६० बरस की उम्र में भी क्यों शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर हैं? जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थके-थके से रहते हैं.

इसका जवाब है, केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो छोटे चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर)–अनमोल तत्त्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए. ज़ाफ़रान की लुभावनी खुशबुएँ सबसे पहले आपका स्वागत करेंगी. शुद्ध, असली ज़ाफ़रान. दुनिया की सब से महँगी जड़ी-बूटियों में से एक, जिसे ख़ास तौर से कश्मीर की वादियों से चुना गया.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के अरोग्यकर और सौंदर्यवर्धक गुणों के साथ-साथ ताज़ा आँवला और कई दूसरी जड़ी-बूटियाँ मिली हुई हैं. यह सब मिलकर आपके शरीरगठन को मज़बूत करते हैं. शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त बनाए रखते हैं और आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी के तनावों से आपको मुक्त रखने में आपकी मदद करते हैं. तो आज ही से इसे अपनी आदत बना लीजिए. और जीवनभर बीमारियों से मुक़ाबला करने की शक्ति जुटा लीजिए. वृद्धावस्था में सेहत का अनमोल रत्न आप भी पा लेंगे, और सारी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी से भरपूर तरो-ताज़ा रहेगी.

झंडु
केसरी जीवन

ZP/8/173

ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुएं में उतर गया था। वर्जित कुएं में। और वहां पानी में डूबी सीढ़ियों से ऊपर को एक सीढ़ी में आदमी का कंकाल पड़ा था। क्या हम सब कंकाल हो जाएंगे। नहीं, नहीं, नहीं. . . अब मैं आंख नहीं खोल पाऊंगा तो इन दरवाजों से बाहर नहीं निकल पाएंगे। मैं आंख इसलिए नहीं खोल पाऊंगा कि मेरे जिस्म के कण-कण में अब वह ताकत बाकी नहीं कि मैं उस वास्तविकता का सामना कर पाऊं— जो दुनिया में है और दुनिया की शक्तियों के कारण ही वह ऐसी ही है शक्तिशाली और अमानवीय और बलघाती। और मैं अपनी बंद आंखों से ही देखता हूं कि कितने ही लोग हैं धरती पर जिनकी आंखें यों तो खुली हैं पर कितनी ही चीजों से उन्होंने वे बंद रखी हुई है। उन्हें गरीब, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अभाव, अशिक्षा, रोग, भीख मांगते लोग, बूढ़े, अपाहिज. . . दीखते ही नहीं हैं. . . वे मौलिक और देवकोटि के लोग आज भी आलीशान मकानों से निकल, अपनी कारों में बैठ जाते हैं पर अपने ड्राइवर की आंख की विवशता नहीं देखते. . . . मैं आंख नहीं खोल पाऊंगा और आप भी जो दरवाजे के भीतर हैं, यहीं बंद रहेंगे। बंद आंखोंवाले कौन होते हैं ? अंधा कह देने से भी हम अपराध से मुक्त नहीं हो सकते। हमने तो खुद ही कुछ चीजों से अपनी आंखें बंद की हुई हैं।

कहीं भी अवसर पा बंद होने की अभ्यस्त आंखें. .). क्या यह दुहराना नहीं है ? अभ्यास तो दुहराव ही है। क्या यह दुहराव अनंत काल तक चलेगा. . . कब. .). . कब. . .),) खुलेंगी आंखें. . . . ?

— ३-ए/११ डब्लू. ई. ए.
नयी दिल्ली-११०००५

फुटबाल के १२५४ मैचों में १२१६ गोल करनेवाले खिलाड़ी का नाम पेले है।

●

मात्र एक ही धातु है जो द्रव्य अवस्था में रहती है। वह है—'पारा'। अगर इसे ठोस अवस्था में लाना हो तो —३९'सी तामपान में रखना पड़ेगा। तभी यह ठोस अवस्था में रह पाएगी।

●

किसी जंतु की जीभ उसके अपने शरीर से भी लंबी हो सकती है, तो वह है—नीलगिरि के जंगलों में पाया जानेवाला गिरगिट। शरीर की लंबाई मात्र ४५ से. मी. और जीभ १.२५ मीटर लंबी।

●

मछलियों में केवल एक ही मछली है जो पानी के बाहर भी जीवित रहती है और उसका नाम है—ईल।

●

विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान है—सहारा रेगिस्तान जो कि उत्तरी अफरीका में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ८३,२०,००० वर्ग किलोमीटर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चाहता तो आसानी से सत्ता हथिया सकता था !

● अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र

बाल्मीकीय-रामायण में यवद्वीप की समृद्धि और स्थिति का वर्णन प्राप्त होने से भारतीयों का यवद्वीप-विषयक ज्ञान अत्यंत प्राचीन सिद्ध होता है। सीतान्वेषण के संदर्भ में वानरराज सुग्रीव, विनत नामक यूथपति को सुदूर-पूर्व में जाने का आदेश देते हुए कहते हैं—

यत्रवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम् ।
सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णकरमण्डितम् ।।३०
यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वत :
दिवं स्पृशति शृङ्गेण देवदानवसेवितम् ।। ३१
—वाल्मीकि ● किष्किंधा ●

वाल्मीकि-युगीन यवद्वीप के सात राज्य कौन थे ? इस विषय में कुछ कह सकना कठिन है। परंतु ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं साहित्यिक उद्धरणों से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में ब्रह्मदेश (वर्मा) को 'सुवर्णभूमि' तथा सुमात्रा, जावा, बाली आदि को 'सुवर्णद्वीप' कहा जाता था। यूनानी ग्रंथ पेरिप्लस तथा बौद्ध ग्रंथ लंकावतारसूत्र तथा महावंश में इन प्रशांतमहासागरीय द्वीपों की विश्वसनीय पहचान की गयी है। टालेमी के भूगोल (द्वितीय शती ई.) में भी इन द्वीपों की विस्तृत चर्चा उपलब्ध है।

यवद्वीप अथवा जावा-सुमात्रा के ठीक पूर्व में है। पूर्व और पश्चिम में अपने नाम के ही अनुरूप यव (जौ) के आकार में फैला यह द्वीप ईसा की प्रारंभिक शती से पंद्रहवीं शती के अंतिम चरण तक भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य, राजनीति एवं जीवन पद्धति का अमोघ-प्रहरी रहा है। इस डेढ़ हजार वर्षों में जावा के अनेक चक्रवर्ती सम्राटों ने मनु, इक्ष्वाकु, राम और युधिष्ठिर-सरीखा अक्षय-यश प्राप्त किया। उन्होंने अथाह सागर की विस्तृत छाती पर अपने दिग्विजयी जहाजी बेड़ों से सैन्य-अभियान संपन्न किये और चम्पा (वियतनाम) कम्बोज, अयुथ्या (थाईलैंड) तुङ्गुङ्गपुर (बोर्नियो) मलयु तथा श्रीविजय (सुमात्रा)—जैसे दूरवर्ती देशों को भी अपने आधीन किया। महाकवि प्रपञ्च-प्रणीत नागरकृतागम में प्रस्तुत सम्राट हयम वुरुक राजसनगर (सन १३५०-८९) का दिग्विजय-वर्णन इसका साक्षी है।

एरलंग ' विष्णु का अवतार

जावा का प्रारंभिक कुछ शतियों का इतिहास अभी भी अंधकार में है। परंतु सातवीं शती के अंत से उसका राजनीतिक स्वरूप स्पष्ट होने लगता है। मध्य जावा के मतराम सामाज्य (सन ७३२-१०४९) सञ्जय, बलितुंग, दक्षोत्तम, शिण्डोक तथा एरलंग-जैसे प्रतापी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजमद : अपनी सूझबूझ एवं कर्त्तव्य-निष्ठा के कारण महामात्य के पद तक पहुंचनेवाला एक साधारण सैनिक ! गजमद मजपहित साम्राज्य के भाग्य का सूत्रधार था। वह चाहता तो आसानी से सम्राट बन सकता था, लेकिन पद के लोभ से सर्वथा मुक्त गजमद ने सम्राट के वशंजों की सेवा और सहायता को ही अपना परम कर्तव्य समझा।

सम्राट हुए। एरलंग के संबंध (सन १०१०-४९) विलग (कलिंग) आर्य, गोल (गौड) कर्णाटक, चोलिक, मलयल, पाण्डिकिर (पाण्डर तथा चेर) तथा द्रविड़ सरीखे भारतीय राजवंशों से भी थे। जावा तथा वाली की परंपरा में एरलंग विष्णु का अवतार माना गया है। उभयत : लक्ष्मी से युक्त गरुड़वाही विष्णु को सम्राट की राजमुद्रा में अंकित किया गया था।

पूर्वी जावा का कडिरी-साम्राज्य (सन १०५०-१२२२) तथा सिंहसारि-साम्राज्य (सन १२२२ से १२९२) अवांतर युग में जावा का श्री-वैभव बढ़ाता रहा। कडिरी के कामेश्वर, जयमय तथा कृतजय और सिंहसारि के जयविष्णुवर्धन तथा कृतनगर (सन १२५४-९२) संस्कृत साहित्य, धर्म, दर्शन तथा बौद्धतंत्र के महान उन्नायक रहे। प्रंबनान तथा पनतरन के अद्भुत हिंदू-मंदिर इन नरपतियों की अक्षय-कीर्ति के साक्षी हैं। कृतनगर, बौद्ध सुभूतितंत्र का प्रकांड पंडित था। मृत्यु के बाद उसे 'शिवबुद्ध' के रूप में जनता पूजने लगी। वह शैव तथा बौद्ध आगम का समन्वय बिंदु था।

जावा का मजपहित साम्राज्य

जावा के हिंदू-साम्राज्यों में अंतिम था मजपहित-साम्राज्य (सन १२९४-१४७८) जिसकी राजधानी कडिरी और सिंहसारि से और पूर्व में ब्रांतस नदी के तट पर मजपहित अपना तिक्तबिल्व (मजा=बिल्व, पहित=तिक्त) नगर में केंद्रित थी। इस वंश का अंतिम महान सम्राट हयम बुरुक अथवा राजसनगर (सन १३५०-८९) था, जो महान दिग्विजयी, विद्याव्यसनी तथा प्रजावत्सल था। उसके साम्राज्य में पूर्वी-जावा का राज्य उत्तर में फिलिपींस, पूर्व में न्यूगिनी, दक्षिण में आस्ट्रेलिया तथा पश्चिम में अंदमान निकोबार तक व्याप्त हो गया।

महामात्य गजहमद अथवा गजमद इसी महान सम्राट का स्वामिभक्त सेवक था, जो न केवल राजसनगर बल्कि उससे भी पूर्व की दो पीढ़ियों तक मजपहित-साम्राज्य की सेवा करता रहा। वस्तुतः मजपहित-साम्राज्य को विश्वविश्रुत बनाने तथा उसकी संपूर्ण समृद्धि का सारा श्रेय महामात्य गजमद को है, जिसने जीवन के पचास वर्ष अर्पित कर दिये। मजपहित के योग-क्षेम के लिए ! गजमद में अपार शौर्य-पराक्रम, दुर्लभ राजनिष्ठा तथा स्पृहणीय विद्वत्ता की त्रिवेणी विद्यमान थी। उसे महाप्राज्ञ चाणक्य, हरिषेण, वत्सराज तथा यौगंधरायण-सरीखे महान भारतीय महामात्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की श्रेणी में रखा जा सकता है, जो अपने चारित्रिक गुणों के कारण, अपने आश्रयदाताओं की तुलना में कहीं अधिक लोकप्रिय एवं विख्यात रहे।

महामात्य गजमद

महामात्य गजमद के राजनीतिक जीवन के ५० वर्षों का संबंध मजपहित-वंश के तीन शासकों से जुड़ा हुआ है—जयनगर (सन १३०९-२८) साम्राज्ञी गायत्री (सन १३२८-५०) तथा सम्राट राजसनगर अथवा हयम वुरुक (सन १३५०-८९) राजसनगर के ही शासनकाल में वृद्ध गजमद का निधन हुआ सन १३६४ में। इस महान स्वामिभक्त महामात्य के निधन से सम्राट इतना व्यथित हुआ कि उसने उसके स्थान पर कोई दूसरा महामात्य नियुक्त ही नहीं किया।

मजपहित-साम्राज्य के संस्थापक कृतराजस जयवर्धन (सन १२९४-१३०९) की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जयनगर 'सुंदरपाण्ड्यदेवाधीश्वर वित्तमोत्तुङ्गदेव' की उपाधि के साथ राज्यासन पर आसीन हुआ। परंतु शासनसूत्र संभालते ही इस अनुभवहीन सम्राट् को अपने पिता के ही सामंतों का घोर विरोध एवं विद्रोह सहना पड़ा। विपत्ति की इस घड़ी में एक बहादुर तथा स्वामिभक्त सैनिक के रूप में सर्वप्रथम गजमद सम्राट के संपर्क में आया।

विद्रोह और दमन

सन १३०९ में प्रधान-आमास न बनाये जाने के कारण रंग लवे नामक सामंत ने तुबान में विद्रोह कर दिया। जयनगर ने रंग लवे को समूल उन्मूलित कर दिया। तब तक सन १३११ में सेरा ने और सन १३१४ में उसके एक अन्य मित्र गजह वीरू ने विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। सम्राट ने स्वामिभक्त सैनिकों की सहायता से इन्हें भी नष्ट किया। सन १३११ में ही, एक और प्राचीन-सामंत वीरराज, जो चुपचाप विद्रोह की तैयारी कर रहा था, रोगग्रस्त होकर मर गया। सम्राट् जयनगर ने चैन की सांस ली और प्रसन्न-मन से अपने नाना सम्राट् कृतनगर की मृतक-समाधि (मंदिर अथवा चंडी) का निर्माण 'पतपन' में कराया।

इन समस्त विद्रोहों के शमन में युवा गजमद ने सम्राट् जयनगर की अदभुत रक्षा की। इसी बीच उसके वास्तविक भाग्योदय का एक और अवसर आया। कुटि नामक सामंत, जो वीरराज, सेरा तथा रंग लवे की ही तरह मजपहित-साम्राज्य का पुराना शुभचिंतक था, साथ ही साथ शासनसूत्र में अत्यंत सम्मानित सात 'धर्मपुत्रों' में से एक था, अचानक सन् १३१९ में बगावत पर उतर आया। यह विद्रोह इतना गोपनीय तथा घातक था कि सम्राट् को प्राणरक्षा के लिए राजधानी मजपहित छोड़कर भागना पड़ा। सम्राट् जयनगर अपने स्वामिभक्त सैनिक गजमद के नेतृत्व में संगठित मात्र १५ अंगरक्षकों के साथ, घनी अंधियारी रात में राजभवन से भागकर बडंडेर नामक स्थान में पहुंचा। राजधानी तथा राजमहल पर विद्रोही सामंत कुटि का अधिकार हो गया।

इस संकट में मजमद ने अद्भुत सूझ-बूझ से काम लिया। सम्राट् को बडंडेर में व्यवस्थित कर वह सवेरा होते ही रोता-बिलखता मजपहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटा, यह कहते हुए कि कुटि के सैनिकों ने सम्राट् जयनगर का वध कर डाला। इस समाचार से विद्रोही कुटि और उसके अनुयायी तो आनंद-उल्लास में डूब गये परंतु सम्राट् के लिए शोकसंतप्त हो उठी।

जब गजमद को मंत्रियों तथा प्रजाजनों का यह मनोभाव ज्ञात हो गया तब उसने धीरे से मंत्रियों के कान में सम्राट् जयनगर के 'सुरक्षित बचे रहने' का समाचार कह दिया। इतना सुनना था कि एक स्वाभाविक मंत्री ने नंगी तलवार से कुटि का तत्काल वध कर डाला। सम्राट् जयनगर पुनः पूरी प्रतिष्ठा के साथ राजभवन में उपस्थित हुआ।

अपनी इस सूझ-बूझ से सैनिक गजमद कुछ ही घंटों में सारी राजधानी में बहुचर्चित हो उठा। मजपहित की जनता की आंखों में अब वह 'सम्राट् अथवा राजवंश का प्राणदाता' मान लिया गया। अनेक कवियों की लेखनियां गजमद को अपना कथानायक चुनने लगीं।

राज्यपाल पद पर नियुक्ति

इस महान सेवा तथा स्वामिभक्ति के लिए कृतज्ञ सम्राट् जयनगर ने गजमद को समुचित पुरस्कार दिया। जावी ऐतिह्यग्रंथ 'पररतों' के अनुसार सम्राट् ने सन १३२१ में उसे 'कहुरिपन' (कृतनगरयुगीन जंगल-राज्य जिसकी राजधानी सिंहसारि थी) का गवर्नर (पतीह) नियुक्त किया। दो वर्ष बाद ही वह 'दह' (कृतनगरयुगीन पंजलु-राज्य जिसकी राजधानी दह, दहन अथवा कडिरी थी) का 'पतीह' (राज्यपाल) बना दिया गया। सन १३३१ तक गजमद अपार मान, यश और प्रतिष्ठा के साथ दह-राज्य को संरक्षण देता रहा। इस अवधि में भी वह सम्राट् जयनगर का सर्वाधिक प्रीतिभाजन, विश्वासपात्र सखा बना रहा। उसके प्रयत्नों से ही मजपहित साम्राज्य का भविष्य एकदम निष्कंटक हो गया था। उसकी लोकप्रियता, सैनिकों पर उसका असीम प्रभाव तथा उसके व्यक्तिगत साहस, पराक्रम एवं गुणों के कारण अब कोई सम्राट् के विरुद्ध सोच भी नहीं सकता था। १३२२, २५, २६ एवं २७ में गजमद के ही प्रयत्नों से जावी राजदूत चीन-सम्राट् के पास गये। अंतिम दूत मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३२८ में चीन-सम्राट् से भेंट-सामग्री लेकर मजपहित लौटा।

परंतु इसी बीच राजवैद्य तंच ने सम्राट के फोड़े की शल्यक्रिया के बहाने उसका वध कर डाला। यह घटना सन १३२८ की है। इस हत्याकांड के संदर्भ में अनेक जनश्रुतियां जावा तथा बाली में प्रचलित हैं। एक परंपरा के अनुसार सम्राट 'जयनगर' अपनी सौतेली बहन से ही विवाह करना चाहता था ताकि उससे विवाह करनेवाला कोई अन्य व्यक्ति शासन-सूत्र का अधिकृत प्रत्याशी न बन सके। परंतु उसके इस 'पापकर्म' का दरबार और जनता में घोर विरोध हुआ, जिसकी परिणति उसके वध में हुई। दूसरी परंपरा के अनुसार सम्राट ने राजवैद्य तथा धर्मपुत्र पदों पर आसीन तंच की पत्नी के साथ अभद्र आचरण किया था, जिससे क्रुद्ध हुए तंच ने अवसर पाते ही सम्राट का वध कर डाला। बाली-द्वीप की परंपरा में सम्राट का अभद्र आचरण स्वयं गजमद की पत्नी के साथ माना जाता है। सम्राट की हत्या का समाचार सुनते ही गजमद राजधानी आ पहुंचा और उसने राजवैद्य तंच का तत्काल वध करके, चारों ओर शांति स्थापित की।

सर्वसम्मति से दिवंगत सम्राट् कृतनगर की पुत्री (जो मजपहित-संस्थापक कृतराजस जयवर्द्धन की पटरानी तथा जयनगर की विमाता थी) महारानी गायत्री को साम्राज्ञी-पद पर नियुक्त किया गया। परंतु चूंकि तब तक राजपत्नी गायत्री संसार से विरक्त होकर बौद्धभिक्षुणी बन चुकी थी अतः उसके नाम पर, उसकी पुत्री गीतार्जा (गीतार्या) 'त्रिभुवनोत्तुंगदेवी विष्णुवर्धिनी' (सन १३३० का शिल [illegible] पाव के [illegible] संचालन करने लगी।

परंतु इस समय मजपहित-साम्राज्य का भाग्यसूत्र पूर्णरूप से गजमद के हाथ में था। वह किसी भी सम्राट अथवा साम्राज्ञी से कहीं अधिक विश्वसनीय तथा आदरपात्र था। वह चाहता तो बड़ी सरलता से स्वयं सम्राट बन जाता इस अवसर पर! शायद जावा की जनता को भी उसका सम्राट बनना अच्छा लगता। परंतु चरित्रवान गजमद ने ऐसा नहीं किया। हां यह अवश्य हुआ कि अब वह विधिवत महामात्यपद (महापतीह) पर नियुक्त कर दिया गया। सन १३३१ में सन १३२८ से १३५० तक त्रिभुवनोंतुंग देवी विष्णुवर्धिनी ने राज्य किया। सन १३३० में उसने चक्रधर अथवा चक्रेश्वर नामक श्रेष्ठ क्षत्रिय-सामंत से विवाह किया, जिसे विवाहानंतर 'कृतवर्धन' नाम तथा 'सिंहसारि का कुमार' उपाधि साम्राज्य की ओर से दी गयी। सन १३३४ में कुमार हयम व्रुरुक का जन्म हुआ, जो जावा के संपूर्ण इतिहास में एक युगनिर्माता सम्राट बना।

दिग्विजय का श्रीगणेश

महापतीह गजमद इस समय ख्याति एवं प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा पर था। महामात्य बनते ही उसने मजपहित की दिग्विजय प्रारंभ कर दी। पररतों में गजमद द्वारा जीते गये द्वीपों में गुरुजन, सेरन, तुंजुङपुर (बोर्नियो) हरु, पहङ, डोंपो, बाली, सुंड, पालेम्बङ तथा तुमसिक के नाम गिनाये गये हैं। चीन के साथ गजमद ने संबंध और दृढ़ किये तथा सन १३३२ में एक 'सुवर्णपत्र' के साथ उसने तिरासी व्यक्तियों का एक 'शिष्ट मंडल' चीन-सम्राट के पास भेजा।

बाली द्वीप जावा का निकटतम पूर्वी द्वीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। चिरकाल से ही बाली अपनी संप्रभुता, साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्परा एवं कला के लिए प्रख्यात रहा। सन १२८४ में सिंहसारि-सम्राट कृतनगर ने पहली बार बाली-द्वीप पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। परंतु सन १२९२ में कृतनगर की मृत्यु होते ही बाली पुनः स्वतंत्र हो गया था।

महामात्य गजमद ने सन १३४३ में पुनः बाली पर आक्रमण किया और भयानक संग्राम में तेंगनान-सम्राट बेदौलु को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। बाली मजपहित-साम्राज्य में विलीन कर लिया गया।

सन १३५० में साम्राज्ञी गायत्री की मृत्यु हो गयी। उसे कडिरी प्रांत में 'भयालंगो' के समीप 'विशेषपुर' में समाधि दी गयी। 'प्रज्ञापारमिता' के रूप में उसे शिल्पकारों ने मूर्ति में अंकित किया। अपनी मातामही (नानी) की मृत्यु के बाद सन १३५० में राजकुमार हयमवुरुक मात्र सोलह वर्ष की अवस्था में मजपहित के विशाक्त-साम्राज्य का प्रशासक नियुक्त हुआ। उसका शासकीय नाम 'तिक्तबिल्वनगरेश्वर श्री राजसनगर' था। अर्जुनविजय के लेखक महाकवि तन्तुलर ने उसे 'राजस-राज्य' तथा 'संघयंग वेकास इंग-सुख' कहा। इसी प्रकार उसे हयम वुरुक, भटारप्रभु, रदेनतेतेप तथा म्वू जनेश्वर (शैव) आदि संज्ञाएं भी प्राप्त हुईं।

'पृथ्वी पर स्वर्ग'

राजसनगर तथा गजमद के मणिकांचन संयोग ने मजपहित-साम्राज्य को 'पृथ्वी पर स्वर्ग' बना दिया, जिसका आंखों-देखा वर्णन राजकवि प्रपंच ने नागरकृतागम में प्रस्तुत किया है। सम्राट राजसनगर उदय से मध्यान्ह की ओर बढ़ रहा था और महामात्य गजमद

मध्याह्न से अस्ताचल की ओर! फ़िर भी गजमद की परिपक्व राजनीति तथा राजनिष्ठा ने राजसनगर के मजपहित-साम्राज्य को १४ वर्षों तक अपार संबल एवं निबधि स्थायित्व प्रदान किया जब तक कि सम्राट् तीस वर्ष का युवा अनुभवी प्रशासक नहीं हो गया।

गजमद को मजपहित-साम्राज्य की प्रतिष्ठा का कितना ध्यान था? इसका एक ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। सन १३५७ में, जब सम्राट् राजसनगर तेईस वर्ष का था, सुंड (वर्तमान जकार्ता-प्रांत) का पजजरन-नरेश अपनी कन्या का विवाह कुमार के साथ करने स्वयं मजपहित आया। महामात्य गजमद से उसका विवाद भी विचित्र था! सुंडरेश चाहता था उसे मजपहित के समकक्ष माना जाय। परंतु महामात्य गजमद एक अधीनस्थ नरेश के ही रूप में उसकी कन्या, अपने सम्राट के लिए ग्रहण करने के पक्ष में था। इस विवाद के फलस्वरूप युद्ध में पजजरन-नरेश को प्राणों से हाथ धोना पड़ा। राजकन्या का विवाह राजसनगर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

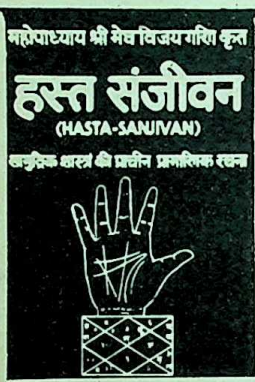

हस्त संजीवन
(हिन्दू पामिस्ट्री)

* हिन्दू पामिस्ट्री (सामुदायिक शास्त्र)
* हाथ से जन्मकुण्डली बनाने की सरल विधि एवं अन्य उपयोगी विषय
* यह पुस्तक अधिक समय से अप्राप्त थी।
* सरल हिन्दी, श्लोकों एवं चित्र सहित

फोन : 278835 पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगायें
पृष्ठ 192 मूल्य 40 रुपए 8 रु. डाक व्यय अलग

तंत्र मंत्र की प्रामाणिक पुस्तकें
(सरल, रोचक शैली में)

* तंत्र शक्ति—डा. त्रिपाठी — 20 रुपये
* मंत्र शक्ति—डा. त्रिपाठी — 15 रुपये
* यंत्र शक्ति—
  (2 भाग) " " प्रत्येक — 20 रुपये
* शावर तंत्र शास्त्र — 30 रुपये
* हिन्दू तंत्र शास्त्र — 30 रुपये
* मनोकामना पूरक मंत्र — 21 रुपये
* रहस्यमयी गुप्त विद्यायें — 30 रुपये
  (यंत्र मंत्र तंत्र)
* अलौकिक शक्तियों की साधना — 30 रुपये

रंजन पब्लिकेशन्स,
16, अन्सारी रोड, नई दिल्ली-110002

साथ, पिता की मृत्यु के बाद, संपन्न हुआ।

सन १३६५ में सम्राट के राजकवि प्रपंच द्वारा लिखित ऐतिहासिक ग्रंथ नागर कृतागम में उसके अधीनस्थ जनपदों में मलायु (सुमात्रा) के चौबीस, तंगजुंगपुर (बोर्नियो) के तेईस, पहंग (मलयेशिया) के सोलह तथा पूर्व-दिशा के इकतीस द्वीपों का नाम गिनाया गया है। इस विशाल दिग्विजय का सारा श्रेय क्रोम, फेरंड एवं मजूमदार आदि आधुनिक इतिहासकारों ने महामात्य गजमद को ही दिया है।

सन १३६४ ई. में जब मजपहित-साम्राज्य का यह 'भीष्मपितामह' पचास वर्षों की अनवरत पराक्रम-यात्रा के बाद सब दिन के लिए अस्त हो गया तो 'अकेले' गजमद का कार्य सम्राट् को सात व्यक्तियों को सौंपना पड़ा। इससे गजमद के प्रति सम्राट् की श्रद्धा तो प्रकट होती ही है, गजमद की कार्यक्षमता का भी बोध होता है। गजमद के स्थान पर स्थापित 'भटार-सप्तप्रभु' में सम्राट् स्वयं, माता-पिता, चाचा-चाची और उसकी दो बहनें सम्मिलित थीं। यही 'सप्तप्रभु' महामात्य का दायित्व निबाहते थे।

प्राचीन जावी भाषा का प्रख्यात नीतिग्रंथ 'कूटारमानव' गजमद की ही कालजयी कृति है, जिससे महामात्य का अगाध शास्त्रज्ञान प्रकट होता है। वर्तमान इंडोनेशिया राष्ट्र के अनेक द्वीपों तथा नगरों में गजमद के पवित्र नाम को किसी-न-किसी रूप में जीवित रखा गया है। जावा की गजमद यूनिवर्सिटी (योग्यकर्ता) जालान (मार्ग) गजमद, बाली के राजधानी डेन पसार का केंद्रविंदु 'गजहमद' इसका जीता-जागता प्रमाण है।

—विजिटिंग प्रोफेसर (संस्कृत)
उदयन यूनिवर्सिटी, डेनपसार, बाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारतकालीन नगर अहिच्छत्र के भग्नावशेष

● डॉ. राकेश कुमार अग्रवाल

समय में गति और गति में परिवर्तन निहित है। इस परिवर्तन से ही उत्थान-पतन का चक्र चलता है। इस चक्र की गति में कितने ही नगर बसे और ध्वस्त हो गये जिनके भग्नावशेष वैभव की कहानी अपने में समेटे हुए शनैः-शनैः मिटते जा रहे हैं।

उत्तरप्रदेश में बरेली जिले की आंवला तहसील में रामनगर गांव के सामने अहिच्छत्र के किले के ध्वंसावशेष अनेक ऊंचे-ऊंचे टीलों तथा ध्वस्त दीवारों के रूप में लगभग ५ वर्ग किमी. के घेरे में फैले हुए वैभव और पतन की कहानी कह रहे हैं। अहिच्छत्र नगर लगभग ८४ वर्ग किमी. की परिधि में फैला हुआ था जिसके मुख्य दरवाजे के अवशेष सेपनी तहसील शाहबाद में तथा अन्य दरवाजों के अवशेष आंवला व रेटुआ में हैं। अन्य खंडहर नशतर गंज (कटारी खेड़ा), जगन्नाथपुर, रामनगर आदि गांवों में हैं।

प्राचीन काल में इस वृहत्तर क्षेत्र में दो संस्कृतियां पल्लवित हुईं। एक यमुना नदी की दिशावाली संस्कृति, कुरु संस्कृति और दूसरी रामगंगावाली संस्कृति-पांचाल संस्कृति। कुरु संस्कृति का उद्‌गम हस्तिनापुर और पांचाल संस्कृति का उद्‌गम अहिच्छत्र था। पुराणों के अनुसार राजा भूमिश्व के पांच पुत्रों के लिए राज्य का पांच हिस्सों में विभाजन होने के कारण इसका नाम पांचाल पड़ गया। प्रारंभ में अहिच्छत्र नगर संपूर्ण पांचाल साम्राज्य की राजधानी था। कालांतर में यह दो भागों में विभक्त हो गया— उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पांचाल। दक्षिणी पांचाल की राजधानी काम्पिल्य बनी जबकि उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र ही रही।

बदलते नामों के प्रसंग

इस नगर के उदय से लेकर अंत तक इसके अनेक नामों का उल्लेख मिलता है। कालांतर में बनते-बिगड़ते नामों की सार्थकता के संबंध में अनेक प्रसंग भी जुड़े हुए हैं।

भीम शिला (भीम गदा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास की गति में जंगलों में से नगरों का उदय होता है फिर समय के क्रूर प्रहार से वे ध्वस्त होकर पुनः जंगल में बदल जाते हैं। यही विधि का क्रम है। सैकड़ों वर्षों से उपेक्षित अहिच्छत्र के भग्नावशेष इसी क्रम में तेजी से जंगल में बदलते जा रहे हैं।

अब तक किये गये प्रत्येक बार के उत्खनन से निश्चित ही अहिच्छत्र के इतिहास का कोई-न-कोई नया पृष्ठ अनावृत हुआ है। अतः इन ध्वंसावशेषों के गर्भ में दबे हुए इतिहास को प्रकाश में लाये जाने की महती आवश्यकता है।

आदि कोट : एक जनश्रुति के अनुसार यह नगर सर्वप्रथम राजा 'आदि' ने बसाया था जो अहीर जाति का था। एक दिन बाल्यकाल में यह राजा भूमि पर सोया हुआ था। उस समय एक सर्प उसके ऊपर छाया कर रहा था। इस दृश्य को उधर से गुजरते हुए पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य ने देखा और भविष्यवाणी की कि यह बच्चा एक दिन इस प्रदेश का राजा बनेगा। उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और बड़ा होकर वह इस प्रदेश का राजा बना। उसी के नाम पर इस प्रदेश का नाम आदिकोट पड़ा।

परिचक्रा : ऋग्वेद शतपथ ब्राह्मण में इस नगर के नाम का उल्लेख 'परिचक्रा' के रूप में मिलता है। एक अनुमान के आधार पर संभवतः यह नगर गोलाकार परिधि के घेरे में था जिस कारण इसका उपर्युक्त नाम पड़ा।

द्रुपद नगर : महाभारतकाल में द्रोपद पांचाल के राजा हुए। उनके नाम पर उस काल में इसका नाम द्रुपद नगर था।

अहिच्छत्र : एक किंवदंती के अनुसार राजा आदि जिन्होंने इस नगर का निर्माण कराया था, अहीर जाति के थे और सर्प ने उन पर कृपा की थी तथा इस क्षेत्र में अहीरों का बाहुल्य था जिस कारण इसका नाम अहिच्छत्र पड़ा।

एक संभावना के अनुसार ईसा पूर्व ८वीं शती के लगभग यहां नाग राजाओं का राज्य था। उस समय यह महानगरी संख्यावती, शंखावति या शंखावई के रूप में विख्यात थी और जैन धर्म का प्रमुख केंद्र थी। तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ विहार करते हुए यहां पहुंचे और ध्यानलीन हो गये। इस अवस्था में संवरदेव जो उनके पूर्व जन्म का बैरी कमठ था, ने आकाश मार्ग से जाते हुए उन पर ईंट, पत्थर और पानी बरसाया जिससे नागराज धरणेन्द्र और उनकी पत्नी पद्मावती ने छत्राकार होकर उनकी रक्षा की। अहि (नाग) द्वारा छत्र बनाये जाने के कारण इसका नाम संख्यावती से बदलकर अहिच्छत्र, अहिच्छत्रा या अहिच्छेत्र हो गया। महाभारत में इसके नाम का उल्लेख अहिच्छत्र व छत्रवती के रूप में मिलता है। हरिवंश पुराण एवं पाणिनी की अष्टाध्यायी में इसका नाम 'अहिच्छेत्र' व 'अहिच्छत्र' है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्खनन से प्राप्त पार्वती का सिर (राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली)

विभिन्न शिलालेखों व सिक्कों आदि पर भी इसका नाम अहिच्छत्र प्राप्त होता है।

कालचक्र की रचना में अहिच्छत्र

वैदिक संदर्भों में संयुक्त पांचाल के अनेक राजाओं का उल्लेख मिलता है। नद्राश्व, दिवोदास एवं सुदास-जैसे प्रसिद्ध राजाओं के अतिरिक्त नील, सुबाति, पुरूजान, ऋश्रू, भूमिश्व, मुद्गल, बृदाश्यव, मित्रायु, सृंजय, चावन च्यवत, सहदेव सोमक जन्तु आदि राजाओं ने संयुक्त पांचाल पर राज्य किया।

राजा जन्तु संयुक्त पांचाल का अंतिम राजा था। इसके बाद यह जनपद दो भागों में विभाजित हो गया। महाभारत से पूर्व उत्तरी पांचाल पर भीष्म के पिता शांतनु के समकालीन राजा द्रिमीठ का राज्य था जिसको राजा उग्रायुज अटायुज ने मारकर उत्तरी पांचाल पर अधिकार कर लिया। कुछ समय के उपरांत द्रिमीठ के पुत्र प्रषत ने राजा शांतनु की सहायता से उग्रायुज अटायुज को हराकर पुनः अपना राज्य प्राप्त कर लिया। प्रषत की मृत्यु की बाद द्रुपद उत्तरी पांचाल का राजा बना जिसने अपने पराक्रम से दक्षिणी पांचाल पर भी अधिकार कर लिया। द्रोपदी का स्वयंवर इस काल में अहिच्छत्र नगर में ही हुआ था जिसमें अर्जुन ने खौलते हुए तेल में देखकर मछली को भेदा था। उस समय पांडव अज्ञातवास के दौरान इसी क्षेत्र में एक ब्राह्मण के यहां रह रहे थे। पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य ने अपने पुराने अपमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बदला लेने के लिए द्रुपद को परास्त कर उत्तरी पांचाल से उसका अधिकार छीन लिया। उत्तरी पांचाल पर राज्य करते हुए द्रोणाचार्य ने महाभारत के युद्ध में अपने पुत्र अश्वत्थामा के साथ कौरवों का साथ दिया और राजा द्रुपद ने पांडवों का।

महाभारत के बाद उत्तरी पांचाल पर नाग जाति का प्रभाव बढ़ गया। परीक्षित की मृत्यु का कारण इसी जाति का नेता तक्षक बना किंतु बाद में परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने नाग जाति को समाप्त कर अपना अधिकार कर लिया। जनमेजय के बाद आदिवंश के २६ राजाओं ने स्वतंत्र राज्य के रूप में इस पर राज्य किया जिसमें से हरिषेण, ब्रह्मदत्त, दो राजाओं के नामों का उल्लेख क्रमशः जैन व बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। महापद्मनन्द के काल में यह राज्य मगध साम्राज्य में मिला लिया गया।

मौर्यकाल में अहिच्छत्र मौर्य राजाओं के हाथों में आ गया। चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर अशोक के काल तक यह राज्य खूब समृद्ध रहा। मौर्य साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होते ही यह राज्य पुनः स्वतंत्र हो गया और फिर विभिन्न वंशों ने यहां राज्य किया।

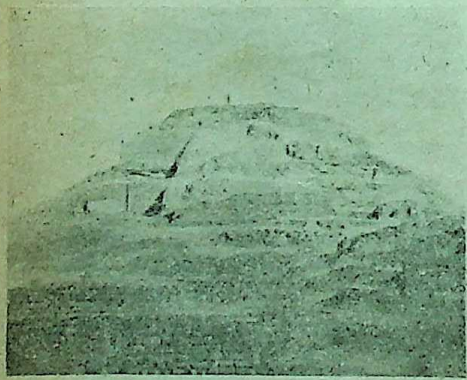

१६० फुट ऊंचा टीला जिस पर भीम शिला (भीम गदा) रखी है

गुप्त वंश के शासकों के राज्य का संकेत यहां खुदाई में प्राप्त सिक्कों से मिलता है। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में यहां रुद्र गुप्त का राज्य था इसके बाद जय गुप्त, दम गुप्त आदि गुप्त राजाओं का राज्य रहा। बाद में शासक वंश का परिवर्तन हो गया। पाल वंश के शासकों का यहां काफी समय तक राज्य रहा जिनमें भागवद् आषाढ़ सेन, विश्वपाल, तथा यज्ञपाल विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए। पाल शासकों से मित्र शासकों ने अधिकार ले लिया। मित्र वंश के १४ राजाओं का ज्ञान खुदाई से प्राप्त सिक्कों से होता है जिनके नाम सूर्य मित्र, विष्णु मित्र, ध्रुव मित्र, अग्नि मित्र, भानु मित्र, भूमि मित्र, जय मित्र, फाल्गुन मित्र, वृहस्पति मित्र, अयु मित्र और प्रजापति मित्र हैं। इन राजाओं ने अपने राज्य का विस्तार सभी दिशाओं में किया। विभिन्न स्थानों से खुदाई में प्राप्त सिक्कों से इसकी पुष्टि होती है। इस वंश ने यहां काफी लंबे समय तक राज्य किया। संभवतः इनके बाद कुछ अन्य राजाओं ने यहां राज्य किया जो किसी वंश विशेष की श्रेणी में नहीं आते।

चौथी शताब्दी में समुद्र गुप्त का जब अहिच्छत्र पर अधिकार हुआ उस समय यहां का राजा अच्युत था। इस गुप्त वंश ने लंबे समय तक अहिच्छत्र पर शासन किया। गुप्त काल में सब प्रकार से इस क्षेत्र की उन्नति हुई। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद अहिच्छत्र के शासकों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। हर्षवर्द्धन के काल में यह कन्नौज साम्राज्य का अंग बन गया। चीनी यात्री ह्वेणसांग ने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल में इस क्षेत्र का भ्रमण कर अपनी पुस्तक में उत्तर भारत के वैभवशाली नगर के रूप में अहिच्छत्र का उल्लेख किया है। उसके अनुसार उस काल में यहां १० बौद्ध मठ तथा-९ विशाल हिंदू मंदिर थे। उत्खनन में भी बुद्ध की अनेक मूर्तियां तथा बौद्ध धर्म संबंधी काफी सामग्री प्राप्त हुई है।

हर्षवर्द्धन के बाद अहिच्छत्र परिहार वंशी राजपूतों के हाथों में चला गया। इसके बाद राष्ट्रकूट एवं राठौर वंशी राजपूतों के शासन का विवरण मिलता है। महमूद गजनवी के आक्रमण से इस नगर का विध्वंस हो गया। एक अनुमान के अनुसार मूर्तियों का खंडित अवस्था में मिलना इस आक्रमण और महमूद गजनवी की मूर्ति भंजक नीति का परिणाम है। अहिच्छत्र के निवासी आक्रमण के भय से कुछ आंवला व कुछ वोदामयूता (बदायूं) जाकर बस गये। ग्यारहवीं शताब्दी के बाद अहिच्छत्र पर मुगलों का शासन हो गया। एम. जे. हापर के अनुसार गयासुद्दीन तुगलक और मुहम्मद बिन के अधिकार में भी अहिच्छत्र का किला रहा था। इसके बाद यह किला फीरोज तुगलक के हाथों में चला गया। अब तक अहिच्छत्र के सुंदर-सुंदर भवन, परकोटा ढह चले थे। १७४० ई. के लगभग नवाब अली मोहम्मद ने जीर्णोद्धार का प्रयत्न किया था परंतु बाद में इस किले के जीर्णोद्धार के कोई भी प्रयत्न नहीं किये गये जिसका परिणाम खंडहरों के रूप में दिखायी देता है।

उत्खनन से हुआ अनावरण और वर्तमान भग्नावशेष

विगत १५० वर्षों में अहिच्छत्र की भूमि पर अनेक बार उत्खनन कार्य किया जा चुका है। हजारों की संख्या में सिक्के, मूर्तियां, बर्तन, शस्त्रादि अहिच्छत्र के खंडहरों के गर्भ से प्राप्त हुए हैं। सन् १८३३ में सर्वप्रथम अंगरेज खोजकर्ता हेडग्रान ने यहां खुदाई आरंभ की और पिसनारी के उत्तर के नाम से प्रसिद्ध स्तूप को विशेष रूप से अपना लक्ष्य बनाया जिसके विषय में जनश्रुति है कि भीम को जो अन्न पीसकर खिलाया जाता था वह पिसनारी इस स्थान पर पीसती थी।

सन् १८६२-६३ में जनरल कनिंघम ने दूसरी बार यहां उत्खनन के व्यापक प्रयत्न किये। इस खुदाई में किले के अंदर अनेक टीले मिले जिनमें एक टीले की ऊंचाई बाहरी जमीन की सतह से लगभग १६० फुट है जिस पर लगभग ९ फुट ऊंचा और १२ फुट परिधि का एक सफेद पत्थर है जिसके विषय में विभिन्न धारणाएं बनी हुई हैं। थमले के आकार का होने के कारण कुछ लोग इसको किसी भवन के थमले के रूप में स्वीकार करते हैं। एक किंवदंती के अनुसार यह शिवलिंग है जो बज्र प्रहार के कारण ऊपर से टूट गया। कुछ लोग मानते हैं कि बिजली गिर जाने के कारण यह

अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जैन मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटा है। दूसरी जनश्रुति के अनुसार यह भीम गदा है जिसको भीम ने द्रोपदी स्वयंवर की विजय के उपलक्ष्य में यहां छोड़ा था।

दूसरा टीला उपर्युक्त टीले के पास ही पश्चिम में है। इसकी ऊंचाई लगभग ३५ फुट है। यह टीला ऊपर से खोखला है। इस टीले की बनावट विचित्र है। इसमें ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। इसी टीले के समीप मंडल कूप भी निकला है। टीलों में प्रयुक्त ईंटें लगभग १ १/२ फुट लंबी, ९ इंच चौड़ी तथा ढाई इंच मोटी हैं। वर्तमान में टीलों का जो स्वरूप है उससे लगता है कि जीर्णोद्धार के द्वारा पुरानी ईंटों से बनाया गया होगा।

इसी प्रकार के और भी अन्य छोटे-छोटे टीले हैं जो संभवतः मंदिरों, विहारों के ध्वंसावशेष हैं। इन टीलों की खुदाई करने पर जनरल कनिंघम को शिव, बुद्ध तथा कुछ जैन मत की नग्न मूर्तियां भी मिलीं। अशोक का स्तूप तथा अन्य शिलाएं और स्तूप भी खुदाई के द्वारा प्रकाश में आये।

डॉ. फ्यूरर ने सन १८९३-९४ में अहिच्छत्र के उत्खनन का तीसरा कदम उठाया। उन्होंने शैव, बौद्ध और जैन मंदिरों तथा मूर्तियों के संबंध में खोज की। इस संदर्भ में यह तथ्य सामने आया कि कुषाण काल में यहां तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण किया गया था।

सन् १९०५ में भारत सरकार की ओर से पुरातत्व विभाग की स्थापना हुई जिसकी देखरेख में सन् १९४० से ४४ ई. के मध्य जो उत्खनन कार्य हुआ उसमें अनेक कालखंडों के सोने, चांदी, तांबे और पीतल के सिक्के तथा पत्थर एवं काली व पीली मिट्टी की मूर्तियां और बर्तन प्राप्त हुए जिनसे अहिच्छत्र के इतिहास की और अधिक जानकारी मिली। पुरातत्व विभाग की ओर से सन् १९६४-६५ में भी उत्खनन कार्य किया गया जिसके परिणामस्वरूप भीम गदा के दक्षिण पूर्व में एक काफी बड़ा मंडल कूप मिला जो चार भागों में विभक्त है, कुछ हौज तथा स्नानागार की दीवारें भी मिलती हैं। मिट्टी के बाट भी प्राप्त हुए हैं। एक मुंहवाले शिवलिंग व शिव-पार्वती तथा बिना पूंछवाले हनुमान की मूर्तियां भी मिली हैं। भीम गदा के समीप एक छोटा-सा संग्रहालय बना हुआ है जिसमें खुदाई से प्राप्त मिट्टी और पत्थर की मूर्तियां तथा बर्तन रखे हैं। दुर्लभ वस्तुएं लखनऊ व दिल्ली के संग्रहालयों को भेज दी गयीं।

विकास की गति में जंगलों में से नगरों का उदय होता है फिर समय के क्रूर प्रहार से वे ध्वस्त होकर पुनः जंगल में बदल जाते हैं। यही विधि का क्रम है। सैकड़ों वर्षों से उपेक्षित अहिच्छत्र के भग्नावशेष इसी क्रम में तेजी से जंगल में बदलते जा रहे हैं।

अब तक किये गये प्रत्येक बार के उत्खनन से निश्चित ही अहिच्छत्र के इतिहास का कोई-न-कोई नया पृष्ठ अनावृत हुआ है जो अपने आप में एक उपलब्धि है। आवश्यकता है ध्वंसावशेषों के गर्भ से आती आवाज को पहचानकर दबे हुए इतिहास को प्रकाश में लाने की अन्यथा पुरातत्व विभाग की उदासीनता अहिच्छत्र की स्वर्णिम अनुभूति से जनमानस को वंचित रखेगी।

—'हिमदीप' राधापुरी, हापुड़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न बंधन जहां .....

न बंधन जहां, मुक्त मन देखता हूं
तो लगता है, अपना वतन देखता हूं

विहंसता जहां हर सुमन देखता हूं
तो लगता, चमन को चमन देखता हूं

अदब का मिलन, यह कलाओं का संगम
खुशी है कि गंगोजमन देखता हूं

वहां टिक न पाता, घृणा का अंधेरा
जहां प्यार की कुछ किरन देखता हूं

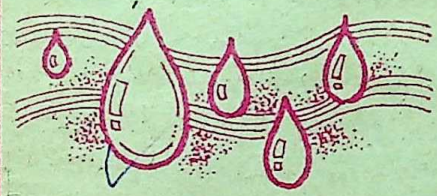

गया मन में मन, प्राण में प्राण घुल-मिल
जहां मैं नयन में नयन देखता हूं

बहुत मुग्ध हो नाचता, जब मयूरा
घिरा बादलों से गगन देखता हूं

हुआ सुर मधुर छू रहा, जो हृदय को
मैं इसमें तुम्हारी छुअन देखता हूं

गजल सुन रहे तुम, गजल कह रहा हूं
मगन हूं, तुम्हें जब मगन देखता हूं

—मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'

६/२०९, हनुमान नगर, लोहिया नगर, पटना-८०००२०
(बिहार)

मैं अस्पृश्य

तिमिर निशा-सा अधखुला उन्नत
गहरी निस्तब्धता में पानी की लहरों-सा स्पंदित
मेरे स्वेदित वक्ष का प्रतिस्पंदन
कुछ और गहराता है
जब दूर से तुम कहीं दिख जाते हो
वो अनछुआ कुंवारा आंचल
निर्लज्ज-सा यूं ही सरक जाता है
और मैं
हिमजड़ित, सर्द, श्वेत-सी
नयनों को हथेलियों के आवरण से ढक
प्रतीक्षा करती हूं
कब तुम लाज से आरक्त मुख को
भर लोगे अपने हाथों में
पर वो अनआया क्षण
कल्पना की पृष्ठभूमि में साकार हो
यूं ही सरक जाता है
और मैं
मौन अश्रु नयनों में सहेजे

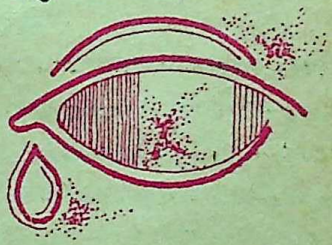

उस शिला पर बाहें टेके
खड़ी रहती हूं
अस्पृश्य
अनखिली
अपूर्ण
अधूरी

—लीना मल्होत्रा

L-३/३ एवर्ग्रीन, हौज खास, दिल्ली-३१,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष सुप्रीम कोर्ट और कंपनी बहादुर का

● गिरीश भण्डारी

भारत की सर्वप्रथम सुप्रीम कोर्ट कंपनी बहादुर के जमाने में स्थापित की गयी थी, जिसने स्थापित होते ही अपने वर्चस्व का सिक्का जमाना शुरू कर दिया। नतीजा हुआ कि कंपनी के एडवोकेट जनरल और सुप्रीम कोर्ट के बीच विवाद और संपूर्ण न्याय-प्रणाली में अव्यवस्था। इस विवाद ने इतना गंभीर रूप धारण कर लिया कि सन् १७८१ में एक अधिनियम पारित करना पड़ा, जिससे इस सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र (ज्यूरिस डिक्शन) को नियंत्रित और नियमित किया जा सके।

हुआ यह था कि सन् १७७३ के प्रसिद्ध रेगुलेटिंग एक्ट के तहत, एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना का प्रावधान किया गया था, जिसमें एक मुख्य न्यायमूर्ति व अन्य पांच न्यायमूर्तियों की नियुक्ति का आदेश था।

इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण बंगाल प्रांत था। इसके पूर्व सदर दीवानी अदालत एवं सदर निजामत अदालतें सर्वोच्च न्यायालयों के रूप में कार्य करती थीं। ये न्यायालय एक लंबी परंपरा के बाद स्थापित व परिपोषित हुए थे।

इंगलैंड से पधारे जज पूर्ण रूप से विलायती थे। रोमन और इंग्लिश कानून के सिद्धांत, पर वे न तो किसी भारतीय भाषा को जानते थे, न यहां की लोक परंपराओं को, न कानूनों को, न सामाजिक मर्यादाओं व लोक व्यवहार को। मैकाले ने इस सुप्रीम कोर्ट की कार्य पद्धति के बारे में लिखा था :—

"इस सुप्रीम कोर्ट के कार्यकाल का उद्देश्य आतंक फैलाना था। आतंक से भी ज्यादा भय फैलाया इसकी रहस्यमय कार्य पद्धति ने। ...इसके द्वारा दिया गया 'न्याय' तो लोगों ने जैसे-तैसे भुगता पर हर किसी के दिल-दिमाग में यह आशंका बनी रहती थी कि पता नहीं, भविष्य में यह क्या गुल खिलाये...। ...किसी को भी अनुमान नहीं होता था कि इस न्यायालय का क्या रुख होगा। सात समंदर पार से आये न्यायाधीश न्याय के लिए आये मनुष्यों की जीवन धारा और उनकी अपेक्षाओं से सर्वथा अपरिचित थे। इसके अभिलेख सात समंदर पार की एक विदेशी भाषा में थे। इसके निर्णय एक पूरी तरह अपरिचित भाषा में थे। विदेशी अत्याचारियों के अत्याचार इस न्यायालय के न्याय के सम्मुख एक वरदान थे...।"

राजा काशीजूड़ा का मामला

मैकाले के उपरोक्त कथन में कुछ अतिशयोक्ति अवश्य है पर वह सत्य से हटकर नहीं। जायजा लीजिये एक घटना का। राजा काशीजूड़ा का मामला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशीजूड़ा के राजा एक बड़े जमींदार थे। उनके खिलाफ एक मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में दायर किया गया कि वे लगान का पूरा-पूरा लेखा-जोखा नहीं रखते हैं और उनके लेखे-जोखे में गड़बड़ियां हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत एक वारंट जारी कर दिया कि राजा को गिरफ़्तार कर उसके सामने पेश किया जाए। गिरफ़्तारी से बचने के लिए राजा साहब छिप गये। जब राजा ही नहीं तो लगान कौन वसूले। फलतः न लगान वसूल किया गया और न जमा किया गया। कलेक्टर ने कंपनी के पास शिकायत भेजी कि राजा काशीजूड़ा सुप्रीम कोर्ट के वारंट की वजह से भूमिगत हुए हैं अतएव सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ कार्रवाई की जाए क्योंकि उसके द्वारा जारी किये वारंट की वजह से, लगान नहीं जमा किया गया है!

कंपनी के एडवोकेट जनरल ने तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स को सलाह दी कि वे राजा साहब को लिखें कि वे बिलुकल भी न घबरायें और न सुप्रीम कोर्ट के सामने जाएं। और न उसका अधिकार अपने मामले में मानें।

यह सुप्रीम कोर्ट की सरासर मानहानि थी। सुप्रीम कोर्ट ने फौरन एक आदेश निकाला कि राजा साहब की संपत्ति जब्त कर ली जाए और उन्हें गिरफ़्तार कर लाया जाए। साठ लोगों का दस्ता इस कार्रवाई को अंजाम देने के लिए भेजा गया। यह पहला अवसर था जब उन्हें अपना जौहर दिखलाने का मौका मिला था उन्होंने राजा साहब की हवेली को घेरकर तूफान मचा दिया। चीजें तोड़-फोड़ डालीं, लोगों को पीटा... और सारी संपत्ति अपने कब्जे में कर लीं।

राजा काशीजूड़ा ने व्यथित होकर कंपनी बहादुर के सामने गुहार लगायी कि 'मैंने तो आपके कहने पर सुप्रीम कोर्ट के पास जाने से इनकार कर दिया था और उसका नतीजा यह निकला... मेरे स्वर्णाभूषण और अन्य कीमती चीजें लूट ली गयीं और बेइज्जती हुई सो अलग...।'

गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने कंपनी की सेना की एक बड़ी टुकड़ी भेजी कि सुप्रीम कोर्ट के द्वारा भेजे साठ सिपाहियों और उनके नायक को गिरफ़्तार कर उसके सामने लाया जाए। सेना ने पहुंचकर फौरन उनको गिरफ़्तार कर लिया। उन सबको कलकत्ता लाकर वारेन हेस्टिंग्स के सामने पेश किया गया।

एक विचित्र स्थिति पैदा हो गयी थी... इधर सुप्रीम कोर्ट ने राजा काशी जूड़ा की गिरफ़्तारी का आदेश दिया था और उधर गवर्नर जनरल ने अदालती कार्रवाई के लिए पहुंचे साठ लोगों को गिरफ़्तार कर लिया था। क्या परिणति हुई संघर्ष की!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रीम कोर्ट को जब इसकी खबर मिली कि यह सारी कार्रवाई कंपनी के एडवोकेट जनरल की सलाह पर की गयी है, तो उसने सिपाहियों का एक और दस्ता भेजा और एडवोकेट जनरल को उसके!घर से गिरफ़तार करवा लिया। इधर जो साठ लोग गिरफ़्तार कर लिये गये थे- उनमें एक थे बाबू काशीनाथ।

बाबू काशीनाथ ने फौरन सुप्रीम कोर्ट के पास एक याचना पत्र भेजा कि कंपनी के सैनिकों ने उन्हें गिरफ़्तार कर वास्तव में सुप्रीम कोर्ट की मानहानि की है, क्योंकि वे लोग तो सिर्फ सुप्रीम कोर्ट की आज्ञा का पालन कर रहे थे... और इस आज्ञा-पालन के बीच ही उनको गिरफ़्तार कर लिया गया।

सुप्रीम कोर्ट ने फौरन गवर्नर जनरल और उसके परिषद के सब सदस्यों के विरुद्ध समन जारी कर दिये उनके व्यक्तिगत नाम से। पहले तो गवर्नर जनरल ने न्यायालय की सम्मान रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट के सामने एक दो बार उपस्थित होना उचित समझा, पर जब उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का रुख कड़ा पाया, तो सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश होने से साफ मना कर दिया। इस तरह एक असाधारण संवैधानिक संकट पैदा हो गया। समूचे बंगाल की कानून-व्यवस्था गड़बड़ा गयी।

इसी बीच सारे मामले की सूचना ब्रिटेन में कंपनी के कोर्ट ऑव डाइरेक्टर्स के पास भेजी गयी। उन्होंने पाया कि सुप्रीम कोर्ट ने अपनी शक्तियों के बाहर जाकर कार्रवाई की है। सन् १७७३ के रेगुलेटिंग एक्ट में प्रदत्त शक्तियां सीमित थीं, और उनका प्रयोग उस प्रकार नहीं किया जा सकता था, जैसा सुप्रीम कोर्ट ने किया था। अंत में सन् १७८१ में एक संशोधन अधिनियम पारित करना पड़ा। इस अधिनियम में सुप्रीम कोर्ट की क्षमता और अधिकार क्षेत्र को ठीक तरह से दिखाया गया था। यह भी प्रावधान था कि गवर्नर जनरल और उसकी परिषद के सदस्यों द्वारा लिये गये किसी भी सरकारी निर्णय के लिए वे लोग व्यक्तिगत रूप से सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र से बाहर होंगे। सबसे मुख्य बात यह कि भारतीयों पर अंगरेजी कानून लागू नहीं होगा। इसके बजाय

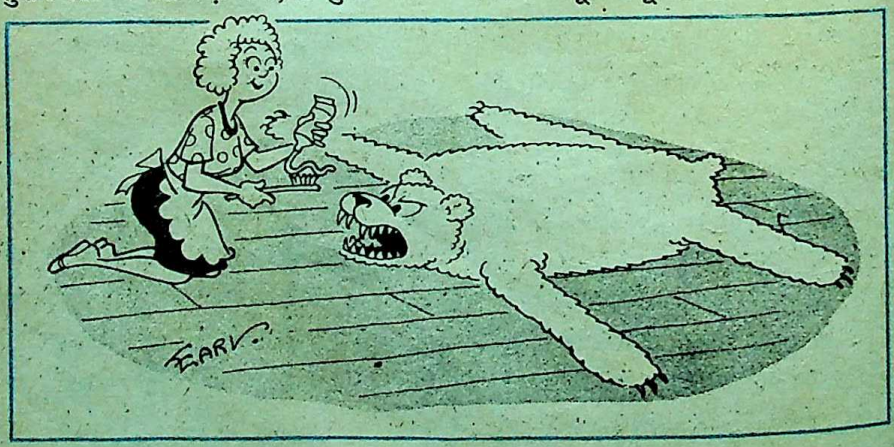

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मामलों में न्याय देते समय उनके अपने कानून, सामाजिक मान्यताओं और परंपरागत नियमों का पालन किया जाएगा।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि हालांकि सन् १७८१ के कानून ने सुप्रीम कोर्ट की शक्ति को बहुत सीमित कर दिया, पर कालांतर में इसी परिसीमा ने सुप्रीम कोर्ट को एक अत्यंत सम्मानित और प्रौढ़ न्यायालय के रूप में स्थापित किया। कारण शायद यह था कि पहले-पहल अधिकारों की परिसीमा का निश्चय न होने से सुप्रीम कोर्ट ने चाहा कि वह न्यायपालिका भी रहे, प्रशासन भी चलाये। जब बाद में प्रशासनिक बोझ को हटा दिया गया, और इसके कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व की सीमा रेखा खींच दी गयी तो इसका स्वरूप एक स्वतंत्र, निष्पक्ष और प्रखर न्यायपालिका की तरह उभरा और इसके निर्णय सर्व सम्मानित हुए।

यह परंपरा सन् १८६१ तक चली। सन् १८६१ में भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम पारित किया गया, जिसके अंतर्गत बंबई, मद्रास व कलकत्ता में उच्च न्यायालय स्थापित किये गये। न्याय परंपरा पोषित, पल्लवित और दृढ़ होती गयी।

...और, इसकी नींव में था वह मुकदमा —'सुप्रीम कोर्ट बनाम कंपनी बहादुर', जिसने सन् १७७३ और सन् १७८१ के बीच बंगाल में न्याय व्यवस्था को ही अस्त-व्यस्त कर दिया था।

—निदेशक
वाणिज्य मंत्रालय नयी दिल्ली

वचन-वीथी

वास्तविक आनंद का आधार हमारे अंतःकरण में ही है।

—सेनेका

प्रभात होने से पूर्व घोर अंधकार होता है।

—फुलर

अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है।

—टॉमसन

सक्रिय अज्ञान से भयावह कुछ नहीं होता।

—गेटे

अविश्वास से बढ़कर एकाकीपन कोई दूसरा नहीं है।

—जॉर्ज इलियट

सौंदर्य के आंसू उसकी मुसकराहट की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं।

—कैम्पबेल

आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम सिर्फ यही तीन जीवन को बल और सबलता प्रदान करते हैं।

—टेनिसन

आनंद का लगातार और अबाधित उपभोग सच्चे ज्ञान का सबसे ज्वलंत और सुस्पष्ट संकेत है।

—मान्तेन

आपत्तियों को पराजित करना ही जीवन के आनंद की पराकाष्ठा है।

—शोपेनहार

आवश्यकता तर्क के सामने नहीं झुकती।

—गैरीबाल्डी

किसी के प्रदान करने का ढंग उपहार से अधिक उपहार देनेवाले के चरित्र को बताता है।

—लेब्रेटर

वार्तालाप बुद्धि को मूल्यवान् बना देता है, परंतु एकांत प्रतिभा की पाठशाला है।

—गिबन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री कैसा होना चाहिए ?

शर शैया पर, सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा करते हुए भीष्म पितामह से युधिष्ठिर ने पूछा था—'पितामह छोटे से छोटा काम भी अकेले किसी की सहायता के बिना करना कठिन हो जाता है। फिर राजा का कार्य तो बिना दूसरे की सहायता लिये बिना हो ही नहीं सकता। इसलिए मंत्री का होना आवश्यक है। अब आप बताइए, राजा का मंत्री कैसा होना चाहिए। उसका स्वभाव और आचरण किस तरह का हो, कैसे व्यक्ति पर विश्वास किया जाए और कैसे पर नहीं।'

उत्तर में भीष्म पितामह ने उन्हें राजा के चार प्रकार के मित्र बताये थे। पिछले अंक में पाठकों ने मित्र और अमित्रों की पहचान के संबंध में भीष्म पितामह के विचार जाने। इस अंक में प्रस्तुत है मंत्री के गुण-दोषों के संबंध में युधिष्ठिर को उनका उपदेश। यह प्रसंग शांति पर्व से लिया गया है।

भीष्मजी कहते हैं—ऊपर जो बतायी गयी है, वह राजनीति की पहली वृत्ति है ; अब दूसरी सुनो। जो भी मनुष्य राजा की आर्थिक उन्नति करे, उसकी राजा को सदा रक्षा करनी चाहिए। यदि मंत्री खजाने से धन की चोरी करता हो और कोई सेवक या तटस्थ मनुष्य इस बात की सूचना देने आवे तो उसकी बात एकांत में सुननी चाहिए और मंत्री से उसकी रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि धन हड़पने वाले मंत्री अक्सर ऐसे लोगों को मार डालते हैं। खजाना लूटनेवाले लोग एकमत होकर उसके रक्षक को कष्ट देते हैं ; यदि राजा की ओर से उसकी रक्षा का प्रबंध नहीं हुआ, तो वह बेचारा बेमौत मारा जाता है। इस विषय में कालकवृक्षीय मुनि और कौसल्यराज के संवादरूप प्राचीन इतिहास का लोग उदाहरण दिया करते हैं। सुना है कि एक बार कोसल देश के राजा क्षेमदर्शी के यहां एक कालकवृक्षीय नाम के मुनि पधारे। वे बंद पिंजड़े में एक कौआ लिये राज्य का सम जोड़ने के लिए उस राजा के राज्य में कई चक्कर लगा चुके थे। घूमते समय वे लो कहते थे—'सज्जनो ! तुम लोग भी कौ विद्या सीखो ; मैंने सीखी है, इसलिए कौ भूत और भविष्य की बातें बता दिया करते इस प्रकार घोषणा करते हुए वे बहुत लो साथ राज्य में घूमते फिरे। उस समय उ राजकार्य में नियत किए हुए कर्मचारियों बहुत-सी अनुचित कार्रवाइयां देखीं। रा सभी व्यवसायों-पर उन्होंने दृष्टि डाली उसकी असलियत का पता लगाया। जो के धन का अपहरण करते थे, उनको भी लिया। इसके बाद वे कौए को साथ लेकर से मिलने आये और बोले मैं इस राज्य की बातें जानता हूं।' सबसे पहले वे राजम जाकर बोले—'मेरा कौआ कहता है अमुक स्थान पर अमुक काम किया है, र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत एक ऐसा ग्रंथ है, जो भारत की जनता में बहुत लोकप्रिय है । इस ग्रंथ के बहुत से प्रसंगों से लोग भली-भांति परिचित हैं । लेकिन इस ग्रंथ के कुछ प्रसंग ऐसे भी हैं, जिन्हें आम भारतीय जनता नहीं जानती । यहां प्रस्तुत हैं, महाभारत के कुछ ऐसे ही अनछुए प्रसंग ।

खजाने से चोरी भी की है, इस बात को अमुक-अमुक व्यक्ति जानते हैं । इसलिए शीघ्र ही राजा के पास चलकर अपराध स्वीकार करो ।' इसी तरह उन्होंने और कई आदमियों से कहा, उन लोगों ने भी खजाने से चोरी की थी । वे सबसे कहते थे, 'मेरे कौए की कोई भी बात आज तक झूठी नहीं सुनी गई । तुम लोग अवश्य अपराधी हो ।'

इस प्रकार जब मुनि ने राजकर्मचारियों का तिरस्कार किया, तो सबने मिलकर मुनि के सो जाने पर रात में उनके कौए को मरवा डाला । सवेरे उठने पर जब उन्होंने देखा कि मेरा कौआ पिंजड़े में बाण से बिंधकर मरा पड़ा है, जो राजा क्षेमदर्शी के पास जाकर कहा—'राजन ! आप प्रजा के प्राण और धन के स्वामी है, मैं आप से अभय की याचना करता है ; यदि आज्ञा हो तो मैं आपके हित की बात बताऊं ।' राजा ने कहा—'विप्रवर ! मैं अपनी हित चाहता हूं और आप मेरे हित की ही बात कहने वाले हैं, ऐसी दशा में क्षमा क्यों नहीं करूंगा ? मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके कहे अनुसार कार्य करूंगा ; आप जो कुछ कहना चाहते हों, बेखटके कहें ।'

मुनिने कहा—आपके कर्मचारियों में से कौन अपराधी है और कौन निरपराध-इस बात का पता लगाकर तथा आप पर सेवकों की ओर से भय आनेवाला है—यह जानकर प्रेमपूर्वक राज्य का सारा समाचार बताने के लिए आपके पास आया हूं । नीतिज्ञ पुरुषों का कहना है कि जिसका राज्य के साथ उठना-बैठना होता है, उसका विषैले सांपों के साथ सहवास समझना चाहिए ? क्योंकि राजा के जहां बहुतेरे मित्र हैं, वहां बहुत-से दुश्मन भी होते हैं । राजा के पार्श्ववर्तियों को उन सबका भय होता है । स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा से भी उन्हें क्षण-क्षण में खतरा रहता है। जो अपना भला चाहता हो, उसे राजा के पास कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। जैसे जलती हुई आग के पास मनुष्य सचेत होकर जाता है, उसी तरह शिक्षित पुरुष को राजा के पास सावधानी के साथ रहना चाहिए। राजा प्राण और धन-दोनों का स्वामी है ; वह जब क्रोध करता है, तो विषधर सांप के समान भयंकर हो जाता है। अतः सेवकों को अपनी जान हथेलीपर लेकर बड़े यत्न से राजा की सेवा करनी चाहिए। मुंह से बुरी बात न निकल जाए, खड़े रहते, उठते, बैठते, चलते और इशारा करते समय कोई बेअदबी न हो जाए तथा शरीर से कोई कुचेष्टा न प्रकट हो जाए,—इन सब बातों के लिए सदा सतर्क रहना चाहिए। राजा को यदि प्रसन्न कर लिया जाए, तो वह देवता की भांति संपूर्ण मनोरथ सिद्ध कर देता है और यदि कुपित हो गया तो आग की भांति जड़-मूलसहित भस्म कर डालता है।

मेरे-जैसा मंत्री आपत्तिकाल में बुद्धि द्वारा सहायता देता है। राजन् ! आपको पता नहीं, मेरा यह कौआ आपके ही कार्य में मारा गया है। किंतु इसके लिए मैं आपको और आपके प्रेमियों को दोष नहीं दे सकता ; आप खुद अपने हित और अहित को पहचानिए। स्वयं राजकीय कार्यों को देखिए दूसरों की देख-भाल पर विश्वास न कीजिए। जो लोग आपके ही घर में रहकर आपका खजाना लूटते हैं, वे प्रजा की भलाई चाहने वाले नहीं है ; उन्हीं लोगों ने मेरे साथ वैर बांध लिया है। जो आपका विनाश करके इस राज्य को हड़प लेना चाहता है, वह इसके लिए अंतःपुर में आने-जानेवाले नौकरों से मिलकर कोई षडयंत्र करने की फिक्र मे है। ऐसा ही करने से उसका काम बनेगा, अन्यथा नहीं। अतः आपको सावधान हो जाना चाहिए। मैं कोई कामना लेकर यहां नहीं आया था, तो भी षड्यंत्रकारियों ने कपट करने की इच्छा से मेरे कौए को मार कर यमलोक पहुंचा दिया। यह बात मुझे अपने तपोबल से मालूम हुई है। जैसे हिमालय की कंदरा में ठूंठ, पत्थर और कांटे होते हैं, उसके भीतर सिंह और व्याघ्रों का निवास होता है और इन्हीं सब कारणों से उसमें प्रवेश करना तथा रहना कठिन हो जाता है, उसी प्रकार दुष्ट अधिकारियों के कारण इस राज्य में भी किसी का रहना मुश्किल है। इस स्थान पर रहने में भलाई नहीं है, यहां अच्छे और बुरे की एक-सी गति है। पापी और पुण्यात्मा (अपराधी और निरपराध) दोनों के ही मारे जाने का अंदेशा है। न्यायतः तो पापी को दंड मिलना चाहिए और पुण्यात्मा कुछ भी नहीं बिगड़ना चाहिए। मगर इस राज्य में ऐसा नहीं होता, अतः यहां रहना ठीक नहीं है। समझदार मनुष्य को जल्दी ही यहां से खिसक जाना चाहिए। सीता नाम की एक नदी है, जिसमें नाव ही डूब जाती है ; ऐसा ही आप के यहां की राजनीति भी है। इसमें मेरे-जैसे सहायकों के भी डूबने की आशंका है। मैं तो इसे सबको नष्ट करनेवाली एक प्रकार की फांसी ही समझता हूं।

राजन् ! आपने ही जिन्हें मंत्री बनाया, आपने ही जिनका पालन किया, वे आपसे ही मिलकर आपके हित का नाश करना चाहते हैं। मै राजा के साथ रहनेवाले अधिकारियों का शील-स्वभाव जानना चाहता था, इसलिए बहुत

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

सुगन्धित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल, आज भी अव्वल

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूमना और बूबना का गौना कराकर ले जाता हुआ जलाल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया : आनंद आचार्य

शंकर-पार्वती के आशीर्वाद से पुनर्जीवित बूबना और जलाल

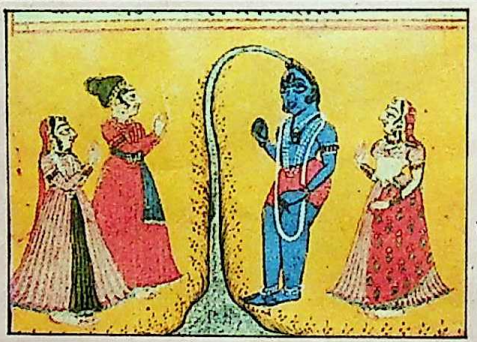

बूबना को मृत पाकर जलाल का प्राण-त्याग (नीचे)

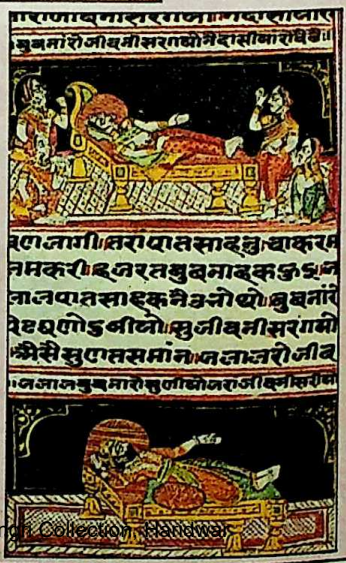

वीरभूमि राजस्थान, जहां के कण-कण से तलवारों की खनखनाहट सुनायी पड़ती है, वहीं प्रेमी हृदयों के निश्वास-प्रश्वास, अपने हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हुए प्रतीत होते हैं। आत्माभिव्यक्ति मानव का स्वभाव है और जब यह अभिव्यक्ति प्रेम की हो तो कितनी मधुर हो उठती है, इसका अनुभव राजस्थान की प्रेमकथात्मक लोकगाथाओं को सुनने से स्वतः ही हो जाता है। राजस्थान की लोकजातियां इन प्रेमी हृदयों की भावनाओं को शब्द और संगीत दे कर अत्यंत हृदयद्रावक बना देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमगाथाओं के सरस और मधुर गायक

● प्रेरणा शर्मा

गायक जातियां शास्त्रीय रागों में निबद्ध इन प्रेमगाथाओं के सरस और मधुर अंशों को काफी तन्मयता से सुनाती हैं। ढोला-मारू की अभिव्यक्ति राग मारूविहाग में होती है। जलाल-बूबना जैसलमेरीमांड में, सोरठी गाथा सोरठ राग में तथा नागजी, मूमल आदि गाथाएं राजस्थानी मांड में गायी जाती हैं। सहज गेय दोहों में रची गयी इन गाथाओं में काव्य और संगीत का अनुपम संगम है। ये प्रेमगाथाएं जोधपुर के आस-पास बसनेवाली जातियों द्वारा ही विशेष रूप से गायी जाती हैं। इन गायक जातियों में 'लंगा' जाति प्रमुख है। गायकी इन्हें परंपरा से प्राप्त है।

जलाल-बूबना

इस प्रेमगाथा में नायक जलाल और नायिका बूबना की कथा है। बूबना के नखशिख वर्णन, प्रेम और विरह के दोहे ही इस गाथा में अधिक गाये जाते हैं। इस गाथा को राग मांड में गाया जाता है।

कथा के अनुसार मृगतमायची थटाभरवर का बादशाह था। उसकी बहन का विवाह बलख के बादशाह कुलनहसीब से हुआ था। कुछ समय उपरांत कुलनहसीब की मृत्यु होने पर मृगतमायची की बहन अपने दोनों पुत्रों के साथ मृगतमायची के पास आ गयी। उसने बहन को आदरपूर्वक रखा और भानजों का पालन-पोषण किया।

मृगतमायची का छोटा भानजा जलाल बहुत होनहार था। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो उसने अपने मामा से बाहर जाने की आज्ञा मांगी। बादशाह के मना करने पर उसने कहा, "यदि आप मुझे अपने पास रखना चाहते हैं, तो मेरे स्तर के अनुसार पद और धन देकर, जो चाहें काम मुझसे लें।" प्रसन्न होकर बादशाह ने जलाल को बहुत कुछ दिया और वह राज्य में ही रहने लगा।

उस समय सिंध का राजा भंवर था। उसके दो पुत्रियां थीं। बड़ी का नाम मूमना तथा छोटी का नाम बूबना। बूबना अत्यंत सुंदर थी। राजा भंवर अपनी बड़ी पुत्री मूमना का विवाह मृगतमायची से तथा छोटी पुत्री बूबना का जलाल के साथ करना चाहता था। इसी आशय से उसने मृगतमायची के पास काजी को भेजा। लेकिन मृगतमायची ने काजी को धन देकर बूबना का टीका स्वयं के लिए व मूमना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जलाल के लिए करा लिया।

इस प्रकार जलाल का विवाह बूबना से न हो सका, उसका विवाह मूमना से हुआ और बूबना उसकी मामी हो गयी। कुछ दिनों बाद राजा ने धूमधाम से अपनी दोनों पुत्रियों को जलाल के साथ विदा किया। मार्ग में बूबना ने जलाल से कहा कि यद्यपि, भाग्यवश उसका विवाह मृगतमायची से हो गया है, पर वह तन-मन से जलाल की ही है।

मूमना और बूबना को लेकर जलाल थटाभरवर पहुंचा। मृगतमायची बूबना के रूप को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बूबना के लिए झील के बीचों-बीच पृथक महल बनवा दिया। परंतु उसे उससे मिलने का अवसर वर्ष में एक बार ही मिल पाता था क्योंकि, उसकी और भी अनेक बेगमें थीं।

जलाल बूबना की एक झलक पाने के लिए दिनभर उसके झरोखे की ओर देखा करता था। जब बूबना को अपनी दासी द्वारा यह मालूम हुआ, तो वह अपनी बहन से मिलने के बहाने जलाल के महल में गयी। इस प्रकार बहुत दिनों बाद दो प्रेमियों का फिर से मिलन हुआ।

कुछ दिनों बाद बूबना ने जलाल को श्रावणी तीज के दिन अपने महल में आने का संदेश भेजा। जलाल वहां गया और वहां वह तीन दिन और तीन रात बूबना के साथ रहा। इस बीच कुछ लोगों ने बादशाह को इस बात की खबर पहुंचा दी। बादशाह तत्काल बूबना के महल में आया। बूबना ने जलाल को झटपट फूलों के ढेर में छिपा दिया। बादशाह जलाल को वहां न पाकर संतुष्ट हो गया। इसके बाद रात्रि में रेशम की रस्सी के सहारे जलाल बूबना के महल से नीचे उतर आया।

इसी प्रकार दोनों प्रेमी बादशाह की नजर बचाकर एक-दूसरे से मिलते रहे। लेकिन बादशाह का शक उस दिन विश्वास में बदल गया, जब जलाल ने बूबना से मिलने के लिए उसके महल के एक प्रहरी की हत्या कर दी। बूबना के कहने पर बादशाह ने जलाल को छोड़ तो दिया, परंतु मन ही मन उसने जलाल को मारने का निश्चय कर लिया।

एक दिन जलाल को लेकर बादशाह शिकार खेलने के लिए गया और वहां से अपने एक विश्वस्त सेवक द्वारा बूबना के पास जलाल की अचानक मृत्यु की झूठी सूचना भिजवा दी। खबर सुनते ही बूबना तत्काल मर गयी। लौटने पर जब जलाल ने बूबना की मृत्यु की खबर सुनी, तो वह भी तत्काल मर गया। बादशाह ने दोनों को एक ही कब्र में दफना दिया।

एक दिन भगवान शंकर और पार्वती उधर से जा रहे थे। कब्र पर मंडराते भ्रमरों को देखकर पार्वती ने शंकरजी से पूछा कि बिना पुष्पों के ये भ्रमर कैसे? तब शंकरजी ने जलाल द्वारा प्रयुक्त इत्र तथा बूबना के प्रति उसके प्रेम की बात पार्वतीजी को बतायी। जलाल-बूबना के असामयिक निधन को सुनकर पार्वतीजी करुणा विगलित हो गयीं। उन्होंने भगवान शंकर से प्रेमीयुगल को पुनः जीवित करने की याचना की। इस पर भगवान ने दोनों को जीवनदान दिया। जलाल को जीवित देखकर बादशाह भय से मर गया। उसके बाद जलाल बादशाह बना और बूबना के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।

जलाल-बूबना गाथा मुसलिम संस्कृति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा है।

इस लोकगाथा का मूलभाव प्रेम की तीव्रता है। अतएव वियोग श्रृंगार, संयोग श्रृंगार एवं करुणा भावों का उन्मेष गाथा में हुआ है—

सासू पूछै हे बहू, तोहि न आवै लाज
काल सिवायो कांचलो, सो क्यों फाट्यो आज

विरह वर्णन गाथा में परंपरानुसार है। जलाल के विरह में बूबना का यह कथन दृष्टव्य है—

ओ हो उजली रातड़ी किण दुसमण दी बाल
पड़ी जलूं मैं भवन में, प्रीतम बिन बेहाल

शंकर-पार्वती का आगमन और उनके द्वारा जलाल-बूबना को पुनर्जीवन देने का वर्णन लोकमानस की धार्मिक सहिष्णुता और औदात्य का द्योतक है। गाथा में भाग्य को ही कथा का मूल आधार बनाया गया है, क्योंकि बूबना के पिता ने उसके लिए जलाल को चुना था, पर भाग्यवश ही ऐसा न हो सका। इससे लोकमानस का भाग्यवादी होना स्पष्ट है। इस गाथा में स्पष्ट किया गया है कि प्रेम का मार्ग उन्मुक्त है। इस मार्ग में बाधाएं अवश्य आती हैं, पर इसके कारण प्रेमी अपने प्रेम को त्याग नहीं सकता। प्रेम नियम और बंधनों से परे है। जलाल बूबना के इसी प्रेम-प्रवाह में गायक और श्रोता दोनों मग्न हो जाते हैं।

ढोला-मारू लोकगाथा

प्रचलित लोकगाथा कुछ इस प्रकार है। नवरगढ़ के राजा नल की रानी दमैती ने एक सुंदर पुत्र (ढोला) को जन्म दिया। उसी समय पूगल देश के राजा पिंगल की रानी के गर्भ से भी एक अत्यंत सुंदर कन्या (मारवणी) का जन्म हुआ। पिंगलराजा अपनी रानी और अबोध पुत्री के साथ पुष्कर तीर्थ गये। पुत्र-प्राप्ति के उपलक्ष में राजा नल पहले से ही वहां उपस्थित थे। ढोला की माता दमैती को मारवणी बहुत पसंद आयी। उसने ढोला के लिए मारवणी को मांग लिया। शुभ मुहूर्त में स्वर्णथाल में बिठा कर दोनों शिशुओं का विवाह कर दिया गया। तदंतर दोनों राजा अपने-अपने राज्य को चले गये।

समय व्यतीत होता गया। अब ढोला सोलह वर्ष का युवक हो चुका था। लेकिन उसे अपने शैशव में हुए विवाह का स्मरण नहीं था। राजा नल ने भी ढोला को इस संबंध में कुछ न बताकर उसका विवाह मालव देश की राजकन्या मालवणी से कर दिया। सुंदरी मालवणी ने अपने रूप और यौवन से ढोला को पूर्णतः वशीभूत कर लिया। मालवणी अपने सौंदर्य पर गर्वित थी। मालवणी के इस गर्व को भंग करने के लिए ढोला की मां ने उससे ढोला के प्रथम विवाह की चर्चा कर दी। जब मालवणी को यह विदित हुआ, तो वह अत्यंत चिंतित हुई और उसने चारों दिशाओं के मार्गों पर अपने सेवकों को नियुक्त कर उन्हें आदेश दिया कि पूगल से आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को बिना कुछ पूछे मार दिया जाए।

उन्हीं दिनों एक अश्व-विक्रेता नवरगढ़ से पूगल गया। वहां उसने ढोला के दूसरे विवाह की चर्चा की। जब यह बात मारवणी तक पहुंची तो वह ढोला के विरह से व्याकुल हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमगाथाएं तो सभी जगह पायी और गायी जाती हैं, लेकिन राजस्थान की प्रेमगाथाओं का कोई जवाब नहीं। राजस्थान के परंपरागत गायक सहज गेय दोहों में रची काव्य और संगीत की इन अनुपम गाथाओं को शास्त्रीय रागों में निबद्ध कर गाते हैं, तो अजीब ही समां बंध जाता है।

गयी। जब पुत्री के विरहग्रस्त होने की बात राजा पिंगल तक पहुंची तो वह चिंतित हो उठा। लेकिन नवरगढ़ के चारों मार्ग मालवणी के अधिकार में थे, इसलिए राजा पिंगल के सामने समस्या उत्पन्न हुई कि ढोला तक संदेश कैसे पहुंचाया जाए ? अंत में बहुत सोच-विचारकर राजा पिंगल ने इस कार्य के लिए कुछ ढ़ाढ़ियों को नियुक्त किया। वे किसी प्रकार मार्गरक्षकों को प्रसन्न कर नवरगढ़ पहुंचे और ढोला के भवन के नीचे बैठकर रात्रि भर मारू (मारवणी) की विरहगाथा गाते रहे। सुनकर ढोला बहुत प्रभावित हुआ। उसने गायकों को अपने भवन में बुलाया, तब ढ़ाढ़ियों ने मारू की विरहव्यथा ढोला से कह दी। ढोला मारवणी से मिलने को व्याकुल हो उठा और एक रात मौका पाकर ढोला तीव्रगामी करहे (ऊंट) पर सवार हो पूगल देश जा पहुंचा। और अपनी मारवणी से जा मिला।

ढोला कुछ समय पूगल में व्यतीत कर मारू को साथ लेकर अपने देश के लिए रवाना हुआ। मार्ग में जब ढोला-मारू विश्राम कर रहे थे, तब एक पीवण सर्प ने मारू को डंस लिया। लेकिन भगवान शंकर और पार्वती ने वहां प्रकट होकर मारू को जीवनदान दिया। ढोला-मारू सकुशल नवरगढ़ पहुंचे। ढोला दोनों पत्नियों के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहने लगा।

'ढोला-मारू' राजस्थान की लोकप्रिय प्रेमगाथा है। इसमें ढोला का विवाह, मारवणी का वियोग अत्यंत स्वाभाविकता से वर्णित हुआ है। पति को वश में करनेवाली मालवणी का इठलाना स्वाभाविक ही है—

ढोला मोह्यो मालवि, ज्यूं मधुकर वयणेह
बहुवां मन लागो इसो, सारीखे सयणेह

मालवणी व्याकुल हो गयी, जब वह ढोला को चिंतित देखती है, तो उसे संदेह होता है—

मनह संकाणी मालवणी, प्रिय कांई चलचित्त
कह मारवणी सुधि सुणी, कह का नवलीक
सज्जन हरख न बोलिया, मुझसों रीझा अज
का थे उमण दूमणा, कहोस के बड़ कज

इससे प्रतीत होता है कि नारी चाहे अपने प्रति प्रेम को न समझे, पर अपने प्रति अन्यमनस्कता को अवश्य ही समझ लेती है।

गाथा में मारू का विरह-वर्णन भी मार्मिक है। गाथा में मुख्य रस वियोग श्रृंगार है जो संपूर्ण अंगों सहित मूर्तिमान हुआ है।

नागजी-नागवंती

राजस्थानी प्रेमगाथाओं की शृंखला में नागजी-नागवंती अत्यंत कोमल कड़ी है। कथा में कच्छ राज्य पर जाखड़े नामक धर्मात्मा राजा राज्य करता था। उसके नागवंती नामक अत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपवती कन्या थी। कच्छ के पड़ोसी राज्य में राजा धौलवाले राज्य करता था। उसके नागजी नामक एक वीर पुत्र था।

एक बार भाटियों ने राजा धौलवाले के राज्य पर आक्रमण किया। युद्ध में नागजी ने भाटियों को परास्त किया। लौटते समय वे अपने राज्य की सीमा पर जहां राजा जाखड़े के खेत आरक्षित थे, रहने लगे। वहां नागजी की भाभी परमलदे उन्हें भोजन कराने जाती है। नागवंती भी परमलदे के साथ खेत पर जाने लगी। एक दिन वहां चौपड़-पासे का खेल हुआ, नागजी नागवंती एक साथ बैठे तथा परमलदे के साथ एक दासी बैठी। खेलते समय नागवंती का वस्त्र वायु में उड़ गया। नागवंती का निर्वस्त्र सौंदर्य देखकर नागजी मूर्छित हो गये। जब उनकी चेतना लौटी तो उन्होंने भाभी से कहा कि उनका विवाह नागवंती के साथ करा दे। परमलदे ने एक ब्राह्मण को बुलाकर गुप्त रूप से दोनों का विवाह करा दिया। विवाह के बाद नागजी-नागवंती नित्य खेत पर मिलने लगे। माघ के महीने में पिता की आज्ञा पर नागजी को घर लौटना पड़ा। नागवंती विरह की कल्पना से ही विकल हो गयी। नागजी ने नागवंती को धीरज धराया और अपनी राजधानी लौट पड़े।

राजधानी लौटने के बाद नागजी नागवंती के विरह में मलिन रहने लगे। उधर नागवंती भी विरह में दुखी थी। नागजी के गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर चिकित्सा के लिए अनेक वैद्य बुलाये गये, लेकिन उनमें से कोई भी नागजी को ठीक नहीं कर सका। नागवंती अपने महल के झरोखे पर आकर नित्य दोहे गाती थी। एक दिन एक यात्री वैद्य ने सुन लिया। उसने नागजी की शैया एकांत में लगवायी और नागवंती को गुप्त रूप से वहां बुलवाया। नागजी-नागवंती का मिलन हुआ। वे साथ ही सो गये। राजा जाखड़े और राजा धौलवाले एक साथ नागजी को देखने आये और नागजी व नागवंती को एक साथ सोते देख क्रोध से भड़क उठे।

राजा जाखड़े ने हाकड़ परिवार को जहां नागवंती का विवाह बचपन में ही तय हो चुका था, पत्र लिखा कि वे नागवंती से विवाह के लिए तुरंत आयें। उधर राजा धौलवाले ने नागजी को देशनिकाला दे दिया। नागजी अपनी भाभी परमलदे के साथ स्त्री वेश में नागवंती के महल में पहुंचे। नागवंती ने नागजी से कहा कि नागजी उपवन में रहे, वह हथलेवा छुड़ाकर जल्दी ही पहुंचेगी। नागवंती सरदर्द का बहाना बनाकर विवाह मंडप से उठकर चली गयी। रात्रि का समय था। बिजली रह-रहकर चमक रही थी। बादल घिरे हुए थे। ऐसे में नागवंती नागजी से मिलने गयी। नागजी वस्त्र ओढ़े सो रहे थे। नागवंती के जगाने पर भी जब वे नहीं जागे, तो नागवंती ने वस्त्र खींच लिया। उसने देखा कि नागजी ने प्रतीक्षा में विकल होकर आत्मघात कर लिया है। नागवंती हतप्रभ हो विलाप करने लगी। तब तक नागवंती के पिता आदि भी वहां आ पहुंचे और नागवंती को जबरदस्ती घर ले आये तथा डोली में बिठाकर नागवंती को विदा कर दिया। जब नागवंती की डोली मानसरोवर की पाल पर पहुंची, तो वहां नागजी को जलाने की तैयारी हो रही थी। नागवंती डोली से उतरकर नागजी की चिता में कूद गयी।

राजस्थान में प्रचलित प्रेमगाथाओं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागजी-नागवंती गाथा दुखांत होने के कारण अत्यंत मार्मिक है।

सोरठ लोकगाथा

सोरठ राग में गायी जानेवाली यह प्रेमगाथा भारत के अन्य प्रांतों में भी गायी जाती है। इस राग का सौंदर्य रात्रि के द्वितीय प्रहर में निखरता है। गायक जब इस राग में गाथा को प्रस्तुत करते हैं, तो एक अनूठे वातावरण की सृष्टि होती है।

इस गाथा के अनुसार संचोर के राजा रामचंद्र देवड़ा के घर एक रूपवती कन्या का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण ज्योतिषियों ने कन्या को पिता के लिए अनिष्टकारी बताया। अतः राजा ने कन्या को त्याग दिया। एक निस्संतान कुम्हार ने इसे भगवान का प्रसाद समझकर अपनी पुत्री की तरह पाला। उसने कन्या का नाम सौरठी रखा। वह चौंसठ कलाओं में निपुण और इंद्र की अप्सराओं के समान रूपसी थी। एक दिन गुजरात के राजा जयसिंह सोलंकी का भाट वहां आया और वह सोरठी के रूप-लावण्य को देखकर गश खा गया। वापस बैठकर उसने राजा जयसिंह सोलंकी के सामने सोरठी का रूपवर्णन किया। उसने यह भी कहा कि सोरठी के सामने सोलंकी की सभी रानियां हेय हैं।

सोलंकी ने कुम्हार के सम्मुख सोरठी से विवाह करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। लेकिन कुम्हार ने इस प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया कि विवाह संबंध समान स्तर के व्यक्तियों में ही होता है।

कुछ समय पश्चात एक समृद्ध बनजा आया। कुम्हार ने उस बनजारे के साथ सोरठ का विवाह कर दिया। बनजारे ने सोरठी के लिए पहियों से युक्त एक काष्ठभवन बनवाय वह जहां भी जाता, सोरठी को भी उ काष्ठभवन में अपने साथ ले जाता। एक ब बनजारा गिरनार पहुंचा। प्रातः जब सोरठ अपने भवन में खड़ी थी, राव खेंगार के भतीज बीजा से उसकी दृष्टि उलझ गयी। वह बीजा प मुग्ध हो गयी। रात में बनजारे ने राव खेंगार के साथ जुआ खेला और अपना सर्वस्व हार गया अंत में उसने सोरठी को भी दांव पर लगा दि और उसे भी हार गया। बीजा सोरठी को अप साथ रखना चाहता था, पर राव खेंगार के भ से ऐसा न कर सका।

राव खेंगार तीर्थयात्रा पर गया और बीजा को सोरठी का रक्षक नियुक्त कर गया। अवस पाकर सोरठी ने बीजा से प्रेम-निवेदन किया भगवान को साक्षी मानकर सोरठी और बीज एक दूसरे के हो गये। एक बार सोरठी ने ने पीड़ा का बहाना किया और राव से कहा कि इ नेत्र पीड़ा का उपचार बीजा जानता है। बीजा इसका उपचकार सद्यप्रसवा सिंहनी का दू बताया। राव जब सिंहनी का दूध लेकर लौट तब उसने सोरठी और बीजा को साथ-सा शयन करते देखा। उसके बाद राव ने दोनों के मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया। रुष्ट बीज बादशाही सेना लेकर आया। युद्ध में खेंग मारा गया। लेकिन बादशाह सोरठी को अप साथ ले गया। सोरठी के वियोग में बीजा उसके महल के सामने अपने प्राण त्याग दिये

—बी-१८१, जनता कालोनी, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथक : बैंक्स द्वीप

वृक्ष से बना था मानव

प्रारंभ में विश्व मात्र एक सिद्धांत था। मनुष्य या आधिभौतिक वस्तुओं के अवतरित होने से पहले चारों ओर पूर्ण मरुस्थल था, जिसमें आज का कोई परिचित दृश्य नहीं था। वस्तु-जगत स्थिर था और लगातार प्रकाश में नहाया रहता था। पृथ्वी पर न ऋतुओं का बदलाव था और न समुद्र में तरंगें। पूर्व स्थिरता के साम्राज्य में उदित हुई पहली दैविक शक्ति : कात, जिसने पृथ्वी पर स्थिरता को जन्म दिया। कात का जन्म हुआ था एक चट्टान के दो टुकड़ों में विभाजित होने पर।

कात एक दिव्य आत्मा थी : वुई। उसी ने जन्म दिया वृक्षों को, सूअर को। फिर उसने सृजन किया मानव का। उसने एक वृक्ष से तीन पुरुष और तीन नारियों की आकृतियां बनायीं। फिर उन्हें सुरुचिपूर्ण आवरणों से ढका और फिर उन्हें वृक्षों के एक झुरमुट में छिपा दिया। अंत में, उसने उनके समक्ष नगाड़े बजाकर और नाचकर उनमें जीवन फूंका।

एक और आत्मा थी : मारावा, वह भी कम शक्तिशाली नहीं थी। उसने कात के करिश्मे देखे और निश्चय किया कि वह भी मनुष्य का सृजन करेगी। उसने भी कात की प्रक्रिया अपनाते हुए मानव आकृतियों का निर्माण किया। परंतु जब मारावा की आकृतियों ने चलना-फिरना शुरू किया, तो उसने उन्हें जंगल में पहले से खोदे हुए एक गड्ढे में पत्तों और टहनियों के बीच दबा दिया। सात दिन के बाद मारावा ने उन्हें गड्ढे से बाहर निकाला, उसे यह देखकर बहुत निराशा हुई कि वे मानव आकृतियां जड़ हो गयी हैं और सड़ने लगी हैं। तभी से मानव नश्वरता के शाप से ग्रस्त हो गया।

तब चूंकि इस पृथ्वी पर निरंतर प्रकाश रहता था, इसलिए सब दुखी रहते थे। कात की सहभागी दिव्य शक्तियों ने उससे प्रार्थना की कि इस विश्व में अंधकार लाने की व्यवस्था करे। तब कात ने मानवता को अंधकार भी प्रदान किया और इस प्रकार प्रकाश और अंधकार का चक्र प्रारंभ हुआ। कात ने ही इस पृथ्वी पर ऋतु-चक्र आरंभ किया, समुद्र को तरंगायित किया तथा पृथ्वी पर नियमित वर्षा की व्यवस्था की। ये सब काम करने के बाद कात के कर्त्तव्यों की इतिश्री हो गयी। तब से आज तक जीवन, रात और दिन, समुद्र में लहरों, ऋतु और वर्षा का चक्र निरंतर चल रहा है।

प्रस्तुति : रेखा धींगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

प्लेटो ! तुम्हें मालूम है कि आज क्या तारीख है ? तुम भी निरे मिट्टी के माधो हो ! अच्छा, मिट्टी के न सही, रबड़ के सही। मांस के नहीं, हाड़-मांस के। लेकिन अगर हाड़-मांस के पुतले होते तो तुम भी मुझे छोड़कर चले गये होते और मैं अकेला रह जाता, बिलकुल अकेला। इतना बड़ा भरा-पूरा घर और एक-अकेला आदमी। कालीन और कुरसियां, परदे और परछाइयां, दीवारें और छत।

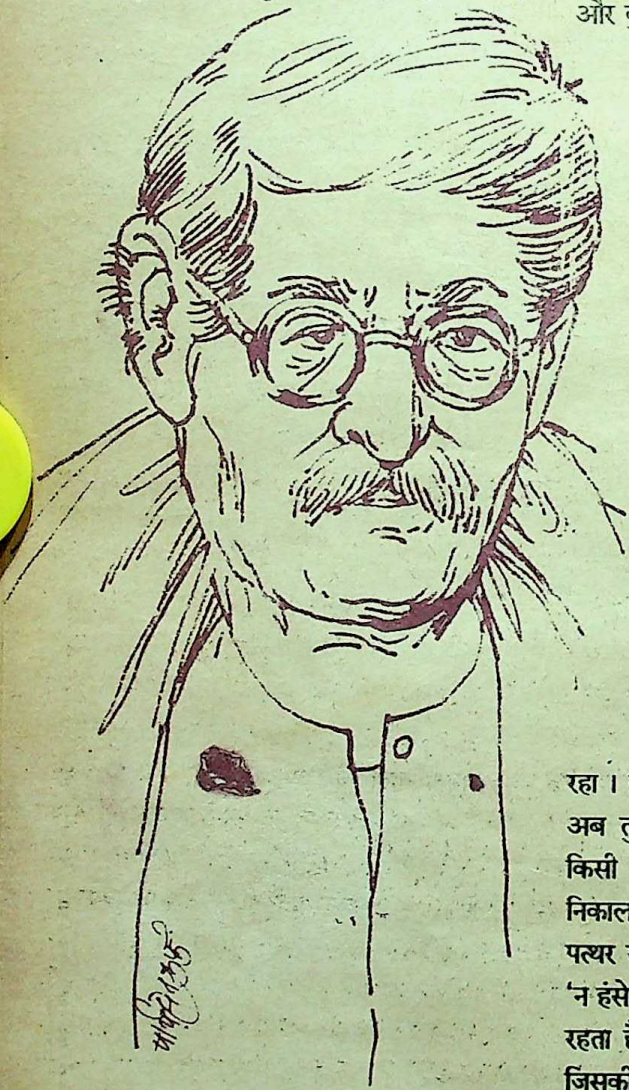

प्लेटो ! आज साल की आखिरी शाम है। और कुछ क्षण—और नये साल की सुबह हो जाएगी। और तुम वैसे के वैसे गुप-चुप बैठे हो; सिर नीचा किये, पलकें झुकाये, थके-हारे। जैसे कोई राहगीर हो। लंबी चौड़ी, खुली जरनैली सड़क पर जैसे कोई एक अकेला मुसाफिर, किनारे पर बैठा सुस्ता रहा हो। न कोई आगे, न कोई पीछे। सफर की धूल। पलकों पर पसीना थके पांव।

प्लेटो ! थक तो मैं भी गया हूं कितना रास्ता चलकर आया हूं। अपनी सड़क, उससे अगली सड़क, और अगली से अगली सड़क। इतना कोई चले तो दूसरे गांव पहुंच जाए। एक मैं और एक मेरी छड़ी। अब शेरू भी नहीं रहा। कब तक साथ देता ! इसीलिए तो मैंने अब तुम्हारे साथ याराना गांठा है। न तुममें किसी ने फूंक भरी है, न तुम्हारी फूंक कोई निकाल सकेगा। कई बार मैं सोचता हूं कि कोई पत्थर से प्रेम करे। पत्थर की दोस्ती अच्छी। 'न हंसे न बोले'। अचल, जहां रखो वहीं टिका रहता है। जैसे तुम हो प्लेटो। कोई नाविक, जिसकी नाव डूब चुकी हो। घुटनों पर बेजान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहें डाले, भूखा, प्यासा। ठंड में ठिठुर रहा।

तुम्हें ठंड तो नहीं लग रही प्लेटो ? तुम्हें क्या ठंड लगेगी। स्पंज-जैसे रबड़ के पुतले को। ठंड तो मुझे लग रही है। एक ठंड—जाड़े की, एक ठंड—अंधेरे की; और एक ठंड—कदम-कदम बढ़ रही खामोशी की। ठंड तो मुझे लग रही है। नये साल के एक-अकेले कार्ड की ठंड। एक-अकेला कार्ड। एक-अकेले नीले रंग में छपा हुआ। गहरा नीला रंग। जैसे कालिमा झलक रही हो।

प्लेटो

● कृत्तार सिंह दुग्गल

और प्लेटो ! तुम्हें मालूम है कि नये साल का कार्ड कहां से आया है ? बनिये की दुकान से, जहां से इस घर के लिए आटा-दाल आता है। लिफाफे में से हींग की गंध आ रही है। यूं लगता है कि तुम भी घबरा गये हो। अगर तुम्हारी रगों में खून होता तो खौलने लगता। अगर तुम्हारे नथुनों में श्वास होता तो तुम्हारा दम घुटने लगता। अगर तुम्हारी टांगों में शक्ति होती तो तुम इस घर को छोड़कर निकल गये होते, कभी के।

लेकिन अपना घर छोड़ना मुश्किल है। क्या नहीं प्लेटो ? अपने घर को कोई नहीं छोड़ सकता। तुम्हें मालूम है, प्लेटो। साइड बोर्ड में रखे यह बरतन कभी हर शाम मेज पर लगाये जाते थे। छुरी, कांटे, प्लेटें, सर्वियट। कितनी-कितनी देर बरतनों के खन-खन की आवाज आती रहती। हर कोई पूछता, खाना तैयार हो गया है ? बच्चे उतावले होने लगते। मुन्नी हर रोज खानसामा पर खफा होती। हर रोज वह देर कर देता था। उसकी भूख चमक उठती है। हर रोज खाने से पहले, कुछ इधर-उधर मुंह चलाकर पेट भर लेती। और फिर खाना खाते हुए हर कोई कभी कुछ और

अब कोई नहीं आता, कोई भी नहीं, क्योंकि अब मेरी सिफारिश चलना बंद हो गयी है। मेरे साथी अफसर रिटायर हो चुके हैं। ...नयी पौध आ रही है। चारों तरफ नये चेहरे दिखायी देते हैं। उस दिन अपने दफ्तर गया तो बाहर चौकीदार ने मुझे रोक लिया...

कभी कुछ उससे खाने के लिए कहता। लेकिन वह टस से मस न होती। सामने दीवान पर लेटे-लेटे रेडियो सुनती रहती।

और अब उसे रेडियो सुनना पसंद नहीं। प्लेटो ! कोई मानेगा कि मुन्नी को रेडियो सुनना पसंद नहीं ? मुन्नी जो सारा-सारा दिन रेडियो सुनती रहती थी। पिछले साल, जब मैं उससे मिलने के लिए गया तो अपनी बच्ची को रेडियो सुनने से मना कर रही थी। 'क्या हर समय टिन-टिन लगाये रखती हो ?' उस पर खफा हो रही थी। और मैंने उसे याद दिलाया कि जब वह स्वयं छोटी थी तो कैसे रेडियो में सिर दिये रहती थी। मुन्नी यह सुनकर मेरी ओर इस तरह देखने लगी, जैसे उसे विश्वास न आ रहा हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास न आने की बात तो है। प्लेटो ! कोई मानेगा, कि इस घर में सात बच्चे पले हैं। बच्चे, बच्चों की मां और नौकर। और फिर कोई न कोई मेहमान तो आया ही रहता। इतने बड़े घर में आना-जाना तो लगा ही रहता है। फिर दिल्ली शहर ! दिल्ली का यह भाग्यवान शहर। कभी किसी को कोई काम, और कभी किसी की कोई सिफारिश।

अब कोई नहीं आता, कोई भी नहीं क्योंकि अब मेरी सिफारिश चलना बंद हो गयी है। मेरे सारे साथी अफसर रिटायर हो चुके हैं। अब तो मेरे नीचे काम करनेवाले भी रिटायर हो रहे हैं। नयी पौध आ रही है। चारों ओर नये चेहरे दिखायी देते हैं। प्लेटो ! उस दिन मैं अपने दफ़्तर गया तो बाहर चौकीदार ने मुझे रोक दिया। चपरासी ने दस सवाल पूछे और फिर अफसर से मुझे मिलवाया। लड़का-सा उस कुर्सी पर बैठा था, जिस पर मैं बैठा करता था। बेकार बैठा, अखबार पढ़ रहा था। हमारे जमाने में फाइलें दम नहीं मारने देती थीं। मेरा कमरा हर समय मातहतों से भरा रहता था। किसी को दस्तखत करवाने होते, कोई छुट्टी की अर्जी की मंजूरी को आया होता। किसी को कोई क़ाम, किसी को कोई काम।

अगर सिफारिशोंवाले नहीं आते तो अपने कौन से आते हैं। अपनों की भी भली पूछ। प्लेटो ! मुन्नी की मां नहीं लौटी। कह गयी थी कि मैं बेटे की खबर लेकर लौट आऊंगी। आज महीना होने को है। महीना क्यों, पूरे पांच हफ़्ते। और अभी तक वह कौन-सा लौटने का सोच रही है। न कोई चिट्ठी न कोई पत्री। आएगी तो कहेगी, 'कौन-सा मैं काबुल चली गयी थी। चार कदमों की दूरी पर अपने बेटे से मिलने गयी थी, कौन चिट्ठियों पर पैसे बरबाद करे। अगर चिट्ठी न आये तो समझो सब ठीक है।' मैं पूछता हूं, प्लेटो ! कि खुद क्यों वह हर चौथे रोज बेटे से मिलने चल पड़ती है ? कि बेटे की कोई राजी-खुशी नहीं आयी, कितने दिन हो गये हैं। मेरा जी उदास हो रहा है। अभी तक उसका मन नहीं भरा। पांच पूरे हफ़्ते और अभी तक उसे घर की याद नहीं आयी, अपने मर्द की याद नहीं आयी अपने चूल्हे-चौके की याद नहीं आयी।

चूल्हे-चौके से भागकर तो वह गयी है। प्लेटो ! मेरी बीवी नित्य की इस रसोई से ऊब गयी है। खानेवाले मुंह वैसे के वैसे, और पकानेवाले हाथ थक गये हैं, हार गये हैं। एक दिन खाना मेज पर लगाकर आपसे आप कहने लगी—क्या यह सुबह-शाम रोटियां पकाते रहना। मेरी तो हथेलियां भी थक गयी हैं। हाय ! मैंने कितनी रोटियां पकायी होंगी ? और उस दिन वह मेज से बिना खाये उठ खड़ी हुई। और मेरे बार-बार कहने पर भी एक निवाला उसके गले से नीचे नहीं उतरा। रात को सोने से पहले मैंने देखा कि खिड़की के पट के साथ सट कर खड़ी बाहर खाली आसमान को देख रही थी। रात घुप अंधेरी थी। गली में अंधा कुत्ता रो रहा था। और फिर टप-टप आंसू उसकी आंखों से बहने लगे।

तुम्हें मालूम है, प्लेटो ! विलायत में हर तीन बीमारों के पीछे एक बूढ़ा है—बुढ़ापे का रोगी ! तो भी लाख कहने पर, वहां के नौजवान डाक्टर बुढ़ापे की बीमारियों के विशेषज्ञ बनने को तैयार नहीं होते। नौजवान तो नौजवान !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छे सयाने डॉक्टर भी बूढ़े रोगियों का ऑपरेशन नहीं करते। कहते हैं, टांके खोलने तक तो यह चल बसेगा। कौन चीरा देकर अपना समय बरबाद करे। नर्सें बूढ़े मरीजों से जान छुड़ाती हैं, डॉक्टर हिदायत करते हैं कि रोगी को चलाकर गुसलखाने तक ले जाओ ताकि उसकी टांगों की कसरत हो। वे, वैसे के वैसे पड़े हुए को बैड-पैन देकर जी छुड़ाती हैं। प्लेटो ! यह सब कुछ मैंने अखबार में पढ़ा है, सुनी-सुनायी बात नहीं कर रहा हूं।

हैं ! यह कितना शोर है। नहीं, कोई नहीं। मेरे शायद कान बजे हों। चारों ओर एक खामोशी छायी हुई है। घोर खामोशी। इतनी बड़ी कोठी जैसे सुसरी की तरह सो रही हो। शोर तो है, भरे-पूरे किसी होटल के हाल कमरे का शोर। कोई गा रहा है, कोई नाच रहा है, जाम पर जाम छलक रहे हैं, सिगरेटों का धुआं। चंचल शोख निगाहें, अलसाये-अलसाये अंग-प्रत्यंग। बटलर आ रहे, जा रहे। बैरे दौड़-दौड़कर हांफ रहे। कहीं बिरयानी की खुशबू, कहीं भुने हुए बटेरों के चबाने की किर्च-किर्च। कहीं नर्गिसी कोफ़े, शामी कबाब, तंदूरी मुर्ग, कहीं चीनी चापसूई। हैं ! घड़ियाल बज रहा है। दरवाजे बंद कर दिये गये हैं। हर एक जोड़ा अपनी जगह पर उठ खड़ा हुआ है। कमेटी का घड़ियाल बारह बजा रहा है। एक, दो, तीन, चार...। बत्तियां बुझा दी गयी हैं। कमेटी का घड़ियाल बज रहा है। नौ, दस, ग्यारह, बारह। और अब बाहों में बाहें, सीनों के साथ सीने, होंठों के साथ होंठ, मुहब्बत के, वफा के लाख इकरार। लोग नया साल शुरू कर रहे हैं। बत्तियां फिर जल उठी हैं। नया साल मुबारक ! नये साल के स्वागत में तालियां बज रही हैं। कान पड़ी आवाज सुनायी नहीं देती। लोग हंस रहे हैं, गा रहे हैं, एक-दूसरे के गले मिल रहे हैं। नया साल मुबारक, नया साल मुबारक का चारों ओर शोर मच रहा है।

प्लेटो ! बैठा-बैठा शायद मैं सो गया था। टाउन हाल का घड़ियाल बज रहा है। बैठा-बैठा शायद मैं सपना देख रहा था। अब टाउन हाल का घड़ियाल बज रहा है। एक साल खत्म हो गया है। अब दूसरा साल चढ़ रहा है। प्लेटो ! तुझे नया साल मुबारक। प्लेटो ! पिछला साल खतम हो गया। एक और साल शुरू होता है। नयी उमंगें, नयी आशाएं, नये सपनों का साल। प्लेटो, तुम कब तक यूं बैठे रहोगे ? घुटनों पर बेजान बाहें डाले, कोई नाविक जिसकी नाव डूब चुकी हो। प्लेटो ! देख, नया साल चढ़ रहा है। ले, मैं तेरी एक बांह को उठा देता हूं, यूं ! तेरी गरदन को सीधा कर देता हूं, यूं ! तेरी आंखों को मटका देता हूं, यूं ! एक टांग को घुमाकर...हां, यूं ! अब लगता है, जैसे कोई कभी का बदमस्त नाच रहा हो, गा रहा हो।

प्लेटो ! टाउन हाल का घड़ियाल बजना बंद हो गया है। तेरी बांह में बांह, तेरे सीने के साथ सीना। नाचते हुए, गाते हुए, चलो, हम नये साल का स्वागत करें।

प्लेटो ! तुझे नया साल मुबारक हो !
प्लेटो ! नया साल मुझे भी मुबारक हो !
प्लेटो ! नया साल सबको मुबारक हो।

—पी-एम्त, [illegible] नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात की स्लेट पर चंद्र-कविता

● डॉ. श्रीराम परिहार

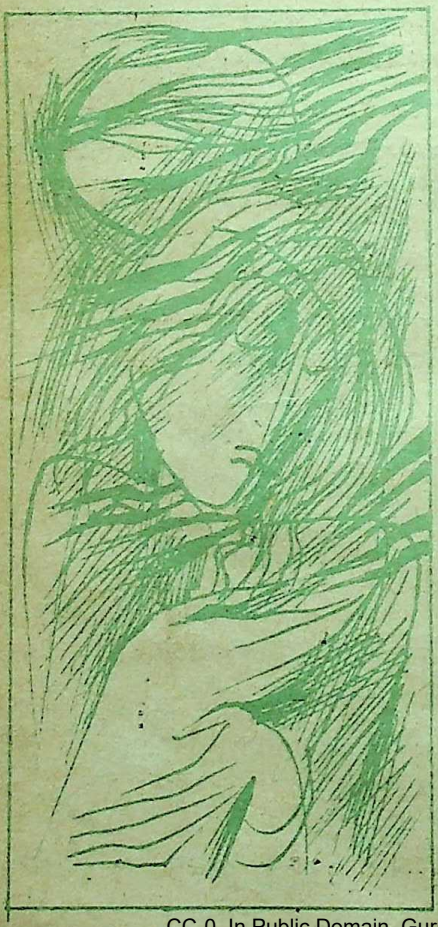

वनपाखी दिनभर के कार्यों का गुणा-भाग करते हुए पत्तों की स्लेट पर जिंदगी के पहाड़े लिख रहे हैं । दसों दिशाएं रात के स्वागत में सतर्क हो गयी हैं । संपूर्ण वनस्थली उत्कर्ण हो किसी की पदचाप सुनने की आतुरता लिये गुमसुम खड़ी है । वृक्ष एक-दूसरे की आड़ में से झांकने लगे हैं । दूर क्षितिज के पास पहाड़ की गोद में चंद्रमा का जन्म होता है । सांझ खिलखिला उठती है । धरती का पूरा आंगन दूधिया उत्सव से गूंज उठता है । कहीं से लोकगीत गरबा की पंक्तियां हवा में तैरती कानों तक आती हैं—

उग्यो शरद पूनम को चांद
गरबो रमसां मा झूम रात

यह शरद की एक शाम है । चंद्रोज्ज्वला शाम । चांदनी से ठसाठस शाम । वर्षा के रस से गदबदायी और शरद की लुनाई से निखरी शाम । इस सांझ के भाल पर चंद्रमा सिंदूर-बिंदु की तरह दमक उठता है । चंदा ने इसे गौरव दिया है । देखते-देखते चांद, रजनीश बन जाता है । पत्र-पत्र पर ज्योति के मौसम उतरने लगते हैं । आकाश के पूरे आंगन में फूल बिछ जाते हैं । शशांक धीरे-धीरे रात्रि के महादेश में बढ़ता है । शारदीया को अपनी उपस्थिति से स्पष्ट पहचान देता है । आकाशीय वस्तुएं पाकर यह वसुधा सृजनात्मक गौरव पाती है । धरती के रोम-रोम का ममत्व उन वस्तुओं को पूज्य बना देता है । इस मायने में धरती अनुपम और अनुपमेय है । इसीलिए इस पर गतिमान जड़-चेतन अपनी सीमितता में भी असीम है । आकाश की असीमता वसुंधरा के जीवन की [illegible] पाकर ही विराट बनती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य और चंद्र ब्रह्म की दो आंखें हैं । दोनों की प्रकृति भिन्न है । इस विश्व को वह परमतत्व दोनों ही आंखों से देखता है । जीवन और जगत की चाल में गति, लय, ताल और अपेक्षित यति के लिए समन्वय निहायत जरूरी है । सूर्य और चंद्र की समन्वित दृष्टि से ही वह सिरजनहार इस दृश्यमान जगत को अबूझ किंतु अचूक गंतव्य की ओर ले जा रहा है । विधु उस ब्रह्म की शीतल चितवन है । थके-हारे तन को विश्राम देनेवाली चितवन । झुलसे मन-प्राण को त्राण देनेवाली चितवन । अमीय वर्षण युक्त श्वेत-गोरी चितवन । इस चितवन में शील और सौंदर्य फूल में खुशबू की तरह रचे-बसे हैं । भारतीय जीवन के अणु-अणु ने क्षण-क्षण चंद्र-वृष्टि की बूंद-बूंद से संस्कारों की फसलों को सींचा है । पाला है । कृषकवत रखवाली की है । इसीलिए हमारा पूरा भारतीय वांङ्मय जीवन की संस्कारित और सुरभिमय क्रियाविधि की ऋचाएं गाता है । ऋग्वेद से लेकर शास्त्र—उपनिषद, पुराण, गीता, रामायण, महाभारत, रामचरितमानस, सूरसागर, साकेत, कृष्णार्जुन-युद्ध, कामायनी, अंधायुग और कनुप्रिया तक शील और सौंदर्य की सुवासमय अविरल-अजस्र धारा प्रवाहित होती रही है । जब-जब जीवन का संघर्षरत पक्षी लंबी दूरियां नापता हुआ, बीहड़ों को लांघता हुआ, थका-हारा, शील-सौंदर्य के इन निकेतों तक पहुंचता है, तब इन ग्रंथों के एक-एक शब्द उसका सारा श्रम-परिहार कर देते हैं । अतः इंदु भारतीय साहित्य और भारतीय जीवन वह त्रिवलय है, जो एक सीधी सरल रेखा में आकाश का धरती से, अक्षर (ब्रह्म) का

मैया हौं तो चंद खिलौना लैहौं
बाल-कृष्ण ने चंद-खिलौना ही क्यों मांगा ? सूरज को देखकर भी वह ऐसा ही अनुरोध कर सकते थे ।

साहित्य और परमात्मा का आत्मा से प्रकृतिगत समीकरण बैठाये हुए है ।

विश्व का पहला कवि प्रार्थना करता है —'तमसो मा ज्योतिर्गमय ।' हमारी संपूर्ण यात्रा ज्योति के क्षणों की तलाश है, और प्राप्त हो जाने पर उसमें आत्मलीन हो जाने की अविच्छिन्न तृप्ति भी । यह तय है कि सूरज तो सुबह ही निकलेगा । रात के अंधकार को पटकनी देने का क्या उपाय ? श्यामा के निष्प्रभ सनसनाते हुए निविड़ तम में अंगुली पकड़कर पूरी राह बतियाते हुए भोर के उद्यान तक ले जाने हेतु रजनीश पल-पल किरणों के निमंत्रण भेजता है । मैं अपने अंतर्गत में राकापति के नेह-निमंत्रण को, प्रीत-निमंत्रण को, उजास-निमंत्रण को, निश्छल-निस्पृह निमंत्रण को, दूध-लिखे निमंत्रण को स्वीकार करता हूं और कायल हो उठता हूं उसकी उदारमना उच्चावस्था का । फिर भी गद्यारण्य का शुष्क जीव उन चंद्र-रज्जुओं को कहां पकड़ पाता हूं, जो अमित-तोष की भाव-भूमि तक ले जाती हैं । कबीर ने इस भावावस्था को पाया था । वे चांद और सूरज से रूबरू हुए थे । इतना ही नहीं, उन पर पैर रखते हुए हरि रूपी घोड़े पर सवार होकर जन्म-मरण की जंग जीत सके थे—

हरि घोड़ा ब्रह्म कड़ी, बासक पीठि पलान
चांद सूरज दोइ पायड़ा, चढ़ती संत सुजान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद कबीर ने ऐलान कर दिया, **'हम न मरिहैं, मरिहे संसारा ।'** जिसके शून्य में चंद्रोदय हो गया, वह जीवन में तमाम संघर्षों को पछाड़ता हुआ कबीर की तरह 'जयघोष' कर सकता है ।

सुधाधर के जन्म-क्षणों संबंधी एक पौराणिक मिथक है । सुरासुर में अमरत्व की लालसा जागी । अमृतपान कर हमेशा-हमेशा के लिए मृत्यु से पिंड छुड़ानेवाली बात देव-दानवों की मति में कौंध गयी । समुद्र को मंथना तय हुआ । मंदराचल रई बना । वासुकी रज्जु । पूंछ की तरफ देव थे, मुंह की तरफ दैत्य । श्यामवर्णी राक्षस सुधा-प्राप्ति की चाहत में वासुकी की फुंफकार सहते रहे । सिंधु-मंथन से एक-दो नहीं, चौदह रत्न निकले—

श्री, मणि, रंभा, वारूणी, अमिय, शंख, गजराजि धन्वन्तरी, धनु, धेनु, शशि, कल्पवृक्ष, विष, बाजि

चौदह रत्नों में एक चंद्रमा भी है । कहते हैं शिव के ललाट पर बायीं ओर जो बालेंदु है, वह वही है । यह द्वितीया का चंद्र है । शशि का शिशु रूप है । शिशु को सहारे की आवश्यकता होती है । लालन-पालन करना होता है । इसके लिए चाहिए सहज, सरल और निहायत भोला ममतामय व्यक्तित्व । शिव के पास यह व्यक्तित्व है । भोले बाबा ने शशांक को उठाया और माथे पर चढ़ा लिया । शिव अष्ट मूर्ति हैं । उनके आठ स्वरूप हैं —जल, आकाश, सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, अग्नि, वायु और यजमान । कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम के मंगलाचरण में इसी अष्ट मूर्ति शिव की स्तुति की है । दिगंबर शिव नील नभ के स्वरूप में सृष्टि के ओर-छोर में व्याप्त हैं । मस्तक पर चंद्रमा हमारी मिथकीय धारणा की साक्षात शीतल ज्योति बनकर चमकता रहता है । यहीं से कलाधर ने सोलह कलाएं प्राप्त कीं । रत्नाकर के गर्भ से उत्पन्न होकर महेश के शीश पर पोषण और कलानिधि के रूप में उभरकर नभ की अस्मिता को उजला वस्त्र देकर इज्जतदार बनाने की यह प्रक्रिया निरंतर उर्ध्वमुखी रही है । जिस तरह स्वर्ग ने धरती को पतित-पावन कल्याणी भगीरथी दी है, उसी तरह वसुंधरा ने स्वर्ग को अपनी कोख से चंद्र-रत्न दिया है । एक स्वर्ग को अवनि से जोड़ती है और दूसरा मही को सरग से । अद्भुत समन्वय है यह । इसके साथ एक बात और है कि धरित्री भी प्रतिदान में कुछ दे सकती है । यह धरणी यहां कितनी महान बन जाती है । तभी तो देवता इस पर आने को तरसते हैं ।

जल-सा तरल

जन्म संबंधी वैज्ञानिक प्रामाणिकता के आधार पर भी चंद्रमा पृथ्वी का अंश है । परिणामस्वरूप पृथ्वी और चंद्रमा एक मोह-पाश में बंधे हैं । यह पाश ममता का है । वात्सल्य का है । वैज्ञानिक कहते हैं— समुद्र में ज्वार आता है । मैं एक संबंध और सोचता हूं— चंद्र को ज्योतिषमय जल का कारक मानते हैं । शरीर, पृथ्वी और वनस्पति में जो भी जलीय अंश है, उसका सीधा संबंध चंद्रमा से है । चंद्रमा का जन्म मन से भी बताया जाता है । यजुर्वेद का कहना है— **चंद्रमा मनसो जातः ।** अर्थात, मन जल-सा तरल होता है । किसी व्यक्ति के मन को देखना हो, तो उसकी कुंडली में चंद्रमा को देखा जाता है । समुद्र पृथ्वी का मन है । वत्सला धरती की ममता, विधु को निहार-निहार बारंबार उमड़ती है । इस विराट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेदिनी का कोमलतम भाग पयोधि है । 'पयोधि' शब्द यहां विशेष सार्थकता रखता है । पय का एक अर्थ दूध भी है । पूर्णिमा की रात निरभ्र आकाश में शशि अपने संपूर्ण लावण्य के साथ कलाओं के आभरणों से सज्जित होकर क्रीड़ारत होता है । धरती मां की ममता संवरित नहीं हो पाती । बरबस पयोधि उत्तुंग होकर सुधाकर को अंक में ले लेना चाहता है । उसे दुलारना चाहता है । लहर-लहर विधु की मनुहार करती है । उसे हांक लगाती है । लोल-लोल अंगुलियां बुलाती हैं । धरती कौसल्या बन जाती है । राम के वन से आगमन का अवसर अनादि काल से यह धरा उपस्थित करती चली आ रही है । राम वन से लौटे । उन्हें देखते ही कौसल्या की ममता दूधिया धार बनकर फूट पड़ती है—

जनु धेनु बालक वत्स तजि गृह चरन वन परबस गई
दिन अंत पुररूख स्रवत थन हुंकार करि धावत भई

राम ने जब देखा कि इतनी माताएं, इतने पुरवासी प्रतिक्षण, क्षण-क्षण की मिलनातुरता लिए विकल हैं, तो राम—**अमित रूप प्रगटे तेहि काला ।** प्राणी मात्र को मिलनानुभूति की एकलयता दे गये । पूरणमासी की रात सिंधु की लहर-लहर के साथ ही तृण, लता, तरू, पत्र-पत्र के हृदय में चंद्र-बिंब उभर आते हैं । यह किसी स्वर्गिक मिलन से कम सुखकारी नहीं है । इसके विपरीत चंद्रमा के दूर होने पर या अदृश्य होने पर पृथ्वी की वत्सलता उसके हृदय की वियोगावस्था, समुद्र के माध्यम से किनारों पर आकर पछाड़ खाती है । हर धड़कन हाहाकार मचाती है । सारा भू-मंडल वियोग में कराहता है । समुद्र में भाटा आ जाता है ।

कितना नाजुक किंतु शाश्वत बंधन है ममता के सूत्रों का । नेह के ये रसभीगे क्षण पृथ्वी और चंद्रमा के बीच ज्योत्स्ना-वितान रचते हैं, जिसके नीचे बैठ यह जननि, जन्मभूमि उत्सव के बधावा गाती रहती है ।

मेरे मस्तिष्क के आश्विन-आकाश में सूर का एक काव्य-चित्र उभरता है । मां यशोदा आंगन में खड़ी है । गोदी में हाथ हिलाकर किलकारियों के झोंकों पर कन्हैया झूल रहा है । मोहन की दृष्टि चंद्रमा पर पड़ जाती है । बस, उसी क्षण कान्हा गोदी में मचल उठते हैं— **"मैया हौं तो चंद खिलौना लैहों ।"** और लगे हाथ चेतावनी भी दे दी, यदि चंदा का खिलौना नहीं लाकर दिया तो **"अबहिं लोटि जैहों धरती पे तेरो सुत न कहैहों"** यह तेरा पुत्र नहीं कहलाऊंगा वाली बात यशोदा-जैसी मां के लिए असहनीय है । मैं दूसरी बात सोच रहा हूं । बाल-कृष्ण ने चंद-खिलौना ही क्यों मांगा ? सूरज को देखकर भी वह ऐसा ही अनुरोध कर सकते थे । लेकिन जब कृष्ण के द्वापरी-लीला-कुहूक मे अंतरमन से प्रवेश करता हूं, तो रहस्य की परत-दर-परत खुलती चली जाती है ।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में दो प्रसिद्ध वंश रहे हैं— एक सूर्यवंश दूसरा चंद्रवंश । राम भानुकूल भूषण हैं और कृष्ण चंद्रकुल-भूषण । राम की सारी कालावधि सूर्य की मर्यादामय, धीरोदात्त अस्मिता की

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर-गाथा है । कृष्ण चंद्रवंशी हैं । उनकी चंद्रिका अनेक लीलाएं बनकर इस देश की वृंदावनी-भूमि पर छितरा गयी हैं । गोपाल का संपूर्ण ब्रह्मत्व कलाधर की सोलह कलाओं से डबाडबभरा लीलामय लोकरंजक पूर्णत्व है । चंद्र और माधव इस भाव-भूमि पर एक तत्व के दो रूप हैं । इसीलिए मधुसूदन मां की गोदी में मचल-मचल, हाथ उठा-उठाकर चंद्रमा को पाना चाह रहे हैं । यह संकेत है कि नटनागर की संपूर्ण क्रियान्विति सुधाकर की स्वभावधर्मी है । दूसरे अर्थ में— विष्णु का शिव से भुजभर भेटने, उन्हें अंकवार में भर लेने की आतुरता भी इस बालहठ में निहित है । मां यशोदा की गोद में वैष्णव और शैव दोनों मत एकरूप होने को ललक रहे हैं ।

एक नाम मयंक भी

चंद्रमा का एक नाम मयंक है । वह मृगांक है । मृग का शिकार करने के कारण मृग की छाया उसमें पड़ी है । इसी अंक को खरगोश की आकृति भी माना जाता है । उसे शशांक नाम से पुकारा जाने लगा । एक अन्य पौराणिक आख्यान में उसे क्षयी बताया गया है । यह नक्षत्र-पति है । दक्ष प्रजापति की सत्ताईस कन्याएं चंद्र से ब्याहि गयी हैं । ये सत्ताईस कन्याएं ही नक्षत्र हैं । इन सभी में नक्षत्र-पति को रोहिणी से विशेष लगाव था । इसकी शिकायत अन्य कन्याओं (नक्षत्रों) ने दक्ष से की । दक्ष ने चंद्रमा को क्षय होने का शाप दे दिया । चंद्रमा के स्वरूप में रिसाव शुरू हो गया । घबराकर दक्ष से क्षमा मांगी । दक्ष ने पंद्रह दिन के बाद ठीक होने का वरदान दे दिया । बेचारा चंद्रमा नारी के चक्कर में शाप का भागी हुआ । अपने अच्छे-खासे आकार को पंद्रह-पंद्रह दिन की घटत-बढ़त में संतुलित करता हुआ दुनिया को ठंडक दे रहा है । अतः सबसे पहले क्षय रोग चंद्रमा को हुआ । ग्रहण भी इसको लगता है । विकारों और रोगों ने किसी का घर नहीं छोड़ा ।

दूसरे प्रसंग में अहिल्या के देह-दर्शन के लोभ में, इंद्र की मित्रता के चक्कर में आकर गौतम ऋषि का कोप-भाजन बनना पड़ा । उनकी लंगोट का झपाटा ऐसा लगा कि उतनी जगह पर दाग ही पड़ गया । यह अंजनि के पिता गौतम की लंगोट का झपाटा था, साधारण का नहीं । सुधाधर अमृत धारी है । शरद पूर्णिमा को पूरी रात इसमें से अमृत बरसता है । बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस देश में जिन्हें दूध नसीब है, वे अपने छोटे-छोटे दूध के गिलासों में इसके अमृत को घोलकर गटकते हैं । मेरे देश के सैकड़ों गांव और मैं खेतों में, मैदानों में, आंगन में खुले तन-मन के रोम-रोम से चंद्र-माधव का आव्हान करता हूं । इसके मधु की बूंद-बूंद को प्राणों की अंजुरी में सहजकर छकता हूं । रामचरित मानस में दो बार मयंक को लेकर प्रश्नोत्तर हुए हैं । पुष्प-वाटिका में सीता को देखने के बाद की रात पूरब में चंद्रोदय को देखकर राम सीता के मुख-सौंदर्य और विधु की तुलना करते हैं । इसमें राम ने सीता के सुख के लावण्य की बराबरी में सकलंक चंद्रमा को कहीं खड़ा ही नहीं होने दिया । **'जन्म सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक । सिय मुख समता पाव किमि, चंद्र बापुरो रंक ।'** चर्चा का दूसरा मौका लंका कांड की शुरूआत में आता है । सब बानर, भालू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना-अपना तर्क देते हैं— यथा, अकाश रूपी वन में विचरण करता सिंह । शशि में भूमि की छाया । राहु ने चंद्रमा को मारा था, उसकी कालिमा । रति का मुख बनाते समय विधाता द्वारा सार भाग का हरण । राम कहते हैं— विष चंद्रमा का भाई है । दोनों समुद्र जन्मा वह उसके हृदय में बस गया है । चंद्रमा उसके विष से युक्त किरणें फैलाकर वियोगी स्त्री-पुरुषों को जलाता है । दोनों ही वक्तव्यों में सीता की अनुपस्थिति-जन्य वियोग बोल रहा है । वैसे भी सारे प्रेम-साहित्य तथा नेह-धागों से जुड़े लोकाचार में खड़े प्रेमी-प्रेमिका ने अमिलन के क्षणों में राकापति के खिलाफ बोम लगायी है । रजनीश का खिलखिलाना इनको कभी रास नहीं आया । दूरियां पड़े एकांतिक लम्हों में तो प्रेमियों की उदास भारी-भारी छाती पर यह मूंग दलनेवाला साबित हुआ है । बिहारी की नायिका तो चिल्लाचोट मचाती हुई कहती है— कि वह ही विरहवश पागल हो गयी है, या सारा गांव पागल हो गया है, क्योंकि जो चंद्रमा मुझे जला रहा है, उसे सारा गांव शीतलता देनेवाला कह रहा है । चंद्रमा बापड़ा युग-युगों से उपालंभों की लंबी परंपरा झेलता चला आया है ।

व्यक्ति की अमर्त्य जीवनानुभूतियां संयोग-वियोग, जन्म-मरण के बावजूद सिसृक्षा को क्रियात्मकता देती है । संसार की लाख उथल-पुथल के बाद भी जीवन नये-नये रूप में कायम रहता है । सूर्य-चंद्र हैं । पृथ्वी है । जल है । वायु है । आकाश है । तो जीवन भी रहेगा ही । यह पंच महाभूत चक्र असमाप्त मिथक रूप में कण-कण में समाहित है । मैं चंद्र-जन्म के अमृत-क्षणों से लेकर आज के नाशमय क्षणों की विभीषिक यात्रा के बारे में सोचता हूं, तो पाता हूं चंद्र का वर्तमान और भविष्य खतरे में है । निरंतर आकाश में तैरनेवाले बारूदी मगरमच्छ इसके स्वरूप को नोचने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे । उन्हें नाथना अत्यावश्यक है । चंद्रमा का क्षरण होना यानी हमारे सौर मंडल की सारी व्यवस्था का गड़ा-बड़ा जाना है । यह हमारी आंतरिक सृष्टि का भी विखंडन है । क्षरण है । इस देश की सांस्कृतिक देह-यष्टि कोर-कोर झड़ रही है इसकी पग-पग पर धूल धूसरित होती सांस्कृतिक पगथलियां हैं, मिथकीय अवधारणाओं से लबरेस मन है । संबंध रची हथेलियां हैं । विद्या, कला और इच्छा से बुनी ओढ़नी है । इन सबके बीच छुपाकर चंद्रमा के स्वरूप को अक्षुण्य बनाये रखने की कामना से लोकगीत गाता कोकिल कंठी स्वर फिर गहराता है । और मैं माधव भाव से भर जाता हूं ।

— हिंदी विभाग
श्री नीलकंठेश्वर शासकीय महाविद्यालय, खंडवा

मैक्सिको के आसतेक जाति के कबीलों के लोग 'नरभक्षी' थे । उनका विश्वास था कि किसी अपराधी के दुष्कर्मों से उनके देवता अप्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें तभी प्रसन्न किया जा सकता है जब उस अपराधी की बलि दी जाए—यह आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य प्रथा थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपरनोवा

हजारों वर्षों के बाद फिर !

● रणबीर सिंह

इस वर्ष २३ फरवरी को ब्रह्मांड में धरती से एक लाख ७० हजार प्रकाशवर्ष दूर एक अद्‌भुत घटना हुई । यह घटना थी हमारे सूर्य से २० गुणा बड़े एक तारे में हुआ महाविस्फोट ।

तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड के वेग से प्रकाश की किरणें एक वर्ष में जितनी दूरी तय करती हैं, उसे एक प्रकाशवर्ष कहते हैं । एक लाख ७० हजार प्रकाशवर्ष दूर की किसी घटना को नंगी आंखों तो नहीं देखा जा सकता, पर हां, ताकतवर दूरबीनें हों, तो यह काम मुश्किल नहीं ।

२३ फरवरी को जिस तारे में महाविस्फोट हुआ, वह दक्षिण-खगोल में बड़े मेगल्लानी मेघ के नाम से परिचित एक मंदाकिनी में मौजूद था । २३ फरवरी की रात को चिली देश की एक वेधशाला में कनाडा के खगोलविद इयान शैल्टन ने दक्षिणी-खगोल के तारों के कुछ चित्र उतारे । दूसरे दिन उन चित्रों को देखा गया, तो यह पता चला कि पहले जिस स्थान पर कोई तारा नजर नहीं आ रहा था, वहां अब एक बहुत चमकीला तारा प्रकट हुआ है । अनुभवी शैल्टन तुरंत समझ गया कि हो न हो यह नया चमकीला तारा एक सुपरनोवा है । बाद में अन्य खगोलविदों ने भी इस घटना की पुष्टि की ।

ब्रह्मांड के कई तारे हमारे सूर्य से छोटे हैं, तो बहुत से काफी बड़े भी हैं । इन तारों का विकास अलग-अलग ढंग से होता है । ब्रह्मांड में उपस्थित अतिविशाल कोई द्रव्यमेघ गुरुत्वशक्ति की वजह से सिकुड़ना शुरू कर देता है । कुछ समय बाद इस मेघ में उच्च तापमानवाले एक केंद्र का विकास होता है । कुछ लाख वर्ष में यह केंद्र सिकुड़कर एक चमकीला तारा बन जाता है । इस तारे में हाइड्रोजन तत्व के परमाणुओं के संगलन से भीषण ऊर्जा पैदा होती है । करोड़ों वर्ष तक यह प्रक्रिया चलती है । इसके बाद जब तारे का समस्त हाइड्रोजन ईंधन चुक जाता है, तो वह तारा एक ठंडा तारा बन जाता है और फूलकर आकार में बड़ा हो जाता है । ऐसे तारे को 'रेड-जायंट' कहते हैं । कुछ और अरब वर्ष बाद यह 'रेड-जायंट' बाहर का अपना सारा द्रव्य फेक देता है और एक श्वेत बौना तारा अर्थात 'व्हाइट ड्वार्फ' बन जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

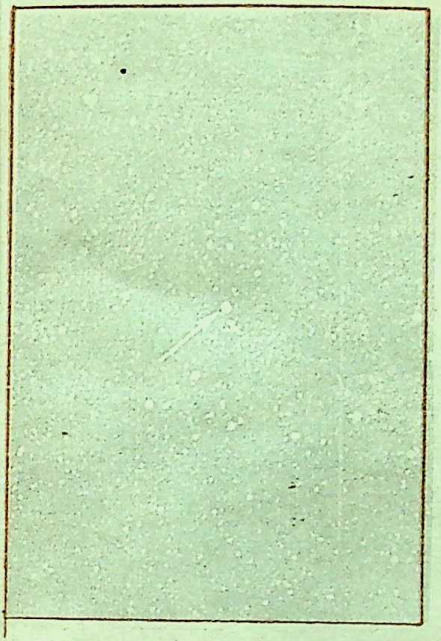

सुपरनोवा : विस्फोट से पूर्व की स्थिति

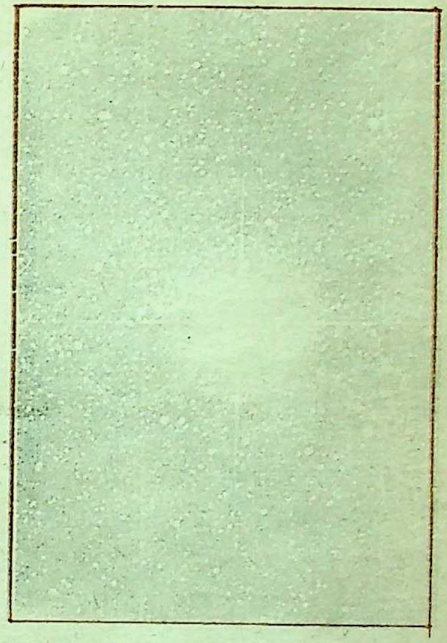

सुपरनोवा : विस्फोट के बाद की स्थिति

है। कुछ और लाख वर्ष बाद श्वेत बौना तारा अपनी समस्त ऊर्जा चुका कर लुप्त हो जाता है। हमारा सूर्य एक ऐसा ही तारा तो है। लगभग साढ़े चार अरब वर्ष पूर्व यह अस्तित्व में आया था। आज से डेढ़-दो अरब वर्ष पश्चात यह भी एक श्वेत बौना तारा बनकर लुप्त हो जाएगा और इसके साथ ही इस धरती से जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

लेकिन जो तारे हमारे सूर्य से बीस-तीस गुणा बड़े हैं, वे भी अपना ईंधन चुकने के बाद फूलकर 'सुपर रेड-जायंट' बन जाते हैं। कुछ लाख वर्ष बाद 'सुपर रेड-जायंट' के नाभिक में एक छोटा-सा तारा अस्तित्व में आता है। यह छोटा-सा तारा या तो एक न्युट्रॉन तारा बन जाता है अथवा एक 'ब्लैक-होल।' बाकी का सारा बाहरी द्रव्य ब्रह्मांड में उछाल दिया जाता है। द्रव्य के उछलने की इस घटना को ही 'नोवा' अथवा 'सुपरनोवा' का नाम दिया गया है। 'नोवा' का मतलब है एक नया तारा। लेकिन इसे नये तारे का उदय या जन्म नहीं, बल्कि एक पुराने, बूढ़े तारे की मृत्यु ही माना जाता है। बाहरी द्रव्य के उछलने की घटना महाविस्फोट है। महाविस्फोट की वजह से तारे के बाहर का द्रव्य चारों और ब्रह्मांड में बिखरकर तेजी से

ब्रह्मांड में भी अद्भुत घटनाएं घटती हैं लेकिन, हजारों सालों में कभी एकाध बार। ऐसी ही एक अद्भुत घटना अभी हाल ही में घटी यानी एक तारे में महाविस्फोट की घटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहस्पति से बड़ा एक और ग्रह ?

केलिफोर्निया के एक वैज्ञानिक ने हाल ही में दावा किया है कि उसे ऐसे कुछ साक्ष्य मिले हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि अंतरिक्ष में जूपिटर (बृहस्पति) से भी बहुत बड़ा एक ग्रह है और वह ग्रह पृथ्वी से पांच करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी पर परिभ्रमण कर रहा है।

केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजेल्स के खगोलशास्त्री बेन जुकर्मन ने पिछले दिनों अमरीकन एस्ट्रोनोमिकल सोसाइटी की प्लेनेटरी साइंस डिवीजन की बैठक में कहा कि यद्यपि अभी तक जो साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं, वे निर्णायक परिणाम के लिए पर्याप्त नहीं हैं, फिर भी यदि यह सही निकला तो यह पहला अवसर होगा जबकि इतना बड़ा ग्रह, जिसे अभी 'ब्राउन ड्वार्फ' कहा जा रहा है, का पता चल जाएगा। खगोलशास्त्रियों को कई वर्षों से अनुमान था कि अंतरिक्ष में इस तरह का कोई ग्रह है।

बेन जुकर्मन का कहना है कि 'हमारे पर्यवेक्षणों की सर्वाधिक सहज व्याख्या यह है कि कुछ-कुछ जूपिटर की तरह ही 'ब्राउन ड्वार्फ' है, जो गिक्लास २९-३८ के चारों ओर परिभ्रमण कर रहा है।'

दरअसल, इस ग्रह को बेन जुकर्मन ने देखा नहीं है, क्योंकि आज वैज्ञानिकों को कोई ऐसा यंत्र उपलब्ध नहीं है, जो इतनी दूरी के ग्रह को देख सके और उसका फोटो ले सके। इसका कारण यह है कि उसका प्रकाश समीपवर्ती तारे के प्रकाश से अरबों गुना मंद है।

फैलने लगता है। महाविस्फोट की वजह से तारे की कांति करोड़ों गुणा बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुई कांति की वजह से ही 'सुपरनोवा' को हमारी धरती पर लगी प्रकाश परावर्ती दूरबीनें पकड़ पाती हैं।

एक 'सुपरनोवा' के दर्शन बड़े दुर्लभ होते हैं। तारों के जन्म और मरण में खरबों वर्ष का समय लगता है। ब्रह्मांड में किसी न किसी तारे का जन्म और मृत्यु होती रहती है। लेकिन, हम उन्हीं तारों के जन्म अथवा मरण का नजारा देख सकते हैं, जो हमारी धरती की ताकतवर दूरबीनों की पकड़ के भीतर हैं। मानव सभ्यता के अस्तित्वकाल में अब तक केवल चार सितारों की मृत्यु का अद्भुत नजारा ही देखा और दर्ज किया गया है। आज से ६००० साल पहले ईराक में दजला और फरात नदियों के तट पर विकसित हुई सुमेर सभ्यता के लोगों ने धरती से सिर्फ ३००० प्रकाशवर्ष दूर प्रकट हुए 'वेला-एक्स' नामक सुपरनोवा का नजारा नंगी आंखों ही देखा था।

हाल का 'सुपरनोवा', जिसे शैल्टन-१९८७-ए नाम दिया गया है, का अध्ययन करने के लिए अब हमारे पास पहले से उत्तम उपकरण मौजूद हैं। सितारों के जन्म और मरण तथा विकास संबंधी घटनाओं का अध्ययन करके ब्रह्मांड के अनेक गूढ़ रहस्यों को समझा जा सकता है, क्योंकि इन्हीं घटनाओं से सौरमंडलों और उनके ग्रहों पर जीवन की उत्पत्ति तथा विकास सरीखे महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी जुड़े हुए हैं।

— जनसंपर्क अधिकारी
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद,
पो.बा. ४५०८, अंसारी नगर, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये भी सच है

रात के सन्नाटे में
जब लोग बुन रहे होते हैं
हसीन ख्वाब
मैं इस दुनिया की हकीकत से
सामना करता हूं
मेरा जिस्म जो मेहनत से नहीं
बल्कि भूख से है थका हुआ
आराम करना चाहता है
पर दिलो-दिमाग पर छाया हुआ है
एक कोहरा
कल सुबह होने से पूर्व
सोने के बहाने जागते रहने का खौफ
इस ख्याल से कि शायद कल भी
इसी हालत में न सोना पड़े मुझे
तसल्ली भी कारगर नहीं होती अब
क्योंकि देश के शासक हर रोज ही कहते हैं
किसी के भूखा न रहने की बात
पर मुझे लगता है निश्चित ही
अपनी भूख को तृप्त करके
वे ऐसा कहते हैं
अन्यथा, मुझ जैसे लोग
इसी आश्वासनोंवाले देश में
सिर्फ भूखों रहते ही नहीं
बल्कि भूखों मरते हैं
और मरते वक्त
होती है बस खुशी एक
बहुत दिन तिल-तिल करके जले हैं
झूठे विश्वासों से हम हर रोज छले हैं
बस हो गया आज खात्मा
धन्यवाद इस समाप्ति के लिए
परमपिता परमात्मा

— अनिल तिवारी

५३-ए, नार्थ ईदगाह कालोनी सुभाष पार्क,
आगरा ३ : २००२

उनींदी आंखें

तुम्हारी आंखों में
पिछली रात की मस्ती
अभी बाकी है
उन मस्त सपनों में
अवश्य किसी ने तुम्हें
दुलराया होगा
मलयानिल के झोंकों ने
तुम्हारी अलकों से
अठखेलियां की होंगी
पलकों पर कई बार
हल्का-सा स्पर्श पाकर
तुम पुलक उठी होगी

बांहों की कसमसाहट
तुम्हारी उनींदी आंखों
पर झपकती पलकें
यही सब तो बताती हैं
क्या कहा
यह सब
मेरे कविमन
की कल्पनाएं हैं
जिसका यथार्थ से
कोई सरोकार नहीं
तुम रातभर जागी हो

केवल इसलिए
कि आज परीक्षा में
तुम्हारा, एकोनोमिक्स का पर्चा है !

—ब्रह्मदेव

पो. बा. ६६, ऐसले हॉल, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान

पत्नी से मुक्ति चाहिए

शैलेंद्र कुमार सिंह, कलकत्ता : मेरी शादी जून, ८६ में एक ऐसी लड़की से हुई, जिसका रूप-रंग मुझे तनिक भी पसंद नहीं है। साथ ही वह अनेक बीमारियों की शिकार भी है। मैंने उसका उपचार भी डॉक्टर से कराया। महीनेभर डॉक्टर की दवा खाने के बाद वह मायके चली गयी। अब मैंने निर्णय कर लिया है कि मैं उसे तलाक दे दूंगा, क्योंकि मैं उस रोगिणी और अनचाही पत्नी के साथ नहीं रह सकता। इस विवाह के मामले में दरअसल, मैं अपनी पिता की कुंठाओं व षड्यंत्र का शिकार हो गया गया। पिता के साथ बचपन से ही मेरे मतभेद रहे इसलिए उन्होंने लड़की और उसकी बीमारी के बारे में जानते हुए भी बिना मुझे लड़की दिखा शादी कर दी। कृपया, मुझे बताएं कि तलाक की प्रक्रिया क्या है और मुझे इसके लिए क्या करना होगा ? मुझे हर हालत में इस शादी से मुक्ति चाहिए।

विवाह से पूर्व अपने साथी के चुनाव का अधिकार आपको था। पिता की बात मानकर आपने विवाह किया। अब केवल इस आधार पर कि पत्नी का रंग-रूप आपको पसंद नहीं है, तलाक किसी भी हालत में नहीं मिल सकता। यह ठीक है कि कुछ असाध्य बीमारियां तलाक का आधार बन सकती हैं, लेकिन आपकी पत्नी को क्या बीमारी है, इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है। बीमारी की सही जानकारी होने पर ही इस संबंध में अंतिम निर्णय लिया जा सकता है।

विधवा बहू का अधिकार

उमाशंकर, बरेली : मेरे पुत्र ने एक विजातीय लड़की से अदालत में विवाह किया। मेरे पुत्र से चार संतानें हुईं। ६ वर्ष बाद मेरे पुत्र ने आत्महत्या कर ली। इसके बाद उसकी पत्नी के अभिभावक उसे और उसके बच्चों को अपने घर ले गये। वह अपना कुछ सामान भी ले गयी। कुछ सामान ज्यों-का-त्यों पड़ा है। हमने उसे उठाकर रख दिया है। क्या हम उसे उसका सामान दे दें ? क्या वह हमसे कोई मांग कर सकती है ? हम तो उसे अपने बेटे की पत्नी ही नहीं मानते। कृपया उचित सलाह दें।

आपके पुत्र ने विधिवत विवाह किया। प्रश्न आपके मानने का नहीं, प्रश्न है विवाह का और वह आप भी स्वीकार करते हैं कि दोनों ने न्यायालय में विवाह किया और उसके बाद पति-पत्नी के रूप में रहे तथा उन्हें इस वैवाहिक जीवन में चार संतानें भी हुईं। चारों बच्चों तथा उनकी मां को आपके बेटे की संपत्ति से हिस्सा लेने का अधिकार है। आपके पास न रहने के आधार पर उस अधिकार में कोई अंतर नहीं पड़ता। भविष्य की परेशानी से बचने के लिए यह उचित रहेगा कि आप उनका सामान उन्हें सौंप दें।

तलाक दूं या न दूं

एक पाठक : इसी वर्ष जनवरी में मेरी शादी एक सुंदर और उच्च शिक्षित लड़की से हुई है। उसने मुझे बताया है कि विवाह से पहले उसके एक पुरुष से घनिष्ठ संबंध थे। इस समय वह गर्भवती है। हो सकता है कि वह गर्भ उसके प्रेमी का हो। वह कहती है कि शादी से पहले जो कुछ हुआ, वह आगे नहीं होगा। वह गर्भपात कराने के लिए तैयार नहीं है और साफ कहती है कि अगर निभा सको हो, तो निभाओ नहीं तो मुझे छोड़ दो। क्या इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर मैं तलाक दे सकता हूं। तलाक देने से उसका जीवन खराब हो जाएगा। मैं उसका जीवन खराब नहीं करना चाहता, उसे बहुत प्रेम करता हूं, क्योंकि वह बहुत ही सुंदर है।

पत्नी के सुंदर होने के कारण आप उसे बहुत प्यार करते हैं, उसका जीवन खराब न हो, इसके लिए भी चिंतित हैं, ऐसी स्थिति में तो अपने प्रश्न का उत्तर आप स्वयं ही दे रहे हैं —अर्थात आप उसे अपनी पत्नी के रूप में रखना चाहते हैं। विवाह के बाद, विवाह से पूर्व की स्थिति की जानकारी होने के बाद भी आपने अपने पत्नी से शारीरिक संबंध रखे हैं। मैं समझता हूं कि विवाह से पूर्व की गलतियों के आधार पर अपनी पत्नी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सकते।

भरण-पोषण का खर्च

प्रभा कुमारी, बिहार : मैं चौदह वर्षीय अविवाहित लड़की हूं। पिता राष्ट्रीय सेवा में हैं और मां एक धनी बाप की बेटी हैं। पिताजी मां की पैतृक संपत्ति से हिस्सा लेना चाहते हैं। इसी बात पर दोनों में गंभीर तनाव है। इसीलिए मेरे भरण-पोषण के साथ पढ़ाई का खर्चा देने के लिए कोई तैयार नहीं है। मैं अपने चाचा के पास हूं, जो मेरी पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ हैं। क्या मैं पिता से उनकी आय और मां से उनकी पैतृक संपत्ति के आधार पर मैं भरण-पोषण तथा पढ़ाई का खर्च दोनों से अलग-अलग प्राप्त कर सकती हूं?

आपके पत्र से ऐसा लगता है कि आपके नानाजी जीवित हैं। ऐसी स्थिति में आपकी माताजी द्वारा संपत्ति में से हिस्सा मांगने का कोई अधिकार नहीं बनता। इसलिए आपके माता-पिता अभी तो नाहक ही झगड़ रहे हैं।

मां तथा पिता से भरण-पोषण के खर्च की

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

मांग आप कर सकती हैं। वास्तविक संपत्ति तो वह ही है जिस पर आपके माता-पिता का स्पष्ट कब्जा है। कहीं से प्राप्त होनेवाली संपत्ति की आशा के आधार पर भरण-पोषण का निर्धारण नहीं हो सकता। वर्तमान आय के आधार पर ही आपको भरण-पोषण प्राप्त हो सकता है। इसका आधार आपकी वास्तविक आवश्यकता हो सकती है।

नाम का इंदराज

श्रीराम शर्मा, कानपुर : मैं एक वृद्ध व्यक्ति हूं। मेरे गांव के परिवार में एक नौकरीपेशा विधवा है, जिसने एक अन्य व्यक्ति से अनौपचारिक विवाह भी कर लिया है। यद्यपि उसका मेरे परिवार से कोई संबंध नहीं है, तथापि उसने स्वयं को विधवा घोषित कर मेरे परिवार में अपने नाम का इंदराज करा लिया है। मैंने इस संबंध में ब्लाक एवं जिला स्तर पर भी कार्रवाई की है, लेकिन सिवाय आश्वासनों के कुछ नहीं मिला। मैं क्या करूं?

आपका उक्त महिला से कोई संबंध या सरोकार नहीं है। वह विधवा है, परंतु किसी अन्य व्यक्ति के साथ रहती है। लेकिन इसमें आपको क्या शिकायत है? शिकायत तो उस विवाहित व्यक्ति की पत्नी को हो सकती है, जिसके साथ यह महिला रहती है।

उसके द्वारा आपके परिवार में विधवा के रूप में इंदराज करवाने का क्या तात्पर्य है, यह भी स्पष्ट नहीं होता। यदि वह महिला आपके

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी स्वादिष्ट जम्बो टॉफियाँ

मॉर्टन की जम्बो-साइज़ टॉफियाँ। दुगना स्वाद। दुगने गुणों से भरपूर। और दुगना मज़ा। तीन मज़ेदार स्वादों में। एक खाएँ तो बस खाते हो जाएँ।

MORTON SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्टस फैक्ट्री
पोस्ट ऑफिस मढ़ौरा-८४१४१८, जिला : सारन (बिहार)

चेतावनी : खरीदने से पहले विश्वस्त हो लें कि आप असली मॉर्टन ही खरीद रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार से संबंधित नहीं है और इस प्रकार का संबंध दिखाकर आपसे कोई अधिकार मांगती है, तो आप उसका विरोध कर सकते हैं तथा अधिकार देने से इनकार कर सकते हैं। अभी तो अधिकारियों को तथा उक्त महिला को इस संबंध में कि उसका आपके परिवार से कोई रिश्ता नहीं है, नोटिस दे देना ही पर्याप्त रहेगा।

दानपत्र का पंजीकरण

भागीरथीबाई, रायपुर : पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात मेरे दो सगे भाइयों ने एक कच्चे मकान का आधा भाग स्वेच्छा से मुझे स्टांप पेपर पर लिखकर दान में दे दिया है। स्टांप पेपर पर दो गवाहों के हस्ताक्षर भी हैं। कई कारणवश मैं उक्त दानपत्र को पंजीकृत नहीं करा पायी हूं। दानपत्र के पंजीकृत न होने पर क्या उसे मान्यता नहीं मिलेगी ? यों मैं न्यायालय कार्यपालन दंडाधिकारी, रायपुर के समक्ष दस रुपये के स्टांप पेपर पर शपथपत्र प्रस्तुत कर चुकी हूं कि अब मैं उस मकान की स्वामिनी हूं।

अचल संपत्ति के हस्तांतरण का पंजीकरण होना चाहिए। पंजीकरण हो जाने से आपके अधिकार सुरक्षित हो जाएंगे। उचित यह रहेगा कि आप दानपत्रों को पंजीकृत करवा लें। शपथपत्र को पंजीकृत दानपत्र के बराबर नहीं माना जा सकता। एक सौ रुपये से अधिक मूल्य की अचल संपत्ति का हस्तांतरण नियमानुसार पंजीकृत होना चाहिए।

बीमारी के दौरान का वेतन

प्रमोद जौहरी, देहरादून : मैं एक अर्द्धसरकारी कार्यालय में अवर अभियंता के पद पर एक वर्ष के लिए तदर्थ एवं पूर्णतया अस्थायी पद पर नियुक्त किया गया था। कार्यभार ग्रहण करने के दो माह पश्चात मैं सख्त बीमार पड़ गया। बीमारी के दौरान मैं निरंतर समय-समय पर डाक द्वारा मेडिकल भेजता रहा। एक सौ दस दिन की बीमारी के बाद स्वस्थता का प्रमाण-पत्र आदि लेकर मैंने पुनः कार्यभार ग्रहण किया। इस अवधि के वेतन के लिए कई बार अधिकारियों को लिखा। परंतु अधिकारियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही वेतन दिया। कृपया, राय दें कि मुझे क्या करना चाहिए ?

आपने कुल दो माह काम करने के बाद एक सौ दस दिन का अवकाश लिया। महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि नियमानुसार आपकी कितने दिन की छुट्टियां बनीं ? आप अपने भर्ती तथा छुट्टी आदि के नियम देखें। छुट्टियां तो नियमानुसार ही दी जा सकती हैं और उसी के आधार पर अर्जित छुट्टियों का ही वेतन पाने के आप अधिकारी हैं। कोई भी कार्यवाही तब ही संभव है, जबकि आपके द्वारा अर्जित छुट्टियों का वेतन अनाधिकारिक रूप में रोका जा रहा हो।

इच्छानुसार कद बढ़ायें-घटायें

अब कद को इच्छानुसार बढ़ाना-घटाना आदमी के लिए संभव हो सकेगा। सोवियत अस्थि रोग विशेषज्ञ अनातोली पाल्को ने इसके लिए एक नुस्खा तैयार किया है। इस नुस्खे में आहार नियंत्रण व कसरतें शामिल हैं। पाल्को का कहना है कि पर्याप्त मात्रा में शाकाहारी भोजन करने से लंबाई और भार में वृद्धि होती है। लंबाई बढ़ाने के लिए ताजे फलों, सब्जियों, राई, ब्रेड और दालों का सेवन करना चाहिए तथा शराब और धूम्रपान से बचना चाहिए। कद-काठी घटानी है, तो इसके विपरीत आचरण से इच्छापूर्ति हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस्ताद रामप्रसाद (स्वनिर्मित चित्र)

उन्होंने अपना पूरा जीवन अभावों में ही क
दिया बिना किसी शिकवा-शिकायत के।

वे साहित्य और संगीत के प्रेमी थे
अच्छे-अच्छे उद्धरण, पद-गीत उनके मुख
सहज निकला करते। तुलसी एवं देव स्वामी
गेय पदों के वे बड़े प्रेमी थे। उनका कंठ
बड़ा सुरीला था। उनके भैरवीवाले खटके
आज भी लोगों को याद आते हैं। उन
उक्तियां भी बड़ी सार-गर्भित होती थी, जिस
उनके दार्शनिक स्वभाव का पता चलता है
एक बार एक नाबदान में उगे सुंदर पौधे
देखकर वे बोले— 'यहां भी इतना सौंदर्य

भारत कला भवन के प्रेरणा स्रोत
उस्ताद रामप्रसाद

उन्हें विरासत में मिली थी कला

● डॉ. एच. एन. मिश्र

उस्ताद रामप्रसाद मुगल शैली के उत्कृष्ट चित्रकार थे। स्वभाव से अत्यंत सरल। रुपये को उन्होंने हमेशा ठीकरा ही समझा। भले ही उसके अभाव में उनके दिन बहुत कष्ट में बीते। उनकी थोड़ी-बहुत पैतृक संपत्ति भी उनके अन्य रिश्तेदारों ने हड़प ली थी फिर भी उसके लिए उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया। वे चाहते तो उसे वापस ले सकते थे। उस समय अनेक प्रभावशाली लोग उनके प्रेमी थे लेकिन उसे (भगवान) कहीं भेद-भाव नहीं"। क
किसी खिले हुए फूल को देख
कहते— 'अहा ! कैसा खिलखिला रहा है

विरासत में मिली कला

उस्ताद रामप्रसाद को कला विरासत
मिली थी। इनके पिता उस्ताद मूलचंद, द
उस्ताद बटोही, परदादा ग्वाल सिक्ख उच्चक
के मुगल चित्रकार थे। ग्वाल सिक्की ने
बनारस में १९वीं शती के पूर्वार्द्ध में मु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

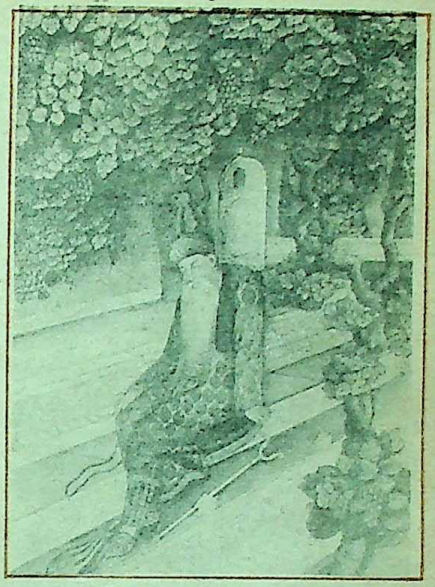

चित्रकला की नींव ही रखी थी। यह कला उन्होंने दिल्ली-दरबार के मुगल चित्रकार लालजी मुस्सवर से सीखी थी।

उस समय महाराजा बनारस के दरबार में कंपनी-शैली के कई चित्रकार थे। उस्ताद रामप्रसाद और उनके बड़े भाई उस्ताद बटुकप्रसाद भी रामनगर महाराजा के दरबार में अपने चित्रों के साथ जाया करते थे। पता नहीं क्यों कंपनी शैली के चित्रकार उस्ताद रामप्रसाद के घराने को महत्त्व नहीं देते थे और न ही वे चाहते थे कि उनका और उनके घराने के लोगों का महाराजा से संपर्क बना रहे। इसी कारण

'उस्ताद रामप्रसाद परंपरागत जानकारियों और अपने शास्त्र के अगाध सागर थे। उनकी कृपा से ही मुझे प्राचीन चित्रों में वास्तविक रुचि हुई और मैंने कला का संग्रह प्रारंभ किया, जिसकी परिणति भारत कला भवन के रूप में हुई।'

—रायकृष्ण दासजी

उस्ताद रामप्रसाद वहां पर अपनी उपेक्षा अनुभव करते थे। इसी संदर्भ में वे एक बार महाराजा के यहां से किसी कारणवश नाराज होकर चल दिये। उस समय रामनगर से बनारस के लिए कोई सवारी का विशेष साधन नहीं था। इसलिए गंगा के किनारे-किनारे पैदल ही यह सोचकर चल दिये कि राजमंदिर के सामने पहुंचकर वहां से किसी नाव से उस पार चले जाएंगे। उस समय गंगा में बहुत चला करती थी। राजमंदिर के सामने पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया और अनजाने में वे एक दल-दल में फंस गये। एक हाथ में तसवीर और एक हाथ में छड़ी और दुपट्टा लिये किसी प्रकार मौत से जूझते हुए बाहर निकलकर घर पहुंचे और उस दिन के बाद अपने जीवन में फिर कभी महाराजा बनारस के दरबार में नहीं गये।

मेरे जीवन काल में उस्ताद रामप्रसादजी नहीं थे, पर जब मैं सन १९६४ में फाइन आर्टस, काशी हिंदू विश्वविद्यालय का छात्र था तभी उनके चित्रों से पहला साक्षात्कार हुआ था। उस समय भारत कला भवन के कैंपस में ही मेरा विद्यालय था और हमें अकसर कला गुरु श्री

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्नाथ मुरलीधर अहिवासीजी भारत कला भवन में चित्रों को देखने के लिए ले जाया करते थे। वहीं पर हम लोगों की मुलाकात श्री रायकृष्ण दास से हुआ करती थी। उस समय भारत कला भवन के बायें तरफ की गैलरी में उस्ताद रामप्रसाद की कई अनमोल कृतियां लगी थीं। रायसाहब अहिवासीजी से इन कृतियों के बारे में बताते हुए उस्ताद रामप्रसाद के साथ की अपनी अनुभूतियों को बहुत ही भाव-विह्वल होकर सुनाया करते थे। तभी से मेरे मन में उस्ताद रामप्रसादजी बैठते चले गये। संयोग से जब मैंने सन १९८३ में बनारस की चित्रकला पर शोध-कार्य प्रारंभ किया तो उस्ताद रामप्रसादजी की स्मृतियां पुनः जाग उठीं पर लगा कि मुझे तो उनके बारे में बहुत अल्प जानकारी है। मेरी इस कमी को स्व. रायकृष्ण दास जी के सुपुत्र प्रसिद्ध कला इतिहासवेत्ता प्रोफेसर आनन्दकृष्ण ने पूरा किया। उन्होंने अपने पिताजी के उस्ताद रामप्रसाद जी के साथ गुजरे हुए मधुर लमहों को बहुत ही रोचक ढंग से बताया।

रायसाहब से संपर्क

उस्ताद रामप्रसाद रायसाहब के संपर्क में कैसे आये, इसकी भी एक रोचक घटना है। रायसाहब के पिता की इच्छा थी कि भागवत पुराण के दशम् स्कंध के रास-पंचाध्यायी की सचित्र प्रति तैयार करवायी जाए। वे रास-पंचाध्यायी के बहुत बड़े भक्त थे। दैवदुर्वियोग से प्लेग में उनका सहसा परलोकवास हो गया। उस समय रायसाहब की किशोरावस्था थी। बड़े होने पर लगभग सन १९०६ में अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए उनके मन में उक्त चित्र बनवाने की इच्छा हुई। उन्होंने उस समय के मुगल चित्रकार उस्ताद बटुकप्रसाद से चित्र बनवाना प्रारंभ किया। उन दिनों उनके यहां उनके फुफेरे भाई सुप्रसिद्ध शाह खानदान के बाबू यदुनाथप्रसाद हर दूसरे-तीसरे दिन आया करते थे। चित्रों के बारे में बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "भाई! असली चित्रकार तो बटुकप्रसाद का छोटा भाई रामप्रसाद है, उससे चित्र बनवाओ। हमारे यहां उसने बहुत से अच्छे चित्र बनाये हैं।" अतः रायसाहब रास-पंचाध्यायी चित्रमाला उस्ताद बटुकप्रसाद द्वारा पूरी होते ही रामप्रसाद को बुलवाया। फिर जो रायसाहब से उनका संबंध जुड़ा वह आजीवन चलता रहा।

पहली : अनुकृति

उस्ताद रामप्रसाद ने रायकृष्ण दास से संपर्क हो जाने पर उन्हीं के घर अपना 'ठीहा' बना लिया। यहीं पर उन्होंने अपनी पहली अनुकृति राधा कृष्ण की बनायी, जिसे रायसाहब की मां ने उन्हें बनाने को दिया था। यद्यपि यह चित्र उनके हिसाब से अच्छा नहीं बना था, फिर भी पहली कॉपी (अनुकृति) होने के कारण इस चित्र को अपना गुरु मानते थे।

उन दिनों बनारस के रईस बाबू सीताराम शाह के यहां सौ के लगभग मुगल शैली के चित्र थे। रायसाहब उन चित्रों को अपने यहां मंगाकर उस्ताद रामप्रसाद के साथ बैठकर उसके गुण-दोष पर घंटों विचार-विमर्श करते थे। इन्हीं में से एक चित्र 'पार्वती की तपस्या' का था, जिनमें पार्वती अंधेरी रात में शिवलिंग की पूजा करते हुए बनायी गयी थी। इस चित्र की उस्ताद रामप्रसाद ने कई प्रतियों की अनुकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की और क्रमशः प्रत्येक चित्र में अपनी मौलिक कल्पना से उसमें परिवर्तन करते चले गये। यहां तक की पांचवी प्रति में तो अंधेरी रात का प्रभाव समाप्त हो गया। इस समय यह चित्र बनारस के रईस स्वर्गीय श्री मुरारीलाल केडिया के संग्रह में है।

बंगाली शैली में चित्रांकन

उस समय देश में बंगाल शैली का आंदोलन चल रहा था। लेकिन उस्ताद रामप्रसाद बंगाल शैली के चित्रों को नहीं पसंद करते थे। पर रायसाहब के कहने पर इसमें थोड़ी बहुत रुचि लेनी प्रारंभ की और उन्होंने पाया कि चित्रों का विषय काफी विस्तृत हो सकता है। इस शैली के आधार पर उन्होंने कई पौराणिक चित्र बनाये और क्रमशः इनकी परंपरागत शैली में एक नया दृष्टिकोण प्रारंभ हुआ। इसमें शिव संबंधित 'कंपोजिशन' तो उन्होंने बहुत ही अच्छे बनाये। उस्ताद रामप्रसाद को शिव का अंकन बहुत प्रिय था। शैव भावनाओं को उन्होंने कहीं-कहीं बड़ी सुंदरता से व्यक्त किया है। इन चित्रों में शिव का कल्याणमय, भोला-भाला, अवघड़दानी रूप खूब खिला है। इस तरह के चित्रों में पेंसिल से बनाया हुआ 'शिव तांडव' (भारत कला भवन में संग्रहित) का चित्र बहुत ही उच्च कोटि का है। इसके अलावा उन्होंने 'शिव की तपस्या' का एक बड़ा चित्र बहुत ही अच्छा बनाया, डॉ. एस. के. बर्मन के कैलेंडर के रूप में वर्षों तक छपता रहा। उन्होंने 'शिव की तपस्या' का एक और सुंदर चित्र हाथी दांत पर बनाया था, जो इस समय रायसाहब की बहन श्रीमती ललित किशोरीजी के पास है। इसी चित्र की शिव की

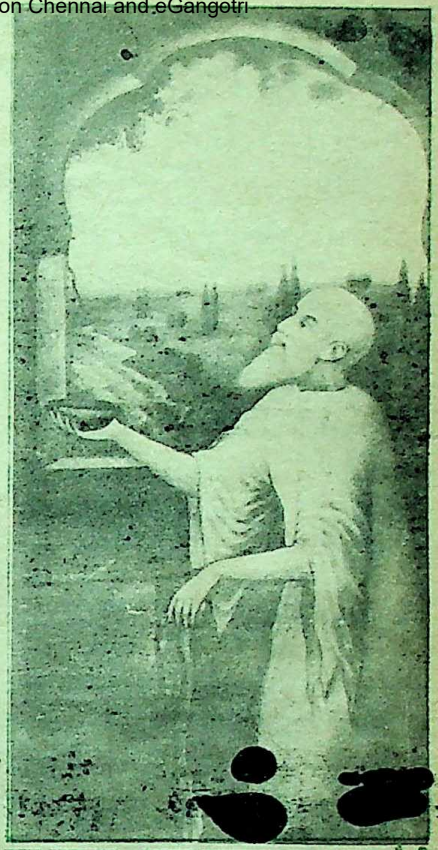

उमर खय्याम : उस्ताद रामप्रसाद द्वारा मुगल शैली एवं ठाकुर शैली में निर्मित चित्र

समाधि के मुद्रा सारनाथ की भगवान बुद्ध की प्रतिमा से बिलकुल मिलती है। इस चित्र की प्रेरणा उन्हें वहीं से मिली हो, क्योंकि वे राय-साहब के साथ अकसर सारनाथ जाया करते थे।

सरस्वती का अंकन

उस्ताद रामप्रसाद ने 'सरस्वती' का एक चित्र सन १९३० में राय साहब के घर पर पटिया रंग के समय पर बनाया था। इस चित्र में 'सरस्वती' एक बड़े से कमल पर बैठी हैं और उनके

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूनतम समय में अपना धन दुगुना करें

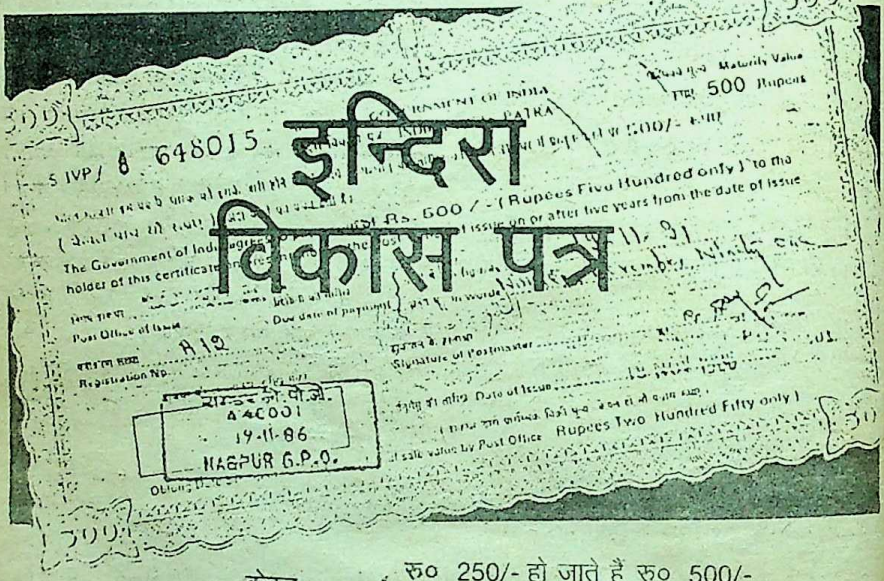

केवल
5½ वर्ष में

रु० 250/- हो जाते हैं रु० 500/-
रु० 500/- हो जाते हैं रु० 1,000/-
रु० 2,500/- हो जाते हैं रु० 5000/-

विशेष आकर्षण

- आवेदन पत्र की आवश्यकता नहीं
- अधिकतम सीमा नहीं
- जिसे चाहें, आप दे सकते हैं
- खराब हो जाने अथवा कट-फट जाने के स्थिति में दोबारा भी मिल सकते हैं

ग्रामीण जनता तथा आयकर न देने वालों के लिए सबसे सुविधाजनक सरकारी बचत योजना

किसी भी डाकघर से खरीदें

राष्ट्रीय बचत संगठन
भारत सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगल-बगल छोटे कमल हैं। सरस्वती का पूरा शरीर और उनका कपड़ा सफेद रंग का है, जिसे बहुत ही हलके गुलाबी रंग से परदाजा गया है। इसमें पानी की लहर बहुत ही सुंदर बन पड़ी है, जैसे चांदनी रात में चंद्रमा की किरणें पानी में पड़ रही हों। शायद यह प्रभाव गंगा में पड़ती चांदनी की किरणों को देखकर आया हो क्योंकि वे जहां पर बैठकर चित्र बनाते थे, वहां से गंगाजी दिखलायी पड़ती थीं। इस चित्र के चेहरे का भाव बालिका स्वरूप बहुत भोला भाला है। राय साहब का कहना है कि इस चित्र के चेहरे की प्रेरणा उन्हें अपनी छोटी लड़की पुन्नी को देखकर मिली थी। यह चित्र भी भारत कला भवन में संग्रहित है।

उस्ताद रामप्रसाद की अकबर कालीन चित्र उतने नहीं पसंद थे, जितने कि शाहजहां कालीन। उसमें भी वे होनहार को बहुत बड़ा चित्रकार और अपना आदर्श मानते थे। उसकी चित्र शैली को उन्होंने आत्मसात कर लिया था। इसका प्रमाण हमें इस तरह मिलता है कि एक बार रायसाहब के पास होनहार का बनाया हुआ एक चित्र आया था। वह बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। इस चित्र को उन्होंने इस तरह से ठीक किया कि यह बताना मुश्किल हो गया कि किस स्थान पर ठीक किया गया है। राय साहब ने इस चित्र के कोने में लिखा भी है कि इसका जीर्णोद्धार उस्ताद रामप्रसाद ने किया। आज यह चित्र भारत कला भवन में है।

उस्ताद रामप्रसाद ने बहुत से मुगल शैली के चित्रों की अनुकृति की। उसमें से अधिकांश चित्र भारत कला भवन में हैं। इनकी अनुकृति बहुत ही सुंदर होती थी, जिसे देखकर यह निर्णय करना मुश्किल हो जाता था कि कौन असली प्रति है और कौन अनुकृति। इसके साथ ही वे कंपनी शैली की परंपरा में हाथी दांत पर भी बहुत सुंदर चित्र बनाते थे। इस प्रकार के चित्र बनानेवाले घरानेदार चित्रकारों से इनकी विशिष्टता यह थी कि वे मौलिक चित्र भी बनाते थे। ऐसे चित्रों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जयशंकर प्रसाद, महात्मा गांधी की शबीहें प्रमुख हैं। ये सभी चित्र भारत कला भवन में हैं।

एक बार उस्ताद रामप्रसाद ने भगवान श्रीराम का एक चित्र बनाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उस चित्र को देखते हुए त्रुटियां बतायीं और सुधारने के लिए कहा, इस पर उन्होंने कहा—'सुधारने-वाले तो स्वयं आप (रामचन्द्र) ही हैं, उसे और कोई कैसे सुधार सकता है।' रायकृष्ण दास के मौसाजी मिर्जापुर के दो-तीन बड़े व्यवसायियों में से एक थे, पर दुर्भाग्यवश उनका सारा कारोबार जाता रहा, यहां तक कि उनके पास खाने तक के लिए भी कुछ नहीं बचा। ऐसी स्थिति में रायसाहब उन्हें अपने घर ले आये। संयोग ऐसा हुआ कि जब से मौसाजी इनके घर आये तब से रायसाहब की आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन खराब होने लगी। परिवार के लोग यह समझने लगे कि मौसाजी के आने से ही वह सब हो रहा है। इसलिए घर के सभी लोग उनसे बहुत चिढ़े रहते थे और कहा करते कि स्वयं तो बरबाद हुए ही, यहां भी बरबाद करने चले आये। यही भावना उस्ताद रामप्रसाद की भी उनके प्रति थी। एक दिन चित्र बनवाते-बनवाते मौसाजी ने कहा—ठीक से बनाना 'शुक्राचार्यजी'।"

रामप्रसादजी ने तुरंत जवाब दिया—"अच्छा 'शनीचरजी'।"

उमर खय्याम : एक मौलिक कृति

उस्ताद रामप्रसाद की सर्वाधिक मौलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृति उमर खय्याम चित्रावली है। यह चित्रावली कैसे तैयार हुई, इसका भी एक रोचक प्रसंग है—सन १९२० के दिसम्बर माह के बड़े दिनवाले अंक 'इलस्ट्रेटेड वीकली' में 'उमर खय्याम' की एक रंगीन चित्रावली छपी। इस पत्रिका में छपे इन रंगीन चित्रों को देखकर रायसाहब का मन खिन्न हो उठा। ये सभी चित्र बंबई के चित्रकार धुरंधर के बनाये हुए थे। इन चित्रों में कल्पना का अभाव तो था ही उनकी कलम भी बिलकुल विदेशी थी। उस समय उमर खय्याम के रुबाइयों को मूर्त रूप देने के लिए विदेशी चित्रकारों ने एक वेश-भूषा निश्चित कर ली थी। यह पश्चिम एशिया, तुर्की, ईरान और अरब के परिधान की एक विशेष खिचड़ी थी, जो हास्यास्पद लगती थी। धुरंधर ने भी इसी परिधान का सहारा लेकर उक्त चित्रों को बनाया था। उसी समय से रायसाहब के मन में भी इन चित्रों को उस्ताद रामप्रसाद से बनवाने की कल्पना आयी। इसके लिए उन्होंने उमर खय्याम संबंधित अनेक पुस्तकें एकत्रित की और अनुवाद करवाकर उनका विधिवत अध्ययन करने के बाद घंटों उस्ताद रामप्रसाद के साथ बैठकर विचार-विमर्श किया। उनके भावों को आत्मसात करके उस्ताद रामप्रसाद ने उक्त चित्रावली की रचना की। रायसाहब ने अपने संस्मरण में लिखा है कि 'इस प्रसंग के दौरान मेरा और उस्ताद रामप्रसाद का भाव जगत एक हो गया था। बस, मैं उन्हें दृश्य समझाता जाता और वे रूप देते जाते।'

उस्ताद रामप्रसाद ने उमर खय्याम चित्रावली में मुगल शैली का ठाकुर शैली के आलेखन में किस प्रकार से संगम संभव है, रायसाहब की इस कल्पना को उन्होंने साकार कर दिया। इस चित्रावली में उन्होंने कई सुंदर चित्र बनाये। इनमें सबसे सुंदर चित्र 'बालक का खिलौना घुमाते हुए' का है। इस चित्र को उन्होंने 'वॉश' करके नहीं बनाया है। इस चित्र में एक बालक चरखी घुमा रहा है। चरखी के चारों ओर चित्र बने हुए हैं। घुमाने से चित्र धुंधले दिखायी पड़ेंगे, इसे ध्यान में रखकर इन रूपों के आकार स्पष्ट नहीं बनाये गये हैं, सिर्फ आभासमात्र हैं। एक तरह से यह उस्ताद रामप्रसाद की रहस्यवाद की भी कल्पना जान पड़ती है। डॉ. आनंद कुमारस्वामी ने इस चित्रमाला को प्रसिद्ध यूरोपीय चित्रकार ड्यूलेक की कृतियों से श्रेष्ठकर माना है, जबकि वे यूरोपीय कला में इस विषय के अच्छे चित्रकार माने जाते हैं।

उस्ताद रामप्रसाद की अभिव्यंजना-शक्ति बहुत तीव्र थी। खेद है कि वे जिस काल में पैदा हुए, उनकी प्रतिभा के लिए सर्वथा अनुपयुक्त था। पेट भरने के लिए उन्हें मामूली तैल चित्र की शबीहें, प्रतिकृतियां, फिरके के दामों में बनाना पड़े। इन्हीं सब परिस्थितियों के बीच ६९ वर्ष की अवस्था में इस महान कलाकार का निधन पूर्णिमा को हो गया। रायकृष्ण दास ने अपने संस्मरण में लिखा है 'उस्ताद रामप्रसाद परंपरागत जानकारियों और अपने शास्त्र के अगाध सागर थे। उनकी कृपा से ही मुझे प्राचीन चित्रों में वास्तविक रुचि हुई और मैंने कला का संग्रह करना प्रारंभ किया जिसकी परिणति भारत कला भवन के रूप में हुई।'

—३४/९, पुराना सहस्त्रधारा रोड
देहरादून-२४८००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों का उत्तर दे सकें तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

— संपादक

१. **दो अंकों** की दो संख्याएं हैं, जिनमें अंक वही हैं, किंतु उलटे हुए। दोनों का जोड़ ५५ और अंतर ९ है। बताइए वे संख्याएं क्या हैं ?

२. **भारत में** किस स्थान पर ऐसा एकमात्र मंदिर है जिसमें ब्रह्मा की उपासना की जाती है और जहां प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है ?

३. **देश** में सबसे पहले सरकारी बैंक की स्थापना कहां और कब हुई थी ? उसका क्या नाम था ?

४. **भारत** के किन तीन राज्यों में गरीबी-रेखा से नीचे सबसे अधिक आबादी है ? देश की कुल मिलाकर कितनी आबादी गरीबी-रेखा के नीचे है ?

५. **देश** में कितनी भूमि खेती योग्य है और इस समय कितनी भूमि पर खेती होती है ?

६. **भारत** में इस समय असंगठित श्रम-शक्ति कितनी हैं ? इसमें कृषि-क्षेत्र में काम करनेवाले कितने प्रतिशत हैं ?

७. **इस** शताब्दी के अंत तक दुनिया की आबादी कितनी हो जाने का अनुमान है ? सन १९६० तथा सन १९८० के आंकड़े क्या थे ?

८. **कौन-सा** नोबल पुरस्कार ऐसा है जो अन्य नोबल पुरस्कारों के संस्थापक अल्फ़्रेड नोबल के छह दशक से भी अधिक बाद प्रारंभ किया गया ? सन १९८७ का यह पुरस्कार किसे मिला है ?

९. **किस** गेंदबाज ने टेस्ट मैच की पारी में दस विकेट लेने का श्रेय प्राप्त किया है ?

१०. **हिमालय** के पर्वतीय मार्ग पर सबसे अधिक तेज दौड़ने का रेकार्ड अब तक किसने कायम किया है ?

११. **'विश्व** न्यायाधीश पुरस्कार' (वर्ल्ड जस्टिस अवार्ड) पानेवाला पहला भारतीय कौन है ?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

संरक्षक

● कांति देव

एक कहानी सुनाओ न मां ! सोने जाती मां के पल्लू घसीटते हुए आशीष बोला।

क्या कहानी सुनाऊं ? कहानियां तो बहुत-सी हैं। सोचते-सोचते पूर्वा का मन, उस उम्र को लौट गया, जब वह दादी के पांव पर पांव चढ़ाए हुए जाने कितनी कहानियां सुना करती थी। दादी की सारी कहानियां राजा-रानियों की कहानियां हुआ करती थीं। हो भी क्यों न ! उसका परिवार भी किसी रजवाड़े से कम तो न था। उसके दादा एक राजा के वजीर थे। उन्होंने जितनी संपत्ति जमा की थी, वह किसी भी राज-परिवार की बराबरी करने के लिए यथेष्ठ थी। कितना बड़ा घर था। अकसर ऐसा होता था कि कई-कई कमरे कई-कई दिन तक बिना किसी के गये सुनसान अकेले में रोते बिसूरते से रहते थे।

जब से पूर्वा ने होश संभाला था। उसने अभाव की परछाईं का भी अहसास नहीं किया था। उसे कभी पता ही नहीं होता था कि उसके पास कितने कपड़े हैं। कितनी नौकरानियां हैं। हां, इतना जरूर था कि इन नौकरानियों, इन कपड़ों और इतने वैभव के बीच उसे बोनशाईयों की तरह सिर्फ मर्यादाओं की तस्वीर तक ही उसे बढ़ने दिया गया था।

"क्या सोचने लगी मां। कहानी सुनाओ न।" आशीष ने फिर लढ़ियाते हुए कहा।

पूर्वा बेटे के बगल में बैठकर उसका सहलाने लगी। उसने अपनी कहानी शु की थी। "एक था राजा और एक थी रानी लड़का मां के मुंह पर हाथ रखते हुए बोल "यह नहीं। कोई और कहानी सुनाओ

"क्या कहानी सुनाऊं ?"

"वो वाली कहानी, जिसमें राजकुमार एक राजकुमार ने चिड़िया बना दिया थ

आशीष को इतनी सारी कहानियों में कहानी क्यों अच्छी लगती है। कदाचित पुरुष चाहते हैं कि उनके वश में हर वस्तु वह जिस तरह चाहे मोड़-तोड़ सकें। अपनत्व की पराकाष्ठा ही तो है।

"क्या सोचने लगी मां ? कहानी सु न। मुझे नींद आ रही है।"

पूर्वा को आशीष की इस बात से झुंझलाहट-सी हुई। लेकिन आशीष की सूरत पर छोटी-सी इच्छा का नशा दे उसका मन पिघल गया। उसने अपने दोनों खाट पर उठाकर रख लिए और आशीष के को अपनी गोद में रखकर वह उस राजकु की कहानी सुनाने लगी, जिसमें उसके चहेते राजकुमार ने उसे चिड़िया बना दिया

एक थी राजकुमारी। उसका नाम दमयंती। वह सुंदर तो थी, साथ ही धन- से परिपूर्ण और सब सुख-सुविधाओं से भी। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थ उसे अपने पिता का घर छोड़कर कभी ऐसे पास जाना पड़ेगा, जो कि पूरी तरह से अ होगा। जीवन की सारी सुख-सुविधों से उस राजकुमारी को एक दिन एक अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार के हाथों सौंपकर उसके माता-पिता और परिवार के सभी लोग निश्चिंत हो गये।" पूर्वा अभी यहीं तक सुना पायी थी कि आशीष का सिर गोदी से लुढ़ककर बिस्तरे पर जा पड़ा। पूर्वा ने प्यार से आशीष के सिर को तकिए पर रखा और मुंह धोने चली गयी।

शीशे के सामने आज से पहले कई बार उसने अपना चेहरा देखा था। इस चेहरे में जाने कितने उतार-चढ़ाव आ गये थे। इन उतार-चढ़ावों को दूसरों के अलावा उसका खुद का मन कई बार देख चुका था, भांप चुका था। उसके पिता ने भी तो उसी राजकुमारी की तरह सुख-सुविधाओं में पालने के बाद, उसे एक अनजाने आदमी के हाथ सौंप दिया था।

अमर तब विदेश में रहता था। पूर्वा के मन में बचपन से ही एक लालसा थी कि वह खुद एक चिड़िया होती और अपने बड़े-बड़े डैनों की मदद से सारी दुनिया का जायजा लेना चाहती थी। अमर से शादी करके उसे लगा कि सारी दुनिया को देखने का सुख उसे बिना पंख मिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मिल गया। चहकती हुई पहली बार जब वह उसकी बांहों में जा पड़ी थी, तब उसे लगा था कि यह वही आदमी है जो अपने बड़े-बड़े डैनों पर बिठाकर उसे सारी दुनिया दिखाएगा। उसने सारी दुनिया दिखाई भी। अपने साथ लेकर उसे तमाम जगह घूमता फिरा। बहुत स्नेह दिया। बहुत प्यार दिया। लेकिन पूर्वा की उड़ान जल्दी ही खत्म हो गयी और शादी के चंद दिन बाद बड़े डैनोंवाला पक्षी उसे एक लंबी यात्रा कराकर उसे फिर उसी खोह में छोड़ गया, जहां उसे सिर्फ अकेले रहना था। उसका अकेलापन उसकी लड़की के जन्म के बाद ही टूटा। बड़े मन से अमर और पूर्वा ने उसका नाम आशा रखा। बिल्कुल गुड़िया सरीखी थी वह। पूर्वा का सारा समय उसी गुड़िया से खेलने में निकल जाता। अमर सुबह उठकर दफ़्तर चला जाता और उसके बाद देर गये घर आता था। घर आने पर भी घर में एक बड़ी असाधारण-सी चुप्पी रहती थी, जो सिर्फ बच्ची के रोने और हंसने से टूटती थी। सच तो यह था कि पहले-जैसी कोई बात ही नहीं रह गयी थी। बच्ची के बावजूद एक भयंकर खालीपन पूर्वा को अकसर लीलने लगता था। पूर्वा का अकेलेपन का रोना अमर को अकसर झुंझला देता था। उस झुंझलाहट में अमर पूर्वा को जब कुछ और नहीं दे पाया, तो एक कुशल किसान की तरह उसने एक और बीज पूर्वा के आंचल में डाल दिया और तब पैदा हुआ था आशीष।

कुछ दिन फिर वही खेल चलता रहा और पूर्वा अपने नये खिलौने से अपना जी बहलाती रही। अमर का दफ़्तर और दफ़्तर के बाद बाहर का क्रम पहले की तरह चलता रहा। पहले की दूरी और बढ़ गयी और धीरे-धीरे असह्य सीमा तक बढ़ती गयी। जिंदगीभर दूसरों के इशारों पर नाचते-नाचते उसका सिर चकराने लगा था। अब वह पुचकारने और दुलारनेवाला खिलौना बनकर नहीं, बल्कि अपने लिए एक विशेष व्यक्तित्व बनकर जीना चाहती थी। एक दिन शाम को अकेले अमर का इंतजार करते-करते पूर्वा को खयाल आया कि वह अपने को फिर से खोजती क्यों नहीं। और खासतौर से जब वह अपने को खोजने लायक थी। मां, पिता ने प्यार से जरूर पाला था, लेकिन उसे स्वावलंबी बनाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी। डॉक्टर की डिग्री तो थी ही, लेकिन शादी और सर्वस्व समर्पण कर देने का सपना इतना नशीला था, कि उसे एक डॉक्टर बनने के सपने को दफनाने में तनिक भी दर्द नहीं हुआ। अमर ने पूर्वा के इस समर्पण को उसकी कमजोरी मानकर उसके व्यक्तित्व को नकारना शुरू कर दिया। कभी-कभी डॉक्टरी का सपना जब उछलता था, तो अमर बड़ी कुशलता से उस पर कठोर शब्दों का प्रहार कर उसे कहीं बहुत नीचे गाड़ देता था। फल यह हुआ कि पूर्वा का डाक्टरी का सपना सुरक्षा के डैनों की तलाश करता-करता सचमुच दम तोड़ बैठा। एक अरसा बीत गया। दूरियां कम करने का प्रयास करते-करते दूरियां बढती गयीं।

अमर जो कि कभी इस राजकुमारी को ब्याह कर लाया था, असलियत में उससे ऊबने लगा था। वह अकसर देर से घर आता। आने के बाद भी अपने साथ अपने दोस्तों को लेकर चला आता। उस बीच दोनों दूसरों के माध्यम से ही एक-दूसरे से बात करते। पति-पत्नी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर से शादी करके उसे लगा कि सारी दुनिया को देखने का सुख उसे बिना पंख मिले ही मिल गया। चहकती हुई पहली बार जब वह उसकी बाहों में जा पड़ी थी, तब उसे लगा था कि यह वही आदमी है जो अपने बड़े-बड़े डैनों पर बिठाकर सारी दुनिया दिखाएगा। उसने सारी दुनिया दिखायी भी। अपने साथ लेकर तमाम जगह घूमता फिरा बहुत स्नेह दिया। बहुत प्यार दिया। लेकिन पूर्वा की उड़ान जल्दी ही खत्म हो गयी।

जैसा कोई व्यवहार ही नहीं रहा। दोनों पति-पत्नी का नाटक खेलते, एक ही छत के नीचे रहते, एक-दूसरे से घृणा करने लगे। अमर से बेहद नफरत करने के बाद भी पूर्वा स्थिति को संभाले रखना चाहती थी। लेकिन एक शाम को जब अमर अपने साथ जूली को लेकर आया, तो पूर्वा को लगा कि उसका अमर, वह डैनोंवाला पक्षी है, जो एक ही चिड़िया की सुरक्षा पर विश्वास नहीं करता। उस दिन उसका रहा-सहा संयम टूट गया।

अकसर जूली के नाम पर अब घर में झगड़े होते। बच्चे दरवाजों के पीछे सहमे हुए मां-बाप की बातें सुनते और बाद में मां के आंचल में लिपट उसके दाएं-बाएं सो जाया करते थे। यह प्रक्रिया बहुत दिन तक चलती रही। बच्चे इन दृश्यों को देखते और डरते कि कहीं ऐसा न हो कि उनकी मां उनके पास से कहीं चली जाए। या फिर कि उनका पिता जो कि यदा-कदा घर में मिलता था, हमेशा के लिए घर से न चला जाए। उनका भी भय एक अमूर्त भय था, जिसको सच न होने देने के पूर्वा ने बहुत प्रयास किये। लेकिन प्रयास की भी सीमा होती है।

एक दिन अमर रात में बहुत देर से आया। घड़ी में उस समय दो बजे थे। दरवाजा खोलते हुए उसके मुंह से संयम किए हुए रोष का जो पहला अंश निकला वह अमर को भारी पड़ गया। "इतनी जल्दी आने की क्या जरूरत थी। सुबह का इंतजार कर लेते।" अमर उस समय नशे में धुत्त था, जिसके वश हो उसने बिना किसी जवाब के पूर्वा को एक तरफ धकिया दिया और जाकर बदहवास में अपने पलंग पर सो गया।

उस रात पूर्वा एक मिनट को भी नहीं सो पायी। रात में अमर के मुंह से आती हुई शराब की बू और उसके तेज खर्राटे उसे आरी की तरह चीरने लगे। आज यह पहला वार था। इस तरह के वार पूर्वा ने महीनों/सालों तक झेले। पर एक दिन जब बात हाथापाई पर उतर आयी, तो पूर्वा ने चुपचाप यह निश्चय किया कि वह अब अपनी पुरानी शिक्षा को मांजेगी और उसी को बेचकर अपना और अपने बच्चों का निर्वाह करेगी। वह जानती थी कि उसका डॉक्टरी शुरू करना या कोई और काम करना न अमर को अच्छा लगेगा और न उसका स्वतंत्र निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झेलना उसके लिए आसान होगा। लेकिन फिर भी उसने कोशिश जारी रखी और एक दिन जब उसे एक सीनियर डॉक्टर का जूनियर बनने का मौका मिला, तो उसने छूटते ही हां कर दी। अमर को इस बात का पता लगना था और लग गया। इस बात के पता लगते ही घर में बहुत हंगामा हुआ। बात फिर हाथापाई पर पहुंची और अमर ने उस दिन बेहताशा पूर्वा को पीटा। बच्चे मां के आंचल में छिप बिना वजह बेहताशा फूट-फूटकर रोये। पूर्वा के अपने आंसू, अपना रोना, इन बच्चों के दुःख के आगे नगण्य हो गया और उसने निश्चय कर ही लिया कि वह अमर के साथ कभी नहीं रहेगी। उसने एक शब्द भी नहीं कहा। न एक चीज घर से उठायी। उसने सिर्फ अपने दो बच्चों को रात के कपड़ों में उठाकर गाड़ी में बिठाया और अपने सीनियर डॉक्टर के घर चली गयी।

उस दिन का दिन था और आज का दिन है। पूर्वा ने कभी पलटकर नहीं देखा। अमर के कई बार टेलीफोन आते और वह तरह-तरह से पूर्वा को फुसलाने की कोशिश करता, उससे लौट आने की बात करता। पूर्वा के घर पर न होने पर वह बच्चों से मिलने आता, उनके पास बहुत से खिलौने, बहुत से ऐसी चीजें छोड़कर चला जाता कि जिन पर बच्चे अकसर ललचाते और अपनी मां को फिर से अपने पापा के पास लौट आने की सिफारिश किया करते थे।

इस बीच कई बार ऐसा हुआ कि अमर आकर घर में रहा। लेकिन पूर्वा उससे कभी दो शब्द भी बात नहीं कर पायी। अमर अगर एक कमरे में होता, तो पूर्वा दूसरे कमरे में चली जाती। अमर अपने बच्चों से शिकायत करता था कि तुम्हारी मां मुझसे बात नहीं करना चाहती है। उससे कहो कि मुझसे बात करे।' पूर्वा का मन अब बिलकुल उस चिकने बरतन की तरह से हो गया था जिस पर भावनाओं का पानी टिकने का कोई न तो कारण ही रहा था और न ही सुविधा ही।

जल्दी ही पूर्वा की प्रेक्टिस बहुत जोरों से चल पड़ी। उसे अब पैसों की भी कोई परवाह नहीं रही। कई सालों तक अकेले रहने के बाद, उसे लगने लगा कि उसके पैरों का बल अब इतना हो गया है कि वह बहुत से पैरों को सहायता देने के काबिल हो गये थे।

एक रात पूर्वा अपने कमरे में अकेली सोयी थी और दोनों बच्चे अपने कमरों में। रात में घंटी बजी। पूर्वा हड़बड़ाकर अपने गाऊन में ही निकल पड़ी। नशे में धुत्त अमर फिर घर में आ गया। उसको देखकर पूर्वा के मन में एक बार फिर वही सब बातें आ गयीं, जो कि पिछले कई सालों से उसके साथ रहकर आया करती थीं। उस रात वह वहीं सोया।

सुबह उठते ही बच्चों ने पापा को देखा। बच्चों ने बहुत इसरार किया कि मां, पापा को अब मत जाने दो। कहीं मत जाने दो। बच्चों अपने छोटे-छोटे डैनों को अपने पापा के आगे पीछे फैलाकर बैठ गये। पूर्वा की हिम्मत ही नहीं हुई कि वह अमर को लौटा देती।

अमर ने बड़ी हिचकिचाहट के साथ प्रस्ताव रखा कि क्यों न वे लोग पहले की तरह साथ रहने लगे। अमर के इसरार के ढंग में कुछ था कि पूर्वा तुरंत कोई जवाब नहीं दे पायी उसे अमर एक छोटा-सा बच्चा लगा, जिसके पंख सारी दुनिया ने काट दिये थे। शायद उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब ऐसी सुरक्षा की जरूरत है जो कि सिर्फ पूर्वा के स्नेहिल डैनें और पैर ही दे सकते हैं।

बड़े मन से, बड़े उत्साह से उस दिन सबके लिए बहुत-सा नाश्ता बनाया गया। जिसमें अमर की पसंद की चीजें बनीं। एक अरसे के बाद सबने बड़े मन से एक पारिवारिक माहौल में खाना खाया। अमर ने बच्चों को बेहताशा चूमा, कहानियां सुनायीं। बच्चों को अपने प्रेम, स्नेह से सराबोर कर दिया। उसने शर्म-लिहाज छोड़कर बच्चों के सामने पूर्वा से माफी मांगते हुए बेबाकी से कहा— "सचमुच मैंने तुम्हारे साथ ऐसा बरताव किया, जैसा कोई जंगली भी अपनी पत्नी के साथ नहीं करेगा। मैं जानता था कि तुम एक बड़े परिवार की लड़की हो, तुम राजकुमारी हो, लेकिन अफसोस मैं कोई राजकुमार नहीं था और शायद इसीलिए तुम्हारे मन की थाह पाये बिना, तुम्हें बेबात झुठलाता गया। उसने उस मारपीट की भी याद दिलायी कि जिसकी कड़ुवाहट से ऊबकर पूर्वा ने अकेले अपनी दिशा तलाशने का बीड़ा उठा लिया था। अमर को उसके व्यवहार के लिए क्षमा करने का न पहले ही कोई कारण था न अब ही लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं टूटते हुए वृक्ष पर प्रहार करने की क्रूरता ईश्वर ने उसके नियति में नहीं लिखी थी। इसी के वश हो न चाहते हुए भी अमर को क्षमा करने का उसने नाटक किया।

शाम होते ही बच्चे कहीं बाहर जाने की जिद करने लगे। एक पारिवारिक माहौल में अमर तैयार हुआ। पूर्वा ने अच्छे कपड़े पहने व बच्चों को पहनाए और सभी साथ मिलकर घूमने निकल पड़े। बच्चे माता-पिता दोनों के प्यार के अनुभव को खूब लंबा खींचकर जीने की कोशिश करने लगे। अमर पूरे समय बच्चों को अंगुली से कपड़े, चीजें दिखाता, समझाता हुआ चला जा रहा था।

घर लौटते समय ट्यूब ट्रेन पकड़नी थी। लड़की और लड़का दोनों ही बड़े हो गये थे। लेकिन फिर भी अमर उनसे ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे वह अब भी छोटे-छोटे बच्चे हों। ट्यूब ट्रेन के रुकते ही पूरा परिवार एक लंबी सीट पर फैलकर बैठ गया। दोनों बच्चों के मुंह पर सारी दुनिया का वैभव पा जाने का सुख झलक रहा था। बेटी अपनी चाकलेट निकालकर सबमें बांटने लगी। बेटा लढ़ियाकर पापा की गोद में जा बैठा। एक हाथ से बेटे को संभाले दूसरे हाथ से वह बेटी के बालों को सहलाने लगी। थोड़ी ही देर में बेटा पिता के एक बांह और बेटी दूसरे बांह पर सिर रखकर सो गयी। दोनों बच्चों को सहारा लेकर सोते देखकर अमर तृप्त हो गया। वह ट्रेन की छत को ताकता हुआ बीत गये दिनों में उसने क्या खोया क्या पाया का हिसाब लगाने लगा।

पूर्वा के मन में इन सबसे अलग एक द्वंद चल रहा था। वह कुछ ही मिनटों में शादी की पहली रात से आज तक दोनों के संबंधों के उतार-चढ़ाव भांप गयी। ले-देकर जो कुछ इस समय उसके मन में आ रहा था, वह सुखद था। अमर द्वारा दिया गया प्यार की रोशनी में खो गये अंधेरे की तरह था। इस समय याद आ रहा था, अमर का क्रूरता वाक्य "अपने भाग्य से समझौता क्यों करतीं। यह मानकर क्यों नहीं चलतीं तुम्हारा पति तुमको छोड़कर किसी और को चाह सकता है।" उसने एक दिन यह भी था कि "अगर वह अन्य स्त्री से प्यार करत तो उसमें इतना तूफान उठाने की क्या जरू है। तुम जूली के ज्यादा पीछे पड़ोगी तो मैं घर पर लाकर रखूंगा तब देखता हूं तुम करती हो ?" जूली के अकेलेपन को जस्टी करते-करते वह अकसर पागल-सा हो ज था। उस समय पूर्वा का हर तर्क उसे झुंझल था, उस झुंझलाहट में वह वहशी हो जाता थ अपने वहशीपन में उसने पूर्वा को जिस त मारा-पीटा था, उसका दर्द चमड़े से खिसक बदन की गहराइयों में कुछ क्षणों के लिए क्यों घुस गया हो, पर गायब नहीं हुआ था, बच्चों के लिए पूर्वा ने अकेले कितना सं किया था, उनको इतमिनान से अमर के कंधे टिककर सोते देखकर उसे उनसे भी ब विरक्ति-सी होने लगी। एक अफसोस, क वह सिर्फ अपने लिए जी पाती, मन को म लगा। इससे पहले कि उसके मन कड़ुवाहट शब्द पा, बाहर निकल जाती, स्टे आ गया और ट्रेन एक झटके के साथ र गयी।

ट्रेन का कंपार्टमेंट पूरी तरह से खाली था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन चार लोगों के अलावा उसमें पांच गुंडे सरीखे लोग बैठे थे। उनको देख पूर्वा के मन में एक अजीब-सी दहशत दौड़ गयी। इसी कारण से थोड़ी देर के लिए बच्चों के लिए उपजी विरक्ति को मन से धकेलकर पूर्वा अपने बच्चों को जल्दी पकड़कर जल्दी-जल्दी बाहर भागने लगी। अभी वह लोग थोड़ी दूर पहुंचे थे कि पीछे से आते काले नवयुवकों ने झपटकर अमर का हाथ पकड़ लिया। अमर के जेब से पर्स निकालने की कोशिश करने में उन्होंने अमर को घसीटा, मारा, पीटा। पूर्वा को एकाएक कुछ नहीं समझ में आया कि वह क्या करे हड़बड़ाकर सामने के एक डिपार्टमेंटल स्टोर में वह घुसकर पुलिस को फ़ोन करने लगी। मिनटों में पुलिस की जीप टीं-टीं करती हुई वहां पहुंच गयी। जब पुलिस की वैन कुछ दूर पर ही थी। पूर्वा ने देखा कि अमर के बाल को एक आदमी पकड़े हुए घसीट रहा था। पूर्वा ने अपने मजबूत हाथों से अपना पर्स उठाकर उसके सिर पर दे मारा। एक मिनट को उसे लगा कि वह जीत गयी। कदाचित पुलिस वैन की आवाज ने उस आदमी को अमर को छोड़ देने को मजबूर कर दिया। लेकिन जाते-जाते पूर्वा ने दो करारे तमाचे उसको लगा दिये।

जिस समय पुलिस गुंडों की पकड़-धकड़ और बच्चों की सुरक्षा की व्यवस्था कर रही थी उस समय अमर पूर्वा की ओर ठीक ऐसे देख रहा था जैसे एक श्रद्धामिश्रित स्नेह का एक ज्योति पुंज उनकी आंखों में समा गया हो। वह मुंह से भले ही कुछ न बोल रहा हो, पर उसकी आंखें चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थीं, कि अगर आज तुम यहां न होती, तो पता नहीं मेरा क्या होता। अपने को जब संभाल नहीं पाया, तो वह जोर से हंसता हुआ बोला "क्या करारे तमाचे लगाये हैं, तुमने उन लोगों को। वह भी याद करेंगे कि क्या औरत का हाथ पड़ा।"

अमर के प्रशंसाभरे शब्दों पर पूर्वा न हंस ही पा रही थी न रो ही पा रही थी। हां उसका मन बार-बार एक ही बात दोहरा रहा था। यह उसी पूर्वा का हाथ था जिसके गाल पर खुद अमर के करारे हाथ कई बार पड़ चुके थे। ऐसा नहीं था कि इन हाथों में उस समय प्रतिरोध करने की ताकत नहीं थी। लेकिन घुट्टी में पिलाये गये पतिव्रता धर्म की बहुत-सी सीखों ने उसे प्रतिरोध करने से रोक दिया था।

"कहां से आ गयी तुममें इतनी हिम्मत कि तुमने इनसे झगड़ा मोल ले लिया ? अमर घर की ओर बढ़ते-बढ़ते बोला।" "ताकत का प्रदर्शन न करने का यह मतलब तो नहीं होता कि कोई कमजोर है।" बात किसी पूर्व संदर्भ में कही गयी थी या यूं ही उसका खयाल किये बिना ही अमर ने पूर्वा के पीठ पर अपना हाथ एक संरक्षक की तरह रखा और घर की ओर चल दिया।

डी-2/ ६३ काका नगर नयी दिल्ली-११०००१

रायपुर के रोबिनमय चौधरी को प्रति माह अपने 'एबी' ग्रुप पाजिटिव खून की दो बोतलें दान करनी पड़ती हैं क्योंकि डाक्टरों का कहना है कि उनका खून बहुत अधिक मात्रा में बनता है। जिंदा रहने के लिए उन्हें यह 'दान' न चाहते हुए भी करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई कार्ड नव वर्ष के

● आनंद गुप्त

मुगल बादशाह अकबर महान के पास उस समय सब कुछ था, अगर नहीं था तो केवल उसका वारिस नहीं था। निस्संतान अकबर ने पुत्र-प्राप्ति के लिए कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। हारकर वह नंगे पैर चलकर अजमेर के ख्वाजा की दरगाह पर और लौटते समय सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के दरबार में फतहपुर सीकरी पहुंचा और जब शेख साहब की कृपा से उसे पुत्र—सलीम प्राप्त हुआ तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। इस खुशी के अवसर पर उसे उसकी प्रजा ने ही नहीं, बल्कि पास-पड़ौस और दूर-दराज तक के राजा-महाराजाओं ने बधाई-संदेश भेजे। बताया जाता है कि भारत में बधाई-कार्ड के प्रथम प्रारूप यही लिखित बधाई संदेश थे।

जन्म-दिन पर, ब्याह-शादी पर, तीज-त्यौहार और नव-वर्ष पर अपने मित्रों और परिजनों को शुभ कामनाओं और बधाई के कार्ड भेजने की परंपरा जो आज हमारे यहां प्रचलित है, इसका इतिहास भी बहुत रोचक है। 'एनसाइक्लोपीडिया ऑव अमरीका' के अनुसार नव-वर्ष की बधाई कार्ड का जन्म ईसा के जन्म से छह सौ साल पहले रोम में हुआ था। यह बधाई कार्ड एक धातु निर्मित तश्तरीनुमा पात्र था, जिसे रोम के निवासियों ने अपने सम्राट को भेंट किया था। इस पात्र पर लिखा था—'रोम की जनता अपने महान शासक आगस्टस के लिए सुखी और समृद्ध नव-वर्ष की कामना करती है।'

हालांकि, यह विश्व का पहला बधाई-कार्ड था, लेकिन इससे बधाई-कार्डों की परंपरा प्रारंभ नहीं हो सकी। यह परंपरा आरंभ हुई सन १८४३ में। लंदन में सर हेनरी कोल ने अपने मित्र चित्रकार जोन कालकोट होर्सले को सुझाव दिया कि वह क्रिसमस (ईसा के जन्म-दिन) व नव-वर्ष के लिए कार्ड बनाये। होर्सले ने यह सुझाव मानते हुए एक कार्ड बनाया। इस कार्ड पर ईसाई धर्म की मान्यताओं पर आधारित तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र बनाये। अगल-बगल के चित्रों में भूखे को खाना देते हुए और नंगे को कपड़े देते हुए दिखाया तथा बीच के बड़े चित्र में विक्टोरियन युग के एक परिवार को उत्सव के वातावरण में खाने की मेज पर खाते और पीते हुए, जिसके नीचे लिखा—'ए मेरी क्रिसमस एंड ए हैपी न्यू इयर टू यू।'

सर हेनरी कोल ने इस कार्ड की एक हजार प्रतियां बनवायीं और अपने मित्र व परिजनों को भेजीं। 'गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रिकार्ड' के अनुसार यही वह पहला नव-वर्ष का शुभकामना कार्ड था, जिसने इस परंपरा का सूत्रपात किया।

इसके कुछ वर्ष बाद सन १८४८ में विलियम माव एग्ले नामक एक युवा चित्रकार ने सन १८४२ में प्रकाशित 'क्रिसमस केरोल' शीर्षक चित्र के आधार पर एक बधाई कार्ड तैयार किया। इस कार्ड पर बने चित्र में उसने क्रिसमस के अवसर पर परिवार के सामूहिक भोज, नृत्य करने, केरोल गाते तथा निर्धनों को भिक्षा देते हुए व्यक्तियों के चित्र अंकित किये गये। एग्ले ने इस कार्ड को व्यावसायिक स्तर पर बड़ी संख्या में मुद्रित कराया और बाजार में बिक्री के लिए भेजा। बस, यहीं से इन कार्डों ने व्यावसायिक रूप ग्रहण किया।

धीरे-धीरे इन कार्डों का प्रचलन यूरोप होता हुआ अमरीका पहुंचा और वहां पर सन १८७४ में लुईस प्रांग ने इनका व्यावसायिक रूप से प्रकाशन शुरू किया। जैसे-जैसे यह व्यवसाय बढ़ता गया, कार्डों पर तरह-तरह के चित्र, दृश्य और डिजाइनें छपने लगीं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद तो इन कार्डों ने एक बड़े व्यवसाय का रूप

विश्वास नहीं होगा, लेकिन यह सच है कि अब तक सबसे अधिक बधाई कार्ड—६२,८२४ सेन फ्रेंसिस्को के वर्नर इरहार्ड नामक एक व्यक्ति ने सन १९७५ को क्रिसमस के अवसर पर अपने मित्र, परिजन और परिचितों को भेजे, जो एक रेकॉर्ड है।

ले लिया। मुद्रण कला के विकास के साथ-साथ ये कार्ड अधिक से अधिक सुंदर आकर्षक साथ ही मूल्य में सस्ते भी होने लगे लिहाजा, अब ये कार्ड जन-साधारण तक में प्रचलित और लोकप्रिय हो गये।

ब्रिटिश शासन के जमाने में इन कार्डों ने भारत में भी प्रवेश पाया और समय के साथ लोकप्रिय होते गये। आज देश के हर कोने में हर तरह और हर अवसर के लिए उपयुक्त बधाई कार्ड उपलब्ध हैं। देश में छपाई की तकनीकी विकास के कारण अब ये कार्ड अत्यंत आकर्षक और मोहक ही नहीं छपने लगे हैं बल्कि एक तरह से हमारी सांस्कृतिक धरोहर के भी एक अंग बन गये हैं। इन कार्डों में छपे चित्रों में हम अपने देश की उल्लेखनीय कला-कृतियों, मूर्तियों और ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों के साथ जनजीवन की झलक भी देख सकते हैं। इस क्षेत्र में आज हम किसी देश से पीछे नहीं हैं बल्कि हमारे यहां की कई कंपनियां तो इन्हीं कार्डों के लिए ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। इन कंपनियों के अतिरिक्त यूनीसेफ के बधाई कार्ड विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि इनकी बिक्री से होनेवाली आय बाल-कल्याण योजनाओं में लगायी जाती है।

—६१५, बाबा खड़गसिंह मार्ग, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप खीजते हैं ?

● भुवनेशचंद्र शुक्ल

महत्त्वाकांक्षी होना व्यक्ति का स्वभाव है। यह महत्वाकांक्षा ही व्यक्ति को शीर्ष तक पहुंचाने में सक्षम है। जहां एक ओर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है वहां दूसरी ओर खीझ को जन्म देती है। यह दोनों अभिक्रियाएं इसी के निर्धारण से जुड़ी है कि व्यक्ति किस हद तक महत्त्वाकांक्षी है। जो व्यक्ति अपने गुण, योग्यता पर गुरुरोगुवार नहीं रखते, मुगालता नहीं करते वे सफल होते हैं, उन्नति उनके कदम चूमती है।

वहीं दूसरा पहलू है कि जो व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार लक्ष्य नहीं कायम करते वरन अपनी गगनचुंबी महत्त्वाकांक्षा रखते हुए भविष्य में उन्नति का मुंह चूमना चाहते हैं, सरनगूं हो जाते हैं, चारों खाने चित हमेशा रहते हैं, जीवन बोझ बन जाता है। असफलता ही खाली उनके हाथ लगती है। विफलता उनमें घर बना लेती है। कदम-कदम पर वे झल्लाते हैं, बात-बात पर खीझते हैं। आशय यह है कि जो लोग विफलताओं के साये में भी रहकर संघर्ष से जूझकर भी अपनी जगह पर टिके रहते हैं यानि की उनमें संघर्ष की क्षमता होती है वे खौफ से मुक्त रहते हैं। परंतु वे लोग जो छोटी-सी समस्या की कठिनाई में अपने को फंसा देते हैं, घुटने टेक देते हैं जिनमें के लक्ष्य पाने की लालसा तो होती है, अवरोधों का सामना नहीं कर पाते, खीझते-झल्लाते नजर आते हैं।

आक्रोश एवं खीझ

आक्रोश और खीझ में बहुत कुछ साम्य परंतु अभिव्यक्ति में कुछ अंतर आता आक्रोश के तीन पहलू हैं। प्रथम, अव उत्पन्न करनेवाले व्यक्ति के प्रति प्रतिकार ले जब व्यक्ति में किसी व्यक्ति के प्रति खीझ उ होती है तो साथ में क्रोध का पुट भी मिला है, ऐसी दशा में व्यक्ति आक्रामकता का व्यवहार कर सकता है।

आक्रोश का दूसरा पहलू यह है कि जि व्यक्ति के अंदर सुपरइगों हाबी रहता है कि, नैतिक मूल्यों का समावेश निहित रहता ये व्यक्ति अवरोध उत्पन्न करनेवाले व्यक्ति हमला न करके स्वयं पर आघात कर सकते प्रायः आत्महत्या करनेवाले व्यक्तियों में आक्र का यही पहलू होता है।

इसका तीसरा पहलू यह है जिसमें व्यक्ति तो दूसरे को आघात पहुंचाता है और न स्वयं ही। वरन उसके क्रोध का रूपांतरण किसी

जो व्यक्ति किसी काम को बेहतर करने की इच्छा रखते हैं, योग्यता रखते हैं परंतु उन्हें मजबूर किया जाए कि अमुक कार्य इसी तरह करना है ऐसी स्थिति में भी व्यक्ति लाचार होकर खीझता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष के प्रति हस्तांतरित हो जाता है-जैसा कि अखबारों में अकसर आता है कि दुर्घटना के फलस्वरूप छात्रों ने बसें फूंकी। इन बसों का जलाना इसी आक्रोश का ही रूपांतरण है।

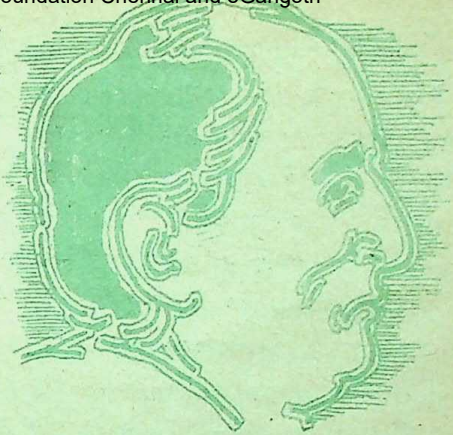

खीझ : आक्रोश का हलका रूप

खीझ इस आक्रोश का ही हलका रूप है। जिसमें व्यक्ति अपने आपको अवरोध डालनेवाले व्यक्ति के प्रति असहाय पाता है व्यक्ति में अवरोधों को नष्ट कर देने की उत्तेजना तो होती है परंतु आक्रामकता का सर्वथा अभाव होता है। यही असहायता, कुछ न कर पाने की अनुभूति, हर तरफ से कटे हुए हाथ-पांव महसूस करना खिन्नता को जन्म देती है। जब व्यक्ति क्रुद्ध होते हुए भी अपने को असमर्थ पाता है और कोई प्रतिकार नहीं करता तो वही आक्रोश की अभिव्यक्ति 'खीझ' में बदल जाती।

बचपन में बच्चे पर मां-बाप अनेक प्रकार के अंकुश लगा देते हैं जिससे बच्चे में खीझ उत्पन्न होती है। वह प्रतिकार कर नहीं सकता फिर खीझ के सिवा उसके लिए कोई चारा नहीं होता फिर बड़े होकर यही बच्चे मां-बाप के प्रति आक्रोश प्रकट करते हैं।

ठीक इसी प्रकार जब आदमी के कदम बुढ़ापे में पड़ते हैं तो वह चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है। बात-बात में झल्लाता है। उनकी बात को प्रायः माना नहीं जाता और वह मनवाने की जबरदस्ती भी नहीं कर पाता। वृद्धावस्था, असहायता का कारण बन जाती है। वे तब बिस्तर पर पड़े-पड़े खीझने के अलावा कुछ नहीं कर पाते।

लोग जो खीझते हैं ?

लोग जो किसी कार्य को किसी अपने निजी तौर तरीके से संपादित करना चाहते हैं यानी कि, एक लकीर है उसी पर उन्हें जाना है, यदि उसमें कोई अड़चन पड़ती है तो खीझते हैं। इसका दूसरा पहलू यह है कि जो व्यक्ति किसी काम को बेहतर करने की इच्छा रखते हैं, योग्यता रखते हैं परंतु उन्हें मजबूर किया जाए कि अमुक कार्य इसी तरह करना है ऐसी स्थिति में भी व्यक्ति लाचार होकर खीझता है।

जब व्यक्ति अपनी शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि के लिए कुछ संसाधन जुटाता है और उसकी इच्छा-पूर्ति में अड़चन आती है तो खीझ स्वतः उत्पन्न होती है—जैसे छुट्टी के दिन फिल्म देखने के लिए— जैसे ही तैयार हुए वैसे ही अतिथि देव आ पहुंचें। दफ़्तर से आकर घर में बीवी से 'नोन तेल लकड़ी' की राम कथा खीझने को जन्म देती है। जब व्यक्ति लाख कोशिशें करके भी नाकामयाब ही रहता है तो कुंठा उसमें घर कर लेती है। ऐसी स्थिति में उनकी कार्य के प्रति अरुचि होती है, परंतु फिर भी यदि उसी कार्य के लिए विवश किया जाए तो झल्लाहट होती है।

लगातार की विफलताएं व्यक्ति में आक्रोश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी हम अपनी मनोदशा के कारण भी खीझते हैं, हम कैसी स्थिति से गुजर रहे हैं किसी दूसरे को क्या पता ? दूसरा तो आदतवश कुछ न कुछ तो कहेगा ही, ऐसी दशा अरुचिपूर्ण होती है और खीझपूर्ण भी ।

उत्पन्न करने में सहायक है । जिन लोगों के प्रति हृदय में स्थान नहीं होता फिर भी लोक लज्जा या सामाजिक प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने के लिए मजबूर होकर उनके लिए कुछ करना पड़े, ऐसी स्थितियां भी खिझाने का कारण बनती हैं ।

कुछ लोगों की कुछ विशेष प्रकार की आदतें होती हैं— जैसे कुछ लोग बहुत बोलते हैं अपने सिवा किसी की सुनते ही नहीं, ऐसे लोगों से अकसर लोग कतराते हैं परंतु जब वे मिल जाते हैं तब केवल अपनी ही बात थोपते हैं और बोरियत होने लगती है । वे परिवार के सदस्य हों या रिश्तेदार या कोई सहयोगी बंधु, इन सबके साथ उनका नपा-तुला यांत्रिक व्यवहार होता है । इन लोगों का दायरा इतना सीमित हो जाता है कि न तो प्रतिकार किया जा सकता है और न ही आक्रोश

कभी-कभी हम अपनी मनोदशा के कारण भी खीझते हैं, हम कैसी स्थिति से गुजर रहे हैं किसी दूसरे को क्या पता ? दूसरा तो आदतवश कुछ न कुछ तो कहेगा ही, ऐसी दशा अरुचिपूर्ण होती है और खीझपूर्ण ।

यदि श्रम के बदले में उचित मजदूरी या मान्य पुरस्कार न दिया जाए तो खीझ पैदा होगी । उद्योगों में हड़तालों का होना इसी बात का प्रतिफल होता है ।

आदत : डींग मारने की

कुछ लोग डींग मारने में बड़े माहिर होते हैं । आत्मप्रशंसा चाहनेवाले ये लोग सिवा किसी की सुनते नहीं अपने को जाहिर करने के लिए अकाट्य तर्क प्रस्तुत हैं । दूसरों को खिझाने के पात्र बनते हैं । व्यक्ति अपने वायदे के अनुसार परिपालन करते देर से पहुंचने की आदत होती है इंतजार की घड़ियां झुंझलाहट पैदा करती 'खीझ' के संदर्भ में सबसे बड़ा पहलू अ है । व्यक्ति जब अपना अस्तित्व समझता है उस अस्तित्व पर जब आंच आती है अ खुल्लमखुल्ला तिरस्कार होता है तभी उत्पन्न होती है । यही प्रमुख बात परिस्थितियां भिन्न-भिन्न हो सकती हैं परंतु प्रवृत्ति हमेशा व्यक्ति में खीझ को पनपा सहायक होती है ।

'खीझ' के मनोविज्ञान को दायरे में ब बड़ा मुश्किल है । कोई भी घटना हो सक जिनके प्रति कोई खीझता हो, इन सबके व्यक्तित्व व्यवहार ही उत्तरदायी है ।

छुटकारा कैसे मिले ?

आज की दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो खीझता न हो । हां, इतना अवश्य कि कोई कम खीझता है तो कोई ज्यादा । ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति अपनी विफ का कारक परिवेश समझता है और उसे ही ठहराने लगता है । यदि वह उसका दोषी को ही समझे यानी कि 'युक्तिकरण' न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषों के प्रति वह जागरूक हो जाए तो उसमें न तो विफलता की भावना पनपेगी और न कोई हीन मनोग्रंथि। प्रक्षेपण एवं युक्तिकरण दोनों की सुरक्षा-प्रतिक्रियाएं व्यक्तित्व के विकास में हानिप्रद सिद्ध होगी। यदि व्यक्ति में कुंठा की ग्रंथि न बनने पाये तो खीझ से मुक्ति मिल सकती है।

कभी-कभी व्यक्ति व्यर्थ की बहस करने लगते हैं। दोनों ही अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं जिनमें कोई भी अपनी हार स्वीकार करना नहीं चाहता। उनका मुद्दा रक्षा सौदे का हो या राम जन्मभूमि का हो या अन्य, प्रत्येक अपने-अपने अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते हैं, ऐसी स्थिति में व्यक्ति को संवेगों पर नियंत्रण करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि मुझमें ही तो गलती नहीं है।

अति भावुकता के कारण खीझ

जो व्यक्ति अति भावुक होते हैं ज्यादा ही खीझते हैं। भावुक होना खराब नहीं परंतु परिस्थिति के अनुसार होना चाहिए। जो लोग अपने को या परिस्थिति को समझकर कदम नहीं उठाते-जैसे प्रेम की भावुकता में बिना सोचे समझे जीवन साथी चुन लेते हैं, वे यह भी नहीं देखते कि मेरी आकांक्षाएं उसके अनुरूप हैं भी या नहीं। भावुकता-जैसे ही कम हुई तब या तो तलाक हो गया, मजनू-जैसी हालत लिये दरबदर दर्द के गीत गाते फिरते हैं। जिन लोगों में ऐसी भावुकता होती है, किसी पर उम्मीद लगी होती है कुछ पाने की परंतु यदि ऐसा न हुआ तो खीझ ही हाथ लगती है। जो महत्त्वाकांक्षी तो हैं परंतु उनमें योग्यता नहीं है लक्ष्य तक पहुंचने की, वे भी खीझते हैं। जैसे हर महत्त्वाकांक्षी ग्रेजुएट का आई.ए.एस. बनने का सपना होता है, परंतु योग्यता न होने से उनकी महत्त्वाकांक्षा शीर्ष तक पहुंचाने के बजाय गर्त में डाल देती है। बाद में कहीं बाबू हो जाते हैं। जिंदगीभर कुंठा में घुटते हैं, झल्लाते हैं।

समायोजन जरूरी

इस खीझ का सबसे बड़ा निदान है कि व्यक्ति अपने को छोटा बना ले, अपना अस्तित्व न समझे। परंतु ये बात अजीब लगती है। मानव में स्वाभिमान का होना आवश्यक है। ये संत का तो गुण हो सकता है पर आज की दुनिया में जीने लायक मनुष्य के लिए ये सर दर्द बन जाएगा। वो दिन निकल गये जब संतों की परीक्षा इसी खीझ से होती थी— जैसाकि तुलसी के साथ हुआ। "संतों की मंडली थी भोजन बंट रहा था। जब तुलसी की बारी आयी तो पात्र नहीं रहे। तुलसी ने जूता उठा लिया। इसमें परोस दो" यह मनोविकार जिससे निकल जाए तो वह संत हो ही जाए। वैसे इतना अवश्य है कि व्यक्ति में इसका शोधन होना चाहिए।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते हर एक से समायोजन आवश्यक है। प्रत्येक के साथ सम्यक व्यवहार एवं समायोजन के लिए आवश्यक है अपने को पहचानते हुए स्वार्थपरता से बचा रहे। इस प्रकार मां-बाप, भाई-बहन, मित्र, अध्यापक, पति-पत्नी, बच्चों के साथ समायोजन बना रहेगा और खीझ न होगी।

—प्रवक्ता : मनोविज्ञान
स. ना. ति. विद्या मंदिर
निगोहा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार

बात उस दिन की है—मैं दिल्ली-हावड़ा ट्रेन से कलकत्ता जा रहा था। डिब्बे में सभी यात्रियों की सीटें आरक्षित थीं। रात का समय था, सभी यात्रीगण खाना खाकर सो चुके थे। मगर एक वृद्ध, जो शायद 'अर्थाभाव' के कारण सीट आरक्षित नहीं करा सका था, दया का पात्र बन, अन्य व्यक्ति के बर्थ के अत्यल्प, बिल्कुल छोटे-से अंश में खुद को समेटे हुए था। दो बजे, तो मैं सो गया। लगभग एक घंटे के बाद नींद खुली, तो देखा वह कृशकाय वृद्ध वैसे ही बैठा, कोटरों में धंसी अपनी दोनों आंखों की पलकों को आपस में मिलने से रोकने का अथक प्रयास कर रहा था। इसके लिए कभी वह जली हुई आधी बीड़ी को फिर से सुलगाता, तो कभी लंबी उबासी लेता। उस वक्त मेरे अंदर छिपे हुए इंसान ने मुझसे कहा भी—सुला लो उसे अपनी बर्थ पर; और मैंने कई बार कोशिशें भी कीं, पर न जाने कौन मेरे हृदय से निकले शब्दों को अधरों पर बिखरने से रोक देता ? शायद, वह मेरा 'स्वार्थ' ही था। उस बूढ़े ने वैसे ही सिमटे-सिमटे सारी रात गुजार दी। आज जब भी मैं गद्दों पर लेटकर अपनी पलकों को बंद करता हूं, तो उस बूढ़े की थकी आंखें मेरे सामने आ उभरती हैं, मानो मेरे हृदय-द्वार पर दस्तक देकर कह रही हों—डरपोक, हार गये अपने 'स्वार्थ' से ?

—मुकुंद

द्वारा—यु.एल. दास,बी. भी. सी., ९/१०, पटना-१४

'शहनाईभरी दस्तक'

यौवन की दहलीज पर जिस दिन से उसने कदम रखा था, उसी दिन से मैं बराबर उसके मनोभावों को पढ़ने की कोशिश में रहती थी।

यूं तो वह जिस तरह के खयाल बुना करती थी वो स्वाभाविक ही था—कभी बेहद खुशी, कभी गम, कभी शर्म, और कभी शर्मभरी नाराजगी...। और फिर चंद दिनों बाद ही वह दौर शुरू हुआ जिसके आगे उसका वश नहीं था। पहली बार, दूसरी बार, तीसरी बार यहां तक कि बार-बार वह इन समाज के और लड़कियों के ठेकेदारों के आगे चाय की ट्रे सहित जाती रही, वहां से आने पर एक आशा-सी जगती थी, उसके चेहरे पर कि शायद उसकी यही अंतिम प्रदर्शनी हो, पर फिर कभी न खत्म होनेवाला इंतजार शुरू हो जाता। न तो उसके स्वप्न ही साकार हो पाते और न ही वहां से कोई उत्तर ही आ पाता।

मैंने कितनी ही बार अपनी आंखों से नारी जीवन के उस पृष्ठ को पढ़ा था—उसी यौवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे पर लाज-शर्मभरी कोमलता अब नष्ट होने लगी थी और उसकी जगह ले ली थी बालों से झांकती चांदनी लटों, आंखों के नीचे गहराती कालिमा, और चेहरे पर आती प्रौढ़ता की झलक ने... ।

आज भी वह अपनी आंखों में ढेर-सा इंतजार लिए बैठी है । आज तक उसके कान बेताब है...'शहनाईभरी दस्तक' को सुनने के लिए, जो उसके जीवन में एक नयी आशा, विश्वास, और झंकार लिए आएगी ।

—अलका श्रीवास्तव

एफ/२६ खारीघाट रोड पी. डब्ल्यू. डी. क्वार्टर, जबलपुर (म.प्र.)

युवाओं के लिए यह स्तंभ न तो प्रेम-प्रसंगों के वर्णन के लिए है और न दर्शन संबंधी विचारों के लिए । इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय कृपया ध्यान रखिए कि उनमें सम सामयिक जीवन का कोई उनका-अपना निजी प्रसंग या घटना और उससे उठनेवाले प्रश्न हों । रचना ढाई सौ शब्दों से अधिक न हो ।

इस स्तंभ के लिए रचना भेजते समय लिफाफे पर यह अवश्य लिखें—

'दस्तक के लिए'— संपादक

मैं भी दस्तक देती

दरवाजे पर खट् खट्ट...सुनकर मैंने स्वतः प्रश्न किया कौन हो सकता है ?. "दस्तकवाला सुर भी अंजान-सा था । लपककर दरवाजा खोला । एक फटे पुराने किसी स्कूल का उखड़ा "वेज" लगा कोट पहना लड़का, जिसकी उम्र ग्यारह वर्ष के आसपास की होगी एक हाथ में रजिस्टर व रसीद लिये हुए दूसरे में किसी फटे पैंट के कपड़े से सिया हुआ थैला पकड़े हुए था ।

"बाबूजी, कुछ दे दो, हम अनाथ आश्रम से आये हैं, कोई फटा पुराना कपड़ा, आटा कुछ भी दे दो" ।

"कौन-से आश्रम से आये हो ?" मैंने तरस खाकर पूछा ।

"कैंट से, अनाथ आश्रम से" वह धीमे-से कुछ बुदबुदाया । इतने कम उम्र के बच्चे चाहे वह अनाथ आश्रम के हों या सनाथ या मजदूर के ही क्यों न हो, दर-दर याचनाभरी दस्तक देने को विवश किये जाते हैं मालिकों द्वारा ।

अंततः ये कब तक चलता रहेगा । आज आवश्यकता है एक ऐसी "दस्तक" की जिसके आभास मात्र से जन जीवन में जागृति उत्पन्न की जा सके । ताकि भारत के भविष्य के कर्णधारों को स्वास्थ्य, सुरक्षा व सुशिक्षा द्वारा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर किया जा सके ।

जब भी मैं एकांत में बैठती हूं मेरे समक्ष दरवाजे पर याचनाभरी दस्तक देनेवाले और सड़कों पर भीख मांगनेवाले, चलती गाड़ियों में थपथपाकर दस्तक देनेवाले भिखारी बच्चों पर लोगों की दुत्कार, डांट व अश्लील शब्दों की बौछार का दृश्य सजीव होने लगता है, और अपनी असमर्थता का बोध होने से ग्लानि अनुभव होती है । काश । मेरे पास सामर्थ्य होती तो मैं उन बच्चों का दर्द बांटने स्वयं उनके निवास पर जाकर "दस्तक देती ।"

—भारती पांडे

द्वारा—श्री महेश पांडे बी. ८/८, ओ.एन. जी. सी. कॉलोनी, देहरादून-२४८१९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्तीसगढ़ में हर दिन एक त्यौहार

राम गुप्ता

धीरे-धीरे एक औद्योगिक तीर्थ के रूप में परिवर्तित होते जा रहे छत्तीसगढ़ अंचल की यह अद्भुत विशेषता है कि यहां वर्ष के ३६५ दिनों में लगभग ४०० पर्व और त्यौहार मनाये जाते हैं। प्रत्येक पर्व के नेपथ्य में यहां के निवासियों का अभूतपूर्व उत्साह, खुशी और सुख को मिल बांटकर और अधिक विस्तारित करने की लालसा तथा विश्वबंधुता व सौजन्यता निहित होती है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध छत्तीसगढ़ की नयानाभिराम प्राकृतिक छटा इंद्रधनुषी मौसम के साथ मिलकर इन पर्वों की पृष्ठभूमि तैयार करती है।

हिंदू महीनों के अनुसार कार्तिक माह में मनाया जानेवाला त्यौहार दीपावली एक ऐसा त्यौहार है, जो धूमधाम से सारे देश में मनाया जाता है, लेकिन छत्तीसगढ़ में दीपावली की अपनी अलग और निराली छटा होती है। पूरे एक सप्ताह तक मनाये जानेवाले इस त्यौहार में छत्तीसगढ़ की परंपरागत भव्यता तथा सौंदर्य सहज ही दृष्टिगत होता है। सुआ नृत्य और राउत नाच-जैसी सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण दीपावली के तीसरे दिन तक एक अद्भुत पर्व छत्तीसगढ़ में मनाया जाता है जिसे "मात कहते हैं।

मातर : कुल देवता की पूजा का प

'मातर' मूलतः हिंदी की 'मातृ' अपभ्रंश है। यह अत्यंत आश्चर्य का विषय कि जहां छत्तीसगढ़ के प्रत्येक पर्व के पीछे न कोई कथा, कहानी या किवदंती प्रचलित वहीं मातर के पीछे किसी तरह की कोई कह प्रचलित नहीं है। इस त्यौहार के माध्यम छत्तीसगढ़ के निवासी अपनी उम उत्सवप्रियता और खुशियों को आपस बांटकर द्विगुणित करने की अपनी मूल पहचान को स्पष्ट करते हैं। 'मातर' त्यौहार एक और बुनियादी विशेषता यह भी है कि भारतवर्ष में इस तरह के किसी भी पर्व परंपरा का प्रचलन नहीं है, अलबत्ता भाई के रूप में दीपावली के तीसरे दिन बहनों अपने भाई को भेंट आदि देने की परंपरा ज है।

वास्तव में 'मातर' मातृ पूजा या कु देवता की पूजा का पर्व है। अपनी प्रारंभि अवस्था में 'मातर' छत्तीसगढ़ के आदिवासि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्तीसगढ़ के अन्य पर्वों की तरह 'मातर' भी छत्तीसगढ़ की जन भावना और परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। बंधुत्व और एकता का संदेश लिये यह विशिष्ट पर्व सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही मनाया जाता है। छत्तीसगढ़ की हर सुबह एक नये पर्व की रंगीनियां बिखेरती आती है तथा शाम एक दूसरे पर्व के शुभागमन का संदेश देती है।

द्वारा मनाया जाता था। वे गाय को माता मानकर उसकी पूजा किया करते थे। कालांतर में कार्यों के विभाजन के फलस्वरूप चूंकि गांव के पशुधन की सुरक्षा तथा प्रवर्धन आदि की सारी जिम्मेदारी यादव या ठेठवार जाति के लोगों को हस्तांतरित कर दी गयी, अतः यह त्यौहार यादव या ठेठवार समाज के लोगों के द्वारा मनाया जाने लगा।

यदि धर्मग्रंथों में वर्णित कथाओं की दृष्टि से देखा जाए तो भी 'मातर' हर्ष और उल्लास का पर्व ही साबित होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार द्वापर युग में दीपावली के दूसरे दिन यादव जाति के लोग भगवान इंद्र की पूजा किया करते थे लेकिन श्रीकृष्ण द्वारा समझाने पर ये लोग गाय की पूजा करने लगे। इंद्र को यह अपना अपमान लगा, उसने क्रोध में आकर वर्षा से ब्रज को डुबो देने का निश्चय किया। लेकिन श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाने से सारा बृज उसके नीचे आकर सुरक्षित रहा। इस तरह भगवान कृष्ण तथा इंद्र की लड़ाई में विजय के उत्सव तथा एक महासंकट से बेदाग बच निकलने की खुशी में अपने कुल देवता की पूजा के रूप में इस पर्व की व्याख्या की जा सकती है। यादवों द्वारा 'मातर' के दिन अपने कुल के इष्ट देवता की पूजा की जाती है।

बुजुर्गों को आमंत्रण

वंश या गोत्र परंपरा के अनुसार ढरिया और कोमरिया प्रजाति में बंटे यादव समाज के लोगों

 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में दोनों प्रजाति के लोग इस पर्व में भाग लेते हैं, लेकिन पर्व का नेतृत्व यादव समाज के वे लोग कर सकते हैं जिनके यहां यादव समाज के कुल देवता 'खोड़हर देव' की स्थापना होती है। 'खोड़हर' लकड़ी का बना हुआ होता है और इसकी यादव (राऊत) समाज के कुल देवता के रूप में पूजा की जाती है। अपने घरों में 'खोड़हर देव' की स्थापना के लिए भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं होता। इसके लिए कुछ निश्चित कर्तव्यों या पूजा विधान का पालन होता है। फलस्वरूप आजकल अपने घरों में 'खोड़हर देव' की स्थापना करने से लोग हिचकिचाते हैं। स्पष्ट है कि जिनके घरों में पूर्वजों के समय से 'खोड़हर देव' स्थापित हैं, वे आज 'मातर' पर्व को जारी रखने के निमित्त बने हुए हैं।

'मातर' या मातृपूजा की सारी प्रक्रिया गांव के बाहर 'दइहान' (चरागाह) में संपन्न होती है। 'मातर' के दिन प्रातः पूरे गांव का दूध एकत्रित कर लिया जाता है। राऊत जाति के लोग अपने प्रमुख या मुखिया लोगों के साथ गांव के जमींदारों, मालगुजारों और बड़े बुजुर्गों को 'मातर-उत्सव' में आमंत्रित करने जाते हैं। इसे 'गोठिया जोहारना' कहते हैं। तत्पश्चात यादव समाज के जिन घरों में 'खोड़हर देव' स्थापित होते हैं, उन्हें सम्मान सहित ले जाकर 'दइहान' (चरागाह) स्थापित किया जाता है।

आवेग : समर्पण और उत्साह का

तत्पश्चात गांव के समस्त भैंसों को 'खोड़हर देव' के चारों ओर पांच या सात बार परिक्रमा की तरह घुमाया जाता है। उल्लास का आवेग, देव के प्रति समर्पण और लोक वाद्यों की धुन— ये तीनों मिलकर वातावरण को इतना रोमांचक बना देते हैं कि गांव के कुछ राऊत सम्मोहन की स्थिति में इन भैंसों के चारों ओर नाचते-कूदते और जमीन पर लोटते चलते हैं। राऊतों की ऐसी स्थिति को 'देवता चढ़ना' कहते हैं। देवता चढ़ने की स्थिति गांवों में अत्यंत पवित्र मानी जाती है। भैंसों की इस परिक्रमा को 'डांड नचाना' कहते हैं। उल्लेखनीय है कि 'डांड नचाने' की इस परंपरा में गांव के सिर्फ भैंसों को ही शामिल किया जाता है, अन्य पशुओं यथा गाय, बैल इत्यादि नहीं।

दीपावली के तीसरे दिन शाम होते ही गांव के सभी राऊत (यादव) जाति के लोग पारंपरिक लोक वाद्यों की मधुर धुन के साथ पारंपरिक वेशभूषा में गांव सम्मानीय जनों को आदर सहित 'दइहान' में उस स्थान पर आमंत्रित कर ले जाते हैं, जहां खोड़हर देव की स्थापना होती है। सारा गांव इस अवसर पर 'मातर' पर्व की ऐतिहासिक भव्यता को व्यक्त करती है। पगड़ी, घुंघरू और 'साजू' से सुसज्जित यादव पुरुषपूरे उत्साह के साथ लोक वाद्यों की धुन पर नाचते हुए सारे गांव की अगुवानी करते हैं। 'साजू' कौड़ियों, मोर पंखों और परसा नामक वृक्ष की जड़ से बना जिरह बख्तर की तरह एक आभूषण होता है, जिसे दीपावली के समय ही धारण किया जाता है।

माहौल विशाल मेले का

'दइहान' में स्थापित 'खोड़हर देव' की पूरे विधि-विधान के साथ नारियल, धूप आदि से पूजा की जाती है। पूजा की इस प्रक्रिया को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मातर जगाना' कहते हैं। मातर जगाने के बाद उपस्थित जन-समुदाय को प्रसाद के रूप में दूध वितरित किया जाता है। मातर के दिन अधिकांश यादव जाति के लोगों के घर रात्रि का भोजन नहीं बनता सभी यादव जाति के लोग 'दइहान' में पका हुआ भोजन एक साथ बैठकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि यह प्रसाद इतर जाति के लोगों में वितरित नहीं किया जाता।

मातर पूजा के बाद से ही गांव में पशुधन को 'सोहइ' बांधने की प्रथा है। सोहइ परसा नामक वृक्ष की जड़ तथा मोर पंख और रंग-बिरंगे कपड़े की कतरनों (केवल सुंदरता के लिए) से बनाये जाते हैं। मातर पर्व की लोकप्रियता और भव्यता का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि "दइहान" में "मातर" जगाते समय एक विशाल मेले का सा माहौल पैदा हो जाता है। दूर दराज के उन गांवों से ही किसी कारणवश "मातर' जगाने की परंपरा नहीं है। लोग मातर में सम्मिलित होने के लिए आते हैं। रंग-बिरंगे, नये-नये वस्त्रों से सजे लोग पटाखों और आतिशवाजियों की रोशनी सचमुच 'मातर-पर्व' के समय एक स्वप्निल और इंद्रधनुषी माहौल पैदा कर देती है। 'मातर-उत्सव" में सम्मिलित होने आये अन्य ग्राम देवताओं को उनके स्थान पहुंचाते हैं।

छत्तीसगढ़ के अन्य पर्वों की तरह 'मातर' भी छत्तीसगढ़ की जन भावना और परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। बंधुत्व और एकता का संदेश लिये यह वशिष्ट पर्व सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही मनाया जाता है।

१२३ ४०९, फजलगंज, कानपुर-१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

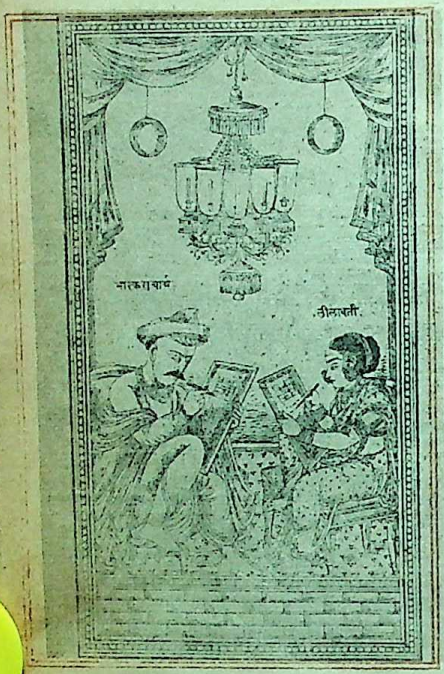

सौ वर्ष पूर्व प्रकाशित भास्कराचार्य और लीलावती का काल्पनिक चित्र

भास्कराचार्य की लीलावती

● सुरेंद्र मोहन मिश्र

भारत की प्राचीन गणित विद्या का प्रभाव प्रायः संसार की सभी प्राचीन सभ्यताओं पर रहा है। गणित के अंकों में शून्य का आविष्कार भारतीय गणितज्ञों की ही देन है। शून्य का ज्ञान होने से लंबी-लंबी, संख्याएं लिखने की समस्या हल हो गयी। संसार के प्राचीन विद्वान पृथ्वी को अचला मानते थे। सूर्य तथा और ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं, ऐसा विश्वास किया जाता था। परंपरा से चले आ रहे इस अंधविश्वास को भारतीय गणितज्ञों ने एक नवीन ज्योति दी। भारत के भास्कराचार्य गणित के ऐसे प्रकांड पंडित थे कि पिछले एक हजार वर्षों से उन्हीं की गणित ज्ञान संपदा का उपयोग हम करते रहे और आज भी कर रहे हैं।

ईसा की बारहवीं शताब्दी में सह्य पर्वत के निकट विजडविड ग्राम (बीजापुर) में भारत के इस प्रसिद्ध ज्योतिर्विद एवं गणितज्ञ भास्कराचार्य का जन्म शांडिल्य गोत्री महेश्वर उपाध्याय के यहां हुआ था। इन्होंने छत्तीस वर्ष की आयु में सन ११५० में 'सिद्धांत शिरोमणि' नामक गणित का अभूतपूर्व ग्रंथ रचा, जिसे लीलावती बीजगणित ग्रहगणित और गोलाध्याय चार खंडों में विभक्त किया। इनमें से 'लीलावती' वाला खंड अधिक लोकप्रिय हुआ और पिछले आठ सौ वर्षों में गणित-प्रेमियों का कंठहार रहा। भास्कराचार्य की इस अभूतपूर्व रचना 'लीलावती' पर गंगाधर, गणेशदेवज्ञ, सूर्यदास, लक्ष्मीदास, मुनीश्वर, रामकृष्ण और कृपानाथ-जैसे अनेक संस्कृत विद्वानों की प्राचीन टीकाएं इस ग्रंथ की लोकप्रियता की प्रबल प्रमाण हैं। आधुनिक विद्वान टीकाकारों में बापूदेव शास्त्री, महामहोपाध्याय काशिक और सुधाकर द्विवेदी प्रमुख हैं। तीनों ही टीकाएं कभी प्रकाशित भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई थीं। सन् १५८७ में मुगल सम्राट अकबर ने फैजी से इसका फारसी में अनुवाद कराया था। अंगरेजी अनुवादों में सन १८१६ में छपा जे. टेलर का और सन १८१७ में छपा हेनरी टामस कोल ब्रूक के अनुवाद प्रसिद्ध हैं। 'लीलावती' के साथ एक जनश्रुति भी विद्वानों के बीच प्रचलित रही है।

बेटी के लिए

कहा जाता है कि भास्कराचार्य के एक पुत्र लक्ष्मीधर और पुत्री लीलावती थी। लीलावती के संबंध में ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि यह कन्या विवाह के तत्काल बाद विधवा हो जाएगी। भास्कराचार्य ने एक ऐसा मुहूर्त खोजा, जिसमें विवाह संपन्न होने से कन्या अखंड सौभाग्यवती रहती है। छांटे हुए शुभ मुहूर्त में विवाह कार्य आरंभ हुआ। उन दिनों समय जानने के लिए 'जलघड़ी' का प्रयोग होता था। एक मिट्टी की नांद में जल भरा होता था, जिसमें एक ताम्र का कटोरा तैरता रहता था। कटोरे के तल में एक छोटा-सा छिद्र होता था, जिसमें से बहुत थोड़ा-थोड़ा पानी कटोरे में आता रहता था, कटोरे में बने चिह्नों से घड़ी, पल का हिसाब निकाला जाता था। दुर्भाग्यवश लीलावती की मांग का एक मोती कटोरे में गिर गया। छिद्र से पानी आना बंद हो गया। इस प्रकार वह मुहूर्त टल गया। भास्कराचार्य ने तभी निर्णय कर लिया कि पुत्रों के नाम से एक ऐसा ग्रंथ रचूंगा, जो अमर रहेगा। इस प्रकार 'लीलावती' ग्रंथ का शुभारंभ हुआ।

उपरोक्त कथा की सत्यता पर विद्वानों को संदेह है। ग्रंथ में लीलावती को दिये गये संबोधन पुत्री के द्योतक नहीं लगते।

'लीलावती' के भाषा संस्करण

'लीलावती' के हस्तलिखित प्रतियां लगभग सारे देश में मिली हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में जब प्रेस और लीथो प्रकाशन की सुविधाएं हुईं तो 'लीलावती' के अनेक भाषा संस्करण विविध प्रकाशकों द्वारा छापे गये।

सन १८४६ में आगरा से हरदेव सिंह और राधाकृष्ण ने 'लीलावती' का हिंदी अनुवाद छपवाया।

इसी सन में जे. जे. सूर और बालाजी दीक्षित का अनुवाद भी कलकत्ता से छपा। सन १८५१ में श्री लाल द्वारा अनूदित 'लीलावती' सिकंदरा प्रेस, आगरा से प्रकाशित हुई।

उपरोक्त तीनों ही प्रतियां इंडिया ऑफिस (लंदन) के हिंदी पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। चौथा प्रकाशन गदर से दो वर्ष पूर्व सन १८५५ में आगरा से ही छापा गया जिसकी एक प्रति मेरे संग्रह में है।

'लीलावती' के अनुवादक : रायचंद नागर

सन १७७१ में मुर्शिदाबाद के जगत सेठ

भास्कराचार्य को ज्ञात हुआ कि विवाह के पश्चात उनकी पुत्री लीलावती विधवा हो जाएगी। उसे वैधव्य से बचाने के लिए उन्होंने एक शुभ मुहूर्त निकलवाया। लेकिन परिणाम क्या निकला ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

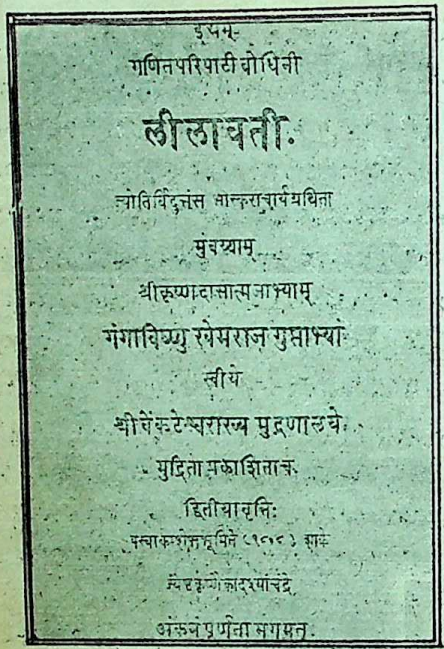
ईश्वर-
गणितपरिपाटीबोधिनी
लीलावती.
ज्योतिर्विद्संस शाङ्कराचार्यग्रथिता
मुंबय्याम्
श्रीकृष्णदासात्मजाभ्याम्
गंगाविष्णु खेमराज गुप्ताभ्यां
स्वीये
श्रीवेंकटेश्वरास्य मुद्रणालये
मुद्रिता प्रकाशिताच
द्वितीयावृत्तिः
प्रत्याकशेषकृमिने १९०८ शाके
स्वदृक्शोकादर्शचंद्रे
अंकजपूर्णा मगमत्

सन १८९० में प्रकाशित 'लीलावती' का एक पृष्ठ

'लीलावती' का पद्यानुवाद भाषा में किया।

राजा डालचंद के पूर्वज प्रसिद्ध जौहरी थे। यह प्रभारवंशी क्षत्रिय थे और जैन मतावलंबी रहे हैं। नादिरशाही आक्रमण के समय दिल्ली से इस परिवार को भागना पड़ा। मुर्शिदाबाद आकर यह परिवार बस गया, जहां ये नगर सेठ कहलाते थे। नवाब कासिम अली खां द्वारा जब राजा डालचंद को सताया गया तो वे भी काशी आकर बस गये।

ब्रिटिशकाल में हिंदी के प्रबल समर्थक राजा शिव प्रसाद 'सितारेहिंद' इन्हीं डालचंद के पौत्र थे।

'लीलावती' : विगत आठ सौ वर्षों से गणित-प्रेमियों का कंठहार बना अभूतपूर्व ग्रंथ। मुगल सम्राट अकबर ने फैजी से इस ग्रंथ का फारसी में अनुवाद कराया और बाद में अंगरेजी में भी इसके कई अनुवाद प्रकाशित हुए। इस ग्रंथ को 'भाषा' में अनूदित करने का श्रेय रायचंद नागर को है।

राजा डालचंदजी की आज्ञा से गुजरात निवासी रायचंद नागर कवि ने 'लीलावती' का भाषा में छंदबद्ध अनुवाद किया। यह अनुवाद काफी लोकप्रिय रहा। इसका प्रथम संस्करण बनारस में सन १८५८ में छापा गया। यह प्रति भी इंडिया ऑफिस (लंदन) में सुरक्षित है। रायचंद नागर कवि नागौर के वासी थे जो राजा डालचंद के राजकवि कहलाते थे। इन्होंने जयदेव के 'गीत गोविंद' का अनुवाद और

हमारे पास रायचंद कवि की 'लीलावती' का लीथो पद्धति से छपा पांचवां संस्करण प्राप्त है। शीर्ष पृष्ठ पर लिखा है—

—"लीलावती राजा डालचंद की आज्ञानुसार भाषा हुई। उनके प्रपौत्र राजा शिव प्रसाद "सितारेहिंद" की आज्ञानुसार अत्यंत शुद्ध होय श्री मद्राय बहादुर मुंशी प्रयाग नारायण साहब भार्गव यंत्रालयाधीश की आज्ञानुकूल पांचवी बार कानपुर नवलकिशोर (सी. आई. ई.) के शिलायंत्र में श्यामनाथ मैनेजर के प्रबंध में मुद्रित हुई जुलाई सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८१५ ई.।'' प्रस्तुत प्रति हमें कु. ललित, त्रिपाठी, प्राध्यापिका भारतीया गर्ल्स कालेज चंदौसी द्वारा हमारे संग्रह को प्राप्त हुई है।

पुस्तक १०''×९१/२'' माप की है। कुल ६४ पृष्ठ हैं। स्थान-स्थान पर विषयानुकूल चित्र भी दिये गये हैं। एक सूत्र कवि की भाषा परखने को देखें—

ताड़ ताल के अंतरहि
ताड़ घात करि लेहु
फल में दूनो ताड़ हर
कपि उछलन कहि देहु

सौ करके इक ताड़ ते
उतरयो इक कपि धाई
द्वै सै कर पै ताल लखि
जल हित पहुंच्यो जाई

तरू पर बाकी बानरी
पहिले उड़ी आकाश।
पुनि श्रुति पथ सम चाल है
पहुंची निज पति पास

ताकी उछलनी मोहि कहुं
शेष कोटि को सोई
करण मान पुनि बेगि कहु
जिहि मिली सम गति होई

यों 'लीलावती' के अनेक संस्करण और अनुवाद हिंदी भाषा में हुए पर रायचंद का अनुवाद ही अधिक उपयोगी माना गया। आज का गणित का छात्र भले ही 'लीलावती' से परिचय नहीं रखता, पर पूरे आठ सौ वर्षों तक यही ग्रंथ गणित प्रेमियों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय रहा है।

ए-४/एफ-४ नवभारत अपार्टमेंट्स,
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-६३

इनके भी बयां जुदा-जुदा

जो भी गाली थी वोह बच्चों की जुबां तक पहुंची
आपके शहर में तालीम कहां तक पहुंची।

मंहदी नजमी

कभी तो शाम ढले अपने घर गये होते
किसी की आंख में रह कर सेवर गये होते

बशीर बंद्र

बस्ते की जगह पीठ पे जो बोझ लिये हों
उन बच्चों में बच्चों की अदा भी नहीं मिलती

मनवर राना

सस्ते दामों तो ले आते लेकिन दिल था भर आया।
जाने किस का नाम खुदा था पीतल के गुलदानों पर

जांनिसार अख्तर

हम भी कोई शै उससे छुपा लेते हैं अकसर
उसको भी कोई बात बतानी नही होती।

मजीद सिद्दीकी

तुम्हारे बाद तो हर एक ने हाथ खींच लिया
मिला जो दर्द भी हमसे तो फासले से मिला

आर. पी. शोख

कुछ लोग मेरी जान से तंग आये हुए हैं
हम हैं कि जीने की कसम खाये हुए हैं।

अज्ञात

मसरूफ जो रहते हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता
बेकार फिरोगे तो कोई काम मिलेगा

शुजा खावर

यह कह दो शहर के लोगों से जाकर
मैं टूटा हूं अभी बिखरा नही हूं

ईस अंसारी

आज वो यादों की दस्तावेज जूठी हो गयी
कोई इस बस्ती के नक्शे से मेरा घर ले गया।

सईदा शान महराज

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगलों की खामखयालियां और उनके चहेते शहर

● कमोडोर रेवती रमण

मुगल शब्द अपने आप में मंगोल का हिंदुस्तानी अपभ्रंश है। बाबर मध्य एशिया से आया था। उसके पिता का नाम था मिर्जा उमर शेख। बाबर का शब्दशः अर्थ है—शेर। बालकों की तरह दिवास्वप्न देखना और उनको जिंदगी में उतारने की कोशिश करना उसके चरित्र की विशेषता थी। वह ११ साल की अल्पआयु में ही फरगना का सरदार बन गया था, जो अब सोवियत यूनियन के उजबेकिस्तान एवं किरगीज गणतंत्र का भाग है। १४ साल की उम्र में ही उसने समरकंद को जीत लिया था, पर अगले ही वर्ष वह उससे हाथ धो बैठा। समरकंद खोने के बाद उसने अपना रुख दक्षिण की ओर किया। काबुल को उसने बड़ी आसानी से जीत लिया और उसके बाद मिर्जा से बादशाह बन गया। काबुल के बाद उसने कंधार को फतह किया, और चार बार वह उत्तरी भारत में लुटेरे की भांति आया। पांचवी बार उसने इब्राहीम लोदी की एक हजार हाथी और एक लाख सिपाहियों की सेना को २१ अप्रेल १५२६ को पानीपत की लड़ाई में हराया और इस बार वह हिंदुस्तान में जम गया।

बाबर और हिंदुस्तान

[सन १४८३ से १५३०]

'बाबरनामे' में बंदरों, मोर एवं तोतों का खास जिक्र है। पर कुल मिलाकर हिंदुस्तान के बारे में उसकी राय बढ़िया नहीं थी। उसे विशेष रूप से अच्छे घोड़ों और अच्छे कुत्तों की कमी बहुत खली थी। उसकी बेटी बेगम गुलबदन के अनुसार, 'उसने अपने बीमार बेटे हुमायूं को बचाने के लिए खुदा से अपनी जिंदगी देने की पेशकश की।' और पानीपत की लड़ाई के चार साल बाद सन १५३० में वह इस संसार से प्रस्थान कर गया। बाबर ने बेशुमार दौलत लूटी और कहा जाता है कि उसने काबुल के हर शहरी को सोने की एक-एक मोहर बांटी और समरकंद के धर्म-गुरुओं को बहुत से उपहार दिये।

पुस्तक प्रेमी हुमायूं

[सन१५०८ से १५५६]

हुमायूं के जीवन में भी बहुत से उतार-चढ़ाव आये पर सन १५५६ में वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तराधिकारी अकबर को कुछ निश्चित सल्तनत विरासत में दे पाने में सफल हो सका। हुमायूं को किताबों का बहुत शौक था और बहुत परेशान हालात में भी वह अपनी लाइब्रेरी अपने साथ रखता था। सन १५३९ में शेरशाह से हारकर भागते हुए वह बनारस के निकट, चौसा के पास, गंगा में डूबने लगा जहां निजाम नाम के एक भिश्ती ने उसकी जान बचायी। हुमायूं ने उसको बतौर इनाम एक दिन का बादशाह बनाया। सन १५४२ में हुमायूं राजस्थान के रेगिस्तान के रास्ते भागकर उमरकोट (जो अब पाकिस्तान में है) पहुंचा जहां उसकी बीबी हमीदा ने अकबर को जन्म दिया।

काबुल से दिल्ली की ओर अपने आखिरी अभियान में हुमायूं को अपने भाई कामरान से सख्त मुकाबला करना पड़ा। कामरान पकड़ा गया और हुमायूं के हुक्म से उसको अंधा बना दिया गया, जो उस समय शहजादों को नाकाम बनाने का एक खास मध्य एशियन अंदाज था। सन १५५५ में शेरशाह को हराने के बाद उसने अपने कीमती किताबों के जखीरे को पुराने किले में रखवाया और किस्मत का खेल कि एक दिन ज्योतिषियों से विचार-विमर्श करने के बाद वह पुराने किले की एक छत से उतरते हुए फिसल गया और उसका सिर सीढ़ियों से टकराया और

नूरजहां

उसे सद्गति प्राप्त हुई। इस बार दिल्ली का ताज उसके सिर पर सिर्फ १ महीने रह सका।

हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक : अकबर

[सन १५४२ से १६०५]

अकबर सबसे महान साबित हुआ। उसके राज्य का विस्तार बंगाल से लेकर ईरान तक था। अकबर बड़े उदार विचारोंवाला व्यक्ति था। और उसने जोधाबाई से शादी कर राजपूतों के एक शक्तिसंपन्न घराने से घनिष्ठ संबंध

जहांगीर का पशु प्रेम भी बहुचर्चित रहा है। उसने 'सारसों' की प्रणय क्रिया का विशद वर्णन किया। जाड़े के मौसम में उसको हाथियों द्वारा अपने ऊपर ठंडा पानी उंडेलते हुए देखकर बड़ी वेदना हुई और उसने हाथियों के शाही अस्तबल में गरम पानी का इंतजाम करवा दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय ही आप अपने और अपने परिवार के लिए ऐसा साप्ताहिक पत्र चाहते हैं जिसमें सभी तरह की रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि जो पत्रिका आप खरीदें, वह आकर्षक हो और रंग-बिरंगे सार्थक चित्रों से सुसज्जित हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि उस पत्रिका के साथ आपकी साझेदारी बने।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

यही एक ऐसा साप्ताहिक पत्र है जिसमें यह सब कुछ मिल सकता है। कुछ आकर्षण देखिए—

युवा पीढ़ी— सार्थक विचारों के लिए।

नए स्वर— एकदम नए कवियों के लिए।

भविष्य-दृष्टि— आपके मन और मस्तिष्क को सन्तुलित रखने के लिए।

भविष्य-दर्पण— आपकी परेशानियों और समाधान के लिए।

वैद्य की सलाह— आपके उन रोगों और परेशानियों का निदान जो एलोपैथी चिकित्सा से सम्भव नहीं।

दायित्व और अधिकार— जानकारी के लिए कि कानून की दृष्टि में आपके कितने अधिकार हैं।

विज्ञान से संबंधित लेख/ स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चाएं/ कहानियां/ धारावाहिक उपन्यास/ प्रेरक प्रसंग/ एक कप हजार गप।

राजनीति के ताजा से ताजा पहलू पर विशिष्ट रचनाएं।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' एक सम्पूर्ण के लिए सम्पूर्ण साप्ताहिक पत्र।

हिन्दुस्तान टाइम्स का गौरवशाली प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाये। कहा जाता है कि उसने चुपचाप इस्लाम धर्म से संन्यास ले लिया था। अकबर ने हिंदुओं पर लगाया गया 'जजिया कर' भी समाप्त कर दिया था। अविश्वसनीय होने पर भी अकबर के गैर पढ़े-लिखे होने के तथ्य इतिहास में मिलते हैं। अकबर का ४९ साल का शासन काल मुगलों में सबसे लंबा था जिसके दौरान विशेष कर हिंदू और मुस्लिम संस्कृति का सुंदर मेलन हुआ। कहा जाता है कि अकबर के जमाने में 'न होली हिंदू थी, न ईद मुसलमान'।

अकबर का बचपन 'महमअंगा' नाम की धाया के संरक्षण में पला था। हुमायूं की मौत के बाद इस नारी ने अपने बेटे आदम खां को गद्दी पर बैठाने की कोशिश की, पर अकबर ने इन मौके पर किले की बुर्जी पर से उसको फेंकवाकर मरवा दिया। नौजवान शहजादे के रूप में अकबर को घुड़सवारी और हाथियों की लड़ाई में काफी रुचि थी। उसे पढ़ाई से कोई लगाव नहीं था पर हृदय के किसी अंतरतम कोने में छिपी उसकी गहन मानवीय संवेदना से अकबर को अपने दरबार में नवरत्नों को एक सम्मानपूर्ण स्थान देने की प्रेरणा मिली। इनमें बीरबल और अब्दुर्रहीम खानखाना जैसे विद्वान, गायप्रिय एवं कवि हृदय व्यक्ति शामिल थे। 'अकबर नामा' से मालूम होता है कि उसके समय में जनगणना, लघु चित्र शैली एवं बहुत-सी शासकीय विधाओं का विकास हुआ। इस पुस्तक में अकबर के दिन में एक बार, पर शाही अंदाज में, भोजन करने का भी जिक्र है। उसके भोजन में चालीस प्रकार के व्यंजन शामिल होते थे। और उसके शर्बत को ठंडा करने के लिए बर्फ विशेष रूप से पहाड़ों से लायी जाती थी। बेटे की ख्वाहिश अकबर को शेख सलीम चिश्ती के पास ले गयी। चिश्ती साहब ने उसको तीन बेटे मिलने की भविष्यवाणी की।

सन १५७१ में अकबर ने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी ले जाने का फैसला किया। पर १४ वर्ष बाद वह उत्तर पश्चिम में राज्य विस्तार से प्रेरित होकर अपनी राजधानी को लाहौर ले गया। उसने मंसबदारी प्रथा का सूत्रपात किया, जिसके द्वारा उसने बहुत होशियारी से मुगलों के काम आनेवाली एक बहुत बड़ी सेना के रखरखाव का दायित्व, यश के भूखे बहुत से छोटे-मोटे राजाओं और जागीरदारों के बीच बांट दिया।

कीमती चीजों का शौकीन : जहांगीर

[सन १५६९ से १६२७]

जहांगीर के राज्यकाल में चित्रकला का अभूतपूर्व विकास हुआ।

जहांगीर ने राज्य संभालने के बाद अपनी जिंदगी का खासा समय कश्मीर में बिताया। बकौल जहांगीर 'कश्मीर के फूलों की खूबसूरती और गिनती कर पाना असंभव है।' बाद में उसको शराब और अफीम दोनों की लत पड़ गयी।

जहांगीर का पशु प्रेम भी बहुचर्चित रहा है। उसने 'सारसों' की प्रणय क्रिया का विशद वर्णन किया। जाड़े के मौसम में उसको हाथियों द्वारा अपने ऊपर ठंडा पानी उंडेलते हुए देखकर बड़ी वेदना हुई और उसने हाथियों के शाही अस्तबल में गरम पानी का इंतजाम करवा दिया था। जहांगीर के राज्यकाल में शासन की वास्तविक बागडोर अधिकतर नूरजहां के हाथ में थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अकबर नामा' से मालूम होता है कि उसके समय में जनगणना, लघु चित्र शैली एवं बहुत-सी शासकीय विधाओं का विकास हुआ। इस पुस्तक में अकबर के दिन में एक बार, या शाही अंदाज में, भोजन करने का भी जिक्र है। उसके भोजन में चालीस प्रकार के व्यंजन शामिल होते थे। और उसके शर्बत को ठंडा करने के लिए बर्फ विशेष रूप से पहाड़ों से लायी जाती थी।

जहांगीर को बेशकीमती चीजों को इकट्ठा करने का भी बेहद शौक था जो अधिकतर सरदारों द्वारा उसको बतौर तोहफा मिला करती थीं। सन १६२७ में दमे का मरीज होते हुए भी उसने कश्मीर की अंतिम यात्रा की जिसकी कीमत उसे अपनी जान से चुकानी पड़ी।

अमर प्रेमी : शाहजहां

[सन१५९२ से १६६६]

चित्रकला-जैसे जहांगीर को अभीष्ट थ ही शाहजहां को शिल्प एवं भवन नि दिलोजान से प्यारे थे। 'अर्जुमंद बानो' सबसे चहेती बेगम थी जो बाद में 'मु महल' के नाम से प्रसिद्ध हुई। सन १६ वह अपने तेरहवें बच्चे के प्रसव में चल शाहजहां ने दो साल तक राजकीय मनाया। ताजमहल (जो उसकी चहेती के नाम का लघुकरण है) का गुंबद बन लिए उसने तुर्की से विशिष्ट 'गुंबद निर्मा बुलाया। और ताजमहल को बन कारीगरों के सरदार को बगदाद से गया। कुल मिलाकर बीस हजार कारीग मजदूरों ने बीस साल मेहनत कर ताजमह निर्माण किया, जिसको रवींद्रनाथ टै 'आंसुओं से बर्फ बने हीरे' (ताज इज ए मास ऑव टियर्स) की संज्ञा दी थी। अ लोग स्वीकार करेंगे कि ताजमहल अपनी प्रेरणाओं के जोड़ से कहीं अधिक बड़ा है। कहा जाता है कि शाहजहां ईरान के शाह अब्बास प्रथम द्वारा बनवाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूबसूरत राजधानी 'इस्फाहान' को बहुत पीछे छोड़ देना चाहता था।

बदहवास बादशाह : ओरंगजेब

[सन १६१८ से १७०७]

औरंगजेब के इस्लामी जुनून ने मुगलों की सल्तनत को दक्षिण की ओर बेहिसाब बढ़ाया। पर साथ ही उसके अपने जीवनकाल में ही मुगलों की राज्य शक्ति अंदर से एकदम खोखली हो गयी। उसने अपने बेटे को लिखे एक पत्र में स्वयं स्वीकार किया है कि 'मैं बदहवास हो चला हूं और शायद कष्ट ही मेरी जिंदगी की परिणति बनेंगे।' उसने दोबारा जजिया कर लगवाया। शराब और जुए के दौरों को बंद किया। पर दुर्भाग्य से इसके साथ ही संगीत, कला एवं हिंदू सभ्यता पर उसके प्रहार मुगलों के १८० वर्ष के सुनहरे राज्य काल की एक तरह से मौत ही बन गये।

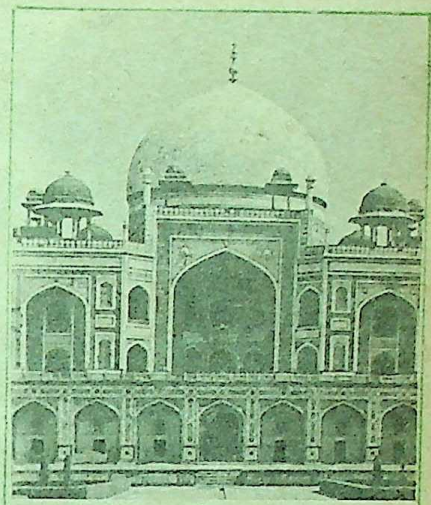

हुमायूँ का मकबरा

जामा मस्जिद

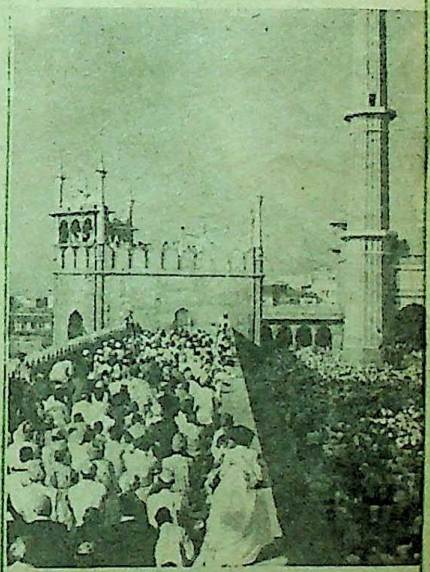

आगरा : बरकरार है विरासत

आगरा के सर्राफ मुगल कालीन जड़ाऊ हार एवं अन्य कीमती गहने आज भी बड़े गर्व के साथ एक विरासत के रूप में संजोये हुए हैं। मुगलों से भी पहले आगरा इब्राहीम लोदी की राजधानी रह चुका है। आगरा के ताजगंज में आज भी बहुत से संग-तराश रहते हैं, जो अपने को ताजमहल बनानेवाले महान शिल्पियों के वंशज बतलाते हैं। ताज के विषय में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। आगरे का किला भी एक शानदार मुगलिया विरासत है जिसको शाहजहां ने बनवाया था। खेल किस्मत का कि इस किले में ही शाहजहां को औरंगजेब द्वारा कैद कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

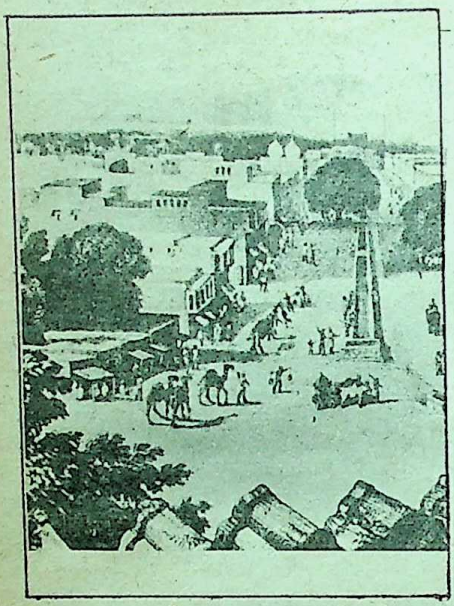

दिया गया था और उसकी जिंदगी के आखिरी साल इसी किले में ताजमहल को निहारते हुए गुजरे।

औरंगाबाद : पास ही दफन है औरंगजेब

सन १६८१ में औरंगजेब के साथ मुगलों की राजधानी मराठों के इस अज्ञात प्रदेश में पहुंच गयी। 'बीबी का मकबरा' इस शहर की खास पूंजी है, जिसे देखकर बहुत कुछ ताजमहल का मुगालता होता है। उसकी अपनी इच्छा के अनुरूप औरंगजेब को औरंगाबाद से कुछ दूर 'खुलदाबाद' में अपने शिक्षक की कब्र के पास दफना दिया गया।

दिल्ली : कभी शाहजहांनाबाद थी

बहुत लोग भूल चुके हैं कि हिंदुस्तान के इस दिल को भी शाहजहां ने ही करीने से बसाया था और तब इसका नाम था 'शाहजहांनाबाद'। दिल्ली का लालकिला और जामा मसजिद अहम् मुगलिया विरासत हैं। 'दरबारे खास' और 'मोती मसजिद' बेशकीमती पत्थरों के निकाल लिए जाने के बाद भी मुगलिया शा की कहानी आज भी याद दिलाते हैं। सूर्या के पश्चात दरबारे खास के पास 'ध्वनि औ प्रकाश' नाम के एक अति रोचक ए कल्पनाशील और अति लोकप्रिय कार्यक्रम के माध्यम से आज भी मुगलिया शानो-शौकत को बड़े सम्मानपूर्ण ढंग से याद किया जाता है।

फतेहपुर सीकरी : चार दिन की चांद

बेटे के जन्म की ख्वाहिश में अकबर ने अपनी गर्भवती पत्नी को आगरा से २३ मील दू 'सीकरी' नाम के गांव में शेख सलीम चिश्ती नाम के सूफी संत की देखरेख में छोड़ा था बाद में सन १५७१ में अकबर ने अप राजधानी को वहां ले जाने का फैसला कि और यहां पर बड़ी शानदार इमारतों की ता हुई। पर सिर्फ चौदह साल बाद अकबर क इश्क-ए-काबुल और समरकंद उसे लाहौर गया और इस प्रकार फतेहपुर सीकरी की श चार दिन की चांदनी बनकर रह गयी।

श्रीनगर : उद्यानों का शहर

जहांगीर ने श्रीनगर को आबाद तो न किया पर बेशक 'डल' झील के कि प्राकृतिक जल स्रोतों के जवान जज्बातों को बनाकर 'शालीमार' और 'निशात'-जै खूबसूरत और बेजोड़ उद्यानों का निर्माण श्रीनगर की खूबसूरती में चार चांद लगा दि

नौसेना आयुध निरीक्षण निदेशा
नौसेना मुख्याल
पश्चिमी खंड-५, विंग नम्बर १ और
प्रथम तल, रामाकृष्णपु
नयी दिल्ली—११००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबर १४८३—१५३०

हुमायूं १५०८—१५५६

अकबर १५४२—१६०५

जहांगीर १५६९—१६२७

शाह जहां १५९२—१६६६

औरंगजेब १६१८—१७०७

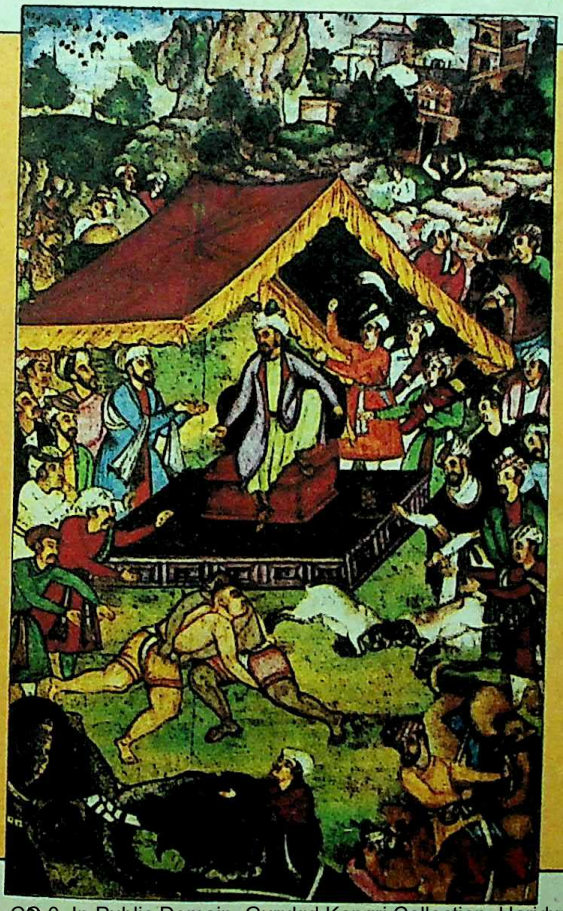

सन १५२८ में बाबर कालीन चित्र : ऊंटों और हाथियों की घमासान लड़ाई के बाद मल्लयुद्ध आरम्भ होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

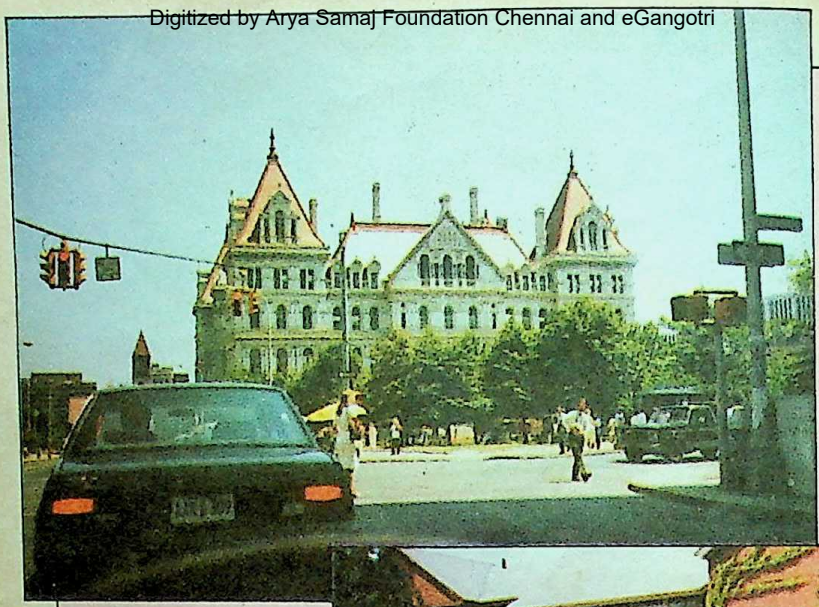

सेंट्रल एवेन्यू स्थित टाउन हाल

छाया : परिचय सक्सेना

सारातेगा निर्झर के पास

आलबनी स्थित जॉर्ज झील

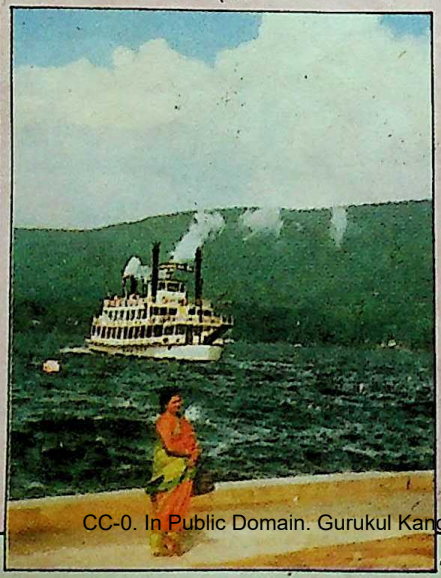

ऑलबनी : न्यूयार्क राज्य की राज
और संयुक्त राज्य अमरीका से ल
१६७ वर्ष पुरानी नगरी । ऑलबनी अपने
सौ वर्षों पुराने इतिहास के साथ आज
इतिहास बनानेवाली नगरी कहलाती
न्यूयार्क से १६५ मील उत्तर में स्थित ऑल
भारत के गुलमर्ग की याद दिलाती है—वैसे
छोटे-छोटे सुंदर लकड़ी के एक या दो मं
घर, वही हरियाली और एक सूनी-सी अ
जो गुलमर्ग में भी हर समय मुझे सुनायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। हर जगह इस हद तक हरियाली, कि कृत्रिम होने का भय लगे। लॉन के किनारे बैजनी, गुलाबी, सफेद फूलों के गुच्छे हवा से दुलराते, इतराते डोलते हैं। घरों के सामने बने 'पेवमेंट' भी हरी घास से ढके हैं। उनकी घास की कटाई-छंटाई और देख-रेख गृह-स्वामी अपने लॉन के साथ ही करते हैं। न्यूयार्क में ऊंची इमारतों का अंतहीन सिलसिला देख ऑलबनी की अंतहीन हरियाली बहुत अच्छी लगती है।

सेंट्रल एवेन्यू यहां की व्यस्ततम सड़क है—दिन-रात वाहन भागते हैं फिर भी सदैव एक शांति का अनुभव होता है। सड़क के किनारे मेपल के पेड़ और उनके नीचे कहीं-कहीं बैठने की बेंचों पर कोई न कोई बैठा रहता है, कभी युवा पीढ़ी हंसती-खिलखिलाती लिपटी दिखती है तो कभी वृद्ध पीढ़ी यहां बैठ अतीत को याद करती है।

विद्युत से जगमगाती नगरी ऑलबनी में लगभग १,१०,००० व्यक्ति रहते हैं। सुंदर घर, ऐतिहासिक महत्त्व की इमारतों के अतिरिक्त ऑलबनी शिक्षा का भी प्रमुख केंद्र है। राजधानी के आसपास कला, संगीत, थियेटर, खेलकूद, पर्यटक-स्थल तथा म्यूजियम-प्रेमियों के लिए भी बहुत से आकर्षण हैं। कार से न्यूयार्क, बफैलो, बॉस्टन कहीं भी जाइए, चारों ओर प्राकृतिक सुषमा का अगाध भंडार है। नगर में ही कहीं घने वृक्षों का झुरमुट इतना सघन है कि पलभर को 'हम वन में हैं'-जैसा भ्रम हो जाता है।

पुरानी इमारतों में यहां का ऑलबनी सिटी हॉल है जिसे राष्ट्र का प्रथम म्यूनिसिपल कैरीलन होने का गौरव प्राप्त है। यहां लगी घड़ी नियमित समय पर घंटे बजाती अपना अतीत दोहराती है। सन १८८१ में सिटी हॉल का निर्माण प्रसिद्ध आर्किटैक्ट हेनरी हॉब्स्टन रिचर्डसन द्वारा किया गया था।

उत्तरी पर्ल स्ट्रीट पर ऑलबनी का प्रथम निर्मित गिरजाघर स्थित है। आज यह राज्य का दूसरा बड़ा गिरजाघर गिना जाता है। १६४९ में स्थापित लूथर्न चर्च भी ऑलबनी में ही निर्मित है। ऑलबनी का ऐतिहासिक महत्व बहुत प्राचीन है। क्रांति-युद्ध के समय ऑलबनी के फोर्ट क्रैलो में ही 'थाक़ी डूडल' लिखा गया था। १७८७ में वैन रैंसलर का जियार्जियन शैली में निर्मित ऐतिहासिक-भवन अपनी पेंटिंग्स और फर्निशिंग के लिए टूरिस्ट आकर्षण-केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। भारी संख्या में इसे देखने दर्शक आते हैं।

न्यूयार्क की राजधानी होने के बावजूद यहां गगनचुंबी इमारतों का सर्वथा अभाव है। यहां की सबसे ऊंची इमारत एम्पायर स्टेट प्लाजा

अलविदा ऑलबनी

● पुष्पा सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर के कई भागों से दिखायी देती है। चालीस मंजिल इस इमारत में अनेकों ऑफिस, कैफेटेरिया हैं। सबसे ऊंची मंजिल से हडसन नदी तथा ऑलबनी का मनमोहक दृश्य दिखायी देता है। ऑलबनी से जुड़े ट्रॉय, स्केनेक्टेडी, रेंसलर तीन अन्य नगरियां हैं।

मनोरम फव्वारे

एम्पायर स्टेट प्लाजा के निकट ही गवर्नर नेलसन राकफेलर का कार्यालय है तथा इसके पीछे मनोरम फव्वारे, उद्यान तथा मंच हैं। इस मंच से प्रायः सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। ६ जुलाई को स्वतंत्रता-दिवस समारोह के अवसर पर यहां आकर्षक आतिशबाजी का कार्यक्रम होता है। उस समय मानो पूरा

सारातोगा देवी एवं स्प्रिंग पार्क

ऑलबनी उमड़कर इन फव्वारों के पास सिम जाता है। आतिशबाजी के उत्तम प्रदर्शन प ऑलबनी वासी हर्षध्वनि के साथ तालियों द्वा स्वागत करते हैं। ठंडे पेय, बीयर, कॉफी, चाय फ्रेंच फ्राईज (पोटेटो-चिप्स), बर्गर्स के सा हर आयोजन, उत्सव और भी मनोहारी हो उठ है। एक विशेष बात है कितनी भी भीड़ हो कहीं कोई अनुशासनहीनता नहीं दीखती ,कार-पार्किंग के बाद चार-पांच मंजिलों से क निकालने या लिफ्ट पर जाने के लि अनुशासित रूप में सब पंक्तिबद्ध खड़े अप बारी की प्रतीक्षा करते हैं। इस संदर्भ में ए छोटी-सी घटना याद आती है, हमलोग न्यूयार्क एयरपोर्ट से बाहर आने के लिए कस्ट क्लियरेंस हेतु अपनी बारी की प्रतीक्षा कर र थे, तभी एक भारतीय ने पंक्ति तोड़ आगे ज की चेष्टा की थी। पीछे खड़े एक अमरीकन उनसे अंगरेजी में पूछा था "क्या आप बहु जल्दी में हैं ?" उत्तर की प्रतीक्षा किये बि उसने आगे कहा था, "हम जो यहां खड़े हैं सभी जल्दी में हैं यह एक सभ्य (सिविलाइज्ड देश है कृपया पंक्ति में वापिस अपनी जग जाइए, अन्यथा मैं पुलिस बुलाऊंगा।" ब बहुत शांत-स्वर में कही गयी थी, पर उसमें छिपा आक्रोश स्पष्ट था। अप्रत्यक्ष रूप से ह असभ्य कह उसने जो तमाचा मारा था, उसमें शायद वहां खड़े सभी भारतीय क्षुब्ध हो उ थे। भारत में सिनेमाघरों की खिड़किय रेलवे-स्टेशन, बस-स्टैंड सभी जगह हम पंक्ति की अवहेलना करते देखे जाते हैं। उस दिन क अपमान, इसी आदत का परिणाम था।

एम्पायर स्टेट प्लाजा के निकट ही न्यूयार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

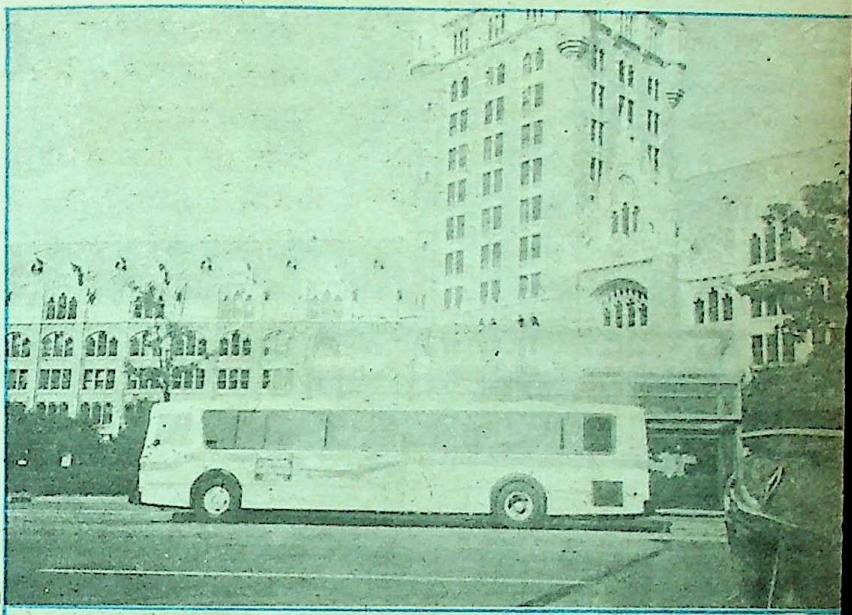

ऑलबनी विश्वविद्यालय प्रशासकीय भवन

स्टेट म्यूजियम है। जहां पूरे आकार में ऐतिहासिक दृश्य अपने प्राकृतिक परिवेश में उपस्थित किये गये हैं। ऐतिहासिक हवाई-जहाज, मोटर-गाड़ियां, रेलगाड़ी का इंजन ही नहीं, सभ्यता से अछूता रेडइंडियन परिवार, बर्फ-युग की समाप्ति पर पाया जानेवाला सफेद हाथी भी प्रदर्शित किये गये हैं। मूल्यवान पत्थर, चट्टानों के नमूने, एंटीक, पक्षी, अग्नि-शामक उपकरण तथा आज तक की उन्नति का इतिहास यहां सुरक्षित है। प्राचीन-नगर होने के कारण ऑलबनी में बाइस या चौबीस म्यूजियम हैं।

पत्थरों से बना विश्वविद्यालय

स्टेट-यूनीवर्सिटी आव न्यूयार्क, जिसे 'सूनी' कह संबोधित किया जाता है, का मुख्य कार्यालय 'यूनीवर्सिटी प्लाजा' एम्पायर स्टेट-प्लाजा के निकट ही है। इसकी इमारत यह मानने को बाध्य करती है कि आइ एम वन ए मिलियन।' विश्वविद्याल देश-विदेश के आनेवाले हजारों विद्यार्थी वि विषयों में उच्च-शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। १ वाशिंगटन एवेन्यू पहुंचने पर हरे लॉन पाइन वृक्षों से घिरा 'सूनी ऑल विश्वविद्यालय' मन मोह लेता है। चारों पर स्नातकार्थी छात्रों के बहुमंजिले होस्टेल से 'लाइट हाउस' का भ्रम देते हैं। विश्वविद्यालय पत्थरों से बनाया गया प्रवेश-द्वार से प्रविष्ट होते ही फव्वारे का म दृश्य दिखायी देता है। गर्मियों में यह फ स्विमिंग पूल बन जाता है। फव्वारे के धूप सेंकते युवा, फव्वारे में नहाती जल करती युवा पीढ़ी को देखना एक अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

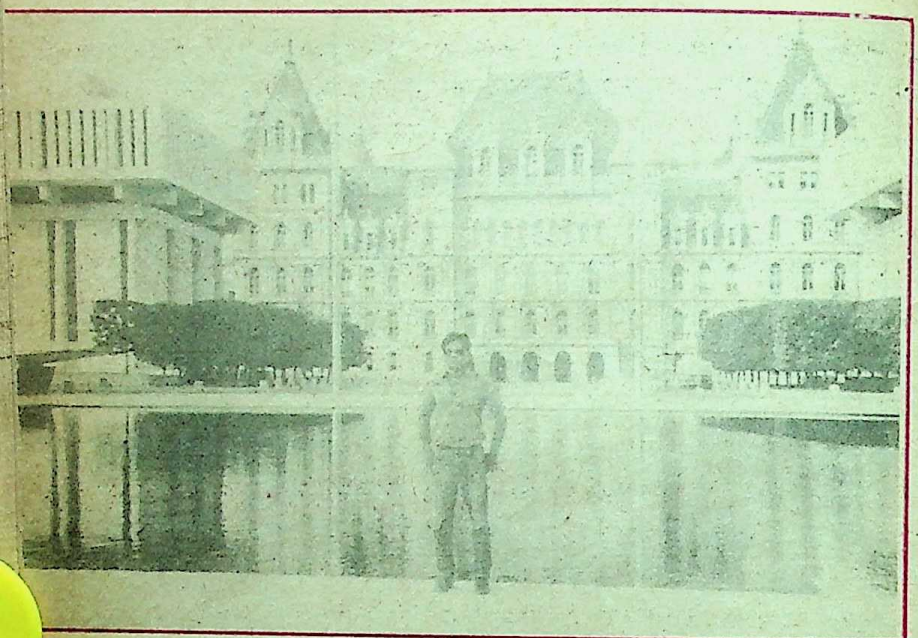

गवर्नर नेलसन रॉकफेलर का कार्यालय

क क्षण को लगता है किसी शिक्षा संस्थान में
ों, शायद किसी पिकनिक स्पॉट पर आ गये
प्रायः चलते-फिरते कक्षा में या बाहर
द्यार्थियों के हाथ में कोई न कोई पेय अवश्य
ा। कक्षा में भाषण के बीच से उठ जाने पर
ई नोटिस नहीं लेता, विद्यार्थियों को पूर्ण
तंत्रता रहती है। प्राध्यापक और विद्यार्थियों
मैत्रीपूर्ण संबंध रहते हैं। छुट्टी के दिन या
ध्या के समय प्रायः ये विद्यार्थी सड़कों पर
खायी देते हैं, पर वहां उनका व्यवहार उन्मुक्त
उच्छृंखल नहीं होता।

पिकनिक के लिए मनोरम स्थान

पिकनिक या मनोरंजन के स्थानों में
लिबनी के आसपास कई झीलें व पार्क हैं।
गभग पैंतीस मील दूर साराटोगा स्प्रिंग पार्क
दो गोल्फकोर्स, स्विमिंग पूल, टेनिस कोर्ट
हैं। पिकनिक के लिए यह एक मनोरम स्थान
है। पार्क के मध्य साराटोगा देवी की प्रतिमा
है। यहां मिनरल वाटर के सोते हैं। कहा जाता
है इस पानी को पीने से भूख भी लगती है और
भोजन आसानी से पच जाता है। छुट्टी के दिन
यहां लड़कियों द्वारा बैले भी प्रस्तुत किया जाता
है। यहां की हारनेस रेस बहुत प्रसिद्ध है, यह
रेसकोर्स बहुत पुराना है। जुलाई से
मध्य-अगस्त तक घुड़दौड़ के कार्यक्रमों में भाग
लेने दूर-दूर से लोग आते हैं।

ऑलबनी से छप्पन मील दूर 'लेक-जार्ज'
अपने सौंदर्य के कारण संसार की दूसरी सुंदर
झील कही जाती है। इस स्थान को देखकर
पहलगांव की याद आती है। यहां कई मोटेल्स
भी हैं, जहां अमरीका के कई भागों से वीकेंड
मनाने लोग आते हैं। झील को देख समुद्र का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रम होता है वैसी ही उत्ताल लहरें किनारों पर आ टकराती हैं। पानी की बूंदें सड़क पर चलते व्यक्तियों को भिगो आह्लादित कर देती हैं। गहरा नीला जल आकाश की नीलिमा से होड़ लेता है और आकाश उसमें प्रतिबिंबित हो अपना अस्तित्व खो देता है। एक ओर नावें हैं तो दूसरी ओर भोंपू और तेज संगीत से आकर्षित करते भीमकाय स्टीमर टूरिस्टों को आमंत्रित करते हैं। झील के दूसरे किनारे पर झील से पैराशूट में उड़ते व्यक्ति आकाश के ऊंचाई तक जाने का प्रयास करते दिखायी देते हैं। चूड़ी, मोती, टाप्स, सजावट के सामान, कपड़े, आइसक्रीम, खाद्य पदार्थों के साथ हर वीकेंड में यहां मेले-सा उत्साह होता है। टूरिस्ट आकर्षण की वस्तुएं इस समय काफी महंगे दामों में आसानी से बिक जाती हैं।

हवा में प्राकृतिक सुगंध

लेक जार्ज में जो नैसर्गिक सौंदर्य और आकर्षण है, उसे छोड़कर आना सचमुच बहुत कठिन है, लगता है यहां की हवा में एक प्राकृतिक सुगंध है, जो सब-कुछ भूल जाने को विवश करती है। प्रकृति सुंदर है मानव अपने प्रयासों से उसे और भी सुंदर बना दिया यह बात यहां हर जगह महसूस होती है

ऑलबनी का एक अद्भुत सौंदर्य है ए ओर वह प्रकृति की गोद में अलसायी सं दिखती है, दूसरी ओर जीवन से भरपूर-भाग किसी की पकड़ में न आने की अपनी क्षम पर मुस्कराती है विदा के क्षण नजदीक आ हैं। ग्यारह जुलाई को एक बार खुली आंखों इसका सौंदर्य निहार रही हूं। एम्पायर स्टे प्लाजा की सबसे ऊंची मंजिल पर संध्या एकांत में व्यक्तिविहीन रेस्ट्रां से ठंडा पेय ले पी हुए चारों ओर दृष्टि डाल रही हूं। नीचे जीव चल रहा है। हडसन नदी वैसे ही बह रही कल ये सब देखने को मैं नहीं रहूंगी— शाय भविष्य में भी यहां कभी न आ सकूंगी। कित अजीब होता है, यह एहसास जब मालूम हो य देखना अंतिम बार है— सब-कुछ कैसे सहे लूं, यह सौंदर्य यह सन्नाटे की आवाज हमेशा लिए मेरे साथ रह जाए— अलवि ऑलबनी।

—के-९२, श्यामली, रां

भारोत्तोलन की शुरूआत

आधुनिक भारोत्तोलन की शुरूआत १८वीं शताब्दी के अंत में और १९वीं शताब्दी के प्रारंभ में सर्कसों या म्यूजिक हॉल के कार्यक्रमों से हुई। सन १८९१ में इसकी खुली विश्व प्रतिस्पर्द्धा कैफे मोनिको लंदन में आयोजित हुई। इस प्रतिस्पर्द्धा को लारेंस लेवी नामक अंगरेज ने जीता। सन १८९६ में एथेंस ओलंपिक में भारोत्तोलन की दो प्रतियोगिताएं जोड़ी गयीं।

वैसे भारोत्तोलन प्रागैतिहासिक जनजातियों में शारीरिक शक्ति और शौर्य के प्रदर्शन के लिए प्रचलित थी। इन जातियों में मर्दानगी की परीक्षा कोई खास किस्म की चट्टान उठाकर होती थी। यूनान में और स्काटलैंड के दुर्गों में आज भी कई ऐसे भारी पत्थर पाये जाते हैं, जिन पर उन्हें पहली बार उठानेवाले का नाम खुदा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निकांड

• वसंत वन्हाडपाण्डे

माचार पत्र में खबर पढ़ी, तो मैं सन्न रह गया। खबर भयंकर थी। माणिकगढ़ के बहादुर सिंह का विश्राम मंदिर अग्निकांड में नकर राख हो जाने की खबर थी वह। मुझसे शांत रहा न जा सका। घड़ी देखी, । सुबह के सात बजकर तेईस मिनट हुए । जल्दबाजी करने पर आठ बजे छूटनेवाली मिल सकती थी। ठीक समय पर बस यदि तो डेढ़-दो घंटे में माणिकगढ़ पहुंचा जा ा था। वहां से तांगा किराये पर लेकर घंटे में, राज बहादुर सिंह के महल पर ा जा सकता था।

ो-एक जोड़ी कपड़े अटैची में रखकर मैं ल पड़ा।

ूरी यात्रा में मैं बेचैन ही रहा। कुछ भी ा नहीं था। बस में मुझे खिड़की के पास नचाही जगह मिली। सावन की बरसात लकर निखरा हुआ प्रकृति का हंसता हुआ चारों ओर दिखायी पड़ रहा था। ऊपर मान में काले सफेद बादलों की दौड़ चल थी। कभी-कभार बादलों के घटाटोप से की किरणें मानो मुझे संकेत करती-सी लग थीं। परंतु प्रकृति के इस वैभव की ओर भर भी देखने के लिए मेरा मन स्वस्थ नहीं राज बहादुर सिंह का विश्राम मंदिर कर राख होनेवाली खबर इतनी मामूली नहीं उसके जीवन का सर्वस्व इस अग्निकांड में कर राख हो गया था। विगत पांच वर्षों से अपना सब कुछ दांव पर लगाकर जिसकी रक्षा की थी, वह अग्नि की भेंट चढ़ चुका था।

राज बहादुर सिंह कितना खत्म हो गया होगा, कितना तहस-नहस हो गया होगा, इसकी कल्पना भी मैं नहीं कर सकता था। उससे मिलने पर किन शब्दों में और किस तरह मैं अपनी सहानुभूति प्रगट कर सकूंगा, उसकी सांत्वना कैसे-कैसे कर सकूंगा, कैसे उसे ढाढ़स बंधा सकूंगा, ये प्रश्न मेरे मन को घेरे जा रहे थे। उसका दुख मेरी सहानुभूति, सांत्वना और ढाढ़स से कहीं अधिक था।

मेरी बस सड़क पर दौड़ी चली जा रही थी। विगत काल की कथा मेरे मानस-पटल पर सजीव साकार रूप में उभरकर आ रही थी।

राज बहादुर सिंह और मैं कालेज के सहपाठी थे। मैट्रिक पास होने पर हम लोग कालेज में चार साल तक साथ-साथ पढ़े थे। एक ही बेंच पर बैठते थे, लेक्चर सुनते थे। होस्टल में भी एक ही कमरे में रहते थे। राज बहादुर सिंह माणिकगढ़ की जमींदारी का इकलौता वारिस था। अपार संपत्ति का मालिक था। फिर भी उसके व्यवहार में सादगी और सरलता कूटकूटकर भरी थी। चाहे किसी के भी साथ हो, उसके व्यवहार में उन्मुक्तता दिखायी पड़ती थी। ईश्वरप्रदत्त राजकीय रूप था उसका। व्यक्तित्व रोबीला था। पौने छः फुट ऊंचा, रंग गोरा, सीधी नाक, आंखों का सुंघनी का-सा रंग, सिर पर काले घुंघराले बाल, बात करने में चुस्त, हंसता तो पूर्णिमा का चांद लगता।

हमारी पहली मुलाकात भी याद रखने लायक थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होस्टल में रहते हुए मुझे तीन-चार दिन हो चुके थे। कमरे का साथी कौन मिलता है, इसी चिंता में मैं अपनी खाट पर पड़ा हुआ था। समय काटने के लिए एक जासूसी उपन्यास पढ़ने में मन लगा रहा था। शाम के साये लंबे हो रहे थे। इसी समय वह आया।

"क्षमा करना। आपको कष्ट देना चाहता हूं।"

मैं अपनी खाट पर ही उठ बैठा।

"मैं राज बहादुर सिंह, आपका रूममेट।"

उसके आकर्षक व्यक्तित्व की ओर मैं देखता ही रहा। उसके पीछे-पीछे होल्डाल और अन्य सामान लेकर एक नौकर कमरे में आया। साथ में एक अधेड़ आयु के सज्जन भी थे। उन्होंने नौकर से कहकर सारा सामान रखवा दिया और हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से राज बहादुर सिंह के आगे वे खड़े हो गये।

"बैठिए दादा—" उसने उन सज्जन से कहा और स्वयं दूसरी खाट पर बैठ गया। बैठने में राजकीय ठाठ था, आवाज में रोब था।

"नहीं सरकार, मैं चलता हूं। तांगा बाहर खड़ा है। रुक गया, तो ट्रेन नहीं मिलेगी।"

"जैसी आपकी इच्छा।"

"अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिएगा।"

राज बहादुर सिंह हंस पड़ा।

"मेरे स्वास्थ्य को क्या हुआ है दादा? एकदम भला चंगा हूं। आप बेकार की चिंता मत कीजिए। अपना ध्यान रखिए। जाना ही चाहते हैं, तो ठीक है। निकलिए फिर।"

दादा नमस्कार कर चले गये।

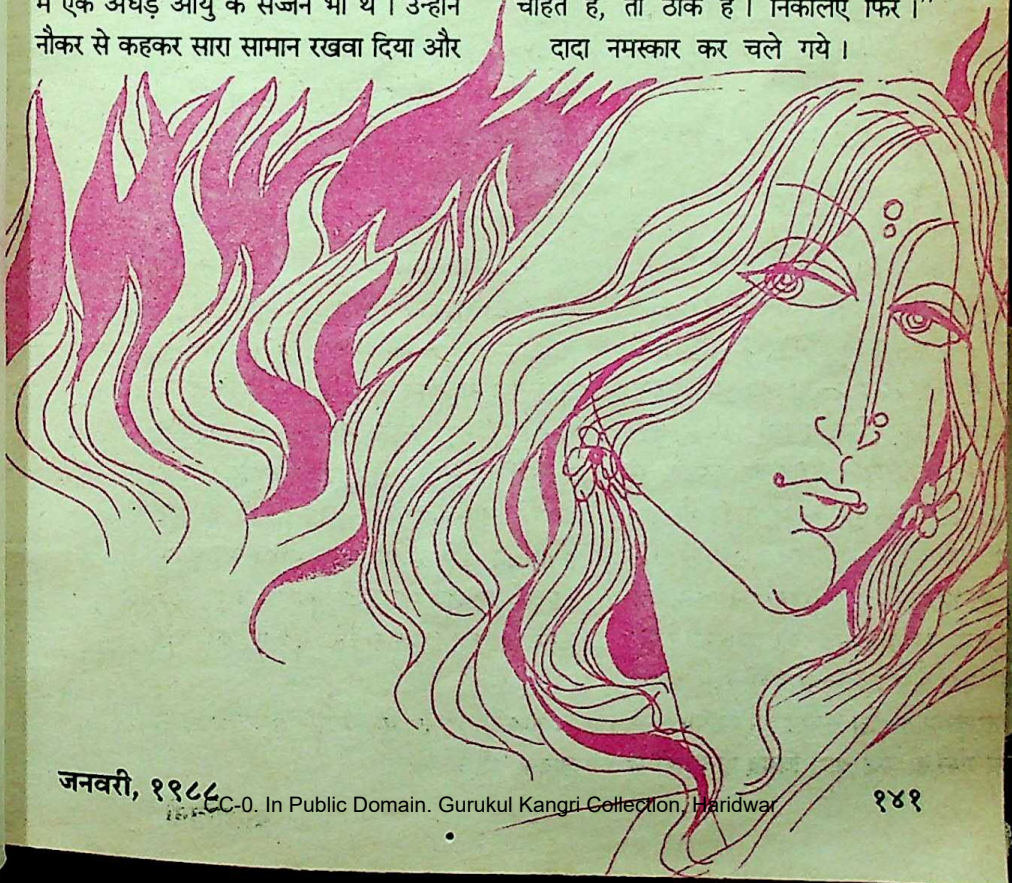

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी खाट पर बैठे-बैठे मैं यह सब देख-सुन रहा था। फिर मेरी ओर देखकर राज बहादुर सिंह ने हंसते हुए कहा—"सफर में शरीर कैसे थक जाता है, हालांकि हम कोई काम नहीं करते। ठंडे पानी से नहाने पर ही सारी थकान दूर हो जाएगी। क्यों मैं ठीक कह रहा हूं न ?"

मेरे उत्तर की राह देखे बिना ही वह उठा। अटैची से आवश्यक सामग्री निकाली और स्नानगृह की ओर चला गया। नहाकर लौटा, तो मुझे लगा, धुलकर जैसे निखर उठा हो।

कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जिनके साथ बरसों एक ही जगह रहते हुए भी उनके व्यवहार में हजारों मील की दूरी कायम रहती है। इसके विपरीत कुछ लोग अपने व्यवहार और बातचीत से कुछ ही समय में मित्र बन जाते हैं। लगता है, युगों से उनसे पहचान हो। राज बहादुर सिंह और मैं कुछ ही दिनों में एक-दूसरे के एकदम करीब आ गये। राज बहादुर का माणिकगढ़ की जमींदारी का इकलौता वारिस होना, इस सत्य ने मुझे अपने छोटेपन का बोध करा दिया था। रईस लोग हर चीज में अधिकता पसंद करते हैं, दूसरों को हीन समझने का उनका स्वाभाव होता है, यह मेरा विचार था। परंतु राज बहादुर सिंह के विषय में मेरा विचार गलत प्रमाणित हुआ। अहंकार तो उसमें नाम मात्र भी न था। इसके विपरीत उसके व्यवहार में विनम्र माधुर्य था, जो मुझे प्रभावित किये बिना नहीं रह सका। दूरी की भावना मेरे मन से हटती गयी और मैं उसकी ओर खिंचता चला गया। यदि वह चाहता तो एकाध छोटा बंगला किराये पर लेकर, नौकर-चाकरों के साथ रह सकता था। उसके पिता की यही इच्छा थी। पिता की अपार संपत्ति का इकलौता उपभोक्ता था वह! पर उसने पिता की बात न मानी! पुणे - जैसे शहर में एक साधारण मनुष्य—जैसे रहना पसंद किया। साधारण मनुष्य के सुखदुख का अनुभव प्राप्त करने की जिद पकड़ ली और पूरी की। बचपन से ही वह जमींदारी के वैभव को वह भोगता आया था। इसलिए साधारण मनुष्य के जीवन के प्रति उसके मन में एक विशेष आकर्षण पैदा हो गया था और यह बात स्वयं उसने ही मुझसे कही थी। उसकी इस विशेषता पर तो मैं मुग्ध हो उठा था। पढ़ने का उसे शौक था। न जाने कहां-कहां की पुस्तकें उसके पास थीं। पुस्तक पढ़ते हुए उसे देखना, यह भी अपने आप में मेरे लिए एक अलग ही अनुभव था। पुस्तकों के चरित्र से वह तुरंत तादात्म्य स्थापित कर लेता था। चरित्र के सुखदुखों का प्रतिबिंब उसके चेहरे पर देखा जा सकता था। पढ़ते-पढ़ते कभी वह हंस पड़ता, कभी उसके चेहरे पर करुण भाव उभर आता। उसकी आंखों से आंसू बहते हुए मैंने कई बार देखे थे। उसकी भावुकता मुझे बड़ी ही रोचक लगती।

ऐसी ही एक भावानुभूत स्थिति में जब वह था, मैंने कहा—"तेरी भावुकता मुझे बड़ी अद्भुत लगती है। अरे, वे चरित्र उपन्यास के हैं, लेखक की कल्पना से निर्मित झूठे चरित्र। उनके लिए तू रोता है।"

"आंखों से आंसू बहाने का प्रयत्न नहीं करना पड़ता, अपने आप आंखों से वे बाहर आ जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे चरित्र काल्पनिक हैं, यह जानते हुए भी ?"

"वे चरित्र झूठे होते हैं, किसने कहा यह तुझसे ? वे भी सच्चे चरित्र होते हैं जैसे तू और मैं। अंतर केवल इतना है कि हम प्रत्यक्ष संसार में चलते-फिरते हैं और वे लेखक की कल्पनासृष्टि में निवास करते हैं। जब हम अपने वास्तविक संसार से होकर लेखक की कल्पना के संसार मे प्रवेश करते हैं तब वहां के चरित्रों के सुखदुख हमारे अपने सुखदुख हो जाते हैं, कम से कम उतने समय के लिए।"

बड़े मनोवेग से वह बोलता चला जा रहा था, इसलिए मैं उसका विरोध न कर सका।

एक दिन होस्टल लौटने में मुझे देरी हो गयी। कालेज की वाद-विवाद प्रतियोगिता समिति की बैठक थी। मैं सचिव था। बैठक के बाद चाय-नाश्ता भी हुआ। मैं उसी में फंस गया। कमरे पर लौटा, तो राज बहादुर सिंह खिड़की के बाहर कहीं दूर कुछ देख रहा था। मैं लौट आया हूं, इसे जानने की जरूरत भी उसने अनुभव नहीं की। मुझ पर क्रोध आना स्वाभाविक ही था उसे। हम दोनों ने दूर पहाड़ी पर घूमने जाने का प्रोग्राम बनाया था। शाम कब की ढल चुकी थी। शहर से बाहर की पहाड़ी पर जाकर, डूबता सूरज देखने का राज को बड़ा शौक था। परंतु अब तो बहुत समय हो चुका था।

अपराध भावनावश मैंने कहा—"माफ करना यार, मुझे सचमुच बहुत देर हो गयी।"

"काहे के लिए माफ करना ?" मेरी ओर मुड़कर उसने कहा।

"आज शाम को घूमने के लिए जाने का

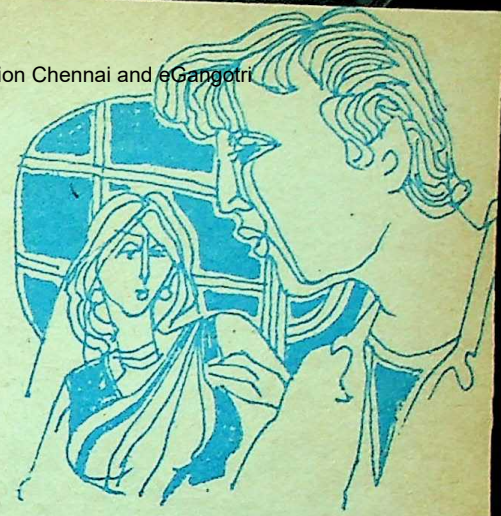

प्रोग्राम बनाया था, हम लोगों ने। पर मेरी वजह से...।"

"मेरा मूड भी नहीं है आज। बेचैनी-सी लग रही है।"

"क्यों ? घर में सब ठीक है न ?"

"घर की कोई चिंता नहीं है यार।"

"तो फिर ?"

"सुनकर हंसेगा तू...."

"नहीं हंसूंगा यार, बताना, क्या बात है ?"

"मनुष्य की स्वार्थी भावना से चिंता होती है मुझे। कितना स्वार्थी होता है मनुष्य ? उसने प्रेम किया। वचन दिया उसे। सात जन्मों तक साथ रहने की कसम खायी। और अब विवाह के बारह वर्षों बाद उसे घर से बाहर कर दिया। मन में प्यार नहीं रहा इसलिए। दो बच्चों की मां होते हुए भी। क्या अपराध है उसका ? उसके प्रति पहले जैसा आकर्षण नहीं रहा, सिर्फ इसलिए।"

"राज, यह सब किसके विषय में कह चले जा रहा है ? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रताप नारायण के विषय में।"

"कौन प्रताप नारायण ?"

राज को अब जाकर अपनी गलती अनुभव हुई। बिना संदर्भ के ही बोले जा रहा था। शांत भाव से अब कहने लगा—

"माफ करना यार। मुझे पहले ही बता देना चाहिए था। प्रताप नारायण इस उपन्यास का नायक, उर्मिला का पति है। एक स्वार्थी और नीच मनुष्य। मनुष्य क्या इतना आत्मकेंद्रित होता है ? केवल अपने ही सुखों की चिंता करता है ? क्या संसार में मनुष्य कुछ भी करने के लिए इतना स्वतंत्र होता है ? परिवार, समाज के लोगों की भावनाओं से उसका कोई संबंध नहीं होता ? इन लोगों के साथ वह प्राणघातक खेल-खेल सकता है ?"

मैं उलझता जा रहा था, वह बोलता जा रहा था—

"प्रेम क्या इतना शरीर-निर्भर होता है ? यह सच है कि शरीर एक अनिवार्य तथ्य है। परंतु प्रारंभ में ही। प्रेमी जीवों के दो भिन्न शरीर जब इक्टठे आते हैं और उनके मन एकात्म हो जाते हैं, उस समय शरीर का अस्तित्व प्रेम के लिए गौण हो जाता है। बीच के परदे की तरह वह गिर जाता है। प्रेम यानी केवल दो शरीर का मिलन ही नहीं है मधु। शरीर की महत्ता केवल इसीलिए है कि उसके भीतर एक प्रकाशित लौ होती है। रक्षा करनी होती है, तो हमें इस लौ ही की, मिट्टी से बने शरीर की नहीं।"

सच बात तो यह थी कि उसकी बात मेरी समझ में ही नहीं आ रही थी। फिर भी मैं कुछ भिन्न, कुछ उदात्त, मन को ऊपर उठानेवाली बात सुन रहा हूं, ऐसा लग रहा था। मुझे पहली बार अनुभव हुआ, राज एकदम अलग ही ढंग से विचार करता है।

कालेज का हमारा जीवन समाप्त हुआ। हम दोनों की जीवन-यात्रा अलग-अलग दिशाओं में प्रारंभ होनेवाली थीं। राज अपनी जमींदारी में लौटनेवाला था। उसे अपनी जमींदारी संभालनी थी। वह आगे पढ़ना चाहता था। परंतु पिता की इच्छानुसार वह डिग्रीधारी बनकर माणिकगढ़ लौट गया। मैं अपनी पढ़ाई आगे जारी रखने के लिए पूना में रह गया। एम.ए. के बाद पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त कर किसी कालेज में प्रोफेसर बनने की इच्छा थी मेरी।

राज बहादुर सिंह यद्यपि शरीर से दूर चला गया था, फिर भी मैं उसके अस्तित्व का अनुभव अपने चारों ओर करता था। वातावरण बदल चुका था। राज के साथ मेरा संबंध स्थापित हुआ, वह युवावस्था के प्रारंभ में। इसलिए वह संबंध कायम रहा। कोई दिन ऐसा नहीं बीतता, जब मुझे उसकी याद न आयी हो। किसी न किसी अवसर पर मुझे उपहार में दी हुई उसकी पुस्तकें शेल्फ पर रखी थीं। वे उसकी याद दिलातीं। राज से जुड़ी हुई अनेक यादें मेरे कमरे में कायम थीं। जब हम विदा हुए थे, उस दिन की घटना मुझे बार-बार याद आती थी। पहाड़ी के ऊपर निश्चित जगह पर हम बैठे थे। दूर-दूर तक फैला हुआ पूना शहर था। चारों ओर का विशाल विस्तार कुछ अलग ही भावनाओं के दायरे पैदा कर रहा था। वास्तविक संसार में रहते हुए भी काल्पनिक संसार में विचरण करनेवाला राज कुछ खोया-खोया-सा था। दूर-दूर तक फैले हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र की ओर अपलक नेत्रों से देख रहा था, उसने समाधि ले ली हो।

ह कुछ बोले, इस इरादे से मैंने —"राज, कल हम एक-दूसरे से अलग एंगे, दूर चले जाएंगे, हमारा साथ छूट । यह आखरी दिन है। आज मन भर तें करने के लिए हम यहां आये हैं। पर ौन व्रत धारण कर लिया है।"

मधु, मौन शब्दों से अधिक बोलता है।"

अरे, यह तो कविता बन गयी।"

कविता नहीं मधु। हृदय की सारी एं शब्दों में प्रगट नहीं होतीं। कई बार हमारे साथ धोखा दे जाते हैं। जो नहीं वह हम कह जाते हैं। शब्दों की भाषा न की भाषा, आंखों की भाषा अधिक रखती है, अधिक ईमानदार होती है। की अपेक्षा स्पर्श अधिक बात करता

र उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया जबूती से पकड़ लिया। उसके हाथ का का अनुभव मुझे होने लगा। उसकी कुछ दूसरी ही भाषा बोल रही थीं। उसके की हरकत शब्दातीत प्रेम की अनुभूति ही थी। उसकी भावुकता किसी दूसरे मुझे हास्यास्पद लग सकती थी। हम नपने मूड में रहते, तो उसका मजाक भी ाया होता। पर इस समय मजाक करने हिम्मत भी नहीं हुई। उसने कहा— स जगह बैठकर यह वातावरण देखते कैसा रोमांचित हो उठता है मधु। मेरा आता है। यहां आकर जब मैं देखता यहां का पूना शहर दिखायी नहीं

वसंत वन्हाडपाण्डे

मराठी के सुप्रसिद्ध कहानीकार इनकी कहानियां मराठी भाषा में काफी चर्चित रही हैं

पड़ता। दिखता है, कल का पूना, अतीत का पूना। शिवाजी का लालमहल, शनी वारवाड़ा, सजे हुए घोड़े पर बैठे हुए वीर पोशाक पहने हुए बाजीराव पेशवा, उसकी युद्ध के लिए आतुर सेना, सेनापति, आगे-आगे चलनेवाले हाथी, अपनी अकड़ में चलनेवाली मराठी सेना का विजयशाली जरीपटका...ऐसा लगता है, आज भी मैं यह सब देख रहा हूं।"

राज का इस तरह अतीत में खो जाना, मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वर्तमान में रहते हुए अतीत में नजरें जमायी रखना, मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। अगर देखना ही है तो भविष्य की ओर देखें। जो बीत गया, चला गया, उसकी ओर देखना, कोई औचित्य है, इसमें। कुछ देर रुककर फिर उसने कहा—

"यानी जो कल था, वह सब खत्म हो गया ? नामोनिशान मिट गया, उसका ? यही कहना चाहता है तू ?"

"यह तो एकदम सही है।"

"तेरा यह बहुत बड़ा भ्रम है मधु। कल जो था, वह सब आज भी है। सिर्फ उसका रूप और आकार मिट गया होगा। कल का शरीर आज नहीं होगा। पर पिछले युग की इच्छा-आकांक्षा, संकल्प-विकल्प, भावना-हलचल कैसे खत्म होगी ? अचेतन के साथ उसके भीतर का चेतन खत्म हो जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा सोचता है तू ? अचेतन भले ही खत्म हो जाए, फिर भी उसके भीतर का चेतन दूसरे रूप में हमारे चारों ओर घूमता रहता है, जलकर राख हुई अग्निज्वाला-जैसे। उसका केवल अस्तित्व रहता है। इस अरूप का रूप बहुत ही मोहक होता है। इन भौतिक आंखों से वह देखा नहीं जा सकता। उसे देखने के लिए हमें इन भौतिक आंखों को बंद कर देना पड़ता है, अंतर्दृष्टि से देखना पड़ता है। एक बार ऐसा तू अनुभव कर देख तो सही। मजाक नहीं, गंभीरता से कह रहा हूं मैं....।" और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

मैं चुप रहा। बेकार ही बोलकर इस अंतिम विदाई के समय उसका मन दुखी करने का मेरा इरादा बिल्कुल नहीं था। फिर वह माणिकगढ़ चला गया।

मेरा जीवन एक नियमित पटरी पर चलने लगा। एम.ए. का द्वितीय वर्ष था। दीवाली की छुट्टी में कालेज की ट्रिप जा रही थी। ट्रिप के बहाने दक्षिण भारत देखने का मौका मैं अपने हाथों से गंवाना नहीं चाहता था।

मैं ट्रिप पर गया। जब लौटा, तो मेरे कमरे में राज के विवाह का निमंत्रण-पत्र पड़ा हुआ था। जिज्ञासा से मैंने उसे पढ़ा। विवाह संपन्न हुए दस बारह दिन हो गये थे।

मन को चिंता हुई। राज के विवाह में न जा सका, बुरा लगा। उसी दिन डाक से उसका पत्र आया। बड़े गुस्से में लिखा था, उसने। विवाह में नहीं तो कम से कम विवाहित जीवन-संसार देखने के लिए आने की जिद की थी उसने पत्र में।

अटैची में कपड़े आदि रखे और मैं।

जब मैं राज बहादुर सिंह के गांव वह अपने विश्राममंदिर के आगे वृक्ष के नीचे आराम कुर्सी पर बैठ पढ़ रहा था। मेरे पांवों की आहट अपनी नजरें हटाकर, मेरी ओर देख आवेग में उठा और मुझे अपनी लिया। मैं उसके प्यार की तीव्रता करने लगा।

फिर उसने मुझे अपनी बांहों अलगकर पुकारा—"सुचित्रा—"

सुचित्रा के आने पर उसने तुम्हारी भाभी...सुचित्रा...'

सुचित्रा ने हंसकर 'नमस्ते' कहा जवाब मैंने अपनी ओर से दिया। मेरा यंत्रवत् कार्य था। उन्हें भौचक्का-सा रह गया। नारी सौंदर्य सुंदर रूप और वह भी मेरी आंखों प्रत्यक्ष। ऐसा रूप मैंने जीवन में नहीं देखा था। मुझे लगा, मानो मेरे आगे खड़ी हो। गेहुंआ रंग, बड़ी आंखें, सीधी नाक, कमल होंठ। एकदम शरीराकृति...नहीं-नहीं, इस सांकेतिक भी परे उसका रूप था। मुझे नमस्ते कब भीतर चली गयी, मुझे पता ही मैं तो उसका रूप देखकर अभिभूत था। मुझसे रहा न गया और कहा—

"राज, तुम्हारा अभिनंदन करना

"किस बात के लिए ?"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुम्हें इतनी सुंदर पत्नी मिली इसलिए।''

''केवल सुंदर ही नहीं मधु। सुचित्रा सुशील है।''

''फिर तुम्हारा दुगुना अभिनंदन।''

''पर एक बात बता। तू कब देनेवाला है हमें अभिनंदन करने का?''

''तूने तो सुना ही होगा, विवाह के बंधन को में बांधे जाते हैं। मैं क्या कह सकता हूं विषय में?''

फिर हम दोनों हंस पड़े।

सुचित्रा नाश्ते की प्लेटें स्वयं लेकर आयी। के लिए देर थी। हम दोनों नाश्ता बड़े से करने लगे। सुचित्रा फिर भीतर चली थी।

राज यकायक बोल उठा—''एक बात हूं मधु। शायद मुझे विचित्र-सी लगे। भी मेरा अभिन्न मित्र होने के नाते मैं तुझसे हूं।''

कह न।''

सुचित्रा-जैसी सुंदर स्त्री मैंने नहीं देखी

मैंने भी नहीं देखी है।''

इसलिए शायद मेरे मन में एक प्रश्न उठता है। मैं परेशान भी हो जाता हूं। यह प्रश्न न चाहकर भी मेरा पीछा करता है। एकांतिक मिलन के समय भी।''

कौन सा प्रश्न?''

सुचित्रा का सौंदर्य कायम कैसे रखा जा ?''

इस प्रश्न पर आश्चर्य हुआ। मैंने

कैसे कायम रखा जा सकेगा? अरे, इस संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। यह सनातन नियम है। इस नियम का कोई अपवाद नहीं है। चाहे तू हो या मैं। सुचित्रा भाभी भी नहीं।''

अनचाहा विचार खत्म करने के इरादे से राज ने कहा—

''नहीं मधु...यह रूप नष्ट नहीं होना चाहिए। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं उसे चिरस्थायी बनाकर रखूंगा। देवताओं को भी जो सौंदर्य प्राप्त नहीं है, वह सौंदर्य मैं नष्ट नहीं होने दूंगा।''

राज को यदि मैं जानता न होता, तो उसकी यह बात पागल की बकवास समझकर छोड़ दी होती। यह विचित्र चर्चा बंद हो जाए, इसलिए मैंने कहा—

''राज, तेरा विवाह हुए अभी पंद्रह दिन भी नहीं बीते हैं और तू ऐसी बातें कर रहा है। भाभी के सौंदर्य का अभी पूरा विकास हुआ है। यह पूर्ण विकास का पल बहुत लंबे समय तक कैसे कायम रहेगा? पूर्णिमा का चांद भी अपनी हर कला के बाद फीका होता जाता है।''

''इसी का तो दुख है मुझे मधु।''

''तू ही तो कहा करता था। याद है तुझे? रूप, सौंदर्य इस संसार में चिरस्थायी नहीं होता। नश्वर शरीर की अपेक्षा उसमें निवास करनेवाली अमर आत्मज्योति का महत्व अधिक होता है। वास्तव में जो महत्वपूर्ण है, वह है उस ज्योति की रक्षा।''

कुछ देर तक वह चुप रहा। फिर बोला—

''ज्योति तो महत्वपूर्ण है ही मधु। उसकी रक्षा तो मैं करूंगा ही। फिर भी ऐसा लगता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरकृपा से निर्मित यह साकार सजीव स्वर्गीय रूप नष्ट नहीं होना चाहिए। वह वैसा ही कायम रहना चाहिए।''

उसके स्वर की गंभीरता मैंने समझी, इसलिए चुप रहा मैं। मन में विचार आया, राज से कहना चाहिए....तुम्हारी संतान के रूप में वह स्वर्गीय सौंदर्य और गुण भी तुम्हें चिरस्थायी करेगा। पर बोला कुछ भी नहीं मैं।

मैं पांच-छः दिन राज के घर रहा।

हम तीनों खूब घूमे-फिरे। खूब गप्पें मारीं। सुचित्रा सुंदर तो थी ही, पर अध्ययन-मनन खूब था, उसका। शारीरिक सौंदर्य कायम कैसे रखा जा सकेगा, इस विषय पर भी हमने खूब बहस की। हमारी बातचीत में कायाकल्प का भी विषय आया, मिस्र देश की ममी पर भी चर्चा हुई। उनकी निर्माण-प्रक्रिया पर भी हमने बहस की। तभी मुझे मालूम हुआ कि राज ने इस विषय पर बहुत गंभीर अध्ययन किया है। अधिक अध्ययन से उसके दिमाग पर बुरा परिणाम तो नहीं हुआ है। मुझे शक हुआ। परंतु यह शक ही था। वास्तविकता नहीं। राज एकदम नार्मल था। राज और सुचित्रा के सुखी संसार को देख मन ही मन खुश होकर मैं पूना लौट आया।

राज के साथ मेरा पत्र-व्यवहार चलता रहा। उसके पत्र में सुचित्रा के प्रति अपूर्व प्रेम की अभिव्यक्ति होती रहती। सुचित्रा के बिना राज का कोई जीवन ही नहीं था। हर पत्र में सुचित्रा के विषय में कुछ न कुछ अवश्य ही लिखा करता। यह भी हो सकता है, सुचित्रा के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्ति देने के लिए वह मुझे पत्र लिखता रहता था। धीरे-धीरे उसका यह उत्साह कम होता गया। फिर एक उसकी कोई चिट्ठी-पत्री नहीं आयी। सकता है, वह मुझे पत्र लिखता है विभाग की कृपा से मुझे न मिलता बात यह है कि हमारा पत्र-व्यवहार के बराबर रह गया। मैं अपना लिखने में इतना व्यस्त रहा कि राज लिख सका।

परंतु जब उसका एक दिन फ मुझे लगा, मेरे मन के दो टुकड़े हो

सुचित्रा की मृत्यु हो चुकी रक्त-कैंसर हो गया था।

राज ने उसे बचाने की लाख जमीन-आसमान एक कर डाला। न निकला।

मैं माणिकगढ़ गया। राज के चेहरे को मैं देख न सका। कैसे जाए उसे, समझ में नहीं आता। मुझे ही अपराधी हूं। शायद उसके सुख मेरी ही बुरी नजर लग गयी थी। मुझे मुझे अपनी बाहों में भर लिया। उ निकलनेवाला दबा हुआ रुदन मैं रहा था, आंखों से आंसुओं के रू गहन-वेदना फूट पड़ी थी। फू बहनेवाली दुख की लहर भीतर ही वह चुप रहा।

''भाभीजी यकायक इस तरह सोचा नहीं था। बहुत बुरा हुआ। मिलते ही मैं दौड़ा चला आया

गंभीर स्वर में राज बोला—

''सुचित्रा गयी, पर मैंने उसे ज मधु।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सशंकित-सा हुआ।

"यानी..."

"सुचित्रा यहीं है यहीं, इसी विश्रामगृह में।"

मैं सोचने लगा, दुख की दारुण चोट से वह पागल तो नहीं हो गया है। क्या बोले जा रहा है ? मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"राज, यह क्या कह रहा है तू ?"

"सच है, वही कह रहा हूं। सुचित्रा यहीं है, उसका चेतनामय, ज्योतिर्मय रूप मेरे शरीर में कायम है। वह अमर है, चिरंतन है।"

अपने दार्शनिक दृष्टिकोण-जैसा ही बोले जा रहा था। मैंने कहा—

"सच यह है राज। मौत नश्वर शरीर को ही ले जाती है, अमर चेतना को नहीं ले जा सकती।"

"परंतु सुचित्रा का नश्वर शरीर भी मौत न ले जा सकी मधु।"

उसकी बात का अर्थ मेरी समझ में नहीं आ रहा था। क्या कह रहा है वह ? सुचित्रा का नश्वर शरीर मौत न ले जा सकी ? अतिथिगृह के उस पार वाटिका के आगे बरगद के पेड़ के नीचे सुचित्रा की समाधि मैंने अपनी आंखों से देखी थी। उस समाधि के नीचे ताम्रकलश में उसके पार्थिव देह के अवशेष रखे थे। सुचित्रा का निष्प्राण शरीर अस्पताल से माणिकगढ़ लाया गया था और चिता को सौंप दिया गया था। कई लोग गवाह थे। फिर राज यह पागलों-जैसे क्या बोल रहा है ?

मेरी आशंका दूर करने के लिए वह कहने लगा—

"जो सच है, वही कह रहा हूं। सुचित्रा सशरीर यहीं है। यहीं...मेरे इस विश्राममंदिर में। विश्वास नहीं होता ? चल आ, मेरे पीछे चला आ।"

मंत्रमुग्ध-सा मैं उसके पीछे चलने लगा।

जब देखा, तो विस्मय-विमुग्ध हो गया। विश्राममंदिर के शयनगृह में नक्काशीदार चंदन के पलंग पर सुचित्रा सोयी हुई थी। वही उसका गेहुंआ रंग, होठों पर खेलनेवाली चुस्त हंसी, आंखें बंद। पर बंद आंखों से भी पुतलियों का उभार स्पष्ट दिख पड़ता था।

मेरे मुंह से एक शब्द भी बाहर न निकल सका। सुचित्रा मानो कह रही हो, हर रोज की तरह मैं आज भी सोयी हुई हूं। हमारी आहट पाकर वह उठकर बैठ जाएगी।

"देखा ?" राज ने मुझसे पूछा।

"बहुत सुंदर पुतला बनाया है, राज। किसने बनाया ?"

"यह पुतला नहीं है।"

"फिर ?"

"प्रत्यक्ष सुचित्रा है यह। उसी का शरीर है।"

"सचमुच ?"

मैं एकदम सन्न रह गया। मेरी संवेदना शक्ति जड़ हो रही है, मुझे लगा। कैसे संभव है यह ? सुचित्रा का शरीर चिता की आग में भस्म हो गया था, फिर भी। मैंने पूछा।

राज बोला—"सुचित्रा की अंत्येष्टि एक दिखावा था। उसका नश्वर शरीर मैं कार से घर लाया। परंतु उसका दहन नहीं किया। चिता में जो जला, वह उसका पुतला था। सुचित्रा के बीमार होने पर वह बचेगी नहीं, मौत के मुंह में समा जाएगी, मैं जानता था। इसलिए उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर सुरक्षित कैसे रखा जाए, इसी उधेड़बुन में था। मिश्र देश की ममी पर अनुसंधान करनेवाले मेरे एक मित्र ने मुझे एक रसायन बनाकर दिया। वह रसायन रेझीन से बना था। वह रसायन मैंने सुचित्रा के पूरे शरीर पर लगाया। इस रसायन के लेप से मानव का मृत शरीर सुरक्षित रहता है, मेरे मित्र का विश्वास था। फिर सुचित्रा को मैंने इस पलंग पर सुलाया। उसकी प्रिय वेशभूषा पहनायी, गहने पहनाये। शायद तुम समझ गये हो। वह पलंग वातानुकूलित कांच के बक्से में रखा और नीचे से यह व्यवस्था की कि वह बर्फ-जैसा ठंडा रहे।"

आश्चर्य चकित हो मैं सब सुन रहा था। फिर भी पूछा—

"परंतु भाभी के शरीर का रंग ? वह अपने मौलिक रूप में कैसे रहा ?"

"वह मेरी रंग-कला का चमत्कार है।"

फिर वह अजीब-सी हंसी हंसा। मौत पर उसने विजय पा ली है, अपनी हंसी से यह तो नहीं कहना चाहता था वह ? राज की आवाज की कातरता मुझे बेचैन कर गयी। सब कार्य एकदम अद्‌भुत था, परंतु सब सच था।

रात भर मैं परेशान रहा। क्या मानव का मृत शरीर इस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है ? क्या यह बात कानूनन सही है ? शरीर की समाप्ति न होने के कारण शरीर के चारों ओर चक्कर काटनेवाली आत्मा, इधर-उधर भटकती तो नहीं रहती होगी ? पर ये प्रश्न मेरे हैं। राज के लिए नहीं। राज के व्यवहार का मैंने बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। सुचित्रा भाभी घर में ही हैं, ऐसा व्यवहार वह कर रहा था। घंटों वह सुचित्रा की ओर देखता रहता, उससे बात करता रहता था। सुचित्रा की बीमारी में उसके पलंग के पास कुर्सी पर बैठकर वह समाचार-पत्र या कोई पुस्तक पढ़कर सुनाता था, ठीक वैसे ही अब भी पढ़कर सुनाता था जैसे वह पलंग पर पड़े-पड़े सब कुछ सुन रही हो। बाहरी संसार को इन सब बातों की कल्पना तक नहीं थी। माणिकगढ़ में रहनेवाले अपने पिता और नौकरों-चाकरों को तक को इस रहस्य का पता न चल सका। माणिकपुर में पिता का पुराना महल था। जमींदारी का सभी कामकाज वहीं चलता था। अपने विश्राममंदिर में राज अकेला ही रहता था। प्रकृति की गोद में संसार की वास्तविकताओं से दूर, चहलपहल से परे राज अकेले ही रहता था।

मेरी बस सड़क पर तेजी से चली जा रही थी। विगत युग की ये सारी घटनाएं मेरे मानसपटल पर साकार हो रही थीं। जिस सुचित्रा को उसने प्राणपण से प्रेम किया था, उसके नश्वर शरीर को कायम रखने के लिए राज ने यह प्रयोग किया था, भारत-जैसे देश के लिए यह सचमुच अद्‌भुत प्रयोग था। वही सुचित्रा भीषण अग्निकांड में जलकर राख हो चुकी थी। राज के हृदय पर यह भयंकर आघात था। राज को तसल्ली कैसे दी जाए, यह प्रश्न मेरे मन को बार-बार डरा रहा था। मेरी बुद्धि भी जड़ हो रही थी।

मैं माणिकगढ़ पहुंचा।

संसार की आंखों को राज बहादुर सिंह का विश्राममंदिर जला हुआ दिखता था। राज जल गया था। आराम-बाग भी सुरक्षित था। अन्य लोगों और राज के पिता के लिए यह बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त संतोष भी था। विश्रामगृह में सुचित्रा का पुतला रखा हुआ है, यह अफवाह लोगों के कानों तक पहुंची थी और अब वह पुतला भी जल चुका है, इसकी चिंता उन्हें हुई। परंतु राज के जीवन की हानि की कल्पना किसी को भी न थी। थी तो केवल मुझे और इसलिए मेरी स्थिति भी एक विमूढ़-सी हो गयी थी। राज के मन और जीवन की अपार क्षति उसके चेहरे पर मैंने नहीं देखी। अग्निकांड की दुर्घटना के बाद खोजखबर लेने के लिए आनेवालों के आगे राज ने अपनी कमजोरी का एक चिह्न भी प्रगट नहीं होने दिया उसके लिए, यह सब उचित था।

भीड़भाड़ के चले जाने पर केवल हम दोनों ही अकेले रह गये थे। सहानुभूति के नीरस शब्दों से राज के हृदय का दुख कम नहीं होनेवाला था, यह जानते हुए भी मैंने कहा—

"जो भी हुआ, भयंकर है वह ! ऐसा नहीं होना चाहिए था !"

"नहीं मधु, जो भी हुआ, वह अच्छा ही हुआ।"

फिर मेरी समझ में कुछ नहीं आया। भौंचक-सा रह गया मैं। क्या यह राज कह रहा है ? मैंने पूछा—

"क्या कह रहा है राज यह तू ? अच्छा हुआ ? सुचित्रा भाभी के शरीर के साथ तुम्हारा पूरा विश्रामगृह मंदिर जल गया। यह अच्छा हुआ ?"

"हां मधु,सुनकर आश्चर्य होगा तुझे। शायद मेरी बात तूझे अच्छी भी न लगे। मुझे सुचित्रा की शरीराकृति से ऊब होने लगी थी। सुचित्रा मुझसे सशरीर अलग न हो जाए, इसलिए मैंने उसका शरीर विश्राममंदिर में सुरक्षित रखा था। परंतु अत्यधिक कांच होने से उस शरीराकृति का आकर्षण मेरे लिए खत्म होता आ रहा था। लगातार देखते रहने से वह शारीरिक सौंदर्य भी मुझमें ऊब पैदा कर रहा था। उस शरीराकृति के अस्तित्व से मेरे दैनिक कार्यों में भी बाधाएं पड़ रही थीं। शरीर सुंदर होने पर उसका सौंदर्य भीतर की आत्मज्योति से नित्य नया दिखता रहता है। वही आत्मज्योति बुझ जाने के कारण नवीनता खत्म हो जाती है। प्रारंभ में यह सब मेरी समझ में नहीं आया, क्योंकि उस शरीराकृति का अद्‌भुत सौंदर्य मुझे अत्यधिक आसक्त किये हुए था। परंतु फिर मुझे वह निष्प्राण सौंदर्य कष्टकारक लगने लगा था। उसके अस्तित्व से मैं मुक्ति पाना चाहता था। इसलिए....."

मुझे एक धक्का-सा लगा।

"हां मधु, जो सच है, वही कह रहा हूं। जो सत्य भावुकता के आवेग में मेरी समझ में नहीं आया था, वह सत्य अब मालूम हो चुका है और इसीलिए..."

वह रुक गया। आगे क्या कहता है, मेरी जिज्ञासा बढ़ गयी।

"और इसीलिए, यह न चाहे जा सकनेवाला अस्तित्व सदैव के लिए नष्ट कर देना उचित समझा और मैंने स्वयं इस विश्राममंदिर को आग लगा दी। मैंने अपने इन हाथों से....."

मैं अवाक् राज की ओर देखता रहा....।

—४७३,
प्रोफेसर कॉलोनी,
हनुमान नगर, नागपुर-९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैद

चार-दीवारी में नहीं,
मन की ही प्राचीरों में कैद हूं
कस्तूरी-मृग-सी,
अपने ही भ्रम-पाश में अवरुद्ध,
भय-कुंठित
जानकर भी निःसृति का द्वार,
भेद नहीं पाती हूं
गुमनामी के चक्रव्यूह को
अकेलेपन की—
इस कालकोठरी के अंधेरों की,
आदत यों हो गयी है,
कि डरती हूं—
खुली हवाओं में,
सांझ भी आएगी या नहीं ?

—उषा महाज
ई-५ सी, डी. डी. ए. फ्लैट्स मुनीरका, न
दिल्ली-११००६७

अपूर्ण

जन्म से लेकर धरती पर
बीत जाएगा कुछ वक्त
कुछ पल सन्नाटे भरे
कुछ पल सिर्फ कुंठित
शेष एक यात्रा है
मरुभूमि की
नियति जैसे
मेरे लिए छोड़ गयी है
छल-छद्म
और मैं
दो समानांतर स्थितियों में
अभिशप्त हूं जीने के लिए
यह दिन और रात नहीं
दो पटरियां हैं
जो साथ-साथ
चलती हैं, अनुशासित
और मैं हूं
अराजकतापूर्ण
जो अनुशासित है
वह नियत है
और जो कुछ है अराजक
वह मैं हूं
अधूरा—अपूर्ण—

—यश कालड़ा
४७९, झील, दिल्ली-११००५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न जाने क्यों ?

समय की जलती रेत में
पांवों के फफोले टीसते रहे
जंगल व कुंए में हम बीतते रहे
बिन बुलाये कई आये-गये
पर जिसे पाती लिख-लिख बुलाया
वह जाने क्यों नहीं आया ?
हंसती बहार आयी-गयी
रूखा पतझड़ भी, बीत गया
सावन भी उमड़-घुमड़ रीत गया
पात-पात पवना ने पुलकाया
पर जिसे सजल आंखों से बुलाया
वह जाने क्यों नहीं आया ?
गीली लकड़ियों-सी सुलगती
वियोग की दुपहरी भी बीत गयी
धुंआ पीकर चाह बन गीत गयी
वर्तमान के तारों को झंकृत करने
जिसे नेह-भीगे हृदय से बुलाया
वह जाने क्यों नहीं आया ?
मृग-नाभि में कस्तूरी का राज
जिसकी यादों ने महकाया
जिसके प्यार से जीवन सार्थक पाया
उसी को उमर की उतरती सांझ में
अस्तगामी रवि-सौंदर्य देखने बुलाया
वह जाने क्यों नहीं आया ?

जाने मौत कब अचानक आकर
प्राण-पाखी ले उड़ जाए साथ
खाली पिंजरे-सी देह रह जाए अनाथ !!
भावभीनी, मस्त लहरों के हाथ
जिसे नौका-विहार को बुलाया
वह जाने क्यों नहीं आया ?

—कांता डोगरा

सेक्टर २०/डी कोठी नं., १ कालेज कैम्पस, गवर्नमेंट कालेज ऑफ एज्यूकेशन, चंडीगढ़

अक्षम्य अपराध

यह तोड़-फोड़
यह विध्वंस
अपना ही कर रहे हो,
अक्षम्य अपराध
जघन्य अपराध
तुम निर्लज्ज हो,
स्वतंत्रता शायद रास नहीं आयी तुम्हें,
क्योंकि परतंत्रता देखी नहीं,झेली नहीं
पर तुम बच नहीं सकते
तुम्हें जवाब देना होगा
उन शहीदों को
जिन्होंने तुम्हें नरक से निकाला
तुम्हारी बेड़ियां काटीं
एक दिन
उनका हाथ होगा
और तुम्हारा गरेबां

—अरुणा प

अधिकारी, आई. बी. पी. क. लि. हिंदुस्तान टा
हाऊस, नयी दिल्ली-११०

उचटती सी जिंदगी

उचटती-सी जिंदगी, थपेड़ों के बीच
लावारिस हूं मैं, एक लाश से बदतर
जिंदगी जिये जा रही हूं

जीवन है, फिर भी तरुणाई में,
दर्द से रिस रहा है
तूफान में घिरी नाव की तरह
चट्टानों के बीच.....
जुल्म का विष, पिये जा रही हूं

भुवनेश्वरी दे

११५०/२ डी. प्रेग नगर, जबलपुर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ई पैरोंवाला सहस्त्रपाद

सर लोग जीव-जंतुओं और पक्षियों को ते हैं, और उन्हें प्यार करते हैं, लेकिन एक ा-सा प्राणी ऐसा भी है, जिसे देखते ही मन ृणा उत्पन्न होती है। इस प्राणी का नाम है, स्त्रपाद। इस प्राणी की विश्व में लगभग ०० से अधिक इसकी प्रजातियां पायी जाती इसके साथियों में मकड़ी, कान खजूरा दे भी हैं। यह प्राणी अधिकतर भूमि पर ही ास करता है। इनकी जातियों में से कुछ तियां समुद्री-क्षेत्र में भी निवास करती हैं। ये के प्रकाश से स्वयं को दूर ही रखते हैं। रा इन्हें बेहद प्रिय है। ये प्राणी पत्तियों, ईंटों पत्थरों के नीचे के स्थान में, सड़ी हुई ड़ियों के छेदों में और गिरी हुई टहनियों के में निवास करते हैं। इनका बाहर का हिस्सा कई खंडों में बंटा रहता है। ये खंड आपस में एक-दूसरे के साथ मजबूती से जुड़े रहते हैं। इनके खंडों की संख्या ८ से लेकर २४० तक होती है। इन्हीं खंडों की सहायता से ये मांदों और तंग-रास्तों में प्रयोग करते हैं। प्रत्येक खंड के भीतर एक जोड़ पैर होता है। केवल प्रथम और अंतिम खंड में इसका अभाव होता है। प्रथम-खंड में शीर्ष के ऊपर उठे हुए, दो रोम होते हैं, जिन्हें एंटिना कहा जाता है।

इन जंतुओं को वैसे दिखायी नहीं देता है, लेकिन कुछ सहस्त्रपादों में आंखें या आंखों के चिह्न पाये ज... हैं। साधारणतः सहस्त्रपाद शाकाहारी होते हैं, और इन्हें सड़े-गले पदार्थ ही खाना अधिक प्रिय है, लेकिन कुछ सहस्त्रपाद मांसाहारी भी होते हैं। ये अपना घर उथली भूमि पर बनाते हैं, जिस पर मादा ४० से ८० की संख्या में अंडे देती है। अंडों से बच्चे बनने में कुछ सप्ताह का समय लग जाता है।

अनेक रोगों की दवा है जामुन

जामुन का वृक्ष पथिकों को छाया तो प्रदान करता ही है, साथ ही कई रोगों का भी निदान करता है। जहां एक ओर जामुन के वृक्ष की लकड़ी घरों के छत बनाने के काम में आती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

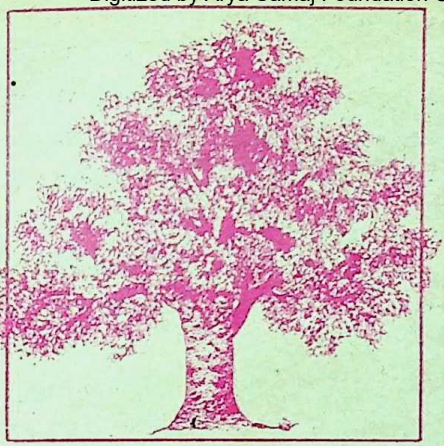

वहीं इस वृक्ष की लकड़ी को ईंधन के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। इस वृक्ष की अधिकतम ऊंचाई ३० मीटर तक होती है यह सामान्यतः भारत, बर्मा, श्रीलंका मलाया और आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। जामुन के वृक्ष अधिकतर नम-भूमि में ही पैदा होते है। इसके अलावा जलाशयों, नदी, नालों तालाबों के आस-पास यह तेजी से बढ़ता है। इनकी ऊंचाई १,८०० मीटर तक होती है। जामुन के वृक्ष को इसके फल के आधार पर दो प्रकारों में बांटा जाता है। पहले प्रकार के जामुनों में फल तो छोटे होते हैं, लेकिन उसके बीज बड़े होते हैं। दूसरे प्रकार के जामुनों में फल बड़े होते हैं और बीज छोटे होते हैं। बड़े बीजों वाला जामुन कम रसीला और खट्टा होता है। और छोटे बीजों वाला फल अधिक रसीला होता है। इस वृक्ष की पत्तियां ८ से २० सेंटीमीटर तक लंबी होती हैं। ये कुछ मोटी तथा गहरे हरे चमकीले रंग की होती हैं। इसकी चौड़ाई १.५ सेंटीमीटर से लेकर ४ सेंटीमीटर तक होती है। इसकी पत्तियां शाखाओं से निकली लंबी और तिरछी सलाइयां-जैसी होती हैं इसके फूलों का रं हलका सफेद होता है। इसके फूलों मधुमक्खियां शहद भी बनाती हैं। मार्च-अप्रै के महीने में ही इसमें फल आने प्रारंभ हो जा हैं और वर्षा-ऋतु में फलों का आना प्रारंभ जाता है। जब फल निकलने प्रारंभ होते हैं, त उनका रंग हलका हरा होता है जबकि पकने प इनका रंग हलका जामनी हो जाता है। इस फल इसके गुच्छों में लगते हैं, और प्रत्ये गुच्छे में अधिकतम दस की संख्या तक फ लगते हैं। जामुन के वृक्ष से गंभीर बीमारि दूर होती हैं। इसके वृक्ष की छाल का रंग हल्क सफेदी लिये हुए होता है। इसके वृक्ष की छा का उपयोग गले और श्वास से संबंधित क प्रकार की बीमारियों को दूर करने में सहाय होता है।

यदि अपच हो जाए, तो इस वृक्ष की छा को घिसकर उसका रस पीने से आराम मिल है और खून को शुद्ध बनाये रखने में भी इस उपयोग किया जाता है। डायरिया हो जाने प रोगी को भेड़ या बकरी के दूध के साथ जामु की छाल देने से रोगी को आराम मिलता है इसके फल से शराब का निर्माण भी होता है और इसके फल के बीज मधुमेह जैसी घात बीमारियों को दूर-करने में भी सहायक होते हैं इसकी पत्तियों से पशुओं को आहार मिलता और साथ ही इसके पत्तों से हरी खाद भी प्रा होती है।

आजकल वृक्षों की कटाई और वर्षा क कमी तथा जल-स्रोतों के सूख जाने से इस वृ की समाप्ति की संभावनाएं निरंतर बढ़ रही हैं

(सी ई ई— एन एफ एस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब के झगड़ों का संगीत पर प्रभाव

● पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी

ाहौर के गांधर्व विद्यालय के अध्यक्ष और संस्थापक पंडित विष्णु दिगम्बर कर आजकल राजपूताने का दौरा अपने विद्यार्थियों के साथ कर रहे हैं। अजमेर में लोचक' का एक विशेष प्रतिनिधि उनसे । उसने देखा कि पलुस्कर महाशय गौर गठीले शरीर के युवा महाराष्ट्र हैं। देह की ट और भाषण की मधुरता से पहले उनके ली होने का संदेह होता है। विष्णुराव व से बड़े शांत, मिलनसार और परिश्रमी न दिखायी देते हैं।

मस्कार प्रणाम के उत्तर प्रतिनिधि ने — "महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक, मईसोर न में संगीत की मर्यादा है, प्रतिष्ठा है। वहां मीरासियों की जायदाद समझकर इसकी नहीं होती। फिर क्यों आपने पंजाब में इस के प्रचार का उद्योग किया और इसमें को अधिक कठिनाई नहीं पड़ी ?

लुस्कर : 'अवश्य पड़ी, रंतु हमारे गुरुदेव -महात्मा को यही काम करने की आज्ञा वेदादि शास्त्र दक्षिण में पंजाब ही से गये इसलिए उनकी यही आज्ञा थी— जिनमें न की थियोरी और उनका योगाभ्यास से संबंध समझाया कि जड़ को सुधारो, फिर सब सुधर जाएंगे।

प्रतिनिधि : क्षमा कीजिए, पंडितजी, आप तो बहुत साफ हिंदी बोलते हैं ? क्या संगीत आपके यहां वंश-परंपरा से चला आया है ?

पं. पलुस्कर : हां, मैं पहले भी युक्त प्रांत में बहुत रहा हूं, और अब व्याख्यान आदि के देने से हिंदी ही बोलनी पड़ती है। महाराष्ट्र में कोई ही ब्राह्मण ऐसा होगा, जिसको वंश-परंपरा से भजन-कीर्तन न आता हो या कुछ-न-कुछ संगीत न आता हो। हमारे पितामह गदर के दिनों में उत्तर-भारत में ही थे और 'आमचे वड़ील' हरिकीर्तन करते थे। मैंने दस वर्ष तक प्रैक्टिस किया, किंतु वास्तव ज्ञान महात्मा गुरुदेव की कृपा से ही हुआ। उन्हीं की कृपा से मैंने कुछ...

प्रतिनिधि : 'हां, आपने क्या इस विद्या में नये आविष्कार भी किये हैं ? और इसके नोटेशन का जो आपका नया क्रम है, वह आप ही का है ?

पं. पलुस्कर : "हां, मेरा अपना ही है। मैंने प्राचीन ऋषियों के ग्रंथों पर ही चलकर सब कुछ जाना है। द्रुतगत अणुद्रुत पहले भी था, अणु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

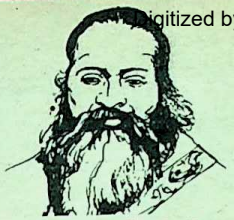

संगीताचार्य श्री विष्णु-दिगम्बर पलुस्कर का जन्म १२५ वर्ष पूर्व हुआ था। वे सन १९०५ में गांधर्व-विद्यालय, लाहौर के अध्यक्ष थे। इस विद्यालय के संस्थापक भी वे ही थे। १९०५ में वे अपनी शिष्य मंडली सहित देशाटन करते हुए अजमेर पधारे थे। उस समय 'समालोचक' के संपादक पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने उनका एक इंटरव्यू लिया था। यह इंटरव्यू हिंदी-साहित्य की अब लोकप्रिय हो गयी 'इंटरव्यू विधा' का श्रीगणेश माना जाता है। इस तरह हिंदी-साहित्य में 'इंटरव्यू-विधा' का सूत्रपात करने का श्रेय गुलेरीजी को जाता है। उस समय गुलेरी २२ वर्ष के नवयुवक थे और पलुस्करजी की आयु तैंतीस वर्ष थी।

'संगीत की धुन' शीर्षक यह इंटरव्यू पहली बार समालोचक के सितम्बर, १९०५ के अंक में छपा था, जो आज भी प्रासंगिक है। यहां यह ऐतिहासिक इंटरव्यू ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जाता है।

अणुद्रुत, और अणु अणु अणुद्रुत मेरी समझ है। ऐसे ही इन चिह्नों को देखिए। इनसे सरगम का नया ही रूप हो गया है और पढ़ने-पढ़ाने में बड़ी सुगमता हो गयी है। देखिए, इस पुस्तक (संगीत बाल-बोधक) में तिस्र आदि नाम भी हमारे ही निकाले हैं। यह बात आप कहीं न पाइएगा।

प्रतिनिधि : क्या महाराजा शौरीन्द्रमोहन टैगोर का क्रम आपने देखा है ? उसके विषय में आपका क्या मत है ?

पं. पलुस्कर : वह अंगरेजी नोटेशन का अनुकरण और केवल बीस-पच्चीस रागों पर ही चलता है। उसमें यह बात नहीं कि साठ-साठ पेज तक एक ही राग का विस्तार चले। हमें इसके लिए नये टाइप भी बनवाना पड़े हैं।

प्रतिनिधि : तो अब पंजाब में आपका काम कैसे चल रहा है ?

पं. पलुस्कर : चार वर्ष में जो कुछ हुआ है उससे भविष्यत की अच्छी आशा होती है। पहले लोग हमें कहा करते थे कि लड़कों को बिगाड़ते हो। धीरे-धीरे सभी सभ्य सज्जन आने और मानने लगे हैं। गुप्तदान भी बहुत कुछ आ जाता है। इतना व्यय किसी-न-किसी तरह चलता ही है। एक मकान के लिए जमीन भी मिल गयी है। अपना प्रेस भी खोल लिया है जिसमें 'संगीतामृत-प्रवाह' हिंदी मासिक पत्र छपता है। हमारी वर्कशाप में हारमोनियम, तम्बूरी प्रभृति बनाये जाते हैं और उनकी बिक्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अब सब खर्च निकालकर विद्यालय को १५०/- २००/- प्रतिवर्ष बच जाता है।

प्रतिनिधि : क्षमा कीजिए, हारमोनियम बनाने में आप विलायत से क्या-क्या मंगाते हैं और यहां कितना बनाते हैं ?

पं. पलुस्कर : प्राण विलायती होता है, शरीर यहां का बना होता है। प्राण यहां बनावें तो एक पर्दे में २/-, २/- लगते हैं, पूरा पटता नहीं। हां, इन तीन महीनों की छुट्टियों में हम या प्रोफेसर और विद्यार्थी घूमने को निकलते हैं। कोई यूं देता है तो कोई यूं, नहीं तो गा-बजाकर लेते हैं। हम लोग इसमें से कुछ भी रुपया नहीं लेते, चाहे जहां से पावें। हमने नार्मल वा उपदेशक क्लास खोला है और संगीत-विशारद की उपाधि भी इस वर्ष से देना चाहते हैं। बस, पंजाब में लोग हमें जान गये हैं और काम भी चलता है।

प्रतिनिधि : मैंने सुना था— आप लोग आनरेरी काम करते हैं ?

पं. पलुस्कर : नहीं, हम लोग रईस या जागीरदार तो हैं ही नहीं। अन्न-वस्त्र तो वहीं से लेना पड़ता है। हमारा आनरेरीपना समझो तो यही है कि हम कहीं नौकरी नहीं करेंगे। रजवाड़ा में हमें ३००/- ४००/- मासिक मिल सकता है। कई प्रोफेसर भी १५०/-, २००/- पा सकते हैं।

प्रतिनिधि : तो आपका मिशन क्या है ? और अभी तक पंजाब में आपको क्या करना है ? क्या आपका संगीत की यूनिवर्सिटी खोलने का भी विचार है ?

पं. पलुस्कर : मिशन दो प्रकार के होते हैं। मिसरी का मिशन और कड़वा मिशन। हमारा मिसरी का मिशन है। जो एक दफा जान जाएगा वह अवश्य हाथ बढ़ाएगा। जब वेश्या मलेच्छ आदि के साथ मिसरी कुपथ्य थी तभी लोगों ने उसे न छोड़ा, तो यह तो सुपथ्य है, लोग चाहे कुछ कहें पर उनके कान नहीं मानते, बड़े हैं खैंच ही लाते हैं। पंजाब में गांव-गांव में हमारे शिष्य हैं और वहां-वहां उन्होंने हमारे क्रम से, हमारी पुस्तक से पढ़ना शुरू किया है। हमारे साथी ही जाकर परीक्षा लेते हैं।

जालंधर, होशियारपुर में इस बात में सफलता हुई है। हमें बड़ी भारी आवश्यकता एक बड़ा मकान बनाने की है। फिर परमेश्वर की कृपा और लोगों की सहायता से स्थान-स्थान में संगीत पाठशाला बनकर हमारे विद्यालय से संबद्ध हो जाएं, इसमें क्या कठिनता है ? हमारा उद्देश्य यह है कि ब्राह्मण जाति इस विद्या से घृणा न करे जिससे उसमें इस सुकुमार और मनोहर विद्या का प्रचार हो और भारत वर्ष का पुराना गौरव लौट आवे। संभव है कि अभ्यास से मल्लार से मेघ आना और दीपक का जलना प्रभृति—

प्रतिनिधि : क्या इनकी इस शक्ति में आपका विश्वास है ?

पं. पलुस्कर : भगवद् भजन में सब शक्ति है। उन शक्तियों के जानने से देश का दुःख दूर हो जाएगा।

प्रतिनिधि : पंजाबियों की संगीत की योग्यता के विषय में आपका क्या मत है ? क्या उनका मस्तिष्क और जातियों की अपेक्षा अधिक अनुकूल है। सुना है— बंगालियों ने अंतःपुर और बाहर संगीत का अच्छा प्रचार किया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं. पलुस्कर : पंजाबियों में कई शताब्दियों से संगीत के संस्कार दूर हो गये हैं, तो भी परिश्रम से वे और जातियों से अच्छे हो जा सकते हैं। बंगला देश में मैं स्वयं कभी गया नहीं, परंतु यह कह सकता हूं कि हमें बंगालियों ने कभी जेब से सहायता नहीं दी है।

प्रतिनिधि : अच्छा, जाने दीजिए, परंतु 'भूखे पेट भजन नहीं होई' देश कंगाल है। इसमें शिल्प या राजनैतिक आंदोलन को ही समय नहीं मिलता और न रुपया। ऐसे समय में विश्राम के कार्य संगीत को इतना ध्यान देना लोगों को रुचता है ?

पं. पलुस्कर : जो भक्त हैं, भावुक हैं, सहृदय हैं, वे आटे में नमक और रुपये में पैसा हमें ही देते हैं। जो नहीं हैं, वे या तो रुपया गाड़ छोड़ते हैं या दुर्व्यसनों में डालकर भी देश की दीनता की दुहाई दिया करते हैं। संगीत से प्रसन्न होकर भगवान सब कुछ दे देंगे। कई दुर्व्यसनी बालक हमारे यहां रहकर उत्तम चरित्र के बन गये हैं। रही राजनीति, सो कभी आजमा देखिए। आपके व्याख्यान का अधिक प्रभाव होता है या हमारे तानारीरी के एक जातीय गीत का !. 'सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः।' यदि हमारे विद्यालय की पुस्तकों का एक-एक सैट भी प्रत्येक भद्र पुरुष ले ले तो कल हम स्वयंभर हो जाएं।

प्रतिनिधि : राजपूताना के दौरे में आप दरबारों से मिलकर यह प्रबंध क्यों नहीं करते कि उनके गुणीजनखाने या स्तुति पाठकों में आपके गजलों को तो देश बचे। मंदिरों में भी, 'दिलदार यार प्यारे' की जगह आपके यहां के जातीय गीत और भजन गवाये जाएं न ?

पं. पलुस्कर : हां, यह बहुत अच्छा होगा। कृष्णगढ़ महाराज ने दो विद्यार्थी मेरे यहां भेजने का वचन दिया है। मीराज और मघोल राज्य में भी विद्यार्थी भेजे हैं। परंतु राजपूताना के दरबार इतने दुर्भेद्य हैं कि उन तक मेरी गति ही नहीं होती। अब मैं उदयपुर जाऊंगा और ता. १६ अक्तूबर को विद्यालय खुलेगा। तब तक जो हो जाए, सो हो जाए।

प्रतिनिधि : अब के काशी में राष्ट्रीय महासभा होने वाली है। क्या आप वहां जातीय गीतों में पुरुष और रमणियों से गान का प्रबंध नहीं कराएंगे ?

पं. पलुस्कर : कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से हम समय और स्थान मांगेंगे और यदि अनुकूल हुआ तो एक या अधिक प्रोफेसर और विद्यार्थी वहां भेजेंगे। रमणियों का तो——।

प्रतिनिधि : क्यों ? क्या देश की दुर्दशा में पुरुष लगे रहें और गृहलक्ष्मियां दाक्षिणात्य और बंगलादेश की रमणियों की तरह इस सरस्वती की वीणा को न उठावें ?

पं. पलुस्कर : नहीं, जालंधर कन्या महाविद्यालय में हमारे ही क्रम से शिक्षा दी जाती है। मैं भी यही चाहता हूं कि गृहलक्ष्मियां इस सुकुमार शिल्प को ले लें। बंगलादेश में तो मैं भी कभी गया नहीं, पर इधर अभी यह बात दूर है।

प्रतिनिधि : थियोसोफी से आपका क्या संबंध है ? उसके विषय में आपका क्या मत है ?

पं. पलुस्कर : मुझे अपने काम से फुरसत नहीं मिलती। मैं यही चाहता हूं कि इसी में ४८ वां ७२ घंटे का अहोरात्र हो जाए। सब बातों में जो अपने अनुकूल अंश हो वह मनुष्य से ले लेना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर आपकी उंगली पर ही ब्रश बना होता...

तो आप दाँतों के पीछे भी सफ़ाई कर पाते. आम टूथब्रश तो उंगली की तरह पीछे मुड़कर दाँतों के पीछे नहीं पहुँच पाते. लेकिन अब पेश है प्रॉमिस १५ जो अनूठे ढंग से १५° पर आगे की ओर मुड़ा है. इससे दाँतों के पीछे की भी सफ़ाई एकदम आसान हो गयी है. तभी तो दाँतों के डॉक्टर इसे पूरी तरह से वैज्ञानिक मानते हैं.

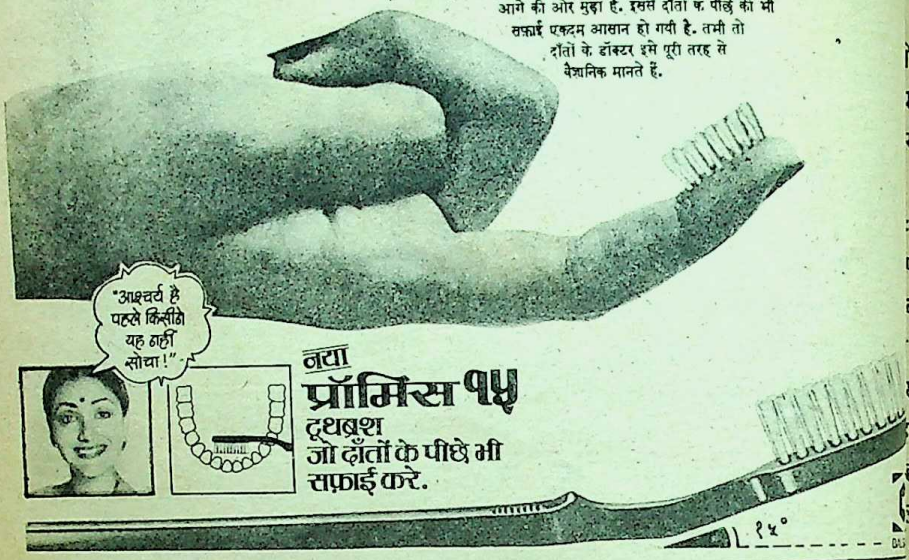

CHAITRA-B-BLS-678 HIN

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये: मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ वर्ष तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है।

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोटः-कुछ लोग जो न तो वैध, हकीम, डाक्टर हैं, अमृतसर डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगियों सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखें।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी से कुछ वास्ता नहीं। न उनके
ों से हमारा काम है।
र : पंजाब में हिंदू-मुसलमान और
खों के झगड़े का क्या आपके
पर कुछ प्रभाव पड़ा है?
: : १९०५ की यह बात आज
णी है— संपादक)
कर : नहीं, प्रायः ७५ उच्चकुलों के
हमारे यहां से पढ़ गये हैं। परंतु वे
सीखते। कुछ क्रम ही सीखकर चल
सका कारण यह है कि हम गजलें तो
हीं और 'गाइए गणपति जगवंदन' घर
नने में उन्हें शर्म आती है। परंतु मैंने
कान हमारे यहां बिना आये नहीं
सख भी हमारे यहां पढ़ते हैं परंतु
र हिंदुओं का झगड़ा मिटनेवाला नहीं
उनमें राजनैतिक अभिसंधि है। हां,
बंगाल में जो स्वदेशी आंदोलन चला
इससे कुछ वर्षों में यह मिट जाय।
: स्वदेशी आंदोलन! आपका काम
ो है।
र : हां, हारमोनियम को लोग सबसे
उपयोगी समझते हैं। परंतु तुम्बरु
अजी, हम तो शहनाई प्रभृति को
कर खासा बैंड, फौजी बैंड बना दें,
या?
: क्या आपको आशा है, पंजाब में
हिंदी चल जाएगी?

पं. पलुस्कर : सरकार कचहरियों में न करे तो दूसरी बात है। नहीं तो साधारण व्यवहार में एक दिन उर्दू को हिंदी निकाल देगी। हमारी हिंदी पुस्तकों का द्वितीय संस्करण होता आया परंतु उर्दू बिकती नहीं।

प्रतिनिधि : अच्छा, कोई नया जातीय गीत तो लिखाइए— 'सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा' तो मैंने सुना है।

पं. पलुस्कर : वह नहीं, यह नया लीजिए। इसका नोटेशन 'संगीतामृत-प्रवाह' की नवम् संख्या में छपा है—

राग खम्माज

भारत हमारा देश है हित उसका निश्चय चाहेंगे।
और उसके हित के वास्ते, हम कुछ-न-कुछ कर जाएंगे॥
भारत की दुःस्वप्न अवनति पर, क्यों न अश्रु बहाएंगे।
और उसके मिटाने के लिए हम कुछ-न-कुछ कर जाएंगे॥
भारत हमारी मातृभूमि उसका ऋण हम पर बहुत।
उसके शोधन के लिए हम कुछ-न-कुछ कर जाएंगे॥
धन-विद्या और धर्म से उन्नति भारत की हो।
इस उन्नति के मार्ग में हम कुछ-न-कुछ कर जाएंगे॥

प्रस्तुति : डॉ. मनोहर लाल

पत्थर खानेवाला पक्षी

का सर्वाधिक विशालकाय पक्षी शुतुरमुर्ग खाने के मामले में बड़ा लालची होता
बीज, बेरी आदि इसके प्रिय भोजन हैं लेकिन पत्थर के टुकड़े भी मिल जाएं
ुर्ग उन्हें भी पाचक गोलियों की तरह अपने पेट के हवाले कर लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सशक्त तुर्की हास्य-व्यंग्य

गडरिया और भेड़ें

● अज़ीज़ नेसिन

एक बार की बात है, पूर्व और पश्चिम के संगम पर, उत्तर से जरा निकट, दक्षिण से जरा दूर, एक जगह पर एक गडरिया रहता था। उसके पास भेड़ों का एक रेवड़ और दो कुत्ते थे। यह गडरिया सामान्य गडरियों से बिलकुल भिन्न था। बड़ा ही निर्मम, अति निर्दयी। न उसे किसी के दुःख-दर्द का अहसास था, न किसी चीखपुकार की परवाह! अन्य गडरियों के हाथों में बांसुरी होती, जिससे वह मीठी-मीठी सुरें निकालकर सारा दिन अपने रेवड़ की देख-भाल करते। इस गडरिये के हाथ में एक मोटा-सा डंडा होता। इस डंडे से वह अपनी भेड़ों की दिन-रात मरम्मत किया करता। भेड़ों का दूध, ऊन, मांस, खाल, अंतड़ियां, मतलब यह कि उनके शरीर की प्रत्येक वस्तु से लाभ प्राप्त करता, लेकिन कभी उसके दिल में अपनी भेड़ों से हमदर्दी का खयाल न आता।

गडरिया सुबह, दोपहर, शाम, दिन में तीन बार भेड़ों का दूध दुहता। फिर भी उसे यह शिकायत रहती कि यह कम्बख्त दूध कम देती हैं। उसकी भूखी नजरें कभी न भरतीं। हर भेड़ के दूध की आखिरी बूंद तक निकालने के लिए, उसे उस समय तक दुहता रहता, जब तक कि उसके थनों से खून न निकल हालत में यदि कोई भेड़ दर्द से आंखों में आंसू ही भर लाती, तो उसकी कमर पर डंडों की बौछा साथ ही चिल्ला-चिल्लाकर कह भेड़ों! तुम्हारी खाल उधेड़कर आखिरी बूंद तक न निकाल लूं तो न कहना!"

निर्दयी गडरिया चाहता था कि में कम से कम चालीस किलो चाहे उसका अपना वजन तीस कि हो।

गडरिये के अत्याचार इतने कई भेड़ों ने तो उनको सहन न क द्वारा उसके निर्दयी हाथ से मु शुरू कर दी। यह भाग्यवान भें बच जातीं, लेकिन गडरिया अत्याचार बाकी बची जिंदा भेड़ें कर देता। वह हर मरनेवाली भे हर जिंदा भेड़ से करना चाहता भेड़ों की देखा-देखी जिंदा भेड़ें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनानी शुरू कर दी। परिणाम यह भेड़ों की संख्या दिन-प्रति-दिन कम से होती चली गयी, लेकिन फिर भी निर्दयी को बुद्धि न आयी। उसने दृढ़ निश्चय था कि यदि एक भेड़ भी जिंदा बच सारी भेड़ों का दूध और सारी भेड़ों की अकेली भेड़ के शरीर से वसूल कर के

में एक मेमना भी था। मेमना क्या था, छ हड्डियों का ढांचा था। जब भेड़ों की हुत कम रह गई, तो गडरिये ने अपना मेमने की ओर लगाया। वह चाहता किसी प्रकार मेमने से भी दस-बीस ध प्राप्त हो जाए, लेकिन भला एक से दूध दे सकता था। दस-बीस किलो ोर, जब गडरिये को मेमने से दूध की भी प्राप्त न होती, तो वह गुस्से से हो जाता।

दिन गडरिये को मेमने पर इतना क्रोध उसने डंडे मार-मारकर बेचारे मेमने हाल कर दिया। गडरिया चाहता था

अत्याचार जब सीमा से बढ़ जाए तो दुर्बलतम मनुष्य भी निर्दयी के विरुद्ध उठ खड़ा होता है....

कि मेमना बाकी भेड़ों की तरह तेज-तेज भागे, लेकिन मेमने में इतनी जान कहां थी कि वह भाग सकता। आखिर मजबूर होकर मेमने ने अपनी भाषा में गडरिये से प्रार्थना की, "ए गडरिये, मैं एक नन्हा-सा मेमना हूं। मेरी टांगें ईश्वर ने भागने के लिए नहीं, बल्कि चलने के लिए बनायी हैं। भगवान के लिए मुझे डंडे मार-मारकर भगाने का प्रयत्न न करो।"

गडरिया कहां मेमने की भाषा समझता था। उसका खयाल तो यह था कि जो भेड़ें मर गयी हैं, वे सब बेवफा और गद्दार थीं। वे केवल इस लिए मरी थीं कि गडरिये को आर्थिक नुकसान पहुंचे। उन्हीं गद्दार भेड़ों का बदला अब वह मेमने से लेना चाहता था।

अंत में निर्दयी गडरिये के डंडे से बचने के लिए मेमने ने भागना शुरू कर दिया। जान बचाने के लिए पथरीली चट्टानों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागते-भागते धीरे-धीरे उसके नन्हे-नन्हे पांव की शक्ल बदलनी शुरू हो गयी। फिर उसकी टांगें भी धीरे-धीरे लंबी और पतली होती गयीं। अब वह पहले से कहीं ज्यादा तेज भागने के योग्य हो गया। फिर भी निर्दयी गडरिये के हाथों से वह बच न सका। मजबूरन उसने और ज्यादा तेज भागने का प्रयत्न शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि नुकीली चट्टानों और पथरीली धरती से रगड़ खा-खाकर मेमने के नरम-नरम पांव नोकदार पंजों में बदल गये। गडरिया था कि किसी प्रकार बेचारे मेमने की जान न छोड़ता था। मेमना कभी अवसर पा कर गडरिये से यों विनती करता, "आदरणीय गडरिये ! मैं एक मेमना हूं। ईश्वर के लिए, इस सत्य को समझने का प्रयत्न करो। मेमना सदा मेमना ही रहता है, कभी भेड़ नहीं बन सकता।"

गडरिया मेमने की एक न सुनता। लगातार डंडा लेकर उसके पीछे पंजे झाड़कर पड़ा रहता। निरंतर भागने से मेमने का पेट अंदर धंस गया। उसका कद भी पहले से लंबा हो गया। फिर एक समय ऐसा आया कि मेमने के शरीर की ऊन भी झड़नी शुरू हो गयी। झड़ते-झड़ते शरीर पर ऊन का नामो-निशान बाकी न रहा, बल्कि ऊन के स्थान पर भूरे रंग के बाल निकल आये।

अब गडरिये के लिए मेमने को पकड़ना जरा कठिन हो गया। वह उसके पीछे कुत्ते छोड़ता, लेकिन कुत्ते भी प्रायः उसे पकड़ने में असफल हो जाते। जब कभी गडरिया चालाकी से घात लगाकर मेमने को पकड़ने में सफल हो जाता, तो मार-मारकर उसका भुरकस निकाल देता।

मेमना फिर मिमिया-मिमियाक
"ए गडरिये, मैं आखिर एक
मुझे भेड़ बनाने के सभी प्र

गडरिया मेमने की फरि
धरता, बल्कि और नाराज
उसके मुख से झाग निकलनी

जब मेमने को अहसास
या उसके कुत्ते चुपके से
पकड़ने में सफल हो जाते हैं
किया कि अपने कानों से
लेगा। थोड़े ही समय बाद
आ गयी कि गडरिये और कुत्
पता चलाने के लिए वह
अपने कान सरलतापूर्वक
शनैः-शनैः उसके कान पहले
भी हो गये और उसकी सुनने
से कहीं अधिक तेज हो
गडरिये और कुत्तों के आग
पता चल जाता, और वह
निकलता।

गडरिया जानता था कि
अंधेरे में दूर तक नहीं देख
अब वह रात के अंधेरे में
मेमने को पकड़ लेता।
आता, गडरिया मार-मार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

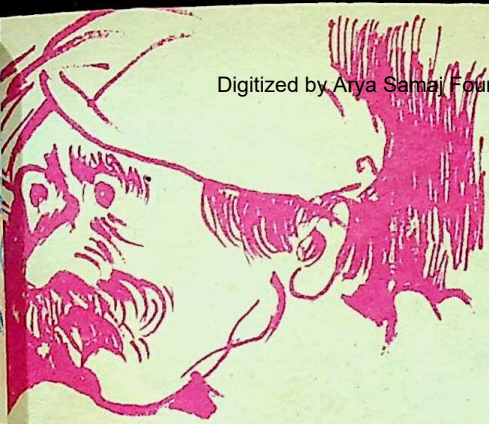

बनाता। बेचारा मेमना फिर रो-रोकर गडरिये से कहता, "ए गडरिये ! मैं एक मेमना हूं। ईश्वर के लिए मुझे भेड़ बनाने का प्रयत्न न करो।"

गडरिये के दिल पर इन याचनाओं और फरियादों का कुछ प्रभाव न पड़ता। अब मेमना डर से सारी-सारी रात जागता रहता। आंखें फाड़-फाड़कर दूर-दूर तक देखने का प्रयास करता, कि कहीं गडरिया तो नहीं आ रहा। थोड़े ही समय बाद उसकी आंखें पहले की अपेक्षा बहुत बड़ी हो गयीं। अंधेरे में निरंतर सचेत रह-रहकर उसकी नेत्र-ज्योति भी इतनी तेज हो गयी कि अब वह रात को भी भली-भांति दूर-दूर तक देख सकता था। अब उसकी आंखों से अंगारे बरसते हुए दिखायी देते।

अब मेमने की चकती बढ़ चुकी थी। जब वह गडरिये से डरकर भागता तो उसकी चकती टांगों से टकराकर फरार की राह में बाधक होती। वह सोचता, काश ! अगर यह चकती भी न होती, तो गडरिया कभी मुझे पकड़ न सकता। दीर्घावधि तक तेज-तेज भागने के कारण आखिर चकती की चरबी पिघल गयी और फिर चकती की जगह मेमने की एक लंबी-सी पतली दुम निकल आयी। अब तो मेमने की रफ़्तार बहुत ही तेज हो गयी। वह भागते समय दुम को छड़ी की तरह हवा में खड़ा कर लेता, ताकि टांगों से न टकराये। इसके बावजूद कई बार गडरिया उसे पीछे से नोकदार पत्थर मारकर पकड़ने में सफल हो जाता। मेमना फिर फरियाद करता, "ए गडरिये, मैं एक मेमना हूं। मैं मेमना पैदा हुआ था और अगर कुछ समय और जिंदा रहा, तो शायद दुंबा बन जाऊं और फिर मरते दम तक दुंबा ही रहूंगा। आखिर तुम क्यों एक मेमने को भेड़ बनाने पर तुले हो। ईश्वर के लिए मुझ पर इतना अत्याचार न करो।"

गडरिया अब भी मेमने की बात न समझा। मेमना अब उसके अत्याचार से इतना तंग आ चुका था कि जब कभी उसे खतरा महसूस होता, कि पकड़ा जाऊंगा, तो अपनी जान की रक्षा के लिए पंजों और नाखूनों से गडरिये पर हमला करने से भी संकोच न करता। गडरिया ऐसी हालत में गुस्से से लाल-पीला हो जाता। मेमना मजबूर होकर गडरिये को दांतों से काटने का प्रयत्न करता, लेकिन उसके जबड़ों की बनावट ऐसी थी कि दांतों से गडरिये को काटने में कुछ सफल न हो पाता। इसी प्रकार की कुछ झड़पों के बाद मेमने के जबड़ों और थूथनी की बनावट में परिवर्तन आ गया। उसके दांत भी पहले की अपेक्षा अधिक लंबे और तेज हो गये। कुछ समय बाद उसकी जिव्हा भी लंबी हो गयी। अब वह मिमियाता, तो उसकी आवाज मेमनों की आवाज से भिन्न होती। बचपन ही से गडरिये के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते-उठाते अब उसकी आवाज में दृढ़ता और तेजी पैदा हो गयी थी।

जब गडरिये ने देखा कि उसे मेमने का मुकाबला करने में कठिनाई का सामना करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है, तो वह कुत्तों की शह देकर मेमने पर हमला करवाता, लेकिन अब तो कुत्ते भी मेमने का मुकाबला करने से क्षुब्ध थे। मेमना एक कुत्ते को पंजों में दबोचकर जमीन पर पछाड़ देता और दूसरे की गर्दन में अपने लंबे-लंबे तेज दांत गाड़कर जख्मी कर देता। इसके बाद जब एकाध बार गडरिया मेमने को पकड़ने में सफल हुआ, तो मेमने ने गुर्र-गुर्राकर उसे सचेत किया, "खबरदार, ऐ गडरिये ! इन जलील हरकतों से बाज आ जा, वरना तेरा अंत बहुत बुरा होगा।"

गडरिया मेमने की यह धमकी सुनकर आपे से बाहर हो जाता।

सर्दियों के दिन थे। हर चीज पर बर्फ़ का सफेद गिलाफ चढ़ा हुआ था। एक दिन गडरिया पूर्ववत सुबह सो कर उठा। डंडा हाथ में लिया। सोचा, आज तो एक-एक भेड़ से दस-दस गाय जितना दूध वसूल करूंगा। इसी सोच में झोंपड़ी से बाहर निकला, तो क्या देखता है, कि सफेद बर्फ पर इधर-उधर खून के सुर्ख-सुर्ख निशान नजर आ रहे हैं। ज़रा आगे बढ़ा, तो दायें-बायें कई मुरदा भेड़ों के खून भरे ढांचे दिखायी दिये। पूरे रेवड़ में एक भेड़ भी जिंदा बाकी नहीं थी। उसने माथे पर हाथ रखकर दूर-दूर तक नजर दौड़ायी। एक चट्टान पर उसे मेमना दिखायी दिया। मेमना अपनी अगली टांगों पर सिर रखे बर्फ पर लेटा हुआ था। अपनी लंबी जीभ बार-बार मुख से निकालकर पंजों पर और थूथनी पर लगा हुआ खून चाट रहा था। थोड़ी ही दूर गडरिये के दोनों कुत्ते मुरदा पड़े थे।

मेमने की नजर गडरिये पर पड़ी। वह उठा और गुर्राता हुआ धीरे-धीरे गडरिये की ओर बढ़ा। गडरिया भय से कांप रहा था। एक-दो कदम पीछे किये और कांपते हकलाती आवाज में बोला, "ए मेमने, प्यारे मेमने !"

मेमना गुर्राया और बोला, "ए आखिर अब मैं मेमना नहीं रहा !"

गडरिये ने फिर खुशामद भरे हकलाते हुए कहा, "ए मेरे प्यारे मेमने खूबसूरत मेमने।"

मेमना गुर्राया, "मैं कभी मेमना अब लेकिन ईश्वर तुम्हारा भला करे, कि मेमना नहीं रहा। अब मैं भेड़िया हूं।"

"लेकिन मेरी जान मेमने, तुम अब प्यारे, मेरे नन्हे-मुन्ने मेमने हो !"

"अफसोस निर्दयी गडरिये ! तुम खयाल जरा देर से आया है।" उसने और गुर्राकर गडरिये पर हमला कर गडरिये ने लाख भागने का प्रयत्न किया, मेमने से न बच सका, जो अब भेड़ि चुका था। भेड़िये ने अपने लंबे-लंबे गडरिये की कांपती हुई गर्दन में गाड़ मजा ले-लेकर उसका गर्म-गर्म खून पी कर दिया।

कई दिन बाद एक ऐसे व्यक्ति का गु से हुआ, जो सफेद बर्फ पर गडरिये खून से लिखी लिखावट पढ़कर गड मेमने की यह दास्तान समझ गया। अ से इस प्रदेश में यह कहानी पीढ़ी सुनने में चली आ रही है।

प्रस्तुति : सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष समस्या समाधान

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि— ६६ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं — वाराणसी के सुपरिचित ज्योतिषी श्री जयधरनाथ मिश्र।

वंदना शर्मा, पीलीभीत

प्रश्न : विवाह कब और कैसी जगह होगा ?

उत्तर : पति घर का मालिक बृहस्पति अपने घर में बैठने से अच्छे घर में तथा २४वें वर्ष के अंत में विवाह कराता है।

नीताकुमारी, दिल्ली

प्रश्न : न्यायाधीश बनना चाहती हूं, क्या बन पाऊंगी और कब ?

उत्तर : नवम पंचम के ग्रह अनुकूल न होने से आशा बहुत कम है।

सुलेखा, जमशेदपुर

प्रश्न : इच्छित व्यक्ति से मेरी शादी हो पाएगी या नहीं।

उत्तर : जरूर होगी क्योंकि पति भावेश गुरु पराक्रम में बैठा है साहस बनाये रखें।

ताराशंकर बड़गूजर, बीकानेर

प्रश्न : रोजगार और विवाह कब तक होगा।

उत्तर : २३वें वर्ष में शादी होगी उसी समय रोजगार भी मिलेगा।

अमर सिंह, देहरादून

प्रश्न : कला, ललितकला या संगीत किसी भी क्षेत्र में नाम पा सकूंगा क्या ?

उत्तर : संगीत में नाम होगा, अभ्यास करते रहो। तुम्हारे ग्रह अच्छे हैं।

रामदेव मिश्रा, अल्मोड़ा

प्रश्न : प्रोन्नति कब होगी ?

उत्तर : मेष राशि में बृहस्पति सन '८८ में जब संचरण करेगा, तब ही प्रोन्नति होगी।

प्रकाशचंद्र वर्मा, औरंगाबाद

प्रश्न : क्या बैंक परीक्षा में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : ग्रह उत्तम पड़े हैं। बैंक की नौकरी अवश्य प्राप्त करोगे सन '८८ में।

नारायणदत्त शर्मा, अलीगढ़

प्रश्न : प्रशासनिक अधिकारी बनने में विलंब क्यों ?

उत्तर : शनि ग्रह की साढ़ेसाती के कारण ही विलंब है धनुराशि में जाते ही शनि आपको प्रशासनिक अधिकारी बनायेगा।

पार्वती, कोटा

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : शनि के बदलते ही इसी वर्ष सन '८८ में उत्तम घर में विवाह का संबंध अवश्य कराएगा।

सुधा, इंदौर

प्रश्न : पुत्र प्राप्ति कब तक होगी ?

उत्तर : सन '८९ के जनवरी माह में पुत्र का योग प्रबल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी. कालिंदी, बालाघाट

प्रश्न : विवाह कब होगा, घर कैसा होगा ?

उत्तर : मंगली होने से विवाह में देरी हो रही है घबराए नहीं इसी वर्ष हो जाएगा। घर कुछ कमजोर होगा पर पति श्रेष्ठ मिलेगा।

आशुतोश कौशिक, गाजियाबाद

प्रश्न : मानसिक रोग कब ठीक होगा ?

उत्तर : नीलम पहनो इसी वर्ष से रोग दूर हो जायेगा।

संजयकुमार, ग्वालियर

प्रश्न : नौकरी रहेगी या व्यापार होगा ?

उत्तर : अभी सन '८९ के बाद ही व्यापार की संभावना है, तब तक नौकरी ही क

मंजुश्री, पटना

प्रश्न : क्या मुझे स्थायी सर्विस मिलने की है।

उत्तर : शनि के बदलते ही तुम्हें स्थायी सन '८८ के अगस्त तक प्राप्त हो ज

गंगोत्रीप्रसाद तिवारी, सुलतानपुर

प्रश्न : आर्थिक एवं अन्य परेशानियां क्या है ? रत्न भी बताएं।

उत्तर : शुक्र की महादशा चल रही अथवा स्फटिक की माला पहनें, परेशा होती चली जाएगी।

६८

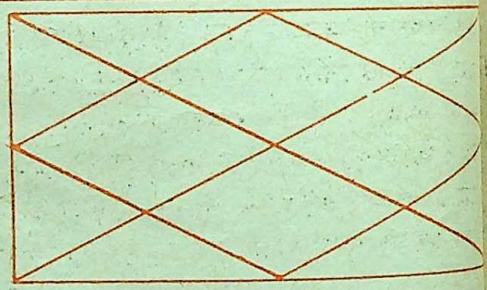

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .....महीना.....सन .....

जन्म-स्थान.....जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा.वर्तमान .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

'इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—६८) 'कादम्बिनी', हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० जनवरी, १९८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर शर्मा, इंदौर

प्रश्न : भूतपूर्व प्रेमिका से मनोवांछित संबंध कब तक ?

उत्तर : गोचरीय नेष्ट आनेवाला है, अतः संबंध रखने से आपत्ति में फंस सकते हैं।

अरुण प्रकाश, लखनऊ

प्रश्न : जीवन का सर्वोत्तम समय कब तक आएगा और कब तक रहेगा ?

उत्तर : सन् '८९ से आपका भाग्योदय प्रारंभ हो जाएगा तथा शनि की महादशा भर १९ वर्ष तक उन्नति का योग है।

महेशकुमार शर्मा, भोपाल

प्रश्न : नौकरी या व्यवसाय कब तक ?

उत्तर : गुरु बृहस्पति के मेष राशि में जाने पर '८८ के अगस्त माह से व्यापार प्रारंभ करोगे।

पूनम बंसल, नयी दिल्ली

प्रश्न : मेरी शादी कब व कैसी जगह होगी।

उत्तर : आपकी शादी २४वें वर्ष में अच्छे व संपन्न घर में होगी।

दिनेशकुमार जोशी, जयपुर

प्रश्न : लाटरी व्यवसाय में भविष्य कैसा रहेगा ?

उत्तर : लाभेश व धनेश उत्तम स्थान में होने से इस व्यवसाय में प्रचुर लाभ प्राप्त करोगे।

सुशीलकुमार व्यास, बीकानेर

प्रश्न : आर्थिक दशा में सुधार कब, उपाय बतायं।

उत्तर : चंद्रमा की महादशा प्रारंभ होते ही शुभ फल देगी। अतः अभी सात रत्ती का पुखराज पहनो तो विशेष लाभ होगा।

गोविंदचंद्र राय, गोरखपुर

प्रश्न : जातक को जीवन में संतानों से सुख मिलेगा या नहीं, नग सुझाने की कृपा करें।

उत्तर : आपके ५वें भाव में सब ग्रह विपरीत होने से संतान सुख नहीं प्राप्त होगा, चांदी की अंगूठी में ९ रत्ती का मूंगा पहनें। अवश्य शांति मिलेगी।

उमाकांत अवस्थी, अलवर

प्रश्न : मुकदमे में हार या जीत ?

उत्तर : मुकदमा जीतने में अभी ढाई वर्ष का समय और लगेगा।

मदनमोहन पांडेय, हरिद्वार

प्रश्न : उदर रोग कब ठीक होगा, रत्न भी सुझाएं।

उत्तर : आपके शरीर का मालिक बुध ग्रह अष्टम में होने से तथा गोचरीय बृहस्पति १२वें में आ जाने से अभी २ वर्ष तक मुक्ति नहीं। पन्ना ७ रत्ती का लाभदायक होगा।

सुरेन्द्र झा, बरौनी

प्रश्न : पदोन्नति और स्थानांतरण कब तक ?

उत्तर : सन '८९ के जनवरी माह में स्थानांतरण व पदोन्नति साथ-साथ होगी।

मोहिनी, दिल्ली

प्रश्न : क्या मैं एक अच्छी कवियत्री बन सकती हूं ?

उत्तर : ग्रह उत्तम हैं, कोशिश जारी रखें, अवश्य कवित्व की शक्ति प्राप्त होगी।

कु. सरला मखीजा, नैनीताल

प्रश्न : एकाकी जीवन का योग कब तक है ?

उत्तर : मेष राशि में बृहस्पति के संचरण करने पर आपका विवाह योग प्रबल होता है। अतः १९८८ में अच्छी संभावना है। ●

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

अचानक पागलपन

रवि नागपाल, जयपुर : मैं २५ वर्ष का युवक हूं। कुछ समय से एक अजीब रोग से पीड़ित हूं। अचानक सर में झनझनाहट पैदा होती है और माथा गर्म हो जाता है। ऐसी अवस्था में मैं ऊटपटांग बोलने लगता हूं। कभी उठकर चल देता हूं। मुझे इस स्थिति में पता नहीं चलता। दूसरे लोग कहते हैं—पागलपन का दौरा पड़ गया। परंतु दौरे के समाप्त होते ही और लोगों की भांति ठीक-ठीक बात कर लेता हूं।

आप पागलपन के दौरे के शिकार कदापि नहीं। वास्तव में यह एक तरह की मिर्गी का रोग है (टी.एल.ई.)। इसके सही उपचार के लिए आपको ई.ई.जी. व कैट स्केन कराना चाहिए। यदि यह जांच न करा सकें तो स्नायु विशेषज्ञ से मिलकर इसका आधुनिक दवाओं द्वारा उपचार करा सकते हैं। आप बिलकुल सही हो जाएंगे।

षड्यंत्र में फंसी

मगन सिंह, लुधियाना (पंजाब) : मेरी मां ६० वर्ष की है। मेरे पिता का देहांत ३ साल पहले हो चुका है। मां कुछ समय से डरती है कि मुझे, मेरे परिवार व उसको षड्यंत्र द्वारा फंसाया गया। उसे या मुझे फांसी लग जाएगी। कभी कहती है कि मेरा बड़ा भाई व उसकी पत्नी यह सब कर रहे हैं। वास्तव में बड़ा भाई व उसकी पत्नी चालाक हैं तथा दुनियादारी ज्यादा समझते हैं।

रात को सोती भी कम है तथा सुबह-सुबह बहुत बेचैन हो जाती है। डॉक्टर ने सोने की दवा दी है—लेकिन कोई लाभ नहीं!

वास्तव में यह अवसाद का रोग है जो स्त्रियों को खासकर इस उम्र में कई बार हो जाता है। कारण यह है कि इस उम्र में जब पति का सहारा भी नहीं रहा, तब एक पुत्र व उसकी वधु न तो साथ एक संयुक्त परिवार में रहते हैं न ही उनका दूसरे से बनती है, इससे असुरक्षा की भावना आ घेरती है। कई बार यह इतनी अधिक होती है कि नींद की कमी, बेचैनी व अवसाद की भावना अत्यधिक हो जाती है।

केवल सोने की दवा से कुछ नहीं होगा। अवसाद को हटाने के लिए एंटी-डिप्रैशन दवा देनी होगी, साथ ही उन्हें प्रेम व सहानुभूति का वातावरण मिलना चाहिए, जिससे वह सुरक्षा महसूस करे। हो सके तो अपने भाई व भाभी को बुलवा कर, उन्हें मिलवा दें, ताकि वह वास्तविकता में लौट सके। मिलवाने से पूर्व भाई व भाभी को समझाना आवश्यक है।

बहम

अनंत अग्रवाल, उन्नाव : मेरी पत्नी तीसरे बच्चे के होने के बाद से बहुत बहम करने लगी है। कोई बाहर से आता है तो उसे कहीं कोई छू न जाए इसकी चिंता करती है। इसका कारण वह गंदगी बताती है। खुद भी कई बार हाथ धोती है। अब वह किसी काम को हाथ नहीं लगाती, कहती है कि बार-बार हाथ धोना पड़ेगा। नमक आदि कितना सही होगा—इसका अंदाजा कैसे लगाऊं। इसलिए अब खाना बनाने से कतराती है। मुझ पर भी शक करती है। नींद भी कम आती है। डॉक्टर साहब बताएं, इस अवस्था में मैं क्या करूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसव के पश्चात स्त्रियों की मानसिक स्थिति कई बार असंतुलित हो जाती है। कारण शायद अंतःस्रावी ग्रंथियां हैं। यह बच्चा चाहिए या नहीं, या फिर लड़के की तमन्ना थी और हुई लड़की। प्रसव में देखभाल व प्रेम की अधिक आवश्यकता होती है। आप घबराएं नहीं, यदि आप उसका मनोचिकित्सक द्वारा बिना देर किये इलाज आरंभ कर देंगे तो यह असंतुलित मानसिक अवस्था शीघ्र ही ठीक हो जाएगी। यदि नहीं कर पाये तो फिर यही हालत बिगड़ कर भयानक मनोरोग बन सकता है।

लत से कैसे निकालें

च. म. ल., दिल्ली : मेरा बेटा भांग, गांजा, चरस सभी चीज का सेवन करता रहा और हमें पता न चला। जब पता चला तो छुड़ाने पर उसमें पागलपन के चिह्न आने लगे। अब हमने उसे खुली छूट दे दी। कुछ समझ में नहीं आता, उसकी कमरे में बंद कर निगरानी करते हैं तो वह मानसिक संतुलन खो बैठता है फिर वह इन सबका सेवन करता है। कहता है, स्मैक भी पिया है। डॉक्टर साहब, कोई रास्ता दिखाएं।

आपके बेटे ने गांजा, चरस आदि क्योंकर आरंभ की, इसका उत्तर जानना भी जरूरी है। क्या उसे कोई मानसिक समस्या थी या नहीं, वह किस प्रकार का विद्यार्थी था ? साथ ही आपका व मां का उसके प्रति व्यवहार नशे से पहले कैसा था ? आपके प्रश्न से ऐसा लगता है कि वह मानसिक रोग से ग्रस्त होते ही परेशानी हटाने के लिए नशीले पदार्थों का सहारा लेने लगा। अब उसको दो बीमारियों के उपचार की आवश्यकता है—एक मनोरोग (स्कीजोफ्रीनिया), दूसरा—नशीली वस्तुओं का सेवन। दिल्ली में मनोचिकित्सक को दिखाकर आप इन सबका भलीभांति उपचार करा सकते हैं।

> इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

'यह अजीब लक्षण कैसे ?

प्रिया, नेपाल : मुझे प्रायः चक्कर आते हैं। कई बार गिर भी पड़ती हूं। मेरी आयु ३५ वर्ष है। मासिक धर्म भी ठीक नहीं आता। कभी शीघ्र और कभी-कभी अत्यधिक। कभी हाथ तथा दायीं बाजू में कमजोरी व झनझनाहट होती है। मासिक धर्म जब समय पर न आये, तब चिड़चिड़ापन, बेचैनी व गुस्सा आने लगता है। डॉक्टर साहब, मुझे घरेलू समस्या कुछ भी नहीं, फिर ऐसा क्यों ? क्या मुझे कैंसर हो जाएगा। कहीं मैं पागल तो नहीं हो जाऊंगी।

आप नाहक सोच-सोचकर परेशान हो रही हैं। आपको कोई भयंकर रोग नहीं। मासिक धर्म से पूर्व कई स्त्रियों को ऐसा महसूस होता है। आपको चाहिए अपना सामान्य जीवन स्वस्थ वातावरण में बितायें। सब कुछ सामान्य रखें तथा अपने मन को थोड़ा समझायें कि आखिर यह समस्या केवल दो या तीन दिन की ही है। यदि न संभाल सकें तो एक स्त्री रोग विशेषज्ञ या मनोचिकित्सक से परामर्श करें।

आपकी दूसरी समस्या है चक्कर, झनझनाहट व दायीं भुजा में कमजोरी यह सर्वाइकल स्पांडीलोसिज के लक्षण हैं। गरदन के एक्सरे द्वारा इस रोग का आसानी से पता लग जाता है। इसका उपचार है गरदन की मांसपेशियों को मजबूत करना। इसका सही तौर पर कसरत करने से इलाज संभव है। आजकल दूरदर्शन कार्यक्रम में भी गरदन की सही कसरत करना दिखाया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रवेश' में इस बार हम परिचय करा रहे हैं श्रीमती निर्मला से। इनकी कविताओं में मानव-वेदना मुखर होकर आयी है। छटपटाहट, अकेलापन और दर्द की अभिव्यक्ति ने ही इनकी कविताओं में मुख्य स्थान पाया है। इन्हीं संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं इनकी यहां प्रस्तुत चार कविताएं— संपादक

रेत का टुकड़ा

सुना है असीम सागर के किनारे
रेत का एक टुकड़ा सँन्यासी हो गया है
सदियों से रेत का टुकड़ा देखता रहा
लहरें आतीं और किनारे से टकरा के लौट जातीं
किनारा इंतजार करता रहा
कभी तो लहरें आकर उसका मर्म जानेंगी
कभी तो लहरें उसका दुख-दर्द बटिंगी
लेकिन वो दिन कभी नहीं आया
नियति का चक्र जारी रहा
लहरें आतीं, किनारे से टकराकर लौट जातीं
धीरे-धीरे रेत के टुकड़े में कुछ टूट गया
सुना है रेत का वो टुकड़ा सँन्यासी हो गया है।

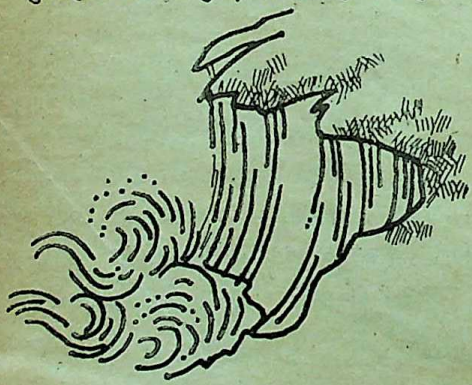

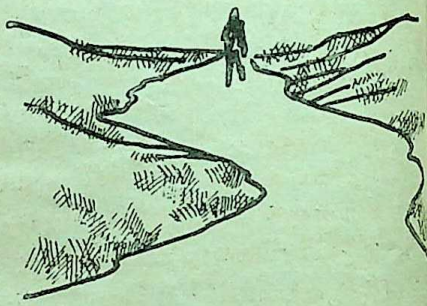

भ्रम

मैं और मेरा सूनापन तन्हाई का अहसास
सब कुछ एक भ्रम ही तो है
खून, मजहब, के सब रिश्ते कितने बेमानी हैं
रेत की दीवारों पर टिके ये रिश्ते
पलक झपकते ही टूट जाते हैं
फिर तन्हाई का अहसास कैसा ?
जिंदगी के सफर में अकेले ही आये थे
अकेले ही चले जाएंगे एक दिन
हां, जब भी बंधोगे दर्द और प्यार के रिश्तों से
हर शख्स अपना ही नजर आएगा
कोई भी तन्हा नजर नहीं आएगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जख्म

अभी ना छूना अभी जख्म बहुत ताजा है
अभी-अभी तो चोट खायी है
धीरे-धीरे जब वक्त के मरहम से ये भर जाएगा
अपने नर्म-नाजुक हाथों से सहला देना
अभी ना सहलाना जख्म बहुत ताजा है

मेरा गम

मेरा गम मेरी ही अमानत है
मैंने जब भी गम को बांटना चाहा
कोई भी झोली गम से खाली न मिली
हर झोली गम से बोझिल थी
जब भी आंखों से गम की बदली बरसी
कोई सूखा आंचल पोंछनेवाला न मिला
हर आंचल गम से गीला था
मेरा गम मेरी ही अमानत है

● निर्मला

जिंदगी

हर पल मोम-सी पिघलती जिंदगी
तिल-तिल दिये-सी जलती ये जिंदगी
जिंदगी के वीरान मरुस्थल में
मृगमारीचिका-सी भटकती जिंदगी
कितने उपनाम दे डाले जिंदगी को
लेकिन इन उपनामों ने, एक अर्थ दिया है, जिंदगी
पिघलता मोम दीपक की लौ का,
बेतहाशा दौड़ता मृग कहता है
जलन, तड़पन और तलाश ही जिंदगी है
और दूर कहीं बजता बांसुरी का स्वर
असंख्य घाव होने पर गुनगुनाने की सदा दे गया
जिंदगी का हर छोटा पात्र
क्या-क्या सिखा गया मुझको
जिंदगी का एक नया अर्थ दे गया मुझको

आत्म-कथ्य

जीवन में जब भी कहीं विसंगतियां देखती हूं, जिंदगी को लेकर मन में कई तरह के सवाल उठते हैं और वे सवाल महीनों दिमाग में दस्तक देते रहते हैं और मैं फिर उन सवालों को शब्दबद्ध करने पर मजबूर हो जाती हूं, जो कविता के रूप में प्रस्फुटित हो उठते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

—पंडित शिव प्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति :- सूर्य १४ जनवरी से मकर में, मंगल वृश्चिक में, बुध ६ से मकर में, २६ से कुंभ में, गुरू मीन में, शुक्र १० से कुंभ में, शनि धनु में, राहु मीन में, केतु कन्या में, हर्षल नेपच्यून धनु तथा प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

मेष : (च, चो, ल, लो, ली, अ)

नव-वर्षारंभ इच्छित कार्यों की पूर्ति तथा विगत काल से चली आ रही समस्याओं को दूर करेगा। रोजगार समस्या का समाधान होगा। १ से ८ के मध्य जीवन साथी के सहयोग से लंबित विवाद दूर होगा। शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से प्रभाव तथा शक्ति वृद्धि होगी। ९ से १४ के मध्य लेखन, साहित्य, कला, संगीत अथवा रचनात्मक कार्यों से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लाभदायक यात्रा से मन में उत्साह तथा साहसिक भावना होगी। उदर विकार से कष्ट का सामना करना होगा। १५ से २२ के मध्य शत्रु-पक्ष से चला आ रहा विवाद दूर होगा। जीवन साथी अथवा उनके परिवारजनों के सहयोग से उल्लेखनीय स्थिति होगी। मासांत में अधिक परिश्रम तथा दौड़-धूप के बावजूद वांछित लाभ का अभाव होगा। उच्चाधिकारी वर्ग के कारण मन में खिन्नता होगी। शत्रु पक्ष के व्यर्थ उलझाव से दूर रह कर सृजनात्मक गतिविधियों में क्रियाशील रहें।

वृषभ : (ई, उ, ए, ओ, व, वा, वे, वो)

आर्थिक एवं भाग्यवर्धक प्रयासों में उल्लेखनीय प्रगति होगी। आध्या अभिरुचि बढ़ेगी। शत्रु-पक्ष के द्वारा प्रति स्थितियों के निर्माण के बावजूद अभीष्ट क सफलता प्राप्त होगी। १ से ८ के मध्य योजनाओं में प्रगति होगी। परीक्षा प्रतियो आदि के अनुकूल परिणामों से उत्साह वातावरण होगा। ९ से १५ के मध्य शत्रुओं के द्वारा कार्यों में अवरोध होगा अथवा परिजनों के सहयोग से सफलता होगी। मानसिक तनाव के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल प्रभाव होगा। १६ से २३ के जीवनसाथी अथवा ससुराल पक्ष के संपत्ति के कार्यों में सफलता मिले रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में प्राप्त होगा। मासांत में व्यावसायिक योज में सफलता प्राप्त होगी। रोजगार की श्रेष्ठ होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथुन : (क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, क, छ, घ)

मास मध्यम फलदायक होगा। रोजगार में शत्रु पक्ष के कारण परेशानी होगी। प्रभावशालीं व्यक्ति के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होगा। आकस्मिक धन लाभ का योग होगा। पारिवारिक वातावरण उत्तम होगा। १ से ८ के मध्य रोजगार संबंधी कार्यों में दौड़धूप, श्रम की अधिकता के बावजूद अपेक्षित सफलता का अभाव होगा। यात्रा का योग है। ९ से १५ के मध्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के कारण आकस्मिक धन लाभ अथवा महत्वपूर्ण उपलब्धि का योग रहेगा। पारिवारिक सुखद समाचार प्रसन्नदायी होगा। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। शिक्षा प्रतियोगिता परीक्षा सृजनादि के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। मासांत में दीर्घकालिक योजनाओं की दिशा में मित्रों का सहयोग सुख प्राप्त होगा। जीवनसाथी तथा संतान का उत्तमसुख करायेगा

पर्व और त्यौहार

१ जनवरी प्रदोष व्रत, ३ पोषी पूर्णिमा, ७ संकष्टी महागणेश, ४ व्रत, ११ स्वामी रामानंदाचार्य जयंती, १३ लोहड़ी, १५ मकर संक्रांति (पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक), १६ षटतिला एकादशी, १७ प्रदोष व्रत, १९ मोनी अमावस्या, २२ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, २३ बसंत पंचमी, २५ अचला सप्तमी, २६ श्री दुर्गाष्टमी भारतीय गणतंत्र दिवस, २९ जया एकादशी, ३० भीष्म द्वादसी, ३१ प्रदोष व्रत।

राशियां और प्रभाव

मास में बुधादित्य योग तथा कालसर्प योग की स्थिति का उदय होगा। सूर्य का मकर राशि में संक्रमण जिसे 'मकर संक्रांति' के नाम से संपूर्ण भारतीय समाज में महत्वपूर्ण पर्व के रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रांति को ही सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करता है, जिसमें समस्त मांगलिक, धार्मिक एवं शुभ कार्यों की संपन्नता को श्रेष्ठ माना जाता है। मकर संक्रांति वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मीन राशियों के लिए श्रेष्ठ फलदायक होगा। मिथुन, सिंह एवं धनु राशि के लिए पीड़ा कारक रहेगी। आत्मकारक सूर्य का यह संक्रमण समस्त चराचर को प्रभावित करता है। अंतरराष्ट्रीय क्षितिज में विग्रहकारी शक्तियों की वृद्धि होगी। परस्पर देशों में तनाव बढ़ेंगे। युद्धकारक स्थितियों का उदय होगा। किंतु छुटपुट घटनाओं के अतिरिक्त युद्ध संभावित नहीं है। प्राकृतिक वातावरण में शीत की अधिकता होगी। शीत प्रकोप के कारण जन-जीवन प्रभावित होगा। पश्चिमी देशों में आंतरिक कलह तथा श्रम समस्याओं की अधिकता होगी। ब्रिटेन तथा अमरीका विश्व मंच पर सर्वाधिक चर्चित रहेगा।

भारत में राजनीतिक स्थितियों में काफी उतार चढ़ाव होंगे। महत्वपूर्ण पदों में परिवर्तन तथा प्रशासनिक कठोरता दृष्टिगोचर होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों में अप्रिय समाचारों का सामना करना होगा। आतंकवादी गतिविधियों पर राजकीय अंकुश बढ़ेगा। जनोपयोगी घोषणाओं से उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट आयेगी तथा अल्प आय वर्ग के हितों की रक्षा हेतु विशेष प्रयास होंगे। उत्तर भारत, बिहार एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में शीत प्रकोप से जन धन हानि के समाचार प्राप्त होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्क : (हो, हू, हे, हो, डे, डो, डू, डे, डो)

मास श्रेष्ठ फलदायी होगा। रोजगार संबंधी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। १ से ८ के मध्य रोजगार की दिशा में विगत काल से चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे। उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से शत्रु पक्ष के प्रयास निरर्थक होंगे। ९ से १४ के मध्य कार्यों की अधिकता, अकारण विवाह तथा अस्वस्थता का सामना करना होगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, जिससे स्थिति संतुलित रहेगी। १५ से २३ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा लाभदायक होगी। भौतिक उपलब्धियों के प्रयास सार्थक होंगे। पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। मासांत में संपत्ति के कार्यों में व्यय होगा, सृजन, लेखनादि कार्यों से लाभ मिलेगा।

सिंह : (म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टू, टो)

मास में इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। प्रियजनों के सहयोग से नवीन योजना का निर्माण होगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की संपन्नता से प्रसन्नता होगी। १ से ८ के मध्य आर्थिक जीवन में प्रभावशाली व्यक्ति के सहयोग से लंबित समस्या का समाधान होगा। रोजगार संबंधी स्थिति सुदृढ़ होगी। ९ से १५ के मध्य भाग्यवर्धक एवं लाभदायी यात्रा का योग उपस्थित होगा। मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों के संपादन में परिवारजनों का सहयोग मिलेगा। वातावरण उत्साहवर्धक होगा। १६ से २४ के मध्य अस्वस्थता तथा मानसिक अस्थिरता होगी। व्यर्थ शत्रु बाधा से तनाव का सामना करना होगा। मित्रों के सहयोग से संपत्ति संबंधी समस्या का समाधान होगा। मासांत में शासन सत्ता अथवा राज्याधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। नवीन योजना में विशेष प्रगति होगी।

कन्या : (टी, पा, पी, पू, पु, ष, ढ़, पे, पो)

मास अनुकूल फलदायक होगा। साहसिक प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्य में सफलता प्राप्त होगी। पारिवारिक वातावरण में अकारण तनाव उपस्थित होंगे। यात्रा के कारण कष्ट का सामना करना होगा। १ से ८ के मध्य भावुकता तथा परोपकारी भावना के कारण कष्ट का सामना करना होगा। जोखिम के कार्यों में विश्वास का आश्रय न लें। परिवार में तनाव की स्थिति होगी। ९ से १५ के मध्य पराक्रम के कारण लाभ मिलेगा। पद, स्थानांतरण आदि कार्यों में अपेक्षित सफलता प्राप्त होगी। जीवनसाथी के कारण परिवार की स्थिति अनुकूल होगी। १५ से २२ के मध्य राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यात्रा को टालना हितकर होगा। मासांत महत्वपूर्ण होगा, जिसमें रचनात्मक कार्यों में वांछित सफलता तथा भौतिक जीवन के प्रयास सार्थक होंगे।

तुला : (रा, रो, रू, रे, रो, ता, तो, तू, ते)

मास में वांछित कार्यों में सफलता, लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। परिस्थितियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषमता के बावजूद साहस से सफलता प्राप्त होगी। शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा। १ से ८ के मध्य सुख साधनों की वृद्धि होगी। वैभव अथवा कलात्मक वस्तुओं पर धन व्यय होगा। शासन सत्ता अथवा राज्याधिकारी वर्ग के सहयोग से लंबित योजना पूर्ण होगी। ९ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष के कारण तनाव तथा कष्ट का सामना करना होगा। मित्रों के सहयोग से शत्रु पक्ष का भंडाफोड़ होगा। संपत्ति विवाद मध्यस्थता के कारण दूर होगा। १६ से २४ के मध्य कार्यों में अवरोध होंगे। साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी। मासांत श्रेष्ठ होगा। सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पराक्रम के कारण यश प्राप्ति होगी।

वृश्चिक : (तो, नी, ना, नू, ने, नो, या, यो, यू)

मास में अस्थिरता रहेगी। पारिवारिक तथा प्रियजनों के कारण कार्यों में अवरोध उपस्थित होगा। उच्च वर्ग के सहयोग से समस्या समाधान संभावित है। १ से ८ के मध्य संपत्ति संबंधी कार्यों में शासन सत्ता अथवा राजकीय अधिकारी का सहयोग लाभदायक होगा। नवीन स्थान की यात्रा होगी। ९ से १५ के मध्य पारिवारिक वातावरण से मानसिक खिन्नता होगी। योजना संबंधी कार्यों में व्यर्थ विलंब तथा व्यवधान होगा। प्रियजन को अस्वस्थता से चिंता होगी। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रियजनों का मिलन तथा परिचय क्षेत्र में वृद्धि हितकर होगी। मासांत में भावुकता तथा आवेश पर नियंत्रण रखें। निकटजनों से सावधानी रखना हितकर होगा। सामाजिक व राजनीतिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु : (या, यो, भा, भी, धा, फा, ढ़ा, भे)

विगत काल से चले आ रहे संघर्ष तनाव तथा अवसादपूर्ण वातावरण से दूर होंगे। शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। जीवनसाथी के सहयोग से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवार में अस्वस्थता से चिंता होगी। एक से ८ के मध्य जीवनसाथी के सहयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रोजगार संबंधी कार्यों में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ९ से १४ के मध्य यात्रा पर व्यय की अधिकता होगी। माता-पिता की अस्वस्थता से चिंता होगी। शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होगी। १५ से २३ के मध्य साहसिक कार्यों के कारण धन लाभ तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शासन तथा सत्ताधारी वर्ग का सहयोग रहेगा। मासांत में विगत दिनों से चली आ रही समस्याओं का स्थिर हल प्राप्त होगा। मानसिक प्रसन्नता तथा उत्साहवर्धक वातावरण होगा। इच्छित स्थान की यात्रा का योग होगा।

मकर : (भो, जा, जो, खो, खे, खो, गा)

मास में भावुकता पर नियंत्रण रखें। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद श्रम तथा साहस के कारण सफलता प्राप्त होगी। रोजगार संबंधी कार्यों में शत्रु पक्ष प्रतिकूल स्थितियों का निर्माण करेंगे। आध्यात्मिक अभिरूचि बढ़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ से ८ के मध्य कार्यों अथवा योजनाओं में व्यवधान उपस्थित होगा। जीवनसाथी के सहयोग से स्थितियों में सुधार तथा संतुलन का निर्माण होगा। ९ से १५ के मध्य शत्रु पक्ष के कारण तनाव का सामना करना होगा। भावुकता पर नियंत्रण रखना हितकर होगा। तनावों के कारण स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव होगा। १६ से २४ के मध्य प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद कार्यों में स्वपराक्रम से सफलता मिलेगी। राज्याधिकारी वर्ग से वांछित सहयोग का अभाव होगा। पारिवारिक तनावों में धैर्य तथा संयम से कार्य करें। मासांत में शिक्षा, प्रतियोगिता, परीक्षा, कलात्मक अथवा सृजन संबंधी कार्यों से लाभ तथा यश प्राप्त होगा।

कुंभ : (गू, गे, गा, सा, सी, सू, श, सो)

रोजगार की दिशा में किये जा रहे प्रयासों के लिए अनुकूल समय रहेगा। अकारण तनाव, कार्यों की अधिकता के बावजूद भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। पारिवारिक स्थिति मध्यम होगी। अनावश्यक यात्राओं से सुख में कमी होगी। १ से ८ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी। शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से रोजगार संबंधी कार्यों की पूर्णता होगी। नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी। ९ से १५ के मध्य पारिवारिक एवं दाम्पत्य सुख अच्छा होगा। सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शत्रुओं के कारण चिंता ही अस्वस्थता का कारण होगी। १६ से २४ के मध्य विघटनकारी शक्तियों पर नियंत्रण होगा। मित्रों अथवा रिश्तेदारों से सहयोग मिलेगा। संपत्ति संबंधी विवाद हल होगा। मासांत में पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों पर धन व्यय होगा। वातावरण उत्साहवर्धक होगा। रक्त संबंधियों से सावधान रखें।

मीन : (दो, दू, थ, फ, दे, दी, च, ची)

विगत काल से चली आ रही समस्याओं का समाधान होगा। रोजगार संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन अथवा सत्ताधारी वर्ग के सहयोग से नवीन योजना की प्रगति होगी। पारिवारिक कार्यों पर धन व्यय होगा। नवीन मित्रों के समागम से प्रसन्नता तथा उत्साह रहेगा। १ से ८ के मध्य नवीन योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति होगी। शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ से संबंधित समस्याओं का समाधान होगा। ९ से १५ के मध्य शासन सत्ता अथवा राज्याधिकारी वर्ग के सहयोग से योजना में लाभ होगा। पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा। आध्यात्मिक कार्यों में झुकाव होगा। आत्म विश्वास बढ़ेगा। १६ से २४ के मध्य इच्छित स्थान की यात्रा होगी। प्रतिकूल वातावरण होने पर दैविक कृपा का सहयोग मिलेगा, संपत्ति विवाद पर व्यर्थ व्यय होगा। मासांत में औद्योगिक कार्यों के प्रति रुझान बढ़ेगा। आत्म-शक्ति से लंबित कार्य पूर्ण होंगे।

—ज्योतिषाचार्य
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल (म. प्र.)

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद अनथ बंधु पांजा

शहीद प्रद्योतकुमार भट्टाचार्य

'मिदनापुर के मजिस्ट्रेट' : भारत की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व होम देनेवाले क्रांतिकारियों की शौर्य गाथा । इसके लेखक श्री विनय जीवन घोष के दादा उपेंद्रनाथ घोष मिदनापुर में प्रसिद्ध वकील थे । उनके पिता श्री जैमिनी जीवन घोष ने भी मिदनापुर में वर्षों वकालत की । देश की स्वतंत्रता के संघर्ष में घोष-परिवार का प्रायः हर सदस्य जूझ पड़ा था । विनय जीवन घोष ने 'मर्डर ऑव ब्रिटिश मजिस्ट्रेट्स' नामक एक कृति में घोष-परिवार के त्याग, बलिदान और कष्टों की कहानी कही है । सार-संक्षेप में प्रस्तुत है, इसी कृति का सार ।

प्रस्तोता : ब्रजेश कुलश्रेष्ठ

मिदनापुर के मजिस्ट्रेट

● विनय जीवन घोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९०८। पूरे भारत में आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। देश में विप्लव की आग फैल चुकी थी। बंगाल के सपूतों में कुछ ज्यादा ही जोश था। लगता था, जैसे अंगरेजों को देश से बाहर निकाल कर ही दम लेंगे।

उन दिनों कलकत्ते में किंग्सफोर्ड नामक अंगरेज चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट था। उसने विप्लव को हर तरीके से दबाने की कोशिश की। लोगों पर तरह-तरह के अत्याचार किये। उन्हें अमानुषिक यातनाएं दीं। पर लोग तो सिर पर कफन बांधे घूम रहे थे — उनमें कुछ कर गुजरने की तमन्ना थी — वे भला क्यों इन यातनाओं की परवाह करने लगे। इन देश के दीवानों को ज्यों-ज्यों दबाया जाता त्यों-त्यों इनमें आक्रोश और जोश बढ़ता जाता था।

लोग किंग्सफोर्ड से नफरत करने लगे। उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा जाने लगा। विप्लवकारी उसका सफाया करने पर तुले हुए थे।

पर किंग्सफोर्ड बड़ा भाग्यशाली निकला। उसका तबादला ही हो गया। उसे बिहार के मुजफ़्फ़रपुर शहर का जिला सत्र न्यायाधीश नियुक्त कर दिया गया।

१९०८ की ३० अप्रैल थी। उस दिन मुजफ़्फ़रपुर में एक भयंकर बम विस्फोट हुआ था। योजना तो थी किंग्सफोर्ड की धज्जियां उड़ाने की, पर गलती से एक अन्य अंगरेज वकील केनेडी, उसकी पत्नी और पुत्री की धज्जियां उड़ गयीं। भाग्यशाली किंग्सफोर्ड उस दिन भी साफ बच गया।

बंगाल के मिदनापुर जिले की कहानी हम यहां से शुरू करते हैं। कौन थे वे लोग जिन्हें अंगरेज न्यायाधीश की हत्या की कोशिश थी? उनमें से एक था खुदीराम बोस और दूसरा था प्रफुल्ल चाकी। चाकी नहीं चाहता कि वह पुलिस के हाथों मारा जाए। अतः उ आत्महत्या कर ली। खुदी राम बोस पक गया।

खुदीराम बोस मिदनापुर का रहने व था। उसे हेमचंद्रदास ने बम बनाने प्रशिक्षण दिया था। विस्फोटक सामग्री तै करने के प्रशिक्षण के सिलसिले में हेमचंद्र को खासतौर से फ्रांस भेजा गया था। प्रशि के बाद वह मिदनापुर में ही बस गया

बम-षड्यंत्र की सारी रूपरेखा मिदनापु ही तैयार की गयी थी। हेमचंद्रदास ने शक्तिशाली बम तैयार कर मिदनापु सत्येंद्रनाथ बोस के घर में छुपा दिये मुजफ़्फ़रपुर के बम विस्फोट के बाद पुलि कलकत्ता और मिदनापुर में घर-घर त शुरू कर दी। जब तक पुलिस सत्येंद्रनाथ के घर पर पहुंची, तब तक उसकी बहन ने बमों को वहां से गायब कर दिया।

मिदनापुर बम षड्यंत्र के सिलसि पुलिस ने १५४ व्यक्तियों को गिरफ़्तार कि इनमें जमींदार, डाक्टर, इंजीनियर, व व्यापारी और न जाने कौन-कौन शामिल लेकिन मजिस्ट्रेट के सामने केवल २७ व्य को ही पेश किया गया बाकी को छोड़ गया। बाद में २४ व्यक्तियों को भी छोड़ सिर्फ तीन व्यक्तियों को ही हिरासत में रख जोग जीवन घोष, संतोष कुमार दास और नाथ मुखोपाध्याय।

कादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस ने संतोष कुमार दास को तरह-तरह की शारीरिक यातनाएं दीं। दमन चक्र पूरे पंद्रह दिन तक चलता रहा। पर संतोष टस से मस नहीं हुआ। न तो उसने क्रांतिकारियों के बारे में कुछ बतलाया और न वह सब कहने को राजी हुआ जो पुलिस उससे कहलवाना चाहती थी।

पुलिस के अफसर संतोष की मां बसंत कुमारी के पास पहुंचे। उसे धमकियां दीं कि अगर वह अपने बेटे को नहीं समझाएगी तो उसकी सारी संपत्ति जप्त कर ली जाएगी — उसके दोनों बेटों को भी गिरफ़्तार कर फांसी पर लटका दिया जाएगा।

मां-बाप का समझाना भी व्यर्थ गया। संतोष अडिग रहा। आखिरकार एक दिन पुलिस संतोष के बूढ़े पिता प्यारे मोहनदास को पकड़ कर ले गयी और संतोष के सामने ही उन्हें शारीरिक यातनाएं देना शुरू कर दिया। बूढ़ा शरीर इन यातनाओं से तड़प उठा। पूरे पांच सप्ताह पुत्र अपने पिता पर होते अमानुषिक अत्याचारों को देखता रहा। लेकिन जब यातनाओं की पीड़ा सीमा पार कर गयी, तब संतोष टूट गया। दूसरे अभियुक्त सुरेंद्र नाथ मुखोपाध्याय के सामने भी वैसा ही सब कुछ दोहराया गया। वह भी हार गया और उसने भी वह सब कुछ कहना स्वीकार कर लिया जो पुलिस कहलवाना चाहती थी।

अब तीसरे अभियुक्त जोग जीवन की बारी थी। वह अखाड़ों का बहुत शौकीन था। तलवार और लाठी चलाने में उसका जवाब नहीं था। यह सब कुछ उसने अपने गुरु अब्दुर रहमान से सीखा था। पुलिस ने अब्दुर रहमान को ढेर सारा धन का लालच दे अपनी ओर

शहीद मृगेन्द्रकुमार दत्त

मिला लिया। अब्दुर रहमान अपना ईमान खो बैठा। पुलिस के सामने उसने बयान दे दिये कि जोग जीवन ने उससे कहा था कि बम बनाने में वह उसकी सहायता करे। जोग जीवन यह भी कहा करता था कि हर सूरत में न केवल बम ही बनना चाहिए वरन बेस्टन की हत्या भी होनी चाहिए।

सारी आवश्यक कार्यवाही पूरी कर पुलिस ने तीनों अभियुक्तों को न्यायालय में पेश किया। न्यायाधीश स्मिथर ने जोग जीवन और संतोष कुमार दास को दस वर्ष और सुरेंद्र नाथ मुखोपाध्याय को ७ वर्ष की सजा सुना दी।

इस सजा के विरुद्ध तीनों अभियुक्तों ने कलकत्ता स्थित उच्च न्यायालय में अपील की। जोग जीवन के पिता हर कीमत पर अपने सबसे छोटे और प्रिय पुत्र को बचाना चाहते थे। कलकत्ते के सबसे बड़े वकील दसरथी सान्याल को मुकदमा लड़ने के लिए चुना गया। इसके अतिरिक्त मिदनापुर के कई प्रसिद्ध वकीलों को भी बुलाया गया।

कई दिनों तक ज़ोरदार जिरह होती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

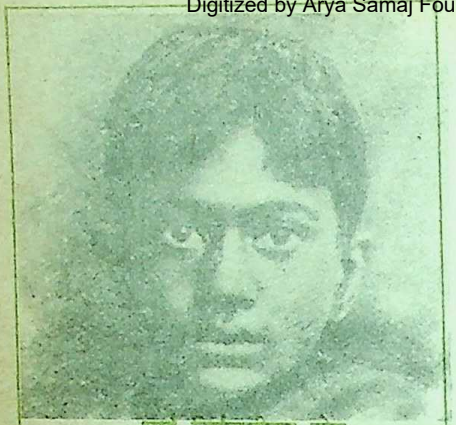

भाई निर्मलजीवन घोष

अंत में मुख्य न्यायाधीश लोरेंस को स्वीकार करना पड़ा कि दो अभियुक्तों — सुरेंद्र नाथ मुखर्जी और संतोष कुमार दास ने पुलिस के सामने जो कुछ कबूल किया है, वह पुलिस की जोर जबरदस्ती और कठोर यातनाओं के कारण किया है। जहां तक जोग जीवन का प्रश्न है वह कुल १६ वर्ष का है और स्कूल में पढ़ता है। अतः न तो वह किसी षड्यंत्र में शामिल होने लायक है और न लाठी और तलवार चलाने लायक। तीनों युवकों को छोड़ दिया गया और इस तरह मिदनापुर बम षड्यंत्र की इतिश्री हो गयी।

* * *

कुछ वर्षों तक सब कुछ यूं ही चलता रहा। सन् १९३० में भारत के स्वतंत्रता की लड़ाई की बागडोर गांधीजी के हाथों में आ गयी। पूरे देश में असहयोग आंदोलन और सत्याग्रह का संचालन गांधीजी करने लगे थे। सारे देश में नमक का कानून तोड़ा जा रहा था और जगह-जगह विदेशी कपड़ों की होली जलायी जा रही थी।

यह सब कुछ खेल मिदनापुर में भी खेला जा रहा था। गांधी की एक आवाज पर समूचा मिदनापुर जाग उठा था। लेकिन अंगरेज अपनी पूरी शक्ति से आंदोलन को दबाने में लगे हुए थे। उन दिनों मिदनापुर में जेम्स पैडी मजिस्ट्रेट था। निहत्थे लोगों पर लाठी बरसाना, उन पर गोली चलवाना उसके लिए मनोरंजन का साधन बन गया था। वह जब चाहे किसी के घर में आग लगवा देता और किसानों के खलियानों को जलवा देता। एक दिन तो उसने १४ निहत्थे किसानों को गोली से भुनवा दिया। हजारों बेकसूर लोगों से मिदनापुर की ज़ेल भर गयी थी। पर न तो आंदोलन शांत हो रहा था और न जेम्स पैडी का दमनचक्र। इन अमानुषिक दमक चक्रों के कारण लोग जैम्स पैडी से घृणा करने लगे थे।

उस दिन ७ अप्रैल सन १९३१ की शाम थी। जैम्स पैडी को मिदनापुर के कालेज में लगी एक प्रदर्शनी के समापन समारोह में भाग लेने जाना था। पैडी जब घर से निकला, तब पति-पत्नी ने पहले तो एक दूसरे को प्रेम और उत्साह से देखा फिर तब तक हाथ हिलाते रहे, जब तक दोनों एक दूसरे की नजरों से ओझल न हो गये।

पैडी प्रदर्शनी स्थल पर पहुंचा। अंगरक्षकों ने उसे चारों ओर से घेर रखा था। चप्पे-चप्पे पर पुलिस एवं जासूस मौजूद थे। एकाएक न जाने कहां से दो युवक आये और ठांय-ठांय कर पैडी के शरीर को छलनी कर गायब हो गये। लहुलुहान पैडी कटे पेड़ की तरह वहीं गिर पड़ा। घायल पैडी को घोड़ा गाड़ी में लिटाकर अस्पताल ले जाया गया। एक ओर मिदनापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्षितिज पर सूरज डूब रहा था तो दूसरी ओर पैडी अपने जीवन की अंतिम सांसें गिन रहा था। कुशल डॉक्टर पैडी को न बचा सके।

दो युवक जिस फुर्ती से प्रकट हुए थे, उसी फुर्ती से गायब भी हो गये। सब कुछ ही क्षणों में बीत गया। कौन थे वे साहसी युवक ? एकाएक वे कहां गायब हो गये ? कोई नहीं जान सका। लोग सिर्फ यही जान पाये कि उनमें से एक धारीदार भूरे रंग की कमीज पहने था।

आइए, हम भी इन दोनों युवकों के पीछे-पीछे भागते हैं। दोनों बेतहाशा भागते जा रहे थे। न जाने किस ओर। लेकिन उनकी दिशा उनके मन में तो निश्चित ही थी। एकाएक रास्ते में उन्हें एक साइकिलवाला मिला। वे नहीं पहचान सके पर साइकिलवाला पहचान गया। दोनों ने उसे साइकिल छीन ली और सवार हो तेजी से दौड़ लगाने लगे।

रात का अंधेरा पूरी तरह गाढ़ा हो चुका था। हालांकि दोनों अब खतरे से बाहर थे फिर भी वे पूरे सावधान थे। १५ मील साइकिल पर दौड़ने के बाद वे सालबोनी रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। रात का एक बज रहा था। साइकिल अंधेरे में छोड़ प्लेटफार्म पर गाड़ी की बाट देखने लगे। ठीक डेढ़ बजे रेलगाड़ी आयी। दोनों सवार हो कलकत्ते की ओर चल दिये।

धारीदार भूरे रंग की कमीज वाला युवक था जती जीवन घोष और दूसरा था विमल दासगुप्ता। दोनों की उम्र १६ साल की थी और मिदनापुर के कालेज में पढ़ते थे।

जती जीवन घोष— उसी जोग जीवन घोष के बड़े भाई का लड़का था जिसे सन् १९०८ में मिदनापुर बम षडयंत्र में पकड़ा गया था। जती

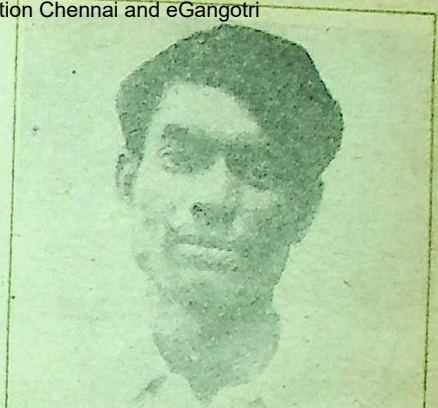

नाभा जीवन घोष

के पिता जैमिनी जीवन मिदनापुर के प्रसिद्ध वकीलों में से थे। उनका सबसे बड़ा पुत्र विनय जीवन मिदनापुर के कालेज में व्याख्याता था।

विमल कुमार दास के पिता थे कविराज अक्षय कुमार दास। वे भी मिदनापुर में ही रहते थे।

पैडी की हत्या के दिन जब दोनों लड़के देर रात तक भी घर नहीं पहुंचे तब दोनों के पिता संशकित हो उठे। उधर विजय जीवन के कानों में जब यह भनक पड़ी कि पैडी के हत्यारों में से एक युवक धारीदार कमीज पहने था तो उसे विश्वास हो गया कि उसका छोटा भाई जती जीवन ही होगा। उसी धारीदार कपड़े की कमीज विनय के पास भी थी। अतः सबसे पहले उसने अपने घर से नौकरों को विदा किया और फिर धारीदार कमीज टुकड़े-टुकड़े कर जला डाली, ताकि पुलिस को कोई सबूत न मिल सके।

जती का क्या किया जाए — पिता, पुत्र और माता इस समस्या पर विचार करने बैठ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता बोले, "जती का बाहर रहना ठीक नहीं है। अगर हमारे घर की तलाशी ली जाती है और पुलिस को घर में जती नहीं मिलता तो पुलिस इसी निर्णय पर पहुंचेगी कि हत्या में जती का ही हाथ है। अतः उसका वापस आना बहुत जरूरी है, इससे हमारा पक्ष मजबूत ही होगा।"

पर जती को लाया कैसे जाए यह भी एक समस्या थी। जती के बड़े भाई विनय ने जब जती को लाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली, तब मां भय से कांप उठी। आध घंटे तक वह सुबकती रही। फिर साहस बटोर कर बोली, ठीक है। मैं या तो अपने दोनों बेटों को खो बैठूंगी या पा जाऊंगी।"

कॉलेज की छुट्टियां थी। विनय जीवन ब्रिज खेलने का बहुत शौकीन था। उस दिन वह अपने मित्र के घर ब्रिज खेलने गया था। कुछ देर खेलने के बाद उसके पेट में दर्द उठा। वह वहां से चल दिया और सीधा स्टेशन जा पहुंचा। पेट के दर्द का तो महज बहाना ही था, ताकि कोई उसकी गतिविधि जान न सके। दूसरे दिन वह कलकत्ते जा पहुंचा। वहां से अपने मामा के घर धामासिन पहुंचा।

उधर मिदनापुर में जती और विनय की बाट देखी जा रही थी। विनय जब लौट कर घर पहुंचा, तब उसके साथ जती नहीं था।

मां बोली, जती नहीं आया ?"

" आ रहा है। वह अपने मामा के साथ आज रात को आ जाएगा।" विनय ने समझाया।

रात का इंतजार होने लगा। ठीक डेढ़ बजे लगा कि कोई घोड़ागाड़ी रुकी है। मां दौड़ी-दौड़ी दरवाजे तक पहुंची। अंधेरे में घूरा। भाई तो था पर जती उनके भी साथ नहीं था। ज गाड़ी रवाना हो गयी, तब मां ने ही पूछा, "ज कहां है।"

"अंदर घर में"

"क्या ?" आश्चर्य से मां बोली।

"हां ... हां ... वह अंदर ही है।" सब क इतनी सावधानी से किया गया है कि उस गा वाले तक को पता नहीं चल सका कि उस गाड़ी में दो सवारियां बैठकर आयी हैं। उ तो एक ही सवारी के पैसे लिये हैं।

जती अपने परिवार के साथ एक सप्ताह नहीं रह पाया। पुलिस उसे पकड़ कर ले गय

उन दिनों असगर अली थानेदार था। ज जती जीवन के पिता जेमिनी जीवन का मि था। दूसरे दिन उसने जेमिनी जीवन को थ बुलाया और दो पुरुष उनके सामने खड़े क दिये। दोनों के चेहरे कपड़े से ढके हुए थे

दोनों बोले, "हमने जती जीवन औ विमलदास को पैडी पर गोलियां चलाते दे है।"

असगर अली गर्व से बोला, सुन रहे दादा, ये लोग क्या कह रहे हैं। अब भी मैं है। आप अपने बेटे को समझा दीजिए कि चुपचाप सब कुछ कबूल कर ले।"

जैमिनी जीवन बोले, "असगर मियां, पुर्ज वकील हूं। सब जानता समझता हूं। ये दो पुलिस के आदमी हैं और रटे रटाये शब्द बो रहे हैं।"

असगर अली निराश हो उठा।

कुछ दिनों के बाद असगर अली ने जेमि जीवन को पुनः थाने बुलाया। अब की ब असगर के साथ सी.आई.डी. के अफसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। एक अफसर बोला, "आप अपने बेटा को समझाइए। उसे कहिए कि अगर वह बचना चाहता है तो सच सच बतला दें।"

जेमिनी जीवन अपने पुत्र से मिलने को तैयार हो गये।

पिता और पुत्र आमने सामने खड़े थे। दोनों अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे। पिता बोले, "बेटे, ऐसी कोई बात मत कह देना जिसे दूसरों के बेटों का जीवन खतरे में पड़ जाए। अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं सारे शहर में मुंह नहीं दिखा सकूंगा।"

थानेदार असगर बौखला उठा, बोला, क्या मैंने आपको यह सब कुछ कहने के लिए बुलाया था ?"

जैमिनी जीवन बोले, असगर अली, एक बाप को अपने बेटे से क्या कहना चाहिए क्या यह सब कुछ पुलिस मुझे सिखाना चाहती है।"

पुलिस को जती जीवन के खिलाफ कोई सबूत ही नहीं मिल रहा था। हारकर उसे जमानत पर छोड़ना पड़ा।

दूसरे युवक विमल दास गुप्ता का अभी तक कहीं अता-पता नहीं था। पुलिस द्वारा भारी पुरस्कार की घोषणा के बावजूद विमल कहीं नहीं मिल पाया।

एक दिन पुलिस को पता चल गया कि विमल मिदनापुर में आ गया है और अपने भाई के घर में छुपा बैठा है। पुलिस तुरंत उसके मकान पर जा धमकी। लेकिन विमल पीछे के दरवाजे से खिसक गया। पिंजड़े से पक्षी फिर उड़ गया।

पुलिस ने सारे शहर को छान मारा। स्टेशन पर कड़ी निगरानी रखी जाने लगी। पर विमल का कोई पता नहीं चला। कभी-कभी तो पुलिस को बड़ी हास्यास्पद स्थिति का सामना करना पड़ता था।

एक बिहारी दूधवाला अपनी नयी नवेली पत्नी को लेकर कहीं जा रहा था। रेलगाड़ी आने में देरी थी। पुलिस को दूधवाले पर ही संदेह हो गया। एक सिपाही बोला, "कौन है तू ?"

"दूधवाला", सकपकाता हुआ बिहारी बोला

"क्या नाम है तेरा",

"रघुया गोआला"

"कहां जा रहा है ?"

"अपने गांव"

"ये कौन है तेरी"।

"घरवाली, सरकार"

सिपाहियों ने एक कड़ी निगाह घूंघट में बैठी गठरी बनी स्त्री पर डाली और चलते बने।

दूधवाला तो सही था, पर उसकी पत्नी और कोई नहीं विमल दास गुप्ता था। पुलिस की आंखों में धूल झोंककर विमल कलकत्ते जा पहुंचा।

पर यहां भी उसे चैन नहीं मिला। कलकत्ते में एक और दुर्घटना हो गयी।

कलकत्ते में यूरोपीय समाज का एक संगठन था। विलियर्स इसके अध्यक्ष थे। २९ अक्तूबर सन १९३१ को क्लाइव स्ट्रीट स्थित एक विशाल भवन के ऊपरी मंजिल पर बैठक हो रही थी। २, ४ अंगरेज ही बैठक में भाग ले रहे थे।

एकाएक एक चपरासी कमरे में घुसा और बोला, "एक लड़का आपसे मिलना चाहता है।"

"क्यों", विलियर्स ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां—प्रवस रंजनी घोष

"नौकरी के सिलसिले में ।"

"कौन है ?"

"पता नहीं, कोई मुसलमान है।"

"भेज दो अंदर", विलयर्स ने कहा।

टोपी पहने जैसे ही वह मुसलमान युवक अंदर आया दनादन गोलियां चलनी शुरू हो गयी। विलियर्स मेज के नीचे घुस गया। अन्य व्यक्तियों ने मुसलमान युवक को दबोच लिया।

मुसलमान युवक और कोई नहीं विमल दास गुप्ता था। पैडी की हत्या के मामले में, सबूत न होने के कारण, विमल साफ बच गया, लेकिन विलियर्स की हत्या के प्रयत्न के मामले में उसे १० वर्ष की सजा सुना दी गयी।

जेम्स पैडी की हत्या के बाद रोबर्ट डगलस, आई.सी.एस. को मिदनापुर का मजिस्ट्रेट बना कर भेजा गया। डगलस शांत स्वभाव का व्यक्ति था। उसे शराब और पुस्तकों का बेहद शौक था। एक तरह से इन्हीं में डूबा रहता था। कार्यालय वह कभी-कभी ही जाता था। अकसर अपने बंगले में ही बंद रहता था। बंगले में भी नहीं वरन आहाते में एक टेंट लगवा रखा था, ज्यादातर समय वहीं उसी में गुजारता था।

हथियार बंद अंगरक्षक हमेशा उसके चारों ओर तैनात रहते थे। पहरा इतना कड़ा था कि कोई उसके बंगले में नहीं आ सकता था। अगर कोई बंगले में प्रवेश कर भी गया तो उसके पास तक नहीं पहुंच सकता था।

३० अप्रैल, १९३२ की शाम थी। ६ बज रहे थे। डगलस मिदनापुर जिला मंडल की बैठक की अध्यक्षता कर रहा था। न जाने कहां से और कैसे दो युवक डगलस के दोनों ओर प्रकट हुए और दनादन गोलियां चलाने लगे। डगलस के पांच गोलियां लगीं। शरीर छलनी हो गया था। अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया।

दो युवकों का साहस तो देखिए कि अंगरक्षकों और पास खड़े सब डिवीजनल आफीसर जॉर्ज, आई.सी.एस. को चकमा देकर सीधे डगलस के पास जा पहुंचे और डगलस का काम तमाम कर भाग उठे।

दो सौ गज साथ-साथ दौड़ने के बाद दोनों ने अलग-अलग दिशाओं की राह पकड़ ली। एक तो सही सलामत अपने घर पहुंच गया। लेकिन दूसरे की पिस्तौल दगा दे गयी। जार्ज इसे भांप गया और पीछे-पीछे भागने लगा। जॉर्ज के साथ सिपाही भी भागने लगे। ५०० गज भी नहीं दौड़ पाया होगा कि बेचारा पकड़ा गया।

कौन थे वे साहसी युवक जिन्होंने हथेली पर जान रख और सर पर कफन बांध कर अंगरेज सरकार का एक और स्तंभ धराशायी कर डाला। एक का नाम था प्रद्योत कुमार भट्टाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूसरे का नाम था प्रोबंग्स कुमार पॉल। दोनों की उम्र बीस साल से कम थी। इन दो युवकों में से प्रद्योत कुमार तो पकड़ा गया, पर प्रोबंग्स कुमार सीधा कलकत्ता जा पहुंचा।

पुलिस इन क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर लगातार नजर रखे हुए थी। प्रोबंग्स को कलकत्ते में गिरफ़्तार कर लिया गया। उसे मिदनापुर लाया गया, पर उसे कोई नहीं पहचान सका। अतः उसे छोड़ दिया गया। प्रद्योत कुमार पर मुकदमा चलाया गया। उसे फांसी की सजा सुना दी गयी। १२ अप्रैल, सन् १९३२ को यह साहसी बालक मिदनापुर के कारागार में फांसी के फंदे पर हंसता-खेलता झूल गया।

इस तरह डगलस प्रकरण भी समाप्त हो गया।

***

डगलस के बाद बी.ई.जे. बर्ज नामक अंगरेज को मिदनापुर का मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। वह भी आई.सी.एस. था। बर्ज मिदनापुर के लिए नया नहीं था। उसने अपनी पहली नौकरी यहीं से शुरू की थी।

बर्ज को फुटबाल खेलने का बेहद शौक था। यद्यपि बर्ज इतना सख्त अफसर नहीं था, लेकिन पुलिस सुपरिंटेंडेंट ईवांस लोगों को 'सबक सिखाने' में विश्वास करता था। ईवांस के कारण बर्ज को भी सख्ती बरतनी पड़ती थी।

उस दिन मिदनापुर में बंगाल के गवर्नर सर जान एंडर्सन आये थे। उनके आगमन पर वहां दरबार लगाया गया था। अपने भाषण में एंडर्सन बोला, "लगता है कि मिदनापुर के आततायियों ने हमें चुनौती दी है कि वे किसी भी ब्रिटिश मजिस्ट्रेट को जीवित नहीं छोड़ेंगे। सरकार इस चुनौती को स्वीकार करती है। शहर में सेना तैनात कर दी गयी है। अगर आततायी अब भी नहीं मानेंगे तो उन्हें सेना द्वारा कुचल दिया जाएगा।"

मिदनापुर का नया मजिस्ट्रेट बर्ज पास बैठा स्वीकारोक्ति में अपना सिर हिलाता रहा।

मिदनापुर में तैनात सैनिकों ने आतंक फैला रखा था। लोग घरों को छोड़कर भागने लगे थे। मिदनापुर धीरे-धीरे वीरान-सा लगने लगा था।

फुटबाल के शौकीन बर्ज ने फुटबाल खेलना नहीं छोड़ा था। २ सितम्बर १९३३ का दिन था। उस दिन बर्ज शाम को टाउन क्लब की ओर से फुटबाल खेलने गया था। मैदान के पास जैसे ही कार से उतरा, न जाने कहां से दो युवक दौड़े-दौड़े आये और बर्ज पर गोलियां बरसाने लगे। फुटबाल का खिलाड़ी फुटबाल के मैदान में लुढ़क गया। ब्रिटिश नौकरशाही का तीसरा मजबूत स्तंभ भी ढह गया।

अपना काम समाप्त कर दोनों युवक भागने लगे पर अंगरक्षकों ने दनादन गोलियां चलाना शुरू कर दिया। पहला युवक वहीं ढेर हो गया दूसरा अस्पताल में मर गया।

पहले युवक का नाम था अनाथ बंधु पांजा और दूसरे का नाम था मृगेंद्र कुमार दत्त। दोनों मिदनापुर के एक कालेज में पढ़ते थे। दोनों बीस बरस से कम आयु के युवक थे।

बर्ज की हत्या के बाद सैनिकों ने सारे शहर में कहर बरपा दिया। घरों की तलाशी लेने का उनका अपना अलग तरीका था। वे घरों के दरवाजे खुलवाते नहीं थे वरन तोड़ डालते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

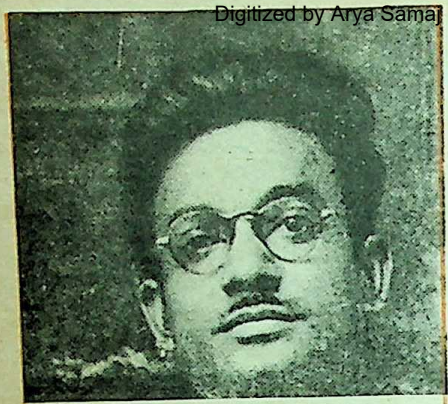

भाई—जती जीवन घोष

सैनिकों के बर्बर अत्याचारों से मिदनापुर की जनता परेशान और आतंकित हो उठी थी।

जैमिनी जीवन घोष—जिसका पूरा परिवार विप्लव के यज्ञ में कूद पड़ा था। तलाशी के दौरान सैनिकों ने सुबह चार बजे से ही इनके मकान का दरवाजा तोड़ना शुरू कर दिया था। भारी भरकम बूट पहने आधा दर्जन सैनिक मकान में घुस पड़े थे। जैमिनी जीवन का सारा परिवार भयभीत हो कमरे के एक कोने में जमा हो गया था। सैनिक जेमिनी जीवन की पत्नी की ओर बढ़ा। पत्नी साहसपूर्वक तुरंत बोली, "तुम्हारे घर में भी तुम्हारी मां होगी। मैं भी एक मां हूं—ठीक तुम्हारी मां की तरह। मैं अपने बच्चों को अपने सामने पिटते हुए नहीं देख सकती। अगर पीटना हो तो पहले मुझे मारो, पीटो। अगर मेरे बड़े लड़के को ही सबक सिखाना चाहते हो तो उसे मेरी निगाह से दूर ले जाओ और जो चाहो सो करो।"

एक-दो क्षण तक सैनिक शांत खड़े रहे। एक बोला, "हम तुम्हें नहीं छुएंगे और न तुम्हारी बेटियों को। अगर हमारा साहब कह देगा तो हम आपके लड़कों से भी कुछ नहीं कहेंगे।"

सैनिकों ने किसी को भी हाथ नहीं लगाया, पर सारे घर को उजाड़ कर जरूर रख दिया। बर्तन, चूल्हा, कप, प्लेट, मेज, कुर्सी, किताबें, आल्मारियां, तकिये, स्टोव, हारमोनियम, टंगी तस्वीरें...कोई भी चीज ऐसी नहीं छोड़ी, जिन्हें तहस-नहस न कर डाली हो।

मिदनापुर शहर से लोगों का पलायन लगातार बढ़ता चला जा रहा था। सैकड़ों परिवार घर छोड़ कर जा चुके थे। जेमिनी जीवन घोष भी अपने परिवार के साथ मिदनापुर छोड़ने को तैयार हो गये थे। सबसे बड़े लड़के विनय जीवन को भी अपने साथ ले जाना चाहते थे। एक रात प्रिंसिपल ने विनय जीवन को बुलाया और कहा, "तुम इस कॉलेज में लेक्चरार हो, इसलिए तुम्हें गिरफ़्तार नहीं किया जा रहा है। जैसे ही तुम नौकरी छोड़ दोगे पुलिस पकड़ कर ले जाएगी।"

विनय ने सारी स्थिति अपने माता-पिता को समझा दी। वे नहीं चाहते थे कि उनके बड़े बेटे को भी पुलिस गिरफ़्तार करके ले जाए। काफी सोच-विचार के बाद यही तय किया गया कि विनय मिदनापुर में रहेगा और शेष परिवार मिदनापुर छोड़ कर चला जाएगा। यही हुआ। विनय जीवन मिदनापुर में अकेले ही रह गये।

विनय जीवन का अकेला रहना उसके लिए दुखदायी हो गया। उनके पूरे परिवार का नाम क्रांतिकारियों की सूची में आ चुका था। ऐसे क्रांतिकारियों से जो भी संबंध रखता था उसे या तो नौकरी से निकाल दिया जाता या गिरफ़्तार कर लिया जाता या मिदनापुर छोड़ देना पड़ता था। क्रांतिकारियों को शरण देकर या उनसे संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखकर कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। ऐसे आड़े वक्त पर विनय के वरिष्ठ मित्रों और रिश्तेदारों ने भी साथ छोड़ दिया। जिन लोगों के साथ वे दिन रात रहते थे, ब्रिज खेलते थे—उन्होंने भी विनय के लिए अपने घर के दरवाजे बंद कर दिये। विनय एकाकी जीवन बिताने लगा था।

घर-घर तलाशी का काम दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। यहां तक कि स्कूल और कालेजों को भी नहीं छोड़ा जा रहा था। शारीरिक यातनाएं देना आम बात हो गयी थी।

मिदनापुर में जब पूजा की छुट्टियां हुईं, तब विनय जीवन अपने माता-पिता के पास ननिहाल चले गये। वहां उन्हें मिदनापुर के जिला मजिस्ट्रेट का आदेश मिला कि आगे आदेश होने तक वे मिदनापुर की सीमा में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। इन आदेशों के १५ दिन ही बाद कालेज से एक आदेश और मिला, जिसके अनुसार उन्हें व्याख्याता के पद से बरखास्त कर दिया गया था।

दिसम्बर १९३३ को एक विशेष ट्रिब्यूनल का गठन किया गया। इस ट्रिब्यूनल में एच.जी. वेट आई.सी.एस., टी.एन. वसु और ए.पी. घोष को जज नियुक्त किया गया। इस ट्रिब्यूनल के समक्ष ब्रिटिश मजिस्ट्रेटों की हत्या के षड्यंत्र में शामिल होने वाले १३ व्यक्तियों की सूची पेश की गयी थी। इनमें से जेमिनी जीवन घोष का चौथा बेटा निर्मल जीवन घोष भी शामिल था।

१० फरवरी, सन् १९३४ को इस ट्रिब्यूनल ने फैसला सुना दिया। तीन युवकों—निर्मल जीवन घोष, ब्रज किशोर चक्रवर्ती और रामकृष्ण राय को फांसी की और चार को आजन्म कैद की सजा सुना दी गयी। शेष को निर्दोष करार दे छोड़ दिया गया।

जैमिनी जीवन के एक पुत्र विनय जीवन को नौकरी से निकाल दिया गया था। दूसरा बेटा जती जीवन पैडी की हत्या के मामले में जेल में था। तीसरे बेटे को फांसी की सजा सुना दी गयी। परिवार पर जैसे मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। इस शोकाकुल परिवार को ढाढस बंधानेवाला कोई नहीं था। अगर कोई संवदेना प्रकट करने आता तो उस पर या तो कड़ी निगाह रखी जाने लगती या उसे गिरफ़्तार कर लिया जाता। आपस में ढांढस बंधाने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

फांसी की सजा की अपील कलकत्ता स्थित उच्च न्यायालय में की गयी। फांसी की सजा आजन्म कारावास में बदल जाए—यही पर्याप्त था और इसी की कोशिश भी की जा रही थी। इसके लिए एक कुशल वकील की तलाश थी। एच.डी. बोस ही एक मात्र ऐसे वकील थे, जिनकी इज्जत उच्च न्यायालय के सारे न्यायाधीश भी करते थे। ऐसे ही वकील की जरूरत थी। लेकिन कठिनाई यह थी कि वे सिविल मामलों के ही वकील थे। काफी सोच-विचार के बाद श्री बोस बचाव पक्ष की ओर से खड़े होने के लिए तैयार हो गये।

श्री बोस, विनय जीवन के चाचा जोग जीवन, जिन्हें १९०८ में मिदनापुर बम कांड में गिरफ़्तार किया गया था, और दादा श्री उपेन्द्र नाथ घोष के परममित्र भी थे। अतः वे विनय जीवन से बोले, "बेटे, तुम फांसी की चिंता मत करो। यह मुकदमा मैं बिना फीस के ही लड़ूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन दिनों मन्मथनाथ मुखर्जी बंगाल के मुख्य न्यायाधीश थे। यह सोचा गया था कि अगर उनकी अध्यक्षता में बैंच बनती है तो शायद तीनों अभियुक्तों को फांसी की सजा से बचाया जा सकता है। लेकिन प्रश्न था कि उन तक पहुंचा कैसे जाए ? इसके लिए एक अन्य जज रामा प्रसाद मुखर्जी को चुना गया।

विनय जीवन उनके घर जा पहुंचा। उस समय वहां कुछ लोग बैठे थे। विनय जीवन ने बिल्कुल अकेले में बात करने का अनुरोध किया। विनय जीवन, रामा प्रसाद मुखर्जी के लिए बिल्कुल अनजान व्यक्ति था। कुछ क्षण तक रामा प्रसाद मुखर्जी कुछ सोचते रहे और फिर वे विनय को अंदर कमरे में ले गये। सब कुछ कह लेने के बाद विनय बोले, "मुझे आशा है कि मुख्य न्यायाधीश सर मन्मथनाथ मुखर्जी अवश्य इन तीनों युवकों को मौत से बचा लेंगे।"

श्री रामा प्रसाद मुखर्जी को भी पूरी आशा थी। अतः वे बोले, "मुझे भी लगता है कि जस्टिस महोदय अवश्य सहायता करेंगे। मैं उनसे आज ही बात कर लूंगा।"

अभी घेराबंदी पूरी नहीं हुई थी। सरकारी वकील से भी बात करनी थी कि वह मृत्य दंड पर ज्यादा जोर न दे। अतः उस पर भी सिफारिश पहुंचायी गयी।

जैमिनी जीवन और उनका सारा परिवार पूरी तरह आश्वस्त हो गया था कि अब तो उनके बेटे के अतिरिक्त दो और युवक फांसी की सजा से मुक्त हो जाएंगे।

इस मुकदमे को सुनने के लिए तीन जजों की बैंच बनायी गयी। तीनों जज अंगरेज ही थे। अगस्त १९३४ में सुनवाई शुरू हुई। पूरे ११ दिन तक सुनवाई चलती रही। लेकिन कुछ नहीं हुआ। सारी मेहनत बेकार गयी। जजों ने अपील नामंजूर कर दी और फांसी की सजा को बहाल रखा।

मिदनापुर के कारागार में एक मनहूस प्रातःकाल की बेला में बंगाल के इन तीनों युवक देशभक्तों को फांसी लगा दी गयी। तीनों अभियुक्त खुशी-खुशी फांसी के तख्ते पर झूल गये और छोड़ गये अपने पीछे एक ऐसा इतिहास जिसे पढ़कर उनके आगे आनेवाली पीढ़ी प्रेरणा लेती रहे।

"मैंने एक गरीब परिवार में जन्म लिया है लेकिन माता-पिता और भाईयों से मुझे जो अटूट प्यार मिला है वह शायद किसी बादशाह के बेटे को नसीब नहीं होगा।" ये थे निर्मल जीवन के अंतिम शब्द, जिन्हें सुनकर उसके माता-पिता और भाई बिलख-बिलख कर रो उठे थे।

घोष परिवार अपने पुत्र के बिछोव के दुःख से उभर भी न पाया था कि एक कहर और बरस पड़ा। उनका चौथा बेटा नामा जीवन थाने में नजरबंद था। बंगाल के सैकड़ों युवक कई वर्षों से बिना किसी मुकदमे के नजरबंद थे। इन बेकसूर युवकों को भयानक शारीरिक यातनाएं दी जाती थीं।

२३ सितंबर १९३६ का दिन था। रात के ११ बजे थे। विनय जीवन घोष अपने कमरे में पुस्तक पढ़ रहे थे। शेष परिवार सो रहा था। एक व्यक्ति साइकिल पर आया और जोर-जोर से बोलने लगा, "नामा जीवन घोष का यही मकान है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, कहिए क्या काम है ?" विनय ने पूछा।

"गोपालगंज थाने में नजरबंद नामा जीवन ने कल रात आत्महत्या कर ली है।"

"क्या कह रहे हो ?" और विनय नीचे उतर आये।

पिता जेमिनी जीवन भी जाग गये थे। वे भी बाहर आ गये।

एक पुलिस का आदमी जो सादे लिबास में था पुनः बोला, "मैं सही खबर दे रहा हूं। नामा जीवन ने आत्महत्या कर ली है।"

"आखिरकार मेरे बेटे ने अपने आपको नजरबंदी से मुक्त कर ही लिया", पिता जेमिनी जीवन कांपते स्वर में बोले और फिर उनकी आंखों से अविरल आंसुओं की धारा बह उठी।

अपने छोटे भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर विनय जीवन भी हिल उठे थे। वे असहाय से हो रहे अपने पिता का दुख नहीं देख सके। वे बदहवास से हो यहां-वहां पूरी गली में चक्कर लगाते रहे। कुछ समय के बाद साहस बटोर कर उन्होंने अपने आपको संयत किया। इस कठिनाई की घड़ी में इसके सिवाय और कोई चारा भी नहीं था।

दूसरे दिन पिता और पुत्र प्रातः १० बजे की गाड़ी से गोपाल गंज के लिए रवाना हो गये। वे सीधे थाने पहुंचे। थानेदार बोला, "नामा जीवन ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या से पहले उसने दो पत्र लिखे थे। एक सरकार और दूसरा अपने पिता को। दोनों पत्र सब डिवीजनल आफीसर के पास हैं।"

पत्रों को देखने दोनों सब डिवीजनल के बंगले पर पहुंचे। लेकिन उसने पत्र देने से साफ

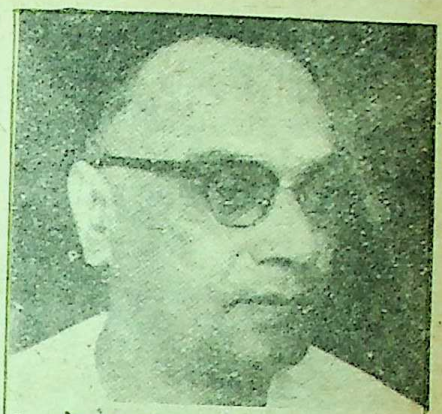

लेखक—विनय जीवन घोष

इनकार कर दिया। पिता बोले, "अगर आप उन खतों को दे नहीं सकते तो कम से कम देख तो लेने दीजिए।"

"यह भी संभव नहीं है।" एस.डी.ओ. कठोर स्वर में बोला।

पिता निराश हो वहां से चल दिये। गोपालगंज के युवकों में जोश था। उन्होंने नामा जीवन के पिता और भाई की भरपूर सहायता की। लोगों से मिलवाया। लोगों से बातचीत के दौरान यह पता चला कि नामा जीवन और सिपाहियों में अकसर झगड़ा हो जाता था। सिपाही कभी-कभी नामा जीवन की निर्ममता से पिटाई भी कर डालते थे।

नामा के पत्रों को न दिखाना और उसे मारना पीटना—ये दोनों बातें इस शंका के लिए पर्याप्त थीं कि नामा ने आत्महत्या नहीं की वरन् उसे बुरी तरह मारा पीटा गया है और इसी कारण उसकी मृत्यु हुई है।

पोस्ट मार्टम के बाद नामा जीवन का मृत शरीर भाई को सौंप दिया गया। उन्हीं को उसका अंतिम संस्कार करना था। विनय ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा हटाकर जब अपने भाई का मृत शरीर देखा तो धक् से रह गये। लग रहा था कि जैसे उसे बुरी तरह पीटा गया हो। जगह-जगह गहरे घाव और चोट के निशान थे। चेहरा बिलकुल विकृत हो गया था।

अंतिम बार पिता भी अपने पुत्र को देखना चाहते थे। विनय जीवन जानते थे कि पिता इस भयंकर दृश्य को नहीं देख सकेंगे। अतः उन्होंने नामा के मृतक शरीर को नहीं देखने दिया। बोले, "अब आपके नामा जीवन में शेष रह ही क्या गया है। आप अगर देखेंगे तो बेहोश हो जाएंगे। आप मत देखिए।"

लोग पिता को अलग ले गये। नामा जीवन घोष का अंतिम संस्कार कर दिया गया। और इस प्रकार एक वीर के कालजयी पुत्र भी देश की बलिवेदी पर बलिदान हो गया।

नामा जीवन के बाद कई नजरबंद कैदियों ने 'आत्महत्या' कर ली थी। इन तथाकथित आत्महत्याओं के कारण सारे बंगाल में रोष छा गया था। विनय जीवन भी विचलित हो उठे थे। वे सोचने लगे कि अगर स्थिति यही रही तो न जाने कितने नजरबंदियों को बेकसूर मार डाला जाएगा।

उन्हीं दिनों शिमला में विधान परिषद की बैठक हो रही थी। यह तय किया गया कि परिषद के सदस्यों से मिलकर विधान परिषद में स्थगन प्रस्ताव लाया जाए। विनय जीवन शिमला जा पहुंचे और कई प्रांतों के सदस्यों से

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (३२, २३), २. पुष्कर (राजस्थान), ३. बैंक ऑव कलकत्ता (१८०६ ई.)-१८०९ में बैंक ऑव बंगाल स्थापित, ४ बिहार (४९.५ प्रतिशत), मध्यप्रदेश ४६.२ प्रतिशत), उत्तर प्रदेश ४०.३ प्र.श.)— देश की कुल ३७ प्रतिशत आबादी गरीबी-रेखा के नीचे (ग्रामीण ३९.९ प्र.श.), शहरी— २७.७ प्र.श.), ५. १९ करोड़ ४० लाख हेक्टेयर खेती-योग्य, १६ करोड़ २० लाख में खेती होती है, ६. साढ़े ११ करोड़, कृषि-श्रमिक २५ प्रतिशत, ७. ६.२ अरब, १९६० में ३ अरब, १९८० में ४.८ अरब, ८. अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार (बैंक ऑव स्वीडन द्वारा उसकी ३५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में १९६८ ई. में स्थापित), १९८७ का पुरस्कार अमरीकी अर्थशास्त्री राबर्ट सोलो को आर्थिक विकास में प्रौद्योगिकी प्रगति की भूमिका के लिए प्रदत्त, ९. जिम लेकर (इंग्लैंड), अप्रैल १९८६ में मृत्यु, १०. गत वर्ष दो ब्रिटिश महिलाओं, हेलेन डायमेंटाइड्ज (२२ वर्ष) तथा एलिसन राइट (२२), ने खुंबू हिमखंड (ग्लेशियर) से काठमांडू तक २५६ कि.मी. का मार्ग ३ दिन १० घंटे ८ मिनट में दौड़कर पार किया (इससे पूर्व ५ नेपाली शेरपाओं द्वारा ४ दिन १३ घंटे का रेकार्ड था), ११. डा. नगेन्द्र सिंह (अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, हेग के न्यायाधीश), १२. कछुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क कर सारी दर्दनाक स्थिति समझायी। विनय जीवन भूलाभाई देसाई से भी मिले और स्थगन प्रस्ताव के लिए अनुरोध किया।

सब कुछ सुन लेने के बाद भूलाभाई देसाई बोले, "यह तो बड़ा महत्त्वपूर्ण मामला है। मैं आज ही स्थगन प्रस्ताव रखूंगा।"

उस दिन स्थगन प्रस्ताव रखा भी गया। सर एन.एन. सरकार उन दिनों परिषद के नेता थे। उन्होंने हाउस को आश्वासन दिया कि कलकत्ता पहुंच कर वे इसकी जांच कराएंगे। लेकिन इन आश्वासनों के शब्दों के बाद कुछ भी सुनायी नहीं पड़ा। न जांच हुई और न नजरबंदियों की 'आत्महत्याएं' रुकीं। देश की एक से एक बेशकीमती जानें यूं ही नष्ट हो रही थीं।

प्रसिद्ध कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर उन दिनों अखिल भारतीय सिविल लिबर्टीज यूनियन के अध्यक्ष थे। प्रांत के संपूर्ण नजरबंदियों और आत्महत्याओं के मामले उनके सामने रखे गये और अनुरोध किया गया कि वे इन बेकसूर युवकों को छुड़वाने के लिए अपनी आवाज उठाएं। २२ नवम्बर १९३६ को कवीन्द्र ने प्रेस के लिए एक स्टेटमेंट जारी कर दिया कि नजरबंदी का तरीका ही बिल्कुल गलत है। इससे मनुष्य की आत्मा और शरीर दोनों ही समाप्त हो जाते हैं इस प्रकार की कैद से न जाने कितने बेकसूर युवकों का जीवन नष्ट हो गया है और न जाने कितने परिवार उजड़ चुके हैं।'

पंडित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे। जब वे कलकत्ता आये, तब उनके सामने भी सारा मामला रखा गया। वे बोले, लंदन में कृष्ण मेनन हमारा आदमी है। सब बातें लिखकर उन्हें भेजो। वे वहां अवश्य संघर्ष करेंगे और अपने पक्ष में लोगों की राय भी कायम करेंगे।"

उन दिनों कलकत्ता स्थित बिड़ला भवन में सी.एफ. एंड्रयूस भी ठहरे हुए थे। विनय जीवन ने रवीन्द्र नाथ ठाकुर के आदेश से नजरबंदियों का सारा मामला उनके सामने भी रखा। एंड्रयूस बोले, "इस स्थिति से गुरुदेव भी बेहद विचलित हैं। यह तय किया गया है कि मैं स्वयं जाकर वहां के संसद सदस्यों से मिलूं और चर्चा करूं। लेकिन पहले यह बतलाइए कि नजरबंदियों के मामले में आपकी क्या राय है।"

विनय जीवन बोले, "स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। इन बेकसूर लोगों को बिना किसी मुकदमे के जेल में सड़ते-सड़ते सात साल बीत रहे हैं। अब प्रश्न इन पर मुकदमा चलाने का रह ही नहीं जाता। हम तो यह चाहते हैं कि इन्हें बिना किसी शर्त छोड़ दिया जाए।"

एंड्रयूस शांत गंभीर हो आंखें मूंद कर सब कुछ सुनते रहे और फिर आश्वासन दिया कि वे इंग्लैंड में अपने मित्रों से इस बारे में अवश्य चर्चा करेंगे। हमें इस संबंध में कुछ न कुछ जरूर करना चाहिए।

नजरबंदियों के मामलों पर दो वर्ष तक विचार होता रहा। आखिरकार १९३८ में बंगाल के कई नजरबंदियों को रिहा कर दिया गया। इनमें जती जीवन घोष भी था जिसे १९३३ में गिरफ़्तार किया गया था।

१९३९ में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया। इधर देश में स्वतंत्रता आंदोलन ने भी जोर पकड़ लिया। हिंदुस्तान की जेलें फिर भरी जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगीं। १९४९ में जती जीवन और विनय जीवन को फिर गिरफ़्तार कर लिया गया।

जिस मां ने अपने दो बेटे देश पर न्यौछावर कर दिये थे, वह पुनः फफक उठी और बोली, "जब तक तुम लौटोगे मैं शायद जिंदा नहीं रहूंगी।"

बड़ा हृदयविदारक दृश्य था। विनय जीवन ने मां को ढांढस बंधाया। बोले, "मां, कितने वर्षों से तुम कठिनाइयों और पीड़ा के झंझावात में से गुजर रही हो। सब कुछ तुमने सहा है। अब क्यूं इतना टूट रही हो। मैं समझता हूं आज भी तुम वही बहादुर मां हो—जैसी हमेशा से रही हो।"

बंगाल के नौजवानों के और कई वर्ष जेल में बीत गये। १९४५ में विनय जीवन को १९४६ में जती जीवन को कारागार से मुक्त दिया गया। १५ अगस्त १९४७ को भारत राजनैतिक स्वतंत्रता मिली। वह दिन जीवन की मां के लिए गर्व का दिन था। दिन उसकी एक आंख में आंसू और आंख में हर्ष और विजय का उल्लास था। मां के दो पुत्र निर्मल जीवन और नामा उस आजादी के दिन को देखने और जश्न खुशी में सम्मिलित होने के लिए जीवित थे। लेकिन मां के आंसू और अपार यातना जो उसने भोगी थीं—वे सब व्यर्थ गयीं—भारत आखिरकार एक स्वतंत्र देश गया।

हंसिकाएं

सभ्यता

पश्चिमी सभ्यता में रंगे
युवकों को, डिस्को करते देखकर
संस्कृत का प्राध्यापक ऊब गया
बोल उठा ... सूर्य को भी देखो
पश्चिम में ढला तो डूब गया

नकद

न शक्ल सूरत है न कद है
बेटा फिर भी रुपया नकद है

महामारी

मक्खियां यही सिद्ध करने पर तुली हैं
दूध से निकाल फेंको तो भी
वे तो दूध धुली हैं

विलोम

यह कैसी विपरीत प्रतिक्रिया
तुमने जलाया
दिल बुझ गया

मूर्ति

मूर्तिकार ने भगवान की मूर्ति बनाकर
जता दिया
"महाशक्ति ने तो हममें प्राण फूंके
हमने उसे मूर्ति बना दिया"

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरेलू उपचार

कान-दर्द

कान दर्द के कई कारण होते हैं। मुख्य कारण निम्न हैं :

१. कान में मैल का अधिक जम जाना। यों तो कान में थोड़ा-सा घन पदार्थ जो वैसलीन की तरह होता है—मौजूद रहता ही है। यह कान के लिए हानिकारक नहीं होता। इसको अंगरेजी में वैक्स और आयुर्वेद में किट्ट कहते हैं। जब यह किट्ट अधिक संचित हो जाता है, तो सख्त हो जाता है, तब यह रेत की तरह बनकर कान में दर्द पैदा करने लगता है। ऐसी अवस्था में इसको नर्म बनाकर निकालने से दर्द शांत हो जाता है।

२. कान में फुंसी होना : कभी-कभी कान में फुंसी हो जाने पर बड़ा तेज दर्द हो जाता है, जब उसमें से मवाद निकल जाता है, तब कान का दर्द भी समाप्त हो जाता है।

३. कान-दर्द : किसी बाह्य आघात के कारण अथवा आंतरिक कारणों से शोथ हो जाता है, तब भी कान में बहुत तीव्र वेदना होती है। इस प्रकार का कान दर्द मंद-मंद होता है तथा कान के बाहर भी उसके कुछ चिह्न प्रकट होते हैं। जैसे कान के बाहर सूजन होना, कनपटी का लाल होना और छूने पर वेदना का होना।

४. कर्ण शल्य : यदि कान में किसी भी प्रकार से कोई बाह्य वस्तु चली जाए और निकाली न जाए या स्वयं न निकले तो उस परिस्थिति में भी कान दर्द होता है। यह शल्य गंदे तालाबों में नहाने से या अन्य कारणों से भी कान में जाते हैं। तिनके, रेत या मिट्टी के रूप में भी यह कान में पहुंचते हैं।

५. कान को कुरेदना : प्रायः लोग कान में हलकी खुजली होने पर किसी लकड़ी या पिन आदि से कान को कुरेदते रहते हैं। ऐसा करने पर कान के अंदर की तरफ मांस छील जाता है, उससे वहां व्रण हो जाता है। ऐसी हालत में भी कान में दर्द होता है तथा वहां सूजन आ जाती है तथा पीप भी पड़ जाती है।

निम्न उपचार से लाभ होता है :

१. सरसों का तेल हलका गर्म कर कान में डालें।

२. लहसुन की एक कली छीलकर एक बड़ी चम्मच सरसों के तेल में उबालकर छानकर रखें, तब एक-दो बूंद कान में डालें।

३. तुलसी के पत्तों का रस हलका गरम कर एक-दो बूंद कान में डालें।

४. अदरक का रस निकालकर व छानकर दो-दो बूंद कान में डालें।

५. क्षार तेल अथवा षडबिंदु तेल दो-दो बूंद कान में डालने से विशेष लाभ होता है।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली—११००५१.

नार्वे में हिंदी कविता की गूंज

ओसलो में पुस्तक दिवस पर आयोजित काव्य पाठ में नार्वे के प्रवासी भारतीय कवि एवं पत्रकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल ने अपनी हिंदी एवं नार्वेजियन कविताओं से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इसके पूर्व भी श्री शुक्ल ओसलो में आयोजित प्रथम 'अंतरराष्ट्रीय कविता-समारोह' में हिंदी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उन्होंने फ्रांस में भी आयोजित अंतरराष्ट्रीय कविता समारोह में काव्य पाठ किया था।

श्री सुरेशचंद्र शुक्ल नार्वे में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न कर रहे हैं। उनके चार कविता-संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल वे नार्वेजियन कहानियों का हिंदी अनुवाद कर रहे हैं।—माया भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

कुछ पठनीय काव्य-कृतियां

राजेंद्र अवस्थी का कथा संसार : हिंदी कथा एवं कथाकारों पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोधकार्य हुए हैं तथा हो रहे हैं। ऐसे बहुत ही कम शोध कार्य हैं जिन्हें महत्वपूर्ण माना जा सके, तथापि प्रस्तुत शोधकार्य निस्संदेह एक ऐसा कार्य है जो सृजनात्मक रचनाकार के विविध पक्षों को उजागर करता है।

राजेन्द्र अवस्थी नयी कथाधारा के उन कथाकारों में अग्रणी हैं, जिन्होंने कथाओं के लिए अछूते अंचलों को अपना विषय बनाया है। ऐसी कथाएं समाज शास्त्रियों और नृतत्वशास्त्रियों को उन क्षेत्रों पर कार्य करने की प्रेरणा देने के लिए तो ख्यात रही हैं साथ ही साथ आदिवासी क्षेत्रों की इन गाथाओं ने हिंदी कहानी को एक नये ढंग की समृद्धि दी है। भाषा, संस्कृति तथा अबोध वन जातीय इकाइयों के बीच से जो समाज उभर कर आता है, वह हमारे अतीत का प्रमाण है। हम इन कहानियों में उस समाज-चर्या का स्वरूप पाते हैं, जिससे होकर सभ्यताओं के अनेक लश्कर गुजरे हैं, परंतु मानव संस्कृति के मूल स्तंभ मानवीय-मूल्यों के संरक्षण का एक विस्मयकारी भाग संरक्षित किये हुए हैं।

प्रस्तुत प्रबंध में विदुषी डॉ. सविता सौरभ ने अत्यंत गंभीरता से लेखक के साक्षात्कार द्वारा लेखक की तमाम अनुप्रेरणाओं, विवशताओं और दवावों का उत्खनन किया है, जिनके आधार पर राजेन्द्र अवस्थी ने अपना सृजन किया है। सृजन प्रक्रिया के महीन, रा[illegible] विवरणों में उस सत्य को उद्घाटित किय[illegible] लक्ष्य के रूप में एक रचना के संपू[illegible] आयोजन की सृष्टि करता है। आधुनि[illegible] साहित्य की समाज चेतना के अपने अ[illegible] डॉ. सौरभ ने पुरुष प्रधान समाज में सं[illegible] परिवर्तनों की पड़ताल की है। स्वातंत्र्योत्[illegible] आंचलिक कहानियों में जीवनदर्शन, स्[illegible] प्रासंगिकता की तलाश और राजेन्द्र अव[illegible] साहित्य में भविष्य की तलाश [illegible] अध्ययन-खंडों में डॉ. सौरभ ने नितांत [illegible] का विवेचन किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य परंपरा से चले [illegible] शोधकार्य से भिन्न है। इसे सृजनात्मक [illegible] के निकट का शोधकार्य मानना पड़ेगा। [illegible] भी कि अपनी विविधता के कारण [illegible] अवस्थी का लेखन अंचल, ग्राम से [illegible] महानगर के कथावृत्तों में फैला हुआ है [illegible] इकहरा-सा सपाट लेखन नहीं है बल्कि [illegible] मन की अंतरंग जटिलताओं, निराशा-ह[illegible] और पराभव से पटा पड़ा है। ऐसे जटि[illegible] संसार की तार्किक और विवेक [illegible] व्याख्याओं के लिए विदुषी लेखिका [illegible] की पात्र हैं।

राजेन्द्र अवस्थी का कथा-संसार
लेखिका— डॉ. सविता सौरभ, प्रक[illegible]
भागीरथ सेवा संस्थान, गाजियाबाद ([illegible]
२०१००२, मूल्य— ६८ रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेघर : विश्वमोहन तिवारी विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने विज्ञान और गणित पर भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में तो बहुत कुछ लिखा ही है— इस विषय पर उनकी कुछ पुस्तकें भी हैं। विज्ञान के विशेषज्ञ होने के साथ-साथ वे एक सुकवि भी हैं— यह प्रस्तुत संकलन सत्यापित कर देता है।

आज भीड़ की कविता के सन्मुख इन कविताओं को कोई नया नाम देना मुश्किल काम है, परंतु ये उन तमाम कविताओं से पृथक हैं जो आज लिखी जा रही हैं तथा विवेक तर्क के आधार पर ये कविताएं अपने को अलग स्थापित कर सिद्ध करती हैं कि उनका व्यक्तित्व अपने ही ढंग का अलग व्यक्तित्व है।

इन कविताओं का मुख्य स्वर व्यंग्य है। परन्तु यह व्यंग्य अत्यधिक मार्मिक है। एक तरह से बहुत क्रूर ढंग से वास्तविकता को अनावृत करने वाला है। जब लोग/कंचन मृग का/शिकार करेंगे/तो रावण/अवश्य ही/सीता चुरायेंगे/। विश्व मोहन तिवारी की मुख्य चिंता है आज की अराजक स्थिति, मूल्यों का विघटन और अमानवीकरण, इस सबको वे वखूबी अपनी निजी शैली द्वारा प्रस्तुत करने में सक्षम हुए हैं। यही इनकी शक्ति एवं उपलब्धि है।

बेघर (कविता संग्रह)
कवि— एयर कमाडोर विश्वमोहन तिवारी,
प्रकाशक— भागीरथ सेवा संस्थान, गाजियाबाद (उ. प्र.)
पृष्ठ — ७८ मूल्य — ३८ रुपये।

कवि अज्ञेय की सौंदर्य चेतना : 'कवि अज्ञेय की सौंदर्य चेतना' का विश्लेषण करनेवाली पुस्तिका अज्ञेय के कवि व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में सक्षम है। स्व. अज्ञेय हिंदी के एक ऐसे कवि रहे हैं जिन्होंने कविता को नया मोड़ दिया है। उनके काव्य के विविध पक्षों पर लेखिका ने अत्यंत परिश्रम से कार्य किया है। कवि अज्ञेय के जीवन के विविध पड़ावों से होकर शोधकर्त्री ने उनकी जीवनी, सौंदर्य के भाव पक्ष, भाषाशिल्प एवं अन्य कला प्रकारों का विश्लेषण करते हुए हिंदी के इस महान कवि का जो मूल्यांकन किया है वह युक्ति-युक्त एवं तर्क सम्मत है।

कवि अज्ञेय की सौंदर्य-चेतना
लेखिका — डॉ. चन्द्रप्रभा बालुजा,
प्रकाशक— भागीरथ सेवा संस्थान, गाजियाबाद,
मूल्य— ५८ रुपये।

अंडमान-निकोबार द्वीप पर्यटन तीर्थ :

अंडमान निकोबार द्वीप निस्संदेह आधुनिक भारत के नये पर्यटन तीर्थ हैं। बंगाल की खाड़ी में स्थित ये द्वीप अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थिति के कारण नितांत भिन्न से रहे हैं, किंतु पिछले कुछ दशकों में विकास कर्यक्रमों, शिक्षा एवं आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था ने इन द्वीपों को देश की मुख्य धारा से ज़ोड़ दिया है।

प्रस्तुत कृति इन द्वीपों के निवासियों, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाजों, उद्योग-धंधों तथा वन-संपदा के बारे में अत्यंत रोचक तथ्यों को प्रस्तुत कर, हर पाठक के हृदय में इन द्वीपों के प्रति एक ममता के भाव को जन्म देने में सक्षम है।

अंडमान निकोबार द्वीप : पर्यटन तीर्थ
लेखक— सोमदत्त दीक्षित, प्रकाशक— भगीरथ सेवा संस्थान, गाजियाबाद, २०१००२, मूल्य : ७५ रुपये।

— डॉ. विमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और अंत में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूली बिसरी यादें इस सूखे में

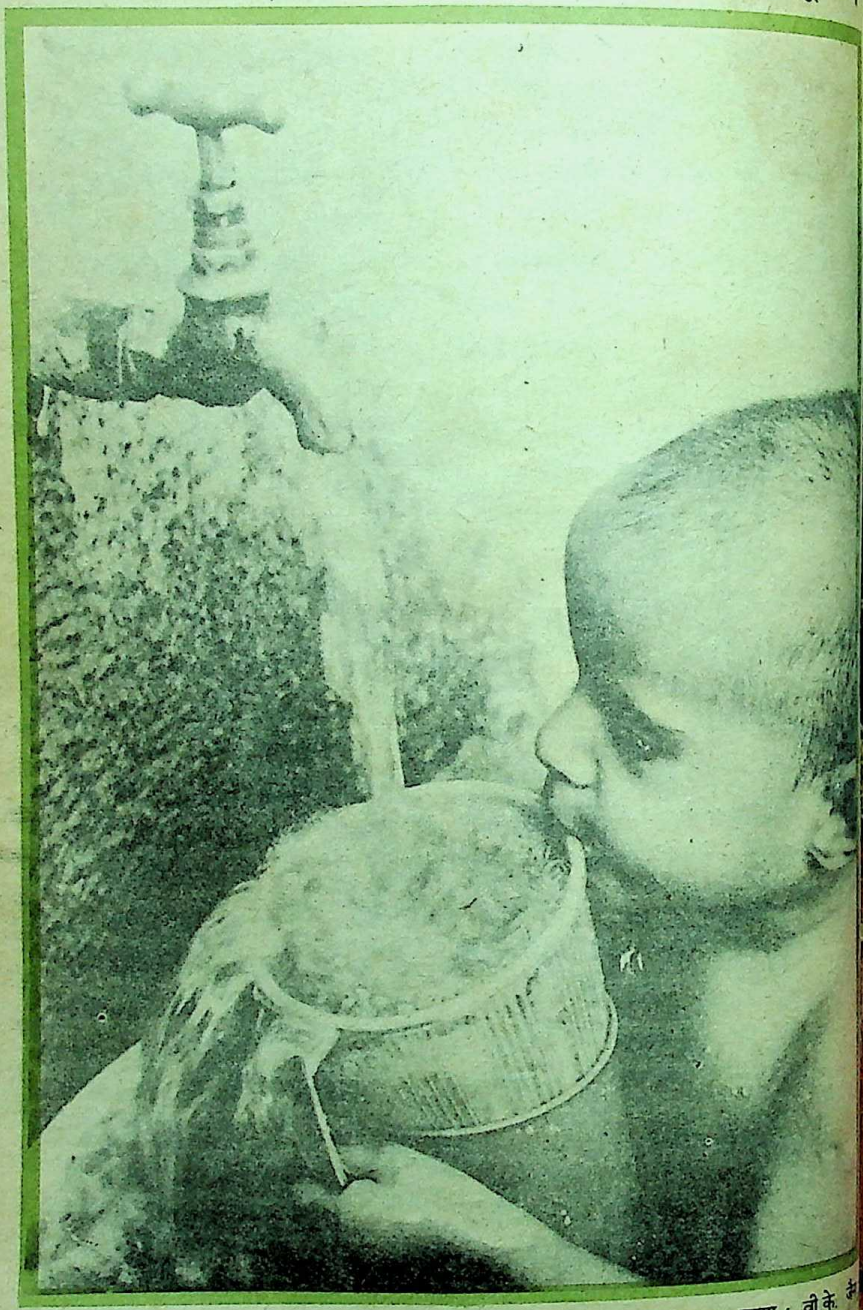

छाया : वी.के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहशोभा

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

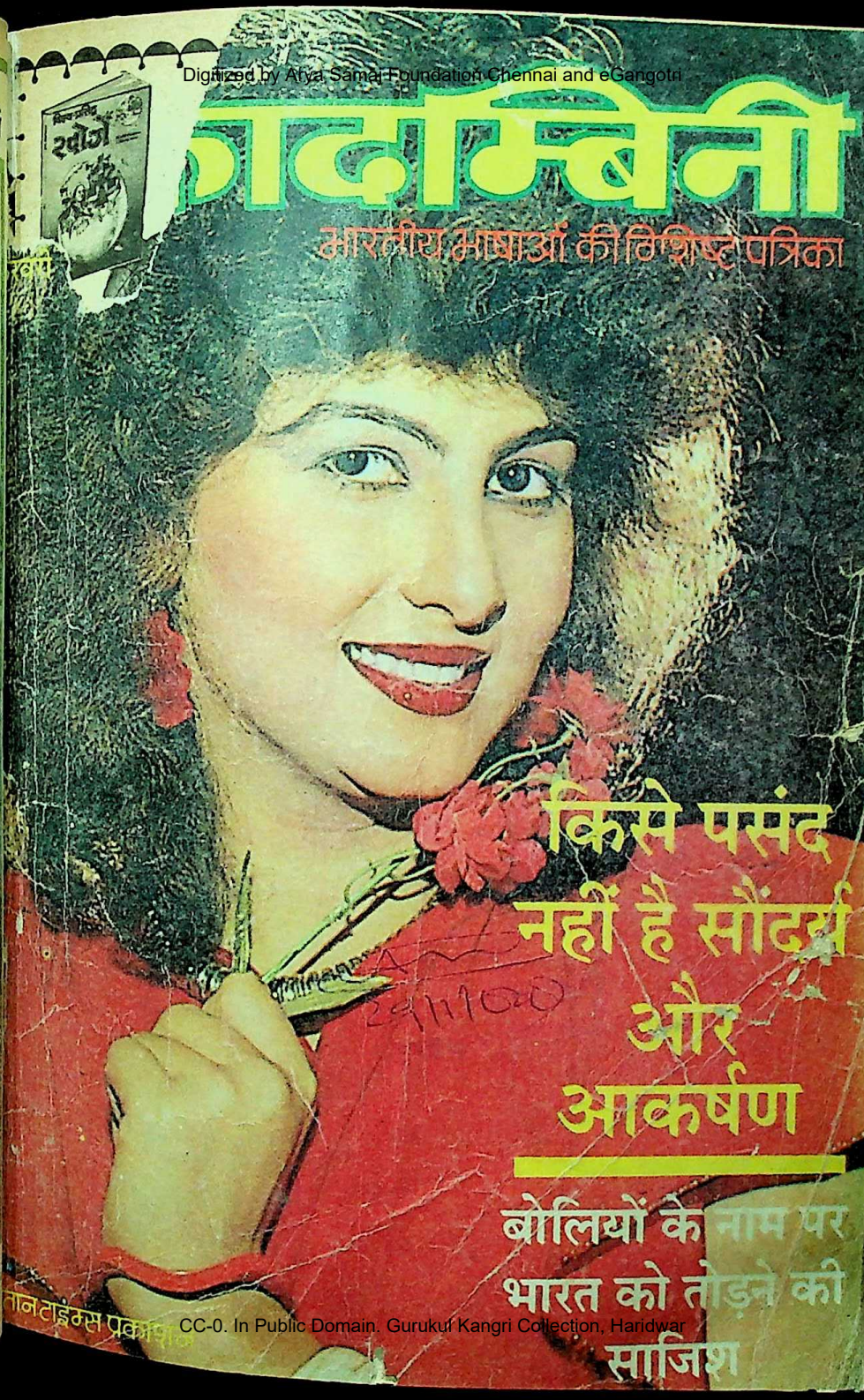

किसे पसंद नहीं है सौंदर्य और आकर्षण

बोलियों के नाम पर भारत को तोड़ने की साजिश

टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गालों में गढ़्ढे पड़ें
आँखें चमकने लगें
ये मॉर्टन लड़की
जब-जब खुशी से हँसे

हां मॉर्टन !

उसके गालों के गढ़्ढों व सितारों सी आंखों की तरह ही आकर्षक। मॉर्टन ! दूध, क्रीम व चीनी के गुणों से भरपूर इ...त ..ने सारे स्वादों में कि बरबस ही मुंह में पानी भर आए। ए.. खाकर देखें—ढ़ेर सारी चाहिएगा।

स्वादिष्ट चॉकलेट और कोकोनट कूकीज, लैक्टोवोनवोनस, और रोज एक्लेअरस्। पिपरमिन्ट रोल्स और मिनिपोपॅस। और अब इन सबसे बढ़कर बेहतरीन स्वादोंवाली जम्बो टॉफियां—सुप्रीम चॉकलेट, कोकोनट। वाह क्या चीज है !

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फेक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्टस फैक्ट्री
पोस्ट ऑफिस मढ़ोरा-८४१४१८, जिला : सारन (बिहार)

चेतावनी : खरीदने से पहले विश्वस्त हो लें कि आप असली मॉर्टन ही खरीद रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

पुस्तक महल की 20 पुस्तकों का एक अनूठा प्रोजेक्ट

मूल्य: 12/- प्रत्येक
डाकखर्च: 3/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर **डाकखर्च माफ**

- प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री
- प्रत्येक पुस्तक मैकडो दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित
- सरस कथा शैली
- एसेटाटाइप सैट
- बाँड्रया कागज पर आफसेट छपाई

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र **'मिनि एनसाइक्लोपीडिया'** है।

'रोमांचक कारनामे' में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो 'खोजें' में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। 'अनसुलझे रहस्य' में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेतों तथा रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं।

इस शृंखला की प्रस्तावित पुस्तकें:
विश्व-प्रसिद्ध.....
1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामें 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व (दो भागों में) 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स (दो भागों में) 9. वैज्ञानिक 10. विनाश-लीलाएं 11. जासूस 12. गुप्तचर संस्थाएं 13. खजाने 14. सभ्यताएं 15. राजनैतिक स्कैंडल 16. खोजी यात्राएं 17. बैंक डकैतियां 18. अय्याश राजा 19. प्रेम-प्रसंग 20. क्रांतियां

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग कर अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

15-2-1988 से 15-2-1988 तक विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली स्थित हमारे स्टाल में 10% छूट का लाभ उठाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय ही आप अपने और अपने परिवार के लिए ऐसा साप्ताहिक पत्र चाहते हैं जिसमें सभी तरह की रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि जो पत्रिका आप खरीदें, वह आकर्षक हो और रंग-बिरंगे सार्थक चित्रों से सुसज्जित हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि उस पत्रिका के साथ आपकी साझेदारी बने।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

यही एक ऐसा साप्ताहिक पत्र है जिसमें यह सब कुछ मिल सकता है।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' एक सम्पूर्ण सप्ताह भर के लिए सम्पूर्ण साप्ताहिक पत्र।

हिन्दुस्तान टाइम्स का गौरवशाली प्रकाशन

कुछ आकर्षण देखिए—

युवा पीढ़ी— सार्थक विचारों के लिए।

नए स्वर— एकदम नए कवियों के लिए।

— आपके मन और मस्तिष्क को सन्तुलित रखने के लिए।

भविष्य-दर्पण— आपकी परेशानियों और समस्याओं के समाधान के लिए।

वैद्य की सलाह— आपके उन रोगों और परेशानियों का निदान जो एलोपैथी चिकित्सा से सम्भव नहीं।

दायित्व और अधिकार— जानकारी के लिए कि कानून की दृष्टि में आपके कितने अधिकार हैं।

विज्ञान से संबंधित लेख/स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चाएं/कहानियां/ धारावाहिक उपन्यास/ प्रेरक प्रसंग/ एक कप हजार गप।

राजनीति के ताजा से ताजा पहलू पर विशिष्ट रचनाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

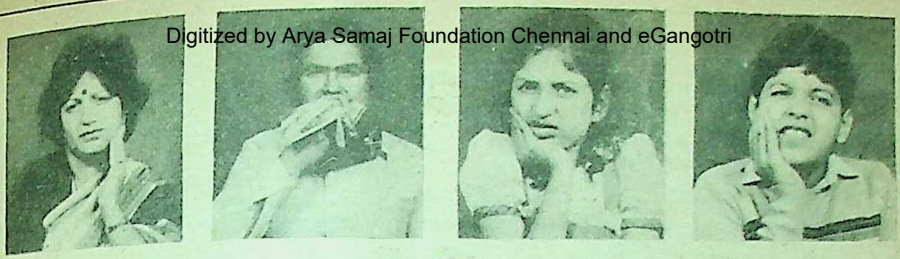

दांतों का रोग जिनको सताये उनके लिये है घरेलू उपाय

एम डी एच

दंत मंजन

लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी प्रा. लि.
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015. फ़ोन : 537987, 537341 539609

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. इष्टजन— क. निकट संबंधी, ख. आमंत्रित लोग, ग. प्रिय व्यक्ति, घ. परिवार के लोग।

२. उद्गम— क. प्रारंभ, ख. निकास, ग. बढ़ना, घ. प्रकाश।

३. अगूढ़— क. जो भारी न हो, ख. सहज, ग. आगे का, घ. फूहड़।

४. अक्षोभ— क. व्याकुलता का न होना, ख. हलचल, ग. सुस्ती, घ. विनम्रता।

५. आत्मानुभव— क. आत्मा की बात, ख. सच बात, ग. स्वयं का अनुभव, घ. दृढ़ विश्वास की बात।

६. आजानुबाहु— क. ऊपर उठी बांहें, ख. दानी व्यक्ति, ग. पराक्रमी, घ. घुटनों तक की बांहोंवाला।

७. नवाह— क. नया, ख. नौ दिन, ग. नौ दिन में संपन्न होने वाला अनुष्ठान, घ. स्नान।

८. तथोक्त— क. उद्धृत, ख. नाममात्र, ग. बताया हुआ, घ. वैसा ही।

९. कर्मकार— कर्मशील, ख. कर्ताधर्ता, कारीगर, घ. कलाकार।

१०. गर्भगृह— क. वह स्थान जहां प्रसूता रखा जाए, ख. घर का बीच का कमरा, मंदिर का वह कक्ष जहां मुख्य देवप्रतिमा हो, भूमिगत कोठरी।

११. तमिस्रा— क. अंधकार, ख. अंधेरी रात, ग. मूर्खता, घ. भ्रम।

१२. गुणीभूत— क. गुणवान, ख. मुख्य तात्पर्य से रहित, ग. गुणहीन, घ. व्यर्थ

१३. अगेह क. आवारा, ख. बिना घर का, आगे का, घ. अनजान

उत्तर

१. ग. प्रिय व्यक्ति, अभिलषित व्यक्ति। उ समारोह में **इष्टजनों** सहित पधारने की कृ करें।

२. ख. निकास। गंगा का **उद्गम**-स्थ गंगोत्तरी है।

३. ख. सहज, आसान। यह विषय नि **अगूढ़** है।

४. क. व्याकुलता का न होना, शांति, अक्रोध **अक्षोभ** के वातावरण में ही इस समस्या हल किया जा सकता है।

५. ग. स्वयं का अनुभव। **आत्मानुभव** कसौटी पर इस बात को खरा पाया है (आत्म+अनुभव), विशेषण—**आत्मानुभू**

६. घ. घुटनों तक की बांहोंवाला। श्री राम **आजानबाहु** थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. ख. नौ दिन, ग. नौ दिन में संपन्न होनेवाला अनुष्ठान। रामायण का **नवाह** पाठ होना चाहिए।

८. ख. नाममात्र का। तुम्हारा यह **तथोक्त** पांडित्य वस्तुतः निस्सार है। (तथा+उक्त)।

९. ग. कारीगर, मजदूर। **कर्मकारों** को उचित वेतन मिलना चाहिए।

१०, ख. घर का बीच का कमरा। वे **गर्भगृह** में बैठे परस्पर परामर्श कर रहे हैं।

ग. मंदिर का वह कक्ष जहां मुख्य देवप्रतिमा हो। उपासना के लिए पुजारी उन्हें **गर्भगृह** में ले गया है।

११. ख. अंधेरी रात। मानव को अज्ञान की **तमिस्रा** में जीवनयापन नहीं करना चाहिए। (तमिस्र=अंधकार)।

१२. ख. मुख्य तात्पर्य से रहित, गौण बनाया हुआ। तुम्हारी मिथ्या मीमांसा से यह तथ्य **गुणीभूत** हो गया है।

१३. ख. बिना घर का, गृहहीन। उसने **अगेह** रहकर ही सारा जीवन बिता दिया।

पारिभाषिक शब्द

ऐडहियर=दृढ़ रहना/अनुवर्तन करना
बर्थ-रेट=जन्म-दर
मैटरनिटी=प्रसूति/मातृत्व
बोनाफाइड=वास्तविक/असली
मैलाफाइड=कदाशय
ग्रेडेशन=पदक्रम
ग्रौस रेवेन्यु=कुल राजस्व
लिक्विडेशन=परिसमापन
लाग-बुक=कार्य-पंजी

समस्या-पूर्ति— १०३

जड़ से

प्रथम पुरस्कार

बोंसाई पौधा कितना सोहे
डालियों में फूल इसने पिरोए
धूप उर्वरा पानी के साथ
छिपा हुआ है इसका राज
आंखों को आकर्षित किये हुए
गमले में सुंदर सजे हुए
जहां से काटें उग जाए ये
सबल हो जितना यह जड़ से

—निर्मल शर्मा
११८, सैनी एंक्लेव, दिल्ली-११००९२

द्वितीय पुरस्कार

पत्ते खिलते फूल महकते
टहनी-टहनी इठला जाती
सुरभित होती आंगन क्यारी
चिड़िया चहक-चहक उड़ जाती
परिवर्तन-परिवर्द्धन सारा
होता अहर्निश अविचल जड़ से

—राधेश्याम शर्मा
एल.आई.जी- २६४, इंदिरा नगर,
(मकौडिया आम) आगर रोड, उज्जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

सर्वोत्तम पूंजी आत्म-विश्वास है

हारवार्ड विश्वविद्यालय का एक छात्र ड्यूक बहुत ही झेंपू तथा दीन-हीन दिखनेवाले व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध था। वह आवश्यकता से अधिक विनम्र स्वभाव का था, जिसके कारण उसको स्वयं ही बहुत हानि उठानी पड़ती थी। उसके इस झेंपू स्वभाव ने उसकी सारी योग्यता और बुद्धि को दबाकर रखा हुआ था। यहां तक कि उसके मन की भावनाएं उसके चेहरे पर भी झलक आयी थीं और वह सूरत-शक्ल से घटिया प्रतीत होने लगा था।

उसने एक बार इस घटियापन को दूर करने के लिए एक उपाय किया। वह बिलकुल नये वस्त्र पहनकर ऐसी गलियों में जाने लगा, जहां उसका कोई परिचित नहीं था। वहां वह खूब अकड़कर चलता, जैसे कि वह कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। उसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति यही समझता कि वह वास्तव में कोई अति महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। उसकी ओर प्रत्येक व्यक्ति सम्मान की दृष्टि से देखने लगा। इस अभ्यास से उस व्यक्ति की आकृति में भी परिवर्तन आ गया। यही नहीं उसके विचारों में भी परिवर्तन हो गया। उसका हीन भाव मिट गया और उसे धीरे-धीरे यह भी विश्वास होने लगा कि वह किसी से कम नहीं है अगर वह चाहे, तो वास्तव में बड़ा आदमी बन सकता है। वह नये कपड़ों में ही अब उन गलियों में भी जाने लगा, जहां वह पहले घटिया वस्त्रों में जाया करता था। उन गलियों में बड़े आत्म-विश्वास से एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की तरह आने-जाने लगा। अब लोग उसका सम्मान भी करने लगे। और उसका परिचय बढ़ाने के लिए आतुर होने लगे। उस व्यक्ति को अपने भीतर छुपे दिव्य-रूप के दर्शन होने लगे। अब वह अपने को श्रेष्ठ सिद्ध कर चुका था।

उसके आत्मसम्मानपूर्ण व्यवहार से यह स्पष्ट व्यक्त होने लगा था कि वह भी एक श्रेष्ठ पुरुष है। उसके मन के आत्म-विश्वास ने ही उसके हृदय में यह भावना भरी कि वह अन्य पुरुषों से कहीं भी हीन नहीं है। जीवन के प्रति दृढ़ आस्था और बड़ा व्यक्ति बनने की लगन ने उसके जीवन को एक नयी रोशनी प्रदान की।

गुरु का उत्तराधिकारी

एक बार की बात है गुरु अमरदास जी अपने शिष्यों को चबूतरा बनाने का आदेश दिया। सारे शिष्य चबूतरा बनाने में लग गए

कादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़े समय बाद चबूतरा बनकर तैयार हो गया। जब चबूतरा बन गया, तो अमरदासजी ने उसे तोड़ने की आज्ञा देकर दोबारा चबूतरा बनाने का आदेश दिया। इस प्रकार तीन-चार बार चबूतरे को बनाया गया और तोड़ा गया। इससे कुछ लोग नाराज हो गये। कुछ समझने लगे कि गुरुजी का दिमाग खराब हो गया है। उनके सारे शिष्य चबूतरा बनाते-बनाते थक गये, लेकिन एक मात्र रामदासजी ही ऐसे शिष्य थे जो उसी उत्साह से चबूतरा बनाते रहे। गुरुजी ने पूछा, "रामदास तुम थके नहीं, तुम्हारे शेष साथी काम छोड़कर भाग गये। एक मात्र तुम्हीं तो चबूतरा बना रहे हो।" रामदास ने बड़ी विनम्रता से इसका जवाब दिया, "शिष्य का कर्त्तव्य गुरु के आदेश का पालन करना होता है, चाहे उसकी जान भी खतरे में क्यों न पड़ जाए, शिष्य को गुरु का दिया हुआ काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए।

गुरु अमरदास ने उसी समय रामदास को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। ●

ज्ञान गंगा

यथा भारेण नमते लघुनोन्नमते तुला।
समा तिष्ठति युक्तेन भोज्येनेयं तथा तनुः॥

(सौन्दरनन्द— १४।५)

—जैसे अधिक भार से तुला (पलड़ा) झुकती है, हलके भार से उठती है और उचित भार से समान रहती है, उसी प्रकार (अधिक, अल्प एवं युक्त) आहार से यह शरीर क्रमशः भारी, क्षीण और ठीक होता है।

उच्यमानोऽवलम्बेत परमर्मणि मूकताम्।
स्वकर्मणि तु बाधिर्य— स्थैर्यमाधुर्य सोष्मवान्॥

(सुभाषित सुधानिधि— १६६।११)

—दूसरे का दोष या त्रुटि सुनने पर मौन धारण कर लेना चाहिए। स्वयं का दोष बताये जाने पर बाधिर्य (बहरापन) धारण कर लेना चाहिए एवं साहस, माधुर्य, तथा ऊष्मा बनाये रखना चाहिए।

प्रस्तावसदृशं वाक्यं प्रभावसदृशं प्रियम्।
आत्मशक्तिसमं कोपं यो जानाति स पण्डितः॥

(चाणक्यनीतिदर्पणः १४।१५)

—जो व्यक्ति प्रसंग के अनुकूल बात करना जानता है, जो अपनी गरिमा के अनुकूल प्रियभाषण करना जानता है और जो अपनी शक्ति के अनुसार क्रोध करना जानता है, वह निःसंदेह पंडित-विद्वान है।

अल्पलाभोऽपि चेद् भिक्षुः स्वालाभं नाऽतिमन्यते।
तं वै देवाः प्रशंसन्ति शुद्धाऽजीवं अतन्द्रितम्॥

(धम्मपद— २५।७)

—चाहे अल्प ही लाभ हो, जो शुद्ध जीविकावाला और आलस्य रहित भिक्षु अपने लाभ की अवहेलना नहीं करता है, उसकी देवता प्रशंसा करते हैं।

अबन्धुर्बन्धुतामेति नैकट्याभ्यासयोगात्।

(योगवशिष्ठ निर्वाण—६७।२९)

—बार-बार मिलने के संबंध से अबंधु भी बंधु बन जाता है।

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

(मेघदूत— २०)

—प्रत्येक वस्तु खाली होने पर हलकी हो जाती है। गौरव तो पूर्णता से ही है।

विवक्षित हि अनुक्तमनुतापं जनयति।

(अभिज्ञानशाकुन्तल— ३।१७)

—जहां जो कुछ कहना आवश्यक हो, वहां वह यदि न कह दिया जाए तो पीछे पश्चात्ताप होता है।

हितप्रियोक्तिभिर्वक्ता दाता सम्मानदानतः।

(व्यास स्मृति—४/६०)

—मनुष्य हितकर एवं प्रिय उक्तियों से वक्ता तथा सम्मानपूर्वक दान देने से दानी कहा जाता है।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

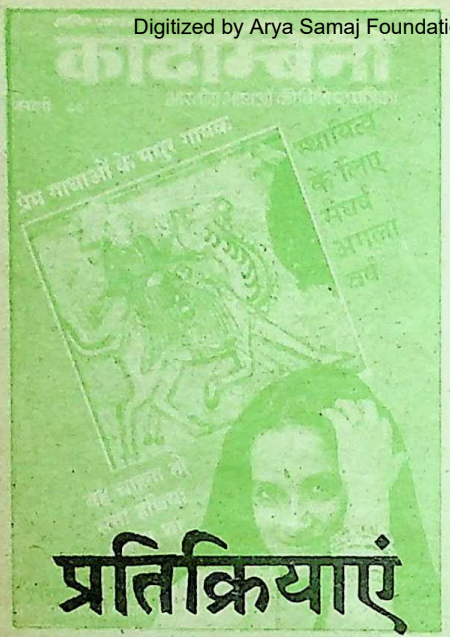

प्रतिक्रियाएं

नववर्ष के मधुर आगमन के साथ ही 'कादम्बिनी' का जनवरी अंक प्राप्त हुआ।

'कादम्बिनी' ने अपने प्रत्येक अंक में उन भूले-बिसरे चेहरों को सदैव स्थान दिया है, जिन्होंने साहित्य, संगीत, विज्ञान या कला के क्षेत्र में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इसी क्रम में जनवरी अंक में 'भारत कला भवन के प्रेरणा स्रोतः उस्ताद रामप्रसाद' पर डॉ. एच. एन. मिश्र का लेख—'उन्हें विरासत में मिली थी कला' पढ़ा। लेखक द्वारा रामप्रसादजी की कलात्मक उपलब्धियों को जिस सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया, वह निस्संदेह प्रशंसनीय कहा जाएगा।

—मोहनसिंह रावत, नैनीताल

'कादम्बिनी' का जनवरी अंक नये वर्ष की नयी दीप्ति से आलोकित मिला। समस्त स्तंभ अत्यंत रुचिकर। 'मिदनापुर के मजिस्ट्रेट' क्रांतिकारियों के त्याग और बलिदान की कथा हृदय में देशभक्त और बलिदानियों के प्रति श्रद्धा के भाव का संचार कर दिया। 'मुगल शासनकाल में नव-वर्ष' तथा 'मुगलों के खाम-खयालियां और उनके चहेते शहर' रोचक तथा इतिहास के संबंध में ज्ञानवर्धक लेख थे। 'भास्कराचार्य की लीलावती' से प्राचीन भारतीय गणित के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य के संबंध में दुर्लभ जानकारी मिली। 'क्या आप खोजी हैं ?' एक उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक लेख था। 'अग्निकांड' एक श्रेष्ठ रचना रही, इस अंक की।

—आशीष शुक्ल, कानपुर

'कादम्बिनी' का मैं नियमित पाठक हूं। कहानियां और नये विषयों पर अछूते लेख पत्रिका को एक विशेष गौरव प्रदान करते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है, हिंदी की जगत् मनीषा का प्रतिनिधित्व तो नहीं कर रही 'कादम्बिनी' ?

साथ ही नयी कृतियों पर की जानेवाली चर्चा भी सारगर्भित होती हैं। कृतियों पर केवल चर्चा या नामोल्लेख से परे जाकर अनुशीलनपरक दृष्टि का परिचय नयी पुस्तकों पर विशेष रूप से ध्यान खींचता है, इस बार की 'नयी कृतियों' की बात मेरे इसी कथन के अत्यंत निकट है।

इसी तरह श्रेष्ठता के स्तर बनाये रखें, यही आगे संपादन के मानदंड हो जाएंगे।

—डॉ. रामगोपाल सोनी, नागपुर

'वतायो पच्चीसी' : नया झरोखा

दिसम्बर अंक 'कादम्बिनी' की गरिमा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुकूल ही था। 'सार-संक्षेप' में 'वतायो पच्चीसी' ने एक पूरी रचना का आनंद दिया। संत फकीर वतायो में कबीर और मुल्ला नसीरुद्दीन के चेहरे एक साथ मिले-मिले लगे। इस सोच को भी बल मिला कि समर्थ के खिलाफ खरा सच कहने के लिए फक्कड़ फकीरी जरूरी है। 'वतायो पच्चीसी' हिंदी भाषी पाठक के लिए एक नया झरोखा है।

—डॉ. नारायण तिवारी, उज्जैन

दिसम्बर अंक में डॉ. मोतीलाल जोतवाणी ने 'वतायो-पच्चीसी' में एक महान फकीर संत के हास्य-विनोद से परिपूर्ण शिक्षाप्रद प्रसंगों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। आज भारत जिस मोड़ पर खड़ा है, ऐसे में आवश्यकता है महान संतों के उच्च नैतिकता पूर्ण एवं शिक्षाप्रद प्रसंगों को जन-जन तक पहुंचाने की। इस दिशा में आपने पहल कर एक सराहनीय कार्य किया है।

—सुनील अग्रवाल 'कुमार', रेवाड़ी

'कादम्बिनी' का दिसम्बर अंक आद्योपांत पढ़ गयी। आस्था के आयाम में 'संपादक जिसने सिफारिशी रचना नहीं छापी' पढ़कर दुःख हुआ। दुःख इस बात का कि स्व. चट्टोपाध्याय-जैसे लोग अब क्यों दिखायी नहीं देते। 'कर्तव्य-धर्म' के ऐसे उपासक अपने देश में दुर्लभ हो गये हैं, तो दुःख तो होगा। इस अंक में पृष्ठ १४७ पर एक कार्टून छपा है 'साड़ी सेल दस मिनट में . . .' माना कि इसके पीछे उद्देश्य यही है कि यह लोगों के मन को गुदगुदाये। मनोरंजन प्रदान करें। पर ईमानदारी से सोचा जाए तो क्या यह पुरुष प्रधान समाज की निरंकुशता का द्योतक नहीं है,जो महिलाओं की आदत और मनोविज्ञान को घटिया मानकर कोसता तो है ही साथ ही व्यंग्य और फब्तियों के माध्यम से उसे अपने मनोरंजन का सहारा बनाता है ?

अधिकतर महिलाएं पुरुषों के व्यंग्य को मुसकराकर सह लेती हैं। कोई-कोई उद्वेलित भी होती हैं। और शायद कोई-कोई वैचारिक आंदोलनों के कथित सूत्रधारों, बुद्धिजीवियों व पत्रकारों से कुछ ऐसा ही मौन सवाल पूछना चाहती होंगी।

—मालती सिन्हा, पटना

प्रेरक 'काल-चिंतन'

दिसम्बर अंक में 'प्रतिक्रियाएं' में आपने एक पत्र के उत्तर में लिखा है कि अस्तिकता बहुत बड़ा साधन है। हां, यह सच है। एक परम शक्ति का अस्तित्वबोध ही मुझे घनघोर निराशाओं में से उबार सका है।

'काल-चिंतन' निरंतर दिल को गहराइयों तक छूनेवाला होता है। हर अंक के 'काल-चिंतन' में मानवता के प्रति आस्था, विश्वास, आशा की नयी लौ जलती है। 'कादम्बिनी' के पुराने अंक मैंने विशेषकर 'काल-चिंतन' के लिए ही सहेज रखे हैं। जब भी मैं आस्थाहीन हो उठती हूं, उन्हें निकालकर पढ़ती हूं। कोई न कोई राह निकल ही आती है।

—ममता चतुर्वेदी, लखीमपुर खीरी

मैं पांच वर्षों से नियमित रूप से 'कादम्बिनी' की पाठिका रही हूं। 'कादम्बिनी' ने निरंतर चिंतन, मनन, तर्क से परिपूर्ण सामग्री प्रदान की है। अपनी विशेष, मनोरंजक, गंभीर पाठ्य सामग्री के कारण यह पत्रिका सहज ही हृदय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्त संजीवन
(हिन्दू पामिस्ट्री)

* हिन्दू पामिस्ट्री (सामुदायिक शास्त्र)
* हाथ से जन्मकुण्डली बनाने की सरल विधि एवं अन्य उपयोगी विषय
* यह पुस्तक अधिक समय से अप्राप्त थी।
* सरल हिन्दी, श्लोकों एवं चित्र सहित

फोन : 278835 पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगायें
पृष्ठ 192 मूल्य 40 रुपए 8 रु. डाक व्यय अलग

तंत्र मंत्र की प्रामाणिक पुस्तकें
(सरल, रोचक शैली में)

* तंत्र शक्ति—डा. त्रिपाठी — 20 रुपये
* मंत्र शक्ति—डा. त्रिपाठी — 15 रुपये
* यंत्र शक्ति— (2 भाग) " " प्रत्येक — 20 रुपये
* शावर तंत्र शास्त्र — 30 रुपये
* हिन्दू तंत्र शास्त्र — 30 रुपये
* मनोकामना पूरक मंत्र — 21 रुपये
* रहस्यमयी गुप्त विद्यायें (यंत्र मंत्र तंत्र) — 30 रुपये
* अलौकिक शक्तियों की साधना — 30 रुपये

रंजन पब्लिकेशन्स,
16, अन्सारी रोड, नई दिल्ली-110002

स्थान बना लेती है। मेरे छात्र जीवन में इस पत्रिका ने मुझे जीवन के सत्य से परिचित कराया। —सुनीता जोशी, हलद्वानी

इतिहास ने जिसे भुला दिया

दिसम्बर अंक में 'इतिहास ने उस वीरांगना को भुला दिया है' शीर्षक लेख पढ़कर रोमांचित हो उठा। लेखक ने ठीक ही लिखा है कि 'वीरांगना अवंतीबाई की शहादत झांसी की महान रानी और महारानी दुर्गावती से किसी तरह कम नहीं थी।' खेद है कि हमारे इतिहासकारों ने इस वीरांगना रानी का यथेष्ट उल्लेख नहीं किया है। केवल स्वर्गीय डॉ. वृंदावनलाल वर्मा इस विषय में अपवाद हैं, जिन्होंने रानी अवंतीबाई पर 'रामगढ़ की रानी' उपन्यास लिखा।

—फूलसिंह नरवरिया, ग्राम जरपुरा (जिला भिंड)

मध्यप्रदेश का आदिवासी जिला मंडला पहले रानी दुर्गावती के कारण पहचाना जाता रहा है और अब कान्हा किसली अभयारण्य के कारण। दिसम्बर अंक में रानी अवंतीबाई की शौर्यकथा प्रकाशित कर अपने आदिवासी गौरव को जनता के सामने रखा है।

—ब्रजमोहन गुप्त 'इंद्रनारायण', छिंदवाड़ा

उत्तम पौराणिक कथाओं, लेखों, कहानियों एवं कविताओं से भरपूर 'कादम्बिनी' का नवम्बर विशेषांक बहुत ही अच्छा रहा। आद्योपांत पढ़कर विशेष आनंद आया।

'आस्था के आयाम' शीर्षक से 'कर्मठता की पहचान', 'कर्त्तव्यों से निर्वाह' तथा 'सद्पुरुषों का आभूषण सादगी ही है' उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रकाशित वृत्तांत शिक्षाप्रद रहे।

— डॉ. शकुनचंद गुप्त, लालगंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कादम्बिनी' के विशेषांकों की एक विशिष्ट परंपरा रही है। इसी शृंखला में प्रस्तुत है, इस वर्ष होली के अवसर पर 'कादम्बिनी' का

मनोरंजन विशेषांक

इस विशेषांक के विशिष्ट आकर्षण :

- कुंवारी कन्याओं का नरकुल-उत्सव : जहां राजा अपने लिए पत्नी का चुनाव करता है। रंगीन चित्रों सहित दिलचस्प रचना।
- ब्रजमंडल में धूम : आज भी राधा और कृष्ण जहां आते हैं।
- जड़ी-बूटियों वाला तकिया लगाइए—रोग भगाइए।
- पशु-पक्षी भी शरारत करते हैं।
- बुद्धि बढ़ानेवाली दिमागी कसरतें।
- निराली होती हैं प्रेम की राहें : कुछ अछूती दिलचस्प प्रेम कहानियां।
- बतायो फकीर के कुछ और किस्से।
- मुगलकाल के नवाबों के मनोरंजन।
- फतवे और जनमोर्चे—नाचते, गाते खून-खराबे से भरे मनोरंजन।
- निराले मनोरंजन यूरोप में।
- स्काटलैंड में काले रंग की कीमत।
- तोहफे देने के अजीब तरीके।
- दुनिया भर में मनोरंजन के विचित्र तरीके हैं। भारत भी पीछे नहीं है।

इस सबकी झलक इस अंक में। आप साल क्या जिंदगी भर इस अंक को सुरक्षित रखेंगे और हंसते रहेंगे।

होली पर हमारा विशेष उपहार

यही नहीं, इनके अतिरिक्त भारतीय भाषाओं की हास्य-व्यंग्य की चुनी हुई रचनाएं। देश-विदेश की गुदगुदी करनेवाली हंसाइयां, व्यंग्यचित्र और मनोविनोद के प्रसंग। सभी लोकप्रिय स्थायी स्तंभ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष : २८, अंक ४
फरवरी, १९८८

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

बालकवि बैरागी
भारत को तोड़ने की साजिश २०
डॉ. मोतीलाल जोतवाणी
किसे पसंद नहीं है सौंदर्य और आकर्षण २७
महाभारत से
भिन्न-भिन्न कारणों से ३२
शिशिर विक्रांत
वैज्ञानिक जो संस्कृत के विद्वान थे ४०
डॉ. योगेश चंद्र मिश्र
अस्वस्थ बना देती हैं ४४
प्रभात कुमार
प्राणवान हो उठता है निर्जीव काष्ठ ५०

स्थायी-स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—६, समस्या-पूर्ति—७, आस्था के आयाम—८, ज्ञान-गंगा—९, प्रतिक्रियाएं—१०, काल-चिंतन—१६, सीपिकाएं—४९, आइए चलें जंगल की ओर—६२, वचन-वीथी—९४, बुद्धि-विलास—१०१, इनके भी बयां जुदा-जुदा—१११, दस्तक—१२२, विधि-विधान—१४४, हंसाइयां—१६२, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१६७, प्रवेश—१७०, यह महीना और आपका भविष्य—१७२, नयी कृतियां—१७७, हंसिकाएं—१७८, तनाव से मुक्ति—१७९, घरेलू उपचार—१९७ और अंत में—१९८

आवरण : ज्ञान दीक्षित

डॉ. अख्तर अली
दुगड्डा अंचल ५२
नवीन नौटियाल
पेड़ लगाने की सजा ६४
डॉ. उषा अरोड़ा
रजाई के वजन पर ठंड ६८
डॉ. नटवर झा
सिंधु-मुद्राओं में कौन-सी भाषा ७९
डॉ. निर्मलकांत ठाकुर
जहां मछली मारने का काम ८६
डॉ. हीरालाल बाछोतिया
निराला और राष्ट्रीयता ९०
डॉ. महेन्द्र वर्मा
प्रतिशोध के शिकार दो मंदिर ९५
स्वाति मुक्ता
ये अंखियां थक गयीं पंथ निहार १०८
बिमल श्रीवास्तव
सदाबहार विमान-डकोटा ११२
माखनलाल चतुर्वेदी
नियति का स्वागत ११८
मदन मोहन पांडेय
पंडितराज, जिसे प्रेम के कारण १२४
डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी
हिडिंबा देवी का मंदिर १२९
राजकिशन नैन
समृद्धि के प्रतीक पशु मेले १३४
राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह
कोयल, पपीहा और छोटे ककू १४०
कमोडोर रेवती रमण
उन्होंने ब्रह्मांड के मशीनी रूप को १४४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

सत्यनारायण दुबे
अपंग काया में छिपी अपार क्षमता.....१५८

कहानियां

पौड़िपाला
प्रतीक्षा.....३५

आशा सिन्हा
बूआ.....७३

परदेशीराम वर्मा
चीफ का सपना.....१०२

नैयर इकबाल
पत्थर का बच्चा.....१२८

कुलदीप सिंह बेदी
ये दिन, वे दिन.....१३९

सत्यप्रकाश हिंदवाण/सीमा त्यागी
विजनेस/चाहे आग लग जाए.....१६०

शीला शर्मा/कृष्णकुमार शांतीनंदन
अवसरवादी/बेइमानी तेरा ही आसरा.....१६१

धनेश्वर प्रसाद
अनुत्तरित प्रश्न.....१६४

कविताएं

केदारनाथ कोमल
शब्दों में.....६१

केदारनाथ सिंह
हर क्षण.....७१

मार्क फ्रुटकिन
पांचवां छोर/बदलता पानी.....१२१

सार-संक्षेप

रुपर्ट फरन्यू
कुएं में सोना.....१८२

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज**
उप-संपादक :
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**
चित्रकार : **पार्थ सेनगुप्त**
प्रूफरीडर : **स्वामी शरण**
पता : **संपादक—**
'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि.
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

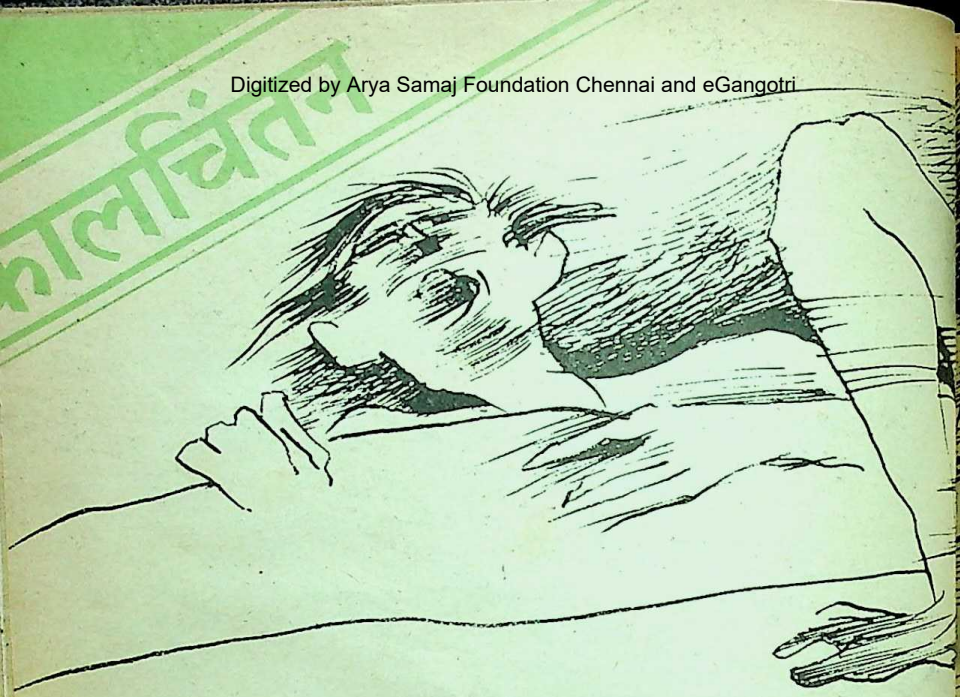

एक कथा कहता हूं आज—

सूर्यास्त से सूर्योदय तक वह परेशान रहता था। सक्षम और कार्य कुशल तो था ही वह, लोकप्रिय भी। प्रश्न उसके भीतर अथाह था—किससे बात करूं अपनी परेशानी की।

अचानक सूर्य ढलते ही वह घर से निकला। एक मार्ग उसने पकड़ा, वही मार्ग क्यों, नहीं ज्ञात उसे। अकेला था वह लेकिन सोच से आवृत्त—बहुत सोचते हुए उसने केंद्र-बिंदु ढूंढ़ना चाहा : 'मेरी वास्तविक परेशानी है क्या ?'

पथ अंधकार से गहरा गया था। उसे सम्हलकर चलना चाहिए। सम्हलने के प्रयत्न में उसके 'सोच' को हलकी-सी ठोकर लगी। अपने को सम्हाले या उस चिंतन को, जो उसके मस्तिष्क में घुन की तरह पनप रहा है, जिसने पथचारी बना दिया है, इस रात। एक तीव्र सिलसिला कमजोर हुआ।

रात गंभीर हो गयी। उसका भय बढ़ा। तीन स्थितियों का शिकार हुआ वह—पहली परेशानी का हल, सम्हलकर चलने का क्रम और फिर अंधकार का भय। एक परेशानी लेकर वह चला था, तीन परेशानियों का शिकार हुआ।

समतल चबूतरा। विश्राम। सहसा उसने ज्ञान पाया, बुद्ध ने जैसे वृक्ष के नीचे पाया था, शायद।

वह घर की ओर लौटा। घर पहुंचा तो थका और गतिहीन। सीधे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

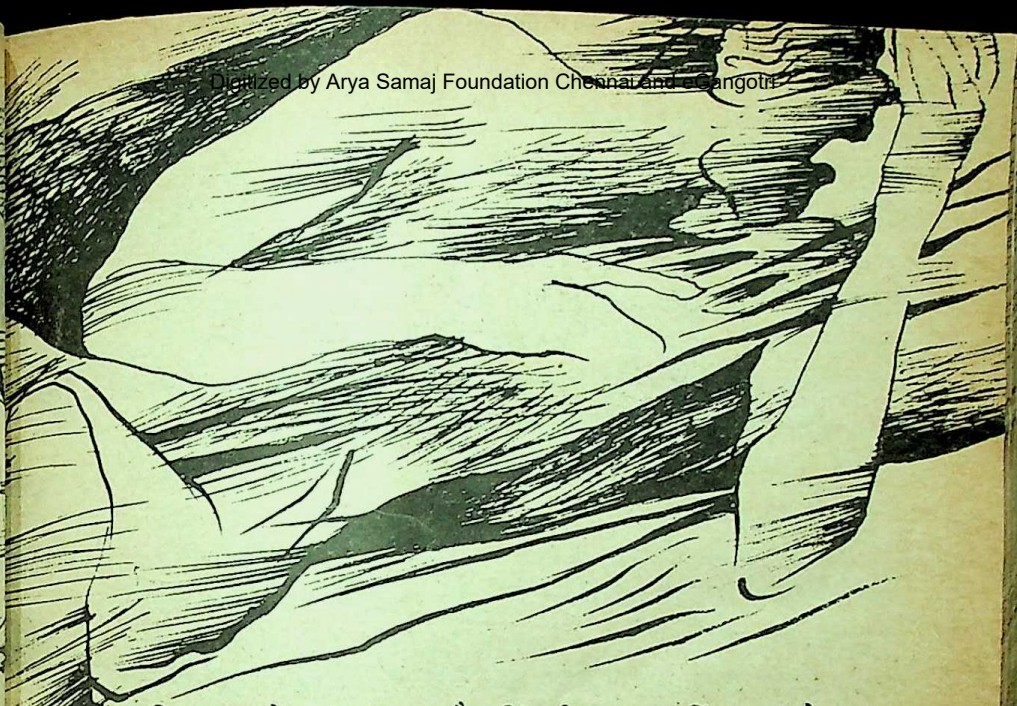

विश्रामगृह में पहुंच गया और चिंताहीन भरपूर निंद्रा-मग्न हो गया।

□

—सूर्योदय के साथ फिर उलझने लगा वह, उत्तर नहीं मिला।

—एक अंतहीन प्रश्न और अंतहीन यात्रा का उत्तर मिलता है ?

—परेशानी सार्वभौमिक या सार्वजनिक नहीं होती।

—तत्काल आवश्यकताओं की पूर्ति परेशानियों का न उदय है और न अंत।

—सार्वजनिक परेशानियों को निशाना बनाया जाए तो अर्जुन की तरह एक आंख को बिद्ध नहीं किया जा सकता।

—परेशानियों के नाम पर हम बहस को जन्म देते हैं। बहस में पड़कर समय को लीलते हैं। समय से भिड़कर हम अपनी आयु के भारी असीमित अर्थमय क्षण गंवाते हैं।

—समय ठहरेगा नहीं, न आयु बढ़ेगी, बढ़ाने में लगे हैं हम अपनी परेशानियों का हिसाब।

□

—सोच लें थोड़ा; परेशानियां होती हैं क्या—गरमी या सरदी, प्रकाश अथवा अंधकार, सुख या दुख . . . . . नहीं, नहीं हैं ये परेशानियां। ये क्षणिक भावावेग हैं।

—परेशानियां कहते हैं जिन्हें उन्हें सार्वभौमिक सत्ता तक सीमित रखते हैं हम।

—जो सार्वजनिक हैं उनका 'मैं' से क्या संबंध ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—एक अटूट प्रवाह है यह : प्रकृति से विश्व का अनुमान लगाना अंधे का प्रकाश को खोजना है।

—प्रकृति से ईश्वर की प्रकृति का अनुमान लगाना पूर्णता को नष्ट करना है।

—पूर्णता की बात सोचना अपने अधूरेपन को जन्म देना है। पूर्ण है कौन ? मनुष्य, प्रकृति या ईश्वर ?

—श्रेष्ठता के क्रम में लें तो कहूंगा मैं पूर्ण ईश्वर भी नहीं है। पूछा जा सकता है क्यों ? विश्व क्या पूर्ण है ? विश्व क्या एकार्थी है ? कहा गया है अनेक नक्षत्रों और ग्रहों में विश्व विभक्त है। पृथ्वी मात्र एक अंश है।

—अंश में रहकर पूर्णता को नहीं सोचा जा सकता। ईश्वर भी विभक्त हो सकता है।

—अर्थ स्पष्ट है : पूर्णता की खोज व्यर्थ श्रम, शक्ति और जीवन का हनन है।

—ईश्वर की सत्ता का आभास आस्थावान होने का प्रतीक होना चाहिए; नेत्रहीनता का नहीं।

—जब-जब असुरक्षा की भावना उठेगी, ईश्वर तभी उतना ही शक्तिशाली होता जाएगा।

—भय बढ़ेगा तो ईश्वर अनेक रूपों में हमारे भीतर अवतरित होगा।

—सुख के क्षण होंगे तो ईश्वर शेषनाग पर शयन सुख लेते हुए दृष्टिगोचर होंगे।

—तौलकर देखिए : जीवन में दर्द बहुत हैं, दुखों का भार सुख से ज्यादा है। क्यों है यह ?

—सृष्टि के निर्माण के समय ईश्वर ने अपनी सत्ता की सुरक्षा के लिए कोई कीड़ा तो नहीं छोड़ दिया !

—संभव है। निरंतर अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए यह किया गया हो।

—तब इसे ईश्वर की कृपा या उसका सहज होना कहा जाएगा ?

—कहा जाएगा या कि ईश्वर एक नहीं है, वह विभाजित व्यक्तित्व है।

—इसी विभाजित व्यक्तित्व ने मनुष्य को भावुक और संवेदनशील बना दिया है, शायद।

□

—पूर्ण विराम कहीं नहीं है, अर्द्ध-विराम में विभाजित है हमारा जीवनक्रम।

—संभवतः इसीलिए जीवन का अंत भी अचानक और अर्द्धता में ही हो जाता है।

—एक पृष्ठ लिखने का क्रम चला, कभी पूरा नहीं हो पाया। उस पृष्ठ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्द्धांश हमेशा कोरा ही रहा।

—इसी कोरे पृष्ठ को पूरा करने के लिए बार-बार ईश्वर की शरण में जाना होता है। कहा जाता है बार-बार जन्म लेंगे हम। लेंगे शायद पर वह पृष्ठ ही न मिले दोबारा, जिसे अधूरा छोड़ा था, तो ?

—हर बार नया पृष्ठ आरंभ करना पड़े और अर्द्धांश में निरंतर छोड़ते चले जाएं . . . !

—मैं पूछता हूं आपसे, आप पूछते रहे हैं मुझसे इसलिए :

—कब तक यह क्रम चलेगा ?

—कब तक एक सच से दूर भागेंगे ?

—कब तक भुलावे में पड़े रहेंगे ?

—कब तक तलाशते रहेंगे उसे ?

—कब तक, कौन रहेगा 'वह' ?

—हमारी पूर्णता का केंद्र क्या होगा ?

—व्यर्थ भटका दिया मैंने।

—प्रवेश कीजिए अपने भीतर के यथार्थ में।

—सोचिए और उसका आत्मदर्शन कीजिए।

—आस्थावान बनकर देखिए तो किसकी अपेक्षा है आपको ?

—आपको अपेक्षा है, आपके भीतर के 'मैं' की।

—महासामर्थ्य और महाशक्ति के दैदीप्यमान आभामंडल में ही आपका 'मैं' है।

—'मैं' की खोज में प्रकृति का साक्षात्कार है, ईश्वर का विलय है और सृष्टि को नन्हीं मुट्ठियों में कैद कर लेने की क्षमता है।

□

—एक साथ सभी क्षमताओं से पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण यदि हो गया तो खोज किस बात की।

—परेशानी का अर्थ अब भी है ?

—परेशानी को वर्ग-पहेली की तरह हल करना चाहेंगे, अब भी !

—ज्ञान बोध की पूर्णता प्रश्नों के घेरों में छोड़ जाएगी, अब भी,अब भी, अब भी क्या ?

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

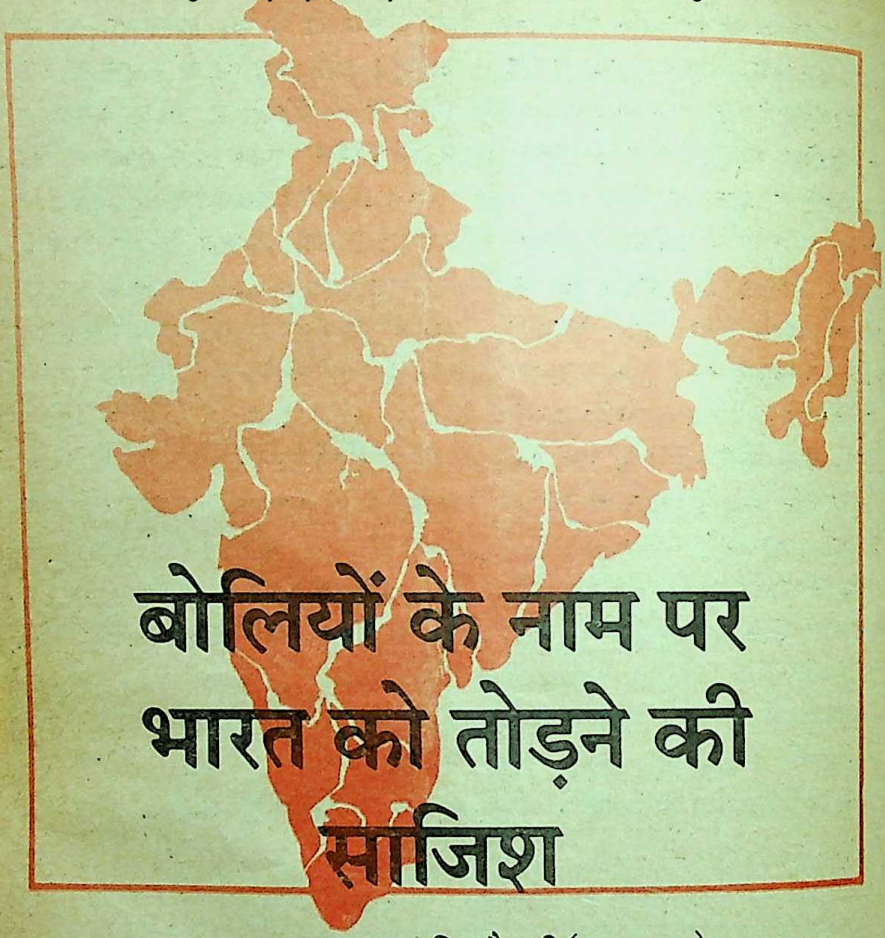

बोलियों के नाम पर भारत को तोड़ने की साजिश

● बालकवि बैरागी (संसद-सदस्य)

भारत में हिंदी को उसका सही स्थान मिल सके, इस दिशा में संसदीय राजभाषा समिति ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यह समिति विगत दस सालों से भारत में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में जा-जाकर विभिन्न स्तरों पर हिंदी के कार्य और उसके मार्ग में आनेवाली बाधाओं पर खुलकर चर्चा कर रही है और अपनी निरीक्षण-रिपोर्ट दे रही है।

यह समिति मूलतः तीन उप समितियों में बंटकर भ्रमण करती है। संसद से विशेषाधिकार प्राप्त यह समिति गत दस सालों में करीब सवा तीन हजार कार्यालयों का निरीक्षण कर चुकी है। अपने काम को करते हुए समिति ने यह तय किया कि वह छह भागों में राष्ट्रपति को अपना प्रतिवेदन देगी।

इस प्रतिवेदन का पहला भाग दिसम्बर १९८६ में हस्ताक्षरित हुआ और जनवरी ८७ में राष्ट्रपति को भेंट कर दिया गया। जुलाई ८७ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति के सदस्यों को यह सूचित किया गया कि राष्ट्रपति ने इस प्रथम भाग को यथा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। इस भाग में कुल ७०० पृष्ठ हैं। प्रतिवेदन का दूसरा भाग ३१ जुलाई ८७ को राष्ट्रपति को प्रस्तुत कर दिया गया है। राष्ट्रपति ने इस खंड को भी यथा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। तीसरा भाग प्रारूप के तौर पर सदस्यों की सहमति पा चुका है और समयबद्धता के अनुसार सन १९८८ में राष्ट्रपति को सौंप दिया जाएगा। तय यह किया गया है कि आगामी दो सालों में समिति के सभी छह खंड राष्ट्रपति की सेवा में प्रस्तुत हो जाएं।

हिंदी का काम तेजी से बढ़ा है !

ये खंड समय-समय पर भारत की सभी विधान सभाओं को भी भेजे जा रहे हैं। पहला भाग, जहां तक मेरी जानकारी है, हमारी विधान सभाओं को पहुंच चुका है। वे चाहें तो इस पर विचार करें और चाहें तो नहीं करें। यही स्थिति संसद में भी है। पहला भाग संसद के पटल पर रखा जा चुका है। अब वह संसद की खुली संपत्ति है। उस पर कोई भी सदस्य बहस की मांग कर सकता है। समिति ने इसको बहुत ही गहराई से किया है। यदि सब कुछ समयबद्ध होता रहा तो मेरा अनुमान है कि सभी छह भागों का कलेवर दो से ढाई हजार पृष्ठों का हो जाएगा। इससे कम भी हो सकता है और ज्यादा भी, पर मोटे तौर पर यही अनुमान बैठता है। इस बीच समिति समय-समय पर यह महसूस कर रही है कि हिंदी का काम तेजी से बढ़ रहा है और वातावरण हिंदी के पक्ष में दिनानुदिन बनता जा रहा है। प्रतिवेदन के दूसरे भाग की पृष्ठ संख्या तीन सौ से सवा तीन सौ के बीच है। अभी यह खंड संसद के सामने आया नहीं है। एक रास्ता यह भी है कि राष्ट्रपति इन खंडों पर खुद विचार करके राष्ट्रपतीय आदेश के माध्यम से इन सिफारिशों को शीघ्र लागू कर सकते हैं।

अन्य भाषाओं पर आंच नहीं

समिति ने भारत की विशालता और एकरूपता तथा हिंदी की अखिल भारतीय संप्रेषणीयता तथा संपर्क-क्षमता को मद्देनजर रखते हुए अपने प्रस्ताव तैयार किये हैं। समिति ने पूरा ध्यान रखा है कि उसके कार्यकलाप से भारत की किसी भी भाषा या बोली की अस्मिता पर आंच नहीं आये। किसी का मर्म आहत नहीं हो और संस्कृति तथा सभ्यता के किसी भी मानदंड पर प्रहार नहीं हो। भारतीय भाषाओं के माध्यम से अंगरेजी को हटाना और हिंदी को

विदेशी कूटकर्मियों ने भारत के नक्शे में बोलियों के नाम पर सैकड़ों लकीरें खींच दी हैं। बोलियों के अंचलों को रेखाएं देकर भारत के कई टुकड़े नक्शे में कर दिये गये हैं।. . .भाषा के नाम पर जगह-जगह उलझनेवाला देश अब धीरे-धीरे बोलियों के नाम पर उलझने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक

लाना मुख्य दृष्टिकोण है। अंगरेजी को हम केवल हिंदी के दम पर नहीं हटा सकेंगे। हमें सभी भाषाओं का सहारा लेना होगा। सवाल हिंदी को लाने के साथ-साथ अंगरेजी को हटाने का मुख्य है। पहला बिंदु यही है कि अंगरेजी हट जाए।

संसद की इस समिति के अध्यक्ष भारत के गृह-मंत्री हुआ करते हैं और इसके सदस्य हर चुनाव के साथ आते-जाते और बदलते रहते हैं। जब समिति अपने प्रतिवेदन के छहों खंड राष्ट्रपति को सौंप देगी, तब इस समिति की उपयोगिता अपने-आप समाप्त हो जाएगी। उसके बाद या तो यह समिति स्वयमेव विसर्जित हो जाएगी या फिर इसे दूसरा कोई हिंदी का ही काम दे दिया जाएगा।

भ्रमण के दौरान इस समिति की उपसमितियों को आशा से ज्यादा सहयोग मिला है। अहिंदी क्षेत्रों में इस समिति के सदस्यों को जिस उत्साह से स्वीकार किया गया है, वह हिंदी के प्रति भारत की अखिल भारतीय ललक का आभास देनेवाली घटना है। चूंकि यह एक संसदीय समिति है, इसलिए इस समिति की अवहेलना या इसके प्रति की गयी अवज्ञा सीधी हमारी संसद की अवहेलना या अवज्ञा मानी जाती है। इसलिए भी समिति को अतिरिक्त आदर मिला है। मैं स्वयं इस समिति की तीसरी उपसमिति का सदस्य हूं।

भारत-विरोधी अभियान

इधर भारत में लंबे समय से चल रहे एक बहुत ही गंदे भारत-विरोधी अभियान का परिदृश्य सामने आया है। इस परिदृश्य में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका हमारे पढ़े-लिखे और शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए महानुभावों की है। विशेषकर उन लोगों की, जो भाषा-शास्त्र और भारतीय बोलियों के नाम पर शोध तथा अनुसंधान करते रहते हैं। इस काम के लिए विदेशों के विभिन्न संस्थान हमारे शिक्षाविदों को भरपूर राशि अनुदान और सहायता आदि के रूप पर देते हैं। फैलोशिप देना और विदेशों में भ्रमण के लिए बुलाना एवं आलेख प्रकाशित करना, करवाना, इस अभियान का मुख्य हिस्सा है। यह काम होता है भारत के विभिन्न अंचलों में बोली जानेवाली आंचलिक बोलियों पर शोध और अनुसंधान के नाम पर। भारत वैसे ही इतनी भाषाओं और बोलियों का देश है कि आप-हम आये दिन भाषाई आंदोलनों के शिकार होते रहते हैं। पर बात अब कुछ और आगे बढ़ा दी गयी है। हो यह रहा है कि विदेशी कूटकर्मियों ने भारत के नक्शे में सैकड़ों लकीरें बोलियों के नाम पर खींच दी हैं। बोलियों के अंचलों को रेखाएं देकर भारत के कई टुकड़े पहले नक्शे में कर दिये गये। और उन बोलियों पर काम करनेवाले शिक्षाविदों को अपने 'केरियर' और भारतीय भाषा की सेवा करने का लालच देकर अनुग्रहीत किया गया। भाषा के नाम पर जगह-जगह उलझनेवाला देश अब धीरे-धीरे बोलियों के नाम पर भी उलझने लगा है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम मध्यप्रदेश का ही उदाहरण लें। मध्यप्रदेश में मालवी, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी और फिर इन बोलियों की भी उपबोलियां। हम हिंदी के आग्रह से हटकर बोलियों के आग्रहों पर उतरे और बोलियों से भी नीचे उतरकर उपबोलियों के आग्रहों पर आने को तैयार होते जा रहे हैं। विदेश का इतना पैसा इस काम के लिए भारत में बह रहा है कि आप अनुमान नहीं कर सकते हैं।

एक गहरी साजिश

हिंदी अपना अखिल भारतीय संपर्क-स्वरूप ले और प्रशासन में अंगरेजी को अपदस्थ करे, उसके समानांतर हिंदी से लड़ने के लिए भाषाओं के साथ-साथ बोलियों का दुराग्रह भी तैयार हो जाए। यह बहुत लंबी मारवाली साजिश है। यह साजिश एक बहुत बड़ा कुचक्र है। पता नहीं, हम लोग इससे कब कैसे उबरेंगे, पर देश का बहुत बड़ा तथाकथित बुद्धिवादी वर्ग इस काम में आंख मूंद कर लगा हुआ है। इस स्थिति पर हमें सतर्क होकर सोचना होगा। बोलियों के दायरे बहुत ज्यादा छोटे और अत्यंत ही संवेदनशील होते हैं, आये दिन आप समाचार-पत्रों में बोलियों के कारण सिर फूटने के समाचार पढ़ रहे होंगे। यह सोचा-समझा षड्यंत्र है और हम सभी इसके जाने-अनजाने हिस्सेदार हैं। भारत को छोटा करने या छोटा बनाये रखने के तरीकों में सबसे ज्यादा कारगर तरीका यही सिद्ध होता जा रहा है। कोई भी देश भूगोल में बाद में कटता या टूटता है, वह पहले दिमाग में टूटता या तोड़ा जाता है। एक बार दिमाग में कोई टूटन आकार ले लेती है तो फिर वह मैदान में भी आकार लेने लग जाती है।

शब्दावली आयोग का योगदान

भारत के शब्दावली आयोग ने जहां कई महत्त्वपूर्ण काम किये, वहां उसका एक काम बहुत ही ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वह है विभिन्न विषयों पर अखिल भारतीय हिंदी शब्दावलियों का प्रकाशन। जैसे भौतिकी, गणित, भूगोल, खगोलिकी, समाज-विज्ञान और सांस्कृतिक विज्ञान आदि विषयों पर अखिल भारतीय शब्दावलियों का निर्माण और उनका प्रकाशन। ऐसे कई विषय आज हिंदी के शब्दों के दायरे में पहुंच चुके हैं और उन विषयों के अध्येता या विशेषज्ञ यह नहीं कह सकते हैं कि हिंदी में इन विषयों के शब्द नहीं मिलते हैं। एक बात और भी है। हिंदी में कुछ शब्द ज्यादा बड़े और लंबे हैं। वे शब्द अंगरेजी के तकनीकी शब्दों के रूपांतर नहीं हैं किंतु उन शब्दों की गर्भनिहित व्यंजनाओं तक का नवनिर्माण है। जब हम अंगरेजी की या रोमन की कठिन से कठिन शब्दावलियों को 'जस का तस' याद करके अपना काम चलाते रहे हैं तब फिर हिंदी के इन शब्दों को भी उनकी सारी जटिलताओं और लंबाई के बावजूद हमें याद रखना और उनका प्रयोग करना होगा। संस्कृत में एक से एक लंबे सामासिक शब्द हमारे पास हैं और हम उनका संधि-विच्छेद और वर्ण-विग्रह करके अपना काम सदियों से करते आ रहे हैं। उस तुलना में यह काम ज्यादा आसान और सरल है। नये शब्द का हमें उसी तरह स्वागत करना चाहिए, जिस तरह कि हम अपने घर में आये नये बच्चे का स्वागत करते हैं। उसको प्यार दिया जाना चाहिए और उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाड़ लड़ाया जाना चाहिए। क्या हममें यह निसर्ग समाप्त हो गया है ? शायद नहीं।

और अब एक संस्मरण

संसद के बजट सत्र में एक दिन मुझे एक मित्र ने किसी संस्थान विशेष का नाम लेकर कहा कि मैं वहां जाऊं और उसके कर्मचारियों-अधिकारियों में हिंदी पर कुछ बात करके आऊं। बात मेरी मनचाही थी। निश्चित समय पर मैं वहां पहुंच गया। इधर संसद में मैं बजट पर यह सुनकर चला था कि हमारे बजट का घाटा इस साल यही कोई साढ़े छह हजार करोड़ रुपयों का है। अलग-अलग पक्षों के अलग-अलग दावे थे। प्रतिपक्ष इसे भयावह मानता था और सरकार 'चिंता की कोई बात नहीं' वाली मुद्रा में बैठी थी। खैर, मैं उस संस्थान में पहुंचा, दिल्ली में एक बात बहुत अच्छी है। आप बड़े से बड़े मुकाम पर जाइएगा, यदि बातचीत अकादमिक स्तर की है तो आपको सभागार में सौ पचास से ज्यादा लोग नहीं मिलेंगे। सभी की अपनी-अपनी रुचियां और व्यस्तताएं हैं। मैंने देखा कि मेरे श्रोताओं में बड़ी कठिनाई से तीस-पैंतीस लोग हैं। पर यह भी मुझे परिचय के समय ही बता दिया गया था कि इनमें से ९५ प्रतिशत लोग अपने-अपने विषयों में बड़ी से बड़ी उपाधियां ले चुके हैं। याने कि एक भयावह आतंक और मनोवैज्ञानिक दबाव। मैं ठहरा ठेठ देहाती। संसद से सीधा उठकर चला था। हिंदी और बजट दिमाग में गुत्थम-गुत्था हो रहे थे। मेरा परिचय दिया गया। आराम की सांस मैंने तब ली, जब मैंने पाया कि वहां सभी लोग मुझे पहचानते थे। संस्थान के परिसर में पहले सिरे से दूसरे सिरे तक हिंदी का एक भी शब्द न था। लगता था, भारत 'भारत' नहीं इंग्लि का भी पितामह देश हो। मैं शुरू हुआ। कहा, 'इस साल हमारे बजट का घाटा क हमारी सरकार के करीब ६,५०० करोड़ है। और दूसरी तरफ सरकार का यह भी है कि हमारे किसान ने देश में खाने का अ इतना पैदा कर दिया है कि करीब २५ अनाज भंडारण की समस्या के कारण सड़कों पर पड़ा हुआ है। हमारे पास अ रखने की जगह नहीं है। हमारा अनाज कि की मंडी हमारे पास नहीं है। इस सारे अ को यदि हम आज बेच सकें तो इसका करीब १२,००० करोड़ रुपया हमें जाएगा। याने कि हमने इतना ज्यादा अ पैदा कर लिया है कि केवल अनाज के मू हम सारे सालभर का घाटा पूरा करके दे ६,००० करोड़ रुपया और भी अधिक दे हैं। याने कि हम किसान के कारण घाटे में हैं। हमारे इस राष्ट्रीय घाटे का कारण कुछ ही है।"

मैं इस बात को कुछ तसल्ली से ही कह था कि मेरे श्रोताओं में बैठे एक डी. लिट् स अपना आपा खो बैठे। वे शुद्ध अंगरेजी में पर बरसे, "श्रीमान ! इस संगोष्ठी में अ इस बात की संगति कहां है ? आपको प कि आप किस काम के लिए बुलाये गये हैं आप क्या बोल रहे हैं ?"

उन्होंने मुझे बुरी तरह झिड़का। ऐसे मुझे उत्तेजित नहीं करते। मैं तब अपनी में अधिक ऊर्जा पाता हूं ! मैंने उनसे हि किया, "मेरे कथन और विषय में सौ

कादमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगति है। मैं रिलेवंट हूं।''

तब तक सभागार खुसुर-पुसुर से भर गया। संयोजकगण परेशान कि एक सदस्य का अपमान नहीं हो जाए और मेरे प्रशंसक इस बात से दुखी कि मुझ-जैसा लिखने-पढ़नेवाला आदमी किस तरह विषय से हट गया है। बेहतर होता कि मैं 'एक कविता सुनाकर समय बिता देता'— जैसी मनःस्थिति। मैंने अपना निवेदन जारी रखा। कहा, ''हमारे किसान ने राष्ट्रीय, प्रादेशिक और जनपदीय याने कि हर स्तर पर हर तरह का अपमान सहकर भी शस्य श्यामला मां वसुंधरा के आंचल का अटाटूट अन्न प्राप्त करके हमारी थालियों तक पहुंचा दिया। मात्र कृषि ही वह क्षेत्र रहा जहां कि हम सिर ऊंचा करके राष्ट्रीय स्तर पर कुछ कह सकते हैं। हम किसी के मोहताज नहीं हैं। जबकि हमने भी किसान का अनादर करने में कभी कोई कमी नहीं की। उसका मूल कारण यह है कि किसान ने अपनी खेती अंगरेजी में नहीं की। उसने अपनी मिट्टी से अपनी भाषा में बात की। अगर वह पंजाब का है तो उसकी खेती की भाषा पंजाबी थी। गुजरातवाले की गुजराती और महाराष्ट्रवाले की मराठी'', मैं इस भाषावाली बात को हर प्रदेश के साथ कहता चला गया। सभागार में मेजें थपथपायी जाने लगीं। मैंने रोककर निवेदन किया, ''आप आपके किसी भी संस्थान या कारपोरेशन की बैलेंसशीट उठा लीजिएगा। यदि वहां अंगरेजी है तो वह बराबर घाटे में है। यदि आपका कारबार सरकार का है और वह अंगरेजी में है तो उसका घाटा फिर सात समंदर पार से आया पैसा ही पूरा करे तो करे, जहां-जहां काम हिंदी या भारतीय भाषाओं में हो रहा है. . . '' और मैं वाक्य पूरा करूं, तब तक वे अंगरेजी के दास महाप्रभु पांव पटकते फुंकारते हुए सभागार से चले गये।

आप स्वयं सोचिए कि इस बहिर्गमन में मेरा क्या दोष था ? कार्यक्रम के बाद चाय-पान का आयोजन हुआ तो वे सज्जन बड़ी कठिनाई से बुलाये क्या, लाये जा सके। पूरे चायकाल तक उनसे एक-दो वाक्य बोलनेवाला बस मैं ही निकला। किसी ने उनसे न कुछ कहा, न वे किसी से कुछ बोले। उनकी मनःपीड़ा यह रही होगी कि वे एक किसान की तुलना में छोटे पड़ गये। या यह भी हो सकता है कि जहां-जहां भारत में अंगरेजी है, वहां-वहां यह विपन्नता क्यों है ? कुछ भी कारण रहा हो पर वे पूरे समय आहत और अपमानित-जैसे बने रहे। मैं सर्वथा निर्दोष आदमी उनसे माफी भी भला किस कारण मांगता ? पर जब मैं वहां से चला तो उस परिसर में मैं एक नया उल्लास स्पष्ट देख रहा था।

इस संस्मरण को आप चाहे जिस रूप में ले सकते हैं। यह सन १९८७ की घटना है।

और सबसे अंत में—

आप अंगरेजी पर प्राण न्यौछावर करनेवाले हों, तब भी अपनी और अपनी पीढ़ियों की डायरियों में मेरा एक वाक्य लिख लीजिएगा। समय-समय पर काम आएगा। मैं बहुत विनम्रता के साथ कह रहा हूं, 'अंततः भारत से अंगरेजी ही जाएगी। हिंदी को यहीं रहना है और वह यहीं रहेगी।'

—पोस्ट : मनासा
मंदसौर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

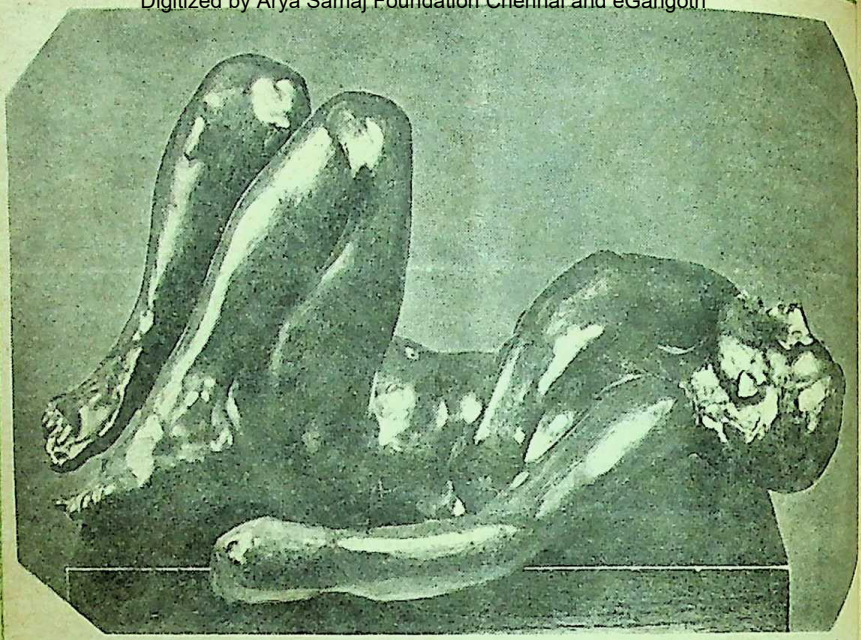

किसे पसंद नहीं है सौंदर्य और आकर्षण

● डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

आज से लगभग दो हजार साल पहले उज्जैन के महाराजा एवं महाकवि भर्तृहरि ने श्रृंगार-शतक के एक श्लोक में कहा था—

संसारऽस्मिन्नसारे कुनृपति भुवनद्वार सेवाकलंक—
व्यासंगव्यस्त धैर्य कथममलधियो मानसं संविदध्युः
यद्यता प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयमूतो न स्युरम्भोजनेत्राः
प्रंखत्कांचीकलापाः स्तनभर
विनममध्यभागास्तरुण्य

अर्थात—यदि उदीयमान चंद्र की दीप्ति के समान तथा कमल तुल्य नेत्रवाली, वक्षभार से किंचित झुके हुए मध्यमानवाली स्त्रियां न होतीं तो इस असार संसार में निर्मल विचार के लोग भी अधीर-चित्त होकर दुष्ट राजाओं की सेवा में क्योंकर उपस्थित होते ?

आज के मुहावरे में शाहीन जफर ने एक शे में लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तेज बहुत आंधी
बिखरेंगे न लेकिन हम
बांधे हुए दुनिया से
इक दर्द का रिश्ता है।

पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति यह दर्द का रिश्ता अथवा प्रेम-सौंदर्य-जनित संवेदना-सहानुभूति का संबंध ही जीवन को जीवन-योग्य बनाता है। जिंदगी में जीने लायक, इससे बनता है। शेष सभी कुछ केवल होना है, जीना नहीं।

वहां-वहां प्रेम और सौंदर्य को प्रश्रय मिलता है।

प्रेम और सौंदर्य बड़ी नाजुक चीजें हैं। देखते-देखते, उनमें काम और शारीरिक सौंदर्य गड्डमड्ड होने लगते हैं। प्रत्येक देशकाल में प्रेम और काम तथा आत्मिक-सौंदर्य और शारीरिक-सौंदर्य के बीच की सीमा-रेखा को न जानकर, ऐसे काम होते रहे हैं, जो बुद्धि को तो स्वीकार्य होते हैं, परंतु बोध को नहीं। फ्रायड और युंग ने जिन मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों की बातें

प्रेम और सौंदर्य की सहोदरा संवेदना-सहानुभूति मानव-मन की सबसे बड़ी पूंजी है। प्रेम-सौंदर्य-जनित वियोग श्रृंगार से मानव-मन की उत्कृष्ट कृति कविता की उत्पत्ति हुई है। जीवन में प्रेम और सौंदर्य का अत्यंत महत्त्व है। वही तो जीवन को जीने योग्य बनाता है!

जिंदगी में ऐसा कुछ जीने लायक न हो, तो मानव तो क्या; पशु-पक्षी और पेड़-पौधे भी प्रकृति की इस माया में जीना न चाहें। मानव की अपेक्षा पशु-पक्षियों में कहीं कम बुद्धि है। पेड़-पौधे तो बुद्धि से नहीं, अपितु प्रेम-सौंदर्य की सहज अनुभूति से जीवित हैं। जैसे-जैसे केवल बुद्धि का हस्तक्षेप अधिक होता जाता है, वैसे-वैसे प्रेम और सौंदर्य के स्थान पर घृणा और कुरूपता का उत्कर्ष होता जाता है। लेकिन जहां-जहां बुद्धि बोध में बदल जाती है,

की हैं, वे सब अनादि काल से सभी जगह रहती आयी हैं।

ऋग्वेद के कवि ने एक स्थान पर उषा को सूर्य की पुत्री के रूप में प्रस्तुत किया है। दूसरे स्थान पर वह उसकी प्रेमिका बन जाती है। यही नहीं, तीसरे स्थान पर वह उसकी मां है। फिर ऐसा भी है कि उषा सूर्य की मां होकर, सूर्य को मन और प्राण से चाहती है, वह उसके आकर्षण से बंधी है। यम-यमी संवाद में एक और रिश्ते को उकेरा गया है। यमी ने अपने जुड़वां भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यम के प्रति प्रेम-निवेदन किया था।

परंतु यम ने संयम दिखाया। उसने अपनी बहन यमी से कहा—

नहीं, ऐसा नहीं,
वरुण और मित्र का विधान बड़ा है
वे निश्चल नहीं खड़े हैं,
वे अपनी आंखें नहीं मूंदे हैं,
देवों के प्रहरी चहुं ओर घूम रहे हैं—
नहीं, ऐसा नहीं. . .
मेरा नहीं, बल्कि किसी और का
तुम वरण करो

जिस प्रकार यम यमी को बताता है कि विधान-विहित या वैध क्या है, उसी प्रकार अन्यान्य धार्मिक पुस्तकों के पात्र भी सुचारु रूप से स्पष्ट करते हैं कि प्रेम और सौंदर्य के विकृत और कामुक रूप अग्राह्य हैं तथा उनसे अंततोगत्वा घृणा और कुरूपता की सृष्टि होती है। आगे चलकर मनुष्य ने इन विकृत और कामुक रूपों के खिलाफ कानून भी बनाये। ये कानून जन-जीवन को नियमित करते हैं।

प्रेम और सौंदर्य की सहोदरा संवेदना-सहानुभूति मानव-मन की सबसे बड़ी पूंजी है। आदिकवि वाल्मीकि उत्तरी बिहार के चंपारन जिलांतर्गत भैंसालोटन गांव में एक आश्रम में रहते थे। एक दिन उन्होंने देखा कि एक व्याघ्र ने प्रेमाकर्षण के आदि-संबंध में अवतरित क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार दिया। उनके मुख से अनायास ही निकल पड़ा—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्

प्रेम-सौंदर्यजनित वियोग-श्रृंगार से मानव-मन की उत्कृष्ट कृति कविता की उत्पत्ति हुई है। वाल्मीकि ने अपने मुख से निसृत अनुष्टुष् छंद में प्रायः समस्त रामायण महाकाव्य की रचना की। उनकी रामायण का प्रभाव अठारह पुराणों, महाभारत, रघुवंश, भट्टिकाव्य, महानाटक, कादंबरी, बृहत्कथा आदि पर परिलक्षित है। इसके बालकांड के तिरसठवें सर्ग में विश्वमित्र और मेनका की कहानी दी हुई है।

महातपस्वी विश्वमित्र ने एक हजार वर्ष पुष्कर तीर्थ में घोर तपस्या की। उनकी तपस्या का अपहरण करने के लिए देवताओं ने परम सुंदरी मेनका को वहां भेजा। विश्वमित्र ने महाव्रत की समाप्ति पर पुष्कर में स्नान कर लिया और ब्रह्मा ने उन्हें महर्षि कह दिया, तो उन्होंने (विश्वमित्र ने) देखा कि मेनका और लावण्यमयी मेनका पुष्कर में नहा रही है। जिस प्रकार बादल में बिजली चमकती है, उसी प्रकार वह पुष्कर-जल में शोभायमान है।

फिर क्या था ? विश्वमित्र प्रेमाधीन हो गये और उनके निमंत्रण पर सुंदर कटि-प्रदेश वाली मेनका उनके आश्रम में रहने लगी। मेनका एक-दो साल नहीं, बल्कि पूरे दस साल तक उनके साथ रही।

किसे नहीं बांधा प्रेम और सौंदर्य ने ? दशरथ की तीन रानियां थीं। उनके पुत्र राम से ही बंधे थे। यदि राम एकपत्नीव्रत थे, तो सीता भी एकपतिव्रता हैं। परंतु महाभारत की द्रौपदी की बात और है। महाभारत में और बौद्ध-साहित्य के कुणाल-जातक में कृष्णा द्रौपदी की कहानी में किंचित विकृति आ गया है। काशी नरेश ब्रह्मदत्त ने कौरवों पर आक्रमण कर दिया और वहां के राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वधकर वह उसकी गर्भवती स्त्री को उठाकर काशी ले आया। काशी में कौशल नरेश की मूलतः पुत्री का जन्म हुआ। जब दो पिताओं की पुत्री (इसीलिए नाम द्रौपदी) बड़ी हुई, तो उसके लिए स्वयंवर रचा गया। स्वयंवर में अन्यान्य राजकुमारों के साथ पांडु के पांचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—उपस्थित थे। द्रौपदी पांचों भाइयों पर आसक्त हो गयी और उसने अपने पिता-माता से कहा, 'मैं पांचों भाइयों का वरण करती हूं।'

द्रौपदी ने पांचों पांडवों का प्रेम प्राप्त किया। वह प्रत्येक से कहती, 'मैं सबसे अधिक तुम्हें चाहती हूं।' परंतु प्रत्येक प्रेम के लिए सौंदर्य का उद्दीपन अपना-अपना होता है। यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति सामान्यतः कुरूप या अपंग समझा जाता है, वह किसी के लिए प्रेम का पात्र न हो। महाभारत के सैकड़ों साल बाद कालिदास ने कहा—

न षट्पद श्रेणिमिरेव शोभते
स शैवलासंगमपि प्रकाशते

(कुमारसंभव, ५-९)

अर्थात, कमल का फूल भ्रमर पंक्तियों के साथ ही शोभा नहीं देता, अपितु सेवारों से लिपटा रहने पर भी सुंदर लगता है।

एक साथ पांच भाइयों से उसी तरह प्रेम करना अपने आप में आदर्श उदाहरण है। लेकिन, प्रेम से विरक्ति भी होती है, जैसी महाकवि भर्तृहरि को हुई थी। बात यों हुई कि एक ब्राह्मण के घोर तपस्या के बाद एक अमर फल की प्राप्ति हुई। ब्राह्मण ने वह फल महाराजा भर्तृहरि को दे दिया। भर्तृहरि ने वह फल अपनी रानी पिंगला को चिरयौवना अमर

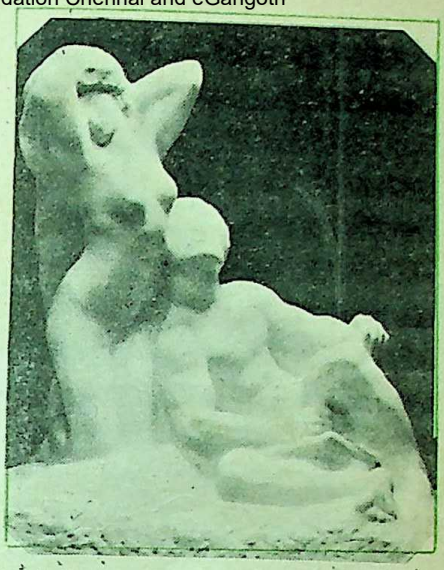

देखने के लिए भेंट कर दिया। पिंगला ने उसे अपने प्रेमी दारोगा को सौंप दिया। लेकिन, दारोगा तो एक वेश्या को चाहता था। वह अमर फल अब वेश्या के हाथ लग गया। वेश्या ने सोचा, मेरी सारी उम्र तो पाप कमाती गुजरी है। यह अमर फल खाकर और कितने पाप करूंगी ? इसे महाराजा भर्तृहरि ग्रहण करें तो उचित होगा। आखिर में वह फल लौटकर भर्तृहरि को मिला। अब उनकी आंखें खुलीं। उनके नीति-शतक का दूसरा श्लोक द्रष्टव्य है—

यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छिति जनं स जनोऽन्यसक्तः
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक् तां च तं च मदनं इमां च मां च

अर्थात, मैं जिसकी सतत चिंता करता हूं, वह मुझसे विरक्त होकर किसी अन्य पुरुष की इच्छा करती है। वह अन्य पुरुष किसी दूसरी स्त्री को चाहता है और मेरे लिए कोई और स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण दे रही है। इसीलिए अन्य पुरुष से प्रीति रखनेवाली अपनी स्त्री को धिक्कार है; उस पुरुष को धिक्कार है, जिस पर वह आसक्त है, उस अन्य स्त्री को धिक्कार है, जो मुझे चाहती है और उस कामदेव को भी धिक्कार है।

अब भला, कामदेव का क्या दोष दें ? दोष उन परिस्थितियों का है, जिनमें यह तृष्टि हुई। जनार्दन की स्तुति के पश्चात ब्रह्मा ने महालक्ष्मी को देखा, तब कामदेव का निर्माण हुआ। उसे गन्ने का धनुष तथा पुष्प के बाण प्रदान किये गये। विष्णु ने कामदेव को सर्वदा विजयी होने का आशीर्वाद भी दे दिया। हां, शिव ने उसे अवश्य ही परास्त किया। इंद्रादि देवताओं की करतूतें मशहूर हैं। उन्होंने शिव को काम-पीड़ित करने के लिए कामदेव को भेजा। पर शिव ने उसे जलाकर भस्म कर दिया। यही कारण है कि भर्तृहरि ने अपने तीसरे शतक—वैराग्य-शतक में शिव की स्तुति करते हुए कहा है—

चूड़ोत्तंसितचारु चंद्र कलिका चंचच्छिखा भास्वरो
लीलादग्धविलोल कामशलभः श्रेयोदशाग्रे स्फुरः
अंतः स्फूर्जदपारमोहति मिरप्राग्भार मुच्चाटयन्
सद्मनि योगिनां विजयते ज्ञान प्रदीपो हरः

अर्थात, शिरोभूषण चंद्र की किरणों से प्रकाशमान, कामदेव-रूपी पतंगों को लीला से जलानेवाले, कल्याणकारियों में अग्रगण्य, भक्त-अंतःकरण में स्थित मोह-अंधकार का नाश करनेवाले, ज्ञान के प्रकाशक शिव-शंकर योगियों के हृदय में निवास करते हैं।

—बी-१४, दयानंद कालोनी
लाजपत नगर, नयी दिल्ली—११००२४

कादम्बिनी

हस्त रेखाएं बोलती हैं। (PALMISTRY)

विश्वविख्यात भविष्य वक्ता कीरो (CHEIRO) द्वारा लिखित सरल हिंदी में सर्वप्रथम प्रकाशित

अंको में छिपा भविष्य (NUMEROLOGY)

दोनों पुस्तकें ४० वर्ष के अनुभव का निचोड़

बड़ा साइज, चित्र ५०, पृष्ठ २१६
मूल्य ४० रूपए
डाक व्यय ८ रू. अलग

बड़ा साइज, पृष्ठ २०८
मूल्य ४० रूपए
डाक व्यय ८ रू. अलग

पत्र लिखकर वी. पी. द्वारा मंगायें

* हस्तरेखा विज्ञान पर यह एक श्रेष्ठ एवं परिपूर्ण पुस्तक मानी जाती है।
* किसी भी व्यक्ति का हाथ देखकर आश्चर्य चकित किया जा सकता है।
* भविष्य क्या-क्या संभावनाएं लेकर उपस्थित
* एक सच्चे मित्र की भांति सहायक
* अनोखे रूप में प्रस्तुत करने की विशेषता
* पढ़िए, परखिए और भविष्य में झांकिए।

रंजन पब्लिकेशन्स १६ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न-भिन्न कारणों से शत्रु मित्र और मित्र शत्रु

शरशैया पर उत्तरायण होने की प्रतीक्षा करते हुए लेटे भीष्म पितामह से युधिष्ठिर ने नीति एवं धर्म संबंधी अनेक प्रश्न पूछे थे। उत्तर में भीष्म पितामह ने अनेक दृष्टांत देकर नीति एवं धर्म का मर्म समझाया था। पिछले अंक में पाठकों ने मंत्री के गुण-दोषों के संबंध में भीष्म पितामह के विचार पढ़े। इस अंक में प्रस्तुत है, शत्रु और मित्र संबंधी उनका उपदेश। यह प्रसंग शांतिपर्व से लिया गया है।

"राजन ! मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं," भीष्म ने आगे कहना प्रारंभ किया, "एक अनागत-विधाता, दूसरा प्रत्युत्पन्नमति और तीसरा दीर्घसूत्री। प्रथम संकट आने के पहले ही अपना बचाव कर लेता है, दूसरा समय आने पर ही आत्मरक्षा का उपाय करता है, तीसरा प्रत्यक्ष कार्य में अनावश्यक विलंब करता है, उसे दीर्घसूत्री कहते हैं।

"राजन् ! भिन्न-भिन्न कार्यों का ऐसा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण कभी शत्रु मित्र और मित्र शत्रु बन जाता है। अतः देशकाल को समझकर कर्तव्य-अकर्तव्य का निश्चय करना चाहिए। इस विषय में एक बिलाब और चूहे का मैं तुम्हें दृष्टांत सुनाता हूं—

"राजन् ! एक वन में विशाल बरगद का वृक्ष था, जो लता समूहों से आच्छादित और भांति-भांति के पक्षियों से सुशोभित था। उसकी छाया शीतल होने के कारण वह बहुत से सर्पों और पक्षियों का आश्रय बना हुआ था। बरगद की डाली पर लोमेश नाम का एक बिलाव रहता था, जो पक्षियों को खा जाया करता था। उसी वन में एक चांडाल भी रहता था, जो पक्षियों को फंसा लेता था। एक दिन यह बिलाव उस चांडाल के जाल में फंस गया। अपने शक्तिशाली शत्रु के जाल में फंस जाने पर सब पक्षी और चूहे निर्भय होकर विचरने लगे और अपने फंसे हुए शत्रु पर हंसने लगे। इतने में एक चूहे ने, जो जाल के पास खेल रहा था, अपने एक विशाल शत्रु नेवले को देखा और बरगद की शाखा पर एक उल्लू को भी देखा, तब दोनों बलवान शत्रुओं से प्राण बचाने की उसे चिंता हो गयी। उसने सोचा कि बुद्धिमान, विद्वान और नीतिशास्त्र में निपुण विपत्ति में पड़कर भी उससे छूटने की चेष्टा करता है। इसमें संदेह नहीं कि बिलाव मेरा महान शत्रु है, पर यदि संभव हो, तो मैं इसे स्वार्थसिद्ध करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत एक ऐसा ग्रंथ है, जो भारत की जनता में बहुत लोकप्रिय है। इस ग्रंथ के बहुत से प्रसंगों से लोग भली-भांति परिचित हैं। लेकिन इस ग्रंथ के कुछ प्रसंग ऐसे भी हैं, जिन्हें आम भारतीय जनता नहीं जानती। यहां प्रस्तुत हैं, महाभारत के कुछ ऐसे ही अनछुए प्रसंग।

की बात पर राजी करूं। यह निश्चय कर वह चूहा जाल को काटकर उसमें घुस गया। उसने बिलाव को सांत्वना देते हुए मधुर वाणी में कहा, 'भैया बिलाव ! मैं चाहता हूं कि तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहे, इसमें हम दोनों की भलाई है। मैंने तुम्हारी जीवन रक्षा के लिए एक उपाय सोचा है। यदि भविष्य में तुम मेरी हिंसा नहीं करने का वचन दो तो मैं तुम्हारे सारे बंधन काट डालूंगा। इस प्रकार हम दोनों की मैत्री चिरस्थायी हो जाएगी।'

बिलाव ने उत्तर दिया, 'सौम्य ! मैं तुम्हारे प्रस्ताव का अभिनंदन करता हूं। तुम्हारा कल्याण हो। तुम निर्भय हो मुझे जीवन-दान करो। मुक्त होने पर मैं तुम्हारे उपकार का बदला अवश्य चुकाऊंगा। इस समय मैं तुम्हारा भक्त और शिष्य हूं। मैं तुम्हारी शरण ग्रहण करता हूं।'

अपने-अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए चूहे और बिलाव ने आपस में संधि कर ली और चूहा धीरे-धीरे जाल को काटने लगा। चूहे और बिलाव को कार्यवश संधि-सूत्र में बंधे देख उल्लू और नेवला निराश हो, अपने-अपने स्थ पर चले गये। चूहे ने बिलाव का अंतिम ब भी काटकर मुक्त कर दिया। जाल से मुक्त बिलाव वृक्ष की शाखा पर जा बैठा और बिल में घुस गया। चांडाल निराश होकर आया तो इस भारी भय से मुक्त हो बिलाव चूहे से कहा, 'मित्र ! तुमने विपत्ति के स मेरा विश्वास किया और मुझे जीवन-दान है, अब सुख भोगने का समय आया इसलिए मेरे पास आओ। अब से मेरे सभी मित्र और परिवार के लोग तु पूज्यजनों के समान सेवा करेंगे।'

बिलाव की बात सुनकर चूहे ने क 'लोमेश ! तुमने जो कहा है, वह सब मैंने से सुना है। अब मेरी बुद्धि में जो विचार स हो रहा है, उसे मैं तुम्हें सुनाता हूं। इस जग मित्र और शत्रु की पहचान अत्यंत सूक्ष्म है अवसर आने पर कितने ही मित्र शत्रु बन हैं, कितने ही शत्रु मित्र। जब वे काम क्रोध के अधीन हो जाते हैं, तब उन्हें सम्य असंभव है कि वे मित्र हैं या शत्रु। मैत्री स्थिर वस्तु नहीं है, क्योंकि स्वार्थ बड़ा बल है। जो विश्वासपात्र न हो, उस पर कभी वि नहीं करना चाहिए। माता-पिता, बंधु-बांधव सबमें स्वार्थ के संबंध से ही

स्वेच्छा से जो पाप किया जाता है, उसका फल तत्काल ही कर्ता को मिल जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र और शत्रु की पहचान अत्यंत सूक्ष्म है। अवसर आने पर कितने ही मित्र शत्रु बन जाते हैं, कितने ही शत्रु मित्र। जब वे काम-क्रोध के आधीन हो जाते हैं, तब यह समझना असंभव है कि वे मित्र हैं या शत्रु

होता है। यदि अपना प्यारा पुत्र भी पतित हो जाए, तो मां-बाप उसे त्याग देते हैं। अतः इस जगत में स्वार्थ ही बलवान है। किसी कारण को लेकर उत्पन्न होनेवाली प्रीति, जब तक वह कारण रहता है, जब तक ही वह बनी रहती है। कारण नष्ट हो जाने पर प्रीति भी स्वतः निवृत्त हो जाती है। समय कारण के स्वरूप को बदल देता है, और स्वार्थ उस समय का अनुकरण करता रहता है। अतः मैं तुम्हारे स्वार्थ को अच्छी तरह समझता हूं। तुम जाति से ही मेरे शत्रु हो, किंतु प्रयोजन से मित्र बन गये थे। अब वह प्रयोजन सिद्ध कर लेने के पश्चात पुनः तुम्हारी प्रकृति शत्रु भाव को प्राप्त हो गयी है। इसलिए अब मैं तुमसे नहीं मिलूंगा। इस विषय पर शुक्राचार्य ने कहा है, 'जब अपने पर और शत्रु पर एक-सी विपत्ति आये तब निर्बल को बलवान शत्रु के साथ मेल करके बड़ी सावधानी और युक्ति से अपना काम निकाल लेना चाहिए।'

इतना कहकर चूहा बिल में घुस गया।

"राजन् ! मैं तुम्हें इसी विषय पर एक और आख्यान सुनाता हूं। कांपिल्य नगर में ब्रह्मदत्त नामक एक राजा राज्य करते थे। उनके अंतःपुर में पूजनी नाम से प्रसिद्ध एक चिड़िया निवास करती थी, जो समस्त प्राणियों की बोली समझती और संपूर्ण तत्वों को जाननेवाली थी। एक दिन उसने राजमहल में एक बच्चा दिया और उसी दिन राजा के भी एक बालक उत्पन्न हुआ। वह कृतत पूजनी चिड़िया प्रतिदिन दोनों बच्चों के लिए दो फल ले आती थी।

एक दिन राजपुत्र ने चिड़िया के बच्चे को खेल-खेल में मार डाला। अपने बच्चे को मरा देख वह दुःख से संतप्त हो कहने लगी, 'राजा में संगति निभाने की भावना नहीं होती। उनमें न प्रेम होता है न सौहार्द्र। वे स्वार्थ से ही दूसरे का सम्मान करते हैं। जब काम निकल जाता है, तब उसे त्याग देते हैं। इसलिए इन पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। वह राजकुमार कृतघ्न, अत्यंत क्रूर और विश्वासघाती है। मैं इससे इस वैर का बदला लूंगी।' ऐसा कहकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अपने पंजों से राजकुमार की दोनों आंखों को फोड़ डालीं और उड़कर राजा से बोली, 'इस जगत में स्वेच्छा से जो पाप किया जाता है, उसका फल तत्काल ही कर्ता को मिल जाता है। उसके पूर्वकृत शुभाशुभ कर्म भी नष्ट नहीं होते। उनका फल तत्काल ही कर्ता को समय अने पर भोगना पड़ेगा। अब मैं यहां नहीं रहूंगी, क्योंकि तुम्हारा-मेरा वैर स्थापित हो गया है। वैर पांच कारणों से हुआ करता है। स्त्री, घर-जमीन, कठोर-वाणी, जातिगत और किसी समय किये हुए अपराध के कारण। जैसे लकड़ी के भीतर आग छिपी रहती है, इसी प्रकार वैर करनेवाले के हृदय में वैर भाव छिपा रहता है। जिस प्रकार बड़वानल समुद्र में भी शांत नहीं होती, उसी प्रकार क्रोधाग्नि न धन से, न कठोरता दिखाने से, न मीठे वचनों से, न शास्त्र-ज्ञान से शांत होती है। जैसे प्रज्ज्वलित वैराग्नि एक पक्ष को दग्ध किये बिना नहीं बुझती, उसी प्रकार अपराधजनित कर्म अपराधी का अनिष्ट किये बिना शांत नहीं होता। इसलिए वैरी की बातों पर विश्वास करनेवाले मारे जा हैं। विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य—ये पांच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र और यज्ञ, दान, दया, सत्य, तप और स्वाध्याय धर्म है। बुद्धिमान इन्हीं का आश्रय लेते हैं। जैसे मनुष्य अपने रोगी नेत्रों से सूर्य को देखता या तीव्र हवा की ओर रखता है, तब उसके नेत्रों में पीड़ा बढ़ जाती है वैसे ही जो अन्त शक्ति का ध्यान न कर मोहवश दुर्गम मार्ग चल देता है, उसका जीवन वहीं समाप्त जाता है। जो पथ्य छोड़कर अपथ्य का सेवन करता है, वह रोग ग्रस्त हो जाता है। जब-जब तुम अपने पुत्र को देखोगे तब-तब तुम्हारे हृदय में क्रोध और प्रज्ज्वलित हो उठेगा। इस आधीन हो तुम किसी दिन मुझे मार डालोगे। अतः मैं अब तुम्हारे पास नहीं रहूंगी। बलवान से वैर करना कभी अच्छा नहीं होता।

इतना कहकर पूजनी चिड़िया राजा से विदा ले उड़ गयी।

—श्री सूरजमल मोहता कृत 'महाभारत मार्ग'

कैसे शुरू हुआ बालचर-आंदोलन

ब्रिटिश सेना के एक 'इंसपेक्टर जनरल ऑव कैवेलरी' पर रॉबर्ट बेडन-पावेल ने एक पुस्तक लिखी— 'स्काउटिंग फॉर ब्वायज'। और युवकों के लिए लिखी गयी इस कृति ने जन्म दे दिया— विश्व में बालचर-आंदोलन को।

इतिहास बिगबेन का

'बिगबेन' : हमेशा सही समय बतलाने के लिए प्रसिद्ध एक क्लाक टॉवर, जिसके घंटे का वजन है तेरह टन। लंदन में ब्रिटिश संसद वेस्ट मिंस्टर के पूर्वी सिरे पर स्थित इस क्लाक टावर का डिजाइन ग्रिसथोपे के पूर्व बैरन एडमंड बेकेट ने बनाया था। चूंकि इसे तत्कालीन चीफ कमिश्नर ऑव वर्क्स सर बेंजामिन हाल ने स्थापित कराया था, अतः इसका नाम बेन पड़ा। ३१ मार्च, १८५९ को इस विशाल क्लाक टॉवर ने ध्वनि की थी। सन् १९७७ में ४ अप्रैल से १७ अप्रैल तक यह घड़ी बंद रही। इस घड़ी के घंटे की गूंज को बी.बी.सी. प्रसारित करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा

● पैड़िपाला

घर देखने में बहुत सुंदर था। सभी तरह से सुविधाजनक भी। इस घर को देखकर राज्यलक्ष्मी फूली न समायी। एकात पाते ही उसने संजीवी को अपनी बाहों में ले लिया।

"इतने सुंदर मकान का किराया सिर्फ दो सौ रुपये ? मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। कहीं आप मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे हैं ?"

"भला झूठ बोलने पर मुझे क्या लाभ होगा ? हर महीने का खर्च तो निश्चित रकम में चलाना पड़ेगा ना ? तुम्हारी तरह पहले मैं भी इस बात पर विश्वास नहीं कर सका। रावजी ने इस मकान को किराये के वास्ते ही हमें नहीं दिया। वे अक्सर 'कैंप' में रहते हैं। उनके परिवारवालों का हमारे— जैसे लोगों से साथ रहे, शायद इसलिए ....."

"इतने कम किराये पर मकान देने में उनकी कोई दुर्बुद्धि तो नहीं ? वे भले आदमी तो हैं ना ?"

"औरतें तो हर एक पर शक करती हैं !"

इतने में 'कॉलिंग बेल' बजी। दरवाजा खोलने पर संजीवी चकित हुआ। सामने रावजी खड़े थे।

"आइए सर, अंदर आइए" संजीवी ने विनय से झुककर उनका स्वागत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं मुझे जाना है। मैं यह पूछने आया था कि यहां आपको कोई तकलीफ तो नहीं है ?"

"सब-कुछ ठीक है, सर ! आपका आभारी हूं।"

"धन्यवाद। अगर किसी चीज की जरूरत पड़े तो हमारे नौकर रंगा को बिना संकोच बुला लीजिएगा। मैंने सुना है, आप लेखक भी हैं। आप केवल पत्रिकाओं के लिए लिखते हैं या सिनेमाओं के लिए भी लिख सकते हैं ?"

"अवसर मिले तो सिनेमा के लिए भी लिखूंगा।"

"आप गीत लिख सकते हैं या संवाद ?"

"मैं तो कहानियां और कविताएं, दोनों लिखता हूं।" अपने बारे में अधिक बोलने से संजीवी हिचकिचाया।

"ऐसी बात ! तब तो बहुत-अच्छा है— शैलजा मूवीज़ में मेरा हिस्सा है। लेकिन प्रोड्क्शन संबंधित काम मेरे पार्टनर ही देख लेते हैं। वे जब आएंगे, तब आपका परिचय कराऊंगा।"

"धन्यवाद सर।"

"अच्छा तो चलूंगा।" कहकर रावजी चले गये। उनके जाते ही राज्यलक्ष्मी खुशी-खुशी बाहर आयी और कहने लगी, "मैंने सब सुन लिया है। रावजी बहुत भले आदमी लगते हैं। धनवान होने पर भी बहुत सरल से हैं। मैं समझी थी, कोई बूढ़ा आदमी होगा। मगर आपकी उम्र के ही हैं। जिस पल हमने यहां कदम रखा है, वह बहुत अच्छा होगा। आप इस बीच उन्हें अपनी रचनाएं ले जाकर दिखाइए न।"

"अच्छा बाबा दिखा दूंगा। इसी क जाकर तो उनकी दृष्टि में हम गिर जाएंगे।"

"बड़े लोग इस तरह नहीं सोचते। आप नहीं दिखाएंगे तो उन्हें अपनी कही बात भी याद नहीं रहेगी।"

संजीवी को भी राज्यलक्ष्मी की बात लगी।

अगला दिन रविवार का था। रावजी से बैठे थे। समय देखकर संजीवी रचनाओं की फाइल ले गया। पास जाकर उन्हें नमस्कार किया।

"आइए....आइए.... बैठिए। कहिए बात है ?" रावजी ने स्नेह से संजीवी स्वागत किया।

"मैं अपने साहित्यक लेख दिखाने हूं।"

संजीवी कुछ हिचकिचाहट से कविताएं, कहानियां और उपन्यास एक के एक दिखा रहा था।

"अच्छा है, अच्छा है" कहते हुए पृष्ठ उलटते चले गये। मगर किसी भी अथवा किसी भी पंक्ति को उन्होंने नहीं यह देखकर संजीवी हताश हो गया। नौकर रंगा ने चाय लाकर दी। संजीवी उपन्यासों की प्रतियों पर 'विद् कांप्लिमेंट्स' लिखकर उन्हें रावजी को किया।

"धन्यवाद, जब हमारे पार्टनर आएंगे उन्हें जरूर आपके बारे में बताऊंगा।" रावजी उन प्रतियों को तिपाई पर रखकर चले गये।

इस व्यवहार से संजीवी बहुत निराश हु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर लौटकर वह राज्यलक्ष्मी पर बरस पड़ा, "उनके पास जाने तक सांस भी नहीं लेने दी।"

राज्यलक्ष्मी ने अपना मुंह छोटा कर लिया। 'जल्दबाजी करके रावजी के पास जाकर मैंने अपनी मर्यादा खो दी है? सोचकर संजीवी पछताने लगा।

●

दस दिनों के बाद।

छुट्टी के दिन दोपहर में रंगा संजीवी के घर आया। राज्यलक्ष्मी ने दरवाजा खोलकर उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा।

"सॉबजी घर में हैं क्या मांजी ?'

"घर में ही हैं। सो रहे हैं। क्यों क्या काम है ?"

"हमारे सॉबजी उनको बुला रहे हैं।"

"अच्छा ! उनसे कह दो कि 'अभी आ रहे हैं'।"

रंगा चला गया लेकिन पांच मिनट में ही फिर लौटा। उसमें कहा, "साबजी कहते हैं कि कोई जरूरी काम नहीं है। अगर सो रहे हैं तो उन्हें जगाइए नहीं।"

लेकिन इसी बीच राज्यलक्ष्मी ने संजीवी को जगा दिया था। वह कपड़े पहनकर तैयार भी हो चुका था।

अतः राज्यलक्ष्मी ने कह दिया, "नहीं, उनसे कह दो कि सॉब आ रहे हैं।"

"खाली हाथों जा रहे हैं ना ?"— बाहर निकल रहे संजीवी को राज्यलक्ष्मी ने टोक दिया।

"फल-फूल ले जाने को कह रही हो क्या ?" व्यंग्य से उसने पूछा।

"ऐसी बात नहीं। रावजी ने जरूर आपको

राज्यलक्ष्मी के आग्रह पर लेखक संजीवी एक आशा लेकर फिल्म-निर्माता रावजी के पास गया था। लेकिन उसे निराश होना पड़ा। घर लौटकर वह राज्यलक्ष्मी पर बरस पड़ा। लेकिन एक दिन .....

सिनेमा में अवसर देने के सिलसिले में ही बुलाया होगा। इस महीने में आपके जो लेख छपे हैं, उनको भी ले जाकर दिखाएं तो अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

"बस-बस ! पिछली बार उल्लू बनाया गया था ना ! वही काफी है। कोई जरूरी बात नहीं होगी। शायद अकेले ऊब रहे होंगे। इसीलिए बुला भेजा होगा। अगर जरूरत पड़े तो घर आकर लेख ले जाऊंगा। घर बहुत दूर भी तो नहीं है।" कहते हुए संजीवी चला गया।

राज्यलक्ष्मी दरवाजे पर ही खड़ी होकर, संजीवी के आगमन की बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगी।

पांच मिनटों में ही संजीवी को वापस आता देखकर राज्यलक्ष्मी को बहुत आश्चर्य हुआ। संजीवी के चेहरे पर जरा भी प्रसन्नता नहीं थी। यह देखकर वह घबरा गयी।

"तुम्हें किसी खुशखबरी का इंतजार करने की जरूरत नहीं है। रावजी के मुनीम ने आज छुट्टी ली है....इसीलिए पत्रों का जवाब लिखाने के लिए मुझे बुला भेजा है।"

"तो लिखकर आना था।"

"उनके द्वारा मिलनेवाले अवसर की आशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान ?

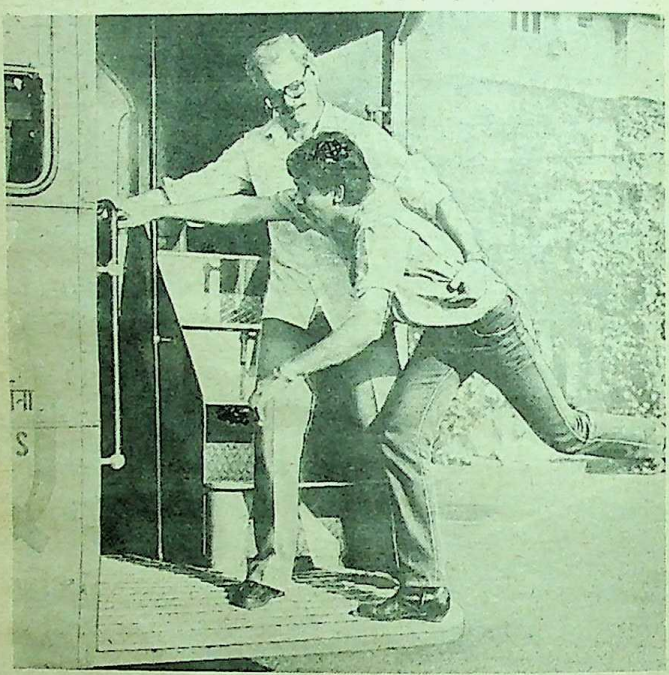

कभी आपने ग़ौर किया है कि सड़क पर दौड़ते यह बुज़ुर्ग ६० बरस की उम्र में भी क्यों शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर हैं? जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थके-थके से रहते हैं.

इसका जवाब है, केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो छोटे चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर)–अनमोल तत्त्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए. ज़ाफ़रान की लुभावनी खुशबुएँ सबसे पहले आपका स्वागत करेंगी. शुद्ध, असली ज़ाफ़रान. दुनिया की सब से महँगी जड़ी-बूटियों में से एक. जिसे ख़ास तौर से कश्मीर की वादियों से चुना गया.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के अरोग्यकर और सौंदर्यवर्धक गुणों के साथ-साथ ताज़ा आँवला और कई दूसरी जड़ी-बूटियाँ मिली हुई हैं. यह सब मिलकर आपके शरीरगठन को मज़बूत करते हैं. शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त बनाए रखते हैं और आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी के तनावों से आपको मुक्त रखने में आपकी मदद करते हैं. तो आज ही से इसे अपनी आदत बना लीजिए. और जीवनभर बीमारियों से मुक़ाबला करने की शक्ति जुटा लीजिए. वृद्धावस्था में सेहत का अनमोल रत्न आप भी पा लेंगे, और सारी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी से भरपूर तरो-ताज़ा रहेगी.

ZP/8/173

उस-रस में जान – ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मुनीमगिरी भी करने को कह रही हो क्या ? पर मुझे इनकार करने का मौका भी नहीं मिला। वहां परंधामय्या मास्टरजी आकर उस काम को कर रहे थे। मुझे 'सॉरी' कहकर वापस भेज दिया। चाहे वे कितने ही धनवान क्यों न हों, अपने पत्रों का जवाब आप नहीं लिख सकते क्या ? मेरी मीठी नींद खराब कर दी।"

संजीवी कपड़े बदलकर फिर से बिस्तर पर लेट गया।

× × × ×

"नमस्ते मास्टरजी।" फाटक खोलकर भीतर आ रहे परंधामय्या मास्टरजी से संजीवी ने कहा। "आइए.... बैठिए।"

"बैठने के लिए वक्त नहीं है। अगर वक्त पर नहीं पहुंचा तो रावजी गुस्सा हो जाएंगे।"

"क्यों मास्टरजी, आप हर रोज आ रहे हैं ?"

"'ट्यूशन' पढ़ाने आ रहा हूं।"

"रावजी के घर स्कूल जानेवाले बच्चे तो नहीं हैं ?"

"बच्चों को नहीं, रावजी को ही पढ़ाने के लिए..." कहते हुए मास्टरजी मुसकराये। संजीवी विश्वास नहीं कर सका।

"रावजी तो ग्रेजुएट हैं न मास्टरजी ?"

"हां' जी ! मैं समझ गया। असली बात का पता आपको अभी तक नहीं है।"

संजीवी ने कौतूहल से पूछा, "कौन-सी बात ?"

"रावजी तेलुगू अच्छी तरह बोल सकते हैं। मगर तेलुगू में पढ़े-लिख नहीं सकते वे। उनकी मातृभाषा तेलुगू होने पर भी उनका बचपन, पढ़ाई सब बंबई में ही हुई। इसीलिए ....उस दिन मुनीम के न आने पर आपको तेलुगू में पत्र लिखने के लिए ही बुलाया था उन्होंने।"

"ओह ! मगर रावजी ने मुझे यह बात कभी नहीं बतायी।"

"वे बहुत स्वाभिमानी हैं। इसीलिए इस परेशानी को दूर करने के लिए ही वे मुझसे तेलुगू लिपि सीख रहे हैं। अच्छा, बहुत समय हो गया। मैं चलूंगा सर।" कहकर मास्टरजी जल्दी-जल्दी चले गये।

संजीवी के आंखों के सामने अपनी रचनाओं को बिना पढ़े ही पृष्ठों को पलट रहे रावजी का चित्र घूम गया।

'भ्रम का भूत' दूर होने पर संजीवी, रावजी के द्वारा दिये जानेवाले मौके की आशापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा।

—अनुवाद : बी. ज्योति

समाचार-पत्रों का महत्त्व

प्रसिद्ध जरमन लेखक बटोल्ट ब्रेख्त ने आधुनिक जगत में प्रेस अर्थात समाचार-पत्रों की भूमिका की चर्चा करते हुए कहा था—'विश्व के मामलों में ईश्वर भी अखबारों के मार्गदर्शन में चलते हैं।'

और अठारहवीं शती के जरमन वैज्ञानिक ग्यॉर्ग लिख्तेनबर्ग का कहना था—'सीसा संसार को सोने से ज्यादा बदलता है, खास तौर पर छापे के टाइप का सीसा, कारतूस के सीसे से कहीं ज्यादा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक जो संस्कृत के विद्वान थे

● शिशिर विक्रांत

सर वेंकट रमण, सर जगदीश चंद्र बसु, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय, डॉक्टर मेघनाद साहा के नाम विज्ञान के क्षेत्र में सदा के लिए अमर होकर रह गये हैं। इनके वैज्ञानिक आविष्कारों ने सारे संसार को चमत्कृत कर दिया था। इनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में तो सभी जानते हैं, पर लोगों को शायद ही ज्ञात हो कि ये सभी विश्वविख्यात विज्ञानी संस्कृत के धुरंधर विद्वान भी थे।

इन सबको संस्कृत भाषा से अत्यधिक प्रेम था और वैज्ञानिक खोजों के लिए ये संस्कृत को आधार मानते थे। इनका कहना था कि संस्कृत का प्रत्येक शब्द वैज्ञानिकों को अनुसंधान के लिए प्रेरित करता है। प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने

सर वेंकटरमण

विज्ञान में जितनी उन्नति की थी, वर्तमान संसार उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ऋषि-महर्षियों का संपूर्ण ज्ञान-सार संस्कृत में निहित है। इसीलिए वे संस्कृत का अध्ययन प्रत्येक के लिए आवश्यक बताते थे।

सर रमण संस्कृत के अनन्य प्रेमी थे। आचार्य राय विज्ञान के लिए संस्कृत को आवश्यक मानते थे। सर बसु ने अपने अनुसंधानों के स्रोत संस्कृत में खोजे थे। डॉक्टर साहा घर के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा संस्कृत में ही कराते थे। विदेश जाते समय उन्होंने अपनी दो भतीजियों को संस्कृत की शिक्षा के लिए, संस्कृत के महापंडित आचार्य कपिल देव शर्मा के पास भेजा था। आचार्य शर्मा ने लड़कियों से पूछा, "अब तक तुम्हें संस्कृत कौन पढ़ाता था?"

लड़कियों ने बताया, "चाचाजी।"

इतने बड़े वैज्ञानिक होकर भी डॉक्टर साहा बच्चों को स्वयं संस्कृत पढ़ाते थे।

● ●

एक बार आचार्य कपिल देव शर्मा कुछ छात्रों के साथ सर जगदीश चंद्र बसु के पास गये। बसु महोदय से आचार्य शर्मा ने पूछा, "वनस्पतियों में प्राण होने के विषय में अनुसंधान करने की प्रेरणा आपको कहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के अनेक विश्व-विख्यात वैज्ञानिक जो संस्कृत के धुरंधर विद्वान भी थे। उनकी धारणा थी कि संस्कृत का प्रत्येक शब्द वैज्ञानिकों को अनुसंधान के लिए प्रेरित करता है।

मिली ?"

उत्तर के बजाय सर बसु ने प्रश्न किया, "आप संस्कृत का एक ऐसा शब्द बताइए, जिससे बहुत-से पेड़-पौधों का बोध हो ?"

आचार्य शर्मा को 'शस्य श्यामलां मातरम्' ध्यान आ गया। उन्होंने कहा, "शस्य।"

"शस्य किस धातु से बना है ?"

"शस् धातु से।"— आचार्य बोले।

सर बसु ने पूछा, "शस् का अर्थ ?"

"हत्या करना।"

"तो शस्य का अर्थ क्या हुआ ?"

"हत्या किये जाने योग्य।"

आचार्य शर्मा से बसु महोदय ने मुसकराकर कहा, "यदि वनस्पतियों में प्राण न होते तो उन्हें हत्या किये जाने योग्य कहा ही न जाता। संस्कृत के 'शस्य' शब्द ने ही मुझे इस अनुसंधान के लिए प्रेरित किया।"

सुनकर आचार्य शर्मा हैरान रह गये।

'बसु विज्ञान-मंदिर' में सर बसु उन लोगों को यंत्र के माध्यम से घास का हंसना-रोना आदि क्रियाएं दिखा रहे थे। मंदिर के उद्यान में एक छोटा मंदिर था, जिसमें किसी मूर्ति के बजाय एक शंख रखा हुआ था।

उसे देखकर आचार्य शर्मा ने बरबस पूछ ही लिया, "मंदिर में शंख क्यों रखा हुआ है ?"

बसु महोदय ने भी प्रश्न कर दिया, "हमारे यहां शंख के संबंध में कोई कहावत प्रचलित है न ?"

"हां, 'शंख बाजै-राक्षस भाजै' ?"

"राक्षस किस धातु से बना है ?"

"रक्ष् धातु से।"

"राक्षस का अर्थ क्या हुआ ?"

"राक्षस, यानी जिससे रक्षा करनी पड़े।"

"व्यक्ति किसकी रक्षा करता है ?"

"सभी उत्तम वस्तुओं की।"

"हमारे लिए सबसे मूल्यवान क्या है ?"

"हमारे प्राण।"

सर बसु इस पर समझाते हुए बोले, "प्राणों

सर जगदीशचंद्र बसु

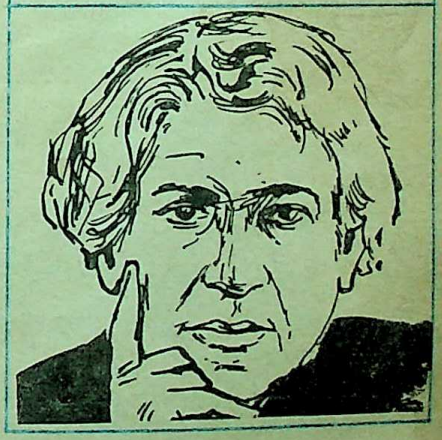

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली बचत का अर्थ है बिजली का उत्पादन

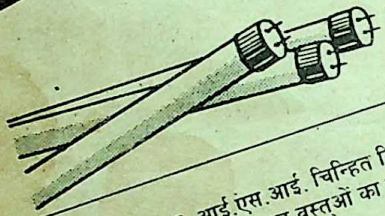

- ट्यूबलाइट का प्रयोग करें। इसके प्रयोग से बिजली कम खर्च होती है तथा रोशनी अधिक होती है।

- आई.एस.आई. चिन्हित विद्युत उपकरणों तथा अन्य संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करें।

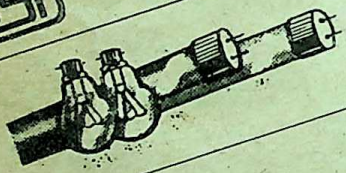

- ट्यूब तथा लैम्प को साफ रखें।

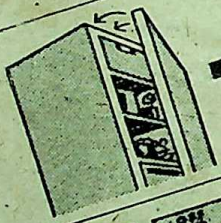

- अपने रेफ्रीजरेटर के दरवाजे को यथाशीघ्र बन्द करें।

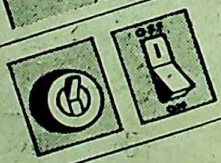

- आवश्यकता न होने पर सभी विद्युत उपकरणों को तुरन्त बन्द कर दें।
- कमरा छोड़ते समय बत्तियों, पंखों तथा वातानुकूलनों को बन्द कर दें।

विद्युत विभाग
उर्जा मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली-110 001 द्वारा जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर मेघनाद साहा

के सबसे बड़े शत्रु होते हैं— रोग के कीटाणु। प्राण-रक्षा के लिए इन राक्षसों का मारा जाना आवश्यक है। कुछ रोगाणु किसी अन्य उपाय से नहीं, केवल शंख की ध्वनि से ही मरते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति, वह हिंदू हो या नहीं, को अपने घर में सुबह-शाम शंख-ध्वनि अवश्य करनी चाहिए।''

उनकी इस व्याख्या और उनके संस्कृत-ज्ञान ने आचार्य शर्मा को विस्मित कर दिया। वे मुक्त कंठ से उनकी सराहना करने लगे।

आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय विश्वविख्यात रसायनज्ञ के साथ ही उच्चकोटि के संस्कृतज्ञ भी थे। 'बंगाल केमिकल एंड फार्मास्युटिकल वर्क्स' नामक प्रसिद्ध संस्था की स्थापना उन्होंने ही अपने आयुर्वेद-ज्ञान के आधार पर की थी। अपने संस्कृत-ज्ञान के सहारे ही उन्होंने 'हिंदू रसायन शास्त्र का इतिहास' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा था।

एक बार डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद और आचार्य कपिल देव शर्मा के साथ आचार्य राय पटना से पहलेजा घाट जा रहे थे। मार्ग में आचार्य शर्मा ने उन्हें खाने के लिए मक्खन दिया। आचार्य राय मक्खन खाने के साथ, रघुवंश के— मक्खन से संबंधित श्लोकों को गाने लगे, और पूरा सर्ग समाप्त करके ही चुप हुए। यथा

हैयंगवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्
नामधेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम्।

थोड़ी देर बाद उन्होंने राजेंद्र बाबू से पूछा, ''राजेंद्र, छात्रावस्था में तुमने संस्कृत पढ़ी थी ?''

''छात्रावस्था में तो विशेष नहीं पढ़ सका था, हां, एम. ए. की परीक्षा के दौरान चार सौ श्लोक याद किये थे।'' राजेंद्र बाबू ने बताया, ''जेल में भी संस्कृत पढ़ने का थोड़ा अवसर मिला था।''

सुनते ही आचार्य राय बंगला में बोले, ''तोमरा ऐक दोम ब्यर्थो, संस्कृत ना जानिया कि केह मानुष होइते पारे।'' यानी— तुम लोग बिलकुल बेकार हो, संस्कृत जाने बिना क्या कोई मनुष्य कहला सकता है ?

संस्कृत भाषा का प्रत्येक शब्द बहुत सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण है। ऋषि-महर्षियों ने सूक्ष्म अनुसंधान करके ही वस्तुओं का प्रयोगसिद्ध नामकरण किया था। संस्कृत-शब्दों के अर्थ पर ध्यानपूर्वक विचार करने से वैज्ञानिक महत्त्व की अनेक बातें जानी जा सकती हैं। संस्कृत की उपेक्षा कर हम अपनी अमूल्य थाती को अपने ही हाथों खो रहे हैं।

चकिया, इलाहाबाद-२११०१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वस्थ बना देती हैं मानसिक विकृतियां

● डॉ. योगेश चंद्र मिश्र

सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। भारतीय चिंतनमूलक आयुर्वेद में 'स्वास्थ्य' की परिभाषा करते हुए शारीरिक दोषों, अग्नियों आदि में समता के साथ ही मन की प्रसन्नता पर भी आग्रह किया गया है। यथा :

समदोषः समाग्निश्च सम धातु मल क्रियाः।
प्रसन्नात्मेंद्रिय मनः स्वस्थ इत्याभिधीयते ॥

अर्थात दोष, धातु, मल, धातु तथा क्रियाओं में समता तथा इंद्रिय, मन तथा आत्मा की प्रसन्नता—यह स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है।

मन के बारे में भारतीय वाङ्ग मय में अत्यंत सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया गया है। योग वशिष्ठ में मन के विषय में विशद विवरण उपलब्ध है। इसी आधार पर ही मन की शक्ति को प्रकट करनेवाली अनेक कहावतें प्रचलन में आयीं। जैसे—

मन एवं मनुष्याणाम् कारणं वन्ध मौ क्षयौ :
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

वास्तव में मन की पवित्रता से स्वातंत्र्य तथा मन की अपवित्रता से ही बंधन होता है। सदैव मननशील होने के कारण वह 'मन' तथा चिंतनशील होने के कारण 'चित्त' कहलाता है। शारीरिक शक्तियों की सीमाएं हो सकती हैं किंतु मन सीमाओं से रहित है। मन की एक शक्ति है—कल्पना। कल्पना उस मानसिक शक्ति का नाम है, जिसके द्वारा प्रत्यक्ष किये गये अनुभव का ज्ञान हमें उस अनुभव की अनुपस्थिति में होता है। विलियम जेम्स के अनुसार, जब हमें कोई भी इंद्रिय-ज्ञान होता है तो हमारे मस्तिष्क की नाड़ियां इस प्रकार प्रभावित हो जाती हैं कि वाह्य पदार्थ के अभाव में हम उस पदार्थ का चिह्न देखने लगते हैं। यदि व्यक्ति की किसी इंद्रिय में दोष है तो सामान्यतः वह उस इंद्रिय से ज्ञात होनेवाले पदार्थ की कल्पना नहीं कर सकेगा। इसी आधार पर जन्मांध व्यक्ति रूप-रंग की कल्पना नहीं कर पाता। किंतु यह भी देखा जाता है कि किसी इंद्रिय की शक्ति के अभाव में दूसरी इंद्रिय की शक्ति में बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है — जैसे नेत्रहीन व्यक्ति शब्द-ज्ञान के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

सीमा रहित कल्पना-शक्ति

मन की कल्पना-शक्ति सीमाओं से रहित है। आप चाहें तो एक क्षण में ही भूतकाल में महाभारत काल की कल्पना में आनंद-मग्न हो सकते हैं और क्षणार्ध में ही इक्कीसवीं सदी की कल्पना में। देश और काल की सीमाएं इसके सामने नगण्य हैं। रोग और स्वास्थ्य आदि में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। निराशा, भय, शोक, चिंता, ईर्ष्या, द्वेष ऐसी मानसिक विकृतियां हैं, जो शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को भी रोग के अंधेरे कक्ष में ढकेल देती हैं।

मन का बहुत प्रभाव पड़ता है। निराशा, भय, शोक, चिंता, ईर्ष्या, द्वेष आदि ऐसी मानसिक विकृतियां हैं, जो शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को भी रोग के अंधेरे कक्ष में ढकेल देती हैं तो दूसरी ओर आशावादिता, प्रसन्नता, स्नेह, प्रेम, करुणा आदि कल्पनाओं से ओतप्रोत व्यक्ति न केवल स्वयं अनेक आधि-व्याधियों से मुक्त रहता है अपितु अपने संपर्क में आनेवाले अनेक लोगों को भी प्रकाश का सुनहरा मार्ग दिखाने में सफल होता है। एक निराश एवं विकृत कल्पनाओं से घिरा व्यक्ति अपनी ही कल्पनाओं से अपने को पाशबद्ध करता है और बाद में पिंजड़े में पड़े शेर की भांति अपने को असहाय अनुभव करता है।

व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए कल्पना की वृद्धि होना आवश्यक है। मनन करने के बाद कार्य करना ही मनुष्यत्व है और केवल देखकर अनुकरण (पश्यति) ही पशुत्व। पशु अपने भूतकाल के अनुभवों को शायद थोड़ा और अस्पष्ट ही अपने मानस-पटल पर अंकित कर पाता है। इसी कारण उसके जीवन में कल्पना का अधिक उपयोग नहीं होता है। पशु भविष्य में होनेवाली घटनाओं के बारे में कुछ भी विचार नहीं कर सकता। जो अपने पुराने अनुभवों का भलीभांति उपयोग करना चाहता है, उसे मानस-पटल पर उन अनुभवों को अंकित करना पड़ता है। मनुष्य की कल्पना-शक्ति उसको नयी बात सीखने में अधिक सहायता देती है। कल्पना के आधार पर मनुष्य वर्षों बाद होनेवाली घटनाओं का निश्चय कर लेता है। सामाजिक और राजनीतिक नेता, कुशल व्यापारी, अच्छा इंजीनियर या अच्छा चिकित्सक भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखकर ही अपने कार्यों को साकार रूप देता है। वास्तव में तीव्र कल्पना शक्तिवाले व्यक्ति या नेता को दूरदर्शी कहकर सम्मानित

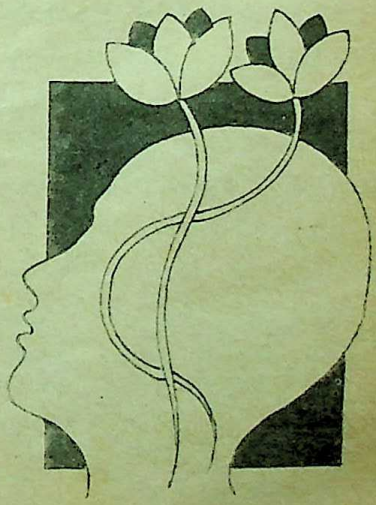

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाता है।

कल्पना ही विचारों का विकास

कल्पना के आधार पर विचारों का विकास होता है। जब मनुष्य में पुराने अनुभवों को कल्पना द्वारा मन में चित्रित करने की शक्ति आ जाती है तो उसमें उस अनुभव के मर्म को भी समझने का विकास होता है अर्थात वह तर्क करने लगता है और पुराने अनुभवों के आधार पर जीवन में कार्य करने के कुछ सिद्धांत बनाता है। कल्पना का आधार अतीत का अनुभव होता है किंतु उसका लक्ष्य भविष्य का सृजन होता है। वास्तव में हमारी मानसिक क्रियाएं लक्ष्यहीन नहीं होती हैं। कल्पना का लक्ष्य कल्पना में सृजित किये हुए जगत को वास्तविकता में परिणत करना होना चाहिए। नहीं तो वह दिवा स्वप्न या ख्याली-पुलाव ही रह जाएगा। फिर भी इतना तो निश्चित है कि हम वास्तविक जगत में ऐसी सृष्टि नहीं कर सकते, जिसकी हमने कल्पना न की हो।

भगिनी निवेदिता का कथन है कि जिस व्यक्ति ने कल्पना का महल नहीं बनाया, उसे वास्तविक महल की उपलब्धि नहीं होती। वायुयान की सृष्टि के मूल में व्यक्ति के स्वप्न में उड़ने का अनुभव था। पक्षियों को नील गगन में उड़ते देखकर ही सृजनशील कल्पना के धनी मनुष्य ने आकाश की छाती पर दनदनाते हुए उड़नेवाले वायुयान की कल्पना की और अब कल्पना-शक्ति के आधार पर ही उसमें नवीनतम परिवर्तन कर उसे अत्याधुनिक बनाता जा रहा है। जो कल्पना बहुत स्पष्ट, रोचक तथा स्वभावानुकूल होती है, वह मनुष्य को तद्नुकूल कार्य में लगा देती है।

वास्तव में प्रत्येक कल्पना में कार्यान्वित होने की शक्ति निहित होती है किंतु उसको कार्य रूप में बदलने के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति तथा कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। यदि तत्परता से कोई कल्पना मन में लायी जाती है तो व्यवहार में भी उसके अनुरूप परिवर्तन होता है। पादरी या भक्त बनने की कल्पना करनेवाले व्यक्ति के व्यवहार में सरलता, दया तथा सेनापति बनने की कल्पना करनेवाले व्यक्ति के व्यवहार में अनुशासन, कठोर परिश्रम आदि भाव अपने आप ही उत्पन्न होने लगते हैं।

अनुमान का महत्त्व

भारतीय दर्शन में ज्ञान-प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष के साथ अनुमान को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रत्यक्ष की अपेक्षा अनुमान का क्षेत्र व्यापक है। किसी भी वस्तु या घटना के बारे में विचार करते समय हम उन्हें वैसा नहीं देखते, जैसी वे हैं अपितु उन्हें वैसा ही देखते हैं जैसे हम हैं। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति में एक ही घटना या वस्तु के देखने के दृष्टिकोण में अंतर होता है। दर्शन शास्त्र के अनुसार बुद्धि के बाद अहंकार की सृष्टि होती है। 'मैं', 'मेरा', 'मैं हूं' आदि की भावना से ही व्यक्ति में परिवार, समाज, देश के साथ जुड़ाव आता है। 'जो मेरा है' उसके साथ अपनापन और 'जो मेरा नहीं है' उसके साथ दूरी बन जाती है। इसमें व्यक्ति के संस्कारों का प्रभाव पड़ता है। सात्विक अहंकार व्यक्ति को धर्म, वैराग्य, ज्ञान तथा ऐश्वर्य की ओर प्रवृत्त करते हैं। इसके विपरीत तामस अहंकार की प्रधानता से व्यक्ति अधर्म, राग, अज्ञान तथा अनैश्वर्य की ओर प्रवृत्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना और स्वास्थ्य

कल्पना और स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध है। स्वस्थ व्यक्ति की कल्पनाएं सुंदर एवं आनंदमयी होती हैं। अस्वस्थ व्यक्ति की कल्पनाएं वीभत्स और हृदय को पीड़ित करनेवाली होती हैं। जब शरीर निर्बल रहता है तो व्यक्ति का मन भी निर्बल हो जाता है। उसे अपने चारों ओर अहंकार ही दिखायी पड़ता है।

आयुर्वेद में शरीर के तीन दोष माने गये हैं—वात, पित्त और कफ। मन के दो दोष बताये गये हैं रज एवं तम। सत्व मन का गुण है। सात्विक मन स्वस्थ अवस्था का द्योतक है। जैसे खाये गये पदार्थों तथा वातावरण का प्रभाव शारीरिक दोषों पर पड़ता है, उसी तरह मन पर भी उनका प्रभाव पड़ता है। इसीलिए कहा गया है, 'जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन।' शारीरिक दोष मानसिक दोषों को भी प्रभावित करते हैं। किसी विषय पर ध्यान करना, विचार करना, तर्क-वितर्क करना, कल्पना करना यह सब मन के कार्य हैं। यदि किसी व्यक्ति का मन दुर्बल है तो वह भविष्य की बीमारी की आशंका से घिरा रहता है और भय, ईर्ष्या, द्वेष आदि मानसिक कारण उसके पाचन तंत्र, तंत्रिका तंत्र तथा अंतः स्रावी ग्रंथियों (इंड्रोक्राइन ग्लैंड्स) का स्राव घट या बढ़ जाता है। कभी-कभी भविष्य में आनेवाली बीमारी पहले से ही मनुष्य की कल्पना में आने लगती है। एक बार यदि बुरी कल्पना मन में जड़ जमा लेती है, तो उसे दूर करना बहुत कठिन हो जाता है और कई बार कल्पना वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मन की अस्वस्थता का प्रभाव शरीर पर तथा शरीर की अस्वस्थता

कल्पना और स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध है। स्वस्थ व्यक्ति की कल्पनाएं सुंदर एवं आनंदभरी होती हैं जबकि अस्वस्थ व्यक्ति की कल्पनाएं वीभत्स और हृदय को पीड़ित करनेवाली।

का प्रभाव मन पर पड़ता है। यदि व्यक्ति को यह लग जाए कि कुछ अशुभ होनेवाला है। फिर भी किसी को भय हो जाए कि उसके बच्चे का अपहरण हो जाएगा या वह व्यक्ति शीघ्र ही दुर्घटनाग्रस्त हो जाएगा, तो उस व्यक्ति की भूख, नींद आदि क्रियाएं प्रभावित होने लगेंगी और कुछ समय के बाद वह व्यक्ति अनिद्रा, भूख न लगना आदि रोगों के कारण वास्तव में बीमार हो जाएगा।

चिकित्सक सामान्यतः इस लक्षणों का ही उपचार करता है किंतु जब तक व्यक्ति को यह विश्वास नहीं दिलाया जाता कि उसकी आशंका निर्मूल है, उसे रोग मुक्त नहीं किया जा सकता। इसीलिए कहा गया है कि 'वहम की दवा तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं है।'

दूसरी ओर यदि व्यक्ति का मानसिक बल अच्छा है तो आशंकाओं या बुरी कल्पना से

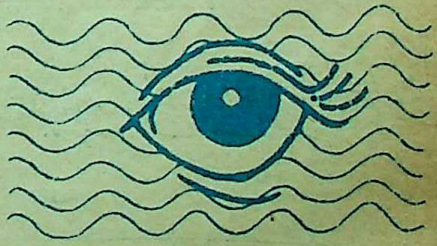

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिस टूथपाउडर में लौंग का तेल नहीं, वह मेरे काम का नहीं"

"इसलिए मेरा मनपसंद टूथपाउडर है प्रॉमिस. लौंग के तेल से भरपूर. नगर-नगर में मशहूर. लौंग के तेल के दो विशेष गुण हैं. एक तो यह दांतों की छोटी-मोटी तकलीफ़ों से सदा सुरक्षित रखता है. इसके प्रभाव से दांतों को क्षति पहुँचाने वाले कीटाणु पनप नहीं पाते. फलस्वरूप आपके दांत पक्के मज़बूत बने रहते हैं. और दूसरा यह आपकी सांस को ताज़ी सुगंधित रखता है. इसलिए आपसे बातचीत करने वाले आपसे मुंह नहीं मोड़ते.

और सबसे बड़ी बात यह कि मोल के मुकाबले, प्रॉमिस टूथपाउडर के गुणों का तोल नहीं—आप जो दाम देते हैं उसके पैसे-पैसे का काम लेते हैं.

मेरी मानें तो बस प्रॉमिस टूथपाउडर ही लाइए. लौंग के तेल से मालामाल. बलसारा की सूझ-बूझ का कमाल."

लौंग के तेल की अद्भुत रचना

प्रॉमिस
टूथपाउडर

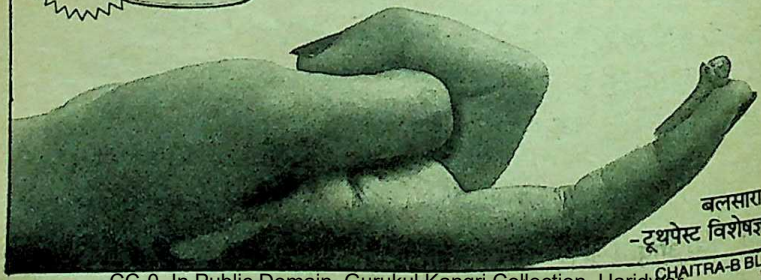

बलसारा
-टूथपेस्ट विशेषज्ञ

CHAITRA-B BLS 828 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न रोग तो अति शीघ्र ही समाप्त हो ही जाएंगे, अनेक शारीरिक रोग भी बहुत शीघ्र ठीक हो सकते हैं। इसीलिए व्यक्ति को सुंदर कल्पनाओं से ओत-प्रोत रहना चाहिए। प्राचीन साहित्य में व्यक्ति को आशावादी तथा अच्छी कल्पनाओं से घिरे रहने की ओर उन्मुख करने के लिए अनेक सूक्तियों तथा संदर्भों का उल्लेख मिलता है। **उत्तिष्ठत, जागृत, प्राप्य वरान्निबोधत'** अर्थात उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त करके ही रुको।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थंच चिन्तयेत्

अर्थात बुद्धिमान व्यक्ति को अपने को अजर और अमर समझते हुए विधान और अर्थ का चिंतन करना चाहिए।

ऐसी सूक्तियों में से किसी को सदैव गुनगुनाते हुए यदि व्यक्ति यह कल्पना करे कि 'मैं स्वस्थ हूं', 'सबल हूं', 'मेरा जन्म अच्छे कार्य के द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए ही हुआ है', 'मुझमें साक्षात् ईश्वर की शक्ति विद्यमान है' और 'मैं स्वस्थ रहूंगा।' इस प्रकार के आत्म चिंतन (आटो सजेशन) से व्यक्ति स्वस्थ रह सकेगा। सुंदर कल्पनाओं का अभ्यास डालना जीवन प्रदान करना है। मुसकराइए तथा ठहाका लगाकर हंसिए। लोग आपके साथ हंसेंगे तथा निराशा दूर भाग जाएगी किंतु जब आप रोएंगे उस समय शायद कोई भी आपका साथ नहीं दे सकेगा। सुंदर कल्पनाओं से ही शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

— रीडर एवं विभागाध्यक्ष,
एस. आर. एम. राज्य आयुर्वेदिक कालेज, बरेली।

सीपिकाएं

पुष्टि

तिरंगे के नीचे
शपथ की पुनरावृत्ति
यानी
स्वयं के
भटक जाने की
हर बार पुष्टि

सूखा

ऋतुजन्य
असामयिक दैत्य अनन्य
जो लील जाता है बहारें
डाल देता है
धरती के हृदय पर
दहशत की दरारें

— डा. झूलनसिंह

सुख

बर्फ पर
अंगुलियों से लिखी
इबारत-सा
कितना अस्थायी होता है
सुख
जो सूरज निकलते ही
अक्षर-अक्षर पिघल जाता है!

—महाराज कृष्ण संतोषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कलाकार की आंखें सामान्य वस्तुओं में भी कोई कलात्मक रूप देख लेती हैं। 'ड्रिफ्टवुड' इसी कला-दृष्टि की देन है। लेखक श्री प्रभात कुमार ने स्वयं इस दिशा में अनेक प्रयोग किये हैं। वे अनेक नगरों में अपनी एकल प्रदर्शनी कर चुके हैं।

प्रेम

ड्रिफ्टवुड : एक नया कलात्मक अंदाज

प्राणवान हो उठता है निर्जीव काष्ठ

● प्रभात कुमार

'ऐसी बहुत-सी लकड़ियां तो मेरे गांव में, मेरे घर के पिछवाड़े में मिल जाती ।''

शिमला में आयोजित एक 'ड्रिफ्टवुड' र्शनी में प्रदर्शित काष्ठ-कृतियों को देखने के र किसी 'कलाप्रेमी' ने प्रेक्षक-पुस्तिका में नी टिप्पणी लिखी थी। 'ड्रिफ्टवुड' को कर ऐसी प्रतिक्रिया अस्वाभाविक भी नहीं, कन एक कलाकार और साधारण जन की में अंतर होता है। जो बात साधारण जन सामान्य प्रतीत होती है, कलाकार अपनी खी दृष्टि से उसमें ही कला का कोई रूप ढूंढ़ लेता है।

बरसात के मौसम में वृक्षों की जो जड़ें, या तनों के हिस्से पानी में भीगते रहते हैं, या प्रकृति के अंचल में पड़-पड़े सहज घिसते रहते हैं, वे कभी-कभी मूल रूप बदलकर आकर्षक आकृतियां धारण कर लेते हैं। ऐसी आकृतियों वाली लकड़ियों में गजब की संप्रेषणीयता होती है। इस संप्रेषण के भी कई प्रकार हैं—कोई मानवीय प्रवृत्तियों से जुड़ा होता है तो कोई पशुओं की प्रवृत्ति से। अर्थात इन लकड़ियों में कोई न कोई मुद्रा परिलक्षित होती है। कभी-कभी तो वे बोलती-सी प्रतीत होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

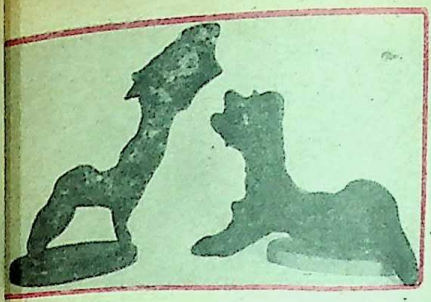

दो कुत्ते

'ड्रिफ्टवुड' कलाकार वनों में या नगरों में भी यहां-वहां पड़ी बेकार-सी लगनेवाली इन लकड़ियों को उठाता है और उन्हें अपनी दृष्टि के अनुसार कलात्मक रूप देता है, बिना उनमें कोई विशेष फेर-बदल किये। कुछ लकड़ियां ऐसी होती हैं कि मात्र धुलाई से उनका कलात्मक रूप निखर आता है। कुछ लकड़ियों का छिलका ही कोई भाव प्रदर्शित करता प्रतीत होता है। कभी-कभी कलाकार लकड़ी के गले या सड़े हिस्से को घिसकर, काटकर या तराशकर उसे मनचाहा रूप दे देता है। ऐसा 'ट्रीटमेंट' आवश्यक भी है लकड़ी को कृति का रूप देने के लिए। इस 'ट्रीटमेंट' में शामिल है, घिसाई और धुलाई। 'ड्रिफ्टवुड' की कृतियों में एक विशेषता यह होती है कि उनमें कोई जोड़ नहीं होता। वे एक ही लकड़ी की बनी होती हैं। यदि तीन-चार लकड़ियों को जोड़कर कोई काष्ट कृति बनायी जाती है, तो वह 'ड्रिफ्टुवड' की कृति नहीं होगी। उसे 'वुडएरेंजमेंट' से बनी कृति कहना ठीक होगा। 'ड्रिफ्टवुड' कृति का उपयोग पुष्प-सज्जा के लिए भी किया जाता है।

— गुलिस्तान-ए-साथी, नाहन
(जिला : सिरमौर) १७३००१

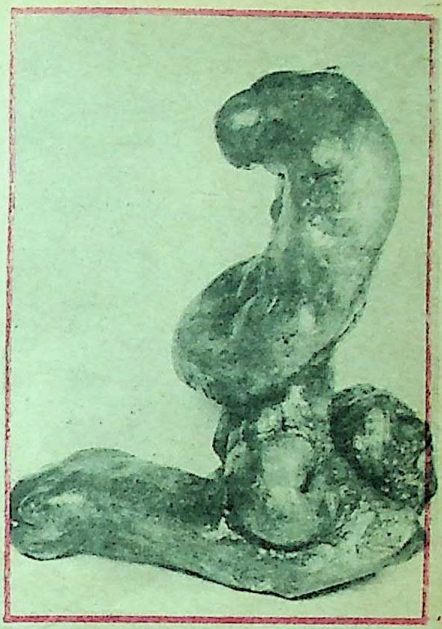

मां और शिशु: एक पुरस्कृत कृति

हरिण का सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुगड्डा-अंचल : क्रांतिकारी आजाद का प्रशिक्षण-स्थल

● डॉ. अख्तर अली

पौड़ी— गढ़वाल जनपद के प्रसिद्ध नगर दुगड्डा के निकटवर्ती ग्राम नाथूपुर के निवासी भवानीसिंह रावत उन गिने-चुने लोगों में से एक थे, जिन्हें महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का विश्वास और स्नेह प्राप्त था और जिन्होंने आजाद के क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होकर अनेक अभियानों में सक्रिय भाग लिया था। ८ अक्तूबर सन १९१० को जन्मे भवानी सिंह रावत का देहांत ६ जून सन १९८६ को हुआ था।

यदि कभी कोई व्यक्ति भवानीसिंह रावत के सम्मुख चंद्रशेखर आजाद की बात छेड़ देता था तो आजाद को याद करके उनकी आंखें नम हो जाती थीं और वे आजाद से संबंधित संस्मरणों का बखान करने लगते थे। भवानीसिंहजी का स्नेह-पात्र होने के कारण मुझे भी उनके संस्मरण सुनने का सौभाग्य अनेक बार प्राप्त हुआ था।

भवानीसिंह रावत दिल्ली के हिंदू कॉलेज में ११वीं कक्षा में पढ़ते हुए कॉलेज के कश्मीरी गेट स्थित छात्रावास में रहते थे। छात्रावास के अधीक्षक प्रोफेसर नंदकिशोर निगम क्रांतिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे और उनके कारण छात्रावास क्रांतिकारियों का आश्रय-स्थल हुआ था। प्रोफेसर निगम की प्रेरणा से भवानीसिंह रावत क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हुए थे। भवानीसिंह रावत की चंद्रशेखर आजाद से पहली भेंट सन १९२८ में कानपुर तब हुई थी, जब वे दिल्ली से अपने क्रांतिकारी दल 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ' का एक विशेष संदेश लेकर आजाद से कानपुर में मिले थे।

चंद्रशेखर आजाद उन दिनों फरारी का जीवन जी रहे थे। ९ अगस्त १९२५ को आजाद ने लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर रेल में से सरकारी खजाना लूटने के अभियान में सक्रिय भाग लिया था और उस गोली से एक सिपाही मारा गया था। इस अभियान में भाग लेनेवाले अन्य क्रांतिकारियों को तो अंगरेज सरकार गिरफ़्तार करने में सफल हो गयी थी किंतु आजाद फरार हो गये। अंगरेज सरकार ने आजाद के सिर पर दस हजार रुपये का इनाम घोषित कर रखा था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरफ़्तारी से बचने के लिए चंद्रशेखर आजाद एक ऐसे निरापद स्थल की तलाश में थे, जहां अपने युवा क्रांतिकारियों को वे बंदूक और पिस्तौल से सही निशाना लगाने का अभ्यास करा सकें। और ऐसा स्थान उन्हें मिला भी! दुगड्डा अंचल में।

गिरफ़ में लेने के लिए देशभर की पुलिस को सतर्क कर दिया था। किंतु आजाद निरंतर अंगरेज सरकार की आंखों में धूल झोंककर कानपुर, झांसी, इलाहाबाद, आगरा और दिल्ली आदि स्थानों पर क्रांतिकारी दल के संगठन का कार्य कर रहे थे।

६ जुलाई सन १९३० को भवानीसिंह रावत ने क्रांतिकारी दल के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से चंद्रशेखर आजाद, काशीराम, धनवंतरी, विद्याभूषण और विश्वम्भरदयाल के साथ गडोदिया स्टोर, चांदनी चौक, दिल्ली में डकैती अभियान में सक्रिय भाग लिया। इन दिनों पुलिस की सक्रियता बढ़ने के कारण चंद्रशेखर आजाद एक ऐसे निरापद स्थान के तलाश में थे, जहां अपने युवा साथियों को बंदूक और पिस्तौल से सही निशाना लगाने का अभ्यास करा सकें। एक दिन उन्होंने बातों ही बातों में इस संबंध में भवानी-सिंह रावत से चर्चा की। भवानीसिंह रावत ने उन्हें बताया कि उनका गांव नाथूपुर गढ़वाल जिले में दुगड्डा नगर के पास घने जंगल के पास स्थित है और वहां निरापद ढंग से हथियार चलाने का अभ्यास किया जा सकता है। आजाद ने भवानीसिंह रावत का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और सन १९३० के जुलाई मास के दूसरे सप्ताह में रात्रि के आठ बजे आजाद, रामचंद्र, छैलबिहारीलाल, हजारीलाल, विश्वम्भरदयाल और भवानीसिंह रावत दिल्ली जंक्शन से रेल में सवार होकर नाथूपुर के लिए रवाना हुए। उनके पास दो अटैचियां थीं। एक में कपड़ों के नीचे एक पिस्तौल और कारतूस रखे हुए थे। दूसरी अटैची में सिर्फ कपड़े और जरूरत का दूसरा सामान था। आजाद के पास भी एक पिस्तौल थी। आजाद कमीज, धोती व कोट पहने थे और सिर पर काली टोपी लगाये थे। अन्य लोग विद्यार्थियों-जैसी वेशभूषा में थे।

आजाद, भवानीसिंह और हजारीलाल एक डिब्बे में थे। डिब्बा खचाखच भरा होने के कारण आजाद, भवानीसिंह और हजारीलाल को बैठने की जगह नहीं मिल सकी थी। अतः ये तीनों एक-दूसरे से कुछ हटकर खड़े हुए थे। गाड़ी झटके से शाहदरा स्टेशन पर रुकी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजाद अपने को न संभाल सके और अपने आगे खड़े बूढ़े से टकरा गये। आजाद के बलिष्ठ शरीर की टक्कर से बूढ़ा गिरते-गिरते बचा। वह झुंझलाकर बोला, "अबे, सीधा खड़ा नहीं रहा जाता ?"

आजाद ने नम्रता से उत्तर दिया, "भाई, मेरी कोई गलती नहीं है। रेल के अचानक झटके से रुकने के कारण ही मेरा शरीर आपसे टकराया है।"

बूढ़ा गरम होकर बोला, "संभलकर खुद खड़ा नहीं होता और दोष रेल को देता है।

हजारीलाल को यह बात सहन नहीं हुई कि बूढ़ा, आजाद को इस प्रकार अपमान भरे शब्द कहे। उन्होंने भड़ककर कहा, "ए बूढ़े जबान संभाल कर बात कर।"

आजाद ने हाथ के इशारे से हजारीलाल को आगे बोलने से रोक दिया और अत्यंत विनम्रता से बूढ़े से कहा, "बड़े मियां, मैं जानबूझकर आप पर नहीं गिरा था लेकिन आप फिर भी यह समझते हैं कि मेरी गलती है तो मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं।

आजाद की विनम्रता से पास बैठी सवारियां बहुत प्रभावित हुईं और उन्होंने बूढ़े को समझा-बुझाकर शांत किया। जिन चंद्रशेखर आजाद की पिस्तौल, गोरी हुकूमत के विरुद्ध हर समय आग उगलने को तैयार रहती थी, जिनका नाम सुनकर बड़े-बड़े अंगरेज अफसरों के कलेजे डर के मारे थर-थर कांपने लगते थे, वे आजाद अपने सामान्य व्यवहार में कितने सरल और विनम्र थे, यह इस घटना से सिद्ध हो जाता है।

अगली सुबह पौड़ी, गढ़वाल जिले के एक मात्र रेलवे स्टेशन कोटद्वार पहुंचने पर इन लोगों की रेल-यात्रा समाप्त हुई और वहां से बस द्वारा पंद्रह किलोमीटर की यात्रा करके दुगड्डा पहुंच गये। भवानीसिंह अपने साथियों को आशासिंह के ढाबे में ले गये। आशासिंह से भवानीसिंह का पुराना परिचय था।

अटैचियों को संभालकर आशासिंह के निजी कमरे में रखने के बाद सभी साथी ढाबे के पीछे नौ-दस मीटर की गहराई पर बह रही सीला नदी में नहाने चले गये। बरसात का मौसम होने के कारण नदी जल से भरपूर थी। सभी साथी नदी के शीतल जल में डुबकी लगाकर देर तक नहाते रहे। नदी से लौटते-लौटते दिन के दस बज गये।

भोजन करने के बाद कुछ समय तक इन लोगों ने आराम किया और फिर दुगड्डा शहर घूमने निकल गये। वहां के अपूर्व प्राकृतिक सौंदर्य से आजाद और अन्य सभी साथी बहुत प्रभावित हुए।

तीसरे पहर इन लोगों ने सीला नदी को पार किया और दुगड्डा से पूर्व की ओर जानेवाली पगडंडी पर चल पड़े। कुछ देर बाद दुगड्डा शहर पहाड़ी की ओट में आकर इन लोगों की आंखों से ओझल हो गया और घना जंगल शुरू हो गया। पगडंडी के एक ओर ऊंची पहाड़ी थी और दूसरी ओर सैकड़ों फुट गहरी खाई थी। इस समय आकाश में बादल छाये हुए थे और ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। चिड़ियों की चहचहाट से जंगल गूंज रहा था। वातावरण की मोहकता ने सभी को आनंदित कर दिया था। चंद्रशेखर आजाद ऐसे भाव-विभोर हुए कि अपना प्रिय गीत गाने लगे :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुगड्डा अंचल में आज भी वह पेड़ चंद्रशेखर आजाद की सही निशानेबाजी की साक्षी देता खड़ा है

"जब कफस से लाश निकली उस बुते नाशाद की
इस कदर रोये कि हिचकी बंध गयी सैयाद की।
कमसिनी में खेल खेले नाम ले-लेकर तेरे,
हाथ से तुर्बत बनायी, पैर से बर्बाद की।
शाम का है वक्त, कब्रों को न ठुकराते चलो,
जाने किस हालत में हो मैयत किसी नाशाद की।"

कभी-कभी आजाद पहले शेर को इस तरह भी गाने लगते थे—

"जब कफस से लाश निकली, उस बुते नाशाद की
रोते-रोते आज हिचकी बंध गयी जल्लाद की।"

इस प्रकार हंसते-गाते लगभग तीन किलोमीटर की दूरी तय करके सूरज छिपने से पहले ये लोग ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां एक पहाड़ी के ढलान पर पत्थरों का बना दुमंजिला मकान था। मकान के इर्द-गिर्द सीढ़ीनुमा खेत थे, जिनमें धान के पौधे लहरा रहे थे। मकान के सामने की ओर उत्तर-पूर्व दिशा मे कुछ मील दूरी पर स्थित पहाड़ी की चोटी पर काले-सफेद धब्बों के रूप में एक शहर दिखायी दे रहा था। भवानीसिंह रावत ने अपने साथियों को बताया कि यह शहर गढ़वाल राइफल्स का मुख्यालय लैंसडौन था।

भवानीसिंह ने अटैचियां बरामदे में रखवा दीं और जीना चढ़कर दुमंजिले पर चले गये। कुछ देर बाद उनके साथ एक गठीले शरीर के वृद्ध व्यक्ति दुमंजिले से नीचे उतरे। भवानीसिंह ने अपने साथियों को बताया कि ये उनके पिता

वह पेड़, जिस पर आजाद ने निशानेबाजी का अभ्यास किया

हैं। सभी साथियों ने उन्हें नमस्कार किया, तब भवानीसिंह रावत ने अपने पिता को अपने साथियों का परिचय दिया। अन्य सभी लोगों को उन्होंने अपना सहपाठी बताया पर आजाद का परिचय एक शिकारप्रेमी रेंज अफसर के रूप में दिया, जिनसे दिल्ली में उनकी घनिष्ठता हो गयी थी। उनके सहपाठी तो पहाड़ देखने के उद्देश्य से उनके साथ आये थे पर रेंजर साहब को शिकार का शौक यहां खींच लाया था।

भवानीसिंह रावत के पिता नाथूसिंहजी सेना के अवकाश प्राप्त आनरेरी कैप्टेन थे। प्रथम विश्व युद्ध में गढ़वाल राइफल्स में सराहनीय कार्य करने के लिए अंगरेज सरकार ने उन्हें दुगड्डा नगर से लगभग तीन किलो मीटर दूर जंगल में बीस एकड़ भूमि जागीर के रूप में दी थी। नाथूसिंहजी सन १९२७ में अपने पुश्तैनी गांव पंचर, पट्टी भवालस्यं, परगना चौंदकोट, गढ़वाल से आकर इस जागीर में बस गये थे और उन्होंने यहां मकान बनवाकर खेती शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दी थी। उनके नाम पर ही इस स्थान का नाम नाथपुर पड़ गया था। यह बात तो उस समय कैप्टेन साहब की कल्पना में भी नहीं थी कि उनका चहेता बेटा भवानीसिंह, जिसे उन्होंने अच्छी शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से दिल्ली भेजा था, वहां रहते हुए क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित होकर उसी अंगरेज हुकूमत को भारत से भगाने का प्रयास कर रहा था, जिस हुकूमत के वे स्वयं निष्ठावान सैनिक रहे थे..... और जिस व्यक्ति का परिचय भवानीसिंह ने रेंज अफसर के रूप में दिया था, वह और कोई नहीं, क्रांतिकारी दल के सेनापति चंद्रशेखर आजाद थे। उस समय तो कैप्टेन नाथूसिंहजी यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए थे कि दिल्ली-जैसे बड़े शहर के लोग उनका स्थान देखने आये थे। इसी मंजिल के एक कमरे में मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था कर दी गयी।

ऊंची-नीची पहाड़ी पगडंडी पर पैदल यात्रा करने के परिणामस्वरूप सभी लोग पसीने से लथपथ हो गये थे। अतः उन्होंने नहाने की इच्छा प्रगट की। भवानीसिंह उन्हें अपने मकान से तीन-चार मीटर पीछे की ओर ऊंची पहाड़ी से गिर रही जल धारा के निकट ले गये। सभी साथियों ने पसीना सुखाकर धारा के शीतल जल में स्नान करके कपड़े बदले।

शाम को भवानीसिंह रावत ने अपने साथियों को अपने पारिवारिक सेवक जंगी से मिलवाया और बताया कि जंगी एक कुशल निशानेबाज हैं और दस गज के फासले से आमने-सामने खड़े होकर शेर का शिकार कर चुका था।

चंद्रशेखर आजाद जंगी की बहादुरी की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उसका कंधा थपथपाकर बोले, "शाबाश जंगी! तुम बहुत बहादुर हो। हम बहादुरों की कद्र करते हैं। क्या यहां जंगल में बहुत से शेर हैं?"

जंगी ने उत्तर दिया, "हुजूर, पास के जंगल में अकसर शेर दिखायी दे जाते हैं। क्या आप शेर का शिकार करना चाहेंगे?"

"हां, जंगी, हमारी इच्छा शेर का शिकार करने की है। क्या तुम हमारे साथ शेर के शिकार पर चलोगे?"

"हुजूर, मैं कल ही आपके साथ शेर के शिकार के लिए चलूंगा!" जंगी खुशी से बोला।

तभी भवानीसिंह की माता द्रौपदी देवी ने भोजन तैयार होने की सूचना दी। सभी साथी भोजन करने रसोई में पहुंच गये। भोजन में स्थानीय सब्जियां लिंगुड़ा की भुज्जी, चौलाई की भुज्जी, मूली की भुज्जी और साबुत उड़द की दाल थी। भोजन स्वादिष्ट तो बना ही था, लेकिन द्रौपदी देवी आग्रह करके जिस प्रकार स्नेहपूर्वक उन्हें भोजन करा रही थीं, उससे भोजन का स्वाद और भी बढ़ गया था। आजाद को उड़द की दाल का स्वाद विशेष पसंद आया।

भोजन करके सभी साथी अपने कमरे में लौट आये। कमरे के बाहर घना अंधकार छाया हुआ था। आकाश में बादल गरज रहे थे और रह-रहकर कौंध रही बिजली की चमक वातावरण को क्षणिक प्रकाश से भर देती थी। वर्षा होने ही वाली थी।

सभी साथी जमीन पर बिछे बिस्तरों पर पसर गये। चंद्रशेखर आजाद अपने साथियों को राजनीतिक ज्ञान की जानकारी प्राप्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उनसे पूछने लगे कि उन लोगों ने अंगरेज सरकार द्वारा जब्त किये गये क्रांतिकारी साहित्य में से कौन-कौन-सी पुस्तकें पढ़ी हैं। काफी समय तक इसी प्रकार की बातें होती रहीं। दस बजे के लगभग आजाद ने भवानीसिंह रावत को लालटेन की बत्ती कम करने को कहा। कुछ देर में ही सबको नींद ने अपनी गोद में ले लिया।

अगले दिन जागने पर भवानीसिंह रावत, हजारीलाल, रामचन्द्र, छैलबिहारीलाल और विश्वम्भरदयाल ने देखा कि आजाद कमरे में नहीं थे। भवानीसिंह के पिता कैप्टेन नाथूसिंह ने उन्हें बताया कि रेंजर साहब (आजाद) उनकी बंदूक लेकर जंगी के साथ शेर का शिकार करने के उद्देश्य से जंगल में चले गये थे।

आजाद जंगल से साढ़े ग्यारह बजे के लगभग पसीने से लथपथ होकर लौटे। दुनाली बंदूक उनके कंधे पर थी और जंगी उनके पीछे चला आ रहा था। आजाद ने बताया कि बीहड़, ऊबड़-खाबड़ जंगल में मीलों भटकने पर भी उन्हें शेर के दर्शन नहीं हुए थे। आजाद आमने-सामने खड़े होकर शेर का शिकार करना चाहते थे।

आजाद धारा से स्नान करके लौटे तो खाना तैयार हो चुका था। सभी लोग खाना खाने बैठ गये। खाना खाने के बाद उन लोगों ने आराम किया और दो बजे के लगभग आजाद ने उन्हें घूमने चलने के लिए कहा। घूमने चलने का वास्तविक अर्थ निशानेबाजी के लिए चलने से था। हजारीलाल ने अटैची में से एक डिब्बा निकालकर रूमाल में बांध लिया और सांप की तरह बलखाती टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी पगडंडी पर सभी साथी भवानीसिंह रावत के पीछे चल

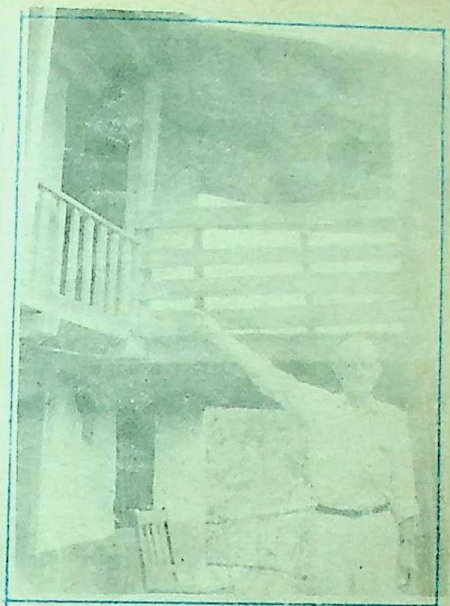

इसी दूसरी मंजिल में ठहरे थे आजाद !

पड़े। लगभग पौन घंटे की यात्रा के बाद ये लोग ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां कुछ समतल जमीन थी। आजाद के संकेत पर हजारीलाल ने रूमाल में से डिब्बा अलग करके डिब्बे का ढक्कन खोल दिया। डिब्बे में पिस्तौल की गोलियां भरी हुई थीं। आजाद ने अपने कोट की दाहिनी जेब में से एक पिस्तौल निकाली और हरेक साथी को उसकी बनावट समझाकर उसमें गोली भरना सिखाया। जब पिस्तौल की बनावट और उसमें गोली भरने की विधि समझ में आ गयी तो उन्होंने छैलबिहारीलाल को सामने खड़े वृक्ष के तने पर कांटे की सहायता से एक पत्ता लगाने को कहा। छैलबिहारीलाल ने हथेली के आकार का पत्ता तोड़कर कांटे की सहायता से पेड़ के तने पर लगा दिया। दस कदम के फासले से आजाद ने हरेक साथी से पत्ते पर निशाना लगवाया। जब एक पत्ता कट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था तो उसकी जगह दूसरा पत्ता लगवा दिया जाता था। जब हर साथी पांच बार पत्ते पर निशाना लगा चुका तो पेड़ पर कुछ छोटे आकार का पत्ता लगाकर फासला पंद्रह कदम कर दिया गया। इस बार भी हर साथी को पांच-पांच निशाने लगाने का मौका दिया था। फिर फासला बढ़ाकर बीस कदम कर दिया गया और पुनः हर साथी से पांच-पांच निशाने लगवाये गये। आजाद हर बार हर साथी के निशाने की जांच करते थे और नंबर देते थे।

निशानेबाजी का अभ्यास चल ही रहा था कि जंगल की गश्त पर निकला रेंज अफसर गोलियां चलने की आवाज सुनकर दो फॉरेस्ट गार्डों के साथ वहां आ पहुंचा। उसने कठोर लहजे में इन लोगों से पूछा, "आप लोग कौन हैं और यहां गोली क्यों चला रहे हैं ?"

भवानीसिंह रावत ने उत्तर दिया, "मैं नाथूपुर के जागीरदार कैप्टेन नाथूसिंह का लड़का हूं और ये सभी लोग मेरे सहपाठी हैं। ये पहाड़ देखने दिल्ली से यहां आये हैं। आज सब लोगों का विचार हुआ कि निशानेबाजी का अभ्यास किया जाए। इसलिए उचित स्थान देखकर निशानेबाजी का अभ्यास करने हम यहां आ गये।"

रेंज अफसर कैप्टेन नाथूसिंह जी से भलीभांति परिचित था। वह भवानीसिंह रावत के उत्तर से संतुष्ट होकर वापस चला गया।

अचानक सामने आया खतरा सहज ही टल गया था। अतः पुनः निशानेबाजी शुरू कर दी गयी। निशानेबाजी का अभ्यास पूरा होने पर सब लोग वापस नाथूपुर की ओर चल दिये। रास्ते में विश्वम्भरदयाल ने कहा, "बड़े भैया ! हमने आपकी निशानेबाजी तो देखी ही नहीं।

आजाद बोले, "यहां मेरी निशानेबाजी देखोगे ? किसी मौके पर देखना।"

सभी साथियों ने आग्रह किया, "नहीं तो अभी देखेंगे।"

आजाद ने कहा, "अच्छा तुम लोग चाहते हो तो बताओ किस चीज पर निशाना लगाऊं ?"

छैलबिहारीलाल ने पगडंडी से कुछ दूर खड़े पेड़ के एक पत्ते पर निशाना लगाने को कहा। पत्ते का आकार दो-तीन माह के बच्चे की हथेली के बराबर था। आजाद ने पंद्रह-सोलह गज से निशाना ताककर पहली गोली मारी।

सभी साथी बोले, "दादा, गोली तो पत्ते पर नहीं लगी।" आजाद ने दूसरी बार निशाना ताककर गोली मारी। तब भी सबने यही कहा कि गोली नहीं लगी। तीसरी बार आजाद ने अच्छी तरह निशाना साधकर गोली चलायी। इस बार भी सबका यही विचार था कि गोली पत्ते पर नहीं लगी थी क्योंकि पत्ता तनिक भी हिलता हुआ दिखायी नहीं दिया था। आजाद ने चौथी और पांचवीं बार कुछ अधिक दूरी से निशाना ताककर गोली चलायी पर सबका कहना था कि पत्ता हिलता हुआ प्रतीत हुआ था। अतः निशाना पहले की तरह चूक गया था।

छैलबिहारीलाल बोले, "भैया ! निशाना नहीं लगा तो कोई बात नहीं। अब छोड़ दीजिए।"

आजाद उद्विग्न स्वर में बोले, "अगली बार और कोशिश करने दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

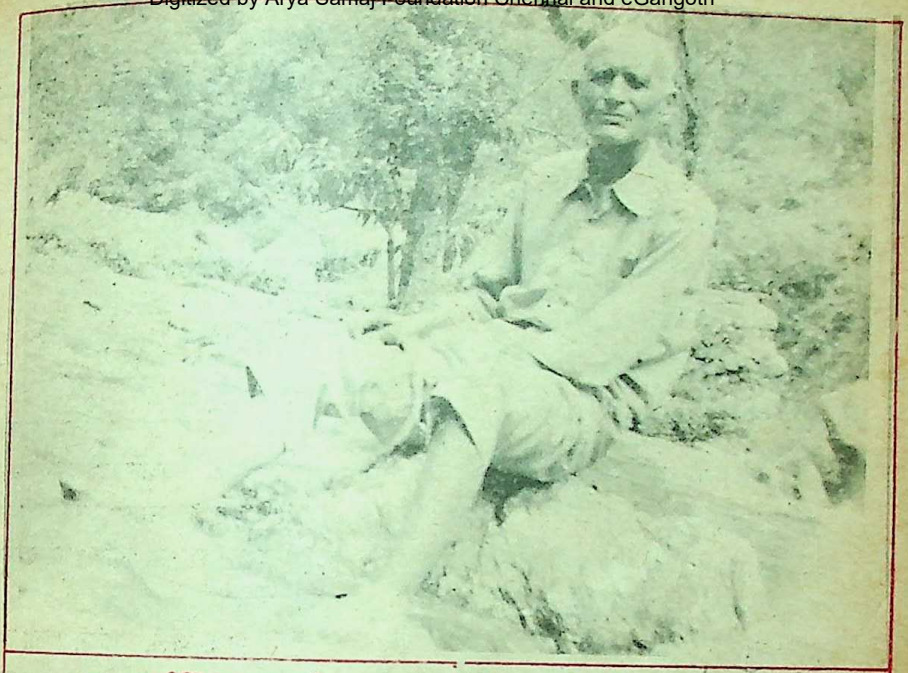

स्व. भवानीसिंह रावत अपने ग्राम नाथूपुर के निकट बहनेवाली उस जलधारा के पास, जिसमें स्नान कर आजाद और उनके युवा साथी निशानेबाजी के अभ्यास की थकान दूर किया करते थे।

इस बार आजाद ने बहुत अधिक सतर्क होकर गोली चलायी। भवानीसिंह रावत और हजारीलाल का विचार था कि पत्ता इस बार कुछ हिला था। अतः यह गोली निशाने पर लगी थी जबकि अन्य साथियों का विचार था कि निशाना इस बार भी चूक गया था। परेशान होकर आजाद स्वयं पेड़ के समीप गये और ध्यान से पत्ते को देखकर उन्होंने कहा, "सभी लोग यहां आकर पत्ते को देखो।"

सब साथियों ने वहां जाकर पत्ते को देखा तो आश्चर्य से उनकी आंखें फैल गयीं। छह की छह गोलियां एक दूसरे के निकट पत्ते के बीच में लगी थीं और पत्ता छलनी हो गया था। आजाद के अचूक निशाने को देखकर सभी साथी दंग रह गये थे।

अगले दिन प्रातः आजाद जंगी के साथ पुनः शेर की तलाश में जंगल में गये और दोपहर में एक बजे के लगभग वापस आये। आजाद ने अपने साथियों के पूछने पर कहा, "शेर के पंजों के निशान तो मिले थे पर शेर नहीं मिला।"

अपने साथियों को निशानेबाजी का गहन प्रशिक्षण देने के बाद जब आजाद को विश्वास हो गया कि उनके युवा साथी निशानेबाजी में पारंगत हो गये हैं तो आजाद ने दिल्ली लौटने का कार्यक्रम बना लिया। भवानीसिंह रावत अपने साथियों को दुगड्डा तक पहुंचाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस निर्दोष बेजुबान पक्षी ने हमारा क्या बिगाड़ा है, जो हम इस पर निशाना लगाएं। इसे अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेने दो। अगर निशाना ही लगवाना चाहते हो तो कोई और निशाना बताओ।"

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद से संबंधित एक अछूता संस्मरण

उनके साथ चले। अभी उन्हें कुछ और समय गांव में बिताना था।

आजाद और उनके साथियों की टोली नाथूपुर से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर आयी थी कि विश्वम्भरदयाल ने एक वृक्ष की ओर संकेत करके आजाद से कहा, "भैया देखो ! उस पेड़ की डाल पर एक फाख्ता किस शान से बैठा है, जरा उस पर निशाना तो लगाइए।"

आजाद ने फाख्ता की ओर देखकर गंभीर स्वर में कहा, "इस निर्दोष बेजुबान पक्षी ने हमारी क्या बिगाड़ा है, जो हम इस पर निशाना लगाएं। इसे अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेने दो। अगर निशाना ही लगवाना चाहते हो तो कोई और निशान बताओ।"

विश्वम्भरदयाल ने उसी पेड़ पर एक सफेद निशान पर निशाना लगाने को कहा। आजाद ने लगभग पंद्रह गज से निशाना लगाया। गोली ठीक विश्वम्भरदयाल के बताये हुए निशान पर लगी। सभी साथी आजाद के निशाने की सराहना करने लगे।

दुगड्डा से बस पकड़कर चन्द्रशेखर आजाद, रामचंद्र, छैलबिहारीलाल, हजारीलाल और विश्वम्भरदयाल कोटद्वार की ओर रवाना हुए जहां से उन्हें दिल्ली के लिए रेल पकड़नी थी। भवानीसिंह रावत उन्हें विदा करके अपने गांव वापस चले गये।

सन १९३० के अगस्त माह के अंत तक अंगरेज सरकार कुछ क्रांतिकरियों को गिरफ्तार करने में सफल हो गयी और क्रांतिकारी दल का दिल्ली क्षेत्र का संगठन कार्यकर्ता कैलाशपति अपनी गिरफ़ारी के बाद पुलिस का मुखबिर हो गया। परिणामस्वरूप कुछ और क्रांतिकारी पुलिस की गिरफ़ में आ गये। भवानीसिंह रावत की गिरफ़ारी का वारंट भी जारी हो गया और वे गिरफ़ारी से बचने के लिए भूमिगत हो गये। पुलिस को यह सूचना भी मिल गयी थी कि भवानीसिंह रावत २३ दिसम्बर, १९२९ को तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन की ट्रेन बम से उड़ाने के दिल्ली षड्यंत्र में भी शामिल थे, अतः पुलिस ने उन्हें गिरफ़ार करने के लिये गढ़वाल में पंचूर और नाथूपुर गांवों में भी छापे मारे। २७ फरवरी, १९३१ को इलाहाबाद में आजाद की शहादत तक भवानीसिंह रावत ने अपनी फरारी का अधिकांश समय आजाद के साथ ही व्यतीत किया। अंततः २५ सितम्बर १९३२ को बंबई से विदेश भागने का प्रयास करते समय पुलिस के हाथ आ गये और दिल्ली षड्यंत्र केस तथा अन्य क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के आरोप में मुकदमा चलाने के लिए दिल्ली भेज दिया गया। कतिपय कारणों से अंगरेज सरकार द्वारा दिल्ली षड्यंत्र केस की सुनवाई के लिए गठित ट्रिब्यूनल को भंग कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के परिणामस्वरूप भवानीसिंह रावत फरवरी १९३३ में जेल से रिहा कर दिये गये परंतु अगले दस वर्ष तक पुलिस ने उन पर कड़ी निगरानी रखी।

सन् १९३० के जुलाई माह के दूसरे सप्ताह में अपने साथियों को हथियार चलाने का प्रशिक्षण देने के बाद नाथूपुर से दिल्ली वापस जाते समय महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने विश्वम्भरदयाल के अनुरोध पर जिस पेड़ पर अपने पिस्तौल से अचूक निशाना लगाया था, वह पेड़ आज भी अपने स्थान पर खड़ा है। पेड़ के आसपास का दृश्य अत्यंत मनोरम है। इससे कुछ हटकर एक शीतल जलधारा बहती है और संपूर्ण घाटी में दूर-दूर तक घना जंगल है, जिसमें भांति-भांति के वन्य प्राणी पाये जाते हैं।

भवानीसिंह रावत ने अपने जीवनकाल में इस पेड़ के चारों ओर एक चबूतरा बनवाकर उस पर लिखवा दिया था—'महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की पुण्यस्मृति में।'

भवानीसिंहजी रावत की हार्दिक अभिलाषा थी कि शासन इस स्थान पर महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की गढ़वाल के दुगड्डा-अंचल की यात्रा की स्मृति में उनकी आदमकद मूर्ति का निशाना लगानेवाली मुद्रा में स्थापना करे और इस स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करे ताकि देशवासी यहां आकर देशभक्ति की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।....

मालवीय बाजार, दुगड्डा (गढ़वाल)
उ. प्र.-२४६१२७

शब्दों में

शब्दों में
इतने
अनदेखे सागर
छिपे हैं जिन्हें
कभी
कोई
समाप्त
नहीं कर सकता...

बंद मुट्ठी-सा दिल
रातभर
आग में
करवटें बदलते-बदलते
बन जाता है
पंजाब से बड़ा
पंजाब
आंसुओं का सैलाब!

दर्द ने
जीवन को इतना
संवारा है कि
अब
सिर्फ दर्द ही
हमारा है!

तुम
कितनी
सुंदर हो
तारों-से शब्द
लिखते-लिखते
आकाश हो गया हूं...

—केदारनाथ कोमल

ई-१७ सरोजिनी नगर, नयी दिल्ली-११००२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

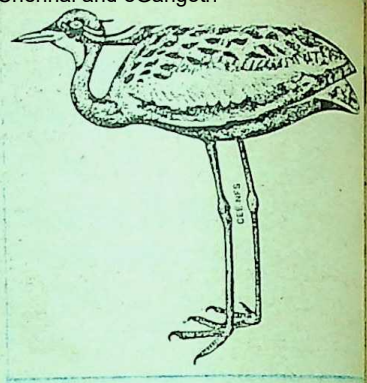

अपने अंत के निकट रंगीन मिजाज खरमोर

खरमोर पक्षी भारत की प्रसिद्ध सोहन चिड़िया का निकटतम् संबंधी है। सोहन चिड़िया परिवार का यह सबसे छोटा सदस्य है व इसका आकार पालतू घरेलू मुरगी के बराबर होता है। यह वृहद और खुले क्षेत्रों का निवासी है। प्रजनन काल के अलावा शेष समय में यह जंगली क्षेत्रों में पाया जाता है।

खरमोर की प्रमुख विशेषता है इसका बहुरंगी शरीर। नर के शरीर पर काले रंग के छींटे पाये जाते हैं। सिर पर काला रंग होता है। गरदन के निचले हिस्से में ऊपर की ओर पट्टीनुमा पृथक कलगी पायी जाती है, जो लंबे पंखों के समान हवा में लहराती रहती है।

मादा का शरीर काला मिश्रित पीला रंग लिये होता है अर्थात पीली छाया लिये होता है। यह इसे स्वयं को घास में छुपाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अपने अंडों को घास के बीच में छुपाती है इस ढंग से कि जब वह अपने घोंसले से कहीं बाहर होती है, उस समय भी उसे इन अंडों व घोंसले को तलाश करना आसान काम नहीं होता।

प्रजनन काल के दौरान नर के देखने की क्षमता अत्यधिक हो जाती है। यही वह समय होता है, जब वह मादा की निगाह में अपनी उपस्थिति दर्शाने का प्रयास करता है। यहां तक कि इस समय वह अपने प्रतिद्वंद्वी के सीमा क्षेत्र में प्रवेश कर मादा का अपहरण भी कर लेता है। नर खरमोर की उछलकूद देखना और उस समय उसकी आवाज सुनना वास्तव में कभी न भूलनेवाला आनंददायक अनुभव है। किंतु खरमोर की यही आदत उसके जीवन को जोखिमभरा बना देती है। खरमोर के दुश्मनों में प्रमुख हैं—बाज, चील, लोमड़ी, गीदड़, जंगली बिल्ली, अजगर, गोह छिपकली (घोड़फोड़) मंगूस और आदमी।

सौराष्ट्र में खरमोर जुलाई से अक्तूबर के बीच अंडे देती है और इस समयावधि में बच्चे भी पैदा हो जाते हैं। बच्चे अंडों से बाहर निकलने के कुछ समय बाद चलना प्रारंभ कर देते हैं। बच्चों को मां के द्वारा घास में आगे बढ़ना, चलना सिखाया जाता है। बच्चे अपनी मां से भोजन एकत्रित करने का प्रशिक्षण लेते हैं।

गत कुछ दशाब्दियों से चराई के लिए अपनाई जानेवाली गैर जिम्मेदाराना व्यवस्था ने घास के संरक्षण को काफी प्रभावित किया है। अतः पक्षियों का जीवन संकटमय हो गया है। भूमि का अत्यधिक शोषण, कीटनाशकों का अत्यधिक छिड़काव, नगदी फसलों के उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि आदि अनेक कारणों से मनुष्य खरमोर को खोता जा रहा है। सौराष्ट्र का प्रतीक पक्षी खरमोर, लगता है, निकट भविष्य में समाप्त हो जाएगा।

—लव कुमार खाचर

संकटग्रस्त पेड़-पौधों के लिए

विश्व के चौदह हजार से अधिक वनस्पति उद्यानों में महत्त्वपूर्ण पेड़-पौधों की लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षण दिये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसे लुप्त होते पेड़-पौधों की छह हजार के करीब प्रजातियां हैं। इस संरक्षण नीति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी महत्त्व दिया गया है।

संरक्षण योजना के अंतर्गत चीन ने तीन सौ चालीस से अधिक वनस्पति उद्यान स्थापित करने का निर्णय लिया है, जहां संकटग्रस्त वनस्पति का रोपण और संरक्षण किया जाएगा। चीन के अलावा तंजानिया मलेशिया और लेटिन अमरीका के कुछ क्षेत्रों में संरक्षण उद्यान लगाने का फैसला किया है। विश्व वन्य-जीवन कोष भी इस प्रकार के पेड़-पौधों के संरक्षण के लिए प्रति वर्ष पच्चीस हजार पौंड खर्च कर रहा है। ऐसे अनेक राष्ट्रों को, जो उक्त संरक्षण योजना में शामिल होने में सक्षम हैं, विश्व वन्य जीवन कोष की ओर से सहायता दी जा रही है।

पहाड़ी ऊदबिलाव को बचाने के लिए

सानफ्रांसिस्को के एक समाचार के अनुसार, पहाड़ी ऊदबिलाव, जिन्हें गिलहरी व अन्य कंतुक जाति के प्राणियों का पूर्वज कहा जाता है, इस समय अत्यधिक संकटग्रस्त है। इनकी संख्या में यहां तेजी से कमी आ रही है। वर्तमान में इनकी संख्या केवल साठ है।

वन्य जीवन संरक्षणकर्ताओं ने पहाड़ी ऊदबिलाव को बचाने के लिए शीघ्र कार्रवाई किये जाने की मांग की है। इनका कहना है कि पहाड़ी ऊदबिलाव के निवास क्षेत्र को शासकीय संरक्षण क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए, साथ ही इसके शिकार पर भी प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। इनके निवास क्षेत्र में अनावश्यक रूप से घुसपैठ करनेवाले पशुओं जैसे कुत्ते, बिल्ली आदि को घुसने नहीं दिया जाना चाहिए।

इसके अलावा कहा गया है कि पहाड़ी ऊदबिलाव के निवास क्षेत्र के आसपास सड़क निर्माण में भी पूरी सावधानी बरतना आवश्यक है क्योंकि इनके स्वच्छंद जीवन में बाधा न पैदा हो। (सीईई- एनएफएस)

चिकित्सा में उपयोगी हिम तुलसी

हिम-तुलसी : तुलसी के सदृश पत्तोंवाला तथा प्रायः वैसी ही सुरभिवाला यह छोटा पौधा है। पर्वतीय जन इसे मैदानों की तुलसी की भांति ही पवित्र मानते हैं। बद्रीनाथ के मंदिर में तीन-चार मास इसी हिम-तुलसी से विग्रह का अर्चन किया जाता है। बाद में यही तुलसी श्रद्धालु तीर्थयात्रियों को प्रसाद के रूप में दी जाती है। हिम-तुलसी को गढ़वाली में 'तुलसी' और कुमाऊंनी में 'वन-तुलसी' कहते हैं। फारसी में इसे 'मिर्जजोश' कहा जाता है। हिम-तुलसी चिकित्सा में भी उपयोगी है। उदरशूल, अतिसार, अपचन आदि पेट के रोगों में दीपन-पाचन के लिए भी हिम-तुलसी का उपयोग किया जाता है। हिस्टीरिया में हिम-तुलसी के पत्तो को मसलकर सुंघाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़ लगाने की सजा भुगत रहे हैं वृक्षमानव

● नवीन नौटियाल

वृक्षमानव ! यह खिताब उन्हें किसी सरकारी एजेंसी ने नहीं दिया। न ही यह किसी भावुक भक्त के मुंह से निकला अतिरंजित संबोधन है। दरअसल विश्वेश्वर दत्त सकलानी के काम को देखकर हर कोई मानेगा कि उनके लिए इससे उपयुक्त संज्ञा हो ही नहीं सकती। उन्होंने अपनी छियासठ साल की जिंदगी में कुल पचास हजार पेड़ रोपे हैं। भारत सरकार ने भी उन्हें वृक्षमानव तो नहीं, हां, वृक्षमित्र जरूर माना और पिछले साल बीस नवम्बर को उन्हें 'इंदिरा गांधी वृक्षमित्र पुरस्कार' देकर अपने इस विचार की पुष्टि की। लेकिन यह विडंबना नहीं तो और क्या है कि जिस सरकार ने उन्हें वृक्षारोपण कार्य के लिए सम्मानित किया वही सरकार उनपर वनभूमि पर वनीकरण के जुर्म को लेकर मुकदमा कर रही है और वृक्षमानव अब वृक्षारोपण के सार्थक काम को छोड़कर कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगा रहे हैं।

एक और शाहजहां

टिहरी गढ़वाल की सकलाना पट्टी के पुजार गांववासी श्री सकलानी अपने गांव के पास सत्यों गांव के सामने १९४७ से पेड़ों के पौधे रोपते आ रहे हैं। यह काम वह किसी प्रतिफल की अपेक्षा से नहीं कर रहे। यह सब वह किसी पुरस्कार या सम्मान की प्राप्ति के लि भी नहीं कर रहे। सन् १९५८ में उनकी एक पत्नी का निधन हुआ। उन्हें तपेदिक की बी थी और तपेदिक के संक्रमण के डर से उन्हें के लोग अपने से अलग ही रखते थे। इसलि वह घर से निकलकर किसी बांज के पेड़ सायें तले बैठ जाया करती थीं। पत्नी की ने उन्हें व्याकुल कर दिया।

शाहजहां होते तो शायद पत्नी की य ताज बनवाते लेकिन सकलानी ने पत्नी की को और भी सार्थक बना दिया और स किया कि वह उस ताज बनवानेवाले शहंशाह से भी कहीं ज्यादा संवेदनशील हैं। उन्होंने पत्नी के निधन के बाद उनकी में बांज के पेड़ लगाने शुरू कर दिये। सल पास का खल्वाट पहाड़, जहां कभी जंगल होंगे और उस समय वहां धूल उड़ा करती वहां अब बांज-बुरांस के पेड़ उगने लगे। तक श्री सकलानी इस जंगल में पचास बांज-बुरांस के चौड़ी पत्तीवाले पेड़ लगा हैं। और इस सोलह-सत्रह सौ मीटर पहाड़ी जगह का कायाकल्प कर डाला

जनता को समर्पित

इसी तरह निरंतर श्रम से जब जंगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया तो सकलानी को लगा कि अब इसे जनता को समर्पित कर दिया जाना चाहिए। इसलिए उन्होंने इस वन का नाम रखा 'नागेंद्र क्रांति वन'! नागेंद्र सकलानी उनके बड़े भाई का नाम है जो ग्यारह जनवरी १९४८ को कीर्ति नगर में गढ़वाल नरेश की आततायी सेना से लड़ते हुए शहीद हुए थे। उन्होंने वन के बीच नागेंद्र सकलानी का एक स्मारक भी बनाया और ग्यारह जनवरी, १९८४ को जनता को समर्पित कर दिया। इस मौके पर उन्होंने 'चिपको आंदोलन' के नेता सुंदरलाल बहुगुणा को साक्षी बनाया। क्रांति वन उन्होंने जनता को सौंपा तो जरूर पर इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यह वन जनता को इसलिए दिया गया है ताकि वह इसका रक्षण व संवर्धन करे न कि इसे काटकर अपनी ह'वस का शिकार बना डाले। यह वन उन्होंने खून-पसीने से सींचा है लेकिन बहुतेरे स्थानीय लोग उनसे इसलिए चिढ़ते हैं क्योंकि सकलानी उन्हें वन से घास-चारा नहीं लाने देते। लेकिन सच्चाई यह है कि अगर सकलानी इस जंगल की चौकीदारी करना छोड़ दें तो कुछ ही दिनों में जंगल कटकर खत्म हो जाएगा।

पिछले साल ऋषिकेश में शिवानंद आश्रम की तरफ से उनकी इन्हीं सेवाओं के लिए उन्हें पांच हजार रुपये के पर्यावरण संरक्षण सेवक पुरस्कार से सम्मानित किया गया और उसी साल 'वृक्षमित्र' सम्मान से भारत सरकार ने उन्हें विभूषित किया।

महिला की पीड़ा का गीत

वृक्षमानव सकलानी का कहना है कि : 'पहाड़ों में महिलाओं की जिंदगी दिन-ब-दिन

जिस व्यक्ति ने जिंदगीभर जुटकर पचास हजार बांज, बुरांस के चारा देनेवाले पेड़ लगाये हों और जिसे इस काम के लिए सरकार ने 'वृक्षमित्र' सम्मान से नवाजा हो, आज उस पर अगर वही सरकार मुकदमे दायर कर रही हो कि उस आदमी ने वनभूमि पर अवैध कब्जा किया है और सरकारी जमीन पर वनीकरण किया है तो आप क्या कहेंगे ?

कष्टप्रद होती जा रही है। नयी वन नीति ने वनों को आबादी से पीछे धकेल दिया है। इसलिए जो वन सरकारी नीति की कृपा से दूर चले गये हैं उन्हें गांवों के पास लाना है ताकि हमारी महिलाएं घास-चारे के संकट से उबर सकें।' इस बारे में उनका एक गढ़वाली गीत है जिसे उनके मुख से सुनकर ग्रामीण महिलाओं की आंखों से बरबस आंसू टपकने लगते हैं।—बीरी एक पर्वतीय महिला है जो घास की तलाश में एक गहरे खाले में उतरती है और वहां से ऊपर नहीं चढ़ पाती क्योंकि इसी बीच चूहों ने रास्ता तोड़ डाला है। इधर उसका दूध पीता बच्चा घर पर भूख से बिलख रहा है। साथ की औरतें गांव जाकर बताती हैं कि बीरी खाई में फंसी है। यह सुन गांव के लोग रात गये पत्तियों की रोशनी करके वहां पहुंचते हैं और जब बीरी को बाहर निकालने के सभी प्रयास बेकार जाते हैं, वे बीरी को दिलासा देकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौट जाते हैं कि अगली सुबह आकर उसे निकालेंगे। लेकिन अगले दिन जब गांववाले वहां आते हैं तो खाई में बीरी की क्षत-विक्षत लाश पड़ी मिलती है। जाहिर है इस गीत के जरिये भी वह ग्रामीण महिलाओं की तकलीफ की बयान करते हैं जो कि वनों के कटने से पैदा हुई हैं।

सकलानी वृक्ष महिमा को इन शब्दों में बयान करते हैं : 'पेड़ अपने लिए कुछ नहीं मांगता। उसके पास जो है, सब कुछ दूसरों को देने के लिए है। वह एक ही जगह पर अपना जीवन व्यतीत करता है। दीर्घजीवी होता है। धरती को उपजाऊ बनाने में भी इसी का योग है। सुंदर आब-ओ-हवा देता है। मिट्टी बनाना, पानी के स्रोत बनाना, बारिश बुलाना इसका ही काम है। काटो तो रोता नहीं, सींचो तो हंसता ,नहीं, अंतःकरण से यही कहता है—हे प्राणी ! मैं तेरी सेवा के लिए धरती पर आया हूं और मेरा सब कुछ तेरे लिए ही अर्पित है। पर आवश्यकताओं के अधिक बढ़ने पर तुमने मेरा विनाश कर दिया है। मुझे लगता है कि मेरा विनाश होने से पहले ही धरती से तेरा पूर्ण विनाश न हो जाए। मुझे दया आती है तुझ पर। सृष्टि का जितना विनाश तूने कर दिया उससे ज्यादा तू अब रचना कर जिससे तेरा वंश भी कायम रहे और संसार के प्राणीमात्र, जीव-जंतु, जलवर-थलचर सुखी रहें।'

'ऐसा न हो कि एक दिन धरती वृक्षविहीन हो जाए और प्राणवायु भी न रहे, धरती पर धूल उड़ने लगे। चंद्रमा की तरह धरती खंडहर न हो जाए। इसलिए अपने को कायम रखने के लिए तू अब पेड़ लगा।'

श्री सकलानी का कहना है कि 'मैं पढ़ा-लिखा आदमी नहीं हूं लेकिन वृक्ष मुझे बहुत कुछ देते हैं। इनके नीचे जो शांति मुझे मिलती है वह अन्यत्र नहीं मिलती।'

वन विभाग की खीझ

सकलानी की मेहनत और बातों ने लोगों को प्रभावित किया। लोग उनकी बातें सुनने और काम देखने के लिए उनके गांव तक पहुंचने लगे। उन्होंने देखा कि उनका रोपा वन अलग ही शान से खड़ा है जबकि सरकार के वन विभाग का लगाया वन बेहद बीमार हालत में है। उस वन के नब्बे प्रतिशत पेड़ पनपने से पहले ही सूखकर खत्म हो गये। ऐसे में वन विभाग का खीझना स्वाभाविक ही है क्योंकि हरा-भरा नागेंद्र क्रांतिवन पूरे सरकारी अमले की कारगुजारियों का पर्दाफाश करता हुआ उसकी खिल्ली उड़ा रहा है। वन विभाग के भ्रष्ट अधिकारी भी इस स्थिति को असहनीय पा रहे हैं और किसी-न-किसी तरह सकलानी को परेशान करने की युक्ति निकालने में व्यस्त हैं। इसी योजना के मुताबिक हाल ही में वन विभाग ने उन पर भारतीय दंड संहिता की धारा २६ के तहत एक मुकदमा दायर किया है जिसमें उन पर जंगलात विभाग की जमीन हड़पने का आरोप है। यह वही जमीन है जिस पर सकलानी ने वनीकरण किया है।

उन्नीस सितंबर '८७ को टिहरी के मुख्य दंडाधिकारी की अदालत में उन्हें जमानत करानी पड़ी। उनके अनुसार, जब वे बाईस सितम्बर को टिहरी में इलाके के रेंजर से मिले तो रेंजर ने कहा कि नागेंद्र सकलानी स्मारक वन क्षेत्र से उखाड़ दो। तभी समझौता होगा। सचाई यह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

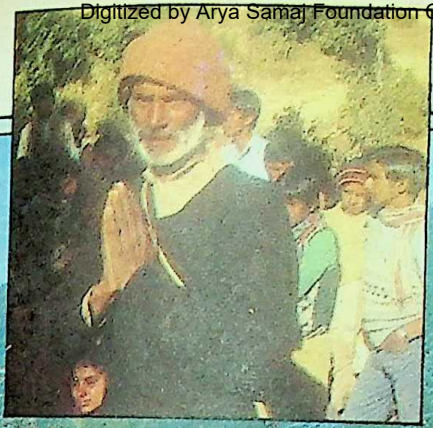

विश्वेश्वर दत्त सकलानी

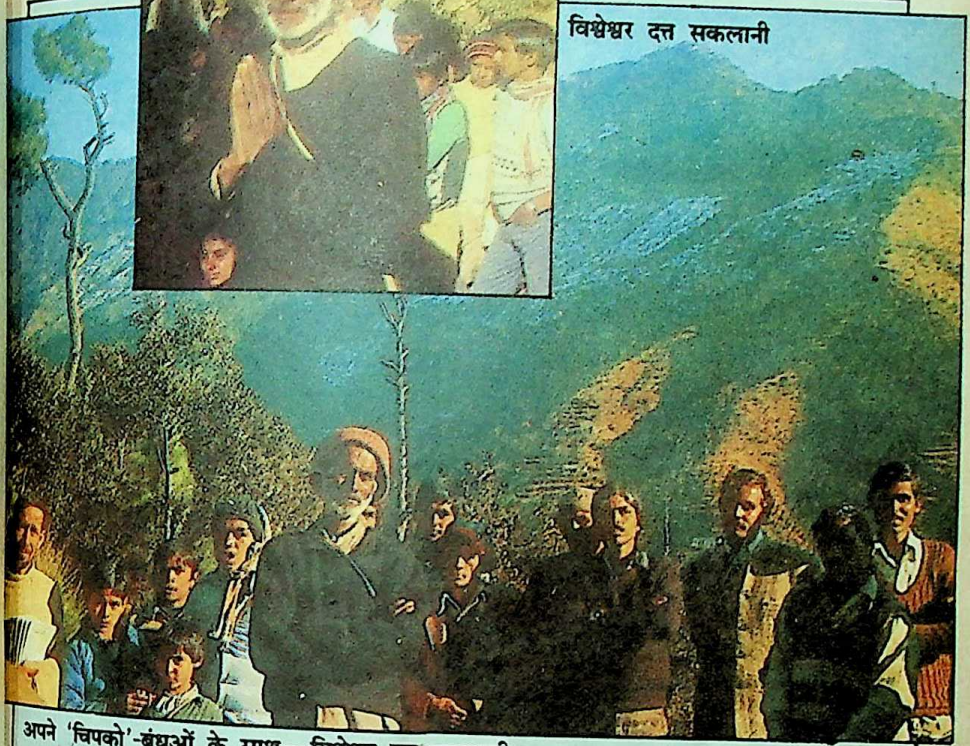

छाया : विजय जड़धारी

अपने 'चिपको'-बंधुओं के साथ—विश्वेश्वर दत्त सकलानी

कि अगर नागेंद्र स्मारक जंगल से हटा लिया जाए, तो ये वन भी दूसरे सरकारी वन की तरह दीखेगा और तब इस वन को भी वन विभाग अपने जंगलों में शामिल कर इसे अपनी उपलब्धियों में शामिल कर पाएगा।

सकलानी प्रमाण दिखाकर कहते हैं, "जहां आज वन हैं, उसी जगह उनके अपने नापशुदा खेत थे, जिनके कागजात आज भी उनके पास मौजूद हैं।" २० जून '५७ को भूमि बंदोबस्त अधिकारी ने उन्हें यह प्रमाणित कर रखा है कि "उनकी सोलह नाली ग्यारह मुट्ठी जमीन इस जगह है और इससे गोचर-पनघट को भी कोई नुक्सान नहीं है। ३२ रुपये जुर्माना लेकर इस व्यक्ति (श्री सकलानी) के नाम दर्ज हो।"

उन्होंने सबसे पहले अपनी इस जमीन पर ही वनीकरण किया फिर सोयम की जमीन और अंत में वन विभाग की खाली पड़ी जमीन पर उन्होंने पेड़ लगाये। आज वृक्ष मानव खिन्न हैं। पेड़ लगाने की जगह उन्हें कोर्ट-कचहरी में जमानत के लिए चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। तारीखें भुगतनी पड़ रही हैं सो अलग। ऐसे हालातों में अगर वह सरकार द्वारा उन्हें दिया गया 'वृक्ष-मित्र' सम्मान सरकार को लौटाने की सोच रहे हों, तो इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है।

—१५-बी.
राजपुर रोड, मांडा हाउस, देहरादून-२४८००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

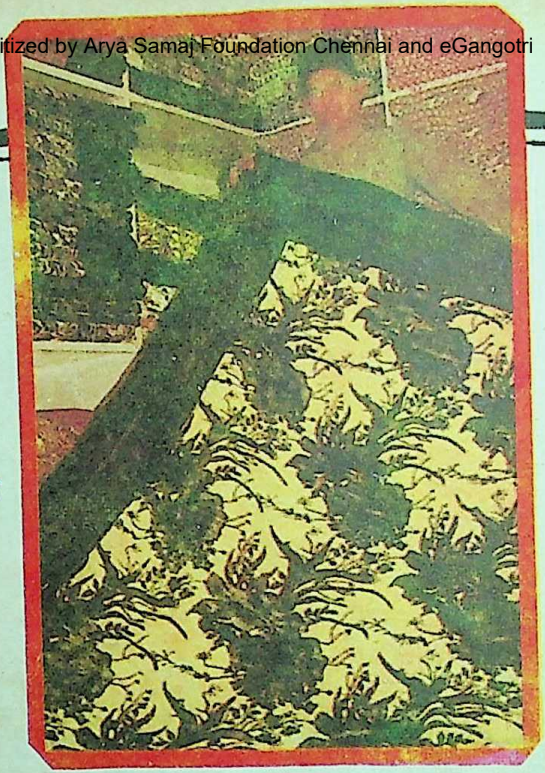

शो रूम में रजाइयों की बिक्री

पावभर की रजाई।

कभी यह रजाई लखनऊ के नवाबों द्वारा सरदियों में इस्तेमाल की जाती थी। कभी उसके वजन से इस बात का अनुमान लगाया जाता था कि रात कितनी ठंड पड़ी— कम या बहुत अधिक। आज नवाबों को प्रिय यह रजाई आम जनता के उपयोग की वस्तु बन गयी है।

पावभर की रजाई का इतिहास बेहद रोचक है। हलकी-फुलकी, कंबल-सी गरम पावभर की यह रजाई साधारण घरों में इस्तेमाल की जानेवाली रजाइयों से अलग होती थी। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व लखनऊ के नवाब ऐसी ही हलकी रजाइयां ओढ़ा करते थे। तब रजाइयों के वजन पर ठंड का अनुमान लगाया जाता था। मसलन पावभर रजाई की जगह यदि आधा सेर की रजाई ओढ़ी गयी, तो उस

रजाई में टांके लगाने में भी काफी कौशल की जरूरत पड़ती है।

छाया : एच. के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजाई के वजन पर ठंड का अनुमान

● डॉ. उषा अरोड़ा

रात ज्यादा ठंड पड़ी थी।

आज लखनऊ में पावभर की रजाइयां तैयार करनेवाले कारीगर बहुत कम हैं। प्रायः लुप्त हो गये हैं। अब जयपुर की पावभर की रजाइयां मशहूर हैं। कारण, जयपुर के राजाओं ने ही लखनऊ के इन कारीगरों को न केवल आश्रय वरन प्रोत्साहन भी दिया।

राजाओं की रजाइयां ढाका की मलमल या जापानी रेशम की होती थीं। इन्हें बनाने के लिए अलग कारीगर ही रहते थे, जो वर्षभर राजदरबार की रजाइयां भरते थे। जयपुर के राजाओं ने इन कारीगरों को बहुत प्रोत्साहन और इनाम दिया।

८५ वर्षीय अब्दुल करीम के पूर्वज जयपुर के राजघराने के लिए रजाइयां बनाते थे तथा चोबदार के पद पर भी काम करते थे। महाराजा रायसिंह इनके पूर्वज इलाही बख्श की बनी रजाई से इतने खुश हुए कि उन्होंने दो दुकानें इनाम में दे दीं। राजाओं ने इस कला को बहुत बढ़ावा दिया और इसी कारण जयपुर में यह कला दिनों-दिन बढ़ती गयी।

बढ़ती हुई मांग

आजकल पावभर की इस रजाई की बहुत मांग हो गयी है। साधारण जनता भी इसका उपयोग करने लगी है। मांग बढ़ने के कारण रजाई बनाने के तरीके भी बदले हैं। अब यह काम हाथ से नहीं, मशीनों की सहायता से किया जाने लगा है। जयपुर में इस समय लगभग २०० शो रूम और ८०० कारीगर इस काम में लगे हैं। कारीगरों की यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में चली आ रही है। पहले इस व्यवसाय में केवल तीन व्यक्ति ही थे। कादर बख्श, करीम बख्श तथा बहादुर खान।

कैसे बनती हैं रजाइयां

इन रजाइयों को बनाने के लिए रुई की सफाई हाथ से की जाती थी पर अब रुई की सफाई मशीन द्वारा की जाने लगी है। फिर तांत द्वारा रुई को धुना जाता है। रुई का एक-एक रेशा अलग कर दिया जाता है। बिछाकर भराई बिलकुल बराबर की जाती है, जिससे हवा नहीं गुजर सके। रुई जितनी कम होगी, उतना ही

जयपुर की 'पावभर' की रजाइयां विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। किसी जमाने में लखनऊ के नवाब ही इन रजाइयों का इस्तेमाल कर पाते थे। आज ये रजाइयां जन साधारण की पहुंच के भीतर हो गयी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावभर की रजाई
साज-संभाल के उपाय

हलकी-फुलकी रजाइयों के रख-रखाव के भी कुछ तरीके हैं। सूती, मलमल में भरी रजाइयों को तो किसी भी वाशिंग पावडर का इस्तेमाल कर धोया जा सकता है, पर सिल्क और मखमल की रजाइयों को ड्राई क्लीन कराना ही बेहतर होता है। इन्हें घर में नहीं धोना चाहिए।

चार-पांच वर्षों तक इस्तेमाल करने के बाद इन रजाइयों को फिर से भरवा लेना उचित रहता है। इनकी रुई खराब नहीं होती।

गरमियों में ऐसी रजाइयों को किसी मुलायम कपड़े में लपेटकर रख देना चाहिए। इन रजाइयों में फिनाइल की गोली रखने से उनका रंग उड़ जाता है, अतः ऐसी गोलियों का उपयोग हानिप्रद होता है।

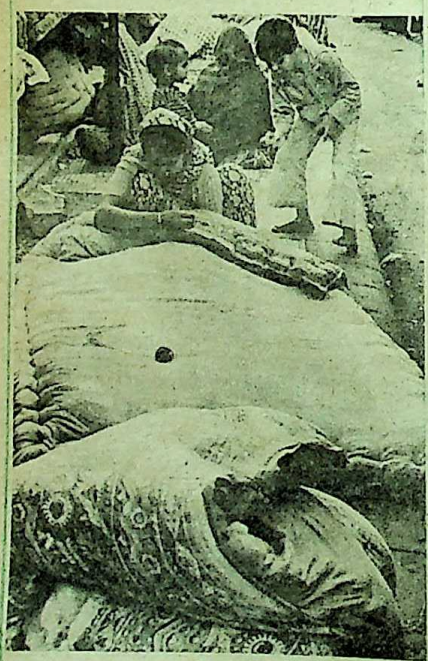

समय अधिक लगेगा। पचास ग्राम की रजाई बनाने में डेढ़ मास के लगभग, सौ ग्राम रुई की रजाई बनाने में एक मास के लगभग लगता है। जितनी कम रुई होगी रजाई की कीमत उतनी अधिक होगी। कारण यह है कि रुई कम होने से एक-एक रेशा जमाना पड़ता है, जिसमें मेहनत और समय दोनों ही बहुत लगता है। रुई को बराबर भरना ही इनकी विशेषता है। रुई के अंदर खुशबू के लिए हिना भी डालते हैं।

अब्दुल करीम बताते हैं कि अब इनकी मांग अधिक होने के कारण इनके स्तर में पहले की अपेक्षा अधिक गिरावट आ गयी है। अब पहले - जैसी नजाकत नहीं है।

बजाजजी इसका कारण बताते हुए कहते हैं कि पहले कारीगर केवल राजदरबार के लिए होते थे पर अब जनता की बहुत मांग और विदेशी पर्यटकों के उतावलेपन के कारण कारीगर लोग एक दिन में कई रजाइयां बनाते हैं। हाथ से भरने पर दिन में ये दस-पंद्रह ही बन पाती हैं पर मशीन के कारण अब काम बहुत आसान हो गया है और दिन में सौ-डेढ़ सौ रजाइयां भरी जाती हैं। बजाजजी ऐसी रजाइयों के थोक विक्रेता हैं।

मलमल के कपड़े पर सांगानेरी छपाई की रजाई सबसे अधिक गरम रहती है क्योंकि मलमल रुई से चिपक जाती है और हवा नहीं घुस पाती। कैमरिक, मखमल, सिल्क की रजाइयां देखने में सुंदर होती हैं पर गरम कम होती हैं। ये कपड़े भारी होते हैं, इस कारण रजाई भी भारी हो जाती है। पचास या सौ ग्राम की रुई की रजाई की कीमत पांच सौ रुपये तक होती है। आधा किलो या तीन पाव रुई की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजाई की कीमत साठ रुपये से लेकर एक सौ साठ रुपये तक होती है।

सुखी नहीं है कारीगरों का जीवन

हलकी-फुलकी रजाइयां बनानेवाले कारीगरों का निजी जीवन बहुत सुखी नहीं है। ऐसे ही एक कारीगर मियां अब्दुल्ला का कहना है कि रजाई बनानेवाले कारीगरों को क्षय रोग होने की आशंका हरदम बनी रहती है। इस रोग से बचने के लिए कारीगर शहद और घी का अधिकाधिक सेवन करते हैं।

करीम बख्श अपने काम से संतुष्ट हैं। अब्दुल करीम नामक एक अन्य कारीगर बताते हैं कि 'हमारा पूरा परिवार ही इस काम में लगा रहता है। पुरुष रुई साफ करते हैं, उसे तांत से धुनते हैं और रजाई के खोलों में भरते हैं। घरों की स्त्रियां रजाइयों की सिलाई करती हैं। यह बहुत नाजुक काम होता है। ऐसी रजाइयों की मांग बढ़ जाने के कारण अब हम वर्षभर काम में लगे रहते हैं।'

सैयद मियां भी एक कुशल कारीगर हैं। उनका कहना है कि इस काम में अधिक लाभ की गुंजाइश नहीं है। फिर भी गुज़ारा चल जाता है। बच्चे भी बचपन से इस धंधे में लग जाते हैं, अतः पढ़ नहीं पाते। सैयद मियां आगे बताते हैं कि उनकी पत्नी को पढ़ाई का शौक है और वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती हैं।

इन विश्व-प्रसिद्ध रजाइयों के कारीगरों के जीवन की एक और विडंबना है। वे औरों के लिए तो आकर्षक और आरामदेह रजाइयां बनाते हैं, पर स्वयं फटी-पुरानी गुदड़ीनुमा रजाइयों में जीवन काट देते हैं।

—ए—५, एन. बी. सी. कालोनी, जयपुर

फरवरी, १९८८

हर क्षण

हर क्षण जीवन की लहरों पर,
कुछ छवियां मचल रही होतीं;
हर क्षण कुछ सपने तैर रहे,
आंखें नम व्यथा पिरोतीं।
हर क्षण वासना शलभ पंखों को,
तन को क्षार किया करता;
हर क्षण जीवन वर्तिका दीप,
निज स्नेह गलाता रहता।
हर क्षण आलोक तरंगों पर,
तम की गहराई नाप रहा;

हर क्षण अशेष जीवन का क्रम,
अनवरत मरण को छाप रहा,
हर क्षण सीमा में बंध विराट,
अपने को ही ढूंढ़ा करता;
हर क्षण अनंत सातत्य बोध,

दिक्, काल, मिटाता रहता।
हर क्षण विस्फोटक शब्द हमें,
निःशब्द ओर इंगित करते;
हर क्षण वर्णों के भेद हमें,
सत्, श्वेत अभेद भासित करते।

केदार नाथ सिंह

उप प्रधानाचार्य, के. ई. इंटर महाविद्यालय,
समस्तीपुर—८४८१०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बुआ

● आशा सिन्हा

लक्ष्मी की मिचमिचाती आंखों में एक कातर बेबसी छायी थी। बार-बार अधरोष्ठ फड़क रहे थे। हर तरफ से पड़नेवाले शब्द-बाण उसे छील रहे थे। हर बाण दूसरे बाण से ज्यादा तीखा होता। तिल-तिलकर कलेजे से गाढ़ा लहू दर्द बनकर पोर-पोर में फैल रहा था।

संयमित बांध टूट गया। एक करुण धारा फैल रही थी। देखनेवाला ऊब-डूब जा रहा था, पर उसको घेरकर बैठे उसके अपने आत्मीयों की क्रोधाग्नि कम नहीं हुई। दोपहर से चार बार दुहरा चुकी है लक्ष्मी।

कचहरी वालों ने गीता छुआकर और गंगामाई की कसम दी थी। सच कहना, सच के सिवा कुछ न कहना। गंवई गांव की लक्ष्मी के लिए अदालत के कटघरे तक जाना ही अनहोनी थी। भाई-भतीजों की जिद के आगे वह झुक गयी थी, किंतु अदालत में कसम खाते ही सारी झूठी-सच्ची कहानियां भूल गयी। वकीलों की जिरह में तो धाकड़ झूठे भी नहीं ठहरते तो गंवई गांव की लक्ष्मी ? उसका तो रोम-रोम छलरहित था।

वकील का काला चोगा, अदालत [illegible] रोब-दाब और सामने के कटघरे में खड़े [illegible] (जेठ का पुत्र) श्रीकांत को देखकर [illegible] भरमा गयी। मिचमिचाती आंखों में स्नेह [illegible] गया। बहुत-सारे प्रश्न वर्जनाओं की मर्यादा [illegible] अधरों में कैद हो गये। बहुत-से प्रश्न, प्रश्न [illegible] जिरह।

'ससुराल वाले आपके साथ खराब स[illegible] करते थे ?'

उत्तर की जगह आंखों से ढेर-से आंसू [illegible] गये।

'बोलिए।'

शब्द आ नहीं रहे थे। यत्नपूर्वक [illegible] ने 'ना' कहा। वकील पूछता है:—

'ससुराल वाले आपको खर्चा देते थे [illegible]

लक्ष्मी अब तक सम्हल गयी थी। बातों [illegible] सूत काटती है।

"ना ये बचवा, झूठ काहे कहे कपड़ा-[illegible] रुपया-पैसा में कभी कोताही नहीं की बराबर [illegible] जोहते रहते हैं, लेकिन मैं अपना हि[illegible] भाई-भतीजे को देना चाहती हूं।"

"आपका हक मारने के लिए [illegible] ससुराल वालों ने आपका श्राद्ध कर दि[illegible] है ?"

अपना ईमान है बचवा। उनका जो [illegible] कहेगा, करेंगे। लेकिन बुढ़ापा में हम [illegible] ईमान क्यों बिगाड़ें ?

लक्ष्मी की गवाही से मुकदमे का रुख [illegible] गया। मुकदमे का ही रुख नहीं बदला [illegible] हर व्यक्ति का रुख बदल गया। लक्ष्मी ने [illegible] भी नहीं था कि कटघरे से उतरते ही उसे [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

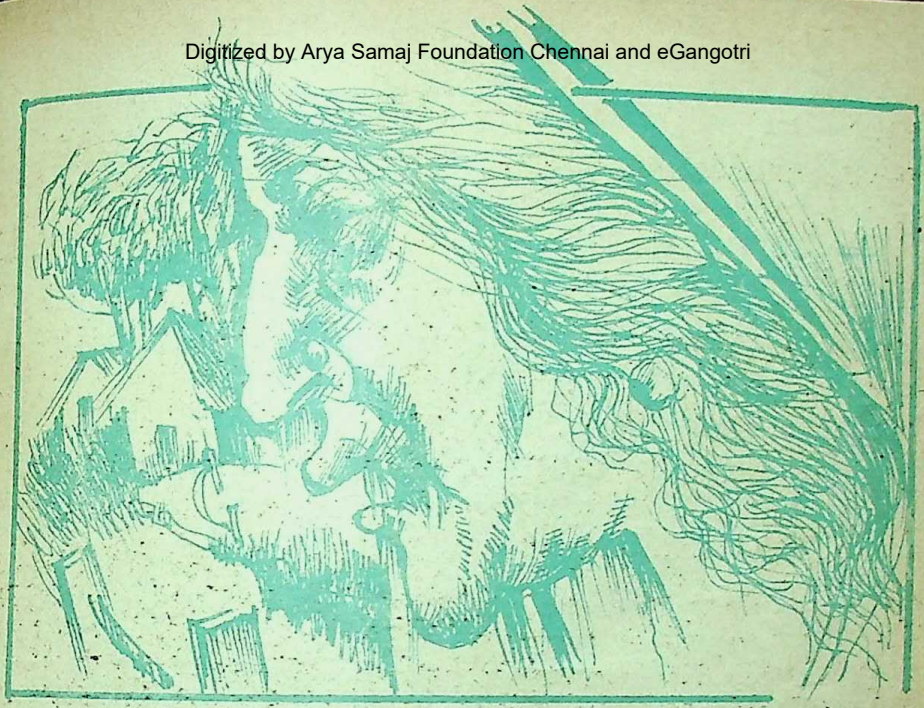

रात गहराती जा रही थी। एक अजीब वितृष्णा। बुआ का पोर-पोर ऐंठ रहा था। बड़े यत्न से जिस वृक्ष को उसने खड़ा किया था, वही आज उसे दुःख दे रहा है। उसे लग रहा है—स्नेह-वृक्ष में स्वार्थ का दीमक लग गया था ऊपर तक। हरा-भरा पेड़ नीरोग नहीं था। इसे भीतर-ही-भीतर कीड़े ने खाकर खोखला कर दिया, नहीं तो जरा-से झटके से वह यूं उखड़ नहीं जाता।

हवा के झोंको को सहना पड़ेगा। पुरुषों की डांट-फटकारों के साथ-साथ बहुएं शब्दों का चाबुक चला बैठतीं। सब के बीच बार-बार रो रही थी लक्ष्मी। वैधव्य की पीड़ा पहली बार इतनी तीव्रता से लक्ष्मी ने भोगी। जिस दिन विधवा हुई थी, उस दिन भी इतना नहीं खला था। तब खलता भी कैसे ? कोई उमर थी ? मात्र नौ साल। ठीक याद नहीं पड़ता लक्ष्मी को सत्तर या पचहत्तर साल हो गया है। तब गोरी दान का बहुत पुण्य होता था। सात साल की बिटिया का दान कर पिता अपना परलोक सुधार गये। किंतु विवाह के दो वर्ष बाद ही, जब लक्ष्मी विवाह का कोई अर्थ नहीं जान पायी विधवा हो गयी। जाड़े की दोपहर थी। जनाना ड्योढ़ी में सभी बैठी थीं। चाची, बड़ी अम्मा की बहुएं, लक्ष्मी की भाभियां, आजी और

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मा। घर बांटा नहीं गया था। उस अविभाजित घर की एकमात्र दुहिता लक्ष्मी। विधाता ने रूप तो फुर्सत में गढ़ा था, किंतु भाग चलते-चलते लिख गये, शायद लिखा ही नहीं। कोरा छोड़ दिया तभी तो नौ साल की लक्ष्मी सभी सुखों से वंचित हो गयी।

पिता ने अपने से बहुत बड़ा घराना देखकर बिटिया ब्याही थी। चार-चार हाथी थे और मालों की तो गिनती ही नहीं थी। दूध उस शाम से इस शाम करके गाय भैंसों को पिला देते।

बात जाड़े की दोपहर की थी। कोने में सिमटी धूप में बड़ी-बूढ़ियां मचिये पर बैठी थीं और पास ही, बहुएं जमीन पर। अचानक ही गाज गिरी। न आकाश टूटा, न धरती फटी। घर के पुरुष बखारी पर गिर पड़े। आंगन में लोट-लोट के रो रही थी लक्ष्मी की मां।

'कौन-सा अपराध था मेरा हे भगवान ?'

इन सब रुदनों से परे थी लक्ष्मी। चकित हो बार-बार पूछने लगीः—

'काहे बकरी-जैसा सभी मेमियाने लगीं।' अभी तो ठी-ठी, ठी-ठी कर रही थीं ?'

मां, दादी, चाची सब बार-बार लक्ष्मी हृदय से लगातीं। लक्ष्मी खीझकर, चिढ़ भागना चाहती।

'रो अभागी रो' दादी रो-रो के कह रही थी

'रोऊं ? काहे ? मेरा मन नहीं है'

लक्ष्मी नहीं रोयी। रोती क्यों ? उसको दुःख ने छुआ भी नहीं था। घर का करुण रु लक्ष्मी को तमाशा लगा। उसकी मांग धो गयी। लक्ष्मी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया उसकी चूड़ियां तोड़ी गयीं। वह चीख-चीख गुहारने लगी—

'बाबा देखा मेरी चूड़ी भौजी तोड़ रही है'

लक्ष्मी को अब भी सब कुछ साफ-स याद है। बिना पति के विदा होकर समु गयी थी। सर्वत्र वैभव का भंडार, लेकि लक्ष्मी के लिए सब कुछ वर्जित था। सास की सेवा के लिए लक्ष्मी की नियुक्ति गयी। लक्ष्मी कितनी बार प्रयास करती करने का। अपने अनदेखे स्वामी को, कहीं कोई धुंधली-सी स्मृति भी नहीं। लक्ष्मी का अंतर हा-हा-कार कर उठता। हम लड़कियों से कतराने लगी। जेठी-छोटी गो जब अपने-अपने पति के साथ रह पागल-जैसी स्थिति हो जाती उसकी। दोनों ह उठाकर रोती हुई गुहारती—'कौन-सा किया था हमने ?' रोती बहू को सीने लगाकर सास कहती—'कौन सा पाप कि था ? बेटी कुल की लाज निभाना।'

सास ने अंजुरी भर-भरकर अशर्फियां को दीं।

'नहर में चुप-चाप कुछ खेत खरीदवा अपने नाम से।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी ससुराल में अबतक बंटवारा नहीं हुआ है, तब की कौन कहे ?

जब भाई आते सास की सहायता से भाई के संदेश में अशर्फियां बांध-बांधकर लक्ष्मी नैहर भेजती गयी।

एक दिन लक्ष्मी अपने मायके लौट आयी। आने से पूर्व परिवार को एक चोट देती आयी। चचाजाद देवर ने लक्ष्मी के घने कुंतल की प्रशंसा कर दी। लक्ष्मी ने प्रत्युत्तर में सारे केशों को काटकर देवर को दे दिया। सारे घर में चर्चित विषय बना। वह देवर घर छोड़कर चला गया। छोटे-छोटे बच्चे, सारा दोष लक्ष्मी के सिर आ गया। लक्ष्मी लौट आयी तब से उसने न केश बढ़ाये, न जिह्वा की ओर देखा, उसकी रोज एकादशी रहती। शाम को एक समय स्वयं चावल रांधकर खा लेती। कितने दिन बीत गये। भाई के बेटे-बेटियों को पाल-पोसकर बड़ा किया। बेटे के बेटों को पाला। लक्ष्मी सारे गांव-जवार की बुआजी बन गयी।

गांव की हर बेटी बुआ की अपनी बेटी। गांव की हर बहू बुआ की अपनी बहू। सारे कार्यों को निपटाकर बुआ गांवभर घूम लेती।

'कैसे हो बेचन बहू ?'

'कब आयी फुलवा बेटी ?'

सबको आशीष लुटाती बुआ किसी एक देहरी पर बैठ जाती। बचपन, जवानी सब अलक्षित गुजर गया। कमर झुक गयी। बाल चांदी के हो गये। चेहरे पर कहीं मलिनता नहीं। तेज और संयम की महनीयता है। वृद्धावस्था तो सब को आती है लेकिन किसी-किसी को ही शालीनता का गौरव प्रदान करती है। बुआ को कैसे नहीं प्रदान करती ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूनतम समय में अपना धन दुगुना करें

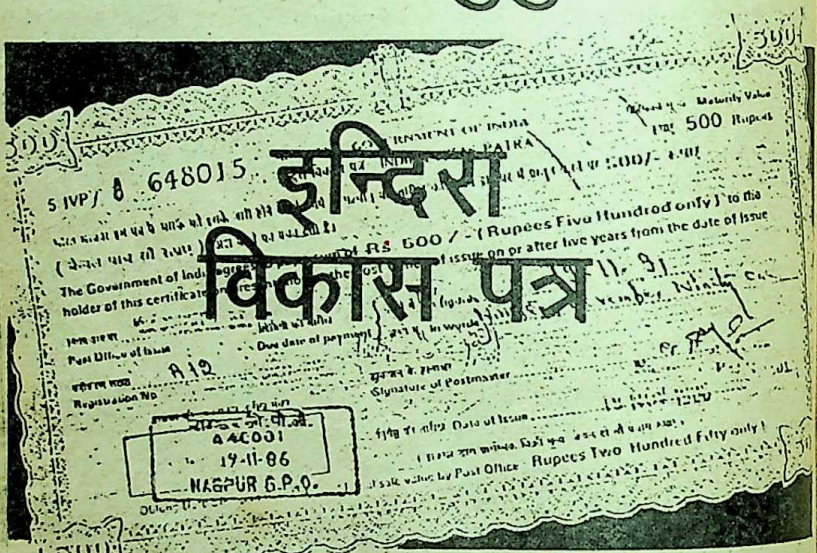

केवल
5½ वर्ष में

रु० 250/- हो जाते हैं रु० 500/-
रु० 500/- हो जाते हैं रु० 1,000/-
रु० 2,500/- हो जाते हैं रु० 5000/-

विशेष आकर्षण

- आवेदन पत्र की आवश्यकता नहीं
- अधिकतम सीमा नहीं
- जिसे चाहें, आप दे सकते हैं
- खराब हो जाने अथवा कट-फट जाने के स्थिति में दोबारा भी मिल सकते हैं

ग्रामीण
जनता तथा
आयकर न देने वालों के
लिए सबसे सुविधाजनक
सरकारी बचत
योजना

किसी भी डाकघर से खरीदें

राष्ट्रीय बचत संगठन
भारत सरकार

davp 87/352

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस जीर्ण शरीर में शिशु-सा भोला मन था। छल-रहित। स्नेही।

बुआ के पास चार पांच ही बातें रहतीं। उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहता श्रोता सुन रहा है या नहीं। रोज उन्हीं चार कहानियों को हर के पास दुहराकर चली जातीं।

'माल-मवेशी के बच्चे हुए।'

'बड़ी बहू का मायका राजा है!

'छोटी बहू बहुत गुनी है। अंगरेजी में पता लिख लेती है।'

कौन-सी बात पर बुआ कब आनंदातिरेक से लौटकर हंस पड़ेंगी, कोई नहीं जानता।

सारी उम्र कट गयी भाई-भतीजों की देहरी पर। एक जून का खाना और एक जोड़ी धोती के अतिरिक्त कोई जरूरत ही नहीं थी। सारा संसार अपना था। नौकर-चाकर का दुःख भी उतना ही अपना था, जितना अपनों का।

किसी ने कभी बुआ की फिक्र नहीं की। बुआ ने भी उसे कभी उपेक्षा नहीं समझा। मान-अपमान से परे अपने में पूर्ण बुआ आज यथार्थ के कठोर धरातल पर खड़ी थीं।

बड़े भतीजे ने जबर्दस्ती उनकी ससुराल पर मुकदमा कर दिया। जब जब बुआ ने ससुराल जाना चाहा बहानों से रोक लिया और आज ऐसी उपेक्षा? कोई घर नहीं। कोई अपना नहीं। लक्ष्मी के आंसू सूख गये। किसी ने पूछा तक नहीं। किसी ने देखा तक नहीं। बच्चा-बच्चा तक तीखी बात कहे जा रहा है।

रात ढलने लगी। लक्ष्मी को अपमान की अनुभूति पहली बार हुई। उसे लगता है कैसे वह आज तक इन अपमानों को झेलती रही। वह एक बार आंगन में आयी। सारे कमरे बंद थे। वह फिर बरामदे में अपने बिस्तरे पर लौट गयी।

रात गहराती जा रही थी। एक अजीब वितृष्णा। बुआ का पोर-पोर ऐंठ रहा था। बड़े यत्न से जिस वृक्ष को उसने खड़ा किया था, वही आज उसे दुःख दे रहा है। उसे लग रहा है—स्नेह-वृक्ष में स्वार्थ का दीमक लग गया था ऊपर तक। हरा-भरा पेड़ नीरोग नहीं था। इसे भीतर-ही-भीतर कीड़े ने खाकर खोखला कर दिया, नहीं तो जरा-से झटके से वह यूं उखड़ नहीं जाता।

लक्ष्मी को ताज्जुब होता है। सभी इतना कमा रहे हैं। पैसे की कोई कमी नहीं। कौन कमी है आखिर? लक्ष्मी की अपनी जमीन क्या उसके साथ जायेगी?

लक्ष्मी को लगता है पूरा घर एक वीरान हवेली है। चारों ओर गिद्ध और चमगादड़। भय से उसका गला बैठ गया।

वह उठती है। धीरे-से टूटा बक्सा खोलती है। एक जोड़ी फटी साड़ियां हैं। गहने तो कब के भाभी ने ले लिये। पैसे के नाम पर एक छदाम भी नहीं। ससुराल से जो कुछ आता था, बड़ा भतीजा ही रखता था। उसने फटी साड़ियों का मोह छोड़ दिया। लाठी टेकती आंगन में आ गयी। कथान में बंधे माल-मवेशी पर नजर गयी। कोने में गम्मीन भैंस थी। कांपते हाथों से सहलाकर एक बार रो पड़ी।

'कौन देखेगा इन्हें कल से?'

मवेशी टुकुर-टुकुर बुआ का मुंह देख रहे थे। बुआ कांपते पैरों बाहर निकल गयी। दलान पर खाटें लगी थीं। बुआ की इच्छा होती है एक बार बड़े भाई का पांव छू ले। पर नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती है जागने पर कहीं जाने नहीं देंगे।

धीरे-धीरे लाठी टेकती बुआ गांव से गुजरती जा रही है। हर घर के पास रुककर एक स्नेहपूर्ण करुण दृष्टि डालकर बढ़ जाती है। गांव के बाहर आ जाती है। सब-कुछ पीछे छूट जाता है।

'कौन बुआ ?'

बुआ चौंकती है। मिचमिचाती आंखों को फैलाती है।

'इतनी रात को कहां ?'

बुआ आवाज पहचानती है। चमार टोली का रामाशीष है। पत्नी की बीमारी में बुआ के पास आया था। बुआ ने बड़े यत्न से सेवा की थी उसकी। उसी की क्या, पूरा गांव बुआ की सेवा से उपकृत था।

'बचवा' बुआ का कंठ रुद्ध हो जाता है। स्वर फंस जाता है। फंसता नहीं, खो जाता है।

बुआ के पैरों की कंपकंपी बढ़ जाती है। वहीं धरती पर बैठकर जार-जार रोने लगती है।

रामाशीष दौड़ता है। धीरे-धीरे गांव उमड़ता है। पेड़ से सटी जमीन पर औंधी बुआ पड़ी है। गर्जन-तर्जन करते जब भतीजों ने बुआ को छुआ, उनकी अकड़ी देह लुढ़क गयी। पास निर्जीव पड़ी थी अंतिम संगिनी लाठी।

—एम. ६/३३, राजेन्द्रनगर, पटना-

अगर आपकी उंगली पर ही ब्रश बना होता...

तो आप दाँतों के पीछे भी सफ़ाई कर पाते. आम टूथब्रश तो उंगली की तरह पीछे तक दाँतों के पीछे नहीं पहुँच पाते. लेकिन अब पेश है प्रॉमिस १५ जो अनूठे ढंग से १५° से आगे की ओर मुड़ा है. इससे दाँतों के पीछे की भी सफ़ाई एकदम आसान हो गयी है. तभी तो दाँतों के डॉक्टर इसे पूरी तरह से वैज्ञानिक मानते हैं.

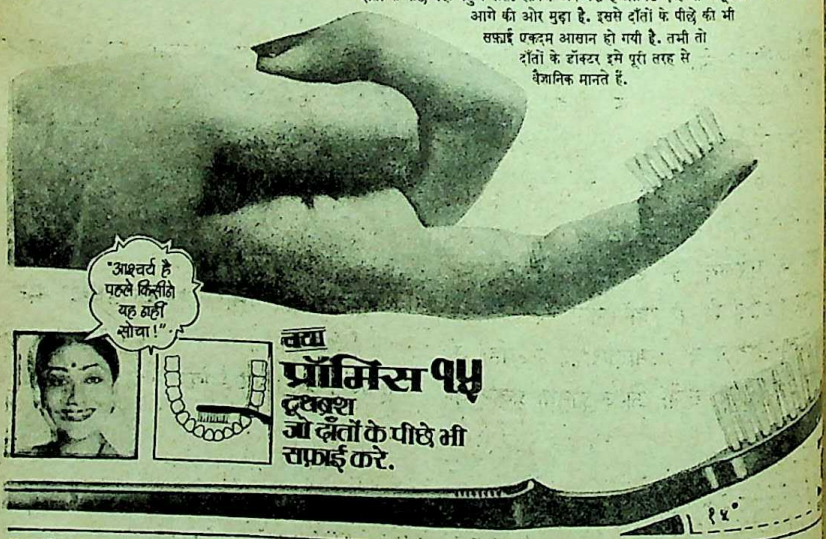

CHAITRA-B-BLS-678 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधु-मुद्राओं में यह कौन-सी भाषा छिपी है ?

● डॉ. नटवर झा

सिंधु लिपि और भाषा के उद्घाटन के लिए पिछले बासठ वर्षों में जो भी प्रयत्न हुए, वे असफल सिद्ध हुए हैं। अभी हाल तक हम यह भी नहीं जान पाये थे कि इस सभ्यता के लोग कौन-सी भाषा का प्रयोग करते थे। और, भाषा के परिचय के अभाव में लिपि का उद्घाटन संदेह से परे नहीं माना जा सकता।

सिंधु-सभ्यता के समालोचकों ने यहां की भाषा और लिपि, दोनों की अज्ञानता प्रकट की है, किंतु इस निबंध में मुख्य रूप से भाषा की ज्ञातता की चर्चा हो रही है।

सिंधु भाषा और लिपि के उद्घाटन में तीन वर्गों के लोग कार्यरत हैं। ये हैं :— द्रविड़वादी एवं प्राग् द्रविड़वादी, प्राग्वैदिकवादी तथा वैदिकवादी।

द्रविड़वादी एवं प्राग् द्रविड़वादी मत

सिंधु-मुद्राओं में द्रविड़भाषा या कल्पना-प्रसून प्राग् द्रविड़ भाषा खोजनेवालों के

मोहनजोदड़ो वास्तव में कश्यप नगरी था और हड़प्पा यास्क नगरी छांदोग्योपनिषद् के अनुसार देव सभ्यता के इंद्र एवं असुर सभ्यता के विरोचन आदि का इसी विद्या-निकेतन में प्रारंभिक पठन-पाठन और चिंतन-मनन हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में यह बात समायी हुई है कि इस देश में द्रविड़भाषा ही सबसे प्राचीन है, पर 'भरतनाट्यशास्त्र' के प्रणेता भरतमुनि के समय यह भाषा दाक्षिणात्या प्राकृत से निकली एक विभाषा के रूप में मानी जाती थी। भाषा और विभाषा की परिभाषा निश्चित है। संस्कृत के अपभ्रंश को भाषा और भाषा के अपभ्रंश को विभाषा कहा गया है। (दृष्टव्य-नाट्यशास्त्र १७/४९-५० और इस पर अभिनवगुप्त की टीका) अतः भाषा के अपभ्रंशों= द्रविड़ भाषाओं की गति की न्यूनता साफ सामने आ जाती है कि इससे सिंधु भाषा का उद्घाटन संभव नहीं है। और प्राग् द्रविड़भाषा की गति द्रविड़भाषा से भी न्यून है। फलतः सिंधु भाषा के उद्घाटन में द्रविड़भाषा विचार योग्य ही नहीं है।

प्राग् वैदिकवादी अथवा मूल भारोपीय भाषावादी मत

इस मत के पक्षपाती लोगों को इस कल्पित भाषा के अस्तित्व वाले कालखंड की निश्चित सूचना देनी होगी, अन्यथा यह मत भी सर्वथा अग्राह्य है। ('कादम्बिनी' के फरवरी, १९८५ के अंक में मैंने इसकी विस्तृत चर्चा भी की है।) मल भारोपीय भाषा के द्वारा प्रतिपादित मध्य एशिया के मूल आर्यस्थान को सिंधु तट पर स्थानांतरित कर देने मात्र से मूल भारोपीय भाषा संबंधी विचार दुरभिसंधि से रहित नहीं माना जा सकता, क्योंकि मूल आर्यस्थान सिंधु तट नहीं, अपितु ब्रह्मावर्त और सरस्वती तट ऋग्वेदसम्मत है। यह स्थान सप्तसिंधु के मध्यवर्ती क्षेत्र में है। अवेस्ता में मूल आर्यस्थान के लिए जिस 'आर्याणा' की चर्चा हुई है, वह 'आर्याणा' आरियाणा—हारियाणा—हरियाणा के रूप में आज भी आर्यावर्त में सुरक्षित है।

निःसंदेह, पाश्चात्यों के परिकल्पित मूल भारोपीय भाषा को सिंधुमुद्रा में उपलब्ध करने का दावा कर डॉ. राव ने अपने कार्य के संबंध में संदेह को अतिरिक्त बढ़ावा दिया है। भारतीय प्राच्य साहित्य का कोई भी अध्येता यह स्वीकार नहीं कर सकता कि जिन मुद्राओं में वैदिक 'निघण्टुक पदाख्यान' के शब्द संकलित हों तथा जहां उपासनामूलक मुद्राओं में भारतीय ज्ञान-विज्ञान के महनीय स्रोत ऋग्वेद से लेकर प्रमुख एकादश उपनिषदों तक के विषयों को चित्रांकित किया गया हो, वह सभ्यता ऋग्वेदी सभ्यता को कैसे जन्म दे सकती है?

सिंधु-सभ्यता के प्रकट होने के समय से लेकर इसके संबंध में द्रविड़वाद के चलते जिस भटकाव की स्थिति बनी रही, वही स्थिति पुनः सर्वथा कल्पना-प्रसूत और अलीक मूल भारोपीय भाषावाद अथवा प्राग् वैदिक भाषावाद के चलते न बनी रहे, इसी विचार से प्राच्य विद्या एवं संस्कृति से संबंध रखनेवाले सभी लोगों को इसकी जानकारी देना आवश्यक है।

वैदिकवादी मत

वैदिकवादियों के अनुसार यह सभ्यता ऋग्वेद-सभ्यता के अधीन है। "देवीं **वाचमजनयन्त देवा**" इत्यादि (ऋग्वेद ८/१००/११) एवं "**संस्कृतं नः दैवीवाग्न्याख्याता महर्षिभिः**" (दशम) प्रभृति सूचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि यदि भारोपीय की मूल भाषा स्थिर होती तो वह ऋग्वेद की भाषा के अतिरिक्त और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

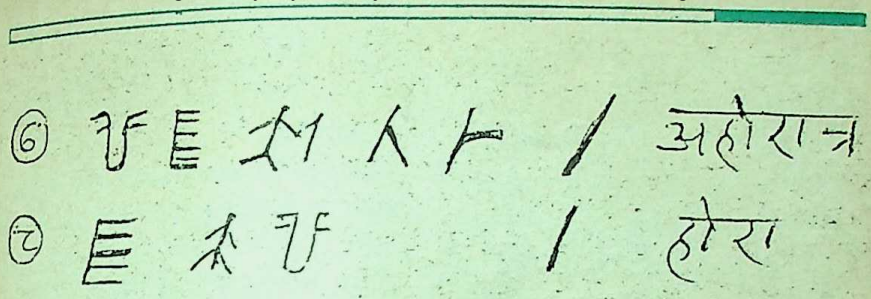

भाषा नहीं है।

यद्यपि १४-१५ वर्ष पूर्व डॉ. फतह सिंह ने सिंधु मुद्राओं में ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों की भाषा होने की सूचना दी थी पर पुरालिपिविदों ने इस संभावना की ओर दृष्टिपात नहीं किया। किंतु अब स्थिति यह है कि इस सभ्यता की समग्र व्याख्या के लिए हम वैदिक ग्रंथों की शरण में हैं।

एक अन्य भारतीय विद्वान भी सिंधुघाटी की संस्कृति एवं ऋग्वेद के संबंध की सूचना देते हैं। इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के उन्नीसवें अधिवेशन में श्री रामचन्द्रन ने प्रकाश डाला है कि सिंधुमुद्राओं पर अंकित पशुओं को ऋग्वेद के मंत्रों से सम्बद्ध किया जा सकता है। इनके कथन सत्य से ओतप्रोत हैं।

भाषा से लिपि का उद्घाटन

विषय-वस्तु के विवेचन में यह एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि सिंधुमुद्राओं में ऊपर या नीचे लिपियों को लिखकर इतने बड़े पैमाने पर विभिन्न प्रकार के पशुओं, मानवाकृतियों, वृक्षादिकों तथा विभिन्न प्रतीकों के अंकन करने का क्या अभिप्राय है ? क्या इससे इसकी स्वतःसिद्ध द्विभाषिकता प्रकट नहीं हो रही है ? कहीं लिपिकारों या चित्रकारों का यह उद्देश्य तो नहीं है कि इन चित्रों के सहारे आनेवाली पीढ़ी लिप्यंकित विषयों को सरलतापूर्वक समझ सकेगी ? और फिर विभिन्न देवताओं के प्रतीक के रूप में कल्पित इन पशु आदिकों के बारे में तो यहां नहीं लिखा गया है ? बात कुछ इसी प्रकार की है। द्विभाषी लेखों से जो आशा की जाती है, उसकी पूर्ति यहां मुद्रांकित चित्रों से ही हो रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मुद्राओं में लिपिगत विषयों के अर्थबोध के लिए पशु प्रभृति चित्रों की सहायता ली गयी है। इन चित्रों की सहायता से जब लिपिगत विषयों के अर्थबोध की पूर्ण स्थापना हो गयी, तब कालांतर की सिंधुमुद्राओं के अर्थबोध के लिए पशु प्रभृति चित्रों की सहायता त्याग दी गयी। लोथल में प्राप्त मुद्राएं इसी प्रकार की हैं।

अतः एक निश्चित भाषा की व्याख्या के अधीन इन मुद्रांकित पशु आदिकों के तात्पर्य को यदि हम समझ जाएंगे तो निश्चय ही लिपि के उद्घाटन में सरलता होगी। लेकिन इस सभ्यता के आधुनिक व्याख्याता भी यहां के लोगों पर पशु-पूजकता के आरोप लगाते हैं, जो दुःखद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति है। इस सभ्यता में यह पक्ष प्रबल नहीं है। इनका सीधा संबंध एक भाषा विशेष से है, जहां इन प्रतीकों के अर्थों का व्याख्यान हुआ है। वस्तुतः यह सभ्यता 'वैदिक देवतावाद' पर आधारित है। इन प्रतीकों के अध्ययन के लिए एकमात्र मार्गदर्शक है परंपरावादी वेदार्थ का ज्ञान। यह निश्चित हो चुका है कि संहिता, ब्राह्मणग्रंथ, आरण्यक, मुख्य उपनिषद्, सांख्ययोग सिद्धांत एवं निघण्टु-निरुक्त की परिधि में ही यह सभ्यता अपना स्वरूप प्रकट करेगी। इसके नीचे के साहित्य को केवल विषय पुष्टि के लिए देखा जा सकता है।

सिंधु-मुद्राएं एवं रामायण तथा महाभारत

निश्चय ही भारतीय विषयों की पुष्टि के लिए रामायण तथा महाभारत-जैसे महान् आख्यान ग्रंथों की प्रामाणिकता पुरातात्विक प्रमाणों के समान ही मान्य है। अब यदि कहूं कि सिंधु सभ्यता के अंतिम विनाश के पूर्व ही विपुलकाय महाभारत की रचना हो गयी थी तो कौन विश्वास करेगा। हमारी स्व संज्ञान शून्यता ही हमें हीनताबोध से युक्त करती है। लेकिन सत्य के समक्ष तो हार स्वीकार करनी ही पड़ती है। सत्य यह है कि महाभारतकार को सिंधुमुद्राओं और उनमें वर्णित विषयों की पूर्ण जानकारी थी। प्रस्तुत प्रसंग में उसे उद्धृत करता हूं।

महाभारत शांति पर्व के अंतर्गत मोक्ष धर्म पर्व का ३४२वां अध्याय सिंधुमुद्राओं के विषय ज्ञान के लिए अत्यंत महत्तवपूर्ण है। अतः यहां विषय वस्तु से संबंधित श्लोक तथा नीलकंठी पर आधारित हिंदी अर्थ प्रस्तुत है।

महाभारत के उपर्युक्त प्रकरण में विष्णु के महत्त्वपूर्ण नामों में शिपिविष्ट, वृष, वृषाकपि, एकशृंग और त्रिककुत् शब्दों (नामों) की चर्चा हुई है। इन्हीं नामों के निर्वचन में सिंधु सभ्यता का रहस्य छिपा है। यथा—

शिपि विष्टेति चाख्यायां हीनरोमा च यो भवेत्।
तेनाविष्टं तु यत् किञ्चिच्छिपिविष्टेति च स्मृतः॥

(श्लोक ७१)

(मेरे शिपिविष्ट नाम की व्याख्या इस प्रकार है। रोम (रश्मि) हीनता को 'शिपि' कहते हैं। तथा 'विष्ट' का अर्थ है व्यापक। मैंने निराकार भाव से समस्त जगत् को व्याप्त कर रखा है। अतः मुझे शिपिविष्ट कहते हैं)

यास्को मामृषिख्यग्रो नैक यज्ञेषु गीतवान्।
शिपिविष्ट इति ह्यस्मात् गुह्यनामधरोह्यहम्॥

(श्लोक ७२)

(यास्क मुनि ने शांत चित्त होकर अनेक यज्ञों में 'शिपि विष्ट' कहकर मेरी महिमा का गान किया है, अतः मैं इस गुह्य नाम को धारण करता हूं।)

स्तुत्वा मां शिपिविष्टेति यास्क ऋषिरुदार धीः।
मत् प्रसादादधो नष्टं निरुक्तमधिजग्मिवान्॥

(श्लोक ७३)

(उदार चेता यास्क मुनि ने शिपिविष्ट नाम से मेरी स्तुति करके मेरी कृपा से जमीन के भीतर खो गये निरुक्त शास्त्र (नैघण्टुक पदाख्यान) को पुनः प्राप्त किया (और उस पर निरुक्त लिखा)

दृषो हि भगवान् धर्मः ख्यातो लोकेषु भारत।
निघण्टुक पदाख्याने विद्धि मां वृषमुत्तमम्॥

(श्लोक ८८)

(हे भरतनंदन ! भगवान् धर्म संपूर्ण लोकों में वृष के नाम से विख्यात हैं। निघण्टुक पदाख्यान (वैदिक शब्दार्थ बोधक निघण्टु कोष) में वृष का अर्थ धर्म बताया गया है। अतः उत्तम धर्म स्वरूप मुझ वासुदेव को वृष समझो)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते ।
तस्माद् वृषाकपिं प्राहकश्यपो मां प्रजापतिः ।।
(श्लोक ८९)

(कपि शब्द का अर्थ वराह एवं श्रेष्ठ है एवं वृष कहते हैं धर्म को । मैं धर्म और श्रेष्ठ वराह रूपधारी हूं, इसलिए प्रजापति कश्यप ने मुझे 'वृषाकपि' कहकर पुकारा है ।)

एक शृंगः पुरा भूत्वा वराहो नन्दिवर्धनः ।
इमां चोद्धृतवान् भूमिमेकशृंगस्ततो ह्यहम् ।।
(श्लोक ९२)

(पूर्वकाल में मैंने एक सींगवाले वराह का रूप धारण करके इस पृथ्वी को पानी से बाहर निकाला और सारे जगत् का आनंद बढ़ानेवाला=वह नंदिवर्धन मैं एक श्रृंग कहलाता हूं ।)

तथैवासं त्रिककुदो वाराहं रूपमास्थितः ।
त्रिककुत् तेन विख्यातः शरीरस्य तु मापनात् ।।
(श्लोक ९३)

(इसी प्रकार वाराहरूप धारण करने पर शरीर में तीन ककुद् (ऊंचे स्थान, पुट्ठे) थे । इसलिए शरीर के माप से मैं त्रिककुद् नाम से विख्यात हूं ।)

महाभारत के मंतव्यों का सार

(१) महाभारतकार कश्यप प्रजापति एवं यास्क से परिचित हैं ।

(२) महाभारत की रचना के पूर्व निरुक्त एवं निरुक्त की रचना के पूर्व निघण्टुक पदाख्यान का निर्माण हो गया था ।

(३) कश्यप प्रजापति के निघण्टुक पदाख्यान में उत्तम वृषभ हैं ।

(४) उत्तम वृषभों की जानकारी चित्रकारिता के बिना संभव नहीं है ।

(५) पदाख्यान में कुछ ही अक्षरों में लेख

सिंधु लिपि और भाषा को लेकर आज भी विद्वानों में मतभेद है । एक वर्ग उसे द्रविड़ संस्कृति से जोड़ता है तो दूसरा वैदिक संस्कृति से । प्रस्तुत है एक विवेचन ।

पूरे हो जाते हैं । इनमें लंबे लेखों के लिए स्थान नहीं होते । सिंधुमुद्राएं लघु लेखों से युक्त होने के कारण ये निघण्टुक पदाख्यान ही हैं ।

(६) लेखयुक्त सिंधुमुद्राओं में उत्तम वृषभों की भी उपलब्धि सहजता से हो जाती है ।

(७) सिंधुमुद्राओं में एकशृंगी पशुओं और ककुद्मान् वृषभों को विपुल मात्रा में देखा जा सकता है । त्रिमुख वृषभों में तीन पुट्ठे वाले वृषभों की निष्पत्ति हो रही है ।

(८) कश्यप प्रजापति द्वारा संगृहीत (मुद्रांकित) निघण्टुक पदाख्यान कालक्रम में जमीन के भीतर समा गया । यह स्थिति किसी भयानक बाढ़ या भूकंप के कारण ही संभव है । अब आधुनिक पुरातात्त्विक भी स्वीकार करते हैं कि यह सभ्यता जलप्लावन में ही नष्ट हुई है ।

(९) जमीन के भीतर समाये इन पदाख्यानों के पुनरुद्धार के कार्य यास्क द्वारा संपन्न हुए थे । और इन्हीं पर यास्क ने निरुक्त लिखा था ।

(१०) यास्क के निरुक्त के पूर्व निघण्टुक पदाख्यानों को ही निरुक्त के नाम से अभिहित किया गया है ।

(११) निघण्टु और निरुक्त अन्योन्याश्रित हैं ।

(१२) इन सिंधु सभ्यता केन्द्रों में अनेक यज्ञ संपन्न हुए हैं । यज्ञों का संबंध अग्नि से है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अग्निदेव आर्यों के प्रमुख देवता हैं।

(१३) निघण्टु पदों का आख्यान वर्णमाला के बिना संभव नहीं है।

(१४) मुद्राओं में प्रयुक्त वृषभ और वृषाकपि धर्म प्रतिरूपी है, जो भाव आज भी भारतीयों में अक्षुण्ण है। (ज्ञात हो कि सिंधुमुद्राओं के एक शृंगी अनड्वान् वृषाकपि हैं)।

इस प्रकार महाभारत के साक्ष्य से यह साफ दिखायी दे रहा है कि यह सभ्यता ऋग्वेदीय सभ्यता का एक अंग है। सिंधु-सभ्यता में हमें जिस लिपि का साक्षात्कार होता है, वह संसार की सबसे प्राचीन लिपि है। इस स्थिति में सिंधु सभ्यता को ऋग्वेदीय सभ्यता के अधीन दिखाकर ही भारतीय प्राच्य इतिहास के साथ उचित न्याय किया जा सकता है।

कश्यप नगरी मोहनजोदड़ो एवं यास्क नगरी हड़प्पा

निघण्टु-निरुक्त काल की इस सभ्यता का जो विवरण महाभारत के कुल सात श्लोकों में ऊपर दिया गया है, वह मानो इस सभ्यता का अखंड-दीप है। मोहनजोदड़ो को 'कश्यप नगरी' और हड़प्पा को 'यास्क नगरी' के रूप में वर्णित करके ही अब इसके साथ न्याय किया जा सकता है।

आज का मोहनजोदड़ो, जहां महर्षि कश्यप द्वारा प्रणीत निघण्टु कोष को स्थायित्व देने के लिए भोजपत्र एवं तालपत्र से अलग करके मिट्टी की मुहरों पर जो अंकित किया गया, यह इसके महत्त्व को सूचित करता है। इस निघण्टु कोष की विशेषता यह है कि अनायास ही ऋग्वेद के मंत्र सामने आ जाते हैं।

इस 'कश्यपनगरी' का इतिहास बड़ा ही रोचक है। छांदोग्योपनिषद् के अनुसार देव-सभ्यता के इंद्र और उनके अनुयायियों एवं असुर-सभ्यता के विरोचन एवं उनके अनुयायियों का प्रारंभिक पठन-पाठन एवं चिंतन-मनन इसी विद्यानिकेतन में हुआ था। देवसभ्यता के लोग आत्म चिंतन-परायण थे और असुर सभ्यता के लोग भोग-परायण। दजला-फरात के किनारे के असुरिया से ये लोग फारस की खाड़ी होकर मोहनजोदड़ो आया करते थे। कालांतर में यहां महतीशाला का निर्माण हुआ। इस महतीशाला के निर्माण कराने के कारण ही मुंडकोपनिषद् के द्रष्टा शौनक को महाशाल की उपाधि दी गयी। ये महाशाल शौनक महाभारतीय शौनक से भिन्न तथा यास्क से पूर्ववर्ती थे। वस्तुतः यह स्थान किसी राजा का गढ़ या किला नहीं था, अपितु यह थी विद्यानगरी। इस विद्यानगरी का निर्माण इस कार्यक्रम से प्रेरित था कि प्राचीन वैदिक साहित्य की रक्षा किस प्रकार की जाए।

इस कश्यप नगरी के भूमि में समाने की बात से महाभारतकार परिचित हैं। वे इस बात से भी परिचित हैं कि इस प्राकृतिक विनाशलीला में 'निघण्टुक पदाख्यान', जिसमें पदों के साथ-साथ देवताओं का भी विवरण दिया गया था, उसके उद्धार का कार्य यास्क के भाग्य का विषय है। इस पदाख्यान का पुनरुद्धार और सुरक्षा किस प्रकार हुए, इसके लिए दो बातें कही जा सकती हैं। पहली यह कि जिस जगह यह विनाशलीला हुई थी, वहीं पुनः निर्माण कार्य किया जाना और दूसरी यह कि पुरानी जगह को निरापद न समझने के कारण अन्य जगह में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदाख्यान को सुरक्षित किया जाना। नयी जगह सिंधु-सागर-संगम से दूर रावी-तट निरापद समझा गया। अथक प्रयास से यास्क ने पुनः निघण्टु कोष का संकलन ही नहीं किया, अपितु उन्होंने विश्व को चमत्कृत करनेवाले निघण्टु आधारित महान् निरुक्त शास्त्र का निर्माण भी किया, जो ईसा पूर्व चतुर्थ सहस्राब्द में रचित होकर भी धूमिल नहीं हुआ है। महर्षि वेदव्यास ने इस महान् ग्रंथ का अभ्यास तथा चिंतन-मनन किया था। इस निघण्टु-निरुक्त को आप वह आलोकदीप समझें, जिसके प्रकाश में सिंधु सभ्यता जगमगा उठी है। महर्षि यास्क का यह कार्य क्षेत्र हड़प्पा है, किंतु अब हम इसे कहेंगे 'यास्क नगरी'।

सिंधु सभ्यता के आधुनिक आलोचक अभी भी आशा की दृष्टि से द्रविड़वादी मत की ओर झुके हैं अथवा प्राग्वैदिकवादी विचार की चर्चा करते हैं। वे सिंधुमुद्राओं में आपेक्षिक कम महत्त्व की सूचना प्राप्त करने का अनुमान लगा रहे हैं, किंतु मुद्राओं के लघु लेखों में भारतीय इतिहास के पुनर्निमाण के लिए प्राप्त होनेवाली सूचना बड़े महत्त्व की है।

अनेक बार प्राकृतिक विनाशलीला के थपेड़ों को झेलनेवाली यह सभ्यता कितनी पुरानी है, हमारी कार्बन-१४-पद्धति की अयोग्यता यह बताने में असमर्थ है। यास्क केवल इस विनाशलीला एवं विनाशलीला वाले स्थान इन दो बातों से परिचित हैं, जबकि महाभारतकार विनाशलीला, विनाशलीला वाले स्थान, महर्षि यास्क, भूमि में समा गये निघण्टुक पदाख्यान का यास्क द्वारा उद्धार कार्य और इन पदों को आधार मानकर इस पर उनके द्वारा निरुक्त लेखन कार्य इन पांच बातों से परिचित हैं।

पाश्चात्य और भारतीय समीक्षकों ने इस सभ्यता में पशु चित्रों की बहुलता देख वहां की पशु-पूजकता की प्रवृत्ति का खूब बखान किया, पर उन्होंने इन पशुओं को लिपि के साथ संबद्ध करने का सामान्य प्रयास भी नहीं किया। वेदों पर लेखनी चलानेवाले पश्चिमी टीकाकारों के हाथ में इंद्र 'रंभानेवाला सांड' बन गया है, पर खेद है कि उन्हें सिंधु मुद्राओं में वृषभरूपी इंद्र का साक्षात्कार न हो सका।

ऐसा लगता है कि ईसा पूर्व पांच हजार के ऋषिप्रज्ञा के मुद्रालिखित विज्ञान-चिंतन ने बीसवीं शताब्दी के समर्थ विज्ञान चिंतन को बौना बनाने के लिए ही अपने स्वरूप को छिपाकर रखा था और अपने स्वरूप प्रदर्शन के एक ही झटके में इस भारतीय उपमहाद्वीप के भ्रामक इतिहासों और आधुनिक भाषा-विज्ञान पर आधारित झूठी मान्यताओं को मानो हवा में उड़ा दिया है।

आचार्य
केंद्रीय विद्यालय, कटिहार
पो. कटिहार-८५४१०५

सरदी लगने पर शरीर कंपकंपाने लगता है। शरीर विज्ञान के अनुसार कंपकंपी आना मांसपेशियों की एक स्वचालित गति है तथा इसे इच्छानुसार रोका नहीं जा सकता कंपकंपी में मांसपेशियां जल्दी-जल्दी सिकुड़ती और फैलती हैं। इससे कोशिकाओं में अधिक खाद्य और उर्जा का व्यय होकर ऊष्मा पैदा होती है। कंपकंपी से शरीर को गरम रखने में मदद मिलती है। इसके कारण शरीर का तापमान एक निश्चित बिंदु से नीचे नहीं आ पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

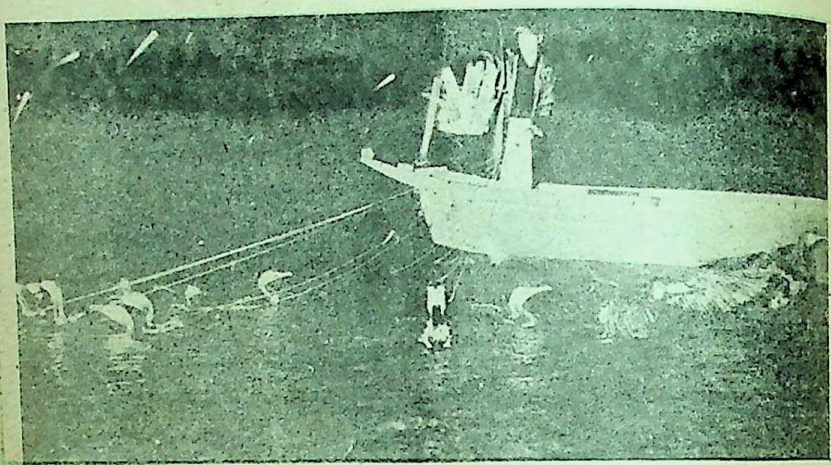

पनकौओं की मदद से मछली का शिकार

जहां मछली मारने का काम पनकौए करते हैं !

● डॉ. निर्मलकान्त ठाकुर

मछली मारने की बात पर आदतन प्रथमतः हमारा ध्यान फेका-जाल, टाना-जाल, घेरा-जाल, फांसा-जाल या फिर महा-जाल की ओर आकर्षित होता है। थोड़ा मनन करने पर हमें चारा-बंसी, भाला-बर्छी, तीर-धनुष या फिर विभिन्न प्रकार के उपकरणों की भी स्मृति हो आती है। लेकिन मछली मारने के लिए पनकौओं की बात तो हम सोचते भी नहीं। दरअसल पनकौओं की मदद से मछली मारने की यह प्रक्रिया मछुवाही का एक अजीबो-गरीब उदाहरण है। विश्व में संभवतः और कहीं नहीं, केवल चीन और जापान के कुछ एक कस्बों में ही मछुवाही की यह प्रथा विधिवत प्रचलित है। जापान में तो प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतु में देश-विदेश से अनेक लोग इन कस्बों में जमा होते हैं और पनकौओं द्वारा मछली मारने की इस मनोरंजक शैली का आनंद लेते हैं।

डुबकी लगाने में दक्ष

पनकौआ वस्तुतः एक प्रकार का जल-पक्षी है। कौआ इसलिए कि इसका रंग काले कौए की तरह काला होता है। बत्तख से थोड़ा ऊंचा कद, छरहरा बदन, गरदन लंबी और टेढ़ी नुकीली चोंच। पैर की अंगुलियों के बीच तनी चमड़ी — बिलकुल पतवार-जैसी। पानी के अंदर डुबकियां लगाने में इसे गजब की महारत हासिल है। गोते लगाने के क्रम में हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिनट-दो मिनट पर यह पानी की सतह पर आकर इस बात की भी खबर लेता रहता है कि कहीं कोई खतरा तो नहीं है। पानी के भीतर छोटी मछलियों का पीछा करना और उन्हें पकड़-पकड़कर खाना इसका प्रतिदिन का काम है। दो-चार मछलियों से इसका पेट नहीं भरता, इसे तो पूरी खुराक चाहिए। इस मामले में इसे पहले दर्जे का भोजन-भट्ट कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक-एक पनकौए के पेट से कभी-कभी किलो-डेढ़ किलो तक की मात्रा में मछलियां निकली हैं। मछली फार्मों में विशेषकर नर्सरी तालाबों में इन पनकौओं की वजह से काफी नुकसान होता है।

तालाबों अथवा जलाशयों के किनारे पंख फैलाकर इसके धूप-सेवन की आदत से हम भली-भांति परिचित हैं। धूप-स्नान में इसकी विशेष अभिरुचि हो ऐसी कोई बात नहीं। वस्तुतः इसे धूप का सेवन अपने पंखों को सुखाने के लिए करना पड़ता है। बत्तखों की तरह पनकौओं के पंख 'वाटर-प्रूफ' नहीं होते। गोते लगाने के क्रम में पनकौओं के पंख पर्याप्त गीले हो जाते हैं जिनकी वजह से उड़ने में कठिनाई होती है। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए इसे धूप-सेवन की आवश्यकता होती है।

पनकौआ

काली स्याह रातें ही उपयुक्त

मछली मारने की विद्या में यूं तो पनकौए स्वयं बड़े प्रवीण होते हैं लेकिन मछली पकड़कर मालिक के कदमों में उसे ला छोड़ें इसके लिए उन्हें विधिवत् प्रशिक्षित किया जाता है। जंगली

पानी के अंदर डुबकियां लगाने में इसे महारत हासिल है। गोते लगाने के क्रम में हर मिनट-दो-मिनट पर यह पानी की सतह पर आकर इस बात की भी खबर लेता रहता है कि कहीं कोई खतरा तो नहीं है। पानी के भीतर छोटी मछलियों का पीछा करना और उन्हें पकड़-पकड़कर खाना इसका प्रतिदिन का काम है। दो-चार मछलियों से इसका काम नहीं बनता। एक-एक पनकौआ कभी-कभी किलो-डेढ़ किलो तक मछलियां चट कर जाता है।

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनकौए के गले में अंगूठी लगाने की प्रक्रिया

पनकौओं को पकड़कर प्रथमतः उनके पंख काट दिये जाते हैं। जब तक पंख पुनः विकसित होता है पनकौओं में उड़ने की आदत लुप्तप्राय हो चुकी होती है। इस बीच वह खासे पालतू भी बन जाते हैं। फिर उनकी ट्रेनिंग शुरू होती है। पहले उन्हें हुक्म की तामील करना सिखाया जाता है। इसके बाद मछली के शिकार में करने और नहीं करनेवाली बातों की उन्हें जानकारी दी जाती है। जब वे इस कार्य में दक्षता हासिल कर लेते हैं फिर उन्हें प्रशिक्षित और अनुभवी पनकौओं के समूह में काम करने की इजाजत मिल जाती है।

पनकौओं की मदद से मछलियों के शिकार के लिए केवल काली स्याह रातें ही माकूल होती हैं। छिटकती चांदनी हुई या आकस्मिक बरसात के कारण नदी का पानी मटमैला हो गया तो असुविधा होती है। तात्पर्य यह कि इस प्रकार की मछुवाही में घुप्प अंधेरा और पानी का साफ होना जरूरी है। एक नाव में चार नाविक सवार होते हैं। एक नाविक नाव खेता है, दो पनकौओं की रास पकड़ते हैं और चौथे नाविक के हाथ में एक छड़ी होती है जिसका डर दिखा कर पनकौओं को पानी में उतरने और काम करने के लिए उकसाता है।

गले में अंगूठी

सभी पनकौओं को डोर से बांधकर रखना होता है ताकि उनकी गतिविधियों को नियंत्रण में रखा जा सके। डोर की सहायता से पनकौओं को वापस नाव में खींच लाने में भी मदद मिलती है। एक और बात — सभी पनकौओं के गले में एक अंगूठी पहनायी जाती है जिसका व्यास मात्र उतना ही होता है जिससे केवल छोटी मछलियां ही निगली जा सकें। बड़ी किस्म योग्य मछलियां अंगूठी की वजह से पनकौओं के गले में ऊपर ही अटककर रह जाती हैं और उन मछलियों को उन्हें मजबूरन अपने मालिक के कदमों में लाकर न्योछावर कर देना होता है।

मछली मारने का काम शुरू करने से पहले आग की एक प्रज्वलित अंगीठी नदी की छाती पर लटका दी जाती है। सत के अंधेरे में इस चमचमाती रोशनी का पानी में तैर रही मछलियों पर बड़ा जबरदस्त असर होता है। मछलियां आकर्षित होकर नाव के इर्द-गिर्द जमा हो जाती हैं। अब पनकौओं को उकसाकर पानी में भेजा जाता है। काम शुरू। नाव में एक, दो, तीन, चार, पांच करके मछलियां आनी शुरू हो जाती हैं। एक पनकौआ प्रति घंटे अमूमन १० मछलियां पकड़ लाता है। एक नाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग एक-डेढ़ दर्जन पनकौए काम करते हैं — इस प्रकार प्रति घंटे पकड़ी गयी मछलियों की तायदाद का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

जापान में पनकौओं का उपयोग मुख्यतः 'आयू' मछलियों को पकड़ने के लिए किया जाता है। 'आयू' जापान की एक सुप्रसिद्ध मछली है, इसे अंगरेजी में 'स्वीट फिश' अर्थात् मीठी मछली कहते हैं। यह अधिक बड़ी नहीं होती — अधिकतम लंबाई ३० से. मी.। इसका स्वाद वाकई बड़ा निराला होता है। इसे पकाने के लिए भी कोई विशेष सरंजाम की जरूरत नहीं होती। काटना-धोना नहीं, बस अंगीठी पर सेकते जाइए और खाते जाइए। वास्तव में पर्यटकों के लिए यही तो आनंद का विषय होता है। आंखों के सामने नदी से ताजा मछलियां पकड़ी गयीं, अंगीठी में उन्हें पकाया गया और पर्यटक उनके सौंधे स्वाद में मगन हो गये। मछली मारनेवालों का धंधा हो गया और पर्यटकों का मनोरंजन भी।

भारतवर्ष में भी पनकौए पाये जाते हैं लेकिन यहां मछली मारने के लिए इनका उपयोग नहीं होता। पनकौओं से मिलता-जुलता एक जलपक्षी होता है बानवर जिसे अंगरेजी में 'डार्टर' कहते हैं। इसकी चोंच बड़ी पैनी बिलकुल भाले-जैसी होती है। पानी में डुबकी मारकर यह भी मछलियों का शिकार करता है।

बानवर

मछली निगलने की अदा तो इसकी पूछिए मत। मछली को अपनी नुकीली चोंच का निशाना बनाकर यह उसे बाहर ले आता है, झटका देकर उसे हवा में उछालता है और फिर बड़ी दक्षता से उसे मुंह में पकड़ लेता है मानो क्रिकेट की गेंद का 'कैच' लिया जा रहा हो।

पनकौओं की अपेक्षा बानवर की गरदन अधिक लंबी होती है। पानी में केवल-गरदन बाहर किये यह अकसर दृष्टिगोचर होता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे सांप हो। तभी उसे नागिन अर्थात 'स्नेक बर्ड' की संज्ञा मिली है। आसाम के कुछ एक क्षेत्रों में बानवर की मदद से मछली मारने का रिवाज है।

— कृषि विज्ञान केंद्र, कौशल्यागंगा
भुवनेश्वर-७५१००२

आर्कीओऐरिक्स नामक चिड़िया को विश्व का सबसे पहला पक्षी माना जाता है। इसका विकास रेंगनेवाले जंतुओं से लगभग चौदह करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था। आज के पक्षियों के विपरीत इस चिड़िया के दांत थे और हड्डियों से युक्त एक लंबी पूंछ थी। इसकी गरदन लचीली और लंबी थी। शल्कों की जगह आज के पक्षियों की भांति इसके पंख होते थे लेकिन यह हवा में मात्र 'ग्लाइड' ही कर सकती थी। भलीभांति उड़ने में यह असमर्थ थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला और राष्ट्रीयता

निरालाजी का काव्य विशुद्ध स्वदेश भूमि पर अवस्थित तथा स्वतंत्रता एवं नवोन्मेष से ओत-प्रोत है। उनके गद्य में भी राष्ट्रीय चेतना सांस्कृतिक अंतश्चेतना के रूप में दिखायी देती है।

● डॉ. हीरालाल बाछोतिया

महाकवि निराला सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित ही नहीं थे, वे इनके निकट संपर्क में भी रहे। पहले-पहल वे कलकत्ता में इन गतिविधियों के निकट संपर्क में आये थे। कलकत्ता में रामकृष्ण आश्रम में 'समन्वय' के वे एक वर्ष तक संपादक रहे थे। वहां का वातावरण स्वामी विवेकानंद के विचारों से आप्लावित था। निरालाजी पर स्वामी विवेकानंद का पर्याप्त प्रभाव भी परिलक्षित होता है। सभी जानते हैं कि विवेकानंद का आंदोलन राजनीतिक दासता से मुक्ति का आंदोलन भी था। निरालाजी की सहानुभूति रामकृष्ण आश्रम के साथ जीवन पर्यंत बनी रही। विवेकानंद के विचारों ने निरालाजी के सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय विचारों को केंद्रित करने तथा स्फुरित करने में योगदान दिया। केवल योगदान ही, क्योंकि निरालाजी की दृष्टि अपनी थी, जो उनकी कृतियों में देखी जा सकती है।

निरालाजी के विद्रोही व्यक्तित्व को आकार देने के परिप्रेक्ष्य में ही विवेकानंद या रामकृष्ण आश्रम का योगदान दिखायी पड़ता है। अन्यथा राष्ट्रीय गौरव तथा सांस्कृतिक चिंतन की धारा उनकी अपनी है। यदि ऐसा नहीं होता तो चरखे पर महात्मा गांधी और रविबाबू के बीच चले विवाद पर वे अपने आदर्श कवि रवि बाबू की तीखी आलोचना नहीं करते। 'चरखा' नामक निबंध जहां निराला के राष्ट्रीय विचारों का दर्पण है, वहीं इसका प्रमाण भी है कि उनमें रविबाबू के प्रति वह मोह नहीं था, जैसा उन लोगों में था, जिनका बंगला से दूर का परिचय-मात्र था। इस निबंध से यह भी प्रगट होता है कि निरालाजी राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति निश्चिंत आश्वस्त थे।

गांधीजी तथा चरखे का समर्थन करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरालाजी कहते हैं—

'वे भारतीय समाज को चरखा चलाकर अपना कपड़ा आप बना लेने का उपदेश देते हैं। इससे करोड़ों रुपयों की बचत और फायदा देश के निवासियों को है। इससे वे परावलंबी न रहेंगे। स्वाध्यायी हो जाना ही शक्ति का सूचक है। इस तरह शक्ति वृद्धि के साथ-साथ देशवासी स्वराज्य की प्राप्ति नहीं कर सकेंगे, यह कौन कह सकता है? अगर इससे समष्टि और व्यष्टि दोनों को फायदा पहुंचता है, तो निस्संदेह कहना पड़ता है कि रविबाबू का सुबह के वक्त दीपक अलापना नहीं शोभा देता।' (प्रबंध प्रतिमा, पृष्ठ ३)

चरखा तथा स्वदेशी के प्रति जिस आस्था का उल्लेख उक्त पंक्तियों में है, वही 'चोटी की पकड़' का कथ्य बनकर आता है। राजनीतिक दासता का दुष्परिणाम किस प्रकार हमें स्वत्वहीन बनाये दे रहा था, इसके प्रति निरालाजी की व्यथा तथा स्वदेशी के प्रति उनकी आस्था 'चोटी की पकड़' में प्रभाकर के कथन में देखी जा सकती है— *'आपके यहां हमारे केंद्र हैं देशी कारोबार बढ़ाने के, आपके महिला होने के कारण उनकी स्वामिनी, गृहलक्ष्मी शब्द का उपयोग आप ही लोगों के लिए होता है। आप उसकी चारुता बढ़ाने, प्रसार करने में सहायता करें। देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया। हम उन्हीं के दिये कपड़े से अपनी लाज ढंकते हैं। उन्हीं के जूते पहनते हैं, उन्हीं की दियासलाई से आग जलाते हैं। ब्राह्मण की आग गयी, क्षत्रिय का वीर्य गया, वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब हमको लेना है। इसी के रास्ते हम हैं। बंग-भंग एक उपलक्ष्य है। दूसरे प्रांत अभी बहुत जाग्रत नहीं। यों कांग्रेस में सभी हैं, यह स्वदेशीवाला भाव हमको घर-घर फैलाना है।'*

(चोटी की पकड़, पृष्ठ १६७)

स्वाधीनता संग्राम के संदर्भ में प्रवर्तित अन्य आंदोलनों का चित्रण भी निराला के साहित्य में उपलब्ध है, जो राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजगता तथा निकट संपर्क का ही परिणाम है। अलका में विजय स्वामी के रूप में एक गांव में अड्डा बनाता है। बच्चों को पढ़ाता है। पाठशाला जागृति का केंद्र बनती है। गांव के लोग सदियों से प्रताड़ित हैं किंतु विजय के कारण उनमें नवप्राणों का संचार हुआ है। वे लोग गांव के जमींदार से टक्कर लेना चाहते हैं किंतु झूठी गवाही देकर जमींदार विजय को ही बंदी बनवा देता है। अशिक्षा के कारण ही वह घटित होता है। इसलिए शिक्षा पहला काम है। कहना न होगा, यह भी किसान आंदोलन का ही एक स्वरूप है। यही कारण है कि डिप्टी साहब स्वामीजी (विजय) को कांग्रेस का आदमी समझते हैं।

"आप कांग्रेस में हैं ?"

"जी नहीं।"

"आप यहां के रहनेवाले हैं ?"

"जी नहीं।"

"फिर यहां क्यों हैं ?"

"किसान लड़कों को पढ़ाना मेरा लक्ष्य है। मैं और कुछ नहीं करता। जो भीख गांव से बाहर मुफ़ जाया करती है, उसके दुअन्नी से भी कम में मेरे-जैसे तीन शिक्षकों की गुजर हो सकती है। केवल भोजन पर गरीबों को शिक्षा देना मैंने अपना लक्ष्य कर लिया है।"

"आपके ऐसे कार्य के लिए मैं हृदय से आपको बधाई देता हूं अगर कांग्रेस से आपका तअल्लुक नहीं।"

('अलका'— पृष्ठ ९५-९६)

निरालाजी स्वतंत्रता को एक मिश्र विषय मानते थे। वे इसके सांस्कृतिक, साहित्यिक व शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य पर सर्वाधिक बल देना चाहते थे। इसलिए वे मानते हैं कि क्रिसानों को प्रारंभिक शिक्षा दे देना भी जेलवास से कहीं महत्कार्य है। क्योंकि ***"किसी प्रकार का सुधार पहले मस्तिष्क में होता है। जहां मस्तिष्क ही न हो वहां नेता की आवाज का क्या असर हो सकता है ?'***

अलका', पृष्ठ ४८)

चतुरी चमार में भी निराला का राष्ट्रीय आंदोलन के निकट संपर्क में रहना वर्णित है। आंदोलन में भाग लेने के कारण किसानों को दबाया जाता है तो वे इनके पास मदद के लिए आते हैं।

"गांव में चलकर लिखो। तुम रहोगे तो मार न पड़ेगी, लोगों को हिम्मत रहेगी, अब सख्ती हो रही है।"

('चतुरी चमार'— पृष्ठ— १५)

निरालाजी अपने गांव की कांग्रेस की सक्रियता की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि 'पुरवा डिवीजन में उससे आगे दूसरा गांव न था।' किंतु गांववालों को बचाने के लिए वह को जैसा मोड़ देते हैं, वह उनके ही बस की बात है। 'चतुरी चमार' का एक प्रसंग है— कच्चे रंगों में रंगा तिरंगा झंडा महावीर स्वामी के सामने एक बड़े बांस में गड़ा था। बारिश में धुलकर सफेद हो गया था। उन्होंने सिर के बाल साफ करवा लिये थे। अतः वेश के बजाय वाणी का ही सहारा था। अंगरेजी में बोलकर दरोगा को चुप करा देते हैं— पूछा जाता है— 'आप कांग्रेस में हैं ?' ये जवाब देते हैं— 'विश्व सभा का सदस्य हूं। 'थानेदार ने पूछा'— 'इस गांव में कांग्रेस है ?' ये युधिष्ठिर की तरह सत्य - रक्षा करते हुए बोले— 'इस गांव के लोग तो कांग्रेस का मतलब भी नहीं जानते।'

कहना न होगा, इसे पलायन समझना कड़ी भूल होगी। यह तो वास्तव में विदेशी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसकी पुलिस को छकाना हुआ। इस प्रकार छकाने का क्रम 'अप्सरा', 'चोटी की पकड़' आदि— अनेक गद्य कृतियों में मिलता है। 'कुल्ली भाट' में कुल्ली कांग्रेस का काम करते हुए पाठशाला भी चलाते हैं। कुल्ली भाट को कुछ विद्वानों ने संस्मरण कहा है तो कुछ ने चरित्रांकन संबंधी कृति। दोनों ही दृष्टियों से निरालाजी का अपना जीवन भी इसमें आया है। असहयोग आंदोलन गांवों में भी फैल गया था— "देश में पहला असहयोग आंदोलन जोरों पर था। खलिहानों में बैठे हुए किसान जमींदारों से बचने के लिए रह-रहकर 'महात्मा गांधी की जय' चिल्ला उठते थे।" किंतु यह वर्णन तो उद्देश्य नहीं था। हां, इस जागरण का ही प्रतिफलन थे, कुल्ली भाट। कुल्ली की पाठशाला में अछूत बच्चे पढ़ने आते थे। इस प्रकार निरालाजी राष्ट्र की दूसरी बड़ी समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, वह है अछूतोद्धार। दुखित, शोषित, पद दलित मानवता के प्रति उनमें असीम करुणा है, जो यहां दृष्टव्य है।— *"दोनों में फूल लिये हुए मुझे भेंट करने के लिए ..... इनकी ओर कभी किसी ने नहीं देखा। ये पुश्त-दर-पुश्त से सम्मान देकर नत मस्तक हो संसार से चले गये हैं। संसार की सभ्यता के इतिहास में इनका स्थान नहीं। ये नहीं कह सकते, हमारे पूर्वज कश्यप, भारद्वाज, कपिल, कणाद थे। रामायण महाभारत इनकी कृतियां हैं। अर्थशास्त्र, कामसूत्र उन्होंने लिखे हैं। अशोक विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, पृथ्वीराज इनके वंश के हैं। फिर भी वे थे और हैं।"* ('कुल्लीभाट' पृष्ठ १०१)

निराला उन्हें गले लगाकर राष्ट्र-समाज-सेवकों का पथ प्रदर्शन करते हैं—

"आप लोग अपना-अपना दोना मेरे हाथ में दीजिए और मुझे उसी तरह भेंटिए जैसे मेरे भाई भेंटते हैं।"

('कुल्ली भाट'— पृष्ठ १०२)

'कुल्ली भाट' में निराला जहां राष्ट्रीय समस्या को रेखांकित करते हैं, वहीं रूढ़ियों को तोड़कर नवसमाज की स्थापना की कल्पना भी। यह क्रांतिकारिता उनका उज्ज्वलतम रूप है जो केवल साहित्यिक रूढ़ियों को तोड़ने तक सीमित नहीं रही। कुल्ली मुसलमानिन ले आये थे। जब मरे तो कोई ब्राह्मण एकादशाह कराने के लिए तैयार नहीं था। निराला यह कराते हैं, रूढ़ियों को एक और धक्का देते हैं।

पद्य में भी निरालाजी का राष्ट्र-प्रेम देखा जा सकता है। उनका काव्य विशुद्ध स्वदेशी भूमि पर अवस्थित तथा स्वतंत्रता एवं नवोन्मेष से ओतप्रोत है। 'जागो फिर एक बार'— जैसा प्रसद्धि जागरण गीत अतीत के शौर्य का स्मरण कराते हुए नवोन्मेष का स्फुरण कराता है—

है नश्वर यही दीनभाव, कायरता काम परता ब्राह्मण
हो तुम, पदरज भी रे नहीं पूरा यह विश्व भार
जागो फिर एक बार

किसने सुनाया यह, वीर जन मोहन अति
दुर्जय संग्राम राग, फाग का खेला रण
बारहों महीने में, शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
पश्चिम की उक्ति नहीं, गीता है, गीता है
स्मरण करो बार-बार, जागो फिर एक बार

इसी प्रकार 'महाराज जयसिंह को शिवाजी का पत्र' भी सांस्कृतिक जागरण तथा राष्ट्रप्रेम की भावना से अनुप्राणित है। 'राम की शक्ति पूजा' तथा 'तुलसीदास' में सांस्कृतिक नवोत्थान के साथ-साथ समाज शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीयता तथा राष्ट्रीयता का स्वरूप निरूपित किया गया है।

'राम की शक्ति पूजा' जनद्रोही प्रबल पक्ष के विरुद्ध संघर्षरत मानव मन को संशयग्रस्त होने पर अमित प्रेरणा देता है। राम के मन में प्रश्न यह है कि 'जगजीवन में क्या रावणवादी विजयी होते रहेंगे ? यदि ऐसा होता रहा, तो समाज में नीति और मर्यादा कैसे रह पाएंगी ? इसका उत्तर जाम्बवान के शब्दों में दिया गया है—

"हे, पुरुषसिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर"

'तुलसीदास' में निराला कहते हैं कि हिंदू-मुसलिम एकता का अर्थ रूपों की उपासना तथा धर्म के आधार पर खड़े किये गये विभेदों को तिलांजलि दे एक ही सत्ता पर विश्वास करना है।

इस जग के मग के मुक्त प्राण, गाओ विहंग,
सद्ध्वनित गान
त्यागोज्जीवित यह ऊर्ध्व ध्यान, धारास्तव।

तथा—

"करना होगा यह तिमिर पार,
देखना सत्य का मिहिर द्वार।"

इसी प्रकार 'अणिमा' का उद्बोधन [illegible] भावनाओं की पूर्णता पर ही आधारित है। [illegible] पत्ते' में सामाजिक आर्थिक विपन्नता पर [illegible] व्यंग्य है। ऐसे नेताओं पर भी व्यंग्य है, [illegible] उलटे-सीधे प्रचारों से जनता को छलते [illegible] डालते हैं। 'गीतिका' में ऐसी गजलें हैं, [illegible] नव्य चेतना दृष्टव्य है। जिस समय नेता [illegible] थे, निरालाजी ने कजली लिखी थी—

काले बादल छाये, न आये वीर जवाहलाल

इस प्रकार काव्य में उनकी राष्ट्रीय [illegible] सांस्कृतिक अंतश्चेतना के रूप में दिखायी [illegible] किंतु जैसी स्पष्टता गद्य में है, उसका प्रभाव [illegible] भिन्न है।

—के. ४० एफ साकेत, नयी दिल्ली-११[illegible]

वचन-वीथी

सर्वोत्तम कीर्ति प्रतिद्वंद्वी द्वारा की गयी प्रशंसा है।

—टॉमस मोर

भविष्य चाहे कितना ही सुंदर हो विश्वास न करो। भूतकाल की भी चिंता न करो, जो कुछ करना है उसे अपने ऊपर और ईश्वर के ऊपर विश्वास रखकर वर्तमान में करो।

—लांगफेलो

कुटिलता कभी-कभी सफल हो जाती है, पर सदा ही आत्म-घाती सिद्ध होती है।

—खलील जिब्रान

अहमियत इस बात की नहीं है कि हम कितने दिन जीये, बल्कि इसकी है कि कैसे जीये।

—बेली

जीवन एक बाजी की तरह है। हार-जीत [illegible] हमारे हाथ में नहीं है, पर बाजी का खेलना [illegible] हाथ में है।

—जेरेमी [illegible]

जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सूर्य [illegible] प्रकाश पहुंचाते हैं, उनका इस मृत्युलोक से [illegible] नाश न होगा, वे अमर हैं।

—स्टेट [illegible]

जब मुझे सूझ नहीं पड़ता करूं या न करूं, [illegible] हमेशा कुछ काम करता हूं।

—[illegible]

अपने जीवन का ध्येय बनाओ और इसके [illegible] अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति [illegible] लगा दो।

—क[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महालक्ष्मी का मंदिर (झांसी)

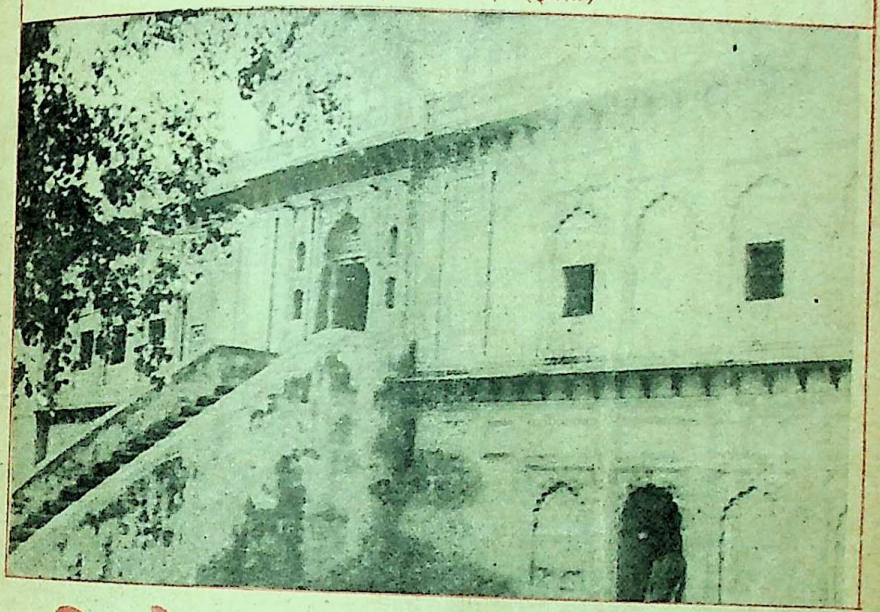

प्रतिशोध के शिकार दो मंदिर

● डॉ. महेन्द्र वर्मा

भारत के स्वतंत्रता-संघर्ष के इतिहास में १८५७ की प्रथम स्वतंत्रता क्रांति के समय अंगरेजों के साम्राज्य के बढ़ते हुए शिकंजे व उनकी प्रतिशोध की आग में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला से लेकर अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह व उसके बेटों व झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई तथा लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह-जैसे तो बुरी तरह से नष्ट हुए ही थे, पर अंगरेजी साम्राज्य के प्रतिशोध की आग से मंदिर भी न बच सके, यह भी आश्चर्यजनक एवं इतिहासपरक तथ्य है।

ऐसे मंदिरों में अंगरेजों की त्रासदी से ग्रसित झांसी नगर के दो विशिष्ट मंदिर हैं, जिन्हें वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तिगत जीवन से जुड़े होने के कारण झांसी विजय के समय ५ अप्रैल, १८५८ ई. से लेकर ११ अप्रैल १८५८ ई. तक के काल में अंगरेजों के प्रतिशोध की आग में झुलसना पड़ा। इन दो ऐतिहासिक मंदिरों में एक है—'महालक्ष्मी का मंदिर' व दूसरा है—'मुरली मनोहर का मंदिर।' ये दोनों मंदिर तब अंगरेजों के दुर्व्यवहार व भयंकर लूट के करण निर्जीव होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए भी चीत्कार कर उठे थे। आज भी मंदिर की दीवारें अंगरेजों की दुर्दांत कहानी को अपनी मूक भाषा में कहती हुई दिखायी देती हैं।

महालक्ष्मी का मंदिर

यह ऐतिहासिक महालक्ष्मी का मंदिर महारानी लक्ष्मीबाई के श्वसुर शिवराम भाऊ द्वारा निर्मित नगर-प्राचीर के पूर्वी द्वार 'लक्ष्मी गेट' के बाहर विशाल लक्ष्मी तालाब के मध्य में आयताकार रूप में दृष्टव्य है। लगभग १०० फुट लंबाई व ७० फुट चौड़ाई में मराठा शैली में निर्मित इस मंदिर के पश्चिमी ओर—पूर्व के शासक गुसाइयों द्वारा बनवाया हुआ सिद्धेश्वर (सिद्ध) मंदिर व उत्तर की ओर महारानी लक्ष्मीबाई के स्वर्गीय पति महाराजा गंगाधर राव का स्मारक है। इस स्मारक और महालक्ष्मी के मंदिर का जल मार्ग पत्थरों के पुल द्वारा जोड़ा गया है। इस मार्ग के प्रारंभ में 'बायीं ओर स्मारक के सामने नवग्रह का भव्य मंदिर है। यह लक्ष्मी मंदिर लक्ष्मी तालाब की जलराशि व बिंध्य श्रेणियों के नैसर्गिक सौंदर्य के कारण बड़ा ही मनोरम लगता है। उत्तरपूर्व की जलराशि के दर्पण में महालक्ष्मी मंदिर का झांकता हुआ प्रतिबिंब सूर्य की प्रातः एवं सायंकालीन लालिमा व दोपहर के ओज में तथा चंद्रमा की धवल चांदनी में बड़ा ही हृदयाकर्षक लगता है।

मंदिर के समस्त मूल भाग भवन के [illegible] खंड हैं, जहां लंबे महामंडप व गर्भगृह [illegible] अतिरिक्त चारों ओर निवासार्थ लंबी दालानें [illegible] हुई हैं। नीचे वाले खंड में बनी आवा[illegible] दालानों व दाहिनी ओर के खंडहरों से [illegible] प्रतीत होता है कि महारानी लक्ष्मीबाई के स[illegible] में इनमें रक्षकों के आवास थे। इस मंदिर [illegible] खर्च के लिए महारानी की ओर से दो गांव [illegible] हुए थे।

इस मंदिर में महारानी की दर्शन यात्रा [illegible] इसकी लूट-पाट के संबंध में तत्कालीन [illegible] निवासी विष्णुपद गोडसे ने, जो '१८५७ ई[illegible] गदर के समय स्वयं झांसी में ही मौजूद [illegible] अपनी पुस्तक 'माझा प्रवास' में लि[illegible] है—"महाराजा गंगाधर राव के मर जाने [illegible] जब महारानी तत्कालीन गर्वनर-जनरल [illegible] डलहौजी की शासनाज्ञा से मार्च १८५४ ई[illegible] झांसी दुर्ग के विशाल, भव्य व आकर्षक [illegible] को (जो बाद में अंगरेजों ने धूल-धूसरित [illegible] दिया था) छोड़कर तत्कालीन सरकारी [illegible] (वर्तमान में रानी महल) में आकर रहने [illegible] थीं, तब उन्होंने अपना अधिकांश [illegible] पूजा-पाठ व धर्म-कर्म में लगा दिया [illegible] महारानी प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार के [illegible]

> मंदिर में रहनेवाले अनेक साधु व अन्य व्यक्ति अंगरेज सैनिकों द्वारा मार डाले गये। केवल वे ही लोग बच पाये, जिन्होंने स्त्री वेश धारण कर लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मंदिर में अश्व पर चढ़कर या पालकी में बैठकर दर्शनार्थ जाया करती थीं। जब वे अश्व पर आरूढ़ होतीं, तब वे चूड़ीदार पाजामा एवं मिरजान (अंगरखा) व सिर पर पगड़ी बांधती थीं और पालकी में जाने पर वे महाराष्ट्रीयन साड़ी पहना करती थीं। उनकी सवारी के समय तलवार लिये स्त्री व पुरुष अंगरक्षक व सैनिक चला करते थे।

झांसी विजय के समय सर ह्यूरोज और हैमिल्टन की आज्ञानुसार अंगरेजों ने इस मंदिर पर अपना वज्रपात किया। वहां के रक्षकों को मौत के घाट उतार दिया गया। उनके लहू से लक्ष्मी तालाब का जल भी अंगरेजों की बेहयाई पर क्रोध में मानों लाल हो गया था। महालक्ष्मी की प्रतिमा पर चढ़नेवाले कई लाख रुपयों के रत्नजटित आभूषण लूटे गये। इतना ही नहीं मंदिर के नाम पर लगे हुए दो गांवों को भी ह्यूरोज व हैमिल्टन ने अपने अधिकार में कर लिया। अंगरेजों के इस जघन्य कार्य से शायद उस समय मृतक महाराजा गंगाधर राव की आत्मा भी चीत्कार कर उठी होगी।

वर्तमान में यह मंदिर महारानी लक्ष्मीबाई के नाम से जुड़े होने के कारण पुरातत्व विभाग के नियंत्रण में है। मंदिर के गर्भगृह में महालक्ष्मी की काले रंग की पाषाणमयी प्रतिमा है। यह प्रतिमा कोल्हापुर की महालक्ष्मी प्रतिमा के सानुरूप है। प्रतिमा की चतुर्भुजाओं में स्वर्णपात्र, मोदक, ढाल व गदा प्रदर्शित हैं। महालक्ष्मी कमल पर स्थित हैं। उनके शीर्ष पर शिव-लिंग तथा सर्प-फण हैं। उनके इस रूप में लक्ष्मी, अन्नपूर्णा एवं दुर्गा के स्वरूपों का समन्वय दिखायी देता है। महालक्ष्मी का यह मंदिर 'सखूनबाई' (महारानी लक्ष्मीबाई की जिठानी एवं शिवराव भाऊ के ज्येष्ठ पुत्र मृतक कृष्ण राव की विधवा पत्नी एवं महाराजा रामचन्द्र राव की माता) के द्वारा अपने वंश की कुल-लक्ष्मी के रूप में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में निर्मित कराया गया था।

मुरली मनोहर का मंदिर

मुरली मनोहर अर्थात् मुरलीधर कृष्ण का यह मंदिर नगर के मध्य में और नगर प्राचीर के पूर्वी दिशा के लक्ष्मी द्वार के लगभग एक फलांग पश्चिम की ओर दिखायी देता है। मंदिर के नाम पर यह मंदिर की सभी विशिष्टिताओं यथा शिखर, घंट आदि से विहीन है, क्योंकि प्रारंभ में यह एक विशाल महल था, जिसके दो लंबे-चौड़े, आंगन, लंबी दालानें व अनेक कक्ष आदि अब भी हैं। पर मंदिर का रूप दिया गया था—उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में, सखूबाई के द्वारा, जब वह अपने पति कृष्ण राव के मर जाने पर ईश्वर-आराधना में लगीं। वैसे मंदिर के वर्तमान ६४ वर्षीय पुजारी कृष्ण राव गोलवलकर के द्वारा इस विशाल भवन का निर्माण अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सखूबाई के पूर्वजों में रामचन्द्र राव (प्रथम) द्वारा हुआ था, जो वर्तमान पुजारी एवं उनके कनिष्ठ बंधु कृष्ण राव गोलवलकर के परनाना थे।

इस मंदिर पर अंगरेजों के आक्रोश का प्रमुख कारण यह था कि मंदिर के दाहिनी ओर के ऊपरी भाग में महारानी लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपंत तांबे (उपनाम-मामा साहेब से प्रसिद्ध) अपने जीवन के अंतिम समय में महाराजा गंगाधर राव के आग्रह पर उनकी जीवितावस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

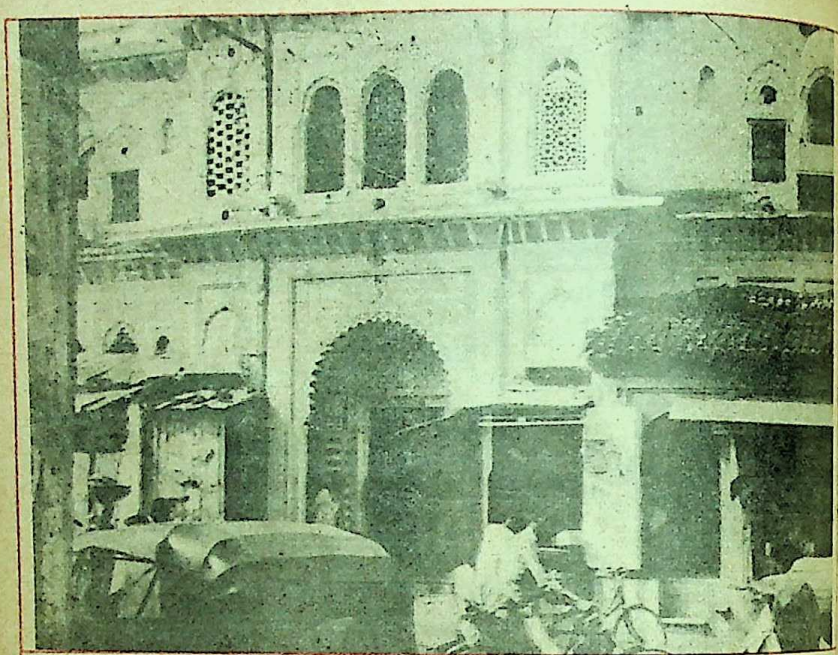

मुरली मनोहर का मंदिर (झांसी)

में ही रहने लगे थे। महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात महारानी लक्ष्मीबाई अपने पिता से समय-समय पर मिलने के लिए इस मंदिर में आया करती थीं। जिसका साक्ष्य मंदिर का एक तलीय भूभाग है जो अब बंद कर दिया गया है। उस समय पुजारी-बंधुओं की दादी (पितामह) माकूबाई जीवित थीं और उनका महारानी के यहां आना-जाना भी था।

इतिहास साक्षी है कि जब कटेरा (झांसी जनपद) के दूल्हाजू के विश्वासघात से २ अप्रैल, १८५८ ई. को ब्रिगेडियर स्टुअर्ट व कर्नल लोथ ने अपनी सेना के साथ नगर के ओरछा द्वार से नगर में प्रवेश किया और ३ व ४ अप्रैल को महारानी के मुख्य तोपची गुलाम गौसखां, मोतीबाई (जो कभी महाराजा गंगाधर राव की नाट्यशाला की कुशल नृत्यांगना व सफल अभिनेत्री थी) व प्रमुख अश्वरोही कुंदन खुदाबख्श-जैसे अनेक वीरों ने वीरगति प्राप्त की और शहर का हलवाईपुरा (वर्तमान में मिठाई बाजार) व कुंष्टियाना तथा रानीमहल के सामने महाराजा गंगाधर राव का तिमंजिला विशाल पुस्तकालय जब आग की लपटों में धू-धूकर उठा, तब महारानी विचलित हो उठी और ४ अप्रैल की अर्द्धरात्रि के पश्चात रामचन्द्र देशमुख, सुंदर, मुंदर, काशीबाई, रघुनाथ सिंह, गुलमुहम्मद आदि कुछ विश्वासपात्र सेवकों को लेकर वे कालपी के लिए प्रस्थान कर गयीं।

ऐसे समय में अपनी पुत्री का साथ देने के लिए एवं मार्ग में सैन्य व्यय के दृष्टिकोण से मोरोपंत तांबे भी अपने साथ खजाने को लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी पर बैठकर अलग से चल दिये। मोरोपंत तांबे महारानी के.८ उन प्रमुख सभासदों में से थे, सर ह्यूरोज ने जिनको उपस्थित करने के लिए बंबई से आते ही और झांसी की भूमि पर पैर रखते ही महारानी से शर्त रखी थी, अन्यथा युद्ध के लिए लालकारा।

प्रातःकाल जब सर ह्यूरोज को महारानी के पलायन का पता चला तब उसने झांसी नगर की लूट-मार एवं नगरवासियों को मारने व आतंकित करने का दमन चक्र चलाने का आदेश दे दिया। उस दमन चक्र में ही इस मंदिर के ऊपर आक्रमण किया गया। लेफ्टिनेंट ब्रेग्री के नेतृत्व में इस मंदिर के पार्श्व भाग में पश्चिम की ओर गोले बरसाये गये—केवल मोरोपंत तांबे को कैद करने की दृष्टि से। पर मोरोपंत का पता न चला। उस खंड की सूनी-सूनी-सी दीवारों और खामोशी ने ब्रेग्री के क्रोध का पारा आसमान पर चढ़ा दिया और जब ह्यूरोज व ब्रेग्री को मोरोपंत के खजाना लेकर भाग जाने का पता चला, तो वे फिर मनुष्य के रूप में साक्षात दानव बन गये। उन्होंने तब मंदिर में हत्याकांड व लूट का तांडव प्रारंभ कर दिया। इस संबंध में पुजारी बंधुओं ने जो बताया, वह बड़ा ही हृदय विदारक वर्णन है।

उनके कथनानुसार उस समय उनके तीन पितामह बंधु लक्ष्मण राव, कृष्ण राव व नारायण राव मंदिर में रहा करते थे। उनमें से युवा नारायण राव व कृष्ण राव में नारायण राव अविवाहित एवं कृष्ण राव निःसंतान थे। अंगरेज सैनिकों ने मंदिर में जब प्रवेश किया, तो मंदिर को खूब लूटा गया। राधा-कृष्ण के लाखों रुपयों के रत्नजटित आभूषणों तथा बहुमूल्य वस्तुओं को उन लोगों ने हस्तगत किया। मंदिर-अंगरेज सैनिकों के आतंक से चीख उठा। दीवारें कांप उठीं। अंगरेज सैनिकों ने तब बायीं ओर से दालान की ओर प्रवेश किया। दोनों भाई नारायण राव व कृष्ण राव को पकड़ा। मोरोपंत के बारे में न बताये जाने पर कृष्ण राव को लंबी दालान में (जहां आजकल पुजारी बंधुओं के परिवार का तथा परिचितों का आना-जाना, बैठना लगा रहता है) अंगरेज सैनिकों द्वारा मार डाला गया। उनकी युवा पत्नी गिड़गिड़ाती रही, पर जालिमों के हृदय न पसीजे। नारायण राव को मंदिर के बाहर ले जाया गया और उन्हें उस समय वहां लगी हुई चूने की चक्की में पीस दिया गया। अंगरेजों के शासनकाल में बाद में इस स्थान पर पानी की एक विशाल टंकी बनवायी गयी) शायद यह सोचकर कि नारायण राव की आत्मा की चीत्कार टंकी के एकत्रित जल में सदा के लिह दबी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों बाद यह अंगरेजों की निशानी पानी की टंकी तुड़ा दी गयी और उसके स्थान के कुछ भाग में बिजली का सब-स्टेशन व कुछ भाग में चबूतरा बना दिया गया। इस चबूतरे पर दशहरा के दिनों में रामलीला का आयोजन होता है। शेष दिनों में लोगों का जमघट दिखायी देता है।

मंदिर के सामने बिजली-सब-स्टेशन के करीब एक पीली इमारत है, वह उस समय नौबतखाने के काम में प्रयुक्त होती थी। मंदिर पर अंगरेजी शासन हो जाने पर बाद में यह नौबतखाना नगाड़ों की आवाज से सदा के लिए शांत हो गया और आजकल कुछ वर्षों से यह पीली इमारत खत्री समाज द्वारा अधिकृत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली गयी है और नौबतखाने की रही-सही यादें भी सदा के लिए दफन हो गयीं।

अंगरेजों के इस भयंकर कांड से सौभाग्यवश ज्येष्ठ बंधु लक्ष्मण राव बच गये और उनके बचने का कारण था—उनका परिवार के साथ ग्वालियर यजमानी के लिए चला जाना। झांसी-विजय के पश्चात अंगरेजों के शासनकाल में कुछ वर्षों के निकल जाने के बाद जब लक्ष्मण राव झांसी आये, तब मंदिर पर स्वयं के वंशजों के अधिकार का प्रमाण देने पर वह मंदिर युक्त आवासीय भवन उनको पुनः प्राप्त हो गया। तब से उन्हीं की वंश-परिपाटी में उनके पुत्र रामचन्द्र राव (द्वितीय) एवं उनके पुत्र कृष्ण राव व विष्णु राव ने मुरली मनोहर के मंदिर की पूजा-अर्चना का भार संभाला।

ये उपर्युक्त दो मंदिर तो अंगरेजों की त्रासदी से इसलिए ग्रसित हुए थे, क्योंकि इनका संबंध—अंगरेजी शासन की प्रतिद्वंद्वी महारानी लक्ष्मीबाई से था, पर नगर का बिहारीजी का मंदिर भी अंगरेजों के कोप से न बच सका। झांसी-विजय के समय इस मंदिर में जब अपने प्राणों को बचाने की दृष्टि से तमाम लोग आकर छिप गये, तब अंगरेज सैनिकों ने इस मंदिर में प्रवेश किया। इस मंदिर में रहनेवाले अनेक साधु व अन्य व्यक्ति मार दिये गये। केवल दो ही लोग बच पाये, जिन्होंने स्त्री वेश धारण कर लिया था। यह मंदिर भी अब खामोशी में डूबा हुआ खड़ा है।

अंगरेज इतिहासकारों में 'लो' के कथनानुसार झांसी-विजय के समय लगभग ३००० नागरिक व 'मार्टिन' के कथनानुसार ५००० नागरिक तथा भारतीय इतिहासकारों के मतानुसार लगभग २० हजार व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गये। चहल-पहल के नाम पर वर्तमान में केवल मुरली मनोहर का मंदिर अवश्य ही उल्लेखनीय है, पर शेष दो मंदिर उपेक्षित-से दिखायी देते हैं, जहां की सूनी-सूनी दीवारों से वीरानी ही दिखायी देती है।

—९७, गंधीगर झांसी-२८०००

प्रेत अभिशप्त एक गांव

भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर प्रश्न-चिह्न लगा ही हुआ है, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो उनके अस्तित्व का ही नहीं, उनसे साक्षात्कार भी दावा करते हैं। ऐसे लोगों में ब्रिटेन के एक लेखक डेनिस चेंबर्स, जिन्होंने ब्रिटेन के प्लेकले नामक एक गांव में आज भी यदा-कदा दिखायी देने वाले बारह प्रेतों की कहानी लिखी है। प्लेकले को ब्रिटेन का सर्वाधिक प्रेतग्रस्त गांव माना जाता है। उस गांव में एक होटल है—'ब्लेक स्मिथस आर्म' इस होटल के व्यवस्थापकों का कहना है कि उन्हें रात में पदचापें सुनायी देती हैं और कभी-कभी उन्हें खिड़की के बाहर एक अपरिचित चेहरा भी दिखायी देता है।

डेनिस चेंबर्स के अनुसार इस गांव में एक ऐसी स्त्री का प्रेत भी मौजूद है, जिसका पांच सौ वर्ष पूर्व प्रसव के समय प्राणांत हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **एक** प्रश्न में किसी संख्या को ८ से गुणा करने को कहा गया था, किंतु एक छात्र ने ८ से भाग करके उत्तर ७ रख दिया। बताइए, सही उत्तर क्या है ?

२. **भारतीय** संविधान में गत वर्ष तक हुए अंतिम संशोधन में किस बात की व्यवस्था की गयी है ? यह कौन-सा संशोधन है ?

३. **राष्ट्र** की ओर से इंदिरा गांधी पुरस्कार किस बात के लिए दिया जाता है ? यह कितनी रकम का पुरस्कार है ? १९८६ तथा १९८७ के पुरस्कार किसे प्रदान किये गये हैं ?

४. **अंटार्कटिका** के लिए अब कौन-सा भारतीय अभियान-दल गया है ? उसका नेता कौन है ? उसका मुख्य उद्देश्य क्या है ?

५. **क. भारत** में विगत नवम्बर मास में किस स्थान पर लेनिन की कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया गया ? उसके मूर्तिकार कौन हैं ?
ख. देश में अन्य किन स्थानों पर लेनिन के स्मारक हैं ?

६. **संसद** के केंद्रीय विशाल कक्ष में स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी का जो चित्र गत वर्ष लगाया गया, उसके रचनाकार कौन हैं ?

७. **क. भारत** में इस समय कितने विश्वविद्यालय हैं तथा उनके छात्रों की संख्या कितनी है ?
ख. दुनिया में सबसे अधिक विश्वविद्यालय किस देश में हैं ?

८. **'गांधी'** फिल्म के निर्माता सर रिचर्ड अटेनबरो की नयी फिल्म कौन-सी है और किसके बारे में है ? मुख्य भूमिका में कौन है ?

९. **दुनिया** में सबसे अधिक समय तक एक ही नाटकगृह में लगातार चलनेवाला नाटक कौन-सा है ?

१०. **भारत** की किस महिला ने पहली बार चीन की ओर से एवरेस्ट पर चढ़ने का प्रयास किया, किंतु जिसे केवल ३ हजार फुट शेष रहने पर ही लौटने को विवश होना पड़ा ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

चीफ का सपना

● परदेशीराम वर्मा

अग्रवाल और चीफ दोनों को सपने आते हैं मगर दोनों का स्वरूप अलग-अलग है। स्कूटरधारी अग्रवाल सपने में अपने को जमीन से बहुत ऊंचाई पर उड़ता हुआ पाता है और चीफ को सपने में अंधे कुंए के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखता। चीफ रोज सोचते हैं कि शायद आज की रात सपने में आनेवाला अंधा कुंआ न आये मगर क्रम नहीं टूटता। चीफ दिन में भी स्वप्नडूबे आदमी की तरह, विगत एक बरस को याद करते रहते हैं। वह सोचते हैं कि कहां से शुरू होकर वह कहां पहुंच गये।

कहां वे दिन थे कि दफ़र और शहर में उनके नाम से लोग घबराते थे। और कहां आज का समय कि एक पानी में लिथड़ आये चूहे की तरह वे अग्रवाल के साये में हांफते हुए जीने को मजबूर हैं।

● ● ●

पहले ही दिन से दफ़र में उनका डंका बजने लगा था। पहली मीटिंग में ही उन्होंने बुलंद आवाज में कहा—"भ्रष्टाचार नहीं चलेगा, यहां बहुत भ्रष्टाचार है। लोग पैसा खाते हैं। एव्रीबडी इज ईटिंग। क्या होगा ऐसे में देश का। आप लोग अब सतर्क हो जाइए। चौकस। मैं किसी को छोड़नेवाला नहीं सबकी खबर रखता हूं। यह तो हमारी फ़र्स्ट मीटिंग है। धीरे-धीरे आप जान जाइएगा ऑनेस्टी भी कोई चीज है।"

चारों ओर सन्नाटा पसर गया। लंबी के चारों ओर बैठे लोग सकते में आ गये। अपने विभाग प्रमुख को पहली बार सुन थे। इतना बड़ा साहब और ऐसी भाषा। समझ नहीं पा रहा था कि आगे क्या जाए। प्रायः बड़े साहबों को दो एक दिन शीशे में उतार लेनेवाले अग्रवाल साहब हालत भी खराब होने लगी। ठाकुर रामप्र सिंह अलग परेशान होने लगे। पंडित कांत शुक्लजी की घिग्घी बंध सब सर नवाये बैठे रहे। कभी कभार उचटती नजर से चीफ को देख लेता। कद, बड़ी कुरसी में लगभग भीतर तक हुआ, छोटी छोटी चौकन्नी आंखोंवाला क्रूर का सांवला-सा आदमी। सब भीतर-भ महसूस कर रहे थे कि अधिकार भी क्या है। कुरसी भी क्या शै है ? जिसे बिठा दो मसीहा बन जाता है। केवल वही सदा बाकी सब बिन लोटा थारी। लगता था जैसे सब लोग एक साथ उठेंगे और जोड़कर कहेंगे—"त्राहिमाम, त्राहिमाम, करो विभाग प्रमुख। यह तो विभाग अभिशप्त है। अब आप आ गये हैं तो अ पुण्य से हमारी भी मुक्ति हो जाएगी" सबको चुप देखकर चीफ ने गुर्राकर पूछा, क्रमशः अपनी परेशानी बताएं कमी जो हो पूरी की जाएगी।"

अग्रवाल लोगों में अद्भुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहलाते थे हर संकट के समय वे ही खेवनहार सिद्ध होते। साथी सब उनकी ओर देखने लगे। अग्रवाल ने खखारकर कहना शुरू किया—"सर, परेशानी भला क्या है, आप आ रहे हैं जब से यह पता चला था सर, तभी से हमारे सारे साथी अपने को भाग्यवान समझ रहे थे। आप सर..."

"चुप रहो अग्रवाल", आंखें तरेरते हुए अचानक चीफ लगभग चीख पड़े। "तुम फालतू बातें बहुत करते हो सोचते हो अपनी चिकनी चुपड़ी से सबको चरा चुके तो मुझे भी उलझा लोगे। साफ भाषा में सच्ची बातें कहो। मक्खन रखो अपने खीसे में। घर में लगाओगे तो कुछ सुख मिलेगा"।

अग्रवाल रुआंसे हो गये।

दुर्गति देखकर साथी लोगों के भी हाथ पांव फूल गये।

● ● ●

निगम में चीफ आते हैं और अपना जलवा दिखलाकर साल दो साल में चले जाते हैं। कोई बाजार के बीच तरणताल बनाकर पैसा बना ले जाता है, कोई तरणताल को पटवाकर पैसा बना लेता है। किसी चीफ ने अपने चहेते को चौदह दुकानों का कांपलेक्स ही लिख दिया तो किसी ने एक मामूली ठेले के बदले अपने जिले जवार के मनई को भारी भरकम दुकान एलाट कर दी।

छोटे कर्मचारी नहीं बदलते। इंसपेक्टर से लेकर चपरासी तक सब डटे रहते हैं। केवल प्रशासक आते-जाते हैं।

नये चीफ नेता टाइप आदमी हैं, ऐसा पहले ही सुन चुके थे। आपात काल के समय वे

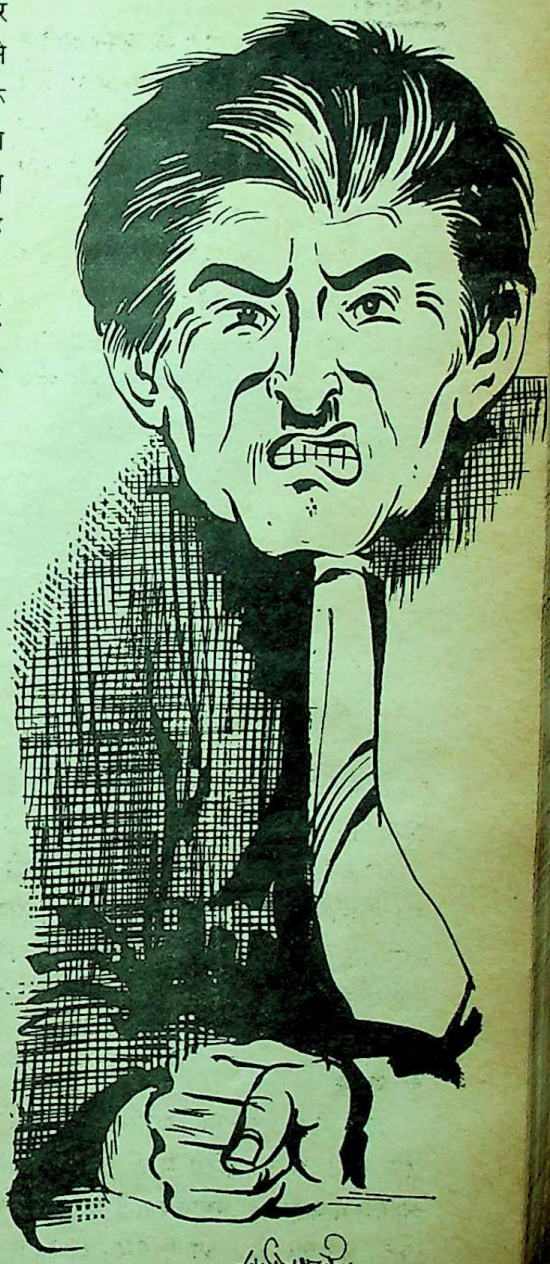

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

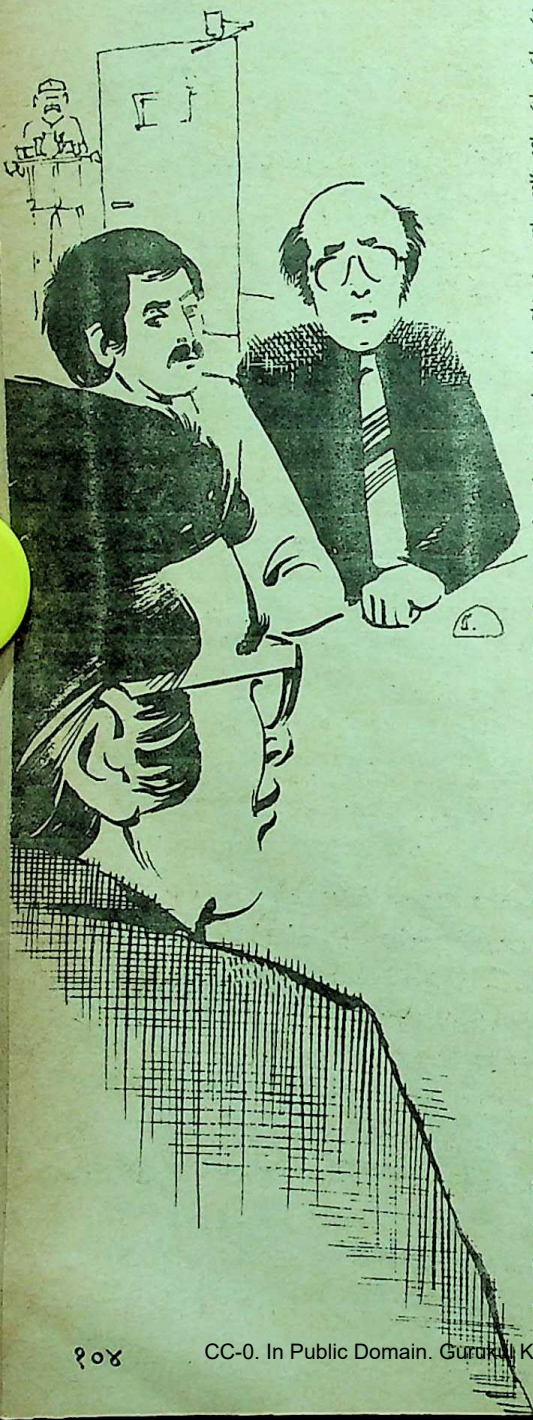

अनुशासन पर्व मना रहे थे फिर जनताकाल में जेब में इत्र लेकर चलने लगे। अवसर देखकर उचित व्यक्ति को महका देते थे। आजकल इक्कीसवीं सदी में जाने की ताबड़तोड़ तैयारी में हैं। उनके बारे में कई बातें उनके आने से पहले ही जान ली गयी थीं। उनके जिले के कर्मचारी अकड़कर चलने लगे थे। एक कनिष्ट मंत्री जो केवल उनके प्रदेश से संबंधित थे, काफी प्रसन्नता का अनुभव करने लगे। बाकी लोग परेशानी में थे। उन्हें आधार नहीं मिल रहा था। कई लोग जो उनके प्रदेश के नहीं थे, वे केवल हिंदी भाषी होने के कारण अपनी रिश्तेदारी तलाशने लगे। जो दक्षिण भारतीय थे, उन्हें घबराहट हो रही थी मगर किसी ने बताया कि वे पहले जाति को महत्त्व देते हैं तब प्रांत और जिले को। दक्षिण भारतीयों ने कमीज के भीतर हाथ डालकर दफ़्तर में पहली बार अपनी जनेऊ को देखा। वे प्रायः भूल गये थे कि उनका भी कभी उपनयन संस्कार हुआ था। बहुत दिनों के बाद आज उन्हें अपने संस्कारवान पिता की याद आयी, जिन्होंने उचित समय पर उन्हें यह अस्त्र दे दिया था। मगर जनेऊ विहीन अहिंदी भाषी कर्मचारी लगभग निराधार हो गये।

● ● ●

धीरे-धीरे तस्वीर साफ होने लगी। प्रशासक महोदय का बंगला काफी दूर था। वे योगाभ्यासी थे। पैदल ही चलते थे। अग्रवाल मौके की तलाश में थे। यह पहला अवसर था जब अग्रवाल को किसी प्रशासक ने इस तरह झिड़क दिया था। मगर अग्रवाल भी अग्रवाल ही थे। उसने पहले चीफ की पूरी जन्म कुंडली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी। अग्रवाल ने पता लगा लिया कि चीफ थोड़ा-सा क्रैक है। पैदल चलना, बात बेबात गुस्सा दिखाना, ईमानदारी का ढिंढोरा पीटनी, गाली-गलौच पर उतर आना अधपगले चीफ का शगल है, यह अग्रवाल ने जान लिया। अग्रवाल ने जान लिया कि खुशामद और झूठी तारीफ अब पहला अस्त्र सिद्ध होगा। अग्रवाल पुराना साधक है। उसे कई अहमक चीफों को चलता करने का अच्छा खासा अनुभव है। अग्रवाल उनकी जाति के नहीं थे मगर थे तो उन्ही के इलाके के। डूबते को तिनके का सहारा जब काफी हो सकता है तब अग्रवाल के लिए तो यह बहुत बड़ा आधार था।

जरूरतमंद लोगों को कर्जा दिलवाकर हिस्सों का बटवारा करवाता। कोर्ट में जमानत लेने का धंधा करता और अवैध कब्जा करवाता। अवैध कब्जाधारी उसे अपना जमींदार समझते। अग्रवाल किसी भी इंस्पेक्टर के कार्यक्षेत्र में रातोंरात बेजा कब्जा करवा देता। इंस्पेक्टर अगर मुस्तैद होता तो उसे हिस्सा दिलवा देता वर्ना बिचारे इंस्पेक्टर के हिस्से में घुड़की ही हाथ लगती। अग्रवाल को किसी का डर नहीं था। उसके ताल्लुकात मंत्रियों से भी थे। बल्कि कुछेक वर्षों से तो मुख्यमंत्री तक से उसकी रिश्तेदारी निकल आयी है। लोग अग्रवाल से डरते भी हैं।

पत्रकारों से प्रशासक को खास चिढ़ थी। मगर अपने क्षेत्र के निवासी पत्रकारों पर वे विशेष कृपादृष्टि रखते। दो पन्नों के अखबारवाले, प्रतिष्ठित पत्रकारों पर इलाकाई आधार पर भारी पड़ते। दूपतियां अखबारों को भूखंड और दूकान तक दे देते मगर शर्त केवल यह होती कि बाकायदा उनका जीवन चरित्र राधेश्याम शैली में बड़े अक्षरों में चित्र सहित लोगों के सम्मुख प्रस्तुत हो।

पत्रकारों चीफजी बायीं ओर से चिढ़ते थे। उन्हें दुर्घटनाग्रस्त होना पसंद था मगर बायें चलना गवारा नहीं था। वे धीरे-धीरे रुक-रुककर दायें-दायें चलते थे। दफ़्तर तक वे दायें चलकर ही आते। अग्रवाल को इससे कुछ लेना-देना नहीं था। प्रशासक बायें चले तो ठीक दायें चले तो ठीक। अग्रवाल को उनके जीने-मरने का नहीं अपने जीने-मरने का सवाल खाये जा रहा था। अग्रवाल एक काम नहीं करता था। बीमा से लेकर जमीन खरीदी बिक्री तक का कारोबार वह दिनभर में करता। बैंक से

मगर इस सबके बावजूद अग्रवाल का स्लोगन है—'अपना साहब अपना विभाग, साहब चाहे जाए भाग।' वह विभाग प्रमुख को मुख्यमंत्री से अधिक तरजीह देता था।

इस बार दायीं ओर चलने की जिद्द करनेवाले इस अहमक चीफ ने अग्रवाल को काफी परेशान किया। मगर अग्रवाल कभी हारना नहीं जानता। उसने तपश्चर्या शुरू कर दी।

अभी चीफ घर से निकले ही थे कि अग्रवाल पहुंच गया स्कूटर लेकर। आगे-आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांयी ओर चीफ और पीछे-पीछे अग्रवाल। खींसे निपोरते हुए अग्रवाल ने लगभग दुहरे होकर नमस्कार किया। चीफ ने ललकार कर— जैसे पूछा—"हूंह कहो अग्रवाल क्या हाल है ?"

"ठीक है साहब, कृपा है आपकी।"

"कैसे इधर निकले ?"

"मैं तो साहब रोज ही इसी रास्ते से जाता हूं। महाजन जिस मार्ग से जाएं वही तो पंथ होता है।"

"तुम्हारे अंदाज का जवाब नहीं अग्रवाल।"

"जी, आदमी ही ऐसा हूं साहब।"

साहब आगे-आगे, अग्रवाल स्कूटर को घसीटते हुए पीछे-पीछे। इसी तरह दोनों दफ़्तर पहुंचते। तीन-चार दिन बाद अग्रवाल ने अवसर देखकर साहब को स्कूटर में विराजने के लिए राजी कर लिया।

वह दिन अग्रवाल के लिए लंका-विजय का दिन था।

● ● ●

धीरे-धीरे बदलाव आने लगा। प्रशासक के पास निगम का पूरा अमला था। इसके पहले भी प्रशासक आये मगर इस तरह विभाग की शक्ति को आत्मसात नहीं कर सके। प्रशासक ने ऐलान कर दिया कि शासकीय आवासों में अवैधानिक तरीके से निवास कर रहे लोगों को अब रहने नहीं दिया जाएगा।

पत्रकारों से प्रशासक को खास चिढ़ थी। मगर अपने क्षेत्र के निवासी पत्रकारों पर वे विशेष कृपादृष्टि रखते। दो पन्नों के अखबारवाले, प्रतिष्ठित पत्रकारों पर इलाकाई आधार पर भारी पड़ते। दूपतियां अखबारों को भूखंड और दूकान तक दे देते मगर शर्त केवल यह होती कि बाकायदा उनका जीवन-चरित्र राधेश्याम शैली में बड़े अक्षरों में चित्र सहित लोगों के सम्मुख प्रस्तुत हो।

एक मुहलगे सजातीय पत्रकार ने उन्हें एक बड़े पत्रकार के विरूद्ध काफी कुछ समझा दिया। पत्रकार के विरूद्ध दूसरे ही दिन थानेदार और तमाम लाव-लश्कर के साथ उनका अमला पहुंचा। पहुंचते ही वे पत्रकार के घर में घुस गये। पत्रकार के बच्चे बिलखने लगे। घर का सामान उठा-उठाकर ट्रक में लादा जाने लगा। औरतें विलाप करने लगीं।

तभी पत्रकार अपने कुछ लाठी धारी मित्रों के साथ पहुंचे और शुरू हो गया खेल। दे दनादन। प्रशासक तो जीप में सवार होकर भाग गये। पुलिस वाले चुपचाप तमाशा देखते रहे। अग्रवाल भी खिसक गये। दो इंस्पेक्टरों को गहरी चोटें आयीं।

कुछ दिनों के बाद सुना गया कि उनके संबंध उस पत्रकार से मधुर हो गये। पत्रकार का ननिहाल विभाग-प्रमुख के फूफागांव में निकल आया था।

अग्रवाल ने यह रिश्ता ढूंढ़कर निकाल दिया था।

अग्रवाल उनका 'विशेष सूबेदार' कहलाने लगा था। लोगों को अग्रवाल के स्कूटर का महत्त्व समझ में आ गया था। बातों का हिसाब जमने लगा।

विभाग-प्रमुख पाक-साफ बने रहते। अग्रवाल ही सारी गंदगी ढोता। रुपया, पैसा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना-देना सब उसी के जिम्मे था। एक दिन अग्रवाल प्रमुख के केबिन में रिपोर्टिंग कर ही रहे थे कि व्यापारी संघ का अध्यक्ष आ पहुंचा। अध्यक्ष ने पहुंचते ही पूछा, "साहब, आपने बिजली काटने का हुक्म किसके कहने पर दिया है?"

"कानून के कहने पर" साहब ने गंभीरता पूर्वक कहा।

"अग्रवाल का नाम कानून कब से हो गया हूजूर।"

"बकवास मत कीजिए।"

"बकवास साहब आप कर रहे हैं ? पांच सौ रुपया लेकर भी यह अग्रवाल हमारा काम नहीं कर रहा है। जब नहीं करना था तो क्यों लिया रुपया ?"

—"घूंस देना और घूंस लेना दोनों अपराध है। आप भी तो आधे के अपराधी हैं।"

—"बिल्कुल ठीक साहब, तब हमारी ही रोशनी क्यों जाए। अग्रवाल का भी बल्ब फ्यूज कीजिए। आधा अपराध तो उसका भी है। कीजिए सस्पेंड उसे भी।"

—"मैं देख रहा हूं कि आप मेरी शालीनता का गलत अर्थ लगा रहे हैं। हम स्वतंत्र हैं कुछ भी करने को। चले जाइए कमरे से। हमें ये सब सुनने की आदत नहीं" कहते हुए चीफ कांपने लगे।

अग्रवाल ने सम्हाला। बात शहर में फैलने लगी। आये दिन चीफ के खिलाफ प्रदर्शन होने लगे। शहर सुलगने लगा।

चीफ का सारा योगाभ्यास व्यर्थ होने लगा। उन्हें लगता कि शहर उनके खिलाफ हो गया है। वे भीतर ही भीतर डरने लगे थे। शाम को जल्दी ही निकल पड़ते। अग्रवाल उन्हें तरह-तरह से दिलासा देता। चक्रव्यूह में फंसे चीफ को अग्रवाल के सुरक्षा-चक्र का बड़ा भरोसा होने लगा था। अग्रवाल अपना मायावी फंदा पूरे जोर-से फेंकने लगा। पैसा पहले से कहीं अधिक आने लगा। चीफ आमूल-चूल बदलने लगे थे।

वे केवल दफ़्तर तक सिमटकर रहने लगे। बदलाव ही ऐसा था कि विभाग के लोग भी प्रसन्न रहने लगे। कुछ दिनों बाद चीफ ने महसूस किया कि सही मायनों में अब वे अग्रवाल के सहारे पीछे बैठकर चलने लगे हैं और जिस गाड़ी में वे बैठ गये हैं, उस गाड़ी के संचालन में पूर्णतः अग्रवाल का नियंत्रण है।

● ● ●

उन्हें रातों को लंबे-लंबे सपने आते। स्वप्न में वे केवल एक दृश्य लगातार देखते कि चारों ओर हथियार लिए लोग उनकी ओर आग्नेय नेत्रों से देख रहे हैं और वे अग्रवाल की गाड़ी में दुबक कर बैठे गंतव्य की ओर जा रहे हैं। गाड़ी की जानलेवा गति से भी परेशान हैं और उतरकर चलने में भी खतरा नजर आ रहा है। तभी गाड़ी एक अंधे कुएं में गिर जाती है और वे अग्रवाल सहित उसमें समा जाते हैं।

एल. आई. जी.-१८ आमदीनगर, कसारीडिंह, दुर्ग
(म. प्र.) ४९१००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अंखियां थक गयीं पंथ निहार

● स्वाति मुक्ता

प्रियतम की प्रतीक्षा का कोई अंत भी होता है क्या ?

प्रियतम मिल जाते हैं, आकांक्षाएं तृप्त होती हैं, बाधाएं मिट जाती हैं, बिछुड़ा साथी मिलता है, आजीवन संगसंग रहने की स्थितियां निर्मित हो जाती हैं।

किंतु मानव हृदय की इस आकुल पुकार का कहीं कोई अंत है क्या ? प्रियतम की प्रतीक्षा कभी चुकी है क्या ? बड़े-बड़े साधक क्या खोजते हैं ? ध्यान, ज्ञान और मौन क्या-क्या कहते हैं ? यही तो कि अभी पंथ चुका नहीं, प्रियतम मिला नहीं। मौन ज्यादा बड़ा खोजी है !

यंत्रणाओं से प्रारंभ होनेवाली प्रियतम की खोज की अपरिपक्व यात्रा करनेवाला मानव मन शिखरों तक पहुचंकर, गहनतम अनुभूतियों का स्वामी होकर भी, खोज के उपायों को आनंददायक बनाकर भी जिस व्याकुलता को लेकर चलता रहता है, वह मन किसे खोजता है ? अपने को जानकर भी क्या मनुष्य इस अकुलाहट से छुट्टी पा जाता होगा ? यदि ऐसा संभव है तो फिर मनुष्य होने में उसकी क्या सार्थकता रह जाती होगी ?

ज्योति की प्रतीक्षा

सृष्टि में मनुष्य के जीवन को भोगना ही एक शर्त को स्वीकार कर लेना प्रतीत होता है। एक परिधि में ही महान बनना, एक रहस्य तक पहुंचकर ज्ञानी हो जाना, इहलौकिक प्रणालियों से मान्यता पा जाना, चलते-चलते ठहर जाना, कहते-कहते मौन धारण कर लेना। क्या यह सब सचमुच यात्रा का अंतिम पड़ाव है ? प्रियतम क्या यहां आकर मिल ही जाता है ? वह ज्योति, जिसकी हम किरण हैं या प्रतिबिंब हैं, क्या वह ज्योति हमें मिल ही जाती है ? और क्या उसका मिल जाना इतना महत्त्वपूर्ण है ? उसके बाद चिरविश्रांति या चिरनिद्रा है क्या ?

मेरी अनुभूति, क्षुद्र-सी अनुभूति प्रमाण बताती है कि ईश्वर को पा लेना यात्रा का अंत नहीं, खोज का विश्राम नहीं, बल्कि वास्तविक यात्रा का प्रारंभ है। वस्तुतः यात्रा करने का उपाय ही अब हाथ लगता है। आठों दिशाओं के क्षितिज और विस्तार दिखानेवाली चोटी पर पहुंचकर ही रास्ता निर्धारित किया जा सकता है, इस निश्चय के साथ कि अपेक्षा तो किसी भी मार्ग और एक भी ओर-छोर की अब संभव नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहंकार का रूपांतरण

यहीं सब अहंकार गल जाते होंगे। सर्वोच्च इहलौकिक आसन पर जाकर जो अहंकार न गला तो क्या मिला ? और वहां पहुंचते-पहुंचते अपने सभी अहंकारों को कूट-कूटकर, भर-भरकर न पहचान लिया, तो शिखर पर के रूपांतरण का कैसा आनंद !

शिखर की विनम्रता घाटियों में पनपे अहंकार का ही सहज रूपांतरण है। वह अहंकार जितना ओछा होता है, यात्रा उतनी ही बोझिल हो जाती है, अहंकार जितना मानवोचित और न्यायोचित हो, यात्रा उतनी ही लक्ष्यदायक और सार्थक हो जाती है। विनम्रता को बूझने के लिए अहंकार की सहज यात्रा ही अनुकूल है। समाजप्रदत्त विनम्रता एक मूढ़ता ही है।

उस पार के रहस्यों में यंत्रणामुक्त होकर विलीन होने के लिए संभवतः यह आवश्यक है कि मनुष्य विनम्र-मुग्ध होने तक अपने सामर्थ्य पर अभिमान करे, अपने युग की प्रवृत्तियों के लिए घोषणापूर्वक चुनौती बने। यह घोषणा जब दृढ़तर होती है, तब बिना शब्दों के भी अपने अहंकार को प्रदर्शित कर देती है। खुले मन सहित, पूर्वाग्रहमुक्त लोग इस अहंकार के मर्म को न केवल जान लेते हैं, बल्कि बहुत उल्लेखनीय ढंग से प्रेरित-प्रभावित होकर सहसा अपने अछूते रास्ते भी चुन लेते हैं। भीड़

अकेले पड़ जाने की चुनौती को स्वीकार करने से ही हम किसी अन्य मित्र को अपनी यात्रा से प्रेरित कर पाएंगे, समूह के परिवर्तित होने की प्रतीक्षा करने से नहीं। समूह को केवल जोश दिया जा सकता है, जो क्षणिक होता है। व्यक्ति-व्यक्ति को प्रेरणा देने का आग्रहमुक्त उपाय है अपने ही भीतर के व्यक्ति को अकेले चल पड़ने के लिए राजी कर लेना। चलने के बाद ही पता चलता है कि यह मार्ग कितना अभय और आनंदपूर्ण है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जुटती है। यह अपरिहार्य है।

असमाप्त यात्रा

प्रियतम को अछूते ढंग से आजीवन तलाश करनेवाला मनुष्य भीड़ को भी कुछ न कुछ दे जाता है। यहां तक कि उसके निंदक भी एक प्रकार से उससे अनुकूल होने प्रेरित होने की ही छटपटाहट से ही संचालित होते हैं। हर युग में यह काम बड़े निराले ढंग से संपन्न होता है। लोग प्राय: नहीं जानते कि वे निंदक नहीं, जिज्ञासु हैं।

अछूते व्यक्ति को अंतिम गुरु या अकेला मार्गदर्शक मान लेनेवाले लोग यद्यपि गलती पर होते हैं, किंतु उन्हें अपनी गलती का अहसास बहुत जल्दी हो जानेवाला होता है। वे होते तो खोजी ही हैं। उन्हें अपनी निजी यात्रा कुछ कठिनाइयों के बाद समझ में आ जाती है। तब गुरु ही नहीं, ईश्वर भी बदल जाता है। कितने ही अन्य ईश्वर बनते जाते हैं—मात्र पड़ाव !

वह प्रियतम बुलाता ही जाता है। सृष्टि के स्वभाव—'चलते चलो' के स्वभाव को मनुष्य ने अपने रोमरोम में पाया है।

क्या इस स्वभाव से मुक्ति के बाद की यात्रा कुछ अधिक सरल, कुछ अधिक आनंददायक नहीं हो जाती होगी ? और क्या नयी यात्रा पहले से अधिक स्फूर्तिदायक न हो जाती होगी ? यंत्रणाओं से चलकर निश्चिंतताओं तक मनुष्य मनुष्य ही है, और उसकी निश्चिंतताएं भी नवीन उद्भावनाओं, अकुलाहटों, आह्वानों की ही जनक हैं, किसी प्रस्तर-रूढ़ता की प्रणेता नहीं।

प्रस्तर-रूढ़ता ही कौन-सी जड़ स्थिति है ? उसमें भी कितने ही परमाणु यात्रापथ पर परिक्रमारत हैं, संघर्षलीन हैं ! कृष्णविवर (ब्लैक होल) कहां नहीं हैं ? हां, यह चरम स्थिति हमें प्रेम के प्रति निरंतर निखारती चलती है। हम आदानप्रदान की इहलौकिक परिभाषाओं से जन्मे तनावों से तो बहुत अलग हो जाते हैं।

यह सब इसी जन्म में, अब और यहीं संभव है। मनुष्य यदि प्रकृतिविरोधी सामाजिक व पारिवारिक प्रणालियों की रक्षा के लिए प्रशिक्षण पाकर प्राण तक दे सकता है, तो निसर्गगत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावगत एवं मानवोचित यात्रा का मुसाफिर बनना क्यों स्वीकार नहीं कर सकता ? आवश्यकता तो स्वीकार भर करके चल देने की है !

अभय और आनंद की अनुभूति

अकेले पड़ जाने की चुनौती को स्वीकार करने से ही हम किसी अन्य मित्र को अपनी यात्रा से प्रेरित कर पाएंगे, समूह के परिवर्तित होने की प्रतीक्षा करने से नहीं । समूह को केवल जोश दिया जा सकता है, जो क्षणिक होता है । व्यक्ति-व्यक्ति को प्रेरणा देने का आग्रहमुक्त उपाय है अपने ही भीतर के व्यक्ति को अकेले चल पड़ने के लिए राजी कर लेना । चलने के बाद ही पता चलता है कि यह मार्ग कितना अभय और आनंदपूर्ण है !

अपने केवल अपने प्रियतम की ओर चलने से जो आनंद मिलता है, वह आनंद पग-पग पर मिलन की अनुभूति देने लगता है । उस पार से प्रियतम भी तो चल चुका होता है । चलते-चलते ही बदलती हैं प्रियतम की परिभाषाएं, प्रियतम की मूरत और प्रियतम के प्रति हमारी आकांक्षा ! चलते-चलते ही समझ में आती है कविता और चलते-चलते ही मिलती है वह अनुभूतियां, जिन्हें शब्द और आकार देने में प्रायः ईश्वर भी कई बार असमर्थ हुआ है । वह स्वयं भी मुसाफिर है । उसे भी प्रियतम की खोज है । आखिर वह हमारा ही तो ईश्वर है !

साहित्य निदेश, पांवटा साहब, जिला सिरमोर, हिमाचल प्रदेश-१७३०२५

फरवरी, १९८८

इनके भी बयां जुदा जुदा

फलक की सिम्त न देखो दुखों से घबराकर
जमीं की बात जमीं तक रहे तो अच्छा है
'—इंद्रस्वरूप नादां

अपने हालात का खुद से भी गिला कर न सकूं
कोई इतना भी न मजबूर बना दे मुझको
'—बदीउलज्जुमा खावर

हमने इक कतरा का एहसान गवारा न किया
पी गये लोग खुदा जाने समंदर कितने
'—चंद्र प्रकाश बिजनौरी

मैं सच कहूंगी मगर फिर भी हार जाऊंगी
वो झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा
'—परवीन शाकर

भरी आबादियों में जान का खतरा जियादा है
अगरचे हादसे सुनसान राहों में भी होते हैं
'—शुजा खावर

ले के उस पार न जाएगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही दलदल में उतरना होगा
'—मख्मूर सईदी

जिसकी फितरत में जरा-सी भी वफा मिलती है
उसको दुनिया में बहुत सख्त सजा मिलती है
'—अज्ञात

कितनी खामोश है इन बंद मकानों की फजा
किसी दरवाजे की जंजीर हिलाकर देखो
'—अहमद वसी

हवस की बांहों में जकड़ी सिसक रही है हया
कदम कदम पे यह मंजर दिखायी देता है
'—अरफान बाराबंकवी

आस्मां से खयाल उतरेगा
कोरे कागज को सामने रखिए
'—निजाम-उल-दीन निजाम

—प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

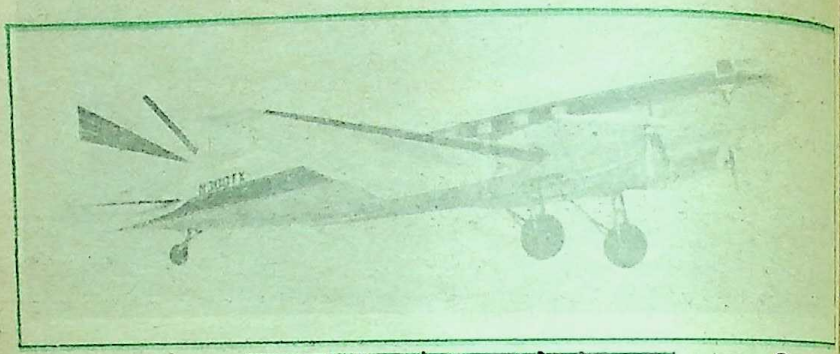

यह देखकर आश्चर्य होता है कि जंबो जेट तथा सुपरसानिक विमानों के इस आधुनिक युग में भी अदना डकोटा अच्छा स्थान बनाये हुए है। इसके अलावा आज भी कई ऐसे कार्य हैं जोकि जंबो जेट अथवा कंकार्ड करने में असमर्थ हैं किंतु डकोटा उन्हें बखूबी पूरा कर सकता है।

सदाबहार विमान-डकोटा

बिमल श्रीवास्तव

यह एक ऐसे विमान की कहानी है, जो आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व बनाया गया था तथा परिवहन विमानों के क्षेत्र में सबसे अधिक बिकनेवाला वायुयान सिद्ध हुआ है। यद्यपि इस विमान को अब भारतीय वायुसेना से सेवानिवृत्त कर दिया गया है, किंतु अनेक प्राइवेट कंपनियों द्वारा यह विमान अभी भी प्रयोग में लाया जाता है। इसी से इस विमान की महत्ता समझ में आ जाती है।

संयुक्त राज्य अमरीका की डगलस विमान निर्माण कंपनी द्वारा निर्मित इस विमान का वैमानिक नाम तो डी. सी. ३ रखा गया था परंतु यह अपने दूसरे नाम अर्थात 'डकोटा' के नाम से अधिक जाना जाता है।

डकोटा में यात्रियों के बैठने के लिए [illegible] सीटें होती हैं तथा यह लगभग २८० किलोमी[illegible] प्रति घंटे की गति से उड़ान भरता है। [illegible] विमान लगभग २,०००-२,५०० मीटर [illegible] ऊंचाई पर उड़ता है तथा बिना रुके हुए एक [illegible] में २,४०० किलोमीटर तक लंबी उड़ान भर[illegible] सक्षम है। डकोटा का संपूर्ण भार ल[illegible] १२,२५० किलोग्राम होता है, जिसमें से ४,[illegible] किलोग्राम यात्रियों तथा माल का वजन [illegible] है। डी. सी. ३ में अमरीका की प्रैट एंड [illegible] कंपनी द्वारा निर्मित दो पिस्टन इंजन 'पी. उ[illegible] १८३०' लगे होते हैं तथा प्रत्येक इंजन १[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र सरकार का डकोटा विमान

हॉर्स पावर की शक्ति उत्पन्न करता है।

कविताओं से अभिनंदित : डकोटा

डकोटा एक ऐसा विमान है, जिसकी प्रशंसा में अनेक कविताएं लिखी जा चुकी हैं तथा इसके ऊपर कई पुस्तकें छप चुकी हैं। इनमें से कुछ कविताएं तथा पुस्तकों तो उस समय लिखी गयी थीं जब संसार में अनेक जेट विमान-जैसे बोइंग ७०७ डी. सी. ८, बोइंग ७२७ आदि सर्वप्रचलित हो चुके थे। दूसरे शब्दों में, उन लेखकों ने डकोटा की महत्ता को जेट विमानों के सामने भी समझा और पहचाना था। इस प्रकार की कुछ पुस्तकें के उदाहरण हैं,—कैरोल ग्लाइन द्वारा रचित 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' एवं लेन मॉरगन द्वारा लिखित 'द स्टोरी ऑव द फैबुलस एरोप्लेन' तथा 'डगलस डी. सी. ३' इत्यादि।

हर परिस्थिति के अनुकूल

डी. सी. ३ का सबसे बड़ा गुण है, इसका हर प्रकार की परिस्थितियों में समझौता कर लेना। इसीलिए यह अफरीका के घने जंगलों और गर्म जलवायुवाले क्षेत्रों से लेकर अलास्का के बर्फीले क्षेत्रों तक, संसार के लगभग हर देश में उड़ान भर चुका है। यात्रियों तथा माल को ढोने के अतिरिक्त इस विमान से अनेक प्रकार के दूसरे कार्य भी कराये जा चुके हैं। उदाहरण के लिए इसके पहियों पर स्की लगाकर बर्फ में, तथा तैरनेवाले फ्लोट लगाकर पानी में उतारा जा चुका है। डकोटा के द्वारा ग्लाइडरों को हवा में भेजने का कार्य तो सुचारु रूप से किया ही जाता रहा है, किंतु एक बार तो एक डकोटा विमान के दोनों इंजन निकाल दिये गये और उसे खुद भी ग्लाइडर की तरह बगैर इंजनों के उड़ाया गया था। वियतनाम युद्ध में डकोटा द्वारा गोलाबारी करने का भी काम लिया गया था। विमान के कार्गो दरवाजे में तीन तीव्र गतिवाली मशीनगनें लगा दी गयी थीं, जिनकी सहायता से एक मिनट में १८,००० राउंड तक गोलियां चलायी जाती थीं। इस प्रकार अबोध-सा दिखनेवाला डकोटा इस मौके पर अत्यंत घातक भी सिद्ध हुआ था। ऐसे कई डी. सी. ३ विमानों का उपयोग वियतनाम में किया गया था जिन्हें 'अटैक कार्गो' कहा जाता था।

द्वितीय विश्व युद्ध में तो डकोटा ने बहुत कमाल दिखाया। उस समय इस विमान का उपयोग मुख्यतः सेनाओं को लाने, ले जाने, रसद तथा सैनिक सामग्री की आपूर्ति, घायलों तथा बीमारों के उपचार तथा उनके स्थानांतरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि के लिए किया गया था। जनरल ड्वाइट आइजनहावर ने विश्व युद्ध के बाद कहा था कि हमारे पास एक बड़ी ताकत यह भी थी कि हमारे पास डी. सी. ३ विमान थे।

वायुयान का शुभारंभ

डकोटा विमान का निर्माण बड़ी रोचक परिस्थितियों में हुआ था। जनवरी १९३३ में अमरीका की बोइंग कंपनी ने बोइंग २४७ नामक यातायात विमान का निर्माण किया था। दस सीटोंवाला यह विमान सही मानों में उस समय का पहला परिवहन विमान था। इसलिए विभिन्न एयरलाइनें बोइंग-२४७ खरीदने के आर्डर देने लगीं। इतने अधिक आर्डर एक साथ मिल जाने से बोइंग कंपनी को उन्हें पूरा कर पाना कठिन प्रतीत होने लगा। इसी बीच ट्रांस वर्ल्ड एयरवेज नामक हवाई कंपनी ने भी कुछ बोइंग २४७ खरीदने के आर्डर दिये। किंतु उन्हें ये विमान बहुत जल्दी चाहिए थे, जिन्हें पूरा करने में बोइंग कंपनी ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। इस मौके का फायदा अमरीका की एक अन्य विमान उत्पादन कंपनी 'मैकडोनाल्ड डगलस' ने उठाया और जुलाई १९३३ में उन्होंने ट्रांस वर्ल्ड एयरवेज को बोइंग २४७ से मिलता-जुलता १२ सीटोंवाला विमान सप्लाई किया जिसका नाम डी. सी. १ रखा गया था।

डगलस कंपनी को संभवतः उस समय सपने में भी खयाल नहीं आया होगा कि डी. सी. का निर्माण करके उन्होंने कितनी बड़ी इमारत की नींव डाल दी है। डी. सी. १ विमान एयरलाइनों को बोइंग २४७ की अपेक्षा अधिक उत्तम प्रतीत हुआ। इसलिए उन्होंने डी. सी. १ के आर्डर देने शुरू किये, साथ ही उन्होंने इस विमान की कुछ खामियों की तरफ भी डगल कंपनी का ध्यान दिलाया। उन खामियों को करने के उद्देश्य से डगलस ने डी. सी. १ सुधरा हुआ मॉडल तैयार किया जिसका उन्होंने डी. सी. २ रखा। डी. सी. २ काफी से बिका। इससे प्रोत्साहन पाकर डगल कंपनी ने डी. सी. २ के आकार को बढ़ाया उसमें कुछ और संशोधन किये। इस प्रकार डी सी. ३ का जन्म हुआ।

पहला डी. सी. ३ विमान १७ दिसम्ब १९३५ को बनकर तैयार हुआ। उसे अमरी एयरलाइन ने जून १९३६ में पहली बार न्यू से शिकागो तक की उड़ान के लिए इस्तेमा किया। डी. सी. ३ के गुणों से एयरलाइनें बह प्रभावित हुईं। एयरलाइनों के अलावा इ विमान ने सेना का भी ध्यान आकर्षित किय इस प्रकार शीघ्र ही डी. सी. ३ विश्व में अं एयरलाइनों तथा वायुसेनाओं का प्रमुख बन गया।

द्वितीय विश्व युद्ध में लोकप्रिय

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तो इस वि का उत्पादन बहुत अधिक बढ़ गया। निर्मा अगले छह वर्षों में अर्थात जब जापान ने हार्बर पर आक्रमण किया था, उस समय ८०० से अधिक डी. सी. ३ विमानों उत्पादन हो चुका था, जिनमें से लगभग विमान एयरलाइनों ने खरीदे थे। मित्र रा विश्व युद्ध में डी. सी. ३ का बहुत इस्ते किया था। कहते हैं कि डकोटा नामकर रायल एयरफोर्स द्वारा किया गया था।

डी. सी. ३ का उत्पादन अमरीक अतिरिक्त कुछ अन्य देशों में भी लाइसें

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

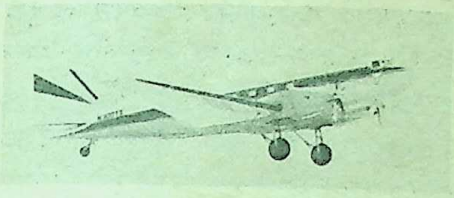

१९६४ में अमरीका की सरकारी संस्था फैडेरल एवियेशन ऐडमिनिस्ट्रेशन ने डी. सी. ३ का स्थान लेनेवाले विमान की डिजाइन तैयार करने के लिए एक लाख डालर के पुरस्कार की घोषणा की। इस प्रतियोगिता में नार्ड २६२, पोटेज ८४१, फैयरचाइल्ड-जैसे नौ नये विमानों के डिजाइन उपलब्ध हुए, किंतु इसमें से किसी को पुरस्कार के योग्य नहीं समझा गया।

अंतर्गत किया गया था। उदाहरण के लिए सोवियत यूनियन में इसका निर्माण ली-२ के नाम से किया गया था। इसके अलावा जापान ने भी कुछ डी. सी. ३ बनाये थे।

अब तक उत्पादित डकोटा विमानों की संख्या के बारे में तो कुछ मतभेद है किंतु ऐसा अनुमान किया जाता है कि सन् १९४५ तक जब डकोटा का निर्माण बंद कर दिया गया था उस समय तक सभी मॉडलों को मिलाकर लगभग ११,००० से अधिक डकोटा विमानों का निर्माण किया जा चुका था। यह एक चौंका देनेवाली संख्या है, क्योंकि अब तक किसी भी अन्य परिवहन विमान की बिक्री का रेकॉर्ड इस संख्या के कहीं आसपास भी नहीं फटक पाया है। वैसे जेट विमानों से सीधे तौर पर डकोटा की बिक्री की तुलना करना तो तर्कसंगत नहीं होगा, क्योंकि इन विमानों के आकार, गति, सीटों की संख्या, मूल्य इत्यादि में बहुत अंतर होता है। किंतु फिर भी यदि केवल रुचि की दृष्टि से देखा जाए तो बिक्री के हिसाब से दूसरा नंबर बोइंग ७२७ जेट का आता है, क्योंकि सन् १९८० तक लगभग साढ़े सोलह सौ बोइंग ७२७ बेचे जा चुके थे। इसी प्रकार डी. सी. ९ नामक जेट विमान तीसरे नंबर पर आता है। सन् १९८० तक लगभग ९८५ विमान बनाये गये थे।

महत्ता में कमी नहीं

वैसे विभिन्न प्रकार के आधुनिक तथा विकसित विमानों के आ जाने के बाद डकोटा की महत्ता में कोई विशेष कमी नहीं आयी है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि सन् १९७५ तक विश्वभर में लगभग ८०० डी. सी. ३ विमान चालू हालत में थे। कहा जाता है कि एक डकोटा ने तो उस समय तक कुल मिलाकर लगभग ८४,००० घंटों की उड़ान पूरी कर ली थी। अर्थात एक वर्ष में इसके उड़ान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औसत लगभग २१५० घंटे का था। दूसरे शब्दों में औसतन यह डकोटा लगातार ४० वर्षों तक हर रोज लगभग छह घंटों की उड़ान करता रहा। इस उदाहरण से डकोटा विमानों की सुदृढ़ता तथा स्थिरता का अनुमान लगाया जा सकता है।

डकोटा का स्थान लेने के लिए अनेक प्रकार के विमानों के उत्पादन की योजनाएं बनायी गयी तथा ऐसे कुछ विमानों का निर्माण भी किया गया किंतु सही मानों में डकोटा का स्थान लेनेवाला वायुयान आज तक नहीं बन पाया है।

भारत में डकोटा विमान

हमारे देश में विश्व युद्ध के बाद अनेक प्राइवेट एयरलाइनें जैसे भारत एयरवेज, अंबिका एयरलाइन, डालमिया जैन एयरवेज इत्यादि चालू की गयी थीं। इन कंपनियों ने अपनी सेवाएं चलाने के लिए भारत सरकार से ११५ डकोटा विमान खरीदे, जिन्हें सरकार ने युद्ध के दौरान वायु सेना के लिए खरीदा था।

१९५३ में प्राइवेट कंपनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इस प्रकार उनके ७४ डकोटा, नयी राष्ट्रीयकृत कंपनी इंडियन एयरलाइंस कार्पोरेशन (अब इंडियन एयरलाइंस) के पास आ गये। इन डकोटा विमानों तथा कुछ अन्य विमानों की सहायता से इंडियन एयरलाइंस कार्पोरेशन ने अपनी सेवाएं देश के विभिन्न भागों में प्रारंभ कर दीं। डकोटा देश के अंदरुनी भागों में तथा छोटे हवाई अड्डों पर आसानी से उतारे और उड़ाये जा सकते थे। इन्हीं के द्वारा देश के दुरूह तथा कठिन स्थानों (उदाहरण के लिए असम तथा उत्तर पूर्वी भारत के कुछ अन्य राज्यों की यात्रा सरल हो गयी थी।

कुछ समय के उपरांत विश्व में टर्बोप्रोपैलर तथा जेट विमानों का पदार्पण हुआ। ये विमान आकार में बड़े थे तथा इनकी गति भी तेज थी। इसके अलावा इन विमानों में ईंधन के लिए पैट्रोल की जगह पर कैरोसीन का प्रयोग होता था। इस प्रकार पिस्टन विमानों की तुलना में इन विमानों में ईंधन का खर्चा कम आता था। इन्हीं सब कारणों से इंडियन एयरलाइंस ने धीरे-धीरे पहले टर्बोप्रोपैलर विमान (जैसे बाइकाउंट, फाकर, एबरो इत्यादि) तथा बाद में जैट विमान (जैसे-कैरावेल, बोइंग ७३७ एयरबस इत्यादि) खरीदना प्रारंभ कर डकोटा विमानों को बेचना चालू कर दिया था।

इस प्रकार सन् १९६० में इंडियन एयरलाइंस के पास कुल ५८ डकोटा थे जो कि सन् ७० तक पहुंचते-पहुंचते केवल २४ रह गये। आठवें दशक के मध्य तक इंडियन एयरलाइंस के लगभग सभी डकोटा विमान बेचे जा चुके थे।

बहुआयामी उपयोगिता

इंडियन एयरलाइंस के अलावा अनेक प्राइवेट कंपनियों के पास भी अपने डकोटा विमान थे जिनका उपयोग वे विविध कार्यों-जैसे माल तथा यात्रियों को लाने, ले-जाने इत्यादि के लिए करती थीं। कुछ औद्योगिक कंपनियां इन्हें कंपनी के मालिको तथा प्रबंधकों के प्रयोग में लाती रहीं। डकोटा का भरपूर उपयोग कर कई दिनों तक मद्रास का प्रसिद्ध समचारपत्र 'हिंदू' करता रहा था। 'हिंदू' के पास अपने डकोटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान थे जो सुबह समाचारपत्र की ताजा प्रतियां' बंगलौर, हैदराबाद, कोचीन इत्यादि नगरों में पहुंचा देते थे। इस प्रकार दक्षिण भारत के विभिन्न नगरों में 'हिंदू' की प्रतियां बिना किसी देरी के उपलब्ध रहती थी।

वैसे डकोटा का प्रयोग सैनिक तथा सुरक्षा कार्यों के लिए भी हमारे देश में नियमित रूप से किया गया है। भारत में आज भी लगभग १५ डकोटा विमान (सुरक्षा सेनाओं के विमानों को छोड़कर) चालू हालत में हैं। ये डकोटा एयरवर्क्स इंडिया बांबे, जे. के. कैमिकल्स, रेमंड वूलन मिल्स, बिड़ला जूट मिल्स, ग्वालियर रेयान, बिड़ला ब्रदर्स, महाराष्ट्र सरकार इत्यादि के पास हैं। सुरक्षा सेवाओं के पास भी डकोटा विमान बहुत दिनों तक उपयोग में लाये जाते रहे। किंतु मार्च १९८५ में भारतीय वायुसेना के अंतिम डकोटा विमान को विदाई दे दी गयी। इस प्रकार इस वफादार सेवक ने सुरक्षा सेनाओं का आजीवन साथ दिया।

यह देखकर आश्चर्य होता है कि जंबो जेट तथा सुपरसानिक विमानों के इस आधुनिक युग में भी अदना डकोटा अच्छा स्थान बनाये हुए है। इसके अलावा आज भी कई ऐसे कार्य हैं जोकि जंबो जेट अथवा कंकार्ड करने में असमर्थ हैं किंतु डकोटा उन्हें बखूबी पूरा कर सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि पैट्रोल का दाम इतना अधिक न बढ़ गया होता तो ये डी. सी. ३ विमान संभवतः अनेक वर्षों तक आकाश में दिखते रहे होते।

डबल्यू जेड, वीरेन्द्र नगर, हरी नगर बस डिपो के पास, नयी दिल्ली-११००५८

कैंसर अनुसंधान के लिए

सत्ताइस वर्षीया एने मिलर : स्काटलैंड की एक कुशल नौका चालक। एक बार वह 'रूपेर्ट' नामक अपनी नौका में सागर में यात्रा कर रही थी कि तूफान में फंस गयी। तूफान के कारण उसकी नौका का इंजन तथा अन्य यंत्र खराब हो गये और एने संकटों से घिर गयी। लेकिन उसने साहस न छोड़ा और समुद्र की उत्ताल तरंगों से किसी तरह अपनी नौका बचाये रही। छत्तीस घंटों तक वह तूफान से लड़ती रही। बाद में जब सागर शांत हुआ तो हवा के सहारे बहने के अलावा एने के पास कोई चारा नहीं था।

किसी तरह वह तट पर पहुंची तो परिचय देने पर उसे बताया गया कि उसे तूफान के कारण मृत समझ लिया गया था।

इस घटना के बाद श्री एने समुद्र में दुबारा यात्रा करने जा रही है। उसका उद्देश्य है इस समुद्र-यात्रा के जरिए कैंसर-अनुसंधान के लिए धन एकत्र करना।

दीर्घ जीवन का रहस्य !

लियोन चैरी—पौष्टिक भोजन के विशेषज्ञ, गत पच्चीस वर्षों से शाकाहारी। उनकी खोज है कि यदि हम पाषाण युग के मानवों-जैसा भोजन करें तो अधिक स्वस्थ और दीर्घजीवी रह सकते हैं। पाषाण-युगीन मानव जड़ी-बूटियों के अलावा मांसभक्षी था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● माखनलाल चतुर्वेदी

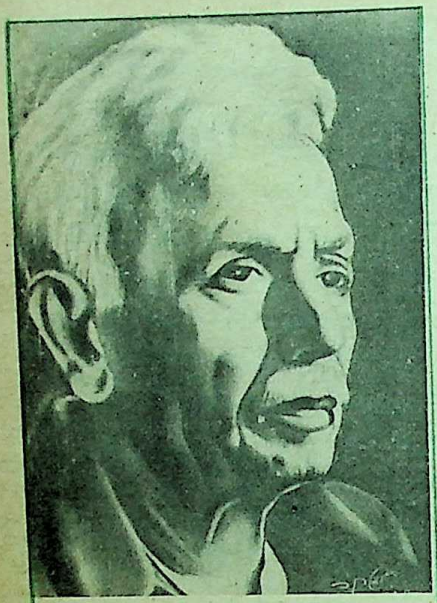

पं. माखनलाल चतुर्वेदी

स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी ओजस्वी कवि ही नहीं, कुशल गद्यकार भी थे। यहां प्रस्तुत है प्रखर पत्रकार पं. माधवराव सप्रे के निधन पर चतुर्वेदीजी का लिखा एक अप्रकाशित संस्मरण।

प्रस्तुति : ब्रजभूषण चतुर्वेदी

अगणितों के प्रेरक, सहस्रों के श्रद्धास्पद, मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय भावना के केंद्र और हिंदी को राष्ट्रभाषा के उन्नत स्थान पर, वर्षों के तप, उपवास और कष्ट सहन के पश्चात् ले जानेवालों में से एक धुरंधर कर्मण्य, पंडित माधवरावजी सप्रे अब इस संसार में नहीं हैं।

यों तो पिछले तेरह वर्ष, मेरे पंडितजी के स्नेहमय और तेजपूर्ण वातावरण में बीते थे, यों तो एक साथ, दो व्यक्तियों ने मेरी तुच्छ शक्तियों पर अपनी कृपा-सेना भेजी थी — श्रीयुत गणेशशंकरजी विद्यार्थी ने मेरे हृदय को गुनगुनाते रहने में लाचार करने के लिए और संकटों में कंधा लगाने के लिए, और पंडित माधवरावजी ने, मस्तिष्क और शरीर को सर्वथा सेवा में लेकर, इसके प्रत्येक क्षण की मध्यप्रदेश के लिए शपथ ले लेने के लिए। तो भी, पिछले महीनों से तो, मैं और पंडित माधवरावजी प्रायः साथ ही रहे थे। अक्तूबर में उनकी आज्ञा थी, "सम्मेलन अपनी वस्तु है, उससे उदासीन होना उचित नहीं, सम्मेलन में वृंदावन चलने के लिए २५ अक्तूबर को जबलपुर पहुंच जाइए। आपके पहुंच जाने पर ही मैं वृंदावन के संयोजकों को पत्र लिखूंगा। आज्ञा के अनुसार मैं भाई मनोहर पंत गोलवलकरजी के यहां, पंडितजी से जा मिला। आगरा-वृंदावन, देहली, कानपुर, इन स्थानों में हम साथ रहे। नवम्बर के अंत में वे पंडित बाबूरावजी पराड़कर के पास बनारस चले गये, मैं खंडवा आ गया। दिसम्बर में हम कांग्रेस में फिर मिल गये। वहीं जनवरी में मुझे छत्तीसगढ़ में आने की आज्ञा हुई। स्वास्थ्य तथा विपत्ति दोनों ही पर विचार करने से इनकार कि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नियति का स्वागत करना चाहता हूं"

— माधवराव सप्रे

पं. माधवराव सप्रे

गया। तारीख ६ जनवरी को पंडित माधवरावजी के अनन्य हृदय साथी और मेरे सम्मान्य बंधु पंडित रविशंकरजी शुक्ल का, स्वर्गीय सुशीला की मृत्यु के समय का जो सहानुभूति का तार आया, उसी में पहली फरवरी को रायपुर पहुंचने की बात थी। मैं रायपुर पहुंच गया। तारीख १ से ३ तक पंडित माधवरावजी, वर्धा हनुमानगढ़ में, दास नवमी के उत्सव में, अपने गुरुदेव श्रीयुत श्रीधर बुवा परांजपे के पास गये थे। तारीख ६ से पंडित रविशंकरजी और पंडित माधवरावजी के साथ मैं कर्मवीर का कार्य करता रहा। मेरे स्वास्थ्य ने जवाब दिया और मैं तारीख ५ मार्च को खंडवा चला आया। चलते समय पंडित माधवरावजी ने कहा, "मैं कार्य अधूरा छोड़ना ठीक नहीं समझता। आप सप्ताहभर में अपने आप को तैयार कर लीजिए।" तारीख, ९ मार्च को मैं खंडवा पहुंचा और १० को सप्रेजी का पत्र मिला, "स्वास्थ्य की व्यवस्था यहीं अच्छी रखी जाएगी। ... आप धमतरी चलने के लिए तारीख १३ मार्च को रायपुर पहुंच जाइए।" पंडितजी की कड़ी बातों का भय था। ढीला-ढाला होने पर भी मैं ठीक १३ मार्च को रायपुर पहुंच गया।

इन दिनों, जंगलों, पहाड़ियों, महानदी के तटों और रेल से ४ मील से अधिक दूर के गांवों की हम लोगों ने यात्रा की। पंडितजी साधारण भोजन लेते थे, मेरा पथ्य जारी था। अंत में तारीख २२ मार्च को दुर्ग जिले की बेमेतरा तहसील के नेवसा नामक गांव में, मुझे कै और दस्त शुरू हुए। पंडितजी ने एकदम कार्यक्रम बदला और हम लोग तारीख २५ की रात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी इच्छा के बिना कोई मेरी सेवा करता है तो उससे भी मुझे कष्ट होता है। यों मैं अभी मरूंगा नहीं, परंतु मिशन पूरा हो जाने, और उपयोग न रहने पर, किसी का भी, एक दिन अधिक पृथ्वी पर पड़े रहने का क्या अधिकार है ? मैं पौष्टिक दवाएं लेकर जीना नहीं चाहता। नियति का स्वागत करना चाहता हूं, परंतु वह अभी बहुत दूर है।"

किसी तरह रायपुर पहुंच गये। तारीख २६ मार्च को, प्रथम चैत्र की शुक्ल प्रतिपदा-वर्ष प्रतिपदा मनायी गयी थी। पंडितजी के यहां की बालिकाओं ने भगवा झंडा खड़ा किया। पंडितजी उस दिन साथियों के साथ उस झंडे के प्रसाद स्वरूप मिष्ठान ले रहे थे। मेरा पथ्य था— दूध-भात। तारीख २६ मार्च को ही, जब वे अपने पूज्य बड़े भाईसाहब की दवा लेने जा रहे थे, मुझे उपचार के लिए डॉक्टर तामस्करजी के सुपुर्द कर दिया था। इन दो महीनों के प्रवास में पंडित माधवरावजी ने, एक दिन भी दवा न ली। मेरी दवा जारी थी। किंतु तारीख २५ मार्च को मुझे डॉक्टर के सुपुर्द करनेवाले पंडित माधवरावजी तारीख २३ अप्रैल को अनंत पथ के पथिक हो गये, और मैं बैठा यह कहानी लिख रहा हूं।

तारीख ३० मार्च को हम लोग दुर्ग गये। पंडित रविशंकरजी शुक्ल, पंडित माधवरावजी सप्रे और मैं। श्रीयुत वामनरावजी लाखे भी वहीं मिल गये। दोपहर को जाकर हम लोग संध्या को लौट आये, परंतु दूसरे दिन पंडितजी अपने लिए दवा लेने डॉक्टर के यहां गये। शिकायत वही आंव की थी, जो देहरादून सम्मेलन के पश्चात् प्रारंभ हुई थी, और उसके बाद बंबई और रायपुर में भी उन्हें बीमार कर चुकी थी। जब दस्त बढ़े, तब एक दिन, रात को मैंने कहा, "ऐसे समय डॉक्टर का आ जाना ठीक है। मैं उन्हें बुलाता हूं।" उत्तर था— "नहीं, मैं, बीमारी से घबड़ता नहीं हूं। आप भी बीमारी से डरना छोड़ें तो शीघ्र सशक्त हो जाएं।" तारीख ७ अप्रैल को, रायपुर म्युनिसिपलिटी के आयुर्वेदिक औषधालय में वैद्य महाशय की औषधि से रोग थम गया और वे बिस्तरा छोड़कर घर में घूमने लगे। इसी बीच वे एक दिन लायब्रेरी गये। जब मैं तारीख १० की रात को दुर्ग से लौटा तब वे सशक्त दीखे। तारीख ११ को मुझे पंडित रविशंकरजी शुक्ल के साथ राजनांदगांव जाने के लिए विवश किया। तारीख १२ को जब मैं रायपुर से रवाना हुआ, तब वे व्यवस्थित भोजन के नजदीक पहुंचने लगे थे और दूर तक, मेरे साथ आये थे। वैद्यजी ने एक शिकायत की, "रोग में रोगियों की तरह न रहिए। आपके शरीर पर तैल-मर्दन होना जरूरी है। आपको शतरंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर, जमीन में पड़े रहने के बजाय, बीमार रहने तक कम से कम गद्दे पर लेटना चाहिए।'' आदि। पंडितजी ने इस बात के उत्तर को अनिच्छापूर्वक टालते हुए कहा, ''हां तो, आप आज कोई औषधि बदलेंगे, या अभी यही दवा भेजेंगे। मुझे तो लाभ हो रहा है।'' मैंने एक बार पंडितजी से कहा, ''वैद्य की सूचना के अनुसार आपको आराम से रहना और पौष्टिक दवाओं का सेवन करना चाहिए।'' पंडितजी ने कहा, ''बूढ़ा मैं हूं, आप मेरे लिए बालक हैं। आप या अन्य मुझ से उम्र में छोटे मित्र, मेरे स्वास्थ्य की चिंता करते हैं तो मुझे दुःख होता है। मेरी इच्छा के बिना कोई मेरी सेवा करता है तो उससे भी मुझे कष्ट होता है। यों मैं अभी मरूंगा नहीं, परंतु मिशन पूरा हो जाने, और उपयोग न रहने पर, किसी का भी, एक दिन अधिक पृथ्वी पर पड़े रहने का क्या अधिकार है? मैं पौष्टिक दवाएं लेकर जीना नहीं चाहता। नियति का स्वागत करना चाहता हूं, परंतु वह अभी बहुत दूर है।'' जब हम बैलगाड़ी में बैठे बेमेतरा जा रहे थे, तब मैंने पंडितजी को होशंगाबाद और खंडवा जिले में आने का निमंत्रण दिया। थोड़ी चर्चा के बाद उन्होंने आमंत्रण स्वीकृत किया और १५ से २२ मई के बीच की कोई तिथि हिरनखेड़ा पहुंचने को तय हुई। इस बात की सूचना भी मैंने खंडवा और होशंगाबाद के कुछ मित्रों को मार्च के प्रारंभ में कर दी, उन्होंने कहा था, ''पहले मैं रोगग्रस्त गोपालराव तामस्कर को, पेंडरा जाकर देखूंगा, फिर नागपुर में कुछ कार्य करूंगा, और वहीं से आपके पास पहुंच जाऊंगा। किसी ठंडे स्थान की व्यवस्था कर लीजिए।'' ●

कनाडा से दो कविताएं

पांचवां छोर

पांचवें छोर की
उच्च ताकत अज्ञात
कहो अकेले ही
कि यह कहा नहीं जा सकता,
कोशिश कर
शब्दों के साथ

ऊपरी हवा नहीं
पंख फैलाती
एक आकाश
अक्षरों का गोला
मान्यता शांति को

बदलता पानी

वर्षा के पात्र में
कांच का एक टुकड़ा
बहता आकाश की ओर

बाद में
एक गाढ़ी
प्रकाश की किरण
स्नेही स्नेही मिलती
एक सोने की
तरह

जब तक रात का
चंद्र नयन
डूबता
बिना चाहत के

● मार्क फ्रुटकिन

अनुवाद : डा. सज्जन कुमार देवड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कशमकश के बीच

पंद्रह मार्च, १९८६ की सुबह। समय : प्रातः छह बजकर पचास मिनट।

मैं इंटर की परीक्षा देने घर से निकली थी। देर हो चुकी थी, अतः शीघ्रता में थी। मुझे सात बजे हर हालत में परीक्षा-भवन पहुंचना था।

मैं परीक्षा-भवन से कुछ दूर ही थी कि राह में एक युवक को रक्त से लथपथ देखकर सिहर उठी। शायद किसी दुर्घटना में वह घायल हो गया था। सड़क सूनी थी और उसकी सहायता करनेवाला वहां कोई नहीं था।

मेरा मन द्विविधा से भर गया। परीक्षा के लिए देर हो रही थी। इधर वह युवक असहाय पड़ा था। फिजिक्स प्रथम का प्रश्न-पत्र था। महत्त्वपूर्ण विषय— मैंने काफी मेहनत से परीक्षा की तैयारी की थी। समय पर परीक्षा-भवन पहुंचना जरूरी था, अन्यथा मुझे प्रवेश नहीं करने दिया जाता। एक वर्ष की मेहनत, सहपाठियों से एक वर्ष पीछे रह जाने का भय-लज्जा ! क्या करूं ! समझ में नहीं आ रहा था। अंततः मैंने निर्णय कर लिया। मैं साइकिल खड़ी कर उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ी। मेरी सहेलियों ने मुझे फटकारा, बेवकूफ समझा और अकेला छोड़कर चली गयीं।

इधर मैं अकेली ! मैंने किसी तरह उस घायल युवक को एक छोटी-सी डिस्पेंसरी में पहुंचाया। पर मेरे सारे प्रयत्न निष्फल गये। उस युवक के प्राण-पखेरू उड़ ही गये।

मैं उदास-निराश घर लौट आयी। घर में जिन परेशानियों का, तनावों का सामना करना पड़ा, वह अवर्णनीय है। एक वर्ष की बरबादी और फिर भी युवक के प्राण न बचा पाना ! आज मेरी सहेलियां बी-एससी. की परीक्षा देने जा रही हैं, और मैं ! मैं पुनः इंटर की परीक्षा दे रही हूं। जब अपनी सहेलियों को विश्वविद्यालय की वेशभूषा में देखती हूं तो मन एक कशमकश से भर जाता है।

—श्रद्धा मिश्र

का. नं ६, न्यू एम. ई. एस. कालोनी, कानपुर रोड, इलाहाबाद

उद्दंडता का कुफल

कभी-कभी गलत संगति और मन में उपजा आक्रोश कितना हानिप्रद हो जाता है, यह एक घटना मन पर बार-बार 'दस्तक' देकर मुझे बतलाती रहती है।

घटना मेरे ही जीवन की है। तब की, जब मैं आठवीं कक्षा का छात्र था। एक दिन कक्षा-अध्यापक हमें ब्लेक बोर्ड पर गणित का सवाल समझाने में तल्लीन थे। तभी मेरे साथ बैठे छात्र ने, उनकी ओर चाक का एक टुकड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेका। वह गुरुजी की पीठ पर लगा। उनका क्रुद्ध होना स्वाभाविक था। वे तुरंत हम लोगों के पास आये और पूछने लगे कि 'चाक किसने फेका था ?' उन्होंने प्रत्येक छात्र से पूछा। मुझसे भी यही प्रश्न किया। सबका एक ही उत्तर था— 'सर, मैंने नहीं फेका, जाने क्यों गुरुजी को मुझ पर शक हो गया। उन्होंने मुझे खूब पीटा। जितना इनकार करता, उतना ही वे पीटते।

मेरा बाल मन प्रतिशोध से भर उठा। गुरुजी के प्रति मन में अश्रद्धा हो गयी। आज सोचता हूं, गलती मेरी थी। मुझे उस छात्र का नाम बतला देना था। पर उन दिनों मुझे अपने में कोई दोष नजर नहीं आता था। बदले की भावना से मैं उन्हें मौका पाते ही चाक फेककर मारने लगा। इस उद्दंडता का कुफल भी मुझे मिला। मैं पिटता और शैतानी से बाज नहीं आता। मेरा नाम ही 'शैतान' पड़ गया। बदनाम भी हुआ और फेल भी। कितनी बड़ी सजा भुगती मैंने अपने दुर्व्यवहार की।

—स्वरूप सिंह खरोला

आशुतोषनगर, नेहरू मार्ग, ऋषिकेश

धन्यवाद

आज आम धारणा यह बनी हुई है कि नैतिकता का पतन होता जा रहा है। अपवाद-स्वरूप ऐसी घटना भी घट जाती है, जो यह सोचने पर विवश कर देती है कि ऐसा सोचते ही रहना कि नैतिकता है ही नहीं, स्वयं को धोखा देना है।

एक बार एक हिंदी सिने पाक्षिक में प्रकाशनार्थ रचना भेजने जा रहा था। रचना

युवाओं के लिए यह स्तंभ न तो प्रेम-प्रसंगों के वर्णन के लिए है और न दर्शन संबंधी विचारों के लिए। इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय कृपया ध्यान रखिए कि उनमें सम सामयिक जीवन का कोई उनका-अपना निजी प्रसंग या घटना और उससे उठनेवाले प्रश्न हों। रचना ढाई सौ शब्दों से अधिक न हो।

इस स्तंभ के लिए रचना भेजते समय लिफाफे पर यह अवश्य लिखें—

'दस्तक के लिए'— संपादक

पूर्णतः सामयिक थी तथा आगामी चार या पांच दिन में बंबई पहुंचनी थी। लिफाफे में रचना रख कर टिकिट आदि लगाकर मैं घर से लिफाफा पोस्ट करने हेतु चला। दिन शनिवार था। समय होगा यही कोई दोपहर तीन बजे, दुर्भाग्य से वह लिफाफा मैंने पीछे की जेब में रखा तथा साइकिल पर चल दिया। पोस्ट ऑफिस पहुंचकर ज्योंही मैंने लेटर बॉक्स में वह लिफाफा डालने के लिए जेब में हाथ डाला तो लिफाफा गायब था। शायद कहीं खो गया था। मुझे अपने आप पर झुंझलाहट-सी हुई। मैं घर आ गया। रचना दुबारा भी नहीं लिख सकता था क्योंकि एक ही प्रति थी, जो टाइप की हुई थी। अतः चुपचाप ही रहना उचित समझा।

मेरी खुशी का उस समय कोई ठिकाना नहीं रहा, जब लगभग दो हफ्ते बाद उसी रचना की स्वीकृति मुझे प्राप्त हुई। कोई चाहता तो लिफाफा फाड़कर अपने लिए डाक-टिकटों का इस्तेमाल कर सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया और उसे पोस्ट कर दिया।

—सुभाष सेंगर 'पार्थिव'

ई-२/३५७, महावीर नगर, भोपाल-४६२-०१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित राज, जिसे प्रेम के कारण जीवन त्यागना पड़ा।

● मदन मोहन पांडेय

"प्रेम को पंथ कराल महा तलवारि की धार पै धावनों है।

यह उक्ति प्रतिभा के हिमालय, उद्भट विद्वान, संस्कृत के अंतिम सर्वाधिक प्रौढ़ लक्षण ग्रंथ रस गंगाधर के प्रणेता, पंडित राज जगन्नाथ पर अधिक सटीक उतरती है। शास्त्रार्थ महारथी एवं व्याकरण के मनीषी पंडित राज जगन्नाथ के आगे काशी के तत्कालीन विद्वच्चूड़ामणि अप्पय दीक्षित एवं भट्टोजि दीक्षित की एक कला नहीं चलती थी। पाणिनीय सूत्रों पर मनोरमा टीका लिखकर भट्टोजि दीक्षित ने अपने वंश की विद्वत्परंपरा को आगे बढ़ाया, किंतु प्रतिभा के धनी पंडित राज ने अपनी रसिक प्रवृत्ति के अनुरूप नामावली रचना मनोरमा कुचमर्दिनी द्वारा इस टीका का मान-मर्दन कर दिया। सहपाठी विद्वानों के मध्य इस प्रतिद्वंद्विता के चलते, जो अनर्थ हुआ, उसने लीक छोड़कर चलनेवाले संस्कृत के सपूत पंडित राज को अवश्य असमय मृत्यु वरण करने पर बाध्य किया।

पंडित राज की उपाधि एवं राजकवित्व

कस्तूरी परिमल की तरह निरंतर प्रसारित पंडित राज की शास्त्रार्थ विदग्धता की ख्याति इन्हें राजपूताने खींच ले गयी। वहां से कवि को प्राप्त कर बादशाह शाहजहां कृत कृत्य हुए, जिन्होंने इन्हें पंडित राज की उपाधि देकर राज कवि बनाया और सभा के राज कवि पंडित राज जगन्नाथ— जैसे रत्न का उपयोग हुआ, युवराज दाराशिकोह के संस्कृत शिक्षण के लिए। प्रखर बुद्धि शिष्य, ज्ञान के अथाह उदधि मुख को पाकर धन्य हो उठा। विद्या और अभ्यासवाली धारणा स्यात भ्रांत सिद्ध हुई। गुरु का वाक्य बीज शिष्य के हृदय में वट बीज बन गया। उपनिषद ज्ञान की परतें एक-एक कर अनावृत होती गयीं और दारा शिकोह गहरे अवगाहन करता गया। गुरु से प्राप्त ज्ञान को और विकसित करने के क्रम में दारा शिकोह ने उपनिषदों को फारसी में अनुवाद किया कराया। इस तरह विदेशों में सर्वप्रथम उपनिषद ज्ञान के प्रचार-प्रसार में पंडित राज का अतुल्य योग है।

लवंगी की प्राप्ति

शाहजहां पंडित पुत्र और पंडित राज गुरु से बहुत प्रसन्न था। प्रसन्नता के अतिरेकवाले क्षणों में पंडित राज से पुरस्कार मांगने को कहा गया। इन गुरु-शिष्य की परिचर्चा में निरंतर लगी रहनेवाली सुंदरी लवंगी पंडित राज के मन में बस गयी थी। व्याकरण एवं दर्शन के शुष्क प्रांतरों में विचरनेवाले विद्वान कवि की दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्पित माधवी लता—जैसी लवंगी में उलझ गयी, तो आश्चर्य ही क्या था ? और सच तो यह था कि अनुराग की आग दोनों को ही समान रूप से व्याकुल किये थी। अतः शाहजहां द्वारा कुछ मांगने को कहने पर पंडित राज के मुंह से अनायास निकल पड़ा...

"न याचे गजालिं न वा बाजिराजिं
न विभवेषु चित्तं मदीयं रमंते।
इयं सुस्तनी मस्तक-न्यस्त कुम्भा
लवंगी कुरंगी दृगंगी करोतु ॥"

सौरभ के मधुमास के रूप में खिल उठा। दिन सोने के और रातें चांदी की हो गयीं। रस राज की पैंजनी पंडित राज के अलिंद में खनकने लगी। जैसे तपोपरांत च्यवन की सुकन्या की तरह साधना ने मूर्त रूप ग्रहण कर लिया हो।

पंडित राज के दुर्दिन

रसवंती नूपुरों की मंजुल ध्वनि पता नहीं प्रतिभा के किन-किन आयामों को खोलती, किंतु काल-चक्र वश मुगल युवराज द्वारा शिकोह औरंगजेब से पराभूत हुआ। यह

पंडित राज अभावों की पीड़ा झेलकर भी अपनी तेजस्विता को त्याग न सके। आत्म-सम्मान के पाथेय पर जीवन पथ पर पद-पद पर घायल होकर बढ़नेवाले योद्धा की भांति निर्मल मन पंडित राज को न ग्लानि थी, न पश्चाताप

पंडित राज की याचना बादशाह की प्रत्याशा के विरुद्ध थी, किंतु जब गज बाजि राजि और वैभव के विपरीत पंडित राज ने सुंदरी कुरंग नयनी लवंगी की याचना की, तो गुण ग्राही शाहजहां इनकार न कर सका। फलस्वरूप कवि का कृतज्ञ हृदय अभिभीत होकर कह गया—

"दिल्लीश्वरों वा जगदीश्वरो वा
.....भरणे समर्थः
अन्ये न केनापि नृपेण दत्ता
शाकाय वा स्याद् लवणाय वा स्यात्"

इस तरह वियोग दावाग्नि से दग्ध पंडित राज को आनंद कादम्बिनी रूपी लवंगी की प्राप्ति हुई। प्रणय लता में परिणय का पुष्ट

पराजय एक व्यक्ति की नही युग की थी। सहिष्णुता, सर्वधर्म समभास और संभावनाओं के दूसरों पर धर्मांधता तथा अत्याचारों की इस विजय ने जहां पूरे देश को कष्टों के आवर्त में फंसाया, वृद्ध शाहजहां को कारावास भुगताया, दारा शिकोह को मृत्यु दंड और अपमान का प्रबल दंश दिया, वहीं पंडित राज के जीवन में भी दावाग्नि प्रज्वलित कर दी।

इस सत्ता परिवर्तन के फलस्वरूप पंडित राज को काशी लौटना पड़ा और दुर्भाग्य चक्र का प्रवर्तन हुआ। शाही सम्मान और वैभव के जाने पर आश्रयहीनता लता के समान पंडित राज पर चतुर्दिक आक्षेपों की भरमार होने लगी। आक्षेपों की केंद्र बिंदु लवंगी थी, जिसे लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन पर लांछन लगाये जाने लगे। यद्यपि मनुस्मृति के अनुसार हर जाति गोत्र की कन्या वरेण्या होती है और कन्या का गोत्र पति के गोत्र से होता है, किंतु काशी की पंडित-मंडली ने पंडित राज का बहिष्कार कर ही डाला।

जिन भट्टोजि दीक्षित-जैसे प्रखर विद्वान ने विद्वता की दृष्टि से अपने प्रबल प्रतिस्पर्धी पंडित राज को पराभव नहीं दे पाया था, अब उनके लिए मार्ग साफ था। प्रतिभा का अभिमन्यु रूढ़ियों के चक्रव्यूह में बुरी तरह घिर गया। पंडित राज की विदग्धता के आगे भट्टोजि दीक्षित पहले निरुपाय रह जाते थे। किंतु संभवतः यही द्वेष कालांतर में बहिष्कार में प्रमुख भूमिका निभा गया। संभव है कि दीक्षित वंश के वयोवृद्ध विद्वान अप्पय दीक्षित का भी इसमें योगदान हो।

काशी पुनरागमन पंडित राज के लिए अपमान की पीड़ा के साथ ही आर्थिक दृष्टि से भी कष्टकर रहा। पंडितों द्वारा बहिष्कृत व्यक्ति को आश्रय देकर कौन विधर्मी बनता? फलस्वरूप आवास सुलभ न होने पर किंवदंतियों के अनुसार पंडित राज को पतित-पावनी गंगा के घाटों पर रात्रि निवास करना पड़ा। राज्याश्रय दूर होने के कारण बाद के विद्वानों की आजीविका का दूसरा साधन था अध्यापन, जो काशी की प्राचीन परंपरा है। किंतु लोकापवाद! विद्वच्चूड़ामणि पंडित राज के पास पढ़ने को कोई विद्यार्थी नहीं आता था। ऐसी ही दशा पर लिखा गया होगा :—

"पाकार्थी क्षुधितो यदैव बिदधे पाकाय बुद्धिं तदा,
बिन्ध्ये नेन्धनमम्बुधौलने सलिलं बाह्ये धरित्री तले।"

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये : मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है।

गारंटी :-कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है। केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोट:-कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर है, अमृतसर के डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगीयों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखें।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-2

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

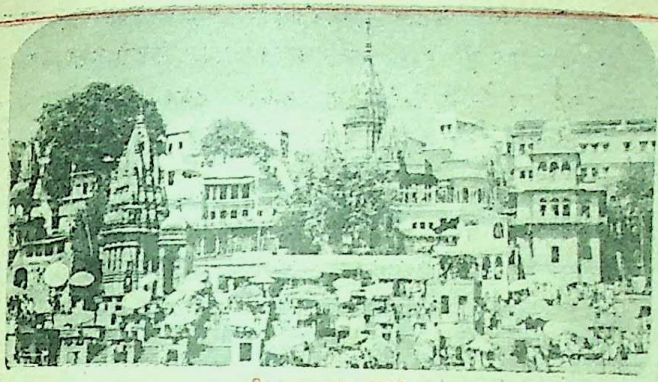

काशी का एक दृश्य

पंडित राज अभावों की पीड़ा झेलकर भी अपनी तेजस्विता को त्याग न सके। आत्म सम्मान के पाथेय पर जीवन पथ पर पद-पद पर घायल होकर बढ़नेवाले योद्धा की भांति निर्मल मन पंडित राज को न ग्लानि थी, न पश्चाताप। यह सब तो तब होता, जब वे स्वयं को वासना विव्हल पाते। यों लवंगी का त्याग करके, पंडित मंडली के सामने कुछ झुककर भी वे अपवाद को किसी सीमा तक धो भी सकते थे, किंतु "**मनस्वी म्रियते कामं कार्यण्यं न तु गच्छति**" वाली उक्ति स्यात् इन्हीं के लिए रची गयी हो। जिसका हाथ एक बार पकड़ लिया, उससे जीवन रहते बिलगाव या मुक्ति की बात उनके लिए विचार में भी असहनीय थी। उनका प्रेम गंगा जल की तरह निर्मल था और वे स्वयं को भी ऐसा ही समझते थे, तब पश्चाताप काहे का और क्यों ?

अभावों का आलम यह कि दूसरा ओढ़ना-बिछौना तक नहीं। एक ही आसन पर पति-पत्नी रहते। एक बार प्रातः कुछ-कुछ अंधकार शेष रहने पर ही अप्पय दीक्षित उधर से निकल रहे थे। उनकी दृष्टि गंगा के किनारे सपत्नीक एक ही उत्तरीय से शरीर ढंके पंडित राज पर पड़ी। पंडित राज की श्वेत शिखा देखकर अप्पय दीक्षित ने कहा—

"किं निश्शंकं शेषे, शेषे वयसि समागते।"

एक चरण सुनकर ही पंडित राज ने आवरण उलट दिया, तो इन्हें देखकर अप्पय दीक्षित ने बिगड़ी बात बनाते हुए कहा :—

"अथवा सुखं शायीथाः, निकटे जागर्ति जान्हवी भवतः।"

किंतु इस तरह नित्य प्रति अपमान सहते हुए पंडित राज का हृदय अत्यंत आहत हो गया और उन्होंने प्रपंचभरी दुनिया त्यागने का निश्चय कर लिया। कहा जाता है कि वे भगवती गंगा को अपने निर्मल प्रेम की साक्षी मानकर गंगाघाट की सबसे ऊंची सीढ़ी पर बैठकर गंगा स्तुति करने लगे। ऐसी धारणा है कि एक-एक श्लोक पर गंगा की लहरें एक-एक सीढ़ी चढ़ने लगीं और अंतिम श्लोक पूरा होने पर धारा के वेग ने इन्हें अपने अंक में समाहित कर लिया

ग्राम— मसीत, पो. सांडीला, जिला हरदोई (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस से सीधे हिंदी में प्रेषित

पत्थर का बच्चा

● नैयर इकबाल

दागिस्तान एक खुश्क मरुस्थल है, जहां चारों ओर रेत और पत्थरों के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखता। वहां एक खुश्क मैदान के बीच में एक छोटा पत्थर खड़ा है, जो एक बच्चे के समान है। इसके लिए वहां के लोगों में एक कहानी प्रसिद्ध है।

दागिस्तान पर प्रायः शत्रु आक्रमण किया करते थे। एक बार क्रूर तैमूर ने दागिस्तान को हड़पना चाहा। तैमूर की बड़ी सेना बिना पानीवाले सूखे दागिस्तान में बहुत दूर तक बढ़ती चली गयी। अंत में आराम करने के लिए एक घाटी में ठहर गयी। चारों ओर कहीं भी पानी न था। तैमूर ने प्रत्येक दिशा में पानी के लिए ऊंटों के काफिले भेजे। सब परेशान थे। काफिले भी एक के बाद एक वापस आ गये, उन्हें कहीं पानी नहीं मिला था।

तैमूर ने सब काफिलों के मुखियाओं को बुलाया और उनसे रास्ते के हालात पूछे। प्रत्येक ने एक ही उत्तर दिया कि दागिस्तान के रास्ते कठिन और खतरनाक हैं और इन प्रदेशों के रहनेवाले सब लोग पहाड़ों में भाग गये हैं।

मुखियाओं में से एक ऊंचे कद तथा सफेद दाढ़ीवाला बोला, "अगर आप आज्ञा दें तो मैं वह घटनाएं सुनाऊं जो मैंने देखी हैं। मैंने एक छोटा लड़का देखा जो दस-एक भेड़ें चरा रहा था। मैंने उसे पकड़ने का आदेश दिया, ताकि उससे पूछूं कि आसपास पानी का कोई झरना कहां पर है। क्योंकि वहां झरना अवश्य होना चाहिए। वहां वह अपनी भेड़ें चराता है, आसपास से ही पानी लाता होगा। परंतु चरवाहे ने पानी का पता बताने से साफ-साफ मना कर दिया। चरवाहे ने कहा है कि भूमि की भांति पानी भी हमारी संपत्ति है। हम शत्रु को न भूमि दे सकते हैं और न पानी।"

तैमूर ने उस लड़के को पकड़ने का आदेश दिया। जब लड़का पकड़कर तैमूर के सामने लाया गया तो उसने लड़के से पूछा, "तू जानता है, तू किसके सामने खड़ा है?"

"जानता हूं" लड़के ने निडरतापूर्वक उत्तर दिया।

तैमूर फिर बोला, "तू जानता है कि मैं तेरे कुछ चाहूं तेरे साथ कर सकता हूं।"

"जानता हूं।" लड़के ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"तब तू मुझे झरना दिखा दे जहां से तू पानी लेता है।"

लेकिन लड़के ने झरना दिखाने से इन्कार कर दिया, "मैं तुझे बोलने पर मजबूर कर दूंगा।"

तैमूर के सिपाही बच्चे पर झपटे, यातनाओं के बावजूद उससे पानी का पता न पा सके। अंततः तैमूर को उस घाटी में पानी नहीं मिला। वह अपने साथियों के साथ आगे चला गया। यातनाओं से बच्चा जीवित नहीं रह सका लेकिन उसकी याद आज भी की जाती है। उस जगह एक पत्थर रख दिया गया। 'पत्थर का बच्चा' दागिस्तान के मरुस्थल के बीच आज भी खड़ा है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिडिंबा राक्षसी से मानवी बनी और कालांतर में अपने तपोबल के कारण जन आस्था का केंद्र बनकर देवी के रूप में परिणत हो गयी। जिस प्रकार मनुष्य में राक्षसत्व और देवत्व दोनों अधिष्ठित रहते हैं उसी तरह हिडिंबा में भी दोनों तत्व विद्यमान थे। राक्षस भाई के संपर्क में जो हिडिंबा राक्षसी थी वह भीमसेन के दर्शन से मानवी और पुत्रोत्पत्ति के बाद तपःसाधना से देवी बन गयी।

हिडिंबा देवी का मंदिर

डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी

पर्यटन का आध्यात्मीकरण अर्थात— तीर्थयात्रा। पर्यटक को तलाश होती है प्राकृतिक स्थलों में विचरण करती रम्यता की, जबकि तीर्थयात्री चैतसिक स्तर पर ढूंढ़ता है ऐसी भूमियों में एक दिव्यता। पर्यटक के नेत्र प्रधान होते हैं, जबकि तीर्थयात्री का हृदय। पहला खो जाना चाहता है तो दूसरा समर्पित हो जाना। पहला कमनीयता और रमणीयता के बीच तृप्ति चाहता है तो दूसरा भव्यता और अभिरामता में मानस विराम। पर्यटक में कामनाओं की उद्दीप्ति होती है और तीर्थयात्री में भावनाओं की प्रदीप्ति। पर्यटक का उपास्य होता है 'सुंदरम्' जबकि तीर्थयात्री का आराध्य है 'शिवम्'। पर्यटक प्रकृति के बिखरे हुए अनंत वैभव में अपनी स्वप्निल छवि निरखता है और तीर्थयात्री उस प्रकृति-पुरुष के चरणों में भक्तिपूर्वक अपने मन के सुमन चढ़ाने को आकुल रहता है। प्रकृति उसे एक शक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

पुराणकारों ने ऐसे रम्य स्थलों को अपने आख्यानों और उपाख्यानों से निबद्ध किया। परिणाम यह हुआ कि आस्था और आस्तिकता संपन्न भारतवासी उन्हें देवालय और शक्तिपीठों का स्वरूप देकर नमन करने लगे। नैसर्गिक वैभव के ये स्थल प्रायः नदियों के संगम, कमनीय कानन और गिरि प्रांतर में स्थित मिलते हैं, जहां प्राचीनकाल से ही धीरे-धीरे मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हो गया था। पौराणिक कथाओं से जुड़े ऐसे स्थानों पर मंगल और सिद्धि के विश्वास के साथ धीरे-धीरे मेलों का प्रचलन भी आरंभ हुआ। ऐसा ही एक स्थान है हिमाचल की देवभूमि में हिडिंबा का मंदिर।

पांडवों के अज्ञातवास का स्थल

उत्तर प्रदेश के जनपद देहरादून का जनजातीय क्षेत्र जौनसार-बाबर और उससे लगे हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी का एक बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग महाभारत से संबंधित है। महाभारत की मान्यता के अनुसार द्यूत-पराजित पांडवों ने अपना अज्ञातवास इसी भूभाग में व्यतीत किया था। जौनसार में विराट नगर की सीमाएं आज तक खिंची हुई हैं और लाखामंडल की वर्तमान बस्ती लाक्षागृह की धधकती घटना किंवदंतियों के रूप में अपने में समाहित किये हुए हैं।

लाक्षागृह कांड घट चुका था। मात' कुंती के साथ पांडव वन-बीहड़ों में भटकते हुए किसी तरह समय-यापन कर रहे थे। एक दिन भीमसेन को छोड़कर श्रांत-शिथिल चारों भाई एक वृक्ष की छाया में सो गये। तभी दूरस्थ साल वृक्ष का आश्रय लिये मानुष मांस-भक्षी एक राक्षस भीम को दिखायी पड़ा। उसका नाम हिडिंब था। मनुष्य की गंध सूंघकर राक्षस हिडिंब ने अपनी बहन हिडिंबा को आदेश दिया,

हिडिंबा देवी का मंदिर
एक रेखांकन

'जाकर देखो, ये कौन लोग हैं, जो वृक्ष सहारा लेकर सो रहे हैं। इन सबको मारकर पास ले आओ।' भाई की आज्ञा शिरोधार्य हिडिंबा उस स्थान पर पहुंची, जहां चारों माता पृथा (कुंती) के साथ निद्रामग्न थे। अपराजेय भीमसेन की आंखें खुली नवोद्गत शाल पोत की तरह सुघड़ सलोने को देखकर राक्षसी हिडिंबा कामातुर हो श्याम वर्ण, महाबाहु, सिंह स्कंध, शंख ग्रीवा तथा कमलवत् नेत्रोंवाले कांतिमान् को देखकर उसने पति के रूप में उन्हें पाने कामना की '**(अयं श्यामो महाबाहुः स्कंधो महाद्युतिः। कंबुग्रीवः पुष्कर भर्ता युक्तो भवेन्मम।** आदि १५१-१८) 'इसी विचार के साथ हिडिं अपने भाई के आदेश-पालन का इरादा दिया और इस निष्कर्ष पर पहुंची कि भ्रा सौहार्द्र से पति का स्नेह कहीं अधिक होता है '**(पतिस्नेहोऽति बलवान् न भ्रातृसौहृदम्)** 'वह काम-रूपिणी तो अतः तुरंत उत्तम मानुष रूप धारण किया धीरे-धीरे भीमसेन के समीप पहुंची। आभूषणों से विभूषित लजाती हुई हिडिंबा ने मधुर मुसकान के साथ होकर घर की तरह शयन-मग्न पुरुषों सुकुमारी श्यामा द्रौपदी और स्वयं भीम पूरा परिचय पूछा। उसने यह भी कहा 'आपको शायद पता नहीं कि यह राक्षस गहन वन है। यहां पापात्मा हिडिंब राक्षस निवास करता है। आप मांस-भक्षण के इच्छुक उसी ने दुष्ट भाव आपके पास भेजा है। देव कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

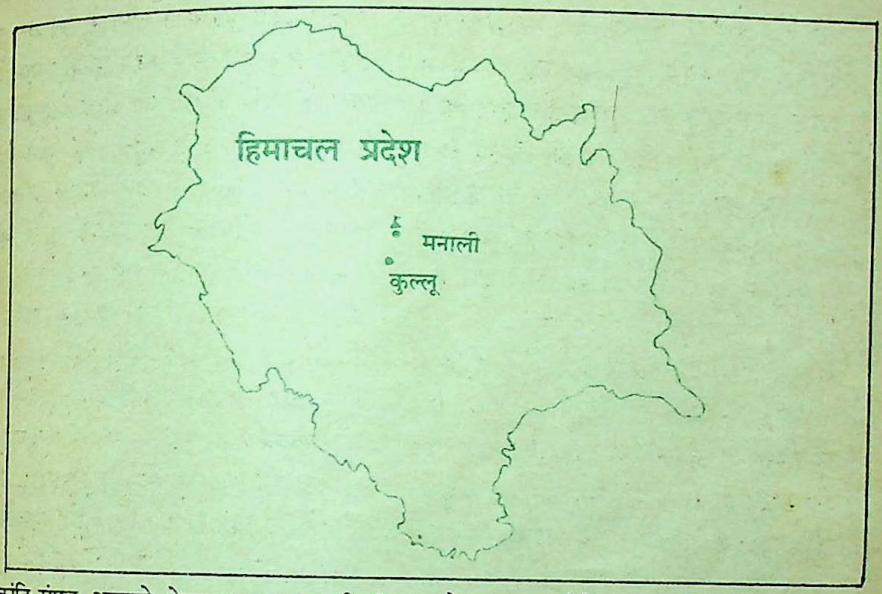

कांति-संपन्न आपको देखकर सच कहती हूं, पति के रूप में किसी और की कामना मुझमें नहीं रही है। हे धर्मज्ञ, यह विचार कर जो भी उचित हो, मेरे साथ व्यवहार कीजिए। मुझ हिडिंबा को अंगीकार कर लीजिए' उसने आगे कहा, 'मैं अंतरिक्ष में घूमनेवाली हूं। स्वेच्छा से विचरण करती रहती हूं। मेरे साथ विचरण और विहार करके मेरी अतुल प्रतीति को प्राप्त कीजिए।' भीम ने हिडिंबा से पूछा, 'इन सबको छोड़कर मैं तुम्हारे साथ कैसे चल सकता हूं ?'

'शयन-निमग्न इन सबको जगा दीजिए। मैं मांस-भक्षी राक्षस से इन्हें भी मुक्त करा दूंगी।' हिडिंबा ने उत्तर दिया।

'नहीं सुख से सोये पड़े इन सबको मैं नहीं जगाऊंगा। तुम अपने भाई राक्षस को भेज दो।' भीम ने विश्वास और दृढ़ता के साथ ललकारा।

उधर बहन हिडिंबा को देर से निकला हुआ देख वह दुर्धर्ष राक्षस भी वहीं आ पहुंचा। भावी विपत्ति की आशंका से हिडिंबा ने भीम से फिर कहा, 'मैं राक्षसी शक्ति से संपन्न होने से मनचाहे स्थानों पर पहुंच जानेवाली हूं। तुम मेरे श्रोणि प्रदेश पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें आकाशमार्ग से ले जाऊंगी और इसी तरह इन सबको भी।'

बलशाली भीम को यह पसंद कहां था ?' कहा, 'तुम मेरा बाहुबल देखो।' दूसरी ओर पास आये हिडिंब ने अपनी बहन को मनुष्य रूप में देखा- पूर्ण चंद्र के सदृश मुख, पुष्प हार से ग्रथित चोटी, सुंदर केशों से विलसित, सुकुमार नख कांति, सर्वविध शोभन आभूषणों और मनोरम झीने-झीने परिधान से सज्जित ! बहन को इस रूप में देखकर हिडिंब जलते हुए अंगार की तरह दहक उठा। कहा-सुनी के साथ भीम से उसकी भिडंत हो गयी। युद्ध में भीम ने हिडिंब का काम तमाम कर दिया। युद्ध के शोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पांडव पहले ही जाग चुके थे। उन्होंने हिडिंबा को देखा। कुंती भी उसकी रूप-संपदा को देखकर विस्मय विमुग्ध हो गयी और पूछने लगी, 'कहीं तुम इस वन की देवी या कोई अप्सरा तो नहीं हो ?' हिडिंबा ने अपना वृतांत कह सुनाया कि किस तरह 'आपके पुत्र भीम को देखकर मैंने उसे पति के रूप में वरण कर लिया है।'

हिडिंब को मारकर भी भीम का क्रोधानल शांत नहीं हुआ। उसने हिडिंबा की ओर मुड़कर कहा, 'तुम भी अपने भाई के द्वारा सेवित पथ का अनुगमन करो।' कुंती को प्रणाम कर हिडिंबा ने निवेदन किया, 'हे आर्ये, भीमसेन की कामना से मुझे संताप हो रहा है। इस समय की प्रतीक्षा करते हुए मैंने परम दुख झेला है और अब वह समय आ गया है, जब मेरे सुख का उदय हो। अपने पुत्र भीम को मेरे साथ पति के रूप में जोड़ दीजिए और मुझ पर विश्वास कीजिए। मैं इन्हें पुनः ले आऊंगी।'

स्थिति का परिज्ञान करके युधिष्ठिर ने इस आश्वसन पर अनुमति दे दी कि वह भीम को सूर्यास्त से पहले तक अपने साथ रखा करेगी और रात में वापस शिविर में ले आएगी। शांत हुए भीम ने एक शर्त और भी जोड़ दी, 'जब तक तुम्हें पुत्र-लाभ नहीं होगा, तब तक मैं तुम्हारे साथ घूम-फिरकर विहार करता रहूंगा।'

इस प्रकार परम रमणीय रूप में भीम को साथ लेकर हिडिंबा सुभग विभिन्न स्थलों में विचरण करती रही। बाद में हिडिंबा ने भीम के संपर्क से घटोत्कच्छ नाम के पुत्र को जन्म दिया और अपने पूर्व वचन का निर्वाह करती हुई पति से विरत हो गयी।

हिडिंबा राक्षसी से मानवी बनी और कालांतर में अपने तपोबल के कारण आस्था का केंद्र बनकर देवी के रूप में परि हो गयी। जिस प्रकार मनुष्य में राक्षसत्व और देवत्व दोनों अधिष्ठित रहते हैं, उसी तरह हिडि में भी दोनों तत्व विद्यमान थे। राक्षस भाई संपर्क में जो हिडिंबा राक्षसी थी, वह भीम के दर्शन से मानवी और पुत्रोत्पत्ति के तपःसाधना से देवी बन गयी। उसी हिडिंबा मंदिर मनाली में अवस्थित है — चंडीगढ़ कुल्लू घाटी २७२ कि.मी. दूर है और कुल घाटी की मधुरतम स्थली मनाली लगभग कि.मी. के फासले पर। मनाली के पार्श्व भाग विद्यमान हिडिंबा देवी का मंदिर सन् १५३३ निर्मित हुआ था, जो चतुःस्तरीय व पैगोडा की छत से समन्वित है। जन धारणा के अनु पांडव का पूर्वोक्त प्रवासकाल बहुत कुछ कु हिमालय में बीता था तथा हिडिंब व हिडि प्रकरण इसी भूमि से जुड़ा हुआ है।

हिडिंबा का मंदिर

मंदिर का भव्य द्वार-मार्ग विविध आकारों प्रतीकों से खचित है। यह स्मारक भी है महान कलाकार का, जिसने काष्ठ पर विलक्ष आकृतियां उभारकर उन्हें अद्वितीय कृति बना रखने के लिए कलासर्जक हाथ का ही बलि कर दिया था। धूंग्री मंदिर की देवी अ हिडिंबा देवी के लिए भक्त कलाकार का अविस्मरणीय अर्चन माना जाता है। हिडिंब अंतर्हित अपनी महान आत्मिक शक्ति से पद की प्राप्ति की। वह शौर्य और सात्वि की प्रतीक है। अध्यात्म प्राण जनता अविचल विश्वास है कि यह देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

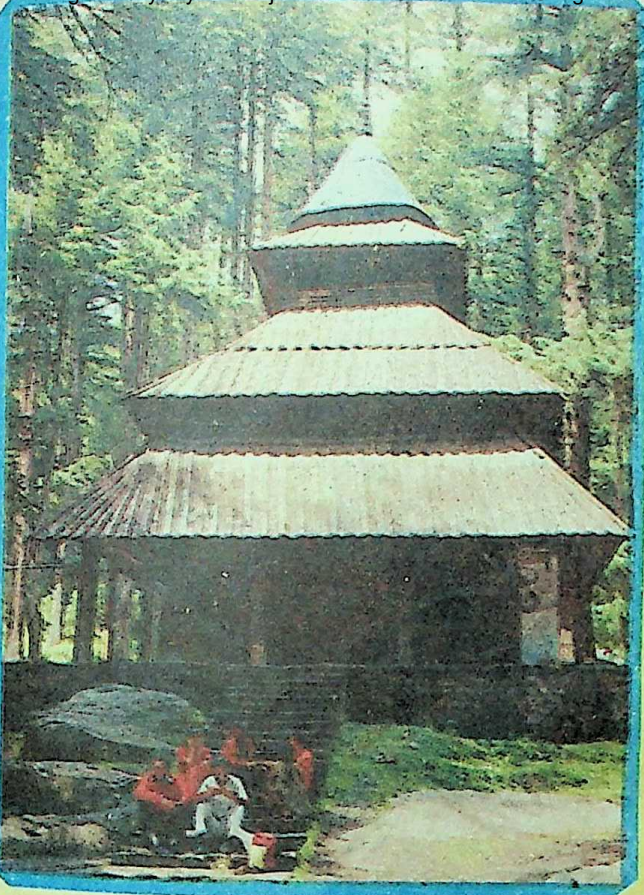

एक पौराणिक आख्यान का स्मारक :
हिडिंबा देवी का मंदिर : निर्माणकाल सन १५५३ ।

छाया : डी. एन. पांडेय

आपत्तियों, विपत्तियों और दैवी आपदाओं से बचाती है। सच्चा विश्वास कभी धोखा नहीं देता, ऐसी ही धारणा से हिमाचली लोगों द्वारा हिडिंबा देवी की पूजा पारंपरिक रंग-ढंग के साथ बड़े धूम-धाम से की जाती है। हिडिंबा को काली अर्थात् दुर्गा का अवतार माना जाता है। सदियों से पल्लवित विश्वास के आधार पर कि दशहरे के समय साक्षात् हिडिंबा देवी ही उत्सव मंगल का अथ और इति संपन्न करती है। यहां प्रतिवर्ष मई के महीने में एक बड़ा महोत्सव मनाया जाता है। उद्ग्रीव देवदारू द्रुमावली की सुषमा और व्यास नदी की कलकल ध्वनि प्रकृति के प्रतिनिधियों के रूप में महोत्सवों में सम्मिलित होती है। दशहरे के बाद जब इस प्रदेश में शरद सुंदरी का अवतरण होता है, तब हिमवती हवाएं और हेमवती किरणें ग्राम्या कन्याओं की तरह परस्पर छेड़छाड़ करती हुई खेला करती हैं। हिडिंबा देवी के मंदिर के इन समारोहों में आस्था-प्राण जनता का उल्लास अपनी समग्रता में फूट पड़ता है और जीवन में एक नयी संगीत-स्फूर्ति का संचार कर देता है।

— —२, धामावाला बाजार,
पुरानी कोतवाली,
देहरादून-२४८००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पशु मेले का एक दृश्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

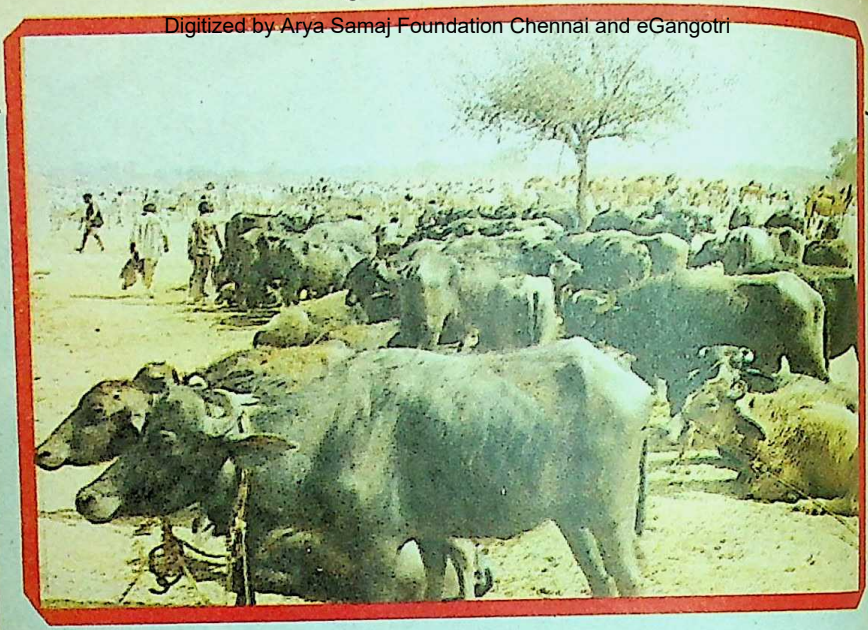

हरियाणा अपने सुसमृद्ध पशुधन के लिए चिरकाल से विश्व-विख्यात रहा है। बड़े-बूढ़ों का कहना है कि कभी इस पुण्य-धरा पर दूध और शहद की नदियां बहा करती थीं। अब भी देश भर में प्रचलित ये लोकोक्तियां 'दूधों नहाओ... पूतों फलो' तथा 'देस्सां में देस हरयाणा... जित दूध दही का खाणा' यहां के श्रेष्ठ पशुधन की द्योतक हैं। 'दूध-दही का देश' नाम से देश-विदेश में हरियाणा का नाम है। खेती-बाड़ी और पशु-पालन यहां कर्मठ किसानों का प्रमुख धंधा है। प्रदेश में इस समय लगभग ८० लाख पशु हैं, जो अपने सौंदर्य संपन्न गुणों एवं बलाधिक्य के कारण हर जगह जनप्रिय हैं।

श्रेष्ठ नस्लें देश-विदेश में

श्रेष्ठ पशुओं की अधिकता के कारण, उनके क्रय-विक्रय हेतु यहां मेलों का भारी प्रचलन है। यद्यपि इन मेलों का संबंध किसी धार्मिक परंपरा से नहीं है, तथापि इनका एक विशिष्ट महत्व है। आदिकाल से प्रचलित ये मेले प्रदेश

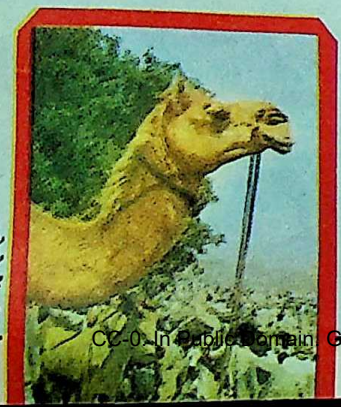

मेले में ऊंट

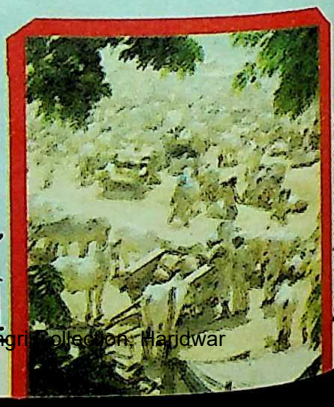

पशु-मेला, भूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह-सवेरे-पशु मेले का दृश्य-स्थल 'जहाजगढ़' रोहतक

समृद्धि के प्रतीक पशु-मेले

● राजकिशन नैन

के जन-जीवन में आस्था, विश्वास व उत्साह का संचार कर आपसी मेल-मिलाप और भाई-चारे की भावना को सुदृढ़ करते हैं। इनके द्वारा पशुओं की श्रेष्ठ नस्लें देश-विदेश में वितरित करने के सुअवसर मिलते हैं। इसी कारण यहां की बहुधान्यक भूमि के चप्पे-चप्पे पर बड़ी भारी संख्या में रंग-बिरंगे एवं सदाबहार पशु-मेलों की सदैव धूम मची रहती है। शहरी और ग्रामीण-क्षेत्रों में इनका आयोजन समान रूप से किया जाता है।

ग्रामीण संस्कृति की झलक

हरियाले खेतों की गोद में, विस्तृत व खुली जगहों पर लगनेवाले इन मेलों की शोभा देखते ही बनती है। ऐसे अवसरों पर बहुरंगी ग्रामीण संस्कृति की झलक सहज ही प्राप्य होती है। इन मेलों में पशुओं के क्रय-विक्रय के साथ-साथ खेल-कूद (दौड़, कबड्डी, कुश्ती), पशु-दौड़ तथा मनोरंजन के अन्य उपक्रम भी चलते रहते हैं। इस तरह स्वस्थ परंपराओं को जीवंत रखने में इन मेलों का सराहनीय योगदान है। प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

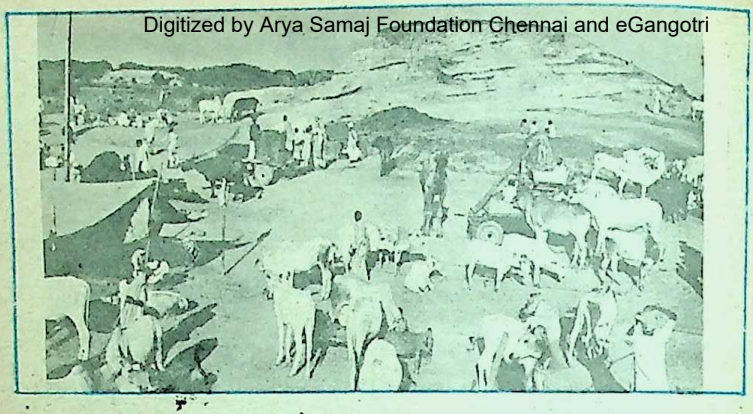

के बारह जिलों में प्रतिवर्ष एक सौ पचास पशु मेले लगते हैं। ऋतु अनुकूल, किसानों की सुविधानुसार ये उस समय लगाये जाते हैं, जब खेतों पर कार्य कम होता है, ताकि खेती से जुड़े लोगों का नुकसान न हो। सर्वाधिक पशु मेले क्रमशः रोहतक, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, गुड़गांवा, सोनीपत तथा जींद जिलों में लगते हैं। जिला रोहतक में जहाजगढ़ की पीठ तो पूरे उत्तर भारत में मशहूर है। इस मेले में व्यापारी दूर-दूर से आते हैं। अंगरेजी शासन के दिनों अंगरेज वायसराय लिनलिथगो इस मेले को स्वयं देखने आये थे। प्रदेश में पशु-मेलों का यह स्वरूप सहस्राब्दियों से चला आ रहा है, तथा राष्ट्रीय पशु-धन के विकास में इसका अटूट योगदान है।

: भोजन का समय हो गया है

अनगिनत नस्लें

इन मेलों में दुधारू व खेती कार्यों के उपयोगी पशुओं की बहुलता होती है। हरियाणवी कृषि-जगत में बैल किसान के आत्मीय साथी हैं। इसी कारण इन मेलों में बैलों की संख्या सर्वाधिक होती है। हरियाणा के बैल शरीर से पुष्ट, देखने में सुंदर व चलने में तेज होते हैं। इनके बारे में देश भर में यह कहावत प्रचलित है :-

कीकर पाथा, सिरस हल...
हरयाणे का बैल,
लोधा हाली लगाय के...
बैठा चौपड़ खेल।

हरियाणवी बैलों की नस्लें अनगिनत हैं। एक हरियाणवी किसान खरीददारी करने मेले में जाने की तैयारी में लगा है। उसकी घरवाली उसे देसी घी का चूरमा थमाती हुई कहती है कि वह किस तरह का बैल खरीदे :-

लाखा लियो लाख का...
लीला लियो करोड़..
धौला लियो बाह कै..
पीला दियो छोड़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

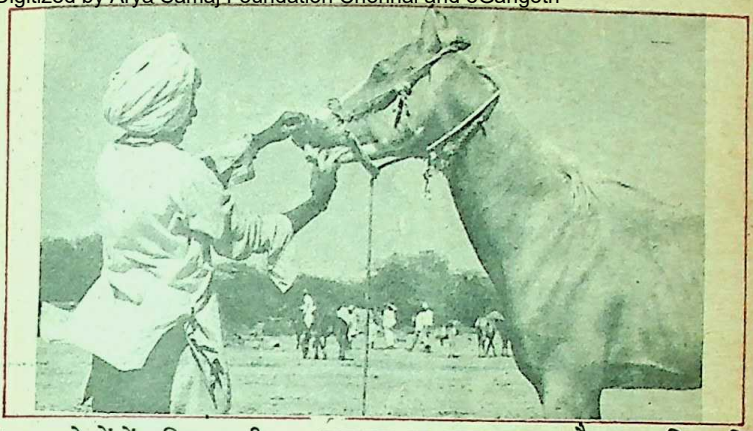

चित्र में एक किसान खच्चर के दांत गिनते हुए

बैलों के अतिरिक्त इन मेलों में हरियाणा की विश्व-प्रसिद्ध मुर्राह भैसों व हरियाणा नस्ल की साहिवाल तथा हिसारी गौओं का अधिकाधिक क्रय-विक्रय होता है। मुर्राह भैंस अपने एक ब्यांत (अवधि) में ३,५०० किलोग्राम दूध देने में सक्षम है, जिसकी तुलना सर्वोत्तम यूरोपियन पशुओं की नस्लों के दूध से भली-भांति की जा सकती है। इस नस्ल की एक भैंस १० हजार रुपये तक में बिकती है। हरियाणा नस्ल की शंकर गौएं भी अपने एक ब्यांत में पांच हजार लिटर तक दूध देती हैं। ऐसी गौओं के इन मेलों में मुंह-मांगे दाम मिलते हैं। हरियाणा में गऊ को परम सुखदायी व कामधेनु माना जाता है। कहावत भी है कि :

"गेहूं भोजन...गऊ धन... घर सुलखणी नार

चौथी पीठ तुरंग की... सुरग निसानी चार।"

इसी गौधन के बलबूते पर हरियाणा आज श्वेत-क्रांति की दहलीज पर खड़ा है। यहां दूध की खपत अन्य राज्यों की तुलना में अधिकाधिक है। पूरे देश में औसतन दूध उत्पादन व खपत का औसतन प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक-सौ सत्तावन ग्राम है। जबकि हरियाणा में यह औसत चार-सौ चौरानवे ग्राम है, जो सातवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक छह-सौ ग्राम हो जाएगी। इस समय प्रदेश में पच्चीस लाख मीट्रिक टन दूध का उत्पादन प्रतिदिन होता है। इस शताब्दी के अंत तक यह मात्रा चालीस लाख मीट्रिक टन प्रतिदिन हो जाएगी।

इनके अलावा इन मेलों में उत्तम नस्ल के बछड़े-बछड़ियां, कटड़े-कटड़ियां, सांड़, खच्चर, घोड़े-घोड़ी, गधे, भेड़-बकरियां व ऊंट-ऊंटनी भी भारी संख्या में पाये जाते हैं। खच्चरों, घोड़ों व गधों के मेले बेरी,

गधों का सुप्रसिद्ध मेला 'बेरी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपालमोचन व नेकल आदि स्थानों पर अलग से भी लगते हैं। इन मेलों में गधे भी बीस-बीस हजार रुपये में बिकते देखे गये हैं।

आर्थिक समस्याओं का हल

पशु-मेलों का हरियाणा की अर्थ-व्यवस्था से भी घनिष्ठ संबंध है। हरियाणा प्रतिवर्ष पंद्रह करोड़ रुपये मूल्य के पशु अन्य राज्यों को निर्यात करता है। इतना ही नहीं, वियतनाम, श्रीलंका, नेपाल व अन्य पड़ोसी देशों को भी हरियाणा अच्छी नस्ल के पशुओं का निर्यात करता है। ग्रामीण व शहरी घरों में पशुओं से प्राप्त दूध की बिक्री द्वारा परिवार की आर्थिक समस्याएं हल की जाती हैं। केवल दूध की बिक्री से ही एक परिवार को पांच हजार रुपये से अधिक की वार्षिक आमदनी होती है। पशुपालन-विभाग हरियाणा, को इन मेलों से बीस करोड़ रुपये की वार्षिक आय प्राप्त होती है। प्रत्येक एक-सौ रुपयों के पीछे चार रुपये पशुपालन विभाग को मिलते हैं। पशुओं के बूते पर ही हरियाणा के डेरी-उद्योग में करोड़ों की पूंजी लगी है, जो दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। श्रेष्ठ पशुओं की अधिक संख्या के कारण हरियाणा का डेरी-उद्योग आज एशिया भर में प्रसिद्ध है।

मेले से खरीदा हुआ, नया पशु जब घर में आता है तो उसके पावों की धूल मस्तक पर चढ़ा, किसान की घरवाली, घर के द्वार पर उसके चरण धोती है तथा नये पशु से घर में सुख-समृद्धि बढ़े, ऐसा वचन ईश्वर से मांगती है। प्रत्येक आनेवाले पशु के साथ स्नेहपूर्ण बर्ताव किया जाता है। जितने दिन पशु घर में रहता है, मर्द व औरतें उसके आगे-पीछे फिरते रहते हैं। अपना पेट भरने से पहले उन्हें पशुओं का पेट भरने की फिक्र रहती है। अपना तन ढकें न ढकें, किंतु पशुओं को मींह-पानी व जाड़े-पाले से बचाने हेतु, वे सदैव उत्सुक रहते हैं। छोटे बच्चे पशुओं से आंख-मिचौनी खेलते हैं, उनके गले में झूमते हैं तथा अपना ढेर सारा निश्छल स्नेह उन्हें दे डालते हैं। इस स्नेहाधिक्य के कारण ही यहां का पशु-धन, अपनी मिसाल आप है।

बनें रहें ये मेले और बनें रहें इनका आयोजन करनेवाले, ताकि दूध-घी की नदियां यहां पुनः बहें।

— ग्राम + पो. अजायब,
जिला-रोहतक (हरि.) १२४११

तिजोरियों में बंद फार्मूले

स्वादिष्ट पेय और व्यंजन बनानेवाली कई कंपनियां अपने उत्पादनों को तैयार करने की मूल विधि अर्थात फार्मूले को अत्यंत गुप्त रखती है। उदाहरण के लिए अंतरराष्ट्रीय ख्याति के पेय 'कोक' का फार्मूला एक मुहरबंद लिफाफे में अटलांटा के एक बैंक-वाल्ट में रखा गया है। अमरीका में 'केनटकी फ्राइड चिकन' काफी लोकप्रिय है। इसे हजारों रेस्तरां बेचते हैं। 'फाइड चिकन' बनाने की यह विधि पचास वर्ष पूर्व कर्नल सैंडर्स नामक एक सज्जन ने ग्यारह जड़ियों से तैयार की थी। यह फार्मूला भी तालों में सुरक्षित बंद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

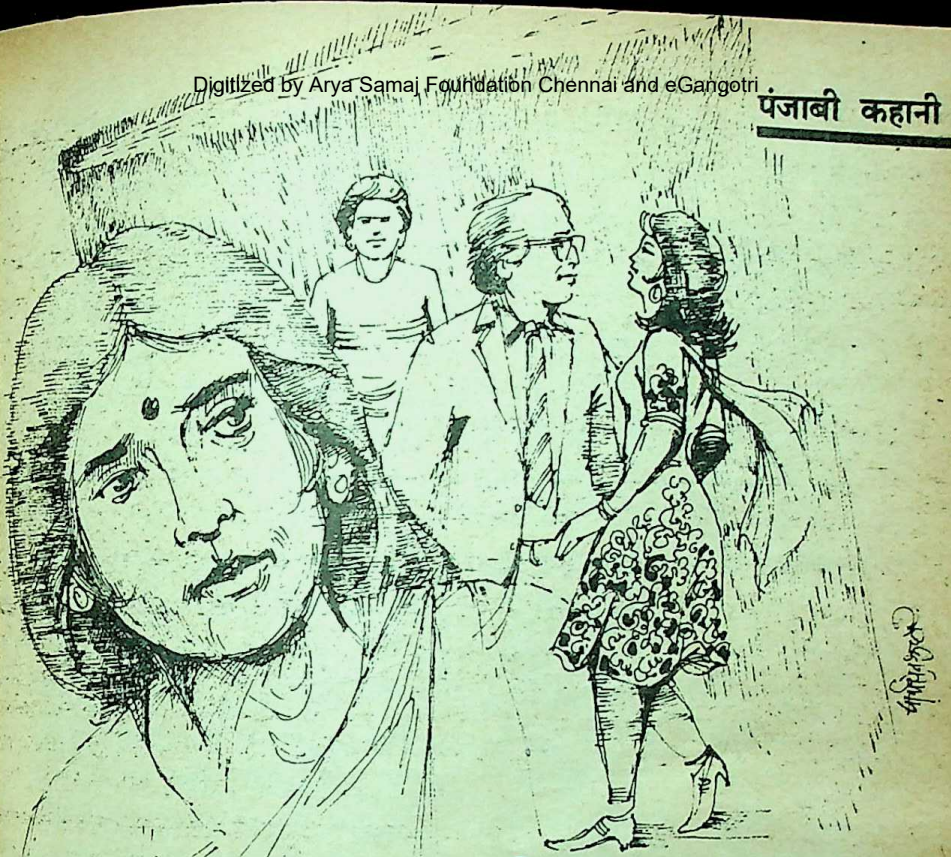

ये दिन, वे दिन

● कुलदीप सिंह बेदी

"आंटीजी, यह किताब रूबी को दे देना।" जब मिसेज सिंह ने सलाइयों से दृष्टि हटायी तो अनिल जा चुका था। कभी उनकी तत्पर निगाहें किताब पर ठहरतीं तो कभी जाते हुए अनिल की पीठ पर। किताब ज्यों की त्यों तिपाई पर पड़ी थी। अभी कुछ ही दिन हुए जब उन्होंने इस कोठी में पदार्पण किया था। नये-नये लोग— अभी पड़ोसियों से भी परिचय-पहचान नहीं हुई थी कि अमुक व्यक्ति कौन है। रूबी ने प्रथम वर्ष में अभी प्रवेश ही किया था। वे घर में केवल तीन प्राणी थे। मिस्टर सिंह, मिसेज सिंह तथा उनकी इकलौती बेटी रूबी। मिसेज सिंह गहरे सोच में डूब गयीं कि अभी तो हमने इस कॉलोनी में पांव ही रखा है, तो इस अनिल की रूबी से इतनी प्रगाढ़ पहचान कैसे हो गयी। शायद उसका सहपाठी होगा। परंतु क्या वे इतने घुल-मिल गये हैं कि पुस्तकों का आदान-प्रदान आरंभ कर लिया है ? मिसेज सिंह के मन में संशय का बीज पनपने लगा। किताब की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

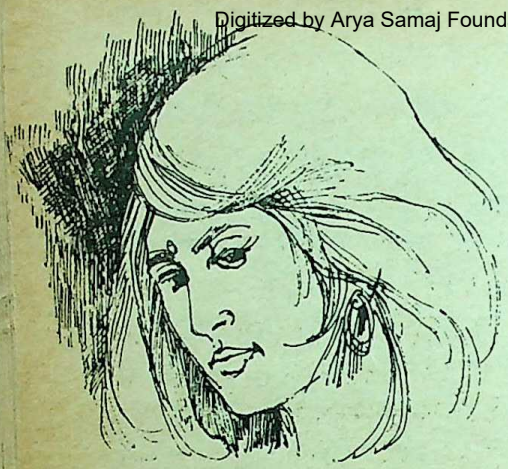

वे अभी भी देखती जा रही थीं। एक बार तो उनके मन में बलवती इच्छा जागी कि 'किताब को देखूं तो सही' लेकिन वे ज्यों की त्यों बैठी पुस्तक को अपलक निहारती रहीं।

एकाएक मिसेज सिंह को अपना जमाना याद आ गया। उन्हें शहर से कोई देखने आया था। वे गांव में पलीं, बढ़ीं तथा वहीं पर उनका यौवन अंगड़ाइयां लेने लगा था। वे पिछले कमरे में जा घुसीं और बिस्तरे में मुंह छिपा लिया था। कितनी लज्जाजनक बात थी कि उन्हें देखने के लिए आयी हुई स्त्रियों के साथ वह लड़का भी उपस्थित था, जिसके लिए उन्हें पसंद किया जा रहा था। उस समय उनकी आंखों के समक्ष बढ़ई के 'दीपे' की शक्ल उभर आयी थी!

गांव का वह स्कूल, जहां लड़के व लड़कियां दोनों ही पढ़ते थे। दीपा पठन-पाठन में काफी कुशाग्र बुद्धि रखता था। इसलिए वह क्लास का मानीटर भी था। उस दिन वे भी अन्य लड़के-लड़कियों के साथ बेंच पर खड़ी थीं, क्योंकि वे भी अपनी गणित की कापी घर में भूल आयी थीं। मास्टरजी ने दीपा को आदेश दिया था कि वह सभी के मुंह पर दो-दो थप्पड़ मारे। जब दीपा उनके मुंह पर थप्पड़ मारने लगा था तो पता नहीं उसके हाथ क्यों रुक गये। फिर बेदिली से दीपे ने उनके मुंह पर हलकी-हलकी दो चपतें लगायीं। जब उन्हें गालों पर हाथ फेरा था, यह अनुभव हुआ था कि दीपा ने सजा नहीं दी, बल्कि प्यार किया है।

'दीपा, इधर आ।' मास्टरजी कड़ककर बोले।

'थप्पड़ मारने का ढंग मैं तुम्हें बताऊं?' तथा जोर से एक तमाचा उसके गाल पर जड़ दिया। तब उन्हें लगा कि वह थप्पड़ दीपे के गाल पर न लग करके उनके अपने गाल पर लगा है। दीपा का मुंह उस समय कानों तक सुर्ख हो गया था। उस दिन वे सभी पीरियड में चोरी-छिपे दीपे को देखती रही थीं।

मिसेज सिंह ने एक पल तिपाई पर पड़ी किताब की ओर देखा और फिर वे अपनी यादों में खो गयीं। शाम को जब वे चौबारे की सीढ़ियां उतर रही थीं तो उन्होंने देखा कि आंगन में दीपा खड़ा है।

'प्रकाशो, तुम्हारी हिसाब की किताब'। तभी उनकी स्मरण-शक्ति लौटी कि हिसाब की किताब तो वे स्कूल में ही भूल आयी थीं। वे किताब लेने आगे बढ़ीं। बापू, जो आंगन में चारपाई लगाये बैठे थे, तिरछी निगाहों में दीपा को देखते जा रहे थे। किताब लेकर अभी चौबारे की सीढ़ी पर पांव ही रखा था कि बापू की आवाज आयी, 'इधर ला किताब!'

बापू ने शीघ्रातिशीघ्र किताब उलट-पलट दी तथा कागज का एक टुकड़ा बापू के हाथ में आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिपाई पर पड़ी किताब ने मिसेज सिंह को अतीत में पहुंचा दिया था। तब वे प्रकाशो थीं। एक सहपाठी द्वारा उन्हें पत्र लिखने पर उनके पिता ने स्कूल से नाम कटा दिया था और शीघ्र ही उनकी शादी कर दी थी। आज मिसेज सिंह एक युवा बेटी की मां थीं। तिपाई पर पड़ी किताब ने उन्हें चिंता में डाल दिया था। क्यों ?

गया। एक कंपकंपी शरीर में दौड़ गयी। बापू कागज पर लिखे अक्षरों को पढ़ रहे थे और अगले पल साथ ही 'धम्म' की आवाज करता एक घूंसा उनकी गरदन पर पड़ा था।

अनिल जो किताब रूबी को देने आया था, वह ज्यों की त्यों तिपाई पर पड़ी थी। कॉलेज से रूबी तो कब से पढ़कर लौट आयी थी, फिर वह सहेली के साथ शॉपिंग करने चली गयी। अंधेरा छाने लगा था। मिसेज सिंह उठकर भीतर कामकाज करने चली गयीं। उनकी चेतना बार-बार उस किताब की ओर लौट जाती जो अभी भी तिपाई पर पड़ी थी। उनकी आंखों के समक्ष अनिल का चेहरा उभरा, जिसे वह अभी तक अच्छी तरह देख भी नहीं पायी थीं। फिर सहसा उसे खयाल आया कि रूबी का कॉलेज तो केवल लड़कियों का ही कॉलेज है, फिर अनिल के साथ इसका क्या संबंध ? मिसेज सिंह सब्जी काटती-काटती रुक गयीं। अंगुली चाकू से कट गयी थी। भीतरी कमरे से अंगुली पर बांधने के लिए कपड़ा लेने गयी थीं, लेकिन बरामदे में जा खड़ी हुई। तिपाई पर किताब ज्यों की त्यों पड़ी हुई थी। मिसेज सिंह कुछ पल किताब को घूरती रहीं तथा गेट से बाहर जाती हुई लंबी सड़क की ओर देखती रहीं। रूबी अभी कहीं भी आती हुई नजर नहीं आयी।

लड़की यौवन की देहरी पार करनेवाली है, लेकिन, उसे इस बात का किंचित मात्र भी एहसास नहीं। ज्यों की त्यों पहले की तरह ही उड़कर बाहर निकलती है। मिसेज सिंह मन में सोचने लगीं कि 'आज आये तो सही, अच्छी तरह कान खींचूंगी।'

उनकी चेतना बार-बार किताब की ओर लौट जाती। उस किताब की ओर नहीं, जिसे अनिल दे गया था, अपितु उस किताब की ओर जिसे कभी दीपा पकड़ा गया था।

उस समय वे यौवन की दहलीज पर खड़ी थीं— पूरे सोलहवे वर्ष में। उस समय वे कतई नहीं समझ सकी थीं कि उनकी गरदन पर मुक्का क्यों पड़ा था ? केवल चौबारे की सीढ़ियां चढ़ती हुई उन्होंने बापू के संवाद सुन लिये थे, 'बिशनुकरे। बंद कर दे प्रकाशो का स्कूल जाना, और नये चांद चढ़ाएगी। कोई लड़का देखकर सिर से बला टाल।'

प्रातः जब वे आंगन में झाड़ू लगा रही थीं, तो सीढ़ियों के नीचे गिरा कागज का टुकड़ा उनकी दृष्टि में आ गया। यह वही कागज का टुकड़ा था, जिसने बापू का पारा चढ़ा दिया था। वे वह टुकड़ा हाथ में पकड़े-पकड़े झाड़ू लगाती रहीं और तत्पश्चात चौबारे पर आकर उस कागज पर अंकित शब्दों को पढ़ने लगीं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रकाशो, तेरा मुंह इतना भोला लगा था कि मेरा दिल तुम्हें थप्पड़ मारने को नहीं किया। तुम मुझे अति प्रिय हो, प्रकाशो।' लेकिन उस क्षण उन्हें पहली बार अनुभव हुआ था कि वे युवा हैं तथा सुंदर भी। सोलहवें वर्ष में किसी ने उनके प्रेम की तरंगों को छू लिया था। मन की वीणा में प्रेम का संगीत फूट पड़ा था। लगा था कि उनके तन से ऊष्मा का संचालन हो रहा हो। वह शीघ्रतम पग धरती हुई सीढ़ियां उतर गयीं। उस समय अभी अंधेरा झुटपुट ही था। कपड़े उतारकर वे नलके के नीचे बैठ गयीं। उस दिन वे मल-मल नहायी थीं, जैसे उन्हें इस बात का एहसास हो गया हो कि कोई उन्हें अब स्नेहसिक्त दृष्टि से देखने लगा। शीशे के समक्ष खड़ी होकर उन्होंने क्लिक लगाकर अपनी केशराशि को संवारा। लंबी लट कभी उसने वक्षस्थल पर फेककर देखी तो कभी पीठ पर।

नाश्ता करके उन्होंने किताब उठायी और छमछम करके सीढ़ियां उतर गयीं। परंतु सामने बापू को देखकर आंखें नीचे कर लीं। 'तुझे कहा था, बिशनकुरे! प्रकाशो को स्कूल मत भेजना। पर तुम्हें तो कुछ सूझता ही नहीं।' वे स्तंभित हो गयी थीं। उनकी आंखों में अश्रुओं की एक झड़ी लग गयी थी।

मां ने कहा था, 'जाने दे प्रकाशो के बापू। महीना रह गया, बेटी दसवीं पास कर ले तो कोई योग्य वर मिल जाएगा।'

उस समय वे चुपचाप मां की पीठ की ओर होती हुई बाहर का दरवाजा पार कर गयी थीं। जब वे स्कूल पहुंचीं तो लगा, वे समय से पूर्व ही आ गयी हैं। दीपा एक पेड़ के नीचे बैठा पढ़ रहा था। उनका दिल धक-धक करने लगा था, परंतु उसी क्षण बापू का चेहरा आंखों के आगे उभरा। लगा, कि दीपा ने पत्र लिखकर एक भारी गलती कर दी है। यह बात कल स्कूल को पता लग गयी तो बापू टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। असमंजस में वे आगे बढ़ीं। वे अब दीपा के सम्मुख खड़ी थीं।

'दीपा तूने यह क्या किया? शर्म नहीं आयी तुझे पत्र लिखते हुए?'

'पत्र नहीं लिखा मैंने, वह तो मेरे भीतर की बात थी, जिसे मैंने तुम्हें देखने के बाद महसूस किया था।'

'ज्यादा बकवास मत कर। आइंदा मुझे मत बुलाना, और न ही हमारे घर में पैर रखना। मेरा बापू तो वैसे ही तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा।'

यह कहकर वे शीघ्रता से क्लास रूम की ओर बढ़ गयीं। क्लास की नुक्कड़ पर लगे डेस्क पर सिर रखकर वे सारा दिन सुबकती रही थीं। 'दीपे, तुम्हें क्या बताऊं मैं। तुम कौन, और हम कौन। मैं तुमसे प्यार करती हूं, पर मैं तुम्हारे आगे यह सच नहीं बता सकती, नहीं बोल सकती।' पर शब्द उनके गले में ही अटके रहे थे।

जब वे स्कूल से वापस आयी थीं तो घर में मेहमान बैठे थे। उनकी बड़ी बहन रिश्ता लेकर आयी थी। अविलंब उन्हें भीतर के कमरे में तैयार करके ले आया गया। सभी को लड़की पसंद आ गयी। लड़का फौज में अफसर था।

अगली प्रातः बापू कह रहे थे, 'चलो लड़की का तो बेड़ा पार हो गया।' उस समय उन्हें दीपा बहुत याद आया था। फिर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश से मिसेज सिंह बन गयी थी।

क्षण प्रतिक्षण मिसेज सिंह को लगा कि जैसे वे रूबी बन गयीं हों। रूबी अभी भी बाजार से नहीं लौटी थी। मिसेज सिंह एक बार पुनः बरामदे में जा खड़ी हुई। तिपाई पर पड़ी किताब पर उन्हें दीपा का उभरा हुआ चेहरा नजर आया।

गेट खुला। शायद मिस्टर सिंह आ गये थे। मिस्टर सिंह भीतर चले गये तथा साथ-साथ मिसेज सिंह भी। मिस्टर सिंह अनुभव कर रहे थे कि मिसेज सिंह पहले की अपेक्षा आज अधिक चुप हैं। मिस्टर सिंह ने जब पूछा तो बोलीं, "आपको क्या चिंता है जी। बेटी अभी तक बाजार से नहीं लौटी। रात बढ़ती जा रही है।"

"फिर क्या हो गया, प्रकाश। वह अब बच्ची नहीं रही।"

"यही तो मैं कह रही हूं कि वह अब बच्ची नहीं रही। युवा लड़कियों का यूं घूमना-फिरना भला नहीं दिखता।"

"हमारी बेटी बड़ी सियानी है प्रकाश। तुम्हारा मूड आज पता नहीं क्यों.... ?"

"आप तो हर बात को साधारण बात की तरह लेते हैं। पता है, आज वह अनिल, रूबी को किताब देकर गया है।"

"मिसेज सिंह, सोचकर बोलें, अनिल हमारी एक कोठी छोड़कर रहता है। कहीं रूबी से किताब ले गया होगा। आज वापस करने आया होगा।"

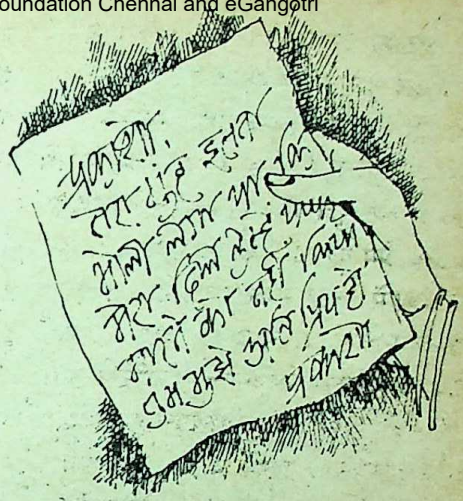

गेट खुला तथा रूबी शीघ्र पग भरती हुई अंदर घुसी। उसने आते ही मिस्टर सिंह के गले में बाहें डाल दीं, "डैडी, यह अनिल, मेरा दोस्त। आ भीतर आ जाओ अनिल। अनिल, यह मेरे डैडी हैं, और डैडी, यह है अनिल।"

"वेरी स्वीट ब्वाय।" मिस्टर सिंह ने हाथ मिलाया और मिसेज सिंह की ओर ताकने लगे।

मिसेज सिंह बरामदे में आयीं तथा तिपाई से किताब उठाकर एक-एक पृष्ठ देखा, परंतु उसमें कुछ भी ऐसा नहीं था। न पत्र, न ही कोई शब्द, किताब तिपाई पर पटककर वह रसोई में जा घुसीं। ड्राईंग रूम में बैठे मिस्टर सिंह, रूबी तथा अनिल के ठहाके उसके कानों में गूंजते रहे।

उस रात मिसेज सिंह को दीपा बहुत याद आया।

प्लाट नं.४, न्यू प्रीतनगर,
सोढल रोड, जालंधर।
१४४००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लॉटरी पर आयकर

राधेश्याम श्रीवास्तव, बलरामपुर : मेरी एक लाख रुपये की लॉटरी जून १९८६ में निकली थी, जिसमें से मुझे ३६ हजार रु. आयकर व दस हजार रु. एजेंट का कमीशन काटकर कुल ५४ हजार रु. मिले। मैं आयकर सीमा के अंतर्गत देय मुक्त हूं। कृपया, बताएं कि मुझे काटे गये आयकर की राशि ३६ हजार रु. में से कितने रुपये वापस मिलेंगे ?

आपने अपने आयकर का विवरण आयकर विभाग को दे दिया होगा। उसमें अपनी पूरी आय का विवरण भी दिया होगा। आपकी पूर्ण आय के आधार पर आयकर-अधिकारी देय आयकर का निर्णय करेंगे और तब ही यह निर्णय हो सकेगा कि आपको कितना रुपया वापस मिल सकेगा। आय का पूरा विवरण न होने की स्थिति में यह कहना कठिन है कि आपको काटे गये आयकर में से कितनी रकम वापस मिल सकेगी।

पत्नी नहीं आना चाहती

विजयकुमार धीमान, बाराबंकी : मेरे विवाह को सात वर्ष हो गये और गौने को दो वर्ष। मेरी पत्नी को उसके बचपन में ही मेरे ससुर ने अपने बहनोई को दे दिया था, क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। इनके बहनोई ने ही उसका पालन-पोषण किया और शादी की। गौने के बाद मेरी पत्नी केवल दस दिन ही मेरे साथ रही। इसके बाद न उसे नहीं भेज रहे हैं, न वह आना चाहती है और अब मैं भी उसे लाना नहीं चाहता। बताइए, मैं क्या करूं ? क्या मैं उसे तलाक दिये बिना दूसरी शादी कर सकता हूं ?

आपका विवाह विधिवत हुआ है। इस विवाह के रहते आप दूसरा विवाह नहीं कर सकते। दूसरा विवाह करने से पूर्व पत्नी से तलाक लेना आवश्यक है। आपकी पत्नी आना नहीं चाहती, आपके ससुरालवाले उसे भेजना नहीं चाहते और आप भी लाना नहीं चाहते। ऐसी स्थिति का निवारण करने के लिए हिंदू विवाह अधिनियम में विशेष व्यवस्था है। आप तथा आपकी पत्नी दोनों मिलकर न्यायालय से संबंध-विच्छेद करने के लिए याचिका दे सकते हैं। याचिका देने के छह माह तक आपको इंतजार करना होगा। उसके बाद पुनः याचिका देकर आप न्यायालय से तलाक की मांग करें। इससे आपको तलाक मिल जाएगा और आप दोनों ही पक्ष दोबारा विवाह करने के लिए स्वतंत्र हो जाएंगे। हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत यह याचिका जिला न्यायालय में लगायी जा सकती है।

उग्र स्वभाव की पत्नी

सुरेन्द्रसिंह, अंबिकापुर : मेरा विवाह हुए ... वर्ष हो गये। पत्नी कम पढ़ी-लिखी और शुरू से ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्र स्वभाव की है। उसके उग्र स्वभाव के बावजूद मैं किसी तरह परिवार चलाता रहा। इस बीच दो बच्चे भी हो गये। वह जरा-जरा सी बात पर लड़ती-झगड़ती और मुझे सबक सिखाने की धमकी देती हुई आत्महत्या करने को दौड़ पड़ती है। दो बार उसने आत्महत्या की कोशिश की लेकिन समय पर बचा ली गयी। अब वह एक बच्चे को लेकर छह महीने से मायके में है। क्या वह मेरे ऊपर कोई कानूनी कार्रवाई या अपने खर्चे का दावा कर सकती है ?

उग्र स्वभाव की पत्नी को आप अपनत्व देते रहे, यह तो आपने ठीक ही किया। स्वभाव की उग्रता के बारे में यदि आप किसी मनोरोग विशेषज्ञ डॉक्टर से परामर्श कर, कारण खोज उसका निदान करें, तो अधिक उपयुक्त होगा।

एक बच्चा लेकर आपकी पत्नी मायके में रह रही है। इस बार उसका कारण क्या है, यह जान लेना आवश्यक है। पत्नी का भरण-पोषण पाने का अधिकार तो कानून स्वीकार करता है तथा इसी आधार पर वह अपने तथा अपने बच्चे के भरण-पोषण की मांग आपसे कर सकती है। आप यदि उचित समझें तो अपनी पत्नी को मनाने या न मानने पर दांपत्य अधिकार की पुनर्स्थापना के लिए आवेदन देकर उसे अपने घर लाने का प्रयास कर सकते हैं।

मां के नाम मेरा मकान

सुभाषचंद्र, रामपुर : हमारे पास कोई पैतृक संपत्ति नहीं थी। करीब दस साल पहले मैंने अपने रुपये से एक मकान खरीदकर अपनी *माताजी* के नाम रजिस्ट्री करा दी। हम चार भाई व तीन बहनें हैं, सभी की शादी हो चुकी है और सभी भाई अलग-अलग रहते हैं। इस घर में मां और मैं ही रहता हूं। घर के सभी सदस्य इस मकान को मेरा मानते हैं, माताजी ने भी मेरे पक्ष में नगरपालिका में पांच रुपये का स्टांप लिखकर जल-कर व मकान-कर मुझसे वसूल करने का हक दे रखा है। तथा यह भी लिखा है कि इस मकान से उनका कोई वास्ता नहीं है। मैं आपसे जानना चाहता हूं कि इससे भविष्य में तो कोई परेशानी नहीं आएगी। आगे कोई भाई तो इस मकान का हिस्सेदार है या नहीं. कृपा कर सुझाव दें।

मकान आपकी माताजी के नाम है। यह मकान आपने खरीदकर माताजी के नाम करा दिया। इस मकान को अपने नाम कराने के लिए आप अपनी माताजी से दानपत्र लिखा लें तथा उस पर अपने अन्य भाइयों की साक्षी कराकर दानपत्र को पंजीकृत करा लें। इससे यह मकान स्वतः ही आपके नाम हस्तांतरित हो जाएगा।

एक अन्य उपाय यह है कि मकान की वसीयत आप अपने नाम लिखा लें। इस वसीयत पर भी अन्य भाइयों को साक्षी करा कर तथा वसीयत का पंजीकृत कर लेना उपयोगी रहेगा। इससे माताजी के स्वर्गवास के बाद आप मकान के मालिक बन सकेंगे।

केवल मकान-कर तथा जल-कर देने से आप मकान के स्वामी नहीं माने जा सकते।

संस्थाएं और सदस्यता

महदी हसन, बेतिया : क्या एक व्यक्ति अनेक संस्थाओं, सोसाइटियों अथवा संघों का अध्यक्ष अथवा सचिव हो सकता है ? क्या एक अथवा अनेक संस्था का अध्यक्ष या सचिव किसी अन्य संस्था का सदस्य हो सकता है ?

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित करते हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या एक संस्था, संघ अथवा सोसायटी के सदस्य, किसी अन्य संस्था के भी सदस्य हो सकते हैं, कृपया बताने का कष्ट करें।

कोई व्यक्ति कितनी ही सामाजिक संस्थाओं का सदस्य या अधिकारी होकर कितनी समाज सेवा कर सकता है, यह तो उसकी कार्यक्षमता पर निर्भर करता है। इसी आधार पर एक संस्था या सोसाइटी के सदस्य का दूसरी संस्था या सोसाइटी का सदस्य बनने पर साधारणतः कोई प्रतिबंध नहीं होता।

यहां यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि कुछ संस्थाएं या समितियां अपने विधान द्वारा सदस्यों पर कुछ प्रतिबंध लगा देती हैं। इनमें समान आधार या विचारवाली अन्य संस्थाओं के सदस्य बनने पर प्रतिबंध भी कुछ संस्थाएं लगा देती हैं। ऐसी स्थिति में संस्था के नियमों को दृष्टिगत रखकर ही अन्य संस्था का सदस्य बना जा सकता है।

बैंक का कर्ज

श्याम पांडेय, इंदौर : सन १९७६ में मैंने बेरोजगारी की हालत में राज्य खादी ग्रामोद्योग की पावर घानी व्यवसाय योजना के अंतर्गत भारतीय स्टेट बैंक से ५,००० रु. पावर घानी मशीनरी स्थापना हेतु और २,००० रु. कार्यशील पूंजी के रूप में ऋण प्राप्त किया था। यह व्यवसाय नुकसानदेह साबित हुआ। क्योंकि इस विधि से तेल बीजों से केवल चालीस प्रतिशत ही तेल प्राप्त होता है। उत्पादन-मूल्य अधिक आता है और उत्पादन कम होता है अतः यह शुद्ध घाटे का सौदा था। फलतः मुझे सन १९७९ में यह व्यवसाय बंद कर देना पड़ा। इस बीच मुझे म. प्र. विद्युत मंडल में लिपिक की नौकरी मिल गयी। मैंने व्यवसाय की मशीनरी बैंक में जमा करा दी। तब तक ऋण की राशि ब्याज सहित ९,५०० रु. हो गयी थी।

सन १९८१ में बैंक द्वारा ऋण वसूली की अदालती कार्यवाही की गयी। मैंने पहली ही में अपनी खस्ता माली हालत, व्यवसाय असफलता व हानि का विवरण बैंक को न्याय में एक पत्र द्वारा सूचित किया था। बैंक ने निर्णय लिया, मुझे मालूम नहीं और न यह कि न्यायालय ने क्या निर्णय लिया।

अब मैंने अपने वेतन से १०० रु. प्रतिमाह बैंक के ऋण की वापसी शुरू कर दी और दिसं ८७ तक ७०० रु. जमा करा कर कुल ९,५०० रु. जमा करा दी, जिसकी रसीदें मेरे हैं।

अब बैंक अधिकारी और भी ब्याज लि की योजना बना रहे हैं यदि सन १९७९ से जोड़ा जाए तो ब्याज की एक मोटी रकम सकती है। इस हालत में मुझे क्या करना चाहि

आपके पत्र से स्पष्ट है कि बैंक ने अ दावा करके न्यायालय से आपके विरुद्ध हासिल कर ली है। आपने उसमें कोई अ नहीं किया। अब आपको इस डिग्री के अ देय राशि का पूरा विवरण प्राप्त कर चाहिए। इसके बाद आपने कुल कितनी बैंक को दे दी है, उसका हिसाब बना लें के आधार पर प्रदान की गयी राशि से अ रकम प्राप्त करने का अधिकार बैंक को है। बैंक अधिकारियों की योजना क्या है भी उनका अधिकार नहीं बढ़ता। यदि डि आधीन राशि आपके द्वारा अब तक दी राशि से पूरी नहीं होती, तो शेष राशि बैंक कर सकता है। बैंक द्वारा उठाया गया क दुर्भावनापूर्ण कदम रोकने के लिए यह रहेगा कि न्यायालय में आवेदन देकर अ अदा की गयी रकम का विवरण न्याया रेकॉर्ड में दर्ज करा दें, इससे बैंक का रकम वसूली का प्रयास भी रोका जा स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयल, पपीहा और छोटे ककू

• राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

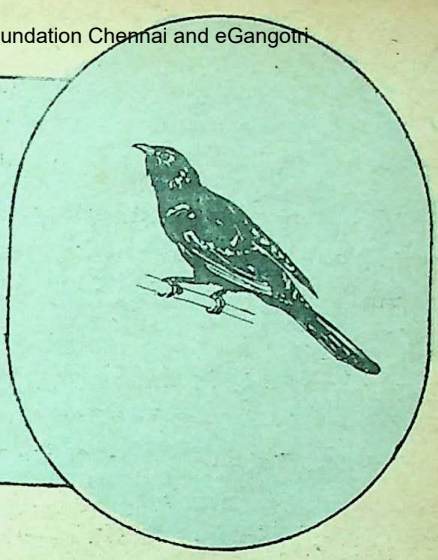

ककू जाति के पक्षी प्रायः सारे संसार में पाये जाते हैं,— पर एकसे नहीं, विभिन्न पक्षी-शास्त्र वेत्ताओं ने पक्षी-शरीर रचना विज्ञान के आधार पर इनका जाति-भेद बनाया और इसीलिए सामान्य शरीर रचनावाले पक्षियों को कवुलस यानी ककू नाम से पुकारा है। हमारे देश में पाये जानेवाले ककुओं में सबसे अधिक लोकप्रिय कोयल है जो कौवे के रंग और कबूतर के आकार की होती है। वैसे तो जाड़े में जब वह बोलती नहीं, अक्सर लोग कोयल को दूर से देखकर कौवा ही समझ लेते हैं। पर जैसा कि संस्कृत भाषा की एक उक्ति में कहा गया है—

प्राप्तेषु बंसतसमये काक : किकैः किकैः

कोयल और पपीहा दोनों की बोलियां ऐसी सुमधुर और कामोद्दीमक होती हैं कि कि उसे सुनकर विरहिनी नायिका प्रिय-वियोग से विकल हो उठती है और वह रत्नाकरजी के शब्दों में कह उठती है—

पातकी पपिहा बूंद को न प्यासो
कोउ व्यथित वियोगिनी के प्राणन को प्यासो है

कोयल 'कुहु कुहु' कहकर सबका मन हर लेती है। पर वह एक उदाहरण है इस बात का कि—

मधुतिष्ठति जिह्वाग्रे हृदयतु हलाहलम्

उसकी काली करतूत वर्षा काल के प्रारंभ में प्रगट होती है, जब मादा कोयल चुपके से अपना अंडा कौवे के घोंसले में रख आती है और उसके अंडे को चोंच से उठाकर दूर फेंक आती है और इस तरह अपने शिशु का लालन-पालन दूसरों से करवा लेती है। स्वयं न तो घोंसला बनाती है और न बच्चे ही पालती है, पर उसे अकसर अपनी घूर्तता के लिए काफी कीमत चुकानी पड़ती है। अगर कौवा दंपति अपने घोंसले पर संयोगवश आ जाता है और उसे अंडा रखते देख लेता है तो कोयल की खैर नहीं। वह भागती है। और वे उसका पीछा करते हैं। उसे चोंच से मार-मारकर मृतवत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयल और पपीहा दोनों उस जाति के पक्षी हैं जिसे वैज्ञानिक शब्दावली में 'कोकुलस' यानी कक्कू कहते हैं। इस की दर्जनों किस्में हैं। और ये सभी दूसरों से ही अपने अंडे सेवाते तथा बच्चों का पालन-पोषण कराते हैं। जिस तरह आजकल की 'मार्डन' महिलाएं घर संभालने से घबराती हैं, उसी प्रकार इन गायक पक्षियों को भी घोंसला बनाना, अंडे सेना, बच्चों का लालन-पालन करना भार प्रतीत होता है। जिन पर रात-दिन गाने की धुन सवार हो, उन्हें समय भी कहां कि वे गृह-संचालन में लगें ?

देते हैं। वह जमीन पर गिर पड़ती है और जान गंवा बैठती है। अकसर वर्षा ऋतु के आरंभ में जब दोनों के अंडा देने का समय होता है, आप बड़ी-बड़ी अमराइयों में इस तरह की अनेक मरी हुई कोयलें पाएंगे। कोयल के बच्चे कौवे से पालित होने के कारण ही कोयल को संस्कृत में 'परभृत' कहा है। यजुर्वेद में इसे 'अन्यवाय' भी कहा है अर्थात् दूसरे के घोंसले में अपना अंडा रखनेवाली।

कोयल की भर्त्सना

दूसरे की आंखों में धूल झोंककर उनसे अपने बच्चों का पालन-पोषण कराने के कारण कोयल को साहित्य में भर्त्सना भी काफी सुननी पड़ी है। पर यही काम अन्य पक्षी करते हैं, परंतु यह भी कैसी विडंबना है कि उनकी शिकायत में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा है, बल्कि सीधी-सादी चरखी के घोंसले में चुपके से अपने अंडे रख आनेवाले पपीहे की तारीफ के पुल बांधे गये हैं और उसके आत्म-सम्मान की प्रशंसा में कहा गया है—

ऊंची जाति पपीहरा, पियत न नीचे के जांचे घनश्याम सों के दुःख सहै

एक ही जुर्म के लिए कोयल तो नि[illegible] सूली पर चढ़ाई जाती है, पर दूसरी तरफ [illegible] की ओर से कवियों में आंखें ही नहीं [illegible] बल्कि उसके गुणों का ऐसा ढिंढोरा पीटा [illegible] उसकी प्रशस्ति में कलम ही तोड़ डाल[illegible]

कोयल और पपीहा दोनों उस जाति के [illegible] हैं जिसे वैज्ञानिक शब्दावली में 'कोकुलस' [illegible] कक्कू कहते हैं। इस की दर्जनों किस्में हैं [illegible] ये सभी दूसरों से ही अपने अंडे सेवा[illegible] बच्चों का पालन-पोषण कराते हैं। जि[illegible] आजकल की 'मार्डन' महिलाएं घर संभा[illegible] घबराती हैं, उसी प्रकार इन गायक प[illegible] भी घोंसला बनाना, अंडे सेना, ब[illegible] लालन-पालन करना भार प्रतीत होता है [illegible] पर रात-दिन गाने की धुन सवार हो, उन्[illegible] भी कहां कि वे गृह-संचालन में ल[illegible]

अंडे : अन्य पक्षियों के घोंसले

अतः कक्कू जाति के सभी पक्षी, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूरोप के हों या हमारे देश के, कभी घोंसला नहीं बनाते, औरों के घोंसले में ही अपने अंडे देते हैं। विलायत के ककू छोटे कद के होते हैं। अतः वे रोबिन आदि छोटे पक्षियों के घोंसलों में अंडे देते हैं। पर हमारे यहां 'ककू' जाति के पक्षियों में कोयल और पपीहा-जैसे बड़े कद के पक्षी भी हैं, चातक और 'बऊकथा' कहे-जैसे छोटे कद के भी। अतः प्रकृतितः भिन्न-भिन्न पक्षियों के घोंसले चुनते हैं, जिनका कद इन से मिलता-जुलता हो तथा जिनके अंडे-बच्चों के साथ इनके अंडे-बच्चों के रंग तथा आकार प्रकार में काफी सादृश्य हों। कौवे और कोयल के बच्चे एक-जैसे लगते हैं, वैसे ही चरखी और पपीहे के।

पी की रट लगाता चातक

पपीहे की बोली से मिलती-जुलती बोली एक और पक्षी की होती है, जो देखने में अत्याकर्षक है। इसे बंगला आदि कई भाषाओं में चातक कहा गया है। कद में यह पपीहे से काफी छोटा होता है। शरीर ऊपर गाढ़ा काला, नीचे सफेद, सिर पर तुर्रा— ये इसकी पहचान के चिह्न हैं। वर्षाकाल में यह भी 'पी-पी' की रट लगाता है, पर अत्यंत क्षीण स्वर में— जैसे कोई नव-विवाहिता वधू हो, जिसकी बोली में माधुर्य है, पर जोर नहीं। वर्षा ऋतु के आते ही चातक दृष्टिगोचर होने लगता है। यह भी अपने अंडे चरखी अथवा कस्तूर के घोंसले में ही रख आता है।

यही हाल अन्य छोटे ककू पक्षियों का है, जो हमारे बाग-बगीचों में कुछ इस तरह छिपे रहते हैं कि उन्हें देखना अत्यंत कठिन होता है। उनके अस्तित्व का पता हमें केवल उनकी मधुर वाणी से ही लगता है। दरअसल ये सारे छोटे ककू बड़े ही शर्मीले स्वभाव के होते हैं, वृक्ष की डालों पर ये पक्षियों की ओट में बैठे रहते हैं और वहीं से गाते या सीटी बजाते हैं। ये यूरोप के हों या हमारे देश के, इनका स्वभाव एक-जैसा है। कवि वर्ड्सवर्थ ने इंग्लैंड के ककू के संबंध में लिखा है—

तुझे ढूंढ़ने को मैं विचरा
वन में, मैदानों में,
किंतु बनी तू रही सतत ही
वस्तु प्रेम की और आश की,
एक लालसा बस-अदृश्य ही

यही हाल हमारे छोटे ककू पक्षियों का भी है। वे शायद ही कभी नजर आएं।

ककू की उपजातियां

कहते हैं, सारी दुनिया में किसी न किसी मौसम में ककू पाये जाते हैं। हमारे यहां इनकी छह उपजातियां देखने में आती हैं। सब से बड़ा ककू १३ इंच का होता है। इसका रंग भी पपीहे की भांति बहुत कुछ शिकरे से मिलता है यानी बदन के ऊपर का सारा हिस्सा गहरे राख के रंग का होता है। नीचे का सफेद, जिस पर छाती से नीचे तक पतली काली धारियां बनी होती हैं। पूंछ लंबी और अनुक्रमिक होती है, रंग कालापन लिये हुए बादामी। मादा के रंग में बादामी पन ज्यादा होता है। ये मौसम के अनुसार स्थान-परिवर्तन करते रहते हैं। जापान से लेकर हिमालय तथा मध्यप्रदेश से लेकर रांची की पहाड़ियों तक में ये पाये जाते हैं। ये पहाड़ी-ककू के नाम से से विख्यात हैं। जाड़ों में ये हिमालय से उतरकर इस देश के समतल क्षेत्रों में चले आते हैं। कुछ श्रीलंका तक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैर कर आते हैं। इनकी एक किस्म असम की पहाड़ियों में भी पायी जाती है जो उपर्युक्त ककूओं से देखने में कुछ भिन्न होती है

सबसे छोटा वह है, जिसे बंगाल में 'बऊकथा कह' के नाम से पुकारते हैं। इसकी बोली में एक अपूर्व माधुर्य है तथा जब ग्रीष्म की दोपहरी में अथवा शाम को सूर्य डूबने की बेला में यह किसी वृक्ष से कूकना या सीटी बजाना आरंभ करता है, तो एक अजीब रोमांटिक वातावरण पैदा कर देता है। यदा-कदा आधी रात में भी इसकी करुणापूर्ण सीटी सुनायी पड़ती है। जी चाहता है कि उसे सुनते ही रहें। उस समय इसकी बोली के संबंध में 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' के समान कोई तो सोचता है कि यह कह रहा है 'जोगी जी, बूटी भेजो', किसी को लगता है कि यह 'बऊकथा कह' या 'ये चलते राही' कह रहा है। फिर यह ओज से भरे हुए ऊंचे स्वर में सीटी बजाना आरंभ करता है और सारे वायुमंडल को अपने स्वर से गुंजित कर डालता है।

आवाज कहां से आती है ?

बोलने का इसका ढंग कुछ ऐसा है कि आदमी के लिए यह समझना कठिन हो जाता है कि आवाज किस ओर से आ रही है। बोलते समय यह अपने सिर को हमेशा घुमाता रहता है, कभी एक दिशा में स्थिर नहीं रखता, और इस तरह भ्रम में डाल देता है। कभी यह एक वृक्ष पर अधिक काल तक नहीं रहता, किंतु वृक्ष-परिवर्तन कुछ ऐसे ढंग से करता है कि हम उसे उड़ते हुए देख नहीं पाते, केवल आवाज से जान पाते हैं कि इसने स्थान-परिवर्तन कर लिया

है। कवि वर्डस्वर्थ की भांति हम कितने चेष्टा करें, इसको देखने से वंचित ही रहते

इसकी लंबाई प्रायः ९ इंच की होती अन्य ककू पक्षियों की तरह इसकी सूरत-भी शिकरे से बहुत कुछ मिलती है। नर का गहरा राख-मिश्रित भूरा होता है, मादा का तथा गले का हिस्सा अखरोटी निचला हि सफेद, जिस पर काली धारियां बनी होती नर के डैने नुकीले तथा पूंछ के पर क्रमिक हैं।

मादा अपने अंडे गौरैया के कद के अथवा चरखी नामक छोटे पक्षियों के घोंस रख आती है। ऐसा करने में यह निर्भीकता से काम लेती है, 'चोरी सीनाजोरी' की जीती-जागती मिसाल है जब अंडे देने का समय आता है, यह सीधे पक्षियों में से किसी के घोंसले में चली और उसमें बैठकर अंडे देती है, कापफी तादाद में— कभी-कभी बीस-बीस अंडे साथ। यदि घोंसला छोटा हुआ, तो यह किनारे पर बैठ जाती है, दुम को पीछे अंडे घोंसले के भीतर गिरा डालती है

दो-दो माताओं का सुख

धाय-माता इन अंडों को बड़े शौक है और बच्चों के बाहर निकलने पर दाना-चुगाकर उसी प्यार से लालन-पालन करती है— जैसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का। पर कक्कू के बच्चे कुछ और ही स्वभाव के होते हैं। वे इसका कोई अहसान नहीं मानते। जब भी मौका पाते हैं, अपनी गढ़ेदार पीठ पर धाय माता के अंडे या बच्चे को बैठाकर नीचे ढुलका देते हैं, जिससे वे नीचे गिरकर नष्ट हो जाते हैं। पर इन कृतघ्नों को इसका कोई मलाल नहीं होता। प्रकृति को तो देखिए, वह इनके इस साजिश में शामिल हो जाती है। आरंभ में इनकी पीठ पर एक गढ्ढ़ा बना देती है, जिससे ये समर्थ होते हैं इस दुष्कर्म के करने में। पर जब इसकी जरूरत नहीं रहती तो पीठ का यह गढ्ढ़ा आप-से-आप भर उठता है।

मजे की बात तो यह है कि धाय-माता के अलावा अपनी वास्तविक माता से भी इन्हें नियम से चुग्गा मिलता रहता है। इस तरह दो-दो माताओं से भोजन पाकर ये काफी बलिष्ठ हो जाते हैं। इनके गले में अद्भुत साज और सोज का उद्भव होता है।

धाय-माता इनकी धोखेबाजी से अनभिज्ञ रहती है, इन्हें बड़े चाव से पालती-पोसती है। यहां तक कि दूर-दूर से इनके लिए आहार संग्रह करके लाती है और ये उन्हें चट कर जाते हैं। परों के निकल आने पर ये धाय-माता से कद में बड़े हो जाते हैं, अतः अकसर उसे इनकी पीठ पर चढ़कर इन्हें दाना चुगाना पड़ जाता है, पर इन्हें इसका अहसान कहां ?

दूसरों के घोंसलों में अंडे देनेवाले कक्कू

इसी प्रकार और भी पांच प्रकार के जो कक्कू यहां पाये जाते हैं, इनकी मादाएं किसी न किसी दूसरे पक्षी के घोंसले में अंडे देती हैं। सबके तरीके अधिकांशतः एक-जैसे हैं और सभी एक मौसम में दर्जनों अंडे देती हैं, ज्यादातर एक ही जाति के पंछियों के घोंसलों में। इसका मुख्य कारण यह है कि इन छोटे कक्कुओं का कोई पक्का जोड़ा नहीं होता। अकसर मादा दो-तीन या इससे अधिक नरों के साथ जोड़ा बांधती है। नर तब घोंसला ढूंढ़ने का काम मादा के जिम्मे छोड़कर नौ-दो ग्यारह हो जाता है। फिर किसी और के साथ जोड़ा बांधता है।

बड़ों के अंडे गोलाकार पर काफी चिपटे हुए होते हैं। रंग कई प्रकार के होते हैं— सफेद, गुलाबी-बादामी, जिन पर नारंगी अथवा हलका बैंगनी रंग के छींटें और धारियां सुशोभित रहती हैं। किसी-किसी में काले धब्बे भी पाये जाते हैं। और कभी-कभी नीले रंग के अंडे भी पाये गये हैं। अंडा-संग्रहियों को ये अंडे बड़े काम के प्रतीत होते हैं।

छोटे कक्कू 'बऊकथा कह' के अंडे का एक छोर दूसरे छोर से पतला होता है। रंग में सफेद जिसके ऊपर हलके लाल रंग के चित्ते पड़े होते हैं जो दर्जी तथा फुदकी पक्षियों के अंडों से काफी मिलते हैं।

गरज यह कि हमारे देश में कोयल ही नहीं, ऐसे और भी कई पक्षी हैं, जिन्हें हम 'परभृत' कह सकते हैं। परमदासरों को घोंसलों में अंडा देने का यह रिवाज केवल कक्कू पक्षियों तक ही सीमित है। जीवशास्त्रवेत्ताओं ने शरीर की बनावट तथा स्वभाव सादृश्य के कारण इन सभी पक्षियों को एक ही 'कक्कू-श्रेणी' में रखा है।

उपेक्षित : छोटे कक्कू

पर हमारे साहित्य में, जहां कोयल और पपीहे को इतना प्रमुख स्थान दिया गया है, अफसोस कि वहां रूमानी वातावरण पैदा करनेवाले छोटे कक्कू उपेक्षित बने रहे हैं। किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सच ही कहा है कि इस दुनिया में उसकी पूछ होती है जो गला फाड़-फाड़कर बोलता है यानी बोलने में जोरदार होता है, अर्थात्—

हठीलों की सभी सुनते मुखातिब हो के सब बातें
न शर्मीलों की सुनता है कोई दास्तां आलम में

कितनी सत्यता है इस कथन में।

भारतीय साहित्य में चातक और पपीहा ये दोनों शब्द पर्यायवाची माने गये हैं, पर वस्तुतः ये दो पक्षी हैं जिनमें पारस्परिक समानताएं भी हैं, असमानताएं भी। रूप-रंग में इनके काफी भेद हैं पर बोली में समानता है। दरअसल संस्कृत साहित्य में सर्वत्र चातक के दो और नाम अवश्य पाये जाते हैं— सारंग और स्तोक। ऐसा लगता है, संस्कृत साहित्य में पाये जानेवाले ये दो नाम— सारंग और स्तोक पपीहे के लिए ही हैं, चातक के लिए नहीं। हिंदी साहित्य में बगैर किसी भेद-भाव के चातक और पपीहे का, उन्हें एक पक्षी मानकर ही उल्लेख आया है, यथा—**चातक रटहिं तृषा अति ओही** तथा

ऊंची जाति पपीहरा पियत न नीचो नीर

गरज ये कि चातक और पपीहा ये 'ककू' जाति के दो विभिन्न पक्षी हैं, एक नहीं। पपीहा कबूतर के कद का, रंग-रूप में शिकरे (एक शिकारी पक्षी) से शत प्रतिशत मिलता हुआ, सलेटी भूरे रंग का पक्षी है, जिसके उड़ने का ढंग भी वही है जो शिकरे का। चातक मैना से कुछ छोटा, लंबी पूंछवाला पक्षी है, जिसके बदन का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा, चमकीला काला तथा निचला सफेद होता है। पांव पर बाज-जैसे सफेद घने बाल होते हैं

सिर पर बुलबुल की तरह एक काला तुर्रा

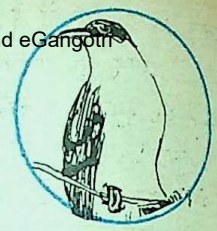

होता है। देखने में यह काफी चित्ताकर्षक है

स्वाति जल से ही प्यास बुझती है

ये दोनों ही मेघ से वारि याचना करते अर्थात वर्षाकाल में आकाश में बादल मंडरा लगते हैं तो जहां पपीहा गला फाड़-फाड़कर 'पी-पी-हो' की रट लगाते हैं, वहां चातक बड़ी धीमी आवाज में किसी नव-विवाहिता वधु की तरह कह उठता है— 'पी-पी हो' अथवा 'पिउ-पिउ'।

प्रकृति से ही पपीहा वृक्षों पर रहनेवाला पक्षी है, जमीन पर शायद ही कभी उतरता हो। जब मस्ती में आता है, तब वृक्ष के शीर्षभाग पर बैठकर जोरों से बोलता रहता है, अकसर रात में भी, यदि वह चांदनी रात हुई। चांदनी रात हो तो इसके तमाम रात बोलने के कारण इसे अंगरेजी में इसे मस्तिष्क-ज्वर पक्षी (ब्रेन फीवर बर्ड) कहा गया है। तमाम ग्रीष्म और वर्षाकाल यह करुण स्वरों में 'पी-पी हो' अथवा 'पी-पी' की रट लगाकर काट देता है। वर्षा का वास्तविक अंत स्वाति-नक्षत्र के व्यतीत होने पर ही होता है और तभी इसका बोलना भी बंद होता है। यही कारण है कि इस जनश्रुति का कि 'पपीहे अथवा चातक की प्यास स्वाति-जल से ही मिटती है।' यह जल मीठा, पृथ्वी के पेड़-पौधों से लेकर सभी जीव-जंतु प्राणियों के लिए अत्यंत गुणद होता है। प्रकृतितः इस जल से ही पपीहे की भी परितुष्टि होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चातक उन पक्षियों में है जो बसंत नहीं, वर्षाकाल में अपना मुंह खोलता है। मानसूनी हवा का बहना शुरू हुआ नहीं कि चातक आ धमके। कुछ अफरीका की ओर से, कुछ पहाड़ों से। ऐसा लगता है, मानों ये रातों-रात आ पहुंचते हों।

आवाज : संकेत है मेघ का

किते कलाम न होगा यहां एक घटना का जिक्र करना जो विगत वर्ष में घटी थी। बात ऐसी हुई कि पिछले साल दिल्ली में मानसून देर से आया और लोग कड़ाके की गरमी से परेशान हो उठे। तभी एक दिन दोपहर को मैंने अपने बिस्तर पर लेटे हुए चातक की आवाज सुनी, जो कि मेरे वातायन के सामने छोटे वृक्षों के एक झुरमुट के भीतर से आ रही थी। मैं देर तक उसे सुनता रहा। मुझे याद हो आयी यह बात कि यह पक्षी मानसूनी हवा के आगे-आगे इथियोपिया की ओर से हमारे देश में आता है, और इसके आने के दो-चार दिनों के भीतर मानसून आरंभ हो जाता है। दिल्ली में भी यही हुआ। इसकी आवाज सुनने के दूसरे दिन प्रातःकाल से ही आकाश में मेघ मंडराने लगे और शाम होते-होते काफी वर्षा हुई।

चातक पपीहा नहीं है, जो कभी न तो झाड़ियों पर आकर बैठता है और न बड़े वृक्षों से उतरकर जमीन पर पांव धरता है। अधिकांशतः वह वृक्ष के शीर्षभाग पर बैठा हुआ आकाश के बादलों की ओर देखता तथा 'पी-पी हो' की तीव्र ध्वनि से सारे वातावरण को गुंजायमान बनाये रहता है।

चातक : पपीहा नहीं है

कालिदास ने मेघों के भीतर से चातक की ध्वनि के आने की चर्चा की है। ऊपर आकाश में उठने की प्रवृत्ति भी चातक में ही पायी जाती है, पपीहे में नहीं। इसी तरह पर्वतों पर भी चातक के होने का उल्लेख उन्होंने किया है। इसका समर्थन श्री स्टुअर्ट बेकर के इस कथन से होता है कि एवरेस्ट पर्वतारोहियों ने १४,००० फुट की ऊंचाई पर भी पूर्वकथित चातकों को पाया था, बल्कि उनमें से एक को पकड़कर वे साथ भी लेते आये थे। पपीहे, इसके ठीक विपरीत, पहाड़ों पर नहीं होते, बल्कि इस देश के बंगाल से लेकर राजस्थान तक के क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं। और ये एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर भले ही उड़कर जाएं, उड़ते हुए आकाश में परिभ्रमण कदापि नहीं करते।

जैसा कि पूर्व कथित है, चातक और पपीहे, दोनों स्वयं नीड़ नहीं बनाते, दूसरे पक्षियों के नीड़ में (खासकर चरखी के) अंडे रख आते हैं, यह प्रवृत्ति किसी अन्य जाति के पक्षियों में नहीं पायी जाती।

ये दो अलग जातियां हैं, एक दूसरे से देखने में बिलकुल भिन्न, पर बोली में समानता रखनेवाली। संस्कृत साहित्य में साधारणतः इन दोनों को चातक नाम से ही पुकारते आये हैं। हिंदी-साहित्य में भी पपीहे को चातक कहने की परंपरा बनी रही है, पर वस्तुतः ये दोनों ही बातें भ्रामक हैं।

— बी-२, महारानी बाग, नयी दिल्ली

ज्यों-ज्यों परोपकार के लिए रुपये की थैली खाली होती है त्यों-त्यों हमारा हृदय भरता जाता है।"
—विक्टर ह्यूगो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने ब्रह्मांड के मशीनी रूप को पहचाना

• कमोडोर रेवती रमण

जीवन में वैज्ञानिक व्यवहार अपनाने के लिए दो तत्व परम आवश्यक हैं—विचार एवं तथ्य। विज्ञान की दृष्टि से तथ्य अपने-आप में संपूर्ण नहीं होते और न ही मात्र विचार करना अपने-आप में परिपूर्ण है, फिर विचार चाहे कितने ही विवेकपूर्ण हों। मानव-सभ्यता के विकास के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अधिक से अधिक जुड़ाव आनुभविक (एंपिरिकल) तथ्यों और तार्किक विचारों के सुंदर समन्वय से ही संभव हो पाया है।

विज्ञान के इतिहास पर एक सरसरी निगाह डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि घड़ी के पैंडुलम की तरह पहले आविष्कार फिर आविष्कारों के प्रभाव के विषय में गहन विचार और उसके बाद दुबारा तथ्यों पर निगाह और फिर आविष्कारों के परिष्कार का क्रम चलता रहा है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक पद्धति का सार है—उपयुक्त प्रयोग एवं सिद्धांत, फिर प्रयोग आविष्कार और दुबारा सिद्धांतों की विवेचना और पैंडुलम की तरह फिर इनका पुनरावर्तन—हमेशा-हमेशा के लिए।

गैलिलियो शायद पहला वैज्ञानिक-विचारक था, जिसने आनुभविक एवं तर्कसंगत उपायों के बीच समन्वय की आवश्यकता के महत्व को समझा। आनुभविक तथ्य एवं तार्किक विचारों का ऐतिहासिक संगम पीसा की तिरछी मीनार पर हुआ था, जब गैलिलियो ने उसके ऊपर से एक बड़े और एक बहुत छोटे पिंड को एक साथ गिराया था और वे दोनों ही पिंड एक साथ धराशायी हुए थे। तथ्य एवं विचारों के इस प्रभावशाली समन्वय ने उस समय तक प्रचलित अरस्तू की मान्यता (भारी पदार्थ तीव्रतर गति से गिरता है) को ध्वस्त कर दिया था। पर अधिकतर ऐतिहासिक मोड़ इतने सरल और निश्चित रूप से निर्धारित नहीं हो पाते।

विवेक और तर्क की राह

यहां पर सत्रहवीं शताब्दी के दो महान विचारकों का उल्लेख युक्तिसंगत होगा। डेकार्टे : जिन्होंने तर्क और विवेक की राह अपनायी और दूसरे फ्रांसिस बेकन, जिन्होंने प्रयोग/आविष्कार को अधिक महत्त्व दिया। दो महान वैज्ञानिकों का यह व्यक्ति वैशिष्ट्य कदाचित उस समय प्रचलित फ्रांसीसी और ब्रिटिश व्यवहारों/मान्यताओं का प्रतीक था। डेकार्टे ने अपना अधिकतर वैज्ञानिक कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद लेटे-लेटे अपने पलंग पर किया, और बेकन के बारे में कहा जाता है कि पैंसठ साल की उम्र में अपने प्रयोग के संदर्भ में एक मुरगी के अंदर बर्फ भरते हुए वे ठंड खा गये और इसके कुछ ही दिन बाद इस संसार से प्रयाण कर गये।

प्रकृति : हर जगह समान

न्यूटन की मनावस्था के लिए डेकार्टे और बेकन दोनों के ही उदाहरण आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण थे। न्यूटन को डेकार्टे से प्रेरणा मिली कि प्रकृति सदा और हर जगह समान है और उसमें एकरूपता छिपी रहती है। सामान्य लोगों के लिए जीवन के तथ्य और सच्चाईयां विस्मयकारी होती हैं पर उनके पीछे छिपे सिद्धांतों की गूढ़ता के प्रति वे उदासीन रहते हैं। न्यूटन और सेब की कहानी तो सर्वविदित है। पर उसके द्वारा आविष्कृत गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांतों के पीछे गहन तार्किक विचारशीलता एवं गैलिलियो द्वारा किये गये प्रयोगों को आत्मसात कर एक सार्वभौमिक सच्चाई को अति अनुशासित और साथ ही विलक्षण रूप से प्रकाशित कर पाने की क्षमता का अंदाज आज भी बहुत थोड़े लोगों तक ही सीमित है।

न्यूटन द्वारा प्रेरित वैचारिक क्रांति के आधार में थी उसकी मान्यता कि जो नियम सामान्य आकार की वस्तुओं पर लागू होते हैं, वे वस्तुतः सार्वभौमिक हैं और हर छोटे बड़े किसी भी आकार या शक्ल के पदार्थ या पिंडों पर अक्षरशः लागू होते हैं।

इस विचार को गहनता से ग्रहण करने के साथ ही न्यूटन ने एक अपनी ही नयी दुनिया का निर्माण शुरू किया, जो पदार्थों के न्यूनतम कणों से बनी थी। न्यूटन की इस दुनिया की तुलना युक्लिड के ज्यामितीय संसार से की जा सकती है। युक्लिड ने बिंदु, रेखा एवं तल (प्लेन) को पारिभाषित करने के बाद कुछ स्वयंसिद्ध सिद्धांत (ऐक्सियम) प्रतिपादित किये, जिनका पालन बिंदुओं, रेखाओं और तलों के आपसी संबंधों के लिए अनिवार्य है। और यदि युक्लिड आज भी अपनी ज्यामितीय देन की वजह से पूज्य है तो इसलिए नहीं कि उसके संनियम वास्तविक दुनिया से ग्रहण किये गये थे, वरन इसलिए कि युक्लिडीय संसार के तार्किक परिणाम हमारी वास्तविक दुनिया के ताले में चाभी की तरह फिट होते हैं।

न्यूटन ने दुनिया के समस्त पदार्थों में सन्निहित मूल प्रकृति को पहचाना कि पदार्थ की प्रकृति है—हर दूसरे पदार्थ से अंतरगता स्थापित करने की अदम्य चेष्टा।

न्यूटन की वैचारिक दुनिया

न्यूटन ने अपनी वैचारिक दुनिया के नियमों को भौतिक संसार के ऊपर लागू किया। उन्होंने पदार्थों के न्यूनतम अंशों को, बिना परिभाषित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

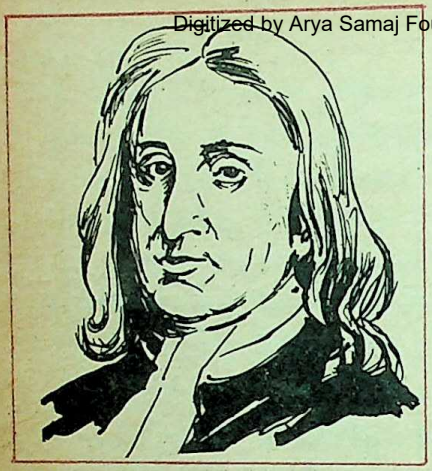

किये, भौतिक दुनिया का आधार बना डाला। न्यूटन का लेखन निर्मल जल की तरह स्पष्ट था पर वह तर्क को इलास्टिक की तरह खींचने के पक्ष में नहीं थे। वे अपने विरोधियों की कठिनाई को समझ सकते थे। पर वे उन वैज्ञानिकों की, जो अपनी समस्या का हल अपने-आप नहीं निकाल सकते थे, मदद कर पाने के प्रति अपने आपको असमर्थ पाते थे। न्यूटन की अपनी दुनिया जो अपरिचित अल्पतम कणों से बनी थी और जिसके द्वारा सब कुछ निर्मित हो सकता था चाहे वह सेब हो या चंद्रमा, अन्य ग्रह या सूर्य। न्यूटन के अनुसार इन सभी समन्वयोजिकों (असेंबली) के गति व्यवहार की मर्यादा एक ही है। न्यूटन ने इस बात को और आगे बढ़ाया और उनके अनुसार इन सब समन्वयोजिकों के अंतर में बसे प्रत्येक अल्पतम अंश भी उनके द्वारा प्रतिपादित समन्वित नियमों का पालन करते थे : अगर वे वेगहीन हैं तो वेगहीन ही बने रहेंगे और यदि वे गतिशील हैं तो उनकी गतिशीलता वैसी ही बनी रहेगी, जब तक उनके ऊपर बाहरी बलों का प्रभाव न पड़े और इन सब बाहरी बलों में न्यूटन के अनुसार प्रमुखतम है वह बल, जिसके द्वारा प्रत्येक अल्पतम कण हर अन्य समभार कण को अपनी और आकर्षित करता है। इस बल की शक्ति कणों के बीच की दूरी पर ही आधारित होती है और इस प्रकार नियमित होती है कि उनके बीच की दूरी दुगुनी हो जाने पर उनके बीच का बल घटकर अपनी प्रारंभिक बल का चतुर्थांश रह जाएगा।

ग्रह : ब्रह्मांड की घड़ी

न्यूटन एक सशक्त गणितज्ञ थे और उनका एक मूलभूत निष्कर्ष था कि एक ठोस गोलक (कंपैक्ट रिफ़्अर) का गोलक के बाहर की किसी वस्तु के प्रति व्यवहार अपने केंद्र पर अवस्थित एक वजनी बिंदु की तरह होता है। न्यूटन ने इस बात को आगे बढ़ाते हुए यह दिखा दिया कि ग्रहों के मार्गों का निश्चित निर्धारण किया जा सकता है और साथ ही यह भी कि ग्रह अपने निश्चित मार्गों पर घूमते हुए एक ब्रह्मांडीय घड़ी का काम करते हैं। उन्होंने गणितीय कुशाग्रता एवं परम धैर्य का परिचय देते हुए ज्वार-भाटों की, कामेट कक्षाओं की एवं अन्य ब्रह्मंडीय पिंडों के गतिचक्र की विशद गणना की। इस प्रकार न्यूटन ने एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया जिसको नाविक (मेरीनर) खगोलिक (एस्ट्रोनामिस्ट) और समुद्रीय भ्रमण के शौकीन सब पहचान सकते थे और इस प्रकार न्यूटन की सैद्धांतिक दुनिया और वास्तविक दुनिया के बीच एक विलक्षण साम्य स्थापित होता चला गया। तीन शताब्दियों से अधिक समय के बाद भी ब्रह्मांड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चमत्कारी दुनिया को सरलतम सिद्धांतों से बांध पाने की न्यूटन की बेजोड़ प्रतिभा आज भी वैज्ञानिक संसार के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

न्यूटन की भौतिक दुनिया हजार जगहों पर वास्तविक दुनिया की चौखटों पर फिट बैठती है और उसके समकालीन एवं बाद की शताब्दियों में उस पर किये गये इम्तहानों पर खरी उतरती है। न्यूटन को विलक्षण अंतर्दृष्टि प्राप्त थी और वे विभिन्न तार्किक विकल्पों का 'दूध का दूध और पानी का पानी' की तरह उचित मूल्यांकन कर पाने में समर्थ थे। कुल मिलाकर न्यूटन की संसार को सबसे बड़ी देन प्रकृति के विस्मयकारी एवं चमत्कारी कार्यकलापों को 'कारणजन्य' (नोशन ऑव कॉज) सिद्ध कर पाना है। उनके सिद्धांतों की सार्वभौमिकता एवं सरलता उनकी सबसे बड़ी सफलता रही है।

हम पूर्वी दुनिया के लोग अपनी धरती, अपने ब्रह्मांड के प्रति एक भावनात्मक लगाव और एकात्मता सरलता से स्थापित कर लेते हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' आदि विचारों को हम भावनात्मक तल पर आत्मसात कर पाते हैं। पर हमारे मन के किसी कोने में यह डर बैठा रहता है कि वैज्ञानिक विश्लेषण की कसौटी पर यह बात खरी-खरी उतरेगी या नहीं। न्यूटन-जैसे बिरले वैज्ञानिक ही मानव जाति को इस भय से मुक्त कराने में सफल हो पाये हैं। उन्होंने ब्रह्मांड के मशीनी रूप को पहचाना और साथ ही यह कि इस मशीन को 'गतिशील बल' डायनामिक फोर्सेज संचालित करते हैं—'प्रमुख रूप से गुरुत्वाकर्षण जो संक्रिया (एक्शन) की

इनसानी कशिश और गुरुत्वाकर्षण में अद्भुत साम्य है

न्यूटन का मूलभूत निष्कर्ष था कि एक ठोस गोलक का, गोलक के बाहर की किसी वस्तु के प्रति व्यवहार अपने केंद्र पर अवस्थित एक वजनी बिंदु की तरह होता है।... ग्रह अपने निश्चित मार्ग पर घूमते हुए एक ब्रह्मांडीय घड़ी का भी कार्य करते हैं।

आधारभूत कमानी (स्प्रिंग) है। न्यूटन ने दुनिया के समस्त पदार्थों में सन्निहित मूल प्रकृति को पहचाना—पदार्थ की यह प्रकृति है हर दूसरे पदार्थ से अंतरंगता स्थापित करने की अदम्य चेष्टा। मानव जीवन के परिप्रेक्ष्य में हमारे वेदांतों का सार भी यही है कि समस्त मानव जाति के बीच एक सच्ची अंतरगता/आत्मीयता की स्थापना ही आज विनाश की ओर अग्रसर हमारी दुनिया का निस्तार करने में समर्थ हो सकेगी। अध्यात्म एवं विज्ञान के समनिष्कर्ष का यह बड़ा ही विलक्षण संयोग, आज न्यूटन के आर्विभाव के तीन सौ से अधिक वर्षों के बाद भी अविस्मरणीय है।

—३५, प्रिंसेज़ पार्क, इंडिया गेट,
नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपंग काया में छिपी अपार क्षमता

अपंगता की असहाय स्थिति मनुष्य को विवशता में जीने के लिए बाध्य कर देती है किंतु समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपनी तीव्र इच्छाशक्ति से विकलांगता पर न केवल विजय हासिल की है बल्कि जीवन की दौड़ में वे कहीं आगे निकल गये हैं।

ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी हैं, इकतालिस वर्षीय श्री एस. आर. कृष्णमूर्ति, जो जन्म से दोनों हाथ और दोनों पैरों से विकलांग होने के बावजूद गायन के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे स्वयं न तो चल पाते हैं, न उठ पाते हैं और न बैठ पाते हैं किंतु मंच पर मधुर संगीत के साथ जब उनके कंठ से कर्नाटकी शैली में ऊंची-नीची स्वर-लहरें प्रवाहित होने लगती हैं तो श्रोतागण मुग्ध होकर डोलने लगते हैं। शास्त्रीय गायन में गायक जब धीरे-धीरे डूबने लगता है तो स्वतः ही उसकी भाव-भंगिमा हाथों से प्रकट होने लगती है। कृष्णमूर्तिजी के लिए यह बाधा अवश्य है किंतु स्वरों का वेग उन्हें रोक नहीं पाता। उनका सिकुड़ा-सिमटा हस्त अंग कंधे के पास बराबर हरकत करने लगता है। ऐसी स्थिति में ढीले-ढाले कुरते का दूसरा हिस्सा जब गरदन के पास से सरककर कुछ असुविधा देने लगता है तो वे उसे मुंह से खींचकर ठीक कर लेते हैं।

कृष्णमूर्तिजी ने विवशता को अन्य क्षेत्रों में भी परास्त किया है। दोनों हाथ न होने के कारण लिखने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता किंतु पेन को क्लिप को मुंह में पकड़कर और सर को हाथ की स्थिति में लाकर सुंदर एवं सुवाच्य अक्षरों में अपना नाम लिखकर वे सबको चकित कर देते हैं।

उनके ही मार्गदर्शन में गायन की शिक्षा ग्रहण कर रहा एक युवा शिष्य हमेशा उनके साथ रहता है। वही उन्हें गोदी में उठाकर जहां-तहां ले जाता है, फिर भी, वे बिना किसी की मदद के भोजन स्वयं ही कर लेते हैं।

ग्रहण का कुप्रभाव ?

तमिलनाडु में बसे एक तेलगू ब्राह्मण परिवार में श्री कृष्णमूर्ति का जन्म पेरियार जिले के सूर्यनलरूरे नामक स्थान में हुआ। भरे-पूरे परिवार में उनके दो बड़े भाई और दो छोटी बहनें हैं। परिवार का कोई भी अन्य सदस्य विकलांग नहीं है। प्रकृति के इस कोप के संबंध में उन्होंने बताया कि संभवतः यह ग्रहण का कुप्रभाव है। वीणावादिनी की कृपा से परिवार में चली आ रही संगीत-प्रेम की परंपरा ने श्री कृष्णमूर्ति को लगभग चार वर्ष की आयु से ही अपने संरक्षण में ले लिया। उनका अभ्यास आरंभ हो गया और दैवी प्रतिभा प्रकट होने लगी। गुरुजनों ने एक सिमटी हुई काया में छिपी अपार क्षमता को पहचाना और अस्सी वर्षीय संगीतज्ञ टाइगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस. आर. कृष्णमूर्ति : जन्म से अपंग । लेकिन हाथ और पैरों का अभाव उन्हें एक सफल और कुशल गायक बनने से न रोक पाया ।

वरदाचारी ने लगभग साढ़े चार वर्ष तक प्रशिक्षण देकर श्री कृष्णमूर्ति को एक अद्भुत गायक के रूप में चौदह वर्ष की आयु में ही पारखी श्रोताओं के सामने प्रस्तुत कर दिया । मंच के माध्यम से उनकी गायन-गंगा मीनाक्षी अम्माल से प्रवहमान हुई और अब तक वे लगभग साढ़े तीन सौ कार्यक्रम सार्वजनिक रूप से बंबई, दिल्ली, हैदराबाद, नागपुर व अन्य स्थानों पर प्रस्तुत कर चुके हैं । बंबई और मद्रास दूरदर्शन से सम्मानित यह गायक कलाकार नागपुर दूरदर्शन पर भी कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहता था किंतु कला के कथित संरक्षकों ने उनसे मिलना तो दूर, उनके पत्र का उत्तर देना भी जरूरी नहीं समझा ।

एक ओर कला के शिखर पर बैठा हुआ सुमधुर कंठ का धनी अपंग गायक, जिस पर कोई भी राज्य व देश गौरव कर सकता है, अपने ही राज्य तमिलनाडु में उपेक्षित है । उन्होंने बताया कि मद्रास सांस्कृतिक केंद्र द्वारा दिखायी गयी उपेक्षा का प्रमाण यह है कि महीनों बीत जाने के बाद भी उनके पत्र का उत्तर नहीं दिया गया । उन्होंने बताया कि यही रवैया संगीत-नाटक अकादमी का भी रहा । "जहां केवल ५० पैसे खर्च कर पत्र का उत्तर तक प्राप्त न हो, वहां जीवन-निर्वाह के लिए आर्थिक सहायता की आशा करना आसमान से तारे तोड़ना है ।"

श्री कृष्णमूर्ति भी तारे नहीं तोड़ पाये । उन्हें न तो राज्य सरकार और न केंद्र सरकार से किसी प्रकार की वित्तीय सहायता मिल पायी । हां, एक अपंग व्यक्ति के नाते उन्हें पच्चीस प्रतिशत की रेलवे-रियायत जरूर मिली है । कला को प्रोत्साहित करने के लिए हमारा यह प्रयास क्या कम सराहनय है ! उन्होंने बताया कि यद्यपि उन्हें शासकीय सहायता से कोई परहेज नहीं है किंतु वे इसके पीछे भागना नहीं चाहते । उन्हें स्वयं के लिए किसी आर्थिक सहायता की अपेक्षा भी नहीं है किंतु वे शास्त्रीय गायन के प्रसार में योगदान की आशा जरूर करते हैं । उन्होंने दुख के साथ महसूस किया कि समर्थ संगठनों की अरुचि खेदजनक है ।

श्री कृष्णमूर्ति का तेलुगू, तमिल और कन्नड़ के साथ हिंदी से भी निकट का संबंध है । वे दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा संचालित 'विशारद' की परीक्षा उतीर्ण हैं । कबीर और मीरा आदि के हिंदी भजन भी वे उसी सहजता से गा लेते हैं ।

—सत्यनारायण दुबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजनेस

कुछ नव धनाढ्यों ने महानगर से हटकर एक अत्याधुनिक रिहायसी कॉलोनी का निर्माण करवाया। जहां वे विलासितापूर्ण जीवन जीते थे। नव वैभव जनित सभी धंधे उस कॉलोनी में बेरोकटोक चलते थे।

एक दिन कहीं से एक कथा वाचक उस कॉलोनी में आया और घर-घर जाकर ईश्वर की महिमा का गान करता। फटेहाल कथा वाचक को किसी ने न सुनना था, न हीं सुना बल्कि, 'कर्ममेव जयते' का उपदेश देकर दुतकारा, फटकारा और भगा दिया।

बेचारे कथा वाचक ने निराश हो कर उन्हें नास्तिक समझ कॉलोनी के बाहर एक उजाड़ मंदिर में डेरा जमाया और वहीं भजन कीर्तन करने लगा। इस प्रकार कई दिन बीत गये। कॉलोनीवासी कोई भी प्राणी वहां न फटका। हां ! कार से आते-जाते वे यदाकदा उस पर हिकारतभरी नजर डाल देते थे।

कुछ समय पश्चात नव धनाढ्यों को वह स्थान डिस्को डाँस, कैबरे एवं आधुनिक लीला के लिए उपयुक्त जंचा। कथा वाचक को एक हजार रु. देकर वहां से अगले दिन ही खिसकने की बात तय हुई।

अर्धरात्रि में उन्हीं में से एक ने उसकी कोठरी का द्वार खटखटाया और उसे पांच हरी छाल के करारे नोट थमाते हुए कहा, "कल जो भी तुम्हारी आमदनी होगी वह सारी मेरी होगी। नव धनाढ्यों के निर्णय को अनजान कथावाचक लक्ष्मी की ढेर-सी कृपा दृष्टि से अभिभूत गया। हर दिन की आमदनी जो फूटी कौड़ी अधिक न थी, वह भली भांति जानता ही था अत: उसे तुरंत ही हामी भरने में ही लाभ आया और शीघ्र हामी भर दी।

— सत्य प्रकाश हिंदवा

चाहे आग लग जाए

एक गांव में एक बूढ़ी स्त्री रहती थी। जब भी मुंह खोलती हमेशा दूसरों के लिए ही कहती। बुरे वचन बोलने के कारण ही गांवभर में प्रसिद्ध थी। एक बार गांव के सलाह कर, उसके पास आये और उस बूढ़ी से बोले, "अम्मा इस उम्र में तुम्हें अपने अनाज इकट्ठा करने में दिक्कत होती है और अकेली जान हो, इसलिए हम सब ने यह किया है कि हर महीने हम तुम्हें घर बैठे दिया करेंगे। हममें से तुम्हें सब बारी-अनाज देंगे। तुम आराम से अपना काटो, बस किसी को भला-बुरा मत कहो। इस पर वह स्त्री सर हिलाकर बड़े इत्मीनान बोली, "अच्छा-अच्छा ठीक है, पर देखो अनाज आता रहना चाहिए, चाहे तुम्हारे खेतों आग लग जाए।

— सीमा त्य

अवसरवादी

रमाशंकर की बूढ़ी अनाथ बुआ घबराई उनके पास आई और उसने बताया कि उसने अपने मकान मालिक के शराबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कों की शिकायत पुलिस चौकी जा कर दरोगा से की है, तबसे वह लड़के उसे जान से मार डालने की धमकी देकर कहते हैं कि पुलिस के कुत्ते उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

क्योंकि दरोगाजी लड़कों की गुंडागर्दी से परिचित भी थे और बुढ़िया की रक्षा करने का आश्वासन दे चुके थे। इसलिए रमाशंकर बुढ़िया को लेकर फिर पुलिस चौकी गये। दरोगाजी को सब बात बताई, पर जैसे ही रमाशंकर ने लड़कों द्वारा कही गई यह बात बताई कि पुलिस के कुत्ते उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, वैसे ही दरोगाजी ने रंग बदला। तीखी निगाहों से रमाशंकर को ऊपर से नीचे तक घूरा। मूंछों पर ताव दिया और गरजे, "हम पुलिस के कुत्ते हैं ? तुम्हें हम कुत्ते नजर आते हैं ?" अंदर से एक दरोगा भी आकर बैठ गये। तीन चार सिपाही भी आकर खड़े हो गये।

रमाशंकर ने समझाने की लाख कोशिश की कि यह बात तो उन लड़कों ने कही है पर दरोगाजी ने एक नहीं सुनी।

वह हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे। बहुत गिड़गिड़ाने पर दरोगाजी का मूक संकेत मिला। जब के पैंतीस रुपयों के साथ-साथ घबराहट में हाथ की घड़ी भी उतार कर मेज पर रख दी।

रमाशंकर क्षमादान पाकर उठकर चले ही थे कि फिर वही स्वर सुनकर घबरा उठे, "सुनो ! ! इधर आओ" दरोगाजी ने धीमे, पर धमकी-भरे स्वर में कहा "यह बात किसी से कहोगे नहीं समझे।" किसी से न कहने का वचन दे कर रमाशंकर जान छुड़ा कर भागे।

– शीला शर्मा

बेईमानी तेरा ही आसरा

डिब्बे में घुसकर, सीट को जबर्दस्ती खाली कराकर बैठते हुए, एक सज्जन जो दैनिक रेल-यात्री मालूम पड़ते थे ने घोषणा की, "आगे-मजिस्ट्रेट चैकिंग है।" लोगों के हृदय की धड़कनें तेज हो गयीं मानो कोई घोर विपत्ति आने वाली हो। तभी ऊपर बैठे एक सेठजी, जो शायद उन दैनिक यात्री महोदय के परिचित थे, कुछ हड़बड़ी में उन महोदय से बोले, "भैया, भागकर मेरे लिए एक टिकट तो लाओ !" दैनिक यात्री महोदय बोले, "गाड़ी तो छूटने वाली है।" 'आपत्तिकाले मर्यादानास्त', शायद यह सोचकर सेठजी की प्रश्नवाचक आंखों ने पूछा तो फिर मैं लैटरिन में घुस जाऊं ?

दैनिक यात्री महोदय ने दृढ़ता से कहा, "नहीं ! जब तक हम हैं, आपको क्या फिकर ?" और तब पुराने मासिक टिकटों को टटोलकर किसी तरह जुगाड़ भिड़ाने के लिए कुछ देर चिंतनरत रहने के बाद बोले, "या तो इस सरकारी पास से काम चल जाएगा, नहीं तो दस के नोट को टिकट के बराबर बनाकर रखो। चुप से चैकर की जेब में रख देना।"

सच ? सेठजी खुशी से खिलखिला पड़े। और क्या झूठ ? दैनिक यात्री की गर्वोक्ति सभी ने सुनी। और निश्चिंत सेठ फिर उसी तरह पसर गया।

—कृष्ण कुमार 'शांतीनन्दन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

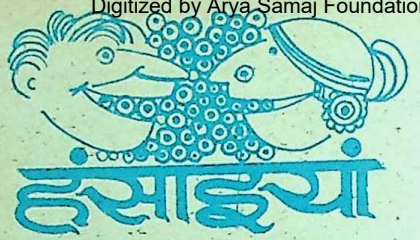

हंसाइयां

"आज मैंने तुम्हारी पत्नी को एक जगह देखा। वह बेहद उदास और खामोश बैठी थी !" एक व्यक्ति ने अपने दोस्त से कहा।

"खामोश बैठी थी ?" उसके दोस्त ने विस्मय से कहा और बड़ी निश्चिंतता से बोला, "फिर वह मेरी पत्नी नहीं होगी !"

एक पत्नी ने अपने पति से शिकायत करते हुए कहा, "मैं हैरान हूं कि शादी से पहले तो तुम कहा करते थे, 'मेरी दुनिया तुम हो'।"

"जब मैं तुम्हें अपनी दुनिया कहा करता था, उस समय मैंने भूगोल कम पढ़ा था और अब तो मैं कई दुनियाओं को खोज चुका हूं।" पति ने बात काटते हुए कहा !

उनके यहां पहला बच्चा हुआ, तो पिता उसे देखकर उदास हो गया। पत्नी ने विस्मय से "तुम्हें तो बच्चे की हद से ज्यादा इच्छा थी के लिए मरे जा रहे थे, लेकिन जब ईश्वर ने बच्चा दे दिया है, तो तुम उदास हो गये। हूं, इसका कारण क्या है ?"

पति ने टूटे दिल से कहा, "मैंने यह इच्छा नहीं की थी कि हमारा बच्चा तुम्हारी शक्ल लेकर आये !"

"मैं अपने भविष्य का हाल मालूम चाहता हूं। तुम बताओ कि किसके पास उस ज्योतिषी के पास, जो दिमाग को भविष्य की बात बता देता है या उस ज्योतिषी पास, जो हाथ की हथेली देखकर भाग्य बताता है ?" पति ने पत्नी से पूछा।

पत्नी ने कहा, "मेरे खयाल में आपको ज्योतिषी के पास जाना चाहिए, क्योंकि प्रकट है कि आपके पास हथेली मौजूद

एक व्यक्ति होटल चलानेवाली एक पास गया और उसे जली हुई रोटियां, चावल, खूब नमक पड़ी दाल, और

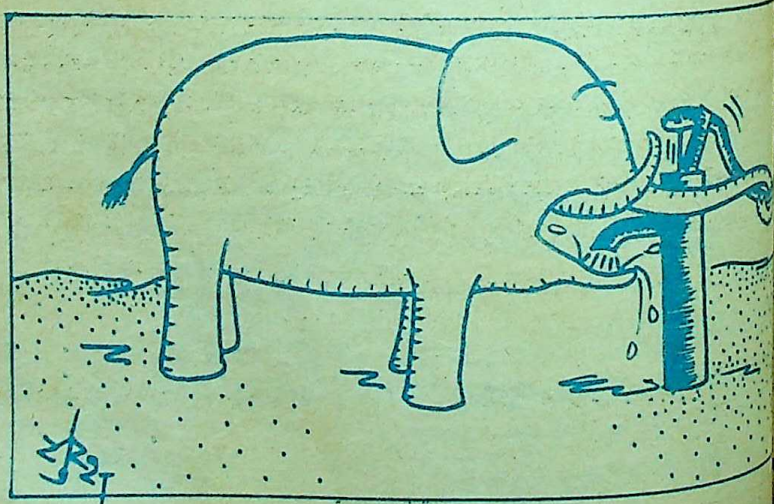

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने का ऑर्डर दिया। ऑर्डर के अनुसार खाना मुहैया करने के बाद होटल की मालकिन ने हमदर्दी भरे स्वर में पूछा, "मेरे योग्य कोई अन्य सेवा ?"

"अब कुरसी लेकर मेरे सामने बैठ जाओ और मुझे खूब खरी-खोटी सुनाओ, क्योंकि इस समय मुझे अपने घर की याद सता रही है। मैं उसे ताजा करना चाहता हूं।" जवाब मिला।

"बेगम, मैंने एक अंगूठी बनने का ऑर्डर दिया है। क्या तुम उस पर कुछ खुदवाना चाहती हो ?"

"हां", पत्नी ने जरा सोचकर जवाब दिया, "सर्वाधिकार सुरक्षित है, बेहतर रहेगा।"

"बेगम, हमें एक रसोइया रखना पड़ेगा।"

"क्यों ? मेरे हाथ का पका पसंद नहीं है ?"

"नहीं, नहीं, तुम भी अच्छा पका लेती हो, लेकिन कल तुमने शोरबे में बहुत-सा नमक डाल दिया और आज तुमने नमक में शोरबा बहुत कम डाला है।"

एक शराबी बस में सवार था। उसकी बेहूदा हरकतों से सारे यात्री हैरान-परेशान थे। वह बड़ी बेहूदगी से इधर-उधर लुढ़क रहा था। एक महिला ने पास बैठी दूसरी महिला से कहा, "अजीब किस्म का वहशी आदमी है। तौबा, मैं इसकी पत्नी बनना पसंद न करूं।"

"आपको परेशान होने की बिलकुल जरूरत नहीं, दूसरी औरत ने क्रोधित होकर कहा, "मैं इसकी पत्नी हूं।"

"आपने मुझ पर चोरी का मिथ्यारोप लगाया है। मालकिन, मुझे वह शब्द नहीं मिल रहे, जिनसे आपकी तसल्ली कराऊं।"

"तुमको शब्द नहीं मिल रहे, और मुझे दो कमीजें, एक सलवार और मेजपोश नहीं मिल रहा।"

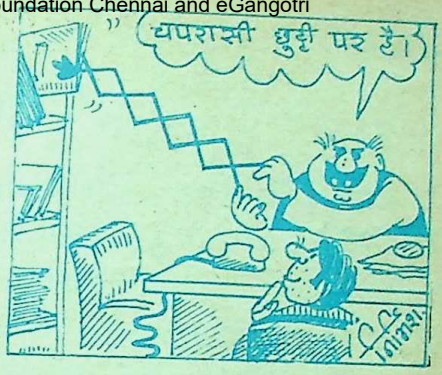

"मेरी पत्नी सब-कुछ ले गयी और मुझे छोड़ गयी !"

"तुम भाग्यवान हो ... मेरी पत्नी तो कहीं जाती ही नहीं।"

"क्या तुम्हें किसी पुरुष को देखकर इच्छा होती है कि काश ! तुम्हारी शादी न हुई होती ?"

"क्यों नहीं !"

"किसे ?"

"बताइए... कितने प्रतिशत असली घी दूं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

अनुत्तरित प्रश्न

● धनेश्वर प्रसाद

योगेंद्र बाबू आज बड़े उदास और अस्तव्यस्त मनःस्थिति में कार्यालय पहुंचे।

ब्रीफकेस टेबल पर रखकर उन्होंने घंटी बजायी, पर चपरासी अभी तक नहीं आया था। 'असली साहब तो यही लोग हैं' भुनभुनाते हुए वह कुरसी पर जम गये।

दो दिन पहले ही वे अपने गृह राज्य से लौटे थे। एक अति निकट रिश्तेदार के पास सपरिवार गये थे। उनका परिवार छोटा ही था। पत्नी और दो बच्चे-सुभाष एवं अमरेश।

उन्होंने अपनी पीठ कुरसी के पिछले भाग से टिका दी और दोनों टांगे हिलाते हुए सोचने लगे, 'कितना संतुष्ट था अपने वर्तमान जीवन

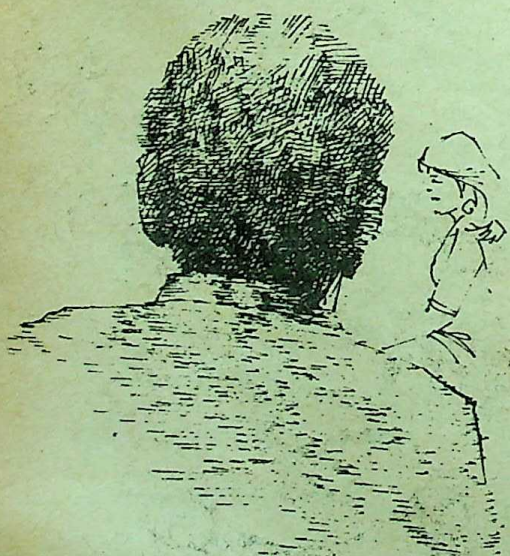

में। जीवन का यह दौर कितना सुखद था, पर आज सुबह बच्चों की बातें सुन भ्रम टूट गया।'

तभी चपरासी आ गया। उसे देखते गुस्सा आ गया, पर वे शांत स्वर में बोले पिलाओ—''

चपरासी कार्यालय में लगे कूलर पानी ले आया। पानी पीने के बाद सोच में डूब गये, 'सरकारी क्वार्टर नहीं मिला। मुझे कितनी जरूरत है वेतन का एक बड़ा भाग किराये पर ही जाता है। प्राइवेट मकान ढूंढ़ने में अलग होती है। यह कितने दुःख की कि सरकारी क्वार्टर जरूरतमंदों को नहीं उनके प्राप्तकर्ताओं में कम से कम प्रतिशत ऐसे हैं, जिन्हें उनकी जरूरत है और वे किराये पर चढ़े हुए हैं। पत्नी पर बच्चे पब्लिक स्कूल में पढ़ रहे हैं। में से कितना बचता है कि जो इच्छा हो जाए, जो मरजी हो खरीदा जाए।

तभी उन्हें सुबह की बात याद हो आज बड़े सवेरे ही उनकी नींद टूट सुबह अभी पूर्ण रूप से खिली भी सुषमा और अमरेश की बातचीत की आ रही थी। वे उत्सुकतावश लगे कमरे के दरवाजे पर जा खड़े हुए

'वे डैडी से बहुत बड़े पद पर होंगे कह रहा था।

'अरे नहीं' सुषमा ने टोका था, 'मम्मी पूछा था।'

'मम्मी को कुछ पता नहीं होगा दिखायी नहीं दिया कि वे लोग किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रह रहे हैं।'

'हां, सो तो है।' सुषमा ने आंखों की पुतलियां नचाकर कहा था, 'खिड़की-दरवाजों में बढ़िया परदे, डनलप के गद्देवाले सोफासेट और पलंग, रंगीन टी. वी., वी. सी. आर., एक बड़ा फ्रिज और एक छोटा फ्रिज।'

'अरे दीदी, अखरोट, काजू और किशमिश तो डब्बों में भर-भरकर रखे हुए थे।'

'हम कितने दिनों से एक टू इन वन खरीदने के लिए कह रहे हैं, पर डैडी हैं कि टालमटोल करते जा रहे हैं।'

'उनके तो तीनों बच्चों के पास अलग-अगल टू इन वन है, दीदी।'

'आज शाम को डैडी से पूछा जाएगा।'

'क्या ?'

'यही कि प्रताप अंकल उनसे कितने बड़े पद पर हैं।'

"नहीं तो।" उन्होंने जरा रोब से कहा, "वह जाएगी।

'ठीक है।'

तभी उनकी नजर बच्चों पर पड़ी। वे उनकी ओर ही आ रहे थे। वे स्वयं को उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उसी प्रकार तैयार करने लगे, जिस प्रकार उन्होंने स्वयं की संघ लोक सेवा आयोग के समक्ष साक्षात्कार के लिए जाते समय तैयार किया था।

कौन से प्रश्न पूछनेवाले थे उनके अपने बच्चे !

'अब चल, उठ, नहीं तो स्कूल बस निकल जाएगी।'

थोड़ी देर बाद वे दोनों स्कूल चले गये थे और वे यह सोचकर विक्षिप्त हो उठे थे कि बच्चे किस मनःस्थिति से गुजर रहे हैं।

● ●

वे कार्यालय से असामान्य मुद्रा में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटे। वे मन ही मन बच्चों द्वारा पूछे जानेवाले संभावित प्रश्नों का सटीक उत्तर ढूंढ़ रहे थे ताकि वे संतुष्ट हो जाएं।

पत्नी जब चाय लेकर आयी, तो उन्होंने पूछा, 'बच्चे तुमसे कुछ पूछ रहे थे, माधुरी ?'

"हां।" वह मुस्कराकर बोली, 'वे जानना चाहते थे कि प्रतापजी आपसे बड़े पद पर हैं या छोटे पद पर ?'

'मैंने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। पंद्रह-बीस दिनों के बाद लौटे थे हम। सारा घर अस्तव्यस्त था। कपड़े भी गंदे हो गये थे। अब मैं उनके प्रश्नों का उत्तर दूं या अपना काम निबटाऊं।' कह, वह रसोई में चली गयी।

चाय का एक घूंट लेकर वह माधुरी को जाते हुए देखते रहे। वह सोच रहे थे कि इस माने में पत्नी अच्छी है। उसने आम महिलाओं की तरह साड़ी और जेवर के लिए कभी तंग नहीं किया। जिस स्थिति में भी रही, मस्त और खुश रही।

तभी उनकी नजर बच्चों पर पड़ी। वे उनकी ओर ही आ रहे थे। वे स्वयं को उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उसी प्रकार तैयार करने लगे, जिस प्रकार उन्होंने स्वयं को संघ लोक सेवा आयोग के समक्ष साक्षात्कार के लिए जाते समय तैयार किया था।

वे दोनों उनके सामने वाली कुरसियों पर आकर बैठ गये। उसके पश्चात सुषमा ने एक नजर अमरेश पर डाली और फिर कहा, "डैडी।"

"हूं।" वह धीरे-धीरे चाय सुड़कते हुए बोले।

"क्या प्रताप अंकल आपसे बड़े पद पर हैं ?"

राज्य सरकार के अधीन द्वितीय वर्ग अधिकारी है और मैं केंद्रीय सरकार के प्रथम वर्ग का अधिकारी हूं।"

"तो डैडी, उनकी 'पे' तो आपसे कम होगी ?" अमरेश ने पूछा।

"इसमें क्या शक है। उससे दुगना वेतन मुझे मिलता है।"

उन्होंने आश्चर्य से एक-दूसरे को देखा। उसके पश्चात् अमरेश ने उद्विग्न पूछा, "तो फिर हमारे घर में हर चीज कम क्यों है, डैडी ?"

वे इस प्रश्न पर सोचने लगे। वे समझ कि बच्चों के समाधानप्रद रूप में इस प्रश्न उत्तर उनके पास नहीं है, वे कुछ क्षण अटक-अटककर बोले, "हमारे घर का अधिक है न। तुम लोग पब्लिक स्कूल रहे हो। मकान का अधिक किराया देना है।"

"प्रताप अंकल के भी तो तीनों बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, डैडी।" सुषमा ने "उनका मकान भी किराये का ही है और बहुत बड़ा है।"

"दरअसल, मेरी आमदनी निश्चित है केवल वेतन मिलता है।"

"मैं समझा नहीं डैडी।" अमरेश ने

"अभी तुम लोग समझोगे भी" उन्होंने झल्लाकर कहा और चाय का प्याला लिये उठ गये।

बच्चों ने एक-दूसरे की ओर देखा बिचकाकर कंधे उचका दिये।

—ई-१/२००, लाजपतनगर,
दिल्ली-११००२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि-६७ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं।—जयधरनाथ मिश्र ज्योतिषी

राजकुमारी जैन, अलवर

प्रश्न :मैं शारीरिक रूप से कब स्वस्थ हो पाऊंगी ?

उत्तर : आपके साथ जीवनभर कोई न कोई व्याधी लगी रहेगी, शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए पन्ना धारण करें।

कु. सुजाता, गोरखपुर

प्रश्न : क्या मैं इस वर्ष प्रतियोगिता में सफल हो पाऊंगी ?

उत्तर : आप इस वर्ष प्रतियोगिता में अवश्य सफल होंगी।

गिरिजकिशोर, कोटा

प्रश्न : इनका प्रमोशन कब तक होगा ?

उत्तर : शनि के मजबूत होने पर मार्च में उन्नति होगी।

नारायण खरे, भोपाल

प्रश्न : पिताजी कब तक स्वस्थ होंगे ? कृपया उपाय बतायें ?

उत्तर : शनि की साढ़ेसाती उतरते ही लाभ प्राप्त होगा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए ११ रत्ती का मूंगा पहनें।

पुष्पा यादव, चण्डीगढ़

प्रश्न : पति की पदोन्नति कब, वर्तमान विभाग में या स्थान परिवर्तन पर ?

उत्तर : गुरु बृहस्पति के बदलने से पदोन्नति व स्थान परिवर्तन भी होगा।

कु. विनिता चतुर्वेदी, कोटा

प्रश्न : क्या मेडीकल परीक्षा में सफल होऊंगी कि नहीं ?

उत्तर : इस वर्ष अभी संभावना नहीं, अगले वर्ष आप अवश्य सफल होंगे।

कु. ज्योतिराय, मंडला

प्रश्न : विवाह कब व कहां होगा ?

उत्तर : १९८८ के दिसंबर मास में आपके घर से पश्चिम की तरफ अच्छे घर में होगा।

रामनाथ प्रसाद, पटना

प्रश्न : आर्थिक उन्नति कब तक ?

उत्तर : लाभेश धनेश दोनों का संबंध होने से आर्थिक उन्नति जनवरी '८८ से प्रारंभ।

देवेन्द्र, इंदौर

प्रश्न : स्वयं का मकान कब तक बनेगा ?

उत्तर :अभी सन '९० तक कोई संभावना नहीं, क्योंकि राहू पांचवां शुभ नहीं है।

बची सिंह परिहार, अल्मोड़ा।

प्रश्न : नौकरी से छुटकारा कब ?

उत्तर : १४ मास के भीतर ही आपको नौकरी से छुटकारा मिल जाएगा, क्योंकि शनि की साढ़ेसाती आपकी आनेवाली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजगोपाल, मेरठ

प्रश्न : हम, पत्नी व पति के संबंध मधुर कब से होंगे ?

उत्तर : मंगल की महादशा जब आपकी प्रारंभ होगी, तब संबंध मधुर होंगे ।

प्रतापसिंह, लखनऊ

प्रश्न : कठिनाइयों का कब अंत होगा ?

उत्तर : आपके ग्रहों के अनुसार कठिनाइयों का अंत जनवरी १७ से प्रारंभ होगा ।

जगदीश, इंदौर

प्रश्न : पूर्ण भाग्योदय कब और कैसे हो

उत्तर : धन भाव को काल सर्पयोग वि है । अतः १०८ दानों की लाजवर्त की पहनें तो सन '९० में भाग्योदय की सं है ।

देवकिसन ओझा, बीकानेर

प्रश्न : उधार दिया गया ऋण कब तक होगा, रत्न कौनसा धारण करूं ?

उत्तर : इस वर्ष १९८८ में ऋण वापस

प्रविष्टि ६९

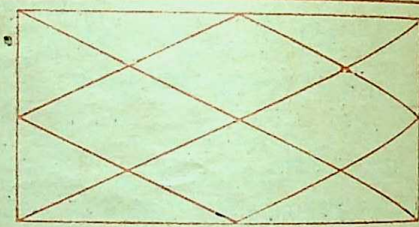

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .....महीना.....सन...

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा (वर्तमान).....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

यहां से काटकर चिपकाएं

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकाएं

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—६९) 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० फरवरी १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा, बढ़िया लहसुनिया रत्न ९ रत्ती का धारण करें।

राम प्रकाश, अजमेर

प्रश्न : पदोन्नति का योग कब तक ?

उत्तर : सन '८९ के उत्तरार्द्ध से पदोन्नति, केतु महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा में होगा।

प्रभुदयाल तिवारी, मुरैना

प्रश्न : निज का मकान, वाहन व व्यवसाय कब तक, शांति की संभावना है क्या ?

उत्तर : अभी २ वर्ष तक ८ वें बृहस्पति के नेष्ट होने से कोई संभावना नहीं। सन '९० के जनवरी मास से भाग्योदय प्रारंभ।

अमरनाथ, विलासपुर

प्रश्न : बैंक अधिकारी हूं। प्रमोशन कब व कहां तक ?

उत्तर : बुध की महादशा प्रारंभ होते ही उन्नति ही उन्नति की संभावना १७ वर्ष तक।

राधारमणदास अग्रवाल, मऊ नाथ भंजन

प्रश्न : ऋण ग्रस्तता एवं आर्थिक संकट कब तक ?

उत्तर : बृहस्पति की महादशा में शनि का अंतर बीत जाने पर और बुध का अंतर प्रारंभ होने पर लाभ ही लाभ की संभावना प्रबल है।

ओम प्रकाश सिन्हा, नालंदा

प्रश्न : भाग्योदय कब, रत्न भी बतायें ?

उत्तर : ३७वें वर्ष स भाग्योदय प्रारंभ। मानिक रत्न ५ रत्ती का पहनें, शीघ्र लाभ प्रारंभ हो जाएगा।

केशव सिंह वर्मा, आगरा

प्रश्न : प्रमोशन कब तक होगा ?

उत्तर : शुक्र की ही महादशा में सन '८९ के मार्च मास में पदोन्नति होगी।

गंगाराम, वाजपेई

प्रश्न : मेरी परिस्थिति में कब और कैसे सुधार होगा, कोई रत्न बतायें ?

उत्तर : ३९ वें वर्ष से ग्रह शुभ व श्रेष्ठ होने पर परिस्थितियों में सुधार। स्फटिक की १०८ दानों की माला पहनें अवश्य लाभ होगा।

दिनेश अवस्थी, लखनऊ

प्रश्न : संपन्नता हेतु कौन सा रत्न व कितना ?

उत्तर : मोती और हीरा पहनें अथवा १०८ दानों की स्फटिक की माला हर समय धारण करें।

सुधांशु श्रीवास्तव, बस्ती

प्रश्न : मुकदमे से छुटकारा कब तक ? पहनने के लिए रत्न सुझायें ?

उत्तर : इसी वर्ष मुकदमें में विजय। हीरा ३ रत्ती का अथवा स्फटिक की माला धारण करें।

जितेन्द्र कुमार सिंह, बोकारो स्टील सिटी।

प्रश्न : १९८८ में इंजीनियरिग परीक्षा में सफल हो पाऊंगा या नहीं, रत्न भी बतायें।

उत्तर : सन '८८ की परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी। ९ रत्ती का मूंगा धारण करने पर लाभदायक होगा।

अनिल कुमार पांडे, देहरादून

प्रश्न : नौकरी में पदोन्नति का साक्षात्कार हुये सालभर हो गया है, उसका परिणाम कब निकलेगा ?

उत्तर : अगस्त तक परिणाम प्राप्त होगा, तभी पदोन्नति भी होगी।

गिरधर गोपाल गर्ग, जयपुर

प्रश्न : बड़ी पुत्री की शादी कब तक होगी ?

उत्तर : सन '८८ के दिसम्बर मास में होगी।

श्री गंगाधर ज्योतिष पाठशाला के-४/१६,
लालघाट वाराणसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

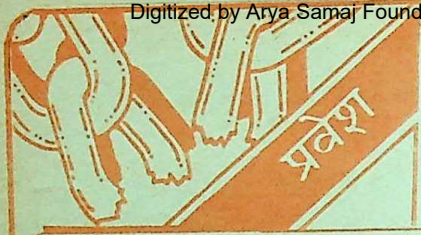

'प्रवेश' में इस बार हम परिचय करा रहे हैं आराधना से । इनकी कविताओं में एकदम सहज रूप में आज की घटनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है । यहां हम इनकी चार कविताएं प्रस्तुत कर रहे हैं । —संपादक

एक और नरसिंह

खौलते लावे की उफनती लहरें
कर देना चाहती हैं
मटियामेट
हर उस शैतान को
जिसकी विकृत मानसिकता
रौंदती चली जाती है
संस्कार को
कर्म को
ज्ञान को
धधकते ज्वालामुखी में
रूप ग्रहण कर रहा है
एक और 'नरसिंह'
नहीं पहचानते
तुम .... तुम.... तुम ....
टूटते स्तंभों की अपमानित संध्या को
फिर से
बाल-रश्मियों से संवारने
एक नहीं
अगणित 'हिरण्यकशिपु' को मारने

बंजर अहसास

मैंने
तुमने
उसने
सबने एक खोल चढ़ा रखा है
कछुए-सा
इसलिए प्रवृति भी होती जा रही है
कछुए-सी
संवेदना से परे इस पाषाणी खोल पर
बेअसर होता जाता है
आसपास थिरकता 'दर्द'
हां, कभी-कभी,
जरूर
जागती है हम में
तथाकथित नागरिकता की भोथरी अस्मि
जिसके नशे में हम हो जाते हैं शामिल
नारों की भीड़ में
एक और संख्या बन कर
और व्यवहार की धरती रह जाती है बंजर
बंजर-सी

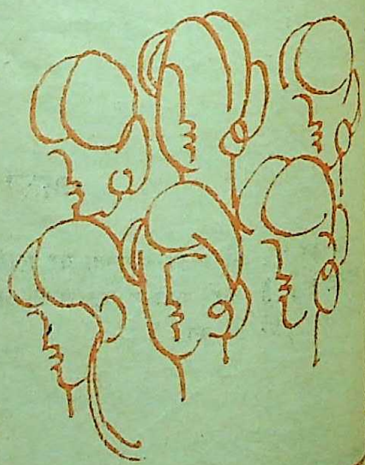

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न

कहीं
भीतर कोई मरता है
जिजीविषा
फिर भी
मानव-खोल में दुबकी
गढ़ती जाती है

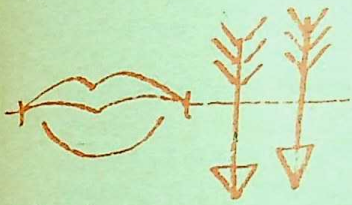

नये-नये बहाने
नयी-नयी राहतें
होठों के किनारे टेढ़े होकर
सब कुछ कह डालते हैं
पर 'वह' शर्मिंदा नहीं होती
क्योंकि मृत्यु तो उसी की हुई थी ना
उस 'अंतरात्मा' की
उस दिन, जब किसी समीकरण से जूझते
उसका 'सत्य' मर गया था
अब तो बस किसी फॉसिल्स की तरह
उसका निशान बाकी रह गया है
'मृत निशानों' में
कहीं संवेदन:— होती है, मनु ?

आराधना

भवितव्य

तुम
आतंक की गोली से करते जाते हो धराशायी
हर उस स्तंभ को
जिसके उजले ललाट की रेखाएं बताती हैं
उसने अर्पित किया है अपना जीवन
देश को
स्याह-स्वार्थ की अजगरी-भूख में
निगलते जा रहे हो
प्रेम-भाईचारा-सहयोग को
नपुंसक इरादों के खोखले अहंकार में डूबे
कब तक खेलोगे यह रक्तिम-होली ?
'संख्याएं' बढ़ती जा रही हैं
घनीभूत-रोष को सह नहीं पाओगे
'मृत्यु' तुम तक भी
पहुंचेगी ही

आत्म-कथ्य

—जब-जब सूर्य की प्रखर-धवलता पर स्याही-सी फिरते देखा है, मूल्यों की खंड-खंड अवनति देखी है, दोहरे-मापदंड का सतही-आडंबर महसूस किया है, तब-तब मन की अकुलाहट मुखर हो आई है।

द्वारा/ श्री नन्द किशोर प्रसाद, क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी,
भारत सरकार, मोतिहारी, (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

— पंडित शिवप्रसाद पाठक

ग्रस्थिति : सूर्य १३ फरवरी से कुंभ में, मंगल १३ से धनु में, बुध वक्री होकर मकर में, गुरु २ से मेष में, शुक्र ४ से मीन, शनि धनु, राहु मीन, केतु कन्या हर्षल नेपच्यून धनु तथा प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

मेष (चू, चे, चो, ल, ली, लो अ)

नवीन योजना में सफलता, आर्थिक उन्नति एवं पारिवारिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। १ से ७ के मध्य राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। शत्रुपक्ष गुप्त रूप से हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। सुखद समाचार मिलेगा। ८ से १४ के मध्य नवीन योजना में श्रम की अधिकता होगी। आकस्मिक यात्रा पर धन व्यय होगा। जीवन साथी के सहयोग से इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी। १५ से २२ के मध्य अस्वस्थता पर व्यय होगा। आकस्मिक लाभ से अभीष्ट कार्य पूर्ण होगा। संपत्ति संबंधी कार्यों में विजय मिलेगी। प्रतियोगिता, परीक्षा कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी। मासांत अनुकूल तथा उत्साहवर्धक होगा अपूर्ण कार्यों की पूर्णता के लिए श्रेष्ठ समय होगा।

वृषभ (ई, उ, ए, ओ, व, वा, वे, वू, वो)

आत्मशक्ति साहस तथा परिश्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों में विजय प्राप्त होगी। क मानसिक तनाव तथा व्ययों से सावधानी रखें १ से ७ के मध्य रचनात्मक अथवा सामाजि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। शत्रुपक्ष कारण तनाव रहेगा। पारिवारिक अस्वस्थता धन व्यय का सामना करना होगा। ८ से १५ मध्य नवीन स्थान की यात्रा, संपत्ति, धन पारिवारिक संपदा संबंधी कार्यों में आश्चर्य सफलता प्राप्त होगी। राजकीय अधिकारियों साथ सावधानी रखनी होगी। १६ से २२ मध्य अस्वस्थता के कारण कार्यों में व्यर्थ वि होंगे। शासन सत्ता तथा उच्च पदाधिकारियों विपरीत परिस्थितियों में भी सहयोग मिलेगा मासांत में विघटनकारी स्थितियों का उदय तनाव का सामना करना होगा। धार्मिक मांगलिक कार्यों की पूर्णता होगी।

मिथुन (क, की, कू, को, घ, छ, ह

मास उत्साहवर्धक होगा। नवीन साकार होगी। रुका हुआ धन प्राप्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिवारिक विवादों का टालना हितकर होगा। राजकीय कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। १ से ८ के मध्य राज्याधिकारी अथवा राजनेता के कारण लंबित योजना साकार होगी। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। ९ से १५ के मध्य धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों की पूर्ति पर व्यय होगा। संपत्ति के विवादों में तनाव विद्यमान रहेगा। शत्रुपक्ष से सावधानी रखें, गुप्त षड्यंत्र के द्वारा छवि खराब करने का प्रयास किया जाएगा। १६ से २३ के मध्य आजीविका संबंधी कार्यों में सुधार होगा। मासांत में रुका हुआ धन मिलेगा। संपत्ति के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। शासन व सत्ता-पक्ष पर प्रभुत्व बढ़ेगा। प्रियजन के कारण सुखद समाचार प्राप्त होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

मास श्रेष्ठ फलदायी होगा। आजीविका संबंधी कार्यों में अनुकूल स्थिति होगी। पारिवारिक वातावरण में खिन्नता रहेगी। शत्रुपक्ष के कारण उत्पन्न संकट दूर होगा। १ से ८ के मध्य आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास सार्थक होंगे। पारिवारिक तनावों से मन में खिन्नता होगी। अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों के प्रयास अपूर्ण रहेंगे। श्रम की अधिकता के बावजूद वांछित सफलता का अभाव होगा। १६ से २३ के मध्य आर्थिक योजनाओं से लाभ मिलेगा। भौतिक जीवन में किये गये प्रयास सार्थक होंगे। शासन, सत्ता अथवा राज्याधिकारी वर्ग

पर्व और त्योहार

२ फरवरी माघी पूर्णिमा, रविदास जयंती, ६ संकष्टी गणेश चतुर्थी, ११ जानकी जयंती, १४ विजया एकादशी, १५ सोम प्रदोष, १६ महाशिवरात्रि, १७ दर्श अमावस्या, २१ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २४ होलाष्टक प्रारंभ श्री दुर्गाअष्टमी, २८ आमलकी एकादशी, २९ को प्रदोष व्रत।

राशियां और प्रभाव

मास में गुरु मेष राशि में प्रवेश करेंगे तथा मंगल गुरु का प्रत्यावर्तन योग होगा जो मिथुन, सिंह, तुला, धनु, मीन राशि को शुभ, मेष, कर्क, वृश्चिक, कुंभ राशि को मध्यम, वृषभ, कन्या, मकर राशि को अशुभ फलदायक होगा। गुरु मंगल के प्रत्यावर्तन एवं जब गुरु मेष राशि में विराजते हैं, तो हिंसक एवं प्राकृतिक दुर्घटनाओं में कमी होती है। मानवीय हितों के लिए सतत प्रयास होंगे। युद्ध तथा रक्तपात रुकेगा। आध्यात्मिक कार्यों की अधिकता होगी। मास में तानाशाही सरकारों संबंधी अथवा साम्यवादी देशों में स्वतंत्रता संबंधी अधिकार बढ़ेंगे। विज्ञान एवं तकनीकी में नवीन शोध होंगे। भारत में सीमावर्ती विवादों में शिथिलता आएगी। राजनीतिक संगठन एकता के सार्थक प्रयास करेंगे। मंत्रिमंडल में परिवर्तन के स्पष्ट संकेत हैं।

भारत में कुछ स्थानों पर वर्षा तथा ओलावृष्टि की मध्य मास में संभावना है। बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में राजकीय नियंत्रण होगा। तेल व पैट्रोलियम पदार्थ के साथ धातुओं के मूल्य बढ़ेंगे। मास में विलासितादायी वस्तुओं में तेजी का विशेष रुख होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सहयोग मिलेगा। मासांत में यात्राओं की अधिकता होगी। शत्रुपक्ष के कारण विषम स्थितियों का उदय होगा। आत्मशक्ति की प्रबलता से विजय होगी।

सिंह (म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टू, टी,)

आपको परोपकारी भावना तथा भावुकता के कारण कष्ट वहन करना होगा। संपत्ति के कार्यों को टालना हितकर होगा। आकस्मिक धनलाभ की प्राप्ति होगी। १ से ८ के मध्य अस्वस्थता तथा व्यर्थ व्ययों का सामना करना होगा। मित्रों की सहायता सावधानी सहित करें। ९ से १४ के मध्य लेखन, साहित्य व कलात्मक कार्यों में यश तथा प्रतिष्ठा मिलेगी। पारिवारजनों का वांछित सहयोग प्राप्त होगा।। १५ से २३ के मध्य यात्रा से लाभ होगा। दीर्घकालीन योजनाओं पर धन व्यय की संभावना। श्रम की अधिकता होगी। संपत्ति संबंधी कार्यों में व्यय के बावजूद सफलता का अभाव रहेगा। मासांत में परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। शत्रुपक्ष के गुप्त षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा। जीवन साथी की अस्वस्थता चिंता का कारण होगी।

कन्या (टो, पा, पी, पु, पू, ष, पे, पो,)

पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी। आवेग की अधिकता से व्यर्थ कष्ट का सामना करना होगा। संपत्ति संबंधी विवाद में प्रियजनों के सहयोग से अपेक्षित सुधार होगा। १ से ८ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा व प्रियजनों से भेंट होगी। शासन सत्ता अथवा राज्याधिकारी के सहयोग से आजीविका संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। कार्यों में सावधानी रखें। व्यर्थ आवेग के कारण पीड़ा का सामना करना होगा। ९ से १५ के मध्य आकस्मिक धन[illegible] होगा। विलासिता की वस्तु पर धन [illegible] होगा। १५ से २३ के मध्य नवीन [illegible] संबंधी प्रयास सार्थक होंगे। उदर विकार [illegible] कष्ट का सामना करना पड़ेगा। मासांत [illegible] प्रियजनों के सहयोग से उल्लेखनीय सफ[illegible] प्राप्त होगी। रक्त संबंधियों से सावधानी रखें [illegible] यात्रा पीड़ादायक होगी।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, [illegible])

मास में उल्लेखनीय प्रगति होगी। [illegible] उद्यम में राज्याधिकारी वर्ग का सह[illegible] मिलेगा। सभी प्रयास सार्थक हों[illegible] अधिकाधिक श्रम कर अवसर का ल[illegible] उठाएं। १ से ८ के मध्य विगत काल से [illegible] रही समस्याओं का समाधान होगा। धनल[illegible] होगा। पारिवारिक एवं मांगलिक कार्यों [illegible] सफलता मिलेगी। ९ से १६ के म[illegible] आजीविका संबंधी कार्यों की पूर्ति होगी। [illegible] आय के साधन का निर्माण होगा। मित्रों [illegible] समागम से व्यय की अधिकता होगी। १७ [illegible] २४ के मध्य संपत्ति संबंधी विवादों पर वि[illegible] मिलेगी। शत्रुपक्ष के साथ सुलह हो[illegible] मासांत में यात्रा का योग लाभप्रद होग[illegible] परिवार में प्रसन्नता तथा उत्साह का वात[illegible] होगा। समय का अधिकाधिक उपयोग [illegible] पुरुषार्थ से यश प्रतिष्ठा तथा धनलाभ होग[illegible]

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, या, यी, [illegible])

मासारंभ में व्यय की अधिक[illegible] अनावश्यक यात्रा तथा सुख में कमी हो[illegible] उच्चवर्ग के सहयोग से विद्यमान संकटों [illegible] निराकरण होगा। १ से ८ के मध्य शासन, [illegible] अथवा अधिकारी वर्ग के सहयोग से [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना अथवा महत्त्वपूर्ण कार्य पूरा होगा। पारिवारिक कार्यों के लिए व्यर्थ यात्राएं होंगी। ९ से १६ के मध्य अस्वस्थता, दौड़धूप की अधिकता तथा व्यर्थ व्ययों का सामना करना होगा। १७ से २३ के मध्य शत्रुपक्ष से सावधानी रखना हितकर होगा। शोधकार्य, सामाजिक, राजनीतिक तथा सृजन संबंधी कार्यों में वृद्धि होगी। विशिष्ठ वस्तु पर धन व्यय होने से आर्थिक तंगी का सामना करना होगा। मित्रों तथा प्रियजनों का सहयोग नवीन अवसर प्रदान करने में सहायक होगा।

धनु (या, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, मे,)

मास मध्यम फलदायी होगा। परिश्रम तथा साहस के कारण रुका हुआ धन मिलेगा। आकस्मिक धनलाभ प्राप्त होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय कारक स्थिति होगी। १ से ८ के मध्य व्यर्थ व्यवधान तथा शत्रुपक्ष के कारण चिंताजनक स्थिति होगी। भावुकता तथा आवेग पर नियंत्रण हितकर होगा। ९ से १६ के मध्य उच्च राज्याधिकारी वर्ग की अप्रसन्नता से मानसिक तनाव रहेगा। स्वास्थ्य संबंधी सावधानी रखना हितकर होगा। १७ से २३ के मध्य इच्छित स्थान की यात्रा होगी। लेखन व सृजन संबंधी कार्यों के कारण प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मासांत में अनुपार्जित धनलाभ का योग होगा। जीवन साथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। संपत्ति के कार्यों में विलंब होगा।

मकर (चो, जा, जी, खी, खे, गा,)

मास संघर्षपूर्ण होगा। आर्थिक कार्यों में विलंब होगा। पारिवारिक वातावरण में तनाव रहेगा। स्थायी धन, वाहन संबंधी कार्यों पर आकस्मिक व्यय होगा। १ से ८ के मध्य शत्रुपक्ष की क्रियाशीलता से कार्यों में व्यवधान होंगे। उच्चाधिकारी वर्ग की अप्रसन्नता से आर्थिक तथा मानसिक कष्ट का सामना करना होगा। ९ से १६ के मध्य परिश्रम की अधिकता होगी। शत्रुपक्ष के षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा। संपत्ति-संबंधी विवादों में सुलह के अवसर होंगे। १७ से २४ के मध्य पारिवारिक विवादों से तनाव होगा। आजीविका संबंधी कार्य मनोनुकूल पूर्ण होंगे। जीवन साथी के सहयोग से लंबित तपस्या का समाधान होगा। मासांत में भावुकता पर नियंत्रण रखें अन्यथा महत्त्वपूर्ण लाभ से वंचित होना पड़ेगा। यात्रा को टालना हितकर होगा।

कुंभ, (गू, रे, गो, सा, सी, सू, से, सो,)

मास उत्साहवर्धक तथा सफलतापूर्वक है। राज्याधिकारी वर्ग के सहयोग से योजना पूर्ण होगी। आजीविका संबंधी कार्यों में अनुकूल अवसर आएंगे। १ से ८ के मध्य शासन सत्ता अथवा राज्याधिकारियों के सहयोग से नवीन उद्योग की योजना पूर्ण होगी। ९ से १६ के मध्य मनोरंजन, भ्रमण, लेखन, सृजन आदि कार्यों में अभिरुचि बढ़ेगी। रचनात्मक कार्यों से लोकप्रियता बढ़ेगी। पारिवारिक समस्या का समाधान होगा। १७ से २४ के मध्य कार्यों की अधिकता व पारिवारिक प्रसन्नता होगी। संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। बहुमूल्य वस्तु के क्रय पर धन व्यय होगा। जीवन साथी के सहयोग से नवीन कार्य की सार्थक पहल होगी। मासांत फलदायक होगा। साहस, पुरुषार्थ तथा परिश्रम से कीर्ति मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीन (दी, दू, थ, फ, दे, दी, च, ची,)

मास में राजकीय कार्यों से आशातीत सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शत्रुपक्ष के कारण व्यर्थ मानसिक तनाव का सामना करना होगा। १ से ८ के मध्य शासन सत्ता अथवा राजकीय अधिकारी के सहयोग से इच्छित कार्य पूर्ण होगा। शत्रुपक्ष के प्रयास विफल होंगे। पारिवारिक दायित्वों पर व्यय अधिक होगा। ९ से १६ के मध्य श्रम की अधिकता आकस्मिक यात्राएं तथा शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। नवीन योजनाओं में प्रगति होगी। १७ से २३ के मध्य शत्रुपक्ष का भंडाफोड़ होगा। आजीविका तथा स्थिर संपत्ति संबंधी कार्य में प्रियजन की सहायता मिलेगी। मासांत श्रेष्ठ होगा। उत्साहवर्धक वातावरण में लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में यश प्राप्त होगा। सुख तथा सौभाग्य की वृद्धि होगी।

ज्योतिष धाम १२/४, ओल्ड सुभाष नगर, भोपाल

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (४४८), २. संविधान (५६वां संशोधन)— राष्ट्रपति को संविधान का प्राधिकृत हिंदी अनुवाद प्रकाशित करने का अधिकार सौंपा गया, ३. अंतरराष्ट्रीय शांति निरस्त्रीकरण, नव आर्थिक व्यवस्था का विकास तथा मानवीय भावना का समृद्धीकरण; १५ लाख रुपये का पुरस्कार; १९८६— 'पार्लमेंटेरियन्स ग्लोबल एक्शन' (निरस्त्रीकरण एवं शांति के प्रयास में संलग्न ३६ देशों के सांसदों का संगठन); १९८७— मिखाइल गोर्बाचेव (सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री), ४. सातवां भारतीय अभियान-दल (विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिकों तथा सेना के तीनों पक्षों के लोगों सहित ९०-सदस्यीय दल), सागरीय खोज-विज्ञान की राष्ट्रीय संस्था के डॉ. आर. सेनगुप्त के नेतृत्व में विगत २५ नवम्बर को गोआ से रवाना; कुछ महत्त्वपूर्ण खनिजों का पता लगाने के लिए भूगर्भीय खोज तथा वायुमंडल एवं सौर-किरणों का अध्ययन; ५. क. नेहरू पार्क (न. दिल्ली), सोवियत मूर्तिकार ए. त्यूरेनकोव द्वारा निर्मित तथा लेनिनग्राद में ढलाई, ख. कलकत्ता एवं विजयवाड़ा, ६. स्वेतोस्लाव रोरिक (प्रसिद्ध चित्रकार स्व. निकोलस रोरिक के पुत्र), ७. क. १५५ विश्वविद्यालय तथा ३२ लाख छात्र, ख. अमरीका में लगभग ३,३०० विश्वविद्यालय (लगभग सवा करोड़ छात्र), ८. 'क्राई फ्रीडम' अश्वेत गांधीवादी नेता स्तीव बीको के जीवन पर जिनकी १९७७ में पुलिस नजरबंदी में मृत्यु हुई मुख्य भूमिका में अमरीकी अभिनेता डेंजिल वाशिंगटन, ९. अगाथा क्राइस्टी का 'माउसट्रैप' लंदन के मार्टिन्स थ्येटर में ३५ वर्षों से अधिक से निरंतर प्रदर्शित (२५ नवम्बर, १९५२ से चालू), १०. २८-वर्षीय शरवती प्रभु, एक ब्रिटिश दल के साथ सितम्बर १९८७ के प्रारंभ में गयी थी (अब तक इस मार्ग से कोई भी चढ़ने में सफल नहीं हुआ, १० से अधिक पर्वतारोही इस प्रयास में मर चुके हैं) ११. कलाबाज कुत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

कुछ पठनीय कृतियां

अतीत के अनमोल क्षण : राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, राय कृष्णदास यशपाल, बलदेवप्रसाद मिश्र, बनारसीदास चतुर्वेदी, हजारी प्रसाद द्विदी जैसे दिवंगत साहित्यकारों के साथ डा. रामकुमार वर्मा, श्रीनारायण चतुर्वेदी, नगेन्द्र आदि जीवित साहित्यकारों के चौदह संस्मरणों को परम लाल गुप्त ने यहां प्रस्तुत किया है। गुप्तजी से लेखक के पारिवारिक संबंध हैं। अतः उनसे संबद्ध संस्मरण में व्यक्तिगत संस्पर्श अधिक हो गया है। इन सभी संस्मरणों में संबद्ध साहित्यकारों की सात्विक प्रवृत्तियों को उजागर करने का प्रयास अधिक हुआ है। अतः सर्वत्र साहित्यकारों का संतत्व अधिक उभरकर आ पाया है। ये सभी संस्मरण रोचक एवं पठनीय हैं।

अतीत के अनमोल क्षण : लेखक, परमलाल गुप्त। प्रकाशक, शेखर प्रकाशन, गोंसाई टोला, इलाहाबाद-31। मूल्य : बीस रुपये।

मुलाकातें : रतीलाल शाहीन की इस पुस्तक में हिंदी-उर्दू के अठारह साहित्यकारों से लिये गये इंटरव्यू संकलित हुए हैं। राजेन्द्र अवस्थी, डा. सत्येन्द्र, इस्मत चुगताई, इलाचंद्र जोशी, गुलाबदास ब्रोकर जैसे लोकप्रिय साहित्यकारों के साथ ली गई मुलाकातों में शाहीन ने जिस अंदाज में सवाल किये हैं, उनके उत्तरों की प्रस्तुति का रंग-ढंग भी उतना ही अनूठा है। चित्रा मुद्गल, अनन्तकुमार पाषाण, विश्वंभर 'अरुण', मो. दि. पराड़कर आदि के साथ हुए प्रश्नोत्तरों से साहित्य और समाज की ताजातरीन स्थितियों पर जो प्रकाश पड़ता है वह किसी तरह से संभव नहीं था। साक्षात्कार लेने की विधा के साथ शाहीन ने अपनी इन मुलाकातों के द्वारा संस्मरण विधा को भी एक वैशिष्ट्य प्रदान किया है।—इसमें संदेह नहीं।

मुलाकातें : लेखक, रतीलाल शाहीन। प्रकाशक, सुनील साहित्य सदन, उत्तरी घोंडा, दिल्ली-५३। मूल्य : ४५ रुपये।

यायावर की याद में : पवन चौधरी 'मनमौजी' पेशे से कुशल वकील होने के साथ संवेदनशील साहित्यकार भी हैं। दिवंगत साहित्यकार अज्ञेय ने लेखक से अनेक बार कानूनी अड़चनों के आ जाने पर परामर्श लिया था। विधिवेत्ता के रूप में लेखक ने अज्ञेय को अपने परामर्श से लाभान्वित किया, परंतु स्वयं उसके साहित्यकार ने भी अपनी सहृदय संवेदनशीलता को बेसुध नहीं होने दिया। अज्ञेय के संसर्ग में बिताये कुछ स्मरणीय-रमणीय क्षणों को संस्मरणबद्ध करके 'यायावर की याद में' प्रस्तुत किया गया है।

यायावर की याद में : लेखक, पवन चौधरी 'मनमौजी'। प्रकाशक, विधि साहित्य निर्माता, ई-३१ मानसरोवर गार्डन, नयी दिल्ली-१५। मूल्य : ३५ रुपये।

● **प्रो. विश्वंभर 'अरुण'**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समकालीन मार्क्सवाद : मार्क्स के नाम से संसार के सभी बौद्धिक विचारक, राजनीतिक आंदोलनों के प्रवर्तक और कला, साहित्य एवं समाज के संबंधों का विश्लेषण करनेवाले समीक्षक परिचित हैं। भारत में भी कला एवं साहित्य की समीक्षा को एक विशेष दिशा देने में मार्क्स के विचार-दर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रगतिशील आंदोलन में यह बहस का मुद्दा रहा है कि मार्क्स का विचार-दर्शन अपनी देशकाल की परिस्थितियों के अनुसार अपनाया जाए या दलगतनीति के अनुसार ? इस मुद्दे पर प्रबल मतभेद भी हैं। इसलिए मार्क्सवादी विचार-दर्शन के विकास और विशेष रूप से यूरोपीय देशों में इस पर हुए विचार-विवेचन से परिचित होना जरूरी है क्योंकि इन विचार-विवेचनों का प्रभाव भारतीय साहित्य समीक्षकों पर भी पड़ा है। इस संदर्भ में प्रगतिशील समीक्षक डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय का ग्रंथ 'समकालीन मार्क्सवाद' एक उल्लेखनीय कृति है।

इस पुस्तक में गैरसोवियत समका[illegible] मार्क्स प्रभावित समीक्षकों—लुकाच, लू[illegible] गोल्डमन, अल्यूसर, रेमंड विलियम्स, [illegible] अडोनो और मारकूस आदि के विवेचन [illegible] अपनी दृष्टि से व्याख्यायित किया गया है। [illegible] व्याख्या गैरमार्क्सवादियों के दृष्टिकोण में भी [illegible] विचार-दर्शन के प्रति सही और नयी समझ [illegible] कर सकती है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने [illegible] उपाध्याय को 'समकालीन मार्क्सवाद और [illegible] आलोचना' पर विशेष अध्ययन और अनुस[illegible] कार्य की स्वीकृति दी है। यह 'समका[illegible] मार्क्सवाद' इस शोधकार्य की पहली कड़ी [illegible] इसमें कहीं कहीं यथार्थ और दूरगामी [illegible] विवेचन भी है, जो इस संदर्भ में चिंतन के [illegible] द्वार खोलता है।

—गोपालकृष्ण [illegible]

समकालीन मार्क्सवाद

लेखक : डॉ. विश्वभर नाथ उपाध्या[illegible]

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन जयपुर। मूल्य [illegible] रुपये।

हंसिकाएं

झटका

उन्होंने पत्नी को आधुनिका यों बनाया
कि अब उसी का चलन खटकता है।
वे कहीं भी बिजली गिरायें
झटका उन्हें लगता है।

मुग्ध

चित्रलिखित-दशा—तैलचित्र ज्यों।
घड़ों पानी डाल दो, असर न हो॥

ईर्ष्या

उनकी सुंदर स्वस्थ प्रेमिका को देखकर
मित्र ने आह भरी
तथा बोले, ''वाह कितनी स्वस्थ है यह कमजो[illegible]

विवाहित

प्रेम में निराशा से बचने का सरल उपा[illegible]
जिसे भरपेट भोजन मिल चुका हो
उसे टुकड़ा न डाला जाय

साम्य

पाहुन को पाहन का पर्यायवाची कहो[illegible]
दोनों हिलने का नाम नहीं लेते

डॉ. सरोजनी प्रीत[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

विचित्र स्वप्न

संजय सक्सेना, हलद्वानी : मेरी आयु १६ वर्ष है। इंटर का छात्र हूं। रात्रि में दो बजे तक सामान्य निद्रा करता हूं। तत्पश्चात बहुत विचित्र व प्रिय स्वप्न आते हैं तथा उनमें ऐसा खोता हूं कि स्वतः उठने का सवाल ही नहीं होता। जब सुबह कोई मुझे उठाता है, तब उसकी आवाज व हिलाना एक स्वप्न की भांति लगता है। मेरे मुंह पर पानी का छींटा मारना पड़ता है। डा. साहब इस अवस्था से छुटकारा कैसे पाऊं।

मन दो प्रकार का होता है चेतन मन व अचेतन मन। चेतन मन व अचेतन मन में ताल-मेल का होना आवश्यक है। निद्रा में केवल हमारा अचेंतन मन सक्रिय होता है। स्वप्न का एक काम है निद्रा की रक्षा करना तथा दबी हुई प्रवृति व इच्छाओं को 'स्वप्न' की भाषा में व्यक्त करना। स्वप्न के बनाने के लिए दिन भर के घटित अनुभव या फिर रात में नींद को जागृत करने वाले साधन काम में आते हैं। इसी कारण हिलाना व आवाज भी स्वप्न में ही शामिल हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति अपने मन के भीतर पूरी तरह से ठान ले कि उसे अमुक समय पर उठना ही है तो वह उस समय उठ जाएगा मानो हमारे शरीर में एक घड़ी हो। वैसे भी शौच, भूख, निद्रा का समय आदि इसी अंदर की घड़ी के अनुसार अपना कार्य निर्धारण करते हैं, फिर बाद में आदत बन जाती है। आशा है अब आप समझ गये होंगे कि वास्तव में दोष आपके शरीर यंत्र का नहीं, अपितु आपका है। यदि आप भीतरी मन से ठान कर अचेतन मन में उठने के कारणों को समझ लेंगे तो आप अवश्य ही सफल होंगे।

नलिन कुमार सिंह, बरौनी : १७ वर्ष का बी. एस-सी. का छात्र हूं। मेरे दो बड़े भाई मेरे पिता की 'इंजीनियर का बाप' कहलाने की इच्छा को पूरी न कर सके। मैंने पापा की चाहत पूरी करनी चाही तथा मैट्रिक में ७० प्रतिशत अंक लेने के पश्चात आई. एस-सी. में अच्छे नंबरों के लाने की ठानी। लेकिन गणित की परीक्षा में नर्वस हो गया, प्रश्न-पत्र भी आसान था और तैयारी भी अच्छी थी लेकिन आत्मविश्वास की समाप्ति से कुछ न कर सका। अब स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है। क्या करूं ?

वास्तव में बच्चे की इच्छा, व मन के झुकाव, को जान लेना आवश्यक है। तब पूरे लग्न के साथ नियमित रूप से सारे वर्ष काम करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। परंतु जब हम केवल फल को ही सामने लक्ष्य बनाकर किसी दूसरे की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं, तब कई बार समस्याएं सामने आती हैं। जिस परीक्षा में उत्तीर्ण होना तथा उसके नंबर महत्वपूर्ण हों वह परीक्षा अधिक श्रमसाध्य हो जाती है। आशा है अब आप समझ गए होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आप क्यों नर्वस हुए। आत्मविश्वास व आत्मबल को दोबारा जगाइए और साल के प्रारंभ से ही जुट जाइए। गीता के उपदेश के अनुसार फल की चिंता न कर कर्म करें। तब मनोवैज्ञानिक ढंग से अपनी समस्या समझें।

चेतना शून्य

विभा कुमारी, बिहार : २० वर्ष की बी. एस-सी. की छात्रा हूं। आठ भाई बहनों के बीच में पांचवें नंबर पर हूं। समस्या यह है कि मैं हर समय मृत्यु के बारे में ही सोचा करती हूं। जब जीवन का अंत ही होना है, तब पहनना, ओढ़ना, खाना-पीना, रीति रिवाज, समाज यह सब क्यों। सब व्यर्थ ही लगता है। यह सब ७ वर्ष पूर्व शुरू हुआ। मुझे अचानक लगा कि सारा शरीर चेतनाशून्य हो रहा है, फिर ठंड-सी लगी, पर मैं होश में थी। इस प्रकार के दौरे साल में कई बार हुए कभी हृदय की धड़कन तेज हो जाती है तो कभी सांस लेने में दिक्कत। क्या मुझे मनोचिकित्सक द्वारा इलाज की जरूरत है।

आप वास्तव में अधिक अवसाद से पीड़ित हैं इसी कारण दौरे पड़े हैं। यह अत्याधिक चिंता, परेशानी या तनाव में हो जाता है। मृत्यु देखा जाए तो जीवन को अर्थ देती है और सोचने का ढंग ऐसा भी हो सकता है कि हमारे पास केवल ६०-७० वर्ष हैं— इसी जीवन में जो करना है, बनना है, कर के दिखाना है, दिखा दें। या फिर क्यों न अच्छी तरह से जिएं। जीवन जीने के लिए है। आपकी विचारधारा वास्तव में कोई दर्शन नहीं, वरन अवसाद के लक्षणों से भरी है। इन सबका मनोचिकित्सा द्वारा इलाज संभव है।

सब कुछ ठीक फिर ?

प्रभाकर गोपाल, जबलपुर : मैं १००० रु. पेंशन पाने वाला ६४ वर्षीय मिलिट्री से रिटायर्ड

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

सिविलियन हूं। १८ वर्ष की आयु में विचार आ लगे कि जिंदगी में क्या रखा है ? एक बार कुएं कूदा, परन्तु तैरना आने के कारण सीढ़ी द्वारा आ गया। फिर आठ साल बाद वैसा ही तनाव गया था। तथा तीसरी बार ३६-३७ वर्ष की में अकेलेपन व खर्च की तंगी में फिर तनाव बढ़ अब मेरे लड़के व लड़कियां सब अच्छे पद पर दामाद भी अच्छे हैं। कोई परेशानी नहीं, आर्थिक न पारिवारिक। न मुझे मधुमेह है ब्लेडप्रैशर फिर भी सिर में भारीपन, पेट में गैस अपचन, नींद का न आना-जैसी शिकायत बनी है। दिन में १२-१५ सिगरेट पीता हूं। वाहन बहुत डर लगता है। स्कूटर होने पर भी साइकिल ही चलाता हूं। ६१ वर्षीय पत्नी से इस आयु में शारीरिक संबंध १०-१५ दिन में करता हूं। वर्ष की आयु में सिफलिस हो गयी थी, वह ८ में ठीक हो गई थी। अब मानसिक तनाव क्यों

आप मेडीकल कालेज या बड़े अस्पताल जा कर मनोरोग विशेषज्ञ द्वारा जांच करा लें सके तो खून व रीढ़ की हड्डी के पानी की कराएं कहीं सिफलिस अभी भी सक्रिय नहीं। सिगरेट छोड़ सकें तो बहुत अच्छा। भ्रम है कि आप इतने साल सिगरेट पीते रहे अब नहीं छोड़ सकते, साथ ही यह भी कि गलत है कि यह पाचन शक्ति के लाभदायक है तथा तनाव कम करती वास्तव में सिगरेट पाचन-शक्ति को खराब तनाव को बढ़ाती है। शाम को ४-५ बजे पश्चात चाय या काफी न पियें। इस अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी से प्रेम करते हैं— यह कोई खराब बात नहीं यह तो एक स्वस्थ व्यक्ति का परिचायक है। आपको चार बार मानसिक रोग की शिकायत रही। हो सकता है इस समय भी अनिद्रा, अपचन आदि इसी बीमारी की प्रारंभिक अवस्था हो यदि आप अभी से सही निदान व उपचार करा लेंगे तो बीमारी पर प्रथम अवस्था में ही काबू पा सकेंगे।

सोचती ही रहती हूं।

प्रेमकुमारी बिहार : १८ वर्ष की छात्रा हूं। ४ वर्ष पूर्व मासिक धर्म आरंभ हुए तो अचानक एक दिन मेरे विचारों में कहानी शुरू हुई।.... जैसे मैं एक बहुत सुंदर लड़की हूं .... इत्यादि-इत्यादि। बस, फिर मैं यही २४ घंटे सोचने लगी। पढ़ाई का स्तर गिरने लगा। पढ़ते-पढ़ते पुस्तक खुली की खुली रह जाती है। सब सोचते हैं खूब पढ़ रही है परंतु मैं दिवास्वप्न में मग्न होती हूं।

बचपन से ही मैं अपने में असुरक्षा की भावना पाती हूं। घर में कभी शांति न थी। माता-पिता से कभी स्नेह नहीं प्राप्त हुआ। शारीरिक कारणों से हीन भावना मन में है। स्कूल में दूसरी लड़कियों से दूर रहती हूं। जब सब सामान्य महसूस होता है, तब सब से बात करने का मन तो होता है, परंतु फिर भी नहीं करती। परिवार में दादा को मानसिक रोग था— इलाज करवाया। पिता भी मानसिक रोगी हैं, पर मानते नहीं। डा. साहब कृपया अब आप कोई मार्ग दिखाएं।

मासिक धर्म के आरंभ पर अंतःस्रावी ग्रंथि (हारमोनज) की वजह से मन पर भी प्रभाव पड़ता है तथा लड़की अपनी शक्ल-सूरत व डील-डौल की ओर अधिक ध्यान केंद्रित करती जाती है। विचारधारा पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। यह सीखना आवश्यक हो जाता है कि कल्पना व वास्तविकता में संतुलन कैसे बनाए रखें। मन पर एक ओर सैक्स की इच्छा, अच्छा दिखना आदि का प्रभाव होता है तो दूसरी ओर पढ़ाई व कैरियर बनाने का तनाव। आपने लिखा है कि जब आप सामान्य महसूस करती हैं, तब भी किसी से बात नहीं करतीं। यह प्रवृति बहुत गलत है। इस पर काबू पा लेने से ही आप वास्तविकता की ओर बढ़ पाएंगी तथा कल्पना अपनी यथायोग्य स्थान पर रहेगी, न कि हर समय स्वप्न और कल्पना की उड़ान में डोलेंगी। कल्पना में विचरना आपको आरंभ में इसलिए अच्छा लगता था कि आप जो कुछ वास्तविकता में नहीं पा सकीं वह कल्पना द्वारा प्राप्त करने की चेष्टा करती थीं। अब वह आदत के रूप में परिवर्तित हो गयी है। आप एक समझदार लड़की हैं और अपनी मनोस्थिति के कारणों को भली भांति समझ रही हैं। आपके परिवार में मानसिक रोग अवश्य है, परंतु अभी तक आप में मानसिक रोग के लक्षण नहीं आये। यदि अब आप अपने कदम जमीन पर रख, ऊंची उड़ान उड़ना बंद कर व्यावहारिकता सीखें तथा अपनी बात खुलकर मां बाप से न सही आसपास जो भी समझदार हो, उससे कहें। आप अवश्य अपनी समस्या पर काबू पा जाएंगी। यदि आप फिर भी समस्या पर नियंत्रण न ला पायें तब रांची, पटना के बड़े अस्पतालों, में जहां मनोरोग चिकित्सक हों से परामर्श ले सकती हैं। या उपचार भी करवा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

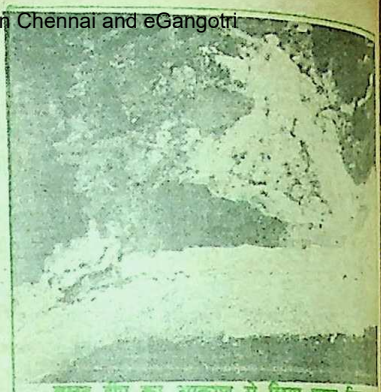
बलूत द्वीप का आकाश से लिया छाया चित्र

कनाडा के नोवा स्कोशिया प्रांत में माहोन खाड़ी । उसमें २० मील लंबी और १२ मील चौड़ी उस खाड़ी में छोटे-छोटे ३६५ द्वीप हैं सभी पथरीले, झाड़झंखाड़भरे और निर्जन । उन्हीं में एक गुमनाम द्वीप था कोई एक मील लंबा और आधा मील चौड़ा । सर्वेक्षणों में उसे द्वीप-नंबर १८ कहा गया था । कुछ लोग उसे ओक आइलैंड (बलूत द्वीप) भी कहते थे, क्योंकि केवल उसी द्वीप पर घने बलूत वृक्ष पाए जाते थे । और वहां की धरती भी अन्य सारे द्वीपों-जैसी पथरीली नहीं थी । उस पर कई फुट मोटी मिट्टी की परत थी ।

द्वीप नंबर १८ और ओक आइलैंड के इन दो नामों के बा

कुएं में सोना

लेखक — रुपर्ट फरन्यू

सन १७८५ की गर्मियां । सोलह वर्षीय डेनियल मेकगिनिस माहोन खाड़ी में नाव खे रहा था । कुछ देर बाद वह एक छोटे से द्वीप पर जा उतरा । द्वीप पर बलूत वृक्ष काफी थे । मेक गिनिस निरुद्देश्य भाव से इधर-उधर घूमने लगा । वह जानता था कि उस द्वीप पर कोई नहीं रहता । द्वीप पर घूमते-फिरते हुए उसे एक में अधडूबी एक शिला दिखाई दी । उसमें का एक बड़ा कपड़ा गड़ा हुआ था । उस के कुंडों में नाव की रस्सियां बांधी जाती

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

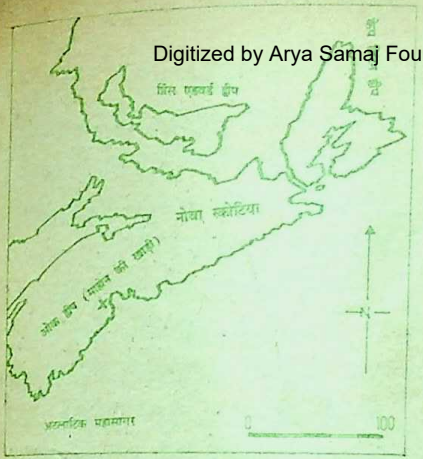

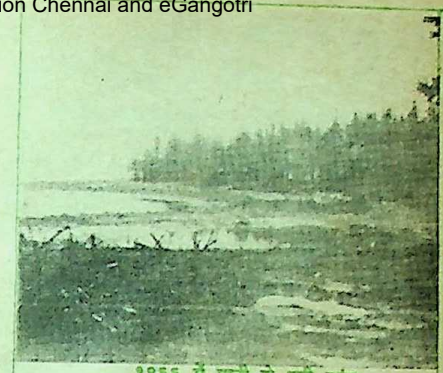

१९६६ में पानी से भरी सुरंग

उसका तीसरा नामकरण हुआ और लोगों ने उसे मनी पिट या सोने का कुआं कहना शुरू कर दिया। इस द्वीप का यह तीसरा नाम आज तक प्रचलित है। और लगता है अब उस द्वीप को हमेशा 'सोने का कुआं' कहकर ही पुकारा जाएगा।

हम आपको उसके तीसरे नामकरण की रोमांचक कहानी सुनाने जा रहे हैं। उस द्वीप पर क्या सचमुच कोई सोने का कुआं है, कोई अमूल्य खजाना छिपा हुआ है?

हम वर्ष १९८८ से इतिहास में पीछे लौटते हैं और ...

प्रस्तुति : संजीव अग्रवाल

लेकिन इस निर्जन द्वीप पर इस तरह के कुंडे का क्या काम था? क्या वहां नौकाएं आया-जाया करती थीं, लेकिन कब? इसी तरह के सोच-विचार में डूबा मेकगिनिस आगे बढ़ा तो एक खुली जगह नजर आई। उसके बीचों बीच एक बलूत वृक्ष खड़ा था। मेकगिनिस को पेड़ में भी कुछ अजीब बात नजर आई। जमीन से कोई सोलह फुट की ऊंचाई पर पेड़ की एक शाखा काटकर छोटी की गई थीऔर उस पर रस्सियों की घिसटन के निशान बने हुए थे, जैसे वहां रस्सी ने बार-बार रगड़ खाई हो। पेड़ के नीचे जमीन गोलाई में फंसी हुई दिखाई दी, मानो वहां कोई गढ़ा था जो अब भर चुका है।

यह सब देखकर मेकगिनिस उत्तेजित और उत्कंठित हो उठा। वह ऐसे क्षेत्र में रहता था जहां कभी समुद्री डाकुओं का बड़ा आतंक था।उन्हीं जल दस्युओं से जुड़ी कई लोमहर्षक कथाएं सुनी थीं उसने। यह भी सुना था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

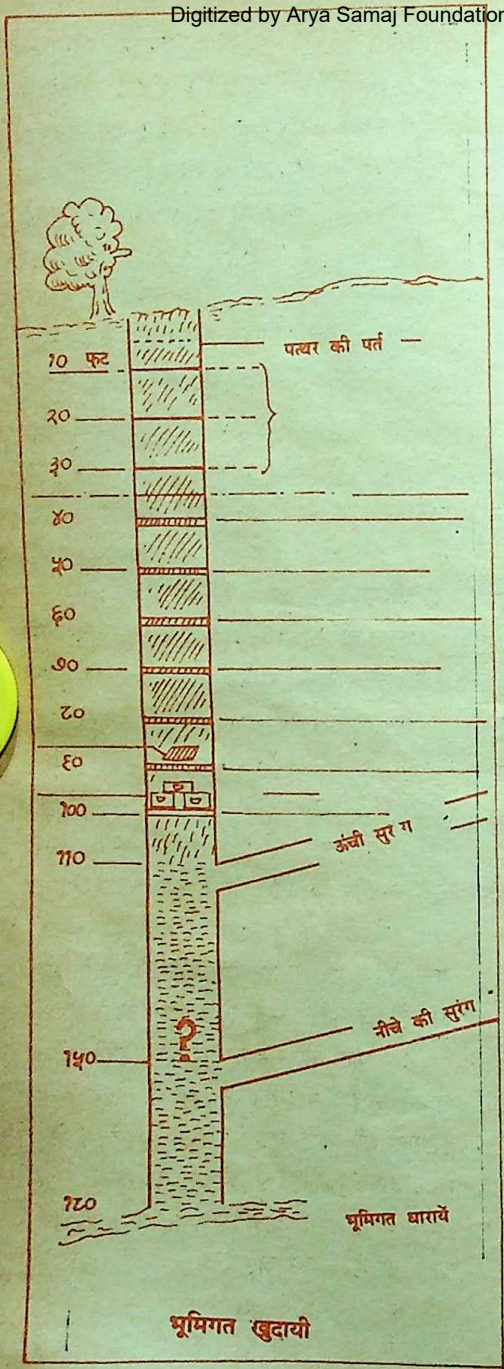

भूमिगत खुदायी

मोहीन की खाड़ी में अवस्थित निर्जन द्वीपों में डाकुओं ने अपने अड्डे बना रखे थे। डाकुओं के खजाने की भी कई कहानियां प्रचलित थीं। क्या उस निर्जन द्वीप पर बलूत वृक्ष के नीचे कोई खजाना दिया हुआ था ?

मेकगिनिस मुख्य भूमि पर बसे चेस्टर नामक गांव में रहता था। वह तुरंत लौटा और उसने अपने दो दोस्तों एंथनी वाघन तथा जान स्मिथ को यह सब बताया। वे भी रोमांचित हो उठे। उस रात तीनों देर तक बातें करते रहे। वे जितना सोचते, उनका यह विश्वास पक्का होता जाता कि द्वीप पर अवश्य कोई खजाना छिपा हुआ है।

अगले दिन तीनों दोस्त फिर द्वीप पर जा पहुंचे। वे अपने साथ खुदाई का औजार भी ले गए थे। उन्होंने पेड़ के नीचे गोलाकार धंसी हुई जगह को खोदना शुरू कर दिया। जमीन कड़ी थी, वे खुदाई करते रहे। थोड़ी मिट्टी निकालने के बाद उन्होंने देखा कि वे एक ऐसे गोलाकार कुएं में खुदाई कर रहे हैं जो लगभग तेरह फुट चौड़ा है। कुएं की दीवारों पर कुदालों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। यानी वहां कुछ लोगों ने खुदाई अवश्य की थी। भला क्यों ?

दस फुट तक खोदने के बाद उन्हें गढ़े के आर-पार बलूत के लट्ठे बिछे दिखाई दिए। लकड़ी एकदम गल चुकी थी। दोनों ओर के सिरे गढ़े की दीवारों में घुसे हुए थे। उन्होंने प्रसन्नता के भाव से एक दूसरे की ओर देखा। अब तो तय था कि जैसे ही वे बलूत की लकड़ियां हटाएंगे, उन्हें कोई चमत्कारिक दृश्य देखने को मिलेगा, शायद कोई बहुमूल्य खजाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों मित्र और भी जोर-शोर से काम में लग गए ।उन्होंने बलूत की लकड़ियां हटाईं तो नीचे फिर मिट्टी नजर आई । अब वे निराश हो उठे ।फिर मन में आया जब जिस चीज को जमीन में दबाने में इतनी मेहनत और सावधानी बरती गई है वह अवश्य ही बहुत ही मूल्यवान होगी । उन्होंने खुदाई आगे शुरू कर दी । दस फुट तक मिट्टी निकालने के बाद बलूत के लट्ठे फिर नजर आए । क्या अब खजाना मिलेगा ? तीनों यही सोच रहे थे । आशा-निराशा के बीच झूलते हुए ये बलूत के लट्ठे निकालने लगे । लेकिन खजाना अब भी नहीं मिला । फिर मिट्टी की तह नजर आई । अब तो उनकी हिम्मत जवाब दे गई । क्या ये इसी तरह मिट्टी खोदते और बलूत के लट्ठे निकाल कर कुएं में खुदाई करते जाएंगे ! लेकिन खजाने की कल्पना ने तीनों को चैन से न बैठने दिया । एक गहरी सांस लेकर वे फिर खुदाई में जुट गए । लकड़ी के लट्ठों की तीसरी परत हटाते-हटाते ये पस्त हो चुके थे । और कुएं का रहस्य था कि प्रकट होने में ही नहीं आ रहा था ।

उन्होंने आगे खुदाई का विचार छोड़ दिया और चेस्टर लौट गए । कुछ बातें उनके सामने साफ हो चुकी थीं । पहली — जिसने भी वह कुआं खोदा था, किसी विशेष मतलब से खोदा था । और उसका उद्देश्य खजाना छिपाना हीहो सकता था । जो दूसरी बात उनकी समझ में आई थी, वह यह थी, इस काम को वे तीनों अपने बल-बूते पर नहीं कर पाएंगे, उन्हें औरों से सहायता लेनी ही होगी ।

इस अभियान के लिए उन्होंने अपने मित्रों से पैसा इकट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन लोगों को इस काम में कोई दिलचस्पी नहीं थी । कुछ बूढ़ों ने कहा कि उस द्वीप पर प्रेतों का निवास है । काफी समय पहले अकसर रात को वहां जगह-जगह आग जलती दिखाई देती थी । उस द्वीप के बारे में तरह-तरह की कहानियां प्रचलित थीं । तीनों ने खजाने की खोज का काम असंभव समझकर छोड़ दिया ।

विवाह करने के बाद स्मिथ और मैकगिनिस बलूत द्वीप पर ही रहने लगे । एक बार स्मिथ की पत्नी प्रसव के लिए नगर में गई । वहां डाक्टर बार्नेस लिंडे को उसने द्वीप के बारे में बताया । यह भी कहा कि वहां एक विचित्र गढ़ा है, जिसमें १०-१० फुट के अंतर पर बलूत की लकड़ियां लगी हुई हैं । जान लिंडे सुनते ही चमत्कृत हो उठा । उसे लगा कि इस रहस्य की खोज जरूर करनी चाहिए । उसने मित्रों के साथ मिलकर खुदाई का सामान जुटाने के लिए धन इकट्ठा किया । १८०३ में वह सामान ले कर द्वीप पर जा पहुंचा और खुदाई का काम शुरू कर दिया गया । खोदी हुई मिट्टी निकालने के लिए कुली और बाल्टियों से काम लिया । इस तरह खुदाई करते वे लोग ८० फुट की गहराई तक पहुंच गए । हर दस फुट के बाद की लकड़ी के मोटे फट्टे बिछे हुए मिले ।

८० फुट की गहराई पर एक नयी चीज सामने आई । नारियल के रेशों पर लकड़ी के कोयलों की मोटी परत बिछी हुई थी ।उस क्षेत्र में न कोयला होता था और न नारियल । उस निर्जन क्षेत्र में इन चीजों का पाया जाना अजीब था । नारियल गर्म जलवायु में पैदा होता है, और नोव स्कोशिया की बर्फीले जलवायु में उसका मिलना अजीब था । ९० फुट की गहराई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर एक तरह के मसाले की कड़ी परत बिछी हुई मिली। मसाले की इस परत के नीचे एक सपाट पत्थर लगा हुआ था, जिस पर अजीब तरह के निशान बने हुए थे और कई आकृतियां बनी थीं। काफी कोशिश करने पर भी पत्थर पर खुदी आकृतियों और निशानों का कोई अर्थ नहीं निकाला जा सका। पत्थर निकालने में काफी मेहनत करनी पड़ी। वह पत्थर कोई तीन फुट लंबा और १६ इंच चौड़ा था।

स्मिथ ने वह पत्थर अपने घर की दीवार में चिनवा दिया। काफी समय तक वह वहीं लगा रहा। इसके बाद उसे भषा विशेषज्ञों की राय जानने के लिए वहां से मुख्य भूमि पर ले जाया गया। कई व्यक्तियों के पास लाने ले जाने में वह पता नहीं कहां गुम हो गया। आज यह कहना मुश्किल है कि उस पत्थर पर क्या लिखा रहा होगा। इतनी गहराई पर इस पत्थर के मिलने से डा. लिंडे के दल को खजाना मिलने की आशा हो गई। खुदाई का काम और भी तेज कर दिया गया। उस पत्थर के नीचे ८ फुट की गहराई तक यानी ९८ फुट तक खुदाई करने के बाद जब खोदने वालों की कुदालें किसी कड़ी चीज से टकराई तो वे सब अनजानी आशा से उत्तेजित हो उठे। उन्हें लगा जैसे अब खजाना मिलने ही वाला है। उस दिन शनिवार था। अंधेरा घिर चला था। काम बंद कर दिया गया। सब लोग इतवार की छुट्टी मनाने के लिए मुख्य भूमि की ओर चल दिए।

जब सोमवार को वे लोग लौटे, तब उस गढ़े में ६५ फुट की ऊंचाई तक पानी भरा हुआ था।

डा. लिंडे निराश हो उठे। खजाना मिलने की आशा अब मिट रही थी। गढ़े से पानी निकालना आसान काम नहीं था। बाल्टियों के जरिए गढ़े का पानी उलीचा जाने लगा लेकिन कोई विशेष सफलता नहीं मिली। कई सप्ताह की कड़ी मेहनत के बाद भी पानी के स्तर में केवल दो-तीन फुट की गिरावट आई।

इसके बाद पानी की निकासी के लिए उस कुएं के बगल में दूसरा कुआं खोदना शुरू किया गया। पहला कुआं ९८ फुट गहरा था, इसलिए दूसरे को ११० फुट की गहराई तक खोदा गया। इसके बाद पहले कुएं से इस नए कुएं तक एक ढाल या सुरंग खोदी गई लक्ष्य था कि ढालू सुरंग के जरिए ९८ फुट गहरे कुएं में भरा पानी ११० फुट गहरे कुएं में भर जाएगा और इस तरह पहला कुआं पानी से खाली हो जाएगा। लेकिन जब पुराने कुएं की तली के नीचे सुरंग का मुंह खोदा जा रहा था, तब पानी के दबाव से उसका तल एकदम नीचे बैठ गया। उसका पानी नए कुएं में भी ६५ फुट की ऊंचाई तक भर गया। जबकि पहले कुएं में भी पानी का स्तर ६५ फुट पर कायम रहा। अब दोनों कुएं पानी से भरे हुए थे और पानी उलीचने का कोई साधन नहीं था।

१८०३ में स्थापित डा. लिंडे ट्रजर रिकवरी सिंडीकेट इस धक्के को बरदाश्त न कर सका और दीवालिया हो गया। धन के अभाव में खजाने की खोज का काम स्थगित कर देना पड़ा। स्मिथ और मैकगिनिस उसी द्वीप पर रहते रहे। उसके एक हिस्से पर खेती करके वे जीवन निर्वाह करते थे।

१८४९ में द्वीप के खजाने की खोज के लिए एक नया सिंडीकेट स्थापित किया गया। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

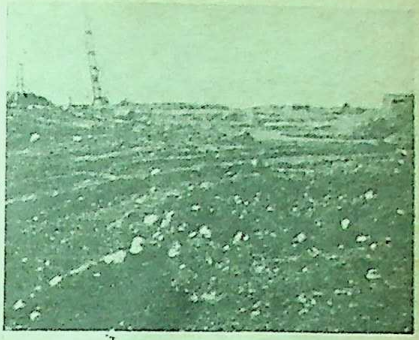

समय केवल वैंघन ही जीवित बचा था, स्मिथ और मैकगिनिस की मृत्यु हो चुकी थी। इस सिंडीकेट ने वैघन की मदद से उस जगह का निश्चित पता लगाया जहां डा. लिंडे के अभियान दल ने पहला कुआं खोदा था। अब वह कुआं करीब-करीब पट चुका था। उसकी बगल में खोदे गए दूसरे कुएं की स्थिति भी ऐसी ही थी।

१८४९ में स्थापित सिंडिकेट में स्थानीय व्यापारी और पेशेवर इंजीनियर सम्मिलित थे। उन्हें डा. लिंडे के असफल प्रयत्नों की कहानी मालूम थी इसलिए उन्होंने फैसला किया कि दोबारा उसी तरह की खुदाई करने का अर्थ नहीं होगा और फिर यही कौन कह सकता था कि उस जगह खजाना निश्चित रूप से मौजूद था ही ? नई योजना बनी कि पूरा कुआं खोदने से पहले ड्रिलिंग मशीन की सहायता से यह पता लगाने की कोशिश की जाए कि आखिर उस कुएं में है क्या ?

कुएं में भरी ऊपरी मिट्टी हटा दी गई। ३३ फुट के बाद गढ़े में पानी भरा हुआ था — यानी उसमें ६५ फुट तक अब भी पानी भरा था। उन्हें यहीं बताया भी गया था। इसके बाद कोयला खानों में इस्तेमाल होने वाली ड्रिलिंग मशीन पानी में नीचे चलाई गई थी। ९८ फुट की गहराई तक पानी में जाने के बाद वहां ड्रिल किसी सख्त चीज से टकराई और उसे पार कर गई। इससे अनुमान लगा कि सम्भवतः वे लकड़ी के लट्ठे होंगे। इसके बाद १०८ फुट की गहराई पर ड्रिल का फिर किसी कड़ी चीज से सामना हुआ। ड्रिल को ऊपर खींचने पर पता चला कि १०८ झुट की गहराई पर बलूत की लकड़ी लगी हुई थी। ड्रिल उसी में से गुजरी थी। उसके बाद बरमा दोबारा नीचे उतारा गया। १०८ फुट की गहराई पर वह १२ इंच तक लकड़ी में गुजरा। उसके बाद यूं घूमने लगा, जैसे इधर-उधर बिखरी धातु के बीच से गुजर रहा हो। यह क्रम कोई २२ इंच की गहराई तक चला।

बरमा फिर ऊपर खींचा गया तो उसमें सोने की जंजीरों के दो छोटे टुकड़े अटके हुए मिले। अब सिंटीकेट को उस कुंए की तली में खजाना छिपा होने का प्रमाण मिल गया था। सब लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई आशा से उत्तेजित हो उठे। पहली जगह से जरा हट कर बरमा फिर नीचे धंसाया गया तो १०८ फुट की गहराई पर पहले की तरह लकड़ी में से गुजरा और उसके बाद २२ इंच की गहराई तक इस तरह घूमा जैसे धातु केछोटे-छोटे टुकड़ों के बीच में से गुजर रहा हो। २२ इंच के बाद फिर चार इंच मोटी लकड़ी की सतह थी और उसके नीचे मिट्टी की परत। बरमे को कई बार निकाला गया और हर बर कोण बदल कर जमीन में डाला गया। १०८ फुट की गहराई पर उसी तरह की स्थिति थी इंजीनियरों ने अनुमान लगाया कि उस गहराई पर बरमा लकड़ी के संदूकों में से गुजरा था जो एक दूसरे पर रखे हुए थे और जिनमें धातु के छोटे-छोटे टुकड़े, भरे हुए थे।

सिंडिकेट के डायरेक्टर कुएं की तली में से निकले सोने के टुकड़ों की जांच करने में व्यस्त थे। बरमा चलाने वाले फोरमैन जेम्सपिट बाल्डो ने फिर बरमा धंसाया और जब उसे ऊपर निकाला, तब उसमें से अटकी कोई चीज निकालकर अपनी जेब में रख ली। बहुत पूछने पर भी उसने यह नहीं बताया कि उसने क्या चीज अपनी जेब में रखी है। इस घटना के अगले दिन वह गायब हो गया। बाद में पता चला कि उसने एक कोयला खान मालिक के साथ मिल कर उस द्वीप का पट्टा अपने नाम लेने की कोशिश की, लेकिन उसमें सफल नहीं हो सका। इसके बाद एक दुर्घटना में पिटबाल्डो की मृत्यु हो गई। यह नहीं जाना जा सका कि उसने बरमें से निकालकर क्या चीज जेब में छिपाई थी। वहां से क्यों चला गया था और फिर द्वीप का पट्टा अपने नाम क्यों कराना चाहा था। वैसे कई लोगों ने कहा कि बरमे में अटककर कोई हीरा ऊपर आ गया था और पिटबाल्डो की अजीबोगरीब हरकतों का यही एकमात्र कारण था। लेकिन सच्ची बात तो पिटबाल्डो ही बता सकता था और वह अब मर चुका था।

डाक्टर लिंडे का अनुमान था कि कुएं में खजाना है, लेकिन नए सिंडीकेट की खोजों से उनका अनुमान सत्य प्रमाणित हो गया। उस कुएं की तली में कोई खजाना निश्चित रूप से छिपा हुआ था, लेकिन उसे निकालने की कोई तरकीब नहीं सूझ रही थी। कुएं में ३३ फुट बाद पानी भरा हुआ था। बाल्टियों से पानी उलीचने की पुरानी कोशिश की गई, लेकिन पानी के स्तर में जरा भी गिरावट नहीं आई। उसके बाद कुएं के बगल में दूसरा कुआं खोदनेकी डा. लिंडे की गलती भी दोहराई गई। ११८ फुट गहरा नया कुआं खोदने के बाद नए कुएं और खजाने के कुएं के बीच एक सुरंग इस इरादे से खोदी गई कि उसमें भरा पानी इसमें आ जाएगा। लेकिन परिणाम वही हुआ — जब खजानेवाले कुएं के नीचे सुरंग खोदी जा रही थी, तब उसकी तली बैठ गई और नए कुएं में भी ६५ फुट की ऊंचाई तक पानी भर गया। अब दोनों कुएं पानी से भरे थे।

खुदाई और पानी निकलने के दौरान इंजीनियरों ने एक महत्वपूर्ण बात पता लगाई कि कुओं में भरा पानी समुद्र का है और ज्वार भाटेके साथ पानी का स्तर उठता गिरता है। ध्यान से निरीक्षण करने पर पता चला कि समुद्र के पानी में एक फुट ज्वार भाटे के साथ कुओं के पानी के स्तर में भी एक इंच का अंतर पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

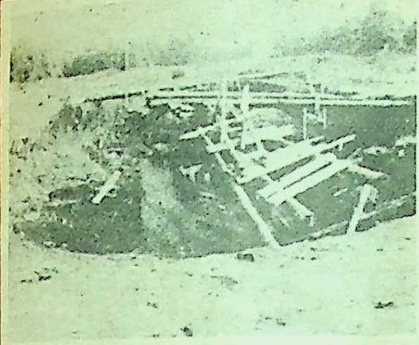

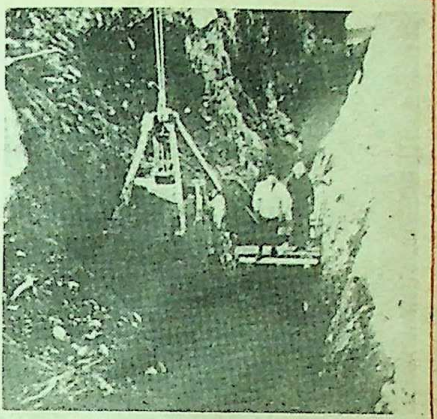

खुदाई कार्य

जाता है। द्वीप की भूमि पथरली थी इसलिए यह संभव नहीं था कि समुद्री पानी रिसकर कुओं में भर जाता। संभावना यही थी कि वह किसी नाले के जरिए कुओं में आता था।

खोज के बाद यह भी पता लगा लिया गया कि पानी किस रास्ते से कुओं में आया था। कुएं से ५०० फुट की दूरी पर समुद्री किनारा था। भाटे के समय पानी वहां से काफी दूर उतर जाता था। किनारे का निरीक्षण करने पर पता चला कि ज्वार के समय पानी किनारे पर १४५ फुट अंदर घुस आता था और भाटे के समय १४५ का उतराव आ जाता था। देखा गया कि उस १४५ फुट चौड़ी जमीन में पत्थर ही पत्थर है, जबकि बाकी जमीन रेतीली है। उस जगह की खुदाई की गई तो पता चला कि जमीन पर पत्थरों की दो परतें बिछी हुई हैं। ऊपर की परत के नीचे सारी जमीन पर ईल घास बिछी हुई है। घास के नीचे फिर पत्थरों की परत थी। और उसके नीचे पांच नाले बने हुए थे जो किनारे से शुरू होकर, आगे हाथ की उंगलियों की तरह सब दिशाओं में फैलकर फिर एक बड़े नाले में गिरते थे। वह नाला द्वीप में अंदर जाकर एक कुएं में गिरता था और वहां वह १४५ फुट लंबी जगह पानी से भर जाती थी। जब भाटे के समय पानी उतरता था तो पत्थरों पर बिछी ईल घास पानी को बह निकलने से रोकती थी। उसकी वजह से वह जगह हमेशा पानी से भरी रहती थी। नालों और कुओं में भी हरदम पानी मौजूद रहता था।

इस नई खोज से अब एक बात निश्चित हो गई थी खजाने के कुएं से पानी उलीचना लगभग असंभव था। भला कुओं से पानी निकालनेवालों को क्या पता था कि वे बाल्टियों से समुद्र को उलीचने की बचकाना कोशिश कर रहे हैं। एक बात सब लोगों के दिमाग में थी कि अगर खजाना दबाने वाले उसे निकालने आते तो फिर पानी को रोकने का और कुएं में भरे पानी को निकालने का क्या इंतजाम करते ? उन्होंने जरुर कोई न कोई तरीका सोच रखा होगा। इंजीनियरों का अनुमान था कि इन नालों में अंदर ऐसे गुप्त दरवाजे जरूर होने चाहिए थे जो बंद होकर पानी को रोक सकें। उन दरवाजों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खोज में काफी समय लगाया गया, लेकिन उन्हें कभी नहीं खोजा जा सका। समुद्र का पानी रोकने का कोई आसान तरीका नहीं था।

अगर सिंडीकेट खजाना निकालना चाहता था तो उसे सबसे पहले नालों के रास्ते अंदर भरने वाले पानी की समस्या हल करनी थी। इसके लिए किनारे पर एक बांध बनाने की योजना तैयार हुई। बांध बन जाने के बाद ज्वार का पानी उस १४५ फुट चौड़ी भूमि में न घुसता और तब नाले पाटकर खजाने के कुएं में भरा पानी उलीचा जा सकता था। किनारे पर बांध बनाने में काफी समय लगा और बहुत अधिक धन भी खर्च हुआ। उसके बाद नाले पाटने का काम शुरू हुआ लेकिन एक बार समुद्र में तूफान आ गया और उस समय उठने वाले ज्वार ने किनारे पर बने बांध को तहस-नहस कर डाला। नालों में फिर से पानी भर गया। इस काम में पहले ही इतना धन व्यय हो चुका था कि सिंडीकेट को इसे दोबारा शुरू करने की हिम्मत नहीं थी। सिंडीकेट दिवालिया हो गया। खजाना निकालने का काम बंद हो गया था।

इसके बाद काफी समय तक इस दिशा में कोई काम नहीं हुआ। यह काम इतना व्ययसाध्य था कि कोई इसमें पैसा लगाने की हिम्मत नहीं करता था। १८९३ में एक व्यापारी ने खजाना निकालने के लिए एक कंपनी बनायी। जब नयी कंपनी के कर्मचारी द्वीप पर आए तब वहां का नक्शा काफी बदल चुका था। उनसे पहले खोदे गए तीनों कुएं टूट गए थे। उनमें मिट्टी भर गयी थी। अब हर काम नये सिरे से करना जरुरी था। कुआं खोदने से पहले बरमे की सहायता से जमीन के अंदर का हालचाल जानने की बात सोची गयी। कुओं में आने वाला समुद्र का पानी रोकने की योजना भी बनी।

कुओं में पानी लाने वाले नाले में पांच जगह बरमे से सूराख करके उन सुराखों में बारुद भर के उड़ा दिया गया। क्योंकि यह देखा गया कि बारुद से उड़ाने के बाद कुएं के पानी के स्तर में ज्वार-भाटे के साथ पानी उतरना-चढ़ना बंद हो गया। इसके बाद बरमे के लिए तीन इंच मोटा पाइप कुएं में डाला गया। १०८ फुट की गहराई तक जाने के बाद बरमा उसी तरह मोटी लकड़ी में से गुजरा, फिर २२ इंच तक धातु के टुकड़े में उतरता रहा। इसके बाद चार इंच मोटी लकड़ी और फिर कड़ी मिट्टी। सब कुछ उसी तरह था जैसे पहले सिंडीकेट के अनुभवों से पता चला था।

पिछले सिंडीकेट ने इतनी गहराई तक खोदाई की थी। नई कंपनी ने उससे आगे भी बरमा धंसाया। ११२ और १२६ फुट की गहराई पर बरमा लकड़ी और धातु से टकराया। इसके बाद वह १५१ फुट की गहराई तक पहुंच गया। १५१ फुट की गहराई पर ऐसा लगा जैसे बरमा भुरभुरे पत्थरों में से गुजर रहा हो। जब बरमा ऊपर खींचा गया तो उसके साथ पत्थर के कुछ टुकड़े भी आए। उन्हें तुरंत रासायनिक परीक्षण के लिए लंदन भेज दिया गया। परीक्षण की रिपोर्ट आई। यह पत्थर नहीं, सीमेंट था। सीमेंट की परत २ इंच मोटी थी। उसके नीचे बरमा फिर डेढ़ इंच मोटी लकड़ी में से गुजरा।

बाद में सिंडीकेट के डायरेक्टर ब्लेयर ने बताया कि हमें लगता है, लकड़ी के नीचे ५० इंच की गहराई तक धातु की छड़ें हैं और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद २४ इंच की गहराई तक बरमा धातु के छोटे-छोटे टुकड़ों के बीच में से गुजरता है। हो सकता है, वे सिक्के हों और सोने के हों। इसके नीची फिर सोने की छड़ें हैं।

इस खोज से पता चला कि १५३ से १६० फुट की गहराई तक सीमेंट का पक्का तहखाना है जिसमें धातु यानी सोना भरा हुआ था। शायद उस तहखाने में खजाने का अधिकांश भाग छिपा है। ९८ से १०४ फुट की गहराई के बीच सोने के सिक्कों के जो दो संदूक रखे थे, वे संभवतः खोजियों को धोखा देने के लिए थे, जिससे वे उसके नीचे खोज न करें, वही लेकर संतुष्ट हो जाएं।

इंजीनियर इसके बाद भी बरमा जमीन में धंसाते रहे। इससे एक नया रहस्य खुला। अचानक ४०० गैलन प्रति मिनट की रफ़्तार से बरमे के पाइप से पानी निकलने लगा। इससे पता चला कि सीमेंट के तहखाने के नीचे भी एक गुप्त सुरंग है, जिसकी राह पानी उस तहखाने में आता है।

१० फुट की गहराई पर पानी लाने वाली सुरंग तोड़ दी गयी थी और वहां से पानी आना बंद हो गया था। लेकिन अब भी अगर कुएं में पानी आ रहा था तो उसे किसी दूसरी दिशा से आना चाहिए था। इसका पता लगाने के लिए पाइप में काफी मात्रा में लाल रंग डाला गया तो द्वीप के दक्षिणी किनारे पर पानी का रंग लाल दिखाई दिया। इसका मतलब यह था कि नीचे वाली सुरंग से पानी दक्षिण की ओर से आता था। जबकि ऊपर वाली सुर'ग में पानी उत्तर की ओर से आता था। १६० फुट के बाद भी बरमें से खुदाई जारी रही। अब बरमा सख्त मिट्टी में से गुजर रहा था। १७१ फुट की गहराई पर बरमा एक लोहे की परत से टकराया और उसके बाद आगे न जा सका। इसका मतलब यह था कि १७१ फुट की गहराई पर लोहे की चादर लगी हुई थी।

१८९७ तक ये सब बातें प्रकाश में आ चुकी थीं लेकिन व्लेयर सिंडीकेट खजाना निकालने की दिशा में कोई विशेष प्रगति नहीं कर पाया। जब खुदाई शुरू की गई, तब देखा गया कि वहां की जमीन का भीतरी भाग, कई कुओं और नालों से भरा हुआ है। पानी भरने की वजह से नीचे काफी कीचड़ इकट्ठी हो गई थी। उसमें गुप्त तहखाने का ठीक-ठीक पता नहीं लग पाया। धीरे-धीरे व्लेयर सिंडीकेट का पैसा खत्म हो गया और खजाना तो दूर, सोने का एक सिक्का तक नहीं मिला था।

१९३५ तक फिर इस ओर प्रयत्न नहीं किए गए। १९३५ में गिल्बर्ट हेडन नामक अमरीकी ने "सोने के कुएं" की खोज का निश्चय किया। उसने द्वीप का पट्टा अपने नाम लिखा लिया। हैडन काफी धनवान था और साथ ही एक कुशल खान इंजीनियर भी। उसने खुदाई के लिए आवश्यक अत्यंत आधुनिक उपकरण इकट्ठे किए। उसने मुख्य भूमि से द्वीप तक बिजली की लाइन खिचवाई और इस प्रकार बिजली से चलने वाली मशीनों के चालू रखने का इंतजाम कर लिया।

न जाने कैसे कुएं में फिर पानी भर गया था। उसका पानी उलीचने के लिए बिजली से चलने वाले पंपों का प्रबंध किया गया, लेकिन जितना पानी उलीचा जाता था, उतना ही फिर भर जाता था। अंततः हैंडन ने निराश होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदाई के प्रयत्न छोड़ दिए। लेकिन वहां से चलने से पहले हैडन ने द्वीप के विस्तृत नक्शे तैयार किए, उनका ख्याल था कि शायद भविष्य में फिर कभी आने का मौका मिला तो ये नक्शे काम आएंगे। खोज करने पर उसे कुछ और बातें भी पता चलीं।

१७९५ में जब स्मिथ, वैघन और मैकगिनिस ने खुदाई के लिए धन इकट्ठा करने की कोशिश की थी तो लोगों ने उन्हें बताया था कि वह द्वीप भुतहा है, वहां कोई नहीं जाता। एक औरत से उन्हें पता चला था कि उसकी दादी द्वीप से चार मील दूर चेस्टर नगर में रहती थी। उसकी दादी बताया करती थी कि जब वह बच्ची थी, तब उसने निर्जन द्वीप पर अजीब लोगों को आते-जाते देखा था। उन दिनों द्वीप पर रात को कई जगह आग जलती हुई दिखाई देती थी। कुछ स्थानीय लोग नौकाओं में बैठकर उस रहस्य की खोज में गये तो कभी नहीं लौटे।

हैडन ने अनुमान लगाया कि यह घटना करीब १७२० के आसपास की होनी चाहिए यानी कुएं का पता चलने के कोई ७५ वर्ष पहले।

सन् १८७० में एक संपन्न व्यक्ति चेस्टर में आकर बसा। उसका चेहरा किसी द. अमरीकी का-सा था। उसने एक नाव खरीदी। जब तक वह वहां रहा, रोज नौका में सवार होकर कहीं चला जाता था। उसकी नौकर हर रोज एक ही दिशा यानी उत्तर-पश्चिम की ओर जाती हुई दिखाई देती थी। खजाने का द्वीप उसी दिशा में है। लोगों का अनुमान है कि वह वहीं जाया करता था। उसकी नाव पर जाने वाला एक मल्लाह बताया करता था कि वह व्यक्ति अकसर बड़े ध्यान से एक पुराना नक्शा देखा करता था। वह व्यक्ति द्वीप पर कभी नहीं गया। कुछ सप्ताह बाद वह बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गया और फिर कभी देखने में नहीं आया।

हैडन ने काफी सोचा कि आखिर वे कौन लोग थे जिन्होंने २०० वर्ष पूर्व द्वीप पर इस तरह अपूर्व इंजीनियरी के साथ खजाना गाड़ दिया था। उसने प्रसिद्ध डकैतों के बारे में प्रकाशित कई पुस्तकों का अध्ययन किया। प्रसिद्ध डकैत कैप्टन किड के जीवन पर प्रकाशित पुस्तक में उसे एक द्वीप का एक नक्शा छपा हुआ मिला। लोगों का अनुमान था कि कप्तान किड ने अपना खजाना इसी द्वीप पर गाड़ा था।

हैडन को लगा कि यह द्वीप ओक द्वीप से मिलता जुलता है। हालांकि दोनों बिलकुल एक से नहीं थे लेकिन फिर भी दोनों द्वीपों की बहुत-सी विशेषताएं एक-सी थीं। हैडन ने दोनों द्वीपों के नक्शे पास-पास रखकर उनका अध्ययन किया। दोनों द्वीपों की ऊंचाइयां एक-सी थीं। कैप्टन किड के द्वीप के चारों ओर समुद्र जितना गहरा था, इस द्वीप के चारों ओर भी उसकी गहराई भी वही थी। उस नक्शे में एक संकेत लिखा हुआ था जो हैडन को काफी विचित्र लगा। सूत्र इस प्रकार था :

"१८ पश्चिम और ७ पूर्वी चट्टान, ९ दक्षिण पश्चिम, १४ उत्तरी वृक्ष और ७, ४।"

शायद इन अंकों में कैप्टन किड के खजाने का पता छिपा हुआ था। हैडन ने इस सूत्र की जांच करने का निश्चय किया। वे लोग द्वीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पश्चिम की ओर चले तो खाड़ी के पास रेत में गहरा धसा हुआ एक बड़ा सफेद पत्थर दिखाई दिया। उस पत्थर के बीचोंबीच पौने दो इंच व्यास का दो इंच गहरा छेद था। जब व्लेयर को उनकी इस खोज का पता चला तो वह भी द्वीप पहुंचा। उसने हैडन से कहा कि द्वीप के दक्षिणी किनारे पर भी एक ऐसा ही पत्थर गड़ा हुआ है। उसमें इसी तरह का छेद है। वह उन्हें द्वीप के दक्षिणी किनारे पर ले गया। वहां ठीक पहले जैसा पत्थर जमीन में धंसा हुआ मिला।

एक रस्सी दोनों पत्थरों के बीच बांध दी गई। हैडन ने अंदाजा लगाया कि नक्शे में दिए गए अंक नाप के लिए हो सकते हैं और यह नाप शायद कदमों की दूरी की होगी। नक्शे के बीच बताई गई दूरी पर दोनों पत्थरों के बीच रस्सी बांध दी गई। और उसे दक्षिण-पश्चिम की ओर फैला दिया गया। फिर उस तरफ ३० कदमों की दूरी मापी गई। उस स्थान पर काफी घनी झाड़ियां उगी हुई थीं। हैडन और उनके साथी किसी नयी खोज की आशा में रोमांचित हो उठे। वे झाड़ियों की कटाई में जुट गए। झाड़ियों का कूड़ा हटाने के बाद एक विचित्र बात दिखाई दी— धरती पर एक लोहे का त्रिकोण गड़ा हुआ था। शायद वह वहां बहुत समय से था क्योंकि उस पर जंग लगा हुआ था। नापने पर उसकी लंबाई १४ फुट निकली।

त्रिकोण ठीक उसी दिशा में संकेत करता था जहां बलूत वृक्ष के नीचे खजाने की खोज में कुंआ खोदा गया था। इससे तो यही ध्वनित होता था कि कुख्यात कप्तान किड ने ही शायद उस द्वीप पर इस रहस्यपूर्ण ढंग से कोई विशाल खजाना छिपाया था। नक्शे में वर्णित हर कूट संकेत का सूत्र द्वीप पर बिलकुल उसी तरह मिल रहा था।

हालांकि आज यह प्रमाणित हो चुका है कि कप्तान किड जल दस्यु नहीं था। उसे तो अपने कुछ राजनीतिक रूप से शक्तिशाली विरोधियों के हथकंडों के कारण १७०१ में फांसी का फंदा अपनी गरदन में पहनकर प्राण देने पड़े थे। लेकिन फिर भी यह मानने वाले लोग काफी हैं कि कप्तान किड का कुछ न कुछ संबंध माहोन खाड़ी के उस द्वीप से अवश्य था और उसने वहां कुछ न कुछ खजाना जरूर छिपाया था।

इस संबंध में अधिक तथ्य व प्रमाण जुटाने की दृष्टि से हैडन इंग्लैंड गया। कप्तान किड पर लिखी गई पुस्तक के लेखक से भेंट की। लेखक हैडन को कुछ अधिक जानकारी न दे सका। पर उसने इतना जरूर कहा कि पुस्तक में बताए गए कल्पित द्वीप और महोन खाड़ी के द्वीप में कोई साम्यता नहीं हो सकती थी। उसकी राय में कप्तान किड ने अपने नक्शे में जिस द्वीप का जिक्र किया था, वह नोवा स्कोशिया में नहीं, चीन समुद्र में कहीं स्थित था।

हैडन ने जानना चाहा कि फिर किड के नक्शे में वर्णित संकेतों और संख्याओं के प्रमाण महोन खाड़ी के द्वीप पर क्यों मिलते थे ? इसका क्या रहस्य था ? इस बात से पता चलता था कि कप्तान किड के नक्शे में वर्णित द्वीप महोन खाड़ी में ही था।

इस पर पुस्तक लेखक ने हिचकिचाते हुए कहा, "क्षमा कीजिएगा, मैंने मूल नक्शा अपनी आंखों से देखा था। वह नक्शा कप्तान किड के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदूक में मिला था। उसमें किड की अन्य व्यक्तिगत सामग्री भी थी। इसलिए यह समझना ही चाहिए कि कप्तान किड ने ही उस नक्शे को अपने हाथों से बनाया था।''

इस पर हैडन ने कहा, ''और नक्शे पर लिखी कूट संख्याएं ! उनके बारे में क्या कहना है आपको ? नक्शा गलत और कूट संख्याएं सही— यह विरोधाभास कैसे हो सकता है ?''

जब हैडन ने यह बात बार-बार दोहराई तो लेखक ने बताया कि कप्तान किड पर पुस्तक लिखने के दौरान वह यूरोप के कई नगरों के संग्रहालयों में गया था। वहां उसने सैकड़ों नक्शे देखे थे। उसे लगता है कि पुस्तक में प्रकाशित नक्शे में उसने जो कूट संकेत दिए हैं वे शायद किसी और नक्शे में देखे थे उसने। और अब उसके बारे में कुछ कहना मुश्किल था कि वह नक्शा कौन सा था। वह यूरोप में कहीं भी हो सकता था। निश्चित जगह बताना उसके लिए असंभव है। पता नहीं किस जगह देखा था उसने निराश हैडन नोव स्कोशिया लौट आया। उसे एक बात बार-बार मथे डाल रही थी कि जिन लोगों ने द्वीप पर खजाना दबाया था, उन्होंने उसका नक्शा जरूर बनाया था। अगर वह नक्शा मिल जाए तो खजाना ऊपर निकाला जा सकता है लेकिन किस तरह ? कहां मिलेगा वह मूल नक्शा ! अगर वह नक्शा मिल जाए तो शायद उससे जाना जा सके कि सोने के कुंए में उत्तर और दक्षिण की ओर से आने वाले समुद्री नालों का पानी किस तरह रोका जा सकता है। शायद उसमें खजाना ऊपर निकालने की कोई आसान तरकीब छिपी हो। और उसमें किसी गुहा मार्ग का भी संकेत हो, जिससे जाकर खजाने के तहखाने तक पहुंच सकता हो।

कनाडा सरकार ने द्वीप पर खजाने [illegible] जमीन के पट्टे व्लेयर और हैडन को दिए [illegible] बाद में उन्हें कई और लोगों को दिया [illegible] लेकिन खजाना निकालने की दिशा में [illegible] प्रगति नहीं हुई। हर वर्ष गर्मी के मौसम [illegible] खजाना निकालने वाले दल आते और [illegible] शुरू होते-होते निराश, उदास चेहरे लिए [illegible] हो जाते।

१७९५ में जब वैघन, मैकगिनिस [illegible] स्मिथ ने पहली बार खजाने की खोज में [illegible] खोदना शुरू किया था, तब से लेकर आज [illegible] उसके चारों ओर की धरती में बहुत से कुएं [illegible] डाले गए हैं। आज यह पता लगाना भी [illegible] है कि असली खजाने वाला कुंआ कौन-सा [illegible] क्योंकि सभी में समुद्री पानी भरा हुआ [illegible]

यह खजाना वहां दबाने वाले कौन हो [illegible] हैं, इस बारे में कई बातें कही जाती हैं। [illegible] पहला मत समुद्री डाकुओं के बारे में है [illegible] ऐसा लगता नहीं कि डाकू लोग अपना [illegible] इस तरह छिपाते वहां ?

खजाना दबाने के लिए १७० फुट [illegible] कुंआ और १०४ तथा १७० फुट की गहराई [illegible] उत्तर और दक्षिण तटों से दो गहरे नाले [illegible] में निश्चित रूप से महीनों का श्रम लगा [illegible] इसे थोड़े से आदमी कभी न कर पाते। [illegible] काम में अनुशासित मजदूरों की काफी [illegible] संख्या लगी होगी। और फिर खजाने को [illegible] तरह छिपाया गया था, वह इस बात का [illegible] था कि खजाना छिपाने वाले दल का [illegible] निश्चित रूप से असाधारण प्रतिभा [illegible]

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंजीनियर रहा होगा। इन तथ्यों से लगता है कि खजाना छिपाने वाले डाकू नहीं थे।

कई लोग अनुमान लगाते हैं कि इस जगह खजाना १६९५ व १७४० के दौरान छिपाया गया था, क्योंकि इससे पहले बलूत वृक्ष की डालियां इतनी मजबूत नहीं रही होंगी कि उससे रस्सियां लटकाकर आदमी और खुदाई के उपकरण कुएं में उतारे जा सके हों। फिर १७२० के आसपास उस द्वीप पर अजीब-अजीब घटनाएं देखे जाने की कहानियां भी मौजूद हैं। द्वीप पर मिला नारियल का रेशा और ईल घास इस बात की सूचक है कि ये लोग दक्षिण से आए होंगे। वहां पाई गई विशेष घास सुदूर दक्षिण में पाई जाती है। आसपास के किसी भी द्वीप पर ये चीजें नहीं मिलतीं। कैप्टन किड की किताब में छपे नक्शे के विवरण खजाना द्वीप के बारे में करीब-करीब ठीक ही बैठे हैं। अगर उन्हें प्रमाणिक माना जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि द्वीप पर खजाना छिपाने के लिए आने वाले अपरिचित व्यक्ति अंगरेज थे।

अगर डाकुओं वाली बात छोड़ दें, यह देखना पड़ेगा कि १८वीं सदी में वे कौन लोग हो सकते हैं जिन्हें इस तरह अपना खजाना छिपाने की आवश्यकता पड़ी हो। स्पेन द्वारा पीरू और मेक्सिको की विजय से पहले सोने का बहुत कम प्रचलन था। कुछ लोगों का अनुमान है कि द्वीप पर गड़ा खजाना किसी स्पेनी जहाज का होगा जो पीरू या मेक्सिको से लूट का माल लेकर स्पेन जा रहा होगा। हो सकता है कि उस जहाज के कैप्टिन और नाविकों ने मिलकर उस खजाने को हड़पने का विचार किया हो और इसे वहां दबा दिया हो, कि कभी बाद में आकर निकाल लेंगे।

इस खजाने के बारे में एक कहानी और प्रचलित है। द्वीप के दक्षिण में २५० मील की दूरी पर केप द्वीप १८वीं सदी के शुरू में फ्रांस के अधिकार में था। यहां लुई बर्ग किले में फ्रांसीसी सेना की टुकड़ी तैनात थी। १७४५ में ब्रिटिश सेना ने द्वीप पर अधिकार कर लिया। १७५८ में दोनों देशों में संधि हुई तो फ्रांस को केप ब्रेटन फिर मिल गया। तब पता चला कि लुई बर्ग के किले की बिलकुल मरम्मत नहीं की गई थी। यानी फ्रांस से भेजा गया सोना हड़प लिया गया था।

हो सकता है कि फ्रांसीसी टुकड़ी के कमांडर ने वह सारा सोना द्वीप पर छिपा दिया हो क्योंकि वह द्वीप वहां से केवल २५० मील दूर था। फ्रांसीसी सेना में इंजीनियर भी थे। उनके लिए इंजीनियरिंग का ऐसा चमत्कार कर दिखाना पूरी तरह संभव था। द्वीप पर खुदाई का काम काफी श्रमसाध्य था और उसके लिए फ्रांसीसी सैनिक टुकड़ी काफी थी। उसमें अनुशासित सैनिक थे।

यह बात साफ है कि खजाना दबाने वाले यह अच्छी तरह जानते थे कि सोना दबाने में उन्हें जितनी मेहनत पड़ी है, उसे जमीन से निकालने में भी उतनी ही मेहनत और उतने ही व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। यानी उन्होंने खजाना निकालने की कोई आसान तरकीब जरूर सोची होगी जिसके बारे में आज कोई भी कुछ भी नहीं जानता। शायद द्वीप के खजाने के बारे में सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि काफी समय तक किसी ने भी इसके बारे में कभी कुछ नहीं कहा। क्योंकि अगर ऐसा होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कहीं न कहीं यह बात जरूर पहुंचती और लोग जान जाते। यही हो सकता है कि खजाना दबाने वाले लोग उसके तुरंत बाद समाप्त हो गए हों, या समाप्त कर दिए गए हों। जैसा कि खजाने से जुड़े कई मामलों में होता है।

वह खजाना आज भी द्वीप की छाती में दबा हुआ है और उसका सही नक्शा न जाने कहां छिपा पड़ा है। अब तक खजाना निकालने का हर प्रयत्न बेकार गया है।

खजाना न मिलने का सबसे बड़ा कारण यह है कि इस खजाने की खोज का काम उल्टे ढंग से शुरू किया गया था। अकसर ही खज़ा की खोज का काम किसी नक्शे के आधार होता है और फिर अंततः खजाना मिल ही जा है— लेकिन माहोन खाड़ी के इस द्वीप का आकस्मिक रूप से लगा और खुदाई के दौ वहां खजाना होने की पुष्टि हुई। पर नक्शे अभाव में खजाने को ढूंढ निकालना उल्टा है। जब तक समुद्र को खजाने वाली ज आने से नहीं रोका जाएगा, खजाना इसी पानी के नीचे दबा पड़ा रहेगा।

देखें भविष्य के गर्त में क्या छिपा है

समस्यापूर्ति—१०५

नहीं अकेले

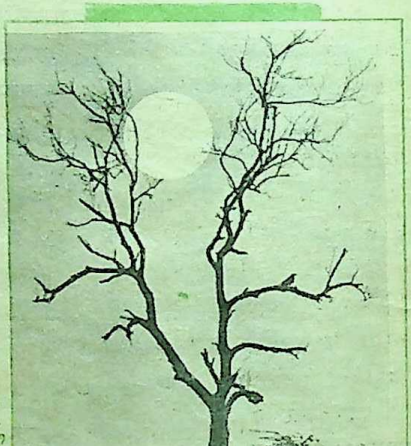

छाया : समुद्र विजय

यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार—'नहीं अकेले' शब्दों को अंत में ही आना चाहिए। इस नियम की पूर्ति न करनेवाली प्रवृष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रवृष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार : ६० रुपये द्वितीय पुरस्कार : ४० रुपये

अंतिम तिथि : २० फरवरी १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मासिक प्रकाशन
क
मार्च '८८
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमोनिया

'न्यू' नाम से जो रोग अधिक प्रसिद्ध है उसको आयुर्वेद में 'कर्कटक सन्निपात' कहते हैं। यह श्वास संस्थान में ज्वरयुक्त विकार है।

कारण इस रोग का मुख्य कारण एक प्रकार के जीवाणु का संक्रमण माना जाता है। इस जीवाणु को 'न्यूमोकोकस' कहते हैं। इसके साथ कई अन्य सहायक कारण भी होते हैं। जिससे यह रोग अपने संपूर्ण लक्षणों से प्रकट होता है। ये कारण निम्नलिखित हैं :

छाती में ठंड लगना, शीतल पदार्थों का अधिकतर और अविधि सेवन करना। इससे यह रोग अपना विकृत रूप धारण करता है।

लक्षण :इस रोग में सहसा ज्वर आता है। ज्वर १०० से १०५ डिग्री फारेनहाइट तक हो जाता है। खांसी निरंतर आती है, कफ निकलता ही नहीं, यदि निकलता भी है तो बहुत आयासपूर्वक थोड़ा-थोड़ा निकलता है। सांस लेने में कष्ट, छाती में पीड़ा, प्यास, मलावरोध, श्वास की गति तथा नाड़ी की गति में असामान्य रूप से अंतर आ जाता है। सामान्य अवस्था में एक मिनट में ७२ बार नाड़ी चलती है और श्वासोच्छास १६ से १८ बार हो जाता है। परंतु इस रोग में यह अनुपात विकृत हो जाता है। अर्थात नाड़ी की गति यदि एक मिनट में ज्वर के बढ़ने से अनुपात से अधिक हो गई है तो श्वास की गति उससे भी अपनी सामान्यावस्था को छोड़कर दुगनी से भी अधिक होने लगती है। नासारंध्रों का विस्तार (फैलाव) हो जाता है। रोगी की दशा अर्धमूर्च्छित सी रहने लगती है। मूत्र की अल्पता रहती है। जीभ काली या स्लेटी रंग की होती है। जब उचित उपचार किया जाता है, तब ही रोगी की दूसरी अवस्था आती है। इसमें फेफड़ों में जमा कफ पतला होकर निकलने लगता है। थूक गाढ़ा एवं स्लेटी रंग का होता है और रोगी को खांसी हो जाती है, किंतु कफ आसानी से निकलता रहता है। पार्श्व शूल अर्थात पसलियों में एक या दोनों तरफ का शूल कम होने लगता है। प्राय: एक फेफड़ा विकृत हो जाता है, परंतु कभी-कभी दोनों फेफड़े रोगग्रस्त हो जाते हैं। इस प्रकार को 'डबल न्यूमोनिया' कहते हैं। कभी-कभी रोगी को छाती और पार्श्व भागों में अधिक तीव्र पीड़ा हो जाती है। यदि तुरंत और उचित चिकित्सा की व्यवस्था न की गई हो तो रोगी के मृत्यु की आशंका बढ़ जाती है।

साधारणतया: निम्न उपचार से प्रारंभिक अवस्था में लाभ मिलता है :

१,तुलसी के पांच पत्ते पानी में पीसकर काली मिर्च डालकर पीयें।

२,शुद्ध हींग पानी में घोलकर दर्द के स्थान पर लेप करें।

३,बारह सींग को घिसकर दर्द के स्थान पर लेप करें।

४,लहसुन का रस निकालकर एक चम्मच आधा प्याला गर्म पानी में डालकर पिलायें।

५,अदरक का रस आधा चम्मच, शहद एक चम्मच मिलाकर सेवन करें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा
बी-५/७, कृष्ण नगर,
दिल्ली-११००५१

प्रकृति से प्राप्त होनेवाला खनिज आइरन डाइ सल्फाइड या आइरन पाइराइट अपने पीले चमकदार रंग के कारण अक्लमंदों में भी 'सोना' होने का भ्रम पैदा कर देता है। यही कारण है कि इसका नाम झूठा सोना पड़ा। पाइराइट सोने से कठोर और भुरभुरा होता है। यही लक्षण इसकी असलियत जाहिर कर देते हैं। शुद्ध आइरन पाइराइट में ४६.६७ प्रतिशत लोहा तथा ५३.३३ प्रतिशत सल्फर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या था। अकसर ही हु
सी नक्शे के आधा
जाना मिल ही
स द्वीप का
र्ग के दो

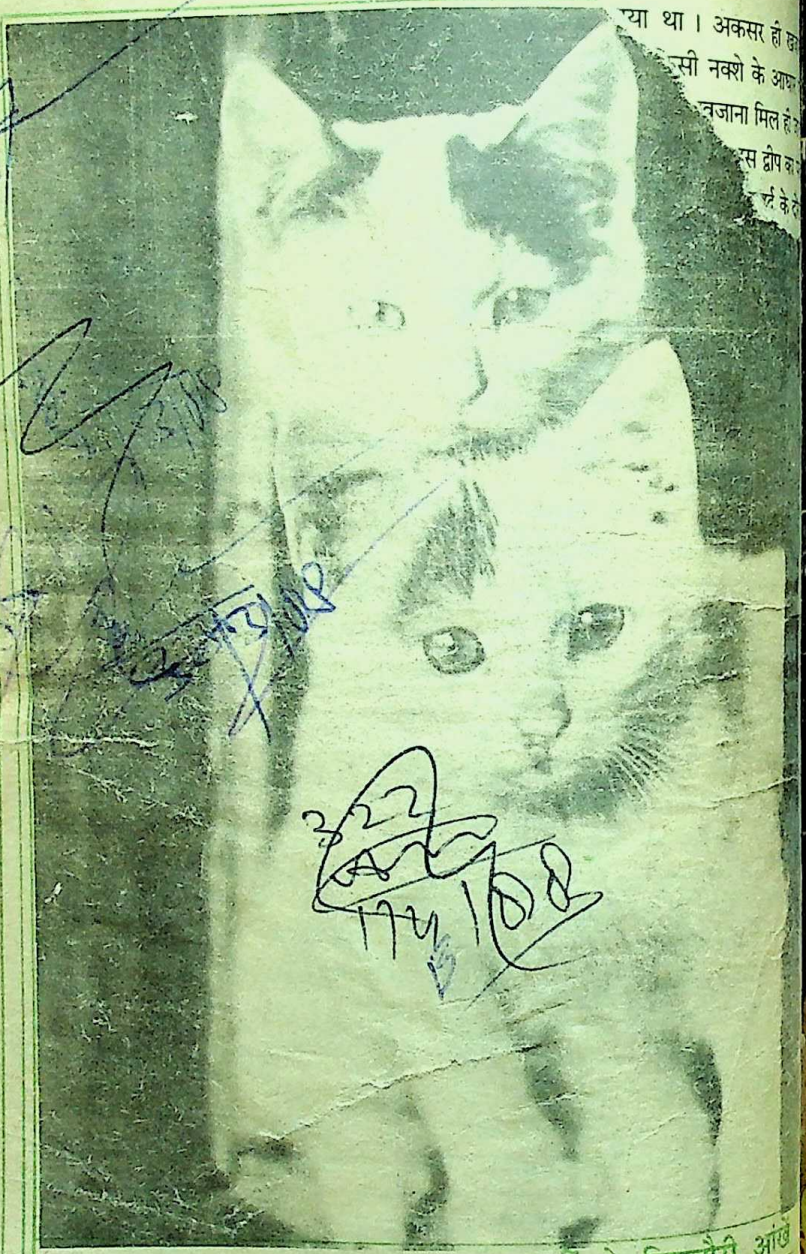

छाया : प्रेम कपूर

नादान नहीं ये बिल्लौरी आंखें

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस
नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

मार्च '८८

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट

होली मनोरंजन विशेषांक

ऐसी रचनाएं जो वर्ष भर हंसाती रहेंगी

टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशनी हो तो ऐसी

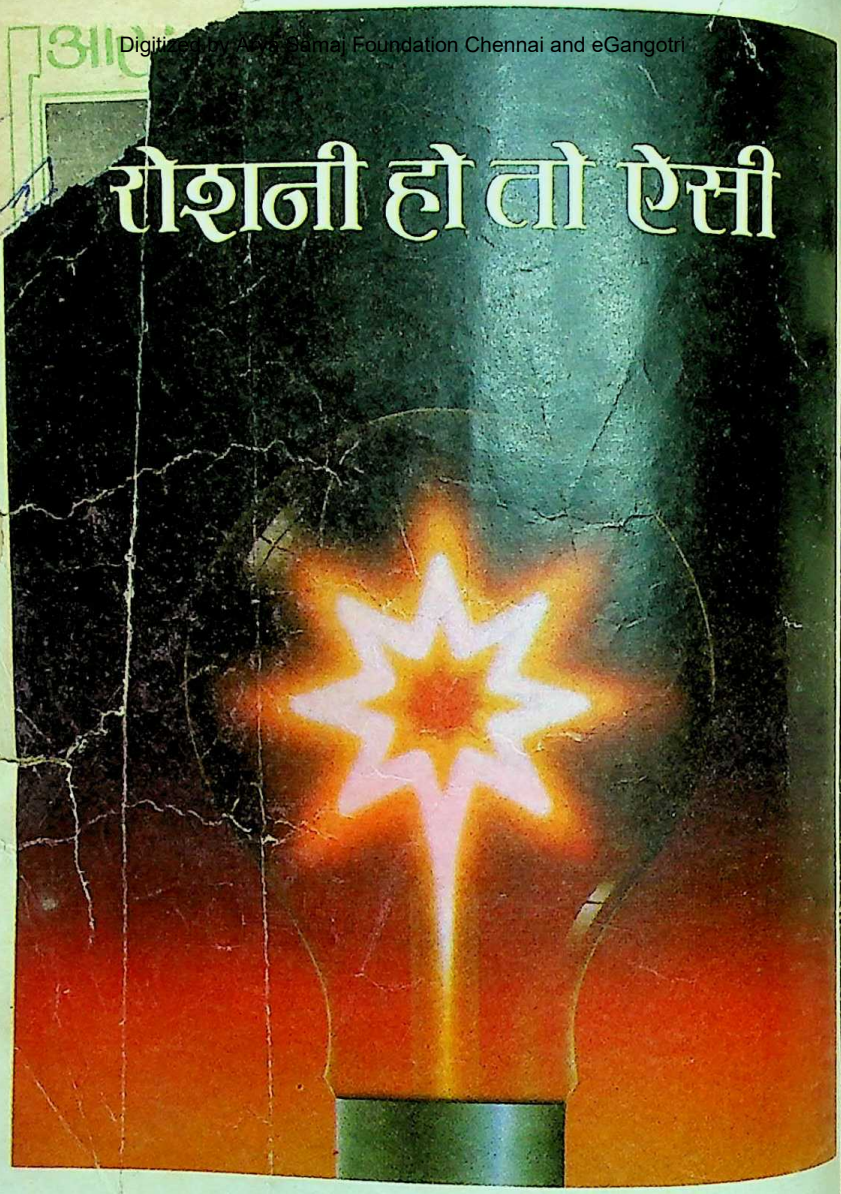

हर बजाज बल्ब का कांच-खोल पूरी तरह सीलबंद होता है ताकि वह ऊपरी टोपी के साथ मजबूती से जुड़ा रहे. इसके कारण बल्ब के फटने या अचानक खराब हो जाने का कोई खतरा नहीं. दरअसल हर बजाज बल्ब को क्वालिटी की सौ कसौटियों पर खरा उतरना पड़ता है जिसमें ऊपरी टोपी की मजबूती की जांच के लिए 'टॉर्शन-टेस्ट' भी शामिल है.

जब भी बल्बों की बात चलती है, उनकी क्वालिटी, मजबूती और विश्वसनीयता की एक ही गारंटी काफी है—बजाज का नाम.

बजाज बल्ब bajaj

कम ख़र्च में चलते ज़्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वप्रसिद्ध शृंखला

पुस्तक महल की 20 पुस्तकों का एक अनूठा प्रोजेक्ट

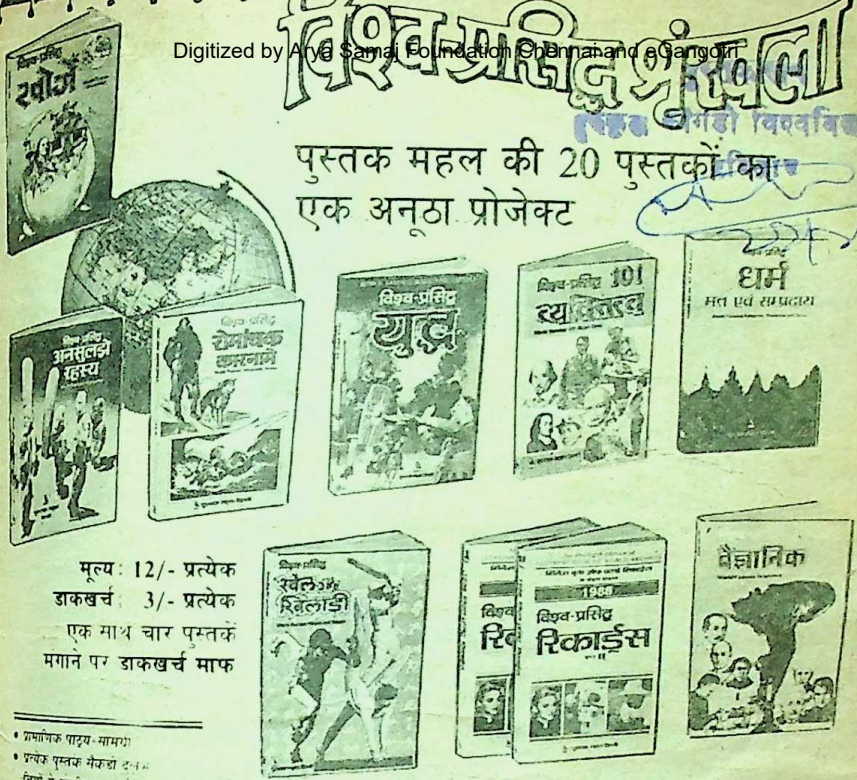

मूल्य : 12/- प्रत्येक
डाकखर्च : 3/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मगाने पर डाकखर्च माफ

- ग्रामोफोन पाठ्य-सामग्री
- प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दर्जन चित्रों से सुसज्जित
- सरल कथा शैली
- सुंदरतापूर्ण सेट
- बढ़िया कागज पर आफसेट छपाई

इस शृंखला की प्रस्तावित पुस्तकें :

विश्व-प्रसिद्ध.....

1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामें 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व (दो भागों में) 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स (दो भागों में) 9. वैज्ञानिक 10. विनाश-लीलाएं 11. जासूस 12. गुप्तचर संस्थाएं 13. खजाने 14. सभ्यताएं 15. राजनैतिक स्कैंडल 16. खोजी यात्राएं 17. बैंक डकैतियां 18. अय्याश राजा 19. प्रेम-प्रसंग 20. क्रांतियां

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबोधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र **'मिनि एनसाइक्लोपीडिया'** है।

'रोमांचक कारनामे' में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो 'खोजें' में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। 'अनसुलझे रहस्य' में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेतों तथा रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं।

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर माग कर अथवा वी पी पी द्वारा मगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन संचार पर हिन्दी में मौलिक लेखन के लिए "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार"

सूचना और प्रसारण मंत्रालय से संबंधित विषयों (प्रकाशन, दूरदर्शन, प्रसारण, वि पत्रकारिता, फिल्में आदि) पर हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए प्र विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष:-

प्रथम पुरस्कार	**10,000 रुपये (दस हजार रुपये)**
द्वितीय पुरस्कार	**7,000 रुपये (सात हजार रुपये)**
तृतीय पुरस्कार	**5,000 रुपये (पाँच हजार रुपये)**

के तीन नकद पुरस्कार दिए जाते हैं। इस वर्ष पुरस्कार के लिए **जनवरी, 1987 दिसम्बर, 1987** तक की अवधि में प्रकाशित पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियां वि स्वीकार की जायेंगी।

प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि

इस पुरस्कार के लिए प्रकाशित पुस्तकों/पाण्डुलिपियों की छः प्रतियां निर्धारित प्रपत्र मोहर बन्द लिफाफे में **30 अप्रैल, 1988** तक भेज दी जानी चाहिए। प्रविष्टियां भेज पुरस्कार संबंधी नियमों तथा पूर्ण विवरण के लिए **श्री कलानन्द शर्मा**, निदेशक (राजभाषा) प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110 001 या सम्पर्क करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांतों का रोग जिनको सताये उनके लिये हैं घरेलू उपाय

एम डी एच

दंत मंजन

लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

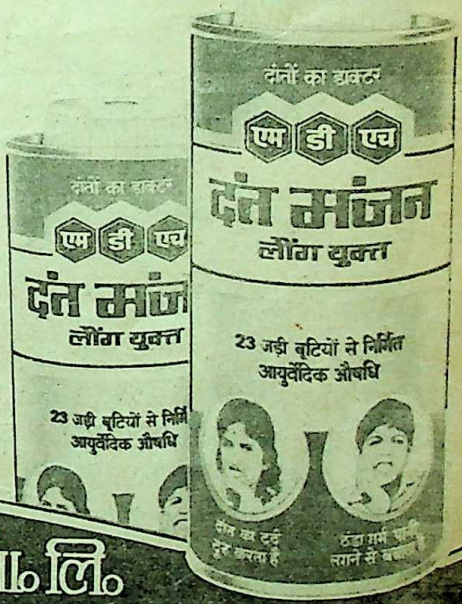

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी प्रा० लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015. फ़ोन : 537987, 537341 539609

मार्च, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हस्त रेखाएं बोलती है। (PALMISTRY)

विश्वविख्यात भविष्य वक्ता कीरो (CHEIRO) द्वारा लिखित सरल हिंदी में सर्वप्रथम प्रकाशित

अंको में छिपा भविष्य (NUMEROLOGY)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों पुस्तकें ४० वर्ष के अनुभव का निचोड़

बड़ा साइज, चित्र ५०, पृष्ठ २१६,
मूल्य ४० रूपए
डाक व्यय ८ रू. अलग

बड़ा साइज, पृष्ठ २०८,
मूल्य ४० रूपए
डाक व्यय ८ रू. अलग

पत्र लिखकर वी. पी. द्वारा मंगायें

* हस्तरेखा विज्ञान पर यह एक श्रेष्ठ एवं परिपूर्ण पुस्तक मानी जाती है।
* किसी भी व्यक्ति का हाथ देखकर आश्चर्य चकित किया जा सकता है।
* भविष्य क्या-क्या संभावनाएं लेकर उपस्थित
* एक सच्चे मित्र की भांति सहायक
* अनोखे रूप में प्रस्तुत करने की विशेषता
* पढ़िए, परखिए और भविष्य में झांकिए।

रंजन पब्लिकेशन्स १६ अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन वटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन वटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये: मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रुपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है।

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोट:-कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर हैं, अमृतसर के डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगियों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखें।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े चमकें इन्द्रधनुष से सालों साल
डाक्टर वाशिंग पाउडर की है इतनी सुरक्षित देखभाल

डाक्टर
वाशिंग पाउडर
किफ़ायती और आसान धुलाई के लिए
हमेशा प्रयोग करें
डाक्टर सोप के निर्माताओं का उत्कृष्ट-उत्पादन

adEnvoys

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **अनास्था** — क. अनीश्वरवाद, ख. अस्थिरता, ग. विश्वास का न होना, घ. संदेह।

२. **अनन्य** — क. अद्भुत, ख. अभिन्न, ग. पृथक, घ. सभी।

३. **अन्योन्य** — क. दूसरे, ख. पारस्परिक, ग. मिला जुला, घ. निजी।

४. **वाग्दंड** — क. कठोर सजा, ख. डांट-डपट, ग. कहासुनी, घ. डंडा।

५. **सिद्धहस्त** — क. जादूगर, ख. हाथ से काम करने में कुशल, ग. सिद्ध पुरुष, घ. हाथ की सफाई।

६. **स्वार्थपरता** — क. अपनापन, ख. खुदगरजी, ग. भेदभाव, घ. कंजूसी।

७. **अनारंभ** — क. धीरे-धीरे शुरू होना, ख. समाप्ति, ग. शुरू न होना, घ. जो आरंभ में न हो।

८. **कशाघात** — क. कोड़े की मार, ख. चिलम फूंकना, ग. किसी चीज की घात में रहना, घ. आकस्मिक आपत्ति।

९. **मदातिरेक** — क. ज्यादती, ख. [illegible] भूल, ग. नशे की अधिकता, घ. अंधाप[illegible]

१०. **ब्राह्मवेला** — क. शुभ घड़ी, ख. [illegible] दिन का आरंभिक काल, ग. कार्य का आरंभ, घ. पूजा का समय।

११. **बांधव** — क. बंधा हुआ, ख. [illegible] कुल, ग. भाई-बंधु, घ. सहयोगी।

१२. **भीतचित्त** — क. शंकालु, ख. [illegible] जिसके मन में डर बसा हो, ग. दीवार पर [illegible] तसवीरें, घ. भयानक।

१३. **अनवगत** — क. भूला-भटका, ख. न जाना हुआ, ग. अप्रसिद्ध, घ. सुन[illegible]

उत्तर

१. ग. विश्वास का न होना। परमात्मा [illegible] **अनास्था** होने से मन अशांत एवं अस्थिर [illegible] जाता है। (अन्+आस्था)

२. ख. अभिन्न, अविभक्त, अन्य से अ[illegible] एकनिष्ठ। तुलसीदास श्रीराम के **अनन्य** [illegible] थे।

३. ख. पारस्परिक, आपसी। हमें भू[illegible] नहीं चाहिए कि सभी मानव **अन्योन्य** अ[illegible] हैं।

४. ख. डांट-डपट। त्रुटियां करते [illegible] **वाग्दंड** से बचोगे नहीं।

५. ख. हाथ से काम करने में कुशल। [illegible] **सिद्धहस्त** कारीगर है।

६. ख. खुदगरजी, केवल अपना ही [illegible] देखना। **स्वार्थपरता** मनुष्य को समाज [illegible] विच्छिन्न कर देती है।

७. ग. शुरू न होना। इस वृहत योजना [illegible] **अनारंभ** दुःखद बात है। (अन्+आर[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. क. कोड़े की मार, प्रहार। दैवी **कशाघात** ने उसे निश्चेष्ट कर दिया है। (कश+आघात)

९. ग. नशे की अधिकता। **मदातिरेक** के कारण वह सुधबुध खो बैठा है। (मद+अतिरेक)

१०. ख. दिन का आरंभिक काल, भोर। **ब्राह्मवेला में जागना तन और मन दोनों के लिए हितकर है। (ब्राह्ममुहूर्त का भी प्रयोग।)**

११. ग. भाई-बंधु, निकट संबंधी। सभी बांधवों से उसे भरपूर सहयोग मिलने की आशा है।

१२. ख. जिसके मन में डर बसा हो। जो **भीतचित्त** है वह संसार में चुनौतियों का मुकाबला नहीं कर सकता।

१३. ख. न जाना हुआ, जिसे जानकारी न हो। शत्रु के षड्यंत्रों से **अनवगत** रहना ठीक नहीं। (अन्+अवगत)

पारिभाषिक शब्द

जनरल प्रोसिजर=सामान्य कार्यविधि
हैबीचुअल डिफाल्टर=आभ्यासिक दोषी
इम्पेंडिंग=आसन्न
कानकरेंस=सहमति
डिसेंट=विसम्मति/असहमति
रजिस्ट्रेशन=निर्वाचन-पंजीयन
फीचर=रूपक
गवर्नेंस=अभिशासन
होमेज=श्रद्धांजलि

समस्या पूर्ति—१८४

पलती मुस्कान

प्रथम पुरस्कार

जिस भविष्य की सुखद कामना
वर्षों रही संजोये
संबंधों के बुने जाने में
फंस सब स्वप्न भिजोये
आज उसे पा हुई प्रफुल्लित
मानो मिला जहान
मेरी ममता की गोदी में
है पलती मुस्कान

—राजेश कुमार अवस्थी

ग्राम व डाक. चौरासी जिला : शाहजहांपुर

द्वितीय पुरस्कार

खुशी नहीं महलों की दासी
हंसी नहीं
सुविधा की चोरी
जहां सुमति
संतोष जहां है
वहां-वहां पलती मुस्कान

—अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

उप-निबंधक : निबंधन एवं निबंधन हिंदू विवाह, घाटमपुर, कानपुर देहात-२०९२०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा के आयाम

संघर्ष ही जीवन का पर्याय

'जब निश्चय में दृढ़ता हो तो कोई कारण नहीं कि प्रगति-मार्ग में कोई बाधा आये।" यह विश्वास है पैरों से विकलांग शेरसिंहजी का, जिन्होंने लोगों के उपहास की चिंता न करते हुए अपना अध्ययन जारी रखा और आज मुख्याध्यापक के पद पर कार्य करते हुए न केवल छात्रों को विद्यादान कर रहे हैं, वरन अन्य समाजोपयोगी कार्यों में भी उत्साह से भाग ले रहे हैं।

शेरसिंहजी जब चार वर्ष के थे, तब तीव्र ज्वर के कारण उनके दोनों पैर बेकार हो गये थे। दो वर्ष बाद उनकी मां भी नहीं रहीं। पिता ने ही उनका और उनकी बहनों का लालन-पालन किया। शेरसिंह प्राइमरी स्कूल में भरती करा दिये गये लेकिन वहां सहपाठियों ने उनका उपहास करना शुरू कर दिया। लेकिन श्री शेरसिंह ने हिम्मत नहीं हारी। वे दूने उत्साह से पढ़ने लगे। स्कूल के बाद वे कॉलेज में गये। वहां उन्हें साथियों का प्रेम और सहानुभूति मिली।

सन १९६९ में उन्होंने बी.एड. किया और अगले वर्ष ही अध्यापक पद पर उनकी नियुक्ति हो गयी। उनकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर उन्हें मुख्याध्यापक पर पर पदोन्नत कर दिया गया। उनकी कर्मठता से प्रभावित हो संतोष नामक एक युवती उनसे विवाह के लिए प्रसन्नता के साथ तैयार हो गयी।

श्री शेरसिंह अध्यापन के अतिरिक्त वृक्ष योजना, परिवार कल्याण, वृक्षारोपण संबंधी कार्यक्रमों में भी उत्साह से भाग लेते हैं। वर्ष १९८० में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें विकलांग लोगों को दिया जानेवाला पुरस्कार दिया।

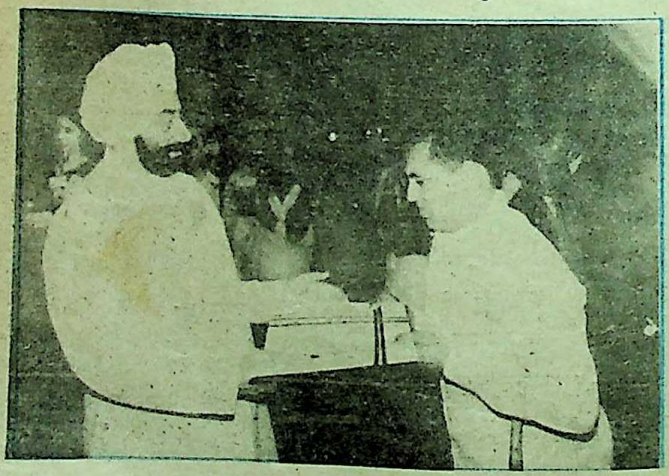

पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री शेरसिंह जाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शेरसिंह और कहना है 'अपने आत्मबल के कारण ही मुझे यह पुरस्कार मिला। मेरा परिश्रम ही मेरी सफलताओं का आधार है। संघर्षों ने मेरे जीवन को निखारा है। संघर्ष ही मेरे जीवन का पर्याय है।'

—ऋषि मोहन श्रीवास्तव

लगन स्वप्नों को साकार भी करती है

एक मजदूर था, जो दिन-रात खान में भी मजदूरी करके किसी तरह अपना जीवन-यापन करता था। उसका सपना था कि वह एक ऐसे इंजन का निर्माण करे, जिसे भाप द्वारा चलाया जा सके और जिससे विश्व की यात्रा-प्रणाली में क्रांति लायी जा सके। उसे कोयले की खान में काम करते हुए प्रतिदिन छः पेंस मिलते थे। इससे उसका गुजारा मुश्किल से ही हो पाता था। उसने अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए मजदूरों के कपड़ों की मरम्मत करना तथा उनके जूते गांठना आरंभ कर दिया। इसके साथ ही साथ उसने सांध्यकालीन विद्यालय में शिक्षा-प्राप्त करनी भी शुरू कर दी। उस पर अपने अंधे पिता के खर्चे का बोझ भी था। फिर भी वह अपने इंजन के सपने को साकार होते हुए देखना चाहता था। हर व्यक्ति से वह इसी भाप द्वारा संचालित सपने के विषय में ही बात करता। और प्रत्येक व्यक्ति को इंजन का डिजायन बना-बनाकर दिखाता। लोग उसे पागल और सनकी कहने लगे। लोगों के अनुसार ऐसा इंजन अपने शोर से समाज के लिए नुकसानदायक साबित तो होगा ही साथ ही अपनी चिनगारियों से लोगों के घरों को भी नुकसान पहुंचाएगा। इससे उसके विरोधियों की भी संख्या दिन ब दिन बढ़ती गयी। इसके विरोधियों का यह भी कहना था कि इंजनों का धुंआ वातावरण को दूषित भी कर देगा और घोड़ागाड़ियां बनानेवाले तथा साईस लोगों को काम न मिलने के कारण वे भूखे मरने लगेंगे।

लेकिन इन सब विरोधों के बावजूद यह अपनी धुन में जुटा रहा और एक दिन उसने न केवल भाप द्वारा संचालित इंजन का ही आविष्कार किया, बल्कि अध्ययन प्राप्त कर उसने राजनीति में भी प्रवेश किया और चुनाव जीतकर संसद-भवन में सीट प्राप्त की। जब वह संसद-भवन में पहुंचा, वहां भी उसके इस भापवाले इंजन की खोज का मजाक उड़ाया गया। लेकिन उसने इस बात की तनिक भी परवाह नहीं की और अपने स्वप्न को सिद्ध करने के लिए लगातार पंद्रह वर्ष तक परिश्रम किया। और अंत में वह सफल भी हुआ। इस घोर परिश्रमी और अपने स्वप्न को साकार करनेवाले व्यक्ति का नाम था—जॉर्ज स्टीवेन्स जिसकी भाप के इंजन के आविष्कारक के रूप में ख्याति दूर-दूर तक जानी जाती है। अपने धुन के पक्के और धैर्य के धनी इस खान मजदूर को आगे जाकर विश्व-प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

जब कोई मनुष्य एक बार 'नहीं' कह देता है, तो फिर उसके व्यक्तित्व का सारा घमंड यह चाहता है कि वह 'हां' न करे। —ओवर स्ट्रीट

सच्ची-से-सच्ची और अच्छी-से-अच्छी चतुराई निश्चय है। —नेपोलियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलियों के नाम पर

फरवरी अंक में सांसद बालकवि बैरागी का लेख 'बोलियों के नाम पर भारत को तोड़ने की साजिश' पूरा पढ़ गया। बैरागीजी की हिंदी के प्रति छटपटाहट, जो सीधे कवि-मन से निकलती है तथा लेखों के माध्यम से हम तक पहुंचती है, प्रशंसनीय है। लेख के अंत में बैरागीजी ने लिखा है कि 'अंततः भारत से अंगरेजी जाएगी तथा हिंदी को यहीं रहना है व रहेगी' इस कथन से मैं पूर्ण सहमत हूं।

हिंदी को प्रतिष्ठा देना हम हिंदी-भाषियों का ही काम है। आज जब शहर की दुकानों पर अंगरेजी में नामपट्ट दिये जाते हैं, अंगरेजी माध्यम की शालाएं धड़ल्ले से चल रही हैं, दूरदर्शन पर अंगरेजी में विज्ञापन दिये जाते हैं, ऐसे में हिंदी कब प्रतिष्ठित होगी, यही प्रश्न है। चालीस साल बाद भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उपयोग में न लाना हमारे लिए निश्चित ही लज्जाजनक है। मातृभाषा व राष्ट्रभाषा जब फलेगी-फलेगी, तभी भारत के लिए वह गौरवपूर्ण दिन होगा।

यदि हम अपनी हिंदी के लिए आश्वस्त हैं तो कोई भी शक्ति भारत को नहीं तोड़ सकती है, किंतु इसके लिए संकल्प चाहिए।

—सीताराम देशपांडे, इंदौर

फरवरी अंक में श्री बालकवि बैरागी का लेख पढ़ा। उनकी अनेक बातें सही हैं। मेरा अपना खयाल है, अंगरेजी ज्ञान की प्रतीक न बनकर 'स्टेटस-सिंबल' भी बन गयी है। काफी समय पहले 'विविध भारती' पर एक विज्ञापन आता था, जिसमें गृहिणी कहती थी कि मैं पार्टी में इसलिए नहीं जाऊंगी कि मुझे अंगरेजी नहीं आती।

दुर्भाग्य से हमारी यह मानसिकता और भी मजबूत होती जा रही है। हम समझते हैं कि अंगरेजी बोलकर हम दूसरों पर ज्यादा अच्छा प्रभाव डाल सकते हैं। वह हमारे 'पढ़े-लिखे' होने की निशानी है। जब तक इस तरह की मानसिकता नहीं बदलेगी, तब तक न तो हिंदी का, न अन्य भारतीय भाषाओं का और न स्वयं अंगरेजी का ही कोई उद्धार होगा।

— देवव्रत चटर्जी, नयी दिल्ली

फरवरी अंक में डॉ. अख्तर अली का लेख 'दुगड्डा अंचलः क्रांतिकारियों का प्रशिक्षण स्थल' बेहद रोचक लगा। क्रांतिकारियों के कार्यकलापों की एक झलक मेरे परिवार को पढ़ने को मिली। मैं 'कादम्बिनी' के माध्यम से डॉ. अख्तर अली साहब को कोटि-कोटि साधुवाद भेजता हूं।

—केशर सिंह, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी अंक में 'सदाबहार विमान-डकोटा' पढ़कर अनेक स्मृतियां ताजी हो गयीं। सचमुच, डकोटा एक सुविधाजनक यान था। यह बात दूसरी है कि आधुनिक 'कांकर्ड' और 'बोइंग' विमान के सामने डकोटा की क्या बिसात, पर एक कहावत है कि जो काम सुई कर सकती है, वह तलवार नहीं। इसी तरह डकोटा की अपनी विशेषता है। खासकर भारत जैसे देश में।

—विजय शंकर, नागपुर

'कादम्बिनी' का जनवरी अंक पढ़ा। 'मुगल शासनकाल में नव-वर्ष', 'अहिच्छत्र के भग्नावशेष' आदि लेख ज्ञानवर्धक व रोचक लगे। इसी अंक में 'सुपरनोवा' के संबंध मे प्रकाशित लेख में कहा गया है कि एक लाख सत्तर हजार प्रकाश वर्ष दूर स्थित वस्तु को नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता। यह पूर्णत सत्य नहीं है। यह सच है कि जो वस्तु जितनी दूर होगी, उसको बिना किसी उपकरण की सहायता के देख पाना उतना ही कठिन होगा। परंतु किसी वस्तु का दिखायी देना उसकी दीप्ति पर भी निर्भर करता है। जिस सुपरनोवा का वर्णन इस लेख में किया गया है, वह जून के महीने तक शहर की रोशनी से दूर 'दक्षिणी क्रॉस' के पास नंगी आंखों से आसानी से देखा जा सकता था। जिस बड़े मेगल्लानी मेघ में यह सुपरनोवा स्थित है, उस मेघ की (व छोटे मेगल्लानी मेघ की) खोज प्रसिद्ध अन्वेषक मेगलन ने नंगी आंखों से देखकर ही की थी।

ब्रह्मांड में सुपरनोवा के दर्शन भी इतने दुर्लभ नहीं होते। वास्तव में ब्रह्मांड में कहीं न कहीं हर वर्ष लगभग पांच-दस सुपरनोवा देखे जाते हैं। हां, यह सच है कि हमारी मंदाकिनी में सन १६०४ के बाद कोई सुपरनोवा नहीं देखा गया है और इयन शैल्टन द्वारा २३ फरवरी १९८७ को खोजा गया सुपरनोवा पिछले लगभग ३८० वर्षों में सबसे नजदीकी सुपरनोवा है।

अंत में, भौतिक खगोल विज्ञान (एस्ट्रोफिजिक्स) की मान्य परंपरा के अनुसार शैल्टन द्वारा खोजे गये सुपरनोवा का नाम केवल 'सुरपरनोवा १९८७ ए' है, न कि 'शैल्टन १९८७ ए'। केवल धूमकेतुओं का नाम उनके आविष्कारकों के नाम पर रखा जाता है, जबकि सुपरनोवा का नाम प्रत्येक वर्ष के साथ उसकी खोज की क्रम संख्या लगाकर रखा जाता है।

—सुरेन्द्र कुमार जैन, बंगलौर

सुपरनोवा 'वेला एक्स' कब देखा गया ?

जनवरी अंक में 'सुपरनोवा' के विषय में लेख काफी रोचक था। ब्रह्मांड में घटित होनेवाली अद्भुत घटनाओं में यह एक वास्तव में आश्चर्यजनक और असामान्य घटना है। लेख में ६,००० साल पहले ईराक में दजला-फरात नदियों के तट पर 'वेला-एक्स' नामक सुपरनोवा को नंगी आंखों से देखने की बात कही गयी है परंतु **एस्ट्रोफिजिकल जर्नल** (अमरीका) १९७१ के अंक क्रमांक ४७८ में इसका समय ११,००० वर्ष पूर्व अर्थात ईसा से लगभग ९,००० वर्ष पूर्व बताया गया है। जर्नल में लिखा है कि 'वेला' की आयु ठीक-ठीक मालूम नहीं है। इसी प्रकार सन १०५४ में 'क्रेब' नाम का सुपरनोवा दिखायी दिया था और उसको अरिजोना के मूलवासियों ने ही नहीं देखा, वरन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन के खगोल-शास्त्रियों ने भी उसे देखा है और चीन के अभिलेखों में इसकी चर्चा है।

—बी. एन. गोयल, कोटा

जनवरी अंक में श्री राम गुप्ता का लेख 'छत्तीसगढ़ में हर दिन एक त्योहार' पढ़ा। यह कहना कि 'छत्तीसगढ़ की हर सुबह एक नये पर्व की रंगीनियां बिखरते आती है तथा शाम एक दूसरे पर्व के शुभागमन का संदेश देती है।' उचित प्रतीत नहीं होता है।

हकीकत तो यह है कि छत्तीसगढ़ की हर सुबह दुख, पीड़ा, गरीबी, फटेहाली, निराशा, संत्रास और हताशा की सुबह होती है। छत्तीसगढ़ की गरीबी ने लोगों के जीवन की खुशियों पर पानी फेर दिया है। छत्तीसगढ़ में साठ प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं। प्रमुख त्योहारों के दिनों में भी अब लोगों में कोई विशेष रुचि नहीं देखी जाती। गरीबी की यातना उनका पीछा नहीं छोड़ती। इसका कारण यह है कि लगभग ढाई लाख लोग छत्तीसगढ़ से बाहर मजदूरी करने हेतु जा चुके हैं। मजदूरों का बाहर जाना आज भी जारी है। वे अन्य प्रदेशों में जाकर बंधुआ मजदूरों का जीवन व्यतीत करते हैं। जो लोग छत्तीसगढ़ में रहकर एकाध त्योहार मना लेते हैं, वे सौभाग्यशाली कहे जा सकते हैं।

—आर.एस. केशरी, अकलतरा

जनवरी अंक में 'मिदनापुर के मजिस्ट्रेट' पढ़कर मन आर्द्र हो उठा। धन्य हैं वे माता-पिता, जिन्होंने स्वतंत्रता के महायुद्ध में बलि दी और देश स्वतंत्र हो जाने पर अपनी संतानों के लिए सिर्फ एक चक्षु को अश्रु बहाने का अवसर दिया और दूसरा नयन हर्ष और विजय की उल्लास बिखेरता रहा। परंतु वर्तमान से जब हम इस बलिदानी गाथा को जोड़कर दृष्टिपात करते हैं, तो लगता है, माताओं ने जो अपार यातनाएं भोगी थीं, क्या वे व्यर्थ थीं? निःसंदेह उन 'चले गये' लोगों के दृष्टिपटल एवं मानस पर स्वतंत्र भारत की यह छवि तो नहीं हो रही होगी!

—बृ. कि. शुक्ल, भोपाल

विगत कई वर्षों से 'कादम्बिनी' का मैं नियमित पाठक रहा हूं। इस पत्रिका की विशेषता यह है कि विभिन्न प्रकार के स्थायी स्तंभों के साथ-साथ रोचक कहानियां, लेख एवं दुर्लभ जानकारी भी पढ़ने को मिलती है। सभी उम्र के पाठकों के लिए इसमें कुछ-न-कुछ सामग्री अवश्य रहती है। यही कारण है कि इस पत्रिका को मेरा समूचा परिवार पसंद करता है।

फरवरी अंक में स्वाति मुक्ता का 'ये अंखियां थक गयीं पंथ निहार' में ज्योति की प्रतीक्षा में कहे गये ये शब्द मेरे मन को छू गये!—

'ईश्वर को पा लेना यात्रा का अंत नहीं खोज का विश्राम नहीं, बल्कि वास्तविक यात्रा का आरंभ है।'

—डॉ. महेश प्रकाश शर्मा, भोपाल

जनवरी अंक का 'काल चिंतन' पढ़ा। आपने बड़े ही सुंदर एवं सार्थक शब्दों में देश में घटित होती घटनाओं, दुर्घटनाओं का सजीव चित्रण किया है। देश में पड़े भयंकर सूखे, राजनेताओं का फूलों से स्वागत, इनके लिए यह पंक्ति, 'स्वागत के द्वार हृदय के भीतर होते हैं प्रदर्शन में नहीं,' सर्वथा सार्थक है। आपने नव वर्षोपलक्ष्य में दिन प्रति दिन विकसित होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आणविक विश्व के लिए शांति और प्रेम का संदेश बड़े ही सहज शब्दों में अभिव्यक्त किया है। —सुनील अग्रवाल 'कुमार', रेवाड़ी

फरवरी अंक में संसद सदस्य बालकवि बैरागी के लेख में व्यक्त राष्ट्रभाषा हिंदी के संबंध में उपयोगी विचार मार्मिक किंतु व्यावहारिक स्तर पर समीचीन प्रतीत हुए। बोलियों के नाम पर देश को तोड़ने की साजिश को उन्होंने बेनकाब किया है। 'निराला और राष्ट्रीयता' एक ललित निबंध है। निरालाजी के विराट व्यक्तित्व एवं राष्ट्रीय चेतना से समन्वित कृतित्व का सम्यक निरूपण लेखक ने सहजता से किया है। एस. आर. कृष्णमूर्ति की लगन, साहस और अपंग काया में छिपी अपार क्षमता प्रेरक और जीवंत दस्तावेज है। 'जहां चाह है, वहां राह है'— यह उक्ति उन पर लागू होती है। इसी अंक में आशा सिन्हा की कहानी 'बुआ' तथा धनेश्वर प्रसाद की कहानी 'अनुत्तरित प्रश्न' प्रभावित करती हैं। —आदर्श प्रहरी, उरई

हिडिंबा देवी का मंदिर

'कादम्बिनी' के फरवरी अंक में डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी का 'हिडिंबा देवी का मंदिर' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। इसमें लेखक ने लिखा है कि 'दिव्य आभूषणों से विभूषित लजाती हुई ललना हिडिंबा ने मधुर मुसकान के साथ निश्चिंत होकर घर की तरह शयन-मग्न पुरुषों सहित सुकुमारी श्यामा द्रौपदी और स्वयं भीम का भी पूरा परिचय पूछा।' यह गलत है। महाभारत के अनुसार हिडिंबा जब भीम से मिली, तब पांडवों के साथ द्रोपदी नहीं थी। लेखक की इस गलती के लिए हमें खेद है।

—संपादक

आगामी अंक

क्या होता है जब हम सपने देखते हैं !

●

रामचरित मानस में समाजवाद का अनुशीलन

●

बाली द्वीप का महामेरु गुनुंग-अगुंग

●

बब्बर शेर का वैकल्पिक घर

●

कहां है प्राचीन त्रिगर्त

●

अध्यात्म के भौतिक समीकरण

●

पत्थरदार पन्नों पर पुलकावलि के छंद

●

नदियां भी सिसकती हैं !

●

मैं अपनी जिंदगी इनसान की खोज में बिता रहा हूं !

यही नहीं और कई दिलचस्प रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजन से भरपूर मर्मस्पर्शी कहानियां ● भावभीनी कविताएं और लोकप्रिय स्थायी स्तंभ

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष : २८, अंक ५
मार्च १९८८

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध, लेख एवं होली पर विशेष संस्मरण

शिवानी
सर्वनाशी घूंघट के कारण २२
डॉ. रामदरश मिश्र
विदेशी जासूसों की दीवानी भीड़ २६
डॉ. भगवती शरण मिश्र
बदलना रातों-रात एक दूल्हे का २८
विभूशु
वे हास्य के माध्यम से ४२
के. पी. सक्सेना
हर कवि लिलीपुट ४६
डॉ. रंजन जैदी
एक्फी थियेटर हुआ करता था ४८

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए-८, समस्या-पूर्ति ९, आस्था के आयाम— १०, प्रतिक्रियाएं— १२, काल-चिंतन— १८, ज्ञान-गंगा— २४, हंसाइयां— ८६, हंसिकाएं-८६, इनके भी बयां—१००, बुद्धि-विलास— १०९, विधि-विधान — ११६, आइए चले जंगल की ओर— १५२, ज्योतिष समस्या और समाधान—१६१, यह महीना और आपका भविष्य— १६६, घरेलू उपचार— १८३, दस्तक— १८४, प्रवेश— १८८, तनाव से मुक्ति— १९०, नयी कृतियां— १९४, और अंत में— १९७

आवरण : ज्ञान दीक्षित, हेमंतकुमार

सवा सौ की तुकल ५३
वसु मालवीय
सब चले गये ६२
महादेवी वर्मा
रचना गतिशील हो ६६
रमेशचंद्र राजा चौबे
जहां कृष्ण ने ६८
अनंतराम गौड़
चंगे रहने के लिए ८०
किशोर श्रीवास्तव
ये शरारती पशु-पक्षी ९४
रोग भगाते हैं गद्दे-तकिये ९६
आशीष
तनाव से मुक्त रखती है हंसी १०६
रतनलाल जोशी
न हुआ मीर का अंदाज ११०
सुरेन्द्र मोहन मिश्र
हिंदी की समस्या-पूर्ति परंपरा १२८
मोती मेहरोत्रा
कुंवारी युवतियों का उत्सव १२९
रामस्वरूप जोशी
होते हैं वृक्ष मंगलकारी १३४
धीरेन्द्रकुमार दीक्षित
रोजी के लिए बंदर पकड़ना १३४
राहुल
अविश्वसनीय लेकिन विश्वसनीय १४२
बाला दुबे
मूर्खों का भोज १५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

महाभारत : कुछ अनछुए प्रसंग
कभी-कभी विलंब करना भी १५८
राधावल्लभ शर्मा गौड़
तू बहा या जला १८०

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

अशोक आंद्रे
दानव २५
सुभाष भेंडे
मुसीबत एक पुरुष प्राध्यापक की ३५
विजय कृष्ण ठाकुर
चर्चा 'चरण कमल' की ५८
गोपाल चतुर्वेदी
खिड़की-दर्शन ७४
शेर जंग जांगली
अलादीन और गोरा जिन्न ८८
चीनी व्यंग्य
दो भाई, उदासी का कारण ९३
डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी
कुरसी खतरे में ९८
डॉ. मोतीलाल जोतवाणी
किस्से बतायो फकीर के १०१
मुहम्मद अब्दुल मलिक
हुजूर १०२
प्रणय पंडित
लड़की की आकृति १२४
संतोष खरे
व्यंग्य लेख में फंसा एक बाप १४०
सुधीर शाह
प्रेम में डूबा कूर्मांचल १४९
वेणु गोपालन
घोड़े पर बैठकर फूलों की १७१
डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास
महाकवि बनने का १७८
नीना गर्ग
भिड़ंत पागल घोड़े और शेर की १८६

कविताएं

पद होली के ३२
काका हाथरसी
होली की याद ५७
दिनेश शुक्ल
फागुनी दोहे ७९

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक :
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि.
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली—११०००१
वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवा की तरह आते हैं दिन, रात, महीने और वर्ष ! हवा की तरह ही चले जाते हैं वे सब ।

□

—वे सब सार्थक नहीं हुए, सार्थक हुई हवा, जिसके हाथ पिसे कांच की मंझा की डोर है और जो पतंग की तरह किसी को भी, कहीं भी उड़ा ले जाती है ।

—इतने बेबस हैं हम ! इतने बिके हुए ?

—क्या इतने कमजोर हैं !

—उड़न तश्तरियों की तरह कभी कुछ दिख जाता है और उसी को हम अपना भाग्य-क्षण मान लेते हैं ।

□

—कल ही वह आया था— वसंत !

—नन्हे बच्चे की तरह मुसकराता धवल श्वेत वस्त्रों में आलिंगनबद्ध, यौवन की अंगड़ाइयों को मांसल देह की तरह प्रदर्शित करता, आया था वह मासूम बच्चे-सा, लेकिन रग-रग जिसका यौवन-सा मचलता हुआ ।

—एक झलक दिखाकर वह चला गया था । फिर लौट आया । प्यार से कहा किसी ने : 'मुआं फिर लौट आया !'

—बवंडर और तूफान, आंधी और भरा हुआ आसमान मनमाने ढंग से इन सबके साथ कुलांचे भरते हुए अब फिर वापस जाने के द्वार पर आ खड़ा हुआ है वह 'मुआं' ।

—लकड़ियां जलाकर लोगों को भ्रम में डाले हैं वह !

—होली जलाकर लोग हाथ सेक रहे हैं; आज ग्रीष्म का मजा ले लें वे, कल यही ग्रीष्म उनके लिए त्रासदी बनेगी ।

—शहर में आबादी को एक खेल में लगा दिया है उसने, गांव में ढोल और डफ-जैसे खिलौने दे दिये हैं और स्वयं धरती से जाते हुए लंकादहन में व्यस्त है वह !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सारे जंगल जल रहे हैं !

—अंधेरी रात में आग की लपटें दिखायी दे रही हैं।

—चेहरे तब भी सबके प्रसन्न हैं।

—सारा जंगल एक साथ कभी तो जलता है; शायद अभी एक बार !

—पलाश के वृक्ष हैं ये। टेसुओं के फूलों की आग है यह। इसी अग्नि का प्रकोप है सारे जंगल में।

—लाल-लाल, टेसू फूल हैं कि भ्रम हो रहा है जंगल जल रहे हैं।

—देखा न, जाते-जाते कैसा जादू दिखा रहा है 'मुआं' !

□

—एक कथा है :

'एक आदमी था। अनेक हत्याएं की थीं। लूटा था न जाने कितने लोगों को। आतंक था वह। हर कोई कांपता था उससे। अचानक वह नहीं रहा। मौत हो गयी उसकी। गांवभर के लोग जमा हुए : अच्छा हुआ एक आतंक का खात्मा हुआ। तभी लोगों ने देखा मुट्ठियों में उसके कुछ है। पत्थर-सी सख्त मुट्ठियों से उसे निकाला। एक कागज था वह, लिखा था :

'जिंदगीभर मैंने सबको परेशान किया। इतने पाप किये हैं कि उनकी सजा यहीं मिलनी चाहिए मुझे। सुनो ! गांववालो, माफ कर दो मेरे गुनाह ! मेरे शव के गले में रस्से का फंदा बांधो और घसीटते हुए गांव के हर रास्ते घुमाते मुझे ले जाओ श्मशान तक। तब करो मेरा संस्कार।'

जनता बेचारी सहज, भोली। मान ली यह बात, कहा किसी ने, 'बेचारा चला गया ... जो हो, इस छोटी-सी याचना को मान लेना चाहिए।'

उसके शव को रस्से का फंदा देकर सड़क पर घसीटते बाजे-गाजे के साथ गांववाले ले चले। आधे रास्ते पुलिस ने आ घेरा। सब हवालात में बंद। कानून की दृष्टि में यह अन्याय था। इस तरह यंत्रणा देने की छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी कानून में नहीं है। तभी एक ने कहा, 'हमारी अक्ल मारी गयी थी। भूल गये हम कि दुष्ट व्यक्ति मरने के बाद भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता। कितनी चालाकी से मरने के बाद भी इसने दुष्टता दिखायी है।'

□

—कथा समाप्त हुई, 'मुआं', बेहतर है क्या ? जाते-जाते सारी सर्द-तरुणाई ले गया। छोड़ गया है ज्वलनशील तपते दिनों के संकेत।

—गरम होगी धरती

—गरम होगी हवा

—घर, बाहर बेहाली का मौसम होगा !

—'सच है एक दुष्ट जाते-जाते दुष्टता ही छोड़कर जाता है !'

□

—मौसम ने एक नये केंद्र-बिंदु पर लाकर खड़ा कर दिया है हमें !

—कल आता है कि नहीं, नहीं जानते हम ! तब भोगें क्यों नहीं वर्तमान को।

—भोगें हम यथार्थ को। न फंसे धूल के झंझावात में अभिमन्यु से असहाय।

—कल आएगा, आएगा तो ?

—लेकिन ?

—लेकिन होगा कैसा : बेहतर हो सकता है, परम कष्टदायी भी, मरणासन्न कर दे, जीवनदान दे दे या फिर .....

—या फिर हम जीवित ही न रहें इसी अगले मौसम तक।

—नहीं रहेंगे तो कुछ बिगड़ेगा नहीं। दुनिया ऐसी ही चलेगी।

—हम कैद हो जाएंगे चंद दोस्तों की यादों में ! कृपा हुई उनकी तो भीड़तंत्र के मंत्र सूत्र बन जाएंगे।

—सभाएं होंगी, पुस्तकें लिखी जाएंगी, छपेंगी, साथी मित्रों को संस्मरण लिखने के अवसर मिलेंगे : हमसे महान न कोई हुआ, न होगा।

—हमारी 'महानता' सहसा उनका संबल बनी, क्योंकि उनके बीच से एक 'काम्पीटीटर' चला गया। उनकी सफलता के द्वार सहज हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हमारे नाम-जाप का स्मरण उनके भावी पथ को प्रशस्त करेगा। उनका लेखन आय का साधन बनेंगे और मात्र हमारे 'गुणगान' हवा में शून्य की तरह तैरते होंगे।

—सभी कुछ होगा केवल हम नहीं होंगे।

—बाग का सूखा-नंगा वृक्ष तब भी खड़ा होगा, बगीचे के पत्थर और चमक रहे होंगे। बेंचें नित नयी गरमाहट से सदाबहार मुसकराती रहेंगी। वह पथ होगा, पथचारी जरूर बदलते रहेंगे हमारी तरह। दूब भी वही होगी और जीवित लहलहाती।

—बस, हम न होंगे।

□

—इस सार्थकता को समझ लें तो बहुत-सी उलझनों से बच जाएंगे।

—एक कडुए सच के साथ इस सौंदर्य परी-धरा पर सहज हर क्षण भोग सकेंगे।

—एक-एक क्षण अपना मूल्य रखता है। इसलिए हर क्षण हमें जीना चाहिए।

—वह सब करना चाहिए जो कर सकते हैं हम।

—सीमाएं जहां आबद्ध किये हैं, लेकिन आकांक्षाएं उनसे बलवती हैं, सीमाओं को तोड़ देना हमारा सहज धर्म हो।

—मिथ्या भ्रम में न जिएं हम और न परंपराओं के दुभाषिए बनें।

—निगल सकें तो निगल लें धरती को, आसमान को, समंदर को, हर उसको जिसको हम निगलना चाहते हैं।

□

—तो आइए, होली जलाएं हम, सुकुमार मृग छौने वसंत के छल को समझते हुए भी उसे दुलारें, प्यार दें उसे, उसी ने हमें यथार्थ का पोषक और समय का साझीदार बनने की शिक्षा दी है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वनाशी घूंघट के कारण मिला देव दुर्लभ दूध

● शिवानी

जीवन में कभी-कभी ऐसी मनोरंजक घटनाएं घटती हैं, जो उस क्षण कदापि मनोरंजक प्रतीत नहीं होतीं, अपितु रोंगटे खड़े कर देती हैं। मुझे आज अचानक एक ऐसी ही घटना का स्मरण हो आया है, जब वे कुछ दुर्वह क्षण मुझे किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना गये थे।

घटना मेरे विवाह के वर्ष ही घटी थी। तब मेरे ससुराल के सम्मिलित परिवार में, मेरे पति के मामा का परिवार भी अचानक रहने आ गया था। मामाजी ने तीन विवाह किये थे एवं तीनों ही एक-एक संतान छोड़ गतायु हो चुकी थीं। चौथा विवाह जब हुआ तब वे वार्धक्य की देहरी पर खड़े डगमगा रहे थे। उस विवाह का प्रबल विरोध हुआ था और विरोधी दल के अगुआ थे स्वयं मेरे मामा। उन्होंने तत्कालीन प्रमुख समाचारपत्रों में कड़े शब्दों में उस विवाह की निंदा की थी कि पुत्री की समवयसिनी कन्या से, साठ वर्ष के इंजीनियर साहब को विवाह करने का कोई अधिकार नहीं हो सकता—किंतु, समाज की सहानुभूति मामाजी के साथ थी—आखिर छोटे-छोटे बच्चों और जवान हो रही कन्या को पालने के लिए भी तो कोई चाहिए। फिर यदि स्वयं कन्या पक्ष को ही कोई आपत्ति नहीं तो समाज को भला कैसी आपत्ति !

विवाह हुआ और अपनी भूतपूर्व तीनों पत्नियों के बाल-बच्चे एवं नवीना पत्नी के साथ मामाजी हमारे यहां रहने आ गये। किंतु, तब से विपत्ति का पहाड़ ही भरभराकर उन पर टूट पड़ा—एक पुत्री को 'गैलोपिंग थाईसिस' ले गया, उधर अन्य पुत्रियों की भी विमाता से निभ की चखचख देख मामाजी सुबह ही घर से निकल, बड़ी रात बीते घर आने लगे।

मामी जी मेरी ही समवयसिनी थीं, कद गंभीर और सुदर्शना। कदकाठी, रंग, अवयव सब-कुछ का मुझसे आश्चर्यजनक साम्य था—मुझे कभी-कभी उन्हें देख बड़ा दुःख होता—बेचारी को इस विवाह से मिला क्या ? यद्यपि, बाद में वे तीन ही वर्षों में पुत्रों की जननी भी बनीं, सौभाग्य-सुख भी भोगा किंतु अपनी उस अवगुंठनवती सास की अवसन्न मुखमुद्रा देख मुझे बड़ा कष्ट होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयरोगिणी पुत्री की सेवा परिचर्या में वे दिन-रात लगी रहतीं फिर भी सौतों की संतान ने उन्हें अंत तक मान्यता नहीं दी, पति की मेज पर सिरहाने तीनों दगदगाती दिवंगता सौतों के चित्र वैसे ही लगे रहते जैसे जगन्नाथपुरी के तीनों देवता एक ही पट में मुंदे रहते हैं।

उस दिन पूर्णिमा थी, वह भी कोजागरी—यह दिन तब पहाड़ की गृहिणियों के लिए, सुबह से शाम तक कठोर परिश्रम का दिन होता था, गृह की सीढ़ियों से लेकर पूजागृह, रसोईघर भंडारगृह की धरा का चप्पा-चप्पा लक्ष्मी के पैरों से, अल्पना से भरना होता था। पहले सेरों भीगे चावल पीसना, वह भी एकदम चटनी-सा महीन, फिर गेरू से लीपना और फिर एक आकार के पद्मपत्र पलाक्षा-सी के रूरणद्वय आंकना। जितना ही बड़ा गृह हो उतनी ही कठिन कवायद मैं मामीजी के साथ-साथ इसी कार्य में लगी थी, दोनों ही के चेहरों पर घूंघट, दोनों के झुके घूंघट से ढके एक-से चेहरे। मामाजी बेचारे दो-तीन बार आकर झांक गये फिर शायद, हम दोनों के एक-से व्यक्तित्व की भ्रामक भूलभुलैया में भटक, देहरी से ही लौट गये। मैं समझ गयी, उनके हाथ में दूध का गिलास था, भूखी व्रतातुरा पत्नी की क्षुधा मिटाने ही शायद बार-बार झांक रहे थे।

थोड़ी देर में मामीजी ने कहा, "अरी, अब तू निबटा लेना, एक ही देहरी तो रह गयी है, मैं जाकर तेरे कमरे में एक झपकी ले लूं, अपने कमरे में लेटूंगी तो फिर वही भुन्न-भुन्न लगायेंगी लड़कियां—"

वे मेरे कमरे में सोने चली गयीं—इस बीच

शायद मामाजी भी मेरे कमरे में जाकर झांक आये और समझा होगा, अब मैदान साफ है—बहू तो लेटी है—मामीजी अकेली होंगी—

मैं कुछ कहती, इससे पहले ही मामाजी मेरे

आसन्न महाविपत्ति के मेघखंड को मैंने देखा और कांप गयी। एक क्षण का भी विलंब हुआ तो अनर्थ हो सकता था। मैंने गिलास पटका और एक प्रकार से मामाजी को धकियाकर अपने कमरे में आ गयी।

कंधे पर हाथ धरकर वहीं बैठ गये—"अरी ले, कब तक यों सर झुकाये ऐपन देती रहेगी—भूखी प्यासी है—ले न्यूणीया के यहां का बढ़िया मलाई डला दूध, स्पेशल औंटाकर लाया हूं—इलायची केसर किशमिश बादाम पड़ा दूध है—गटक जा जल्दी—" मेरे कंधे पर क्रमशः कठोर पड़ती वज्रमुष्टि ने बड़े अधिकार से मेरा दूसरा कंधा भी स्नेहसिक्त आलिंगन में कस लिया—कैसे कहूं—आज अपनी मूर्खता पर हंसी भी आती है—क्यों नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पलट सकी अपना सर्वनाशी घूंघट—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरी पी ले—," उन्होंने मुझे गिलास थमाया—भूखी तो थी ही, उस पर सास-विहीन गृह में किसी ने दिन भर दूध तो दूर, चाय को भी नहीं पूछा था। मैंने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया, उधर मामाजी की क्रमशः तीव्रतर होती जा रही सांसें, दंतहीन मुख के गह्वर से निकलती मेरे ढके कपोलों के निकट आती जा रही थीं—आसन्न महाविपत्ति के मेघखंड को मैंने देखा और कांप गयी। एक क्षण का भी विलंब हुआ तो अनर्थ हो सकता था—मैंने गिलास पटका और एक प्रकार से मामाजी को धकिया कर अपने कमरे में आ हांफती-कांपती मामीजी के पास लेट गयी।

अरी मेरे करमजली, ऐसा बढ़िया स्वप्न देख रही थी—सब नाश कर दिया जगाकर—"

मैं उनसे कैसे कह सकती थी कि यह स्वप्न तो मैंने भी अभी-अभी देखा है, किंतु सुस्वप्न नहीं दुस्वप्न !

बेचारे मामाजी—वे तो गोलाकवाम गये किंतु जो देव दुर्लभ दूध मुझे पिला उसके प्रणय ने अवश्य उनके लिए स्वर्ग के खोल दिये होंगे।

—८६, गुलिश्तां कालोनी, लखनऊ

ज्ञानगंगा

न राज्यं प्राप्तमित्येव वर्तितव्यमसाम्प्रतम्।
श्रियं ह्यविनयो हन्ति जरा रूपमिवोत्तमम्॥

(विदुर-नीति : २।१२)

मैंने राज्य प्राप्त कर लिया है यह सोचकर राजा को अनुचित व्यवहार नहीं करना चाहिए क्योंकि, अविनय (धृष्टता या अनीति) ऐश्वर्य का उसी प्रकार नाश कर देता है जैसे उत्तम रूप को बुढ़ापा नष्ट कर देता है।

अशोच्यानीह भूतानि यो मूढस्तानि शोचति।
स दुःखे लभते दुःखं द्वावनर्थौ निषेवते॥

(पंचतंत्रम् ३९४)

जो मूर्ख इस लोक में शोक न करने योग्य के प्रति शोक करता है; वह दुःख में दुःख पाता है और दो अनर्थों (एक नष्टादि से उत्पन्न और दूसरे; उसके पश्चात्ताप करने में उपवास आदि) का अनुभव करता है।

अहि अत्थं निवारितो, न दोसं वत्तुमर्हिसि।

(प्राकृत सूक्ति कोश)

बुराई को दूर करने की दृष्टि से यदि आलोचना की जाए तो कोई दोष नहीं है।

अतत्परनरस्यैव स्त्री सुखाय भवोत्सव
साहाय्यिनी गृह्यकृत्ये तां विनाऽन्या न विद्यते

(शुक्रनीति : १।१।

स्त्रियों में आसक्ति न रखनेवालों के लिए ही स्त्री सुख देनेवाली होती है, क्योंकि गृह कार्यों में उसके अलावा अन्य कोई दूसरी सहायता पहुंचानेवाली नहीं हो सकती है।

स्वभावविजयः शौर्यम्।

(भागवत ११।१९।३

स्वभाव पर विजय प्राप्त कर लेना ही शूरता है।

न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति

(शांतिपर्व १४०।२

बिना संशय (संकट, खतरा) में पड़े मनुष्य अपना उदय नहीं करता।

नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वाकृतम्

(शांति पर्व १७५।

मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि मनुष्य ने अपना काम पूरा किया या नहीं।

(प्रस्तुति : महर्षिकुमार पाण्डेय

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूफी कथा

दानव

गेहूं की फसल काटते समय एक गांव के किसानों ने देखा कि एक बड़ा गोल-गोल, काला-काला, मटका-सा धरती के ऊपर निकल आया है। किसानों की समझ में कुछ भी नहीं आया कि ये है क्या, क्योंकि उन्होंने इस तरह की चीज कभी देखी ही नहीं थी। आखिर, उसे देखने के लिए गांवभर के लोग इकट्ठे हो गये। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। तभी एक बुजुर्ग ने उसे देखकर कहा, 'मालूम पड़ता है कि कोई दानव है, जिसकी अभी खोपड़ी ही बाहर निकली है। जब पूरा बाहर निकल आएगा तो हम सब को मार खाएगा, इसलिए यहां से भाग चलो।'

लोग बुजुर्ग की बात सुनकर गांव ही छोड़कर भागने लगे। तभी उधर एक नौजवान राहगीर आ निकला। उनसे भागते हुए गांववालों से पूछा कि क्या बात है ? गांववालों ने उसे सब कुछ बता दिया तो उसने 'कहा, 'चलो, मुझे दिखाओ।'

गांववालों ने उसे दिखाया। वह समझ गया कि यह तरबूज है, जिसे इन गांववालों ने कभी नहीं देखा। उसने सोचा, इन भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाकर अपना प्रभाव जमाने का यह अच्छा अवसर है। उसने उन लोगों से कहा, 'हां, है तो यह दानव, लेकिन मैं इसे मारकर खा सकता हूं। कहते हुए उसने चाकू निकालकर उसे काट डाला और मजे से उसे खाने लगा।

दूर खड़े हुए गांववालों ने सोचा कि जब यह राहगीर दानव को मारकर खा सकता है, तो हमें भी मार सकता है, इसलिए उसे किसी न किसी तरह मार भगाना चाहिए। और लोगों ने उसे पत्थर मारने शुरू कर दिये। युवक को भगाकर अपनी जान बचानी पड़ी, लेकिन गांववालों का यह व्यवहार उसकी समझ में नहीं आया।

दूसरे साल फिर यही घटना घटी। इस बार एक बूढ़ा राहगीर उधर से गुजर रहा था। गांववालों ने तरबूज को दानव का सिर समझकर, फिर से उस बूढ़े राहगीर के सामने अपनी समस्या रखी। उसने समझदारी से काम लिया। उसने गांववालों को समझाया कि यह एक स्वादिष्ट फल है। उनकी सभी शंकाओं का समाधान करते हुए बताया कि कोई पक्षी कहीं दूर से इसका बीज इस खेत में छोड़ गया होगा और बीज समय पर पानी व खाद पाकर बड़ा हुआ और यह फल बन गया। उस राहगीर ने उस तरबूज को काटकर खुद भी खाया और गांववालों को भी खिलाया। इस तरह वह गांववालों को संतुष्ट करने में सफल ही नहीं रहा, बल्कि उनका आदर पाने में भी सफल रहा।

निष्कर्ष : जरूरत से ज्यादा उत्साह और चतुराई जान का बवाल बन जाती है, जैसा उस युवा राहगीर के साथ हुआ। इसी तरह निष्कपट भाव से किया गया कार्य दूसरों के लिए ही नहीं स्वयं के लिए भी लाभदायक होता है, जैसा उसे बूढ़े राहगीर के साथ गांववालों के व्यवहार से स्पष्ट है।

—अशोक आंद्रे

१५-सी, आराम बाग, नयी दिल्ली-११००५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी जासूसों की 'दीवानी' वह बदहवास भीड़

● डॉ. रामदरश मिश्र

मैं वाणी विहार में आया ही आया था। तब वाणी विहार बहुत कम बसा था और इसके आसपास की बस्तियां भी काफी खाली पड़ी थीं। मैं एक दिन अपने परिवार के साथ छत पर खड़ा था। एकाएक देखा कि आसपास कुछ हलचल मच रही है। मेरी छत पर से नजफगढ़ रोड तक आर्यसमाज रोड दिखायी पड़ रहा था।

मैंने देखा कि पूरे आर्य समाज रोड पर भग
मची हुई है। लोग भागते हुए इधर को ह
रहे हैं। बड़े-बूढ़े मोटे-पतले, नाटे-
स्त्री-पुरुष झुंड के झुंड चले आ रहे हैं
बिंदापुर गांव की ओर भागे जा रहे हैं।
पैदल है, कोई स्कूटर पर है, कोई आते-
रिक्शे को पकड़कर उधर हांक दे रहा
सायकिलों की तो गिनती ही नहीं। दो
अधेड़ मजदूर औरतों को बदहवास
देखा, जैसे उनका कोई आदमी थाने बंद हो
हो और पीटा जा रहा हो। एक बुढ़िया
के सामने गिर पड़ी और फिर उठकर
एक मोटा आदमी थुल-थुल-थुल
सा पेट लहराता हुआ भागा आ रहा था
दौड़ते-दौड़ते रास्ते में लेटे एक पिल्ले
टकराकर गिर पड़ा। पिल्ला 'पोऊं-पोऊं'
उसके पीछे हो लिया और वह मोटा
पीछा करते हुए पिल्ले को ढेला मारता
आगे की ओर दौड़ने लगा। छत
हंसते-हंसते हमारा तो बुरा हाल हो रहा

आलम यह था कि जो जिधर से
रहा था, उधर से बिंदापुर गांव की ओर
था। ऐसी भगदड़ दंगे-फसाद के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक

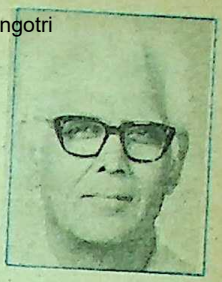

बदहवास लोगों की भीड़ एक दिशा की ओर भाग रही थी। स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, सभी तो थे उस भीड़ में। लेकिन यह दृश्य चिंता पैदा करने के साथ-साथ आनंद भी दे रहा था।

जाती है, किंतु दंगे-फसाद की भगदड़ में एक आतंक होता है-भागने वालों में भी और देखने वालों में भी। ऐसे समय में लोग झुंड के झुंड भागते हुए गली-कूचों में बिखर जाते हैं और विलुप्त हो जाते हैं किंतु इस भगदड़ में लोग गली-कूचों से निकलकर समूह-बद्ध हो रहे थे और समूह के रूप में लक्ष्य की ओर भाग रहे थे। इस भीड़ में आतंक नहीं था, एक कौतुहल था। 'हाय यदि हम पिछड़ गये तो दृश्य नहीं देख पाएंगे,' यह बेचैनी भी थी।

हम छत पर खड़े इस दृश्य का आनंद लेते हुए भी यह जानने को परेशान थे कि आखिर ये लोग जा कहां रहे हैं। किससे पूछा जाए ? सभी तो बदहवास भाग रहे हैं। तब तक हेमंत इधर-उधर घूमकर पता कर आया। उसने बताया कि हवाई छतरी से दो विदेशी जासूस उतरे हैं बिंदापुर गांव के आसपास। वे पकड़े गये हैं। लोग उन्हीं को देखने जा रहे हैं। हेमंत भी भीड़ में शामिल हो गया।

मैं सोच रहा था कि मुझे भी जाना चाहिए। लेकिन मैं प्रायः सोचने और करने के द्वंद्व में पड़ा रह जाता हूं तब तक समय निकल जाता है, आज भी यही हुआ। थोड़ी देर बाद देखा कि लोग लौट रहे हैं। जो लोग उत्साह से दौड़ते हुए गये थे, वे लोग भरे मन से धीरे-धीरे लौट रहे थे। हम लोग अब छत पर खड़े लौटने का दृश्य देख रहे थे और समझ नहीं पा रहे थे कि उमंगित भीड़ को लकवा कैसे मार गया। तब तक वही बुढ़िया घर के सामने से धीरे-धीरे सरकती हुई दिखायी पड़ी। मैंने पूछा, "क्या बात है ताई ? अभी तो बड़े उछाह में गयी थीं, अब मरे मन से क्यों लौट रही हो ?"

"अरे का बतावै बचवा, हम तो समझे थे कि ये कोई विदेशी जासूस है। अरे ई मुवे तो अपने ही देस के फौजी निकले जो छतरी से कूदने की परेकटिस कर रहे थे। भगवान इनका बेड़ा गरक करे, हमें नाहक इतना परेसान किया।"

हमारा तो हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया किंतु जब हंसी संभली तो एक प्रश्न ने आ घेरा—क्या अपने देश के फौजी सिपाहियों की अभ्यासजन्य निपुणता और कुशलता देखने की अपेक्षा विदेशी जासूस का पिटना देखना ज्यादा मूल्यवान था ? भीड़ की तमाशाई प्रवृत्ति का शायद यही सार्वभौम और सार्वकालिक रूप है।

—आर ३८ वाणी विहार, उत्तमनगर
नयी दिल्ली-११००५९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलना रातों-रात एक दूल्हे का दूल्हन में

● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

होली तो अपने में ही राग-रंग का अवसर है। गंभीर से गंभीर व्यक्ति भी इस अवसर पर वासंती 'मूड' में आ जाते हैं और कभी-कभी अपने को हास्यास्पद तक बना डालते हैं। पर यह वसंत जब बूढ़ों पर उतरता है तो गजब ढाता है। एक घटना को मैं अब तक चाह कर भी नहीं भूल पाता।

वे सबके बाबा लगते थे—गांवभर के। उम्र के साठ वर्ष उन्होंने शालीनता में ही काटे थे। होली के अवसर पर भी अबीर-गुलाल का रंग चाहे जितना उनके तन पर चढ़ जाए, मन के घोड़ों की लगाम उन्होंने कभी ढीली नहीं की थी। पर इस बार की होली, पता नहीं कौन हवा लेकर आयी कि इस बुजुर्ग की वर्षों की संजोई गंभीरता और शालीनता की कर गयी ऐसी की तैसी।

लगता है गुलाल से अधिक भंग के रंग ने ही सारे रंग को बदरंग किया था इस बार। भंग छानने के वह यों भी आदी थे। रोज शाम जब तक पूरा एक लोटा भंग नहीं उतार लेते गले के अंदर, तब तक खोये-खोये डोलते रहते—जैसे कोई चीज ही खो बैठे हों। पर होली के दिन विजया (भंग) को हाथ भी नहीं लगाने की कसम वह बहुत पहले खा चुके थे। पता [illegible] आज ही की तरह का कुछ ऐसा हादसा [illegible] समय भी गुजरा था, या कुछ और पर होली [illegible] अवसर पर कोई भंग का गोला उनको दि[illegible] तो वे ठीक उसी तरह भड़कते थे जैसे लाल [illegible] देखकर सांड। खैर, जबानी के दिनों में [illegible] ऊंच-नीच हो गयी हो, तो बात और है, [illegible] के इस काल, जब सिर से लेकर मूछों [illegible] केशों पर सफेदी पुत चुकी थी, ऐसा नहीं [illegible] था। हम लोगों का तो खैर भरपूर मन[illegible] हुआ और हंसते-हंसते कई क्षणों या कई [illegible] तक पेट में बल पड़ते रहे, पर वे बेचारे [illegible] गांव-घर के बाबा, वर्षों तक मुंह दिखा[illegible] रहे।

हुआ यह कि हम युवकों को गांव के [illegible] ने ताव दिला दिया कि 'होली में सबको बे[illegible] बनाते हो, पर बाबा को बनाओ तो जानें [illegible] बचाव का ऐसा कवच धारण करते हैं कि [illegible] दिन अपनी सदा की प्रिया 'विजया' को भी [illegible] नहीं लगाते। दूध का जला छांक फूंक [illegible] पीता है, अवश्य कुछ घटा होगा कभी कि [illegible] भी होली आते ही वे सतर्क हो जाते हैं। [illegible] भी ठान ही लिया कि इस होली में उन[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा का नशा बहुत कुछ उतर चुका था और किसी शरारती लड़के ने जब उनके सामने एक बड़ा-सा आइना लाकर रख दिया तो वे सामने वालों पर भूखे बाघ की तरह टूटे...

अपना मनोरंजन-केंद्र बनाना है।

सुबह के 'कीचड़-कादो' के बाद शाम के 'रंग-गुलाल' के समय युवकों ने जा पकड़ा उनको। उस समय वे भंग घोंट रहे थे। हमें आश्चर्य से अधिक प्रसन्नता हुई। काम अब बनकर ही रहेगा।

"होली पर तो भंग घोंटने को तोबा ही कर लिया था मैंने पर आज उस प्रतिज्ञा को तोड़ना ही पड़ा।" हमें देखकर वह खुद ही बोल पड़े।

"क्यों आज कोई विशेष बात है ?" हमने अपनी प्रसन्नता को दबाते हुए कहा।

"आज 'समधीजी' जो आ गये हैं संझौलीवाले, जिनकी लड़की से मेरे लड़के . . .।"

"अच्छा, अच्छा," हमने उन्हें बात पूरी करने का अवसर दिये बिना ही आरंभ किया, "तो उन्हीं के स्वागत की तैयारी है यह ?"

"साथ तो मुझे भी देना ही पड़ेगा," वे विवशता में भरकर बोले, "वरना समधीजी बुरा मान जाएंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बांछें खिल गयीं। अब बात बनकर रहेगी।

"इस बुढ़ापे में तो भंग घोटने में काफी कष्ट होता होगा। आप अंदर समधीजी के स्वागत में जाएं हम बाकी काम पूरा कर देते हैं।"

"इससे अच्छी बात क्या होगी ? बच्चों को बूढ़ों के काम आना ही चाहिए। पर हां, घोटने में कमी नहीं लाना, भंग और दही को जितना ही घोटो काम उतना ही अच्छा बनता है। मैं आया जरा समधीजी को देखकर।"

बाबा तो गये भीतर और हमारे बीच के शरारती लड़के 'बचनू' ने निकाली अपनी कमीज की पॉकेट से धतूरे के बीजों की एक पुड़िया और घोट दी उसे बाबा की भंग में—"रोज लोटेभर भंग चढ़ानेवाले का क्या होगा, चाहे कितना भी घोटो इसे। अब रंग चढ़ेगा उस बुढ़ऊ पर। धतूरे के ये बीज ऐसी चक्कर-घिन्नी खिलाएंगे इनके दिमाग को कि हमारी बात, बात की बात में बन जाएगी।"

बाबा बाहर आये अपने समधीजी के साथ।

"घुट गयी भंग ?" उन्होंने आते ही पूछा।

"अच्छी तरह," बचनू ने ही जवाब दिया, "अब रंग लायेगी यह।"

"मुझ पर खैर क्या कर रंग लाएगी यह विजया। रोज ही लोटाभर चढ़ाता हूं। हां, हमारे समधीजी को कुछ मजा आ जाएगा," बाबा ने फरमाया।

भंग दो लोटों में ढाली गयी।

'पहले आप, पहले आप' का चक्कर दोनों समधियों में शुरू हुआ, तो बात मैंने ही संभाली, "बाबा, दोनों में आप ही बुजुर्ग हैं, अतः पहले आप ही अपना लोटा खाली करें; समधीजी आपके बाद . . .।" बाबा [illegible] विवशता में अपना भाग गले के नीचे [illegible] पड़ा और उधर खुराफाती बचनू ने सबकी [illegible] बचाकर दूसरे लोटे को लगा दी धीरे से [illegible] लात और उसमें भरी भंग बह चली जमीन [illegible]

"हैं हैं यह क्या ? जिसके लिए भंग [illegible] उसी का हिस्सा . . .।" बाबा बड़बड़ा [illegible] समधीजी बोल पड़े, "कोई बात नहीं, और [illegible] लेंगे।"

और बाबा फिर बैठे भंग घोटने। पर [illegible] देर बाद ही भंग की तरंग रंग लाने लगी। [illegible] के सिल पर चलने के साथ-साथ सिर भी [illegible] दायें-बायें झूमने लगा, तो हम अपनी योजना [illegible] उतरे।

"बाबा, आज हम एक खास मकसद [illegible] आये हैं," बचनू ने ही आरंभ किया।

"बोलो, बोलो, इस बूढ़े से जो भी [illegible] करेगा। आज की शाम वह कुछ भी नहीं [illegible] रखेगा तुम्हारे लिए," बाबा ने झूमते हुए [illegible]

"बाबा, एक दूल्हे की आवश्यकता [illegible] हमने कहा।

"दूल्हा ? दूल्हा कहां से लाऊंगा मैं [illegible] आंगन में तो सात-सात बहुएं डोल रही हैं [illegible] सभी लड़कों की शादी तो . . .।" [illegible] जबान लड़खड़ाई।

"बाबा, जवान नहीं, बूढ़े दूल्हे [illegible] आवश्यकता है इस बार।" बचनू ने [illegible]

"बूढ़ा ? बूढ़े दूल्हे की क्या आवश्यकता [illegible] पड़ी ?" बाबा अब बात में रंग लेने लगे [illegible] निस्संदेह धतूरे के बीज सिर चढ़ बोल [illegible] थे।

"क्योंकि दूल्हन बूढ़ी है।" बचनू ने [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूल्हन बूढ़ी तो दूल्हा को भी बूढ़ा होना ही चाहिए, हा-हा-हा-हा . . . बाबा ने ठहाका लगाया, "ठीक . . . ठीक। पर खोज लो बूढ़ा दूल्हा। मैं कहां ढूंढने जाऊं ?"

"बूढ़े दूल्हे की ही खोज है, तो मेरे इस समधीजी से सुंदर दूल्हा कहां मिलेगा ?" बाबा के समधीजी ने ही प्रस्ताव दिया। उन्हें भी हमारे प्रस्ताव में आनंद आने लगा था।

"हां, हां बना लो मुझे दूल्हा . . ." बाबा ने झूमते हुए कहा, "पर दूल्हन बहुत बूढ़ी नहीं होनी चाहिए," बाबा की सदा की संजोई शालीनता को इस तरह जवाब देते देख हमारी प्रसन्नता की सीमा न रही। अब गांववाले भी हमारी बुद्धि का लोहा मान लेने को विवश होकर रहेंगे।

"दूल्हन तो बहुत बूढ़ी नहीं है बाबा, पर वह दूल्हा जरा खूबसूरत चाहती है। हम आपको सजाना चाहेंगे।" हमने प्रस्ताव दिया।

"हां, हां सजाओ, अच्छी तरह सजाओ। ऐसे भी मेरे बच्चों की मां को गुजरे बीसों वर्ष हुए। तबसे जीवन सूना-सूना ही लगता है। सजा दो मुझे आज अच्छी तरह कि दूल्हन एक बार मुझसे 'गठ-बंधन' करे तो फिर जीवनभर छुड़ाने का नाम नहीं ले।"

और हम बाबा को अंदर कमरे में ले गये सजाने। सजते-सजते वे नशे में आ, सो गये। सुबह जब सभी गांववालों के सामने कमरे का दरवाजा खोला गया तो बाबा दूल्हा के बदले दूल्हन बने बैठे थे। शरीर पर लाल रेशमी साड़ी, माथे में सिंदूर की मोटी रेखा, कलाइयों में दर्जन-दर्जनभर कांच की चूड़ियां, आंखों में कजरा और नाक में बड़ी-सी नथ। बाबा का नशा बहुत कुछ उतर चुका था और किसी शरारती लड़के ने जब उनके सामने एक बड़ा-सा आइना लाकर रख दिया, तो उस नीम-नशे में वे सामनेवालों पर भूखे बाघ की तरह टूटे और लोग उनकी गालियों की बौछार में भींगते हुए सिर पर पैर रख नौ दो ग्यारह हो गये।

—निदेशक, राजभाषा विभाग,
बिहार सचिवालय, पटना-१५

बस में महिलाओं के लिए आरक्षित सीट पर दो युवक बैठे हुए थे। एक ने देखा कि दूसरा अपनी आंखें बंद किये हुए है तो उसने पूछा, "क्या बात है, आपकी तबियत तो ठीक है, न ?"

"तबियत तो ठीक है।"

"तबियत ठीक है तो फिर आंखें क्यों बंद कर रखी हैं ?"

"इसलिए कि मैं सीट न मिलने पर किसी महिला को खड़े हुए नहीं देख सकता।"

***

"हरेक आदमी को चाहिए कि वह शादी करे।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि उसके आस-पास बहुत-सी गलत बातें होती रहती हैं, जिनमें से हरेक बात के लिए हर बार तो सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा सकता... कुछ के लिए दोषी ठहराने के लिए पत्नी भी चाहिए न !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद होली के

होली : सांप्रदायिक एकता का मनभावन त्योहार । मुगल काल में नवाब-बादशाह भी इस त्योहार को हर्षोल्लास से मनाते थे । प्रस्तुत है—होली संबंधी कुछ पद

नये हो खिलार, नये हौ रसिया अनोखे, नई भई ठकुराई
भलो बुरौ पहचानत नाहीं, एक हि बेर चले इतराई
नाऊं न जानौं, गाउं न बूझौं, ऐसी ब्रज में धूम मचाई
रसिक छैल रसभीने गिरधर, सदारंग सुखदाई

— नेमत खां 'सदारंग'

एरी नौंकु सूधे हम सों बोलि नारि
होरी में गुमान काम नहीं आवै, तू तौ मगध गंवारि
कहूं रंग कहूं अबीर गुलाल, कहूं कुमकुमा, कहूं पिचकारि
हंसि-हंसि फगुआ मांगियै मुख तें, अदारंग अंचरा डारि

— फीरोज खां 'अदारंग'

आवत ही फागुन ऐसे निलज भये
सब कैं देखत जह ढंग करत हौ प्यारे
जह होरी कैसें खेलत हो, गुलाल मसल
अपने मन के कारज आगे वारे
वे का कहैंगी अपने जिय में समझि ढीठ हो हारे
नूररंग हौं लाजन भींजी, मानि मेरी सिख
अब तोहि मेरी सौं, अब सरकि जारे

— 'नूररंग'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुं ओर कहत सब होरी हो हो होरी
पिचकारी छूटत उड़त रंग की झोरी
मधि ठाढ़े सुंदर स्याम साथ लै गोरी
बाढ़ी छवि देखत रंग रंगीली जोरी
गुन गाय होत 'हरिचंद' दास बलिहारी
वृंदावन खेलत फाग बढ़ी छवि भारी

— भारतेंदु हरिश्चंद्र

फागुन में बजत मृदंग, झांझ मुहचंग, बजावे चंग सखी हमजोली
गा रही रागिनी राग रंगीली होली
ले लेकर केसर अतर, करै तरबतर, सखी सरबसर मलें मुख रोली
हमदम से खेलें फाग भामिनी भोली
गुलबदन मदन मतवारी, कर लिये कुमकुमा भारी
भर-भर कंचन पिचकारी, तक-तक मारे नर-नारी
तक-तक मारें नर-नारी, कहें पिया-प्यारी, हमें दुख भारी सौत सुख पाती।
बालम बिन बारहमास नींद नहिं आती

— गणेश जीवन

रंग चुचात भये गात लाल बाला गुपाल महिं दबदोरी
खेल किशोरी, हंसे घनश्याम सखा दै दै खोरी
मगन ख्याली मिस्सर परमासिंह भये निरखि तिय सरबोरी
करैं निहारी, लाल कर छोड़ मैं बलिहारी तोरी
शेर :
हमें छोड़ो हरी तज दो निबोरी
कंपत है सीत बस सब देह मोरी

निरखि आधीन पन्ना लाल बाला
बिहंसि निज हाथ हरि चूनर निचोरी
बोले रूपकिशोर फाग रित में समीर मुख की ढोरी।
खेलें होरी, इतै ब्रजचंद उतै राधा गोरी

—पं. रूपकिशोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून-कोना

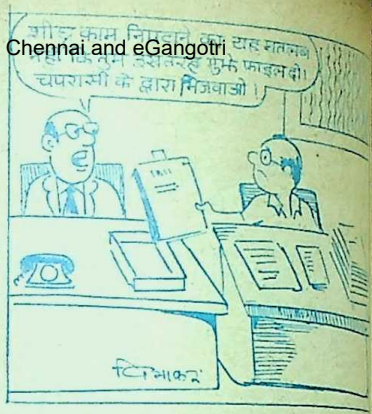

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसीबत एक पुरुष प्राध्यापक की महिला कॉलेज में

● सुभाष भेंडे

सयाने समझदार लोगों को चाहिए कि अपने शिक्षकीय जीवन का आरंभ, जो खास, महिलाओं के लिए हो, ऐसे कॉलेज से कभी नहीं करना चाहिए। और आपने , यदि वहां गलती से भी प्राध्यापक की नौकरी ले ली तो कुत्ते से भी बढ़कर हाल हो सकते हैं।

अच्छी तरह प्रथम कक्षा में एम.ए. पास कर राष्ट्रभाषा हिंदी सिखाने के लिए मैं 'होली घोस्ट वुमेंस कॉलेज' में प्राध्यापक के तौर पर दाखिल हो गया। बचपन से ही प्राध्यापक बनने का ध्येय मन में संजो रखा था। मेरे मामा तो स्वानुभव के आधार पर 'भीख मांगना पर कॉलेज में गदहपच्ची मत करना', ऐसी सलाह दिया करते थे, लेकिन मैं बिलकुल नाउम्मीद नहीं हुआ।

बी.ए., एम.ए. के दोनों इम्तहान में प्रथम कक्षा में उत्तीर्ण होकर मैं प्राध्यापक की नौकरी के लिए अर्जियां देने लगा। तभी 'होली घोस्ट वुमेन्स कॉलेज' से इंटरव्यू कॉल आयी।

नख-शिख शुभ्र पोषाक में सजी देवियों ने मेरा साक्षात्कार लिया। उनमें से एक कॉलेज की प्रिंसिपल थी और दूसरी वाइस प्रिंसिपल थी, इतना पता चला, वरना पांचों को मेरे सामने खड़ा करके 'आइडेंटिटी परेड' ली जाती तो किसी को पहचानना मेरे लिए मुश्किल हो जाता। कॉलेज में सभी लड़कियां ही हैं, यह बात पांचों मुझसे बार-बार क्यों कह रही हैं, समझ में नहीं आता था। और फिर 'हिंदी के लिए लेडी लेक्चरर नहीं मिलती, अतः आपको लेना पड़ा' यह बात मेरी नियुक्ति के समय बार-बार क्यों दोहरायी गयी, इस बात का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हल मैं ढूंढ़ नहीं पाया।

कॉलेज का पहला दिन आ गया। जिस दिन की मैं इतने अरसे से उत्साहपूर्वक प्रतीक्षा करता था, उस महान दिन का आगमन हो गया।

कॉलेज पहुंचकर मैं ज्योंही स्टाफरूम में दाखिल हुआ, तो सभी ने मेरी दिशा में ऐसी नजरों से देखा गोया मैं किसी कांच की दुकान में दाखिल होनेवाला बुत न होऊं। खिसियाना-सा होकर मैंने रूम के कोने में एक कुरसी का सहारा लिया। टेबल पर बैग रखकर मैं अपने 'कलीग्स' की ओर देखने लगा। ऊंचे स्वर में उनके वार्त्तालाप चल रहे थे—

"साखरकर, तुम्हारी साड़ी तो बड़ी सुंदर है। कौन-सी है, ट्विंकल नाइलोन की है क्या ?"

"हां, तो !

"कितने में ली ?"

× ×

'क्यों परेरा, आज बिलकुल पॉश में ? हेअरस्टाइल तो ऐसी गोया लीं मेकलीन से होड़ लेनी हो !"

× × ×

"अरे, इनामदार बाई ! आपके तो बिलकुल मजे हैं, भई !"

"क्यों, किस बात से मिस डेंगले ?

"यह देखिए न, तीन महीने छुट्टी 'एक्स' की और कुछ ही दिनों में फिर से तीन महीने बा-तनख्वाह मेटर्निटी लीव !"

"लेकिन इनामदार बाई भारी चालाक है मेटर्निटी लीव मार्च-अप्रैल में शुरू होती, ज्यादा छुट्टी नहीं मिल सकती।"

"हां, पति-पत्नी ने बराबर की प्लानिंग है, सोच-समझ-कर !"

उस बात पर तमाम महिलाएं ही-ही कर हंसने लगीं। मेरी तो किसी के साथ न पहचान थी और न ही मेटर्निटी लीव— जैसे नाजुक मामले में मुझे कोई दिलचस्पी थी। साड़ियों के विषय में भी मैं बिलकुल अनजान था।

उस वक्त तो मैं अहाते में सुखाये गये पदार्थ-जैसा बन गया था। पानी में गिरी तेल की बूंद पानी में रहकर भी अलग बनी रहे, ऐसा ही कुछ हाल था।

आखिर घंटी बजी और मैं इंटर आर्ट्स की कक्षा में पढ़ाने के लिए दाखिल हुआ। पचास-साठ चिड़ियाएं एक साथ चीं-चीं करने लगीं। मेडम की अभ्यस्त लड़कियां मेरा मुंह देखकर खेत का बुत देखा हो, ऐसे ठगी-सी रह गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने अपने विषय की प्रस्तावना पेश की। हिंदी राष्ट्रभाषा है, अतः हरेक को सीखनी चाहिए, आदि बातें उत्तर प्रदेश के किसी भैया के ठाठ से समझा दीं। उसके पश्चात् किसी भी विषय की पढ़ाई पहले दिन से ही शुरू कर देनी चाहिए, यह बात उनके दिमाग में ठुंसने का प्रयत्न करने लगा। तभी एक फ्रॉक पहने चुलबुली लड़की ने कहा, "लेकिन सर, आज तो मुझे बिलकुल फुरसत नहीं है।"

मैं चौंक उठा। फिर भी मुसकराते हुए पूछा, "क्यों?"

"आज मुझे सिनेमा देखने जाना है।"

"अच्छा! कौन-सी पिक्चर है?"

"किस द् गर्ल्स एंड मेक देम डाय!"

हास्य का एक फव्वारा-सा उछला। उस लड़की ने पास की दो-चार लड़कियों के सामने 'नेत्र-पल्लवी' की। एक और लड़की खड़ी हो गयी और बोली, "मैं आज हिंदी फिल्म में जानेवाली हूं, जिसमें धर्मेंद्र है न, वही।"

"अच्छा!" मैं खिसियाना-सा दिखायी न दूं, इसके लिए जी-जान से प्रयास कर रहा था।

"सर, यह नहीं पूछा कि, कौन-सी पिक्चर?"

"कौन-सी?" मैंने यांत्रिक रूप से प्रश्न किया।

"आया सावन झूम के।"

पुनः आंखें पटपटाने की खिलवाड़ और उसी के साथ हंसी का फव्वारा!

"बचकाना बातें बहुत हो गयीं, अब!" मैं ऊंची आवाज में चीख उठा, "आप लोगों को कुछ पूछना हो तो पूछिए। आज पहला दिन है। पढ़ाई की शुरूआत नहीं करेंगे, बस!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक शंका है मैडम !"

"माय गॉड मैडम यानी !"

"अच्छा बाबा, सर तो सर !"

"क्या कहना चाहती हो ?" मैंने गंभीरता से पूछा।

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, तो वॉट अबाऊट वुमेन ? स्त्रियों के बारे में क्या कहेंगे ?"

लेकिन तभी गजेंद्रमोक्ष करनेवाले भगवान विष्णु की तरह घंटी बजने की आवाज मेरी मदद के लिए आ गयी और मैं क्लास से बाहर निकल गया। स्टाफरूम में जाकर ठंडे पानी के दो-तीन गिलास पेट में उंडेलने के बाद कुछ राहत-सी मिली। टेबल के पास मिसेज साखरकर थीं। उन्होंने पूछा, "आज पहला ही लेक्चरर था, क्यों ?"

"जी ! मैंने कहा !"

"किस क्लास में था ?"

"इंटर आर्ट्स में !"

"अच्छा ! वह क्लास तो अच्छी है ! बाकी क्लास की लड़कियां तो ऐसी शैतान हैं कि कोई नया प्रोफेसर जाए तो उसके होश-हवास उड़ा दें !"

मैं मन ही मन 'ओ बाप रे !' बोल उठा।

लेकिन एक दफा पढ़ाई की शुरूआत हो गयी और मैं कॉलेज में परिचित हो गया, तो सब कुछ सहज गति से चलने लगा। हिंदी पर प्रभुत्व और वक्तृत्व में माहिर होने से मुझे धीरे-धीरे सब रास आ गया। लड़कियां अब अपने आप 'डिफीक्लटीज' पूछने के लिए आने लगीं। रास्ते में मिलने पर 'गुडमॉर्निंग' करने लगीं।

एक दिन प्रिंसिपल ने मुझे बुला भेजा। किस काम के लिए बुलाया होगा, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

"बैठिए, आप से दो-चार बातें करनी हैं।"

"मुझसे ?"

"हां, आप ही से ! वैसे तो स्टाफरूम में कह दिया जाता है, लेकिन यह सूचना सिर्फ आपके बारे में है।"

मैंने सिर हिला दिया। वह कहना क्या चाहती है, समझ में नहीं आ रहा था।

"हमारे होली घोस्ट वुमेन्स कॉलेज में अनुशासन को काफी महत्त्व दिया जाता है।"

"जी !"

"आपके सिर पर इसे संभालने की जिम्मेदारी ज्यादा है। क्यों ? यह कहने की आवश्यकता नहीं।"

"जी !"

"कॉलेज में आनेवाली लड़की की उम्र बड़ी विचित्र होती है। आपके पास कोई 'डिफीक्लटीज' लेकर आये तो भी ज्यादा एंकरेज न करें।"

मैं स्तंभित रह गया। कुछ बोल नहीं सका।

"और कपड़ों के बारे में जरा ध्यान दें।"

"किसके ?"

"आपके अपने ! टाइट पेंट, रंगबिरंगी शर्ट आदि वेशभूषा, जहां तक हो सके दूर रखें।"

"लेकिन लड़कियां टाइट स्कर्ट...)!"

"उन्हें वह शोभा देता है। वे लोग स्टूडेंट्स हैं। आप टीचर हैं।"

अब इस मामले में मैं भला क्या कह सकता था ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और एक बात का खयाल रखें। हमारे कॉलेज की कई लड़कियां रईस घराने की हैं। वे कभी लिफ्ट दें, तो भी मत लीजिए।"

मैंने एक-दो बार लिफ्ट ली थी, यह बात उसके ध्यान में आयी होगी।

"ठीक है।" मैंने ओठों से कह दिया।

"और कॉलेज कैंपस में अकेली लड़की के साथ कभी खड़े मत रहिए।"

"और कुछ ?"

"फिलहाल तो इतना ही। समय आने पर सूचना देती रहूंगी।"

मैं क्षुब्ध होकर स्टाफरूम में आ गया।

"क्या कहा उस चाची ने ?" इनामदार बाई पूछने लगी।

"कौन चाची ?"

"अपनी प्रिंसिपल ! बड़ी खराब है। पिछले साल मैं मेटर्निटी लीव पर थी, तो कमर के दर्द की वजह से चार दिन छुट्टी बढ़ानी पड़ी, बस उसने चार दिन की पगार काट ली।"

मुझे इनामदार बाई के कमर के दर्द के बारे में उत्सुकता नहीं थी। अतः मैंने विषय को आगे नहीं बढ़ाया।

जब से प्रिंसिपल के साथ मेरी मुलाकात हुई, तब से मैंने निश्चय कर लिया कि स्टाफरूम के प्रति ज्यादा ध्यान देना चाहिए। क्लास में गंभीरतापूर्वक लेक्चरर्स देना, लड़कियों के द्वारा पूछे गये सवालों का जवाब देना और बाकी जो समय बचे वह स्टाफरूम में व्यतीत करना। स्टाफरूम में विचारों के आदान-प्रदान से ज्ञान-समृद्धि होगी, ऐसा मेरा अनुमान था।

मैं स्टाफरूम में एक कोने में बैठता था। इसके बजाय अब टेबल के पास ही कुरसी

डालकर बैठने लगा। इस वजह से लेडी टीचर्स के संवाद और निकटता से सुनायी देने लगे।

"अरे, मिस डेंगले, दो-चार दिन क्यों दिखायी नहीं दीं ?"

"नागपुर गयी थी।"

"हूं, समझ गयी देखने-दिखाने के लिए ही न ?"

"इश्श !"

× × ×

"अरी साखरकर !" तभी इनामदार बाई आ गयी, "परेरा के बारे में पता चला ?"

"किस बात का ?"

"उसने अपने से बीस साल बड़े ऐसे एक प्रौढ़ आदमी के साथ ..."

"अय्या, यानी कि जेकी-केनेडी और एरिस्टोटल ओनेसिस-जैसा ही किस्सा, है न ?" उसी के साथ हंसी का फव्वारा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गप्प-गोष्ठी में मैं कहीं शामिल नहीं हो सकता था। मेरी स्थिति दूध की अलमारी में रखे नमक के मर्तबान-सी हो गयी थी।

● ● ●

एक दफा मैंने सहजभाव से गायकोंडे बाई से कहा, "हमें शिक्षकीय तौर पर प्रगति करनी हो, तो सिर्फ लेक्चर्स पर संतुष्ट होकर बैठे रहने से नहीं चलेगा। हमें अलग-अलग विषयों पर सेमिनार करने चाहिए। बाहर के कॉलेजों के प्रोफेसरों को बुलाकर 'डिबेट्स अरेंज' करने चाहिए।"

गायतोंडे बाई ने मुंह बिचका दिया, "देखिए, नियत किये गये लेक्चर्स से निबटते ही हमारा दम निकल जाता है। उस पर फिर से मनार, डिबेट्स के लफड़े कौन करे? अरे बाबा, यहां इतनी बकझक, और घर में जाओ तो वहां मेहमानों की आवन-जावन, बच्चों की

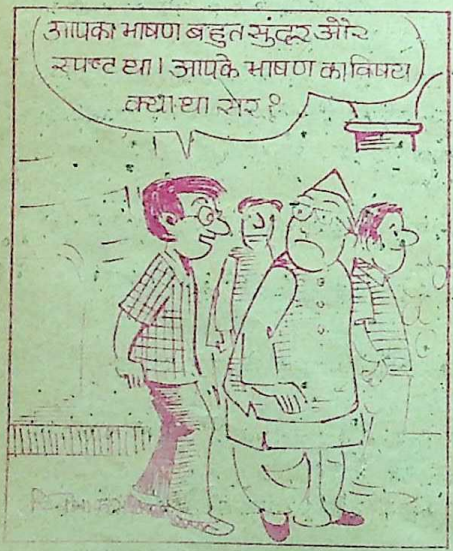

देखभाल, संसार की हजार बातें होती हैं, ... लोगों को क्या है?"

मैंने मर्द होकर गलती जो की थी। मेरे लटके हुए चेहरे को देखते हुए उन्होंने कहा, "और यह सोचते हैं कि लड़कियां ऐसे कार्यक्रमों में उपस्थित रहेंगी? अरे यह सेमिनार कोई फैशन शो थोड़े ही है? और डिबेट यानी बॉलडांस का प्रोग्राम तो नहीं। आखिर, लड़कियां यानी लड़कियां ही ठहरीं। आगे जाकर इनमें से अधिकतर लड़कियों को चूल्हा-चौका और बच्चों को ही संभालना होगा। डिग्री हाथ में आते ही छुट्टी। ... माथापच्ची करने के लिए कोई तैयार नहीं है।"

मैं निरुत्तर हो गया।

गायकोंडे बाई ने मेरी सूचना ... प्राध्यापिका मंडली में फैला दी। सबके चेहरे ऐसे कड़ुए हो गये, गोया क्विनाइन की गोली खायी हो!

"बेकार की भेजामारी करने के लिए इन्हें किसने कहा?"— यह सर्वसाधारण की प्रतिक्रिया थी। मुझे तो समझना था, समझ गया। फलतः स्टाफरूम में मेरा और ... अवमूल्यन हो गया।

तुरंत ही एक दिन प्रिंसिपल बाई ने मुझे बुलाने भेजा। ढीली पैंट और सफेद शर्ट ठीक करते हुए मैं उनसे मिलने गया।

"कोई खास बात?"

प्रिंसिपल बाई ने चेहरे को लंब-गोल किया। चश्मा ठीक किया, "आपके विषय में बहुत कुछ सुनने में आया है।"

"मेरे विरुद्ध?"

"हां, अपने मिस डेंगले के आगे ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा था ?"

"मैंने ?" मैं चीख उठा। कुमारी डेंगले—एक स्त्री रूपधारी पुरुष पर मैं कुछ 'कामेंट्स' करने जा रहा था, लेकिन मुंह बंद ही रखा।

"यह कहा किसने ?"

"खुद उसने। अन्य प्रोफेसरों ने भी 'कनफर्म' किया।"

"क्या कह रही हैं, आप ?"

"यही नहीं, पर सुना है, आप लड़कियों के साथ घंटों-घंटोंभर बात करते रहते हैं। कहीं बाहर मिल जाएं तो उन्हें होटल में ले जाते हैं। लिफ्ट दें तो 'एक्सेप्ट' कर लेते हैं....।"

"मुझे तो आपके पास ही इन बातों का पता चला।"

"और मुझे आपके क्लास के पास से पता चला। और उनके पास आप पर गलत आरोप लगाने की कोई वजह नहीं होगी।

मैं कुछ देर स्तब्ध बैठा रहा। मन ही मन तार मिला लिये। गुत्थी सुलझ गयी और मैंने प्रिंसिपल से 'कहा, "ठीक है, आप 'रिजर्व माय कोमेंट्स'। इसका एक ही उपाय है।"

"कौन-सा ?"

"मेरा इस्तीफा.... ?"

दूसरे दिन अपनी बहन के हाथ मैंने इस्तीफा भेज दिया।

'होली घोस्ट वुमेन्स कॉलेज' के पुनः दर्शन करने की मेरी इच्छा नहीं थी।

(अनु. सुशीला जोशी)

एक व्यापारी ने दूसरे व्यापारी को बार-बार लिखा कि वह उसके रुके हुए भुगतान को जल्दी से जल्दी चुकता करे, लेकिन दूसरे व्यापारी ने कोई उत्तर ही नहीं दिया। अंत में हारकर उसने एक बहुत ही विनम्र पत्र लिखा और उसके साथ अपनी छोटी-सी बेटी का फोटो भी भेजा जिसके नीचे लिखा—'इसके लिए मुझे पैसा चाहिए।'

तत्काल ही दूसरे व्यापारी का जवाब आया। उस जवाब के साथ भी एक फोटो लगा था, जो एक सुंदर नवयुवती का था आधुनिका फोटो के नीचे लिखा था—'इसके कारण ही मैं आपका भुगतान चुकता नहीं कर पा रहा हूं।'

***

"तुम्हारे पास पैसे की कभी तंगी नहीं रहती, बल्कि हर समय तुम्हारी जेबें भरी ही रहती हैं, इसका राज क्या है ?"

"इसका राज यह है कि मैं पुराने कर्जे कभी चुकता ही नहीं।"

"और नये कर्जे ?"

"नये कर्जों को नया रहने ही नहीं देता, उन्हें पुराना हो जाने देता हूं।"

***

साक्षात्कार में उम्मीदवार से पूछा गया, "यह बताइए कि किसी कंपनी में प्रबंध-निदेशक से ऊंचे दो अधिकारी कौन होते हैं ?"

उम्मीदवार ने तत्काल उत्तर दिया : "एक तो प्रबंध-निदेशक की श्रीमती और दूसरे, कर्मचारी यूनियन का अध्यक्ष।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य में नर्मों की समृद्ध परंपरा रही है। नर्मों के सहारे व्यंजनात्मक चुटीले हास्य का आस्वाद लिया जा सकता है। आचार्य क्षेमेंद्र ने सामाजिक दोषों के परिहार के लिए नर्मों की रचना की थी।

नर्म अथवा परिहास-वाक्य। पर ऐसा परिहास-वाक्य जो उथला नहीं होता वरन श्रोता के साथ-साथ वक्ता के भीतर भी उदार, गंभीर तथा रुचिर मुसकान बिखरने में समर्थ होता है।

आज की भाषा में नर्मों को चुटकुलों की तरह ही आनंद देनेवाले प्रसंग कहा जा सकता है।

संस्कृत साहित्य में नर्मों की समृद्ध परंपरा रही है। वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग के निदेशक आचार्य भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' की कृति 'नर्मसप्तशती' में नर्मों की परंपरा की विस्तार से चर्चा की गयी है। वागीश शास्त्री ने 'नर्मसप्तशती' के सादृश्य पर इस कृति का नाम 'दुर्गासप्तशती' रखा, संभवतः इसलिए कि सन १९७० में विजयदशमी के अवकाश में इस विधा पर लेखनी चलाने का उनके मन में

'नर्म सप्तशती' : पुरानी परंपरा : नया परिवेश

वे हास्य के माध्यम से सामाजिक दोषों को दूर करना चाहते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प उठा। नौ वर्ष बाद विजयदशमी के अवकाशकाल में ही वह पूर्ण हुई और उसकी मुद्रण समाप्ति भी विजयदशमी के पर्व पर हुई। इस कृति के प्रकाशन के लिए शिक्षा एवं संस्कृति-मंत्रालय ने आर्थिक अनुदान की स्वीकृति भी विजयदशमी के पर्व पर दी।

लेखक 'उपोदघात' में बतलाते हैं 'प्रतीत होता है प्राचीनकाल में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अमात्य के अतिरिक्त विदूषक का पद नर्म सचिव के रूप में बनाया गया था। उस पद पर विद्वान के साथ-साथ व्यवहार-कुशल ब्राह्मण की नियुक्ति की जाती थी। वह राजा अथवा नायक के साथ सखा बनकर रहता था तथा मनोविनोद के माध्यम से कठिनतम समस्याओं तक को सुलझा देता था। दशरूपक में विदूषक का कार्य हास्य बताया गया है। इसी कार्य के लिए वह वेतन पाता था। वह इतना सहृदय होता था कि बिना वेतन के भी अपने मित्र के काम आता था। इसलिए उस समय हास्य की स्थिति उत्पन्न करना साधारण कार्य नहीं माना जाता था। कर्पूर चूड़ामणि में विदूषक की 'एकदेश विद्य', 'खिलौना' और 'अत्यंत विश्वस्त' बताया गया है।

कोशों तथा कुछ अन्य संस्कृत ग्रंथों में विदूषक के लगभग पच्चीस पर्यायवाची शब्द मिलते हैं। ये हैं—१. नर्म सचिव २. कर्मट, ३. नर्म सुहृदय, ४. वासंतिक, ५. केलिकेलि, ६. वैश्वासिक, ७. प्रहासी, ८. प्रीतिद, ९. परिहासक, १०. नर्म कुशल, ११. विदूषक, १२. चाटुवटु, १३. पीठकेलि, १४. षिगुडे, १५. कलीक, १६. वट्प्रज्ञ, १७. भविल, १८. छिदुर, १९. कामकेलि, २०, विदग्ध, २१. नागर, २२. पल्लविक, २३. भंगिल, २४ विट और २५. पीठमर्द। वीरभद्रदेव ने विट, पीठमर्द तथा विदूषक के भिन्न-भिन्न लक्षण बताये हैं।

नर्म सचिव के प्रति अप्रिय वचन बोलना नीतिशास्त्र के विरुद्ध माना जाता था।

क्षेमेंद्र का योगदान

कश्मीर-केसर-तिलक कवि क्षेमेंद्र ने संभवतः प्रथम बार नर्मों को उद्देश्यपूर्ण बनाया और सामाजिक दोषों को दूर करने के लिए उनका उपयोग किया। उनके पूर्व के संस्कृत साहित्य में नर्म विधा को लेकर छिटपुट श्लोक प्राप्त होते हैं, लेकिन वे सुरुचिपूर्ण नहीं हैं। कवि क्षेमेंद्र ने पहली बार 'नर्ममाला', 'देशोपदेश' और 'कलाविलास' नामक अपने ग्रंथों में तात्कालिक समाज के दोषों को दूर करने के लिए कपण, कुट्टिनी, ज्योतिषी, गौड़ देशीय छात्रों एवं कर्मचारियों के स्वाभाविक तथा रोचक चित्र खींचे हैं। क्षेमेंद्र ने लिखा है कि हास व्यपदेश युक्ति द्वारा उनके काव्य का मुख्य लक्षण है— हास्य से लज्जित होकर किसी भी पुरुष का दोषों में प्रवृत्त न होना। क्षेमेंद्र कहते हैं कि इस प्रकार के साहित्य-सर्जन का यह स्वयं उनका उद्यम है।

नर्म प्रत्येक श्लोक या श्लोक-समुदाय में हास्य की पूर्ण व्यंजना को उपस्थित करता है। अतः उसमें चुटकी बजाते ही व्यंजनात्मक, चुटीले शिष्ट हास्य का आस्वाद लिया जा सकता है। अन्य हास्यों से क्रोध, द्वेष, मनोमालिन्य या प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो सकती है। किंतु नर्म एक ऐसी विधा है, जिसमें वक्ता दोष-ग्रस्त व्यक्ति से कुछ नहीं कहता। वह तो व्यक्ति और समाज के दोषों को कथाओं या अन्योक्तियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रय लेकर इस प्रकार करता है कि उसमें एक अलौकिक रस उत्पन्न हो जाए, जो पाठक या श्रोता के चित्त को गुदगुदाकर मुसकराहट के साथ आनंद उत्पन्न कर दे।

वागीश शास्त्रीजी ने अपनी इस कृति में अनेक रोचक नर्म दिये हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनके कुछ नर्म :

गुरु, "सुवाच्य अक्षर लिखने की कोशिश किया करो।"

छात्र, "गुरुजी, वैसा करने पर आप बहुत-सारी गलतियां निकालने लगेंगे।"

* * *

अध्यापक, "जब पानी बर्फ में बदल जाता है तब बताओ उन दोनों में क्या अंतर आ जाता है।"

छात्र, "दोनों की कीमत में अंतर पड़ जाता है।"

* * *

फलों के बोने के विषय में समझाकर अध्यापक ने पूछा, "क्या तुममें से कोई विद्यार्थी उस शुभ समय के विषय में जानकारी रखता है जिसमें फल भी तोड़ लिए जाएं और हानि भी न हो।"

विद्यार्थी, "जी, जिस समय माली उपस्थित न हो, फल तोड़ने का वही सर्वोत्तम समय होता है।"

* * *

पत्नी, "क्या मेरा पकाया जायकेदार भोजन तुम्हें अच्छा लग रहा है?"

पति, "हां जी, हां जी, बहुत खूब।"

पत्नी, "आज पकाये पदार्थों में से कौन-सा पदार्थ तुम्हें सबसे अधिक पसंद आया?"

पति, "बेल का वही मुरब्बा, जो कल बाजार से मैंने खरीदवाया था।"

* * *

तारबाबू की घरवाली झगड़ालू थी। वह कुछ घंटे बड़बड़ाती रही किंतु पति तब भी चुप्पी लगाये रहा, जब वह गुस्सैल स्त्री क्रोधपूर्वक पति से बोली, "तुम मेरी बात ध्यान से क्यों नहीं सुनते। अतः तुम बड़ी देर से लगातार क्या सोचे चले जा रहे हो?"

पत्नी की बात सुनकर तारबाबू का सहसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान भंग हुआ और जागरूक होकर बोला, "तुम्हारे शब्दों का हिसाब लगा रहा हूं। अजी, यदि उन सबको तार से भेजा जाए तो तुम्हारा दो सौ रुपयों का खर्च तो पड़ ही जाएगा।"

* * *

पिता, "बिटिया, वह युवक यहां बार-बार क्यों आता है। उसका आना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। क्या मां ने इस विषय में तुम्हें कुछ भी नहीं बताया?"

पुत्री: "उन्होंने यह जरूर कहा था कि आप भी इसी प्रकार आवारा रहा करते थे।"

* * *

बहुत दुःखी कुमारी युवती पुरुषों को कोसती हुई बोली, "आदमियों की यह कौम बिलकुल धोखेबाज होती है।"

उसकी सखी ने उससे पूछा, "किस कारण आज तुम्हें क्रोध चढ़ा है?"

कुमारी सखी, "अजी, मुझे तीन पुरुष चाहते हैं। अच्छा योग समझकर मैंने तीनों को आज ही बुलाया है। किंतु अजी, तीनों में से एक भी मेरे यहां नहीं पहुंचा। हे सखी, मुझे लगता है कि मैं अकेली एक साथ तीनों को चाहती हूं, इस रहस्य को उन लोगों ने जान लिया है।"

* * *

सखी, "क्या करूं सखि, एक युवक मुझे हर दिन खूब तंग करता है।"

दूसरी सखी, "वह क्या चाहता है?"

पहली, "विवाह चाहता है वह।"

दूसरी, "कर लो।"

पहली, "मर जाए वह।"

दूसरी, "ए लो, विवाह के चार-पांच महीने पश्चात तो वह गले में फांसी लगाकर मर ही जाएगा। सखि, विवाह कर लो।"

* * *

मित्र, "दोस्त, तेरह की संख्या निश्चय अमंगल है।"

दूसरा मित्र, "हां जी, (तभी तो) तेरहवीं शताब्दी के सबलोग मर गये।"

* * *

वक्ता बोला, "लोग कहते हैं कि मेरा भाषण बहुत लंबा होता है।"

मित्र श्रोता, "नहीं जी, तुम्हारा भाषण लंबा नहीं होता। केवल लंबे के समान लगता है।"

प्रस्तुति : विभूश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले मंच का पहला पसीना !

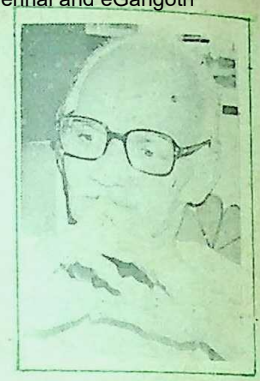

हर कवि लिलीपुट नजर आ रहा था !

● के. पी. सक्सेना

यादों की राख कुरेदने बैठो आप, तो कितनी ही टिमटिमाती चिनगारियां हाथ लग जाएंगी ! इन चिनगारियों को फूंकने का अपना अलग मजा है ! आज हिंदी के हास्य-व्यंग्य कवि-सम्मेलनों में गद्य रचना पाठ मुक्त कंठ से सराहा जाता है ! पिछले पंद्रह वर्षों में देश का कोना-कोना झंका दिया है कवि-सम्मेलनों ने ! पर वह पहला कवि सम्मेलन ? मेरे बाप की तौबा ! बनियान तर हो उठती है पसीने से ! सामने हॉल में हजारों श्रोता माइक पर इकलौता मैं ! वह भी बंबई में !

आयोजक को जाने कैसे सूझी कि मंच पर गद्य-व्यंग्य पढ़वाया जाए ! खुशी-खुशी सीने का क्षेत्रफल डेढ़गुना करते हुए लखनऊ से बंबई पहुंचे ! पर वहां जो होटल में हास्य-व्यंग्य के दिग्गज कवियों का जमावड़ा देखा तो शरीर की सारी हवाएं रुख्सत हो गयीं ! बिड़ला मातुश्री सभागार में कवियों को भयंकर रूप से जमते देखा तो कलेजा सूख गया...हलख सूख गया ...प्राण सूख गये !

पब्लिक भी बेहद उखाड़ू थी ! हम बगलें झांक रहे थे कि कोई गली मिले जो सीधे लखनऊ वापस जाती हो ! एक हास्य कवि हमारी हालत का पतलापन भांप गये ! कान में बोले— 'दद्दा, पीछे ग्रीन रूप में हो आओ।' मारे घबराहट के हम ग्रीन रूम में सरक गये !

जिंदगी का वह पहला मगर जादुई छोटा पेग

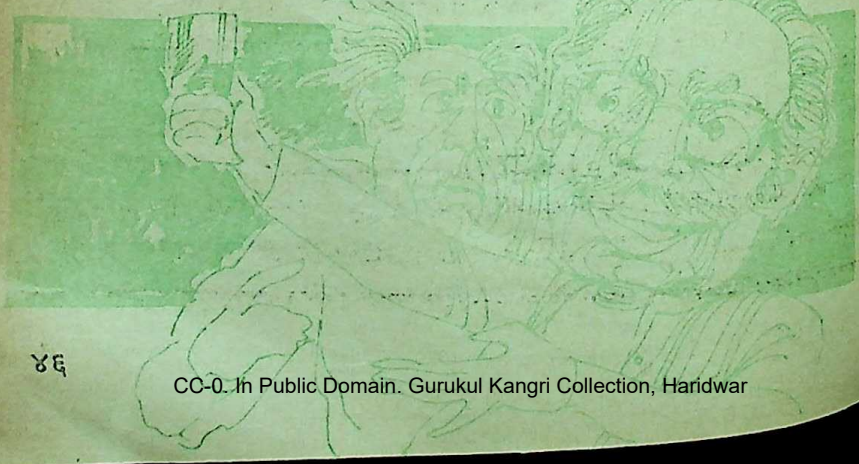

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ! किस्सा कोताह, मंच पर सबके जो पाँव तबक रौशन थे ! शरीर में भाखड़ा नांगल की खानी जारी थी ! हर कवि लिलीपुट नजर आ रहा था। हमें पुकारा गया ! उस वक्त हम नहीं, जाने किस के. पी. सक्सेना ने माइक साधा ! माइक पकड़ने के लखनवी अंदाज पर ही तालियां पिट गयीं। रचना पढ़ी....जाने कब तक एक पंक्ति रिपीट करते रहे ! आपकी कसम, हमें कुछ याद नहीं ! उस वक्त हम 'हम' नहीं थे...जाने कौन था ?

अगली सुबह संयोजक के घर सब को नाश्ते पर जाना था ! उनका मुंह फूला था ! हमने डरते-डरते प्रतिक्रिया पूछी ! कुछ नहीं बोले : अखबार का तीसरा पन्ना हमारे सामने फेंक दिया ! मोटी हेड लाइन में छपा था— 'सक्सेना स्टील्स द शो इन हिज फर्स्ट अपीयरेंस !' हमारी आंखों में आंसू डबडबा आये : संयोजक ने गले-गले डूब कर हमें सीने से लगाया ! साथी कवियों ने बधाई दी। ग्रीन रूम का रास्ता दिखानेवाले कवि मंद-मंद मुसकरा रहे थे।

आज पंद्रह साल होने को आये कवि सम्मेलनों के मंच पर.... पर बंबई की वह पहली शाम नहीं भूलते ! जब-जब बंबई गये रचनापाठ करने, ग्रीन रूम की उस मेज को सजदा किया ! पीने पिलाने के हम आज भी खिलाफ हैं....मगर इससे भी अधिक खिलाफ हैं उन लोगों के, जो सिर्फ एक पेग पर किसी को मना करते हैं ! खुद हमें ही एक पेग के बाद गड्ढा नजर आने लगता है ! सो इससे आगे कभी कदम नहीं बढ़ाया !....होली मुबारक !

७२, नारायण नगर, राम सागर, लखनऊ-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ की शान-शौकत का प्रतीक— रूमी द्वार

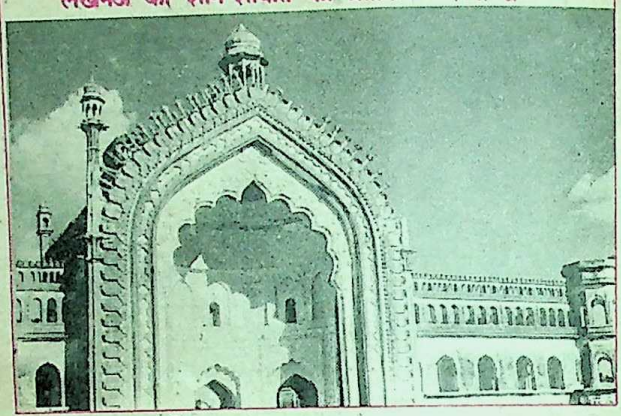

एम्फी थियेटर हुआ करता था लखनऊ का हजारीबाग

● डॉ. रंजन जैदी

लखनऊ, अतीत की परछाइयों से झांकता हुआ, इतिहास के दस्तावेजों में कालका और बिंदादीन की पनाहों से लेकर महलात की ड्योढ़ियों और महल सराओं के उदास दरवाजों तक, कैसर बाग से लेकर मटिया बुर्ज तक अपनी गूंगी दास्तानों के लिए हमें आज हुमक-हुमककर इसलिए देख रहा है कि हम उसकी पनाहों में आकर उन हजारों-हजार गूंगी दास्तानों को शब्द और स्वर दें, जिन्हें समय की बरबरीयत ने अपनी अंधी बावड़ियों में भूलभुलय्यों के सिपुर्द कर दिया है।

नवाब बुरहानुल-मुल्क और सफदर जंग के वारिस नवाब शुजाउद्दौला जब बक्सर की लड़ाई में पराजित हुए, तो तलवार म्यान में रख ली और जंग के नगाड़ों का स्वर बदल दिया। फैजाबाद—प्यार और मुहब्बत की संस्कृति का संगम बन गया, जहां महलों की फसीलों के इस पार तबलों की धनक और घुंघरुओं की झंकार गूंज उठी। ऐश्वर्य और विलासिता की जो दाग-बेल फैजाबाद के दरबार में पड़ी, उसीने कालांतर में अवध के शाह वाजिद अली के सिर से ताज तक को छीन लिया और लखनऊ पर अंगरेजी सरकार की मुहर लग गयी।

जिसे लखनवी-संस्कृति कहा जाता है, उसका आरंभ सन १७७५ से होता है। नवाब शुजाउद्दौला की मृत्यु के पश्चात नवाब आसिफुद्दौला उपर्युक्त सने-ईसवी में गद्दी-नशीन हुए थे। तब से लेकर वाजिद अली शाह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ से कलकत्ता-गमन तक अर्थात सन १७७५ से १८५६ तक लखनऊ ने जिस संस्कृति को जन्म देकर उसे पाला-पोसा और जवान किया, वह आज अपने ही शहर में अलिफ लैलवी दास्तानों की तरह पुराने लोगों की यादों तक सिमटकर रह गयी है। अब न वह 'इंद्र-सभा' है, न वे हजल-गो। न रौशन चौकी है, न बावर्ची खाने। न रकाबदार हैं, न चौगोशियां। न बूचा, सुखपाल, बहल और न हुक्के, धड़े, बधनियां। न हैदरी खां हैं, न कालका-बिंदादीन—सब, तारीख के पन्नों पर स्याह-लफ़्ज़ों के अफसाने बनकर रह गये हैं। हर लफ़्ज़, एक अफसाना है। हर अफसाना, एक तारीख। और तारीख का हर पृष्ठ अवध की गुनगुनाती मुसकराहटों और किलकिलाते अट्टहासों का आईनादार है।

"बा-अदब,
बा-मुलाहिजा—होशियार...." तारीख के परदों से गूंजती हुई चोबदार की आवाज शाह मंजिल की सीढ़ियां चढ़ती, उतरती चारों-दिशाओं तक दौड़ जाती है। पता चलता है कि अवध का पहला बादशाह गाजीउद्दीन हैदर अपनी बेगम के साथ कोठे पर जानवरों की लड़ाई देखने के लिए पधार रहा है।

नदी के उस पार मीलों तक फैला हुआ हजारी बाग था, जहां हाथी, गेंडे, शेर और घोड़ों को लड़ाया जाता था। इस पार, शाह मंजिल के परकोटे से बादशाह लड़ाई के दृश्य देख-देखकर प्रसन्न होता था। हजारी बाग के एक भाग में खूंख्वार जानवरों के लिए कटहरे और बेहतरीन सरकस बनाये गये थे। छोटे जानवरों की लड़ाई देखने के लिए शाह मंजिल का 'हाता' ही उचित माना गया था।

बादशाह के मनोरंजन के लिए ढेर-सारे जंगली जानवरों को एक जगह एकत्र करने की परिकल्पना उसकी अपनी थी। अपनी यूरोपियन पत्नी से रोमियो के 'एम्फी-थियेटर' की दास्तानें सुनकर ही उसने इस प्रकार के मंहगे किंतु खतरनाक मनोरंजन की कल्पना को साकार रूप दिया था। नेपाल की तराई से शेरों को पकड़कर मैदान के कटहरों में रखा जाता। लड़ाई के समय शेरों को कटहरों से निकाला जाता और रिंग-मास्टर उन्हें परस्पर भिड़ा देते। बेहद भयानक लड़ाई शुरू हो जाती। एक घायल होकर भागता, दूसरा पीछा करता। कभी-कभी लड़ाई में पराजित शेर मर भी जाता।

शेर से तेंदुवे की भिड़ंत को बादशाह बहुत

लखनऊ में नवाबों-बादशाहों के मनोरंजन के लिए हिंसक पशुओं का लड़ाई करवायी जाती थी तो आम जनता तीतर, बटेर और कबूतरों के 'दंगल' से अपना मन बहलाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

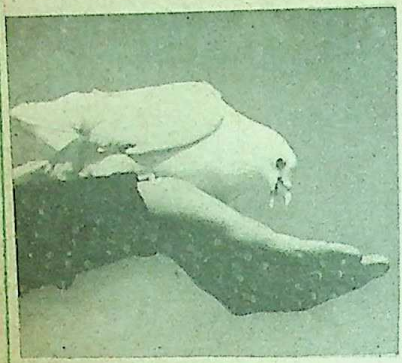

इस तरह चुगाया जाता था दाना

पसंद करता था। अधिकतर इस प्रकार की लड़ाइयों में तेंदुवा शेर से बाजी मार ले जाता। शेर और मस्त हाथी भी लड़ाये जाते, किंतु ऐसे में शेर की जीत होती और हाथी भाग खड़ा होता। मनोरंजन की दृष्टि से शेर और गेंडे की लड़ाई अधिक दिलचस्प होती, क्योंकि गेंडा द्रुत-गति से दौड़ता हुआ शेर के नीचे पहुंचकर अपना सींग उसके पेट में घोंप देता और शेर आक्रमण करने के बावजूद उसका कुछ न बिगाड़ पाता।

बादशाहों के मनोरंजन के लिए चीते, हाथी, ऊंट, बारह-सिंगे, मेंढ़ने—जैसे अनेक पशु हजारी बाग के कठहरों में बंद रहते थे, जिनका पूरा-पूरा खयाल रखा जाता था। इनके दंगल देखने के लिए साधारण नागरिक को मनाही थी। क्योंकि ये दंगल मुख्य रूप से बाहशाह और उसके अमीरों तक के लिए ही होते थे, आम-जन के लिए नहीं। आम-जन के मनोरंजन के लिए शहर के चौराहे, गलियों के नुक्कड़ या मेलों-ढेलों के ठीहे थे, जहां मुर्ग, बटेर, तीतर, तथा बुलबुल, तोते और कबूतर आदि पक्षियों के दंगल होते और बड़ी-बड़ी बाजियां लगतीं।

लड़ाई मुर्गों की

मुर्गों की लड़ाई के प्रचलन को नवाब आसिफुद्दौला ने अत्यधिक बढ़ावा दिया। नवाब सादत अली खां तो मुर्गबाजी में इस हद तक आगे बढ़ गये थे कि वह बाकायदा तौर पर पूरे ताम-झाम के साथ जनरल मार्टिन से मुर्गबाजी की शर्त खेला करते थे। उन दिनों मुर्गे लड़ाने का शौक संयोग से अवध में रह रहे यूरोपवासियों में भी पागलपन की हद तक पाया जाने लगा था। वे लोग भी अमीर-उमरा और नवाबों की भांति 'असील-मुर्ग' पालते थे। कहावत थी कि असील-मुर्ग—बबर शेर, यानी असील मुर्ग संसार का सबसे निर्भीक और बहादुर मुर्ग है, जो लड़ाई के बीच भागना नहीं जानता, अलबत्ता घायल होकर मर भले ही जाए। मूलतः यह नस्ल अरब से ईरान के रास्ते भारत में हैदराबाद के मुसलमानों तक पहुंची, जहां से वह लखनऊभर में फैली।

इतिहास के पन्नों पर मुर्गबाजी की एक कहानी दर्ज है कि एक मुर्गबाज मुर्ग की बाजी हारकर इतने दुःखी हो गये कि वह अवध छोड़कर 'एराक' चले गये। वहां 'नजफ-अशरफ' (मुसलमानों का तीर्थ-स्थल) में कई महीनों तक इबादत करते रहे और दुआ मांगते रहे कि, 'मौला ! मुझे ऐसा मुर्ग दे, जो लड़ाई में किसी से न हारे।' और कहानी बताती है कि उन्हें एक रात स्वप्न आया कि, 'जंगल में जाओ, वहां एक पहाड़ी दर्रे से तुम्हें मुर्ग की आवाज सुनायी देगी। तुम उसे पकड़ लेना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

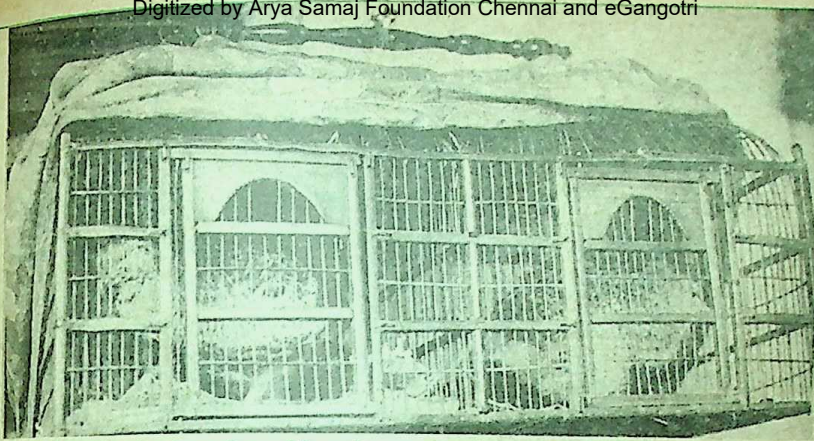

दंगल में लड़नेवाले तीतर-बटेर—जैसे पक्षी इस तरह के पिंजरों में रखे जाते थे।

उसकी नस्ल बढ़ाना।' बस फिर क्या था, वह सज्जन सुबह उठते ही एक मुर्गी लेकर जंगल की ओर निकल पड़े और एक पहाड़ी दर्रे पर जा पहुंचे। एकाएक दर्रे के किसी भाग से मुर्ग की बांग सुनायी दी। वह दर्रे में उतरकर मुर्ग तलाशने लगे। मुर्गी को वहीं छोड़ दिया। उसकी आवाज सुनकर मुर्ग किसी ओर से उड़कर उसके पास आ गया और मुर्गबाज सज्जन ने उसे दबोच लिया। उसकी नस्ल बढ़ायी और अवध लौटे। तब से, वह जब तक जीवित रहे—उनका मुर्ग किसी भी लड़ाई में पराजित नहीं हुआ।

हैदराबाद और लखनऊ की मुर्गबाजियों में थोड़ा अंतर था। जहां लखनऊ में मुर्गों की लड़ाइयां आठ-आठ दिन तक चलतीं, तब जाकर कहीं फैसला होता, वहीं हैदराबाद में घंटा-दो घंटा में ही निर्णय हो जाता। उसका विशेष कारण मुर्गों के कांटे न बांधे जाना था, जबकि लखनऊ में कांटों को बांध दिया जाता था। हैदराबाद में मुर्गों के कांटों को चाकू से छीलकर उसे बर्छी की नोक में परिवर्तित कर दिया जाता था। लड़ाकू मुर्गों की चोचें चाकू से छीली जातीं, उन्हें हाथ पर ही दाना चुगाया जाता कि कहीं जमीन पर दाना चुगते समय चोंच की नोक न टूट जाए। पुट्ठों की मालिश की जाती, उन्हें 'फुई' यानी पानी की फुहारों से भिगोया जाता, शक्तिदायक गोलियां खिलायी जातीं, तब कहीं वे दंगल में उतारे जाते। मटिया बुर्ज की कोठी इस प्रकार के दंगलों के लिए काफी प्रसिद्ध थी। यह कोठी नवाब अली नकी खां की थी। इसी कोठी में बहुधा कभी-कभी आकर अंगरेज लोग अपने मुर्गे लड़ाते थे।

बादशाहों के इस मनोरंजन के भाण्डार में रईसों की भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी। नवाब सालारजंग हैदर बेग खां, मिरजा हैदर-जैसे लोग तो मुर्गबाजी के हद दर्ज तक दीवाने थे। नसीरुद्दीन हैदर के समय में मेजर स्वारिस का नाम इसलिए प्रसिद्ध हुआ कि बादशाह स्वयं मेजर स्वारिस से मुर्ग लड़ाया करता था। आगा बुरहानुद्दीन हैदर अवध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रईसों में थे। उनके पास ढाई सौ मुर्ग थे, जिनकी देखभाल के लिए बारह नौकर नियुक्त किये गये थे। मलीहाबाद के पठानों को भी मुर्गबाजी का बहुत शौक था।

मुर्गबाजी से मनोरंजन की भरपाई होते ही बादशाहों का ध्यान बटेरों की ओर मुड़ जाता। बटेरबाजी भी उनके मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन था।

बटेर की लड़ाई मुर्ग की लड़ाई से भिन्न नहीं होती थी। वह भी मुर्ग की ही भांति चोंच से काटता और लात से मारता था। भारी पड़नेवाला बटेर अकसर अपने प्रतिद्वंद्वी का चोंच से पपोटा तक फाड़ डालता था। पराजित बटेर पुनः किसी अन्य बटेर से लड़ाई लड़ने का साहस नहीं जुटा पाता था। उनकी लड़ाई का फैसला पंद्रह-बीस मिनट में हो जाता था।

बटेरों को रखने के लिए अत्यंत खूबसूरत काबुकों को तैयार किया जाता और उन्हें हाथी-दांत की नन्हीं-नन्हीं 'गुमजियों' से सजाया जाता था, जिसमें बटेरें रहतीं। बटेरों में 'क्रीज' श्रेणी के बटेर का महत्त्व अधिक होता था। इस श्रेणी के बटेरों को शक्ति दिलानेवाली गोलियां खिलायी जाती थीं, जो उन दिनों सौ रुपयों में कुल दस गोलियां मिला करती थीं। बाजियां भी हजारों रुपयों की लगतीं और देखनेवाले भी पैसा देकर देखने के लिए एकत्र होते। बादशाह नसीरुद्दीन हैदर बटेरों को अपनी मेज पर लड़ाकर खुश होता था। ऐसे समय में वह किसी की भी उपस्थिति को सहन नहीं कर पाता था।

बादशाहों, नवाबों, अमीर-उमराओं के साथ-साथ आम लोगों में, जहां मुर्ग और बटेर अपनी लड़ाइयों से रुचि पैदा कराते थे, वहीं तीतर, लवे, गुलदम, कबूतर—जैसे पक्षी भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं थे। इनके द्वारा भी भरपूर मनोरंजन प्राप्त किया जाता रहा था।

एक वक्ता ने सोचा कि 'चलो आज की सभा में श्रोताओं के धैर्य की परीक्षा ली जाए।' लिहाजा वह लगातार बोलता ही चला गया। नतीजा, जो निकलना था वही निकला। एक-एक कर सभी खिसक गये। फिर भी एक श्रोता धैर्यपूर्वक बैठा रहा, तो अंत में उसके धैर्य की प्रशंसा करते हुए उसने कहा, "बस आप ही एक सज्जन पुरुष हैं, जो एक अच्छा श्रोता है।"

इस पर उस अकेले बच रहे व्यक्ति ने कहा, "महोदय, आपके बाद बोलनेवाले दूसरे वक्ता के रूप में अब मेरा ही नंबर है।"

***

न्यायाधीश : "तुम चाहते हो कि आज की पेशी इसलिए टाल दी जाए कि तुम्हारा वकील बीमार है, लेकिन जबकि तुम चोरी करते रंगे हाथों पकड़े गये हो और फिर तुमने अपना अपराध स्वयं भी कबूल कर लिया है, तब इस स्थिति में तुम्हारा वकील तुम्हारे बचाव में क्या कह सकता है!

अपराधी : यही बात तो मैं खुद जानना चाहता हूं।

***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुनो, तुमने अपनी गायकी से आज अगर हमें नहीं रुलाया तो बखुदा हम तुम्हें गोमती में डुबवा देंगे।' नशे में चूर बादशाह का हुक्म सुनकर उस्ताद हैदर खां घबरा गये। लेकिन फिर.....

सवा सौ की तुक्कल और पांच का इनाम

मनोरंजन के अनेक साधनों में एक साधन संगीत और नृत्य भी था। नवाब शुजाउद्दौला का संगीत से तो इस हद तक लगाव था कि जब भी वह कहीं दूर-दराज के लिए शहर से कूच करता, उसके साथ संगीतकारों और वेश्याओं के डेरे अवश्य होते। इसी संगीत-प्रेम से प्रभावित होकर नवाब आसिफुद्दौला ने संगीत-शास्त्र पर फारसी में 'उसूलुल-नगमात-अलआलफिया' लिखवायी, जो भारतीय संगीत-शास्त्र पर लिखी गयी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

बादशाह गाजीउद्दीन हैदर के समय में संगीत शास्त्र के प्रकांड पंडित और महान गायक उस्ताद हैदरी खां लखनऊ के एक मुहल्ला गोला गंज में रहते थे। प्रसिद्धि की चर्चा सुनकर बादशाह 'हवादार' पर सवार होकर गोमती की सैर को निकल पड़ा। रोमी दरवाजे के नीचे उस्ताद हैदरी खां नजर आ गये। बादशाह को बताया गया कि यही उस्ताद हैदरी खां हैं। बादशाह ने कहा, "कभी हमें भी अपनी गायकी सुनाएं... ।" जवाब मिला, "क्यों नहीं सुनाऊंगा, लेकिन हमें आपका मकान ही नहीं मालूम है।" बादशाह ठठाकर हंस पड़े और हवादार में बिठा लिया। छतर मंजिल के निकट पहुंचे ही थे कि उस्ताद भड़क गये, बोले, "हमारी गायकी सुनने के लिए आपको पूरियां और बालाई खिलवानी पड़ेगी, सोच लीजिए।"

बादशाह ने यह भी शर्त मान ली। महल में पहुंचकर उस्ताद की गायकी सुनी और झूम उठे। गायकी तोड़कर अचानक उस्ताद ने बादशाह से पूछा, "यह जो आपके पेचवान में तंबाकू सुलग रहा है, इसकी खुशबू बहुत लुभावनी है। कहां से मंगवाते हैं ?" बादशाह को क्रोध आ गया, तो मुसाहिबों ने उन्हें समझा-बुझाकर शांत किया। हैदरी खां को अलग कमरे में ले गये, पूड़ियां और बालाई की दावत दी और हुक्का पेश किया। उस्ताद ने आधा पाव बालाई और एक पैसे की चीनी पली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भिजवायी। लेकिन अभी आदत थी, फिर विश्राम करने के लिए वहीं पसर गये।

अगले दिन बादशाह ने नशे में धुत होकर हैदरी खां को अपने हुजूर में बुलाया। उस्ताद हाजिर हो गये। हुक्म हुआ, "गाओ!" गायकी शुरू हुई। बादशाह ने टोका, "सुनो! तुमने अपनी गायकी से आज अगर हमें रुलाया नहीं, तो बखुदा हम तुम्हें गोमती में डुबवा देंगे।" उस्ताद घबरा गये। गायकी शुरू की और बादशाह उसमें डूबने लगा, डूबता गया, डूबता गया—यहां तक कि वह भरभराकर रो पड़ा और यहीं पर उस्ताद चुप हो गये। बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा, "मांग, क्या मांगता है हैदरी खां?" उस्ताद गंभीर बने रहे। पूछा, "जो मांगूंगा, देंगे?" बाहशाह ने कहा, "हां!" उस्ताद ने तीन बार वादा कुबूलवाया, फिर कहा, "हुजूर! पहली बात तो यह कि आप मुझे फिर कभी न बुलवाएं और न मेरी गायकी सुनेंगे ....!" बादशाह ने तुरंत टोका, "क्यों?" जवाब मिला, "बादशाहों का क्या है, खुश हो जाएं तो मोतियों की बारिश करवा दें और नाराज हो जाएं तो गोमती में डुबवा दें। हैदरी खां की मौत के बाद दूसरा हैदरी खां नहीं पैदा होगा जिल्ले-इलाही, लेकिन बादशाह की गद्दी पर दूसरा बादशाह जरूर बैठ जाएगा! हमें पता नहीं था कि हम एक बादशाह के मेहमान रहे हैं...।"

कहते हैं कि बादशाह क्रोधावेश में मुट्ठियां भींचकर खड़ा हो गया। मुसाहिबों ने जल्दी से हैदरी खां को बादशाह के सामने से हटाकर फरार किया और इस तरह एक कलाकार की मौत आते-आते रह गयी।

वाजिद अली शाह को संगीत से कुछ अधिक ही लगाव था। उन्होंने उस्ताद काजिम खां से संगीत की बाकायदा दीक्षा ली थी। जोगी कंटर, जूही और शाह पसंद—जैसे रागनियां उन्होंने स्वयं खोजीं। इसी प्रकार शाह को नृत्यों से भी बेहद लगाव था। हालांकि नृत्य शुजाउद्दौला और आसिफुद्दौला के युग में भी अपनी संपूर्ण कलात्मक विशेषताओं के साथ मौजूद था और नवाबों के दिल बहलाने के लिए महाराज खुशी, उनके बाद के नवाबों के समय में हिलालजी, प्रकाशजी तथा दयालजी—जैसे विख्यात नर्तक अपने नृत्यों का प्रदर्शन करते रहते थे, फिर भी वेश्याओं के मुजरों को जो सम्मान प्राप्त था, वह पुरुष नर्तकों के प्रदर्शनों को नहीं। वाजिद अली शाह के समय में पुरुष नर्तकों को पूरा सम्मान मिला। गुरु दुर्गाप्रसाद तो खुद शाह के गुरु थे। गुरु कालका और बिंदादीन गुरु दुर्गा प्रसाद के ही पुत्र थे, जिन्होंने नृत्यों को अनेक नयी शैलियां दीं और नाम कमाया।

शाह लोगों का मनोरंजन करानेवालों में नर्तकों के अतिरिक्त भांड नक्काल और वेश्याओं की भी भूमिकाएं अत्यंत महत्त्वपूर्ण थीं। भांड अपने चुटकुलों, मजाकों और नोक-झोंक के लिए काफी चर्चित थे। मुगलों से पूर्व भांडों और नक्कालों का इतिहास नगण्य-सा है, क्योंकि इस्लाम के जन्म के बाद से मुस्लिम समाज में भांड मुगल शासनकाल में ही नजर आते हैं। भांडों और नक्कालों की भूमिका ठीक उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण रही है, जैसे इंगलैंड में 'सेक्सटन'

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और 'टाइटलर' की थीं।

मुहम्मद शाह के समय में करेला नामक एक भांड हुआ करता था। बादशाह को भांडों से किसी बात पर चिढ़ हो गयी तो हुक्म दिया, 'भांडों को मुल्क बदर कर दिया जाए।' अगले दिन बादशाह की सवारी निकली तो ऊपर से भांडों के गाने और बजाने का शोर सुनायी दिया। बादशाह क्रोधित हो उठा, "यह क्या बेहूदगी है ?" वजीर से पूछा गया कि "हुक्म की तामील क्यों नहीं हुई।" भांड पेड़ों पर मौजूद हैं।" वजीर ने निवेदन किया, "हुजूर ! इनके पांव आपकी जमीन पर कहां हैं ?" करेला भांड को बुलाकर बादशाह ने पूछा, "तुम लोग हमारी हुकूमत से गारत क्यों नहीं हुए ?" जवाब मिला, "कहां जाएं जहांपनाह ? सारी दुनिया पर तो आपकी हुक्मरानी है। इसीलिए हम गरीब भांड बीच में लटक गये हैं।" इस पर बादशाह सहित सब हंस पड़े और बादशाह ने उनका कुसूर माफ कर दिया।

मुजरे और 'इंद्र सभा'

लखनऊ में वेश्याओं का भी काफी बोलबाला था। ये तीन प्रकार की थीं। कंचनियां, चूनेवालियां और नागरनियां। इनमें 'चूनेवालियां' संभ्रांत परिवारों में काफी लोकप्रिय हुईं और लखनऊ की संस्कृति को एक नया अध्याय दिया। इसी नस्ल की वेश्या चूनेवाली हैदर बाई का गला इतना सुरीला था कि उस जमाने में शायद ही किसी का हो। वह 'शाइरा' भी थी और उसके मुजरों में शहर के प्रसिद्ध शायर और संभ्रांत लोग ही अधिकतर मौजूद होते थे। जब भी कोई उदास होता, हैदरी बाई के मुजरे में आकर बैठ जाता और अपने गम भूल जाता।

मुजरों की रौनक उस समय फीकी पड़ गयीं, जब वाजिद अली शाह ने मियां अमानत की लिखी 'इंद्र सभा' का नाट्य-मंचन कराया। यह इतना सफल हुआ कि लखनऊभर में अनेक 'सभाएं' बन गयीं और स्थान-स्थान पर नाटक खेले जाने लगे, किंतु यह स्थिति अधिक समय तक बनी नहीं रह सकी, लोग इसके माध्यम से घटिया किस्म का मनोरंजन कराने लगे, जिससे उच्च और उच्च-मध्य-वर्ग की रुचि समाप्त हो गयी और वह अध्याय वहीं अपनी अल्पायु में समाप्त हो गया। मुजरों में रौनकें फिर बढ़ गयीं।

अंत में, जहां मनोरंजन के अनेक साधन हों, वहां गिन-गिनकर सबकी निशानदेही करना एक पुस्तक लिखने के बराबर होगा। यहां लखनऊ की पतंगबाजी की चर्चा करना बेहद जरूरी है। क्योंकि, अनेक बाजियों में पतंगबाजी ही एक ऐसा मनोरंजन का माध्यम था, जिसने 'महमूदो-अयाज' को एक पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया था, जिसमें एक साधारण-सा कुंजड़ा एक महलधारी रईस की पतंग स्वतंत्र रूप से काट सकता था और उसे शिकस्त दे सकता था।

तुक्कल और कनकव्वे

यूं तो पतंगबाजी का आरंभ शाह आलम (प्रथम) के समय से होता है, लेकिन उसे एक 'बाजी' का दरजा दिलाने में अवध की राजधानी लखनऊ के निवासियों को श्रेय जाता है। शाह आलम—प्रथम के समय में पतंग का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चंग' हुआ करती थी। बाद में लखनऊ के बाशिंदों ने उसे एक नया रूप देकर 'तुक्कल' का रूप दिया। तुक्कल उड़ाने का शौक जब हिंदू-मुसलमान रईसों तक पहुंचा, तो उस पर धन खर्च किया जाने लगा और एक-एक तुक्कल सवा सौ रुपयों की लागत तक पहुंच गयी। ऐसी तुक्कलों का भूगोल भी बदला गया और नाम भी। 'पतंग' यहीं पर नाम पड़ा। अच्छे किस्म की पतंग का 'ठड्डा' मुर्शिदाबादी बांस का होता, जिसमें अस्सी रुपये की लागत आती। बीस रुपये की झुलझुल होती, दो रुपयों का कागज लगता और पांच रुपये बनवायी के पड़ते। इस प्रकार एक सौ सात रुपये में एक पतंग तैयार होती। कट जाने के बाद लूटकर जो व्यक्ति नवाब की पतंग लाता, उसे नवाब पांच रुपए इनाम में देते।

अमजद अली शाह के समय में अक्क[illegible] पतंग की जगह 'गुड्डी' ने ले ली। इस[illegible] बनावट सरल थी। 'तुक्कल' में दो कपि[illegible] एक ठड्डा होता था, गड्डी में केवल एक क[illegible] और एक ही ठड्डा रह गया। वाजिद अली श[illegible] के समय में 'गड्डी' की जगह डेढ़ कन्ना कनक[illegible] ने ले ली। 'तुक्कल' की स्मृति बनाये रखने [illegible] उद्देश्य से कनकव्वे के नीचे छोटा-सा फुं[illegible] अवश्य लगाया जाता। किंतु नवाब मुह[illegible] हुसैन सालारजंगी और आगा अबूतराब ख[illegible] अपने कनकव्वों से फुंदने हटा दिये और उ[illegible] जगह पत्ते लगाने आरंभ किये।

दोनों लेखों के संदर्भ ग्रंथ :

(१) अमा दुस्सादात (२) गुजिश्ता लख[illegible] (३) उसूलुल-नगमात अल आलफिया, (४) हिस्ट्री ऑव अवध, (५) तारीखे अवध

—९१, मयूर विहार-२, नयी दिल्ली-[illegible]

पिचहत्तर वर्ष के एक बूढ़े करोड़पति ने अठारह साल की एक युवती से शादी कर ली। कुछ दिन बाद उसे दिल का दौरा पड़ा और उसे अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। जब उसकी युवा पत्नी उसे देखने गयी तो बूढ़े ने कहा, "तुम्हें भविष्य के लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैंने वसीयत में सबकुछ तुम्हारे नाम कर दिया है।"

'ओह, तुम कितने अच्छे हो।" आंखों में आंसू लाते हुए पत्नी ने कहा, तुमने मेरे लिए कितना कुछ किया, लेकिन मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं करने लायक नहीं हूं।"

"नहीं, तुम करने लायक हो और कर सकती हो।"

"बोलो, बोलो, मैं क्या कर सकती हूं?"

"मेहरबानी करके ऑक्सीजन की नली पर से अपनी हथेली हटा लो, जिससे मैं जरा सांस तो ले सकूं।"

***

फिल्म अभिनेत्री : मैंने एक पत्रिका को दिये अपने इंटरव्यू में कहा है कि मेरी सबसे बड़ी इच्छा यही है कि मेरा एक छोटा-सा कॉटेज हो, जिसमें अपने पति और कम से कम छह बच्चों के साथ आराम से रहूं।

अभिनेत्री की सहेली : "ओह, बेवकूफी की बात कहने के लिए तुमसे किसने कहा था!" पूछा।

"मेरे पब्लिसिटी मैनेजर ने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

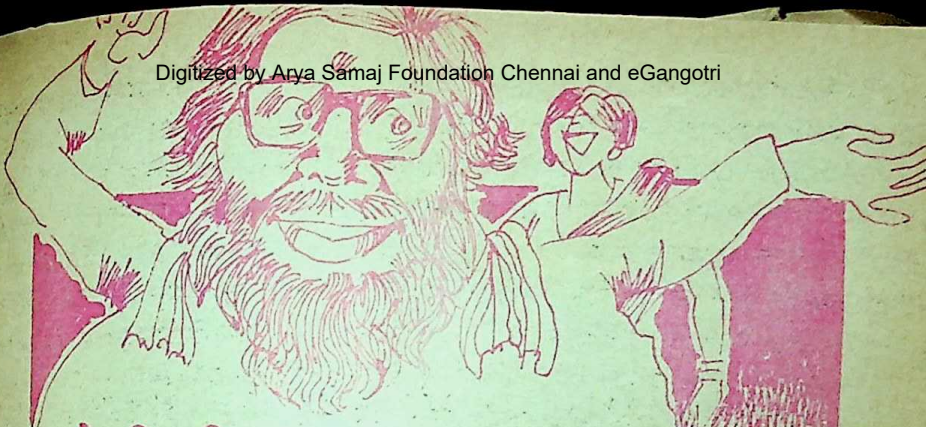

होली की याद : साठ वर्ष के बाद

● काका हाथरसी

भरी जवानी में गये, होली पर ससुराल
साली-सलहज ने पकड़, किया हाल-बेहाल
किया हाल बेहाल, सुनाएं किसको दुखड़ा
बंदर जैसा बना दिया 'काका' का मुखड़ा
चुनरी दई उढ़ाय और लहंगा पहिनाया
गाली गाकर साली ने कूआं पुजवाया

भीतर-भीतर रो रहे, ऊपर-ऊपर हास
देख तमाशा, हंस रही, मुंह ढक कर के सास
मुंह ढंक करके सास, भीड़ हो गई इकट्ठी
काका कवि कमज़ोर, लुगाई हट्टी-कट्टी
करुण स्वरों में, सासूजी की दई-दुहाई
दयावती ने दया दिखाई, जान बचाई

—संगीत कार्यालय
हाथरस—२०४१०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चा 'चरणकमल' की

● विजयकृष्ण ठाकुर

लोगों के चरणों की महिमा समझ पाना कोई साधारण बात नहीं है। शायद चरणों को ही देखकर किसी ने कहा है, 'जहां-जहां चरण पड़ें संतों के, होगा अवश्य उद्धार... और कहीं इसके विपरीत, गर वे असंत हुए, तो निश्चित होगा 'बंटाधार'। वैसे पैर तो सभी के एक जैसे होते हैं पर कुछेक भाग्यशाली जनों के पैर 'चरण कमल' कहलाते हैं, और हम लोगों के पैर 'खुर'। ऐसा कहा जाता है कि महत्त्वपूर्ण लोगों के चरण जहां पड़ते हैं वहां हरियाली नजर आने लगती हैं। मौसम खुद ब खुद, खुशगवार हो उठता है, लोग उनके स्वागत के लिए पलक पांवड़े बिछा देते हैं। किसी शायर ने इसके लिए 'पलकों का शामियाना' बिछाने की बात कही है। उन रास्तों पर जहां पैदल चलना मुश्किल हो, उनके आने के पहले उन्हें 'हवाई पट्टी' की तरह चिकना साफ सुथरा कर दिया जाता है। ऐसा करने से उनकी कार के गुजरने में कष्ट नहीं होता और जब वे जमीन पर कदम रखते हैं, तो उनके चरण-कमलों को सुशोभित करनेवाले [illegible] कंकड़-कंटकों से सुरक्षित रहते हैं।

एक ऐसे ही चरण कमलों का किस्सा [illegible] आ गया। बात उन दिनों की है जब [illegible] में पानी की बड़ी किल्लत रहा करती [illegible] सरकारी जुबान में ऐसे गांव को समस्या[illegible] कहा जाता है। गांव के इने-गिने कुए [illegible] पोखर, बैसाख आते ही न आने लगे [illegible] दिखाने लगते थे। इस विकराल समस्या [illegible] हल करने के लिए हमारे सरपंच कक्का ने [illegible] था, 'भइया हमारी मानो, एक बेरा सना गांव [illegible] धरती पे मनिस्टरसाहब खों बुलवा लेव। [illegible]

कादम्बि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके चरण इते पड़ हैं, जो समझ ऐसा ग्रामों को फुहारा निकर जेहें'।

उनकी बात मुझे अतिशयोक्ति-सी लगती थी। भला आप ही कहिए, मंत्रीजी के पैर में कोई 'ड्रिल मशीन' थोड़े ही फिट है जो गांव की धरती पर क़दम रखते ही, वहां फुहारा निकल पड़े। अरे भाई वे भी तो आदमी हैं, कोई मशीन तो नहीं। मुझे मन ही मन लगता, कि कहीं सरपंच चाचा, अपनी मुखियागिरी बचाने के चक्कर में कहीं, मक्खन तो नहीं मार रहे हैं।

काफी दिनों बाद, जब मुझे इस दीन-दुनिया की समझ आयी मैं चाचा के गूढ़ अर्थ को समझ पाया। जब नेताजी गांव में जाते हैं, उनके पहले ही गांव के दुखदर्द का आकलन करने के लिए साहबों, मुसाहबों का दौरा शुरू हो जाता है। कहां गंदगी है, कहां नाली नहीं है, कहां मच्छर हैं, कहां खाद नहीं बंटी है, किसे कर्ज नहीं मिला है, सभी कठिनाइयों का निराकरण कर दिया जाता है। और जब नेताजी के चरण उस गांव की धरती पर पड़ते हैं, वह समस्या मूलक ग्राम नहीं रह जाता है। बल्कि वह एक खुशहाल आदर्श ग्राम की शक्ल लिये उनके सामने खड़ा होता है। सूखे कुएं पानी से भर जाते हैं तालाबों में कमल खिलने लग जाते हैं।... है न साहब चमत्कार का कमाल।

कभी कभी इस तरह के मामलों में नजरें भी धोखा खा जाती हैं। बात वैसे पुरानी है... । अंगरेजों की गुलामी, उन दिनों हमारे सिर पर थी। उस समय एक ऐसा ही गड़बड़झाला हो गया था। हुआ कुछ इस तरह कि एक इलाके में सूखा पड़ा था। इस तबाही का जायजा लेने के लिए एक अंगरेज अफसर तशरीफ लाये थे। गांव की हालत देखने के बाद जब वे 'सर्किट हाउस' में लौटे तो उन्होंने तमाम नायब अफसरों को आड़े हाथों ले लिया, "मैं सारा दोपहर गांव में घूमा, मुझको कहीं भी सूखा नहीं दिखा। तुम लोग गलत रिपोर्ट देकर अंगरेज सरकार बहादुर को बेवकूफ बनाना मांगता है।"

लोग सिर झुकाये चुपचाप, अफसर की डांट के साथ-साथ मुफ़्त में नमकीन काजू खा रहे थे। पर किसी में इतना साहस न था कि कह सके कि, 'पर आप हरा चश्मा पहिने हुए हैं...।' वैसे इस तरह की खूबसूरत बातें इन दिनों भी कभी कभार हो जाती है।

अभी कुछ ही दिन पहले की बात है। हमारे गांव में एक नेताजी को आना था। वैसे उनको हमारे गांव से क्या लेना-देना... बस यूं समझ लीजिए हमारे गांव के सामने से जानेवाली बड़ी सड़क से गुजरकर उन्हें आगे जाना था। बस थोड़ी देर के लिए वे चाय के लिए जंगल महकमे के विश्राम गृह में तशरीफ रखनेवाले थे। अब आपसे क्या छिपाना उनका यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मुहकमा सफाई के नाम पर टैक्स लेता है, पर वह इनकी सफाई नहीं कराता। दूसरा जमीन के नाम पर टैक्स लेता है, सो बच्चों की तरह उसका कहना है कि भाई यह तो जमीन का टैक्स है, नाली का नहीं। और इस तरह किसी अवैध संतान की भांति यह इलाका, जिसे अंगरेजी में 'कॉलोनी' की संज्ञा दी जाती है, शहर में रहकर भी शहर से निष्कासित-सा लगता है।

कार्यक्रम क्या उजागर हुआ, भाग्य खुल गये हमारे गांव के। ऐसे-ऐसे महानुभावों, श्रीमानों के चरण, इस गांव की धरती पर पड़ें कि उसकी काया ही बदल गयी। स्कूलों की मरम्मत हो गयी, उसके दोनों तरफ लगे पेड़ों के तनों पर सफेद लाल रंग दिखने लगा, कुछ खास मुकामों पर गमले में कैद की गयी हरियाली सुशोभित कर दी गयी। कूड़ा-कर्कट के ढेरों को साफ कर दिया गया, दीवारों पर लगे भद्दे पोस्टर निकाल दिये, यत्र-तत्र अच्छी बातें, समझदारी की बातें... 'दो तीन बच्चे बस', जैसी चीजें लिख दी गयीं। दूर दराज तक, जहां भी आंखें जाती, सब कुछ सुखद नजर आता। लगता, सच में किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व के चरणों से यह इलाका पवित्र होनेवाला है।

पर हुआ कुछ ऐसा, कि वे न आये। अब क्यों नहीं आये, यह सवाल मत कीजिएगा। बस यूं जान लीजिए, बड़े आदमी थे, होगी कोई वजह, सो नहीं आ पाये। पर, मात्र उनके इस तरफ आने की खबर ही हमारे गांव के लिए, किसी वरदान से कम साबित नहीं हुई। सारे गांव का नक्शा ही बदल गया।

मैं तो कहूं, हमारे शीर्षस्थ नेताओं को बीच-बीच में कुछ ऐसी ही पुड़िया मार देनी चाहिए... फलांजी, फलां तारीख को फ जगह दौरे पर आ रहे हैं। यकीन कीजिए, उ चरण-कमल पड़ने के पहले ही उस स्थान क कायाकल्प हो जाएगा। अगर इस तरह क कार्यक्रम किश्तों में भी होता रहा तो देश क प्रगति के चमकीले आसार हो सकते हैं

अभी कुछ दिनों से, कारोबारी सिलसिले मुझे शहर में बिठा दिया है। लोग कहते शहर गांवों की तुलना में साफ सुथरे हैं। मु उनकी इस बात पर यकीन नहीं आता। मैं ज रहता हूं, उसके ठीक सामने एक बड़ा गड्ढा है जहां झील की तरह पानी भरा रहता है। प वहां बेशरम के दो चार पेड़ नजर आते थे, वहां पूरे तौर पर बेशरम का जंगल उग आ है। और अब तो उनमें सफेद बैंगनी रंग बड़े-बड़े फूल भी पैदा होने लगे हैं। इस के समतल हिस्से पर मुहल्ले के किशोर वय बालक क्रिकेट खेलते हैं, और मैं देखता उनकी बाल जब बेशरम के जंगल में गुम है, बेचारे मुंह छोटाकर अपने घरों का पकड़ने लगते हैं। इस तरह की न जाने कि गेंदें, यह जंगल खा चुका होगा। पर बेशरम जंगल को शरम कहां... बेशरम तो

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेशरम ही ठहरा। घूमने लगा बारे।

घर के सामने एक नाली बहती है, जिसकी गंदगी उसमें ही जमा होती रहती है। मच्छरों, कीड़ों, मकोड़ों ने, अपने रहने के लिए यहाँ जगह खुद-ब-खुद तलाश कर ली है। रात में यहां इक्का-दुक्का, बिजली के बल्ब खंभों पर, जुगनुओं की तरह लटकते देखे जा सकते हैं। हां इस अव्यवस्था से एक अवश्य फायदा हुआ है कि लोगों की देखने की शक्ति बढ़ गयी है। लोग अब यहां अंधेरे में देखने के अभ्यस्त हो गये हैं। केवल कंछेदी लाल ही इसके अपवाद हैं, जो बिचारे रतौंधी की बीमारी के शिकार हैं।

इस इलाके का अहं सवाल है कि यहां की नालियां। इन्हें साफ रखने की जिम्मेदारी किसकी है, यह प्रश्न, सच मानिए किसी अबूझ पहेली से कम नहीं है। एक मुहकमा सफाई के नाम पर टैक्स लेता है, पर वह इनकी सफाई नहीं कराता। दूसरा जमीन के नाम पर टैक्स लेता है, सो बच्चों की तरह उसका कहना है कि भाई यह तो जमीन का टैक्स है, नाली का नहीं। और इस तरह किसी अवैध संतान की भांति यह इलाका, जिसे अंगरेजी में 'कॉलोनी' की संज्ञा दी जाती है, शहर में रहकर भी शहर से निष्कासित-सा लगता है। यहां की सड़कों के बारे में बस इतना ही कहना काफी होगा कि अमरीका या रूस का अंतरिक्ष यान यदि किसी कारण से इस इलाके में उतर आये तो डर है कहीं उसके यात्री कहीं इसे ही चांद समझकर न

कल मुहल्ला सुधार समिति की मीटिंग थी। लाला हरसुखलाल कहने लगे, भइया एक जुलुस नगर निगम ले चलो, तब उनके कान में जूं रेंगेंगी। नारायण पहलवान का कहना था, कि 'म्युनिस्पाल्टीवाले कुछ नये करबे बारे। का कहते हैं उसखो, विकास पराधिकरन, उतै चलो। अपना बाजा बजा देवौ...।' सरदार मक्खनसिंह ने सुझाव दिया 'बाबूजी ऐ जुलुस ते कुछ नयी हो सकदा। मेरे साथ तूसी मनिस्टर साब के पास चलो। ओत्थे शिकायत करांगे। ओ इक बारी, इत्थे आ गया, सारी मुसीबतां दफा हो जाणीं ऐं।'

मुझे लगा सरदारजी ठीक कह रहे हैं। गांववाले सरपंच कक्का भी ऐसी ही बात कहा करते थे। वे कहते थे कि अगर मनिस्टर साहब अपने गांव की धरती पर पांव धर दें तो पानी का फुहारा निकल पड़े। सच किसी 'चरणकमल' को इस कॉलोनी में आना ही होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो इस बात का पूरा डर है कि यहां कुछ दिनों बाद बाकायदा बेशरम की खेती होने लगेगी। खुरों की इस बस्ती में, इन दिनों उन कलयुगी 'चरणकमलों' की प्रतीक्षा जोरों से चल रही है जो सतयुग के राम की तरह, इस कॉलोनी रूपी अहिल्या के दर्द को समझ, उसका उद्धार कर सके।

१५२, शक्तिनगर गुप्तेश्वर
'साई निकेत' जबलपुर-४८२००

---

२७ अगस्त, १८९६ को इंग्लैंड और जंजीबार के बीच युद्ध हुआ, जो ३८ मिनट में ही खत्म हो गया।

ईराक में रविवार के दिन सांप को खाना नियम के विरुद्ध माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब चले गये सूनापन है

● वसु मालवीय

२७ दिसम्बर, ७९ की शाम प्रयाग का मेहता प्रेक्षागृह। ताईजी के विद्यालय 'स्वराज्य विविधा' का रजत जयंती कार्यक्रम प्रारंभ होना था। आंखें दरवाजे की ओर ही टिकी थीं। उद्घाटन के लिए महादेवीजी को आना था। उनके दर्शन का, उनके आशीर्वाद पाने का मेरे लिए संभवतः यह पहला अवसर था। महादेवीजी मेरे पिता श्री स्व. उमाकांत मालवीय के साथ जब प्रेक्षागृह के अंदर आयी तो बच्चों का उत्साह देखने योग्य था। उन्होंन दीप प्रज्वलित करने के उपरांत बच्चों को संबोधित भी किया था।

पिताश्री ने उनसे पूछा, "दीदी ! आप अस्वस्थ्य हैं यदि जाना चाहें तो व्यवस्था की जाए ?"

"नहीं, उमाकांत ! इन बच्चों ने इतनी मेहनत से तैयारी की है, मैं थोड़ी देर देखकर जाऊंगी।"

हम सब अभिभूत थे। हमारा नाटक, हमारा अभिनय महादेवीजी देख रही हैं, यह सोचकर हम लोगों में विलक्षण उत्साह भर गया था।

अपनी भूमिका अभिनीत करने के बाद मैं जब नीचे आया, तो पिताजी ने महादेवीजी से मिलवाया।

"दीदी ! ये है मंझले सुपुत्तर इ भी यहां उमर में बिगड़ गये।"

मेरे सिर पर हाथ रखते हुए महादेवीजी ने पूछा, "क्या ?"

"हां दीदी ! कविता जोड़ने लगा है।

महादेवीजी पिताजी की ओर देखते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकार संसद में महादेवीजी पं. मखनलालजी चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' के साथ

चित्र डॉ. जगदीश गुप्त के सौजन्य से

उत्सवधर्मी महादेवीजी के बिना अशोक नगर में होली कैसे बीतेगी ? त्योहार बड़ी रुचि के साथ मनाती थीं वे ! .... होलिका जलने के समय वे उपस्थित रहती थीं और प्रत्येक आगंतुक को गुलाल का टीका लगाती थीं ।

खिलखिलाकर हंस पड़ीं ।

बच्चों-सा कौतूहल

पिताजी को उनका विशेष स्नेह प्राप्त था । आज दोनों ही नहीं हैं, पर उनके साथ-साथ जो चित्र हैं, उन्हें देखकर मन बरबस आर्द्र हो जाता है और एक के बाद एक संदर्भ स्मृति में कौंध जाते हैं ।

११ नवम्बर, ८२ में पिताजी के न रहने पर जब हम लोग—मैं और बड़े भैया यश उनसे मिलने गये, तो हम लोगों को पकड़कर महादेवीजी फफककर रो पड़ी थीं, "उमाकांत ! हमें दीदी कहता था । उससे मिलने को कोई भी आता तो वह कहता, 'चलो दीदी से मिला लाऊं ।' अब कोई बाहर से आता है, तो लगने लगता है उमाकांत लाया होगा उसे, फिर दिल धक से हो जाता है । बहुत जल्दी चला गया वो ।"

एक बहुत बड़े व्यक्तित्व से मिलने का संकोच बहुत जल्दी सहज ही कम हो गया । घर की बड़ी-बूढ़ी की तरह वह हिदायतें भी दे रहीं थी ।

हम लोगों को उनके साथ और अधिक बैठने का अवसर तब मिला जब जून ८६ में यश भैया का विवाह महादेवीजी के पुत्रवत सहायक डॉ. रामजी पांडेय की सुपुत्री आरती से हुआ । फलदान, बारात से लेकर विदाई तक हर आयोजन में उनका आशीर्वाद बना रहा ।

तैयारी के दौरान उन्होंने पांडेयजी को बुलाकर पूछा, "शहनाई का इंतजाम हुआ !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

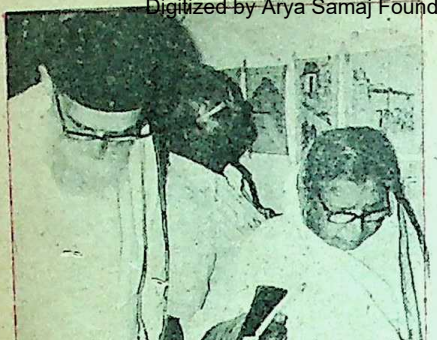

प्रयाग की एक प्रदर्शनी में फादर कामिल बुल्के और महादेवीजी, पीछे डॉ. जगदीश गुप्त।

"बिसमिल्लाह खां का कैसेट मंगवा लिया है।"

"वो तो ठीक है पर जब तक शहनाईवाले हम तरह (बाकायदे अभिनय करते हुए) झूमते नहीं दिखाई देते, शादी-ब्याह में अच्छा नहीं लगता।" बच्चों-जैसा कौतूहल, उत्साह और बरगद जैसी छाया। एक-एक क्षण उत्सव-सा लग रहा था।

आशीर्वादस्वरूप उन्होंने 'यामा' की हस्ताक्षरित प्रति एवं भोजपत्र पर शुभकामनाएं लिखकर दी थीं, जो आज हमारी अनमोल धरोहर हैं।

इधर भी दिये सजाओ

उत्सवधर्मी महादेवीजी के बिना अशोकनगर में होली कैसे बीतेगी ? सोचने की हिम्मत भी नहीं होती। त्यौहार बड़ी रुचि के साथ मनाती थीं वह। पिछले दो वर्षों से होलिका जलने के समय भी वह उपस्थित रहता था। कुरसी पर बैठी महादेवीजी प्रत्येक आगंतुक के माथे पर गुलाल का टीका लगाती थीं। पैर छूने पर उन्होंने मेरा चेहरा कैसे दोनों हाथों में सहेज लिया था, कैसे सिर पर हाथ फेरने लगी थीं, सोचने पर रोमांच हो आता है।

भाभी बताती हैं कि "दादीजी ! दीवाली पर कहती थीं, इधर भी दिये सजाओ भई, जो स्पंदन दिये की लौ में है, वह बिजली के बल्ब में कहां !"

पिछले रक्षाबंधन पर जब मैं उनसे मिला, तो मेरी दाढ़ी थोड़ी-सी बढ़ी हुई थी, जिसे देख वह हंसने लगीं, बोलीं, "बाबाजी क्यों बने हो ? दाढ़ी मत बढ़ाया करो।"

दाढ़ी से ही बात निरालाजी की ओर मुड़ गयी और उनकी आंखें अपने राखीबंद भाई को याद करके गीली हो आयीं।

रक्षाबंधन पर निरालाजी उनके घर आते और कहते—

"लाओ महादेवी दो रुपये।"

"किसलिए ?"

"एक तो रिक्शेवाले को देना है।"

"और दूसरा ?"

"अरे, तुमसे राखी बंधवानी है, तुम्हें भी तो कुछ देना होगा।"

उन्होंने दो छायावादी कवियों को राखी बांधी थी एक बज्रोपम निरालाजी दूसरे प्रकृति के सुकुमार कवि पंतजी।

अक्ल ठिकाने आयी

पर्वत से संकल्पवाली महादेवीजी अत्यंत सहृदय थीं। पशु-पक्षियों के प्रति भी उनका स्नेह अगाध था। लावारिस कुत्तों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़नेवाली गाड़ी आ गयी, जो पैसे देकर सारे कुत्ते छुड़ा लातीं।

बकरीद का दिन था। सुबह से ही महादेवीजी परेशान थीं, "बाबा रे बाबा ! आज कितने बकरों को काट दिया जाएगा। कहां लिखा है भई, जानवरों को काट दो।" अजीब कसमसाहट थी उनके मन में। बार-बार अपनी गरदन पकड़कर कहतीं, "ऐसे पकड़कर गरदन काट दी जाएगी उन बेचारों की।" आवाज भर आयी थी। ये वह स्तर था, जहां साहित्य मात्र रचा नहीं जाता, बल्कि जिया भी जाता है।

पिछली ४ जुलाई को मेरा पहला बाल-गीत संग्रह छपकर आया। मैं उन्हें भेंट करने गया, तो उन्होंने पूछा, "किताब का नाम क्या है ?"

"अक्ल ठिकाने आयी।"

"किसकी ?" और महादेवीजी की निर्मल हंसी नदी की तरह प्रवहमान हो चली।

"भई, इसमें तो बहुत अच्छी कविताएं हैं, बच्चों को खूब अच्छी लगेंगी ये तो। बड़ों के लिए भी लिखते हो न ?"

"हां, बहुत अच्छे-अच्छे गीत लिखे हैं इसने," मेरे बोलने से पूर्व ही पांडेयजी ने उत्तर दिया।

"कहीं आधुनिक कविताएं तो नहीं लिखते। ऊबड़-खाबड़। हमारा उमाकांत तो गा के भी पढ़ता था। बेटा ये गांठ बांध लो कि कभी अपनी परंपरा को नहीं भूलना। नये-नये पत्ते तो फूटते हैं, पर जड़ नहीं बदलती, समझे।" उस पूरी अवधि में इनका हाथ मेरे सिर पर रहा।

बहुत बड़ा पेड़ थीं वह, उनकी अनुपस्थिति से तपिश और अधिक हुई है। हिंदी जगत का एक बहुत बड़ा साया अब नहीं रहा। स्मृति की

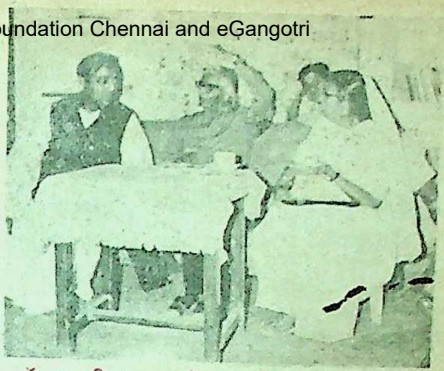

डॉ. जगदीश गुप्त के नव-निर्मित भवन में पं. सुमित्रानंदन पंत तथा श्रीमती महादेवीजी वर्मा

रेखाएं सघनतर होती जा रही हैं।

११ सितम्बर का महाप्रयाण, १२ सितम्बर की अंत्येष्टि—सब कुछ आंखों देखा है, पर जाने क्यों लगता है अभी भी जब अशोक नगर जाऊंगा तो तख्त पर हंसती हुई मिल जाएंगी और पूछेंगी, 'भतीजा कैसा है भई ?' या फिर 'उमाकांत ही लौटा है अपने घर में पुत्र का बेटा बनकर।'

प्रयाग की सोचता हूं तो लगता है—

सब चले गये सूनापन है
कातर हाथों की छुअन
छोर रूमालों के
हिलते हैं बोल
हवा में जानेवालों के
सन्नाती पटरी
थर्राता स्टेशन है
सब चले गये सूनापन है

उनका अभाव कहां-कहां महसूस नहीं होता ? उनके न रहने पर हिंदी प्रेमियों की जिम्मेदारी बढ़ गयी है, जिसका निर्वाह उन्हीं के आशीर्वाद से संभव है।

—ए-१११, मेंहदौरी गृहस्थान
इलाहाबाद—२११००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना गतिशील हो, न कि मरणशील

भारतीय संस्कृति में कवि तथा कविता का विशेष महत्त्व है। जहां इतिहास की किरणें नहीं पहुंच पातीं, वहां भी ऋषि ने कवि तथा कविता को इस प्रकार परिभाषित किया है—**'पश्य देवस्य काव्यं न ममारनाजीर्यति'** ईश्वर के इस काव्य को देखो जो न जीर्ण होता है न कभी मरता है।

प्रकृति ईश्वर का काव्य है। अर्थात, यह रूपरेखा नयी सृष्टि, उसका अमर होना ही, नित्य नवीनतामय काव्य है।

फिर उसी क्रम में ऋषि कहता है **'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः।'** रचनाशील कवि विशेष प्रज्ञा संपन्न होता है, वह संकीर्ण होकर व्यापक होता है तथा उसे बनाया नहीं जा सकता, वह स्वयं उपलब्ध हो जाता है।

नदी के तट भिन्न हो सकते हैं, किंतु उसे गतिशील रखने के लिए गहराई सब तटों पर रहेगी। अन्यथा वह नदी नहीं बन सकती। प्रत्येक बड़े कवि के साथ यही तत्व रहता है, जिसे हम प्रासंगिकता कहते हैं।

पूज्य दद्दा में यह प्रासंगिकता मुख्य तत्व है, जिसने उनकी भारतीयता को गति दी। वे उन तत्वों को लेकर चले हैं, जो समस्त कालचक्र की धुरी हैं।

हम आज के कवि से यही आशा करते हैं कि उसकी रचना गतिशील हो न कि वह मरणशील हो और पुरानी हो जाए। यह हमारी शती की श्रद्धांजलि होगी।

पथ तुम्हारा मंगलमय हो।

—महादेवी

पुनश्च : अत्यंत अस्वस्थ हो जाने के कारण उपस्थित नहीं हो सकी, इसके लिए क्षमा मांगती हूं।

३-८-८७

'कवि-दिवस' पर महादेवीजी का लघु संदेश, जो उनका अंतिम वक्तव्य सिद्ध हुआ। अस्वस्थता के कारण वे स्वयं एकेडेमी आ भी नहीं सकीं। हमारा कर्तव्य है कि तीन अगस्त को प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्तर पर कवि और कविता का विशेष सम्मान करें। इससे राष्ट्रकवि और राष्ट्रवाणी दोनों को गौरव प्राप्त होगा तथा हमें भी प्रतिष्ठा मिलेगी।

—जगदीश गुप्त

छाया : महेन्द्र राजा जैन

सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महादेवीजी ने इस पूरी धरती से प्यार किया । वे भारतीय संस्कृति की संवाहिका रही हैं । इस संस्कृति में उनकी अटूट, अजर और अमर आस्था थी । उनके मन में प्यार का असीम सागर था, जो व्यक्तियों तक नहीं सीमित था । वे पशु, पक्षी और हर पौधे से प्यार करती थीं । उन्होंने खरगोश, कुत्ता, बिल्ली से ले कर गिलहरियां तक पाली थीं । एक गिलहरी के मरने पर उसकी समाधि तक बनायी । पेड़-पौधों के साथ वे अपना समय हमेशा गुजारती रहीं और एक-एक पेड़ से खिलते हुए फूल को भविष्य की आशा के रूप में देखती रहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

छपा : एच. पी. झा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढोल-नगाड़ों और शहनाई के स्वरों के साथ अठखेलियां करने लगते हैं गायक-गायिकाओं के बोल। राजस्थान की हाथी होली।

छपा : ऐसकुमार

आज कोई परहेज नहीं, न रंग का, न गुलाल का

होली : रंग-गुलाल और गीत-संगीत से परिपूर्ण एक ऐसा राष्ट्रीय पर्व, जिसमें टूट जाती हैं सांप्रदायिक भेदभाव और ऊंच-नीच की भावना की जंजीरें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां कृष्ण ने राधा के पैरों पर महावर लगाया था

● रमेशचंद्र राजा चौबे

मति मारै दृगन की चोट
रसिया होरी में मेरे लग जायेगी

होली भारतीय पर्व-परंपरा में आनंदोल्लास का सर्वश्रेष्ठ पर्व है। बसंत ऋतु का यह यौवन काल है। वनश्री के साथ-साथ खेतों की एवं हमारे तन-मन की श्री भी फाल्गुन की समृद्धि की आभा में खिल उठती है।

ब्रज में होली के त्योहार को 'होरा' के रूप में मनाया जाता है। पिचकारियों द्वारा टेसू के फूलों से बने रंग से एक दूसरे को रंगमय करने की प्रथा बहुत पुरानी है। ब्रज के पुष्टि-मार्गीय मंदिरों में तो ठाकुरजी पर पांच रंग एवं गुलाल उड़ाये जाते हैं।

जाव का अनोखा हुरंगा

होली के हुरंगों में बिलकुल ही अनोखा रंग है जाव— बठैन की होली का। जाव के हुरंगे की पौराणिक, दार्शनिक, एवं मधुरिम पृष्ठभूमि इस प्रकार है।

कहा जाता है, श्रीकृष्ण के बड़े भ्राता और ब्रज के ठाकुर बलराम ने राधा से कहा, "भाभी, हम भी होली खेलेंगे।" बलराम जेठ थे। अतः उनके व्यवहार से राधा कुछ

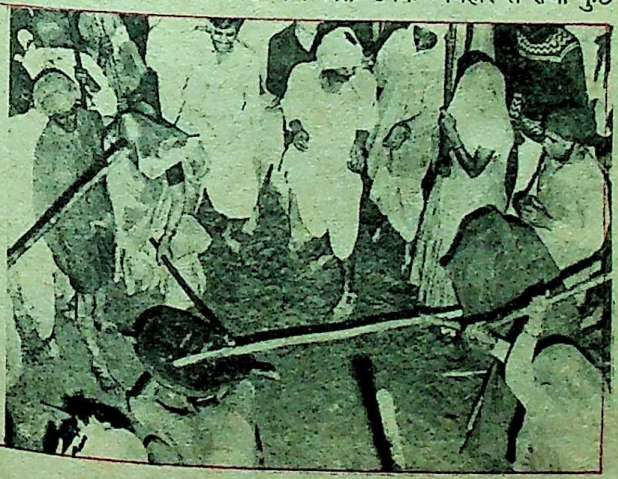

ऐसी होती है लठा-मार होली बरसाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाव : ब्रज का एक प्राचीन स्थल । विश्वास किया जाता है कि इसी स्थल पर कृष्ण ने राधा के पैरों में महावर लगाया था । इसी जाव में होली के अवसर पर प्रतिवर्ष एक अनोखा दृश्य प्रस्तुत होता है ।

विचलित हुईं और कृष्ण से शिकायत की तो वे मुसकराकर बोले— "त्रेता युग में बलराम थे लक्ष्मण और उसी नाते उन्होंने भाभी कह दिया होगा ।"

इस तरह जाव में होती है बलराम और राधा अर्थात जेठ एवं भाभी की होली । ऐसे संबंधवाले होली तो खेल सकते हैं, किंतु एक मर्यादा के साथ । दिल्ली-आगरा मार्ग पर मथुरा (कोसी) से चौंवालिस कि. मी. दूरी पर बसा जाव एक प्राचीन स्थल है । विश्वास किया जाता है कि यहां श्रीकृष्ण ने अपनी अनन्य प्रियतमा राधिका को रिझाने के लिए उनके पैरों पर महावर (जावक) रचाया था । वृहद गौतमीय पुराण के अनुसार राधा के चरणों से जावक गिरने के कारण यह स्थान जावक कहलाया ।

जाव का हुरंग चैत्र कृष्ण द्वितीया अर्थात धुलेंडी के दूसरे दिन दोपहर तीन बजे लगभग से प्रारंभ होता है । यहां होली खेलने के लिए निकटवर्ती बठैन गांव के हुरियार

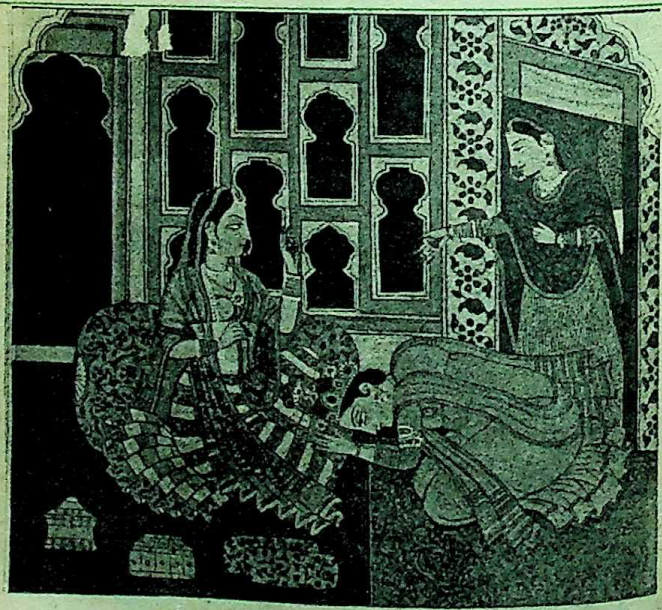

मानिनी राधा को मनाते हुए श्री कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं। जाव में दो चौपाल हैं, एक जाटों की और दूसरी ब्राह्मणों की। जाव गांव में जब यह 'सिरदारी' श्री राधाकांत मंदिर के निकट पहुंचती है, तो यहां की बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां उसका स्वागत-सत्कार करती हैं। मौंहर्फर नामक ब्रज की अनोखी मिठाई को बठैन से आये सिरदार लोग प्रसाद के रूप में महिलाओं को भेंट करते हैं। यह हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं की एक बहुमूल्य थाती है। पुरुषों के दल रह चलती गोपिकाओं की ओर संकेत करते हुए 'पानी में आग लगामें लुगाई' गीत गाते हैं तो गोपिकाएं रुककर सामने खड़ी हो जाती हैं। फिर दोनों समूहों के मध्य गीतों में वार्तालाप होता है।

इन हुरंगों में जहां ग्वाल-बाल के प्रतीक बलराम को एक बड़े गोले के अंदर ही रखा जाता है, और गोपियों की प्रतीक महिलाओं को उनके पास नहीं आने दिया जाता, वहीं महिलाएं (गोपिकाएं) लाठी बरसाकर इस कृत्रिम घेरे को तोड़ने का प्रयास करती हैं। उधर पुरुष गर्द्या नामक लकड़ी के टुकड़े से अपना बचाव करते हैं। यदि गोपिकाएं बलराम को पकड़ लेती हैं, तो वे विजयी मानी जाती हैं और बलराम से 'फगुंआ' की मांग करती हैं। उधर बलराम गोपियों से दूर-दूर भागकर परिक्रमा लगाते हैं। इस हुरंगे में यदि किसी को लाठी की चोट भी लग जाए तो बुरा नहीं माना जाता है। चोट में यदि खून भी निकल आये तो उस पर ब्रज की रज लगा दी जाती है।

बठैन का हुरंगा

बठैन अथवा बड़ी बठैन नाम से प्रसिद्ध यह गांव दिल्ली-आगरा मार्ग पर मथुरा से उनचास कि. मी. और कोसी से पांच कि. मी. दूरी पर है। जाव के हुरंगे के अगले दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्र कृष्ण तृतीया अर्थात् धुलेंडी के तीसरे दिन यहां यहां जाव के हुरंगा-जैसा हुरंगा मचता है।

जाव के पुरुषों और बठैन की स्त्रियां परस्पर हुरंगा खेलती हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बरसाने-नंदगांव के हुरियारे होली खेलते हैं।

बठैन में बल्देवजी का एक प्राचीन मंदिर है, जिसमें बलराम की श्याम वर्णी प्रतिमा है। हुरंगे के दिन जाव के हुरियार यहां आकर दर्शन करते हैं। संगीत समाज जुड़ता है। दोपहर तीन बजे गांव में 'चौपाई' निकलती है और सायंकाल मैदान में जाव गांव की भांति ही हुरंगा होता है। उसमें जाव के पुरुष और बठैन की स्त्रियां हुरंगा खेलती हैं।

बठैन गांव के नामकरण को 'बठैन' से जोड़ते हैं। विश्वास है, यहीं बैठकर बलराम ने कृष्ण की प्रतीक्षा की थी।

'अंगरेजों का मंदिर' और होली

वृंदावन स्थित श्रीकृष्ण-बलराम का मंदिर 'अंगरेजों का मंदिर' के नाम से विख्यात है। इस मंदिर में रंगभरनी एकादशी से चैत्र कृष्ण परवा तक छह दिन होली की धूमधाम रहती है। पूरे मंदिर में जैसे गुलालों से बादल उड़ते हैं। इस मंदिर के प्रांगण में नृत्य करते हुए रसिया गाया जाता है। प्रस्तुत हैं, कुछ रसिया :

मृगनैनी तेरो यार नवल रसिया
अतलस कौ याकौ लहंगा सोहे, झूमक सारी मेरे मन बसिया
बड़ी-बड़ी अंखियन कजरा सोहे, टेढ़ी चितवन मेरे मन बसिया
गोरी-गोरी बंहियन हरी-हरी चुरियां, बंद जंगालों मन बसिया

चल्यौ अइयो यार मेरे पलकन पे
तू रीझो मेरी पतरी कमर पै, मैं रीझी तेरी अलकन पै
तू रीझो मेरे नवल जोवना पे, मैं रीझी तेरे तिलकन पै
पुरुषोत्तम प्रभु कुंवर लाडिले, अबीर गुलाल की झलकन पै

आज बिरज में होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया
उतते आयें कुंवर कन्हैया, इततें राधा गोरी रे।
उड़त गुलाल कुंकुमा, केशर गागर ढोरी रे
बाजत ताल मृदंग बांसुरी, और नगारे की जोरी रे

ब्रज की होली में नयनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। नयनों की इस माधुर्यमयी होली का सुंदर चित्रण है इस पद में—

नाजौ नैना री नुकीले नये ढंग, खेलि रहे रंग होरी
नैन ही खेलें नैन खिलामें, नैन ही डारें रंग
नैना मारे प्रेम प्रीति की, पिचकारी पचरंग

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाण से भी अधिक तीक्ष्ण हैं ये नयन और बिना लगे ही इनका प्रभाव हो जाता है—

नैन बान थे बान ते, अधिक करत है घाव
ये बिन लागे लागत है, वे लागे अधिकाव

ये नयन नुकीले हैं, सजीले हैं, सलोने हैं, अलबेले हैं और छैल-छबीले हैं। ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवियों एवं लोकगायकों दोनों की ही रचनाओं में नयनों की मादक अभिव्यंजना के स्वर मुखरित हुए हैं। किसी कवि ने इन्हें कजरारे कहा है तो किसी ने चपलारे— अंधियारे, और किसी ने अनमने तो किसी ने अलौकिक। 'सरस पिया' के शब्दों में—

मतवारे री तेरे छैल छबीले नैना
घूम रहे अलबेले अलौकिक, करत कटाक्षन नैना
चपलारे अनियारे भारे, कजरारे सुख देना
'सरस पिया' बस भये है बिहारी, कहि कहि साधु बैना

ब्रज की गोपिकाएं रंग-गुलाल की चोट तो सह लेती हैं, किंतु मतवारे नयनों की चोट सहना कठिन हो जाता है। वे घूंघट की ओट में इन चोटों को बचाने का प्रयास करती हैं—

मत मारे दृगन की चोट, रसिया होरी में मेरे लग जायेगी
अबकी चोट बचाय गई हूं, करि घूंघट की ओट
सास सुनें मेरी ननद लड़ैगी, तुममें भरे बड़े खोट
पुरुषोत्तम प्रभु वहां जाय खेलो, जहां तिहारी जोट

—हनुमान गली, छत्ता बाजार, मथुरा

अंडे भी रंग बदलते हैं !

शत्रुओं की निगाहों से छिपने के लिए कई पशु-पक्षी तो आसपास के वातावरण के अनुसार अपना रंग बदलते ही हैं, उनके अंडे भी इस बचाव कार्य में पीछे नहीं रहते। सुरक्षात्मक अनुरंजन का सर्वाधिक दिलचस्प उदाहरण कुक्कू चिड़िया के अंडों का है। मादा कुक्कू अपने अंडे दूसरी चिड़िया के घोसले में देती है। वह घोसले में पहले से मौजूद अंडों में से एक अंडा हटाकर उसकी जगह अपना अंडा रख देती है। उसके द्वारा रखे गये अंडे का रंग व अन्य निशान वहां रखे अंडों-जैसे ही होते हैं। यदि अलग-अलग घोसलों से कुक्कू के अंडे इकट्ठे किये जाएं तो देखने में वे अलग-अलग पक्षियों के अंडे लगेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिड़की दर्शन

● गोपाल चतुर्वेदी

पढ़े-लिखे लोगों का कहना है कि हमारे पूर्वजों की प्रथम पीढ़ी पेड़ों पर रहती थी। इस मान्यता से हमारे आत्म-सम्मान को थोड़ी ठेस तो लगती है, पर क्या करें। तथ्यों और आंकड़ों को तोड़-मरोड़कर मनचाहे अर्थ लगाने का एकाधिकार सरकार के सांख्यिकी विशेषज्ञों का है। हम तो सिर्फ इतना जानते हैं कि गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के अनुसार ऊपर की कोई भी वस्तु हो, जैसे आदमी या फल, उसे जमीन पर टपकना है। लिहाजा आदि-मानव को पेड़ से उतरना ही था। वृक्षों पर बितायी जिंदगी का हमें अनुभव तो नहीं है पर हो सकता है; वह रोचक और आनंददायी हो। साइकिल से दफ़्तर आता-जाता हूं। जाड़े बरफीली हवा, गरमी में लू और अंतरात बारिश की वास्तविकता से लगातार पाला पड़ है। प्राकृतिक इफरात बहुधा असुविधाजन होती है। अपने साइकिल-सफर की बिनह मैं पुरखों के भोगे हुए यथार्थ की पीड़ अनुमान भी लगा सकता हूं। इसी वजह निश्चित मत है कि पहली मिट्टी-पत्थर की इ मौसम के अतिरिक्त से बचाव का कारण रही होगी। उसमें प्रवेश-द्वार के अलावा अतिरिक्त संधि होने का सवाल ही नहीं उठ

[लेखकीय टिप्पणी— विद्वान की एक पहचान यह है कि वह बैंगन, वेद या वैदेही आदि पर समान अधिकार से लिख सकता है। दूसरी यह कि वह चुने हुए विषय की विस्तृत विवेचना में उसकी जड़ में पहुंचने का प्रयत्न करता है। जैसे विषय बैंगन का हुआ तो बैंगन क्या है? उसका भूत क्या था और वर्तमान तथा भविष्य क्या है! उसका भोजन और रहन-सहन पर कितना प्रभाव पड़ा है! बैंगन खानेवालों की संख्या, उनमें से कितने शादीशुदा और कितने कुंवारे हैं? बैंगन का रंग कृष्ण के करीब है या कौवे के? हिंदी भाषा का विकास और बैंगन, दूरदर्शन के प्रायोजित कार्यक्रमों में बैंगन का योगदान आदि विषयों पर पूरे एक-एक अध्याय में विचार किया जाएगा, जब तक कि बैंगन का कतई भुर्ता न बन जाए। मेरे अवचेतन में विद्वान कहलाने की इच्छा कुलबुला रही है। मैंने इसीलिए शोध-छात्रों के पदचिह्नों पर चलकर खिड़की के उद्गम और विकास पर प्रकाश डालकर पांडित्य-प्रदर्शन का भ्रम उत्पन्न करने का भरसक प्रयास किया है। पाठक कृपया इसे अन्यथा न लें।]

कार्टून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातायन, खिड़की, झरोखा आदि वास्तुकला के बाद के क्रमिक विकास की देन हैं।

जैसा सर्वविदित है, हमारे देश में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और संस्कृतियों का सुखद सहअस्तित्व है। पर इस रहस्य से कम लोग परिचित हैं कि आदि और आधुनिक मानव और निर्माण कला भी हमारे हर महानगर में भाईचारे की भावना से विराजते हैं। हवाई-अड्डों, रेलवे स्टेशनों के आसपास या नये निर्मित सड़क-पुलों के नीचे फलती-फूलती बिना खिड़कीवाली झुग्गी-झोपड़ियां हैं और उनके इधर-उधर शानदार खिड़कीदार आवासीय बस्तियां। ऐसा यूरोप, अमरीका या रूस में नहीं है। वहां मकान छोटे-बड़े तो हो सकते हैं पर खिड़की सबमें विद्यमान है। यही हमारी अध्यात्म और भौतिकता की मिली-जुली संस्कृति कोरी भौतिकता पर बाजी मार लेती है। हममें से अधिकांश बिना खिड़की के मकान में रह सकते हैं या खुले आकाश के नीचे और कहीं तो पेड़ों पर। कहने का आशय यह है कि हम खिड़की पर आश्रित नहीं हैं। जबकि दूसरे मुल्कों के रहनेवाले खिड़की के गुलाम हैं। अपनी बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति सरकार की उदासीनता चिंता का विषय है। कहीं 'यक्षिणी' का अंग-भंग हो रहा है, कहीं झुग्गियों पर बुलडोजर चल रहे हैं। राज्य सरकारों ने खिड़कीवाली खोलियों के निर्माण के लिए हर शहर में उपक्रम बना रखे हैं। इनमें सामान्य मकानों के समान दीवालों पर तो खिड़कियां हैं ही, छतों पर भी अदृश्य झरोखों की सरस्वती है। बारिश आयी और वह बह निकली। प्रजातंत्र की परिपाटी के अनुसार हम अपने नेता और सरकार का अनुसरण करते हुए गांधी टोपी से सफारी सूट तक का सफर तय कर चुके हैं। अब सरकार की वातायन-प्रतिबद्धता से प्रभावित होकर छोटे-बड़े सब खिड़की-प्रतियोगिता में लगे हैं। बिना खिड़कीवाले खिड़की की और एक खिड़कीवाले कई खिड़कियों की जुगाड़ में हैं।

व्यक्तिगत रूप से मैं बचपन से घरों में खिड़की की अनिवार्यता का समर्थक रहा हूं। वह शिशुवत खिड़की-प्रेम शायद मेरी निम्न-मध्यम वर्गीय मानसिकता के कारण है। मेरा जन्म ही खिड़कीवाले फ्लैट में हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के एक कमरे के दड़बे में पिताजी रहते थे। एक झरोखा था और उसके सामने एक और इमारत बीच में एक गंधाती गटर। मैं और मेरे ऐसे तीन और खिड़की खोलकर दूसरों की जिंदगी में झांकने के राष्ट्रीय शौक को पूरा करने में तत्पर रहते और मां, मच्छर मक्खी तथा दुर्गंध से बचने के लिए उसे बंद रखने को कृतसंकल्प। थोड़े दिनों बाद मुझे इस अहम सच्चाई का अहसास हुआ कि जहां खिड़की-विहीनों का सबसे बड़ा संघर्ष उसे हासिल करने का है, वहीं खिड़की-पतियों की समस्या और कशमकश उसे बंद या खुले रखने की है। जन्म से लेकर विवाह और दिल्ली निवास तक खिड़की मेरे जीवन में सबसे अधिक विवादों का कारण रही है।

मैं खुले मन से खुली खिड़की घर पक्षधर हूं। मेरी पत्नी का मन बदलता रहता है। खिड़की घर और बाहर की जिंदगी के बीच सेतु का काम करती है। ऐसे भी खिड़की पर खड़ा आदमी बाह्य प्रभावों से वशीभूत हो कई-कई स्वांग भर लेता है। दफ़्तर से लौटकर मैं अकसर खिड़की से झांकता हूं। कद्दू की बेल देखकर कभी मुझे 'खिड़की के पार चार कद्दू' का रहस्य-बोध होता है और खिड़की, लड़की, झिड़की, कड़की— जैसी गीत-विधा की पारंपरिक तुकें खयाल आती हैं। झरोखे से जग का मुजरा लेने के दौरान मुझे कई बार दर्शन का दौरा भी पड़ चुका है। सामने की सड़क पर तेज भागते ट्रकों, बसों, कारों और स्कूटरों की इस निरर्थक दौड़ में शामिल लोगों पर मुझे दया आती है। इस जल्दी का फायदा क्या। जब बाबू या अफसर, व्यापारी या भिखारी, पूंजीपति या निर्धन सबकी अंतिम मंजिल केवल मृत्यु है। इस चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पैदल जाने में क्या बुराई है। ऐसे मैं कई बार स्कूटर हासिल करने के अभियान में लगा हूं।

खिड़की के प्रति व्यक्ति और देश के दृष्टिकोण में भी काफी अंतर है। खुली खिड़की दिखी और पड़ोसी देश कभी तस्करी की अफीम और कभी आतंक की बारूद भेजने लगते हैं। पर व्यक्ति के स्तर पर पड़ोसियों के प्रति अपना नजरिया पारस्परिक प्रेम और सौहार्द्र का है। इसके अंतर्गत यदि पड़ोसिन सुंदर हो तो चाय, चीनी, दूध, चावल का वख्त-जरूरत निर्यात भी किया जा सकता है। एक दूसरे को देखकर मुसकराया जा सकता है।

अपनी खिड़की के सामने की खिड़कीवालों से अपने ऐसे ही मधुर संबंध विकसित हो रहे थे। पर यह सुखद सिलसिला थोड़े ही दिन चल पाया। अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के मेरे जीवन का यह इकलौता रूमानी वातायन बंद हो गया। घरवालों को शक हो गया था कि झरोखे का प्रयोग अनधिकृत ताक-झांक के लिए हो रहा है। किसी कुशल कूटनीतिज्ञ की तरह खिड़की बंद करने के लिए औपचारिक रूप से बढ़ती कीमतों को जिम्मेदार ठहराया गया।

एक शाम मेरे कुछ मित्र मिलने आये हुए थे। मैंने चाय की फरमाइश की। उत्तर मिला कि दूध तो है, चीनी और चाय की पत्ती नहीं है। सबको सुनाते हुए सुझाव आया, "क्यों नहीं खिड़कीवाली के यहां से ले आते। इतनी देर तो चाय और चीनी वहां जा चुके हैं।"

जहां तक निजी अर्थ— व्यवस्था का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताल्लुक है, मेरा विश्वास आत्मनिर्भरता के सिद्धांत में है। हम सरकार तो हैं नहीं कि उधार पर गुलछर्रे उड़ायें। सिर्फ जरा-सी चाय और चीनी के लिए हम अपने उसूल से कैसे समझौता करते। फिलहाल तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि दोस्तों ने हमारे खिड़की-प्रेम और खिड़कीवाली के प्रति आसक्ति को लेकर हमारी खूब खिंचाई की। इनामस्वरूप चाय और पकौड़े पाये। उसके बाद बड़ी मुश्किल से टले वरना मुझे तो यकीन होने लगा था कि रात्रि-भोजन के बाद तक हम सामूहिक मनोरंजन के एकमात्र आकर्षण केंद्र रहेंगे। पत्नी मित्रों की प्रतिक्रिया से इस हद तक प्रोत्साहित हो चुकी थीं कि अब खिड़की खुलने का प्रश्न ही नहीं उठता था। अंधेरे बंद कमरे की घुटन जीने के दौरान मैं रत्तीभर रोशनी को तरस गया। मैंने अंजुरीभर चांदनी के लिए अनुरोध किया तो उत्तर मिला कि सामने के खुले बरामदे से धूप, उजाले और ताजी हवा की जरूरतों की पर्याप्त पूर्ति की जा सकती है। कवि के वियोगी होने की परिभाषा के बावजूद मेरे विशुद्ध वियोगीपन में कविता की मिलावट न हो सकी। बहुमंजिले फ़्लैटों की इमारत में अकसर भूतल की खोली का दरजा कूड़ेदान का होता है। पर हमारी खिड़की बंद कर बंद रहती।

मुझे कूड़े के भविष्य को लेकर चिंता होने लगी थी कि एक रोज दफ़्तर से लौटने पर लंगड़ाते हुए भूतल-निवासी चक्रवर्तीजी ने रुकने का इशारा किया।

"आपकी खिड़की से हमारे घर में कूड़ा फेंका जाता है", उन्होंने आरोप लगाया। मैंने गरदन उठाकर उन्हें अपने फ़्लैट की बंद खिड़की

प्रजातंत्र की परिपाटी के अनुसार हम अपने नेता और सरकार का अनुसरण करते गांधी टोपी से सफारी सूट तक का सफर तय कर चुके हैं। अब सरकार की वातायन-प्रतिबद्धता से प्रभावित होकर छोटे-बड़े सब खिड़की प्रतियोगिता में लगे हैं। बिना एक खिड़कीवाले खिड़की और एक खिड़कीवाले कई खिड़कियों की जुगाड़ में हैं।

दिखायी।

"यही तो चालाकी है। खिड़की दिखाने को 'क्लोज' रखता, सिर्फ कूड़ा फेंकते वखत खोलता। हमारा 'गॉर्डन' बरबाद हो रहा है। कल तो केले का छिलका भी फेंका। हम फिसला तो फ्रेक्चर होते-होते बचा। अब तक लंगड़ा रहा है। आप समझा लो नहीं तो हम म्युनिसपैलिटी में शिकायत करेगा, पुलिस में रिपोर्ट लिखाएगा", भावना में बहकर कांपने लगे थे।

मैंने उन्हें टांग न टूटने के लिए बधाई दी और साक्ष्य के अभाव में 'कचरा-आरोप' अस्वीकार करते हुए उनका ध्यान किसी और फ़्लैट से भी कूड़ा आ सकने की संभावना की ओर दिलाया। "हमने खुद अपनी आंखों से देखा। हमारा दो दिन का 'लीव' 'वेस्ट' हुआ। हम सामने छिपकर बैठा था कि आपकी 'फेमिली' ने चुपके-चुपके खिड़की खोला, कूड़ा फेंका और झटपट बंद कर लिया। हमने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कि कल तो उसने केले का छिलका भी फेंका था। हम आवाज देता दौड़ा तो पैर फिसल गया। हमारा हार्ट फेल हो जाता तो", वह लगभग चीखने लगे थे। मुंह से निकलता झाग और उत्तेजित स्वर उनके बढ़ते रक्तचाप और सभावित हिल के दौर की ओर इंगित कर रहे थे।

अहिंसा के उसूल को अपनाते उनकी प्राणरक्षा के लिए मैंने 'फेमिली' और अपनी ओर से उनसे क्षमा प्रार्थना की और कूड़ा-केस को भुलाकर तत्काल विश्राम करने का अनुरोध किया। पत्नी ने मेरी अनुपस्थिति में नियम से दो बार याने सुबह और शाम खिड़की खोलकर कूड़ा नीचे फेकने की बात स्वीकार की, "मेरा तो खयाल था कि खाद पाकर उनके लॉन की दूब और हरी होगी। इसमें चीखने-चिल्लाने की क्या जरूरत थी, मुझसे कहते मैं लॉन में खाद देना बंद कर देती।"

पता नहीं, हमारे सद्प्रयासों की क्लोरोफिल से घास पर रंग चढ़ा कि नहीं पर चक्रवर्ती साहब जरूर लाल-पीले हो गये थे। चक्रवर्ती साहब की खाद-विरोधी मुहिम का नुकसानदेह नतीजा निकला। जो उनका भूतल का फ्लैट बनते-बनते बचा, वह कूड़ेदान में बन गया। सुबह-और दिनभर का कचरा शाम को मेरी प्रतीक्षा करता। उसे नीचे ढोने और नगरपालिका द्वारा निश्चित स्थान में फेकने का दायित्व मेरा था। घर की खिड़की बंद हो तो कूड़ा-कचरा बढ़ना लाजमी है।

एक दिन दफ़र से लौटने पर सुखद आश्चर्य हुआ। अपनी सपनों की चिर-प्रतीक्षित खिड़की खुली हुई थी। एक अजानी चुंबकीय शक्ति से खिंचा मैं खिड़की की ओर लपका। उत्कंठा से सामने देखा। न्यूनतम वस्त्रों में एक पहलवान दंड-बैठक लगा रहे थे। पता लगा, वह 'एशियाड' में तो चारों खाने चित्त रहे पर खेल-कोटा में नौकरी पाकर यहां आ बसे थे। खिड़कीवाली के पति का तबादला हो गया था। खिड़की ने खुलने में देर कर दी। उनकी की कोमल रूमानी भावनाएं क्रूर पहलवान यथार्थ बनकर तबसे दंड-बैठक कर रहीं हैं।

—डी-१/२१०, विनय मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-२१

कॉफी पीने की शुरूआत ऐसे हुई

पुराने समय में अरब के कालदी नामक गडरिये ने एक दिन अपनी भेड़-बकरियों को एक सदाबहार पौधे के लाल फल खाने के बाद उछलकूद करते देखा। कौतुहलवश कालदी ने भी वह फल खा लिया। उसे लगा कि वह तरोताजा हो गया है। उसने एबोट नामक भिक्षु को इस फल के बारे में बताया। भिक्षु ने इस फल को पीसकर, पानी में मिलाकर खुद पिया और मठ के अन्य लोगों को पिलाया। सभी ने अपने भीतर स्फूर्ति अनुभव की। यह लाल फल कॉफी के पौधे का था। यह कहानी सच हो या नहीं लेकिन अरब के लोग प्राचीन काल से ही कॉफी के शौकीन हैं। सत्रहवीं शताब्दी में कॉफी पीने का चलन इंगलैंड में शुरू हुआ तथा सन १६५० में ऑक्सफोर्ड में विश्व का पहला कॉफी हाऊस खोला गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ फागुनी दोहे

मौसम निकला गली से

खुली सड़क पर झुकी नजर के चलते जादू टोने
फागुन आया फिर भर लाया मुसकानों के दोने

000

बरसों बीते कभी न आयी यों फागुन की शाम
तुमने छुआ गुलाबी हो गये, भीतर आठों याम

000

इस फागुन की शाम ने कह दी ऐसी बात
फिर होली सी मैं जली सारी सारी रात

000

धूप अटारी पर खड़ी, सुखा रही थी बाल
मौसम निकला गली से फेक गया रूमाल

000

मन के सूने घाट पर सुन बिरहा के बोल
आहिस्ते से बाजूबंद दिये हवा ने खोल

000

जीवन दुख का आईना, जलता हुआ बबूल
मन के आंगन झर गया एक बासंती फूल

000

लटकी हो टूटे मकान पर नेम प्लेट कोई खाली
तुम बिन सब त्यौहार एक से होली और दिवाली

000

● दिनेश शुक्ल

—रामेश्वर रोड, खंडवा-४५०००१ (म. प्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंगे रहने के लिए हंसिए, और खूब हंसिए

● अनंत राम गौड़

मनुष्य को जब किसी चीज की जरूरत होती है तो उसे प्राप्त करने के लिए उसमें तनाव पैदा होता है, और उसके अनुकूल व्यवहार करने, यानी उस वस्तु को प्राप्त करने की दिशा में काम करने से वह तनाव घटता है। इसे यों समझ लीजिए कि बच्चा जब भूखा होता है, या जब कपड़े गीले कर देता है तो वह रोता है। यह बच्चे का तनाव है। मां जब बच्चे को दूध पिला देती है, या उसके कपड़े बदल देती है तो उसका तनाव घट जाता है और वह प्रसन्नचित दिखने लगता है।

हमारा व्यवहार अधिकतर हमारी आंतरिक जरूरतों पर आधारित रहता है। शारीरिक कष्ट हमारे अंतर्नाद हैं, जो बड़े दुःखदायी होते हैं। इस प्रकार के दुःखों को दूर करने के लिए शरीर में उत्पन्न तनावों को शिथिल करने की जरूरत होती है, ऐसे ही जैसे कि घाव पर मरहम लगाया जाता है। शरीर के स्नायुओं को तनाव रहित करने के लिए स्नेह जगाना पड़ता है और उसे जगाने के लिए खुश रहना जरूरी है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए हंसने के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं है।

नीरोग और हंसी

इसी प्रकार शरीर में जब रोग पैदा हो जाते हैं तो उनसे लड़ने की जरूरत पड़ती है। इसके लिए जब तक शरीर को हंसी का टॉनिक नहीं दिया जाएगा तब तक वह तनावरहित स्थिति में होकर संघर्ष करने की मनःस्थिति नहीं बना पाएगा। इसलिए सदा हंसते रहिए, डॉक्टरी सलाह पर ही सही, और हंसने-खुश रहने की अपनी आदत बना लीजिए। न्यूयार्क के एक बाल चिकित्सालय में बच्चों को खुश रखने के लिए टमाटर-जैसी नाक लगाये एक मसखरा, सर्कस के जोकर की तरह अपने करतब दिखाता रहता है। बच्चों को अपने रोग से लड़ने की शक्ति प्रदान करने का यह एक मनोवैज्ञानिक तरीका है। इससे उनके नीरोग होने के अलावा उनकी शारीरिक दशाओं पर भी अनुकूल प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त रूप से हंसने से शरीर में जो हलचल होती है उससे अंदर की मांसपेशियों की उसी प्रकार वर्जिश हो जाती है, जिस प्रकार दौड़ लगाने से शरीर की होती है। इससे दिल की गति बढ़ती है, रक्त चाप में वृद्धि होती है, श्वसन क्रिया में तेजी आती है तथा आक्सिजन के उपभोग में बढ़ोत्तरी होती है। योग की एक क्रिया में मुंह खोलकर जोर से हंसने को भी शामिल किया गया है जिससे चेहरे, कंधों, पेट और नितंबों की मांसपेशियां हरकत में आती हैं। इसी प्रकार जिसे हंसते-हंसते दोहरे हो जाना कहते हैं उससे पैरों और हाथों की मांसपेशियों की भी कसरत हो जाती है।

पड़ता है।

अगर मनुष्य के चिंता करने और उसके मन में शोकपूर्ण भाव पैदा होने से उसके 'इम्यून सिस्टम', यानी शरीर के अंदर स्थित वह तंत्र जो रोगों से हमारी रक्षा करता है, को हानि पहुंचती है तो खिलखिलाकर हंसने, मन में आशा, आस्था और विश्वास के भाव पैदा करने से इस तंत्र को ताकत क्यों नहीं मिलेगी ? रोग से उबरने, घाव के जल्दी भरने, यहां तक कि दीर्घायु होने में भी सहायता क्यों नहीं मिलेगी ? लेखक नॉर्मन कजिंस को जब गठिया रोग ने धर दबाया तो उसने विटामिन सी. की खूराकों के साथ गुदगुदानेवाले साहित्य का अनुशीलन भी किया, और उनका मंचन भी जी भरकर देखा। कजिंस के अधिकतर हास्य साहित्य की रचना भी उसी कालावधि की बतायी जाती है।

हंसने-हंसाने की इस क्रिया ने ही, यानी इस मान्यता ने कि शरीर के 'इम्यून सिस्टम', या रोगप्रतिरक्षण प्रणाली, को मस्तिष्क प्रभावित कर सकता है, चिकित्सा जगत के उस भारी-भरकम नामवाले विज्ञान को जन्म दिया है जिसे 'साइकोन्यूरोइम्यूनोलाजी' कहते हैं, और हिंदी में भी हम जिसे 'मनोतंत्रिकारोध क्षमता विज्ञान' के उतने ही विशालकाय नाम से जानते हैं।

हंसी का मायावी स्वभाव

इस क्षेत्र में हुए अधिकतर अनुसंधान कार्यों ने न्यूरोट्रांसमिटर की कार्य प्रणाली को अपना केंद्र बनाया है। मस्तिष्क, इम्यून सिस्टम और कुछेक तंत्रिका कोशिकाओं से स्रावित रसायन शरीर के अंदर संदेशों को इधर से उधर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर से इधर पहुंचाते रहते हैं। इसे न्यूरोट्रांसमिटर, या तंत्रिका प्रेषित्र कहते हैं। इसमें हंसी ने अपना दखल कहां जमाया है, इसे समझना कोई मुश्किल काम नहीं। अगर किसी बात से हंसते-हंसते आपके पेट में बल पड़ जाए तो वह हंसी मस्तिष्क को ऐसे पदार्थ, जैसे कि कोर्टिजोन, न बनाने देने के लिए प्रोत्साहित करती है जो 'इम्यून सिस्टम', यानी हमारे शरीर में स्थित रोग से रक्षा करनेवाली प्रणाली, को शिथिल करते हैं। तो इस तरह की हंसी अगर ऊपर बताये गये पदार्थ को बनाने से मस्तिष्क को रोकती है तो ऐसा पदार्थ जरूर बनाने के लिए प्रेरित करती होगी, जिससे रोग प्रतिरक्षण प्रणाली को ताकत मिलती है। शक्ति प्रदान करनेवाले इस पदार्थ को बीटा-इनडार्फिन कहते हैं। यह थिअरी या सिद्धांत, तो बढ़िया है लेकिन उक्त क्रिया इसी प्रकार से होती है, इसको समर्थन देनेवाले अधिक आंकड़े, या आधार सामग्री, अभी नहीं मिली है।

इस प्रकार के आंकड़े अब तक जो नहीं मिले हैं, उसके लिए हंसी का मायावी स्वभाव भी उतना ही जिम्मेदार है जितनी कि रोगप्रतिरक्षण प्रणाली की जटिलता। उसके साथ ही एक बात यह भी है कि रोगप्रतिक्षण कोशिकाओं में होनेवाले क्षणिक और अस्थायी परिवर्तनों को पहचानना भी मुश्किल हो जाता है। वस्तुतः, अब तक इस बात का पता नहीं लग पाया है कि थोड़े समय के लिए कभी-कभी होनेवाले रोगप्रतिरक्षणात्मक परिवर्तनों से स्वास्थ्य को कोई स्थायी लाभ भी होता है। हां, आप में टिकाऊ विनोदवृत्ति का होना अधिक महत्त्व और फायदे की बात है। कुछेक अनुसंधानकर्ता और मनोवैज्ञानिक भी इस संबंध में हां में हां मिलाने को तैयार हैं। बोस्टन विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मैक्लकीलैंड भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि हंसी और शरीर को नीरोग रखनेवाले तत्वों के बीच का संबंध बड़ा स्थूल है, क्योंकि आपके रोगप्रतिरक्षण तत्व, मनोवैज्ञानिक तत्व, हार्मोन संबंधी तत्व और उसके ऊपर आपकी बीमारी इनको प्रभावित करती रहती है।

हंसना : लाभदायक आदत

अमरीका स्थित लोमा लिंडा यूनिवर्सिटी स्कूल ऑव मेडिसिन के प्रोफेसर ली बर्क तो इसे एक गोरखधंधा, एक जटिल पहेली, कहते हैं। बर्क इस समय हंसी के दौरान मनुष्य के हार्मोन तथा श्वेत रक्त कोशिकाओं में होनेवाले परिवर्तनों का अध्ययन कर रहे हैं। अभी तक उनका अनुसंधान जहां तक पहुंचा है, उससे इस सिद्धांत को समर्थन मिलता है कि मधुर मुसकान, हलकी हंसी या अट्टहास, अर्थात् जिससे भी मन को खुशी मिलती हो, शरीर के लिए लाभदायक है, क्योंकि इससे रोगप्रतिरक्षण क्रिया को शिथिल बनानेवाले तत्व,— जैसे कि एपिनेफ्रीन और कोर्टिजोन, मार खाते हैं। अन्य वैज्ञानिकों के अनुसार भी हंसते रहने, अर्थात खुश रहने की आदत बना लेना निश्चय ही लाभदायक है। इसके पक्ष में पेंसलवानिया स्थित पाओली स्मारक अस्पताल ने एक उदाहरण पेश किया है, जिसमें बताया गया है कि जिन रोगियों के कमरों की खिड़कियों से वृक्ष और हरी-भरी घाटियां दिखायी देती हैं उन्हें पीड़ा कम महसूस होती है, उनके रोग में पेचीदगियां भी उतनी नहीं आतीं और वे चंगे भी जल्दी होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं बनिस्बत उनके जो सिर्फ ईंट-गारे और पत्थर के ढांचे देखते रहते हैं। आपके घर से यदि सुंदर फूलों और लहलहाती हरियालीवाले पार्क दिखायी देते हों तो आपकी प्रसन्नता का राज जानना मुश्किल नहीं होगा।

कैंसर के कुछेक रोगियों ने अपने जो अनुभव अध्ययनकर्ताओं को बताये हैं, उनसे भी यही पता चलता है कि जिन लोगों ने अपने रोग से लड़ने की इच्छा शक्ति जाग्रत कर ली वे तो अधिक दिन और बेहतर तरीके से चल गये, और जो शुरू से ही हार मान बैठे वे जल्दी ही उठ गये। इस प्रकार के अध्ययनों के परिणामों ने कैंसर के कुछ अस्पतालों, जैसे कैलिफोर्निया में सेंटा मानिका स्थित द वेल्नेस कम्युनिटी क्लीनिक और पैसिफिक पैलिसेड्ज के सिमांटक कैंसर सेंटर ने अपनी चिकित्सा पद्धति में इस प्रकार की व्यवस्था की है जिससे कि मरीजों में संघर्ष करने का माद्दा पैदा किया जा सके।

हंसना : एक सुखद व्यायाम

स्टैनफर्ड मेडिकल स्कूल के मनश्चिकित्सक विलियम फ्राई के अनुसार दिन में १०० से २०० बार हंसना १० मिनट नाव चलाने के बराबर है। फ्राई का कहना है कि मुक्त रूप से हंसने से शरीर में जो हलचल होती है, उससे अंदर की मांसपेशियों की उसी प्रकार वर्जिश हो जाती है, जिस प्रकार दौड़ लगाने से शरीर की होती है। इससे दिल की गति बढ़ती है, रक्त चाप में वृद्धि होती है, श्वसन क्रिया में तेजी आती है तथा आक्सिजन के उपभोग में बढ़ोत्तरी होती है। योग की एक क्रिया में मुंह खोलकर जोर से हंसने को भी शामिल किया गया है जिससे चेहरे, कंधों, पेट और नितंबों की मांसपेशियां हरकत में आती हैं। इसी प्रकार जिसे हंसते-हंसते दोहरे हो जाना कहते हैं, उससे पैरों और हाथों की मांसपेशियों की भी कसरत हो जाती है।

हंसी का दौर जब शांत हो जाता है तो शिथिलन, या विश्रांति की एक संक्षिप्त अवधि आ जाती है जिसमें सांस लेने तथा दिल के धड़कने की गति धीमी पड़ जाती है, कभी-कभी तो सामान्य स्तर से भी नीची पहुंच जाती है। रक्तचाप भी गिर जाता है और मांसपेशियां विश्रांति की अवस्था में आ जाती हैं। अब यह चाहे उत्तेजक हो, शिथिलन हो या दोनों, फ्राई का कहना है कि हंसी की पर्याप्त मात्रा से दिल के रोग, अवसाद और उससे संबंधित अन्य खतरे दूर नहीं तो कम जरूर हो जाते हैं।

हंसी : एक ट्रेंकुलाइजर

मनुष्य की तंत्रिकाओं को शांत करने में हंसी का अंशदान किस सीमा तक होता है, उसका

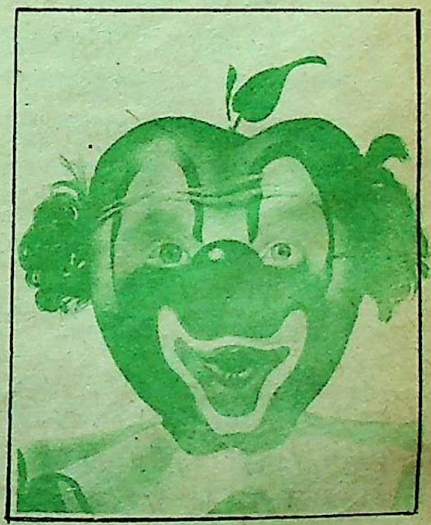

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान ?

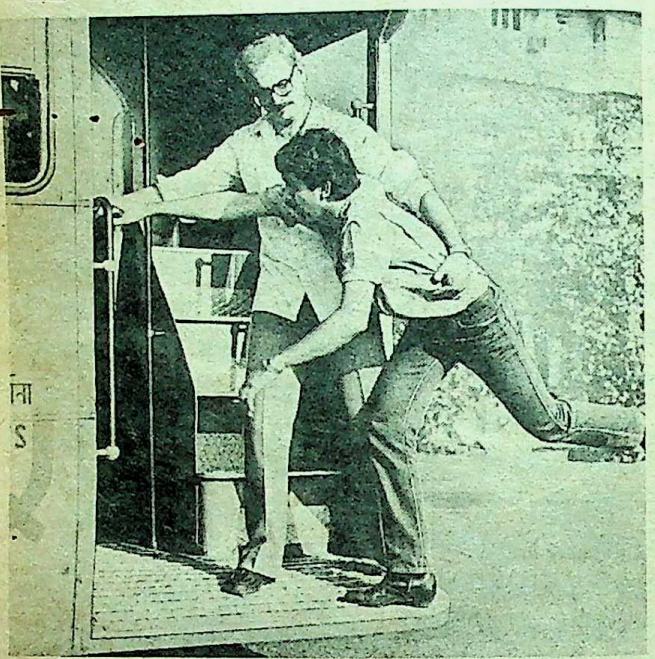

कभी आपने ग़ौर किया है कि सड़क पर दौड़ते यह बुज़ुर्ग ६० बरस की उम्र में भी क्यों शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर हैं? जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थके-थके से रहते हैं.

इसका जवाब है, केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो छोटे चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर)–अनमोल तत्त्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए. ज़ाफ़रान की लुभावनी खुशबुएँ सबसे पहले आपका स्वागत करेंगी. शुद्ध, असली ज़ाफ़रान. दुनिया की सब से महँगी जड़ी-बूटियों में से एक. जिसे ख़ास तौर से कश्मीर की वादियों से चुना गया.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के अरोग्यकर और सौंदर्यवर्धक गुणों के साथ-साथ ताज़ा आँवला और कई दूसरी जड़ी-बूटियाँ मिली हुई हैं. यह सब मिलकर आपके शरीरगठन को मज़बूत करते हैं. शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त बनाए रखते हैं और आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी के तनावों से आपको मुक्त रखने में आपकी मदद करते हैं. तो आज ही से इसे अपनी आदत बना लीजिए. और जीवनभर बीमारियों से मुक़ाबला करने की शक्ति जुटा लीजिए. वृद्धावस्था में सेहत का अनमोल रत्न आप भी पा लेंगे, और सारी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी से भरपूर तरो-ताज़ा रहेंगी.

ZP/8/173

रग-रग में जान – ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की सबीना वाइट ने किया है। उसने ८७ विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्द्धात्मक स्थिति में रखकर उनको गणित के बड़े जटिल सवाल हल करने को दिये। जब इन विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर दबाव काफी बढ़ गया तो उसने 'एक्सप्लोरिंग द आइसलैंडिक रिवर' नामक एक फिल्म, जिसमें आइसलैंड की एक बर्फीली नदी के अन्वेषण के रोमांचकारी दृश्य थे, उन्हें दिखाया, श्रव्य टेप सुनाये जिनसे उनका मन शांत हो तथा 'कैंडिड कैमरा' नामक एक मनोरंजक फिल्म के दृश्य दिखाये। फिर उसने उनकी चित्तवृत्तियों में परिवर्तन और चिंता के स्तरों के मापन के साथ ही त्वचा के तापमान, त्वचा की चालकता और दिल के धड़कन की गति में हुए परिवर्तनों का भी जायजा लिया।

श्रव्यटेप सुनने और 'कैंडिड कैमरा' के दृश्य देखने-जैसे दोनों ही कार्यों से विद्यार्थियों के अवसाद की स्थिति में कमी तो जरूर आ गयी, लेकिन इससे प्रत्येक विद्यार्थी को समान लाभ नहीं हुआ। सबीना वाइट का कहना है कि तनाव की स्थिति को कम करने के लिए शिथिलन तकनीक का इस्तेमाल कोई भी कर सकता है, लेकिन इसमें हास्य की भूमिका बिलकुल निराली है। कॉमेडी टेप से जिन लोगों को लाभ हुआ वे वही लोग थे जो ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए नियमित रूप से हास्य का सहारा लेते हैं।

जादू : हंसी का

फुलर्टन स्थित कैलिफोर्निया स्टेट युनिवर्सिटी में नर्सिंग विभाग की पीठासीन अधिकारी वेटा रॉबिंसन हास्य के क्षेत्र में अपने २० वर्षों के अध्ययन के आधार पर कहती हैं कि जब आप हंसते हैं तो आप चिंता, भय, संकोच, विद्वेष, और क्रोध से मुक्त हो जाते हैं। वह आगे कहती हैं कि हास्य किसी भी व्यक्ति को जीवन का एक भिन्न परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। वेटा रॉबिंसन ने अपना एक यह अनुभव भी बताया कि ऑपरेशन के बाद उसके स्वास्थ्य लाभ की गति बेहतर हो जाते है। रॉबिंसन की तरह कई नर्सें अपने मरीजों पर हास्य का जादू चलाती हैं।

आंकड़े चाहे जो कहें, लेकिन यह सच है कि ऐसे अस्पतालों की संख्या बढ़ रही है, कम से कम विदेशों में तो निश्चित रूप से ही, जिन्होंने हास्य को अपना व्यवसाय बनाया है। टमाटर— जैसी नाकवाले जोकर, हास्य से भरपूर पुस्तकें, बच्चों के लिए चाभीवाले खिलौने, तथा विनोद पैदा करनेवाले अन्य साजो-सामान अब अस्पतालों में भरे पड़े रहते हैं।

अपने मन में इस आशय की आशा लगा लेना कि आप स्वस्थ हो जाएंगे का मतलब यह नहीं है कि अब तो आपकी बीमारी आयी-गयी हो गयी, लेकिन इसका यह मतलब जरूर है कि आपके स्वस्थ होने की संभावनाएं अब भी हैं। आप मन से क्यों हारते हैं ? इसका असर न केवल आपके जीवन की गुणात्मकता पर पड़ता है बल्कि मृत्यु की गुणात्मकता भी इससे प्रभावित होती है। क्योंकि

जिंदगी जिंदादिली का नाम है
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ?

सी. २बी.११२ सी. जनकपुरी, नयी दिल्ली-११००५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे 'ये' रोज शाम को क्या करते हैं, इसका मुझे एक वर्ष तक पता ही नहीं था !" एक सहेली ने दूसरी से कहा।

"फिर" सहेली ने उत्सुकता से पूछा।

"फिर क्या" सहेली ने उत्तर दिया, "कल मैं महिला मंडल की बैठक से जरा जल्दी घर लौट आयी तो देखा कि 'ये' घर में अखबार पढ़ते हुए बैठे थे।"

"भारत में अच्छा पति पाने के लिए लड़कियां हरतालिका व्रत करती हैं। अच्छी पत्नी मिले, इसके लिए क्या पुरुषों के वास्ते कोई व्रत नहीं है ?"

"नहीं ऐसी बात नहीं है। भारत में स्त्रियां तो अच्छी होती ही हैं पर अच्छे पुरुष के लिए खोजबीन करनी पड़ती है। इसीलिए लड़कियां व्रत आदि करती हैं।"

बंबई के म्यूजियम में कई घंटे घूमने के बाद रामभाऊ थक गये और एक कुरसी पर बैठ गये। तभी चौकीदार आया और बोला, "अरे भाऊ साहब उठो। उस पर मत बैठो। वह लार्ड कर्जन की कुरसी है।"

"अरे बाबा, होगी उसकी कुरसी। मैं कोई हमेशा थोड़े ही बैठा रहूंगा। वह आएगा तो मैं उठ जाऊंगा।" राम भाऊ ने जवाब दिया।

"औरत और घड़ी में क्या अंतर है ?"

"जब घड़ी बिगड़ती है, तो वह खामोश हो जाती है, लेकिन जब औरत बिगड़ती है, तो महल्ला सिर पर उठा लेती है।"

हंसिकाएं

वातावरण

वह युग कहां गया
जब प्रसन्नता होती, मन उड़ानें भरता था
आधुनिक प्रतिक्रिया देखकर वह रोती है
प्रत्येक क्षेत्र में उड़ानें
प्रायः लेट होती हैं

आशीष

दिनों-दिन उनका स्वास्थ्य वृद्धि पर देखकर
आशीष देने की परंपरा भूले
एकदम बोले-'आप सदा फूले'

अवसरवादी

औरों के पुण्य का लाभ यों उठाते
लोग जब नेकी करके कुएं में डालते
वे वहीं अपनी बाल्टी लटकाते

आवाज

खर्राटा उनका।
सोने की मुद्रा का खनकता सिक्का

जिज्ञासा

"सप्ताह भर
एक गोली दिन में तीन बार खाएं"
सुनकर पूछने लगा रोगी
"इतनी बड़ी गोली कहां होगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने एक अच्छी कविता लिखी है पर मुझ—जैसे कवि की कविता कौन सुनेगा। एक बात है। मेरी कविता बड़े-बड़े रेडियो पर शायद न सुनायी जा सके लेकिन छोटे-छोटे ट्रांजिस्टरों पर सुनाने लायक तो वह है ही।"

"मैंने ठीक समय पर ऑपरेशन किया अगर कुछ घंटों की देर हो जाती तो"

"तो क्या"

"अरे वह रोगी अपने-आप ठीक हो जाता। ऑपरेशन की जरूरत ही न पड़ती।"

पति ने क्रोध में आकर नयी-नवेली दुलहन से पूछा, "तुमने सब लोगों के सामने कहा था कि तुम्हें अपना स्वामी समझूंगी। हर हुकम को मानूंगी?"

"तो क्या तुम्हारा मतलब है कि सब बरातियों के सामने तुम्हारा अपमान कर देती?"

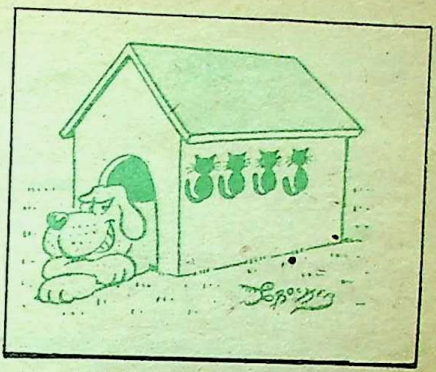

नेत्र-रोगों के एक विशेषज्ञ ने रोगी की जांच करने के बांद कहा, "आपको ऐनक लगानी पड़ेगी।"

"लेकिन डॉक्टर साहब, ऐनक तो मेरी आंखों पर पहले ही लगी हुई है।" रोगी ने समझाने की कोशिश की।

"तब मुझे ऐनक लगाने की जरूरत है।" डॉक्टर ने एक ठंडी सांस भरकर कहा।

नीतिपद

सास परम पद परम गुरु
ले जो भृकुटि तान
शीर्ष दिये आशीष मिले
तो भी सस्ता जान।

स्वर्णमुद्रा

अरब का व्यापारी
तनाव से मुक्त यों होना चाहता है,
घोड़े बेचकर सोना चाहता है।

बाट

तुम्हारी बाट देखते-देखते—
आंसू छलक आते हैं।
प्रतीक्षा में आंसू-तौल के बाट हो जाते हैं

अपील

मनोचिकित्सक ने अपील की
"आगामी योजना में घोड़ों की खरीद का
प्रावधान हो सके,
ताकि अनिद्रा के रोगी तो
घोड़े बेचकर सो सकें"

पूरककोण

पति-पत्नी इक दूजे के पूरक
वे औरों के घर उजाड़ते
पत्नी पुनर्बसाऊ कालोनी में कार्यरत

— डॉ. सरोजनीप्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी हास्य व्यंग्य

अलादीन और गोरा जिन्न

● शेरजंग जांगली

अलादीन को इंगलैंड में आये हुए बीस साल हो गये थे। विलायती पौंडों का लालच देकर उसने बुढ़ापे में भी एक नौजवान और पढ़ी-लिखी हसीन लड़की स्वदेश से मंगवाकर विवाह रचा लिया था। उसके दो बच्चे भी थे, जो विलायत में ही पैदा हुए थे।

एक दिन अलादीन अपने परिवार के साथ सैर-सपाटे के लिए सी-साइड पर गया। उसकी नजर एक 'एनटीक-डीलर' के शो-रूम में रखे हुए एक चिराग पर जा पड़ी। उसे लगा, जैसे वह उसका जादुई चिराग हो। उसे पुराने दिनों की याद आ गयी, जब वह चिराग रगड़ता था, और एक लंबा-तड़ंगा जिन्न हाजिर होकर आदाब बजा लाता था, 'आपका गुलाम हाजिर है। हुक्म कीजिए मेरे आका !' और फिर वह जिन्न को हुक्म देकर अपनी हर इच्छा पूरी कर लेता था।

'काश ! यह वही चिराग हो !' उसने दिल में कहा, पर पूरी तसल्ली के लिए दुकान के अंदर प्रवेश कर चिराग देखने लगा। उसने चिराग उठाया। दो-चार बार उलट-पुलटकर, उसका अच्छी तरह निरीक्षण करने का प्रयत्न किया। अंगरेज दुकानदार ने उसे इस प्रकार करते हुए देखा और खिन्न होकर कहने लगा, "व्हाट आर यू डूइंग, यू ब्लैकी ?"

अलादीन को यह बात सुनकर बड़ा गुस्सा आया और उसने सोचा कि वह इस गोरे की शिकायत नस्ली-समानता के आयोग के पास करेगा, लेकिन वह दुकानदार से पूछने लगा, "इस चिराग का क्या मूल्य है ?"

अंगरेज कौम दुकानदार कौम है। ग्राहक फंसता देखकर दुकान का मालिक बोला, "सर, इसकी कीमत केवल १९९ पौंड ९९ पेनियां हैं।"

"दो सौ पौंड ?" अचानक ही अलादीन के मुख से निकला।

"ओह, नो सर ! केवल १९९ पौंड और ९९ पेनी।"

अलादीन की पत्नी बोली, "छोड़िए रहने

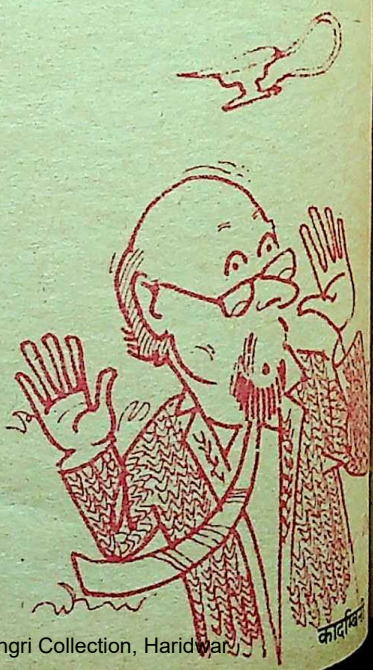

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें, इस मामूली-से पीतल के लैंप को ! हमें क्या करना है। इन पैसों से हम घर की किश्तें चुकाएंगे।''

लेकिन अलादीन सोच रहा था, 'अगर यह वही जादुई चिराग हुआ, तो जिंदगीभर के कष्ट खतम हो जाएंगे। कारें, कोठियां, दुकानें ! मौजें ही मौजें। बहारें ही बहारें।'

अपनी पत्नी की परवाह न करते हुए उसने चैक-बुक निकाली और दो सौ पौंड का चैक काटकर, लैंप को पकड़ते हुए एक विजेता की तरह कहा, ''कीप दी चेंज !''

दुकानदार होंठों पर मुसकराहट लाकर मुंह में बुदबुदाया, 'यू ब्लैकी !'

लेकिन अलादीन सुन न सका।

अपने परिवार के साथ रौनक से दूर एक वीरान-से समुद्री तट पर चला गया,

अलादीन को इंगलैंड में एक दुकान में अपना पुराना चिराग मिल गया तो उसने तरह-तरह के सपने देखने शुरू कर दिये। चिराग रगड़कर उसने जिन्न को बुलाया तो वह आया भी लेकिन।

पाक-परवरदिगार का नाम ले कर उसने चिराग रगड़ा।

एक जोरदार धमाका हुआ और एक लंबा-चौड़ा जिन्न उसके सामने आ खड़ा हुआ था। गोरे रंग के जिन्न को देखकर अलाउदीन ने पूछा, ''तुम्हारा रंग सफेद कैसे हो गया है ?''

''पार्डन !'' जिन्न गरजा।

जिन्न और अलादीन के बीच में अंगरेजी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वार्तालाप हुआ, उसका शुद्ध अनुवाद इस प्रकार है :

"तुम तो काले रंग के होते थे। सफेद कैसे हो गये हो ?"

"क्योंकि मैं गोरा जिन्न हूं।"

"ठीक है। ठीक है !! तुम्हारा मालिक होने के नाते मैं तुम्हें हुक्म जारी करता हूं कि जाओ और जाकर उस गोरे दुकानदार को मजा चखाओ, जिसने मुझे काला कहा था।"

यह सुनते ही गंजे गोरे जिन्न ने अपनी गंज पर हाथ फेरा, फिर गुस्से से भरी आवाज में कहा, "सुन अरे काले, तेरा यह हौसला कैसे हुआ कि तू मुझे हुक्म जारी करे। तू मेरा सफेद रंग नहीं देख रहा। तेरी मौत तो नहीं आयी, जो तू मुझे यह कह रहा है कि मैं अपने एक गोरे भाई को ही जाकर सबक सिखाऊं। अगर तू ने फिर से ऐसी बेवकूफी की, तो मैं तुझे, तेरे परिवार समेत समंदर में फेंक दूंगा।"

इतना कहकर जिन्न लोप हो गया। अलादीन भय से थरथर कांप रहा था। उसकी पत्नी ने अपने पति के हाथ से चिराग छीनकर समुद्र में फेक देने का मन बनाया ही था कि अलादीन अपनी पत्नी को एक ओर धक्का देते हुए, बल्कि खुशी से झूमकर बोला, "वही है। यह वही है, बस जलवायु के फर्क से इसका रंग ही सफेद हुआ है। अब अपने सारे कष्ट खतम हो जाएंगे।"

उसकी पत्नी ताना देने के अंदाज में बोली, "हां, आपका कष्ट तो वह भूतना अभी ही खतम करने लगा था, और हमारा कष्ट वह और चार दिनों तक खतम कर देता।

अलादीन ने अपनी पत्नी की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोच रहा था, 'यह जिन्न भी नस्ल-परस्तों के प्रभाव तले आ गया लगता है। कोई बात नहीं, चार-पांच दिन इसको व्हिस्की पिलाकर इसके साथ यारी करते हैं, धीरे-धीरे अपने आप रास्ते पर आ जाएगा।'

अलादीन इसी प्रकार की स्कीमें गढ़ता हुआ चिराग अपने घर ले आया। उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह बिरियानी, कोफ़े मुर्ग-मुसल्लम, कीमा और अन्य छत्तीस प्रकार के पदार्थ तैयार करे। स्वयं वह बाजार से स्काच व्हिस्की की आधी दर्जन बोतलें ले आया। उसने अपने मकान के फ्रंट-रूम का दरवाजा बंद कर बड़ी ही सावधानी के साथ चिराग रगड़ा। जोरदार धमाके के बाद गोरा जिन्न, फिर उसके सामने हाजिर था। इससे पहले कि जिन्न अपने गरजदार और रौबदार आवाज में बेवक्त बुलाये जाने का कारण पूछता, अलादीन हाथ जोड़कर बोला, "व्हिस्की हाजिर है, मेरे आका !"

जिन्न एक भयानक हंसी हंसकर सोफे पर बैठ गया। अलादीन ने उसके लिए पैग तैयार किया। पहले चार-पांच पैग तो जिन्न एक ही सांस में पी गया, लेकिन अब वह तसल्ली से जमकर बैठ गया लगता था और आराम से पी रहा था।

अलादीन ने काजुओं की प्लेट उसके सामने रखते हुए बात चलायी, "माफ करना मेरे आका ! मुझे लगता है कि आपने मुझे पहचाना नहीं ?"

"पहचाना तो तूने मुझे नहीं, मेरे पुत्र !"

"ज..... जी ..." अलादीन हकला गया।

"कोई बात नहीं। जल्दी ही पहचान कादाबिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा !'' इस बार जिन्न बोतल को मुंह लगाकर गटागट पी रहा था।

अलादीन को हालात कुछ बिगड़ते हुए प्रतीत हुए, लेकिन उसने हौसले से काम लेते हुए कहा, ''मेरा नाम अलादीन है। आपको याद होगा कि आपका और मेरा इससे पहले भी वास्ता पड़ चुका है। आप मेरे लिए मुश्किल से भी मुश्किल काम बड़ी आसानी से कर दिया करते थे।'

जिन्न ने अलादीन से अंगरेजी में जो कहा, उसका अर्थ यह था कि 'जबान बंद कर और कुछ खाने को ला।'

नशे से जिन्न की आंखें, अंगारों की तरह सुर्ख हो रही थीं। इससे पहले कि अलादीन उठकर खाना परोसता, जिन्न ने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए गुस्से से पूछा, ''अरे ब्लैकी, खाने के लिए क्या बनाया है ?''

अलादीन ने उसके बिगड़े तेवर देखकर हाथ जोड़ते हुए उत्तर दिया, ''मेरे आका, जो आप हुक्म करें, हाजिर करूं। बिरियानी, कोफ़े, मुर्ग-मुसल्लम, कीमा, चपाती !''

''चपाती के पुत्र, कीमा तूने क्यों बनाया है ? कीमा तो तेरा मैं बनाऊंगा !''

इससे पहले कि अलादीन अपनी सफाई पेश करता, जिन्न ने व्हिस्की की एक आधी भरी बोतल सामने चल रहे टेलीविजन पर दे मारी। एक छन्नाके के साथ टेलीविजन का स्क्रीन चूर-चूर हो गया। बदमस्त हो गया जिन्न अलादीन को यों ठुड्डे मार रहा था, जैसे फुटबाल की फर्स्ट डिवीजन का कोई खिलाड़ी फुटबाल को मारता है। जिन्न ऊंची आवाज में कह रहा था, ''मैंने तुझे पहले ही कह दिया था कि अगर तू ने मुझे फिर बुलाया, तो तेरी कुशलता नहीं। अब तो मैं तुझे बच्चू बनाकर ही छोड़ूंगा।''

एक खौफनाक हंसी हंसते हुए उसने अपनी जेब में से दियासलाई की डिबिया निकाली। अगले ही क्षण सारा मकान आग की लपटों में घिरा हुआ था। सारे कुनबे ने दौड़कर मुश्किल से जान बचायी। अर्धचेतावस्था में अलादीन बड़बड़ा रहा था, ''वह नस्ल-परस्ती का जिन्न है। मुझे उसकी मेहरबानियां नहीं चाहिए। मैं उस जिन्न का मुकाबला करूंगा।''

और निकट ही खड़ा हुआ एक अंगरेज पुलिसवाला अलादीन की बड़बड़ाहट सुनकर व्यंग्य से धीमे-धीमे मुसकरा रहा था।

प्रस्तुति : सुरजीत

आंखों से खून बरसानेवाली छिपकली

उत्तरी अमरीका तथा मेक्सिको में पायी जानेवाली 'होर्ड लिजार्ड' नामक छिपकली अपनी आंखों से खून की पिचकारी छोड़ती है। जीव वैज्ञानिकों का कहना है कि यह उसका अपना बचाव करने का तरीका है। शत्रु सामने आने पर यह छिपकली अपने सिर में रक्त का दबाव बढ़ा लेती है। इससे उसकी आंखों की सूक्ष्म रक्त कोशिकाओं की झिल्ली फट जाती है और खून फुहारे के रूप में कई इंच दूरी पर खड़े शत्रु की आंखों में पड़ता है। इससे शत्रु जीवधारी की आंखों में जलन पैदा हो जाती है और वह भाग खड़ा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्मिक लोक शिकायत तथा पेंशन मन्त्रालय (प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग)

लोक प्रशासन और प्रबन्ध विज्ञान साथ ही आर्थिक विकास, आर्थिक प्रशासन और विकास प्रशासन आदि विषयों पर हिन्दी पुस्तकों (मूल अथवा अनूदित)के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार योजना ।

भारत सरकार ने लोक प्रशासन और प्रबन्ध विज्ञान तथा साथ ही आर्थिक विकास, आर्थिक प्रशासन और विकास प्रशासन आदि विषयों पर हिन्दी में प्रामाणिक साहित्य के प्रकाशन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उपर्युक्त विषयों पर हिन्दी की प्रामाणिक पुस्तकों (मूल अथवा अनूदित) को पुरस्कार देने के लिए "सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार योजना" नामक एक पुरस्कार योजना आरम्भ की है ।

पुरस्कार - उपर्युक्त विषयों पर मौलिक हिन्दी पुस्तकों के लिए 10,000/-, 7,000/- और 5,000/- रुपये के तीन पुरस्कार दिए जाएंगे । इसके अलावा उपर्युक्त विषयों पर हिन्दी से इतर भाषाओं में लिखी गई प्रामाणिक मूल पुस्तकों के हिन्दी अनुवादों को भी तीन-तीन हजार रुपये के दो पुरस्कार दिए जाएंगे ।

पुरस्कारों का निर्णय इस प्रयोजन के लिए गठित एक मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाएगा । इस समिति का निर्णय अन्तिम और निर्विवाद होगा । यदि मूल्यांकन समिति द्वारा किसी भी प्रविष्टि को पुरस्कार योग्य नहीं पाया गया तो सभी अथवा कोई भी पुरस्कार नहीं दिया जाएगा ।

पात्रता : इस योजना में कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मन्त्रालय में कार्य कर रहे व्यक्तियों को छोड़कर सभी व्यक्ति भाग ले सकते हैं । यह पुरस्कारों का छठा वर्ष है और केवल पिछले पांच वर्षों, अर्थात् 1982 से 1986 (जनवरी-दिसम्बर) के दौरान प्रकाशित/लिखी गई पुस्तकें/अनूदित कृतियां ही स्वीकार की जाएंगी । पाण्डुलिपियों/अप्रकाशित पुस्तकों पर भी विचार किया जाएगा । लेकिन पुरस्कारों का भुगतान उनके प्रकाशन के बाद ही किया जाएगा ।

प्रविष्टि की अन्तिम तारीख : प्रविष्टियां प्राप्त होने की अन्तिम तारीख 29 फरवरी, 1988 है । उस तारीख के बाद प्राप्त होने वाली पुस्तकों /पाण्डुलिपियों पर विचार नहीं किया जाएगा । प्रविष्टि फार्म और अन्य ब्यौरे अवर सचिव, (प्रशासन), प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग, पंचम तल, सरदार पटेल भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्राप्त किए जा सकते हैं ।

davp 561(139)87

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो चीनी व्यंग्य

दो भाई और एक जंगली हंस

वन-भ्रमण के लिए निकले दो भाइयों के पास से एक जंगली हंस उड़ता हुआ निकल गया। दोनों ने तुरंत तीर-कमान निकालकर निशाना साध लिया। लेकिन तीर चलाने के पूर्व एक भाई बोला, "मैं इस जंगली हंस को मारकर भूनूंगा। उड़ते हुए हंस को तो भूनकर ही खाना चाहिए।"

"नहीं, भूनकर खाने के लिए तो बैठा हुआ हंस बेहतर होता है। उड़ते हुए हंस को तो पकाकर खाना चाहिए। मैं इसे पकाऊंगा।" दूसरे भाई ने उसकी बात काटी।

अब क्या था! दोनों भाइयों में बहस छिड़ गयी। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे। अंत में तय हुआ कि कबीले के वयोवृद्ध मुखिया के पास जाकर इस बात का फैसला करा लिया जाए।

मुखिया ने दोनों की बातें सुनीं। फिर निर्णय दिया—"आधे हंस को भूनकर खाया जाए और आधे को पकाकर।"

इस निर्णय से संतुष्ट और प्रसन्न दोनों भाई फिर से जंगल में पहुंचे। पर तब तक वह हंस उड़कर न जाने कहां पहुंच गया था।

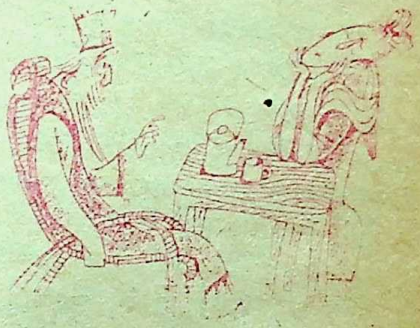

उदासी का कारण!

वृद्धावस्था में पत्नी का निधन हो जाने से परमादरणीय श्रीमान लू बेहद दुखी थे। अंत में उन्होंने कुमारी ज़ू नामक एक नवयुवती से विवाह कर लिया। ज़ू ने यौवनावस्था में कदम ही रखा था और श्रीमान लू की भौंहें तक सफेद हो गयी थीं। स्वाभाविक था कि ज़ू हरदम उदास और खिन्न रहती।

एक दिन श्रीमान लू ने ज़ू को बुलवाया और पूछा, "मैं वृद्ध हूं, क्या इसलिए तुम मुझसे घृणा करती हो?"

"नहीं" ज़ू ने उत्तर दिया।

"तो क्या मैं किसी उच्च पद पर नहीं हूं, इसलिए तुम्हें मुझसे नफरत है?"

"जी नहीं।"

"तो फिर तुम क्यों सदैव उदास और खिन्न रहा करती हो?" श्रीमान लू ने पूछा।

"न तो मैं आपकी वृद्धावस्था से घृणा करती हूं और न आपके पद से" लू ने उत्तर दिया, "मुझे तो इस बात का सदैव खेद रहता है कि मैंने इतनी देर से क्यों जन्म लिया कि आपको आपकी तरुणाई में नहीं देख पायी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शरारती पशु-पक्षी

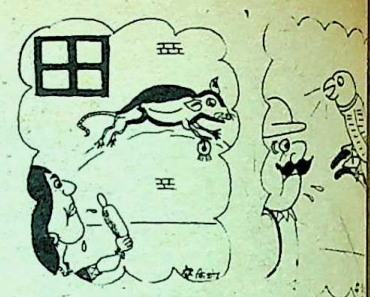

● किशोर श्रीवास्तव

शरारत सिर्फ मनुष्य ही करता है ऐसा नहीं है। शरारत करने में भोले-भाले से दिखनेवाले पशु-पक्षी भी पीछे नहीं रहते हैं और प्रायः मनुष्यों के कान काटकर आगे निकल जाते हैं।

भले ही इन शरारती पशु-पक्षियों को अपनी शरारत का अंदाजा न हो पर कभी-कभी उनकी शरारतें मनुष्य के लिए सिर-दर्द अवश्य पैदा कर देती है। लेकिन कभी-कभी वे अखबारों की खबरें भी बन जाती हैं। यहां प्रकाशित प्रसंग देश के प्रमुख समाचार पत्रों में 'सम्मानजनक' स्थान पा चुके हैं।

'चूहा'—कहने को दो अक्षरों का यह छोटा-सा जीव घर के कपड़े कुतरकर और अनाज का सफाया करके गृहिणियों को परेशान करता ही रहता है पर गत वर्ष एक चूहे ने तो अपनी एक नयी शरारत से इन सभी शरारतों को भी मात कर दिया।

घटना बदायूं से लगभग ३० कि. मी. दूर ककरोला कस्बे की है— जहां एक शातिर चूहा एक गृहिणी से निगाहें मिलाने के बाद सरेआम उसका कर्णाभूषण उड़ाकर फरार हो गया।

उस रोज भी उक्त गृहिणी रोज की भांति ही अपने रसोई घर में भोजन बना रही थी कि रसोई घर की दीवार में बने मुकले (छोटे रोशनदान) में एक मोटा चूहा आया। चूहे की आहट पाकर गृहिणी ने उसकी ओर देखा और दोनों कुछ क्षण तक एक-दूसरे की ओर देखते रहे। चूहे के काफी देर तक न हटने पर गृहिणी रसोई घर में ही अपने काम में लग गयी।

गृहिणी के खाना बनाने में लगते ही उसके कान को लक्ष्य करते हुए चूहे ने त्वरित गति से छलांग मारी और कान में पहने हुए एक कुंडल को दबोचकर तथा पंजों से गृहिणी को आहत कर उसी रास्ते कुंडल सहित फरार हो गया।

दिन-दहाड़े कुंडल छुड़ाकर भागते चूहे से कुंडल प्राप्त करने हेतु गृहिणी दरवाजे के पास ही गिर पड़ी और उसे चोट आ गयी।

बाद में काफी खोज-बीन की गयी पर कुंडल लेकर फरार हुआ, वह शरारती चूहा कहीं भी नजर नहीं आया और घर के लोग माथा पीटकर रह गये। अब चूहे की इस हरकत को मात्र शरारत कहा जाए या लुटेरा, यह बात तो वह चूहा ही बता सकता है।

यह तो चूहे की बात हुई, एक शरारती बंदर का जिक्र भी हो जाए।

कुछ समय पूर्व ऋषिकेश के एक होटल का समाचार छपा था, जिसे महिलाओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु-पक्षी भी शरारतें करते हैं। प्रस्तुत हैं, उनकी शरारतों के कुछ किस्से, जो अखबारों में सुरखियां भी बने।

शरारतें करने में ज्यादा मजा आता था। वह महिलाओं आदि को देखकर उनके कान पर हमला करता था और फिर फुर्र से उड़ जाता था। लोग इस मनचले कौवे की हरकतों को देखकर भी उसे पकड़ नहीं पाते थे।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार यह 'नभचर अपराधी' महिलाओं के कान पर हमला करके उनकी बालियां खींच ले जाता था। सारे कौवे एक-जैसे होने के कारण झुंड में से उसे पहचानना भी मुश्किल होता था।

यह घटना पश्चिम बर्लिन की है। दमकल विभाग में जब फोन की घंटी बजी तो एक कर्मचारी ने वहां से भौंकने व गुर्राने की आवाजें सुनीं। आनन-फानन में दमकल विभाग की गाड़ियां 'सूंघ-सूंघ' कर उस घर तक पहुंच गयीं लेकिन वहां चीखते भागते व मदद के लिए पुकारते हुए लोग नहीं थे बल्कि एक पालतू कुत्ता खेल रहा था, जो मालिकों के चले जाने पर घर में अकेला रह गया था।

कूद-फांदकर उसने रिसीवर हटा दिया व अपनी थूथन से फोन के नंबरवाले बटन पर मुंह मारने लगा, जिससे वे पांच नंबर दब गये, जो आपातकालीन सहायता के नंबर थे।

भले ही उस कुत्ते ने जानबूझकर यह शरारत नहीं की थी परंतु उसकी शरारत का खामियाजा दमकलवालों को अवश्य भुगतना पड़ा।

एक और किस्सा इंगलैंड का है। बाक्सर नस्ल का 'फज' नामक यह कुत्ता भी शरारत करने में कोई कम नहीं था। अपनी ऊटपटांग हरकतों के चलते ही एक दिन उसने खेलते-खेलते अपने मालिक की म्युजिकल घड़ी निगल ली।

अंतिम किस्सा फेयर हेय (इंगलैंड) के एक ऐसे तोते का है, जो न केवल शरारती था बल्कि लोगों के साथ बदतमीजी से पेश आता।

इन्हीं शरारतों की वजह से ब्रिटिश नौसेना के इस तोते को बाद में बर्खास्त करना पड़ा। यह तोता स्पाइक स्काटिश नौसैनिक कर्मियों को देखते ही आग-बबूला हो जाता था। कभी-कभी तो उसकी शरारतें इस हद तक बढ़ जाती थीं कि वह उन पर हमला भी कर दिया करता था।

इस शरारत के कारण उसे जॉन डेविस के सामने पेश किया गया, जहां उन्होंने उसे बर्खास्त करते हुए कहा कि 'आप शायद असैनिक जिंदगी में ही बेहतर खप सकें।'

—संपादकीय विभाग, विस्तार निदेशालय (कृषि मंत्रालय), पश्चिम खंड सं-८, रामकृष्ण पुरम, नयी दिल्ली-११००६६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग भगाते हैं जड़ी-बूटियों से भरे गद्दे-तकिये

तकिया लगाइए और रोग भगाइए। यह दावा है चीनी की स्वास्थ्यवर्धक, रोग-निवारक वस्तुएं तैयार करनेवाली एक फैक्ट्री के मैनेजर का।

पर ये तकिये साधारण नहीं होते। उनमें जड़ी-बूटियां भरी होती हैं।

चीन में जड़ी-बूटियां भरे तकियों का रिवाज काफी पुराना है। प्राचीनकाल से ही चीनी हिममंडित पर्वतों पर पायी जानेवाली जड़ी-बूटियों को तोड़कर, उनसे गद्दे आदि बनाते रहे हैं। उनका यह अनुभव रहा है कि ऐसे गद्दे रोग-निवारण में सहायक होते हैं।

चीन के शांसी प्रांत में ताईवाई पर्वत के हिममंडित शिखर यावो वांगताई पर

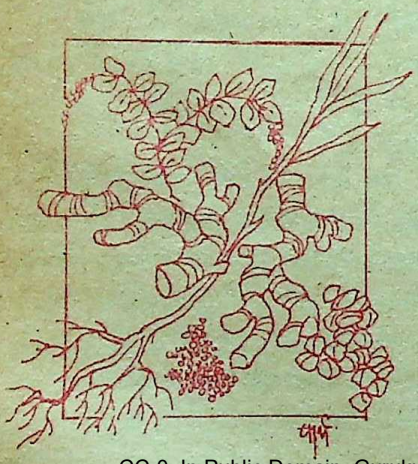

रोग-निवारक जड़ी-बूटियों का भंडार ही है। इन्हें जड़ी-बूटियों से गद्दे और तकिये बनाये जाते हैं, चीनियों का विश्वास है कि ऐसी जड़ी-बूटियों से बने गद्दों पर सोने अथवा उनसे भरे तकिये सिरहाने लगाने से तरह-तरह के रोग दूर होते हैं। यही नहीं, यदि ऐसी जड़ी-बूटियां जूतों में रख ली जाएं, तो भी उनसे लाभ होता है।

चीनी विशेषज्ञों का कहना है कि त्वचा के संपर्क में आने पर ऐसी जड़ी-बूटियां भीतरी अंगों की कार्यप्रणाली नियमित करती हैं। यदि उनकी सुगंध भी सांस के जरिये शरीर के भीतर पहुंच जाए तो वह लाभदायक सिद्ध होती है। इस संबंध में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चला है कि ऐसे गद्दे-तकिये इस्तेमाल करनेवाले लोगों में से ८५ प्रतिशत लोगों को लाभ हुआ है।

चीन से प्रकाशित होनेवाली एक पत्रिका (वीमैन ऑव चाइना) के पिछले एक अंक में प्रकाशित जानकारी के अनुसार, यदि ऐसी जड़ी-बूटियों वाले गद्दे-तकियों का काफी लंबी अवधि तक इस्तेमाल किया जाए तो उससे रक्त-संचालन नियमित होता है। मांस-पेशियों और जोड़ों को आराम मिलता है। ये रक्तचाप घटाते हैं। सरदी-जुकाम दूर भागते हैं और दर्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ी-बूटियां—रोगोपचार में लाभदायक होती हैं। चीन में प्राचीनकाल से ही जड़ी-बूटियों का रोग-निवारण के लिए उपयोग होता रहा है। वहां जड़ी-बूटियों भरे गद्दे-तकियों का इस्तेमाल कर रोग दूर किये जाते हैं। क्या आप भी चाहेंगे—ऐसे गद्दे-तकिये ?

भी दूर करते हैं। उनके इस्तेमाल से नींद भी अच्छी आती है। यदि बच्चे ऐसे तकिये इस्तेमाल करें तो वे सरदी-जुकाम का अच्छी तरह से सामना कर सकते हैं। इनके इस्तेमाल से उनकी श्रवण शक्ति बढ़ती है। दृष्टि भी तेज होती है। उनका विकास भी अच्छा होता है।

जड़ी-बूटियों भरे तकिये एक वर्ष तक लाभदायक होते हैं। बाद में धीरे-धीरे उनका असर कम होता जाता है।

इतना सब पढ़ने के बाद निश्चय ही कुछ पाठक ऐसे गद्दे-तकियों का इस्तेमाल करना चाहेंगे। ऐसे पाठकों के लिए प्रस्तुत है, 'वीमैन ऑव चाइना' का पता। उसके संपादक इस विषय में अधिक जानकारी देने या ऐसे गद्दे-तकिये उपलब्ध कराने में सहायता के लिए तत्पर हैं। पता है—

वीमैन ऑव चाइना, ५० डिंग शी कू बीजिंग, चाइना

उलटा लटककर जीवन बिता देता है स्लोथ

दक्षिण अमरीका का 'स्लोथ' नामक स्तनपायी जीव अपना अधिकांश जीवन सिर के बल पेड़ों से लटककर गुजारते हैं। स्लोथ इसी उलटी स्थिति में आहार लेते हैं, सोते हैं और रहते हैं। सोते समय स्लोथ की मांसपेशियां तनकर स्थिर हो जाती हैं तथा तब तक ढीली नहीं होतीं जब तक वह जागकर स्वयं ही उन्हें ढीली न करे। स्लोथ में अपनी इसी विचित्र आदत के कारण सिर को लगभग पूरा पीछे की ओर घुमा लेने की क्षमता होती है।

आदमी की तरह बोलती है पोर पोइज

समुद्री जीवों में पोर पोइज मछली एक ऐसी प्राणी है, जो आदमी की आवाज की नकल कर सकती है। फ्लोरिडा के मेरिन स्टूडियो में एक ऐसी पोर पोइज है, जो आदमी की जुबान बोलती है। पोर पोइज के ध्वनि उत्पन्न करनेवाले अंग हमारे-जैसी आवाज पैदा करने में सक्षम होते हैं। हां, बात करने के लिए इसे प्रशिक्षण जरूर देना पड़ता है। पोर पोइज आदमी की अन्य बहुत सी हरकतों की भी नकल कर लेती है। आजकल वैज्ञानिक इसकी चतुराई के बारे में बहुत से परीक्षण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

कुरसी खतरे में है तो दुनिया खतरे में है

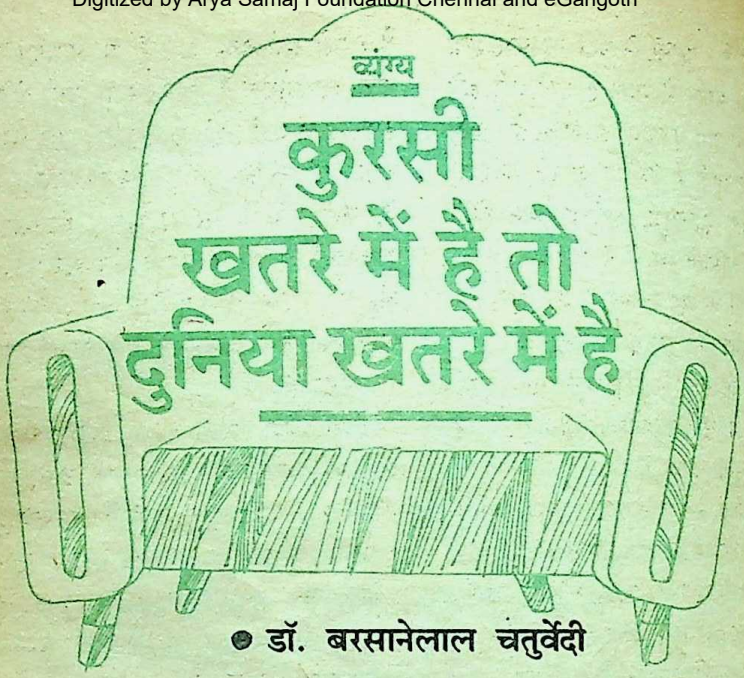

● डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी

जिज्ञासु ने पूछा— 'गुरुजी, श्रोतागण आज आपसे कुरसी के विषय पर कुछ सुनना चाहते हैं !'

गुरुजी उवाच : 'भक्तजनो, पुराने जमाने में जो महत्त्व कामधेनु गाय का था आज वही कुरसी का है। मजनू को जो प्रेम लैला से था, वही प्रेम आज के मजनुओं को कुरसी से है। आज का व्यक्ति मोक्ष नहीं, कुरसी चाहता है।

कुरसियां विभिन्न प्रकार की होती हैं। प्राइमरी अध्यापक की भी एक टूटी हुई कुरसी होती है, जिसे वह बीच में रखकर ब्रह्माजी के रूप में चतुर्मुख होकर चारों ओर बैठी हुई कक्षाओं को तरह-तरह के विषय पढ़ाता है। 'हैयर कटिंग सैलून' में घूमनेवाली कुरसी पर बैठाकर आपकी हजामत हो जाती है। अधिक प्रेमी केशकर्तनाचार्य आपकी चांद पर चार चपत भी जमा देता है। पुलिस थानों में भी मोहनजोदड़ो के समय की याद दिलानेवाली कुरसियां पड़ी रहती हैं जिन पर आप यदि बैठ जाएं तो अपने वस्त्रों को क्षत-विक्षत करके ही उठेंगे। ढाबों और सस्ते रेस्तरांओं की कुरसियां एक स्थान से दूसरे स्थान पर इसी प्रकार नाचती रहती हैं।

अफसर की कुरसी वी. आई. पी. कुरसी होती है लेकिन मंत्री की कुरसी 'वी. वी. आई. पी.' किस्म की होती है। जिस समय अफसर दफ़्तर में प्रवेश करता है, ऐसा लगता है जंगल में शेर आ गया है और छोटे-मोटे पशुओं में भगदड़ मच जाती है। अफसर का कोई रोब नहीं होता है, उसकी कुरसी का होता है। अफसरानी की चमचागिरी मातहत लोग करते हैं पर कुरसी तो निर्जीव है, असली पूजा उसी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी पड़ती है। कुरसी से हटा अफसर हवा निकला टायर समान हो जाता है। रिटायर होने के बाद तो लगभग मृतप्रायः हो जाता है यद्यपि सांस चलती रहती है लेकिन कुरसी अनादि, अक्षर, अनंत, शक्तिपुंज, सर्वशक्तिमान होती है। उसका अस्तित्व स्थायी है। दीपावली पर अनेक नेताओं के घर लक्ष्मीजी के स्थान पर कुरसी की पूजा होते हुए हमने देखा है। एक मुख्यमंत्री ने तो सोने से मढ़ी हुई मिनी कुर्सी बनवा रखी है, वे दीपावली पर ही नहीं, नित्य ही उसकी पूजा करते हैं।

कुरसी रहित नेता की दशा एक अनाथ विधवा-जैसी होती है जो दया की पात्र होती है। कुरसी सहित नेता के टेलीफोन कीजिए, कहीं दूसरे दिन जाकर मिलता है, कुरसी रहित नेता का टेलीफोन पहली बार करने से मिल जाता है। उसे सब्र छोड़ जाते हैं पर भारतीय पत्नी पत्नी-व्रत निभाती है, बच्चे उन पर निर्भर होते हैं, इसलिए वे कहीं नहीं जा सकते, बाकी चमचों तथा चमचियों का 'ब्रिगेड' ऐसे समाप्त हो जाता है, जैसे गधे के सर से सींग। क्रिकेट की शब्दावली में कहें तो कुरसी छिन जाने पर मंत्री की वही हालत होती है जैसी जमकर 'बैटिंग' करते हुए 'कैच आउट' हो जाने वाले खिलाड़ी की होती है।

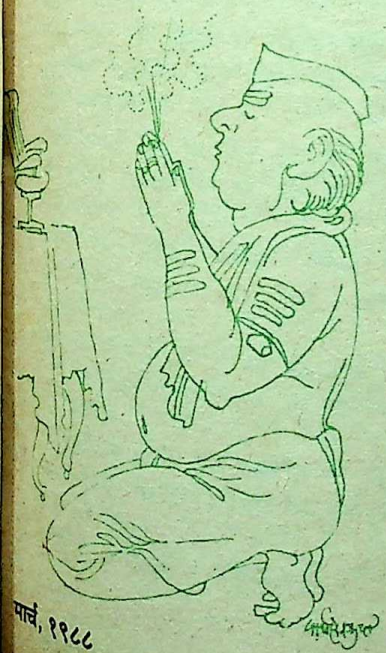

जिस प्रकार लेखक की किताबों से लेखक की पत्नियों को सौतिया डाह होता है, उसी प्रकार पतियों के कुरसी-प्रेम के कारण नेता-पत्नियों का कुरसियों से डाह हो जाता है। कहां सुंदर, सुडौल, उच्च घराने की नारी और कहां काठ की निर्जीव कुरसी लेकिन अपनी-अपनी किस्मत है। कुरसियों के लिए पति-पत्नी लड़ भी बैठते हैं, कुरसी मिलने की टिकट लेने के लिए बाप-बेटा, भाई-भाई, साला-बहनोई, चाचा-भतीजा भी एक दूसरे के जानी दुश्मन बनते देखे गये हैं।

आप नेताओं का 'होलसेल' एक्सरे कराइए, वे चाहे किसी पार्टी के हों, उनके दिलों में कुरसियां अवश्य दिखलायी देंगी।

कविगणों ने भी अपनी कविताओं द्वारा कुरसी-देवी पर पुष्पांजलियां अर्पित की हैं। उन्होंने कुरसी को पत्थर से बनी हुई बताते हुए कहा है :

आज जीवन उसी का सार्थक माना जाता है, जिसे कुरसी प्राप्त हो गयी वरना उसने व्यर्थ ही संसार में जन्म लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ों के साथ खाल भी तन से उतार लें,
ये कैसे रहनुमाओं के पल्ले पड़े हैं लोग।
सीने पर लद के बैठी हैं, पत्थर की कुरसियां
लगता है कुरसियों से भी ज्यादा कड़े हैं लोग।''

(सूर्यभानुगुप्त)

कुरसी में ही आज के नेताओं की देशभक्ति छिपी हुई है। अगर उनकी कुरसी खतरे में है तो देश भी खतरे में है, अगर कुरसी चरमर करती है तो देश भी चरमरा उठता है, इस मानसिकता पर व्यंग्य देखें :— *कुरसी खतरे में है तो प्रजातंत्र खतरे में है,*

कुरसी खतरे में है तो देश खतरे में है,
कुरसी खतरे में है तो दुनिया खतरे में है
कुरसी न बचे तो भाड़ में जाये,
प्रजातंत्र, देश और दुनिया।''

(गोरख पांडे)

मैंने भी नेताओं को कुरसी रूपी प्रेयसी के लिए तड़पते देखा है :

नेता करोड़ी कुरसी के लिए 'कीन'
श्रीमती समझाती रहतीं मत हो तुम गमगीन,
जोड़ तोड़ दिन रात
बच्चों से नहीं बात
कुरसी बिन तड़पते जैसे जल बिनु मीन!''

प्राचीन शास्त्रों में जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। आज जीवन उसी का सार्थक माना जाता है जिसे कुरसी प्राप्त हो गयी वरना उसने व्यर्थ ही संसार में जन्म लिया।

—१३/७ शक्तिनगर, दिल्ली-७

इनके भी बयां जुदा जुदा

यहां किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर तुम संभल सको तो चलो।

—निदा फाजली

जिस पर हमारी आंख ने मोती बिछाये रातभर,
भेजा वही कागज उसे हमने लिखा कुछ भी नहीं।

—बशीर बद्र

कुछ नहीं होगा तो आंचल में छिपा लेगी मुझे,
मां कभी सर पे खुली छत नहीं रहने देगी।

—मुनव्वर राणा

बहुत मध्यम बहुत कम है मगर फिर भी क्या कम है,
किसी सूरज से मांगी तो नहीं ये रोशनी हमने।

—अज्ञात

देखकर जिसको तेरे पांव ठिठक जाते थे,
तेरे रस्ते से वो परछाईं उठा ली हमने।

—रफीक अन्सारी

एहसान उठाने से कड़ी धूप ही बेहतर,
मिलने को बहुत साया-ए-दीवार मिले हैं।

—उस्मान आजिज

बच्चा भी इक वहीं था बड़ी देर से खड़ा,
जिस जा सजे हुए थे खिलौने दुकान में।

—उम्र अंसारी

घर जला, इसका बदल दे दीजिए,
छोड़िए जान की कीमत क्या है।

—अख्तर शहीद

वो कदम टूट गये जो तेरी महफिल की तरफ,
सोते-सोते भी मचल जाते थे चलने के लिए।

—मेंहदी नज़्मी

हमने तो ऐ खुदा तेरी दुनिया भी देख ली,
क्या और भी सजा है कोई इस सजा के बाद।

—उधे सिंह शाद

(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्से बतायो फकीर के

जिसका जैसा हक

बतायो के पिता श्री मेलाराम की मृत्यु हो गयी, तो उनकी मां रुक्मिणी ने उन्हें एक नाविक के हवाले कर दिया, ताकि वे नाव पर काम कर कुछ कमाकर लाएं। नाविक ने बतायो को चप्पू चलाने, लोगों को नदी के उस पार उतारने और उन से पार-कराई वसूल करने का काम सिखा दिया और वह स्वयं निश्चित होकर किनारे पर बनी अपनी कुटी में रहने लगा।

एक बार अचानक ही नाविक का ध्यान इस बात की ओर गया कि गांव के कुछ युवक बीच नदी में तैर कर जाते हैं और वहां डुबकियां लगा-लगाकर नदी के तल से कुछ ढूंढ़कर लाते हैं। उसने उनमें से एक युवक को बुलाकर उससे पूछा, "क्यों भई, मंझधार में ऐसा क्या है कि तुम हाथ-पांव चलाकर वहां जाते हो और गहरे पानी पैठते हो ?"

उसने उत्तर दिया, "वहां बतायो लोगों से पार-कराई वसूल करता है और उसका आधा भाग मंझधार में फेक देता है। हम वे सिक्के ढूंढ़ निकाल लाते हैं।"

नाविक को बड़ा गुस्सा आया।

जैसे ही बतायो वापस किनारे पर आये, तो उसने उनसे तमककर पूछा, "यह क्या माजरा है ? तुम आधी रकम दरिया में क्यों फेक देते हो ?"

बतायो ने धीरज से कहा, "सुस्त लोग पार-कराई देते हैं और चुस्त लोग उसमें से कुछ वसूल करते हैं। इसमें क्या बुराई है ? मैं आधी रकम दरिया में क्यों न फेक दूं ? नाव क्या हमारी छाती पर चलती है ?"

रास्ता चलते-चलते बतायो फकीर एक स्थान पर रुक गये और चिल्लाने लगे, "हाय ! मैं मरा ! मैं मरा।"

उनके रोने-चिल्लाने की आवाजें सुनकर लोग इकट्ठे हो गये। उन्होंने उनसे पूछा, "क्या हुआ ?"

बतायो फकीर ने पैर ऊपर उठाकर दिखाया। उनके तलवे में एक पतला कांटा चुभा था।

किसी ने चपटी से चिकोटी काटकर वह कांटा निकालकर बाहर कर दिया। उसे बतायो फकीर का यह तमाशा अच्छा न लगा। वह बोला,

बरदाश्त से बाहर तकलीफ नहीं

"दरवेश, अपने पर जरा काबू रखो। जरा-सा कांटा लगने पर तुमने आसमान सिर पर उठा लिया !"

बतायो फकीर धीरज से बोले, "तुम लोगों को इस आसमानवाले की आदतों का पता नहीं। आज मैं यह कांटा लगने पर इस तरह शिकवा-शिकायत न करता, तो यह कल मेरे पीछे एक भाला छोड़ देता। इनसान जितनी तकलीफ बरदाश्त कर सकता है, यह आसमानवाला उसे उतनी तकलीफ देता है।"

डॉ. मोतीलाल जोतवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुजूर

● मुहम्मद अब्दुल मलिक

जच्चा-बच्चा केंद्रीय अस्पताल के इनचार्ज मिस्टर हामिद फरज को टेलीफोन पर संदेश मिला, 'मसाऊद-उल-जहब की बेगम साहिबा आपके अस्पताल में आने के लिए चल चुकी हैं।'

मिस्टर हामिद फरज ने फौरन लेडी डॉक्टर नवाल को अपने दफ्तर में बुलाया। माथे की शिकन, आंखों का बेतरह फैलाव और लगातार धूम्रपान से मिस्टर हामिद फरज की बेचैनी प्रकट हो रही थी। जब से वे धूम्रपान-विरोधी अभियान में शामिल हुए थे, और अखबारों में खबरें छपी थीं, तब से वे छुप-छुपाकर ही सिगरेट पिया करते थे। वे कृत्रिम रौब कायम रखने के माहिर थे और इस बार भी अपनी बेचैनी छिपाने का असफल प्रयत्न कर रहे थे।

डॉ. नवाल आयीं तो हामिद फरज साहब ने अपनी समस्या बतायी और कहा कि बेगम साहिबा आने वाली हैं। लेबर रूम से एक पल को भी अलग न होना।

फिर उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर उठाकर अस्पताल के विभिन्न विभागों को निर्देश जारी करने शुरू कर दिये। पहला सिगरेट हाथ ही में सुलग रहा था कि उन्होंने नया सिगरेट निकाल लिया। उस पर डॉक्टर नवाल को मिस्टर हामिद फरज की धूम्रपान-विरोधी तकरीरें याद आ गयीं।

अस्पताल में आपातकालीन स्थिति की घोषणा हो गयी। सभी विभागों में हड़बोंग-सी मच गयी। नर्सें स्ट्रेचरें घसीटती इधर से उधर भागने लगीं और अस्पताल एक ऐसा सैनिक मोर्चा बन गया, जो युद्धक्षेत्र के ऐन बीच में हो। चारों तरफ शोरगुल। मरीज औरतें विस्मय से वार्डों के दरवाजों पर खड़ी पूछ रही थीं – 'क्या हो गया ?', 'क्या हो गया ?' लेकिन जवाब देने का होश किसे था ? यह बात करने का नहीं, काम का समय था। मिस्टर हामिद फरज इस पूरे तूफान के बीच खड़े थे और स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबकी गतिविधियों की देख-रेख करते हुए अपने आदेशों पर कार्य होते हुए देख रहे थे।

और फिर जब अचानक उन्हें मालूम हुआ कि पूर्वी बगीचे की ओर खुलनेवाला विशिष्ट कमरा तो पिछले दो दिन से खाली ही नहीं, तो उन पर दौरा-सा पड़ गया। वे क्रोध में चिल्लाये, "उस कमरे के मरीजों को फौरन निकाल बाहर किया जाए।" हैड नर्स ने पूछा, "सब कमरे भरे हुए हैं। उसे कहां भेजा जाए ?"

"जहन्नुम में ! जहन्नुम में !" — मिस्टर हामिद फरज गरजे, "कमरा फौरन खाली कराया जाए।"

"ऑपरेशन का जख्म अभी तक भर नहीं पाया है।" नर्स ने फिर कहा।

"उसे आम वार्ड में ले जाओ !" हामिद फरज ने हुकुम दिया।

"ठीक है।"

फिर मिस्टर हामिद तेजी से लंबे गलियारे को पार कर लेबररूम की ओर बढ़े। सभी नर्सें, कार्यकर्ता और डॉक्टर उनके पीछे-पीछे थे। आज तो मिस्टर हामिद फरज चुस्ती और मुस्तैदी की सीमाओं को छू रहे थे, हालांकि वह चुस्ती और मुस्तैदी उन्हें कई साल पहले छोड़ चुकी थी, जबकि उनके पेट का तीन बार ऑपरेशन हुआ था। वह कुछ ही मिनट में लेबररूम में आ पहुंचे। लेडी डॉक्टर ने यह कहते हुए उनका स्वागत किया कि सब कुछ तैयार है।

"आप सारा समय डॉक्टर नवाल की सहायता करेंगी !" उन्होंने आदेश दिया।

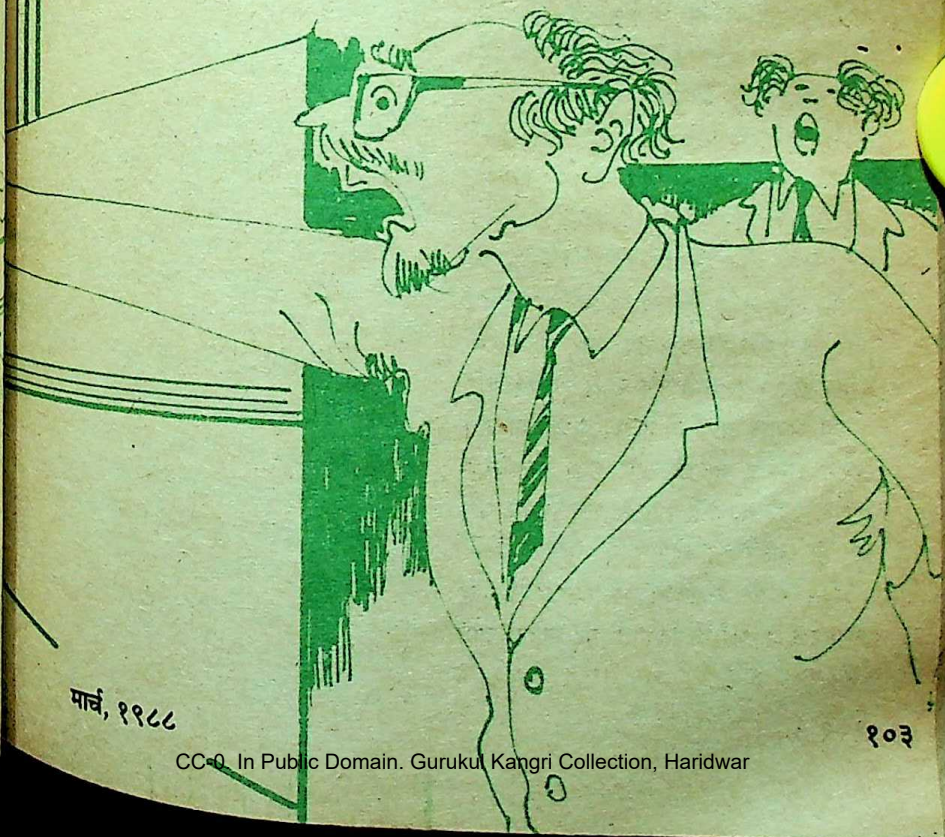

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृत्व के बोझ से लदी बेगम साहिबा के स्वागत के लिए सारा अस्पताल जैसे एक पैर पर खड़ा था। वे आयीं तो हड़कंप-सा मच गया। लेकिन थोड़ी देर बाद समूचे अस्पताल में जैसे एक भूचाल-सा आ गया। क्यों ?

"जी, जानती हूं।" लेडी डॉक्टर ने कहा।

"ऑपरेशन पूरा होने के बाद आप क्षण-प्रति-क्षण हालत में बेहतरी की रिपोर्ट देंगी।"

"ठीक है जनाब ! कोई सेवा और ?"

मिस्टर हामिद फरज मुख्य-द्वार की ओर शान से बढ़े। उनके पीछे-पीछे व्हील-चेयर के अलावा डॉक्टर नवाल, नर्सों, मरीजों और मुलाकातियों की लंबी क़तार थी। सब लोग दवाएं, मालिश का सामान और अन्य चीजें उठाये, दोनों ओर कतारों में खड़े हो गये।

इतने में नीले रंग की एक मर्सीडीस कार उनके निकट आकर रुकी। मिस्टर हामिद ने स्वयं आगे बढ़कर दरवाजा खोला। उनके पीछे-पीछे व्हील-चेयर थी। कार से एक अधेड़ उम्र की औरत व्हील-चेयर पर आकर बैठ गयी। कुरसी सिरों, पैरों और हाथों के बीच से उड़ती चली गयी इतनी तेज कि औरत गिरने को हो गयी। मिस्टर हामिद फरज औरत से भी ज्यादा तकलीफ में थे और दूर ही दूर से चीख रहे थे, "अरे, सावधानी, सावधानी ... इतनी तेजी न दिखाओ !"

मर्सीडीज कार के ड्राइवर राशद अस्कर को विस्मय और परेशानी ने घेर लिया था। दौड़ते हुए जुलूस ने उसे भी जूते हाथ में उठाकर पीछे-पीछे दौड़ने पर मजबूर कर दिया था। वह बेहद परेशानी में सोच रहा था, 'इन लोगों ने उसकी बीवी को इस तरह क्यों उचक लिया है !'

जुलूस लेबररूम के सामने जा रुका। कमरे में उस भीड़ के लिए गुंजाइश न थी। मिस्टर हामिद फरज ने नर्सों को विभिन्न टोलियों की शक्ल में बांट दिया। अब राशद अस्कर को हामिद फरज से मिलने का मौका मिला।

वह एक ही सांस में सारे सवाल पूछ लेना चाहता था कि इतने में मिस्टर हामिद फरज की आवाज बुलंद हुई, "चिंता न कीजिए, सब ठीक हो जाएगा।"

राशद अस्कर ने कहा, "मुझे पूरा यकीन है।"

इस पर मिस्टर हामिद फरज बड़ी विनम्रता से बोले, "मैं आशा करता हूं कि आप खुश होंगे।"

"हम आपका धन्यवाद करने में असमर्थ हैं।" राशद अस्कर ने भाव विभोर होकर कहा।

मिस्टर हामिद फरज का चेहरा खुशी से खिल उठा। खुशी की मदहोशी में उनके पांव जमीन पर टिक नहीं रहे थे। इतने में लेबररूम का दरवाजा खुला और एक नर्स स्ट्रेचर ढकेलती हुई बाहर निकली। उसके चेहरे पर विजय की मुसकराहट थी। उसने मिस्टर हामिद फरज को संबोधित करते हुए सबसे पहले खुशी की खबर सुनायी, "बेटा हुआ है !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हामिद फरज अस्कर की ओर तेजी से मुड़े और बोले, "मुबारक ! मुबारक ! बेटा हुआ है !"

और, हामिद फरज को खुश करने के लिए पैंतालीस वर्षीया नर्स खिलखिलाकर हंस पड़ी और फिर एक ही मुसकराहट सबके चेहरों पर छा गयी। फिर पूरा जुलूस उस कमरे की ओर बढ़ा, जो बेगम मसऊद-उल-जहब के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था और उसके पिस्सू, मच्छर, चूहे और अन्य कीड़े-मकोड़े थोक के हिसाब से मारे जा चुके थे। जुलूस राशद अस्कर के बूढ़े कदमों से बहुत पहले कमरे में दाखिल हो चुका था। राशद अस्कर की बीवी डॉक्टरों, नर्सों और विभिन्न विभागों के मुखियों के बीच घिरी हुई थी और मुसकरा रही थी।

राशद अस्कर सबके बीच पहुंचकर खुशी से मुसकराया और आदर से बोला, "मैं आप लोगों का धन्यवाद करने में असमर्थ हूं।"

हामिद फरज बड़ी शिष्टता से पूछने लगा, "हुजूर, खुद किस वक्त पधारेंगे ?"

अब राशद अस्कर को वह खयाल आया, जो उसे शुरू में उस समय आया था, जब उसका बेपनाह स्वागत हुआ था और अब यह वाक्य किसी अजनबी पंछी की तरह एकदम उतरा था।

वह अधिक देर तक न सोच सका। मिस्टर हामिद फरज ने फिर कहा, "अगर हुजूर ज्यादा मुलाकातियों से तकलीफ महसूस करें, तो हम उचित प्रबंध कर लेते हैं।"

राशद अस्कर विस्मय से हामिद फरज की ओर देख रहा था, जो बड़े खुशामद भरे स्वर में

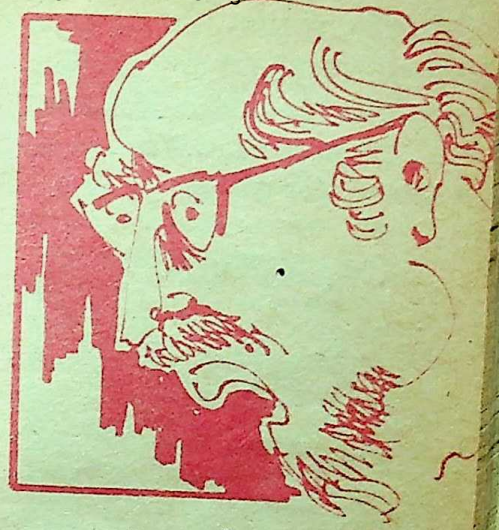

पूछ रहा था, "हुजूर, बच्चे का नाम क्या रख रहे हैं ?"

राशद अस्कर ने अपनी बीवी से नजरें मिलायीं। वह हामिद फरज साहब से कुछ पूछने ही जा रहा था कि दूर से एक शोर सुनायी दिया। एक लड़खड़ाती और हांफती हुई आवाज आ रही थी,—"बेगम मसऊद-उल-जहब तशरीफ ले आयी हैं।"

मिस्टर हामिद फरज चौंक पड़े। फिर उछलकर भागे। नये सिरे से चीख-पुकार और भाग-दौड़ शुरू हो गयी। वार्डों, गलियारों, लेबर-रूम, बाथ-रूमों के अंदर, मुख्य द्वार के सामने सड़क पर, हर ओर भूचाल-सा आ गया। हर कोई शोर मचा रहा था और भाग रहा था सिवाय एक व्यापारिक कंपनी के एक गरीब ड्राइवर राशद अस्कर के, जो अकेला खड़ा सोच रहा था कि आज पहली बार ड्राइवरी काम आ गयी।

प्रस्तुति : सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हंसोड़ की सलाह है कि यदि भूल से गलत बात निकल गयी हो तो तुरंत अपनी गलती मानते हुए अपनी बात को एक ऐसा मोड़ देना चाहिए कि लोगों को लगे कि आप तो हंसाने की बात कर रहे थे।

तनाव से मुक्त रखती हैं हंसी

● आशीष

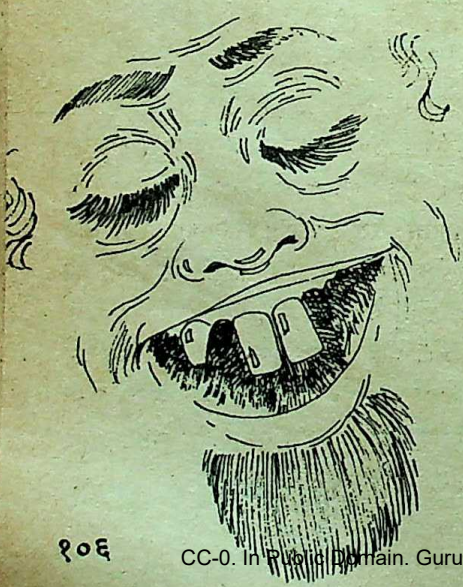

हर आदमी की इच्छा होती है कि उसका दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़े और वह सभा-सोसायटियों में लोकप्रिय हो। विदेशों में अपने व्यक्तित्व को निखारने और संवारने की शिक्षा के भी कई कोर्स चलते हैं जिनसे कोई भी एक प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व का स्वामी बन सकता है। व्यक्तित्व का यह आकर्षण आपके बोलने की शैली और विषय पर निर्भर करता है। इसका सबसे आसान तरीका है हंसने-हंसाने और गुदगुदाने वाली अच्छी बातों से अपना प्रभाव जमाना। कब, कैसे, कहां किस ढंग से बातचीत की जाए कि लोग आपकी बात में रस भी लें और गंभीरता से आपकी बात समझते हुए अपना मनोरंजन भी करें।

हंसने-हंसाने और गुदगुदानेवाली बातें जहां मनोरंजन करती हैं, वहीं वे तनाव-रहित भी करती हैं। दूसरों को भी गहरे तनाव के क्षणों में वे राहत भी दिलाती हैं। शहर की भीड़भरी बस्ती में आप बस में चढ़ें तो धक्के लग ही जाते हैं। अब कोई कुछ कह दे तो एक मुफ्त का तनाव सिर पर सवार हो जाता है। अगर आप में बातचीत का कौशल हो, तो आप तनाव टाल कर एक प्रमोदभरा वातावरण भी पैदा कर सकते हैं। ऐसे ही भीड़भरी बस में एक आदमी का धक्का दूसरे को लग गया। धक्के खाने वाले ने लाल-लाल नजरों से घूरना शुरू किया तो धक्के मारनेवाला बोला। "साहब जरा माफ कीजिए— आज साला मेरा कंधा मेरा कहा ही नहीं मान रहा है। पीछे वाले साहब ने उसे ऐसे भड़का दिया कि वह आपसे जा भिड़ा।" बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे आदमी पर जादुई असर पड़ा इस बात का !

बस की ही बात चली तो मेरे चढ़ने से पहले कंडक्टर किसी से झगड़कर तना हुआ लग रहा था। पास जाकर मैंने बहुत मासूमियत से उस दो मंजिली बस के कंडक्टर से कहा, "भाई साहब, ऊपर वाले तल्ले के ज्यादा पैसे तो नहीं लगते। मैं अभी गांव से आ रहा हूं।" बस कंडक्टर का तनाव दूर हुआ तो वह बहुत मिलनसार लहजे में लोगों को टिकटें बांटने लगा। बस का ही एक किस्सा और एक साहब दूसरे साहब से झगड़ा कर रहे थे कि 'आपने मेरे पांव पर अपना पांव क्या समझ कर मारा है।' बात काफी बढ़ी हुई लग रही थी। मैं पास से गया और धीमे से उन्हें धकियाते आगे बढ़ते हुए बोला, "भाई साहब, माफ करेंगे अगर पांव कहीं टकरा जाए। बेचारे पांव की आंखें नहीं हैं।"

बुनियादी बात यह है कि परिहास करने की एक अपनी शैली बनानी चाहिए फिर यह ध्यान रखना चाहिए कि कब, कैसे और कहां अपने तजुर्बे लोगों को हलके-फुलके अंदाज में बताये जाएं। लोग श्मशान में खड़े हों या मातमपुर्सी के लिए इकट्ठे हों तो वहां तो मजाक नहीं किया जा सकता। इसलिए अच्छी या गुदगुदानेवाली बात का प्रभाव तभी पड़ता है, जब माहौल या समय माकूल हो। आप अपने बॉस को बातचीत से पटाना चाहते हों तो पहले यह पता कर लें कि उन्हें क्या-क्या चीजें पसंद हैं। उस आधार पर जो भी गुदगुदाने वाला किस्सा आप कहेंगे उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। आप सुनी-सुनायी बात भी अगर अच्छे तरीके से

अपने पर जोड़कर सुनाएंगे तो लोगों को वह नयी बात ही लगेगी और खुलकर हंस सकेंगे। सबसे पहले तो आपको ध्यान रखना है कि आप किस पद या अवस्था के आदमी के सामने अपनी बात कह रहे हैं। किसी पढ़े-लिखे आदमी को सस्ते चुटकुले से हंसाना या वश में करना आसान नहीं, वहां तो आपको बौद्धिक किस्म की बात से ही हंसी पैदा करनी है। उदाहरण के लिए डॉक्टरों के दल में डॉक्टरों से संबंधित किस्सा प्रभावकारी रहेगा।

एक आदमी ने डॉक्टर बनने से पहले अपने पिता को पत्र लिखा, 'मैं दिल का विशेषज्ञ बनना चाहता हूं।' पिता का तुरंत पत्र आया, 'मूर्ख दिल तो सिर्फ एक होता है दांतों का डॉक्टर बन-कभी न कभी तो एकाध दांत गिरेगा ही, और धंधा चल निकलेगा।'

आपकी बातें ही आपके व्यक्तित्व की छाप डालती हैं इसलिए इस बारे में काफी सजग रहना चाहिए कि कोई बात ऐसी न निकल जाय कि पासा ही पलट जाय। पर एक हंसोड़ का कहना है कि अगर गलत बात ही निकल गयी हो,तो तुरंत अपनी गलती मानते हुए अपनी बात को ऐसा एक मोड़ देना चाहिए कि लोगों को लगे आप तो हंसाने की ही बात कर रहे थे।

हंसी एक जादुई चीज है। इस जादू को सीखना मुश्किल नहीं है, परंतु इसके लिए गंभीरता से यह सोचना चाहिए कि हमारा लक्ष्य सबको खुश करना है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कैसे हुआ! कहना बड़ा मुश्किल
खा डाली है मॉर्टन हमने सभी
क्या हमको और मिल सकती है अभी?

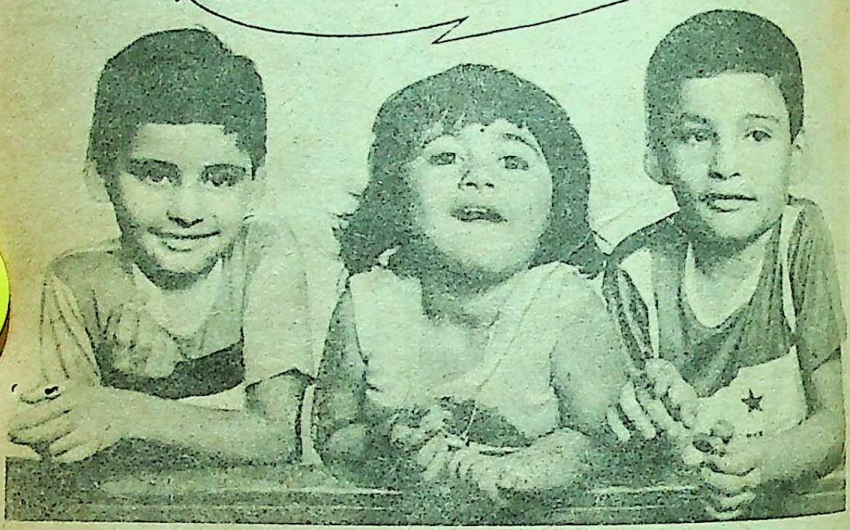

हाँ मॉर्टन।

एक-एक कतरा स्वाद से भरा। एक मिनट खत्म होते-होते दूसरा चाहिए। दूध, क्रीम और चीनी के गुणों से युक्त होने के कारण अतिरिक्त स्वास्थ्य व शक्ति से भरपूर.....इ...त...ने सारे स्वादों वाली। एक खाकर देखें—तो खाते जायें।

स्वादिष्ट चॉकलेट और कोकोनट कूकीज, लैक्टोवोनवोनस और रोज एक्लेअरस्। पिपरमिन्ट रोल्स और मिनिपोर्वस्। और अब इन सबसे बढ़कर बेहतरीन स्वादोंवाली जम्बो टॉफियाँ—सुप्रीम चॉकलेट और कोकोनट। वाह! क्या चीज है।

MORTON SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्टस फैक्ट्री
पोस्ट ऑफिस मढ़ौरा-८४१४१८, जिला : सारन (बिहार)

चेतावनी : खरीदने से पहले विश्वस्त हो लें कि आप असली मॉर्टन ही खरीद रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

— सम्पादक

१. क. एक संख्या को उतनी ही बार जोड़ने से १२१ आता है। बताइए, वह संख्या क्या है ?

ख. पहली, दूसरी, तीसरी विषम संख्याएं क्रमशः १,३, ५ हैं। इसी क्रम से १००वीं विषम संख्या क्या होगी ?

२. क. **हमारे** सौरमंडल के किस ग्रह पर सबसे लंबा वर्ष (सूर्य की परिक्रमा करने का काल) होता है।

ख. क्या उसे दूरवीक्षण-यंत्र की सहायता के बिना देखा जा सकता है ?

३. क. **भारत** में सबसे पुरानी सोने की खान कौन-सी है ?

ख. पिछले कुछ वर्षों में इस खान से सोने का उत्पादन बढ़ा है या घटा है ?

४. क. भारत के किस प्राचीनतम नगर के अवशेष समुद्र के गर्भ में डूबे होने का हाल में पता चला है ? वह कहां स्थित है ?

ख. इससे पूर्व कौन-से प्राचीन समुद्रस्थ अवशेषों का पता चला था ?

५. क. **टेसीटरी**—पुरस्कार जिसकी याद में दिया जाता है, वह कौन था ?

ख. इस वर्ष इस पुरस्कार के पानेवाले व्यक्ति का नाम बताइए।

६. **दुनिया** में अब तक किस नाट्य अभिनेता ने सबसे अधिक समय तक रंगमच पर अभिनय करने का रेकॉर्ड कायम किया है ?

७. **अब** तक किस कलाकार की कृति दुनिया में सबसे अधिक दामों में बिकी है ? कहां और कब ?

८. **किस** प्रसिद्ध वैज्ञानिक की हस्तलिपि अब तक सबसे अधिक कीमत में नीलाम हुई है ?

९. **भारत** में सबसे बड़ी देशी दूरबीन कहां लगी है ? वह कितनी बड़ी है ?

१०. **गत** वर्ष डेविस कप विजेता कौन-सा देश रहा ? अंतिम मैच किसके साथ हुआ था ?

११. १९८७ का विश्व शतरंज चैंपियन कौन है ? वह किसके विरुद्ध खेला था ?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हुआ 'मीर' का अंदाज नसीब

● रतनलाल जोशी

उर्दू के प्रसिद्ध शायर 'जौक' ने महाकवि मीर के काव्य की प्रशंसा में एक बार कहा था—

न हुआ, पर न हुआ 'मीर' का अंदाज नसीब ।
'जौक' यारों ने बहुत जोर गजल में मारा ।।

तारीफ क्या यह एक चुनौती थी जिसे आज तक उर्दू का कोई शायर अन्यथा नहीं कर सका है । और तो और स्वयं 'गालिब' ने 'मीर' की श्रेष्ठता को तस्लीम करते हुए कहा है—

रेख्ते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'गालिब' !
कहते हैं, अगले जमाने में कोई 'मीर' भी था ।।

मगर गजल ही क्यों, सच तो यह है कि 'मीर' के जीवन का अंदाज भी शायद ही किसी को नसीब हुआ होगा ।

'मीर' ने क्या-क्या मुसीबतें नहीं उठायीं, कौन-सा दुःख नहीं झेला; किंतु गजब का दिल पाया था उन्होंने कि समुद्र की तरह हर प्रवाह से वह गंभीर और अचल ही होता गया । उन्हीं के शब्दों में एक हालत उनकी यह भी थी—

चारदिवारी सौ जगह से खम,
तर तनक हो तो सूखते हैं हम ।।
लोनी लग-लग के झड़ती है माटी,
आह, क्या उम्र बेमजा काटी ।।
ता गले सब खड़े हैं पानी में,
खाक है, ऐसी जिंदगानी में ।।

मगर, बावजूद इस गुरबत और परेशानियों के 'मीर' कभी झुके नहीं और न किसी के सम्मुख उन्होंने हाथ ही फैलाया—

आगे किसू के क्या करें दस्तेतमअ दराज ।
यह हाथ सो गया है, सिरहाने धरे-धरे ।

—मांगने के लिए किसी के आगे हाथ क्या पसारें,
यह हाथ तो सिर के नीचे पड़ा-पड़ा सो गया है ।

मृत्यु को केवल आराम करना मानकर चलनेवाला वह पथिक वृद्धावस्था की सफेदी में सुबह का स्वप्न देखता था । यों तो जिंदगी में उसे क्या नहीं मिला था—प्रतिष्ठा, धन-दौलत, नवाब और बादशाहों का दरबार, पर अंतद्रष्टा कवि ने इन सबको नजरअंदाज करते हुए अपनी हस्ती की बुलंदी को बरकरार रखा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मीर' का पूरा नाम था मीर मुहम्मद तकी। 'मीर' उनका तखल्लुस (उपनाम) था। उनका जन्म आगरे में सन १७०९ में हुआ था। माता-पिता की मृत्यु बचपन में ही हो जाने के कारण उन्हें आगरे से दिल्ली चले आना पड़ा। बचपन से कविता का शौक तो था ही। दिल्ली में उनकी काव्य-प्रतिभा का पूरा निखार हुआ। उनके अंदाज और नुक्ते-नजर में कुछ ऐसा अनोखापन था कि वे दिल्ली के हाथों का फूल बन गये और उनकी शोहरत बुलंद होने लगी। यहां तक कि उनकी रसाई शाह-आलम के दरबार में भी हो गयी। पैंसठ वर्ष की उम्र तक वे दिल्ली रहे, पर दिल्ली की गिरती हालत देखकर मजबूरन उन्हें लखनऊ चले जाना पड़ा।

कहा जाता है कि जब दिल्ली से लखनऊ के लिए उन्होंने प्रस्थान किया, तो उनके पास भाड़े पर बैलगाड़ी करने तक को पैसा न था। आखिर साझे की एक बैलगाड़ी मिल गयी और उसी पर वे चले। अपने खयालों में गर्क, हजरत मीर को क्या था— चुपचाप बैठे रहे। तहजीब का तकाजा था, एक सहयात्री ने मनुहारभरे स्वर में कहा— 'हजरत, क्या मुजायका है, रास्ते में कुछ बातें होती चलें, जी ही बहलेगा।'

'मीर' छूटते ही बोले— 'जी, आपका तो जी बहलता है, पर मेरी जबान खराब होती है।'

हो सकता है, यह कहानी, कहानी भर ही हो, मगर मीर साहब को अपनी जबान के बांकपन और चुस्ती का कितना एहसास था— उसका एक सबूत तो यह है ही। बात सच भी

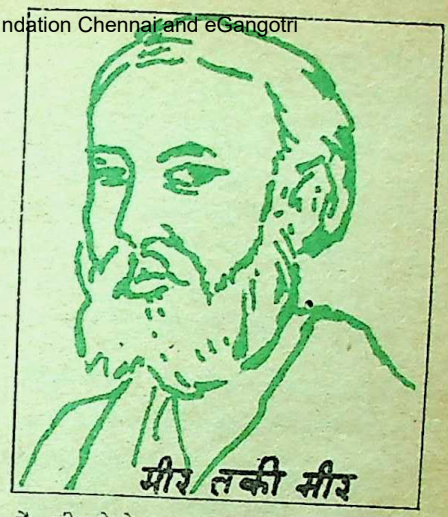

हैं, मीर ने रेख्ता को अपनी साधना से खूब निखारा, खूब संवारा।

दिल्ली जो एक शहर था

लखनऊ पहुंचकर वे एक सराय में ठहरे हुए थे। वहीं मालूम हुआ कि आज एक जगह मुशायरा है। उसी वक्त उन्होंने एक नयी गजल लिखी और मुशायरे में जाकर शामिल हो गये। शाही दिल्ली के शायर थे 'मीर', मुशायरे में गये तो शाही शान से ही गये थे— खिड़कीदार पगड़ी, पचास-पचास गज के घेर का जामा, डेढ़ बालिश्त ऊंची नोकवाली नागफनी की अनीदार जूतियां, कमर में एक ओर सीधी तलवार और दूसरी ओर कटार! देखा तो लखनऊ के 'कोमलता-प्रिय' शायर हंसने लगे। मीर साहब घर-बार छोड़ने की वजह से वैसे ही दुःखी थे, यहां के अदीबों (साहित्यिकों) के रंग-ढंग से और दुःखी हुए। लेकिन, चारा क्या था? एक तरफ जाकर चुपचाप बैठ गये। जब बदस्तूर कविता-पाठ के लिए शमा सामने आयी, तो फिर एक बार सबकी नजर उन पर पड़ी। कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने उनसे पूछा कि वतन कहां है ! उसी वक्त मीर साहब ने 'तरह' पर ही कहा—

क्या बूदो-बाश पूछो हो पूरब के साकिनो,
हमको गरीब जानके हंस-हंस पुकार के।
दिल्ली जो एक शहर था आलम में इंतखाब,
रहते थे मुंतखिब ही वहां रोजगार के।
उसको फलक ने लूट के वीरान कर दिया,
हम रहनेवाले हैं उसी उजड़े दयार के।

लोगों ने उनके कलाम का बांकपन देख दांतों-तले अंगुलियां दबा लीं। लखनऊ में भले ही मीर साहब नवागंतुक थे, लेकिन उनके और जानकार उनकी गजलों को सौगात की तरह दूर-दूर ले जाते थे। लखनऊ वालों को भी दिल्ली की यह लामिसाल सौगात कई बार मिल चुकी थी। और, अब कलाम सुनने के बाद लखनऊ में भी किसकी मजाल कि उन पर अंगुली उठाता। थोड़े ही दिनों के कयाम के बाद लखनऊ में भी हजरत मीर के आने की धूम मच गयी।

घुटन दरबारी आबोहवा की

नवाब आसिफ उद्दौला ने मीर साहब के आगमन का समाचार सुनकर बड़े आदर से उन्हें दरबार में बुलाया और खर्च के लिए दो सौ रुपये माहवार सरकारी खजाने से मुकर्रर कर दिया। मगर दरबारी आबोहवा की घुटन सरस्वती के इस स्वाभिमानी सपूत को ज्यादा दिन बर्दाश्त नहीं हुई और एक दिन जरा-से वाकये पर उन्होंने राजलक्ष्मी का दामन हमेशा के लिए झटक दिया।

हुआ यह कि एक दिन नवाब आसिफ साहब ने उन्हें शाही बगीचे में बुलवाया। जब मीर साहब वहां पहुंचे, तो वह हौज के किनारे खड़े लाल-हरी मछलियों से जी बहला रहे थे। उनको देखते ही नवाब साहब ने गजल पढ़ने की फरमाइश की और जब इधर मीर साहब गजलें पढ़ रहे थे, तो नवाब उधर मछलियों से खेल रहे थे। झल्लाकर मीर साहब बोले— "पढ़ूं क्या खाक ! आप तो मछलियों से खेल रहे हैं। इधर ध्यान दें, तो पढ़ूं भी।" नवाब साहब ने जवाब दिया— "जो शेर अच्छा होगा, वह खुद मुझे अपनी और मुखातिब कर लेगा।" मीर साहब को यह तुर्शी कब बर्दाश्त होने को थी— फौरन वहां से उठकर वे चल दिये और फिर आसिफ उद्दौला के जीते-जी दरबार की देहली पर कदम नहीं रखा।

एक दिन मीर साहब बाजार गये थे कि उधर से नवाब साहब की सवारी निकली। देखते ही सवारी ठहराकर नवाब साहब ने बड़े स्नेह से इतने दिनों तक दरबार में न आने का कारण पूछा। मीर साहब ने छूटते ही जवाब दिया— "साहब ! बाजार में बातें करना शिष्टता के विरुद्ध है। यह क्या गुप्तगू का मौका है ?"

नवाब की खिलअत लौटायी

नवाब आसिफ उद्दौला के बाद नवाब सआदत अली खां गद्दी पर बैठे। एक दिन उनकी सवारी निकली। उस वक्त मीर साहब मसजिद में बैठे थे। सब खड़े होकर अदब बजाने लगे, पर मीर साहब भला क्यों अदब लगे ! नवाब साहब ने अपने दरबारी सैयद इंशा अल्ला खां से दरियाफ्त किया— "यह मगरूर कौन है ?" इंशा बोले— "यह मीर साहब हैं, जिनका जिक्र दरबार में अक्सर हुआ करता है।" नवाब उनकी प्रतिभा से परिचित थे ही, नौकर के हाथ तत्काल एक

काटकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार रुपये औ खिलअत उनके पास भेजी। मगर, फाकाकशी की हालत होते हुए भी मीर ने यह सब लेने से इनकार कर दिया। बोले— "नवाब साहब से कह दो कि इस तोहफे को मसजिद में भिजवा दें, मैं मुहताज नहीं हूं।" मीर का उत्तर सुनते ही नवाब दंग रह गये। बाद में रुपये और खिलअत लेकर सैयद इंशा अल्ला खां खुद मीर साहब के घर गये। उन्हें देखते ही मीर कहने लगे— "जनाब ! वे (नवाब साहब) अपने मुल्क के बादशाह हैं, तो मैं भी अपन फन का बादशाह हूं। नवाब साहब मुझसे वाकिफ हैं, मेरी हालत से वाकिफ हैं; फिर भी देखिए तो एक दस रुपये पानेवाले मुलाजिम से खिलअत भेज दी।" इंशा ने बहुत समझाया-बुझाया, तब कहीं जाकर मीर साहब ने खिलअत कबूल की।

०० ०० ००

अभाव, चिंतन और गुण की अवहेलना करनेवाले संसार ने मीर साहब को जीवन में काफी निराश और कातर भी बना दिया था। ऐसे ही किसी विषाद के क्षण में, उन्होंने वेदनाभरी वाणी में कहा था—

कैसे हैं वे कि जीते हैं सदसाल हम तो 'मीर'।
इस चार दिन की जीस्त में बेजार हो गये।

—ऐ मीर ! वे लोग भला कैसे हैं, जो सौ साल तक जीते हैं।

हम तो इस चार दिन की जिंदगी में ही परेशान हो गये।

लेकिन, सारे अभाव-अभियोगों के बावजूद मीर ने अपने व्यक्तित्व को जिस तरह अडिग रखा, वह कोई मामूली बात न थी—

यूं कानों-कान गुल ने न जाना चमन में आह।
सर को पटक के हम सरे-दीवार मर गये।

—मैं सर पटककर दीवार के किनारे ही मर गया, पर बाग के फूल को कानों-कान खबर न पहुंची।

मीर की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि निराशा और वेदना की 'मौज' में बहते रहकर भी उन्होंने अपने में और अपने काव्य में आशा का एक निस्पंद दीप हमेशा जलाये रखा—

अहलेजवानी रो-रो काटी, पीरी में लीं आखें मूंद।
यानी रात बहुत थे जागे, सुबह हुई आराम किया।

—युवावस्था मैंने रो-रोकर काटी और वृद्धावस्था में आंखें मूंद लीं। यानी, रात को बहुत जागा था, सुबह जब हुई तो आराम किया।

मृत्यु को केवल आराम करना मानकर चलनेवाला वह पथिक वृद्धावस्था की सफेदी में सुबह का स्वप्न देखता था। यों तो जिंदगी में उसे क्या नहीं मिला था— प्रतिष्ठा, धन-दौलत, नवाब और बादशाहों का दरबार ! पर, अंतर्द्रष्टा कवि ने इन सबको नजरअंदाज करते हुए, अपनी हस्ती की बुलंदगी इन शब्दों में पेश की है—

अपने जी ही ने न चाहा कि पियें आबेहयात।
यूं तो हम 'मीर' उसी चश्मे पे बेजार हुए॥

—मैं तो उस अमृत के ही सोते पर मरा। वाहता, तो पीकर अमर हो गया होता, पर मेरे ही जी ने यह नहीं कबूल किया कि मैं एक चुल्लू अमृत पी लूं।

लेकिन, इनसान तो आखिर इनसान ही है— सुख-दुःख, आशा-निराशा, प्राप्ति-अभाव उनके संवेदनशील हृदय को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक प्रकाश है

"बच्चों के लिये आकर्षक उपहार"

लोकप्रिय, शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक बाल साहित्य।

	रु०
प्रवासी क्रांतिकारी	3.00
भारत छोड़ो आन्दोलन	3.00
कुंभ व अन्य मेले	3.00
स्वतन्त्रता-संग्राम-युवकों का युद्धघोष-बन्देमातरम्	3.00
बाल स्वास्थ्य और बाल शिक्षा	13.00
विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-1	7.50
विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-2	8.00
विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-3	14.50
बच्चों के लिए एकांकी नाटक	7.50
उत्तर प्रदेश की लोक कथाएं	14.00
हँसी-हँसी में	5.50
अमर मुस्कान	10.00
बिहार की लोक कथाएं	7.50
भारत के नारी रत्न	10.50
बाल महाभारत (चक्रव्यूह) भाग-1	3.50
बाल महाभारत (भीष्म प्रतिज्ञा) भाग-2	5.50
बाल महाभारत (लाक्षागृह) भाग-3	5.50
बाल महाभारत (महारथी करन) भाग-4	9.00
छोटी-छोटी चुभन	9.00
देश विदेश की लोक कथाएं	7.50
लो गुब्बारे	5.50
हँसते हुए मोती	8.00
जैन कहानियां	10.00
कश्मीर की लोक कथाएं	12.00
सुन्दर लोक कथाएं	6.00
रोचक ऐतिहासिक कहानियां	8.00
हमारे स्काउट गाइड	7.00
पौराणिक बाल कथाएं	7.00
हमारे त्यौहार	9.00
गुरु रामसिंह और कूका विद्रोह	7.00
ग्रह नक्षत्रों की आत्मकथाएं	6.00
आट-पाट नगर की कहानियां	11.00

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित सभी पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्रिका का वार्षिक ग्राहक बन जाने पर समस्त प्रकाशनों (5 रु. अथवा अधिक के मूल्य पर) की खरीद पर 10 प्रतिशत की छूट। विभिन्न विषयों पर भारत की सभी भाषाओं में उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध हैं। निःशुल्क सूची पत्र मंगाइए। 40/- रु. से कम के आदेश पर पंजीकरण शुल्क (रजिस्ट्रेशन फी) अतिरिक्त भेजना होगा। पुस्तकें स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं से लें अथवा सीधे हमें लिखें :—

व्यापार व्यवस्थापक
विक्रय केन्द्र
प्रकाशन विभाग
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- बिहार स्टेट को-आपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ पटना-800004
- 10 बी स्टेशन रोड़, लखनऊ-226019
- 8 एसप्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- कामर्स हाउस (दूसरी मंजिल) करीम भाई रोड़, बेलार्ड पियर, बम्बई-400038
- एल.एल.ए. आडिटोरियम, अन्ना सलाई, मद्रास-600002
- स्टेट आर्कीलाइजिकल म्यूजियम बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन, हैदराबाद-500004
- प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001

डीएवीपी 87/254

कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्श किये बिना कैसे रह जाते। फलतः मीर साहब भी जमाने से अपनी शिकायत करते गये—

दागे-फिराको, हसरते-वस्ल, आरजू-ए-शौक।
मैं साथ जेरेखाक भी हंगामा ले गया !!

—विरह का दुःख, मिलाप की इच्छा, शौकों की पूर्ति की अभिलाषा या कहिए पूरा एक हंगामा— मैं मिट्टी में कब्र के अंदर तक लेता चला गया।

और एक दिन हृदय-कोष में लाख-लाख अरमानों की दौलत संजोये हुए, हजरत मीर सौ वर्ष की उम्र में हमेशा के लिए नींद में सो गये, मगर जाते-जाते शोरे-कयामत को यों आगाह भी करते गये—

ऐ शोरे-कयामत ! हम सोते ही न रह जाएं।
इस राह से निकलो तो हमको भी जगा देना ।।

—ऐ प्रलय-काल में होनेवाले कोलाहल, अगर मेरी समाधि के पास से गुजरना तो मुझे भी जगा देना। ऐसा न हो कि तुम चले जाओ और मैं सोता ही रह जाऊं।

इसलामी पुराणों के अनुसार, प्रयलकाल में एक फरिश्ता तुरही बजाता है, जिसे सुनकर सब मुरदे कब्रों से उठकर खुदा के सामने जाते हैं, 'मीर' का मतलब इसी कोलाहल से है।

मगर शोरे-कयामत पर अपनी आसमान-छूती हस्ती का रौब जतानेवाले 'मीर' अपने पीछे छूटी जा रही दुनिया को भी यह जताना नहीं भूले कि शहंशाहों के वैभव, धन-दौलत के गर्व जहां नश्वर हैं, वहां मेरी शायरी अजर-अमर है। ताजो-तख्त मिट्टी में मिल जाएंगे, मगर मेरा 'दीवान' (काव्य संग्रह) प्रलय-काल तक अपने रस में तरो-ताजा रहेगा—

जाने का नहीं शोर सुखन का मेरे हर्गिज,
ता-हश्र जहां में मेरा दीवान रहेगा।

—१२, फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३,
नयी दिल्ली-११००२४

लखपति पिता अपने बेटे पर बरस रहा था, "काहिल और नालायक ! जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो रोजाना दस घंटे पानी ढोने की मजदूरी किया करता था, और रात को एक होटल में बरतन धोता था।"

बेटा बोला, "इसीलिए तो मैं आप पर गर्व करता हूं डैडी ! अगर आपने इतनी मेहनत न की होती, तो आज मुझे भी ऐसे ही घटिया काम करने पड़ते।"

एक लड़का परीक्षा में उचक-उचककर आगे बैठे हुए लड़के की कापी से नकल कर रहा था। कमरे में मौजूद परीक्षक ने व्यंग्य से कहा, "अगर आप कहें, तो उसके पास बिठा दूं।"

"जी धन्यवाद ! मुझे यहीं से साफ नजर आ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधान

तलाक संभव नहीं

अवनींद्रसिंह, चंडीगढ़ : मैं आज २६ वर्षीय नवयुवक हूं, नौकरी भी कर रहा हूं। मेरे पुराने विचारों वाले पिताजी ने आज से चार-पांच वर्ष पूर्व मेरी शादी कर दी। परंतु मैं अपनी पत्नी को अपना न सका। आज मैं पूर्णतः बालिग हूं, अपनी तरफ से काफी कोशिशें करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि मैं पत्नी के साथ किसी भी हालत में नहीं रह सकता। कोई बच्चा नहीं है, और न उसकी आशा है। मैं उससे छुटकारा पाना चाहता हूं, अर्थात तलाक चाहता हूं, परंतु लड़की वाले तलाक देना नहीं चाहते। अतः इस स्थिति में मैं तलाक कैसे ले सकता हूं? कोई उपर्युक्त हल बताइए।

नौकरी करने या बालिग होने का तलाक से कोई संबंध नहीं है। पिताजी पुराने विचार वाले थे या अन्य किसी विचार वाले, परंतु आपका विवाह तो वैधानिक रूप से हो चुका है। आपके पत्र से ऐसा भी प्रतीत होता है कि पत्नी आपके साथ रह रही है। पत्नी से छुटकारा पाना या तलाक लेने का कोई आधार नहीं बनता। पत्नी को अपनाने का प्रयत्न करना ही उचित रहेगा। हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत तलाक केवल उक्त अधिनियम में वर्णित आधारों या कारणों में ही संभव है।

आटे की चक्की

कवि कृष्ण सौमित्र; बहादुरगढ़ : मेरे मकान के पास पहले आटे की चक्की लगी हुई थी। अब उसके मालिक ने रुई पींजने की मशीन भी लगा ली है। यह स्वास्थ्य के लिए घातक है। कृपया कोई उपयुक्त समाधान सुझाएं।

आटे की चक्की के मालिक ने अपना काम करने के लिए नगरपालिका से अनुमति प्राप्त कर रखी है या नहीं, इसकी जानकारी अवश्य ले लेनी चाहिए। यदि नगरपालिका से अनुमति प्राप्त नहीं कर रखी, तो आप नगर पालिका अधिकारियों से संपर्क करके चक्की को अन्य स्थान पर स्थानांतरित करवाने के लिए कह सकते हैं।

चक्की के मालिक को अपना काम इस प्रकार चलाना चाहिए जिससे पड़ोसी या किसी अन्य नागरिक को उस काम के कारण परेशानी या हानि न हो। आपको होनेवाली परेशानी से उन्हें अवगत कीजिए तथा लिखकर अपनी परेशानी के समाधान के लिए नोटिस दें। टोर्ट के कानून के अंतर्गत आप चक्की के मालिक पर क्षति पूर्ति के लिए दावा भी कर सकते हैं।

दिवंगत पत्नी की धनराशि

सत्यनारायण, कलकत्ता : मैं एक सरकारी नौकरी करता हूं। मेरी पत्नी का एक वर्ष पूर्व निधन हो गया है। उसके नाम से बैंक में पांच हजार रु.

कानूनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमा हैं। मेरी पत्नी के मायकेवाले अब इस राशि को निकालना चाहते हैं। बैंक-मैनेजर भी उनके पक्ष में हैं। यों बैंक के सारे कागजात मैंने जमा किये हैं! कृपया उपयुक्त सलाह दें।

आपके पत्र से यह पता नहीं चलता कि आपके परिवार में अन्य कौन-कौन व्यक्ति है। आपकी पहली पत्नी के नाम जमा रकम पर किसका अधिकार होगा, इसका विधि सम्मत निर्णय तभी संभव है, जबकि इन तथ्यों की जानकारी हो। यह ठीक है कि आप भी उनकी संपत्ति में प्रथम श्रेणी के उत्तराधिकारी हैं। लड़की के पिता या भाई का उसकी संपत्ति पर अधिकार नहीं बनता। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा १५ के अंतर्गत संपत्ति पर अधिकार का निर्णय हो सकता है। उचित यह रहेगा कि आप न्यायालय में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र लेने के लिए आवेदन कर दें, यह प्रमाण पत्र लेने के बाद आप बैंक से रुपया प्राप्त कर सकते हैं।

किरायेदार की परेशानी

दिलीपसिंह, चुनार : सन '८० से मैं एक मकान के ऊपरी हिस्से में किरायेदार की हैसियत से रह रहा हूं। पानी का कनेक्शन मैंने अपने प्रयत्नों से लिया तथा विवाद से बचने के लिए उसे मकान-मालिक के नाम ही करा देना चाहा। पर उसके लिए वे तैयार नहीं हुए। बाद में नगरपालिका से ज्ञात हुआ कि यह मकान उनके नाम पर ही नहीं है। अतः मेरे किरायेदार होने का उल्लेख कर मुझे पानी का कनेक्शन दिया गया।

हमें ज्ञात हुआ है कि यह मकान किसी और का है। वे चार भाई हैं और उनमें से दो भाइयों ने यह मकान अठारह-बीस वर्ष पूर्व उक्त व्यक्ति के पास रेहन रख दिया, जिसे हम लोग 'मकान-मालिक' समझते रहे।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ — रामप्रकाश गुप्त

पिछले कुछ महीनों से वे किराया भी नहीं ले रहे हैं न पिछली कुछ रसीदें दे रहे हैं। हम किराया अदालत में जमा करा रहे हैं। इस मकान के शेष दो मालिक कर आदि जमा करा रहे हैं। जो हमें पहले रसीद देते रहे हैं, उनकी कानूनी स्थिति कमजोर होने पर हमारी स्थिति क्या गैर कानूनी किरायेदार की होगी?

आपको मकान में किसने बसाया इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है। आप जिसे किराया दे रहे हैं, उसका मकान पर क्या अधिकार है! मकान का आधा भाग जो उसके पास रेहन है, आप उस हिस्से में रह रहे हैं या दूसरे हिस्से में? मकान रेहन रखने के कारण उन्हें मकान का किराया लेने का भी अधिकार दिया गया था या नहीं— आदि कुछ प्रश्न आपके मामले में उठते हैं। यदि आपको किरायेदार किसी ऐसे व्यक्ति ने रखा, जिसको मकान किराये पर देने का अधिकार मकान मालिक के रूप में नहीं था या मकान मालिक द्वारा नहीं दिया गया था, तो आपको परेशानी हो सकती है। असली मकान मालिक इस आधार पर कि आप उसके द्वारा अधिकृत व्यक्ति द्वारा किरायेदार नहीं बनाये गये मकान का कब्जा आपसे लेने की कार्रवाई कर सकते हैं। यदि आपको मकान, मकान मालिक द्वारा अधिकृत व्यक्ति द्वारा किराये पर दिया गया है तो आपका अधिकार कानून सम्मत माना जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी की समस्या-पूर्ति परंपरा राजदरबारों से जनता तक

● सुरेंद्र मोहन मिश्र

भारतीय भाषाओं में समस्या-पूर्तियों का इतिहास पुराना है। राजा भोज के दरबार में संस्कृत की समस्याएं दी जाती थीं जिनकी पूर्ति पर राजकीय पुरस्कार मिलता था। संस्कृत के बल्लाल कवि का 'भोज प्रबंध' ऐसी अनेक चमत्कारपूर्ण उक्तियों से भरा पड़ा है। हिंदी साहित्य में अकबर काल में समस्या-पूर्तियों के उदाहरण मिलने आरंभ हो जाते हैं। केशव की प्रेमिका ओरछा की कवयित्री रायप्रवीण जब अकबर के दरबार में बुलायी गयी, तब उसकी परीक्षा के लिए समस्या की पंक्तियां दी गयीं जिनकी पूर्ति तत्काल ही कवयित्री द्वारा की गयी। इसी काल के गंग कवि के भी समस्या पूर्ति के अनेक छंद प्रसिद्ध हैं।

समस्या पूर्तियों का आरंभ राज दरबारों से हुआ था। धीरे-धीरे जनता के दरबारों में भी इसका पूरा प्रचलन हो गया। भारतेंदु काल में समस्या-पूर्तियों का इतना जोर बढ़ा कि जगह-जगह साहित्यिक समाज बने, जिनकी साप्ताहिक अथवा मासिक बैठकों में कविगण दी हुई समस्याओं पर कविता पूर्ति करके सुनाया करते थे। काशी, लखनऊ, कानपुर, सीतापुर और मुरादाबाद समस्या पूर्तियों के मुख्य केंद्र थे।

वैचित्र्यपूर्ण समस्याएं

काशी में भारतेंदु ने 'कवि समाज' संस्था की स्थापना की। इसकी गोष्ठियों में कविगण अपना काव्य-पाठ करते थे। प्रति बार कवियों को बड़ी-बड़ी विचित्र समस्याएं दी जाती थीं, जिनकी पूर्तियां अगली बैठक में सुनायी जातीं। समस्याएं — 'सांवरी सांपिन सोइ रही', 'पांच रवि दश शशि संगही उदय भये,' 'मछली जल छोड़ चली बन को', 'दुखिया अंखियां नहीं मानत हैं', 'लोट-लोट जात जैसे लोटत कबूतरी', 'मोम को मंदिर माखन को मुनि बैठे हुतासन आसन मारे' और 'सूरज देखि सके नहीं घुघ्घू' — जैसी दी जाती थीं।

सन १८९६ में कानपुर में 'रसिक समाज' संस्था की स्थापना ने फिर से समस्या-पूर्तियों की अभिरुचि को उभारा और इस समय कानपुर समस्या-पूर्ति काव्य का बड़ा केंद्र बन गया। आसपास के कस्बे भी जाग उठे। इसका श्रेय रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण' को है।

कानपुर की 'रसिक समाज' संस्था के सभापति श्री ललिता प्रसाद त्रिवेदी 'ललित', उपसभापति 'पूर्णजी' एवं मंत्री श्री रामनाथ सनाढ्य 'रत्नेश' थे। इसके कवि सदस्यों की संख्या भी अच्छी विशाल थी। कामवन के

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी देवकी नंदन आचार्य इस संस्था के संरक्षक थे। सरस्वती के यशस्वी संपादक पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी और राय बहादुर बाबू राम सरन दास संस्था के सम्मानीय सदस्य थे। सदस्य कवियों में भूषण, सेवक, मुकुन्द, कृष्णनवीन, गुप्त छविनाथ, बृजचन्द, गोविन्द, मथुरा, घासी, केदार, भोलानाथ और रामदास 'रस' प्रमुख रूप से समस्याओं की पूर्ति किया करते थे। 'रसिक वाटिका' मासिक में समस्या पूर्तियां प्रकाशित हुआ करती थीं। यह मासिक पत्रिका 'रसिक समाज' की ओर से निकलती थी।

इस संस्था की प्रतिस्पर्धा में कानपुर में ही दूसरी संस्था 'रसिक कवि सभा' सन १९०१ में बनायी गयी। इस संस्था की ओर से भी समस्या पूर्तियों का एक मासिक 'रसिक मित्र' निकला था।

लखनऊ भी इस काल में जागा। यहां से लाला हजारी लाल कलवार ने समस्या-पूर्ति की एक मासिक पत्रिका 'रसिक चंद्रिका' निकाली। लाला हीरालाल रस्तोगी इस काल में अशरफाबाद में अपने घर पर समस्या-पूर्तियों का कवि सम्मेलन प्रति माह कराया करते थे।

महमूदाबाद के राजा अमीर हसन खां भी हिंदी कविता के अनन्य प्रेमी थे। कवियों को प्रायः ही समस्याएं देते रहते थे, जिनकी पूर्ति पर पुरस्कार दिया जाता था। एक बार पुरंदर कवि ने राजा साहब की एक समस्या की पूर्ति इस प्रकार की थी —

ऐसो कौन पुरुष जो धन सों न प्रीति राखे
पाय प्रभुताई को गरूर घिरि आवै न
लखिकै सु कामिनी कटाक्ष अनियारे दृग
ऐसो को जितेंद्रिय जु प्रेम चित लावै न
भाषत 'पुरंदर' सु ऐसो कौन नीतिवान
करि कै प्रतीति जो अनीति दरसावै न
ऐसो कौन सदन नंदन बिन सोहै जौन
ऐसी ऋतु कौन जामैं मदन सतावै न

समस्या-पूर्तियों का आरंभ राज दरबारों से हुआ था। धीरे-धीरे जनता के दरबारों में भी इसका पूरा प्रचलन हो गया। भारतेंदुकाल में समस्या-पूर्तियों का प्रचलन इतना बढ़ा कि जगह-जगह साहित्यिक समाज बने। समस्या-पूर्ति पर पुरस्कार भी दिये जाते थे। एक कवि की समस्या-पूर्ति पर तो उसे पुरस्कार-स्वरूप हाथी भेंट कर दिया गया था।

समस्या-पूर्ति के पुरस्कार में हाथी

सीतापुर जनपद का नीलगांव कवियों के आदर-सत्कार के लिए दूर-दूर प्रसिद्ध था। सन १९०० से पूर्व यहां के ठा. दुर्गाबख्श सिंह कवियों को समस्याएं दिया करते थे और उनकी अच्छी पूर्ति पर प्रचुर धन देते थे। लखनऊ के पं. देवदत्त वाजपेयी ने जब एक बार ठाकुर साहब को अपनी तत्काल रची समस्या-पूर्ति से प्रसन्न कर दिया, तो ठाकुर साहब ने भी एक रुमाल में रखकर पांच सौ रुपया तत्काल प्रदान किया। एक बार कवि परमेस ने ठाकुर साहब

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी की समस्या-पूर्ति परंपरा राजदरबारों से जनता तक

● सुरेंद्र मोहन मिश्र

भारतीय भाषाओं में समस्या-पूर्तियों का इतिहास पुराना है। राजा भोज के दरबार में संस्कृत की समस्याएं दी जाती थीं जिनकी पूर्ति पर राजकीय पुरस्कार मिलता था। संस्कृत के बल्लाल कवि का 'भोज प्रबंध' ऐसी अनेक चमत्कारपूर्ण उक्तियों से भरा पड़ा है। हिंदी साहित्य में अकबर काल में समस्या-पूर्तियों के उदाहरण मिलने आरंभ हो जाते हैं। केशव की प्रेमिका ओरछा की कवयित्री रायप्रवीण जब अकबर के दरबार में बुलायी गयी, तब उसकी परीक्षा के लिए समस्या की पंक्तियां दी गयीं जिनकी पूर्ति तत्काल ही कवयित्री द्वारा की गयी। इसी काल के गंग कवि के भी समस्या पूर्ति के अनेक छंद प्रसिद्ध हैं।

समस्या पूर्तियों का आरंभ राज दरबारों से हुआ था। धीरे-धीरे जनता के दरबारों में भी इसका पूरा प्रचलन हो गया। भारतेंदु काल में समस्या-पूर्तियों का इतना जोर बढ़ा कि जगह-जगह साहित्यिक समाज बने, जिनकी साप्ताहिक अथवा मासिक बैठकों में कविगण दी हुई समस्याओं पर कविता पूर्ति करके सुनाया करते थे। काशी, लखनऊ, कानपुर, सीतापुर और मुरादाबाद समस्या पूर्तियों के मुख्य केंद्र थे।

वैचित्र्यपूर्ण समस्याएं

काशी में भारतेंदु ने 'कवि समाज' संस्था की स्थापना की। इसकी गोष्ठियों में कविगण अपना काव्य-पाठ करते थे। प्रति बार कवियों को बड़ी-बड़ी विचित्र समस्याएं दी जाती थीं, जिनकी पूर्तियां अगली बैठक में सुनायी जातीं। समस्याएं — 'सांवरी सांपिन सोइ रही', 'पांच रवि दश शशि संगही उदय भये,' 'मछली जल छोड़ चली बन को', 'दुखिया अंखियां नहीं मानत हैं', 'लोट-लोट जात जैसे लोटत कबूतरी', 'मोम को मंदिर माखन को मुनि बैठे हुतासन आसन मारे' और 'सूरज देखि सके नहिं घुघ्घू' — जैसी दी जाती थीं।

सन १८९६ में कानपुर में 'रसिक समाज' संस्था की स्थापना ने फिर से समस्या-पूर्तियों की अभिरुचि को उभारा और इस समय कानपुर समस्या-पूर्ति काव्य का बड़ा केंद्र बन गया। आसपास के कस्बे भी जाग उठे। इसका श्रेय रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण' को है।

कानपुर की 'रसिक समाज' संस्था के सभापति श्री ललिता प्रसाद त्रिवेदी 'ललित', उपसभापति 'पूर्णजी' एवं मंत्री श्री रामरत्न सनाढ्य 'रत्नेश' थे। इसके कवि सदस्यों की संख्या भी अच्छी विशाल थी। कामवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी देवकी नंदन आचार्य इस संस्था के संरक्षक थे। सरस्वती के यशस्वी संपादक पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी और राय बहादुर बाबू राम सरन दास संस्था के सम्मानीय सदस्य थे। सदस्य कवियों में भूषण, सेवक, मुकुन्द, कृष्णनवीन, गुप्त छविनाथ, बृजचन्द, गोविन्द, मथुरा, घासी, केदार, भोलानाथ और रामदास 'रस' प्रमुख रूप से समस्याओं की पूर्ति किया करते थे। 'रसिक वाटिका' मासिक में समस्या पूर्तियां प्रकाशित हुआ करती थीं। यह मासिक पत्रिका 'रसिक समाज' की ओर से निकलती थी।

इस संस्था की प्रतिस्पर्धा में कानपुर में ही दूसरी संस्था 'रसिक कवि सभा' सन १९०१ में बनायी गयी। इस संस्था की ओर से भी समस्या पूर्तियों का एक मासिक 'रसिक मित्र' निकला था।

लखनऊ भी इस काल में जागा। यहां से लाला हजारी लाल कलवार ने समस्या-पूर्ति की एक मासिक पत्रिका 'रसिक चंद्रिका' निकाली। लाला हीरालाल रस्तोगी इस काल में अशरफाबाद में अपने घर पर समस्या-पूर्तियों का कवि सम्मेलन प्रति माह कराया करते थे।

महमूदाबाद के राजा अमीर हसन खां भी हिंदी कविता के अनन्य प्रेमी थे। कवियों को प्रायः ही समस्याएं देते रहते थे, जिनकी पूर्ति पर पुरस्कार दिया जाता था। एक बार पुरंदर कवि ने राजा साहब की एक समस्या की पूर्ति इस प्रकार की थी —

ऐसो कौन पुरुष जो धन सों न प्रीति राखे
पाय प्रभुताई को गरूर घिरि आवै न
लखिकै सु कामिनी कटाक्ष अनियारे दृग
ऐसो को जितेंद्रिय जु प्रेम चित लावै न
भाषत 'पुरंदर' सु ऐसो कौन नीतिवान
करि कै प्रतीति जो अनीति दरसावै न
ऐसो कौन सदन नंदन बिन सोहै जौन
ऐसी ऋतु कौन जामैं मदन सतावै न

समस्या-पूर्तियों का आरंभ राज दरबारों से हुआ था। धीरे-धीरे जनता के दरबारों में भी इसका पूरा प्रचलन हो गया। भारतेंदुकाल में समस्या-पूर्तियों का प्रचलन इतना बढ़ा कि जगह-जगह साहित्यिक समाज बने। समस्या-पूर्ति पर पुरस्कार भी दिये जाते थे। एक कवि की समस्या-पूर्ति पर तो उसे पुरस्कार-स्वरूप हाथी भेंट कर दिया गया था।

समस्या-पूर्ति के पुरस्कार में हाथी

सीतापुर जनपद का नीलगांव कवियों के आदर-सत्कार के लिए दूर-दूर प्रसिद्ध था। सन १९०० से पूर्व यहां के ठा. दुर्गाबख्श सिंह कवियों को समस्याएं दिया करते थे और उनकी अच्छी पूर्ति पर प्रचुर धन देते थे। लखनऊ के पं. देवदत्त वाजपेयी ने जब एक बार ठाकुर साहब को अपनी तत्काल रची समस्या-पूर्ति से प्रसन्न कर दिया, तो ठाकुर साहब ने भी एक रुमाल में रखकर पांच सौ रुपया तत्काल प्रदान किया। एक बार कवि परमेस ने ठाकुर साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दी हुई समस्या 'चीर छूटन चहत है' की पूर्ति सुना कर इतना प्रसन्न कर दिया कि ठाकुर साहब ने एक हाथी कवि को भेंट कर दिया। इस हाथी का मूल्य उस समय बाइस सौ रुपये था। छंद देखें —

नैन भरि बारी, कर ऊरध पसारी टेरि
द्रौपदी पुकारी उर चीर ना लहत है
संत हितकारी सुख सदन बिहारी मधु —
मथन खरारी नाम अरि का दहतु है
अरज हमारी सुनि लीजिए मुरारी
केहि कारन बिसारी बेदबानी यों कहत है
ये हो बनवारी प्रभु लागिए गोहारी
लाज जाति है हमारी चीर छूटन चहत है

यह समाचार जब बिसवां के पं. राधेनारायण वाजपेयी 'प्रजावैद्य' ने सुना तो उन्होंने इस छंद को साधारण बताया और इसे इतने बड़े पुरस्कार के योग्य नहीं समझा। समाचार सुनानेवाले ह्येलपुर के उस समय के प्रसिद्ध कवि लोटन राय 'कवि रत्नेश' थे, उन्हें यह बात नहीं भायी। उन्होंने कहा — 'यदि यह छंद साधारण है तो आप ही इसकी अच्छी पूर्ति कर के सुनाइए'

प्रजावैद्यजी ने तत्काल दो छंद इसी समस्या पूर्ति पर बनाकर सुनाये —

बिपति बिदारी बृंदाबिपिन बिहारी बाल
पूतना पछारी, बानि बेद उमहत है
अघासुरहारी नख गिरिवरधारी कंस
बंस ध्वंसकारी दास त्रास ना सहत है
गरुड़ सवारी कांधे पीत पटधारी कहै
द्रौपदी पुकारी उर धीर ना धरत है
मेरी अब बारी काहे करत अबारी नाथ
सरन तिहारी चीर छूटन चहत है

सागर सभा मैं कर भंबर दुसासन सों
लाज को जहाज आज गति ना गहत है
गौतम की नारी गीध गनिका उबारी धाये
गज की गोहारी निगमागम कहत है
पाल्यो प्रहलादै पद ध्रुव को अचल दीन्हो
सेवरी की सेवा महि महिमा महत है
वीर बलबीर भीर परी है गंभीर धीर
आवत न तीन चीर छूटन चहत है

यह घटना सन १९१२ की है। तब तक शायद ठाकुर साहब नहीं रहे थे। अन्यथा इन छंदों को भी अवश्य पुरस्कृत करते। सन १९३१ में 'माधुरी' में इन छंदों का प्रकाशन हुआ।

सीतापुर के बिसवां कस्बे के पं. देवीदत्त त्रिपाठी 'दत्त' द्विजेंद्र ने 'काव्य सुधाकर' नाम से एक समस्या-पूर्तियों का मासिक निकाला था, जो कि कई वर्ष चला। श्री राधेनारायण वाजपेयी 'प्रजावैद्य' भी बिसवां के अच्छे समस्यापूर्ति कवियों में गिने जाते थे।

द्वितीय महायुद्ध के शुरू होने तक यत्र-तत्र कवि-सम्मेलनों में समस्या-पूर्तियां चलती रहीं। नीमच में भी एक संस्था समस्या-पूर्तियों पर पुरस्कार दिया करती थी। सन १९३३ में जब हिंदी साहित्य मंडल की स्थापना की गयी तब समस्या-पूर्तियों की एक लहर पूरे जनपद में दौड़ गयी। इस संस्था के जन्म-दाता श्री श्यामसुंदर शर्मा 'बेचैन' थे, जिन्होंने बड़ी लगन से वर्षों तक इस साहित्य धारा को बल दिया।

मुरादाबाद जनपद की एक नगरी चंदौसी भी उन दिनों समस्या-पूर्तियों के लिए जागरूक थी। यहां की सनातन धर्म सभा ऐसे आयोजन प्रायः ही करती रहती थी, जिसमें कविगण दी गयी समस्याओं की पूर्ति करके लाते थे। इन पूर्तियों को चंदौसी के ही एक मासिक पत्र 'स्वदेश' में यदा-कदा छापा जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्तिकारों में गुरु श्रीमन नारायण, गुप्तार्थ डोरीलाल 'शान्ति', श्री गोपालदास, मुंशी शिवचरण, श्री जागेश्वर प्रसाद शर्मा, श्री मायादत्त शास्त्री 'मायेश' और पं. छोटेलाल दीक्षित 'द्विजदास' समस्या - पूर्ति करने में सिद्धहस्त थे।

एक बार गुरु श्रीमन नारायण ने 'बीते हैं' समस्या की पूर्ति की थी। यह पूर्ति अपने समय में बड़ी लोकप्रिय हुई और अब भी पुराने कविता प्रेमियों को याद हैं। इसकी बानगी आप भी देखें —

कुंडल अमोल पड़े ललित कपोलन पै
करत किलोल डोल-डोल मन चीते हैं
भृकुटी कमान कंज लोचन चढ़ाये धान
श्रीमन सुजान कोटि कान छवि जीते हैं
तोरि शिव चाप गर्व, गारि भृगुनाथजू को
जनकपुरी में भी सुजस उजीते हैं
नीके रहो नीके सुत कौशल धनी के
धन्य भाग अवनी के अवनी के दुःख बीते हैं

पं. छोटे लाल दीक्षित 'द्विजदास' चंदौसी के अच्छे ज्योतिषी और पांडित्य में प्रवीण थे। उनकी समस्या-पूर्तियां भी अपने समय में खूब लोकप्रिय हुईं। द्विजदासजी का एक छंद देखें जिसमें उन्होंने 'कराल गति कालकी' समस्या की पूर्ति की है —

दूध घृत देन वारी सुरभि दुखारी मरें
पावें पकवान श्वान बैठे फिरें पालकी
पूत पतिवारी सो दुखारी चारु चूरिन को
विधवा विलायत सो मंगावे नयी चाल की
दास द्विज पेटन की चपेटन ते चोट खाय
लौटत हजारन अनाथ बाल बाल की
वेश्यन के विलासन में खावें खूब जान-माल
अति विकराल है कराल गति काल की

चंदौसी में समस्या-पूर्तियों का दूसरा केंद्र यहां का एस.एम. इंटर कालिज बना। सन १९०८ में स्थापित हुए इस कालिज में सन १९३० से लेकर १९४० तक के दस वर्षों में समस्या-पूर्तियों का गहरा नशा छाया रहा। इस कालिज के लगभग सभी समस्या-पूर्तिकार आगे चलकर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार बने। कुछ नाम मेरे मत की पुष्टि करेंगे —

प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नगेंद्र जब चंदौसी में पढ़ते थे, तब नगेंद्र नगायच 'अमल' नाम से कविता करते थे। 'पार्वती' महाकाव्य के रचयिता पं. रामानन्द तिवारी की कविता का आरंभ भी इसी कालिज से होता है। डॉ. भारतभूषण अग्रवाल, रामावतार त्यागी और दुष्यंत कुमार आदि इन सबकी कविताओं का आरंभ कालिज की समस्या-पूर्तियों से ही होता है। कालिज के अध्यापक कवियों में शीलजी एक भक्त कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे।

यहां केवल तीन कवियों की उन तीन समस्या-पूर्तियों को प्रस्तुत किया जा रहा है जो स्वयं कवियों के पास भी अब उपलब्ध नहीं हैं। तीनों ही कविताएं रचयिताओं के छात्र जीवन की स्मृतियां हैं और उनका अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है। डॉ. नगेंद्र की 'धसकी' समस्या की पूर्ति देखिए —

जग प्रेम प्रपंचन ते अनभिज्ञ रही दुहिता नित तापस की
मृग सावक संग चरी अबलौं परतीत न सुंदरता रस की
चित चोर कूं देखि अचेत भई पड़ि आंखि में आंखि बड़ी कसकी
इत रूप की रासि गिरी अकुलाय उतै सकुचाइ धरा धसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जीवन के रंग अजीब...
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

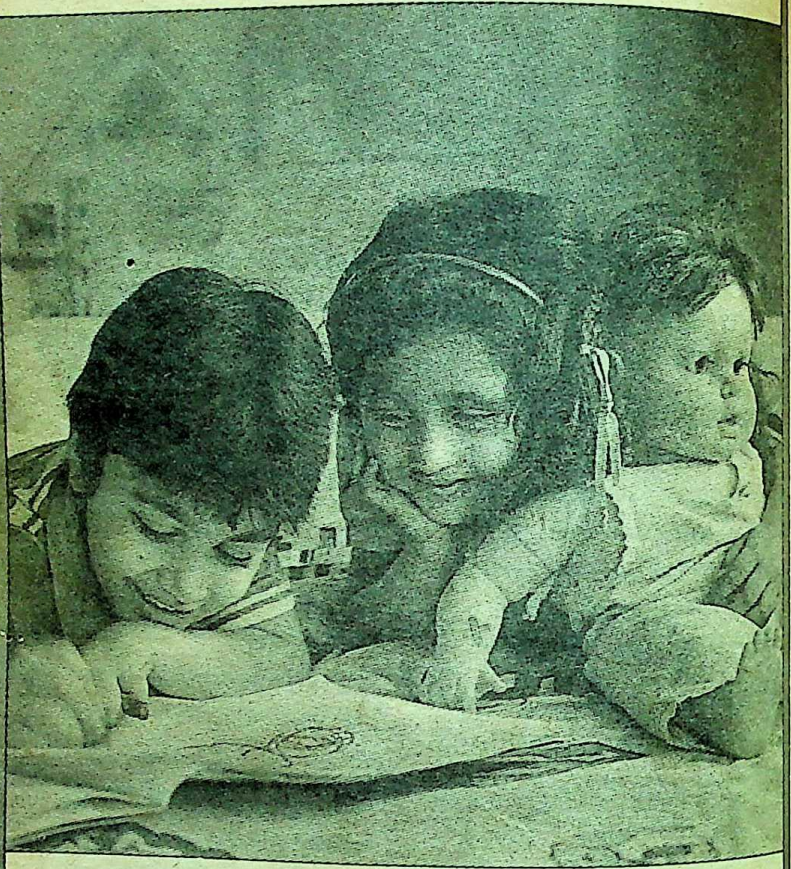

शुक्र है बोरोलीन करीब

सुगन्धित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

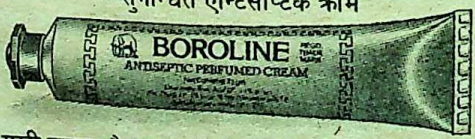

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. रामानन्द तिवारी जिनके कई महाकाव्य पुरस्कृत और प्रशंसित हुए, सन १९३५ में इसी कालिज के छात्र थे। उनकी उसी काल की एक समस्या पूर्ति यहां प्रस्तुत है —

थकयो बल तेज, प्रभो सिगरो नहिं वैभव साज समाज रहे
असहाय हुए सब भांति विभो किमि बूड़त लाज जहाज रहे
तुम सोय सुखेन रमा संग नाथ न क्या अब दीन निवाज रहे
अरु भंग पिये गिरिजा संग मस्त गिरीश गिरीश विराज रहे।

शीलजी द्वारा सन १९२४ में की गयी एक दुर्लभ समस्या की पूर्ति यहां दी जा रही है —

कोट पैंट धार कर लगायो सीस ऊपर हैट
पहन फुल बूट कियो केसन सिंगार है
चश्मा से ढांकि नैन गिटपिट कुछ बोलें बैन
गल को सजाय हेत टाई रूप हार है
केन कर एक माहिं अन्य पैंट जेब मांहि
मुख में वरजीनिया को दब रयो सिगार है
कैसो हरिप्रेम 'शील' कैसे व्रत नेम यहां
इंग्लिश एजुकेशन में तो फैसन 'एक सार है'

समस्या-पूर्ति अब इतिहास का विषय हो गयी हैं। हिंदी साहित्य का यह मूल्यवान अंश बिखरा पड़ा है, जिसे बटोरने का कोई प्रयास नहीं किया गया। इस काल में प्रकाशित होनेवाले कविता पत्रों में 'काव्य सुधा निधि', 'साहित्य-सरोवर' एवं 'कवि और चित्रकार' — जैसे अनेक पत्र भी थे। इन पत्रों की फाइलों में समस्या-पूर्तियों का समस्त काव्य सुरक्षित है।

— ए-४/एफ-४ नवभारत अपार्टमैंट्स
पश्चिम विहार,
नयी दिल्ली-११००६३

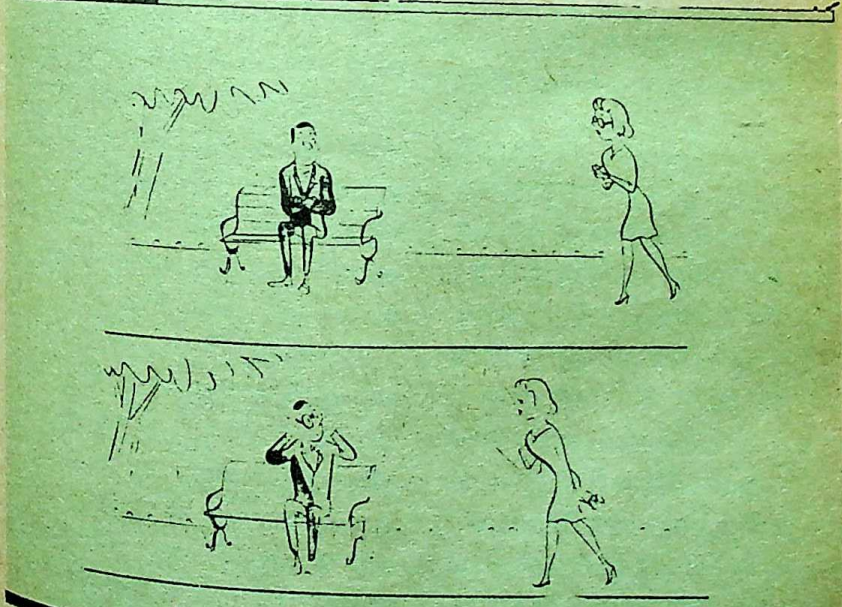

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य कथा

लड़की की आकृति

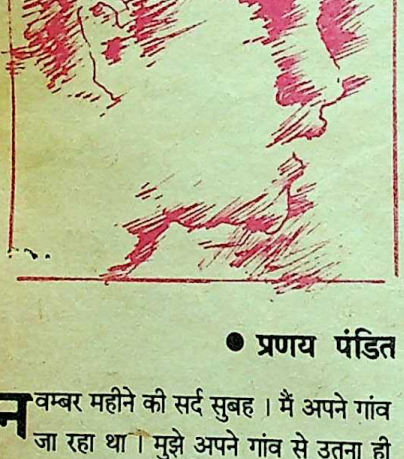

● प्रणय पंडित

नवम्बर महीने की सर्द सुबह। मैं अपने गांव जा रहा था। मुझे अपने गांव से उतना ही लगाव है, जितना किसी किसान को अपने खेत से होता है। घनश्याम मेरा पुराना दोस्त है। रेलवे में गार्ड का काम करता है। मैं उसी के पास अपना समय बिताऊंगा। वैसे, सर्दियों का मौसम और वह भी इस पहाड़ी इलाके में उपयुक्त तो नहीं था फिर भी घनश्याम से मिलने की मेरी उत्सुकता आकुलता में बदल गयी थी क्योंकि, उससे मिले बहुत समय बीत गया था। मुझे अपना यह गांव छोड़े दसियों साल हो गये थे। मेरी पत्नी पहली बार गांव जा रही थी, इसलिए वह इस नयी जगह के बारे में कुछ सोचती-विचारती चल रही थी।

जब मैं गांव पहुंचा तो घनश्याम के घर में घुसकर देखा कि वह अभी तक बिस्तर में पड़ा सो रहा था।

"तुम्हारे घर मेहमान आ पहुंचे हैं और तुम हो कि अभी तक सोए पड़े हो," मैंने उसे जगाते हुए कहा। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर जोर से दबाया। और जब उसकी नजर मेरी पत्नी पर पड़ी तो वह उसे देखकर सचेत होते हुए बोला, "अरे, तुम भाभी को भी साथ लाये हो, यह तुमने बहुत अच्छा किया।" तभी उसकी पत्नी कमरे में आयी। घनश्याम ने उससे हम दोनों का परिचय कराया। मेरी पत्नी उनके साथ रसोई में चली गयी और हम दोनों कमरे में बातचीत करने में लग गये।

शाम हो चली थी। हवा सरसराती हुई चल रही थी। हम दोनों बरामदे में बैठे बात कर रहे थे। वह मुझे दीनानाथ के बारे में बता रहा था। लोग दीनानाथ को डॉक्टर कहते थे। वह समय का बड़ा पाबंद था। लोग उसे देखकर अपनी घड़ियां ठीक किया करते थे, जबकि उसके पास स्वयं घड़ी नहीं थी। वह घनश्याम से मिलने हर रोज चार बजे अवश्य आता था।

अभी चार बजने में एक मिनट बाकी था कि उसने अंगुली से संकेत करते हुए कहा, "देखो, वह आ रहा है डॉक्टर।" एक लंबा-सा आदमी तेजी से साइकिल दौड़ाता हुआ इधर ही आ रहा था। साइकिल खड़ी कर जब वह बरामदे में आया तो घनश्याम ने कहा, "मैंने कहा था न कि डॉक्टर कभी गायब नहीं हो सकता।" फिर उसने मेरा उससे परिचय कराया। डॉक्टर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं डॉक्टर नहीं हूं, लोग मुझे वैसे ही डॉक्टर कह कर पुकारते हैं। आपको यहां तक आने में, रास्ते में कोई परेशानी तो नहीं हुई ?"

वह अनौपचारिक ढंग से कह रहा था, "आप मेरे घर पर अवश्य पधारें। मैं यहां से कुछ दूर पर ही अपना मकान बनवा रहा हूं। मेरे पास एक अच्छा-सा पुस्तकालय है, तरह-तरह की संग्रह की हुई चीजें हैं और न जाने क्या-क्या है, जिसे देखकर आपको खुशी होगी।" तभी घनश्याम ने बीच में बोलते हुए बताया कि डॉक्टर के पास चित्रों का एक विचित्र संग्रह है और शहद की मक्खियों के छत्ते. . .।" उसे बीच में ही रोकते हुए डॉक्टर ने कहा, "अगर तुम पहले से ही सब कुछ बता दोगे, तो फिर देखने का मजा ही क्या रह जाएगा ?" फिर उसने मुझसे पूछते हुए कहा, "आप अभी क्या कर रहे हैं ? अगर खाली हो तो अभी चलिए।" मैंने हामी भरते हुए कहा, "चलिए, अभी चलता हूं। मेरी पत्नी को चित्रकला में बहुत रुचि है, उसे आपके चित्र देखकर बेहद खुशी होगी।"

कुछ देर में मैं तैयार हो पत्नी को साथ लेकर डॉक्टर के साथ चल पड़ा। शाम ढलने लगी थी। हम तो गरम कोट पहने हुए थे, लेकिन डॉक्टर केवल कमीज ही पहने था। कुछ देर चलने के बाद हम डॉक्टर के घर पहुंचे। उसके घर का बड़ा-सा हाल अजीब-अजीब चीजों से भरा पड़ा था। दीवारों पर भारी-भारी चित्र टंगे हुए थे, जिनमें से छह या सात चित्रों में क्षमा के रूपों को अलग-अलग रूपों में दिखाया गया था। दीवार के एक ओर सफेद बोर्ड पर मधुमक्खियों की कई किस्मों को पिन से गाड़कर सजाया हुआ था। हर मक्खी के नीचे उसका नंबर और नाम लिखा था। डॉक्टर के पास एक ऐसी मोटी किताब भी थी, जिसमें मक्खियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी हुई थी।

दीवार पर एक कोने में एक बड़ा-सा चित्र टंगा था, जिसमें मनुष्य की मरीचिका विभिन्न रूपों में चित्रित थी। सांसारिक आनंद में रमे हुए आदमियों के बीच एक महात्मा भी दिखाया गया था। महात्मा के चेहरे पर एक अलौकिक तेज था, जिसे दिखाते हुए डॉक्टर ने कहा, "यह मेरे जीवन का सर्वोत्तम चित्र है। मनुष्य सांसारिक आनंद में लीन है, लेकिन यह महात्मा भोग से मुख मोड़कर परमानंद में लीन है।"

डॉक्टर ने कुछ देर बाद कहा, "आइए कुछ पिएं।" और वह मुझे खाने की मेज पर ले गया, जहां उसने व्हिस्की की बोतल निकालकर दो ग्लास तैयार किये। एक अपने लिए और दूसरा मेरे लिए। वह बातों में इतना खोया हुआ था कि उसे मेरी पत्नी का ध्यान ही नहीं रहा। और जब उसकी नजर मेरी पत्नी पर पड़ी तो

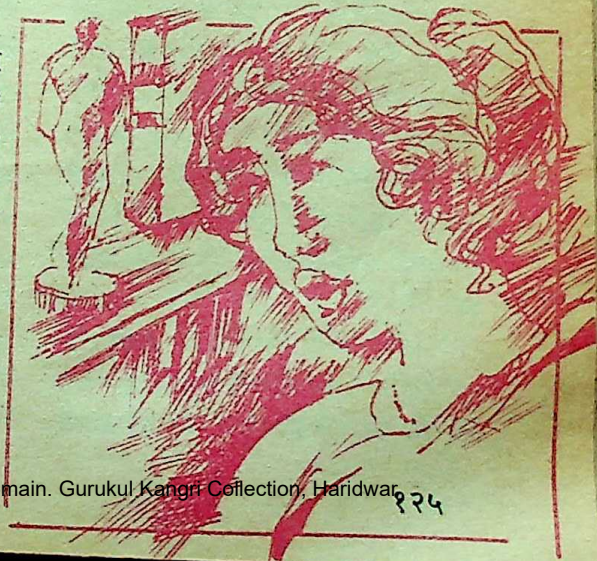

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी गलती महसूस करते हुए उसने कहा, "क्षमा कीजिए मुझे आपका ध्यान ही नहीं रहा। मैं एक अच्छा मेजबान नहीं हूं, मुझे इस बात का दुःख है।" मैंने कहा, "दुःख की कोई बात नहीं है, मेरी पत्नी शराब क्या कॉफी तक नहीं पीती।

डॉक्टर ने मेरी पत्नी को सुझाव दिया कि वह तब तक किताबें व संग्रह की चीजों को देखे। मेरी पत्नी संग्रह की चीजें देखती रही। जब उसने एक अलमारी में से एक मोटी-सी किताब उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो डॉक्टर लगभग चीखती हुई आवाज में बोला, "इस किताब के साथ टिकी उस लड़की की आकृति को मत छूना।" फिर कुछ धीमी आवाज में उदासीभरे स्वर में बोला, "बड़ी मनहूस है यह आकृति, इसके छूने से दो लोगों की मौत हो चुकी है।"

"तो फिर आपने इस मनहूस आकृति को अपने पास क्यों रख छोड़ा है, इसे फेक क्यों नहीं देते," मैंने कहा।

"मैं इसे फेक नहीं सकता, क्योंकि यह प्राचीन कला का एक दुर्लभ नमूना है। इसे कोई छूता नहीं और जो भी छूता है, उसे इसका शाप लग जाता है।" डॉक्टर ने दूसरा गिलास भरते हुए कहा। मेरी पत्नी डर गयी थी अतः वह एक कुरसी खींचकर पास में ही बैठ गयी और इस आकृति के बारे में भय और जिज्ञासा के साथ सुनने लगी। डॉक्टर ने मोमबत्ती जलायी और उसके धुंधले प्रकाश में इस रहस्यमयी आकृति के बारे में कहानी सुनाने लगा—

"एक अरसा हो गया। जब मैं जवान और दुस्साहसी था। उस समय मैं रंगून में था। वहां मुझे एक प्रकाशक मिला, जो बर्मा की जंगली जातियों पर एक पुस्तक प्रकाशित करना चा था। मैंने लिखने का काम काफी किय इसलिए उसने इस किताब को लिखने के मुझसे कहा और इस काम के लिए उसने एक हजार रुपए की पेशगी भी दी। मुझे किताब के लिए नागा पर्वतों में जंगली-जातियों के बीच जाना पड़ा। मेरी यात्राओं के बड़े लंबे और ढेर सारे दिल किस्से हैं, जिन्हें अगर मैं सुनाने लगूं तो कई में भी वे खत्म न हों। मैं आपको केवल आकृति के बारे में सुनाऊंगा।

एक बार मैं नागा जाति के रैमजा खामजा नाम के दो नौकरों के साथ कई दिन कठिन पर्वतीय यात्रा के बाद एक गां पहुंचा। पहली बार मैंने नागा लोगों को प देखा। सुंदर और स्वस्थ नागा पुरुष, और रूपसी नागा लड़कियां व औरतें जो अर्धनग्न रहती थीं। प्राकृतिक वातावरण में अपनी प्राकृतिक वेशभूषा में आकर्षक ल थीं। गांववालों से मेल-जोल करने के लिए अपने थैले में से मुट्ठीभर कांच के मोती नि और लड़कियों में बांट दिये। लड़कियों के पर मुसकराहट फैल गयी और मैंने उनके सारे फोटो खींचे। वे लोग हमारा स्वागत चाहते थे, लेकिन परेशान थे क्योंकि, वे जानते थे कि हमारा वह किस तरह से करें। तभी दो नागाओं ने आकर मुझसे पीछे-पीछे आने के लिए कहा। मेरे नागा ने बताया कि ये सरदार के आदमी हैं और सरदार से मिलने ले जा रहे हैं। सरदार एक बूढ़ा लेकिन हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति उसके चेहरे पर झुर्रियां फैली हुई थीं। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने शांत खड़ा था। मेरे कंधे पर बंदूक सधी हुई थी। मेरे दोनों नौकर उससे बातें कर रहे थे। सरदार के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। मैंने सरदार को कांच के शीशे आदि कुछ छोटे-मोटे उपहार दिये और बैठ गया। मेरे नौकरों ने बताया कि सरदार मुझसे बहुत खुश है। उसने मेरा उपहार स्वीकार कर लिया है। वह एक दोस्त की तरह मेरा सत्कार करना चाहता है। मैं जब तक चाहूं यहां रह सकता हूं। मैंने सरदार को धन्यवाद दिया।

"मुख्य कहानी यह है कि मेरा रात का खाना सरदार के साथ था। सरदार कुरसी पर बैठा था। उसके पास की दीवार पर ही लड़की की वह काष्ठ आकृति रखी हुई थी। खाना रात को देर से शुरू हुआ। मैं इस आकृति की ओर आकर्षित हुआ। मैं इसे हाथ में लेकर देखना चाहता था। जैसे ही मैंने इस आकृति को उठाना चाहा कि सरदार की चीख ने मुझे घबड़ा दिया। मेरे नौकर ने मुझे सरदार की बात समझायी कि मैं इसे न छुऊं क्योंकि, यह एक शक्तिशाली आत्मा है और इसे सरदार के अलावा और कोई नहीं छू सकता। अगर कोई इसे छूता भी है, तो उसे इसका शाप लग जाता है।

मैंने अपने नौकर से कहा कि यह सरदार का अंधविश्वास है। यह बेजान चीज हमारा क्या नुकसान पहुंचा सकती है। मेरा नौकर मेरी बात से सहमत था फिर भी उसने कहा कि सरदार को नाराज करना ठीक नहीं है। मैं समय का ख्याल करते हुए अपनी कुरसी पर बैठ गया, लेकिन यह आकृति मुझे लगातार ललचाती रही और मैं उसे किसी न किसी तरह हथियाने के

बारे में सोचता रहा।

"मुझे दूसरी सुबह यह गांव छोड़ देना था। रात को सरदार के यहां सोने के बाद हम सुबह ही वहां से रवाना हो गये। रास्ते में मैंने अपने नौकर से उस आकृति के बारे में बात की, तो उसने उस आकृति को अपने कपड़ों के नीचे से निकालकर मुझे देते हुए कहा कि मैं इस आकृति को सरदार के सो जाने के बाद छिपाकर ले आया हूं।

"मैं इस आकृति को पाकर बहुत खुश हुआ। उसने मुझे बताया कि इस आकृति में ऐसा तो कुछ भी नहीं दिखायी देता जैसा कि सरदार कह रहा था।

"हम पहाड़ी रास्ते की ऊबड़-खाबड़ घाटियों और दर्रों से गुजर रहे थे कि तभी इस आकृति का शाप प्रकट हुआ। हम एक सकरे रास्ते पर थे कि अचानक मेरे उस नौकर का पैर फिसल गया, जो इस आकृति को चुराकर लाया था। वह अपने आपको संभाल नहीं सका और गहरे खड्ड में जा गिरा और मर गया। गिरते समय उसके हाथ हवा में फैल से गये और उसके मुंह से एक बहुत ही भयानक चीख निकली, जिससे

मार्च, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दिल अज्ञात भय से कांप गये।

"हम अपने इस एक अच्छे साथी नौकर को खोकर दुखी मन नीचे की ओर लौट पड़े और कई दिन लगातार चलने के बाद मैदानी रास्ते पर आ पाये। इस आकृति का शाप फिर दोबारा प्रकट हुआ। न जाने कहां से आकर एक वनमानुष ने दूसरे नौकर को दबोच लिया। मैंने फौरन बंदूक साधकर गोलियां चलायीं, लेकिन मुझसे केवल गलती ही नहीं, बल्कि भयानक गलती हुई। मेरा निशाना आज तक कभी नहीं चूका था, लेकिन इस बार ऐसा चूका कि कुछ मत पूछिए। गोली वनमानुष के लगने के बजाय नौकर के पेट में लगी और वह वनमानुष की वजह से नहीं बल्कि, मेरी वजह से ही मरा। मैं असहाय अकेला स्वयं को अपराधी महसूस करता हुआ लौट पड़ा। अब मुझे कोई शक नहीं रह गया था कि यह दोनों मौतें इस आकृति के शाप के कारण ही हुई हैं।"

कहानी कहते-कहते डॉक्टर अपना गिलास पूरा खाली कर चुका था।

मैंने कहा, "बड़ा विचित्र अनुभव है यह ! लेकिन इस आकृति से आपको तो कोई नुकसान नहीं हुआ जबकि यह आपके पास है।

"लेकिन, अभी कहानी खत्म कहां हुई है मित्र," डॉक्टर ने कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहा, "इन दोनों मौतों के तीन महीने बीते होंगे कि एक दिन मैं बंदूक साफ कर रहा था। भूल से उसमें एक गोली रह गयी थी, जिससे मेरा सिर उड़ गया, लेकिन यह तो मेरा सौभाग्य था कि मैं बच गया पर मेरी दाहिनी आंख निकलकर बाहर जा गिरी। यह मेरी दाहिनी आंख पत्थर की है," कहकर उसने अपनी आंख बाहर निकालने की कोशिश की।

"नहीं, नहीं, इसे मत निकालिए", [illegible] हुई मेरी पत्नी भय से चीख पड़ी। पत्नी ने [illegible] कहा कि उसे डर लग रहा है क्योंकि, [illegible] उसने इस आकृति को छू लिया है, जिसका [illegible] अब उसे झेलना ही पड़ेगा।

इसके बाद हमारे मन की शांति [illegible] गयी। हमारी सारी खुशियां हमसे छिन [illegible] छुट्टी मनाने का सारा मजा किरकिरा हो [illegible] हम दोनों भय और आशंका के वातावरण [illegible] डूबने और तैरने लगे। दो दिन बाद ही [illegible] शहर लौटने की तैयारी कर ली। [illegible] मंगवाकर हमने अपना सामान उस पर [illegible] दिया और घनश्याम और उसकी पत्नी [illegible] लेकर गाड़ी में बैठने ही जा रहे थे कि [illegible] डॉक्टर आ पहुंचा। हमें वापस जाने के [illegible] तैयार देख, वह बोला, "अरे, तुम तो पंद्रह [illegible] रुकने वाले थे फिर इतनी जल्दी कैसे [illegible] दिये ?"

"हैं, ये कहानी से डर गये हैं ?" [illegible] कहता हुआ एक जोरदार ठहाका लगाकर [illegible] हंस पड़ा। "अरे, वह तो शाम काटने का [illegible] बहाना था। वह कहानी तो झूठी और [illegible] की गढ़ी हुई थी। ये देखो, मेरी दोनों [illegible] ठीक-ठाक हैं। मैं कभी नागा-पर्वतों [illegible] नहीं गया और न मैं उन दोनों नागा नौकरों [illegible] जानता हूं। तुम इस मनगढ़ंत कहानी को [illegible] मान बैठे।" कहकर उसने एक बार [illegible] जोरदार ठहाका लगाया।

और हम दोनों आंखें फाड़े उसे देखते [illegible] गये।

—ए-१/२४२ ए, लारेंस [illegible]
नयी दिल्ली-११[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

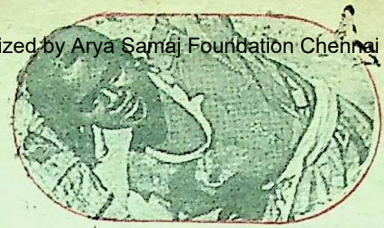

स्वाजीलैंड का नरकुल-नृत्य समारोह

कुंवारी युवतियों का उत्सव : राजा के लिए पत्नी की खोज !

● मोती मेहरोत्रा

नरकुल-नृत्य समारोह : स्वाजीलैंड का एक ऐसा पर्व, जिसमें कुंआरी कन्याएं विशेष ढंग के रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर भाग लेती हैं, नृत्य करती हैं और मन में यह आस संजोये रखती हैं कि शायद उनके देश का राजा उन्हें अपने साथ विवाह के लिए चुन ले ! 'रीड डांस' के नाम से प्रसिद्ध इस नृत्य-समारोह में उम्हलांगा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उम्हलांगा एक ऐसा पतला नरकुल है, जो नदी के तट की नमी में उगता है। यह बहुत पतला व लंबा होता है। ऊपरी भाग में निकले हुए रोयेंदार गुच्छे हवा के झोंकों से सीटी की मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं। स्वाजीलैंड में दो विशेष स्थान हैं, जहां ये नरकुल पैदा होते हैं। एक तो सिड्वोकोड्वो के समीप इंबेलेबेलेनी में, जहां बड़ी उसूथू नदी के किनारे नम स्थान हैं और दूसरे छोटी उसूथू नदी के किनारे। यहां इन नरकुलों की बाढ़ है। ये नरकुल विभिन्न कार्यों में प्रयोग में लाये जाते हैं। भलीभांति कटे हुए ये नरकुल वायु वाद्ययंत्र के समान जब स्वाजीलैंड की सुंदर पहाड़ियों से टकराकर मधुर संगीत उत्पन्न करते हैं, तो वहां की राष्ट्रीय परंपराएं और प्रकृति का सौंदर्य उनसे प्रतिध्वनित होता है। ये राजा के पारंपरिक निवास स्थान की चहारदीवारी का भी काम करते हैं। चारों ओर बने घास निर्मित प्रकोष्ठों को आंधियों से बचाते हैं। ग्रीष्म की तपती धूप में इन प्रकोष्ठों में विश्राम करने का आनंद तब द्विगुणित हो जाता है, जब चारों ओर झूमते नरकुल वातावरण में संगीत घोल देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारियों का उत्सव 'रीड डांस'

वर्षा के कारण नरकुल निर्मित चहारदीवारी की जड़ें कमजोर पड़ जाती हैं, अतः प्रतिवर्ष उनके नवीनीकरण की आवश्यकता होती है। यह स्वाजीलैंड की कुमारियों के लिए स्वर्णिम अवसर होता है, कारण तब वे राजनिवास को सुंदर बनाने में अपना योगदान दे सकती हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें बाहर निकलने, दूसरे वातावरण में जाने और विभिन्न स्थानों की युवतियों से मिलने का सुअवसर मिल जाता है। इस प्रकार स्वाजी संस्कृति अन्य संस्कृतियों से भिन्न है। सबसे अधिक रुचिकर बात यह है कि राजा इस उत्सव में एक या दो कुमारियों को अपनी पत्नी बनाने के लिए चुनता है। चुनने के बाद कन्या को अलग भवन में रखा जाता है। अलग रखने के अनेक गोपनीय कारण हैं लेकिन मुख्य तो यह है कि वह ठीक प्रकार से बढ़कर उस परिपक्वता को प्राप्त करे, जिससे संतानोत्पत्ति के योग्य हो सके। 'रीड डांस' उत्सव मनाये जाने का मुख्य कारण यही है।

यह उत्सव अनेक वर्षों से विदेशी यात्रियों के आकर्षण का विषय रहा है। कुमारी कन्याएं अपनी स्वाजी साज-सज्जा में गर्व से नृत्य करती, उच्च स्वरों में गाती राजमहल तक जाती हैं, जैसे वसंत के ताजे भोर में स्वाजी चिड़ियाएं चहचहा रही हैं। उत्सव के कुछ सप्ताह पूर्व ही राजा अपने विशेष प्रतिनिधियों द्वारा कन्याओं को उत्सव के लिए तैयार करवाता है। इसकी सूचना आकाशवाणी तथा समाचार-पत्रों द्वारा पूरे देश में प्रसारित करवा दी जाती है। समाचार मिलते ही उत्सव में भाग लेने के लिए उत्सुक कुमारियां वस्त्रों की व गानों की तैयारी में जुट जाती हैं। स्त्रियां इस उत्सव के लिए [illegible] को तैयार करती हैं। ये लड़कियां पौधों [illegible] छोटी स्कर्ट पहनती हैं, जिनके चमकते [illegible] रंगों में स्वाजी परंपराएं झलकती हैं। [illegible] ओर ऊन की फुंदनेदार झालर-सी लटक[illegible] जो लाल और काले या नीले और पीले [illegible] होती है। कमर के चारों ओर भी [illegible] लड़ियां स्कर्ट के ऊपर लटकती हैं लेकि[illegible] कमर के बलों का सौंदर्य दृष्टिगत होता है [illegible] कंधे से लेकर दाएं कमर तक एक [illegible] दोनों वक्षों के बीच से होकर जाती है [illegible] विभिन्न रंगों के ऊन के फुंदने लटक[illegible] इसके अतिरिक्त ये पक्षियों के पंख तथा [illegible] बनाये आभूषणों से अपने को सजाती [illegible] अफरीकी टेंबोराइंस को पैरों में पहनती [illegible] नृत्य करते समय घुंघरू-सी आवाज [illegible] भुजाओं में चमकदार कपड़े बांधती है [illegible] एक हाथ में गाय की त्वचा से बनी छोटी [illegible] होती है और दूसरे हाथ में एक छोटी [illegible]

युवतियों के लिए विशेष [illegible]

वास्तविक उत्सव आरंभ होने से पूर्व [illegible] तैयारियां की जाती हैं। देश के सभी [illegible] अपने गवर्नर चुन लेते हैं। उन्हें राज[illegible] बुलाकर सभी अधिनियम दे दिये जाते हैं [illegible] उन पर कुमारियों का पूर्ण उत्तरदायित्व [illegible] इस उत्सव की एक विशेषता यह है कि [illegible] पुष्प ही उपवन की शोभा बढ़ाते हैं। इस [illegible] लड़कियां भाग लेती हैं, जिनका कौमार्य [illegible] रहा हो।

युवतियों की आयु के अनुसार [illegible] बनायी जाती हैं। इन युवतियों के लि[illegible] विशेष रीति है, जिसे 'उमकुवाशो' [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाजी साज-सज्जा में गर्व से नृत्य करती, उच्च स्वरों में गीत गाती कुंआरी युवतियों के स्वर ऐसे, जैसे स्वाजी चिड़ियां चहचहा रही हों। प्रत्येक युवती के मन में एक आस होती है, संभव है राजा उसे ही अपनी पत्नी के रूप में चुन ले।

यह दो से तीन वर्ष तक चलती है, जिसमें कुमारियां ऊन के विभिन्न रंगों के बने वस्त्र पहनती हैं। कम आयु वाली नीले और पीले रंग के तथा उनसे अधिक आयु वाली लाल और काले रंग के। इस अवधि में वे अपने युवा मित्रों से नहीं मिल सकतीं। यदि उनके गुप्त रूप से मिलने का पता लग जाए तो लड़के के परिवार वालों को एक गाय जुरमाने के रूप में देनी पड़ती है। इस प्रकार स्वाजी कन्याएं अपने अछूते यौवन के साथ परिपक्वता को प्राप्त होती हैं। उनकी तुलना अनुरागमयी ऊषा या स्वविकसित लिली से की जा सकती है।

उल्लास।

अगस्त के अंत या सितम्बर के प्रारंभ में शुक्ल पक्ष के सोमवार को राजा इस बात की घोषणा करता है कि आनेवाले बुधवार को कन्याएं सिगोड़लो में एकत्र होकर अपनी यात्रा आरंभ करें। यहीं से उत्सव का जोश शुरू हो जाता है। सारे बबान शहर में सीटियों की ध्वनि सी गूंजती है, जैसे जेल से कैदी भागे हों। लुट, जूस, खाने के टिन तथा कंबल (इस सप्ताह में शीत की ठंडी रातें होती हैं) आदि लेकर कुमारियां यात्रा आरंभ कर देती हैं। कंधे पर सामान हलका ही रखती हैं क्योंकि, नदी से लेकर राजमहल तक का रास्ता कई मील लंबा होता है। बुधवार को दोपहर के बाद लड़कियां अपने विशेष वस्त्र व टेनिस-जूतों में एक स्थान पर एकत्र हो जाती हैं। उन्हें सामान के साथ एक बस द्वारा लोमाम्बा पहुंचा दिया जाता है, जहां उनके कैंप लगते हैं। नाचती-गाती लड़कियों को वृद्ध महिलाएं विदाई देती हैं। उनकी बस पहले मंग्वनेनी राज निवास पर रुकती है, जिसके चारों ओर वे नृत्य करती और गाती हैं। उसके बाद वे लोमाम्बा पहुंचती हैं। चांदनी बिखेरती रजनी और हीरों से चमकते सितारों वाला आकाश उनके उत्साह व आनंद को द्विगुणित कर देता है।

लोमाम्बा के नेशनल स्कूल में उनका सामान उतार दिया जाता है। यह स्कूल पुलिस द्वारा चारों ओर से सुरक्षित होता है। हर एक युवती के हृदय में अपने स्वाजी होने का गर्व होता है। गुरुवार को प्रातः उठकर सभी मंजाना के गरम तालाब में स्नान करके लंबी यात्रा के लिए तैयार हो जाती हैं। यहां वे दो भागों में बंट जाती हैं। बड़ी लड़कियों का समूह सिड्वोकोड्वो के समीप इंबेलेबेलेनी की ओर जाता है और छोटी कुमारियों का झुंड लुयेंगों के पास भाम्सेखी की ओर जाता है। पहले राजकुमारियां चलती हैं। फिर ये झुंड छोटे-छोटे भागों में बंट जाते हैं। हर झुंड का रक्षक एक गवर्नर होता है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियों की गिनती कर लेता है। उनका पूरा उत्तरदायित्व उस पर होता है। अपने देश के लिए कुछ कर सकने का गर्व लिये लड़कियां गाती हुई आगे बढ़ती जाती हैं। उनकी सीटियों की ध्वनि पहाड़ियों से प्रतिध्वनित होकर विद्युत तरंगें उत्पन्न करती है। दूर पहाड़ियों पर चलती लड़कियां रंग-बिरंगी चींटियों — जैसी प्रतीत होती हैं। नदी के किनारे लहलहाते नरकुल जीवन का संदेश देते हैं। वहां पहुंचकर वे नरकुलों को बड़े चाकू से काटकर घास की रस्सी बनाकर उनके उतने बड़े बंडल बना लेती हैं, जितने वे आसानी से उठा सकें। उसके बाद वे लोमाम्बा की ओर लौट पड़ती हैं। रास्ते में वे महालान्या में अपने गट्ठर उतारकर सूर्य डूबने की प्रतीक्षा करती हैं। ऐसा रिवाज है कि नरकुल सूर्य डूबने के बाद ही राजमहल में पहुंचने चाहिए। वहां से राजमहल तक की यात्रा थका देनेवाली होती है पर वहां पहुंचकर युवतियां अपने नरकुलों को सुरक्षित स्थान में रखकर पुनः गरम पानी के तालाब में स्नान करके एक नयी ताजगी पाती हैं। रोम-रोम में नवजीवन का संचार होने लगता है। उसके बाद नृत्य व गायन नयी स्फूर्ति और नया उल्लास भर देता है। शुक्रवार को वे विश्राम करती हैं और आनेवाले दिन की प्रतीक्षा।

चलते हुए नरकुलों का जंगल

शनिवार को यह उत्सव देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। पुलिस उसे नियंत्रण [illegible] का प्रयास करती है। कारों के [illegible] आवाजें, आकाश तक उड़ते धूल के [illegible] कैमरों के फ़्लैशों की चमक और उसमें [illegible] की सीटियों की ध्वनियां, सब मिलकर [illegible] अनोखा वातावरण उत्पन्न कर देते हैं। [illegible] युवतियां हाथ में नरकुल लिये जब [illegible] की ओर चलती हैं तो लगता है, [illegible] का जंगल ही चल रहा हो। उन नरकुलों [illegible] राजमहल को सजाकर अपना स्वा[illegible] करती हैं। उसके बाद रविवार का दि[illegible] जीवन की रंगीनियों से भर जाता है। [illegible] चिड़ियों की चहक सीटियों के रूप में [illegible] देने लगती है। युवतियों के बदन का [illegible] उनकी कोमलता, बल खाता शरीर, [illegible] फूट पड़नेवाला उल्लास, मुख पर लाल[illegible] और पुरुषों का उछल-उछलकर [illegible] करना जैसे स्वाजीलैंड के कण-कण को [illegible] बना देता है।

रविवार को नृत्य के बाद एक बड़े [illegible] प्रबंध होता है। हर गवर्नर को कुछ [illegible] जाती हैं। वह उन्हें काटता है। उन्हें [illegible] मांस को साफ करने, भूनने तथा पक[illegible] के कार्य में उसके समुदाय की [illegible] सहायता करती हैं। वह उस मांस को [illegible] में वितरित कर देता है। कुमारियां चार[illegible] नाच व गाने के साथ उसे खाती जाती [illegible] उन्हें बहुत आनंद आता है। सोमवार [illegible] अपना सामान बांधकर वापस घरों को [illegible] जाती हैं, जैसे युद्ध में विजय प्राप्त [illegible] लौटे हों।

द्वारा [illegible]
जबान, [illegible]
पोस्ट बाक्स २६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल-नृत्य में भाग लेती स्वाजी-बालाएं

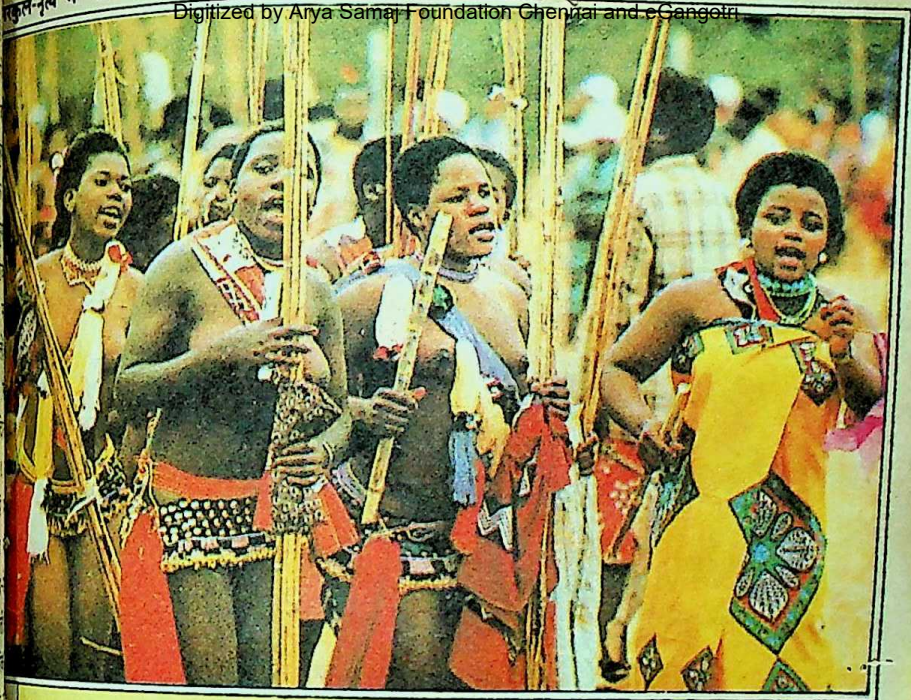

नृत्य में भाग लेते हुए स्वाजी योद्धा

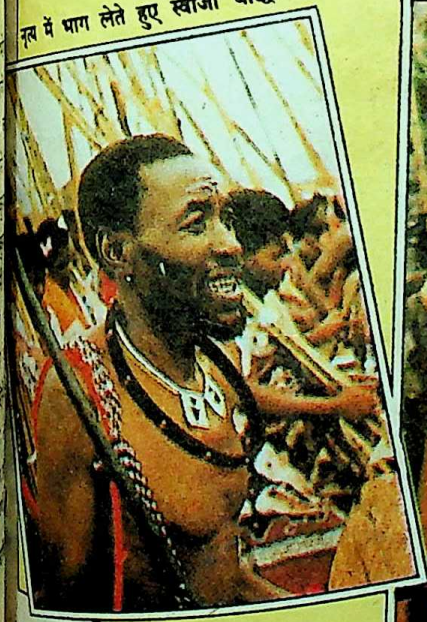

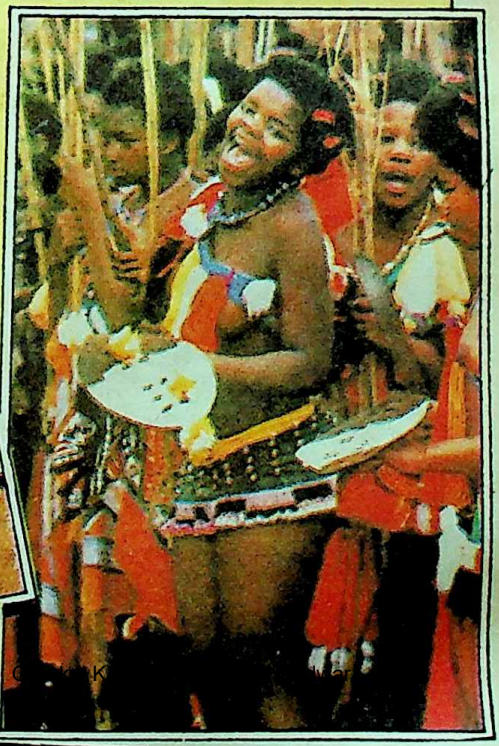

गीत गाती किशोरियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

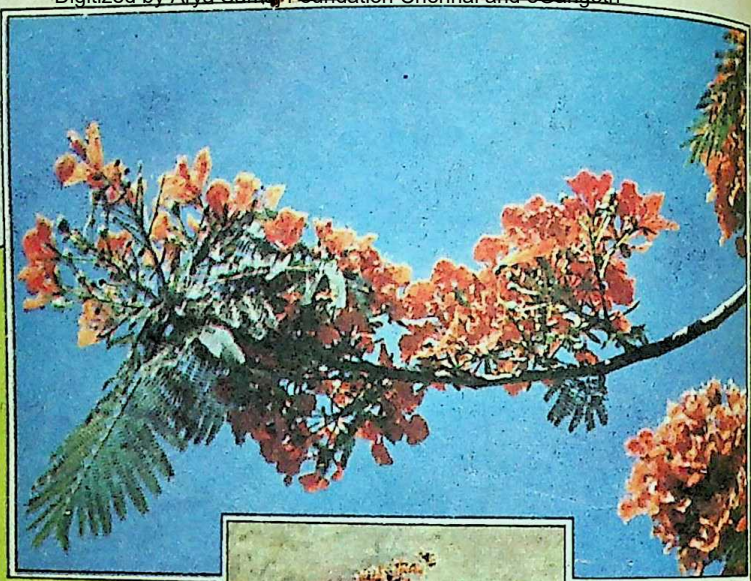

सदाबहार गुलमोहर

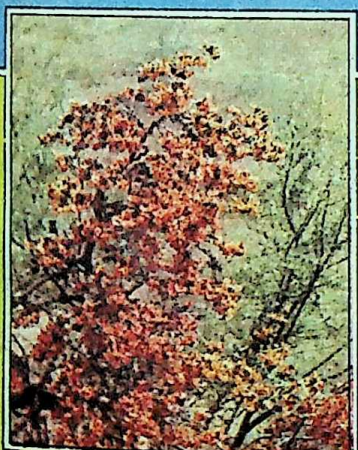

छाया : सुभाष भार्गव

पलाश : पतझड़ में भी आकर्षण

तपती सड़क, उड़ती रेत, उजड़े एवं वीरान दृश्य और चिलचिलाती धूप में चुंधियाती आंखें। ऐसे में यात्रा करने की कल्पना मात्र ही कितनी कष्टदायी होती है। इस व्यथा को राजस्थान का मरु निवासी आसानी से व्यक्त कर सकता है। ऐसी ही किसी कष्टदायक यात्रा के अनुभव के पश्चात सम्राट अशोक महान ने सड़कों, मार्गों के किनारे छायादार वृक्ष लगाने का निर्णय लिया होगा। अशोक महान के बाद शेरशाह सूरी, मुगल बादशाहों ने भी मार्गों के किनारे वृक्षारोपण के कार्य को महत्त्व दिया जो आज भी ग्रैंड ट्रंक रोड पर देखा जा सकता है। रेल एवं सड़क मार्गों के तहत छायादार वृक्ष रोपित करने से यात्रा के दौरान शीतलता और हरियाली का सुखद अहसास होता है।

सड़क के किनारे वृक्षावली यात्रियों को मनभावन, शांति एवं सुखद अनुभव देती है वहीं भू-क्षरण को रोकने के साथ-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं वृक्ष मंगलकारी

● रामस्वरूप जोशी

जल-प्रवाह को नियंत्रित करके, सड़कों के कटाव को रोककर प्रतिवर्ष होनेवाली आर्थिक हानि से भी बचाती है। इसीलिए आज राष्ट्रीय सामाजिक वानिकी योजना, वनीकरण कार्यक्रम तथा बंजर पड़ती भूमि कार्यक्रम के तहत रेल एवं सड़क मार्गों पर वृक्षारोपण का कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है।

सड़क-निर्माण, उन्हें चौड़ा करने एवं मजबूत करने का कार्य सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा योजनाबद्ध तरीके से किया जा रहा है, परंतु सड़कों के किनारे वृक्षारोपण की कोई निश्चित योजना नहीं है। प्रायः ऐसे वृक्ष लगा दिये जाते हैं, जिनका लाभ कम होता है। सड़कों के किनारे यूकिलिप्टस, बोगन बेलिया, बबूल तथा नीम के साथ विभिन्न प्रकार के वृक्ष लगा दिये गये हैं, जबकि सड़कों के किनारे वृक्ष लगाते समय छायादार, शीघ्र पनपनेवाले, बंधे हुए शिखरवाले, जिनकी डालें असीमित तरीके से नहीं फैलें, ऐसे वृक्षों के रोपण पर ध्यान रखना आवश्यक है।

मार्गों के किनारे लगाये जानेवाले वृक्ष छायादार हों, शीघ्र पनपनेवाले हों, जिनका आर्थिक मूल्य हो। एक स्थान से लंबी दूरी पर एक ही प्रकार के वृक्ष लगाना लाभदायक है, जिससे उनके आधार पर गृह उद्योग पनप सके तथा वे मनभावन भी लगें। मिश्रण प्रजातियों का रोपण लाभदायक एवं मनभावन नहीं होता। वृक्षों के किनारे गुलमोहर, अशोक, अमलतास, कचनार, सैंजना, जकरांडा, ढाक, केशिया-सामिया, बकायन आदि प्रजातियां रोपित करने पर यात्रा मनभावन, शीतल एवं सुखद अनुभूति की होगी।

सदाबहार : गुलमोहर

गुलमोहर छायादार एवं अलंकारित तथा सदा हरा रहनेवाला वृक्ष है। इसकी डालें खुली हुई होती हैं और पत्तियां समूह में आती हैं, जिसमें बीस-तीस छोटी-छोटी पत्तियां होती हैं। ये पक्षियों के पंखों की भांति दिखायी देती हैं। इनमें नारंगी तथा गहरी लाली लिये फूल गुच्छों में सिरे से आपस में जुड़े हुए आते हैं, ये बड़े मनभावन, लुभावने व आकर्षक होते हैं।

मानो लालिमा व हरीतिमा का तंबू तान दिया गया हो। इसमें अप्रैल से जुलाई तक फूल

फूलों से ढंका केशिया सामिया का वृक्ष बसंती साड़ी में लिपटी नवयौवना का आभास देता है तो सैंजना के फूलों की शहद-जैसी सुगंध लोगों का मन मोह लेती है। अशोक, अमलतास, कचनार, ढाक आदि ऐसे वृक्ष हैं, जिन्होंने साहित्य में भी स्थान पाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

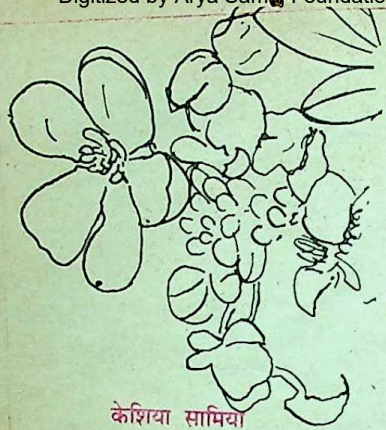

केशिया सामिया

आते हैं। यह शीघ्र बढ़नेवाला वृक्ष है। बीज बौने के चार-पांच वर्ष के पश्चात ही इसमें फूल आने प्रारंभ हो जाते हैं। यह राजस्थान की गरम जलवायु के लिए उपयुक्त वृक्ष है। यह बीजारोपण एवं कटिंग दोनों ही प्रणालियों से तैयार होता है। बीज लगाने के लिए इसके बीज को गरम पानी में उबाल कर लगाना होता है। इसकी एक ओर प्रजाति होती है, जिसमें सफेदी लिये पीले तथा क्रीम रंग के फूल फरवरी से मार्च तक आते हैं।

बसंती बयार में फूलता केशिया सामिया

यह मरुस्थलीय जलवायु के अनुकूल खुले शिखरवाला ऊपर जानेवाला मध्यम आकार का छायादार एवं सुंदर फूलोंवाला वृक्ष है। केशिया सामिया को सड़कों के किनारे, उद्यानों एवं बंगलों के बाहर बसंती बयार में फूलते हुए देखा जा सकता है। यह बारह महीने हरा रहनेवाला वृक्ष अल्प अवधि पर्णपाती है। इसकी पत्तियां दो तीन से.मी. चौड़ी, पांच से.मी. लंबी, छोटी-छोटी टहनियों पर दोनों ओर लगभग बीस-पचीस की संख्या में लगी रहती हैं।

यह बीज से शीघ्र तैयार होनेवाला वृक्ष है। इसका पौधा, पौधशाला से लगाने पर चौथे में सामान्यतः फूल देने लगता है। वृक्ष में पर समूह में सुंदर पीले फूल वर्षाकाल जनवरी-फरवरी तक आते हैं। फूलों से वृक्ष मनभावन बसंती साड़ी में नवयौवना का आभास देता है।

कवियों को प्रिय ढाक

'ढाक के तीन पात', मुहावरा बहुत प्रचलित है। इसके सुंदर फूलों ने कवियों की रचना बहुत स्थान पाया है। ढाक एक छोटा मध्यम आकारवाला झुरमुट वृक्ष है, पथरीली, पहाड़ी, मैदानी एवं कम उपजाऊ पर उगता है। इसके पत्ते गोल, बड़े व तीन की संख्या में लंबे डंठल से जुड़े रहते हैं। और भूरे रंग के होते हैं और तेज गरमी अप्रैल से जून की अवधि में भी हरे-भरे हैं।

इसमें अप्रैल-मई में लाल काले ब्राउन, पीलापन लिये हुए चमकीले विभिन्न से युक्त फूल आते हैं। इसके फूलों का उपयोग ग्रामीण होली के अवसर पर रंग खेलने के लिए करते हैं। इसकी पत्तियां पत्तल बनाने में आती हैं। इसकी लकड़ी अच्छा ईंधन है। एवं छाल के रेशों से रस्सी बनायी जाती है।

छायादार वृक्ष : जकरांडा

खुले छत्रवाला मध्यम आकार छोटी-छोटी पत्तियों का छायादार सुंदर वृक्ष — जकरांडा। यह बीज तथा कटिंग प्रकार से शीघ्र पनपनेवाला वृक्ष है। मई तक वृक्ष नीले छोटे-छोटे सुंदर फूलों ढका रहता है, जो बड़ा सुंदर मनोरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखायी देता है। इसकी लकड़ी कठोर, भारी एवं अच्छे आकार की होती है और कृषि औजार बनाने के काम आती है।

आकर्षक गधा प्लाश

यह लघु आकार का शीघ्र पनपनेवाला, सघन शाखाओं का सुंदर फूलोंवाला वृक्ष है। गधा प्लाश वृक्ष को पार्क, उद्यान एवं सड़कों के किनारे इसके सुंदर फूलों के आकर्षण के लिए लगाया जाता है। यह बीज एवं कटिंग दोनों से लगाया जाता है। जो एक वर्ष में छह फुट तक पनप जाता है। इसकी लकड़ी छीलने एवं लकड़ी पर खुदाई करके आकर्षक वस्तुएं बनाने के लिए उपयुक्त है।

इसके गुलाबी, पांच बड़े दलवाले, सुंदर पीले फूल बहुत ही मनभावन व आकर्षक होते हैं, जो समूह में शाखाओं पर फरवरी से अप्रैल तक खिले हुए रहते हैं। जब तक वृक्ष की पत्तियों में पतझड़ नहीं आता है, यह अपना आकर्षण बनाये रखते हैं।

मंगलकारी अशोक

यह एक धार्मिक मान्यता प्राप्त वृक्ष है। धार्मिक अनुष्ठान के समय इसके पत्तों को दरवाजों पर बांधा जाता है। अशोक सदा हरा रहनेवाला, आकर्षक एवं सुडौल वृक्ष है। इसकी शाखाएं चहुं ओर सघन पत्तियों से फैलनेवाली होती हैं। इसकी पत्ती गहरी हरी चमकदार एवं धारवाली लगभग नौ इंच लंबी होती है। कोमल एवं नरम नव विकसित पत्तियां ललाई लिये होती हैं, जो पांच-सात के जोड़े में छोटी-छोटी टहनियों से जुड़ी रहती हैं।

अशोक में फूल देनेवाली प्रजाति भी है, जिसमें बड़े नारंगी एवं लाल रंग के फूल समूह

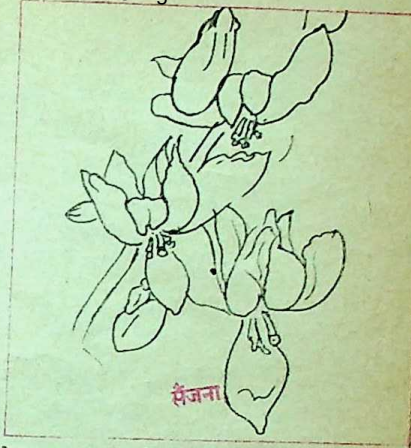

में फरवरी मार्च में आते हैं। यह धीरे बढ़नेवाला वृक्ष है।

श्रृंगारिक वृक्ष : कचनार

यह सुंदर, मध्यम आकार का सदाबहार वृक्ष है। इसकी शाखाएं सघन होती हैं। इसका शिखर गोल छत्रवाला होता है। इस वृक्ष का महाकवि कालिदास ने संस्कृत में बहुत वर्णन किया है। इसकी पत्तियों में दो दल होते हैं, जो नीचे से जुड़े होते हैं। पत्तियां अंडाकार गोल, तीन-चार इंच की होती हैं। यह मुख्यतः श्रृंगारिक वृक्ष है।

इसमें पांच दलवाले सुंदर गुलाबी फूल नवम्बर से फरवरी तक खिलते हैं। बाद में इसके फल के रूप में लगभग एक फुट लंबी, एक, डेढ़ इंच चौड़ी पत्तियां आती हैं, जिसमें एक बीजी कक्ष होते हैं। इसकी छाल रंगने तथा रेशा और लकड़ी गाड़ी एवं कृषि औजार बनाने के काम आती है। इसके बीज आसानी से बोये जाकर इन्हें अन्यत्र रोपित किया जा सकता है।

उपयोगी अमलतास

अमलतास खुले छत्रवाला मध्यम आकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यूलिप सदस्य बनिये

और अन्तर महसूस करिये

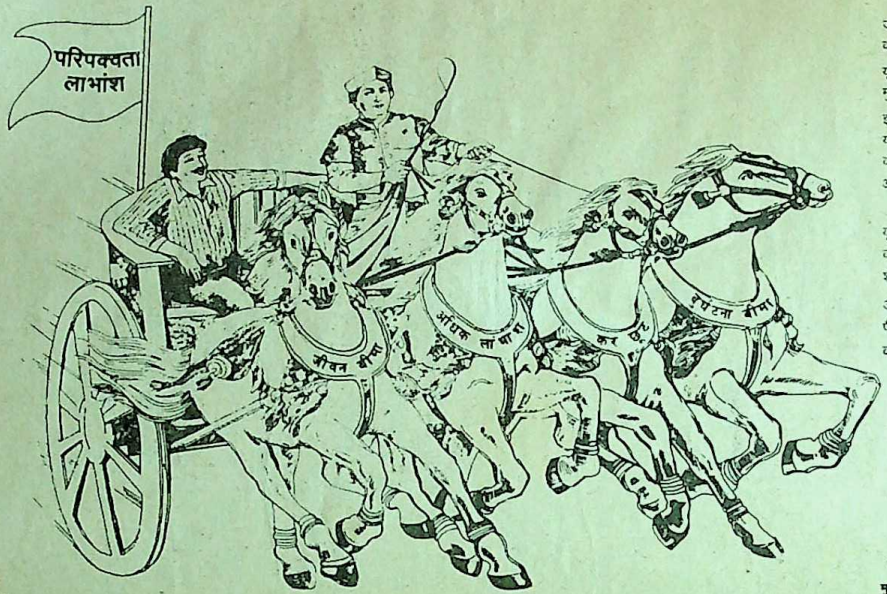

जब आप यूलिप सदस्यता ग्रहण करते है तो आप निर्विघ्न व सुरक्षित जीवन यात्रा की ओर अग्रसर होते है।

यूलिप ही केवल ऐसी योजना है जो आपको जीवन बीमा के सग-सग अधिक लाभ, मुफ्त दुर्घटना बीमा एव कर छूट देती है।

इसके अतिरिक्त, आपके द्वारा रु. 4,000 प्रति वर्ष का अंशदान 10 वर्षीय योजना के अंतर्गत लगभग रु. 75,000* हो जाता है तथा रु. 2,600 प्रति वर्ष का अंशदान 15 वर्षीय योजना के अंतर्गत रु. 1,00,000* से ऊपर हो जाता है आपको हर अंशदान पर 80 सी के अन्तर्गत कर छूट प्राप्त है।

यूलिप सदस्यता ग्रहण करना बहुत आसान है वह भी बिना किसी डाक्टरी परीक्षा के। आपको केवल पूरा आवेदन पत्र भर कर पंजाब नैशनल बैंक की किसी भी शाखा अथवा यू.टी.आई. के किसी भी कार्यालय मे जमा कराना होगा।

आवेदन पत्र के लिए किसी भी पंजाब नैशनल बैंक की शाखा, चुनिंदा हिन्दुस्तान पैट्रोलियम पम्प, यू.टी.आई. के ऐजेन्ट, मुख्य प्रतिनिधि अथवा यू.टी.आई. कार्यालय से सम्पर्क करें।

कृपया मुझे यूलिप की पुस्तिका मुफ्त भेजे

नाम _____

पता _____

_____

UNIT TRUST OF INDIA

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की निवेश संस्था)

मुख्य कार्यालय : 13, न्यू मैरिन्स लाइन्स, बम्बई- 400 20 फोन : 286-3767

क्षेत्रीय कार्यालय : गुलाब भवन, 6, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 331-9786, 331-8638.

शाखा कार्यालय : (उत्तरी क्षेत्र)

लुधियाना : रोशन पैलेस, 455, टी माल, लुधियाना 141 001 फोन : 38373

कानपुर : वीरेन्द्रस्मृति, 15/54 ए, सिविल कोर्टस रोड, सिविल लाइन्स, कानपुर 280 001 फोन 211858

जयपुर : सेल कुटीर, डी. 43, ए, सुभाष मार्ग, सी स्कीम, जयपुर 302001 फोन 68312

• आकर्षक लाभांश • विश्वसनीय • सुरक्षित • बचत

* (न्यूनतम अंशदान सहित)

BDK-2052

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पर्णपाती वृक्ष है। यह एक अति सुंदर फूलोंवाली भारतीय वृक्ष प्रजाति है। जनवरी से मार्च तक वृक्ष सुनहरे पीले फूलों के गुच्छों से लदा रहता है, जो बड़ा सुंदर, आकर्षक व मनभावन लगता है। अमलतास की फलियां तीस-चालीस से.मी. लंबी, गहरी बादामी या काले रंग की होती हैं। पक्की फलियों में अनेक एक बीजी कक्ष होते हैं।

अमलतास की लकड़ी भारी एवं अच्छी ईधंन की होती है। इसकी लकड़ी में कैलोरिक मात्रा अधिक होती है। अमलतास का फल अंगरेजी औषधि में काम आता है। इसकी छाल में दस से बारह प्रतिशत टेनिन होता है, जो चमड़े की रंगाई में काम आता है।

शहद-सी सुंगधवाला सैंजना

यह मध्यम एवं छोटे आकार में तेजी से बढ़नेवाला वृक्ष है। संरक्षण के अभाव में जहां दूसरी प्रजातियों के वृक्ष लगाना आसान न हो, वहां दस से बारह से.मी. मोटे व्यासवाली चार मीटर लंबी टहनियों की कटिंग रोपित की जा सकती है। यह बहुआयामी गुणोंवाला वृक्ष है, जिसके जड़ से बीज तक सभी अंग किसी न किसी रूप में मानवीय उपयोग में आते हैं।

यह एक अल्प अवधि पर्णपाती वृक्ष है। फूल आने से पूर्व दिसम्बर-जनवरी में पत्तियां गिर जाती हैं। पत्तियां सामान्यतः दो-तीन पत्तीवाली लंबी टहनियों के झुगों में होती है। इनकी लम्बाई नौ से पंद्रह तक होती है। इसमें फरवरी से अप्रैल तक सफेद खुशबूदार फूल सोलह से बीस इंच की लंबाई के झौरों पर आते हैं। जो एक सेमी. के डंठल पर एक मि.मि. की पीली सफेद पंखुड़ी लिये होते हैं। पंखुड़ी का रंग नीचे से लाल होता है। फूल में शहद की मधुरतावाली सुगंध होती है।

खुले शिखरवाला बकायन

यह मध्यम आकार का शीघ्र पनपनेवाला सुंदर आकर्षक वृक्ष है। यह सीधा, लंबा जानेवला खुले शिखर का वृक्ष है, जिसके तने पर गहरी भूरी एवं ब्राउन रंग की छाल होती है। यह नीम की भांति दिखायी देता है।

इसकी पत्तियां सुंदर पांच-सात के समूह में जुड़ी हुई होती हैं, जो दिसम्बर-जनवरी में पीली होकर गिर जाती हैं। नयी पत्तियां फूलों के साथ मार्च में आती हैं। इसके सुंदर सुगंधित आकर्षक फूल झुंड में हलके सफेद पीले मिश्रण के मार्च-अप्रैल में आते हैं। छोटे-छोटे पीले रंग के झुंड में फल आते हैं, जो फूलों के आने तक लटके रहते हैं। फल में चार-पांच बीच होते हैं। वृक्ष को लगाने के लिए बीज को सीधा बोया जा सकता है। एक वर्ष में इसका वृक्ष ८ से १० फुट ऊंचा हो जाता है।

— सी-७२-ए, मंगल मार्ग,
बापू नगर, जयपुर-३०२०१५

स्लॉट मशीन यानी ऐसी मशीन, जिसमें सिक्का डालने पर सामान बाहर आ जाता है, कोई नयी इजाद नहीं है, बल्कि इसकी इजाद ईसा से ६४१ वर्ष पहले हो चुकी थी। प्राप्त उल्लेखों के अनुसार एलेक्ज़ेंड्रिया के प्राचीन मंदिरों में ऐसी मशीनें लगी हुई थीं, जिनमें सिक्का डालने पर भक्तगण पवित्र जल प्राप्त कर सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य :

व्यंग्य लेख में फंसा एक लड़की का बाप

● संतोष खरे

मेरी ही गल्ती थी जो मैंने उनसे उनकी लड़की की फोटो देखने को मांग ली। फोटो वापस लेते समय उनके चेहरे पर आशा झलक रही थी। बोले, "बस अब आपके ही ऊपर है। आप चाहेंगे तो यह संबंध हो जाएगा।"

अगले दिन वे फिर आये और आते ही मेरी रचनाओं की प्रशंसा शुरू कर दी। मैंने चौंककर उनकी ओर देखा। जब कोई मेरी रचनाओं की प्रशंसा करता है, मैं उससे सतर्क हो जाता हूं। मेरे कई मित्र मेरी रचनाओं की प्रशंसा करके मुझे बेवकूफ बना गये हैं।

आप इसे कहानी समझ रहे होंगे। वस्तुतः रचना का प्रारंभ कहानी की तरह है। पर दूसरे पैराग्राफ में ही उसने लेख का रूप ले लिया है। वैसे मैंने व्यंग्य लिखने के संबंध में स्वप्न में भी नहीं सोचा था (यदि स्वप्न में सोचा जा सकता हो) शुरू में जैसा कि लगभग हर साहित्यकार करता है, मैं कविता करता था। (लिखित नहीं) पर कविता न मंच पर जमी और न किसी ने छापी। तब मैंने कहानी लिखना शुरू की। पर इसमें भी असफलता हाथ लगी। चूंकि लेखक बनने का निर्णय मैं कर ही चुका था। मैंने व्यंग्य पर हाथ आजमाया। न जाने कैसे मेरा पहला व्यंग्य छप गया और साहित्यिक भाषा में 'मैं अपने आप को पहचान पाया।'

यह विषयांतर मैंने जानबूझ कर किया है। मेरे एक निकटतम साहित्यिक बंधु जो मेरी रचनाओं के काफी अच्छे किस्म के समीक्षक और पारखी है। (उनका नाम मैं इसलिए नहीं दे रहा कि व्यर्थ ही उनका महत्त्व बढ़ेगा) वे मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे 'जीजाजीपन पर उनकी अटूट आस्था थी जिसे तोड़ना असंभव था। उनकी यह भावना मुझे हर्ष प्रदान करती थी। पर अपने 'फादर इन-लॉ' की भावना को मैं नहीं बदल सकता। अपनी भावना भी उन्हें बता चुका हूं। इस त्रिकोणात्मक भावनात्मक संघर्ष की इति किस प्रकार होगी इस बात को लेकर मैं काफी चिंतित हूं। उनकी अतिशय विनम्रता अब मेरे अंदर मानसिक तनाव पैदा करने लगी है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरी शादी न हुई होती तो इस एक लड़की के बाप को कितनी सुविधा हो जाती, पर इस विषय पर अधिक लिखने से मेरे घर की शांति भंग हो सकती है। अतः मैं उनके आने पर केवल मानसिक तनाव झेलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता।

रचनाओं की सपाट बयानी देखकर कहने लगते हैं, "बंधु, व्यंग्य को जितना संभव हो रबड़ की तरह खींचो।" मैं खूब खींचता हूं तो वे फिर नाक भौं सिकोड़ते हैं, "मैंने इतना खींचने को थोड़े ही कहा था कि वह लिंक ही टूट जाए" मैं इस खींचा-तानी की सीमा कभी नहीं समझ पाता।

तो इस विषयांतर से मैं उनकी मान्यताओं पर चोट करना चाहता हूं। दूसरे यह विषयांतर 'आत्म कथ्य' किस्म का है। इधर रचनाओं के साथ आत्म कथ्य, आत्मस्वीकृति या वक्तव्य देने की प्रथा चल पड़ी है। (यदि प्रथा चलती हो) वह रचना के अंदर है या बाहर इससे कोई अंतर नहीं पड़ना चाहिए। (समझदार पाठक भी ऐसा ही सोचेगा) रचनाओं का सबसे बड़ा पारखी पाठक होता है। मैं चापलूसी भी पाठकों की ही करता हूं। संपादक को इसमें बुरा मानने की बात नहीं।

तो मित्रो या मित्राणियो मैं अपने एक अविवाहित साले का जीजा हूं। शुरू में जिन साहब का जिक्र आया है वे एक ऐसी लड़की के पिता हैं जिसे एक दामाद की आवश्यकता है। होनेवाली किसी की पत्नी के वे पिता एक ऐसे सज्जन है जिन्हें अपनी सुपुत्री के लिए वह लड़का काफी पसंद आया जिसका मैं जीजा हूं। वह एक ऐसा नौजवान है जो इन दिनों बेकार है। जाहिर है, पढ़ा-लिखा है। वह इन दिनों मेरे ही घर पर (सॉरी, अपनी बहन के घर पर) रहता है। अखबार पढ़ता है। सिनेमा देखता है। चूंकि उसके रहने पर उसकी बहन काफी खुश रहती है, मुझे भी रहना पड़ता है।

जब सौभाग्यकांक्षणी कन्या के पिता दुबारा आये और मेरी रचनाओं की प्रशंसा करके मुझसे काफी आत्मीय हो गये तो उन्होंने लड़के की नौकरी लगवा देने की आशा बंधायी (यदि आशा बांधी जा सकती हो) और अंत में कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय ही आप अपने और अपने परिवार के लिए ऐसा साप्ताहिक पत्र चाहते हैं जिसमें सभी तरह की रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि जो पत्रिका आप खरीदें, वह आकर्षक हो और रंग-बिरंगे सार्थक चित्रों से सुसज्जित हो।

निश्चय ही आप चाहते हैं कि उस पत्रिका के साथ आपकी साझेदारी बने।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

यही एक ऐसा साप्ताहिक पत्र है जिसमें यह सब कुछ मिल सकता है।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' एक सम्पूर्ण सप्ताह भर के लिए सम्पूर्ण साप्ताहिक पत्र।

हिन्दुस्तान टाइम्स का गौरवशाली प्रकाशन

कुछ आकर्षण देखिए—

युवा पीढ़ी— सार्थक विचारों के लिए।

नए स्वर— एकदम नए कवियों के लिए।

— आपके मन और मस्तिष्क को सन्तुलित रखने के लिए।

भविष्य-दर्पण— आपकी परेशानियों और समस्याओं के समाधान के लिए।

वैद्य की सलाह— आपके उन रोगों और परेशानियों का निदान जो एलोपैथी चिकित्सा से सम्भव नहीं।

दायित्व और अधिकार— जानकारी के लिए कि कानून की दृष्टि में आपके कितने अधिकार हैं।

विज्ञान से संबंधित लेख/स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चाएं/कहानियां/ धारावाहिक उपन्यास/ प्रेरक प्रसंग/ एक कप हजार गप।

राजनीति के ताज़ा से ताज़ा पहलू पर विशिष्ट रचनाएं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पता नहीं क्यों आपसे मुझे इतना स्नेह हो गया है कि मैं आपसे मिलकर बेहद प्रसन्नता का अनुभव करता हूं। चाहे मेरी बेटी का संबंध आपके यहां हो या न हो पर इसी बहाने आपसे परिचय तो हुआ।"

"हैं: हैं:।" ऐसे अवसर पर मैं जो कर सकता था वह मैंने कर दिया।

"तो आप तो लड़के के जीजा हैं, आप यदि चाहें तो यह संबंध होकर रहेगा। फिर हम और अधिक निकट आजाएंगे।" वे पुनः विनम्रता से बोले।

"जी हां वह तो है ही। मैं लड़के के पिता को पत्र लिख दूंगा आप उनसे मिल लें।" मैंने स्पष्ट कर दिया कि अंतिम निर्णय उन पिताजी को करना है जो अपनी लड़की के लिए मुझ-जैसे लड़के (भूतपूर्व) को सैटिल करने में सक्षम हैं।

मैंने उन पिताजी को पत्र लिखा। उत्तर में उन्होंने साफ लिख दिया कि उनके लड़के की नौकरी लग जाने पर ही वे शादी करेंगे। मैंने इस पत्र के बारे में लड़की के पिता को बता दिया पर उस पर विशेष ध्यान न देते हुए उन्होंने मुझे मेरी महत्ता का बोध कराते हुए पुनः यही कहा, "आप लड़के के जीजाजी हैं और चाहेंगे तो, वे जब भी आते हैं मैं तुरंत वह पत्र उनके समक्ष रख देता पर वे विनम्रता पूर्वक", 'आप चाहेंगे तो' कहकर चले जाते हैं और मैं उनकी विनम्रता के बोझ तले दबकर कराहने लगता हूं। फोटो देखनेवाली बात को भी वे दुहराना नहीं भूलते। मैंने तो उनकी लड़की का फोटो देखकर कहा था कि ठीक है। मेरे जीजाजी पर उनकी अटूट आस्था थी जिसे तोड़ना असंभव था। उनकी यह भावना मुझे हर्ष प्रदान करती थी। पर अपने 'फादर इन-लॉ' की भावना को मैं नहीं बदल सकता। अपनी भावना भी उन्हें बता चुका हूं। इस त्रिकोणात्मक भावनात्मक संघर्ष की इति किस प्रकार होगी इस बात को लेकर मैं काफी चिंतित हूं। उनकी अतिशय विनम्रता अब मेरे अंदर मानसिक तनाव पैदा करने लगी है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरी शादी न हुई होती तो इस एक लड़की के बाप को कितनी सुविधा हो जाती, पर इस विषय पर अधिक लिखने से मेरे घर की शांति भंग हो सकती है। अतः मैं उनके आने पर केवल मानसिक तनाव झेलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता। काश! उन्हें मेरी कोई बात बुरी लग जाए और वे आना छोड़ दें। पर अपनी रचनाओं के प्रशसक के साथ कटुता के साथ पेश आना किस लेखक के द्वारा संभव है?

विषयवस्तु के अनुसार मैं लिख नहीं सका। एक अविवाहित लड़की के पिता के दर्द को व्यंग्य लेख में डालना कहां तक तर्क संगत है, पर एक व्यंग्य लेखक होने के नाते मुझे हर बात व्यंग्य में कहना चाहिए अन्यथा मेरी 'इमेज' बिगड़ सकती है। अपनी इमेज के पीछे मैंने न जाने कितनी इमेजें बिगाड़ी हैं। केवल एक लड़की के बाप की पीड़ा के लिए मैं अपना ढंग बदल दूं, ठीक नहीं लगा। मुझे दुःख है कि व्यंग्य लेख के चक्कर में एक लड़की का बाप फंस गया।

धवारी, सतना म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

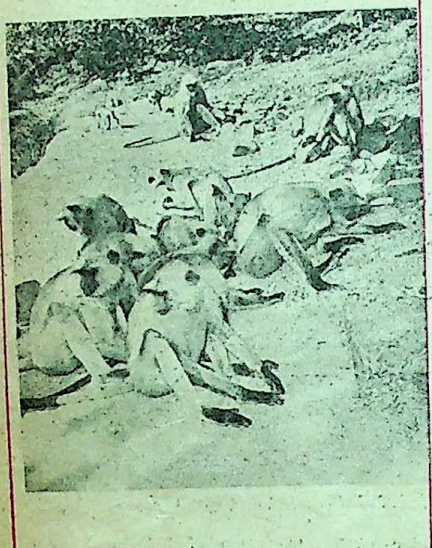

रोजी के लिए बंदर पकड़ना परिवार की परंपरा भी है

लेख व छाया : धीरेंद्र कुमार दीक्षित

मिरज में कवले बंदर के उपद्रवी बंदर एक खपरैल से दूसरी खपरैल पर कूद-फांद करते, इससे कवेलू फूटते, घरों में रहनेवालों को हमेशा परेशानी होती। इन बंदरों का आतंक व उत्पात कैसे रोका जाए, यह एक सवाल था। अंत में इस समस्या को अब्दुल्ला खां मणेर को बंदर पकड़ने की युक्ति ने हल कर दिखाया।

महाराष्ट्र में सांगली के पास मिरज नाम का एक छोटा-सा शहर है। इसी मिरज में वह मणेर परिवार रहता है, जिसे वानर पकड़ने की कला 'हस्तामलकवत्' सिद्ध है। आज से एक सौ दो साल पहले अब्दुल्ला खां मणेर ने यह काम शुरू किया था। वंशानुगत परंपरा से प्राप्त यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मणेर कुटुंब के सदस्यों को मिला है तथा एक शताब्दी के बाद भी बंदर पकड़ने का यह व्यवसाय आज तक चल रहा है।

जिज्ञासावश मैंने इस संबंध में अधिक जानकारी पाने के लिए बुधवारपेठ, मिरज में रहनेवाले 'हैदरखान बंदर पकड़नेवाले' से संपर्क साधा। हैदरखान अब्दुल्ला खां के पुत्र हसन खां के तीसरे नंबर के पुत्र हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि अपने पिता के साथ उन्होंने हजारों बंदर अब तक पकड़े हैं। इस कमाल के आदिजनक अब्दुल्ला खां मणेर दीर्घायु थे। ११० वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हुआ। उन्हें यह वानर वश में करने का रहस्य कैसे प्राप्त हुआ, इसकी भी एक रोचक कहानी है।

फ़कीर से मिला मंत्र

कहा जाता है, अब्दुल्ला खां की गोकाक (जिला बेलगांव) में एक फकीर से संयोगवश मुलाकात हुई थी। उसी ने अब्दुल्ला खां को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हसन खां बंदर पकड़ने की [illegible] है। उनका कहना है, "बंदर पकड़ने के धंधे पर हमारा पेट भर रहा है। यह सब मारुति की ही कृपा है। इसलिए प्रत्येक शनिवार को हनुमानजी के मंदिर में जाकर मैं भक्तिभाव से नारियल चढ़ाकर आता हूं।"

वानर-वशीकरण मंत्र दिया और कहा कि हनुमानजी का नाम लेकर इस मंत्र को पढ़ने से बंदर वशीभूत होकर स्वयं तुम्हारे समीप आ जाएगा।' तभी से अब्दुल्ला खां ने लोगों को बंदरों के त्रास से मुक्ति दिलाने का व्रत ले लिया, और उसे उन्होंने अंत तक निभाया। अब्दुल्ला ने लकड़ी का एक पिंजरा बनाया। उसमें मूंगफली के कुछ दाने डाल दिये और मंत्र पढ़कर लगे बंदर आने की राह देखने। आखिरकार एक बंदर आया और पकड़ा गया। यह समाचार तत्कालीन संस्थानाधिपति स्व. राजे साहेब पटवर्धन को मिला तो वे स्वयं वहां आये। अब्दुल्ला खां के करतब को उन्होंने प्रत्यक्ष देखा और उनकी इस अद्भुत कला पर मुग्ध होकर ५०० रु. इनाम में भी दिये।

शुरुआत एक अनोखे धंधे की

धारवाड़ जिले में मिरज (रियासत) संस्थान की लक्ष्मेश्वर नामक तहसील थी। वहां वानर-उपद्रव की सूचना मिलते ही राजेसाहेब ने अब्दुल्ला को बुला भेजा। खां साहब ने लक्ष्मेश्वर जाकर सारे बंदरों को काबू में कर लिया। यहीं से शुरुआत हुई उनके बंदर पकड़ने के धंधे की। इसके बाद तो गांव-गांव से बंदर पकड़ने का काम मणेर को मिलने लगा। इसी निमित्त जनाब अब्दुल्ला को पूरे देश में घूमने-फिरने का भी अवसर मिला।

पिंजरे के सहारे पकड़े गये बंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उन्होंने अपने लड़कों को भी इस विद्या में प्रवीण कर दिया। चौदह साल की उम्र से बड़ा लड़का हसन खां अपने वालिद की मदद के लिए बंदर पकड़ने जाने लगा। अब्दुल्ला के निधन के बाद पिछले करीब पचास सालों से हसन खां बंदर पकड़ने का काम करते आ रहे हैं। अब उनकी आयु चौसठ वर्ष है। फिर भी वे बड़े उत्साह तथा समर्पित भावना से यह कार्य करते हैं। बंबई, नागपुर, दिल्ली, मद्रास, बंगलौर, अहमदाबाद, बड़ौदा, पटना, जूनागढ़ आदि निगमों में उन्होंने काम किया है।

दिल्ली नगर निगम ने तो उनके दो पुत्रों— उस्मान गनी व दिलावर खां— को बंदर पकड़ने के लिए गत दस वर्षों से काम पर रखा हुआ है। मुझे यह जानकारी देते हुए हसन खां के चेहरे पर आनंद अभिमान की अद्भुत आभा आ गयी।

उन्होंने बताया, 'पिंजरा' लकड़ी की पट्टियों से तैयार किया जाता है। इस पिंजरे में दो खंड होते हैं। पिंजरे के अंदर मूंगफली या मक्के के दाने अथवा बैंगन डाल देते हैं और पिंजरे का दरवाजा खुला रखते हैं। मंत्र पढ़कर पेड़ या घर पर बैठे वानरों को प्रणाम कर बुलाने पर वे पिंजरे में रखे पदार्थ खाने की लालसा में जल्दी-जल्दी में अंदर घुस आते हैं तो अगला दरवाजा बंद हो जाता है और खाने की आशा उन्हें बंदी बना देती है। इस प्रकार एक-एक गांव में एक बार सत्तर-अस्सी बंदर तक मैंने पकड़े हैं।''

बंदरों को ट्रक में ले जाकर पास के जंगल में छोड़कर आने की जिम्मेदारी भी हसन साहब की रहती है।

हसन खां की ख्याति तथा उनकी इस कला की कीर्ति सारे भारत में फैल चुकी तहसील, पंचायत, जिला परिषद, नगरपालिका नगरनिगम, कृषि विभाग आदि से हसन को निमंत्रण मिलते रहते हैं। साल में आठ-नौ महीने (वर्षा ऋतु को छोड़कर) व लाल मुंह वाले बंदरों को पकड़ने का काम भारत के किसी न किसी भाग में करते रहते हैं। गुजरात में बंदर मारना पाप समझा है। हिंदुओं की ही नहीं, मुसलमानों की धारणा है। अमरावती, अकोला, गुजरात मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में बंदरों की ज्यादा है। हसन खां ने उत्तर में पंजाब में कलकत्ता तो दक्षिण में भी भीमावरम भागों में जाकर बंदर पकड़ने के अभियान सफलता बड़े अभिमान से मुझे बताई।

सौराष्ट्र में सुरेंद्रनगर क्षेत्र में एक मंदिर आने-जाने वाले लोगों को परेशान कर था। मोटर का हार्न बजते ही वह आक्रमण करता। हसन साहब ने वह लाकर रख दिया। दो मिनट में ही देखते वह बंदर पिंजरे के अंदर आ गया।

एक और घटना कुछ साल पूर्व बंबई के राजभवन में बंदरों ने उपद्रव था। अंत में राज्यपाल के विशेष कर्मचारी हसन खां को बुलाया गया। हसन वहां जाकर कुल दो घंटों के अंदर मचानेवाले ग्यारह बंदर पकड़कर परेशानी दूर कर दी। उन वानरों में से साहब ने खुद के लिए ला रखा है। है, रानी। यह रानी आज हसन साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

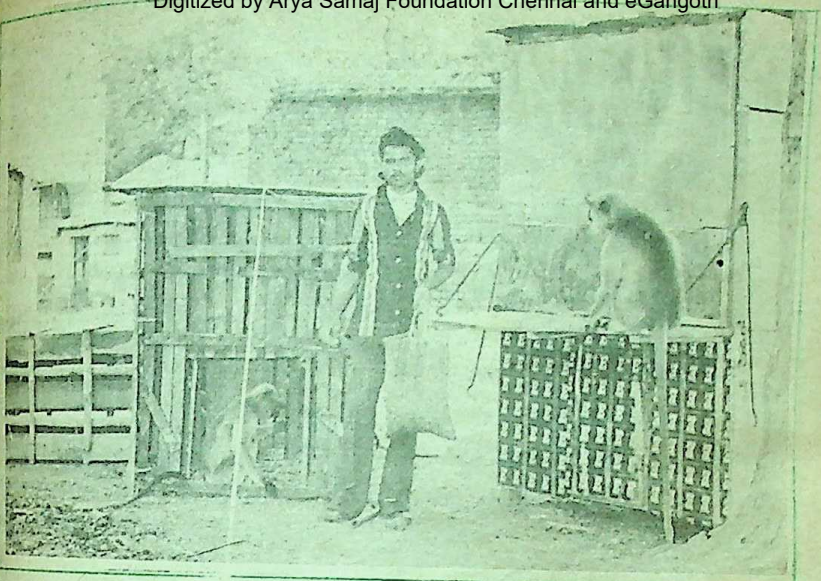

बंदर पकड़ने का पिंजरा

...नी बच्चों की अजीज दोस्त बन गयी है।

अंतर काले व लाल मुंह के बंदरों में

काले व लाल मुख के बंदरों में अंतर समझाते हुए, हसन साहब ने बताया कि प्रायः काले मुंह वाले बंदरों की संख्या अधिक है। ये ...व व खेती को ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। ...होते कायर हैं, पर धींगामस्ती, तोड़फोड़ करने में ...ड़ दक्ष। इन बंदरों की एक टोली में पंद्रह से ...कर एक सौ पचास तक वानर रहते हैं। इनमें ...एक नर को छोड़ सभी मादा वानर होते हैं। ...र ही मुखिया होता है तथा टोली को संरक्षण ...प्रदान करता है। दूसरा नर टोली में आ नहीं ...सकता। अगर आ ही गया तो उसको मारकर ...भगा दिया जाता है। कभी-कभी दो वानर ...टोलियों में मारामारी भी हो जाती है।

"भगवान रामचंद्र की लाल मुंहवाले वानरों की सेना थी। उन बंदरों में आखिर क्या खासियत होती है?" मेरा सवाल था।

"लाल मुखवाले बंदरों की भी छोटी-बड़ी टोलियां होती हैं पर इनमें नर और मादा का मिश्रण रहता है। नर वानरों की स्वतंत्र टोली बनती रहती है। काले मुंह के बंदरों की अपेक्षा लाल मुंह के बंदर अधिक बुद्धिमान होते हैं। चोर व डाकू वृत्ति भी इनमें पायी जाती है। घर में घुसकर चीजें ले जाना इनकी आदत होती है। इन लाल मुंह बंदरों को जैसा सिखाओ, वैसा सीख जाते हैं। अनुकरण करने की इस प्रवृत्ति के कारण इनका उपयोग सर्कसों में किया जाता है। मदारी भी इन्हें लेकर अपना पेट पालते नजर आते हैं काले मुंह के बंदरों को प्रशिक्षण देकर काम करवाने की जानकारी मुझे अभी तक नहीं मिली है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्ष पूर्व मिरज में एक लाल मुंह के बंदर का बच्चा कार के नीचे आकर मर गया था। परंतु उसकी मां (वानरी) बेचैन हो गयी। 'कार ने मेरे लड़के के प्राण ले लिये,' यह सोचकर वह चिढ़ बैठी। फिर तो जो भी कार दिखती, उस पर वह चढ़ जाती और वहां से टस से मस नहीं होती। अंदर बैठे हुए लोग घबरा उठते। अंत में उस बंदरी को हसन साहब ने पकड़ा।

हसन साहब ने बताया, "काले बंदर बाग-बगीचे और फसलों को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। खाते कम हैं। एक घंटे में एक एकड़ फसल का खेत साफ कर देना मामूली-सी बात है इनके लिए। काले मुंह के बंदरों की उम्र का अंदाज लगाना मुश्किल है। इनकी मौत दुर्घटना से या कुत्ते या आदमी के मार डालने से अथवा झाड़ पर से गिर पड़ने से होती है। ये वनस्पति अधिक खाते हैं। बीमारी या बुढ़ापा इनके पास नहीं फटकता। दोनों पैरों [illegible] पर कई वानरों की [illegible] फुट तक पायी जाती है लाल मुंह के [illegible] ३० साल तक जिंदा रहते हैं व [illegible] वृद्धावस्था के भी शिकार होते हैं।

हसन साहब की स्कूली शिक्षा केवल [illegible] कक्षा तक ही है किंतु उन्हें हिंदी [illegible] गुजराती, अंगरेजी, तेलगु व कन्नड़ [illegible] पर्याप्त ज्ञान है। उनके तीन छोटे [illegible] बुलढाना, अमरावती और औरंगाबाद [illegible] पकड़ने का कार्य संभाले हुए हैं। [illegible] होकर जाने से पूर्व उन्होंने मुझे बताया [illegible] पकड़ने के धंधे पर हमारा पेट भर रहा [illegible] सब मारुति की ही कृपा है। इसलिए [illegible] शनिवार को हनुमानजी के मंदिर में [illegible] भक्तिभाव से नारियल चढ़ाकर आता [illegible] व्रत का हमारे घराने में नियमित रूप [illegible] किया जाता रहा है।"

—४७, व्ही. आर. [illegible]
नागपुर-[illegible]

सबसे सुखी

चीन के केंसु का अह क्वाई अपने जीते-जी अपने बच्चों की दस पीढ़ियां देख चुका था। सन १७९० में उसके दसवीं पीढ़ी के पैंतीस बच्चे थे। चीन के बादशाह ने जब अपने साम्राज्य के सबसे सुखी और प्रसन्न व्यक्ति की तलाश करायी, तो अह क्वाई ही सबसे सुखी व्यक्ति पाया गया। उसे और उसके समूचे परिवार को सम्राट के समक्ष उपस्थित किया गया। सम्राट ने उसे सम्मानित भी किया।

श्वान-प्रिय महारानी

इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया को कुत्ते पालने का बहुत शौक था। जब वह राजगद्दी पर बैठी तो उसके पास अठारह कुत्ते थे, जिनमें से वह हरेक को उसके नाम से जानती थी। राजगद्दी पर बैठते ही उसने जो सबसे पहली राजाज्ञा जारी की, वह थी कि उसके सभी अठारह कुत्तों को गरम पानी से अच्छी तरह नहलाया जाए।

—[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम में डूबा कूर्मांचल

कूर्मांचल में आज भी अनेक प्रणय-कथाएं गांव-गांव में बड़े चाव से सुनी और सुनायी जाती हैं। इन कथाओं से एक ओर जहां श्रोताओं का मनोरंजन होता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें अतीत के प्रेम, त्याग और बलिदान से भरे प्रसंगों की जानकारी मिलती है। यहां प्रस्तुत हैं, कूर्मांचल में आज भी प्रचलित कुछ प्रणय-कथाएं।

प्रस्तुति : ● सुधीर शाह

भाना और गंग

डोट प्रदेश के राजकुमार गंग बुद्धिमान, वीर, साहसी और प्रकृति से बहुत प्यार करनेवाले थे। डोट से बावन पहाड़ियां, अड़तीस घाटियां, इक्यासी गधेरे और सैंतीस देवदारु, चीड़, बॉज के घने जंगलों को आधी रात में अपने सूर्यरथी घोड़े से पारकर, प्रत्येक पखवाड़े चार सौ कोस दूर कुड़कौली गांव में वे अपनी प्रेयसी रूपवती भाना से मिलने जाते थे।

भाना उस इलाके की अद्वितीय सुंदरी थी। वह ब्राह्मण कुल में पैदा हुई थी। रूपवती भाना राजकुमार गंग से उत्कृट प्रेम रखती थी एवं हर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष आने के एक दिवस पूर्व, निर्जला व्रत रखकर निश्चित पक्ष को अर्द्धरात्रि में मणिघाट नामक स्थान पर चंद्रमा को देखते हुए, राजकुमार गंग की प्रतीक्षा किया करती थी। इस प्रणय कथा की चर्चा फैलते देर न लगी।

दन्या में स्थित कुड़कौली गांव के शीर्षस्थ ब्राह्मण प्रधान हुंकार भर बैठे। विरोध का स्वर तीखा हो गया। सुंदरी भाना सात गोठों के भीतर, निराहार बंद कर दी गयी।

मार्च, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के व्यंजन से जुठा दी गयी और सोलह शृंगारों से सजा-धजाकर, कौंल हिम के फूल-जैसे शयन स्थान में सुला दी गयी। शुक्ल पक्ष का थाल-सा गोरा चंद्रमा सिर पर चढ़नेवाला था कि प्रेम-वियोग में पागल हुई भाना उठ बैठी और सम्मोहित-सी चल पड़ी अपने प्रियतम से मिलने मणिघाट की ओर।

विरह वियोग से तप्त भाना और गंग शुक्ली चंद्रमा की पछाही में एक-दूसरे से आकंठ आबद्ध हुए। समय बीत चला। चंद्रमा डूबने लगा। पूर्वांचल से लालछांही उभरने लगी। तभी अपने में डूबे, कुड़कौली ग्राम के लोगों के सामूहिक गंडासे-बरछे और कुल्हाड़ियां चलीं। और एक-दूसरे को अपने में समेटे भाना और गंगी, खील-खील होते हुए बिखर गये।

'फूलदेई' वाली फ्यूंली

कूर्मांचल में फाल्गुन मास में खिलनेवाले कपुनई, औबीन और बुरॉश की तरह प्यूरड़ी या फ्यूंली (पीला पुष्प) फूल, कहते हैं, विरहाकुल प्रेमिकाओं की आत्मा को

अपने में संजोये हुए है।

प्यूरड़ी या फ्यूंली के विषय में कहा जाता है कि पूर्व जन्म में वह सीराकोट में रहनेवाली एक युवती थी। भूपू नामक उसका एक प्रेमी था। दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। एक दिन जाति एवं समाज के दुराग्रह के कारण धोखे से भूपू को जानबूझकर पंद्रह पखवाड़े के लिए बावन पहाड़ी दूर कुछ व्यापारियों के साथ पश्चिम प्रदेश भेज दिया गया और फ्यूंली का विवाह दूर गांव के एक थोकदार से जबरन कर दिया गया। पर निरीह फ्यूंली, अपने भूपू को भूल नहीं पायी।

भोला भूपू चैत-आषाढ़ बिताकर जब गांव लौटा तो उसके भोले मन में बहुत ठेस पहुंची। वह पागलों की तरह ठौर-ठौर फ्यूंली को ढूंढ़ने लगा। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते विरह में पागल भूपू एक दिन फ्यूंली के ससुराली गांव में पहुंच ही गया और फ्यूंली के एकमात्र दर्शन के लिए नौले, डॉन-कानों, घट-गाड़, घाट-गंधेरों में भटकने लगा।

भादों की एक सुबह फ्यूंली एक दिन अपनी सहेलियों के साथ गाड़ में पानी भरने गयी। उन्मुक्त यौवन की मादकता से भरी-पूरी फ्यूंली ने घड़ा पानी में डुबाया ही था कि पानी में किसी की छाया पड़ने का उसे आभास हुआ। फ्यूंली ने घूंघट उठाकर ऊपर की ओर देखा तो, उसने पेड़ की शाखा में बैठे हुए अपने प्रेमी भूपू को माला गूंथती पाया। भूपू ने पेड़ से नीचे उतरकर एकांत देखकर फ्यूंली को माला पहना दी और दोनों प्रेमपूर्ण बातचीत करते हुए सिलंग वृक्ष की छाया में बैठे रह गये।

धूप की छाया कसार पहाड की चोटियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जब उतर गयी तब फ्यूंली को घर लौटने की एकाएक याद आयी। पछुवी बयार की तरह दिन कब बह गया, दोनों को पता नहीं चला।

अपनी देली-चौपाल में दिया जलते समय जब फ्यूंली अपने ससुराली द्वार पहुंची तो उसके गले में हजारी के फूल की माला को देखकर, संदेह से सूखे बॉज-से चड़-चड़ जलते हुए उसके पति ने गड़ासे से उसे वहीं पर मार दिया।

फ्यूंली के प्राण उड़कर स्वर्गलोक को चले गये। तभी से कहा जाता है कि वह फ्यूंली का फूल बन गयी। इस फ्यूंली के फूल को सारे पर्वतांचल में बसंत ऋतु के समय खिला हुआ देख सकते हैं। पर्वतांचल में ग्रीष्मारंभ के प्रथम पर्व-त्यौहार 'फुलदेई' के दिन, बालिकाएं फ्यूंली के फूल से ही अपने-अपने देहली-द्वारों की पूजा करती हैं। पर्वतीय लोक जीवन में फ्यूंली के फूल को कोमलता, पवित्रता एवं करुणा का प्रतीक माना जाता है।

योगी प्रेमी : हरू

चंफावत के चंद्रवंशीय राजा बड़े प्रतापी थे। उनके चरित्र-गाथा का जागर 'हरू' आज भी, संपूर्ण कूर्मांचल में विख्यात है।

राजा हरिश्चंद्र बहुत कोमल हृदय के थे। साथ ही बहुत संवेदनशील भी। अपने प्रेम में विरह-वियोग के कारण वे सारा राज-पाट छोड़कर, युवावस्था में ही हरिद्वार जाकर जोगी बन गये।

वैराग्य का कारण था—प्रियतमा काई सौक्यांण के दर्शन का न होना। रूपवती काई, सौक्यांण देश के एक जत्थेदार की इकलौती पुत्री थी।

कार्तिकी रात्रि के एक अंतिम पहर, राजा हरिश्चंद्र ने रूपवान काई सौक्यांण की दीपक-सी ज्योति व पूर्णिमा-सी आभा देखी। उसका मन चंचल हो उठा और पूर्व में उषा की पहली किरण के साथ एकाएक मुरली के उदास स्वर से निश्वास छोड़ता हुआ, काई सौक्यांणी से मिलन की कोई आशा न देखकर वह गंगा के किनारे चल पड़ा।

प्रेम-वियोग में वैराग्य लेने की यह गाथा कूर्मांचल के पाली पछांग क्षेत्रों में 'हरू के जागर' नाम से, आज भी गायी जाती है।

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

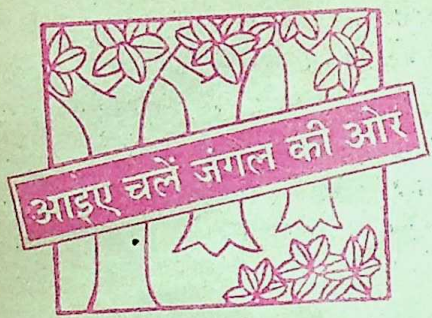

तेज दृष्टिवाला गंध-बिलाव

गंध-बिलाव— दूर से देखने पर बिल्ली-जैसा जीव, पर प्रकृति में उससे बिलकुल अलग। गंध-बिलाव की आंखें बड़ी तेज होती हैं और उसी तरह उसकी घ्राण शक्ति भी। वह अपने गलमुच्छों के सहारे ही अपने भोजन को पहचान लेता है।

गंध-बिलावों में से कुछ हमेशा वृक्षों पर ही रहना पसंद करते हैं। लेकिन कुछ गंध-बिलाव ऐसे होते हैं, जिन्हें धरती ही भाती है।

भारत में सबसे बड़े गंध-बिलाव को कटास भी कहा जाता है। नेपाल, भूटान के अलावा ये अपने देश में सिक्किम, असम तथा बंगाल में पाये जाते हैं। ये गंध-बिलाव सांप तक खा जाते हैं।

गंध-बिलाव कई आकार के होते हैं। कस्तूरा या मुश्क-बिलाव छोटे कद और भूरे रंग का होता है। यह रात में शिकार करता है।

मुसंग या ताड़-बिलाव काले और बादामी रंग का होता है। इसे आम और ताड़ के वृक्षों पर रहना ज्यादा पसंद है। वह ताड़ी निकालने के लिए वृक्ष पर लटकाये गये पात्रों में एकत्र रस पी जाता है। हिमालय में भी ताड़-बिलाव पाये जाते हैं। उनके गलमुच्छे सफेद होते हैं। एक गंध-बिलाव भालू की शक्ल का होता है, इसीलिए उसे भालू-बिलाव कहा जाता है।

मेघालय में गंध-बिलाव को 'जिकड़ु' और लेपचा में 'सिचु' कहते हैं।

'गंध-बिलाव' नाम का भी एक कारण है। दरअसल इन जीवों में एक थैली या गिल्टी होती है, जिससे इत्र बनाया जाता है। यह थैली हर बिलाव में एक-जैसी नहीं होती।

उपयोगी कपूर तुलसी

'ओसिमुम फिलिमांडस्कारिकुम ग्वेकै' यह शास्त्रीय नाम है 'कपूर तुलसी' का। मूल रूप से यह पौधा पूर्वी अफरीका में केनिया में पाया जाता था। अब तो इसे भारत में भी उगाया जाता है। भारत में इसे सबसे पहले देहरादून की वन-अनुसंधानशाला में मंगाये गये थे। इस अनुसंधानशाला की रसायन शाखा और गौण वन उपज शाखा के तत्कालीन अध्यक्ष श्रीकृष्ण के प्रयत्नों से देश में इसकी खेती शुरू की गयी।

यह पौधा प्राकृतिक कपूर का अच्छा स्रोत है। इससे निकाले गये शुद्ध कपूर की व्यापारिक मांग बढ़ते ही लोगों को इस पौधे का महत्त्व मालूम पड़ा।

तुलसी की भांति इस पौधे की सहायता से विविध रोगों की चिकित्सा की जा सकती है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लोकप्रियता : विनाश का कारण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी चिड़ियाघर में वनमानुषों (गोरिल्ला आदि) की पिंजड़े के सामने सबसे बड़ी भीड़ मिलेगी, किंतु उनकी लोकप्रियता उनके विनाश का कारण बन रही है।

जंगल में पाये जाने वाले सभी गोरिल्ले चिड़ियाघरों के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं। सर्वाधिक कीमत ऐसे बच्चों की होती है, जो हाल ही में मां से अलग हुए हैं। ऐसे गोरिल्लों को पकड़ने के लिए उनके माता-पिता और अन्य गोरिल्लों को, जो उन्हें बचाने का प्रयत्न करते हैं, मार देना पड़ता है। इंटरनेशनल वाइल्डलाइफ कोलिशन की पत्रिका 'वाइल्डलाइफ वॉच, के अनुसार तो एक अवयस्क गोरिल्ले को पकड़ने के लिए उसकी पूरी टोली का सफाया कर देना एक आम बात है। चूँकि चिड़ियाघर एक गोरिल्ले के लिए लाखों रुपये देने को तैयार रहते हैं, गोरिल्लों

का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है। परिणामतः प्रजाति का अस्तित्व गंभीर खतरे में है। पकड़े गोरिल्ले को उसके गंतव्य स्थान तक पहुंचते भी अनेक यातनाएं सहनी पड़ती हैं। पत्रिका अनुसार चिड़ियाघर को सकुशल पहुंचते प्रत्ये गोरिल्ले के पीछे कम से कम ऐसे दो गोरिल्ले हैं, जो यात्रा के दौरान ही दम तोड़ देते हैं

पूंछ भी मनःस्थिति का परिचायक होती है !

पशुओं की पूंछ से उनकी मनःस्थिति का भी पता चलता है। यहां प्रस्तुत है, भेड़िये की पूंछ व विभिन्न स्थितियों का आशय :

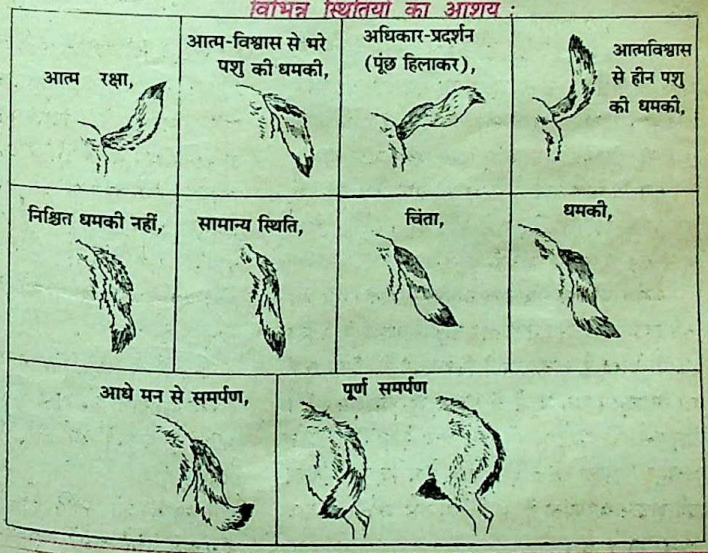

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ प्रसंग अविश्वसनीय प्रतीत होते हैं लेकिन होते हैं सच ! ऐसे प्रसंग मनोरंजक भी होते हैं । जोनाथन क्लीमेंट्स ने अपनी 'बेलीव बट टू' नामक एक पुस्तक में यहां प्रस्तुत ऐसे अनेक प्रसंग दिये हैं।

अविश्वसनीय लेकिन विश्वसनीय

रिश्तों की अजब पहेली

मैनचेस्टर के एडविन वॉकमैन ने सन १९२७ में आत्महत्या कर ली थी । आत्महत्या करते समय उसने एक नोट छोड़ा था, जो इस प्रकार है——

"मैंने एक विधवा से विवाह किया, जिसकी एक जवान लड़की थी ।

मेरे पिता मेरी उस सौतेली लड़की से प्रेम करने लगे और अंत में उन्होंने उससे शादी कर ली । इस तरह मेरे पिता मेरे दामाद भी बन गये ।

मेरी सौतेली लड़की मेरी सौतेली मां भी बन गयी क्योंकि, वह मेरे पिता की पत्नी थी ।

मेरी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया, जो मेरा बेटा होने के साथ ही साथ मेरे पिता का साला भी था और मेरा मामा भी, क्योंकि वह मेरी सौतेली मां का भाई जो था ।

मेरे पिता की पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया, जो मेरा भाई भी था, और मेरी सौतेली लड़की का लड़का होने के कारण मेरा धेवता भी ।

इसी तरह मेरी पत्नी मेरी नानी भी थी, क्योंकि वह मेरी सौतेली मां की मां भी थी । साथ ही मैं अपनी पत्नी का पति भी था और उसका धेवता भी था ।

और एक बच्चे की नानी के पति होने के नाते मैं उसका नाना भी था, इस तरह मैं स्वयं का ही नाना भी था ।"

सजा से बचने का पुराना फारमूला

सन १६३२ में सर चार्ल्स मोंपशन को ब्लैकमेल, आगजनी, क्रूरता और व्यापारियों को धमकाने के अपराध में कई सजाएं एक साथ सुनायी गयीं, जैसे—सर की उपाधि की वापसी, दस हजार पौंड का जुर्माना, एक सौ कोड़े की मार, सारी संपत्ति की जब्ती, घोड़े पर उल्टा बैठाकर सड़क पर निकालना, हमेशा के लिए बदमाश करार देना तथा आजीवन कारावास की सजा । लेकिन वह इन सभी सजाओं से साफ बच गया । इसलिए यह फारमूला कोई नया नहीं है कि 'रिश्वत लेते हुए अगर पकड़े जाओ, तो रिश्वत देकर छूट जाओ ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

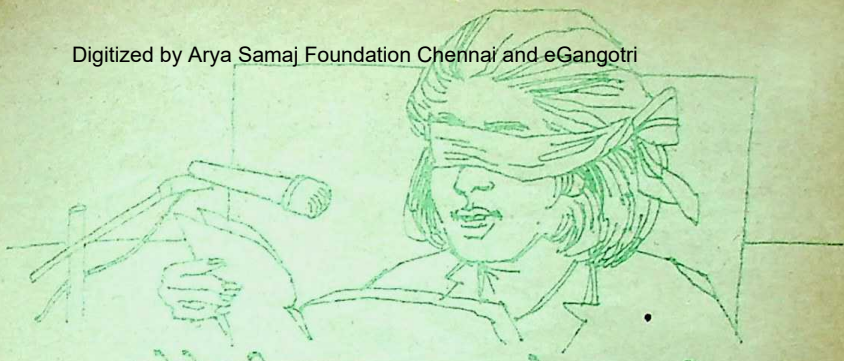

सोने की नाकवाला खगोल-शास्त्री

डेनमार्क का एक प्रख्यात खगोल-शास्त्री हुआ है त्याचो ब्राहे । जब वह रोस्टोक यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा था, तो उसके एक साथी छात्र ने किसी बात पर उसकी बेइज्जती कर दी, इस पर उसने उसे उस समय के प्रचलित द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकारा । दोनों में द्वंद्व-युद्ध हुआ, जिसमें तलवार का एक ऐसा हाथ पड़ा कि त्याचो की नाक ही कट गयी । त्याचो ने अपनी कटी नाक की जगह सुनार से बनवाकर सोने की नाक लगवा ली, जिसे वह आजीवन लगाये रहा । सोने की नाकवाला वह खगोलशास्त्री अपने खगोलीय ज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय था । उसने अपनी खोजों से केप्लर और न्यूटन की खोजों के लिए मार्ग प्रशस्त किया । चंद्रमा पर पाये गये सबसे बड़े गड्ढे को उसके नाम पर 'त्याचो क्रेटर' के नाम से जाना जाता है ।

लंगड़े ने किया दूर—भय

लंदन के अर्ल्स कोर्ट स्थित भूमिगत रेलवे स्टेशन पर सन १९११ में जब पहली बार एक्सलेटर (स्वचालित ऊपर-नीचे आने-जानेवाली सीढी) लगायी गयी, तो जनता में इतनी घबराहट थी कि उस पर चढ़ने-उतरने के लिए कोई तैयार ही नहीं हुआ । तब हारकर एक ऐसे लंगड़े आदमी को, जिसके लकड़ी की टागें लगी हुई थीं, १५ पैंस प्रतिदिन की दिहाड़ी पर केवल इसलिए रखा गया कि वह दिनभर एक्स्लेटर से ऊपर-नीचे चढ़ता-उतरता रहे । जब जनता ने उसे सही-सलामत ऊपर-नीचे चढ़ते-उतरते देखा, तब उसका भय दूर हुआ और उसने भी उसका उपयोग करना शुरू किया ।

नाक में आंख

सन १९८३ में जापान की पंद्रह वर्षीय लड़की सायुरी तनाका को ऐसी शक्ति प्राप्त थी कि वह अपनी नाक द्वारा देख सकती थी और आंखों पर पट्टी बांधने के बावजूद भी वह नाक से पढ़ सकती थी । कहा जा सकता है उसे तीसरी आंख भी प्राप्त थी, जो उसकी नाक में थी ।

— राहुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मूर्खों का भोज' और 'गधों की ज्योनार'

● बाला दुबे

मानव-जीवन का वसंत-मनोरंजन। दुःख-सुख की धूप-छांव से गुजरते हुए जीवन में मनोरंजन के क्षण अमृत-तुल्य हैं। इसे संसार के सभी देशवासियों ने एक अनूठा महत्त्व दिया है। वैसे मनोरंजन की विधा सभी जगह मिलती-जुलती है—हास्य, विनोद एवं हलके-फुलके राग-रंग से लिप्त कार्यक्रम। राजा-महाराजाओं के दरबार में भी मनोरंजन ने प्रथेष्ट स्थान पाया है। रोमन काल में स्करे और ग्रीक मनोरंजन के सिद्ध माने गये हैं तो मैक्सिको की विजय के पश्चात मौंटीजूमा दरबार में तरह-तरह के विदूषक मिलते हैं। इंगलैंड के राजा चार्ल्स प्रथम के दरबार में मकल जॉन नाम का विदूषक मनोरंजन का जाना-माना माहिर था। फ्रांस के दरबार में भी छंटे हुए विदूषक रखे जाते थे। जरमनी के रुडोल्फ के दरबार में कैफ कैपाडॉक्स, मैक्सीमिलियन और कुंज वॉन डैर रोजन विख्यात विदूषक थे। राज दरबार के अतिरिक्त सर्वसाधारण जनता एवं समाज ने भी अपने मनोरंजन के अलग-अलग मापदंड बनाये और धीरे-धीरे यह चलन त्योहार के रूप में मनाये जाने लगे।

गाई फाक्स डे'—इंगलैंड की होली

भारतवर्ष में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हलके-फुलके मनोरंजन से भरपूर त्योहार होली ही माना जाता है। होली से मिलता-जुलता एक त्योहार इंगलैंड में भी प्रति वर्ष नवम्बर को मनाया जाता है। इसे 'गाइफॉक्स डे' कहते हैं। इस त्योहार से एक ऐतिहासिक संदर्भ जुड़ा हुआ है। सन १६०५ में इंगलैंड के राजा जेम्स प्रथम के विरुद्ध रोमन कैथोलिक धर्मानुयायी संप्रदाय ने एक षड्यंत्र रचा था, जिसके मुख्य कर्त्ता-धर्त्ता थे राबर्ट कैटस्बी, टॉमस पर्सी, जॉन राइट्स और गाइ फॉक्स। पांच नवम्बर को पार्लियामेंट भवन के नीचे बारूद भरे लकड़ी के बैरल रखे गये थे, जिसमें आग लगाने का काम गाइफॉक्स को सौंपा गया था। निःसंदेह अगर यह षड्यंत्र सफल हो जाता तो राजा जेम्स प्रथम, उनकी रानी और पार्लियामेंट सभी खतम हो जाते। पर गाइ फॉक्स की लहतलाली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमती झूल से सजा-धजा एक गधा और उस पर विराजमान कस्बे की सबसे सुंदर लड़की। उनका जुलूस एक गिरजाघर से प्रारंभ होता है और एक अन्य गिरजाघर में समाप्त। वहां उसका स्वागत किया जाता है पादरी द्वारा ! कहां होता है यह सब ?

कारण षड्यंत्र का भंडाफोड़ हो गया और वह पलीता लगाने से पहले ही पकड़ा गया। बाद में सभी या तो लड़कर या राज्य-दंड पाकर मारे गये। तब से ही इंगलैंड में प्रतिवर्ष पांच नवम्बर को 'गाइ फॉक्स डे' मनाया जाता है, जिसमें काठ-कबाड़ इत्यादि जलाया जाता है। इस 'होली' को वे 'बॉन फायर' कहते हैं। इसके अतिरिक्त आतिशबाजी भी होती है और खूब हल्ला-गुल्ला मचाकर मनोरंजन करते हैं।

अतीत मई दिवस का

कृषि संबंधी एक मनोरंजक त्योहार यूरोप में भी मनाया जाता है, विशेषकर रूस एवं कम्युनिस्ट देशों में। यह त्योहार प्रति वर्ष पहली मई को मनाया जाता है और इसमें पेड़, पौधे, टहनियों और फूल-मालाओं की झांकियां निकाली जाती हैं। उस दिन एक पेड़ को भी सजाते हैं जिसे 'मे ट्री' कहते हैं। कहीं-कहीं पेड़ सजाने के अतिरिक्त एक लंबी बल्ली गाड़कर उसे फूल-पत्तियों एवं रेशमी रिबन से सजाते हैं और इसे 'मे पोल' कहते हैं। उसी दिन किसी एक आकर्षक मर्द को छांटकर 'मे किंग' और किसी सुंदरी को 'मे क्वीन' भी बनाते हैं। पहली मई की सुबह-सुबह लोग घास पर गिरी हुई ओस को अपने चेहरों पर मलते हैं। उनके लिए यह एक टोटका है। उनका विश्वास है कि इस ओस के लगाने से सौंदर्य बढ़ता है। इस त्योहार का उद्देश्य फसल और मवेशियों के प्रति शुभकामना व्यक्त करना ही है। सन १८८९ में यह त्योहार बाकायदा छुट्टी के रूप में मनाया जाने लगा और फिर इसे 'अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस' की भांति मनाने लगे।

मूर्खों का भोज

यूरोप में एक और मनोरंजन का दिवस बहुत विख्यात हुआ, जिसे 'मूर्खों को भोज' कहते हैं। सियस नामक स्थान में यह त्योहार मनाया जाता है, जिसमें एक लड़के को बिशप बनाने का स्वांग भरा जाता है, जिसमें बाकायदा गिरजे के भजन इत्यादि गाये जाते हैं। इसके बाद वातावरण भी हलका-फुलका हो जाता है और भीड़ अश्लील गाने गाती है और नाचती-कूदती भी है। यह कार्यक्रम रात तक चलता रहता है और खूब हो-हुल्लड़ मचाया जाता है।

गधों की ज्योनार

बोविस नामक स्थान में 'गधों की ज्योनार' नामक मनोरंजन होता है, जो हर चौदह जनवरी को मनाया जाता है। इसमें एक गधे पर कीमती झूल डाल देते हैं और उस कस्बे की सबसे सुंदर लड़की को चुनकर इस गधे पर बैठा देते हैं और इसके बाद जुलूस निकाला जाता है। यह जुलूस गिरजाघर से आरंभ होता है और सेंट ईटीन के गिरजे तक पहुंचता है। गिरजाघर पहुंचकर बाकायदा पादरी इस जुलूस का स्वागत करते हैं और गधे की बोली की नकल करते हुए एक दो भजन भी गाते हैं। भीड़ भी पादरी के साथ-साथ रेंकने की नकल करती है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी विलंब करना लाभदायक होता है !

पिछले कुछ अंकों से पाठक युधिष्ठिर को भीष्म पितामह द्वारा दिये गये उपदेशों का सार पढ़ रहे हैं। शरशैया पर उत्तरायण की प्रतीक्षा करते हुए भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को धर्म एवं नीति विषयक अनेक उपदेश दिये। इसी क्रम में प्रस्तुत है उनके द्वारा युधिष्ठिर को सुनाया गया एक आख्यान

भीष्म ने कहा, "राजन् ! प्रत्येक काम को सोच-विचार कर करना चाहिए। इस संबंध में मैं तुम्हें एक आख्यान सुनाता हूं।

"महर्षि गौतम के एक महाज्ञानी पुत्र था, जिसका नाम चिरकारी था। वह कर्त्तव्य विषयों को भलीभांति विचार कर सारे कार्य विलंब से किया करता था। वह चिरकाल तक सोता, जागता और विलंब से कार्य पूर्ण करता था, इसलिए लोग उसे आलसी समझकर 'चिरकारी' कहते थे। एक दिन गौतम ने अपनी स्त्री के अपराध करने पर कुपित हो बिना बिचारे ही चिरकारी को आज्ञा दी, 'बेटा ! तू अपनी मां को मार डाल।'

"इतना कह ब्रह्मर्षि गौतम वन में चले गये। पिता की यह आज्ञा पाकर चिरकारी धर्म संकट में पड़ गया। अपने स्वभाव के अनुसार देर तक सोचकर वह इस निर्णय पर पहुंचा कि पिता की आज्ञा का पालन भी हो जाए और माता का वध भी न हो। उसने सोचा, 'पिता की आज्ञा का पालन करना परम धर्म है और मात की रक्षा करना भी पुत्र का प्रधान धर्म है। मात का वध करके कौन पुत्र सुखी रह सकता है और पिता की आज्ञा की अवहेलना करके कौन प्रतिष्ठा पा सकता है ? माता, पिता दोनों ने ही मुझे जन्म दिया है अतः मैं दोनों को ही अपनी उत्पति का कारण मानता हूं। अतः क्या करूं जिससे मैं अधर्म से बच जाऊं। पिता अपने शील, सदाचार, कुल और गोत्र की रक्षा के लिए पुत्र की कामना करते हैं। पिता भरण-पोषण करने तथा शिक्षा देने के कारण पुत्र का प्रधान गुरु है, इसलिए वह परम धर्म का साक्षात स्वरूप है। वेदों में भी उसी को धर्म निश्चित किया गया है। पुत्र पिता का सम्पूर्ण प्रतिरूप है और पिता पुत्र का सर्वस्व है, इसलिए पिता के आदेश का पालन करना चाहिए। जो पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, उनके पाप नष्ट हो जाते हैं। पिता धर्म है, पिता स्वर्ग है और पिता ही सबसे बड़ी तपस्या है। पिता के प्रसन्न

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चिरकाल तक सोच-विचार कर मित्रता जोड़नी चाहिए और जिसे मित्र बना लिया है। उसे सहसा नहीं छोड़ना चाहिए। राग, दर्प, अभिमान, द्रोह, पापाचरण और किसी का अप्रिय करने में जो विलंब करता है, उसकी प्रशंसा की जाती है।"

होने पर सब देवता प्रसन्न होते हैं। यदि पिता पुत्र से कभी कठोर वचन भी कह दे तो, वे आशीर्वाद बन जाते हैं और यदि पिता पुत्र का अभिनंदन करे तो पुत्र के पापों का प्रायश्चित हो जाता है। फूल डंठल से, फल वृक्ष से अलग हो जाते हैं किंतु पुत्र को पिता से कभी अलग नहीं होना चाहिए।'

"फिर उसने विचार किया, 'माता से यह पांच भौतिक मनुष्य शरीर मुझे मिला है। इसके उत्पन्न करने में माता ही मुख्य हेतु है। संसार के समस्त प्राणियों को सुख और सांत्वना देनेवाली माता ही है। जब तक माता जीवित रहती है तब तक पुत्र अपने को सनाथ समझता है और उसके न रहने पर अनाथ हो जाता है और उसके लिए संसार सूना प्रतीत होने लगता है। पुत्र निर्धन होने पर भी माता उसे माता-अन्नपूर्णा का-सा व्यवहार देती है। पुत्र असमर्थ हो या समर्थ, दुर्बल हो या हृष्ट-पुष्ट, माता उसका पालन करती है। माता बच्चे को गर्भाशय में धारण करने के कारण धात्री, जन्म देने के कारण जननी, पालन-पोषण करने के कारण अंबा और वीर संतान की मां होने के कारण वीरसू कही जाती है। माता ही बालक का निकटतम शरीर है अतः कोई भी सचेतन मनुष्य अपनी माता की हत्या नहीं कर सकता।'

उपरोक्त बातों का विचार कर वह इस निर्णय पर पहुंचा कि माता का गौरव पिता से भी बढ़कर है।

"विलंब करने का स्वभाव होने के कारण चिरकारी बहुत समय तक इस प्रकार सोचता-विचारता रहा। इतने में उसके पिता वन से लौट आये। महाज्ञानी तपोनिष्ठ गौतम अपनी पत्नी के अनुचित वध पर विचार कर संतप्त हो रहे थे। वे दुःख से आंसू बहाते हुए वेदाध्ययन और धैर्य के प्रभाव से अपने को संभालकर इस प्रकार पश्चाताप कर रहे थे, 'अहो! त्रिभुवन का स्वामी इंद्र ब्राह्मण का रूप धारण कर मेरे आश्रम पर आया था। मैंने उसका स्वागत, अतिथि-सत्कार किया और स्वयं ही उसकी विधिवत पूजा की, परंतु इंद्र की विषय-लोलुपता के कारण दुःखद घटना घटित हो गयी। उसमें मेरी स्त्री का कोई अपराध नहीं है। जिसे मैंने पत्नी कहकर अपने घर में आश्रय दिया था, जो एक सती-साध्वी नारी थी, मैंने उसका वध करवा डाला। अब इस पाप से मेरा कैसे उद्धार होगा? मैंने उदारबुद्धि चिरकारी को उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता के वध के लिए आज्ञा दी थी। यदि उसने इस कार्य में भी विलंब कर अपने नाम को सार्थक किया है, तो वही मुझे स्त्री हत्या के पाप से बचा सकता है।'

"गौतम ने कहा, 'बेटा चिरकारी ! तेरा कल्याण हो। यदि आज भी तूने विलंब से कार्य करने के अपने स्वभाव का अनुसरण किया है तो नाम सफल है।'

"राजन ! इस प्रकार विचार करते हुए दुःखी महर्षि गौतम ने घर में प्रवेश किया। पिता को देखकर चिरकारी ने हथियार फेक दिया और पृथ्वी पर गिरकर साष्टांग प्रणाम किया। चिरकारी की माता लज्जा के मारे निश्चेष्ट खड़ी थी। यह देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

"गौतम ने कहा, 'बेटा चिरकारी ! तू चिरकाल तक चिरंजीवी बना रहे।' माता ने भी उसे अनेक आशीर्वाद दिये।

"चिरकाल तक सोच-विचार कर मित्रता जोड़नी चाहिए और जिसे मित्र बना किसी को अप्रिय करने में जो विलंब करता है, उसकी प्रशंसा की जाती है। अनुमान से किये हुए अपराधों के विषय में पूर्ण सोच-विचार कर जो निर्णय करते हैं उनकी भी प्रशंसा की जाती है।"

—श्री सूरजमल मेहता कृत 'महाभारत सार' से

प्रकृति का जादुई शहर

एरिजोना का ग्रैंड कैन्यन अपनी रंगबिरंगी चट्टानों और भव्य दृश्यों के लिए विश्वभर में प्रकृति का जादुई शहर माना जाता है। कोलोरैडो नदी की घाटी में निरंतर हो रहे क्षरण के कारण ग्रैंड कैन्यन की चट्टानों में मंदिर, मीनारें और दुर्ग अलग-अलग चटकदार रंगों में दिखायी पड़ते हैं। हर साल दुनियाभर से लगभग पंद्रह लाख पर्यटक अमरीका स्थित इस आश्चर्य को देखने जाते हैं। कोलोरैडो नदी के पानी ने हजारों साल की मेहनत के बाद इस ३४७.२ किलोमीटर लंबे और समय-समय पर ६.४ किलोमीटर से ४६.४ किलोमीटर चौड़े जादुई शहर का निर्माण किया है।

बोलती दीवारें

विश्व के कई प्रसिद्ध गोलाकार भवनों में ऐसी दीर्घाएं हैं, जिनकी दीवारें बोलती हैं। ऐसी दीर्घाओं में लंदन के सेंट पाल कैथेड्रल की दीर्घा (गैलरी) सर्वाधिक प्रसिद्ध है। लखनऊ में भी बोलती दीवारोंवाली एक दीर्घा है, जिसे अनेक दर्शक रोज देखते हैं। दरअसल, इन दीर्घाओं की गोलाकार बनावट के कारण वहां कही जानेवाली धीमी से धीमी बात भी दीवारों से टकराकर बार-बार परावर्तित होती है। इस प्रक्रिया में ध्वनि की उर्जा नष्ट नहीं होती। कानों को दीवार से सटाकर सुना जाए तो साफ-साफ आवाज सुनायी देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान

प्रविष्टि- ६८ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं— जयधरनाथ मिश्र

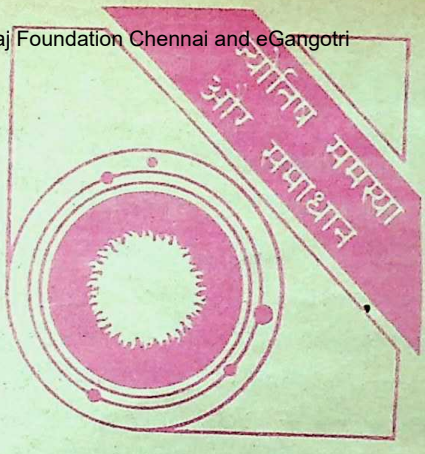

. विमला शर्मा — पश्चिम नेवाड

प्रश्न — विवाह कब और कैसी जगह ?

उत्तर — २५वें वर्ष में घर से उत्तर दिशा में और संपन्न परिवार में विवाह होगा।

गुप्ता, सीवान

प्रश्न — शिक्षा, व्यवसाय और विवाह कैसे कब तक होगा ?

उत्तर — शिक्षा निकृष्ट, नौकरी साधारण विवाह २७वें वर्ष में होगा।

कुमार त्रिपाठी, रायपुर

प्रश्न — नौकरी तथा दांपत्य में निरसता ? नग भी सुझाएं।

उत्तर — दशम स्थान का मालिक छठवें में बैठ जाने से तथा स्त्री भाव में केतु की से ही यह कराता है। भाग्योदय ४१वें वर्ष होगा, तब ही सब सुधार होंगे। पन्ना पांच का पहनें।

मुख शर्मा, लाडनूं (राज.)

प्रश्न — आर्थिक स्थिति में सुधार व संपत्ति का योग कब तक ? रत्न ?

उत्तर — शनि में जब गुरु का अंतर होगा, तब आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और संपत्ति भी मिलेगी। अच्छा हीरा अथवा फटिक पहनें।

कलावती चतुर्वेदी, मिर्जापुर

प्रश्न — भाग्य में दांपत्य सुख कब से और दाम्पत्य जीवन कैसा होगा ?

उत्तर — यतिभाव का मालिक मंगल बुध के घर में चंद्रमा के साथ नीच योग बनाता है। अतः दांपत्य सुख मध्यम रहेगा। विवाह २९वें वर्ष में होगा।

कु. माधुरी, ग्वालियर

प्रश्न — इच्छित व्यक्ति से कब विवाह होगा, माता-पिता विरोध में हैं।

उत्तर — माता-पिता जहां शादी कराएंगे, वहीं होगी। इच्छित व्यक्ति से नहीं क्योंकि आपका पंचमेश बृहस्पति १२वें नेष्ट घर में बैठा है।

रमन जोशी, लखनऊ

प्रश्न — पुत्र का कष्ट कब दूर होगा।

उत्तर — राहु की महादशा भर यह कपट रहेगा। शीघ्र लाभ के लिए बालक को स्फटिक तथा लार्जवत पहनाएं।

राजेंद्र जैन, होशंगाबाद

प्रश्न — पदोन्नति कब होगी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर — राहु की महादशा में बुध का अंतर पदोन्नति कारक है जो ८८ के नवम्बर में होगा।

पुरषोत्तम कुमार पाण्डेय, शहडोल

प्रश्न — भाग्योदय कब तक ?

उत्तर — ४८वें वर्ष में पूर्ण भाग्योदय का योग शुरू होगा।

दिलीप कुमार सिंह, रांची

प्रश्न — उच्चपद की प्राप्ति एवं भाग्योदय कब ?

उत्तर — पूर्ण भाग्योदय शुक्र की महादशा में होगा। पद प्राप्ति योग है।

सुधीरकुमार श्रीवास्तव, बस्ती

प्रश्न — मुकदमा जीतेंगे या नहीं। मेरी कुंडली के अनुसार रत्न सुझाएं।

उत्तर — तीन रत्ती का हीरा आप पहनें, जीत की आशा बहुत कम।

डा. ओमशरण विजय, जयपुर

प्रश्न — मुकदमेबाजी से कब छुटकारा मिलेगा ?

उत्तर — गोचरीय शनि नेष्ट होने से अभी डेढ़ वर्ष संभव नहीं।

दिनेश चतुर्वेदी, गुना

प्रश्न — क्या प्रशासनिक सेवा में जाना संभव है ?

उत्तर — अवश्य, प्रशासनिक सेवा में अभी एक वर्ष का विलंब।

नीलिमा अग्रवाल, आगरा

प्रश्न — मानसिक और शारीरिक रोग कब ठीक होंगे, रत्न भी बताएं ?

उत्तर — मंगल नीच का होने से यह सब दोष करता है। अच्छी स्फटिक की [illegible] करें।

अनुराधा सिन्हा, मुजफ्फरपुर

प्रश्न — मेरी शादी कब और कै[illegible] होगी।

उत्तर — चंद्रमा से मंगली होने से २५वें वर्ष में शादी का योग है तथा [illegible] और श्रेष्ठ परिवार में होगा।

पी.सी. शर्मा, कानपुर

प्रश्न — शनि की दशा कैसी [illegible] आत्माकारक है ?

उत्तर — जीवन की सर्वश्रेष्ठ महा[illegible] की होगी।

भंवरलाल, चुरु।

प्रश्न — भाग्योदय कब होगा बताएं ?

उत्तर — ४९वें वर्ष में भाग्योदय अथवा स्फटिक की माला पहनें।

रमेश चंद्र जैन, अजमेर

प्रश्न — जीवन में सर्वोत्तम समय कब तक रहेगा।

उत्तर — शुक्र की महादशा अ[illegible] में सर्वोत्तम होगी जो २० वर्ष तक [illegible]

राजेंद्र कुमार कंचन, झांसी

प्रश्न — अपना मकान और प[illegible] तक ?

उत्तर — पदोन्नति का योग प्रा[illegible] मकान पांच वर्ष के अंदर होगा।

अरविन्द कुमार शुक्ल, पीलीभीत

प्रश्न — पांच वर्षों से चल [illegible] अवरोध की समाप्ति कब, रत्न [illegible]

उत्तर — अच्छा-सा पुखराज [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहनें। अवरोधों की समाप्ति इसी वर्ष तक।

प्रीतिश्वर प्रसाद, रोहतास

प्रश्न — अगली प्रोन्नति कब ?

उत्तर — वृष राशि में गुरु के जाते ही अगले वर्ष प्रोन्नति होने की विशेष संभावना है।

श्रीमती सुधा चतुर्वेदी, लखनऊ

प्रश्न — अपना मकान कब बनेगा, रत्न भी पहनूं ?

उत्तर — सन् १९८९ में मकान निर्माण का योग, हीरा अथवा स्फटिक पहनें।

प्रदीकिनी देशमुख, बड़ौदा

प्रश्न — पति कैसा व घर कैसा मिलेगा ?

उत्तर — पतिभाव का मालिक बुध शत्रुक्षेत्र में होने से पति सुख उत्तम नहीं, पर घर श्रेष्ठ होगा।

मंजू श्रीवास्तव, उदयपुर

प्रश्न — दूसरा विवाह संभव है ?

उत्तर — नवम्बर १९८८ में दूसरी शादी का योग प्रबल है। मंगली होने के कारण दांपत्य सुख मध्यम।

प्रविष्टि ७०

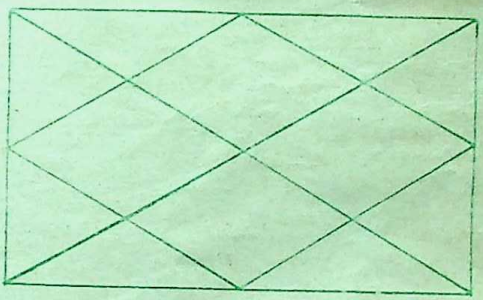

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन. . .

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा (वर्तमान) .....

पता .....

आपका एक प्रश्न .....

यहां से काटकर चिपकाएं

इस पते को ही काट कर पोस्टकार्ड पर चिपकाएं

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग— प्रविष्टि— ७०) 'कादम्बिनी', हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : २० मार्च, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजेदार कोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी हां, मैं इन्हीं फूलों से ही अपनी बात करता हूं।"

"तकलीफ देने के लिए माफी चाहता हूं पर केमिष्ट आपका नुस्खा नहीं पढ़ पाया !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रह मंडल और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पा

ग्रह-स्थिति : सूर्य मीन राशि में १४ मार्च से, मंगल मकर में २८ से, बुध कुंभ में ११ से, गु मेष में, शुक्र २८ से वृषभ में, शनि धनु में, राहू कुंभ केतु सिंह में, ६ से हर्षल, नेपचयून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

मेष : (चू, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

मास अनुकूल एवं अभीष्ट फलदायक होगा। स्थित संपत्ति वाहनादि का सुख होगा। प्रियजनों के सहयोग से नूतन योजना क्रियान्वित होंगी। १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता से मानसिक दबाव विद्यमान रहेगा। शासन सत्ता पर प्रभाव रहेगा। ८ से १५ के मध्य लाभदायी योजना में प्रगति होगी। भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होगी। १६ से २४ के मध्य प्रियजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष से सुलहपूर्ण स्थिति का उदय होगा। लंबित योजना पूर्ण होगी। लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों में लाभ मिलेगा। मासांत में सामाजिक यश एवं प्रतिष्ठा का उन्नत योग होगा। इस विषमता के बावजूद नवीन धन संपत्ति अथवा वाहन सुख का योग होगा।

वृषभ : (इ, उ, ए, औ, व, वा, वी, वू,)

मास श्रम तथा संघर्षपूर्ण होगा। प्रतिकू स्थितियों के बावजूद साहस एवं पराक्रम लाभ मिलेगा। व्यावसायिक एवं पारिवा कार्यों में धैर्य अपेक्षित है। १ से ७ तक मध्य शत्रु-पक्ष के द्वारा प्रतिष्ठा हानि का वि प्रयास होगा। प्रियजनों के सहयोग से आ समस्या का समाधान होगा। ८ से १५ के म अकारण यात्रा तथा व्यय का सामना क होगा। कार्य की अधिकता होगी। पारिवा वातावरण में व्यर्थ खिन्नता होगी। १६ से के मध्य उदासीनता अथवा अस्वस्थता स्थिति होगी। मासांत में योजनाओं में व विलंब होगा। मासांत आशाजनक हो उच्चाधिकारियों अथवा राजनेताओं के सह

कार्यसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रतिकूल स्थितियों में विजय प्राप्त होगी।

मिथुन : (क, की, कू, के, को, ध, घ)

मास अभीष्ट फलदायक होगा। व्यवसाय अथवा रोजगार की दिशा में उन्नति होगी। प्रयासों की सार्थकता से उत्साहवर्धक वातावरण होगा। १ से ७ के मध्य पारिवारिक सहयोग से मनोवांछित कार्य की पूर्ति होगी। परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। ८ से १५ के मध्य शोध एवं सृजन के कार्य पूर्ण होंगे। शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। १६ से २४ के मध्य रोजगार की दिशा में बनते जा रहे प्रयास साकार होंगे। मासांत में विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा और इच्छित स्थान की यात्रा होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों के लिए मास श्रेष्ठ होगा। महत्वपूर्ण उपलब्धि का योग है।

कर्क : (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डो)

मासारंभ में अस्वस्थता तथा उदासीनता के कारण पीड़ा होगी। वहीं उत्तरार्ध में पुरुषार्थ एवं पराक्रम वृद्धि होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता रहेगी। व्यर्थ यात्राओं से मन में खिन्नता होगी। ८ से

पर्व और त्यौहार

३ मार्च, होलिका दहन, चैतन्य प्रभु जयंती, चंद्रग्रहण ४ मार्च— धुलैंडी-५, संत तुकाराम जयंती-७, संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी-८, रंग पंचमी-११, शीतलाष्टमी १४, पापमोचनी एकादशी-१५, भीम प्रदोष-१६, मास शिवरात्रि-१८, कुहू अमावस्या-१९, नवरात्रारम्भ-२०, गणगौरी व्रत-२१, वैनायकी गणेश चतुर्थी-२५, दुर्गाष्टमी-२६, रामनवमी-२९, एकादशी व्रत-३०, प्रदोष-३१, महावीर जयंती।

राशियां और प्रभाव

मास में शनि, मंगल तथा शुक्र, गुरु की युति होगी। राहू केतु क्रमशः कुंभ तथा सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। जो कि मेष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, कुंभ को श्रेष्ठ फलदायक, वृषभ, कर्क, मीन को मध्यम तथा शेष को पीड़ा एवं श्रमसाध्य होंगे। मास में आर्थिक संक्रमण उच्चावचन पूर्ण होगा। वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। कृत्रिम अभावात्मक स्थितियों का उदय होगा। खाद्यान्न वस्तुओं के मूल्यों में तेजी होगी। मशीनरी तथा वस्त्र कपास का व्यवसाय शिथिल होकर मंदी का वातावरण बनाएगा। सोने, चांदी के आभूषण के भाव तेजी की ओर होकर नीचे आएंगे।

विश्व वातावरण में उग्र रुख दृष्टिगोचर होगा। शनि, मंगल की युति प्राकृतिक एवं नैसर्गिक कारणों से हानिकारक होगी। श्रम समस्याओं की अधिकता होगी। पश्चिमी देशों में उच्च स्तरीय परिवर्तन होंगे। एशियाई देशों में हिंसक घटनाओं की अधिकता होगी। भारतीय सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव के बावजूद युद्ध नहीं होगा। दक्षिण भारत में राजनीतिक उतार-चढ़ाव अधिक होंगे। कुछ स्थानों पर परिवर्तन, निर्वाचन आदि के संयोग उपस्थित होंगे। केंद्रीय मंत्रिमंडल अथवा उच्च पदों पर परिवर्तन होंगे। मास के पूर्वार्द्ध में प्राकृतिक वातावरण अस्थिर होगा। कुछ स्थानों पर वृष्टि होगी। मास के उत्तरार्द्ध में शीत प्रभाव समाप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ के मध्य शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से कष्ट होगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। जोखिमपूर्ण कार्य करना अहितकर होगा। १६ से २४ के मध्य प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्य से लाभ होगा। नेतृत्व का अवसर मिलेगा। मासांत में पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा। नवीन योजना पूर्ण होगी। भौतिक सुखों की प्राप्ति के प्रयास सार्थक होंगे। महत्वपूर्ण कार्य की संपन्नता से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

सिंह : (मा, मी, मू, मो, ट, टी, टू, टे)

मास मिश्रित फलदायी होगा। संघर्ष तथा विपरीत स्थितियों के बावजूद व्यक्तित्व का विकास होगा। संपत्ति संबंधी कार्य पूर्ण होगा। १ से ७ के मध्य शत्रु पक्ष के कारण तनाव होगा। यात्रा कष्टदायक होगी। प्रियजनों के सहयोग से योजना में प्रगति होगी। ८ से १५ के मध्य शत्रुओं पर विजय मिलेगी। संपत्ति संबंधी विवाद का समाधान होगा। विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होगा। १६ से २४ के मध्य प्रतियोगिता परीक्षा से अपेक्षित परिणाम प्राप्त होगा। लेखन, सृजन, शोध संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। मासांत में मित्र तथा ससुराल पक्ष का सहयोग मिलेगा। रोजगार संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी। वाहन का उपयोग सावधानी से करें।

कन्या : (टी, प, पी, पू, ष, पे, पो)

मास उत्तम होगा। रोजगार की दिशा में लाभ होगा। नवीन दायित्व से प्रसन्नता होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक अनुकूलता रहेगी। १ से ७ तक के मध्य परिवार में मांगलिक कार्य की पूर्ति होगी की अधिकता के बावजूद उल्लासपूर्ण होगा। ८ से १५ के मध्य अस्वस्थता संयम से कार्य करना हितकर होगा। २४ के मध्य मित्रों एवं परिवार जनों के आजीविका में सुधार होगा। शासन अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मासांत में आकस्मिक धन लाभ उपलब्धि की प्रबल संभावना होगी। समाचार मिलेंगे।

तुला : (र, री, रु, रे, त, तू

मास में आर्थिक प्रयासों में उल्लेख सफलता प्राप्त होगी। परिवार में कार्य पूर्ण होगा। भौतिक उपलब्धियों के सार्थक होंगे। प्रियजनों के समागम से होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। १५ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्च वर्ग का सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष के निरर्थक होंगे। लेखन, सृजन में होगी। १६ से २४ के मध्य कार्यों की होगी। आत्मविश्वास के कारण सफलता प्राप्त होगी। मासांत में उच्च अनुकंपा का लाभ मिलेगा। न्यायालय में में अधिक श्रम के साथ विजय प्राप्त अकारण विवाद टालना हितकर होगा।

वृश्चिक : (तो, न, नी, ने, या, यी,

मास में सावधानी तथा संयम से कार्य अदूरदर्शितापूर्ण निर्णय कष्टदायी हो सकते राजकीय कार्यों में उच्च वर्ग का सहयोग मिलेगा। १ से ७ तक के मध्य आर्थिक में व्यवधान उपस्थित होंगे, किंतु सतर्क कारण सफलता प्राप्त होगी। नवीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा होगी। जीवनसाथी का सुख एवं सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अहितकर हो सकता है। संपत्ति का विवाद टालना चाहिए। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। परिवार में पारस्परिक कलह से तनाव होगा। १६ से २४ के मध्य शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। प्रियजन अथवा विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होगा। संपत्ति संबंधी कार्यों में शीघ्रता न करें। मासांत में आत्मविश्वास तथा पराक्रम का चित अनुकूल परिणाम देगा।

धनु : (य, या, ध, फ, ढ़, ये, यो)

मास श्रेष्ठ फलदायक होगा। अभीष्ट कार्यों में सफलता मिलेगी। इच्छित स्थान पद की प्राप्ति होगी। नवीन योजना पर एकाग्रता बढ़ेगी। १ से ७ के मध्य कार्यों की अधिकता तथा प्रसन्नता रहेगी। शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। आजीविका संबंधी प्रयासों से सफलता प्राप्त होगी। ८ से १५ के मध्य यात्रा लाभदायक होगी। पुराने मित्रों से समागम होगा। लेखन, सृजन संबंधी गतिविधियों हेतु संपर्क बढ़ेंगे। १६ से २४ के मध्य राजकीय सहयोग से शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। संपत्ति का लाभ मिलेगा। मासांत में सामाजिक एवं पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी। आप अज्ञात भय एवं तनाव से मुक्त होकर सकारात्मक पहल करें। उल्लेखनीय उपलब्धि सुनिश्चित है।

मकर : (भा, ज, जी, जू, जो, जे, ख, खी, ग, गो)

मास में जोखिमपूर्ण प्रयासों में हानि। १ से ८ के मध्य टालना हितकर होगा। १ से ८ के मध्य धन संपत्ति के कार्यों में व्यर्थ व्यवधान एवं विलंब का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक वातावरण में उद्विग्नता होगी। ७ से १५ के मध्य आध्यात्मक अभिरुचि बढ़ेगी। प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। अधीनस्थ वर्ग षड्यंत्र करेंगे। उच्च वर्ग की ओर से सुरक्षा प्राप्त होगी। १६ से २३ के मध्य जोखिमपूर्ण लेन-देन टालना चाहिए। आर्थिक योजनाओं में संतुलित प्रयास करें। मासांत में आकस्मिक लाभ की प्रबल संभावना होगी।

कुंभ : (गु, गे, गो, स, सी, सू, सो, श्र, श्री)

मास अनुकूल एवं श्रेष्ठ फलदायी होगा। जीवनसाथी के सहयोग से संपत्ति-विवाद हल होगा। उन्नति के नवीन पथ का उदय होगा। १ से ७ के मध्य नवीन उद्योग अथवा योजना से लाभ मिलेगा। कार्यों की अधिकता होगी। यात्रा से कष्ट होगा। ८ से १५ के मध्य लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शत्रु-पक्ष पर नियंत्रण बढ़ेगा। १६ से २४ के मध्य जीवन साथी का सहयोग स्थिर धन संपदा कार्यों में सहायक होगा। मासांत में शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से विशिष्ट उपलब्धि होगी। शुभ सूचना प्राप्त होगी।

मीन : (टी, दू, थ, फ, दे, दी, च, चो)

मास में अधिक परिश्रम तथा दौड़धूप के बावजूद इच्छित परिणाम की पूर्ति में विलंब होगा। पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा। १ से ७ के मध्य संभाषण पर नियंत्रण रखें। परिवार में अस्वस्थता के कारण व्यय अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होगा। मानसिक खिन्नता विद्यमान रहेगी। ८ से १५ के मध्य श्रम की अधिकता के बावजूद भी परिणामों में व्यवधान आएंगे। शत्रु पक्ष क्रियाशील रहेगा। भावुकता पर नियंत्रण रखें। १६ से २४ के मध्य लेखन सृजन में अभिरुचि बढ़ेगी। धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परिणाम अप्रसन्नतादायी होगा। मासांत में विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। नवंबर आशा तथा उत्साह का संचार होगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—ज्योतिष दान
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (मध्य प्रदेश)

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. ११, ख. १९९,२०, क. प्लूटो (पृथ्वी के २४७ वर्षों के बराबर), ख. नहीं, ३. क. कोलार स्वर्ण-खान (कर्नाटक), १०७ वर्ष पुरानी, ख. निरंतर घट रहा है (१९८४-८५ में २,०२६ कि. ग्रा. उत्पादन, १९८७-८८ में १,०७१ कि. ग्रा.— अप्रैल से अक्तूबर तक), ४. क. साढ़े तीन हजार वर्ष पुराना द्वारका नगर, कच्छ की खाड़ी में (हाल में उसके दुर्ग की ३००-मीटर लंबी समुद्रस्थ दीवारों, मुहरों तथा मृण्पात्रों का पता चला है), ख. लोथल बंदरगाह के अवशेष (सिंधु घाटी सभ्यता काल), ५. क. इतालवी साहित्यकार डॉ. एल. पी. टेसीटरी, वाल्मीकीय रामायण तथा तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान किया (७४ वर्ष पूर्व), २४ वर्ष की अवस्था में, बाद में भारत आकर बसा और ३२ वर्ष की आयु में बीकानेर में मृत्यु, ख. श्रीमती सोनिया गांधी, ६. ७७. ७७-वर्षीय गुजराती रंगमंच कलाकार प्राणसुख नायक विगत ६९ वर्षों में (अक्तू. ८७ तक) २२,४५५ नाट्य-प्रदर्शनों में भाग ले चुके हैं (इससे पूर्व एक जापानी का २०,१५० प्रदर्शनों का रेकॉर्ड था), ७. विंसेंट वान गाग (डच) की कलाकृति 'इरिसेस' ५ करोड़ ३९ लाख डॉलर में न्यूयार्क में विगत नवम्बर में नीलाम हुई। (आस्ट्रेलिया के सोना-खान मालिक तथा अरबपति एलन बांड द्वारा खरीदे जाने का अनुमान), ८. आइंस्टीन की 'थ्योरी आव रिलेटिविटी' की हस्तलिपि (७२ पृष्ठ), जो १९१२ की लिखी हुई है, ११ लाख ५५ हजार डॉलर में, न्यूयार्क में विगत दिसम्बर में नीलाम हुई, ९. गुरशिखर पर (आबू पर्वत से १५ कि. मी. में) समुद्रतल से १,७१० मीटर की ऊंचाई पर स्थित, १०२ मीटर लंबी दूरबीन, १०. स्वीडन ने भारत को ५-० से हराया, ११. गैरी कैस्पारोव (सोवियत) खिलाड़ी कार्पोव ने हार मानी, १२ . यह टर्बूहेलर का चित्र है। अस्थमा के रोगियों के लिए उपयोगी। यह स्वीडन में बिकता है। शीघ्र ही यह अन्य देशों के बाजारों में भी आ जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़े पर बैठकर फूलों को नहीं देखना चाहिए

चीन में यह कहावत खूब प्रचलित है कि 'घोड़े पर बैठकर फूलों को नहीं देखना चाहिए।'

इस कहावत के पीछे यह लोककथा प्रसिद्ध है। बहुत समय पहले एक नगर में गुईलैंग नामक लंगड़ा युवक रहता था, वह ठीक से चल नहीं पाता था।

एक बार गुईलैंग के मन में विवाह करने की इच्छा उत्पन्न हुई लेकिन लंगड़ा होने के कारण उसके साथ कोई सुंदरी विवाह करने के लिए तैयार नहीं होती थी। वह युवक समस्या के समाधान के लिए अपने मित्र हुआहेन के पास पहुंचा। हुआ ने मित्र की समस्या की गंभीरता को जाना। उसने टेढ़ी नाकवाली येकिंग नामक लड़की के लिए गुईलैंग को योग्य वर समझा।

एक दिन हुआहेन ने अपने मित्र गुईलैंग के लिए व्यवस्था की कि वह अपने लंगड़े पैरों के कारण घोड़े पर बैठकर अपनी मंगेतर के घर के सामने से गुजरे, जिससे उसकी वास्तविकता छुप जाए। गुईलैंग को यह उपाय बहुत भाया। वह तुरंत ऐसा करने के लिए तैयार हो गया। उधर हुआहेन ने येकिंग के समक्ष एक प्रस्ताव रखा। उसने उसे गुईलैंग के बारे में बताया लेकिन उसके लंगड़े होने के दोष को छिपा गया। उसने येकिंग से कहा, 'कल सुबह मेरा मित्र तुम्हारे घर के सामने से घोड़े पर निकलेगा। तुम उस समय अपने घर के द्वार पर खड़ी रहना। नाक का दोष छिपाने के लिए फूलों का एक गुच्छा नाक के आगे कर लेना।' येकिंग भी अपना विवाह न होने के कारण परेशान थी। वह हुआहेन का प्रस्ताव मान गयी।

दूसरे दिन नियत समय पर गुईलैंग सज-धजकर, एक घोड़े पर बैठकर येकिंग के घर के सामने से निकला। उधर येकिंग भी सुंदर वेशभूषा में सजी-धजी अपने घर के द्वार पर खड़ी थी। वह बड़ी अदा के साथ फूलों के गुच्छे से अपनी नाक का दोष छिपाये हुए थी।

गुईलैंग और येकिंग ने एक दूसरे को देखा। वे परस्पर प्रभावित भी हुए। अब वे विवाह में विलंब नहीं करना चाहते थे।

एक दिन दोनों का विवाह भी हो गया। विवाह के दौरान भी दोनों अपने-अपने शारीरिक दोष छिपाये रहे। पर कब तक वे ऐसा कर सकते थे। एक दिन रहस्य खुल ही गया। गुईलैंग हुआहान पर बेहद नाराज हुआ। और येकिंग भी कम कुपित नहीं हुई। पर अब क्या हो सकता था!

जब लोगों को इस घटना का पता चला तो उन्होंने एक कहावत बना डाली—'घोड़े पर बैठकर फूलों को नहीं देखना चाहिए।'

—प्रस्तुति : वेणु गोपालन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीख

● ज्योतींद्र दवे

"ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसे देना तो सब चाहते हैं लेकिन लेना कोई पसंद नहीं करता ?" मुझसे मेरे एक मित्र ने पूछा।

"गाली", मैंने जवाब दिया।

"हें !—हां—पर मैं एक दूसरी वस्तु के विषय में पूछ रहा हूं।" मित्र ने मुझसे कहा।

"दूसरी तो ऐसी कोई भी वस्तु नहीं।" मैंने कहा।

"है, जरा विचार कर देखो।"

मैंने विचार करके देखा, पर मुझे कुछ सूझा नहीं।

"तू ही बता, मुझे तो कुछ सूझता नहीं।" आखिर ऊबकर मैं बोला।

"नहीं सूझता ? तुम्हारे-जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को भी नहीं सूझता ?"

"अपने बारे में तुम्हारी इस सुंदर राय के लिए मैं आभारी हूं, लेकिन ऐसी पहेलियां पूछने और उनका जवाब देने की मेरी आदत नहीं है और सच कहूं तो तू जो ऐसे व्यर्थ के प्रश्न पूछकर मेरा और अपना—दोनों का समय बरबाद करता है, वह भी मुझे पसंद नहीं। किसी साप्ताहिक या पाक्षिक को पढ़कर इस प्रकार के प्रश्न पूछने की बढ़ती हुई प्रथा का मैं कट्टर विरोधी हूं। हर जगह अपनी बुद्धि परखवाने के लिए मैं तैयार नहीं होता, इस साधारण-सी बात को तुम सब क्यों भूल जाते हो, यह मेरी समझ में नहीं आता और तू ऐसे व्यसन में पड़कर क्यों अपनी जिंदगी बरबाद कर रहा है। इसकी बजाय तू अगर कोई अच्छी-सी नौकरी तलाश करके उसमें अपना मन लगाये तो तेरा और तेरे परिवार का भला हो और मेरे-जैसे मित्रों को भी कुछ फायदा हो। उपयुक्त शब्द ढूंढ़ने के लिए वर्ग पहेलियों, शहरों और गांवों के, जानवरों और लेखकों के नाम खोजने की प्रतियोगिताओं तथा सिनेमा के अभिनेता और अभिनेत्रियों के नाम ढूंढ़ निकालने के मुकाबलों में भाग ले-लेकर कितने जवान पागल हो चुके हैं, यह तू जानता है ? अपनी यह लत तू अब छोड़ दे, नहीं तो पुलिस थाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने की नौबत आ जाएगी। और तब भाभी बिचारी की क्या दशा होगी, उसकी मैं कल्पना कर सकता हूं। मुझे एक मित्र के नाते तुझे यह भली सीख देनी ही चाहिए।"

"बिलकुल! बिलकुल!" उत्साह में भरकर मेरा मित्र बोला, "बिलकुल सही बात है!"

"तू चाहे तो मजाक समझ, पर है सही ही बात।"

"मैं भी गलत नहीं कह रहा।"

"मेरी सीख हमेशा अनुभव पर आधारित होती है।"

"पर मैं तुम्हारी सीख के बारे में नहीं कह रहा।"

"तब?"

"यही कि मेरे सवाल का जवाब मिल गया। पेपरवाले की बात बिलकुल सही है।"

"तू क्या कहना चाहता है? मैं समझा नहीं।"

"तुमने मुझे अभी-अभी क्या दी?"

"कुछ नहीं, पर अब कुछ थप्पड़-जैसा देने को मन चाहता है!"

सीख देना सबको अच्छा लगता है, पर सीख लेना कोई नहीं चाहता। जितनी सीख दी जाती है, यदि उतनी ली भी जाती तो संसार ऐसी स्थिति में पहुंच गया होता कि किसी को किसी से सीख लेने या उसे देने की जरूरत ही नहीं रह जाती!

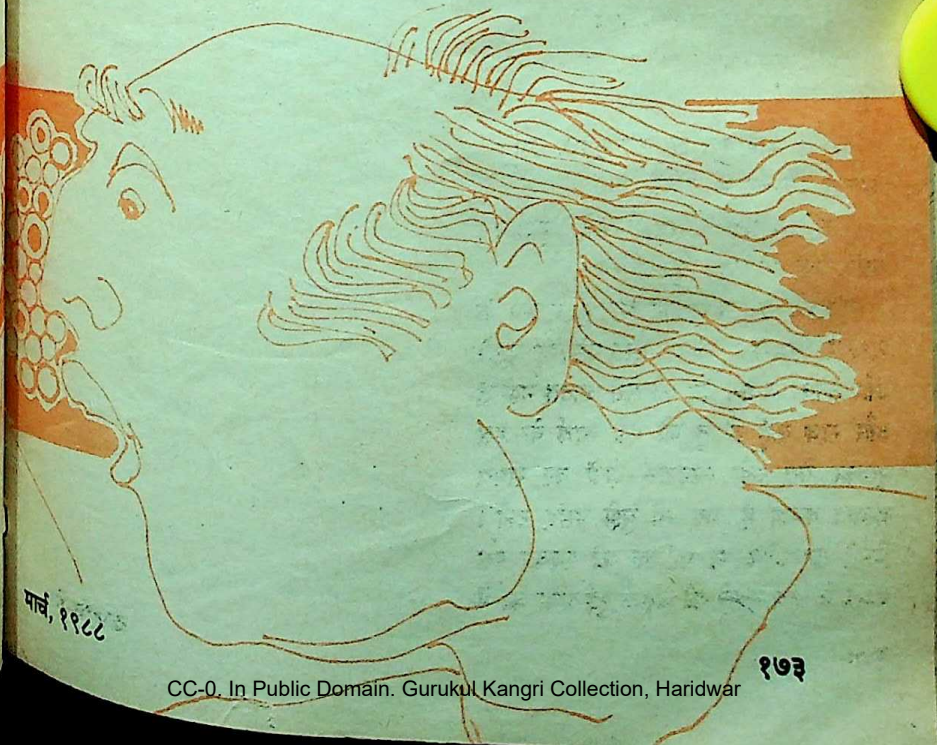

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों, तुमने कहा न कि एक मित्र के नाते. . ."

"हां, एक मित्र के नाते मैंने तुझे सीख दी. . ."

"बस, वही तो. . .क्या ?"

"यही है मेरे प्रश्न का उत्तर।"

"किस प्रश्न का ?"

"मैंने शुरू में पूछा था न, वही—ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसे देना तो सब चाहते हैं लेकिन लेना कोई पसंद नहीं करता ? उस सवाल का जवाब है—यही 'सीख'।"

"अभी भी तेरे मगज में वही बात घूम रही है ?"

"हां, पर इसमें बुरा क्या है ? अभी-अभी तुमने मुझे कैसी बढ़िया सीख दे डाली !" कहकर वह हंस पड़ा।

सीख ऐसी ही चीज है, जिसे हम अनजाने ही सामने वाले आदमी को देने लग जाते हैं। मैं खुद जाने-अनजाने दूसरे लोगों को दी हुई अपनी सीखों को इकट्ठा करके यदि उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित करूं और फिर उन्हें पढ़कर देखूं तो अपनी अगाध विद्वत्ता से खुद ही चकित रह जाऊंगा। थोड़े से विषयों के विषय में थोड़ा-सा जानता हूं पर अधिक विषयों में तो केवल अज्ञमात्र हूं, फिर भी किसी भी विषय में किसी को कोई भी सीख न दी हो, यह मैं शपथपूर्वक कहने को तैयार नहीं।

सीख देना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। बचपन से ही इस वृत्ति का विकास होने लगता है। जवान जब बूढ़ों को सीख देते हैं तो बूढ़े रोष से भर उठते हैं किंतु इसका क्या कीजिए कि बच्चे भी बड़ों को सीख देने के शौकीन होते हैं। अभी-अभी माथे पर हाथ रखकर लेखक के विचार से बैठा था, उस समय पास में पांच वर्ष की छोकरी खड़ी थी। फौरन मुझे सीख दे डाली—'माथे पर हाथ रखो। माथा दुखता हो तो बाम मलो, सूज गयी हो तो बाम चुपड़ो !'

सीख देने की वृत्ति परोपकार वृत्ति का एक प्रकार है। मनुष्य जाति स्वार्थी है, किन्तु ऐसा कहते हैं लेकिन यह अन्यायपूर्ण निर्णय है, मनुष्य जन्म से ही परोपकारी होता है। दूसरों के लिए कुछ कर गुजरे, हमेशा उसकी इच्छा होती है। अपने पीछे जगत में कुछ छोड़ता जाऊं जैसे कीर्ति, प्रतिष्ठा, पैसा, पुत्र या पुत्र—इसकी उसे अभिलाषा रहती है। सब प्रकार के दानों में ज्ञान-दान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। और सीख के द्वारा ज्ञान का दान आसानी से हो सकता है। जो अपने पास न हो उसका दान नहीं हो सकता, इस सिद्धांत का यह अपवाद है। ज्ञान ऐसी वस्तु है कि अपने पास वह हो या न हो तो भी उसका दान हो सकता है।

सामान्यतः हरेक मनुष्य को सीख देना अच्छा लगता है। परोपकार वृत्ति के साथ-साथ इससे उसकी अहं वृत्ति की भी तृप्ति होती है। सीख देने वाला व्यक्ति बिना मेहनत या फिर थोड़ी-सी मेहनत से ही उच्चता को प्राप्त हो जाता है। दूसरों को सीख देते समय मनुष्य को लगता है कि—'मैं भी कुछ हूं।' 'मैं न होता तो इस बिचारे का क्या होता ?'—उसे ऐसा महसूस होता है। सीख देते वक्त हमें अपने जीवन का ध्येय समझ में आ जाता है। हम अवतार लिये बिना जगत में किसलिये आये, पथभ्रष्ट हो मर जाते, यह हम समझ जाते हैं।

कार्यसिद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना अनुभव (यथार्थ अथवा कल्पित) व्यर्थ नहीं गया, ऐसी प्रतीति होने लगती है, जगत में आकर हम बहुत अंधकार में भटके, गढ़े में गिरे, ठोकरें खायीं, धक्के खाये लेकिन ये सब व्यर्थ नहीं गया। अंधेरे से उजाले में कैसे आये। गढ़े में गिरने से किस तरह बचे, ठोकर और धक्के खाने से सुरक्षित कैसे रहे, यह सारी बातें हम दूसरों को सीख देते वक्त समझा सकते हैं। इससे अपनी भूलों का, अपने संकटों का और साथ ही साथ अपना खुद का भी महत्त्व बढ़ जाता है।

कौन किसको क्या सीख दे, इसका कोई नियम नहीं है। आम तौर पर वृद्ध, अनुभवी और विद्वान अपने से छोटों, बिन-अनुभवी और अज्ञानियों को सीख देते हैं, ऐसा हम मानते आये हैं। परंतु वस्तुतः ऐसा है नहीं। जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं, मैंने लगभग हर विषय में बहुतों को सीख दी है। बहुत बार मैंने डॉक्टर को—वह भी होशियार माने जानेवाले डॉक्टर को बिन मांगे यह सलाह दी है कि वह कौन-सी दवाई दे! मुझे किस विषय पर और किस शैली में लेख लिखना चाहिए इस बारे में साहित्य से अनभिज्ञ अनेक लोगों ने अनेक बार उपदेश दिया है।

कन्या न मिलने के कारण आजीवन कुंवारा रहने वालों को मैंने कौन-सी कन्या पसंद करनी चाहिए और विवाह कब करना चाहिए—इस विषय पर सलाह देने को उत्सुक होते देखा है। विटामिन का नाम भी जिसने सुना नहीं, तथा दूध, दही, आलू, केला, कद्दू वगैरा में क्या गुण होते हैं इसका भी जिसे ज्ञान नहीं, वह मेरा नौकर मुझे क्या खाना चाहिए और क्या नहीं—की बार-बार सलाह देता है। बीवी को कैसे काबू में रखा जाए इसके बारे में आजन्म कुंवारे मर्द और बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार किया जाए, इस विषय में निस्संतान महिलाएं सबसे अधिक सलाह देती हैं। यह सामान्य अनुभव की बात है। इस तरह सीख देने में योग्य-अयोग्य का विचार नहीं किया जाता। साथ ही स्थान और समय का विचार भी इस बारे में करना जरूरी नहीं है।

परंतु मानव-स्वभाव ऐसी उल्टी खोपड़ी का है कि सीख देना सबको अच्छा लगता है पर सीख लेना कोई नहीं चाहता। हमारा स्वभाव ही ऐसा है कि यदि कोई हमें अमुक काम करने की सलाह दे और वह काम करना चाहे हमें पसंद भी हो तो भी हमारा पहला निश्चय उसे न करने का ही होता है। जितनी सीख दी जाती है, यदि उतनी ली भी जाती तो संसार अब तक ऐसी स्थिति में पहुंच गया होता कि किसी को किसी से कोई भी सीख लेने या उसे सीख देने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

बाहर घूमने जाना बहुत अच्छा है और मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद भी है, फिर भी घूमने जाने के बारे में मुझे इतनी बार इतने महानुभावों ने सलाह दी है कि अब मेरा मन कभी घूमने जाने को नहीं करता अपना शरीर ठीक करने और हो सके तो उसे पहलवानों-जैसा बनाने की मुझे स्वाभाविक इच्छा होती है, परंतु इस बारे में बार-बार उपदेश सुनकर मैं अब अपने शरीर के प्रति उपेक्षा भाव रखने लगा हूं।

मेरे पास एक पुराना पर बहुत बढ़िया शब्दकोश है। संयुक्त परिवार में कलह के कारण जैसे सगे भाई अलग-अलग होने लगते हैं, वैसे ही उसके पन्ने दिन-प्रति-दिन उखड़कर जुदा-जुदा होते जा रहे हैं। उन्हें मजबूत जिल्द में बंधवाने के लिए मैंने उन्हें बाहर निकाला ही था कि एक मित्र ने देख लिया, बोला, "तुम इसकी जिल्द क्यों नहीं बंधवाते ? देखो ना, पन्ना-पन्ना अलग हो गया है !"

'दिमागी कसरत' के उत्तर

१. केवल एक।
(क्योंकि एक नोट डालने के बाद जेब खाली नहीं रहेगी)

२. ४७·२५ सें मी.

३. एक। केवल सुरेखा सागर तट की ओर जा रही थी। शेष सभी लोग सागर तट की ओर से आ रहे थे।

४. कभी नहीं। चूक गये न। जल स्तर जितना बढ़ेगा जहाज उतना ही ऊंचा उठ जाएगा। अतः पानी से छेद की ऊंचाई आठ फुट ही रहेगी।

५. ७४३ बच्चे

६. बरसात नहीं हो रही है। सिर्फ सूर्य चमक रहा है।

देखूंगा," मैंने जवाब दिया और जिल्द बंधवाने का विचार मुल्तवी कर दिया। थोड़े समय पश्चात् जिल्द बंधवाने के लिए उसे लेकर फिर बाहर निकला तो रास्ते में एक परिचित मिल गये। उन्होंने पुस्तक देखी तो कहा—"तुम इसकी जिल्द बंधवा लो। बहुत बढ़िया डिक्शनरी है। मेरा एक जिल्दसाज जान-पहचान का है, कहो तो उसके यहां ले आऊं ?"

मैंने जवाब दिया, "यह जिल्द बंधवाने लायक पुस्तक नहीं है, बहुत पुरानी हो गयी है।" और मैं ज्यों का त्यों घर वापस लौट आया। इसके बाद तीनेक बार उस पर जिल्द चढ़वाने का विचार मेरे मन में आया पर बार-बार मित्रों की सलाह मिलने के कारण खीझकर अब तक उस पर जिल्द नहीं बंधवा सका।

इतना होते हुए भी कितनी ही बार हम विशिष्ट संयोगों में सलाह लेने को तैयार हो जाते हैं लेकिन तब अलग-अलग तरह की सलाहों का ऐसा सैलाब उमड़कर आता है कि हम घबरा उठते हैं। एक ही विषय पर इतने-इतने प्रकार की सलाहें मिलती हैं कि हम अब किस सलाह पर चलें, इस बारे में सलाह लेने के लिए किसी अन्य की सलाह लेनी पड़ती है !

लेकिन अनेक सलाहें लेकर और देकर मुझे अब ऐसा लगता है कि सबको दी जाने योग्य सीख केवल एक ही है और वह यह कि—'किसी को सीख देना नहीं और किसी से सीख लेना नहीं।'

प्रस्तुति : लक्ष्मीचंद्र गुप्त

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिमागी कसरत

● हरीश चन्द्र संसी

स्वस्थ शरीर का जीवन में एक विशेष महत्व है। जिस प्रकार शरीर के विकास के लिए कसरत आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क को चुस्त रखने के लिए दिमागी कसरत आवश्यक है। लीजिए पाठक इसका आनंद उठाएं—

१. बलजीत की खाली जेब में एक-एक करके कितने नोट डाले जाएं कि वह खाली न रहे ?

२. शोभाराम ने कपड़ा नापने वाले मीटर के दोनों सिरों को सवा दो-सवा दो सेंटीमीटर घिस दिया था।

कल ही भोलाराम उसकी दुकान से पौन ग्यारह मीटर कपड़ा लेकर आया है। बताइए उसे कुल कितना कपड़ा मिला ?

३. सागर तट की ओर जाती सुरेखा को सामने से एक बस आती दिखायी दी। उसमें १६ बच्चों और २४ महिलाओं सहित कुल ७२ सवारी सवार थे। बस के पीछे आ रही २ साइकिलों पर ३ आदमी और एक महिला थी। बताइए सागर तट की ओर कुल कितने लोग जा रहे थे ?

४. एक तरंगवाहक जहाज 'लिदेरूग' टकरा जाने के कारण यात्रीवाहक जहाज 'एम वी दिलीप' के बाएं भाग में एक बड़ा सा छेद हो गया था। सागर तल से यह छेद आठ फुट ऊंचा था। चूंकि सागर में उस समय ज्वार था, इसलिए प्रतिदिन डेढ़ फुट की गति से जल-स्तर बढ़ रहा था। बताइए छेद तक पानी पहुंचने में कितना समय लगेगा ?

५. बाल दिवस के अवसर पर 'पिग्मी सर्कस' वालों ने शाम के शो में बच्चों को विशेष रियायत दी थी। बच्चों का टिकट केवल एक ही रुपये का था। हां उनके साथ आयी अध्यापिकाओं को दस रुपये का टिकट लेना था। चूंकि विशेष दिवस था इसलिए अन्य दर्शकों को हतोत्साहित करने के लिए टिकट की दर ५१ रुपये रख दी गयी थी। फिर भी कुछ दर्शक शाम का शो देखने पहुंच गए थे। ८०० सीटों का पंडाल पूरा भर गया था। उस शो में भी 'पिग्मी सर्कसवालों' की कुल १६०० रुपये की टिकटें बिकीं। बताइए हाल में कितने बच्चे थे।

६. छोटे से शैड के नीचे १७ व्यक्ति खड़े हैं ! फिर भी वे नहीं भीगे। कैसे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि बनने का नुस्खा

● डॉ. लक्ष्मीशंकर व

काशी तो भगवान शंकर की नगरी है। यहां गंगा की धारा के साथ ही हास्य की गंगा भी प्रवाहित होती है। इसी नगरी में गंगा के उस पार रेती पर छप्पर डालकर एक बड़े प्रतिभाशाली कवि रहते थे। उन्होंने बारह कनस्तर विद्या पढ़ी थी। कवि चच्चा जब वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनकी कुटी में एक किनारे बारह कनस्तर रखे थे। किसी पर रस, किसी पर अलंकार, किसी पर नायिका भेद आदि लिखा था। जिस कनस्तर पर जो विषय लिखा होता, उसमें उसी विषय के ग्रंथ भरे पड़े थे। गुरु महाराज कुटी के बाहर रखे कनस्तर से एक ग्रंथ निकालकर अवलोकन कर रहे थे। सामने पिंजड़े में एक तोता पढ़ रहा था—'जगण, मगण,
लाटानुप्रास, छेकानुप्रास जगण मगण.
. . टें टें।'

बड़े अनुनय-विनय से कवि चच्चा ने महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। महाराज सदा पद्य में ही बोलते थे। उन्होंने चच्चा के कान में मंत्र फूंककर महाकवि बनने का पहला पाठ इस प्रकार पढ़ाया—

विनय शील उर धारि छांड़ि विद्या को गर्व
गुरु चरनन में बैठि पिये, पिंगल को दर्व
लिखि फारे फिर लिखे लाख खरों पर कर्व
तब कविता को राम कृपा कछु पावे दर्व

गुरु-कृपा से कविता करने में कवि चच्चा को दिन-दूनी रात चौगुनी सफलता मिलने लगी। उनकी यशोगाथा चारों ओर फैल गयी। वे चच्चा से महाकवि चच्चा हो गये। उनकी श्रीमतीजी ने देखा कि महाकवि को घर-परिवार की कोई चिंता ही नहीं। वे रात-दिन कविता ककहरा पढ़ते। नित्य नयी कविता की रचना कर गर्व से फूले नहीं समाते। घर में मुर्गे

एक सुबह सेंट पॉल ने देखा कि स्वर्ग और नरक के बीच की चाहरदीवारी एक जगह से टूटी पड़ी है। उन्होंने तत्काल नरक से शैतान को बुलाया और कहा, "सारे ठेकेदार तुम्हारे ही पास हैं, इसलिए किसी ठेकेदार से कहकर इस दीवार को फौरन ठीक करा दो।"

"नहीं, मैं नहीं ठीक करा सकता। मेरे ठेकेदारों को बिलकुल फुरसत नहीं है, उनके पास बहुत काम पड़ा है।"

"देखो, चुपचाप ठीक करा दो, नहीं तो मैं तुम पर मुकदमा ठोक दूंगा।"

"मुकदमा ठोकोगे, ठोक दो, लेकिन यह सोच लेना कि मुकदमा लड़ने के लिए वकील कहां से लाओगे? वकील तो सब मेरे पास हैं।"

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लकड़ी की उन्हें तनिक चिंता न थी।

महाकवि चच्चा की श्रीमती को कहीं से पता लग गया कि उनके एक रिश्तेदार पुलिस इंसपैक्टर हैं। श्रीमतीजी ने उन्हें जब खबर दी तो उन्होंने महाकवि चच्चा को बुलवाया और पुलिस-विभाग में नौकरी दिलाने का आश्वासन भी दिया। महाकवि चच्चा बड़े स्वाभिमानी कवि थे। नौकरी करना वे कवि-कर्म के सर्वथा विपरीत मानते थे। अतः उन्होंने दरोगा बनने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। वे काशी लौट आये और अपनी श्रीमती से कहा, 'मैं देश की उन्नति के लिए और राष्ट्र-निर्माण के लिए काव्य-साधना करूंगा।'

पत्नी ने देखा कि महाकवि चच्चा पर कविता का भूत चढ़ा हुआ है। उन्होंने लाख ऊंचा-नीचा समझाया पर महाकवि चच्चा अपनी टेक पर अड़े रहे। अंत में पत्नी ने उन्हें काव्य की भाषा में डिगाने की जो कोशिश की, उसका उल्लेख महाकवि ने इस प्रकार किया है—

वैद्य हकीम मुनीम महाजन, साधु पुरोहित पंडित पोंगा,
लेखक लाख मरै बिनु अन्न, चच्चा कविता करि का सुख भोगा।
पाप की पुण्य भलो की बुरो, सुरलोक की रौरव कौन जमोगा,
देश बरै की बुताय पिया हरखाय हिया तुम होहु दरोगा।

महाकवि चच्चा जीवनभर अभाव में ही रहकर काव्य रचना के भाव में निमग्न रहे पर किसी को महाकवि बनने का नुस्खा नहीं बताया।

—पराड़कर संग्रहालय
के.-३१/५१, काल भैरव, वाराणसी

अध्यापक ने स्वर्ग-नरक की कहानी सुनाने के बाद छात्रों से पूछा, "तुम बता सकते हो कि भगवान कहां है ?" अध्यापक को उम्मीद थी कि छात्र कहेंगे कि भगवान स्वर्ग में हैं। लेकिन एक छात्र का जवाब था कि भगवान उसके गुसलखाने में रहते हैं।

अध्यापक ने आश्चर्य करते हुए पूछा, "कैसे ?"

"क्योंकि मेरे पिताजी रोज सुबह गुसलखाने के दरवाजे को थपथपाते हैं और वह अंदर से बंद मिलता है, तो कहते हैं, 'हे भगवान तुम अभी तक अंदर ही हो !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू बहा या जला जी में आवै सो कर

● राधावल्लभ शर्मा गौड़

पं. नत्थाराम शर्मा गौड़ का जन्म हाथरस के निकट दरियापुर ग्राम में एक संपन्न परिवार में चौदह जनवरी १८७४ को हुआ था। उनकी माताजी का नाम था इंद्रा एवं पिता का पं. भागीरथमल। नत्थारामजी की शिक्षा दरियापुर के एक निकटवर्ती स्कूल में अपर मिडिल तक हुई। सन १८८८ में उन्होंने द्वितीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय उनके मन में शिक्षक बनने की प्रबल अभिलाषा थी और इस दिशा में उन्होंने भरसक प्रयास भी किये। लेकिन उन्हें बनना कुछ और था।

उस्ताद चिरंजीलाल से संपर्क

कहा जाता है कि संगीत अखाड़े के उस्ताद झांगीराबाद निवासी इंदरमनजी नित्य प्रति देवी के दर्शन के लिए जाते थे। उन्हें देवी ने वरदान दिया था कि इस नगर के दक्षिण में कोई व्यक्ति जन्म लेगा। उसके नाम का प्रथमाक्षर 'न' होगा और वही उनकी कीर्ति को देशभर में फैलाएगा। जब नत्थारामजी हाथरस आये तो इंदरमनजी के अखाड़े के प्रमुख उस्ताद चिरंजीलालजी से उनका संपर्क हुआ। वे पंडितजी के सुरीले कंठ, मनोहर हाव-भाव एवं उनकी विद्वता से बहुत प्रभावित हुए और उ[illegible] मंडली में उन्हें एक कलाकार के रूप में [illegible] दिया।

उस समय हाथरस नगर में स्वांग-कला [illegible] बहुत ही प्रचार था। नगर के चारों दरवाजे [illegible] विभिन्न अखाड़े थे और उनके [illegible] स्वांग-मंडली बनाकर लोक नाट्य का [illegible] करते थे। उस समय के कलाकार अ[illegible] व्यावसायिक नहीं थे। वे अपनी [illegible] प्रशंसा के लिए मंडलियों में भिन्न-भिन्न [illegible] अभिनय करते थे, जो बहुत रसपूर्ण [illegible] कलात्मक होता था। सभी अखाड़ों में [illegible] स्पर्धा चलती रहती थी। परंतु उनकी [illegible] कोई समुचित साधन नहीं था। इसलि[illegible] अधिक समय तक सक्रिय न रह स[illegible]

उस्ताद इंदरमन के अखाड़े में

उस्ताद इंदरमन के अखाड़े की [illegible] उस्ताद चिरंजीलाल की दीक्षा व शि[illegible] पश्चात् नत्थारामजी ने इस कला की बारीकि[illegible] तकनीकी को भलीभांति समझा और [illegible] अनुकूल स्वयं कविता करना, समय के [illegible] सांगीत-पुस्तकों की रचना करना और [illegible]

कादम्बि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वांग की गायकी में पं. नत्थाराम शर्मा गौड़ अधिकतर करुण रस से ओत-प्रोत रागों में निबद्ध रचनाएं भाव-विभोर होकर गाते थे। उनके गायन और अभिनय से श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती थी !

मंच पर, जन-रुचि को अच्छी दिशा में परिवर्तित करते हुए, सफल अभिनय करना प्रारंभ कर दिया। साथ ही साथ उन्होंने मंडली में अच्छे-अच्छे कलाकारों का, जिन्हें सांगीत के अलावा शास्त्रीय गायन का भी अधिक ज्ञान था, चयन किया। फलतः एक प्रभावशाली व जनसाधारण को अपनी कला से मोहित करने वाले, 'जन-नाट्य मंच' का जन्म हुआ।

पठानकोट से कन्याकुमारी व पंजाब से असम तक तथा संपूर्ण राजस्थान व गुजरात में नत्थारामजी के स्वांगों की धूम मच गयी। जनसाधारण को उनका यह कला-कौशल बहुत ही प्रिय लगा और उसने सांगीत की इन पुस्तकों को पढ़ने के लिए, विशेषरूप से हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया।

जनता के कलाकार

स्वांग की गायकी में पं. नत्थाराम अधिकतर करुण रस से ओत-प्रोत भैरवी, असावरी, पीलू तथा देस जैसे रागों में निबद्ध रचनाएं भाव-विभोर होकर गाते थे। इन रचनाओं को सुनकर श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लग जाती है। स्वांग गायकी के चौबोला और छंद प्रमुख अंग हैं। नत्थारामजी इन्हें विभिन्न रागों में प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते। उन दिनों आज की तरह ध्वनि विस्तारक उपकरण नहीं थे, फिर भी अपनी बुलंद आवाज से भी वे श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किये रहते थे।

पं. नत्थाराम सच्चे अर्थों में जनता के कलाकार थे। जनता जब किसी को चाहती है तो उसके गौरव के लिए वह उसके चरित्र और जीवन के साथ अनेक किंवदंतियां भी जोड़ देती है। पं. नत्थारामजी के संबंध में तब यह किंवदंती प्रचलित थी कि अंगरेजों ने उनके दो खून माफ कर रखे थे।

पं. नत्थारामजी स्वांग के मंच पर इतने भाव-विभोर हो जाते थे कि दर्शकों को लगता था कि मंच पर अभिनय नहीं हो रहा है। साक्षात वही घटना घट रही है।

एक स्थान पर वे 'सां. मौरध्वज का स्वांग' खेल रहे थे। उसमें एक प्रसंग है, जिसमें साधुओं द्वारा अपने शेर की भूख मिटाने के लिए राजा मौरध्वज से उनके इकलौते पुत्र ताम्रध्वज के शरीर का मांस मांगा जाता है। वचनबद्ध होने पर राजा मौरध्वज और उसकी रानी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र के शीश पर आरा चला कर उसे दो भागों में चीर देते हैं—

दोनों ने आरे को जमा रक्खा कुंवर के शीश पर ।
वाहम लगे फिर खींचने संतोष कर जगदीश पर ।।
कोमल कुंवर के तन से एकदम खूं का फब्बारा चला ।
रानी व राजा कर कड़ी छाती रहे आरा चला ।।

इस प्रसंग को देखकर दर्शक-समुदाय रो पड़ा ।

राजा हरिश्चंद्र की सत्यवादिता, उनके प्रण-पालन की कहानी सर्वविदित है । राजा हरिश्चंद्र की कथा का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग वह है, जब डोम बने राजा हरिश्चंद्र अपनी पत्नी तारामती से अपने ही मृत पुत्र रोहित के अंतिम संस्कार हेतु मरघट-कर मांगते हैं । नत्थारामजी ने इस प्रकार शब्दों में बांधा है ।

बहरत :

"तू बहा या जला
जी में
आवै सो कर,
लें टका तुझसे कर का
न छोड़ेंगे हम ।
मेरा कीजै रहम,
मेरा कीजै रहम,
ऐसा कहते न आती
जरा भी शरम ।।
उदय अस्त का राज
धरम पै तजा,
किया दिल पै न
तब कोई रंजो अलम ।
अब टक एक पर
तू छुड़ाती धरम,
हा सितम हा सितम
हा सितम हा सितम ।।"

पं. नत्थारामजी की रचनाओं में विभिन्न कथानकों से, जनता को मनोरंजन के साथ-साथ उनसे विभिन्न प्रकार की शिक्षाएं भी मिलती हैं जिनसे नैतिकता, सच्चरित्रता व समाज चेतना जैसे सद्गुण पर्याप्त रूप से उन्नत होते हैं ।

इस लोकमंचीय शैली के दो प्रमुख स्थान— **हाथरस** व **कानपुर** नगर रहे हैं । कानपुर शैली कुछ भिन्न प्रकार की है, जिसके अंतर्गत स्त्री-पात्रों का अभिनय उन्हीं से अभिनीत कराया जाता था । परंतु पंडित नत्थारामजी के अभिनय में वह जादू था कि उनके स्वांग कानपुर में ही महीनों तक होते थे । वे जब तक जीवित रहे, तब तक नियमित रूप से श्रावणी पर श्री आनंदेश्वरजी के मंदिर में अपने स्वांग का नक्कारा बजवाकर वहां सांगीत प्रदर्शित करते रहे । हाथरस में श्री दाऊजी महाराज का मेला बड़ी धूमधाम से लगता चला आ रहा है । पंडित नत्थारामजी को प्रतिवर्ष कानपुर नगरी के सांगीत-कार्यक्रमों को छोड़ कर देव छट पर इस मेले में अवश्य आना होता था और मेले का समापन उनके स्वांग के खेल से ही होता था ।

—श्याम प्रिंटिंग प्रेस,
पं. नत्थाराम मार्ग, हाथरस २०४२०१

गुण मनुष्य के वश में होता है, प्रतिभा के वश में मनुष्य स्वयं होता है ।

—लॉवेल

गलती तो हर मनुष्य कर सकता है, पर उस पर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं ।

—सिसेरो

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनफेड़ (मम्पस)

इस रोग को आम भाषा में 'कनफेडे' या अंगरेजी में 'मम्पस' कहते हैं।

कारण : इस रोग को संक्रामक माना जाता है। इसका मूल कारण एक विशेष कीटाणु माना गया है। इसके अतिरिक्त और भी निम्नलिखित कारण होते हैं—

सर्दी लगना : दर्द, अधिक शीतलजल, मूली, खटाई आदि का सर्दी-जुकाम की अवस्था में भी सेवन करना। बहुत ठंडी हवा में बच्चों का खेलना विशेषकर जब पास पड़ोस में इस रोग से और भी बच्चे आक्रांत हो गये हों। यह रोग दो वर्ष से दस वर्ष की आयु के बच्चों में अधिकतर हो जाता है। और कभी-कभी महामारी का रूप भी धारण करता है।

लक्षण : इस रोग के रोगी को ज्वर हो जाता है। ज्वर १०० से १०४ फारेनहाइट के बीच में रहता है। कभी-कभी इससे भी तेज हो जाता है। खांसी, नाक से पानी चलना और सिरदर्द। कभी-कभी दस्त व कब्ज भी हो जाती है।

यों तो यह रोग सात या दस दिनों के बाद ठीक हो जाता है, परंतु यदि उचित रूप में परहेज न किया जाए या विरुद्ध पदार्थों का या अन्य प्रकार का अपथ्य किया जाए तो रोगी के रोग के लक्षण गंभीर भी हो सकते हैं।

सावधानी :

इस रोग में बच्चों को पूर्ण विश्राम में रखना चाहिए। खेलना या अधिक चलना-फिरना बिल्कुल बंद करना चाहिए।

उपचार :

१. चूना (बगैर बुझा) शुद्ध घी में मिलाकर यथास्थान सुबह-शाम लेप करें।
२. काली मिट्टी पानी में घोलकर यथास्थान लेप करें।
३. 'संजीवनी वटी' आधी वटी से एक वटी तक सुबह, दोपहर व रात गर्म पानी से सेवन करें।'
४. तुलसी के पांच पत्ते एक प्याला पानी में उबालकर रखें। दिन में चार बार दो-दो चम्मच पिलायें।

कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७. कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

कितना भारी है वायुमंडल !

पृथ्वी के चारों ओर विद्यमान हवा की मोटी पर्त को वायुमंडल कहा जाता है। वायुमंडल का ७८ प्रतिशत भाग नाइट्रोजन, २० प्रतिशत आक्सीजन, १ प्रतिशत कार्बन डाई आक्साइड तथा शेष १ प्रतिशत अन्य गैसों, जल वाष्प व धूल कणों से मिलकर बनता है। वैज्ञानिकों ने नाइट्रोजन, आक्सीजन तथा कार्बन डाई आक्साइड के अणुभारों के आधार पर गणना करके इसका भार पचपन करोड़ अरब मीट्रिक टन आंका है। इस भार का आधा भाग धरती की सतह से ३.५ मील तक के वायुमंडल का भार है।

दो महाद्वीपों में बंटा नगर

इस्तांबुल तुर्की का सबसे बड़ा नगर और बंदरगाह है। यह दुनिया के सबसे पुराने नगरों में गिना जाता है। इसका एक हिस्सा यूरोप महाद्वीप में तथा दूसरा हिस्सा एशिया महाद्वीप में स्थित है। अपनी इस विशिष्ट स्थिति के कारण काले सागर की तरफ खुलनेवाले सारे दरवाजों पर इसका कब्जा है। इस नगर का मुख्य भाग बास्पोरस खाड़ी स्थित एक तिकोने अंतरीप पर, यूरोप में स्थित है। एशिया में इस्तांबल का उपनगरीय भाग स्थित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

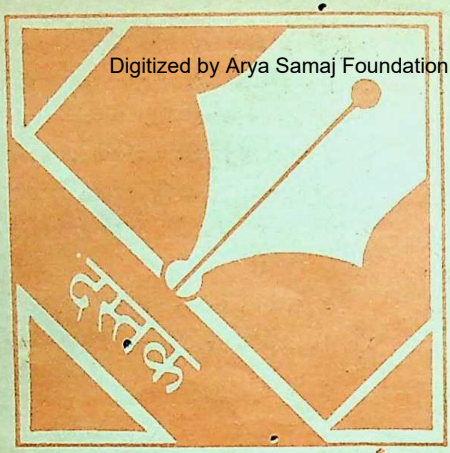

भगवान ही थे।

जब पिताजी की मृत्यु हुई थी, उस वक्त मेरी उम्र ९ वर्ष से कुछ कम ही थी। हंसता-खेलता संपन्न परिवार था हमारा। मुझ से ५ व ६ वर्ष बड़ी दो बहनें थी तो साढ़े चार वर्ष छोटा एक भाई भी था। मौत के एक माह बाद तो सब कुछ बदल गया। चार कमरों का आलीशान फ्लैट छोड़कर हमें एक छोटे से कमरे में आकर बसना पड़ा। अपने पराये सगे-संबंधी समान बटोरने में व्यस्त थे। मां हमारी इतनी सीधी थी कि कौन क्या ले जा रहा है, उसे इस बात की चिंता नहीं थी। उसे चिंता थी, सामान बहुत है इसे उतना तो होने दो कि एक कमरे में समा जाए। मां की चिंता रिश्तेदारों ने दूर कर दी।

किसी तरह दिन खिसक रहे थे। मां के पास जो जमा पूंजी थी वो तो पिताजी की बिमारी में लग ही गयी थी। अब तो शेष बर्तन और कुछ जेवर ही थे जो हमारी जीवन नैया को पार लगा रहे थे। मां के कमजोर कंधों पर कब तक हम चार जनों का बोझ पड़ा रहता ! वह तो टूटकर बिखर जातीं कि आशा की एक किरण ने [illegible] घर में प्रवेश किया। वह पिताजी का [illegible] सहपाठी था। मां ने भी उस दिन से पहले [illegible] नहीं देखा था। उसने बताया कि तीन रोज [illegible] ही उसे किसी ने बताया था कि दिलीप [illegible] सुखलाल नहीं रहे। मन नहीं माना तो [illegible] पता करता यहां तक चला आया।

उसने कहा, 'वह मेरा मित्र था। कॉलेज [illegible] दौरान ही किसी बात को लेकर वो रुठा [illegible] उस दिन के बाद हम मिले तो नहीं पर एक [illegible] की खबर अवश्य रखते रहे। मौत की [illegible] सुनकर बहुत दुःख हुआ और मैं यहां [illegible] आया। यहां आकर सारा हाल जान गया [illegible] मेरा नाम रमेश भारद्वाज है। मैं देवरिया [illegible] मिल में मैनेजर हूं। उसका मित्र होने के [illegible] मेरा कर्तव्य है कि तुम्हारी मदद करूं।

मां ने सब कुछ बता दिया। कुछ भी [illegible] छुपाया। वह दो दिन बाद आने को [illegible] कहकर चला गया। अपने वायदे के अनुसार वह दो दिन बाद लौटा। वह दोनों बहनों [illegible] 'गनपत राय मातृ सेवा सदन' भिवानी में [illegible] ट्रैनिंग की व्यवस्था करवाने के लिए ही [illegible] था।

'बच्चियां दो वर्ष की ट्रैनिंग करके अपने [illegible] पर खड़ी हो जाएंगी उसके बाद सब ठीक [illegible] जाएगा। हां, मैं भिवानी में ही तुम सब के [illegible] की व्यवस्था भी करवा दूंगा। लड़कियां [illegible] नर्सिंग होस्टल में ही रहेंगी। दो वर्ष की अवधि [illegible] में, मैं तुम्हें दो सौ रुपये हर माह भेजता रहूंगा। [illegible] कभी ज्यादा जरूरत हो तो लिख देना। [illegible] एक कार्ड दिया। उस पर उसका पता लिखा [illegible] था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सब भाइयों को आये दो वर्ष कब बीते पता ही नहीं चला। दोनों बहनों को वहीं नौकरी भी मिल गयी। मां ने उन्हें पत्र लिखवाया। चौथे रोज ही वह पहुंच गया। उसके हाथों में ढेरों सामान था। कपड़े, मिठाईयां इत्यादि। वह बहुत खुश था।मुश्किल से एक घंटा ही रुका होगा। चाय के एक कप से ज्यादा उसने कुछ नहीं लिया।

"अच्छा अब चलता हूं। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मेरे यार का परिवार खुशहाल स्थिति में दुबारा आ गया है। इन दोनों को खूब पढ़ाना। बच्चियों की शादी अच्छे घर हो यही कामना है।"

वह लौट गया। मां की आखों से आंसू नहीं मानो उस देवता के लिये फूल झर रहे थे। मैं उस चेहरे को आज भी नहीं भूला जिसने ऐसे समय में हमारे जीवन में दस्तक दी जब मेरी मां चार-चार बच्चों को लिए भविष्य के प्रति चिंतित थी। उसके बाद आज तक वह हमें ढूंढ़ने पर भी नहीं मिले। बाईस वर्ष पुरानी यह घटना आज भी प्रश्न चिह्न बनकर मेरे सामने मंडरा रही है, कहीं वो भगवान का रूप तो नहीं थे। हां...हां वो भगवान ही थे।

— एस. मोहन

रेल्वे हेल्थ यूनिट, हिसार (हरियाणा)

मां का विश्वास

सन १९८० के आसपास की घटना है। उस समय मेरी उम्र २१ वर्ष की थी। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी थी और मैं पांच भाइयों में सबसे बड़ा था। मेरे माता-पिता मुझे व मेरे से छोटे भाई को सदा समझाते रहते थे कि शराब कभी न पीना। वह बहुत गंदी चीज है। मैं अपने पिता के साथ दुकान पर बैठा करता था। मेरे काफी मित्र भी थे। दो या तीन बार मैंने अपने मित्रों के बहुत दबाव में आकर थोड़ी-सी शराब पी थी।

एक दिन मैं दोपहर के तीन बजे दुकान से घर आया, मैंने सुना, मेरी मां किसी महिला से बातचीत के दौरान कह रही थीं कि हमारे घर में और न ही घर से बाहर कोई मांस खाता है और न शराब पीता है; और विजय की तो मैं गारंटी लेती हूं, ये तो ऐसा है कि अगर कुछ गलत कर आये तब भी आकर बता देता है।

मां के इतने विश्वास को देख मुझे काफी ग्लानि हुई, और मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी मां के साथ विश्वासघात कर रहा हूं।

तब से लेकर आज के दिन तक मैंने कभी शराब छुई भी नहीं और न ही कभी भविष्य में छुअुंगा।

—विजय छाबड़ा

मॉर्निंग स्टोर्स समीप पूर्णिमा टॉकीज झुमरी तलैया

युवाओं के लिए यह स्तंभ न तो प्रेम-प्रसंगों के वर्णन के लिए है और न दर्शन संबंधी विचारों के लिए। इस स्तंभ के लिए रचनाएं भेजते समय कृपया ध्यान रखिए कि उनमें सम सामयिक जीवन का कोई उनका-अपना निजी प्रसंग या घटना और उससे उठनेवाले प्रश्न हों। रचना ढाई सौ शब्दों से अधिक न हो।

इस स्तंभ के लिए रचना भेजते समय लिफाफे पर यह अवश्य लिखें— ,

'दस्तक के लिए'

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिड़ंत पागल घोड़े और भूरिया शेर के बीच

बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के समय में एक घोड़ा ऐसा था, जिससे शेर, हाथी और दूसरे जानवर तक पनाह मांगते थे। कहते हैं कि यह घोड़ा कभी बादशाह को बड़ा प्यारा था, किंतु फिर उसका दिमाग कुछ पगला गया। खूंटे से छूटते ही उसने कई लोगों को मार डाला। उसकी दहशत से लोग कांपने लगे। ऐसा तभी होता, जब उसके मस्तिष्क की कोई विशेष नस फड़कती। फिर भी, उसे अस्तबल में अलग-थलग रखा जाता। साइस, उसे दूर से दाना-पानी देता।

नस फड़कते ही वह भाग छूटता और सामने जो भी आता उसे मार डालता, यही नहीं, वह मृतक की हड्डियां तक चबा जाता।

उसकी इस हिंसात्मक प्रवृत्ति की खबर सुनकर बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे शेर से लड़ने के लिए शाह महल के हजारी बाग में पेश किया जाए। बादशाह का विचार था कि शेर से टकराकर घोड़ा स्वयं ही काल का ग्रास बन जाएगा। लेकिन, उसके मरने पर दृश्य भी कम रोमांचकारी नहीं होगा। इसीलिए वह परकोटे में आया और लड़ाई शुरू करवा दी।

उसके आश्चर्य की तब सीमा न रही, जब उसने देखा कि घोड़ा शेर से लड़ने के लिए तैयार हो गया है।

दोनों में घमासान लड़ाई हुई और शेर अनेक बार छाती और जबड़ों के बल ऊंचाइयों से नीचे आकर गिरा और घायल हुआ। उसके गिरते ही घोड़ा शेर के जबड़ों पर दुलत्तियां अलग से जड़ देता। अंततः वह शेर, जिसने अनेक लड़ाइयां जीत रखी थीं और जो बादशाह को बहुत प्यारा था, मुंह घुमाकर कटहरे में वापस लौट गया। दूसरे शेर ने लड़ाई ही नहीं लड़ी। हुक्मे-शाही के बाद तीन गुस्सैल अरने-भैंसे छोड़ गये, किंतु वे भी चुपचाप खड़े रहे। घोड़े ने घूमकर उन तीन में से एक के मुंह पर अकारण ही दुलत्ती झाड़ दी। दूसरे दो भैंसे गरदनें हिलाने लगे, मानो घोड़े के इस साहस का समर्थन कर रहे हों।

अब्दुल हलीम 'शरर' द्वारा लिखित पुस्तक 'गुजिश्ता-लखनऊ' में एक पागल घोड़े का वर्णन मिलता है, जो कि विश्वसनीय नहीं लगता। फिर भी पुस्तक में वर्णित उस प्रसंग को पाठकों के मनोरंजन के लिए यहां उद्धृत किया जा रहा है। संभव है उक्त पुस्तक के लेखक ने यह प्रसंग मात्र मनोरंजन हेतु ही लिखा हो—

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसीरुद्दीन हैदर घोड़े की इस बहादुरी पर अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसने हुक्म दिया कि 'हुक्मे-बादशाही के मुताबिक इस जवां मर्द घोड़े को शाही अमां में रखा जाए और इसकी सेहत पर भी खास नजर रखी जाए।'

अब इसी प्रसंग को 'शरर' के शब्दों में पढ़िए :—

...मगर सबसे ज्यादा हैरतनाक यह चीज है कि नसीरुद्दीन हैदर बादशाह के जमाने में एक मरतबा एक घोड़े के मुकाबले में शेरों को बड़ी ज़क उठानी पड़ी। यह अजीबो-गरीब घोड़ा था जो मरदम आजादी (हिंस्र-प्रवृत्ति) में दरिंदों से भी बढ़ गया था। मजाल न थी कि कोई आदमी उसके पास जाए। दाना दूर से उसकी ओर बढ़ा दिया जाता। और जब छूट जाता, बहुत से आदमियों को हिलाक कर डालता। जो सामने आता, उसे मार के हड्डियां-पसलियां तोड़ डालता और लाश ऐसी बिगाड़ देता कि पहचानी न जाती।

मजबूरन तजवीज़ हुई कि इस पर शेर छोड़ दिये जाएं। चुनांचे भूरिया नाम शेर जो बादशाह को आजीज था, और अकसर बाजियां ले चुका था, उस पर छोड़ा गया। घोड़ा बजाय इसके कि शेर से खौफ़ खाये, लड़ने को तैयार हो गया। और जैसे ही शेर जस्त (उछलकर) करके उस पर आया, उसने इस तरह अगला जिस्म झुकाया कि शेर पुश्त पर गिरा और उसके पुट्ठों में नाखूनों के खंजर पेवस्त कर दिये। साथ ही घोड़े ने इस जोर से पुश्तक (दुल्त्ती) मारी कि शेर कलाबाज़ियां खाता हुआ दूर जा गिरा मगर फिर संभला और चंद मिनट इधर-उधर ता दे के फिर जस्त करके घोड़े पर जा रहा। घोड़े ने फिर वही हरकत की कि अगला जिस्म झुका दिया। शेर पुट्ठों पर जा पड़ा और इरादा किया कि उसे पंजों से गिरा के मार डाले, मगर घोड़े ने अबकी इस ज़ोर से दुल्त्ती झाड़ी कि शेर के जबड़े टूट गये और चारों खाने-चित दूर जा गिरा, लेकिन इस चोट से शेर ने ऐसी हिम्मत हार दी थी कि घोड़े की तरफ पीठ फेर के भागने लगा, और तमाशाई हैरान रह गये।

तब दूसरा उससे बड़ा शेर छोड़ा गया। उसने रुख ही न किया। मजबूरन वह शेर भी हटा लिया गया और तीन अरने-भैंसे छोड़े गये। वह भी घोड़े से न बोले और घोड़े ने बढ़ के, बे-छेड़े एक भैंसे पर इस ज़ोर से दुल्त्ती झाड़ी कि वह भैंसा तेवरा गया। और उसके दोनों साथी इस तरह सर हिलाने लगे, गोया दाद दे रहे हैं कि 'हां! यह हुई।'

आखिर घोड़े की जानबख्शी की गयी और नसीरुद्दीन हैदर ने कहा, 'मैं इसके वास्ते एक आहनी (लोहे का) कटहरा बनवा दूंगा और इसकी परवरिश का भी साभान कर दूंगा। अब्बा जानी के सर की कसम, यह बड़ा बहादुर है।'

प्रस्तुति : नीना गर्ग

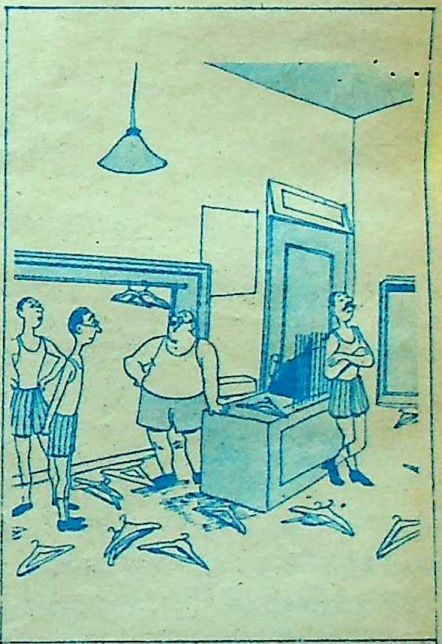

"इससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती है कि तन के कपड़े तक बिक गये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

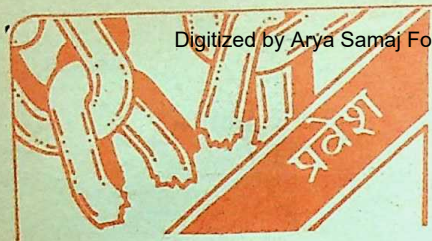

'प्रवेश' में इस बार हम परिचय करा रहे हैं राकेश रेणु से । इन्होंने अपनी कविताओं में युवा मन व अधेड़ वय के व्यक्ति के अंतरद्वंद को अभिव्यक्ति दी है । इनके इस प्रयास को आप देखिए— संपादक

विछोह का दर्द

तैंतालिस साल के साथ
उसके बाद
छप्पन वर्ष की उम्र में
विछोह का दर्द
कैसे समझोगे तुम !

कैसे समझोगे तुम
दर्द के उस सहबोध को
जो तुम्हारे जन्म के वक्त
बांटा करता था वह
—घंटों मेरे सिरहाने बैठकर—
रात-रात भर जागकर—
और मैं
भूल जाती थी अपना दर्द
जब आ टपकती थी
कोई गर्म बूंद ऊपर से
मेरे कपाल पर !

कैसे समझोगे तुम
स्नेह के उस गठजोड़ को
जिससे बंधकर
वह जोड़ता था रोटियां
दिन भर भटकने के बाद
और निगलता था कुछ निवाले
नून-प्याज के साथ
मुझे, तुम्हें खिलाने के बाद !

तुम नहीं समझ सकते
कि मरने के कुछ महीने पहले से
वह किस हद तक
अंतर्मुखी हो गया था
अपनी बहू के दुर्व्यवहार से
और किस तरह
दिया करता था मुझे
झूठी सांत्वना
देर रात गये
सबके सो जाने के बाद !

तुम कुछ नहीं समझ सकते
अपनी 'कंप्यूटर-एडेड' बुद्धि से
बीवी की चूड़ियां
गिन पाने के सिवा !
तैंतालिस साल के साथ
और उसके बाद
विछोह का दर्द
तुम नहीं समझ सकते !

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठो सिद्धार्थ

उठो
उठो सिद्धार्थ !
आज फिर
आहत कर गया है
कोई उच्छृंखल बाण—
एक निर्दोष राजहंस
बचालो उसे
संभालो सिद्धार्थ !
उठो सिद्धार्थ !!
बोधिवृक्ष
जहां तूने
ज्ञानतत्व पाये
मानवता के संदेश सुनाये
वहीं पड़ा है आज
एक दमित-शमित
नग्न नारी शव !
कोई कफन उसपर
डालो सिद्धार्थ
उठो सिद्धार्थ
शब्द तुम्हारे
झूठे पड़ गये
उपदेश अप्रासांगिक
कुछ नये जीवनतत्व
निकालो
कुंठित हो रही मानवता
बचालो
बचालो सिद्धार्थ
उठो सिद्धार्थ

राकेश रघु

निर्माण का सुख

कहीं रह लो
इधर— इस कोने में
उस रोशनदान पर
या
अंगने में खड़े
नीम पर—
वह सारा तुम्हारा घर है !
कहा मैंने
फुदकती
तिनके जोड़ती
चिड़िया से

वह क्षणभर ठिठकी
कुछ सोचा
फिर जोर से हंस पड़ी
च्यूं-च्यूं करती—
संगीत बिखेरती
और जवाब दिया—
तुम क्या जानो
निर्माण का सुख !

आत्म-कथ्य

लिखना मेरे लिए स्वयं को जीना है । और कविता की विधा में लिखना, जीवन को जीने का एक तरीका । यदि मेरी कविताओं में कहीं जीवन दीख पड़े या विधा (काव्य) के स्थान पर जिंदगी का आभास हो, तो मैं इनको सफल मानूंगा ।

उप-संपादक, आजकल
प्रकाशन विभाग, पटियाला हाऊस, नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मल्लि

मृत्यु का भय

क. ख. ग., आगरा : मैं एक ३० वर्षीया विवाहित युवती हूं। दो बच्चे भी हैं, जिनकी आयु ७ वर्ष और ५ वर्ष है। कुछ महीने पहले मुझे लगा कि मेरा बदन जल रहा है। हाथ-पैरों में चीटियां-सी चल रही हैं, जोरों से चक्कर भी आ रहे थे। ऐसी हालत २-३ घंटे तक रही। डॉक्टरों को दिखाया तो किसी ने गैस्ट्रिक कहा, किसी ने उच्च रक्तचाप। कुछ ने कहा कि आप बहुत सोचती हैं, सोचना बंद कर दीजिए।' मुझे समझ में नहीं आता कि मुझे क्या बीमारी है। लगता है, वह दौरा मुझे फिर से आएगा, और मेरी मृत्यु हो जाएगी। मेरे पिताजी की मृत्यु हृदय की गति बंद होने से हुई थी। एक साल पहले, वे मुझे बार-बार सपने में दिखते हैं। डॉक्टर साहब, इन उलझनों में मैं क्या करूं ?

आपके पत्र से ही ज्ञात होता है कि न तो आपको गैस्ट्रिक रोग है न ही उच्च रक्तचाप। सोचना भी एक दम बंद नहीं किया जा सकता। वास्तव में आपके पिताजी की मृत्यु से आपके मन में भय-सा घुस गया है, जो बार-बार सपने में प्रकट होता है। इसी कारण आपकी मनोस्थिति हमेशा उदासीनता की बनी हुई है। यही आपके मन-मस्तिष्क पर छा गयी है। फलस्वरूप आपके मन में फिर दौरा पड़ने का भय बैठ गया है। आपको चिंताग्रस्त स्थितियों से मुक्त होना होगा। मन से पिता की मृत्यु का खयाल निकाल दें और मन को अन्यत्र केंद्रित करें अब। हृदय रोग पुरुषों में ही ज्यादा [illegible] जाता है, फिर अभी आपकी उम्र सिर्फ ३० [illegible] है। नकारात्मक चिंतन छोड़ दें। वैसे सोचना एकदम बंद कर देना भी संभव नहीं [illegible] लेकिन आप मन को समझाएं। एंटी डिप्रेसेंट दवाइयों से आपकी उदासीनता दूर हो सकती है। स्वयं को व्यस्त रखने की कोशिश करें।

अनिद्रा से पीड़ित

रमेश, जयपुर : मैं एक ३५ वर्षीय युवक हूं। पिछले १ वर्ष से अनिद्रा से पीड़ित हूं, मेरा भरा-पूरा परिवार है। दो बच्चे हैं, मेरा व्यवसाय-व्यापार है। एक साल से व्यापार में कुछ समस्याएं आ गयी हैं। उस समय से ही मुझे अनिद्रा की बीमारी शुरू हो गयी। मेरे एक नजदीकी मित्र ने मुझे परामर्श दिया कि मैं दवा की गोली खा लूं। नींद आ जाएगी। मैंने खानी शुरू कर दीं, पहले एक, फिर दो और अब मैं अगर चार गोली न खाऊं तो नींद नहीं आती। मुझे महसूस होता है कि मैं गलत रास्ते पर पड़ गया हूं। बहुत छोड़ने की कोशिश की, इसके बावजूद नहीं छोड़ पा रहा हूं।

आपका शीघ्र से शीघ्र मनोचिकित्सक से मिलना अत्यंत आवश्यक है। आपको दवा की लत पड़ गयी है, जिसका निवारण डॉक्टर के पास ही है। ज्यादा देर न कीजिए नहीं तो [illegible] लत निरंतर और गोलियां खाने से बढ़ेगी। यह एक मानसिक बीमारी है, जिसका ठीक [illegible]

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाज होना चाहिए।

अनिद्रा के कारणों को समझने की कोशिश कीजिए, व्यवसाय की परेशानी अगर अब नहीं है, तो धीरे-धीरे गोलियां लेना बंद कीजिए। एक-एक दिन कम करने से हो जाएगी। निद्रा प्राकृतिक क्रिया है। जो परेशानी आपकी थी, वह अब नहीं है तो दृढ़ निश्चय के साथ गोलियों का सेवन बंद कीजिए। हमें पूरी आशा है कि आपको जरूर सफलता मिलेगी। अपने आपको मजबूत बनाइए, और आत्मविश्वास से कठिनाइयों का सामाना कीजिए।

क्या तलाक रास्ता है ?

अ. ब. स., पटना : मेरे विवाह को अभी चार वर्ष हुए हैं। पत्नी हर समय जिद करती है कि मैं घर से अलग हो जाऊं। घर में मां, पिताजी व भाई हैं जो मुझ पर ही निर्भर हैं। मैं पत्नी को समझाता हूं तो वह आत्महत्या की धमकी देती है। डरता हूं, कहीं सचमुच उसने आत्महत्या कर ली तो क्या होगा ? डॉ. साहब, क्या तलाक के सिवा कोई रास्ता नहीं ! बेहद परेशान हूं। कृपया बताएं ?

डराने-धमकाने के बदले आपको एक दूसरे को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रेम और सहानुभूति तथा घर की शोचनीय दशा से आपकी पत्नी के दृष्टिकोण में अंतर आ सकता है। केवल 'पॉजिटिव एप्रोच' से ही समस्या को सुलझाया जा सकता है। यह समझने की कोशिश कीजिए कि वह क्यों अलग रहना चाहती है। सहानुभूति का व्यवहार अपनाएं। इससे समस्या का समाधान हो जाएगा, डरिए मत। आराम से शांतिपूर्ण ढंग से समस्या सुलझाने की कोशिश कीजिए। प्रत्येक व्यक्ति को जीतने का कोई न कोई तरीका अवश्य होता है, जरूरत है धैर्य और सहनशीलता की।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

साइको सोमिटिक

जितेन्द्र, जबलपुर : मैं घर से पिछड़े वर्ग का एम. एस-सी. पास, पी. एच-डी. का विद्यार्थी हूं। हम दो भाइयों में से छोटे का देहांत हो गय। उसकी पत्नी और बच्चे संयुक्त परिवार में रहते हैं। मां धन के अभाव में चल बसी। पिता अस्वस्थ हैं, यही मेरी चिंता का कारण है। सोचता हूं, यदि वे चल बसे, तो लोग मुझ पर ही दोष लगाएंगे कि पढ़ता रहा और पिता चल बसे। मन बेचैन रहता है। पेट अकसर खराब रहता है, डॉक्टरों ने तनाव से गैस्ट्रिक की तकलीफ बतलायी है। डॉ. साहब, मैं क्या करूं ?

यह गैस्ट्रिक रोग नहीं है। इसे साइको सोमेटिक कहते हैं। वास्तविक समस्या मानसिक तनाव की है। पेट रोग इसी का लक्षण है। आपको नौकरी न मिले तो कोई अन्य काम मिल सकता है। अपने पिता की सेवा पैसे से नहीं सांत्वना से करनी होगी, सहानुभूति दिखाइए, ताकि आश्वस्त हो जाएं कि एक उज्ज्वल भविष्य उनके आगे आएगा ही। किसी भी चिंता को रोग बनाने से अच्छा है स्वयं सक्रिय हो जाइए। पढ़ाई के साथ नौकरी भी हो सकती है। पिछड़े वर्ग के लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था भी की गयी है। प्रतिदिन सही व्यायाम से मन और तन स्वस्थ रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

औसत आदमी : इतिहास के आइने में : यह रोचक कृति उपन्यास भी है और इतिहास भी। उपन्यास इस अर्थ में कि इसमें सौवीर और तृप्ता के अतिरिक्त अन्य अनेक काल्पनिक पात्रों की कहानी गढ़ी है। और इतिहास इस अर्थ में कि पात्रों के काल्पनिक होते हुए भी यह इस देश के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति का प्राचीन साहित्य एवं पुरातत्व-सम्मत प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करती है।

इस पठनीय कृति के लेखक स्वर्गीय ईश्वर सिंह बैस प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व शास्त्र के विद्वान थे। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से इन्हीं दोनों विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की थी। वे शोधप्रिय थे और उनके शोधपूर्ण लेख चर्चित भी हुए थे। इस कृति में सिंधु घाटी, संस्कृति, आर्य-अनार्य युग की संस्कृति, वैदिक युग की संस्कृति, वैदिकोत्तर कालीन संस्कृति, उपनिषद कालीन संस्कृति, स्मृति कालीन संस्कृति, रामायण कालीन संस्कृति, महाभारत कालीन संस्कृति, बुद्धकालीन संस्कृति, साथ चलते रहे, मौर्य कालीन संस्कृति, एक महान साम्राज्य का जन्म, अशोक कालीन संस्कृति, शुंग कालीन संस्कृति, गुप्त कालीन संस्कृति, वात्सायन कालीन संस्कृति, कुमार गुप्त कालीन संस्कृति और हर्ष कालीन संस्कृति शीर्षक अध्याय हैं। इन अध्यायों में इस काल-विशेष की कथा औपन्यासिक शैली में दी गयी है। प्रत्येक अध्याय के नायक-नायिका सौवीर और तृप्ता ही हैं, फलतः विभिन्न कालों की कथा होते हुए भी उसकी एक सूत्रता टूटती नहीं। भाषा सरल-सहज और शैली प्रवाहभरी है। स्वर्गीय बैस ने अपनी लेखनी से नीरस समझे जाने वाले विषय को सरस बना दिया है।

औसत आदमी इतिहास के आइने में
लेखक— ईश्वर सिंह बैस, प्रकाशक— नवचेतन प्रकाशन, ६१० सुभाष पार्क एक्स दिल्ली-३०
मूल्य— पचहत्तर रुपये

स्व. ईश्वर सिंह बैस

संवाद : प्रसिद्ध पत्रकार रामशरण जोशी ने समय-समय पर घटी घटनाओं की नब्ज पर हाथ रखके जो महसूसा, उसे लिपिबद्ध करके छपवाना उसका शगल और पेशा रहा है। सन् '७२ से सन् '८५ के बीच विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ऐसे ही लेखों में से चुनकर चौदह को यहां पुस्तकाकार में प्रस्तुत किया है। ये लेख कहीं संस्मरणात्मक शैली में स्थितियों में जायजा देते हैं तो कहीं वृत्तात्मक शैली में होने से उन स्थितियों का

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार कराते हैं और कहीं सीधी रिपोर्ताज पद्धति में रूबरू पेश होते हैं। विचार की धार पर किये गये विश्लेषण की बानगी तो सर्वत्र मिलती है और इसीलिए ये लेख प्रबुद्ध पाठकों के लिए पठनीय बन पड़े हैं। 'जनता, राजसत्ता और सेना' जैसे लेखों में बुनियादी सवालों को उठाया गया है तो 'भोगवादी संस्कृति से साक्षात्कार' में मानवीय मूल्यों की जांच पड़ताल की गई है। असम, पंजाब आदि की समस्याओं से टकराने में लगी सरकारी प्रयासों का पोस्ट मार्टम कर सत्ता से जनता के बीच संवाद-सेतु बनाने की कोशिश भी की गई है। समय के साथ जुड़ी सम-विषम स्थितियों का सम्यक जायजा लेने के लिए इन लेखों को पढ़ना सामान्य पाठकों के लिए तो रोचक भी होगा, पर शोध कर्ताओं के लिए अपरिहार्य भी।

संवाद : लेखक, रामशरण जोशी। प्रकाशक, नेशनल बुक शॉप, प्लेयर गार्डन मार्केट, चाँदनी चौक, दिल्ली-६। मूल्य : ५० रुपये।

बलवीर सिंह रंग-व्यक्ति और कवि : अनुभूति और आस्था के गहरे रंग में डूबे कवि रंग के व्यक्तित्व से साक्षात्कार कराने में यह पुस्तकीय प्रयास खासा सहायक होगा। लेखक श्री मोहन जौहरी ने 'रंग' के जीवन-प्रसंगों और उनके व्यक्तित्व के विविध आयामों की झांकियों को शब्दबद्ध करके कवि के वैशिष्ट्य से साक्षात्कार कराने का प्रयास किया है। कविवर रंग की बीमारी के दौरान उनको लिखे कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के पत्रों के साथ स्वयं कवि द्वारा लिखे गये पत्रों का संकलन भी इस पुस्तक में किया गया है। रंग-काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन भी एक अध्याय में समेटा गया है। अंत में कवि की चौदह अप्रकाशित कविताओं को भी यहां पहली बार प्रकाशित किया गया है।

बलवीर सिंह 'रंग'-व्यक्ति और कवि : लेखक, श्री मोहन। प्रकाशक, मधूलिका प्रकाशन, श्रीवासनिलयम्, कासगंज (उ. प्र.)। मूल्य : ६० रुपये।

दुर्गायण : कृष्णानंद दुबे ने मां दुर्गा के माहात्म्य पर अपनी यह प्रबंधात्मक काव्य कृति प्रस्तुत की है जिसमें 'दुर्गा सप्तशती' को मूलाधार मानते

वचन-वीथी

आत्म-विश्वास बढ़ाने का ढंग यह है कि तुम वह कार्य करो जिसे करते हुए तुम डरते हो। इस तरह ज्यों-ज्यों तुम्हें कामयाबी मिलती जाएगी, तुम्हारा आत्म-विश्वास बढ़ता जाएगा।

—डेल कारनेगी

जिस आदत से आनंद न मिले, वह आदत न डालो।

—इमर्सन

उन सभी लोगों को जो आनंद चाहते हैं, आनंद बांटना चाहिए, क्योंकि आनंद जुड़वां पैदा हुआ है।

—बायरन

प्रभु का मानव में कोमल संलाप ही अंतःकरण है।

—युंग

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है।

—स्वेट मार्डेन

अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद नहीं करते।

—सफोक्लीज

प्रत्येक आत्म-कथा पीड़ा का इतिहास है, क्योंकि प्रत्येक जीवन छोटे तथा बड़े दुर्भाग्य का विकसित रूप है।

—शोपेनहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए भी युगबोध के प्रति भी समर्पण भाव रखा है। शक्ति तंत्र, ऊर्जा, सृजनात्मकता से जुड़ी भगवती दुर्गा की यह काव्य-कथा न केवल भक्ति-प्रेरक है, वरन् उद्बोधक भी बन पड़ी है। सुरासुर संग्राम आदि की पौराणिक कथा के प्रतीकार्थ को युगबोध से जोड़ने की कोशिश भी की गयी है। मानव और मानवीयता के रक्षा के ऊंचे धरातल की सृष्टि के लिए उत्सर्ग स्वरूपा मां दुर्गा के स्तवन का यह भक्ति-काव्य पाठकों को प्रिय प्रतीत होगा।

दुर्गायण : कवि-कृष्णानंद दुबे। प्रकाशक—सत् प्रकाशन, जे १/२७७, डी डी ए फ़्लैट, कालकाजी, नयी दिल्ली—१९।

अपूर्व पर्व : डॉ. चक्रवर्ती मूलतः तेलुगू भाषी हैं, किंतु श्री मद्भागवत के पंचम स्कंध में सूर्य संबंधी एक कथा-प्रसंग को लेकर रचा यह काव्य उनकी हिंदी-निष्णातता का पूरा प्रमाण देता है। भागवत में बारह आदित्यों को एक ही आदित्य का रूपांतर मानते हुए बारहों महीने अपनी एक ही वसुंधरा प्रेयसी के प्रति अनुराग की रम्य कल्पना की है। 'अपूर्व पर्व' काव्य में कवि ने इसी कल्पना के सूत्रों से काव्य का सतरंगी वितान बुना है। अनुराग से आपूरित आदित्य के प्रति आतुर पृथ्वी-प्रिया का रश्मि-सुमनों से हुआ अभिषेक कवि-कल्पना के सुरम्य विधान के रूप में शब्दांकित हुआ है। यदि सूर्य न होता तो ये नाना रूप भी न होते। समस्त सौंदर्य-रूपों का विधायक सूर्य ही है, अतः उसके प्रति वसुधा का प्रेमासक्त होना अत्यंत सार्थक है। चक्रवर्तीजी ने इस अछूते प्रसंग को 'अपूर्व पर्व' में काव्य-विस्तार देकर समस्त की सार्थक सृष्टि की है। सूर्य की इस रागात्मक गाथा में कवि ने प्रकृति के शाश्वत सृष्टि-रहस्य की सृजनात्मक को समाहित करने का प्रयास भी किया 'अपूर्व पर्व' में कवि ने पुराण-प्रसंग के संबंधों का परिधान पहनाकर दर्शन को पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है इसीलिए यह काव्य कुछ बोझिल भी है।

अपूर्व पर्व : कवि डॉ. प्रकाशक—काव्य-पीठ, १७-१-१७ कूर्मागुडा, हैदराबाद। मूल्य—२० रुपये।

खुशबू का सफर : सुधा गुप्त १०८ हाइकुओं के इस संकलन में बदलते परिवेशों और उनसे जुड़ी संवेदनाओं की चित्रात्मक अभिव्यक्ति हाइकु जापानी काव्य की सर्वाधिक विधा है जिसका विगत एक दशक से भी खूब प्रचलन हुआ है। तीन क्रमशः ५-७-५ के वर्ण विन्यास में लघुतर छंद दुस्साध्य माना जाता है, पर सुधाजी को इसमें अच्छी सफलता इस संकलन का प्रत्येक हाइकु हस्तलिपि में मुद्रित होने के संग छंद में भाव के चित्रांकन से भी युक्त है। विशिष्ट विधा का यह संकलन ऐतिहासिक महत्व भी रखता है।

खुशबू का सफर : कवयित्री—सुधा प्रकाशक—इंडो विजन प्रा. लि. नेहरू नगर, गाजियाबाद। मूल्य—

कादम्बरी : डॉ. ऋषिदेव राय कविताओं के इस संकलन में कवि ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसपास की असंगतियों को ही अधिकतर रेखांकित करने की कोशिश की है। मानवीय मूल्यों के प्रति कवि की आस्था 'अजस्र स्त्रोत्र', 'कला की मुक्ति', 'मानवता' आदि कविताओं में विशेषतः परिलक्षित की जा सकती है। प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य के प्रति अदम्य लालसा के स्वर भी कुछ कविताओं में मधुरता से मुखरित हुए हैं। 'सिद्धार्थ-बुद्ध' जैसी कविताओं में राय ने मिथकों के नये अभिप्रायों को तलाशना चाहा है। 'रुक जाओ' जैसी कविताओं में अणु-विस्फोट के प्रति उसकी चिंतातुरता सजग कवि का प्रमाण देती है।

कादम्बरी : कवि— डॉ. ऋषिदेव राय। प्रकाशक—कला प्रकाशन, ६३/१३१ छोटी पियरी, वाराणसी। मूल्य—५० रुपये।

चुनी हुई कविताएं : स्व. अज्ञेय की अब तक के काव्य-संकलनों में आई कविताओं में से स्वयं कवि द्वारा ८७ कविताओं को चुनकर अलग से इस संकलन में प्रकाशित किया गया है। हालांकि, इन कविताओं को चुन लेने का कोई आधार या आग्रह अज्ञेय द्वारा दिया तो नहीं गया है फिर भी इन कविताओं की कीमत कवि की नजर में कुछ ज्यादा ही है—यह तो मानना ही होगा। और इसीलिए अज्ञेय के अध्येताओं के लिए यह संकलन महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अज्ञेय की कविताएं उनके पंद्रह के करीब संग्रहों में बिखरी हुई हैं, अतः उनमें से अच्छी और महत्त्वपूर्ण कविताओं को एक संकलन में पाकर पाठकों को सुख-सुविधा मिल सकेगी। संकलन के प्रारंभ में दी गयी संक्षिप्त भूमिका में काव्य के संबंध में कवि की प्रतिक्रियाओं को जानने का पथ भी प्रशस्त हो जाता है।

चुनी हुई कविताएं : कवि—अज्ञेय। प्रकाशक—राजपाल एंड संज, दिल्ली। मूल्य—५० रुपये।

ज्योतिलीक : कविवर निर्द्वंद्व मिश्र के इस काव्य में इंदिरा गांधी के चरित्र के महिम्न वर्णन का प्रयास किया गया है। कवि ने अपनी निर्द्वंद्व प्रकृति का खुलासा देकर यह समझाने की कोशिश भी की है कि कहीं इस काव्य को सत्ता-समर्थन का प्रयास न मान लिया जाए। राष्ट्रपिता गांधी की बेटी के रूप में आयी इंदिरा गांधी को अंधेरे के खिलाफ लड़ती ज्योतिवाहिनी के रूप में कल्पित किया गया है। देशवासियों के दामन में जो दाग लग गये हैं—कवि ने उनकी तरफ भी नजर डाल कर अपनी सजगता का परिचय दिया है।

ज्योतिलीक : कवि डॉ. निर्द्वंद मिश्र। प्रकाशक— दुर्गा प्रकाशन प्रा. लि., मनकामेश्वर मंदिर मार्ग, लखनऊ—७। मूल्य—१५ रुपये।

'रघुवंशमणि' और 'मां' : इन दोनों काव्य-संकलनों के कवि श्रीकृष्ण सांकृत्यायन हैं। 'रघुवंशमणि' में श्रीराम और उनसे संबद्ध दशरथ, कैकेयी, कौशल्या, सीता आदि पात्रों की राम के वनवास की घटना से संबंधित प्रतिक्रियाओं को बीस अलग-अलग कविताओं में प्रस्तुत किया है। राम के वन-गमन के मूल में कैकेयी को न मानकर कवि ने एक नयी कल्पना यह की है कि समाज के विभिन्न वर्गों को निकट से जानने की जिज्ञासा में ही राम ने राज्य-सिंहासन का स्वेच्छा से त्याग करके चौदह वर्षों तक वन में रहना स्वीकारा। परंतु यह कल्पना प्रभावी नहीं बन पाई है। हां, उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा काव्य-संकलन मां को मूल रूप को छूने वाली कविताओं को अपने में ले रहे है। अपनी ममतामयी मां को केंद्र में रख कर रची गई अधिकांश कविताओं में मां की चरन पाने के लिए बेचैन बालक की व्यथा ही शब्दांकित हो उठी है। अपनी मां के अतिरिक्त धरती मां, गंगा मां आदि को संबोधित कविताएं भी यहां संकलित हुई हैं।

रघुवंश मणि—मां : दोनों के कवि—श्रीकृष्ण सांकृत्यायन। प्रकाशक—ममता प्रकाशन, १४५४ चरितताल, जबलपुर। मूल्य—क्रमशः २५-२० रुपये।

तलाश एक सूरज की : मुनि रूपचंद्र की अट्ठयासी छोटी-बड़ी कविताओं के इस संकलन में अधिकतर कविताओं का विषय विषमताओं और विभीषिकाओं से उबर कर आनंद की खोज है। मुनिवर ने मानव से जुड़ी सनातन समस्याओं के संग कुछ सामयिक स्थितियों पर भी अपनी काव्यात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं। सूरज को मानव की समस्याओं के समाधान का प्रकाशवाही प्रतीक मानकर कई कविताएं रची गयी हैं। 'अधूरा पुरुषार्थ'/कीचड़ बना जल/पूरा पुरुषार्थ/हंसता-मुसकराता कमल' जैसी कविताओं में मानव जीवन के मर्म का सहज स्फुटन भी मिलता है। कविताओं में सर्वत्र सहजता और सुबोधता लक्षित होती है।

तलाश एक सूरज की : कवि—मुनि रूपचंद्र। प्रकाशक—मानव मंदिर प्रकाशन, हिसार। मूल्य—२० रुपये।

● प्रो. विश्वंभर 'अरुण'

बिहार के दिवंगत साहित्यकार : ५०० से अधिक पृ इस ग्रंथ में बिहार के १०२ दिवंगत साहि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला गया है। पुस्तक त्रिपाठी से आरंभ होकर सुरेश दूबे पर समाप्त होती है।

लेखक ने विश्लेषणात्मक एवं दोनों शैलियों का सहारा लेकर साहित्य भावयित्री व कारयित्री प्रतिभा के साथ न्याय करने का प्रयास किया है।

कृतिकारों की कृतियों से दिये गये इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि लेखक दिवंगत साहित्यकारों के साथ पूर्ण न्याय सफलता प्राप्त की है और मात्र पल्लव पांडित्य का परिचय नहीं दिया है।

१०२ साहित्यकारों के जीवन-वृ कृतियों के संबंध में यथार्थपरक सूचना बहुत आसान कार्य नहीं थी, किंतु लेखक अपने जीवन के कई वर्षों को इस यज्ञ की आहुति के रूप में समर्पित कर, साधना को सिद्धि तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की है। ऐसा प्रयास समर्पित व्यक्तित्व के लिए ही संभव हो और श्री जमुआर ने सिद्ध कर दिया है साहित्य एवं साहित्यकारों से रागात्मक जुड़े हुए हैं और यही इस ग्रंथ की सफलता मूल कारण है।

बिहार के दिवंगत हिंदी साहित्यकार : सुरेन्द्र प्रसाद जमुआर, प्रकाशक— प्रकाशन, पटना-१, मूल्य— १०० संख्या— ५३६।

—डॉ. भगवती शरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

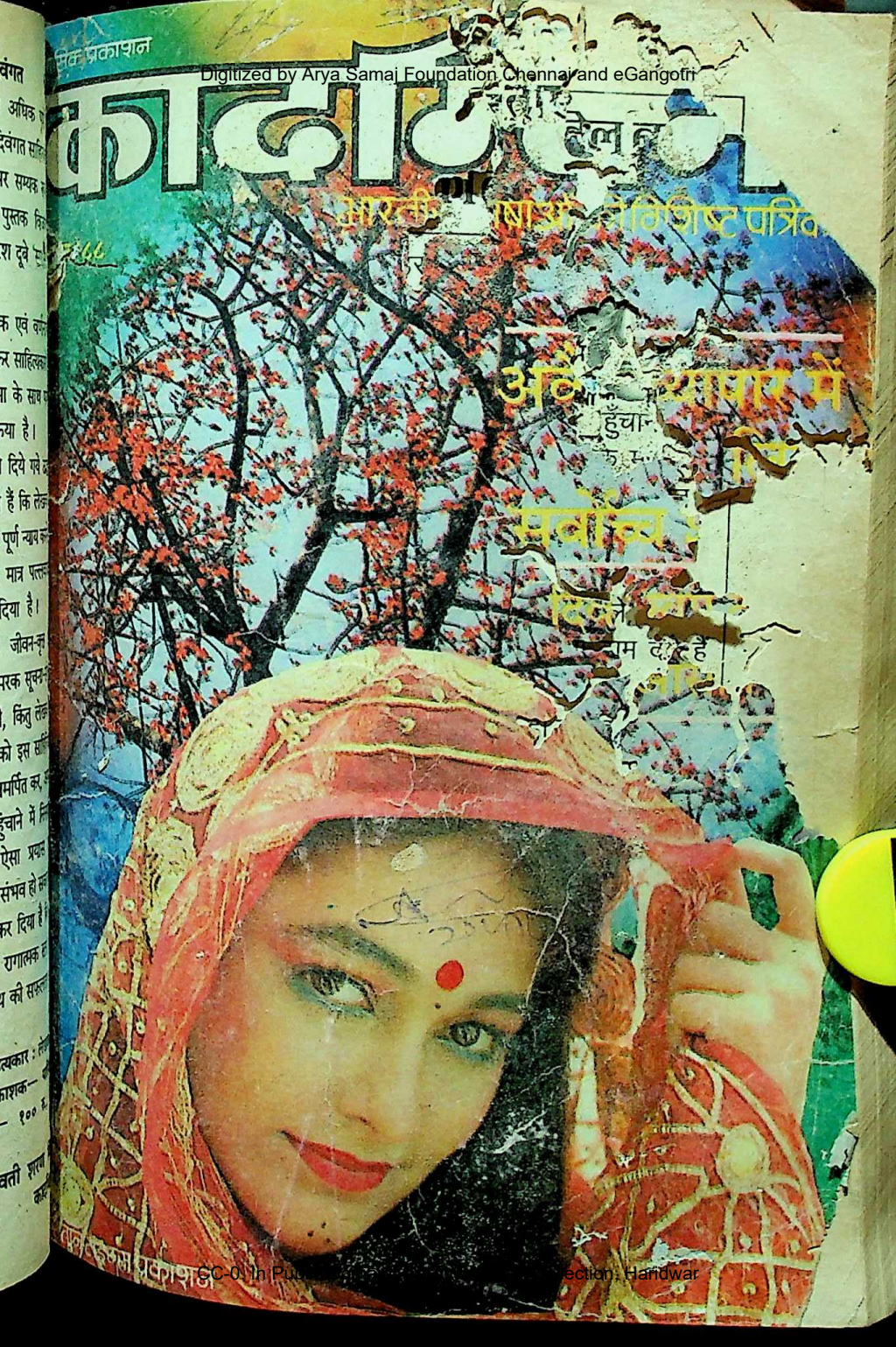

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा कोई संकलन मा...

छूने त... कविताओं को अपने ...

दां... का रोग जिनको सताये
... लिये है घरेलू उपाय

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी प्रा० लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015. फोन : 537987, 5373...

... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिस टूथपाउडर में लौंग का तेल नहीं, वह मेरे काम का नहीं"

"इसलिए मेरा मनपसंद टूथपाउडर है प्रॉमिस. लौंग के तेल से भरपूर. नगर-नगर में मशहूर. लौंग के तेल के दो विशेष गुण हैं. एक तो यह दांतों की छोटी-मोटी तकलीफ़ों से सदा सुरक्षित रखता है. इसके प्रभाव से दांतों को क्षति पहुँचाने वाले कीटाणु पनप नहीं पाते. फलस्वरूप आपके दांत पक्के मज़बूत बने रहते हैं. और दूसरा यह आपकी सांस को ताज़ी सुगंधित रखता है. इसलिए आपसे बातचीत करने वाले आपसे मुंह नहीं मोड़ते.

और सबसे बड़ी बात यह कि मोल के मुकाबले, प्रॉमिस टूथपाउडर के गुणों का तोल नहीं—आप जो दाम देते हैं उसके पैसे-पैसे का काम लेते हैं.

मेरी मानें तो बस प्रॉमिस टूथपाउडर ही लाइए. लौंग के तेल से मालामाल. बलसारा की सूझ-बूझ का कमाल."

लौंग के तेल की अद्भुत रचना

प्रॉमिस
टूथपाउडर

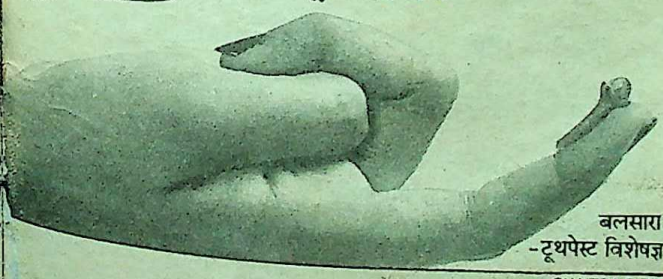

बलसारा
-टूथपेस्ट विशेषज्ञ

CHAITRA-B BLS 828 HIN

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

अब और अधिक आकर्षक, पठनीय और विविधतापूर्ण

अनेक नये स्तंभ, गीत-कहानी प्रतियोगिता

प्रत्येक अंक विशेषांक की भांति संग्रहणीय

आगामी अंकों में कुछ और नये स्तंभ। अब और अधिक पठनीय सामग्री। अब प्रत्येक अंक पहले से ज्यादा रोचक और विविधतापूर्ण।

मेरे कथा-संसार का वह अविस्मरणीय पात्र

'कादम्बिनी' में शीघ्र ही आप पाएंगे एक नयी दिलचस्प लेखमाला जिसमें हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रख्यात लेखक अपने किसी अविस्मरणीय पात्र या पात्रों का विश्लेषण करेंगे, जिन्हें वे अपना सबसे आत्मीय और लोकप्रिय मानते हैं। लेखक इस पर भी प्रकाश डालेंगे कि उस पात्र को रचने में में किससे, कब और कैसी प्रेरणा मिली।

न्याय-जगत के रोचक और प्रसिद्ध मुकदमे

प्रत्येक अंक में पढ़िए किसी एक दिलचस्प मुकदमे का विवरण

अद्भुत-अलौकिक-रोमांचक प्रसंग

जीवन में कभी-कभी बहुत कुछ ऐसा घट जाता है जो अद्भुत, अविश्वसनीय तथा अलौकिक भी प्रतीत होता है। रोमांच से भरे क्षण तो जीवन में आते ही हैं। एक ऐसा स्तंभ, जिसमें पाठक भी अपने अनुभव भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष दो प्रतियोगिताएं

'कादम्बिनी'—अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में पुरस्कृत हिंदी कहानियों पर दो पुरस्कार

प्रथम—पंद्रह सौ रुपये द्वितीय—एक हजार रुपये

भारतीय भाषाओं से अनूदित लेकिन हिंदी में अप्रकाशित, अप्रसारित कहानियों पर तीन पुरस्कार।

प्रथम—पंद्रह सौ रुपये द्वितीय—एक हजार रुपये

चुनी हुई अन्य सांत्वना पुरस्कार
योग्य कहानियों पर पुरस्कार
पांच सौ रुपये

'कादम्बिनी' अखिल भारतीय काव्य प्रतियोगिता

गीत—प्रतियोगिता नवगीत—प्रतियोगिता हिंदी गजल—प्रतियोगिता

विस्तृत घोषणा—नियमादि अगले अंक में

इनके अलावा प्रत्येक अंक में पढ़िए

• शिकार कथाएं • रहस्य रोमांच • सांस्कृतिक जगत •

एक विशेष आकर्षण

पैनी नजर

विख्यात व्यंग्य चित्रकार सुशील कालरा के चुभते हुए रेखांकन

'कादम्बिनी' पढ़िए : समय के साथ चलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-ज्ञान बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. रौद्र—क. तीव्र, ख. भीषण, ग. शुभ, घ. मधुर।

२. लौकिक— क. सहज, ख. फैला हुआ, ग. सांसारिक, घ. व्यावहारिक।

३. विसंमूढ़— क. मूर्ख, ख. बहुत घबराया हुआ, ग. पथभ्रष्ट, घ. कमजोर।

४. विधिवश— क. सहसा, ख. आशाजनक, ग. भाग्य से, घ. आसानी से।

५. शिष्टसम्मत— क. सभ्य, ख. सम्मानित, ग. जो विद्वानों द्वारा मान्य हो, घ. सीधा-सादा।

६. हतभाग्य— क. दुर्बुद्धि, ख. निर्धन, ग. परेशान, घ. अभागा।

७. शास्त्रान्वित— क. शस्त्रों से लैस, ख. पवित्र, ग. शास्त्रों के अनुकूल, घ. विद्वत्तापूर्ण।

८. समुद्यत— क. सफल, ख. तैयार, ग. संपन्न, घ. बढ़ता हुआ।

९. यशस्काम— क. प्रसिद्ध, ख. विद्वान, ग. कीर्ति की कामना करनेवाला, घ. जिसके सब काम पूरे हो गये हों।

१०. भवसागर— क. भाग्य, ख. [illegible] ग. कर्मभूमि, घ. संसार-रूपी समुद्र।

११. विभूति— क. बीता हुआ, ख. [illegible] ग. अलौकिक शक्ति, घ. यश।

१२. तंद्रा— क. नींद, ख. [illegible] आलस्य, घ. घृणा।

१३. ऋचा— क. भाषा, ख. केश, [illegible] पूजा, घ. सौंदर्य।

१४. हरखना— क. खुश होना, [illegible] भूलना, ग. पकड़ना, घ. जल्दी करना।

१५. आज़माइश— क. प्रदर्शन, [illegible] परीक्षा, ग. अनुभव, घ. प्रतीक्षा।

उत्तर

१. ख. भीषण, प्रचंड (रुद्र की [illegible] छात्रों की शरारत देखकर शिक्षक ने रौद्र धारण कर लिया।

२. ग. सांसारिक, सामान्य। मनुष्य जीवनयापन के लिए **लौकिक** नियम पालन करना पड़ता है। (विलोम-अलौकिक)

३. ख. बहुत घबराया हुआ, हतप्रभ। निरंतर प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण **विसंमूढ़** हो गया है।

४. ग. भाग्य से। उसके जीवन में घटना **विधिवश** ही हुई है।

५. ग. जो विद्वानों द्वारा मान्य हो। [illegible] कार्य सर्वथा **शिष्टसम्मत** हैं।

६. घ. अभागा, बदकिस्मत। वह [illegible] **हतभाग्य** है जो परीक्षा में पुनः [illegible] गया।

७. ग. शास्त्रों के अनुकूल। यज्ञ [illegible] **शास्त्रान्वित** विधि से हुआ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शास्त्र+अन्वित=अनुष्ठित)

८. ख. तैयार। वह विद्वन्मंडली में शास्त्रार्थ के लिए **समुद्यत** है।

९. ग. कीर्ति की कामना। सत्कार्य करने के बाद ही **यशस्काम** होना चाहिए। (यशः+काम)

१०. घ. संसार-रूपी समुद्र, संसार जहां आवागमन अर्थात जन्म और मृत्यु का क्रम चलता रहता है। सद्गुणों की नौका से **भवसागर** पार करने का प्रयास करना चाहिए।

११. ग. अलौकिक शक्ति, ऐश्वर्य। संत और महात्मा मानवता की **विभूति** होते हैं।

१२. ख. ऊंघ, ग. आलस्य। देश के समुत्थान के लिए हमें **तंद्रा** त्याग कर कर्मनिष्ठ होना चाहिए। (विशेषण— तंद्रालु, तंद्रिल)

१३. ख. वेदमंत्र। वेदों की **ऋचाएं** अमृत की सरिताओं के समान हैं।

१४. क. खुश होना। बच्चों की क्रीड़ाएं देखकर मां-बाप **हरखते** हैं।

१५. ख. परीक्षा, जांच। किसी की **आज़माइश** किये बिना उसके बारे में कोई फैसला नहीं करना चाहिए। (फारसी)

पारिभाषिक शब्द

लेवी=कराधान
अवार्ड=पंचाट
रजिस्ट्रेशन=पंजीयन
रजिस्ट्रार=पंजीयक
ट्रैवलिंग अलाउंस=यात्रा-भत्ता
डिमार्केशन=सीमांकन
एनडाउमेंट=धर्मस्व
अंडर एज=अल्पवय
ओवर एज=वयोत्तर/अधिक आयु

समस्या-पूर्ति—१०५

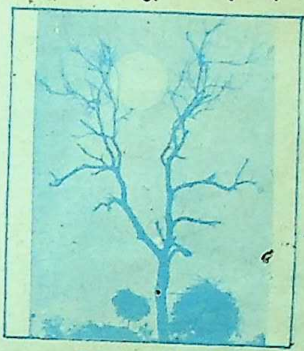

नहीं अकेले

प्रथम पुरस्कार

काल चक्र में फंसे हैं हम सब
नियति सभी से खेले
पल-पल घटता जीवन सब का
भरी भीड़ में सभी अकेले
प्रकृति की इस भाग-दौड़ में हम सब
सच ! तुम नहीं अकेले

— शारदानन्द शर्मा

राजकीय आयु. औषधालय
ढाणी लालखां
वाया देईदास, (नौहर, श्रीगंगानगर)

द्वितीय पुरस्कार

सूखी शाखें उजड़ा यौवन
टूट गया है मेरा तन-मन
धन्य भाग पंछी तुम आये
दूर किया मेरा सूनापन
आज तुम्हारे साथ जिऊंगा
आज रहूंगा नहीं अकेले

— प्रदीप कुमार मिश्र

कट्टी तोला (मिश्रा बाड़ा)
शहडोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

विकलांगता उसके जीवन में बाधा नहीं थी

विकलांग व्यक्तियों में जो प्रतिभाशाली होते हैं, उनमें विशेष प्रकार की जीवन-शक्ति होती है, जिसकी लहर उनकी प्रतिभा को विशिष्ट क्षेत्र की ओर ले जाती है, चाहे वह काव्य हो, कला हो या संगीत और जीवन के प्रति एक आस्था पैदा करती है। तूलो लात्रे का जन्म फ्रांस के आल्बी शहर में एक रईस खानदान में १८६४ में हुआ था। उसके पिता को बाज को पालने का बहुत शौक था और उसको अकसर शहर की सड़कों पर पुराने लिबास में बाज को हाथ में लिए घूमते हुए देखा जा सकता था। जहां तक लात्रे का संबंध है, छुटपन से ही उसको चित्रकारी का इतना शौक था, कि उसने तीन साल की उम्र में ही लोगों को एक कागज पर दस्तखत करते देखकर स्वयं भी वैसा ही करने की जिद की और मना करने पर भी दस्तखत करने की जगह एक बैल का चित्र बना दिया। आल्बी के म्यूजियम में जब एक साहब लात्रे के पुराने कागज-पत्र देखने को गये, तो उनको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसकी स्कूल की कापियों में लिखावट की जगह भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवरों की तस्वीरें बनी थीं।

चौदह साल की उम्र में लात्रे के साथ एक हादसा हुआ। फर्श पर उसका पैर फिसल गया और, उसकी एक टांग टूट गयी, लेकिन उसे को इतनी सजा काफी नहीं लगी और दुर्घटना में उसका दूसरा पांव भी बेकार हो गया। चौदह साल की अवस्था में ही इस वह दोनों टांगों से अपंग हो गया।

वह रातदिन पेरिस के चक्कर लगाता चाहे उसको लंगड़ाकर ही चलना पड़ता हो अपने चित्रों के लिए विषय ढूंढ़ता था।

लात्रे ने स्पेन तथा इंगलैंड की भी यात्रा और विशेष तौर से स्पेन में उसने कलाकारों की कृतियों का अवलोकन किया एल ग्रेको तथा वेलास्कवे के चित्रों ने उसे बहुत प्रभावित किया। वह न केवल चित्रों प्रशंसक के रूप में देखता था बल्कि उसके प्रिय चित्रकार की कोई बुराई करता वह उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाता बहुत शराब पीने और अधिक मेहनत करने उसका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया था कि न्यूली नामक स्थान के एक स्वास्थ्य-गृह में कर दिया गया। वहीं पर निरंतर बंद रहने कारण वह इतना दुखी हुआ कि उसने पिता को एक पत्र में लिखा कि उसको कर लिया गया है और जो कैद होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मृत्यु के मुख में जाना पड़ता है। इस 'कैद' की हालत में भी उसने अपनी चित्रकारी जारी रखी, और सरकस के पात्रों के कई महत्वपूर्ण चित्र बनाए जो दो चित्रग्रंथों में 'सरकस' के नाम से प्रकाशित हुए। इनमें विदूषकों, कुत्तों, घोड़ों, तथा कलाबाजों के चित्र शामिल थे। डाक्टरों ने इन अदभुत चित्रों को देखकर उसको बिलकुल ठीक करार दे दिया, और उसको अपनी प्रिय स्वतंत्रता मिल गयी। असलियत में उसके चित्रों ने ही उसको स्वतंत्रता दिलायी।

—भोलानाथ चतुर्वेदी

चार सौ घंटों की मुहलत !

फादर कामिल बुल्के—राम कथा के अनन्य प्रेमी और हिंदी सेवी। बेलजियम में जन्मे और अपनी कर्मभूमि भारत में इहलीला समाप्त की। फादर कामिल बुल्के की पावन स्मृति में एक ग्रंथ का प्रकाशन किया गया, जिससे उनके व्यक्तित्व और कृतियों का पूर्ण परिचय मिलता है। इसी ग्रंथ में प्रकाशित डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी का लेख, 'उन्हें चार सौ घंटे की मुहलत चाहिए थी' फादर कामिल बुल्के की संकल्प शक्ति, लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना और कर्मठता का अच्छा परिचय देता है।

फादर कामिल बुल्के कुर्जी अस्पताल में दाखिल कर दिये गये थे। डॉ. गोस्वामी अपने कुछ मित्रों के साथ उनसे मिलने गये थे। इस भेंट का विवरण उनके अपने शब्दों में—

वह (फादर कामिल बुल्के) काफी दुबले हो गये थे। उस टांग को घुमाने फिराने में उन्हें कठिनाई हो रही थी, जिसकी तीन अंगुलियां काटी जा चुकी थीं। उनसे जो बातें हुईं, उनका सार इस प्रकार है—

फादर कामिल बुल्के

'डॉक्टर कहते हैं, पैर काटना पड़ सकता है। पैर कट ही जाएगा तो क्या होगा ? मैं काम तो कर ही सकूंगा। डॉक्टर का कहना है कि मैं ठीक तो हो जाऊंगा, पर कम से कम छह महीने मुझे विश्राम करना होगा। कोई बात नहीं। अब मैं जनवरी तिरासी से फिर काम शुरू करूंगा। मैंने हिसाब लगा लिया है, मुझको केवल चार सौ घंटे चाहिए। चार सौ घंटों में बाइबिल का अनुवाद का काम पूरा हो जाएगा।'

. . .उनकी एकमात्र साध थी—बाइबिल के 'ओल्ड टेस्टामेंट' के हिंदी अनुवाद को पूरा करने की। वे मूल लैटिन तथा ग्रीक से 'ओल्ड टेस्टामेंट' का अनुवाद कर रहे थे। 'ओल्ड टेस्टामेंट' में कुल एक हजार अस्सी पृष्ठ हैं। नौ सौ तीस पृष्ठों का अनुवाद किया जा चुका था। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्हें मात्र चार सौ घंटों की मुहलत चाहिए थी पर विधाता की ओर से उन्हें यह मुहलत नहीं मिल सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

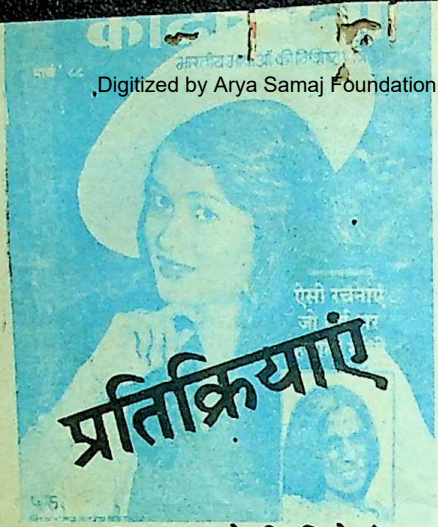

प्रतिक्रियाएं

बेहद दिलचस्प होली विशेषांक

'कादम्बिनी' का होली विशेषांक विविधता लिये हुए था। इसमें नर्म सप्तशप्ती संबंधी लेख पढ़कर 'नर्म' शब्द का नया अर्थ ज्ञात हुआ। प्रायः सभी रचनाएं शिष्ट हास्य-व्यंग्य की प्रतिनिधि रचनाएं थीं।

— आर्य मित्र, गाजियाबाद

'कादम्बिनी' के मार्च विशेषांक ने एक नयी लोकोक्ति दी है कि 'घोड़े पर चढ़कर फूलों को नहीं देखना चाहिए।' चीन की यह लघुकथा बेहद रोचक लगी।

—श्याम, चंद्रपुर

'कादम्बिनी' का होली विशेषांक संस्मरणों, इतिहास-प्रसंगों और हास्य-व्यंग्य की दिलचस्प रचनाओं का 'गुलदस्ता' ही लगा। ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों के संस्मरण भी रोचक लगे। 'महाभारत : कुछ अनछुए प्रसंग' शीर्षक लेखमाला ज्ञानवर्द्धक है।

—सत्यनारायण दुबे, नागपुर

'कादम्बिनी'-होली अंक में श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र का लेख 'हिंदी की समस्या-पूर्ति परंपरा : राजदरबारों से जनता तक' पढ़ा। लेख में समस्या पूर्ति-सम्राट पं. नाथूराम शंकर [illegible] 'शंकर' के नाम का उल्लेख आवश्यक था।

शंकरजी अपने युग के [illegible] समस्या-पूर्तिकार थे। उनकी समस्या पूर्ति [illegible] फतहगढ़ से प्रकाशित पं. कुंदनलाल [illegible] संपादित 'कवि-व-चित्रकार' एवं श्री [illegible] लाल मिश्र द्वारा संपादित कानपुर [illegible] 'रसिक-मित्र' आदि में निरंतर प्रकाशित [illegible] रहती थीं। उनकी श्रेष्ठ पूर्तियों के लिए [illegible] विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं एवं कवि सम्मे[illegible] 'कवि सम्राट', 'कविता-कामिनी-[illegible] 'कविता-कानन-केशरी' एवं कवि-रवि' [illegible] लगभग दो दर्जन उपाधियों एवं असंख्य [illegible] घड़ियों, पगड़ियों एवं दुशालों से सम्[illegible] किया था।

श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी के अनुसार हिंदी [illegible] पहला कवि सम्मेलन, जिसमें पहली बार [illegible] का प्रवेश हुआ था, संवत् १९५० वि. [illegible] लगभग फतहगढ़ में हुआ था। प्रसिद्ध [illegible] विद्वान अगरेंज कलक्टर एफ.एस. [illegible] सहयोग से इसका आयोजन 'कवि-व-चित्र[illegible] के संपादक पं. कुंदनलाल ने किया [illegible] समस्या दी गयी थी—'भाल लिखी [illegible] सक टार'। अनेक कवियों ने इसकी पूर्ति [illegible] किंतु शंकरजी की समस्या पूर्ति सर्वश्रेष्ठ [illegible] गयी और उन्हें एक स्वर्ण पदक [illegible] किया गया।

शंकरजी की पूर्ति देखिए!

'शंकर' देशन कौ सिरताज,
अधोमुख आज, बिना अधिकार।
भौ पर दास, न मोद-विलास,
धरा धन पास न त्रास अपार।

कादम्बि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीहत अंग, न गौरव संग,
दुखी चित भंग, रहे मन मार।
हा! बनि भारत की बिगरी,
विधि भाल लिखी लिपि को सक टार।

—देशराजसिंह, हरदुआगंज

होली विशेषांक में स्वर्गीय महादेवीजी वर्मा का यह संदेश कि 'रचना गतिशील ही न कि मरणशील' प्रत्येक लेखक या कवि के लिए जीवन का आदर्श होना चाहिए। गतिशील रचनाएं ही समाज का भला कर सकती हैं, वे अपने समय के समाज का ही नहीं, वरन भावी समाज में आने वाले समाज का भी।

—योगेश, आगरा

'कादम्बिनी' हिंदी साहित्य पत्रिकाओं में नये आयाम स्थापित करती आ रही है। साहित्य हो अथवा इतिहास या विज्ञान 'कादम्बिनी' ने हमे पूरी जानकारी दी है।

और आपका सारगर्भित 'काल-चिंतन' तो पार्गदर्शक की भांति हमेशा ही मुझे सही मार्ग चुनने को प्रेरणा देता रहता है। हां, कथा-साहित्य से तृप्ति नहीं होती।

—रचना मदान, मुजफ्फरपुर

'कादम्बिनी' का फरवरी अंक प्राप्त हुआ। 'कादम्बिनी' साहित्यिक पत्रिकाओं की श्रृंखला की अप्रतिम कड़ी है। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामान्य ज्ञान से संपृक्त रचनाओं को पढ़कर हृदय भावाभिभूत हो उठता है।

अंक के समस्त लेख ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक हैं। 'काल-चिंतन' द्वारा स्वयं के प्रति विश्वास एवं आस्था का अभ्युदय होता है।

—डॉ. राकेश कुमार, जबलपुर।

डकोटा का योगदान

पिछले सोलह वर्षों से मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं। यूं तो हर अंक में कुछ-न-कुछ संजोने सामग्री योग्य होती ही है पर फरवरी का अंक बेजोड़ लगा। विशेषतः जबकि यह विशेषांक न होकर साधारण अंक है। लेख, निबंध, कहानियां, कविताएं सभी सराहनीय!

डकोटा से संबंधित कुछ और तथ्य पाठकों तक पहुंचा दें कि सन १९४६ के अंतिम दिनों में भारतीय वायु सेना में शामिल होने के बाद अपने ट्रेनिंग पीरियड में ही डकोटा ने यात्रियों को ढोने के अतिरिक्त पूना तथा जीवानी के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में पीने का पानी भी उपलब्ध कराया।

२४ मई १९४८ को विश्व की सबसे ऊंची हवाई पट्टी लेह पर उतरने वाला सबसे पहला विमान डकोटा ही था। इस ऐतिहासिक उड़ान ने लद्दाख की सामरिक भूमिका को बदल डाला। एयर कमोडोर मेहर सिंह ने अपने डकोटा को अधबनी हवाई पट्टी पर उतारकर बेमिसाल उड़ान कौशल का परिचय किया था।

—कन्हैया, नयी दिल्ली

'कादम्बिनी' का फरवरी अंक आद्योपांत पढ़ा। प्रत्येक स्तंभ ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक लगा। कहीं-कहीं पाद-टिप्पणियों के रूप में दी गयी सामग्री भी अत्यंत ही रुचिकर है। 'कादम्बिनी' का वर्तमान स्वरूप निश्चय ही श्रेष्ठतर है। इतने कम मूल्य में इतनी सारी सुंदर सामग्री! आप प्रशंसा के पात्र हैं।

—डॉ. दीनदयाल श्रीवास्तव, ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष : २८, अंक ६
अप्रैल, १९८८

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

इंदिरा मोहन
आचार्य शंकर का सर्व कर्म संन्यास १८

डॉ. जोधसिंह
वैशाखी, टी. एस. इलियट
और खालसा..... २४

संजीव अग्रवाल
अवैध व्यापार में लिप्त
सर्वोच्च शासक..... ३०

इकबाल अहमद फारुकी
उसका आदेश ही उसकी
मृत्यु का कारण बना..... ४४

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए...६, समस्या पूर्ति...७, आस्था के आयाम... ८, प्रतिक्रियाएं...१०, काल-चिंतन ... १४, ज्ञान-गंगा... २३, सीपिकाएं... २९, इनके भी बयां...३४, आइए चलें जंगल की ओर...८६, वचन-वीथी...९१, हंसाइयां.९२, विधि-विधान...९८, बुद्धि-विलास...१०९, यह महीना और आपका भविष्य...१६७, नयी कृतियां...१७१, वैद्य की सलाह...१७४, प्रवेश...१७६, तनाव से मुक्ति...१७८, दस्तक...१८०, ज्योतिष समस्या और समाधान...१८२ और अंत में...१९८

आवरण : क्लाउन (वृक्ष) अमिचार (युवती)

डॉ. यज्ञप्रसाद तिवारी
राष्ट्रीय अखंडता के लिए
साहित्य की उन्नति आवश्यक.....

राम गुप्ता
वहां देवता करता है
विवादों का निपटारा .....

डॉ. वासुदेव प्रसाद यादव
रहस्यमय बादलों से घिरा शुक्र.....

एरिक क्लिंगर
दिवा स्वप्न देखना आसान है .....

जसवंतसिंह विरदी
नदियां भी सिसकती हैं .....

डॉ. जॉन ल्यूडस कूपर
अध्यात्म की व्याख्या
भौतिक समीकरणों से .....

विनय बिहारी सिंह
'चिपको' की तरह
'अप्पिको' आंदोलन.....

डॉ. चिंतामणि शुक्ल
रामचरित मानस में
समाजवाद का अनुशीलन .....

कृष्णमुरारी तिवारी
बब्बर शेर का वैकल्पिक घर.....

अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र
बाली द्वीप का महामेरु.....

डॉ. श्रीराम परिहार
पत्थरदार पन्नों पर
पुलकावलि के छंद .....

श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी
भारतीयों की हार न मानने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

की क्षमता से वे भयभीत हैं.....१५०
सुलक्षणा
दक्षिण भारत में है एक
संस्कृत ग्राम.....१५४
डॉ. शिवशंकर गुप्त
बाबू गुलाबरायजी का
वैज्ञानिक दृष्टिकोण.....१५६

कहानियां, हास्य-व्यंग्य एवं संस्मरण

स्व. यशवंतराव चव्हाण
पिता का दुलार..... ३५
डॉ. पूर्णिमा केडिया 'अन्नपूर्णा'
अपना घर..... ३६
गुडूरः श्रीनिवास
उपहार..... ५४
डॉ. निकुंज
फर्क..... ७४
शशिप्रभा शास्त्री
बड़ा व्याघ्र.....१०२
बाला दुबे
समुद्र की साम्राज्ञी सेडना.....१४१
कारेल चापेक
दुखती रग.....१४२
प्रेम दीवान
राजनीति की रणनीति.....१६२

कविताएं

डॉ. कुमारी रमा सिंह
रेत की तपती हवा..... ४७
सत्यप्रकाश जोशी
आ शंका..... ४७
सुनीता बुद्धिराजा
स्नेह का स्पर्श..... ५३
लवकुमार 'प्रणय'
सांस टूटेगी नहीं..... ५३
गोपालकृष्ण कौल
विकल्प की तलाश..... ७९
कुत हामसुन
सुदूर तट का द्वीप.....१०१

सार-संक्षेप

भगवान सिंह
कृषि क्रांति और देवासुर संग्राम.....१८५

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक :
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग : प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—
'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि.
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल-चिंतन

परिवर्तन प्रकृति प्रेरित है। संभवतः इसलिए भी कि वह स्वयं इसी क्रम में निबिद्ध है। हमें स्वीकारना चाहिए उसे, स्वागत के साथ !

□

—हमारा जीवनक्रम न आत्म संयत है और न होना संभव है।

—जिस दिन आत्म संयम की बात उठी उसी दिन एक नकारात्मक स्थिति विद्यमान हुई, यह स्वयं सिद्ध हो गया।

—यह उसी तरह है जैसे धर्म की स्वीकृति अ-धर्म की उपस्थिति का उत्तर है।

—कोई भी स्वर, वह नकारात्मक हो या सकारात्मक, यदि उभरता है तो उसका प्रतिपक्ष अपने आप सामने आ जाता है।

—इसी क्रम में सत्य-असत्य, हिंसा-अहिंसा, स्थिर-अस्थिर और काल चेतना-काल भ्रम सभी प्रश्नों को देखा जा सकता है।

—प्रकृति की इसी परिचय-दृष्टि ने सारे विरोधाभासों को जन्म दिया है।

□

—इस समझ के बाद, दूसरे खंड पर विचार किया जा सकता है।

—जागते रहो।

—सदा सतर्क रहो !

—शेर की भांति मुंह खोले कोई जीवन को निगलने के लिए सदैव तत्पर है।

—एक विडंबना देखिए : रेशम का कीड़ा घर बनाकर उसी में रहता है। वहीं पनपता, बढ़ता और फैलता है। अंततोगत्वा वहीं वह मृत्यु को प्राप्त करता है। रेशम के कीड़े की तरह क्या हम भी अपनी इच्छाओं से घिरकर उसी तरह नहीं अंत में विलीन होते हैं ?

—इच्छाओं पर विजय पा ली जाए तो हम रेशम के कीड़े बनने से बच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

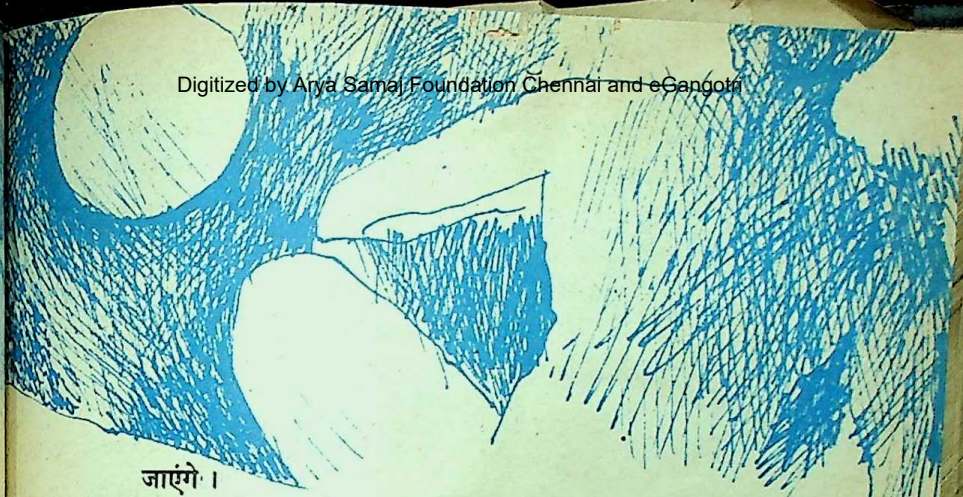

जाएंगे।

—अब प्रश्न यह है कि क्या यह संभव है ?

—किसी तानाशाह ने घोषित किया था, 'असंभव' मेरे शब्दकोष के बाहर है।

—समय साक्षी है : उसका दर्प सफल हो सका ?

—कहा तो यह जा सकता है कि कुछ भी असंभव नहीं है, जैसे हम कहते हैं बहुत कुछ संभव है !

—'बहुत कुछ' तार्किक तुला की अभिव्यक्ति है !

—'सब कुछ' मिथ्याचार और थोथे चने का प्रलाप है।

—चना हरा हो तो संभावना है। चना पका हो तो संभावना की सद्परिणति है। पका चना पिसा हो तो जीवन-जल है। कीट से भक्ष्य थोथा चना अहंकार का खोखला आवरण है।

—संदर्भ :

सब विहीन हैं ये—

- दया विहीन धर्म
- जल विहीन सरिता
- पल्लव बिना वृक्ष
- विनय शून्य वाणी
- आस्था बिना सार्थक की परख

—'जागते रहो' और संतर्क रहो' इसी से आदि पुरुष की वाणी का पहला उद्घोष था

—पहला उद्घोष तब था जब उसे न तो भय व्याप्त था और न किसी आशंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

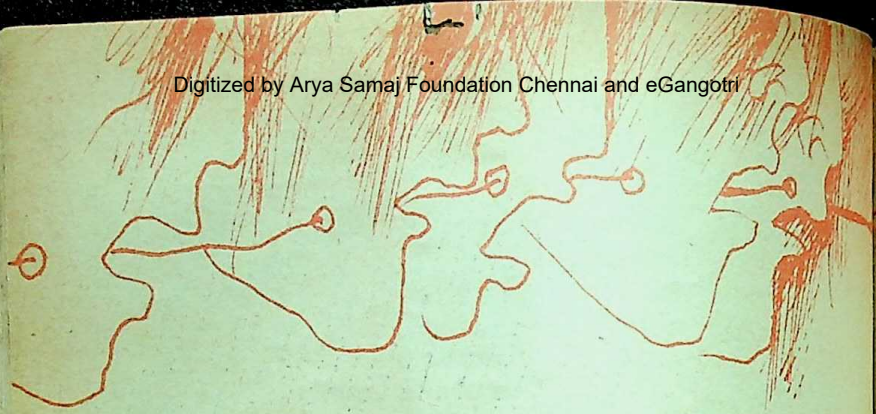

का वह शिकार था।

—उसकी समझ थी : दृष्टिक्षेत्र उसका साम्राज्य है।

—भयहीन उसकी स्थिति है।

—अंत मिथ्या धारणा-सा दुबका था।

—समझ आयी फिर उसे :

—नहीं; भय है, दृष्टिकोण ही समग्र सृष्टि नहीं है, वह विराट है तो उससे भी विराट शक्ति है, वह अवतरित हुआ तो है अंत उसमें निहित है।

□

—अधिक गहराई से सोचें इसे :

- हिम पानी से बना है
- मोती भी पानी में बनता है
- नमक सूखा हुआ पानी है
- इन्हें पिघलाइए; न भी पिघलाएं तो पिघलेंगे
- पिघल जाएंगे ये सब, मोती नहीं पिघलेगा।

—सब पानी सृष्टि हैं, उसी में विलीन होते हैं, फिर मोती ही उसी से जन्म लेकर उसकी ओर क्यों नहीं लौटता ?

—लाखों में कोई मोती होता है, करोड़ों मे कोई हीरा : यह कहावत भले हो परंतु उत्पत्ति तो किसी सत्य से ही होगी।

—इस सत्य को कौन नहीं पहचान सकता :

पानी हमेशा रिसता है फूटे घड़े से, हर पल वह रिसेगा ही। जो फूटे घड़े होंगे वे सत्य स्रोत नहीं खोज सकते। ठोक बजाकर सही घड़ा पानी से भर दिया जाए, वह पानी का गुण बदल देगा। रिसना हीन रसना-मय जल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

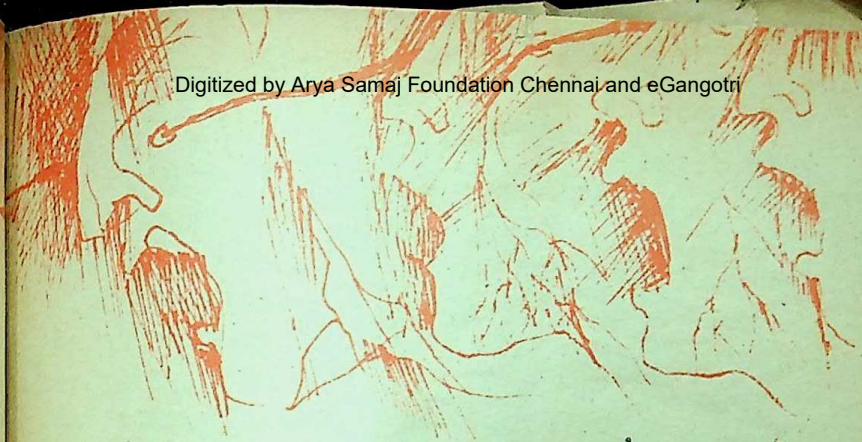

सत्य का सम्यक् ज्ञान है।

□

—देखिए तो छोटी-छोटी चीजें कितना कुछ दे जाती हैं।

—ज्ञान के लिए विराट पात्र की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ज्ञान स्वयं इतना विराट पात्र है कि उसे सीमित करनेवाला पात्र आज तक पैदा ही नहीं हुआ।

—अजेय है तो ज्ञान, नष्ट होता है पात्र।

—ज्ञान असीमित है तो पात्र अत्यंत सीमित और क्षुद्र।

—ज्ञान की सीमा तक पहुंचकर उद्घोष होता है :

'बंदर जैसे नाचे लाठी पर,
डर न जाना, मेरे मन।'

—सत्य को प्रतिपादित करें ज्ञान के मेरुदंड से।

—रह न जाय बंध्या धरती जो जानती नहीं प्रसव-वेदना का सुख।

□

—समझ की अंतिम सीढ़ी पर पहुंच कर, सब सामान्य हो जाता है; हर परिवर्तन नयी कोपलों का सुखदायी लगता है।

—हर मौसम का अपना सुख है !

—जिंदगी, जितनी भी हो, बहु आयामी है और मजे में जीने योग्य है।

—भोगने योग्य है, जिंदगी, हर संभव संधि के साथ ! हर परिवर्तन के बीच।

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१२०० वीं जयंती के अवसर पर (२१ अप्रैल, १९८८)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

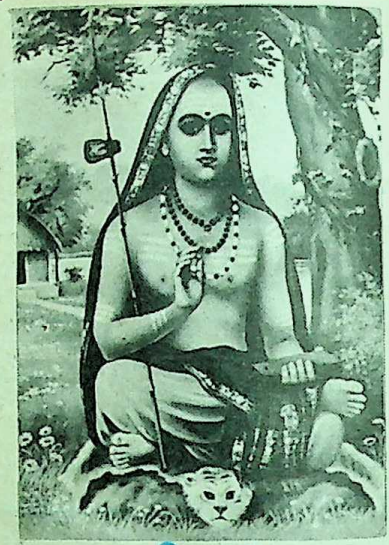

आचार्य शंकर का सर्व-कर्म-संन्यास

● इन्दिरा मोहन

लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व जब, हमारी वैदिक विरासत संकीर्ण संप्रदायों, संकुचित मतों के प्रहारों से संकट ग्रस्त थी— तब विश्वनाथ की पुण्य नगरी वाराणसी में एक तेजोमय, तपोमय दंड कमंडलु धारी मंडित मस्तक, प्रज्ञावान तरुण का अवतरण हुआ, जिसकी दिव्य गूंज ने भारत की चारों दिशाओं को फिर से 'एक ब्रह्म-एक सत्य' के सूत्र में बांध, वेदों की ओर उन्मुख किया— यही थे भारत के शीर्षस्थ आचार्य एवं विचारक आद्य शंकराचार्य। उन्होंने साधना द्वारा शरीर को इतना शुद्ध कर लिया था कि वह ईश्वरत्व का निर्मल यंत्र हो गया— आकृति में दमकती हुई कांति, हृदय में अदम्य उत्साह, कर्म चेष्टा की विपुलता एवं अनुपम उद्वेलित शक्ति। दर्शन विषय को लेकर जितनी व्यापक चर्चा इस देव पुरुष की हुई, उतनी कदाचित बादरायण व्यास को छोड़कर अन्य किसी लेखक अथवा तत्वज्ञानी की नहीं हुई। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों अतीत की घटनाएं हैं, परंतु वे केवल इतिहास का विषय नहीं, वरन् राष्ट्रीय आध्यात्मिक चेतना का आधार हैं, जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनातन धर्म को निवीत्रत भी किया, प्रकाशित भी किया।

शंकर का प्रादुर्भाव

आचार्य शंकर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ, जब राज्याश्रय के उन्माद में बौद्ध धर्म अपनी गरिमा खोने लगा था, विदेशी आक्रमण आरंभ हो रहे थे। इतिहास साक्षी है जिन भयंकर आक्रांताओं के द्वारा मिस्र, सीरिया, बेबीलोन— जैसी संस्कृतियां सर्वथा नेस्तनाबूद हो गयीं, भारत आज भी अपनी पहचान बनाये रख सका है— हमारी सांस्कृतिक धरोहर को आचार्य-जैसे ऋषियों-संतों ने ही समय- समय पर प्राण फूंककर पुनः प्रतिष्ठित किया।

सन् ७८८ ई. में शंकर केरल के कालटी ग्राम में एक शिवभक्त नंबूदरी वंश में जन्मे थे। ३२ वर्ष की अल्पायु में सारे भारत की तीन बार परिक्रमा कर केदारनाथ में सन् ८२० को ब्रह्मलीन हो गये। परवर्ती आचार्य एवं प्रचारकों की भांति उनमें एकदेशीयता संकीर्णता अथवा असंपूर्णता नहीं थी— सुदूर दक्षिण केरल में जन्म लेकर वे पूरे भारत के हो गये थे, क्षेत्रीय भाषा की अपेक्षा संस्कृत भाषा में अपनी सारी रचनाएं कीं। वे तो वास्तव में सनातन धर्म की विश्वव्यापी महानता के उदार प्रतिनिधि थे।

वैराग्य भाव श्रेष्ठ

आचार्य के जीवन में एक विलक्षणता विशेष रूप से मिलती है— उन्होंने अपने ग्रंथों में बार-बार संसार के प्रति वैराग्य-भाव को श्रेष्ठ माना, जबकि स्वयं संन्यासी होकर निरंतर कर्मरत रहे। आठ वर्ष के भीतर चार वेद प्रमुख दर्शन तथा अनेक शास्त्रों का अध्ययन बारह वर्ष के भीतर योगसिद्धि एवं सर्व शास्त्र ज्ञान, सोलह वर्ष में प्रमुख ग्रंथों की मान्य रचना— आचार्य ने चार वर्ष बद्रीनाथ के निकट व्यास गुफा में बिताये— इसी एकांत तपोभूमि में गीता ब्रह्मसूत्र, उपनिषद आदि ग्रंथों पर अपना प्रामाणिक भाष्य लिखा। यहीं पर आचार्य ने अपने शिष्यों को पढ़ाना आरंभ किया। उस युग की कल्पना कीजिए, जब न आने-जाने के द्रुतगामी साधन थे, न आज-जैसी सुविधा— सेना का लाव-लश्कर भी उनके साथ न था। हां, ईश्वर भक्ति एवं आत्मबल के सहारे वे एकाकी चल रहे थे— साथ में अनेक आस्थावान श्रद्धालु शिष्य जो वेद-चर्चा, मंत्रोच्चारण, देव-देवियों की वंदना से दिशाएं स्पंदित करते जा रहे थे। कुछ लोग चाहे उन्हें निवृत्ति प्रधान अथवा मायावादी क्यों ने समझें, पर उनके जीवन में केवल कर्म का आदर्श और

"जिस प्रकार कुंभकार चक्र चलाकर उसे छोड़ देता है, परंतु चक्र और वेग से निरंतर घूमता रहता है, उसी प्रकार कर्मों के संस्कारवश ज्ञानी का शरीर भी ज्ञान हो जाने पर क्रियाएं करता रहता है। यद्यपि मोक्ष के लिए ज्ञान अकेला ही समर्थ है।"

—आचार्य शंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म की प्रेरणा ही दिखायी पड़ती है। उनका यह कर्म, राग, द्वेष रहित, इंद्रियों को अपने वश में कर समष्टि-विराट के प्रति था— यही है शंकर का सर्व-कर्म- संन्यास।

शंकर के अनुसार उत्कृष्ट कोटि का धर्म परायण जीवन एक ऐसा जीवन है, जिसमें कर्म की ओजमय स्रोतस्विनी बहती है किंतु वह कर्म उसे बांधता नहीं क्योंकि इस तरह के कर्म में स्वार्थ के स्थान पर संसार के कल्याण की आधारभूत भावना होती है। गीता कर्म फल के त्याग को सात्विक त्याग कहती है, शंकर एक कदम आगे हैं। कर्म को ही नहीं छोड़ना, वरन् उसकी वासना का भी परिहार करना है। आचार्य ने कर्म की आवश्यकता वस्तुतः दो प्रकार से मानी है— लोक संग्रह के लिए और चित शुद्धि के लिए।

ज्ञान प्राप्ति के बाद ही वास्तविक कर्म

सामान्य धारणा है कि पहुंचे हुए ज्ञानी को कर्म शोभा नहीं देता, उसे कर्म के गोरख धंधे में नहीं पड़ना चाहिए। पर सच्ची बात यह है कि ज्ञान प्राप्ति के बाद ही वास्तविक कर्म शुरू होता है। इससे पूर्व तो हम कर्म के नाम पर अकर्म, कर्तव्य के नाम पर अकर्तव्य और परोपकार के नाम पर अहं की पुष्टि करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के बाद यदि कर्म समाप्त हो जाता तो गीता सुनने के बाद अर्जुन अन्याय और अनीति के दमन हेतु युद्ध न करते। योगेश्वर श्री कृष्ण पशु चारण, झूठी पत्तल उठाने और रथ हांकने का काम न करते। यदि कर्म घटिया साधन होता तो भक्त शिरोमणि रैदास जूते न सीते, परम ज्ञानी संत कबीर ताना-बाना न बुनते, विवेकानंद देश-विदेश घूमकर अध्यात्म की अलख न जगाते। वस्तुतः यदि ज्ञानी, ध्यानी तत्ववेत्ता संत लोकसंग्रह की भावना से शास्त्र अनुकूल कर्म न करते तो आज संसार को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा कहां से मिलती। जिस जीवन में सेवा भावना, यज्ञ, आत्म त्याग की प्रचुरता है, उसी के माध्यम से आध्यात्मिक शक्तियों की अभिव्यक्ति होती है। वर्षों की एकांत साधना के बाद बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई, किंतु बुद्ध का शेष जीवन सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में ही व्यतीत हुआ। मनुष्य के लिए कर्म न करना असंभव है।

आचार्य का सर्व कर्म संन्यास व्यवहार और परमार्थ दोनों का साधक है। उन्होंने राग, द्वेष रहित निष्काम कर्म का संदेश मानव समाज के श्रेय के लिए प्रस्तुत किया। राग द्वेष रहित विषय दुःख का कारण नहीं होता— सीढ़ी को जानने वाला प्रकाश के बिना भी ऐसे चढ़ता है मानों दीख रही है। इसी प्रकार ज्ञान में स्थित व्यक्ति अभ्यास के कारण संसार में पदार्थों में निर्लिप्त रहकर 'सर्व भूत हिते रताः' व्यवहार करता है। इस दर्शन का निचोड़ नैतिकता के

"मनुष्य तभी तक मनुष्य है जब तक उसका अंतकरण कर्तव्य तथा अकर्तव्य के विवेक योग्य है। जब उसमें वह योग्यता नहीं रहती, तो उसे मनुष्य रूप से नष्ट ही समझना चाहिए, क्योंकि वह पुरुषार्थ के अयोग्य हो जाता है।"

—आचार्य शंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

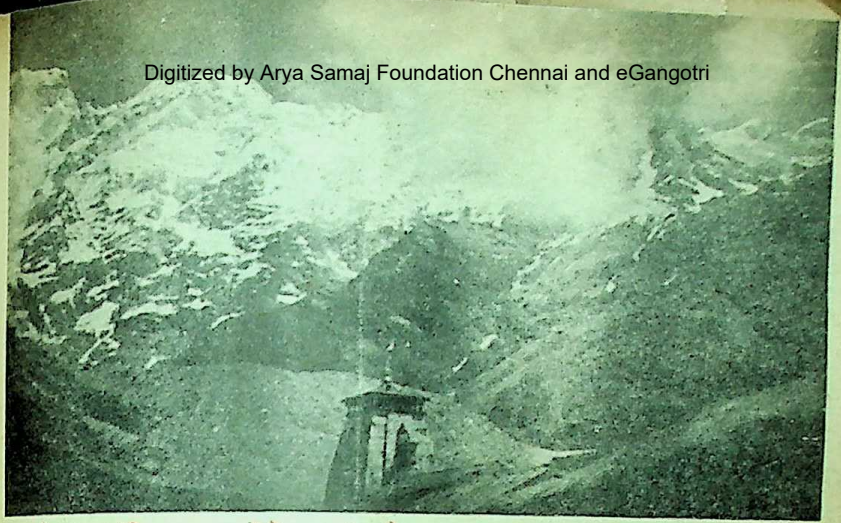

केदारनाथ मंदिर । पृष्ठभाग में हैं भारतखंड और खरचाखंड नामक शिखरों की हिमानियां इसी मंदिर के पीछे स्थित है स्वर्गारोहिणी नदी

पालन में है । बोये गये बीज के लिए जल जो महत्त्व रखता है, वही कर्म के लिए नैतिकता का है । अपने भीतर जितनी पवित्रता होगी, उतना ही ईश्वर समीप मालूम देगा ।

जिस प्रकार समुद्र से भाप बन जल बरसकर नदियों-नालों के माध्यम से अंत में समुद्र में ही गिरता है, अथवा मिट्टी से पैदा हुआ पौधा मिट्टी को ही पुष्ट करता है, उसी प्रकार संसार में से उन्नत भाव को प्राप्त कर, ब्रह्मभाव में स्थित हो पुनः संसार को ही रसमय बनाता है— हृदय का आनंद चारों ओर छलकने को आतुर रहता है । आचार्य का स्वयं का जीवन इस सत्य का प्रमाण है ।

दिग्विजय-यात्रा

अपनी दिग्विजय-यात्रा में उन्होंने अनेक कष्ट सहे, ताप-शीत झेली, विभिन्न मत-मतांतरों की आलोचना सही, तांत्रिकों के कोपभाजन हुए पर स्वयं सदा निरासक्त-निर्विकार । शंकर को हिंदू, बौद्ध तथा जैन मत के लगभग अस्सी प्रधान संप्रदायों के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा । कर्मकांडी मंडन मिश्र के साथ आचार्य का शास्त्रार्थ, कहते हैं, सोलह दिन तक चला । उन्होंने प्रस्थानत्रयी और अनेक ग्रंथों की रचना की । देवी-देवताओं की स्तुति में अनेक लालित्यपूर्ण मधुर स्त्रोत लिखे, जिनकी सरसता शंकर की भक्ति और शक्ति का प्रतीक है । उन्होंने अनेक मंदिरों का पुनरुद्धार किया । देश की धार्मिक व्यवस्था को एक भावना सूत्र में पिरोने की दृष्टि से प्रमुख तीर्थ क्षेत्रों में विख्यात मठों तथा उपपीठों की स्थापना की । पूर्व में जगन्नाथपुरी में गोवर्धन मठ, उत्तर में बद्रिकाश्रम में ज्योतिर्मठ, पश्चिम में द्वारिकापुरी में शारदा मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ । प्रहरी के समान चारों पीठ आज भी राष्ट्रीय एकता की वैजयंती फहरा रहे हैं । उपनिषदों के आधार पर आचार्य ने उद्घोषणा की कि ब्रह्म सत्य है, संसार और उसके पदार्थ मिथ्या हैं, जीव ब्रह्म के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी अंक में

वृक्ष जिसकी छाया में गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ !

बुद्ध जयंती पर विशेष लेख

•

अम्बरडीन की लड़ाई

अंडमान के ज्ञात इतिहास का एक रोमांचक अध्याय

•

सिर की चोट ने खोल दिये कपाट दैवी शक्ति के

चमत्कारिक उपचार का अनोखा प्रसंग

कुछ अन्य दिलचस्प रचनाएं

- *खंडहर हो रहे हैं सास-बहू के मंदिर*
- *स्वदेश के लिए कार्य करना कितना सुंदर है*
- *वह आजीवन नहीं झुकी*
- *सफरनामा भारतीय ट्रेड यूनियन का*
- *कलाकृतियों का सट्टा बाजार*
- *शैक्षणिक क्रांति को समर्पित संत*
- *हमारे खगोलीय तीर्थ*
- *सूफी संत सरमद जिसे सूली पर लटका दिया गया*

•

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

कुछ ही

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः

वही सत्य ज्ञान स्वरूप है, सृष्टि रूप है, चि रूप है— जैसे सोने का जेवर बना होने पर सोना होता है— टूट जाने पर भी सोना है। ठीक इसी प्रकार यह संसार ब्रह्म समुदभूत है और ब्रह्म में ही विलीन हो है। अतः भेदभाव कैसा, छुआछूत कैसी ?— एक बार काशी में आचार्य शिष्यों सहित स्न करने जा रहे थे— चांडाल सामने से आया शिष्यों ने उससे दूर हटने को कहा। चांडाल उत्तर दिया, 'किसे दूर हटने को कह रहे हो, को या आत्मा को ? देह हमारी और आपकी समान तत्वों से बनी है। आत्मा व्यापक है निर्लेप है, छूने से कैसे अपवित्र हो सकती है ? आचार्य को समझते देर न लगी कि ब्रह्म से चींटी पर्यंत एक ही ब्रह्म है, जिसने इसको समझ लिया, वह मेरा गुरु है। सूर्य की छाया चाहे गंगा में पड़े या नाले में, कदापि मैली नहीं होती।

कर्म की महिमा

कुछ लोग समझते हैं कि शंकर-दर्शन में कर्म निरर्थक माना गया है। वे सकाम और निष्काम कर्म को एक मानकर ऐसी धारणा करते हैं। यह सत्य है कि शंकर ने कर्म को मुक्ति में बाधक माना है— इसका तात्पर्य कर्म की निरर्थकता से कदापि नहीं। गीता भाष्य में आचार्य ने कहा है कि कर्म व्यर्थ नहीं जाता, जो जिस भावना से कर्म करता है, उसका वैसा ही फल पाता है। कर्म मन को शुद्ध करता है। वासनाओं का दूर हो जाना ही मोक्ष है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं भागने की जरूरत नहीं जिसके मन में ममता, अहंकार नहीं, वह अपने घर में दैनिक काम करते हुए मुक्त पुरुष-सा है। शंकर ने मनुष्य को ललकारा— स्वयं को पहचानो— तुम्हारे अंदर उद्दाम उत्कृष्ट संभावनाएं हैं, जिसके द्वारा सब कुछ पाया जा सकता है।

न धर्मा न चार्थी न कामो न मोक्ष— श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवो हम्

ब्रह्मः तुम्हारा स्वरूप है— संसार क्षणभंगुर है— नेह नानास्ति किंचन-नश्वर के प्रति मोह छोड़ो— तुम केवल इंद्रिय, मन बुद्धि नहीं वरन् इन सबसे परे सच्चिदानंद स्वरूप हो। आनंद पदार्थों में नहीं तुम्हारे भीतर है, जितना अंतर्मुखी होगे उतना ही आनंद बढ़ेगा।

शंकर के अनुसार चेतना को समझना एवं तदनुरूप कर्म करना धर्म है। न जीवन को धर्म निरपेक्ष कह सकते हैं न धर्म को जीवन-निरपेक्ष। दोनों सह अस्तित्व की अभिन्न इकाई हैं। सत्य-ज्ञान हेतु दूसरों पर शासन करने से ज्यादा जरूरी है, आत्म शासक होना। संपूर्ण के प्रति समर्पण का अर्थ है संपूर्णता की सेवा करना। मानवता की सुख-समृद्धि के लिए जो विकास योजना, सुसंगठन, सुव्यवस्था को आवश्यक बताते हैं, वे भूल जाते हैं कि यह सब पहले आंतरिक जीवन के निर्माण हेतु जरूरी है। जब तक हम अपने स्वार्थ, लाभ और काम की वासनाओं पर विजयी नहीं होंगे, उसकी बाहरी विजय, व्यवस्थाएं, योजनाएं, आंतरिक बर्बरता के प्रयोग के लिए उपादान मात्र रहेंगी।

—१२ लखनऊ रोड, दिल्ली।

ज्ञान-गंगा

मणिसूर्येन्धनानां वै सम्बन्धात्पावको यथा।
विषयेन्द्रियबुद्धीनां संयोगाच्चेतना तथा॥

(बुद्धचरितम् १६/१२)

सूर्यकांत मणि में सूर्य और ईंधन के संयोग से जिस प्रकार निश्चय ही अग्नि प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार विषय, बुद्धि और इंद्रियों के संयोग से चेतना का जन्म होता है।

निर्गुणस्य हतं रूपं दुःशीलस्य हतं कुलम्।
असिद्धस्य हता विद्या अभोगेन हतं धनम्॥

(चाणक्यनीतिदर्पण : १८/१६)

गुणहीन मनुष्य की सुंदरता व्यर्थ होती है, शीलरहित का कुल निंदित होता है, अलौकिक शक्तियों से रहित, मोक्ष की ओर न ले जानेवाली और बुद्धि से रहित विद्या व्यर्थ होती है, तथा भोग के बिना धन व्यर्थ होता है।

कदापि नोग्रदण्डः स्यात् कटुभाषणतत्परः।
भार्या पुत्रोऽप्युद्विजते कटुवाक्यादुग्रदण्डत:॥

(शुक्रनीति : ३/८५)

कभी भी उग्र दंड देनेवाला एवं कटुभाषण करने में तत्पर नहीं होना चाहिए, क्योंकि स्त्री तथा पुत्र भी कटु भाषण करने एवं उग्र दंड देने से उद्विग्न हो उठते हैं।

भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत्।

(शान्तिपर्व (३३०/१२)

दुःख की यही औषधि है कि मनुष्य उसकी चिंता न करे।

अधर्मसञ्चितो धर्मो विनाशयति राघव।

(वाल्मीकि रामायण ६/८३/३०)

राघव, अधर्म से संचित किया हुआ जो धर्म होता है वह विनाश करनेवाला होता है।

(प्रस्तुति : महर्षिकुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह और उल्लास
का प्रतीक है वैशाखी

वैशाखी पर विशेष

वैशाखी, टी. एस. इलियट और खालसा

● डॉ. जोध सिंह

संसार को बहुत गौर से न देखें, सरसरी नज़र से भी देखें तो पीड़ा, कुंठा, छटपटाहट, दरिद्रता, बीमारी, बेबसी, अभाव की लंबी-चौड़ी चादर को अपने चारों ओर लिपटा हुआ पाते हैं। इसी चादर में कहीं-कहीं छोटे-से रूप में हंसी, आशा, उत्साह आदि भी आटे में नमक के बराबर देखे जा सकते हैं। कुल मिलाकर देखने पर बेशक कष्टकारी परिस्थितियों की बहुलता मिलती है पर छुट-पुट पाए जानेवाले सुख, आस्वाद में भी इतना आकर्षण और जमाव दृष्टिगत होता है कि संसार हमें पूरा प्रिय और मनमोहक लगता है। हमें अपने पास की मामूली-सी चीज खोने या त्यागने में काफी समय तक दुःख और पश्चाताप बना रहता है फिर पूरी दुनिया को छोड़ने की बात कौन कहे।

लोग प्रेम की बात किया करते हैं कि हम इससे प्रेम करते हैं, उससे प्रेम करते हैं, ईश्वर से प्रेम करते हैं, भलाई से प्रेम करते हैं, प्रेम हमारे रोम-रोम को प्रभावित कर रहा है, प्रेम हमारे जीवन का आधार है। परंतु जब प्रेम की परीक्षा की घड़ी आती है, प्रेम से प्रेरित होकर कुछ कर मरने की नौबत आती है तो कई किस्म के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु गोविन्द सिंह ने अकेले ही वैशाखी मनायी और एक नयी कौम पैदा कर दी, लोगों में नयी चेतना फूंक दी। आज पचासों सदस्योंवाली कमेटियां बनती हैं इस वैशाखी को मनाने के लिए और परिणाम होता है आपसी कलह, सत्ता का संघर्ष और व्यक्तिगत उन्माद।

हानि-लाभ के प्रश्न सामने आ खड़े होते हैं। कई मजबूरियां और मोह हमें जकड़कर जड़ कर देते हैं, प्रेम की शब्दावली खोखली लगने लगती है और जीवन-मोह का ठोस रूप हम अपने अंदर अनुभव करने लग जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि सच्चा प्रेम हमें निडर बनाता है, हमें हैरानी में डालकर हमारे हाथ-पैरों को फुला नहीं देता बल्कि उनमें चुस्ती और शक्ति भरकर हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। कबीर के शब्दों में—

''डगमग छांड दे रे मन बौरा,
अब तो जरे मरे बद आवे
लीन्हों हाथ सिंघौरा''

को कार्य रूप में ढालने के लिए प्रेरित करता है, पुरजा-पुरजा कट करने की भावना भरता है; प्रेम हमें नया जन्म देता है, संसार रूपी चट्टान से टकराकर उसे चूर-चूर करने की शक्ति देता है।

अप्रैल : 'एक निर्दयी महीना'

यूरोप में अप्रैल-मई के महीने बसंत के महीने माने जाते हैं। चारों तरफ खुशियां, हरियाली, गरमजोशी, उत्साह, उमंग, तरंग, हंसी, खिंचाव, प्यार, मुहब्बत, चहल-पहल, हलकापन दृष्टिगोचर होता है। वहीं का नोबेल पुरस्कार-विजेता कवि है टी. एस. इलियट। यह कवि अपनी महान कविता 'द वेस्ट लैंड' की प्रारंभिक पंक्तियों में लिखता है—'सब महीनों में से अप्रैल का महीना सबसे अधिक निर्दयी माना जाता है' ('एप्रिल इज द् क्रूयलेस्ट मंथ')। इस माह में फूल खिलते हैं बाहें उठाकर सिर को थोड़ा-थोड़ा झुकाकर अपनी तरफ बुलाते हैं। और मानों यह कहते हैं, 'आओ, झूमो, हमारे जैसा बनो, खुशी से अपने-आपको भर लो।'

परंतु यह कैसी बिडंबना है ? हम क्यों उनकी तरह बनें ? भुलावे की ठंड में कितना

ढोल-नगाड़े के बीच
मुखरित होते हैं गीतों के स्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराम था ? कुछ न करने की जड़ता में कितनी आनंद था। कुछ भी न खोने-पाने में, छोड़ने में, कुछ नहीं त्यागने में, चिर-निद्रा में कितना सुख था; सामने हो रहे किसी भी काम को मात्र टुकुर-टुकुर देखते रहना कितना अच्छा लगता था, अपने वहमों, पाखंडों, कर्मकांडों का जो कवच हमने अपने ऊपर ओढ़ रखा था और सिर नीचा किये चुपचाप कोल्हू के बैल की तरह जीवन की गाड़ी को घसीटे चले जा रहे थे, वह कितना स्वाभाविक लगने लगा था। पर अब यह अप्रैल का महीना, खिले फूलों का महीना, लहलहाकर सीना ताने अपनी ओर बुलानेवाली हरियाली का महीना, कितनी मर्मांतक पीड़ा देनेवाला महीना है।

पीड़ा और नया जीवन

पीड़ा ! जी हां, पीड़ा और नया जीवन ! लहलहाता हुआ पौधा, प्रकृति का खिला हर फूल हमें यह संदेश देता है कि लहलहाने के लिए, खुशिया बिखेरने के लिए पहले मिट्टी में मिलना पड़ता है। पहले मरना कबूल करना पड़ता है, पहले पृथ्वी के गहन अंधकार में अपने-आपको अवस्थित करना पड़ता है। सब प्रकार के मोह जाल को छोड़ अपना अस्तित्व तक मिटाकर मिट्टी को गले लगाना पड़ता है, तब कहीं जाकर बीज को पौधे और फूल का रूप मिलता है, तब कहीं सुखों की अमृतवर्षा करने में सक्षम हुआ जा सकता है। प्रेम है अगर दुनिया से, दुनिया के लोगों से तो उनके लिए अपना सब-कुछ छोड़कर त्याग का रास्ता अपनाना होगा, तभी नया जीवन मिलेगा, तभी खिलने का आत्म संतोष मिलेगा।

तो क्या अपने आपको मिटाने के लिए तैयार रखना आसान है, क्या गद्देदार पलंग वातानुकूलित कमरे, स्वादिष्ट व्यंजनों का त्याग कर रूखी-सूखी खाकर अपने अहं को मिटाकर हाथ की मेहनत और आत्मा की सच्ची लगन से प्रताड़ित शोषित, दलित मानवता को गले लगाना आसान है, क्या यह त्याग मर्मांतक पीड़ा देनेवाला नहीं। हमें नया जन्म लेना है, नया आदमी बनना है, इसकी याद दिलानेवाला यह अप्रैल का महीना क्या वास्तव में निर्दयी नहीं जो हमें हर साल झकझोर के चला जाता है।

वैशाखी का संदेश

वैशाखी (वैसाखी) भी हमें ऐसी ही मनोस्थिति का संदेश देने के लिए हर अप्रैल में आ जाती है। सन १६९९ की वैशाखीवाले दिन ही आनंदपुर के केसगढ़ में गुरु गोबिंद सिंह ने चिरंतन काल तक जिंदा बने रहने की कल्पना करनेवालों को ललकारा था कि ऐ दुनिया के लोगो ! यदि आनंद चाहते हो, संतोष चाहते हो, गर्व से सिर ऊंचा रखना चाहते हो, संसार में प्रसन्नता— निश्चिंतता का राज्य देखना चाहते हो तो मरकर जीने की कला सीखो ! जीवन्मुक्त होने का संकल्प लो ! मानसिक और सामाजिक गुलामी की जंजीरों को आत्म-विश्वास और कर्मठता से तोड़ दो ! अपनी भुजाओं और मन की शक्ति को पहचानो और मानवता के नव-निर्माण में जुट जाओ।

शेख फरीद ने कहा है गुलामी जहन्नम है—

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांइ मुझे न देहि।
जे तूं एवै रखसी जीउ सरीररहु लेहि।

गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. १३८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

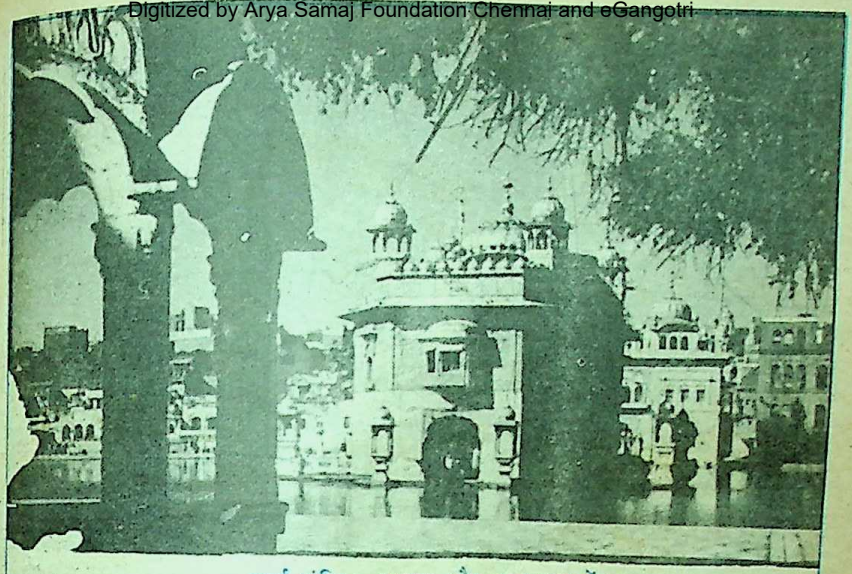

स्वर्ण मंदिर : आस्था और श्रद्धा का केंद्र

कबीर ने कहा है—

गगन दमामा बाज्यो परयो नीसाने घाव,
खेत जो मांडयो सूरमा अब जूझन को दाव
सूरा सो पहचानिए जो लरै दीन के हेत
पूर्जा पुर्जा कट मरे कबहुं न छांड़े खेत ।

गुरु नानक देवजी की वाणी को याद करो, जिसमें उन्होंने हमें प्रेम करने की कला सिखायी है—

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ
सिरु धरि तली गली मेरी आउ
इतु मारगि पैरु धरीजै
सिरु दीजै काणि न कीजै ।

(गुरु ग्रंथ साहिब पृ. १४१२)

गुरु अरजन देव ने कहा है—

पहिला मरण कबूलि जीवण की छडि आस ।
होहु सबना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ।।

(गुरुग्रंथ साहिब पृ. ११०२)

आज इस वैशाखी के दिन की उपलब्धियों को जुटाने में गुरु नानक के रूप में सब गुरुजनों ने तन-मन-धन और जीवन से सहयोग दिया । गुरु अरजन देवजी ने तो समय की पुकार को सुनते हुए लाहौर में अपने शरीर तक का बलिदान दे दिया । गुरु नानक देवजी ने, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदासजी तथा अन्य गुरुजनों ने त्याग का रास्ता अपनाया, सुखों को छोड़ा, और **''नीचां अंदर नीच जात, नीचीहूं अति नीचु''** बन के लोगों के बीच गयें, उन्हें गले से लगाया और आज की वैशाखी का मार्ग प्रशस्त किया ।

गुरु तेग बहादुरजी ने सन १६७५ में चांदनी चौक दिल्ली में अपना शीश धर्म सापेक्षता एवं पक्षपात निरपेक्षता के प्रसार के लिए अत्याचार की तलवार को भेंट किया । भंगाणी की लड़ाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत लेख के लेखक डॉ. जोधसिंह पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला में धर्म अध्ययन विभाग में रीडर हैं। उन्होंने गुरु गोविंदसिंह की संपूर्ण कृतियों का हिंदी अनुवाद भी किया है आजकल वे सिख धर्म विश्व कोष पर कार्य कर रहे हैं।

में सैयद बदरुद्दीन शाह (पीर बुधू शाह) ने भी आज की वैशाखी की सफलता के लिए ही अपने बेटे और मुरीदों की कुर्बानी हमारे लिए दी थी। "अगर जीवित बने रहना चाहते हो तो अपने अंदर मरने की चाह पैदा करो। जीवन और मृत्यु तो धूप और छांह हैं और दोनों की उपयोगिता समान है। आओ आज इस ७०-८० हजार की हाजिरी में मैं हाथ में नंगी तलवार लिये तुम सबको ललकार रहा हूं। कोई है जो तलवार की धार पर चलकर अमर होना चाहता हो, कोई है जो जीवन का मोह त्यागकर मौत का वरण करने के लिए अपने सिर को हथेली पर रखकर सामने आये, कोई है जो इसी क्षण संसार को त्याग अनंत काल के लिए मानवता के फूल के रूप में खिलकर आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनना चाहता हो।"

गुरु गोविन्द सिंहजी की दहाड़ और चारों तरफ सन्नाटा। लगभग डेढ़ लाख आंखें खुली की खुली। आवाज कानों से टकराती सीधे उतरती गयी। कुछ क्षणों के लिए चुप्पी। और त्याग का, सुखों और कष्टों का, पाने और छोड़ने का संघर्ष, सब श्रोताओं के दिलों में हो गया। दूसरी पुकार फिर सुनायी दी—

"यह तो है घर प्रेम का खाला घर नाहि
सीस उतारे भुंइ धरे तब बैठे इह मांहि

"प्रेम की कोरी बातें भर करनेवाले दुर्बलता के कवच को उतार फेंको, हिम की निष्क्रियता की नींद को त्यागो, संघर्ष की गर्मी से अपने मन और शरीर को तपाने के लिए तैयार हो जाओ और देखो बलिदान और त्याग का रास्ता कितना दुखमय और सुखमय है"...

दयाराम : प्रथम बलिदानी

पुकार अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि दयाराम नाम का नवयुवक उस भारी भीड़ में से गुरुजी के मंच की ओर बढ़ता स्पष्ट दिखायी देने लगा। धन्य है सेवा, धन्य है गुरु-सारी सभा की गुंजार थी। फिर क्या था। देखते-देखते चार और बलिदानी गुरुजी के सम्मुख उपस्थित

पाठकों से

आप 'कादम्बिनी' के नियमित पाठक हैं। यदि आपने कुछ सोचा है तो हमें भेजिए। सामाजिक बुराइयों, अपनी, अपने पड़ोसियों की परेशानियों, सरकार की ज्यादतियों और यदि आप गांव में रहते हैं, तो वहां के दुख-दर्दों, इस तरह ऐसे न जाने कितने प्रश्न हैं, जो आपको उद्वेलित करते होंगे लेकिन अभिव्यक्ति की कला से अनभिज्ञ होने के कारण अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते हैं। आप अपने विचार पंद्रह से बीस पंक्तियों में लिख भेजिए। उन्हें सुधार-संवार कर प्रकाशित करने का दायित्व हमारा। हां, इस स्तंभ के लिए कविता या लघु कथा जैसी रचनाएं बिलकुल न भेजें।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए। पांचों बलिदानियों के आत्मोसर्ग की भावना से हजारों की मोह तंद्रा भंग हुई। हजारों ने उसी दिन अमृत-पान किया और नया जीवन प्राप्त किया; अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए, हमारे लिए, आपके लिए।

वैशाखी : प्रदर्शन का त्योहार नहीं

आज वैशाखी एक मेला है। खाने-पीने का एक त्योहार है। कपड़े पहनने, दिखाने, वैभव के प्रदर्शन का मौका है। गुरु गोविंद सिंहजी ने अकेले ही वैशाखी मनायी और एक नयी कौम पैदा कर दी, नयी चेतना लोगों में फूंक दी। आज पचासों सदस्योंवाली कमेटियां बनती हैं इस वैशाखी को मनाने के लिए और परिणाम होता है आपसी कलह, सत्ता का संघर्ष, व्यक्तिगत उन्माद। ऐसे में कुछ समझदार, अप्रैल की वैशाखी की याद से भयभीत हो उठें तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि उन्हें फूलों के खिलने और फसल की हरियाली के पीछे महान त्याग और बलिदान की चुनौती साफ नजर आती है, जिसे स्वीकार न कर पाने की विवशता उन्हें दूर करके रख देती है। शारीरिक सुखों के सामने आत्मा की आवाज दबकर कितनी बारीक और मामूली बनकर रह गयी है कि हम त्याग के प्रतीक इस त्योहार को, घर फूंककर, अपनी खुदी को मिटाकर प्राप्त किये इस अवसर को एक मामूली त्योहार के रूप में ही मनाकर अपने आपको संतुष्ट अनुभव करने का यत्न कर रहे हैं।

काश ! आज हम समझ पाते कि वैशाखी कितना अमूल्य अवसर है।

—धर्म अध्ययन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

सीपिकाएं

आम आदमी

क्या वर्षा,
क्या शीत,
क्या ग्रीष्म,
आम आदमी
महंगाई की
शर-शैय्या पर लेटा
एक भीष्म

आतंकवाद

न रो,
न चीखो,
न दहाड़ो
आतंकवाद
दांत का दर्द,
इसे तुम
जड़ से उखाड़ो,

—उपेन्द्र जोशी 'उपवन

संयम

संयमः
एक युद्ध,
अपने ही विरुद्ध।

प्रीति

प्रीतिः
एक शक्ति,
तृषा में तृप्ति।

मृत्यु

मृत्युः
एक क्षण,
रमण से विस्मरण।

—रमेश तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

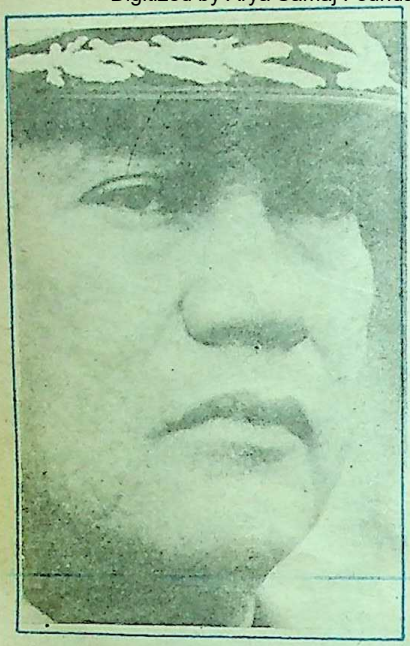

अवैध व्यापार में लिप्त सर्वोच्च शासक

● संजीव अग्रवाल

अमरीकी उपन्यासकार हेराल्ड राबिंस का एक उपन्यास है 'द एडवेंचरर्स'। इसमें लेखक ने एक ऐसे राष्ट्रपति की कल्पना की है, जो अपनी सेनाओं के साथ लड़ रहे विद्रोहियों को ही चोरी-छिपे शस्त्र-पूर्ति के अवैध व्यापार में लिप्त है, केवल इसीलिए कि इस अवैध व्यापार से उसे अच्छा-खासा धन प्राप्त होता है। जब राष्ट्रपति का बेटा यह रहस्योद्घाटन होने पर अपने पिता से सच्चाई जानना चाहता है तो वह उससे कहता है, 'तुम क्यों परेशान होते हो ? अगर विद्रोहियों की शस्त्र-पूर्ति से हमें आर्थिक लाभ हो रहा है तो कुछ सरकारी सैनिकों के मारे जाने से क्या बनता-बिगड़ता है।'

यह तो एक उपन्यास की काल्पनिक घटनाएं हैं, पर हाल ही में अमरीकी समाचार 'न्यूज वीक' ने एक ऐसे राष्ट्रपति की कारगुजारियों पर प्रकाश डाला है, 'जिसने अपने पद का उपयोग कर समूचे देश को मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार करनेवाले लोगों को बेच दिया है।' वह है लातीनी अमरीकी देश पनामा का तानाशाह राष्ट्रपति मेनुएल एंटोनियो नोरिगा।

पिछले दिनों अमरीका में मियामी और टांपा की संघीय अदालतों में उसे मादक द्रव्यों की तस्करी पैसे के अवैध लेन-देन और धोखाधड़ी के कई मामलों में दोषी ठहराया गया। विश्व राजनीति के इतिहास में पहली बार इस तरह किसी देश के राष्ट्रपति पर इस तरह के आरोप लगाये गये और प्रमाणित किये गये।

वैसे तो लातीनी अमरीकी देशों के सैनिक तानाशाहों की उच्छृंखलता और जन दमन के भयानक कांड समय-समय पर दुनिया के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते रहते हैं पर किसी राष्ट्रपति द्वारा इतने बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार करने का मामला इस तरह पहली बार जग-जाहिर हुआ है।

पद का दुरुपयोग

अमरीका के अटार्नी लियो केलनर के शब्दों में, उसने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए पनामा को मादक पदार्थों के तस्करों के हाथों बेच दिया था।' एक अन्य आरोप यह है कि नोरिगा ने कोलंबिया के भयानक मेडेलिन तस्कर गिरोह को उनकी खतरनाक कारगुजारियों में भरपूर सहायता दी— उनके लिए सुरक्षित हवाई पट्टियों की व्यवस्था करायी जहां से वे कोकीन भेज सकते थे, यही नहीं, उनके हत्यारे दोस्तों को पनामा में शरण दी। बदले में उस तस्कर गिरोह ने नोरिगा को खूब धन दिया। कहा जाता है नोरिगा ने इस तरह कोई छह करोड़ रुपयों की राशि चोरी-छिपे प्राप्त की। अदालत की ग्रांड जूरी ने नोरिगा पर दस लाख पाउंड मारीजुआना अमरीका में चोरी-छिपे पहुंचाने तथा धन प्राप्त करने का आरोप भी लगाया।

दूसरी ओर नोरिगा ने इन आरोपों को मनगढ़ंत बताते हुए इसे अमरीका द्वारा पनामा पर हमला बताया है।

इस बात को पूरी दुनिया जानती है कि दो महासागरों को जोड़ने वाली पनामा नहर के कारण यह क्षेत्र विश्वव्यापी व्यूह रचना की दृष्टि से अमरीका के लिए कितना संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण है।

यह कहा जा रहा है कि नोरिगा तो पहले भी ऐसा था जैसा आज है— बस, इतना हुआ है कि उसके बारे में अमरीकी दृष्टिकोण बदल गया है। पहले अमरीका उसे अपना सच्चा मित्र, उस क्षेत्र में अपने हितों का संरक्षक मानता था, तो अब उसे कम्युनिस्ट निकारागुआ समर्थक समझने लगा है लेकिन दुश्मनों का साथ देने वाला. . .

नृशंस तानाशाह

अमरीकी गुप्तचर विभाग के अधिकारी मानते हैं कि नोरिगा एक नृशंस तानाशाह शासक है, जिसने भ्रष्टाचार और धौंसपट्टी की नीति अपनाकर पनामा डिफेंस फोर्सेज (पी. डी. एफ.) को एक अपराधी गुट में बदलकर रख दिया है। उनका खयाल है कि मादक द्रव्यों के तस्करों को संरक्षण देकर उसने बहुत धन कमा लिया है और उसी के निर्देशन में हजारों किलो कोकीन अमरीका में चोरी-छिपे पहुंचायी जाती

सत्ता मनुष्य को भ्रष्ट करती है। राजमद से मदमस्त शासक पागल हाथी-जैसे निरंकुश बनकर प्रजा और प्रजातंत्र को रौंद डालते हैं। लेकिन उनका मुखौटा कभी-कभी ही उतर पाता है। लातीनी अमरीकी देश पनामा का तानाशाह नोरिगा एक ऐसा ही आदमी है। उसने अपने देश को एक तरह से मादक द्रव्यों के तस्करों के हाथों बंधक रख दिया था, अपने विरोधियों के खून से होली खेली थी। महाशक्तियों के बीच खतरनाक पैंतरेबाजी की थी, नोरिगा का नाम लेते ही कुछ और नाम स्मरण हो आते हैं इदी अमीन, बोकासा, पापा दुवालियर, आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है। उसने निकारागुआ की सरकार को हथियार भेजे हैं, फिदेल कास्त्रो को अमरीकी रहस्य बताये हैं। उसके द्वारा अपने विपक्षियों को मंत्रणा देकर मारने के भी कई मामले प्रकाश में आये हैं। अमरीकी प्रतिरक्षा विभाग के गुप्तचर निदेशालय ने नोरिगा की गुप्त जीवनी में उसके चरित्र को काले पक्षों को उजागर किया।

राष्ट्रपति बनने का स्वप्न

मेनुएल एंटोनियो नोरिगा का जन्म सन १९३४ में हुआ था। वह अपनी मां का अवैध बेटा था इसलिए मां ने ५ वर्ष की उम्र में उसे किसी के पास पालन-पोषण के लिए छोड़ दिया। जब उससे पूछा जाता था कि वह बड़ा होकर क्या बनना चाहता है तो वह कहता था— देश का राष्ट्रपति।

कहते हैं कि स्कूल में पढ़ते हुए वह अमरीकी गुप्तचर संस्था सी. आई. ए. के लिए काम करता था। पेरु में रहकर उसने सैनिक शिक्षा ली। अपनी किशोर वय में वह काफी उच्छृंखल व अत्याचारी कहा जाता था। कई बलात्कार के मामलों में उसके उलझने के प्रमाण मिले थे लेकिन वह दंडित न किया जा सका क्योंकि टोरिजास नामक प्रभावशाली सैनिक अधिकारी नोरिगा की पीठ पर था।

सन १९६८ में एक विप्लव में टोरिजास ने पनामा में सत्ता हथिया ली और नोरिगा का महत्त्व धीरे-धीरे बढ़ने लगा। कुछ समय कई सैनिक अधिकारियों ने टोरिजास का तख्ता पलटने की योजना बनायी। उस समय टोरिजास विदेश में था। दूरदर्शी नोरिगा ने टोरिजास का साथ दिया और बदले में टोरिजास ने उसे सेना में एक ऊंचा पद दे दिया।

नोरिगा के हाथ में सेना की गुप्तचर सेवा और अपराधों की जांच वाले विभाग आ गये। बस, तभी से नोरिगा ने अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करना शुरू कर दिया। वह उस पद पर तेरह वर्ष तक रहा और धीरे-धीरे पनामा की सेना में सबसे अधिक शक्तिशाली बन गया।

गुप्तचर एजेंसी के लिए कार्य

उस पद पर काम करते हुए नोरिगा सी. आई. ए. के लिए भी उपयोगी बन गया। अमरीका की दक्षिणी कमान का मुख्यालय वहीं था, तथा पनामा नहर भी अमरीकी सामरिक व्यूहरचना की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण थी। अमरीका उस क्षेत्र के संबंध में निरंतर सूचनाएं जुटाते रहना चाहता था। नोरिगा ने अमरीकी गुप्तचर सेवा के लिए काफी सधे हुए ढंग से काम किया।

घटनाओं ने करवट ली। सन १९८१ में एक विमान दुर्घटना में रहस्यमय तरीके से टोरिजास की मृत्यु हो गयी। अब यह तय हुआ कि पनामा की सेना का सर्वोच्च कमांडर दो वर्ष की अवधि के लिए चुना जाएगा। सन १९८३ में नोरिगा पनामा की सेना का कमांडर इन चीफ बन गया और फिर उसने पक्ष अदल-बदलकर पनामा की राजनीति में एक ऐसी अस्थिरता पैदा कर दी, जिसमें वही सबसे स्थिर नजर आता था। और ऐसी स्थिति में पनामा का तानाशाह वही बन सकता था। अमरीका को भी इससे कोई एतराज नहीं था, क्योंकि नोरिगा ने अमरीकियों को यह भरोसा दिला दिया था कि वही लातीनी अमरीका के क्षेत्र में अमरीकी हितों की सुरक्षा की गारंटी दे सकता है।

अत्याचार और आतंक

पनामा की सत्ता संभालने के बाद नोरिगा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्याचार और आतंक का ऐसा तांडव मचाया कि सब थर्रा गये। जिस व्यक्ति पर अपना विरोधी होने का संदेह होता उसे नारिगा तड़पा-तड़पाकर मार डालता था।

अमरीकी गुप्तचर सूत्रों का कहना है कि अब इस बात में कोई संदेह नहीं कि सन १९८५ में नोरिगा ने ही विपक्षी नेता स्पाडाकोरा की नृशंस हत्या करवायी थी। स्पाडाकोरा ने खुलेआम नोरिगा पर मादक द्रव्यों की तस्करी को संरक्षण देने का आरोप लगाया था। और एक तरह से अपनी मौत का खुद ऐलान कर दिया था।

पनामा के समाचारपत्रों में इस तरह की अटकलें लग रही थीं कि अगर स्पाडाकोरा ने सच बोलना बंद नहीं किया तो उसका अंत बहुत बुरा होगा। और ऐसा ही हुआ भी था। एक दिन स्पाडाकोरा की सिर कटी लाश डाक के थैले में सीमा पार कोस्टारिका में बरामद हुई थी। शव-परीक्षण से पता चला था कि उसे बहुत यंत्रणा दी गयी थी और जीवित अवस्था में ही धीरे-धीरे उसका सिर काटा गया था। यह ठीक है कि उन दिनों नोरिगा फ्रांस में था, लेकिन निश्चित रूप से यह क्रूर कर्म नोरिगा के इशारे पर ही किया गया था।

अनुमान है कि नोरिगा की व्यक्तिगत संपत्ति दस से बारह अरब रुपयों के बीच है। स्पेन, जापान, इस्रायल में उसकी काफी संपत्ति है, पेरिस में एक शानदार हवेली है— पनामा में तो दर्जनों शानदार भवन हैं।

भ्रष्ट आचरण के प्रमाण

नोरिगा के भ्रष्ट आचरण के बारे में कई किस्से मशहूर हैं लेकिन अमरीकी सरकार का प्यार इस ओर अभी हाल में आकर्षित हुआ, शायद राजनीतिक कारणों से।

कहते हैं, सी. आई. ए. की ओर से नोरिगा को हर महीने एक मोटी रकम दी जाती थी क्योंकि वह क्यूबा तथा पनामा की आंतरिक स्थितियों के बारे में गुप्त सूचनाएं दिया करता था। सन १९८० तक आते-आते नोरिगा पनामा में सी. आई. ए. का सबसे विश्वस्त मित्र बन चुका था, क्योंकि उसने सी. आई. ए. को पनामा में एक गुप्त जासूसी केंद्र की स्थापना की छूट दे दी थी।

उसने और भी कई तरह से सी. आई. ए. की मदद की थी। कोंट्रा विद्रोहियों को पनामा में सैनिक प्रशिक्षण की सुविधाएं दे रखी थीं। कोंट्रा विद्रोहियों को गुप्त आर्थिक सहायता देने के लिए तीन नकली कंपनियां भी पनामा में काम कर रही थीं। इसके अलावा नोरिगा ने अमरीकी सेनाओं को पनामा में कहीं भी कुछ भी करने की खुली छूट दे रखी थी, जबकि पनामा नहर संधि के अनुसार अमरीकी सैन्य गतिविधियां केवल पनामा नहर क्षेत्र में ही सीमित रह सकती थीं।

इसके अलावा नोरिगा दूसरे तरीके से भी अपने लिए धन के अंबार जुटा रहा था। वह अमरीका में मादक द्रव्यों की तस्करी करने वाले गिरोहों को संरक्षण दे रहा था और धन कमा रहा था। बीच-बीच में जब अमरीका और पनामा के अखबारों में नोरिगा के बारे में इस तरह के समाचार छपते तो वह योजनाबद्ध रूप से कुछ तस्करों को पकड़वा देता, तस्करी का माल ले जाती हुई नौकाओं पर छापे डलवा देता। तब अमरीकी प्रशासन को उसका आभार मानने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके भी बयां

जुदा-जुदा

दम निकल जाए मगर दिल न लगाये कोई
इश्क की थी यह वसीयत मुझे मालूम न था
—फिराक गोरखपुरी

जमाना रस्मे-वफा का जो कदर दां होता
हमारा नाम न जाने कहां-कहां होता
—मेंहदी नाज़मी

कारवांवालो चलो बढ़ते चलो मंजिल का क्या
मिल गयी तो खुद शरीके कारवां हो जाएगी
—खुरशीद बुरहानपुरी

हमें उनसे शिकायत है कि दी हैं चादरें छोटी
वो कहते हैं कि तुमसे पांव फैलाने नहीं आते
—जमील हापुड़ी

हम अपने शहर में महफूज भी हैं खुश भी हैं
यह सच नहीं है मगर ऐतबार करना है
—राहत इंदौरी

वतन की गोद ने जिसको 'सलीम' पाला है
यह जिंदगी का तकाजा है वो वतन में रहे
—सलीम खतौलवी

हालात के मारे तो संभल जाते हैं अकसर
एहसास के मारों को संभलते नहीं देखा
—किशोर आरा शबनम

गलत कामों का अब माहौल आदी हो गया शायद
किसी भी वाकये पर कोई हंगामा नहीं होता
—अनवर जलालपुरी

खुद से मिल जाते तो चाहत का भरम रह जाता
क्या मिले आप जो लोगों के मिलाने से मिले
—कैफ भोपाली

दिल की दिल से अगर निकल जाती
दिल तो वीरान हो गया होता
—हसरत देहलवी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

किया होना पड़ता। इसी तरह के नाटक खेलकर नोरिगा एक ओर बाहरी सभ्य समाज की आंखों में धूल झोंक रहा था, दूसरी ओर पनामा में अपने विरोधियों पर उसके नृशंस अत्याचार बर्बरता की हर ज्ञात सीमा लांघ रहे थे।

लेकिन अमरीका और नोरिगा के संबंध तब बिगड़ गये जब इस बात के प्रमाण मिलने लगे कि नोरिगा अमरीकी दोस्तों को धोखा दे रहा है और अमरीकी व्यापार प्रतिबंधों का उल्लंघन कर क्यूबा तथा निकारागुआ को सामान भेज रहा है। कहते हैं, जनरल नोरिगा ने सोवियत गुप्तचर संस्था के. जी. बी. को पनामा में अपना केंद्र स्थापित करने की अनुमति दी थी।

लेकिन जब अमरीकी संसद में पनामा को आर्थिक सहायता बंद करने का प्रस्ताव रखा जाने लगा तो खुद सी. आई. ए. के तत्कालीन निदेशक विलियम केसी ने उसका विरोध किया था और नोरिगा को अमरीका का विश्वस्त मित्र बताया था। पर बाद में धीरे-धीरे नोरिगा का व्यवहार अमरीका के लिए असह्य होता गया। अपने विरोधियों की सरेआम हत्या, कम्युनिस्ट देशों से सांठ-गांठ, अमरीका में मादक द्रव्यों की तस्करी तथा पनामा में जनता पर अत्याचार— ये कुछ ऐसी करतूतें हैं जिनके कारण अमरीकी अदालत ने नोरिगा को गंभीर अपराधों का दोषी माना—।

एक पनामा ही क्यों, पूरे लातीनी अमरीका में यहां भी इस तरह की सैनिक तानाशाह सत्ता में हैं।जनता और जनतंत्र का इसी तरह गला घोंटा जा रहा है। नोरिगा का मुखौटा हट गया है। अब देखें किसकी बारी है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता का दुलार

● स्व. यशवंतराव चव्हाण

जब भी मैं महाराष्ट्र में दौरे पर जाता हूं सैकड़ों-हजारों लोग मेरी सभाओं में जमा हो जाते हैं। लेकिन जो वाक्या उस यात्रा में हुआ, वह मेरे प्रति हार्दिक प्रेम का प्रतीक था। मैं पैठण तालुका (जि. औरंगाबाद) से गुजर रहा था, जो महान संत ज्ञानेश्वर की भूमि है और मेरे लिए हमेशा से पावन रही है। मैंने देखा कि सड़क से लगा हुआ कोई दर्जन-दो दर्जन झोंपड़ियों का एक झुंड है और वहां कुछ लोग सड़क के किनारे बैठे हुए हैं। वे सब उसी दिशा में देख रहे थे, जिस दिशा से हम लोग आ रहे थे। करीब पहुंचने पर मैंने देखा कि दो-तीन बूढ़े और कुछ बच्चे हैं। वहां न तो कोई स्वागत-द्वार बनाया गया था, न उन लोगों के हाथों में फूलमालाएं ही थीं। फिर भी मुझे सहज ही लगा कि यहां मुझे रुकना चाहिए। मैंने अपनी घड़ी पर नजर डाली, मैं कुछ मिनट यहां रुक सकता था। मैंने कार रुकवायी।

फौरन दो बूढ़े कार की ओर आगे बढ़े। "क्या यह चव्हाण की कार है?" उन्होंने पूछा। "हां," मैंने कहा, और मैं कार से नीचे उतर आया। मेरा खयाल था, शायद ये कोई अर्जी-वर्जी पेश करना चाहते होंगे या कोई शिकायत करना। मैंने पूरा ध्यान उनकी ओर केंद्रित किया और कहा, "मैं ही चव्हाण हूं। क्या आप लोग कुछ कहना चाहते हैं?"

इस पर उनमें से एक बूढ़े ने अपनी जेब में हाथ डाला और कांपते हाथों से एक बटुआ निकाला। मैंने सोचा कि शायद वह उसमें से अर्जी निकालेगा। लेकिन नहीं! उसने बटुए में से एक-एक रुपये के चंद नोट निकाले, जो आपस में पिरोये हुए थे। मैंने सोचा कि वे मुझे नजराना पेश करना चाहते होंगे। मैंने बड़े असमंजस की हालत में उस बूढ़े से पूछा, "आजोबा (दादा), मैंने समझा था, आप मुझे कोई अर्जी देना चाहते हैं। लेकिन. . . इन पैसों का मैं क्या करूंगा?"

बूढ़े ने तुरंत कहा, "बेटा, मैं हमेशा सोचता रहा हूं कि मेरे भी तुम्हारे-जैसा कोई बेटा होता! लो, ये थोड़े-से रुपये रखो, इनसे मिठाई खा लेना। यह मेरी छोटी-सी भेंट है तुम्हारे लिए।"

उस समय की मेरी भावनाओं को आप समझ सकते हैं। बचपन में ही, जब मैं निरा पांच बरस का था, मेरे पिताजी चल बसे थे और मैंने उनकी कमी को हर पल महसूस किया है। मुझे हमेशा ऐसा लगता रहा है कि मेरे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण चीज की कमी रह गयी— पिता के प्यार और संरक्षण की। उस क्षण मुझे रोमांच हो आया। . . . आखिर कोई तो था जो मेरे पिता की तरह मुझे कुछ मिठाई खरीदकर देना चाहता था। मैं अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सका। मेरी आंखों से आंसू बह निकले। और मुझे उसमें कोई शरम भी नहीं महसूस हो रही थी।

अनुवादक : अमिताभ सिन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना घर

● डॉ. पूर्णिमा केडिया 'अन्नपूर्णा'

रंगमंच ?

हां, जीवन चक्रिल रंगमंच ही तो है। नहीं तो, समय और स्थान की भिन्नता में भी फिर वही दृश्य क्यों उभर आता ? क्यों होता है ऐसा ?

पहली घटना के समय पूजा पिता के उपवन में कांटों से घिरी एक खिलती हुई कली थी। और अब ? ... अब थी किसी के बटन-होल में टंगा एक मुरझाता हुआ गुलाब !

सहसा उसे अपने पहले चित्र, गुलाब के चित्र की याद हो आयी। स्कूल में सहेलियों ने कहा था, 'यह तो सच्ची का गुलाब लगता है।'

कैसे गुप्त-साधना से उसने चित्रकला सीखी थी। एकलव्य की तरह ही तो उसे एकांत-साधना करनी पड़ी थी। एकलव्य ने तो गुरु की एक प्रतिमा भी स्थापित कर ली थी ; किंतु उसे तो यह सुयोग भी नहीं मिल सका।

हां, यदि प्रेरणा देनेवाले को ही गुरु कहा जाए तो सचमुच उसकी गुरु स्नेहा दीदी ही थीं। जब-जब वह ननिहाल जाती और अपनी ममेरी दीदी को चित्र बनाते देखती, तो उसका मन मचल-मचल उठता। काश ! उसके पास भी वैसे रंग और ब्रश होते !

पर ... न सही वैसी तूलिकाएं और महंगे इंद्रधनुषी रंग। रेखाओं के साधन तो उसके पास थे। स्कूल-कॉलेज की कापियों के [illegible] तरह तरह की आकृतियां उभरने लगीं। [illegible] खिलने लगे, पक्षी चहचहाने लगे। [illegible]

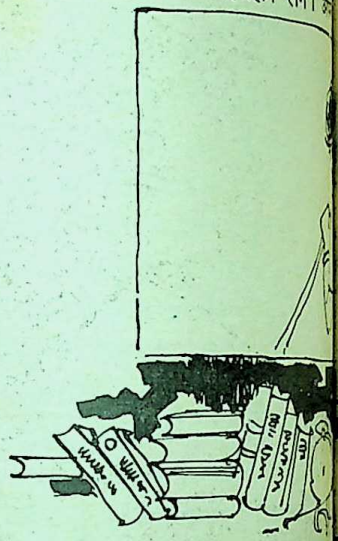

स्कूल के रंगों के डिब्बे में पानी डाल-डाल[illegible] कभी-कभी वह अपने रेखाचित्रों को रंग[illegible] बनाती।

पिता की नजर जब कभी कापियों के [illegible] बने इन चित्रों पर पड़ती, तो वे कहते, [illegible] जाती हो या चित्रकारी सीखने ?'

मां कहतीं, 'अपनी स्नेहा दीदी का रोग [illegible] भी लग ही गया न !'

मां के इस उलाहने में उसे स्नेह के छींटे [illegible] महसूस होते। किंतु जब-जब वे कहतीं, [illegible] स्नेहा दीदी तो पागल है। लड़कियों [illegible] सिलाई-बुनाई-कढ़ाई करके दहेज का [illegible] जुटाना चाहिए कि बेकार में रंगों से उल[illegible] चाहिए।' तो उसका मन न जाने कैसा [illegible] जाता। उसका हाड़-हाड़ टीस उठता। [illegible] की मंडी में दान-दहेज के साथ खरी उतर[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था।

बस, एक संयोग ही था कि स्नेहा दीदी कुछ दिनों के लिए उसके यहां आयीं। उसके बनाये चित्र देखे तो दंग रह गयीं। बोलीं, 'तू तो छुपी रुस्तम निकली पूजा।'

दीदी की सहमति से उनसे सामान लेकर पूजा ने दो-ही-तीन दिनों में एक तैल-चित्र बनाकर अपनी चिर-संजोयी इच्छा पूर्ण की। कुछ भिखारी के उस चित्र को देखकर वे अभिभूत हो गयीं, 'तूने तो निरालाजी के भिक्षुक को प्रत्यक्ष ही कर दिया।'

जाते-जाते वे उसे चित्रकला की अपनी सारी सामग्री दे गयीं, 'मैं तो वहां जाकर और खरीद लूंगी। तुझे तो यहां बुआ-फूफा खरीद कर देंगे नहीं। तुझे शौक है। तू बनाया कर। अभ्यास करेगी तो एक दिन बहुत अच्छी चित्रकार बन जाएगी।'

'चित्रकार न और कुछ।' हर्ष-विभोर पूजा हंस दी।

● ●

पूजा ने हाथ में कूची जो थामी तो और सब कुछ भूल गयी। नित नये चित्र बनाती और सहेलियों में बांट देती। मां चिढ़तीं, 'इसे तो अपनी पढ़ाई और रंगों के अलावे और कुछ सूझता नहीं। इसी की सहेलियां हैं, पढ़ाई भी करती हैं और सिलाई-बुनाई भी। इसे तो दहेज में अपने साथ ले जाने के लिए सामान तैयार करने की कोई चिंता नहीं।'

मां को अधिक दुःख इस बात का था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा की शादी के अवसर विवाह होते जा रहे थे और अर्थाभाव के कारण पूजा का संबंध कहीं तय नहीं हो पा रहा था। जिस बात की फिक्र मां को खाये जा रही थी, उस दिशा में पिताजी की बेफिक्री मां को और अधिक जलाती थी।

पिताजी भी एकदम से निश्चिंत हों, ऐसी बात नहीं। अपने मन से तो नहीं, पर जब कोई मित्र या रिश्तेदार पूजा के योग्य लड़का सुझाता तो वे देखने जाते। जंच जाता तो बात चलाते। पर वहीं पैसे पर आकर बात अटक जाती।

पूजा इन सब तथ्यों को जानकर भी अनजान बनी रहती। वह सोचती, 'क्या विवाह करना ही लड़कियों के जीवन का एकमात्र उद्देश्य है ?' उसे तो बस अपनी कलम और कूंची की दुनिया से ही मतलब था। वह तो बस स्नेहा दीदी के दिये रंगों से रंगी रहती। कोई रंग समाप्त होने लगता, तो अपने जेब-खर्च से बचाये पैसे चुपचाप भाई प्रसून को थमाती। एक वही तो था घर में, जो पूजा के मन की भावनाओं को समझता था और उनकी कद्र करता था।

प्रसून के आग्रह पर ही उसने महाविद्यालय की चित्र-प्रतियोगिता में अपना बनाया एक चित्र रखवा दिया था। सोचा भी नहीं था कि प्रथम पुरस्कार मिलेगा, पर मिल गया। प्रसून की प्रसन्नता का भी ठिकाना नहीं था। घर के अन्य लोगों के लिए सर्वाधिक गौरव की बात यह थी कि उसे इनाम की एक सौ एक रुपयों की राशि मुख्यमंत्री के हाथों मिली।

पुरस्कृत चित्र बैठक में टांगने के लिए उसका मन ललच उठा। उस शाम वह घर में अकेली थी। घर के और लोग किसी [illegible] की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होने [illegible] वह सरदर्द का बहाना बनाकर घर [illegible] गयी। मन में ललक थी चित्र टांगने की [illegible] चोरी-चोरी चित्र टांगकर सबको चकित [illegible] चाहती थी।

पर ओह, आजकल की दीवारें ! [illegible] ठुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। [illegible] भद्दे छेद होने के बाद, दीवार से [illegible] हाथापाई की ; तब कहीं जाकर एक कील [illegible] पायी। फालतू छेद तसवीर के नीचे छुप [illegible] यही पूजा के लिए प्रसन्नता की बात थी। [illegible] तो मां दीवार खराब करने के अपराध के [illegible] व्यंग्य की कीलों से उसे भी ठोक [illegible]

बैठक में दो पुरानी तसवीरें टंगी थीं, [illegible] दहेज में लायी हुई। उनके मध्य अपना [illegible] यह तैल-चित्र पूजा का मन मोह रहा था। [illegible] रहा था, जैसे आज उसकी साधना पूर्ण [illegible] गयी। चित्र में एक नारी झुकी हुई, दोनों हाथों [illegible] दो झाड़ुएं पकड़े रास्ता बुहार रही थी। [illegible] पीठ पर बच्चा बंधा था। नारी की कर्मठता [illegible] प्रतीक यह चित्र विभिन्न व्याख्याओं से [illegible] हुआ था।

एक दैनिक-पत्र ने लिखा था, [illegible] मानव-जाति की जननी और पालनकर्ता [illegible] बल्कि अपनी समग्र-जीवन शक्ति से उनके [illegible] की बाधाओं को भी दूर करती है, इस [illegible] यही ध्वनित होता है।'

दूसरे अखबार की पंक्तियां थीं, 'चित्र [illegible] औरत की पीठ पर बंधा बच्चा उसके [illegible] प्रतीक है तो झाड़ू थामे दोनों हाथ [illegible] मार्ग-प्रशस्ति का रूप के प्रतीक हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मासिक पत्रिका के उद्धरण में, मां के रूप में संतति का भारवहन करती हुई, वह जीवन की राह संवारती जा रही है। इस संवरी राह पर चल तो हर कोई लेता है, पर संवारनेवाले की व्यथा-कथा कोई नहीं पूछता।'

एक साप्ताहिक पत्र के शब्द थे, 'मां के रूप में नारी ब्रह्मा की तरह सृजनशील है, तो बच्चे को संरक्षण प्रदान करना उसके विष्णुत्व को उद्घाटित करता है। इतना ही नहीं, शिव की तरह वह राह की आपदाओं का संहार भी करती है।'

किसी का भाव था, 'जीवन-पथ पर गंदगी फैलानेवाले तो बहुत लोग होते हैं, किंतु उसे स्वच्छ करनेवाले तो एक-दो ही होते हैं। जो नवीन संस्कार देकर मानव-जाति का विकास करते हैं, वे स्वयं बन-ठनकर स्वच्छ सड़क पर चल कब पाते हैं ? उनका तो सारा जीवन हाथों में झाड़ू थामे ही गुजर जाता है !'

इन सभी कतरनों को पूजा ने अपनी डायरी में संजो रखा था। पिताजी भी पढ़कर बहुत खुश हुए थे ; बहन-भाई भी उछलने लगे थे, केवल मां ही मौन रही थीं।

आज बैठक की यह नवीन सजावट देखकर तो मां अवश्य प्रसन्न हो उठेंगी। घर सजाने का शौक तो उन्हें है, किंतु सजाने के लिए नयी-नयी चीजें खरीद कहां पाती हैं ?

• •

उस रात विवाह-समारोह से आकर जब मां ने कपड़े बदल लिये तो पूजा मां का हाथ पकड़कर उन्हें खींचती हुई बैठक में ले आयी। उसने सोचा था, मां यह नवेली सज्जा देखकर बहुत खुश होंगी और उसे गले से लगा लेंगी।

पर इनसान जो सोचता है, क्या हमेशा वही घटित होता है ? और ठीक उसके विपरीत घट जाए तो कैसा लगता है हृदय को ?

बैठक में आते ही मां चीख-सी पड़ीं, 'क्यों टांगी है यह यहां ? पुराना कर दो। सब कुछ पुराना कर दो। कुछ मत रहने दो, अपने साथ ले जाने के लिए। ... अभी देखकर आयी हूं, क्या-क्या चीजें दी हैं उन्होंने अपनी लड़की को। लड़की के हाथ से की हुई कितनी सिलाई-कढ़ाई की चीजें थीं। एक तू है कि कुछ नहीं करती। दिन-रात फोटो बनाती रहती है। और वो भी टिकने नहीं देती। जितनी बनायी, बांट-बूंटकर पूरी कर दी। एक बची है तो उसे टांग कर पुरानी कर दो।'

पूजा का मन काठ हो गया। लगा, जैसे कोई कुल्हाड़ी की चोटों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर रहा हो।

मां बोले जा रही थीं, 'एक तेरे पिताजी हैं, जिन्हें तेरी शादी की कोई चिंता ही नहीं है, ... और तू भी वैसी ही है — दुनिया से निराली। ... दुनिया में बेटियां होती हैं, अपने ले जाने को सौ चीजें बनाती हैं। पर तू ? तू तो न जाने क्या मेरी कोख से जनमी है। ...'

'क्या हुआ है ?' कहते हुए पिताजी बैठक में आये, पर मां का चंडिका रूप देखकर सहम गये।

उन्हें देखकर मां का मुख और अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वाला उसमें लगा डूबने की बेटी का मायकी। मां के आदेशानुसार सिलाई करती, पर मन नहीं लगा पाती। उसके कार्य अकसर छोटी बहन मेधा ही पूरे उसे सुई-धागा, किताब-कापियों से प्यारा था भी। स्कूल से आते ही कुर्ते लेकर बैठ जाती जबकि प्रसून आते ही भागता।

उस दिन प्रसून वह चित्र लेकर आ गया। उसने मामाजी से उपहार में मिले कैमरे से था। चित्र में पूजा मुख्यमंत्री से पुरस्कार कर रही थी। मंच पर और भी गणमान्य थे। कितना निपुण हो गया है प्रसून खींचने में। कैसी साफ आकृतियां उभरी पूजा को चमत्कृत करने के लिए उसने बड़ा कराकर उसे शीशे से मढ़वा लिया और आश्चर्य, उसने यह सब कुछ जेब-खर्च के पैसों से किया था। वह उदास पूजा के चेहरे को भी खुशियों से चाह रहा था।

प्रसन्नता पूजा को कम नहीं हुई। किंतु पिताजी ने उस चित्र को बैठक में टांगने आग्रह किया, तो खुशियों का वह चटखने लगा। पिताजी उस चित्र से बैठक गौरव बढ़ाना चाहते थे। उनके मित्र जब आएंगे और मुख्यमंत्री के हाथ से ग्रहण करती हुई उनकी पुत्री को देखकर करेंगे, तो क्या वे गर्व से नहीं भर उठेंगे कहा था उन्होंने। किंतु मां द्वारा ठोंके कीलों के घाव अभी भरे कहां थे। पूजा थी कि इस चित्र की भी मां पर न प्रतिक्रिया होगी। उसके मन-ही-मन किया कि इस चित्र को भी वह

वैभवपूर्ण ब्याह देखकर मां की अपनी विपन्नता की व्यथा ही मानो लावा बनकर फूट पड़ी थी। पूजा इस उत्ताप से झुलसी जा रही थी। आंखों में गरम-गरम दो बूंदे उतर आयीं। पिताजी हतप्रभ से मां की ओर देख रहे थे। वे आगे बोलीं, 'उतार दे यह फोटू। यह घर तो ऐसे ही रहा है, ऐसे ही रहेगा। यहां कोई जरूरत नहीं है और फोटुओं की। ले जाकर रख इसे। अपने घर जाएगी तब ले जाना, वहीं लगाना इसे।'

पूजा अधजली लकड़ी-सी दुप्पटे की खूंट से अपनी आंखें पोंछने लगी। मन में धुआं उठा : क्या उसके जन्मगृह की दीवार का उतना-सा हिस्सा भी उसका नहीं है, जिस पर उसका चित्र टंगा है। कहां है पूजा का वह अपना घर, जिसकी मां चर्चा कर रही है। कब मिलेगा उसे उसका वह घर।

पहले तो विवाह के नाम से ही वह चिढ़ उठती थी। पर ... आज, न जाने क्यों विवाह की इच्छा मन में अंकुरा उठी थी।

पूजा के आंसू देखकर ही शायद, मां मौन हो गयी थी। पिताजी ने वह झगड़े की जड़ चित्र उतारकर पूजा के हाथों में दे दिया, 'ले, इसे संभाल कर रख। तेरी मां ठीक ही कहती है, अपनी बनाई हुई चीजें अपनी ससुराल ले जाएगी, तो कितना मान होगा तेरा। ... और इस चित्र पर तो इनाम भी मिला है तुझे। ... ससुराल की बैठक में लगाना इसे या वहां के अपने कमरे में।' कहकर वे मुसकरा कर चले गये। मां भी चली गयीं।

● ●

इस घटना के बाद और चित्र वह नहीं बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने होनेवाले घर में ही टांगगी। और जब उसने उस चित्र को दहेज के सामान के साथ रख दिया, तो बिना कहे ही सब उसके मन की बात समझ गये। मां और मेधा उस वक्त घर पर नहीं थी। पिताजी मन-ही-मन मुसकराये। प्रसून भी नाखुश नहीं हुआ।

• •

कौन-सा अवसर और कौन-सी यात्रा मनुष्य के जीवन को किस दिशा में मोड़ देंगी, यह कहना कठिन है। पूजा दो दिनों के लिए किसी रिश्तेदार के यहां उनके पुत्र के विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए अपने मां-पिताजी के साथ गयी थी। वहां उनके कई अन्य संबंधी भी आये हुए थे। एक संबंधी का विवाह योग्य पुत्र, अखिलेश भी वहां अपनी मां के साथ आया हुआ था। दोनों मां-बेटे पूजा पर ऐसे लट्टू हुए कि वहीं पूजा और अखिलेश की सगाई तय हो गयी। मां के लिए यह प्रसन्नता की बात थी कि पूजा को बड़ा घर मिल गया। पिताजी इस बात पर खुश थे कि लड़का अपने पांवों पर खड़ा था। पिता के साथ रहकर भी उसने पिता से अलग अपना व्यवसाय फैला रखा था।

पूजा को अखिलेश के और उसकी मां के दहेज संबंधी विचार बहुत अच्छे लगे। उनका कहना था कि उन्हें दहेज में कुछ नहीं चाहिए। हां, यदि वे अपनी इच्छा और क्षमतानुसार लड़की को कुछ दें, तो उन्हें कोई आपत्ति भी नहीं होगी।

फिर भी पूजा की मां की चिंताओं का कोई अंत नहीं था। वे बड़े घर के अनुरूप बहुत-कुछ सामान पूजा को दे देना चाहती थी, ताकि ससुराल में उसे कुछ सुनना-सहना न

पड़े। उन्होंने बहुत कुछ पूजा को दिया, फिर भी उनके मन को तसल्ली हो पायी थी, यह कहना कठिन है।

•

मां, पिताजी, मेधा और प्रसून के आंसुओं के समुद्र को पार करके और अपने आंसुओं से नहाकर जब पूजा ससुराल पहुंची, तो यही समझने का प्रयास करती रही कि जो पुराना घर, उसका जन्मगृह छूट गया, वह पराया था और जिस नये और सर्वथा अनजान घर में वह आयी है, वही उसका निज का घर है। इस अपने घर में एक कमरा, अखिलेश का कमरा, नितांत उसका निजी है, यह क्या कम उल्लास की बात थी।

मां के यहां से लायी हुई और उपहारों में मिली वस्तुओं के पैकेट खोल-खोलकर वह अपने कमरे में सजाने लगी। यों तो घरके कार्यों के लिए कई नौकर-चाकर थे, पर कमरा सजाने का कार्य पूजा अकेली ही करती थी। दिन-दोपहर में जब भी सास उसे कमरे में आराम करने भेजती, वह कमरे की सजावट में लग जाती।

मायके से ही मिली स्टील की आलमारी में कपड़े-लत्ते और छोटी-मोटी चीजें सज चुकी थीं। मशीन, मिक्सी आदि भी यथास्थान रखे जा चुके थे। अब बारी थी चित्र टांगने की।

अपना वह पुरस्कृत चित्र निकालकर जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा ने पोंछा तो उसे पुरानी बातें याद आने लगीं। फिर मन गर्व से भर उठा। जब पति और सास को वह बतलाएगी कि उसे इस चित्र पर इनाम मिला है, तो उन्हें भी कितनी खुशी होगी।

कील ठोकने की परेशानी यहां नहीं उठानी पड़ी। एक मजबूत कील वहां पहले से ही ठुकी हुई थी, जिस पर अखिलेश अपने कपड़े टांग देता था। पूजा ने वे कपड़े आलमारी में टांग दिये और लगा दिया वह चित्र उस कील पर।

दूसरा चित्र, जिसमें वह मुख्यमंत्री से पुरस्कार प्राप्त कर रही थी, उसने पोंछ कर वापस खाली बक्से में रख दिया। बक्स पलंग के नीचे सरका दिया। इस चित्र को भी टांगने का मन तो कर रहा था, पर जब वह इस नवीन गृह में कहां कील खोजे, किससे मांगने जाए। बाद में कभी टांग देगी।

उस कील पर टंगे चित्र को वह ध्यान से देखने लगी। अभी तक वह जरा भी पुराना नहीं हुआ। मां ठीक ही तो कहती थी, वहां टांगे रहने से अब तक पुराना हो जाता। उस घर से अब उसका संबंध ही कितना रह गया है? बस, मेहमान की तरह जाना और आना है। सोचते ही हृदय में न जाने कैसे पीड़ा होने लगी।

अपने पर नियंत्रण रखने के लिए वह डायरी निकालकर चित्र-संबंधित पत्र-पत्रिकाओं की कतरनें पढ़ने लगी।

क्या खूब! चित्र की नारी कहीं मातृत्व की प्रतीक है तो कहीं जीवन-मार्ग परिष्कारकर्ता का। एक पत्र ने तो उसे ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के तुल्य ही घोषित कर दिया था।

इसी समय सास उधर से गुजरी। कमरे के द्वार पर थोड़ी देर रुककर चित्र की ओर देखती रही। फिर बोली, 'यह कैसी फोटू टांग दी बहू तू ने — मेहतरानी की?'

'यह मेहतरानी की फोटो नहीं है मांजी' पूजा बोली। पर मन में सोचा, यदि मेहतरानी का ही चित्र हो तो क्या हानि है!

'मेहतरानी की नहीं है तो किसी नौकरानी की फोटू होगी। किसी की भी हो, मुझे तो अच्छी नहीं लगी! तू उतार दे इसे।'

पूजा कहना चाहती थी कि यह चित्र मैंने बनाया हुआ है, पर कह नहीं पायी।

सास आगे बोली, 'यहां कोई अच्छी तसवीर टांग दे — कृष्ण-राधा की, राम-सीता की या शिव-पार्वती की? मेरे कमरे में बहुत तसवीरें हैं। तुझे जो अच्छी लगे ले आ और टांग दे यहां।'

पूजा बुझ-सी गयी। फिर बोली, 'अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में जो तसवीरें लगी हैं, लगी रहने दीजिए। मेरे पास एक दूसरी फोटो है। वह लगा दूंगी यहां। यह आपको नहीं अच्छी लगी तो उतार दूंगी।'

सास चली गयीं। पूजा ने पलंग के नीचे से बक्सा वापस खींचा। उसमें से पुरस्कार ग्रहण करने वाला चित्र निकाला और पुरस्कृत चित्र कील से उतार कर बक्से में रख दिया। बक्स फिर पलंग के नीचे चला गया।

दूसरा चित्र दीवार पर सज गया था, पर मन न जाने कैसा हो आया था। वह अपने आपको समझाने का प्रयास करने लगी।

सास पुराने विचारों की हैं। वे कला-मर्मज्ञता से अपरिचित हैं। तो क्या हुआ? इस अपनी ही बहू के चित्र को तो अस्वीकार नहीं कर सकेंगी।

फिर मन कुछ हरा हुआ। वह सोफे पर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगी।

देखते-ही-देखते शाम घिर आयी। वह उठकर बाहर जाने ही वाली थी कि अखिलेश कमरे में आया।

'थोड़ी देर में मेरे कुछ दोस्त आएंगे। चाय-नाश्ते का प्रबंध हो जाएगा न?' वह हंसकर बोला।

फिर बोला, 'देखो तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं। नौकरों से कहकर करवा देना। हां, तुम यहीं रहना।इसी कमरे में बैठेंगे वे लोग। कमरा भी थोड़ा ठीक कर लेना।'

फिर उसकी दृष्टि ऊपर टंगे चित्र पर पड़ी।

'तुम्हारी फोटो है न यह?'

'हां।'

'कैसी तो लग रही तो इसमें तुम।'

'कैसी? ... एक चित्र बनाने के लिए इसमें मुझे मुख्यमंत्री इनाम दे रहे हैं।'

'सो तो दे रहे हैं। पर वैसी खूबसूरत तुम इसमें लग नहीं रही हो, जैसी कि तुम हो। और भीड़-भाड़ के बीच में हो। मेरे दोस्त न जाने क्या कहेंगे।'

पूजा को लगा, क्या वह एक सुंदरता की मूर्ति मात्र सबको दिखलाने की वस्तु ही है? इसके अतिरिक्त क्या और कुछ नहीं है?

अखिलेश कुछ क्षण फोटो की ओर देख कर बोला, 'एक काम करो। यह फोटो यहां से उतारकर कहीं छिपाकर रख दो।ड्रेसिंग टेबल पर हम दोनों का जो 'पेयर-फोटो' है न, वह यहां लगा दो। यह कील वैसे ही रहने दो। अगले सप्ताह हम लोग दार्जिलिंग चलेंगे तब वहां से कोई अच्छी सीनरी ले आएंगे।'

वह चला गया।

पूजा भाव-शून्य-सी होकर सोफे पर बैठ गयी। उसे लगा कि कमरा गोल-गोल घूम रहा है। वह चित्र टेढ़ा होकर प्रश्नचिन्ह-सा बनकर उसके सामने खड़ा है। उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। अपनी इच्छित तसबीर को वह कहां टांगे? कौन-सा घर उसका अपना घर है?

दूसरे ही क्षण उसे लगा कि इस तसवीर की तरह वह भी चौखटों से घिरी है। तसवीर की भांति ही उसकी इच्छाएं-अनिच्छाएं भी एक पारदर्शी कांच के पीछे बंदिनी हो गयी हैं। कहीं ये चौखटें और कांच ही तो उसका अपना घर नहीं।

— ई-१८, सेक्टर-३,
धुवा, रांची ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालियादह महल : जो कभी सूर्यमंदिर था

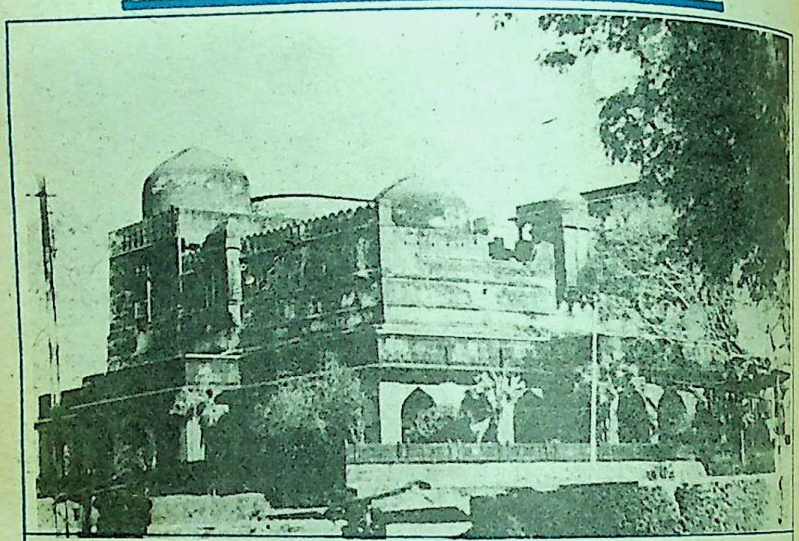

कालियादह महल : अतीत का मूक साक्षी

उसका आदेश ही उसकी मृत्यु का कारण बना

● इकबाल अहमद फारुकी

कालियादह महल : प्रकृति के सुरम्य एकांत वातावरण में क्षिप्रा नदी की धाराओं से घिरा एक ऐतिहासिक भवन, जिसके साथ जुड़ी हैं अतीत की अनेक गाथाएं।

उज्जैन से सात किलोमीटर दूर ध्यानमग्न-सा कालियादह महल किसी समय विशाल सूर्यमंदिर था। स्कंद पुराण के अवंति महात्म्य में सूर्यकुंड व ब्रह्मकुंड का वर्णन मिलता है। आज भी सूर्यकुंड के नाम पर आसपास के ग्रामों के महिला-पुरुष कालियादह के कुंडों में धार्मिक अवसरों पर स्नान करते हैं। प्राचीन भग्नावशेष पूरे इलाके में इधर-उधर फैले हुए हैं। दक्षिण दिशा की ओर कल-कल करती क्षिप्रा की धारा दो भागों में विभक्त हो गयी है। पूर्वी भाग में बांध बनाकर पश्चिमी भाग में निर्मित कुंडों व क्यारियों में क्षिप्रा की धारा को प्रवाहित किया गया है।

कालियादह के वर्तमान रूप का निर्माण चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालियादह के बावन जलकुंड : धार्मिक आस्था के केंद्र

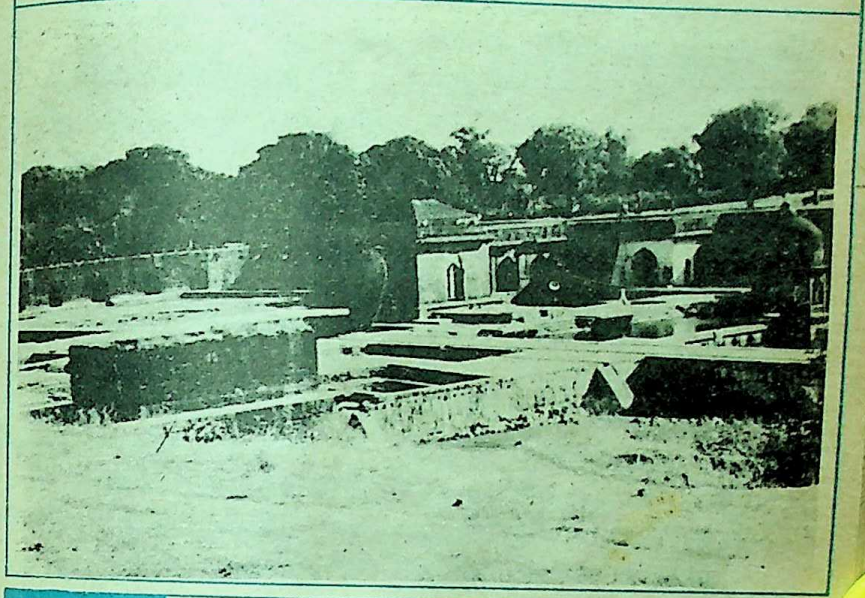

सुलतान नसीरुद्दीन खिलजी पारा खाकर क्षिप्रा के जल में लेटा रहता था। उसका आदेश था कि उसके शरीर को कोई हाथ न लगाये और एक दिन उसका यही आदेश उसकी मौत का कारण बन गया।

के एक शिलालेख से विदित होता है। शिलालेख के अनुसार यह स्थान सन १४५८ में मोहम्मद खिलजी के समय में निर्मित किया गया था। 'तवारीख शाही' में लिखा है जब शेरशाह ने वहां अपना डेरा डाला था, उस समय सिकंदर खां ने उसकी अधीनता स्वीकार की। किंतु अधिक विश्वस्त यह है कि चार सौ वर्ष पहले मांडव के सुलतान नसीरुद्दीन खिलजी ने मूल स्थान को तोड़-फोड़कर कालियादह महल बनवाया था।

पारा खाने की आदत

सुलतान नसीरुद्दीन खिलजी को पारा खाने की आदत थी, इसलिए भीतरी उष्णता के शमन के लिए अत्यंत शीतलता का वातावरण आवश्यक था। अतः उसके लिए कालियादह कुंड जल-यंत्रों से युक्त बनाया गया। कर्नल स्टुअर्ड ने अपनी 'हिस्ट्री ऑव द् सेंट्रल इंडिया' में भी लिखा है कि नसीरुद्दीन खिलजी पारे की गरमी का शमन करने के लिए कालियादह महल के निकटवर्ती क्षिप्रा नदी के जल में बड़ी देर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा रहता था। एक दिन एक नौकर ने उसे बेहोशी में गिरा हुआ समझकर जल से बाहर निकाल लिया। जब बादशाह को सुध आयी, तो उसने अपने बचानेवाले का नाम पूछा। मालूम होने पर उस नौकर को इस अपराध में कि उसने शाही शरीर को हाथ लगाने का दुस्साहस किया, दोनों हाथ काट लेने का दंड दिया। नसीरुद्दीन खिलजी को तो नशे में चूर होने पर डूबने की आदत ही थी। वह नित्य महल के नीचे नदी में डुबकी लगाये पड़ा रहता था। एक दिन अधिक गरमी चढ़ जाने के कारण इसी क्षिप्रा नदी की गोद में उसे जल-समाधि मिल गयी। उसके शरीर को स्पर्श करना नौकरों के सामर्थ्य के बाहर का काम था। दूसरे दिन जब लाश तैरती हुई मिली, तब वह मृतक समझकर निकाला गया। किंतु इसके विरुद्ध सम्राट जहांगीर ने अपने रोजनामचे में यह लिखा है कि 'मैंने मांडव में उसकी कब्र खुदवाकर हड्डियां निकलवायी और नर्मदा में फिकवा दी।'

अकबर को भी प्रिय

सम्राट अकबर ने भी इस महल की सुंदरता पर मुग्ध होकर अपना मुकाम यहां किया। दालानों के कुशक के एक पत्थर पर फारसी में लिखा है कि 'दक्षिण की फतह करने के इरादे से यात्रा के समय सम्राट यहां ठहरे थे।'

अबुल फजल ने अकबरनामा में लिखा है कि दुनिया के निहायत सुंदर स्थानों में से यह भी एक है। इसी तरह 'आइने अकबरी' तथा 'तवारिख फरिश्ता' में भी इस स्थान की सुंदरता का वर्णन किया गया है। दूसरी कुशक के एक पत्थर पर फारसी में लिखा है 'अशरत गाह का दरवाजा सारी दुनिया के फतह करनेवाले शहंशाह अकबर के जमाने में उनकी आज्ञा से बना था।'

इसी प्रकार जहांगीर को भी यह महल बहुत पसंद था। यहां के जलकुंडों की विचित्र कारीगरी की शोभा से वह अपने को प्रसन्न किया करता था।

पिंडारियों के जमाने में यह महल नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। बाद में जल-यंत्रों, कुशकों की पुनः मरम्मत की गयी। इसके बाद सन १८८६ में सर माइकल फिलोज ने जीर्णोद्धार करा इसे अपना निवास स्थान बनाया। इस महल के बुर्ज, स्नानागार, पाकशाला, विश्रांत भवन, अतिथि भवन आज भी वैसे ही हैं। लाल पत्थरों से निर्मित यह महल नदी तट पर होकर भी बहुत ऊंचाई पर है जैसे, किसी छोटी-सी पहाड़ी पर बना हो। नीचे तहखाने हैं, जिनमें पर्याप्त प्रकाश रहता है। महल के नीचे पक्के पत्थरों के विचित्र कारीगरी के बावन कुंड हैं, जिनका जल इधर से उधर घूमता रहता है। बड़ी देर तक देखने पर भी यह मालूम नहीं होता कि इन बावन कुंडों का जल कहां से कहां जा रहा है। ऐसा ही एक गोल जल-यंत्र बना है, उसमें जल एक बार दायीं और एक बार बायीं ओर घूमता है। जल कुंडों के बीच पक्की कुशकें बनी हैं। इनके ऊपर बैठकें बनी हैं।

ग्वालियर की राजमाता द्वारा पुनः सूर्य मंदिर की स्थापना कर भगवान सूर्य की संगमरमर की प्रतिमा लगवायी गयी है। इस प्राचीन धरोहर को खंडित होने से बचाने के लिए प्रशासन को ध्यान केंद्रित करना होगा।

—६, मोहनपुरा बड़नगर, उज्जैन-४५६-७७१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेत की तपती हवा

● डॉ. कुमारी रमा सिंह

रेत की तपती हवा
जीवंतता का रूप हो
रेत पर लिखती कहानी
जल-परी-सी धूप हो

रेत की तपती हवा
संघर्ष की झनकार-सी
रेत की तपती हवा
तुम ऊष्मा हो प्यार की

रेत की तपती हवा
बिखराव की तसवीर-सी
धूल-आंधी में भटकती
चपल और अधीर-सी

रेत की तपती हवा
तुम दार्शनिक का ज्ञान हो
रेत की तपती हवा
तुम कर्म की पहचान हो

रेत की तपती हवा
संगीत हो तुम प्यास का
खोज करती डोलती
जल-धार की अन्वेषिका

रेत की तपती हवा
तुम शून्य की उच्छवास-सी
मेघ की छवि ढूंढ़ती हो
व्यग्र और उदास-सी

रेत की तपती हवा
श्रम-साधना का कोष हो
रेत की तपती हवा
संघर्ष का जय-घोष है

किशोर भवन, पुलिस लाइन के सामने, रतनाडा
जोधपुर, (राज.)

आ शंका

● सत्यप्रकाश जोशी

आ शंका
आदम के बनाये चित्रों को मत मान
और मत मान विकासशील ज्ञान के ग्रंथ
पूछ-क्यों ? कैसे ? सवालों के प्रत्युत्तर !

देख, उनके द्वारा स्थापित ईश्वर के
अर्थ ही बदल गये !
गिर गये उनके द्वारा रचे
समाजों और धर्मों के प्लास्टर
तेडें आ गयी दीवारों में !

अब आये हैं नये विज्ञान, नयी तकनीकें
इनके प्रयोगों अर करिश्मों को भी
मत मान संपूर्ण सत्य—
इनके प्रत्यक्ष दिखते, फैलते, जानते यंत्र
जैसे विश्व के, प्रकृति के रहस्य

याद है वह सोने की लंका
विभीषण और राक्षसों की वाटिका वाली
हर प्रकार के सुखों की जलती हुई लंका ?
आ शंका !

३७, मार्वे रोड, मालाड़, बंबई ४०००६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेठी राजघराने का 'कविता कंकोष'

राष्ट्रीय अखंडता के लिए साहित्य की उन्नति आवश्यक

● डॉ. यज्ञप्रसाद तिवारी

गढ़ अमेठी शताब्दियों से साहित्य-साधना का केंद्र बना हुआ है। रायपुर अमेठी राज्य सन ९६६ में स्थापित हुआ। तब से लेकर आज तक भले ही इस घराने का राजनीतिक योगदान नगण्य रहा हो, लेकिन इसका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक योगदान विस्मृत करना इस परिवार के प्रति अन्याय होगा। सच बात तो यह है कि जायसी की मृत्यु के बाद अमेठी राजदरबार साहित्यकारों का एक अड्डा-सा बन गया। इस रजवाड़े के ही सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं—राजा हिम्मत सिंह 'महिपति', राजा गुरुदत्त सिंह 'भूपति', राजा लालमाधव सिंह 'क्षितिपाल', राजकुमार रणजीत सिंह तथा वर्तमान नरेश श्रीरंणजय सिंह।हिम्मत सिंह 'महिपति' का रचनाकाल सन १७०९ के आसपास माना जाता है। राजा हिम्मत सिंह 'महिपति' के पिता महाराज पहाड़ सिंह के यहां तो कवियों का दरबार लगा रहता था। इस कविवृंद का प्रभाव राजा हिम्मत सिंह पर पड़ा और उन्होंने भी कविताएं लिखनी शुरू कर दीं। कहते हैं, हिम्मत सिंह को कई भाषाओं का ज्ञान था। वे संस्कृत, हिंदी (अवधी, ब्रज आदि) उर्दू-फारसी के अधिकृत जानकार भी थे। उन्हें यह जानकारी अपने पितामह राजा जय सिंह जूदेव से विरासत में मिली थी, जो स्वयं एक अच्छे कवि थे। इस घराने के साहित्य सृजन की स्पष्ट परंपरा कवि हिम्मत सिंह से ही मिलती है। इनका 'कवि कुल तिलक प्रकाश' एक लक्षण ग्रंथ है, जिसकी रचना के बारे में उन्होंने खुद लिखा—

संवत सत्रह सौ मिले, तापर छासठि दीन्ह
भादों सुदि दसमी गुरौ, विदित ग्रंथ तब कीन्ह
गढ़ा अमेठी देश है, रायपुर शुभ थान
आश्रम चारि बसे जहां सब पंडित सब जान
सुललित ताही नगर में कियो महिपति बास
तिन कीन्हों सुष रासि यह कवि कुल तिलक प्रकाश

इसमें समग्रतः बाइस अवलोक हैं। गणेश वंदना से प्रारंभ इस कृति में नायिका भेदोपभेद, अनुराग की विविध दशाओं, पूर्वराग, हाव-भाव, नौ रसों, यहां तक की संचारी भावों पर भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म जानकारी देकर उन्होंने रस-संसार में नये साहित्यिक आंदोलन की शुरूआत की। इस रचना में वृत्तियों, शब्द-शक्तियों, छंदों और अलंकारों के विविध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूपों का अवधी में निरूपण किया गया है। यह विचित्र संयोग ही कहा जाएगा कि जिस समय राम और कृष्ण का यशगान ब्रज-भाषा में हो रहा था, उस समय महिपतिजी अवधी में रचना प्रस्तुत कर रहे थे। विलास भाव का एक चित्र—

बांध कटि किंकिनी सुधारि हार हिए डारि
कलरव नूपुर ते पायन धरति है
कंचुकी संवारि तिय कसति उरोजनि में
चूनरि लसत अंग हियरा हरति है
कहत महीप केस पासनि तिलोछि नीके
तू तौ वर नैननि में अंजन करति है
भाग बड़े ताके महा सुंदरी नबेली बलि
जापर तिहारी नेक डीठियों परति है

गये। उस समय के प्रसिद्ध कवि श्री कविंद्रजी ने राजा के अद्‌भुत शौर्य का वर्णन इस तरह से किया है—

समर अमेठी के नरेश गुरुदत्त सिंह
सादत की सेना समसेरन सो मानी है
भाषत कबिंद्र काली हुलसी असीसन को
शीशन को शंभु की जमात हुलसानी है
तहां एक जुग्गिनी सुभट खोपरी लैखरी
श्रोनित पियत ताकी उपमा बखानी है
प्याली लै चिनी को छकी जोबन तरंग मानों
रंग हेतु पियत मजीठ मुगलानी है

भूपति सिंह ने 'भूपति सतसई' का सृजन

'कविता कंकोष' : अमेठी के साहित्यानुरागी नरेशों की कविताओं का संग्रह। सन १७०९ में राजा हिम्मत सिंह 'महिपति' से शुरू हुई यह काव्य-परंपरा आज तक अक्षुण्ण है।

अमेठी के सिंह पुरुष

हिम्मत सिंह के पुत्र कवि गुरुदत्त सिंह 'भूपति' अमेठी के सिंह पुरुष थे। राजा गुरुदत्त सिंह और सआदत खां के बीच कई बार युद्ध हुआ था, जिसमें सआदत खां पराजित हुआ था। राम-जन्मभूमि अयोध्या के युद्ध-संदर्भ में राजा गुरुदत्त सिंह का यशगान लोकगीतों में आज भी सुना जाता है। कहा जाता है कि नवाब सआदत खां ने जब राम-जन्मभूमि अयोध्या में हिंदुओं को अपमानित करने की नीयत से हमला किया तो सआदत खां का सामना करने के लिए गुरुदत्त सिंह सेना सहित अयोध्या पहुंचे। फलतः भयानक संग्राम हुआ किंतु अंततः सआदत खां की सेना के पैर उखड़

किया, जिसमें मंगलाचरण, ईश्वर बंदन, चंद्रोदय, प्रभात, विरह, स्वप्न-दर्शन, पत्रिका, सज्जन, दुर्जन, ग्रीष्म, नदी आदि वर्णन-प्रसंगों को विशेष महत्त्व दिया गया है। इस ग्रंथ का निर्माणकाल कवि ने स्वयं बताया है—

सत्रह शत एकानबे, कातिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, सतसैया अवतार

ज्ञातव्य है कि इस तिथि को आज भी अमेठी नरेश श्री रणंजय सिंह सतसई का जन्म दिन मनाते हैं। इस दिन गोष्ठियां, परिचर्चाएं आदि आयोजित करते हैं। भूपति सतसई के दोहों की सुगढ़ता दृष्टव्य है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये रसाल जानत नहीं, तू कछु हिये बिचार
कोकिल बायस एक संग, बैठावत है डार

नेत्र : *रच्यों कुरंग सुरंग दृग जान्यो विधि रसभंग*
वे कानन में करि दिये, ये कानन के संग

समीर : *लहि सुगंध सब सुमन के, चालत हरत चित्र धीर*
अब न जात सखि यह सहयो, माधव मधुर समीर

भूपति सिंह की कुल छह रचनाएं मिलती है—भूपति सतसई, भाषा भागवत, कंठाभरण, सुरस रत्नाकर, रसदीप, रसरत्नावली। पंडित रामचंद्र शुक्ल ने 'कंठाभूषण' का भी उल्लेख किया है, जो संभवतः 'कंठाभरण' ही है क्योंकि श्री रणंजय सिंह से बातचीत करने पर 'कंठाभूषण' की पुष्टि नहीं हुई।

लालमाधव सिंहजी का योगदान

अमेठी राजघराने के प्रसिद्ध राजा लालमाधव सिंहजी का जन्म २९ नवम्बर, १८२३ को हुआ। गुरुदत्त सिंह की चौथी पीढ़ी में अमेठी के राजा दलपतशाह हुए। श्री दलपत शाह राजा हरचंद सिंह के पुत्र थे तथा हरचंद सिंह राजा गुरुदत्त सिंह के पौत्र थे। दलपत शाह के पुत्र राजा विश्वेश्वरबक्स सिंह ने सन १८३१ में राज गद्दी सम्हाली। इनके कोई संतान नहीं थी, इसलिए इन्होंने अपने अनुज के पुत्र श्री लालमाधव सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सन १८५७ के स्वाधीनता-संग्राम में श्री लालमाधव सिंह का योगदान अविस्मरणीय है। महिलाओं पर अत्याचार लालमाधव सिंह बर्दास्त नहीं कर सकते थे। यहां तक कि सन ५७ की उक्त क्रांति के समय जब एक अंगरेज महिला इनके यहां शरण लेने पहुंची तो इन्होंने ससम्मान उसे अपनी सैनिक सुरक्षा के बीच इलाहाबाद पहुंचाया। एक बार जब इनकी सेना रायबरेली के राजा श्री बेनीमाधव सिंह की सहायता में गयी थी, तभी अमेठी के किले पर अंगरेजों ने हमला कर दिया, किंतु राजा की कूटनीतिक दांव से अमेठी क्षत-विक्षत होने से बच गयी। आज भी अमेठी के भूपति भवन में लगे तोप के गोलों के निशान मौजूद हैं। लालमाधव सिंह के दरबारी कवि श्री सतीप्रसाद ने लिखा है—

श्रीयुत अर्जुन सिंह सुत, माधव सिंह उदार
अनुज विसेसर बकस को, गुन गन ज्ञान अपार

राजा साहब द्वारा बनवायी कोठियों में काशी के मणिकर्णिका घाट पर बना सुंदर इंद्रसभा भवन और दुर्गा का ललित मंदिर अमेठी की अनूठी निधियां हैं, जिन्हें माधव सिंह ने विक्रम संवत १९०६ में बनवाया था। लालमाधव सिंह की कुल आठ रचनाएं मिलती हैं—विज्ञान विलास, भगवती विजय, मोक्षचिंतामणि, श्री रघुनाथ चरित्र, भक्तिरत्नाकर, बैराग्य प्रकाश, सज्जन विलास, भजन प्रदीप।

क्षितिपालजी का साहित्य

क्षितिपालजी के साहित्य में दर्शन और धर्म को नीति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवित्व, कुंडलियां, दंडक, दोहा, सवैया, छप्पय आदि छंदों के अनुसार ही इनकी रचनाओं का वर्गीकरण किया जा सकता है न कि वर्ण्य वस्तु के आधार पर। उन्हें संगीत का भी ज्ञान था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग आसावरी, भैरवीताल होरी, राग अल्हैया, ताल कतार खानी, जयजयवंती, राग सारंग कहरवा, राग परज ताल होरी आदि विविध राग-रागिनियों पर गेय रचनाएं सुललित शैली में रची गयी हैं। इन रचनाओं पर पारंपरिक लोक रचनाओं का प्रभाव मिलता है। क्षितिपालजी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति के सामासिक तत्वों का मार्मिक चित्रण मिलता है। इसमें विलासिता के प्रति विराग व मोक्ष भाव और सांसारिक जीवन के प्रति अनुराग मिलता है। लक्षणलक्ष्य शैली को क्षितिपालजी ने बिलकुल महत्व नहीं दिया है। यही कारण है कि इनकी रचना प्रचलित दरबारी ढांचे से हटकर मिलती है। भक्ति-भावना से सराबोर इनकी रचनाओं में शिक्षा और नीति का भरपूर उपयोग मिलता है। राग सारंग कहरवा का एक उदाहरण दृष्टव्य है—

क्रमसह अभ्यास बिना योगी
निज स्वरूप दरसन नहि होइहैं अंत लाभ होवें रोगी
करि सतसंग जीत इंद्रिगण परे मोक्ष तबहीं होगी
अति दुस्तर क्षितिपाल समय है जीव मात्र सब है भोगी

राजकुमार रणबीर सिंह का जन्म २१ जुलाई, १८९९ और मृत्यु २ फरवरी, १९२१ को हुई थी। इस अवधि में उन्होंने छब्बीस रचनाएं लिखीं। इनके पिता महाराज भगवान बक्स सिंह ने शिक्षा के लिए इन्हें तालुकेदार्स कॉलेज, लखनऊ भेजा। रणबीर सिंह बारह वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगे थे। आज तक जिस राष्ट्रभाषा हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन नहीं करा सके और अभी हो-हल्ला मचाना पड़ रहा है, इसको राजभाषा पर आसीन करने के लिए आज से ६५ वर्ष पहले ही रणबीर सिंह ने पहल शुरू कर दी थी। दोहा, रोला, षटपदी, स्रग्धरा, हरिगीतका, द्रुत विलंबित, मालिनी, अनुष्टुप, सवैया आदि छंदों के माध्यम से रणबीर सिंह ने अनुपम काव्याभिव्यक्ति की है। इनकी रचनाओं में वीर, करुण, रौद्र और शांत रसों को ही स्थान मिला है। श्रृंगार के प्रति उन्हें अरुचि थी। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति विशेष चिंता थी इसलिए उनकी कविताओं में देशप्रेम का भाव भरा मिलता है—

भारत निवासी सज्जनों की हार्दिकेच्छा पूर्ण हो
मणि खचित उन्नति मार्ग के सब तीक्ष्णकंटक चूर्ण हो
धनधान्य की संवृद्धि हो दुर्दन्य दुःख समाप्त हो
सुरपूज्य भारत भूमि में स्वातंत्र्य सत्ता व्याप्त हो

रणबीर सिंह के अनुज श्री रणंजय सिंह अभी भी साहित्य सेवा में लीन हैं। रणंजय सिंह फिलहाल भूपति भवन रामनगर अमेठी में रहते हैं। ८७ वर्ष की अवस्था में भी वे साहित्य-साधना के पथ पर अग्रसर हैं। भूपति सिंह के बाद कविता को विशिष्ट दर्जा दिलाने में इनका विशेष योगदान है। रणंजय सिंह की कविता में रीतिकालीन शैली पर रणंजय, ददन आदि उपनाम प्रयुक्त होते हैं। वे पिंगल नियमों के कट्टर पालक हैं। राष्ट्रीय अखंडता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कायम करने में साहित्य की उन्नति होना आवश्यक है, ऐसी इनकी मान्यता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा के प्रति उन्हें गहरा लगाव है तभी तो भारतीय संविधान निर्मात्री सभा में उन्होंने 'देशभाषा' शीर्षक में सुझाव दिया था—

दिल्ली में भाषा का विचार चल रहा है
किंतु
बात सीधी सादी है सज्जन सभी जानते
नाम जब देश का है करते पसंद हिंद
भाषा तब हिंदी क्यों न हिंद की मानते
नाम हिंदुस्तान जब कदापि स्वीकार नहीं
भाषा हिंदुस्तानी की है हठ वृथा ठानते
भारत भूमि त्याग जब चले अंगरेज गये
भंग अंगरेजी हुई फिर भी उसे छानते

उनका दृढ़ विश्वास है कि स्वार्थी नेताओं के चंगुल से जब तक देश स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक देश की दशा सुधरेगी नहीं। निम्नलिखित छप्पय में उन्होंने सरलतम तरीके से यही बात कही है—

ले स्वदेश का नाम गीत हैं उसके गाते
किंतु न भाषा भेद आदि अपना अपनाते
धर्म भाव को दूर भगाकर चंदा खाते
स्वार्थ सिद्धि के लिए ढोंग नाना दिखलाते
जब ऐसे जन नेता बने तब कैसे कल्याण हो
शुचि भारत माता का प्रभो, अब भी इनसे त्राण हो

श्री रणंजय सिंह ने अमेठी नरेशों की साहित्यिक सेवाओं का सिलसिलेवार विवरण भी प्रस्तुत किया, जिसे 'कविता कंकोष' के नाम से मुद्रित करवाया। विगत वर्ष भूपति सतखंड के जन्मदिन समारोह की तैयारी के समय उन से मुलाकात हुई, तब उन्होंने 'कविता कंकोष' की प्रति भेंट करते हुए मुद्रण दोषों पर (अत्यन्त स्थिति में भी) लिखित खेद व्यक्त किया—

इस कविता कंकोष में यद्यपि मुद्रण दोष
किंतु सुकवि सत्काव्य से पाएंगे संतोष

—शासकीय तुलसी महाविद्यालय
अनूपपुर (शहडोल) म. प्र.

'कोड' में विवाह का प्रस्ताव

प्रसिद्ध वैज्ञानिक एडिसन अपनी प्रयोगशाला में एक नये प्रयोग में लगे हुए थे। उनकी सहायक थी कुमारी मेरी स्टिलवेल, जो कुछ ही समय पहले उनके साथ काम करने आयी थी। वह बहुत ही मेहनती और लगनशील युवती थी। एडिसन ने एक दिन प्रयोग के बीच ही अपना काम रोक दिया और मेरी को देखने लगे फिर बोले, "मेरी..."

मेरी ने एडिसन की ओर देखा और कहा, "कहिए, क्या बात है?"

एडिसन ने अपनी जेब से एक सिक्का निकाला और मेज के एक सिरे पर उस सिक्के से ठकठकाकर मोर्स के कोड—टेलीग्राफ की सांकेतिक भाषा में संदेश दिया : 'मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सोचा है। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?'

मेरी ने संदेश को समझा। पहले तो वह शरमायी फिर उसने भी सिक्का निकाला और मोर्स कोड में ही संदेश दिया : 'इससे मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेह का स्पर्श

● सुनीता बुद्धिराजा

■

तुम्हारे स्नेह का स्पर्श
जैसे मंदिर में जलता दिया
अंजुरी भर जल से मैंने
संपूर्ण आचमन किया

■

स्पर्श जाना पहचाना है
गंध भी
यहीं कोई फूल
तुम्हारे नाम का उगा है
मन है कि आज
उत्सव-सा जगा है
कि स्पर्श, गंध और उत्सव
तुम्हारे ही तो पर्याय हैं

■

समुद्र गहरा है
आकाश अनंत
धरती धन्या
यह बात मैंने बचपन में पढ़ी थी

मन गहरा है
मन का छोर अनंत
मन की भाषा धन्य
यह अनुभव ने कहा है

तब क्या मुझमें ही बसे हैं
समुद्र
आकाश
वसुंधरा ?

जी २३३ प्रीत विहार, दिल्ली

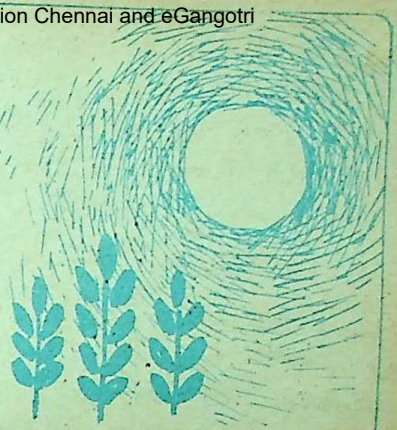

गजल

सांस टूटेगी नहीं

● लवकुमार 'प्रणय'

सांस टूटेगी नहीं, बीमार की
शुभ घड़ी अब आ गयी उपचार की

आज वे इनसान युग को चाहिए
जो दरारें पाट दें दीवार की

लेखनी सपने न देखे प्यार के
अब कथा लिखनी उसे तलवार की

देश तो है देश, केवल देश है
स्वस्थ हो आलोचना सरकार की

दे रहीं दस्तक समय की घंटियां
सर्दियां हैं, बात हो अंगार की

ये 'प्रणय' लाया किरण की राशियां
उम्र पूरी हो चुकी अंधियार की

— ओरियंटल बैंक ऑव कामर्स, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार

● गूडूरु श्रीनिवास

सहयोगी की बीमार पत्नी की सहायता के लिए उनके पास रुपये नहीं थे लेकिन जब एक अविवाहित सहयोगी की शादी में उपहार देने का प्रश्न आया तो....

"दो दिनों से राममूर्ति दफ़्तर नहीं आ रहा है," सीतापति चिड़चिड़ा रहा था, "राममूर्ति के न आने से मेरा तो जैसे हाथ कट गया है।" उसने श्रीपति से कहा।

क्यों नहीं ! इस 'ब्रांच' में मैनेजर के लिए सिगरेट से लेकर क्षेत्रीय कार्यालय को भेजी जानेवाली फाइलों तक के कामकाज को निपटाने में समर्थ था राममूर्ति। उसने प्रत्येक काउंटर का काम समझ लिया था। नव-नियुक्त अफसरों और क्लर्कों का राममूर्ति ही मार्गदर्शक था। कौन-सी 'एंट्री' कैसे 'पोस्ट' करना और किस 'वाउचर' को कैसे पास करना, यह सब जानकारी उसी से ली जाती थी।

"शायद उसकी तबीयत ठीक नहीं होगी।" श्रीपति ने अपना संदेह व्यक्त किया। इतने में ग्राहक आ गये और दोनों काम में जुट गये।

● ● ●

राममूर्ति ने जब आफिस में प्रवेश किया तो उसका मुंह पीला पड़ा हुआ था और वह कमजोर मालूम हो रहा था।

"क्यों राममूर्ति ! कुशल से तो हो ना ?" सीतापति ने पूछा।

"क्या बताऊं सर ! परसों मेरी पत्नी का ऑपरेशन है।"

"अरे रे ! बीमारी क्या है ?"

"दोनों गुरदे खराब हो गये हैं, सर ! एक पुण्यात्मा एक गुरदा देने के लिए तैयार हुई है। उन्हें चार हजार रुपये देने हैं। डॉक्टर ने बताया कि ऑपरेशन में दो हजार तक लग सकता है। अभी तक चार हजार रुपये ही जुटा सका हूं। दो हजार रुपयों की और जरूरत है।" राममूर्ति की आंखों में पानी तैर रहा था।

"दो हजार ! !" आंखें फैलाकर पूछा सीतापति ने।

"जान से बढ़कर हैं क्या ये दो हजार ?" राममूर्ति फीकी हंसी हंसते हुए बोला।

"अच्छा ! मैं चलता हूं। मुझे बहुत काम है।" कहकर सीतापति वहां से चला गया। शायद आफिस के सारे कर्मचारियों को इस बात का पता चल गया था। वे सब एक के बाद एक राममूर्ति के पास आकर अपनी सहानुभूति व्यक्त करने आ रहे थे।

ब्रांच मैनेजर ने राममूर्ति को बुलवाया। कहा, "ब्रांच में करीब चालीस कर्मचारी हैं। हर एक अगर पचास रुपया ही चंदा दे तो भी तुम्हारी यह जरूरत पूरी हो जाएगी। तुम्हारा क्या विचार है, राममूर्ति।"

"चंदा।" राममूर्ति आगे कुछ कह न सका। मगर इसके सिवा कोई चारा भी नहीं

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

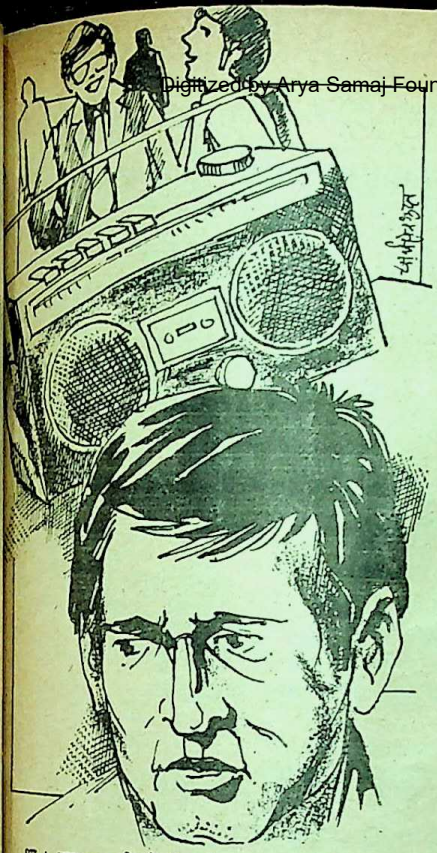

था। जरूरत ही ऐसी थी। ब्रांच मैनेजर ने सबसे पहले एक सौ रुपये दिये। इस निर्णय के अनुसार सबको एक 'सर्कुलर' भी भेजा गया।

"आज मैं बटुवा घर में भूल आया। यह बीस रुपये रख लो।" सीतापति ने बीस का नोट दिया। श्रीपति ने भी बीस रुपये दिये। सबसे चंदा मांगने पर भी वह रकम बारह सौ से ज्यादा नहीं हो सकी। राममूर्ति का दुःख उमड़ आया। अभी आठ सौ रुपये कम थे। ब्रांच मैनेजर भी दुःखी हुआ। उधर प्राणों की समस्या। उन्होंने आठ सौ रुपयों का 'चेक' लिखकर दे दिया। उस क्षण में राममूर्ति की आंखों में आयी चमक को, शायद वह अपनी सारी जिंदगी भूल न पाएगा। राममूर्ति का गला रुंध गया था, मुंह से बात निकल न सकी, कृतज्ञता से उसने अपने हाथ जोड़े।

● ● ●

"मेरी शादी है सर ! आप जरूर आएं।" ब्रांच मैनेजर को विवाह का निमंत्रण पत्र देते हुए श्रीपति ने कहा।

"बधाई हो ! जरूर आएंगे।" हंसते हुए उन्होंने हाथ मिलाया।

"थैंक यू सर।" कहकर श्रीपति बाहर आया। "हूं ! तो इस दुनिया में और एक प्राणी अपनी स्वाधीनता खोनेवाला है।" सीतापति ने मजाक उड़ाते हुए कहा।

श्रीपति की शादी अगले ही दिन थी। सब लोगों ने मिलकर शादी में देनेवाले तोहफे के बारे में चर्चा की। चालीस लोग मिलकर दे रहे हैं, इसलिए तोहफा कीमती ही होना चाहिए। सब लोग इसी निर्णय पर पहुंचे। विचार-विमर्श के बाद 'टू-इन-वन' देने का निश्चय किया गया। राममूर्ति की पत्नी के 'ऑपरेशन' के लिए जिनकी जेब से रुपये नहीं निकले थे, उन सबके पास से शाम तक चालीस-चालीस रुपये वसूल किये गये। सीतापति के साथ उसके दो मित्र जाकर शादी का तोहफा भी खरीद लाये।

अगले दिन शाम को अच्छी तरह से 'पैक' किया गया 'टू-इन-वन' लेकर गर्व से जा रही मित्रमंडली को देखकर राममूर्ति के होंठों पर एक निर्जीव मुसकान बिखर गयी।

लेखक का पता :
पोचम्मा मैदान, वारंगल

अनुवाद : बी. ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ों के साये में बसा एक गांव : काम करते लोग

वहां 'देवता' करता है विवादों का निपटारा

● राम गुप्ता

मलाना : बर्फ से ढंकी हिमालय पर्वतमाला में बसा एक छोटा-सा गांव। मलाना को विश्व के पुराने लोकतांत्रिक केंद्रों में से एक कहा जाता है। आज यह सदियों पुराना लोकतांत्रिक केंद्र अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए संकट से जूझ रहा है।

पुराने समय से मलाना गांव में एक 'संसद' रही है, जिसके फैसले लोगों ने सिर-आंखों पर लिये हैं। पर अब इसी 'संसद' के अधिकारों को कुछ गांववाले चुनौती देने लगे हैं। [illegible] संबंधी तथा दूसरे अन्य पुराने रीति-[illegible] ढीले पड़ते जा रहे हैं।

समुद्र तल से नौ हजार फुट की ऊंचा[illegible] बसे इस गांव की लोकतांत्रिक व्यवस्था [illegible] पुरानी है। ग्रामीण अपने प्रतिनिधि का [illegible] मतदान से करते आये हैं। बाहरी दुनि[illegible] राजनीतिक और सामाजिक बदलावों से [illegible] रहकर भी इस गांव ने कारगर लोक[illegible]

कायम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणाली विकसित की है। गांव के सभी आठ सौ लोगों का गांव के प्रशासन में सीधा दखल है।

गांव की संसद

गांव का प्रशासन 'जमालु देवता' और गांव की दो सदनों की 'संसद' संभालती है। संसद में गांव के वयस्क लोग मतों के आधार पर चुने जाते हैं। गांव की संसद में दो सदन हैं। ऊपरी सदन और निचला सदन। ऊपरी सदन के फैसलों की ज्यादा महत्ता होती है। गतिरोध आने पर उसी के फैसलों को अंतिम माना जाता है।

किसी भी मामले पर पहले निचले सदन में विचार किया जाता है। विवाद की सुनवाई के बाद फैसला सुनाया जाता है। यदि वादी संतुष्ट नहीं हो, तो वह ऊपरी सदन में अपील कर सकता है। यदि सबूतों की कमी के कारण दोनों सदन किसी फैसले पर नहीं पहुंच पाते या दोनों पक्षों में से वह किसी को भी मान्य नहीं होता तो मामला 'देवता' को सौंप दिया जाता है।

'देवता' के आदेश से दोनों पक्ष दो बकरियां लाते हैं। दोनों बकरियों को जहरीली घास खिलाने का आदेश दिया जाता है। जो बकरी पहले मर जाती है, उसी के मालिक को अपराधी करार दिया जाता है।

यों, मलाना पर भी हमारे देश के कायदे-कानून लागू होते हैं पर यहां की 'अचूक न्याय-व्यवस्था' के कारण कभी ऐसी 'नौबत' नहीं आयी कि देश के कायदे-कानून की मदद लेने की जरूरत पड़े। अब तक सिर्फ एक मामले को छोड़कर गांव में सभी मामले जिला प्रशासन की मदद के बिना ही गांव में निपटा लिये गये हैं। जिस मामले का फैसला नहीं हुआ, वह गांव के बाहर के एक व्यक्ति द्वारा मंदिर के खजाने में चोरी करने का था।

गांव के लोगों का अपने देवता पर आज भी गहरा विश्वास है और 'संसद' के फैसले उन्हें मान्य होते हैं। पर अब गांव का वातावरण बदल रहा है।

उधर गांव के बड़े-बूढ़ों को पूरा भरोसा है कि गांव के 'लोकतंत्र' के अस्तित्व पर आया मौजूदा संकट भी पहले के कई संकटों की तरह समाप्त हो जाएगा।

मलाना में एक 'संसद' है, जिसके दो सदनों में गांव की समस्याओं का निपटारा होता है। और जब इन सदनों का निर्णय भी दोनों पक्षों को अमान्य होता है, तब देवता पर सौंपा जाता है विवाद निपटाने का भार।

कब बसा था मलाना

मलाना के बसने का कोई ऐतिहासिक सबूत नहीं है। पर प्रचलित कथाओं के अनुसार घाटी के आराध्य देव 'जमालु देवता' ने इस इलाके में वास करनेवाले एक राक्षस का संहार किया था। मरने से पहले राक्षस ने प्रार्थना की कि उसके मरने के बाद घाटी में ऐसा कुछ रहे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारंपरिक वेशभूषा में मलाना का एक नागरिक

जिससे लोग उसे याद कर सकें।

मलाना के संबंध में मिली जानकारी ने मेरे मन में वहां जाने की इच्छा पैदा कर दी। मैंने अपने साथियों के साथ मलाना जाने का विचार किया। अपना सामान कुलियों पर लादकर, मैं पैदल ही साथियों के सहित कुल्लू नगर से मलाना की ओर निकल पड़ा।

चारों ओर का प्राकृतिक परिवेश अत्यधिक सुंदर था। हरी-भरी पहाड़ियां, साफ नीला आकाश, बीच-बीच में आनेवाले साफ पानी के झरने। ये सब दृश्य हृदय को आकर्षित कर रहे थे। मार्ग में ऊपरी पहाड़ियों में सुंदर स्त्रियां पीठ पर सामान लादे कुल्लू नगर को जा रही थीं।

सायंकाल तक हम रसौल पहुंचे। रसौल हरी-भरी वादियों का एक खूबसूरत पहाड़ी गांव है। यहां रात्रि व्यतीत करने के लिए हमने चायवाले से एक कमरे का प्रबंध कराया। खाने की व्यवस्था भी उसी पर डाल दी।

घने अंधकार में पहाड़ियों पर स्थित घरों से टिमटिमाती रोशनी देखकर मुझे स्वर्गीय 'अज्ञेय' की ये पंक्तियां याद आ गयीं—

वन में एक झरना बहता है
एक नर-कोकिल गाता है
वृक्षों में एक मर्मर कोयलों को सिहराता है।
एक अदृश्य क्रम नीचे ही नीचे
झरे-पत्तों को पचाता है
अंकुर उगाता है

दूसरे दिन प्रातः झरने के ठंडे पानी में नहा कर हम तैयार हुए, फिर से मलाना की यात्रा के लिए। पहाड़ी पगडंडी पर सफर करते हुए हम दोपहर बाद मलाना पहुंचे। शरीर थक-सा गया। भूख भी लगी थी अतः एक चायवाले के यहां हम सबने डेरा डाला।

हमें बताया गया था कि मलाना के निवासी बाहरी लोगों से दूर ही रहते हैं, उनके प्रति 'अस्पृश्यता' का भाव रखते हैं। परंतु हमारे पहुंचने पर गांव के कुछ बच्चे 'टॉफी' मांगने के लिए हमारी ओर उत्सुकता से देखने लगे। वयस्क लोगों ने भी हमसे प्रेमपूर्वक व्यवहार किया।

मलाना भारतीय सांस्कृतिक जीवन की एक अद्भुत धरोहर है। यहां के निवासी यद्यपि गरीब हैं, परंतु हृदय से स्वच्छ, भोले एवं अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति प्रतिबद्ध हैं। उस पर उन्हें गर्व है। वे उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखना चाहते हैं। इसलिए चाहते हैं कि उनकी इस परंपरा में बाहरी हस्तक्षेप न हो। और हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते हैं कि वे 'अस्पृश्य' रहना चाहते हैं।

मलाना में जमालु देवता का प्राचीन मंदिर है। मंदिर बाहर से पूरी तरह से लकड़ी का बना हुआ है। लकड़ी पर कहीं-कहीं नक्काशी का बहुत ही खूबसूरत काम हुआ था। अंदर के अंधेरे कमरे में कुछ देवताओं की मूर्तियां रखी हुई हैं, जिनका कला की दृष्टि से भी बहुत अधिक महत्त्व है। यहीं पर गांव की आखिरी पंचायत होती है, जिसमें अंतिम निर्णय होता है।

यहां डेढ़ सौ परिवारों की बस्ती है। लगभग पांच सौ लोग रहते हैं। वे मक्का, गेहूं, राजमा और मूंग की खेती करते हैं। अब तो दूरवर्ती क्षेत्र में वे भांग और अफीम भी पैदा करने लगे हैं। वहां साधारणतः सरकारी कारिंदे पहुंच नहीं पाते हैं। इसके अतिरिक्त उनके कंबल बनाना भी उनका मुख्य धंधा है। गांव के लोग गरीब नहीं हैं। फलतः उनके जीवन में अवसाद के क्षण कम, उल्लास के अवसर अधिक आते हैं।

परंतु मलाना घाटी के दरवाजे अब आधुनिक दुनिया के लिए खुल जाने से, बाहरी लोगों के निरंतर संपर्क में आने से तथा संचार माध्यमों से जुड़ने व साक्षरता के बढ़ने से यहां के लोगों में विशेष तौर पर युवाओं के मन में सदियों की सांस्कृतिक मान्यताएं ढहने लगी हैं, जिससे यहां के लोकतांत्रिक अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है।

—१२३/४०९ फजलगंज, कानपुर

उपयोगी शॉर्क

वैज्ञानिकों का मत है कि शार्क मछली का अस्तित्व बहुत पुराना है। इतने लंबे समय के दौर में जबकि पशु-पक्षियों और जलचरों की अनेक प्रजातियां खत्म हो चुकी हैं, शॉर्क का अस्तित्व में रहना आश्चर्यजनक है। रोचक बात यह भी है कि इस प्रजाति में आज तक ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ। इस प्रजाति के इस लंबे अस्तित्व के पीछे जो प्रमुख कारण हैं, वह हैं इसकी बदलते हुए पर्यावरण का सामना करने की अद्भुत क्षमता। इस अद्भुत क्षमता को देखते हुए वैज्ञानिकों का मत है कि शॉर्क के शरीर में अत्यंत सक्रिय एनजाइम और अन्य पदार्थ होने चाहिए। और हैं भी। इसीलिए अब शॉर्क को पकड़ने का काम व्यावसायिक तौर पर आरंभ कर दिया गया है। शार्क का उपयोग 'काटरेक्स' नामक दवा बनाने के लिए किया जाता है, जो जीर्ण शोथ के उपचार के लिए अत्यंत लाभकारी है।

हृदय में भी चुंबकीय क्षेत्र ?

मनुष्य के हृदय में भी पृथ्वी की तरह एक चुंबकीय क्षेत्र होता है, लेकिन यह बहुत ही छोटा होता है और फिर स्थिर भी नहीं रहता, इसीलिए लंबे समय तक इसका पता नहीं लगाया जा सका। सोवियत संघ में अब एक ऐसा उपकरण विकसित कर लिया गया है, जो हृदय के चुंबकीय क्षेत्र को माप सकता है और साथ ही साथ कंपनों का भी पता लगा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यमय बादलों से घिरा शुक्र

● डॉ. वासुदेव प्रसाद यादव

शुक्र अर्थात वीनस के वैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास दो महान नामों से आरंभ होता है—गैलीलियो तथा लोमोनोसोव। गैलीलियो ने सन १६१० में सर्वप्रथम इस ग्रह की कलाओं की खोज की, लोमोनोसोव ने सन १७६१ में इस ग्रह पर वायु-मंडल की उपस्थिति सिद्ध की। लोमोनोसोव की खोज के पश्चात लगभग दो शताब्दियों तक शुक्र ग्रह संबंधी ज्ञान का विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ।

शुक्र ग्रह के चारों ओर बहुत ही घना वायुमंडल है। उसमें इतने अधिक बादल हैं कि

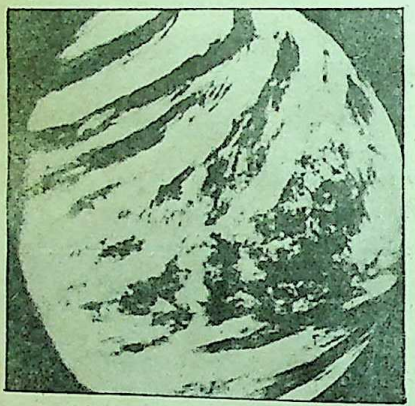

यह ग्रह सफेद रुई से लिपटा प्रतीत होता है—बिलकुल पूरी तरह, कहीं कोई 'छेद' नहीं। सदियों से खगोलविज्ञानी दिमाग लड़ाते आये थे, इस सफेद आवरण के नीचे क्या है ? सभी इस बात पर सहमत थे कि शुक्र पर खासी गरमी होनी चाहिए, क्योंकि वह सूर्य के अधिक समीप है। कुछ वैज्ञानिकों का कहना था कि शुक्र ग्रह सारा का सारा एक महासागर है। वहां आकाश से अनवरत वर्षा होती रहती है। कुछ का कहना था कि वहां पानी कब का सूख चुका है, शुक्र ग्रह तपता शुष्क रेगिस्तान है। कुछ अन्य वैज्ञानिक बीच की बात करते थे। उनका कहना था कि वहां शायद, वह सब है, जो पृथ्वी पर है। सागर और मरुभूमि, पर्वत और वन गरमी के कारण खूब घनी हरियाली है बियाबान जंगलों में आश्चर्यजनक जानवर रहते हैं, काली घटाओं तले अद्भुत जीव उड़ते हैं किसका कहना सही है—यह जान पाने का कोई उपाय नहीं था।

अध्ययन शुक्र के धरातल का

शुक्र ग्रह पर प्रेषित की गयी तथा उससे परावर्तित रेडियो तरंगों की सहायता से ग्रह के घूर्णन की दिशा निर्धारित हुई तथा उससे दिन की अवधि भी ज्ञात हुई। शुक्र ग्रह का एक वर्ष दो दिन-रातों से बनता है और प्रत्येक दिन-रात पृथ्वी के ११८ दिन-रात के बराबर होती है। इस ग्रह पर कोई मौसम भी नहीं होता।

यह पता लगाने के लिए कि आखिर वहां है क्या, वैज्ञानिकों ने शक्तिशाली राकेटों की मदद से स्वचालित यंत्र शुक्र पर भेजने का निर्णय किया। इन्हें अंतरग्रहीय स्वचालित स्टेशन कहते हैं। इन स्टेशनों को शुक्र तक पहुंचने में तीन महीने लगे। पहले दो स्टेशन शुक्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गुजर गये। तीसरा शुक्र पर पहुंचा, पर उसने कोई सूचना नहीं भेजी। लेकिन इसके बाद के स्टेशनों ने अपना काम बखूबी पूरा किया। वे ग्रह के पास पहुंचे, उसके वायुमंडल में घुसे, उनके पैराशूट खुले और वे धीरे-धीरे रहस्यमय बादलों में उतरने लगे। उतरते हुए वे रेडियो-संकेतों से यह सूचना भेजते रहे कि अपने उपकरणों से वे क्या 'अनुभव' कर रहे हैं। रेडियो खगोल-विज्ञानियों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उनकी बात सच निकली। स्टेशनों के उपकरणों ने यह दिखाया कि शुक्र के वायुमंडल के तली पर तापमान ४७०० से. है। बिलकुल भट्टी-जैसी गरमी। उपकरणों ने और भी बहुत-सी रोचक जानकारी भेजी। हमें पता चला कि शुक्र ग्रह पर ऐसी गरमी सदा रहती है—दिन हो या रात, जाड़ा हो या गरमियां। शुक्र की वायु पृथ्वी की वायु से दसियों गुनी अधिक घनी है और वह बिलकुल दूसरे तत्वों से बनी है। मनुष्य के लिए तो वह जहरीली ही है।

इन अंतरिक्ष यानों द्वारा भेजी गयी सूचनाओं से पता चलता है कि चारों ओर एक ही जैसा, रंगहीन पत्थरोंभरा मैदान है। न कहीं पानी, न कहीं कोई झाड़ी, जीवन का कहीं कोई चिह्न नहीं है। सिर के ऊपर गहरी सुरमई घटाओं की अभेद चादर तनी हुई लगती है। प्रकाश धूमिल है, कहीं कोई छाया नहीं। हवा धुंधली है, जैसे कि उसमें हलका धुआं उड़ रहा हो। क्षितिज दिखायी नहीं देता।

यह चंद्रमा और बुध-जैसा एकदम गतिहीन जगत नहीं है। यहां हवा धीमे-धीमे चलती है। शुक्र के बादलों की ऊपरी सतह पर इतनी गरमी नहीं है। वहां वायु प्रायः इतनी ही घनी है, जितनी कि पृथ्वी की सतह पर। शुक्र का वायुमंडल कुछ हद तक हमारे महासागर-जैसा ही है। हो सकता है, उसमें भी सतह के पास तैरते हुए जीना संभव हो महासागर की मछलियों की तरह।

अमरीकी स्वचालित स्टेशन शुक्र की परिक्रमा करता रहा और 'रेडियो लोकेटर' से उसने शुक्र की सतह टटोली। फलतः पता चला कि पहाड़ कहां है और मैदान कहां। सोवियत स्टेशन शुक्र ग्रह की उड़ानें भर चुके हैं। हर नया स्टेशन इस आश्चर्यजनक ग्रह के बारे में नयी जानकारी भेजता है।

वैज्ञानिक का विचार है कि शुक्र ग्रह को जीवन-योग्य बनाया जा सकता है। उनका सुझाव है कि शुक्र वायु मंडल में खास तरह के जीवाणु छोड़े जाएं। कुछ वर्षों में वे शुक्र की वायु की संरचना बदल देंगे।

वीनस यान-श्रृंखला

अंतरिक्षीय युग को आरंभ हुए चार वर्ष बीत चुके थे। अब शुक्र की दीर्घकालीन यात्रा पर एक सोवियत स्वचालित स्टेशन रवाना हुआ। सन १९६५ में अन्य दो यान भेजे गये। इनमें से एक—'वीनस-३' ग्रह तक पहुंचा। अंतरिक्ष विज्ञान के इतिहास में, सर्वप्रथम अंतरग्रहीय उड़ान सफल हुई।

प्राप्त होनेवाले अनुभव के आधार पर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिकों ने एक वर्ष के अंदर ही सुदूर के वायुमंडल के अध्ययन से संबंधित प्रयोग किये। यह प्रयोग 'वीनस-४' द्वारा पूर्ण किया गया। इस उड़ान के पश्चात यह स्पष्ट हो गया कि ग्रह का घना आवरण लगभग पूर्णतया कार्बन डॉइऑक्साइड गैस से बना है। सर्वप्रथम प्रत्यक्ष रूप से वायुमंडल के ताप, दाब व घनत्व को मापा गया।

सन १९६९ में एक साथ ही दो स्वचालित स्टेशनों 'वीनस-५' और 'वीनस-६' ने इस ग्रह के विभिन्न भागों में वायुमंडल का गहराई से अध्ययन किया। कार्बन डॉइऑक्साइड के अतिरिक्त नाइट्रोजन, जलीय वाष्प एवं ऑक्सीजन की नगण्य मात्रा भी पायी गयी। स्टेशनों ने सतह से लगभग २० कि.मी. की ऊंचाई पर परिमाप लिये। इस प्रकार इकट्ठे किये गये आंकड़े 'वीनस-४' और अमरीकी यान 'मैरीनर-५' द्वारा एकत्रित आंकड़ों से पूर्णतः मेल खाते थे। अमरीकी यान ने ग्रह के समीप उड़ान भरकर, रेडियो-प्रकाश विधि से ग्रह का अध्ययन किया। यान जब ग्रह से दूर हो जाता था, तो उसके प्रेषित्र द्वारा पृथ्वी पर भेजी जानेवाली रेडियो तरंगों के गुणों में बहुत अंतर उत्पन्न हो जाता था। इसका कारण यह था कि ग्रह एवं 'मैरीनर' की इस पारस्परिक स्थिति में संकेत वायुमंडल की गैसों में से गुजरते थे।

लेकिन अभी भी ग्रह की सतह अज्ञात थी। यह स्थिति १५ दिसम्बर, १९७० से पहले तक बनी रही। १५ दिसम्बर, १९७० को अज्ञात कठोर सतह पर सोवियत स्टेशन 'वीनस-७' का अवतरण उपकरण उतरा।

इसी कोटि के अन्य स्टेशनों की भांति 'वीनस-७' भी दो मुख्य भागों से बना हुआ था—कक्षीय विभाग एवं अवतरण-उपकरण। कक्षीय विभाग, एक विशाल धातु से बना सिलेंडर था, जिसके अंदर स्टेशन की उड़ान के नियंत्रण यंत्र, रेडियोग्रहण, प्रेषित्र तथा अन्य उपकरण लगे थे। पृथ्वी के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए स्टेशन पर एक बड़ी-सी छतरी खुल जाती थी। यह छतरी एक ऐंटेना था।

कक्षीय विभाग में परिशुद्धि इंजन यंत्र लगा था। इसके जरिये स्टेशन को उसके लक्ष्य की ओर आमुख किया जा सकता था। इसी कक्ष के साथ अवतरण-उपकरण लगा हुआ था।

स्टेशन के उपकरण एवं यंत्र अपनी वैद्युत ऊर्जा उस बैटरी से प्राप्त करते थे, जो कक्षीय विभाग में लगी थी। ऊर्जा के संचय की पूर्ति सौर बैटरियां करती थीं।

लगभग संपूर्ण उड़ान के समय स्टेशन सूर्य की ओर उन्मुख था। प्रकाशीय प्रेषित्र अपने दृश्य क्षेत्र में हर समय सूर्य एवं पृथ्वी को अथवा सूर्य और एक अन्य विशेष रूप से निर्धारित तारे (अगस्त्य) को रखते थे। प्रेषित्र के आदेश पर स्वचालित यंत्र गैसीय-अभिक्रिया द्वारा सूक्ष्म इंजन को चालू व बंद करते थे।

कक्षीय विभाग का मुख्य कार्य था—अवतरण-उपकरण को ग्रह तक पहुंचाना। बाद की उड़ानों में यह कार्य अधिक सरलता से किया जाने लगा। इसीलिए नये स्टेशनों के डिजाइनरों ने अधिक ध्यान अवतरण-उपकरण पर दिया। इसकी आकृति एक विशाल अंडे-जैसी थी। यदि हम उसे बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से काटते, तो अंडे की गोलाकार यंत्र कक्ष देखते। इस कक्ष के ऊपर एक अन्य कक्ष था—पैराशूट कक्ष। इसी में ऐंटेना रखा गया था।

वायुमंडल के साथ टकराव होने पर उपकरण का गुरुत्वीय बल एकदम बढ़ जाता था—प्रत्येक पेच, प्रत्येक यंत्र का भार पृथ्वी पर उसके भार की तुलना में ३००-३५० गुना अधिक हो जाता था। उपकरण के समक्ष एक तथाकथित चोट करनेवाली तरंग आ गयी। इसके तथा उपकरण के बीच का तापमान लगभग ११,००० सें. तक पहुंच गया। ऊष्मारक्षी पदार्थ की मोटी परत और ताप नियंत्रण विन्यास ने उपकरण की रक्षा की। यंत्र विभाग में तापमान सामान्य रहा।

वायुमंडल ने गति को तीव्रता से धीमा करना आरंभ किया। शीघ्र ही उपकरण का अवतरण आरंभ हुआ। २० कि.मी. की दूरी तय की गयी। अब उसके आगे सब कुछ अज्ञात था। तापमान बढ़ता ही जा रहा था : ४०००, ४५०० तथा अंत में ४७५०। एक बार पुनः ४७५० और एक मिनट के पश्चात भी वही संख्या। तापमान का बढ़ना बंद हो गया। इसी के साथ, ग्रह की तुलना में उपकरण की गति शून्य हो गयी। इसका केवल एक ही अर्थ था—उपकरण शुक्र की सतह पर उतर चुका था। तापमान लगभग ५००० तथा दाब लगभग १०० वायुमंडल के बराबर था। इस प्रकार की भट्ठी में सामान्य इस्पात का गलन हो जाता है। ऊष्मरोधी ऐलॉयों से बने उपकरण की बॉडी ने ग्रह के गरम आगोश को सहन कर लिया।

अभी तक शुक्र के सभी अध्ययन-उपकरणों ने ग्रह के रात्रि भाग में अवतरण किया था। नये सोवियत अंतरग्रहीय स्टेशन 'वीनस-८' के अवतरण-उपकरण ने शुक्र ग्रह के प्रकाशमान भाग पर कदम रखा। लेकिन, उपकरण का यह दिवसीय अवतरण, रात्रि भाग में किये गये गत अवतरणों की अपेक्षा अधिक जटिल था।

पृथ्वी एवं अंतरिक्ष-यान के बीच रेडियो संपर्क उनके बीच की दूरी पर निर्भर करता है। इसीलिए स्टेशन के लिए आवश्यक था कि वह शुक्र पर उस समय से पहले पहुंचे, जब ग्रह की पृथ्वी से दूरी अधिक हो जाए। शुक्र की कक्षा, पृथ्वी की कक्षा की तुलना में, सूर्य के अधिक समीप है। इसीलिए इन ग्रहों के बीच परस्पर दूरी सबसे कम उस समय होती है, जब ये सूर्य के एक ओर होते हैं। इस समय हमारी ओर शुक्र का भाग पृथ्वी पर स्थित मानव को दिखायी नहीं देता है। अधिकतम समीपता प्राप्त करने के पश्चात, ये ग्रह जब दूर होने लगते हैं, तो पृथ्वी से शुक्र के एक भाग को थोड़ा-सा देखा जा सकता है, जो एक नन्हे-से प्रदीप्त क्रिसेंट-जैसा लगता है। इसी क्रिसेंट भाग में उपकरण का अवतरण होना था।

शुक्र के प्रदीप्त भाग में अवतरण की कठिनाइयां यहीं समाप्त नहीं होतीं। उड़ान की समाप्ति शुक्र के वायुमंडल के एक तीखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरावट द्वारा हुई। संभव है उपकरण इस प्रकार उत्पन्न होनेवाले गुरुत्वीय बल को सहन न कर पाता और बहुत अधिक टेढ़े प्रक्षेप-पथ पर उड़ान भरते हुए ग्रह के समीप इस प्रकार आना चाहिए कि वायुमंडल में उसके प्रवेश का कोण निर्धारित कोण से न तो अधिक और न ही कम रहे। यही कारण था कि अवतरण स्थल सभी अन्य दृष्टिकोणों से उत्तम शुक्र के प्रदीप्त भाग पर एक लघु 'धब्बा-सा'—था और पृथ्वी से कम दिखायी देता था।

इस लक्ष्य पर उतरना बहुत ही कठिन कार्य था। पर प्रक्षेप विशेषज्ञों ने इस कठिन कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। स्टेशन 'वीनस-८' का अवतरण उपकरण, निर्धारित स्थल पर एकदम सही उतरा।

शुक्र की सतह पर उपकरण ने लगभग एक घंटा कार्य किया। अवतरण-स्थल पर, सतह की गामा विकिरण तीव्रता एवं ऊर्जा को गामा-स्पेक्ट्रोमीटर ने मापा। इस नियम के अनुसार, शुक्र की भूमि व चट्टानें पृथ्वी की चट्टानों-जैसी ही लगीं।

सन १९७५ की ग्रीष्म ऋतु में सोवियत कॉस्मोड्रोम से दो नये प्रकार के 'वीनस' यान ग्रह की ओर रवाना हुए। इनका कार्य था वीनस ग्रह का सर्वप्रथम कृत्रिम उपग्रह बनना।

अंतरग्रहीय यात्रा की अवधि चार महीने से अधिक की थी। शुक्र और यान की दूरी जब दो दिवस के बराबर रह गयी, तो यान से अवतरण उपकरण पृथक हो गया। पहले की भांति ये ग्रह की ओर चलने लगे तथा यान नये प्रक्षेप-पथ में प्रवेश करने लगा। ग्रह की सतह से यान की दूरी १५०० कि.मी. तक थी। पूर्व निर्धारित समय पर स्टेशन के इंजन बंद हो गये तथा ये वीनस के उपग्रह बन गये। इन पर लगे वैज्ञानिक यंत्रों ने कुछ महीनों तक ग्रह का अध्ययन किया।

'पृथ्वी पर स्थित परिमापी केंद्र ने शुक्र की सतह के चित्र ग्रहण किये। चित्र बहुत अच्छे आये।'—उद्घोषक के इन शब्दों ने कमरे में उपस्थित सभी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। अकादमीशियन म. व. केल्दिश ने ध्यान से चित्रों को देखा और कहा, "विवरण में यह चित्र, चंद्रमा के प्रथम चित्रों के समान ही होगा।" अगले दिन अमरीकी नासा केंद्र के एक निर्देशक स. रसूल ने भी यही कथन दोहराया : "प्राप्त चित्रों से सिद्ध होता है कि सतह पर कार्बन डॉइऑक्साइड गैस निस्संदेह पारदर्शी है तथा प्रकाश, सतह तक पहुंचने के लिए बादलों की परतों को पार करता है।"

तीन दिन बाद ही 'वीनस-१०' ने एकदम नयी तसवीर दिखायी। उपकरण एक समतलीय प्रकाशमान चट्टान पर खड़ा था। इस चट्टान के कटे हुए किनारों पर गहरी दरारें थीं। शुक्र से आये इन चित्रों ने हमारे अंतरिक्षीय पड़ोसी में हमारी जिज्ञासा को और अधिक बढ़ा दिया। इस जिज्ञासा को शांत करने में तीन वर्ष से अधिक समय लगा।

शुक्र की यात्रा पर जाने की सर्वोत्तम अवधि हमेशा प्राप्त नहीं होती। अतः सोवियत कॉस्मोड्रोम से 'वीनस-११' तथा 'वीनस-१२' रवाना हुए तथा अमरीका के केप कैनेवरल द्वीप से 'पायनियर-वीनस-१' तथा 'पायनियर-वीनस-२' रवाना हुए।

दो 'पायनियरों' के कार्य भिन्न-भिन्न थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम उपकरण का कार्य शुक्र का कृत्रिम उपग्रह बनना था, दूसरे का कार्य शुक्र के वायुमंडल में चार 'जौंद' (अन्वेषी शलाकाएं) ले जाना था।

जब दोनों उपकरणों ने शुक्र के वायुमंडल में प्रवेश किया, तो नियंत्रण केंद्र अंधकार में डूबा हुआ था। लेकिन वहां, जहां 'पृथ्वी के दूत' रंगीन पैराशूटों द्वारा लटके हुए थे, सूर्य का प्रकाश था। ताप व दाब के मान बढ़ते ही जा रहे थे।

वायुमंडल में उपकरण ने प्रवेश किया तो इसका पता भी नहीं चला। वे बादल, जो दूर से घने व अधिक मोटे लगते थे हलकी धुंध के समान थे। स्पष्ट हुआ कि भ्रांतिपूर्ण विचार का कारण कई कि.मी. मोटी परत थी। शुक्र के बादलों की संरचना ज्ञात नहीं थी। इस बारे में अनेक परिधारणाएं प्रस्तुत की गयी थीं। पृथ्वी पर किये गये अध्ययनों से पता चला कि बादलों में एक ऐसा द्रव अवश्य होना चाहिए, जो बहुत निम्न तापमान पर भी जमता नहीं हो। ऐसा निम्न ताप बादलों की बाहरी सीमा पर है। अमरीकी वैज्ञानिक सिल तथा यंग ने सिद्ध किया कि इस प्रकार की विशेषता सांद्रित सल्फ्यूरिक अम्ल में होती है।

प्रत्येक बार यंत्रों के चारों ओर की गैसों के चिह्न 'वर्णक्रम-मापी' पर अंकित हो जाते थे। यंत्रों ने बादलों को 'छूकर' उनका अध्ययन किया। प्रयोगों से यह निर्धारित किया गया कि कौन-से परमाणु तथा अणु इन एक्स-किरणों को विकिरित करते हैं। अनुमानित गंधक के अतिरिक्त इसमें क्लोरीन भी पायी गयी।

अमरीकी यान 'पायनियर-वीनस-२' से छोड़े गये चार यंत्र (जौंद) शुक्र पर दो सप्ताह

पूर्व उतरे।

सभी छह क्षेत्रों में सोवियत संघ का दूसरा उपकरण, प्रथम उपकरण के अवतरण स्थल से ८०० कि.मी. की दूरी पर उतरा था। बादलों की परत एक ही ऊंचाई पर थी तथा मोटाई भी समान थी। तापमापी प्रेषित्रों ने सल्फ्यूरिक अम्ल की परिधारणा की अचानक पुष्टि कर दी। चारों जौंद १२ कि.मी. की दूरी पर खराब हो गये। एक वैज्ञानिक के मत के अनुसार उपकरण के यंत्रों को अम्ल ने 'खा' लिया।

सोवियत अवतरण उपकरणों पर तूफानमापी लगाये गये थे। इनकी सहायता से वैज्ञानिकों ने शुक्र के वायुमंडल पर प्रभाव डालनेवाली प्रक्रियाओं की खोज की। पृथ्वी पर तूफान, वायु के ओजोन व नाइट्रोजन के ऑक्साइड बनाते हैं। शुक्र पर भी तूफानों की संभावना है। शुक्र पर रात्रि में नभ के प्रकाशमय होने के कारण, वहां प्रायः उठनेवाले शक्तिशाली तूफान हो सकते हैं। तूफानमापियों पर शक्तिशाली एवं दीर्घकालिक विद्युत आवेशों ने हमला किया। क्या इसका कारण तड़ित थी ? इसका कारण स्पष्ट करना अभी शेष था।

सतह का तापमान ज्ञात करके नये 'वीनस' उपकरणों ने ४७०० की ओर इंगित किया। इस प्रकार एक बार पुनः ग्रह के तप्त होने के कारणों पर विचार करने को विवश होना पड़ा। ग्रह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप्त होने का मुख्य कारण वायुमंडल माना जाता है। निष्कर्ष यह है कि कार्बन डॉइऑक्साइड गैस, जो ग्रह के वायुमंडल का ९५ प्रतिशत भाग है, सौर किरणों को सतह पर आने देती हैं तथा परावर्तित ऊष्मीय विकिरण को रोक लेती है।

पृथ्वी के वायुमंडल की तुलना में शुक्र के वायुमंडल में ऑर्गन गैस की मात्रा १०० गुना अधिक है। यह एक नयी पहेली है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पृथ्वी एवं शुक्र की प्रोटोग्रहीय धुंध से विकास प्रक्रियाएं आरंभिक काल में विभिन्न प्रकार से घटी थीं।

शुक्र की एक विचित्र बात जल से संबंधित है। शुक्र का संपूर्ण जल उसके वायुमंडल में विलीन है। लाल-तप्त सतह पर, १०० वायुमंडल दाब पर भी, द्रवित जल संभव नहीं है। पृथ्वी की अपेक्षा शुक्र के वायुमंडल में जलीयवाष्प बहुत कम है। इसका कारण समझना अत्यंत आवश्यक है। यदि शुक्र पर जल की मात्रा अधिक होती, तो उस पर कार्बन डॉइऑक्साइड गैस की मात्रा इतनी अधिक नहीं होती। पृथ्वी की भांति वह जल के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करता तथा ठोस कार्बोनेट चट्टानें बनाता। फलतः सतह पर तापमान इतना उच्च नहीं होता, इत्यादि।

कुछ वैज्ञानिकों ने मत प्रकट किया है कि शुक्र ग्रह को 'ठीक-ठाक' किया जाए तो उसे जीने योग्य बनाया जा सकता है। उन्होंने यह सुझाव रखा है कि शुक्र वायुमंडल में खास तरह के जीवाणु छोड़े जाएं। हवा में तैरते हुए वे जल्दी ही बढ़ जाएंगे और सारे ग्रह पर फैल जाएंगे। कुछ वर्षों में वे शुक्र की वायु की संरचना बदल देंगे। वायुमंडल को पारदर्शी बना देंगे, तब ग्रह की सतह धीरे-धीरे ठंडी पड़ जाएगी। बादलों से वर्षा होगी। नदियां, झीलें, समुद्र बन जाएंगे। नम मिट्टी पर लोग बीज बोएंगे। जंगल उग आएंगे। वे हवा में ऑक्सीजन भर देंगे, उसे पशु-पक्षियों और मनुष्य के सांस लेने योग्य बना देंगे। लेकिन शुक्र ग्रह का कायाकल्प करने से पहले उसका अच्छी तरह अध्ययन करना होगा।

—९८, अशोकनगर, आगरा

नियंत्रित किया जा सकता है भूकंपों को

सन १९२९ से अब तक किये गये अध्ययन से पता चला है कि जब तक महासागर में तूफान रहता है, तब तक कोई बड़ा भूकंप नहीं आता। ऐसा इसलिए होता है कि तूफान से समुद्री तरंगों द्वारा उत्पन्न कंपन पृथ्वी की पपड़ी में तनाव को शिथिल बना देते हैं। प्रयोगों द्वारा जब यांत्रिक वाइब्रेटरों द्वारा भूकंप का अनुकरण किया गया, तो पाया गया कि कंपन के प्रभाव से पत्थर अधिक मुलायम हो जाते हैं, जबकि इसमें एकत्र तनाव छोटे हिस्सों में बंट जाता है। इसीलिए भारी विध्वंसक भूकंप की जगह पर हलके झटके पैदा होकर रह जाते हैं। इससे निष्कर्ष यह निकला कि कृत्रिम रूप से उत्पन्न किये गये भूकंपनीय संकेतों की सहायता से भूकंपों को नियंत्रित किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

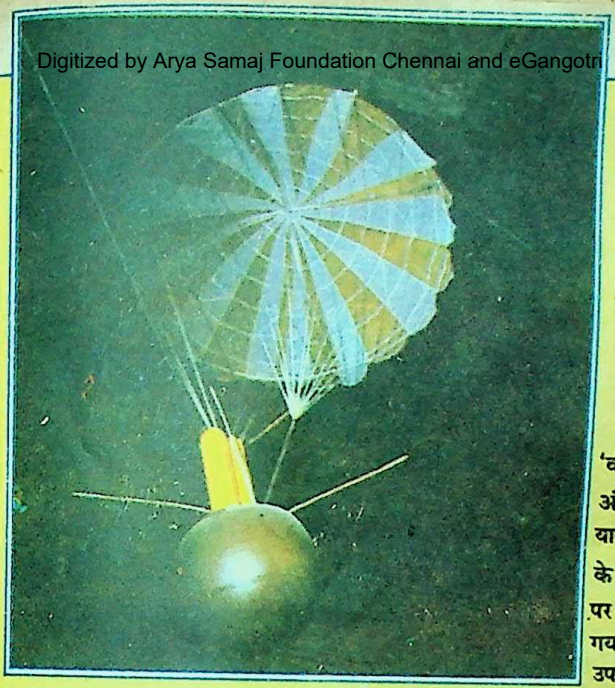

'वीनस-१०' अंतरिक्ष यान द्वारा शुक्र के धरातल पर उतारा गया वैज्ञानिक उपकरण।

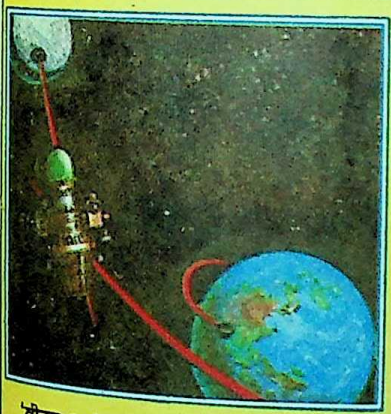

'वीनस-१०' का एक काल्पनिक चित्र

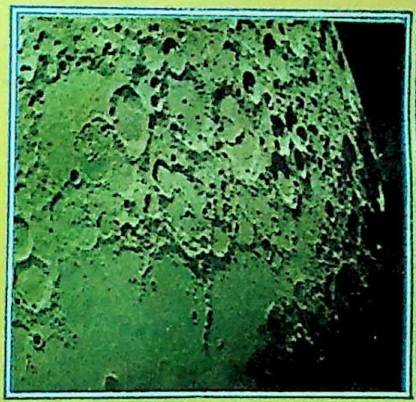

शुक्र के धरातल का चित्र।

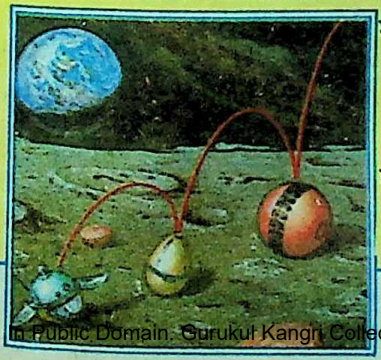

शुक्रग्रह के धरातल पर उतारे गये वैज्ञानिक यंत्रों के काल्पनिक चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

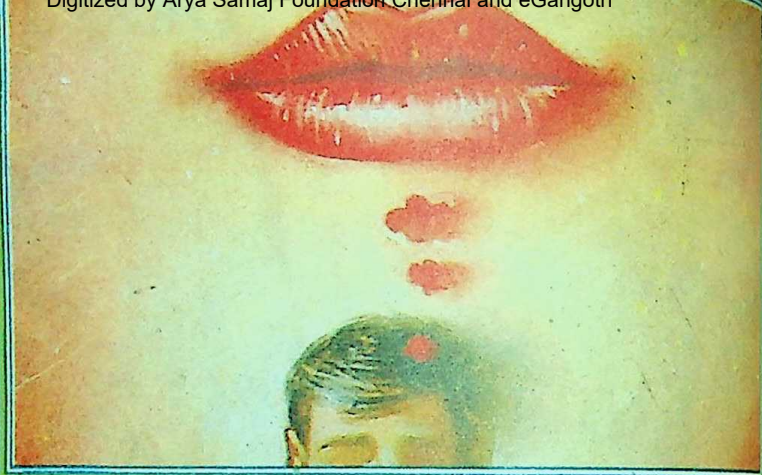

दिवा स्वप्न और यौन आकांक्षा ! क्या इन दोनों के बीच कोई संबंध है? अमरीकी मनोवैज्ञानिकों ने इस विषय में खोज की तो उन्हें कई दिलचस्प तथ्य प्राप्त हुए। आम तौर पर धारणा यह है कि अमरीकी छात्र-छात्राएं यौन संबंध में दिवा स्वप्न देखा करते हैं। खोज करने पर यह धारणा गलत सिद्ध हुई है। उनके यहां यौन इतना आम और मामूली विषय है कि उस पर दिवा स्वप्न देखा ही नहीं जा सकता। मनोवैज्ञानिकों ने इसके विपरीत बात कही है। कई प्रयोगों के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यदि किसी छात्र अथवा छात्रा के मन में कोई विशेष छवि गहरे उतर जाती है, तो वे चाहे किसी के साथ रहें, उन्हें वही छवि दिखायी देती है; शायद यही है उनका— दिवा स्वप्न।

छाया : ज्ञान दीक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवा स्वप्न देखना आसान है !

● एरिक क्लिंगर

दिन में सपने देखना एक आम बात है। लेकिन ये क्या हैं, हम इन्हें क्यों देखते हैं, इनका क्या असर होता है। ऐसी बातों पर हम बहुत कम सोचते हैं। लेकिन ये हैं महत्त्वपूर्ण और मनोवैज्ञानिकों के लिए तो ये चुनौतीपूर्ण भी हैं।

हमारा मन विचारों की बौछार करता रहता है। हम एक के बाद दूसरा दिवास्वप्न देखने लगते हैं। इसके बावजूद दिवास्वप्न को परिभाषित करना मुश्किल है। तात्कालिक स्थिति से इतर जो भी विचार मन में आते हैं, मनोवैज्ञानिक उन्हें दिवास्वप्न कहते हैं। मन का भटकना दिन में सपने देखने का प्रमुख रूप है। हम रोज कुछ देर के लिए ही सही, जो कर रहे होते हैं उससे भिन्न दिशा में खो जाते हैं। यह खोना अपनी ही कल्पना में हो सकता है या अपनी स्मृतियों में गोता लगाना हो सकता है। यह तब भी होता है, जब हम पढ़ या सुन रहे होते हैं। यह अकस्मात खो जाना अपने ही भीतर होता है जिसमें हम अपने आपको ही देखते हैं और एक नयी ताकत से भर उठते हैं

कोई ऐसा काम करते समय जिसमें अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है, हमारा मन पुरानी बातों की छानबीन में खो जाता है। हम किसी इंटरव्यू की कल्पना करते हैं, किसी खास तारीख की कल्पना करते हैं और उस अनुभव में खो जाते हैं जो घटित हो चुका है या होनेवाला है। दिवास्वप्न में प्रायः मनोभावों का योग होता है। कभी वे सुखद होते हैं, कभी डरावने, कभी गुस्सा दिलानेवाले।

ज्यादातर दिवास्वप्न मामूली चीजों के बारे में होते हैं। जैसे किराया देना, बाल कटवाना, सहकर्मी का व्यवहार, किसी खास दोस्त को लेकर किसी समस्या का समाधान। इस किस्म के विचारों का तांता लगा ही रहता है। हम दिवास्वप्न कभी भी देख सकते हैं— जब दाढ़ी बना रहे हों, चल रहे हों, प्रेस कर रहे हों, कोई योजना बना रहे हों या चिंतन कर रहे हों। हमारे दिवास्वप्न आगे की चीजों की याद दिलाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करते हैं।

दिवास्वप्न : रम्य कल्पनाएं

फ्रायड ने दिवास्वप्न को रम्यकल्पना माना है। फ्रायड का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को रम्यकल्पना की आवश्यकता पड़ती है। बाह्य आवश्यकता से प्रेरित होकर मनुष्य को आनंद का; जिसमें यौन आनंद भी शामिल है, परित्याग करना पड़ता है किंतु यह त्याग अप्रिय होता है। अतः इसकी क्षतिपूर्ति आवश्यक होती है। इस हेतु व्यक्ति एक मानसिक सक्रियता विकसित कर लेता है, जिससे आनंद के परित्यक्त स्रोत अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं। वास्तविक आनंद की प्राप्ति में बाधा देखकर मनुष्य मानसिक आनंद की सृष्टि करना चाहता है। यह मानसिक आनंद रम्य कल्पना से संभव होता है। जो वास्तविक जीवन में प्राप्त नहीं होता, वह रम्यकल्पना से प्राप्त हो जाता है। यह रम्यकल्पना हमारे आवेगों और इच्छाओं के नैराश्य की क्षतिपूर्ति करती है। यह क्षतिपूर्ति एक प्रकार का दिवास्वप्न है।

ज्यादातर दिवास्वप्न अपने आप घटित होते हैं किंतु कभी-कभी व्यक्ति आग्रहपूर्वक भी दिवास्वप्न देखता है कि ऐसे दिवास्वप्नों के द्वारा वह अपने आप को सक्षम बनाता है। लड़ाई में जाते समय सैनिक दुश्मन के कुकृत्यों की कल्पना कर अपने आपको उत्तेजित करता है। उबा देनेवाले कामों को करनेवाला कारीगर दिवास्वप्न के द्वारा अपने आपको जगाये रखता है। ट्रक ड्राइवर ऊब को कम करने के लिए जानबूझकर दिवास्वप्न का जाल बुनता है। दिवास्वप्न व्यक्तिशः भिन्न होते हैं, किंतु प्रकारों में समानता भी होती है। दो तिहाई दिवास्वप्न व्यक्ति की तात्कालिक जरूरतों या कामों से संबंधित होते हैं। बाकी का संबंध रोजमर्रा के कामों, भूत, भविष्य तथा रिश्तों से होता है।

दिवास्वप्नों के बारे में आम धारणा है कि वे रोमांटिक, कामुक या हिंसक होते हैं, लेकिन ऐसा है नहीं। अध्ययनों से पता चला है कि उक्त कोटि के दिवास्वप्न मात्र पांच प्रतिशत होते हैं। दिवास्वप्न व्यक्तित्व के तीन आयामों को उद्घाटित करते हैं। जो लोग डरावने दिवास्वप्न देखते हैं, वास्तविक जीवन में उनके अनुभव नकारात्मक होते हैं। ऐसे लोगों को अनिद्रा रोग भी हो जाया करता है। सकारात्मक अनुभव सुखद दिवास्वप्नों के जनक होते हैं। औरत और आदमी के दिवास्वप्नों में एक-जैसी बारंबारता होती है।

हम दिन में सपने क्यों देखने लगते हैं और उनकी विषय-वस्तु क्या होती है, इस पर अभी भी प्रश्नवाचक चिह्न लगा हुआ है। प्रयोगशालाओं में इस किस्म के प्रयोग किये जा रहे हैं, जिनसे इन प्रश्नों के उत्तर मिल सकें। टेप रिकॉर्डर सुनना और बीच-बीच में उत्तेजक विचारों को अंकित करना इसमें शामिल है। इससे देखा गया है कि खास तरह की ध्वनियां सुनने पर व्यक्ति के विचारों पर प्रभाव पड़ता है या वे प्रभावित किये जा सकते हैं। व्यक्ति को उससे तात्कालिक रूप से संबंधित बातें सुनाकर आसानी से प्रभावित किया जा सकता है। यह प्रभाव उसके मन में दिवास्वप्नों को जन्म देता है। अब तक हुए अध्ययनों से पता चला है कि व्यक्ति उन्हीं मुद्दों से संबंधित दिवास्वप्न देखता है जिनका सरोकार तात्कालिक बातों से होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक मूल्य, अपेक्षाएं, चेतावनियां, कुंठाएं— जैसी स्थितियां हमारा ध्यान सबसे ज्यादा आकर्षित करती हैं। लगता है — जैसे मनोभाव ही वह सूत्र है जो हमारे विचारों को प्रभावित करता है। मनोभावों को उत्तेजित करनेवाले शब्दों या घटनाओं का प्रभाव हमारी मानसिक प्रक्रिया पर सर्वाधिक पड़ता है। एक तरह से मनोभावों और तात्कालिक सरोकारों का अंतर्संबंध अत्याधिक है। इन्हीं का संबंध दिवास्वप्नों से भी है।

नैतिक मूल्य, अपेक्षाएं, चेतावनियां, कुंठाएं— जैसी स्थितियां हमारा ध्यान सबसे ज्यादा आकर्षित करती हैं। लगता है — जैसे मनोभाव ही वह सूत्र है जो हमारे विचारों को प्रभावित करता है। मनोभावों को उत्तेजित करनेवाले शब्दों या घटनाओं का प्रभाव हमारी मानसिक प्रक्रिया पर सर्वाधिक पड़ता है। एक तरह से मनोभावों और तात्कालिक सरोकारों का अंतर्संबंध अत्याधिक है। इन्हीं का संबंध दिवास्वप्नों से भी है। हमारी खुशियां, भय, क्रोध, निराशा, उदासी लक्ष्य प्राप्ति से उत्पन्न प्रतिक्रियाएं ही हैं। लक्ष्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता तथा उसे पाना हमारे मनोभावों को नियंत्रित करता है और इसी के माध्यम से हमारे दिवास्वप्न भी नियंत्रित होते हैं।

सुखद स्मृतियां

हममें कुछ जन्मजात भावनात्मक प्रतिक्रियाएं होती हैं— जैसे गिरने का भय। एक बार किसी चीज के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया करना, सीख लेने पर उसकी याद आते ही अनेक यादें और दिवास्वप्न आने लगते हैं। जैसे हिमालय की वादियों की याद आते ही हम सुखदस्मृतियों में खो जाते हैं, दिवास्वप्न देखने लगते हैं।

दिवास्वप्न ज्यादातर देखनेवाले के हिसाब से आकार लेते हैं जबकि यथार्थ उनमें अड़चनें पैदा करता है। एक कर्मचारी जो अपने मालिक से त्रस्त है, कार्य करते समय कुछ कहे जाने पर दिवास्वप्न बुनने लगता है। ज्यादातर खुशी देनेवाले दिवास्वप्न उन विचारों का विस्तार होते हैं जो तात्कालिक और दीर्घकालिक इच्छाओं और लक्ष्यों के केंद्र बिंदु होते हैं। यह एक प्रकार से खुद अपने दिमाग में उत्तेजना पैदा करने की कोशिश है। यह कोशिश किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए असंभव-सी लगनेवाली योजना या उपाय के रूप में देखी जाती है।

कभी-कभी लोग असंभव दिवास्वप्न अपने आप देखते हैं। दिवास्वप्न में व्यक्ति उड़कर भाग जाता है और दुर्दशा से छुटकारा पा लेता है। इस तरह के दिवास्वप्न व्यक्ति के अपने अनुभव से भिन्न होते हैं। इस तरह के तत्व जिनका सामना दिवास्वप्नों में होता है, व्यक्ति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनात्मक अंतर्दृष्टि के परिचायक हैं। असंयोज्य का संयोजन व्यावहारिक जगत में असंभव है किंतु दिन में सपने देखनेवाले को कौन रोक सकता है ?

कई वर्षों तक पश्चिमी दुनिया में दिन में सपने देखना अच्छा नहीं माना जाता था। इसका संबंध आलसी और फ्रायड ने जिसे 'बचकानी अवसाद मनःस्थिति' कहा है, से माना जाता है। यह भी धारणा है कि खंडित मानसिकतावाले व्यक्ति की 'स्वप्नचित्र और यथार्थ के बीच' भेद करने की कठिनाई उसे दिवास्वप्न देखने में प्रवत्त करती है। इसी कारण अब से पचास साल पहले शिक्षा मनोवैज्ञानिक सावधान किया करते थे कि बच्चों का दिन में सपने देखना उन्हें अवसादमना एवं विक्षिप्त मना बना सकता है।

दिवास्वप्न : रोग नहीं है

हाल में हुए अनुसंधानों से पता चला है कि दिवास्वप्न के बारे में पुरानी धारणाएं पूर्णतः गलत हैं। ऐसे कोई प्रमाण नहीं हैं जिनसे लगे कि दिन में सपने देखने से व्यक्ति खंडित मानसिकतावाला हो सकता है या उसमें मनोवैज्ञानिक उलझनें पैदा हो जाती हों। ज्यादातर अध्ययन उद्घाटित करते हैं कि दिन में सपने देखने में खंडित मना व्यक्ति या अन्य व्यक्तियों में कोई अंतर नहीं है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बताया है कि खंडित मानसिकतावाले व्यक्ति अन्य लोगों की तुलना में अधिक या अकसर दिन में सपने नहीं देखते। कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि जो आसानी से सम्मोहित हो जाते हैं, दिवास्वप्न देखने में अधिक रूचि लेते हैं।

ऐसे भी प्रमाण हैं कि जो लोग स्वप्नचित्र 'फैंटेसी' में रुचि रखते हैं, उनमें विशि[illegible] मनोवैज्ञानिक क्षमता होती है। जो [illegible] आमतौर पर कल्पनाशील होते हैं, अ[illegible] सजग, आकर्षक, कुंठा को सहन [illegible] सकनेवाले निर्भय तथा विनोदप्रिय होते हैं। अकसर मुग्धकारी दिवास्वप्न देखनेवाले [illegible] ठन लोगों से बेहतर होते हैं, जो दिन में [illegible] सपने देखते हैं। यद्यपि दिवास्वप्न अपने आ[illegible] बुरे नहीं हैं, तथापि कुछ उदाहरणों में वे दु[illegible] सकते हैं। दिवास्वप्नों की पूर्व तैयारी की [illegible] सकती है फिर उन्हें कार्यरूप दिया जा सक[illegible] है। भय की मानसिकतावाला व्यक्ति जो [illegible] दुर्घटना की कल्पना करता है, दिवास्वप्न में [illegible] आपको दुर्घटनाग्रस्त पाकर अपने भय को [illegible] ताकतवर बना सकता है। विषाद, अवसाद [illegible] मानसिकता से ग्रस्त व्यक्ति, जो अपनी विप[illegible] की कल्पना करता रहता है, दिवास्वप्न के द्[illegible] अपने विषादों को और बढ़ा सकता है।

दिवास्वप्नों से मनःशांति

कुछ लोग दिन में ज्यादा ही सपने देख[illegible] हैं। स्वप्न चित्र उसकी समस्या के लक्षण [illegible] हैं। अपने आप में समस्या या कारण [illegible] होते। दिवास्वप्नों की अधिकता स्वप्न देखने[illegible] के जीवन लक्ष्यों तक पहुंचने की कुंठाओं [illegible] ओर संकेत करते हैं, जिससे वह अर्थवान संब[illegible] स्थापित कर व्यावसायिक सफलता प्राप्त [illegible] सके। यह एक तरह से मानसिक शांति [illegible] करने या संतुष्टि का मार्ग भी हो सकता है। इसके अभाव में उसका अस्तित्व निराश[illegible] बना रह सकता है। इसका उत्तर जीवन [illegible] वास्तविकता में परिवर्तन में सहायता के रू[illegible] देखा जा सकता है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो लोग औसत से ज्यादा दिन में सपने देखते हैं, अकसर औसत से ज्यादा मनोवैज्ञानिक ताकतवाले होते हैं और संकेत देते हैं कि दिन में सपने देखना वास्तव में लाभदायक हो सकता है। तात्कालिक बातों का याद आना, समस्या का पुनरीक्षण, अतीत से सीखना तथा भावी व्यवहार में परिष्कार की पूर्व तैयारी दिवास्वप्न द्वारा होती है। अनेक साहित्यिक कृतियों का, गणित की गुत्थियों को सुलझाने का उद्गम दिवास्वप्नों या दिवास्वप्न-जैसी स्थितियों से हुआ है।

मनोचिकित्सकों तथा व्यवहारविदों ने निर्देशित दिवास्वप्नों के द्वारा अपने मरीजों की व्यक्तिगत समस्याओं का निदान किया है। मानसिक कल्पना के माध्यम से व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। ऐसे भी प्रमाण मिले हैं कि स्वप्नचित्र में शारीरिक या सामाजिक कुशलता के अभ्यास द्वारा वास्तविक कार्य-व्यापार में सुधार लाया जा सकता है।

स्वप्न : मनोविज्ञान के प्रतिबिंब

हमारे दिमाग का गठन ही ऐसा है कि हम दिन में सपने देखते हैं, काल्पनिक चित्र निर्माण करते हैं, जो हमारे कार्यरत आंतरिक मनोवैज्ञानिक पहलुओं को प्रतिबिंबित करते हैं। जब हम अपने मन में दृश्यचित्रों का निर्माण करते हैं तो हम उन्हीं दिमागी प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं, जिनसे अपने आसपास की दुनिया का अनुभव करते हैं। गतिशीलता कल्पना चित्रों में दिमाग और शरीर का उन्हीं प्रक्रियाओं का उपयोग होता है जिनका संबंध दिन में सपने देखनेवाले की अभिप्रेरणा की स्थितियों से भी होता है।

दिन में सपने देखनेवाले के कल्पना चित्रों में उसके अंदर घटित हो रही मनोवैज्ञानिक बनावट का प्रतिबिंब देखा जा सकता है जो वास्तविक दुनिया की बाधाओं से परे है। कल्पनाचित्रों में दिन में सपने देखनेवाले की कार्यशील केंद्रिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी झलकती है।

दिवास्वप्न या दिन में सपने देखना दिमाग की प्राकृतिक शक्ति का फलदायी उपयोग करना है। दिवास्वप्न प्रायः अपने आप शुरू हो जाते हैं। हमारा दिमाग जो हम कर रहे होते हैं, उससे हमारा ध्यान हटाकर स्वचालित रूप में तात्कालिक बातों की ओर चला जाता है। दिवास्वप्न हमारे मन को सक्रिय बनाये रखते हैं तथा तालमेल और सृजन में सहायता करते हैं।

प्रस्तुति : डॉ. हीरालाल बाछोतिया

बना के पिचकारी प्रेम की, कर से कर्म के कुमकुमे चलावें
रहित हो दुनियां के सारे रंग से, वो अपनी रसना का रंग उड़ावें
हो भाव की भांग के अमल में, हरी के हित चित से राग गावें
निराले निरगुन के राग गा-गा के, अपने प्यारे को वो रिझावें
उन्हें जरूरत है क्या जो डोलें, भरें हरा रंग झोलियों में
सदा उड़ाते हैं ज्ञान गुन का गुलाल संत अपनी टोलियों में

— छीतरसिंह 'मलखान'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

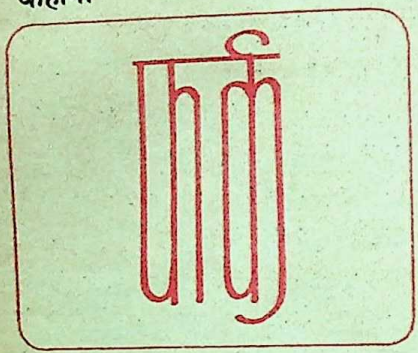

● डॉ. निकुंज

अनंत के कार्यालय के समक्ष खड़ा मैं सोच रहा था, क्या अंदर जाने के लिए मुझे भी परची देना होगी ? ठीक उसी समय विद्युत घंटी की कर्कश आवाज मेरे कानों में गूंज उठी। चपरासी ने जैसे ही अंदर प्रवेश किया, एक मोटी और भद्दी आवाज उस पर बरस पड़ी, "कहां मर गया था, क्या घंटी भी नहीं सुनायी देती ? जरा, बड़े बाबू को भेजना।"

बाहर खड़ा मैं अंदर जाने के लिए अपने को तैयार कर रहा था। सोच रहा था, इस अनंत की इतनी अप्रिय आवाज तो कभी सुनने को नहीं मिली। वह भी तो एक समय था, जब मेरे और इसके बीच कोई औपचारिकताएं नहीं थीं। कभी-कभी तो वह बाहों में समेटकर कहता, 'यार, कभी आजमाना इस अनंत को, जिंदगी बहुत लंबी है, कभी आवाज तो लगाना किसी मोड़ पर, दौड़कर न चला आया तो कहना।' किंतु मैं सोचता हूं, वह भी तो एक वक्त था, भावुकता के क्षणोंवाला, शायद वह और मैं, उन दिनों वास्तविकता की परिधि से बहुत दूर थे। होस्टल की वह छोटी-सी दुनिया, भविष्य के प्रति जीवन के रंगीन सपने, कॉलेज से कॉलेज से होस्टल, फिर किताबों में खो जा और शाम दूर कहीं खुले उन्मुक्त वातावरण घूमने के लिए निकल जाना, पांच वर्षों की अवधि जैसे पांच माह में तय कर ली थी। हुए तो ऐसे कि पता भी न चल सका कि कहां है ?

आज का यह क्षण, दस वर्षों के अंतराल को छूने के लिए मैंने सामने परिचियों में से एक परची खींचकर अपना और पता उस पर टांग दिया। परची देते मेरे अंदर का एक पक्ष पता नहीं क्यों, में बदल गया था। अपने अस्त-व्यस्त से उदासीन मैं आत्म-विश्वास जगाने का बुन रहा था। फटे हुए हैंडबैग को मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ रखा था कि कोई भी उसकी सही पहचान से मेरे उपहासास्पद बन जाने को संभव नहीं कर सके। चपरासी चिक उठाकर बाहर आया और अपने स्टूल पर बैठ गया। मैंने उसकी ओर बड़ी ही आशाभरी नजरों से देखते हुए पूछा... 'दे आये परची'? उखड़े हुए लहजे में वह बोला, "रख आया हूं टेबल पर। साहब खुद ही बुला लेंगे।" उस वक्त बैग की पकड़ अनायास ही ढीली हो गयी थी और हथेलियों में पसीना चिपचिपा उठा था। सामने की बैंच पर बैठते वक्त चप्पल की बिरंजी का ऐड़ी में चुभना मुझे अंदर तक प्रारब्ध के प्रति आक्रोश से भर गया था। इस बीच चपरासी ने आत्मीयता जताते हुए मुझसे पूछा, "क्या काम है आपको।"

"काम-वाम कुछ नहीं, ऐसे ही साहब से मिलना था।"

घंटी बजने के संकेत पर चपरासी ने जैसे ही चिक उठाकर अंदर की ओर झांका, अनंत की आवाज— "अंदर भेज दो।" क्षणांश को मुझे रोमांच हुआ। अंदर प्रवेश करते ही अनंत के चेहरे पर अर्द्धमुसस्कान की लकीरें खिंच उठीं। "ओह, मिस्टर वर्मा, वैलकम...वैलकम।" अंगुलियों में दबी हुई सिगरेटवाले हाथ से उसने मुझे कुरसी पर बैठने का संकेत किया। मुझे इसके पूर्व लग रहा था कि यह अनंत मुझे देखते ही दौड़कर गले से लगा लेगा, कहेगा, 'अबे तूने परची लिख कर मुझे शरमिंदा करने की चाल चली है। अपनों से भी क्या कोई इस तरह की औपचारिकताएं होती हैं।' किंतु मेरा ऐसा सोचना निरर्थक ही सिद्ध हुआ।

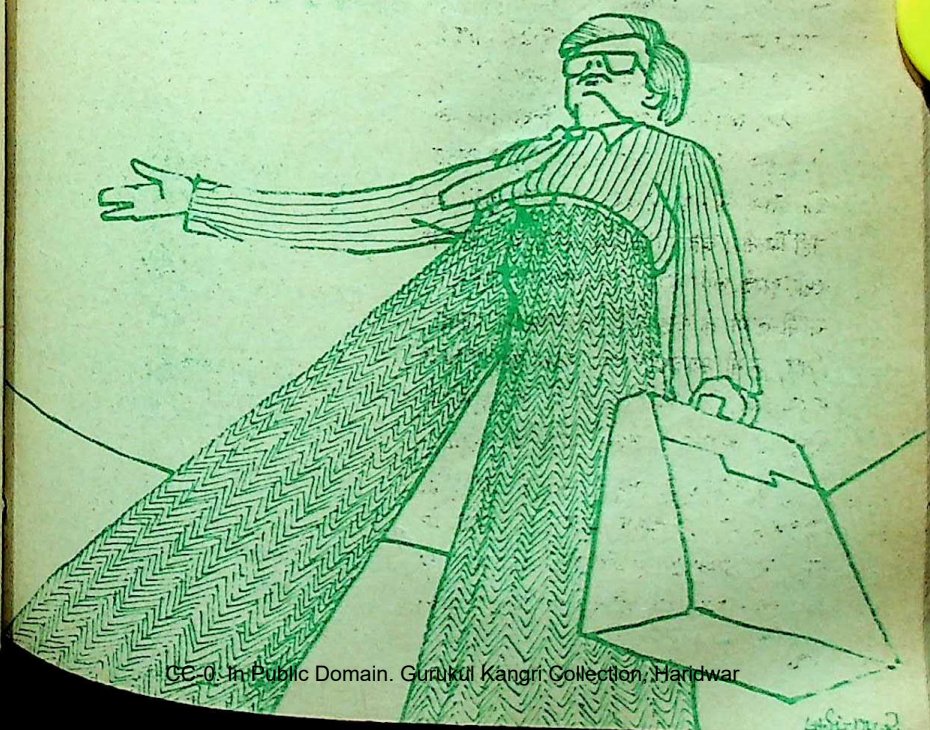

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब वह अनंत कहां रहा, वह तो बहुत पीछे छूट गया है। इस अनंत और उस अनंत में तो जमीन-आसमान का अंतर है। शायद अब वह मुझे मिलेगा भी नहीं।

अनंत की एक टांग टेबल पर और एक टेबल के नीचे वाले लंबे डंडे से सटी उसकी कुरसी को झुलाने में सहायक हो रही थी। सिगरेट का लंबा कश खींचते समय एक अद्‌भुत चिंतक की तरह उसके मस्तक की संपूर्ण सलवटें अभिजात्यवर्गीय होने का दावा कर रही थीं। मैं सोच रहा था, कितना बदल गया है अनंत ?

ऐश ट्रे में सिगरेट डालते हुए मेरी ओर देखते हुए वह बोले, "और क्या कर रहे हो आजकल, सुना है किसी स्कूल में टीचर हो।"

दरवाजे की ओर देखकर अनंत ने चपरासी से कहा, "अरे सुनना।"

"जी साब।"

अनंत ने पांच रुपये का एक नोट चपरासी की ओर बढ़ाते समय मुझसे पूछा, "कौन-सी बीड़ी पिएंगे आप ?"

हंसने का फरेबी अभिनय चेहरे पर जड़ते हुए मैंने उससे कहा, "बीड़ी कहां पीता हूं मैं,"

"अरे भई, मास्टरों की तो यह प्रिय वस्तु है, अच्छा तो सिगरेट...।"

"मैं सिगरेट भी नहीं पीता।"

पांच रुपये बटुए में रखते हुए कहने लगा, "वाकई, कोई परिवर्तन नहीं हुआ यार इन दस वर्षों में।"

अपनी टाई की गठान को ठीक करते हुए अनंत ने एक और सिगरेट जला ली थी। धुएं को उगलते हुए अनंत ने चपरासी को कैंटीन से चाय लेने के लिए भेज दिया था। मेरी ओर देखते हुए थोड़ा मुसकराया, "थोड़ा बैठिए, कुछ जरूरी फाइलें निपटा देता हूं।"

मौन रहते हुए स्वीकृति की मुद्रा में मैंने अपनी गरदन हिला दी थी।

अनंत के समक्ष बैठे हुए मैं अपने-आपको बहुत छोटा अनुभव करने लगा था। बायें हाथ की अनामिका में सोने की अंगूठी में जड़ा कीमती हीरा दमक रहा था, अनंत की तरह वह अपनी फाइलों में उलझा हस्ताक्षरों को मढ़ते हुए पत्रे उलट-पलट रहा था। बीच-बीच में टेलीफोन का रिसीवर उठा दो-चार बार पता नहीं कौन से व्यापारिक सिलसिलों के चक्कर भी चला देता था।

चाय की अंतिम चुस्की लेते हुए मैंने अनंत से कहा था—

"बंधु। अब हम चलेंगे।"

"कहां जाना है।"

"घर"।

"इतनी जल्दी, कैसे आना हुआ था ?"

"एक इंटरव्यू के सिलसिले में आया था।"

"कौन-सा इंटरव्यू ?"

"यहां के एक प्रायवेट कालेज में हिंदी व्याख्याता का पद रिक्त है।"

"क्या हुआ।"

"मैं खुद ही मना कर आया हूं।"

"क्यों ?"

"हजार रुपये देंगे, और दो हजार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्ताक्षर करने का कह रहे थे।" अनंत थोड़ा मुस्कराया फिर बोला, "फिर तो अपना वो विलेज ही अच्छा है, कितना मिलता है अभी ?"

"ये ही सात सौ हाथ में आ जाते हैं।"

"इतने में चला लेते हो काम ?"

"क्या करूं, चलाना ही पड़ता है।"

मुझे लग रहा था, उपेक्षारहित सहानुभूति की चंद लकीरें अनंत के चेहरे पर उभर आती थीं।

समाज की इस व्यवस्था के प्रति यह कैसा विधान है, जिसके अधीन एक-सी डिग्रियों की प्राप्ति के बाद एक तो आसमान को छू रहा है, और दूसरा जमीन में धंस रहा है। किंतु इस थोथे तर्क पर मैं स्वयं ही ग्लानि से तड़फ उठा था।

पंखा पूरी गति में भाग रहा था। खिड़कियों में टंगी खस की चिकों से फैलती खुशबू मेरे नथुनों को एक ताजगी पूर्ण अहसास से भर रही थी।

"अच्छा मैं चलूंगा," कहकर मैंने सभ्य दायरे में डूबे हुए नकली आदमी की तरह अपने दोनों हाथों को एकरूप दे दिया। अनंत मेरी ओर देखते हुए कहने लगे, "चले जाना भाई। हमारे साथ घर नहीं चलोगे ?"

"फिर कभी आऊंगा।"

"फिर कभी नहीं होता।"

वह उठ खड़ा हुआ "आओ पहले घर चलते हैं। गाड़ियां तो ढेर सारी जाती हैं।"

ड्रायवर ने गेट के सामने कार लगा दी थी। गाड़ी स्वयं अनंत चला रहा था। मैं उसके पास अन्यमनस्क-सा बैठा शहर की हलचल और दौड़ते-भागते लोगों का कारवां देख रहा था। शहरी जीवन की उपलब्धियोंवाला यह सुख और ग्रामीण जीवन की वह गतिहीनता, जिसमें एक समाचारपत्र के लिए भी तरस जाना पड़ता है, मेरी दुविधा बना हुआ था। उसके हृष्ट-पुष्ट शरीर से अपने आपको जोड़ता हुआ सामने लगे दर्पण की ओर देखता हूं। बत्तीस वर्ष की इस छोटी-सी वय में ही आंखों के आसपास काली झाइयां, चिंतन की व्यथा में झुलसी हुई आखें, उम्र के कुछ अधिक होने का स्पष्ट संकेत दे रही थी।

बंगले के समक्ष गेट पर हॉर्न की आवाज सुनकर चौकीदार दौड़ता हुआ आया और दरवाजा खोलने लगा।

गाड़ी की चाबी जेब में रखते हुए अनंत ने मेरी ओर देखकर कहा— "आइए।" मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। ड्राइंग रूम के सोफे पर बैठते ही अनंत चपरासी से कुछ कहे; उसके पहले ही उसने कहा, "सॉब, मालकिनजी मेहरोत्रा दीदी के साथ शॉपिंग के लिए गयी हैं।" मुझे लगा, अनंत के चेहरे पर अतिरिक्त झुंझलाहट तैर उठी थी।

"अच्छा, जरा जल्दी से दो कप काफी बना लो।"

"जी साब।"

सामने खड़ी नौकरानी एक वर्षीय बालक को खिलौने से बहला रही थी। अनंत ने बच्चे की ओर देखते हुए कहा, "अरे बंटी ! तुम नहीं गये अपनी मम्मी के साथ। अच्छा आइए हम आपका परिचय करवाते हैं, मास्टर साहब से।"

अनंत ने बंटी को नौकरानी से लेकर मेरी ओर बढ़ा दिया। मुझ अपरिचित से वह बिलख उठा। मैंने मानसिक तौर से जेब में हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला। दस रुपये का मुड़ा-तुड़ा नोट ठहाके लगा रहा था। यह तो केवल मोटर किराया ही है ? मेरी गोद से अनंत ने बंटी को लेते हुए उससे कहा, "क्यों बेटे। डर गये मास्टरजी से।"

'मास्टरजी' शब्द की यह पुनरावृत्ति मेरे जेहन में हीनता के अनेक वृत्त बना गयी थी। अनंत के वैभव को नकारते हुए मैंने काफी को कंठ के नीचे उतार लिया। अनंत के मिलने से जो खुशी होनी चाहिए, वह नैराश्य में बदल गयी थी। अबकी बार मैं पूरे विवेक और आत्म-विश्वास से उठ खड़ा हुआ, "बंधु, हम चलेंगे अब।"

"खाना नहीं खाओगे हमारे साथ।"

"नहीं।"

"हमारी मैडम से भी नहीं मिलोगे।"

"फिर कभी आऊंगा।"

"कब तक।"

"कोई तय नहीं है।"

पता नहीं क्यों अंदर ही अंदर तल्ख हो उठा था। अनंत ने ड्रायवर को आवाज लगायी। "मास्टर साब को स्टेशन तक छोड़ आओ।"

"जी साँब।"

"रहने दो अनंत, मैं खुद चला जाऊंगा।"

गाड़ी की चाबी अनंत ने ड्रायवर को थमा दी थी। विदा के क्षणों में मैंने उसके चेहरे को पढ़ा, कुछ भी तो नहीं था— "संज्ञाहीन... सपाट... भावहीन। पता नहीं, समय की भीड़ में वह कहां खो गया।

"अच्छा फिर मिलेंगे।" मैंने दोनों हथेलियां जोड़ दीं।

नौकरानी की गोद मे बंटी मचलकर रो रहा था और वह उसे दुलार रही थी।

अनंत मेरी ओर संकेत कर बंटी से कह रहे थे, "अरे छाले लोता है, वो देख मास्टरजी जा रहे हैं।"

आत्म-ग्लानि में डूबा हुआ दुःख उस अबोध के प्रति भी श्रद्धा उत्पन्न नहीं कर सका। क्या सोचेगा अनंत।

गेट के बाहर ड्रायवर ने गाड़ी लगा दी थी। अपनी सीट पर बैठे ही बैठे उसने दरवाजा खोल कर बैठने का संकेत किया था।

मैंने ड्रायवर की ओर देखते हुए धन्यवाद दिया।

"हमें पैदल चलने की आदत है, साहब को बता देना।"

मैं स्टेशन पर गाड़ी पकड़ने के लिए तेजी से चल रहा हूं। चाल और तेज हो गयी है। जैसे धड़कते हुए हृदय में विगत का इतिहास मेरा उपहास उड़ा रहा था। फिर ख्याल आया, चलते समय पप्पू ने कहा था, 'पापा हमारे लिए नय पेंट लाना।' और धनेश ने भी इसी तरह की कोई मांग की थी।

फिर वही अनंत, किन्तु अब वह अनंत नहीं रहा, वह तो बहुत पीछे छूट गया है। इस अनंत और उस अनंत में तो जमीन-आसमान का अंतर है। शायद अब वह मुझे नहीं मिलेगा। मन हुआ, उस अनंत को इस धरती के छोर-छोर पर ढूंढूं, और उससे गले लगकर खूब रोऊं। मुझे समय की अस्तित्ववादिता ने चारों ओर से घेर लिया है, और मैं बेसहारा हाथ पैर पटकर उसकी अस्तित्ववादिता से व्यर्थ ही जाले तोड़ रहा हूं।

—सहायक प्राध्यापक
शा. कन्या महाविद्यालय, बड़वानी, म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकल्प की तलाश

संकल्प टूट रहे हैं
विकल्पों की बैसाखी चाहिए
ताकि अपंग भी चलते हुए नजर आएं।
किंतु संकल्प नहीं, लोग टूट रहे हैं
कुछ बहुत आगे, कुछ पीछे छूट रहे हैं।
जब शिखर पर चढ़ना मुश्किल हो
तब थका हारा यात्री
तलहटी में टहलना ही विकल्प मान लेता है।
चाहे ऊपर का आदमी हो या नीचे का
दोनों को वैकल्पिक सीढ़ियों की तलाश है
सीढ़ियां दूसरों की जिस्मों की
सीढ़ियां दूसरों की जिंदगी की।
शक्ति का संकटमोचन करने के लिए
शायद रेत से भी तेल निकाला जा सके
लेकिन, पूरे सूर्य का विकल्प
क्या एक जुगनू हो सकता है ?
अगर लोग सूर्य से
एक-एक मुट्ठी रोशनी छीन सकें
तो कैसा रहे ?
क्या उस मनुष्य का भी कुछ विकल्प है
जो बाहर से जिंदा है
किंतु अंदर से मरा है,
जो बिना रोशनी की आग से भरा है
जिसके दिमाग पर कुरसी सवार है
जो दूसरों के लिए मसीहा बनता है
लेकिन खुद बीमार है।
आखिर उस मनुष्य का क्या विकल्प है
जो कब्रिस्तान को घर समझ कर रहता है
जो जिंदगी को जीता नहीं, सिर्फ सहता है।
जो अपनी कहता नहीं,
पराये कथ्य बोलता है
जो बाढ़ के तिनके सा
अनचाहे समझौते की धार में बहता है।

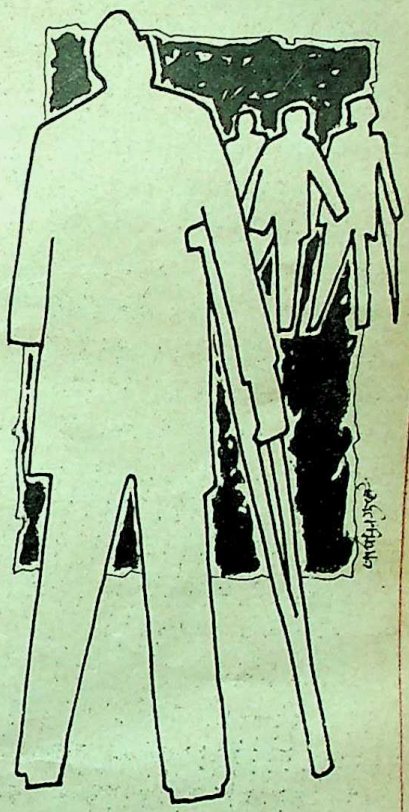

जरा सोचिए—
क्या ऐसा भी विकल्प हो सकता है
जिसके इरादे बुलंद हैं, किंतु जिस्म कमजोर है
क्या बुलंद इरादों को
मजबूत जिस्मों में डाला जा सकता है
या कमजोर जिस्मों से
मजबूत इरादों को निकाला जा सकता है ?
लेकिन कहां हैं ऐसी सुविधा
जिधर देखो, उधर है विकल्प की दुविधा।

● गोपाल कृष्ण कौल
—३७३ शिब्बनपुरा कल्पनानगर, गाजियाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानदी मुझे उस लावण्यमयी और बलशाली नवयुवती की भांति प्रतीत होती है, जिसकी शक्ति और यौवन को किसी तरह भी संभाला न गया हो।

नदियां भी सिसकती हैं

● जसवन्तसिंह विरदी

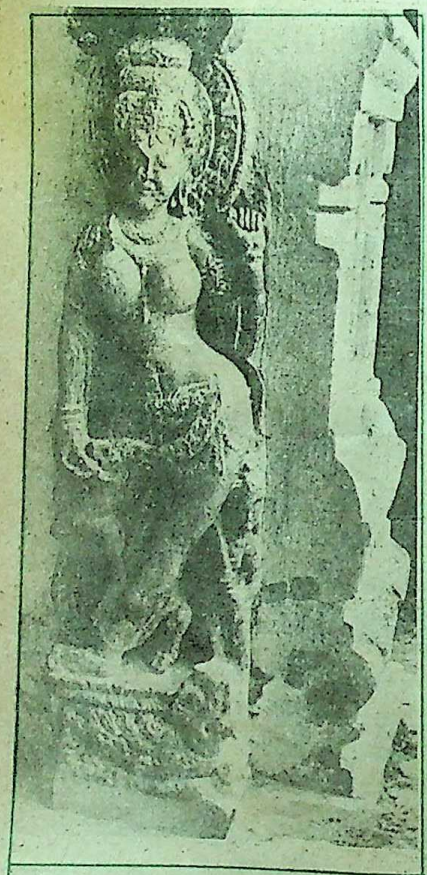

महानदी की देवी

महानदी के बारे में सोचते हुए एक मुहल्ल और अक्खड़ नवयुवती का प्रतीक आंखों के सामने साकार हो जाता है। नदी और नवयुवती ! दोनों जीवन की शक्तियां हैं।

मध्यप्रदेश से निकलकर उड़ीसा में बहनेवाली महानदी इतनी शक्तिशाली है कि उसके बारे में लोगों के मन में 'महानदी' के सिवा कोई और नाम उभरता ही नहीं। कई नदियां अपने प्रभावशाली नामों के कारण ही प्रसिद्ध हो जाती हैं। महानदी की जलधारा ने भी कुछ इसी तरह का ही संकल्प साकार किया है। इस तरह का संकल्प बुरा तो नहीं, परंतु जब लोग इस संकल्प को मन में बसाकर नदियों से भयभीत होने लगें, तो इससे भयानक बात और कोई नहीं हो सकती।

गंगा और यमुना की जलधारा को लोग शायद इसीलिए पूजते हैं कि इनकी जलधारा मर्यादाबद्ध होकर चलती है, परंतु महानदी अपने वेगमयी मौसम में किसी तरह भी मर्यादा को नहीं मानती। शायद, इसी कारण ही लोग उससे भयभीत होते हैं, उसकी पूजा नहीं करते।

प्रतिवर्ष २४,००० एकड़ फुट गार ले जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वजह से महानदी को सबसे अधिक गार ले जानेवाली नदी कहा जाने लगा है, जिससे इस पर बने हुए हीराकुड बांध की आयु भी कम होने लगी है। वह सौ वर्षों के लिए बना था, मगर अब शायद, साठ वर्ष ही पूरे कर पाये। टैनेसी तथा कोलोराडो नामक नदियां इससे छोटी हैं, मगर उन पर क्रमशः २७ और १३४ बांध बने हुए हैं। महानदी का पानी बांधों की कमी के कारण बेकार नष्ट हो रहा है। बाढ़ से जो विनाश होता है, वह अलग।

मैं अकसर पूछता हूं—

'हे महानदी ! तू लोगों की सेवा के लिए है या उनको बरबाद करने के लिए ?'

मेरे प्रश्न के उत्तर में महानदी केवल मुसकराकर ही रह जाती है।

एक अनियंत्रित युवती के प्यार की तरह !

इश्क के वेग की तरह !

जिन लोगों की जवानी उनके वश में नहीं होती, अकसर लोग उन पर विश्वास नहीं करते।

जब मैं महानदी के बारे में सोचता हूं, तो मेरे मन में उसके बारे में भी कुछ इसी तरह के विचार आते हैं।

फिर मुझे खयाल आता है कि युवक और युवतियों और नदियों की जवानी को दिशा-मार्ग दिखाना लोगों का काम नहीं ? सरकार का कर्त्तव्य नहीं ?

यदि लोग और सरकार ही अपने कर्तव्य को स्मरण न करें, तो जवानी क्या करे !

जवानी और नदी के बहाव को तो किसी न किसी तरफ चलना ही है।

स्रोत से लेकर मुहाने तक महानदी का सफर बहुत ही शानदार है, प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण। परंतु इसके आसपास का जन-जीवन अभी भी कंगाली की अवस्था में है।

पर पूरी तरह कंगाल नहीं।

क्योंकि जब स्वार्थी लोगों ने अपने लालच और खुदगरजी के लिए उन्हें वस्त्रहीन कर दिया, तो उन्होंने महानदी के जल को ओढ़न के रूप में धारण कर लिया। वे और करते भी क्या ?

यदि उन्हें पेटभर खाने को नहीं मिला, तो उन्होंने नदी के बेशकीमती जल को पी लिया।

यदि फिर भी उन्हें जीने का सहारा न मिला तो उन्होंने महानदी की जलधारा में स्वयं को छिपा लिया।

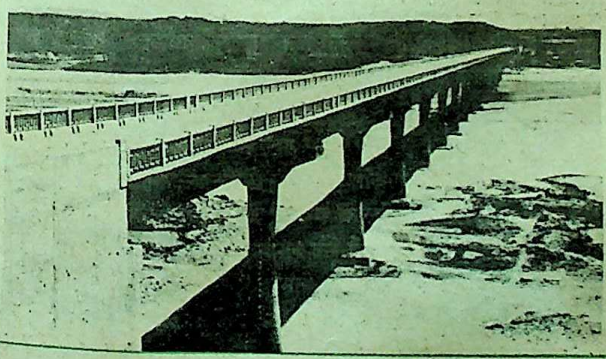

महानदी पर बना एक पुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानदी को लोग 'उड़ीसा का दुखांत' कहकर पुकारते हैं। किसी भी नदी को जब लोग इस तरह के विशेषण से याद करते हैं तो नदियों का दिल बहुत दर्द करता है।

नदियों के मन में लोगों के लिए प्रेम है। और, नदियों की मुहब्बत को रोक ही कौन सकता है ?

छत्तीसगढ़ में रायपुर से चालीस कि.मी. के करीब दूर दक्षिण में है महानदी का जन्मस्थान। वह विदर्भ के दक्षिण पूर्वी कोण में स्थित पहाड़ियों में से चलती है। उसका मूल स्रोत फरसिया गांव (रामपुर) में ही है। थाल-जैसी चौड़ाईवाले छत्तीसगढ़ को महानदी ने विश्वभर में प्रसिद्ध कर दिया है।

बस्तर के पहाड़ों में तेजी से गुजरती महानदी पहले तो यह उत्तर पूर्वी दिशा में बहती है और छत्तीसगढ़ के मध्य में पहुंचकर उड़ीसा के संबलपुर के नीचे यह पूर्वी घाटों के गिर्द चक्कर लगाती प्रतीत होती है।

सतकोसिया दरार में से यह इतनी तेज गति से गुजरती है कि देखनेवाले को हैरानी होती है। रास्ते में इसे विभिन्न रंगों की चट्टानें और पथरीले टीले रोकने का प्रयास करते हैं परंतु व्यर्थ। बहती नदियों के पानी को कौन रोक सकता है ?

महानदी की धारा भी हमें यही बात ही कहती प्रतीत होती है—'मुझे रोकनेवाला कौन है ?' —'मुझे रोकनेवाला कौन है।'

मैं कई बार सोचता हूं कि यदि यह जलधारा खामोश हो जाए, तो ?

यदि इन नदियों की रवानगी रुक जाए ?

परंतु मुझे मानवीय भावों के वेग की तरह ही नदियों की निरंतर गति में विश्वास है।

महानदी की रफ़ार कितनी भी तेज हो, इसके

वेगवती महानदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तट पर लोग मछलियां पकड़ने के लिए मेला बनाकर जुड़े रहते हैं।

मगरमच्छ के शिकारी भी महानदी की जलधारा के पास ही पहुंचते हैं। वैसे तो मगरमच्छ तो कहीं भी हों, शिकारी पहुंच ही जाते हैं। और जो मगरमच्छ शिकारी के हाथों बच जाते हैं, वे महानदी के जल की ओट में कटक तक पहुंचकर 'कुर्सियों' पर तो नहीं जा बैठते ?

काश ! महानदी ऐसे मगरमच्छों को समुद्र की पानी में ले जाती।

महानदी भारत की वह तेजधार लहर है, जो वर्षाकाल में सभी नदियों से तेज चलती है, और सरदी की ठंडक में केवल एक रेखामात्र रह जाती है, जैसे ढलती यौवनावस्था में कोई युवती थक-हार जाती है।

जिस कागज पर हम रोज लिखते हैं, कभी स्याह और कभी रंगीन रंगों में, उसे जन्म देनेवाले बांस भी महानदी के किनारों पर ही जन्म लेते हैं।

वर्षा ऋतु में तो महानदी की काया एक कि.मी. की चौड़ाई तक फैल जाती है, जैसे वह नदी नहीं, सागर हो।

संबलपुर का हीराकुड बांध भी इसके जल को मर्यादाबद्ध करने में सहायक सिद्ध नहीं होता।

महानदी का दूसरा बांध (तिकरपारा) शायद इसके बहाव को कुछ कम कर सके। कहते हैं, पानी को रोकने की असमर्थता के कारण जितना पानी महानदी में से बेकार चला जाता है, और कहीं नहीं।

क्या हम कभी इस बात को नहीं समझ

आदिवासी जन

सकेंगे कि नदियों के जल जनकल्याण के लिए हैं, सागर में बेकार खो जाने के लिए नहीं।

मैं कई बार उन नदियों की सिसकियां भी सुनता हूं, जिनका पानी अपने अस्तित्व को सार्थक नहीं कर पाता। महानदी भी उनमें से एक है।

सच कहूं !

महानदी मुझे उस लावण्यमयी और बलशाली नवयुवती की भांति प्रतीत होती है, जिसकी शक्ति और यौवन को किसी तरह भी संभाला न गया हो।

जो औरतें अपनी आयु के वसंत में लोगों को तबाह करती हैं, पतझड़ के समय वे खुद भी सूख जाती हैं, कुम्हला जाती हैं और बरबाद भी होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह की औरतों जैसे स्वभाववाली नदियां भी इसी ढंग से जिंदगी बसर करती हैं।

मुझे महसूस होता है कि महानदी भी हमारी इसी तरह की नदियों में से एक है।

महानदी की लहर-लहर में तूफान है और कण-कण में घमासान !

छत्तीसगढ़ और समुद्री क्षेत्र को छोड़कर महानदी का बाकी सारा सफर जंगल में से गुजरकर पूरा होता है। मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और उड़ीसा के लोगों की संस्कृतियां इस के द्वारा भी जीवन पाती हैं।

जिन नदियों को अधिक समय तक जंगलों और पहाड़ों में से गुजरना पड़ता है, उन्हें मानवीय मन की सहानुभूति प्राप्त नहीं होती। शायद इसीलिए उनको भी मनुष्य के कष्टों का अहसास नहीं होता। लोग भी उनकी वेदना नहीं सुनते।

यदि नदियों के संग लोग प्रेम करें, तो नदियां कैसे प्रेमविहीन हो सकती हैं ?

महानदी तो फिर भी महानदी है !

उसकी मुहब्बत को लोग कब समझ सकेंगे !

महानदी के क्षेत्र में आबाद आदिवासी उसी को ही समुद्र समझते हैं और अपने पितरों की अस्थियां उसके पवित्र जल में प्रवाहित करते हैं।

छत्तीसगढ़ के मेरे कुछ मित्रों ने मुझे वह स्थान भी दिखाया, जहां महानदी की एक देवी के रूप में मूर्ति स्थापित है और लोग उनके सामने सिर झुकाते हैं।

महानदी की सबसे बड़ी सहायक नदी तेल ही है। इसकी जलधारा की सहायता से महानदी का पाट संपूर्ण नदी के स्वभाव-जैसा विशाल बन जाता है।

जब यह तालचेर के कोयले की खानों के पास से गुजरती है, तो लोग कहते हैं, इसकी जलधारा को जैसे आग लग गयी हो ! क्या कहें ?

जंगल में इसके गिर्द बांस, सागवान और महुआ भी तो हैं। क्या इसमें महुए की महक और मस्ती नहीं भरती ?

क्या महानदी अपनी जलधारा द्वारा लोगों के घरों तक इसी महक और मस्ती को लेकर जाती है ?

कटक के लोग कहते हैं, उनका शहर महानदी के किनारे पर एक टापू की तरह, किले के रूप में खड़ा है।

परंतु महानदी में आयी बाढ़ से जब कटक पानी में ही डूब गया, तो लोगों को ऊपरी मंजिलों की खिड़कियों से किश्तियों द्वारा बाहर लाया गया था।

कई लोग तो वह दृश्य देखने के लिए ही कटक की तरफ जा रहे थे। उनका विचार था कि शायद कटक ही हिंदुस्तान की धरती पर वीनस का रूप बनकर साकार हो गया हो परंतु इस तरह के लोगों को जब निराशा होती है, तो डूबने के लिए चुल्लूभर पानी भी नहीं मिलता।

महानदी की धारा के ऊपर के हिस्से में रोककर यदि कुछ और छोटे बांध बन जाएं, तो उसका बाढ़वाला स्वभाव तुरंत बदल जाए।

महानदी के लोगों की वास्तविक विजय यहां होगी।

कहते हैं, अशोक की राजनीतिक जीत और मानसिक हार का समय, उड़ीसा में ही कलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की धरती पर देखा गया था।

उड़ीसा के लोग यदि महानदी को जीतकर वश में कर लें, तो वे जिंदगी के क्षेत्र में कभी न हारें।

उड़ीसा का समुद्रतट चार सौ कि.मी. लंबा है। कई नदियों के मुहाने इसके किनारों पर हैं। भारत की समस्त नदियों में चलनेवाले जल का दसवां हिस्सा इन नदियों में से ही सागर की तरफ चलता है।

इसी क्षेत्र में भारत की कुल खान-संपदा का आधा हिस्सा छिपा पड़ा है।

क्या हमारे लोग धरती और नदियों की इस दौलत की प्राप्ति कर सकेंगे ?

गुजरी शताब्दियों में विदेशियों ने समुद्रतट की ओर से इस धरती पर आकर कितनी ही लूटमार की है, फिर भी दैवी संपदाएं अभी तक अतिशय हैं। परंतु यदि हम उनका लोगों के लिए प्रयोग करें।

वहां लोगों के मुंह चौड़े होते हैं परंतु अभी तक हम महानदी के मुहाने पर 'चिलका मुंह' को चौड़ा नहीं कर सके।

कटक के कुछ लोग राजनीतिक प्रकृति की प्रत्येक संपदा को हड़प करने के लिए मुंह चौड़ा किये जा रहे हैं। यदि वे महानदी की ओर भी ध्यान दे सकें ! उसकी शक्ति को संभाल सकें। पर जब जिम्मेदार लोग कुमार्गी हो जाते हैं तो नदियां भी अपने रास्तों को छोड़कर आवारा हो जाती हैं।

ooo

महानदी को लोग 'उड़ीसा का दुखांत' कहकर पुकारते हैं। किसी भी नदी को जब लोग इस तरह के विशेषण से याद करते हैं, तो नदियों का दिल बहुत दर्द करता है।

महानदी भी मुझे बार-बार कहती है—'क्या मैं उड़ीसा के लिए दुखांत ही हूं ?'

कोई भी नदी लोगों के लिए दुखांत नहीं।

उड़ीसा की काली और पीली धरती में इतना अन्न पैदा हो सकता है कि महानदी की तरह ही लोगों के खाने-पीने के तरल पदार्थ धरती की वक्ष पर फैल जाएं।

परंतु महानदी के दनदनाते हुए जल पर काबू कौन करें ?

हे महानदी ! तेरे रूप अनेक !

हम तेरे किस-किस रूप की उपमा करें !

—९६ गुरजीत नगर, गढ़ा रोड, जालंधर १४४०२२

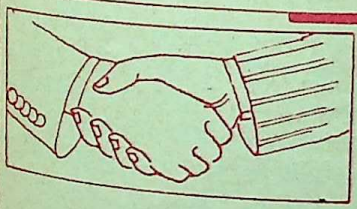

हाथ मिलाने का विश्व-कीर्तिमान

हाथ मिलाना संसार में अभिवादन का एक जाना-पहचाना तरीका बन गया है। लोग आपस में मिलते हैं तो हाथ मिलाकर अपनेपन का परिचय देते हैं। हाथ मिलाने का विश्व-कीर्तिमान अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के नाम दर्ज है। यह कीर्तिमान रूजवेल्ट ने १ जनवरी १९०७ को वाशिंगटन में ८,५१३ व्यक्तियों से हाथ मिलाकर स्थापित किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

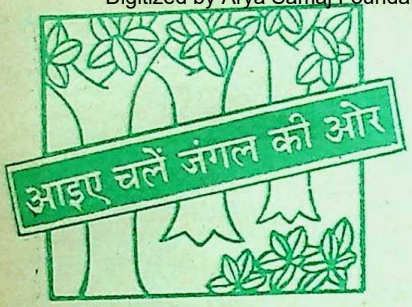

अम्ल-वर्षा से पीड़ित बत्तख

काले बत्तखों की संख्या में पिछले तीन दशकों में हुई विस्मयजनक कमी का कारण अम्ल-वर्षा हो सकती है। अमरीका के एक गैर-सरकारी संरक्षण गुट की एक रिपोर्ट का यह कहना है। इस गुट के अनुसंधान को वन्य जीव-विशेषज्ञों ने काफी सराहा है और कहा है कि उत्तरी और पूर्वी अमरीका की झीलों और नमीय इलाकों के मत्स्य और जल-पक्षियों पर अम्ल-वर्षा के कुप्रभावों को दर्शाने का यह सर्वप्रथम प्रयास है।

अनुसंधान के बाद प्रकाशित रिपोर्ट के प्राक्कथन में इलेनॉस प्राकृतिक विज्ञान सर्वेक्षण के वैज्ञानिक और प्रख्यात पक्षीविद फ्रैंक बेलरोस कहते हैं, "यह अनुसंधान इस चिंताजनक तथ्य को सामने रखता है कि अम्ल-वर्षा जल पक्षियों के प्रजनन केंद्रों को गंभीर खतरा है।" यदि अम्ल-वर्षा को नियंत्रित करने के उपाय तुरंत ही लागू नहीं किये गये तो बड़े पैमाने पर मत्स्य और वन्य जीवन का विनाश होगा।

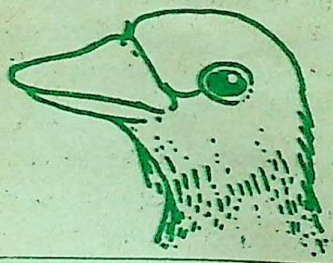

जलकुंभी समाप्त करती है जलप्रदूषण

जलकुंभी जल प्रदूषण नियंत्रित करने में काफी सहयोगी है। यह पानी में मिली गंदगी को सोख लेती है और पानी को स्वच्छ करती है। यह यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) के द्वारा किये गये प्रयोगों से स्पष्ट हुआ है।

परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि जलकुंभी की जड़ों में अधिक मात्रा में पानी सोखनेवाली वाहिकाएं विद्यमान हैं। ये पानी में मिली घरेलू और औद्योगिक गंदगी को सोखने में सक्षम है। नासा के द्वारा किये गये परीक्षण में एक जलाशय में गंदगी छोड़ी गयी। इसमें रसायनों और रासायनिक पदार्थों के अवशेष और अन्य प्रकार के प्रदूषक तत्व विद्यमान थे। इसी जलाशय में जलकुंभी भी थी। जलकुंभी ने पानी में से उक्त गंदगी पच्चीस घंटे में सोख ली। अब जलकुंभी से बायोगैस तैयार करने के लिए भी प्रयास किये जा रहे हैं।

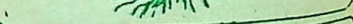

तोते की नयी प्रजाति

इंडीज पर्वत श्रृंखलाओं में कुछ दिन पूर्व तोते की नयी प्रजाति का पता लगा है। इस तोते की खोज करनेवाले फिलेडेल्फिया प्राकृतिक विज्ञान संस्था के पक्षी विज्ञानी रॉबर्ट ने बताया कि यह पक्षी अत्यधिक संकट में है। इसकी संख्या भी बहुत कम है।

यह तोता अत्यधिक खूबसूरत है। इसका रंग सामान्य तोते के समान ही है किंतु इसके सिर पर लाल रंग का मुकुट होता है। इसकी पूंछ लंबी होती है। पंखों और पूंछ का रंग नीला होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट में है खूबसूरत शेरपूंछ बंदर

बंदर की तमाम प्रजातियों में शेरपूंछ बंदर सर्वाधिक आकर्षक है। इसकी शरीर रचना, बाल और पूंछ इसे अन्य बंदरों से अलग स्वरूप प्रदान करते हैं। हर वक्त प्रसन्न रहनेवाला यह बंदर अब समाप्ति के कगार पर है। इसको अब संरक्षण अवस्था में ही देखा जा सकता है।

शेर की पूंछ के समान दिखायी देनेवाली इसकी पूंछ के कारण ही इसका नाम शेरपूंछ बंदर पड़ा है।

शेरपूंछ बंदर केवल भारत में पाया जाता है। भारत में ही इसका क्षेत्र अति सीमित है। घने सदाबहार वनों में अपना निवास स्थान चुननेवाला यह बंदर तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के पश्चिम घाट के कुछ जंगल में पाया जाता है। इस क्षेत्र की शांति के कारण यह इसका मुख्य निवास स्थान है। बंदरों की तमाम प्रजातियों में यह विश्व की दूसरे नंबर की सर्वाधिक संकटग्रस्त प्रजाति है। आज इनकी संख्या केवल ८०० के करीब रह गयी है।

ये बंदर सामान्यतः झुंड में रहते हैं। प्रत्येक झुंड में इनकी संख्या २० से ३० तक होती है।

— नीरज जोशी

संस्कृत कवियों के तिरस्कार का पात्र सेमल

सेमल : जिसे कुछ संस्कृत कवियों के तिरस्कार का पात्र बनना पड़ा। उनके लिए सिंबल अर्थात् सेमल गुणहीन, रूपहीन था।

सेमल ऊंचा, सीधा-खड़ा, पतनशील पत्तोंवाला वृक्ष है। सीधे तने पर शाखाएं एक विशेष क्रम से निकलती हैं। इसकी छाल प्रायः चिकनी और हलके धूसर वर्ण की होती है। अंदर की छाल का रंग गाढ़ा लाल होता है। सेमल के वृक्ष पर तरह-तरह के पक्षी बसेरा करते हैं। उस पर नीड़ बनाते हैं। दियासलाई उद्योग में सेमल की लकड़ी की काफी मांग है। सलाई तथा डिबिया बनाने में इसकी लकडी सर्वोत्तम मानी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

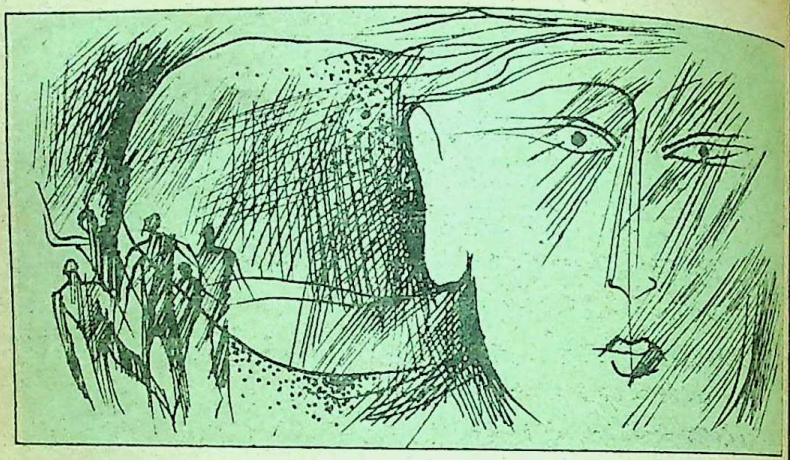

अध्यात्म की व्याख्या भौतिक समीकरणों से

● डॉ. जॉन ल्यूडस कूपर

सृष्टि के बारे में तरह-तरह से विचार किया गया है। हम जितना उसे जानने के क्रम में आगे बढ़ रहे हैं, शायद उससे भी कहीं ज्यादा अपने अज्ञान से परिचित हो रहे हैं। परंतु ज्ञान की सैद्धांतिक यात्रा में काल या समय उस अदृश्य सूत्र की तलाश के लिए ही-जैसे बना। वह सृष्टि संबंधी जिज्ञासाओं को क्रमशः शांत करता रहता है। इस संदर्भ में मैं आइंस्टीन के 'यूनीफाइड फील्ड' सिद्धांत की पुनर्व्याख्या के कार्य में कैसे आया, यह भी तो अपने-आपमें कम रहस्यपूर्ण नहीं है। दूसरा कारण था 'मार्फा' क्षेत्र की वह रहस्यमय गुत्थी, जो आज भी रहस्य ही बनी हुई है। 'मार्फा' में पिछली अनेक शताब्दियों ने कुछ विचित्र रोशनियां समय-समय पर देखी जाती रही हैं। इस रहस्य की खोज के काम में अनेक लोगों ने विभिन्न तरह से अपने निष्कर्ष दिये हैं, परंतु गुत्थी जहां की तहां है। मुझे इसी रहस्यपूर्ण स्थिति ने इस खोज की ओर प्रेरित किया है। मेरे अचेतनीय निदेश-जैसे मुझे बार-बार कहता था कि देखो, वह कौन-सा विलुप्त सैद्धांतिक लिंक है, जिसकी आइंस्टीन जानबूझकर उपेक्षा करते रहे। उनकी दृष्टि संभवतः इस उपेक्षा की कोर्स संकीर्णता से प्रभावित रही है, जैसे वे इस भाव से मुक्त होना चाहते रहे हों कि वे आध्यात्मिक मनुष्य नहीं हैं। इसी कारण आइंस्टीन इस आग्रह को दबाते रहे हैं कि उनके खोजी मानस के जिज्ञासु मनोलोक और विज्ञान के भौतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व के बीच कोई अंतर्संबंध रहा है।

आइंस्टीन ने यह तो स्वीकार किया था कि भौतिक सत्ता में पदार्थ के गुण और गति पर किसी अभौतिक तत्व का प्रभाव अवश्य है तथापि उन्होंने अपना कोई गणितीय समीकरण इस के संबंध में उपस्थित नहीं किया, शायद इस कारण कि उन्हें उनके 'विज्ञानवाद' ने रोक दिया हो। इस के बजाय उन्होंने जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया, वह आज अंतर्विरोधों से परिपूर्ण साबित हो रहा है, उन्हीं विज्ञानवादियों के हाथ, जो यह मानते हैं कि आइंस्टीन ने अपना 'क्वांटम' सिद्धांत, 'ग्रैंड यूनिफाइड फील्ड' सिद्धांत कपोल कल्पना सिद्ध करने के लिए रचा था।

इस अभौतिक तत्व की प्रकृति क्या है, जिसे आइंस्टीन के विज्ञानवादी आग्रहों ने उपेक्षित किया था, मैं जब इस पर सोचता हूं तो पाता हूं कि मैं 'विज्ञानवाद' के आग्रह और आतंक से मुक्त हूं। 'प्रज्ञा' से अनुप्रेरित हो मैं कह सकता हूं कि यह अभौतिक तत्व वह 'चुंबकीय क्षरण' है, जिसने तमाम सृष्टि के पदार्थों को घेरा हुआ है। यह विद्युचुंबकत्व और गुरुत्वाकर्षण की एकता की भौतिक अभिव्यक्ति है। मैंने इसके लिए एक सामान्य नियम सामने रखा है, जो तीन आयामों के क्षेत्र के लिए उपयोगी है—

'चुंबकीय क्षरण' ही वास्तव में आध्यात्मिक वस्तुएं हैं, जो सृष्टि के भौतिक नियमों के रहते भी अस्तित्ववान हैं। तमाम अस्तित्ववान वस्तुओं के बीच वास्तव और उद्देश्य की परिपूर्ति के रूप में भी वह विद्यमान है। आइंस्टीन ने अपनी 'ग्रैंड यूनिफाइड फील्ड थ्योरी' में इसकी

[जॉन-ल्यूडस कूपर : न्यूयार्क स्थित सिटी यूनीवर्सिटी के ब्रैक स्टडीज संस्थान के अध्यक्ष डॉ. कूपर ने आइंस्टीन के अनेक समीकरणों की नयी व्याख्याएं की हैं। उन्हीं व्याख्याओं में डॉ. जान कूपर की वह क्रांतिकारी व्याख्या भी है, जिसे वे एक स्वतंत्र निबंध के रूप में वैज्ञानिकों, विचारकों और बुद्धिजीवियों के सम्मुख रखेंगे। उनकी कुछ व्याख्याओं के आधार पर यह स्पष्ट होने लगा है कि भौतिकी के केंद्रीय रहस्यों का गणित भिन्न प्रकार का है, और उसे अध्यात्म के सूत्र में ही अनावृत्त कर सकते हैं।

डॉ. जॉन ल्यूडस कूपर ने अनेक पुस्तकों का सृजन किया है। समाज-शास्त्री के रूप में प्रख्यात विद्वान डॉ. कूपर की भारत में बहुत दिलचस्पी है। 'अनरियलिटी ऑव दिस रियल्टी', 'घेटो' तथा 'द सेवंथ डिकेड' उनकी प्रमुख कृतियां हैं।]

परिगणना चाहे नहीं की है, तथापि एक केंद्र से दूसरे केंद्र में जब ऊर्जा हस्तांतरित होती है, तब सहसा वह क्षीण होती है। वास्तव में यह क्षरण एक ऐसी आंतरिक प्रक्रिया है, जिसे विज्ञानवादी अनुशासन में कोई नाम नहीं दिया जा रहा है परंतु यह 'ग्रैंड यूनीफाइड फील्ड थ्योरी' की वह प्रतीति है, जो आत्मिक उपस्थिति के रूप में ही

भौतिक जगत का महत्त्व और अर्थ आध्यात्मिक सत्य से उजागर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे आपके नित्य जीवन का अभिन्न अं

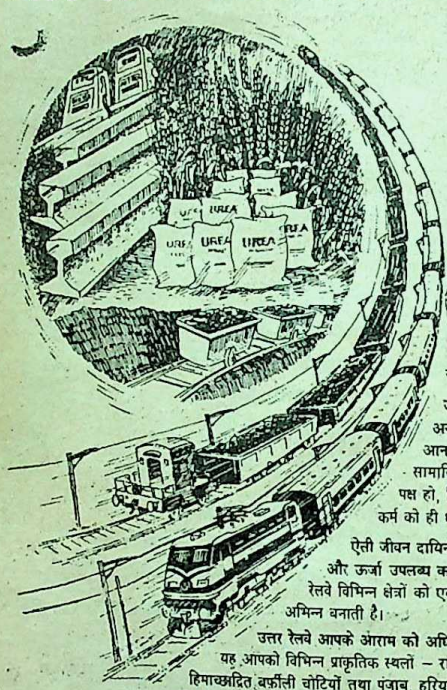

ज़रा विचार कीजिए !

उत्तर रेलवे आपके जीवन को अनगिनत तरीकों से किस प्रकार आनन्ददायी बनाती है।

सामाजिक जीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो, जिसका रेलवे से सम्पर्क न हो। हम रेलकर्मी कर्म को ही धर्म मानते हैं।

ऐसी जीवन दायिनी रेखा है जो करोड़ों को भोजन, ईंधन और ऊर्जा उपलब्ध कराती है।

रेलवे विभिन्न क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोने वाली कड़ी है – भिन्न को अभिन्न बनाती है।

उत्तर रेलवे आपके आराम को अधिक आनन्ददायी बनाने की चेष्टा में संलग्न है। यह आपको विभिन्न प्राकृतिक स्थलों – राजस्थान के रेगिस्तानों से हिमालय की हिमाच्छादित बर्फ़ीली चोटियों तथा पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के हरे-भरे मैदानों में ले जाती है।

उत्तरी भारत में रेलवे लगभग सवा सौ वर्षों से राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक प्रयास – परिवहन, हरित क्रांति, ऊर्जा उत्पादन, तीव्र औद्योगीकरण आदि में सक्रिय योगदान दे रही है।

उत्तर रेलवे प्रतिदिन 900 मेल/एक्सप्रेस एवं सवारी गाड़ियों में 11 लाख यात्रियों का वहन करती है। साथ ही प्रतिदिन 2 लाख टन माल ढोया जाता है।

उत्तर रेलवे की दैनिक गतिविधियों में शामिल है –

- 47,000 टन अनाज का उत्तर के उपजाऊ क्षेत्र से देश के विभिन्न भागों को परिवहन
- 62,000 टन कोयला, उद्योगों के लिए पहुँचाना
- 15,000 टन पेट्रोलियम पदार्थों का यातायात
- 17,000 टन खाद ढोना

ये सब देश में आत्म-विश्वास तथा आत्म-सम्मान की भावना की जागृति लाने में सहायक है।

रेल पटरियों का जाल; जीवन दायिनी शिराओं और धमनियों की भांति काम कर रहा है।

उत्तर रेलवे करोड़ों देश वासियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सतत प्रयत्नशील है।

उत्तर रेलवे

उत्तरी क्षितिज में स्थिर और निरंतर चमकता हुआ नक्षत्र है – उत्तर रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी जा सकती है।

सन १८२३ में आइंस्टीन ने अपने सोलह गणितीय समीकरण प्रस्तुत किये थे। यही उनके उस विचार का आभास देते हैं कि वे गणितीय समीकरणों द्वारा ही उस आध्यात्मिक उपस्थिति को सत्य के रूप में प्रस्तुत करते। ये समीकरण तो केवल उस आभास के आधार हैं। उन्होंने एक गणितीय सूत्र के रूप में इस प्रमुख सिद्धांत को चाक्षुष भी करना चाहा था तथापि 'युक्लिडीयन' ज्यामिति पर काम करते हुए उन्होंने इसे छोड़ दिया था। जैसी कि विज्ञानवादी सभ्यता है कि दो समानांतर रेखांक कभी नहीं मिल सकते, वास्तव में यह केवल मानवीय चेतना में निबद्ध आयाम धारणा की सीमा के कारण उत्पन्न निष्कर्ष है। आज विज्ञान और दर्शन पुनः इन गुत्थियों पर काम कर रहा है और इस बात के संकेत दे रहा है कि वास्तविकता का गुण धर्म वही नहीं है, जो हम जानते हैं।

मेरी चिंता मानव चेतना द्वारा उस मनोलोक में भासनेवाली आत्म सत्ता की व्याख्या है और इसे केवल कोरे अध्यात्मवाद के रूप में नहीं माना जा सकता। इस संबंध में मैं आइंस्टीन के समीकरणों की पुनर्व्याख्याओं में लगा हूं। इस विश्वास के साथ कि भौतिक जगत का महत्त्व और अर्थ आध्यात्मिक सत्य से अधिक उजागर होता है। इसमें संदेह नहीं कि यह कार्य कठिन है पर तमाम तरह की कल्पनाएं और अटकलें ही वास्तव में छोटी-छोटी चीजों के अंतर्संबंधों का महत्त्व प्रतिपादित करती हैं।

प्रस्तुति : गंगा प्रसाद विमल

वचन-वीथी

किसी कार्य का आरंभ उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है।

—प्लेटो

बहुत अधिक आराम स्वयं दर्द बन जाता है।

—होमर

आलस्य की कब्र में सब सद्गुण दफन हो जाते हैं।

—श्रीमती ऐलैंड

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्रायः फूल और कीड़े— दोनों को एक साथ ही पृथक कर देती है।

—रिश्लर

आशा ही एक ऐसी चीज है जो सबके पास मिल सकती है। जिसके पास और कुछ नहीं होता, उसके पास आशा तो रहती ही है।

—थेल्स

मेल-मिलाप उन्नति की आत्मा है।

—बक्सटन

हार्दिक ऐक्य से रहित मानसिक ऐक्य का उपदेश देना मानो आकाश के तारे तोड़ना है।

—रस्किन

किसी काम को सुचारु रूप से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए।

—नेपोलियन

अव्यक्त से व्यक्त की रचना, कला का एक कार्य है।

—खलील जिब्रान

खूबसूरत वस्तु में सभी मनुष्यों की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति होती है कि कोई भी उससे प्रसन्न हुए बिना नहीं रह सकता।

—क्लेडेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मित्र डाक्टरों के बारे में बातचीत कर रहे थे। धीरे-धीरे बातचीत ऑपरेशन तक जा पहुंची

एक मित्र ने दूसरे से पूछा, 'यार, ऑपरेशन करते समय डॉक्टर लोग मुंह पर पट्टी क्यों बांध लेते हैं।'

'इसलिए कि ऑपरेशन असफल हो जाए, तो रोगी या उसके रिश्तेदारों को पता न चल सके कि ऑपरेशन किसने किया था।' दूसरे मित्र ने उत्तर दिया।

* * *

डाक्टर ने कम्पाउंडर से पूछा, 'मैंने तुम्हें रोगी को बेहोश करने के लिए कहा था, लेकिन तुमने उसके साथी को क्लोरोफार्म सुंघा दिया। तुमने ऐसी भयानक गलती क्यों की ?'

'सर, मैंने तो रोगी के साथी को क्लोरोफार्म नहीं सुंघाया।'

'तो फिर वह बेहोश कैसे हुआ ?'

'श्रीमान, मैंने तो उसे ऑपरेशन की फीस ही बतायी थी।'

* * *

रोगी लगातार तीन दिन तक दवाई का उपयोग करने के बाद डाक्टर के पास पहुंचा। डाक्टर ने उसे देखते ही कहा, 'अब तो आपकी तबीयत जरूर हलकी हो गई होगी।

'तबीयत तो नहीं, लेकिन जेब जरूर हलकी हो गई है।' रोगी ने जवाब दिया।

* * *

चित्रकार ने बड़ी मेहनत के बाद एक तसवीर बनायी और उसे दिखाने के लिए अपने एक डाक्टर मित्र के पास ले गया। डाक्टर ने तसवीर को गौर से देखने के बाद कहा, 'यह व्यक्ति किसी हालत में भी नहीं बच सकता। इसे कैंसर हो गया है।'

* * *

'डाक्टर साहब, मैं बहुत परेशान हूं। मेरे बच्चे ने रेत खा ली है। जब मुझे मालूम हुआ, तो मैंने उसे बहुत-सा पानी पिला दिया है। अब मैं क्या करूं ?'

'केवल यह कि अब उसे खाने के लिए संतरे न दीजिएगा।' डाक्टर ने सलाह दी।

* * *

गांव के एक डाक्टर का नियम था कि जब वह गांव के कब्रिस्तान से गुज़रता, तो अपना मुंह काला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

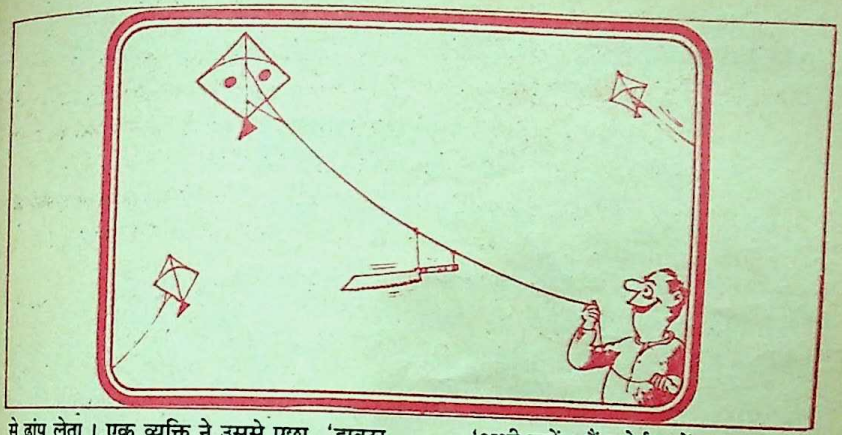

से ढांप लेता। एक व्यक्ति ने उससे पूछा, 'डाक्टर साहब, जब आप कब्रिस्तान से गुजरते हैं, तो अपना मुंह क्यों छुपा लेते हैं ?'

'क्या बताऊं, मुझे इन मृतकों से शरम आती है। यह सब मेरी दवाई से ही मरे हैं।' डाक्टर ने कहा।

* * *

डाक्टर ने (नौकर से) कहा, 'देखो, दरवाज़े पर कौन है ?'

श्रीमान, कोई रोगी होगा।

'जाकर मालूम करो : नया रोगी है या पुराना ?'

'निश्चय ही नया होगा, क्योंकि पुराना रोगी हमारे यहां कभी लौट कर नहीं आया।'

* * *

'अगर मैं मर जाऊं, तो क्या तुम शादी कर लोगे ?'

'मैं वही काम करूंगा, जो तुम मेरी मौत के बाद करोगी।'

'मैं तो पहले ही जानती थी . . . मर्द होते ही बेवफा हैं।'

* * *

'कुछ याद है। हम पेरिस के किस होटल में ठहरे थे ?'

'अभी ठहरें। मैं रसोईघर में जाकर उस होटल के चमचे देखकर आती हूं।' पत्नी ने तुरंत उत्तर दिया।

* * *

शिक्षक ने पूछा, 'क्या आप बता सकते हैं कि सांता क्लाज कहां का वासी है ?'

'सर, सांता क्लाज जापान का वासी है, क्योंकि वह हमारे लिए जितने भी खिलौने लाता है, उस पर 'मेड इन जापान' स्पष्ट शब्दों में लिखा होता है।' एक छात्र ने खड़े होकर कहा।

● सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चिपको' की तरह 'अप्पिको' आंदोलन

● विनय बिहारी सिंह

शायद कर्नाटक पर मानसून नाराज है। उसके १९ जिलों में से १८ जिले लगातार तीन साल तक सूखे से पीड़ित रहे और एक करोड़ ६८ लाख लोग तथा ९० लाख पशु अब तक उससे प्रभावित हैं। हालांकि प्रशासन ने राहत कार्य में १९३ करोड़ रुपये खर्च किये।

लेकिन क्या सूखे से पीड़ित लोगों को तात्कालिक राहत देने के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च कर देने से समस्या हल हो सकती है ? या इसकी ही क्या गारंटी है कि अगले वर्ष सूखा नहीं पड़ेगा ? दरअसल दक्षिणी-पश्चिमी मानसून इस प्रदेश का रास्ता ही भूल गया है।

इस क्षेत्र में वनों के दुरुपयोग, उनकी अवैध कटाई और असंतुलन के कारण सूखे की विभीषिका बढ़ी है। एक तो हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजना और टिंबर उद्योग ने इस क्षेत्र के वनों को नष्ट किया है। दूसरे कैगा के पश्चिमी घाट पर परमाणु ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की योजना ने वहां के लोगों को चिंतित कर दिया है। भूक्षरण से कृषि उत्पादन में गिरावट आयी है। भले ही हरित क्रांति की बात का ढिंढोरा पीटा जाए, स्थिति बदतर होती जा रही है। देश के कुछ हिस्सों में अवैध तरीकों से वनों की कटाई जिस तरह हुई है, उससे उस क्षेत्र विशेष की जलवायु पूरी तरह बदल गयी है, और कृषि उत्पादन गिरता जा रहा है।

गलत वननीति

बड़े पैमाने पर वनों की कटाई की शुरुआत ब्रिटिश सरकार ने अपने व्यावसायिक लाभ को देखते हुए की थी। लेकिन दुखद स्थिति यह है कि भारत की वननीति आज भी बेहतर नहीं हो पायी है। वन विभाग प्राकृतिक वनों को काटकर टीक और यूकेलिप्टस के वृक्षों का रोपण कराता है।

वननीति-१९५२ के आधार पर देखा जाए तो पूरे देश में वन क्षेत्र २३ से ३३ प्रतिशत तक होना चाहिए लेकिन स्थिति यह है कि ८० के दशक तक घटते-घटते यह आंकड़ा ११ प्रतिशत रह गया है। कर्नाटक में वनों को बचाने के लिए एक आंदोलन उभरा है—अप्पिको आंदोलन। इससे हजारों-हजार पेड़ कटने से बच गये हैं। इस आंदोलन के संयोजक हैं पांडुरंग हेगड़े। 'अप्पिको' का अर्थ भी 'चिपको' ही है। 'अप्पिको' कन्नड़ शब्द है। आंदोलनकारियों ने अब तक पचास हजार से भी अधिक वृक्षारोपण किया है। दूरदराज के गांवों में बनी नर्सरियों में अप्पिको के कार्यकर्ताओं ने ८ लाख से भी अधिक पौधे तैयार किये हैं।

यह आंदोलन शुरू कब हुआ ? दरअसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंपरागत जंगलों से हरी पत्तियों की सस्ती खाद प्राप्त होती है जो उस इलाके के गरीब किसानों के लिए वरदान ही है। यह खाद मिट्टी को उपजाऊ बनाने में रामबाण का काम करती है। परंपरागत वनों की गझिन पत्तियां जंगली जानवरों को सुरक्षा देती हैं, जिनका एक हद तक पर्यावरण संतुलन से सीधा संबंध है।

सन १९८२ के उत्तरार्द्ध में चिपको-आंदोलन के जनक सुंदरलाल बहुगुणा वहां गये थे। पूरी स्थिति का आंकलन करने के बाद उन्होंने पाया कि कर्नाटक के वन तेजी से नष्ट होते जा रहे हैं। उन्होंने चिपको-आंदोलन की भूमिका और उसकी उपलब्धि की चर्चा वहां के चेतनशील लोगों से की। अप्पिको-आंदोलन की शुरुआत ८ सितम्बर १९८३ को हुई थी। उन दिनों सलकानी और बालेग्गाड्डा गांवों के जागरूक लोगों ने इसकी शुरुआत की। अप्पिको के आंदोलन के लगभग १५० कार्यकर्ता जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी थे, पेड़ों से लिपट गये और जंगल काटनेवाले ठेकेदार की कुल्हाड़ी लिए मजदूरों को शपथ दिलायी कि वे स्थानीय जंगलों के पेड़ों को हाथ नहीं लगाएंगे।

इस तरह बालेग्गाड्डा और सलकानी क्षेत्र के २० हेक्टेयर जंगल क्षेत्र में लगभग ६०० पेड़ कटते-कटते बच गये। आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने कुछ महीनों तक इसकी कड़ी निगरानी भी रखी। इसका नतीजा यह हुआ कि इसका प्रचार-प्रसार पूरे प्रदेश में हो गया। वन विभाग सिरसी वन प्रभाग में एक भी हरा पेड़ नहीं काटा जा सका। सिर्फ सूख गये या सूख रहे पेड़ों को ही जलावन (ईंधन) के लिए काटा जा सका।

आंदोलन के तीन सूत्र

आज यह आंदोलन उत्तरी कनारा, शिमोगा और दक्षिण कनारा जिलों में 'परस्पर संरक्षण केंद्र' (वायुमंडल रक्षा केंद्र) के बैनर के तहत जोरों पर है। पांडुरंग हेगड़े पूरे कर्नाटक में सक्रिय हैं। इस आंदोलन के तीन सूत्र हैं—उलीसू (संरक्षण), बेलासू (पूर्व स्थिति में लाना) और बालासू (पुनरुत्पादन)। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही वन संपदा का सार्थक उपयोग भी इसके उद्देश्य में जुड़ा हुआ है।

वन संपदा से आय प्राप्त करने की वन विभाग की गलत नीति ने इस आंदोलन को जन्म दिया। टीक और यूकेलिप्टस के पेड़ परंपरागत पेड़ों की जगह कतई नहीं ले सकते। ये पेड़ आर्थिक दृष्टि से लाभदायक हो सकते हैं लेकिन पर्यावरण की दृष्टि से इनका कोई सार्थक उपयोग नहीं है। टीक और यूकेलिप्टस से हजारों ग्रामीण अपनी आजीविका नहीं चला सकते।

परंपरागत जंगलों से हरी पत्तियों की सस्ती खाद प्राप्त होती है जो उस इलाके के गरीब किसानों के लिए वरदान ही है। यह खाद मिट्टी को उपजाऊ बनाने में रामबाण का काम करती है। परंपरागत वनों की गझिन पत्तियां जंगली जानवरों को सुरक्षा देती हैं, जिनका एक हद तक पर्यावरण संतुलन से सीधा संबंध है।

अप्पिको-आंदोलन से जुड़े लोगों ने अपने गांवों में स्वयं नर्सरी की स्थापना की है, जिससे काटे गये पेड़ों की क्षतिपूर्ति तो की ही जा सके, साथ ही वन क्षेत्र में वृद्धि की जा सके। इन नर्सरियों को 'स्थानीय स्वायत्त नर्सरी' नाम दिया गया है। इसमें ऐसे पेड़ों के पौधे तैयार किये जा रहे हैं जिससे भोजन, पशुओं का चारा, ईंधन, उर्वरक (खाद) और फाइबर प्राप्त कर सकें।

वनों का नाश सिर्फ वन विभाग ही नहीं करता, वहां के स्थानीय लोग भी करते हैं। वे घास और जंगली झाड़ वगैरह को जला डालते हैं ताकि वे नये सिरे से पनपकर और अच्छा हो सकें। लेकिन सभी झाड़ियों के अनुकूल यह क्रिया नहीं होती। फलस्वरूप कुछ झाड़ियां नष्ट भी हो जाती हैं।

वनों की बहुआयामी उपयोगिता

वन जो कि वर्षा के लिए आवश्यक कारक माने जाते हैं, ईंधन के रूप में गरीब लोगों के लिए वरदान साबित होते हैं। उसके आसपास के लोग उसका सौ तरह से इस्तेमाल करते हैं।

उत्तरी कनारा कर्नाटक के सघनवनवाले जिलों में से एक है। आज से तीस वर्ष पूर्व उसका ८१ प्रतिशत भाग वनों से घिरा था। आज स्थिति यह है कि वह घटकर अब मात्र २५ प्रतिशत रह गया है। वहां की खेती जो वनों की समृद्ध कार्बनिक अवयवों से काफी अच्छी होती थी, उसकी उपज कम हो चली है। इस बात की पुष्टि वहां के किसानों ने की है। उनका कहना है कि कृषि उपज उन्नत किस्म के बीजों और उर्वरक के प्रयोग के बावजूद घटकर आधी से कम हो गयी है, जबकि आज से चार दशक पूर्व ऐसी स्थिति नहीं थी। उस समय उर्वरक के रूप में हरी पत्तियों के खाद के अतिरिक्त कुछ भी खेतों में नहीं डाला जाता था। इस क्षेत्र के जंगलों को ईंधन, कारखाने फर्नीचर इत्यादि के उपयोग के लिए ठेकेदारों ने नष्ट कर दिया।

लोक संस्कृति से प्रेरणा

अप्पिको-आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने एक और काम किया है। लोगों को और अधिक सक्रिय करने के उद्देश्य से उन्होंने कर्नाटक की पारंपरिक कलाओं और आंचलिक लोकगीतों को जनजागरण का माध्यम बनाया है। नुक्कड़ नाटकों और यक्षगान ने लोगों को बेहद प्रभावित किया है। यक्षगान कर्नाटक की लोकप्रिय नृत्यनाटिका है। कर्नाटक के यक्षगान विशेषज्ञ भंजुनाथ भागवत

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अप्पिको-आंदोलन पर आधारित एक रोचक नृत्यनाटिका तैयार की है। उसमें भाग लेनेवाले कलाकार अप्पिको के कार्यकर्ता ही हैं। पांडुरंग हेगड़े आंचलिक लोकगीतों के माध्यम से अपनी बात लोगों के दिलों तक पहुंचाने में बेहद सफल हैं। यद्यपि दक्षिण भारत में पर्यावरण सुरक्षा के लिए बहुत कुछ करना बाकी है, लेकिन अप्पिको-आंदोलन एक बेहद सार्थक शुरुआत है। वन रक्षा से जुड़ी एक ऐतिहासिक कथा भी है—आज से पांच सौ वर्ष पूर्व स्वामी जांबेश्वर नाम के महात्मा ने राजस्थान में 'विश्नोई पंथ' का निर्माण किया। 'बिश' यानी २० और 'नोई' यानी ९ अर्थात २९ संहिताएं। २९ में से एक संहिता थी—हरे-भरे वृक्षों और वन्यप्राणियों की रक्षा करना। आज से ढाई सौ वर्ष पूर्व जोधपुर के तत्कालीन महाराजा अभय सिंह का एक नया महल बन रहा था। चूना इत्यादि पकाने के लिए उन्होंने अपने आदमियों को जंगल से लकड़ी काट लाने का हुक्म दिया। उस समय अमृता देवी नाम की एक साध्वी सैकड़ों विश्नोई बंधुओं के साथ वन की रक्षा कर रही थीं। जंगल के इर्द-गिर्द कुल्हाड़ी लिए आदमियों को देखकर अमृता देवी ने उनकी मंशा भांप ली। अमृताजी को शुरू से यह शिक्षा मिली थी कि पेड़-पौधों से सगे भाई-बहनों-जैसा प्यार करना चाहिए। पेड़ हमारे गांव को आंधी और तूफान से बचाते हैं। उनके बिना हम जी नहीं सकते। हमारा पूरा जीवन ही उन पर निर्भर है।

अमृता देवी ने उन आदमियों को पेड़ काटने से मना किया लेकिन उन्हें तो महाराजा का हुक्म मिला था। ज्योंही वे आगे बढ़े अमृताजी पेड़ों से लिपट गयीं। उनको ऐसा करते देख सारे गांववासियों ने उनका अनुसरण किया।

इसी इतिहास ने सुंदरलाल बहुगुणा को भी चिपको-आंदोलन के लिए प्रेरित किया था और उन्होंने हिमालय के वन-क्षेत्र को बचाया अब कर्नाटक ही नहीं पूरे दक्षिण भारत की बारी है।

ई-१२ सादतपुर, गली नं. ५, पो. गोकुलपुर,
दिल्ली—९४

अमरीका में अब 'चिपको आंदोलन'

अमरीका स्थित ऑरगन क्षेत्र में सड़कों का अभाव है किंतु यहां पेड़-पौधे काफी संख्या में हैं। इस क्षेत्र में पेड़-पौधों की अवैध कटाई के विरोध में अब यहां भी 'चिपको आंदोलन' प्रारंभ हो गया है। इस आंदोलन के कारण पुलिस ने ग्यारह व्यक्तियों को बंदी बनाया है। इनमें से तीन व्यक्तियों को उस समय बंदी बनाया गया, जब वे ऑरगन स्थित सिस्कीयू राष्ट्रीय उद्यान में बुलडोजर का रास्ता रोक रहे थे।

इसी तरह सन् १९८३ में काल्मीओपसीस के वनखंड के आसपास पेड़ काटने के विरोध में सड़क बंद करने वाले ४४ व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया गया था। आंदोलन के दौरान पुलिस को उस समय काफी परेशानी हुई जब एक आंदोलनकर्ता ने साइकिल की चेन को दरवाजे से बांधकर फिर अपने सिर को उस चेन से बांध लिया और ताला लगा दिया।

जंगल बचाने के लिए सन् १९८३ से प्रारंभ यह आंदोलन अब तेज हो गया है। आंदोलनकर्ताओं ने अपने आंदोलन क्षेत्र में अब काल्मीओपसीस के वन खंडों को भी शामिल कर लिया है। इस वन खंड में विश्व की कीमती और कम संख्या में उपलब्ध वनस्पति पायी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधान

संपत्ति में अधिकार

ओम प्रकाश, बंबई : हम दो भाई हैं। पिताजी मेरे छोटे भाई को अपनी सारी संपत्ति देना चाहते हैं। क्या मैं न्यायालय की शरण लेकर संपत्ति में अपना हिस्सा प्राप्त कर सकता हूं ?

संपत्ति किसी भी बेटे को देने का अधिकार आपके पिताजी को है। यदि वे सारी संपत्ति आपके छोटे भाई को देना चाहते हैं, तो आप उन्हें नहीं रोक सकते। उनकी संपत्ति में हिस्सा मांगने का आपका कोई अधिकार नहीं है।

संपत्ति का बंटवारा

प्रमेश्वर चौधरी, आसनसोल : पिताजी तीन भाई थे। अब केवल मेरे बड़े चाचा बचे हैं। पिताजी के स्वर्गवास के बाद चाचाजी ने हम छोटे बच्चों को भूमि का एक भाग देकर शेष पर स्वयं कब्जा कर लिया। क्या हम चाचाजी के कब्जे से शेष जमीन प्राप्त कर सकते हैं ? किस तरह ?

जमीन पर आपके पिताजी व उनके दोनों भाइयों का बराबर का हिस्सा था। वह हिस्सा पाने का उनकी या उनकी अनुपस्थिति में उनके परिवार के सदस्यों को अधिकार है। आप अपने चाचा से संपत्ति का बंटवारा करने की मांग कर सकते हैं। यदि वे इस मांग को मानने से इनकार करें, तो आप न्यायालय में बंटवारे का दावा कर सकते हैं। न्यायालय में पूरी संपत्ति का बटवारा कर दिया जाएगा।

नागरिकता का प्रश्न

नंदकिशोर, बीकानेर : भारत में रह रहे एक दिवंगत पाकिस्तानी सैनिक के परिवार को भारत की नागरिकता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ?

भारत की नागरिकता प्राप्त किये बिना वह परिवार किस रूप से भारत में रह रहा है। उन्हें तुरत भारत सरकार से अपना भारत-प्रवास नियमित करवाने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए। भारत की नागरिकता प्राप्त करने के लिए भी आवेदन किया जा सकता है। नागरिकता मांगने का आधार क्या है, यह देखें लें और आवेदन में विलंब न करें।

फैसले की नकल

शिवप्रसाद जैन, दमोह : 'कादम्बिनी' के अगस्त अंक में प्रकाशित लेख 'दस्तावेज अदालत की फाइलों से' में गुजरात उच्च न्यायालय के एक फैसले का उल्लेख हुआ है। इस फैसले की नकल किस तरह प्राप्त की जा सकती है ?

गुजरात उच्च न्यायालय का निर्णय ऑल इंडिया रिपोर्टर, १९८७ गुजरात ११३ में देख सकते हैं। नकल प्राप्त करने के लिए आपको गुजरात उक्त न्यायालय के नकल विभाग में आवेदन करना होगा। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि उच्च निर्णय के विरुद्ध एक अपील उच्चतम न्यायालय में प्रस्तुत की गयी। सैंट्रल बैंक ऑव इंडिया द्वारा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी इस अपील पर उच्चतम न्यायालय के मान्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्रा व मान्य न्यायाधीश श्री मुरारी मोहन दत्त ने सितम्बर, १९८७ में अपना निर्णय दिया तथा सरकार को रुपया वापस करने के आदेश को पलटकर डिग्री की रकम बैंक को दिये जाने का आदेश दे दिया। उच्चतम न्यायालय का निर्णय ए. आई. आर. १९८७ सुप्रीम कोर्ट के पृष्ठ संख्या २३२० पर देखा जा सकता है। उच्चतम न्यायालय का निर्णय इस तर्क पर आधारित है कि एक बार डिग्री की रकम न्यायालय में जमा हो जाने के बाद वह रकम उस पक्ष को, जिसके विरुद्ध डिग्री हो, वापस किये जाने का कोई औचित्य नहीं लगता।

बेघर करने की धमकी

कखग : एक सहृदय जमींदार ने हमारे बाबा को एक भूमि पर बसाया था। बाबा अब नहीं हैं। हमने इस भूमि पर एक मकान बना लिया है। इस भूमि का परचा हमें ब्लाक से मिला हुआ है। अब एक व्यक्ति ने जमींदार के वंशज से उक्त भूमि की रजिस्ट्री अपने नाम करा ली है तथा हमें बेघर करने की धमकी दे रहा है ? इस समस्या का कोई उपाय बताइए।

आपके बाबा को जमींदार ने किस रूप में जमीन पर बसाया था ! उस बात को कितना समय बीत चुका है ? आप जमीन पर आजकल स्वयं को मालिक मानकर रह रहे हैं या उनकी अनुपस्थिति के सहारे रह रहे हैं ? ब्लाक से आपको किस प्रकार का परचा मिला हुआ है ? आदि अनेक प्रश्नों का उत्तर आपके पत्र में नहीं मिलता। वस्तुस्थिति के आधार पर कानून की स्थिति भी बदलती है।

यह ठीक है कि कोई भी व्यक्ति आपको

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

जबरदस्ती उस मकान से नहीं निकाल सकता। जिस व्यक्ति ने जमीन की रजिस्ट्री अपने नाम करा ली है, उसे जमीन पर कब्जा प्राप्त करने के लिए कानूनी कार्रवाई करनी होगी तथा उसमें अपना अधिकार प्रमाणित करना होगा। उसके विपरीत यदि आप अपना अधिकार प्रमाणित कर सकें तो उसे सफलता नहीं मिलेगी।

अपील और कारावास

अ.ब.स. : मुझे जिला एवं बाद में उच्च न्यायालय से आजीवन कारावास की सजा मिली है। मैंने उच्च न्यायालय में अपील की है। विद्वान वकील का कहना है कि 'आप हर हालत में छूट जाएंगे' कारण मामले में दम नहीं है, पर अपील मंजूर कराने के लिए भगवान पर भरोसा रखिए। बहस करना मेरा काम है।' यह सुनकर मेरे एक परिचित ने कहा कि 'सुप्रीम कोर्ट में अपीलों को अब भारतीय संविधान में ईश्वर ही मंजूर करने लगा है।' क्या यह सच है !

आपकी परेशानी मैं समझ सकता हूं। आपने उच्चतम न्यायालय में अपील कर रखी है। पूरी तरह तैयारी करवा कर न्यायालय के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करवाएं। 'भगवान पर भरोसा रखिए बहस करना मेरा काम है' का मतलब यह नहीं कि अपील भगवान मंजूर करता है। अपील की विधिवत सुनवाई न्यायालय में ही होती है और मामले की पूरी जांच के बाद न्यायाधीश विधि सम्मत निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं। अदालत आपके वकील की योग्यता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही करते हैं। देश की न्याय पालिका में विश्वास रखना चाहिए। शक का लाभ भी अभियुक्त को ही दिया जाता है और भारतीय कानून में पूरी तरह दोष प्रमाणित होने पर ही अभियुक्त को दंड दिया जाता है।

पत्नी की धमकी

एस. के. : मैं एक केंद्रीय कर्मचारी हूं। मैंने सन १९७४ में एक भूखंड पत्नी के नाम से खरीदकर उस पर मकान बनवाया। मेरे दो बेटे हैं। एक का विवाह हो चुका है, दूसरा राजस्थान में कार्यरत है। इधर कुछ समय से पत्नी के साथ मेरे संबंध मधुर नहीं हैं। पत्नी से संबंध सुधरने की आशा भी नहीं है। पत्नी ने मकान पर कब्जा तो कर ही लिया है, साथ ही धमकी देती है कि वह मेरे मासिक वेतन से गुजारा-भत्ता भी लेगी। क्या वह ऐसा कर सकती है? मकान देने के बाद अब मैं उसे कोई गुजारा-भत्ता नहीं देना चाहता। कृपया उचित सलाह दें।

प्रश्न यह है कि मकान का प्रयोग केवल रहने के लिए हो रहा है या उसके कुछ हिस्से में किरायेदार भी हैं। यदि पत्नी को किसी भी प्रकार से, मकान के किराये के रूप में या अन्य किसी काम से कोई आय प्राप्त हो रही है, तो भरण-पोषण का निर्णय करते समय न्यायालय उस आय को भी ध्यान में रखकर निर्णय करेंगे। अगर मकान से पत्नी को कोई आय नहीं है, तो केवल इस आधार पर कि उसके पास रहने के लिए मकान है, उसे भरण-पोषण के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। आपके बेटे अपने-अपने काम में लगे हैं। एक तो आपसे अलग ही रहता है। दूसरा भी सेवारत है। यह ठीक है कि भरण-पोषण का निर्णय न्यायालय दोनों पक्षों की आय तथा

प्रवेश शुल्क की वापसी का सवाल

अरविंद कुमार : 'रोजगार-समाचार' के मई अंक में होटल मैनेजमेंट के लिए एक पत्राचार पाठ्यक्रम के बारे में प्रकाशित हुआ था। यह जयपुर की किसी संस्था द्वारा जारी किया गया था। उसने स्वयं को एक विशिष्ट संस्थान से संबद्ध बताया था। इस पाठ्यक्रम के लिए मैंने ५७५ रुपये बतौर प्रवेश शुल्क भेजा। उसकी पावती भी मुझे मिली। यह यह भी सूचित किया गया कि अगस्त के अंतिम सप्ताह से पाठ्यक्रम भेजे जाएंगे, किंतु आज तक कोई पाठ्यक्रम नहीं आया। इस संबंध में उन्होंने किसी भी पत्र का उत्तर नहीं दिया गया। विज्ञापन में एक शर्त यह भी थी कि प्रवेश शुल्क किसी भी स्थिति में वापस नहीं किया जाएगा।

कृपया बताएं कि क्या मैं 'रोजगार-समाचार' के विरुद्ध कुछ उपचार प्राप्त कर सकता हूं। क्या मुझे मेरा प्रवेश शुल्क वापस कराया जा सकता है?

संस्थान ने आपको पाठ न भेजकर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना की है तथा आपसे किया गया समझौता तोड़ा है। इसलिए वह संस्थान आपके द्वारा दिया गया प्रवेश शुल्क वापस देने का जिम्मेदार है। केवल इस आधार पर कि प्रवेश शुल्क किसी भी स्थिति में वापस न करने की शर्त लगायी गयी थी; संस्थान प्रवेश शुल्क वापस करने से इनकार नहीं कर सकता। प्रवेश के बाद आपको पाठ भेजे जाना आवश्यक था और वह न करने के कारण संस्थान समझौता भंग करने का दोषी है। समझौता भंग होने के कारण आपको हुई क्षति की पूर्ति के लिए आप कार्रवाई कर सकते हैं।

'रोजगार समाचार' ने तो केवल उस का विज्ञापन छापा होगा। इसलिए वह पत्र तो दोषी नहीं माना जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदूर तट का द्वीप

● क्नुत हामसुन

स्व. क्नुत हामसुन का नाम विश्व के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों में लिया जाता है। सन् १९२० में क्नुत हामसुन को उनकी चर्चित कृति 'दे मार्केस ग्रोयदे' (उपन्यास) को नोवल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। क्नुत हामसुन को गद्य और पद्य दोनों में अधिकार था। यहां प्रस्तुत है क्नुत हामसुन (१८५९—१९६२) की एक चर्चित कविता

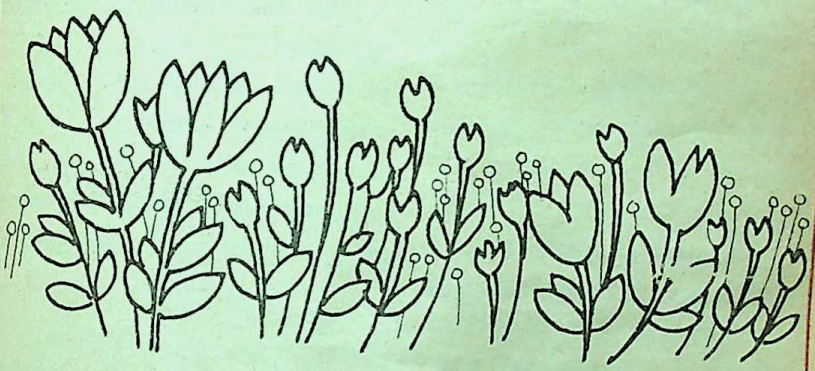

अब मेरी नाव चली
इस सुदूर नीले सागर तट के
द्वीप की ओर।
वहां के फूल अजनबी की तरह
मेरी ओर टकटकी लगाये
देखते।
तब मेरा हृदय
उन पुष्पों से भर जाता
और बन जाता है
एक नैसर्गिक मधुवन।
वे भोले-भाले शिशुओं की भांति
आपस में कुछ गुनगुनाते
बातें करते और मुसकराते
तब झुकते और नमन करते।

मैं यहां मधुर प्रातः का
आनंद लेने आया था
वह श्वेत सबेरा
जो अब नहीं है।
ओ नैसर्गिक द्वीप
मैं प्राचीनकाल से
तुम्हारी सुषमा पर मुग्ध हूं।
कभी-कभी तुम्हारे स्वप्न
मुझे भयभीत कर देते हैं
काली रात
अपनी काली चादर से
द्वीप को ढक देती है।
सागर का भयावह स्वर
तथा निर्वाण भी
तुम्हें डराता है।

रूपांतर— सुरेशचन्द्र शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बड़ा व्याघ्र

● शशिप्रभा शास्त्री

अखबार की तसवीर को देखते ही दमयंती चौंक गयी, मालूम नहीं रामसरन ने कभी अखबार देखा था कि नहीं, पर बजाय पति को आवाज लगाने के कि 'आओ देखो तो सही अखबार में यह किसकी तसवीर है और इसके नीचे क्या लिखा है !' वह तसवीर को घूरती बैठी रही। विचारों के बड़े रैले ने कहने-सुनने की शक्ति को जैसे पूरी तरह लील लिया हो।...

माथे पर कुछ मांसल-सा अनुभव करते हुए दमयंती ने बस एक क्षण को ही सोचा होगा वह कुछ और उस एक क्षण में ही उसने पूरी तरह जान लिया था कि उसके माथे पर बिल्ली, चूहा या कुछ और जरूर सरका है।अनुभव करते ही वह उछलकर बिस्तर पर बैठ गयी थी और तुरत बैडस्विच दबा दिया था। प्रकाश होते ही वह पलंग से उतरी। पलंग के सिरहाने झांका कि अब उसे कोई बिल्ली वगैरा दिखेगी, पर देखकर उसकी चीख निकलते-निकलते रह गयी। नौकर हरिया वहां गुड़ी-मुड़ी हुआ बैठा था चोर की तरह उसकी आंखें उसे घूरकर देख रही थीं चुपचाप, किंतु जलती हुई।

"तू यहां !! कैसे आया तू मेरे कमरे में ?"

वाक्य के साथ दमयंती को बोध हुआ कि वह साड़ी नहीं मात्र पेटीकोट पहने है और उसके ब्लाऊज के बटन आगे से खुले हैं। सोने से पहले बेतहाशा गरमी महसूसते हुए ही शायद उसकी अंगुलियों ने वह क्रिया कर डाली होगी। झट से चादर उठाकर उसने खुद को लपेट लिया और डपटभरे स्वर में फिर पूछा, "तू यहां आया कैसे ? दरवाजा खुला था ?"

हरिया ने बिना किसी स्वर के सिर हिलाया, स्वीकारात्मक।

दरवाजा कैसे खुला था ? क्यों खुला था— फिलहाल दमयंती को वह पूछने की जरूरत नहीं थी। 'तू आया कैसे ?' वह बार-बार वही वाक्य दोहरा रही थी, जो इस बात का द्योतक था कि उसके बैडरूम में प्रवेश करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उसकी हिम्मत कैसे हुई ? पर हरिया खामोश था, एकदम गूंगा ।

"मैं तुझे बहुत मारूंगी ।" दमयंती ने हिम्मत करके कहा, पर उसके स्वर में अब भी कंपन था ।

हरिया उसी तरह बैठा घूरता रहा, फिर उठकर चला गया, दमयंती को तो यह भी चेत नहीं था, कि वह कहे, 'निकल जाओ मेरे कमरे से !' वह खुद ही चला गया था ।

हरिया के चले जाने के बाद दमयंती ने घड़ी देखी, सुई के कांटे साढ़े बारह पर झूल रहे थे । ठीक आधी रात में हरिया उसके कमरे में घुसा था, क्यों घुसा था ? वह नहीं, दमयंती यह याद करने की कोशिश करने लगी, कि दरवाजा खुला कैसे रह गया था । उसे याद पड़ता था,

अखबार में पढ़े और देखे-सुने बहुत से हादसे उसकी आंखों के सामने रेंग आये— मालिक के न रहने पर नौकर ने मालकिन की हत्या कर डाली और सारा माल लेकर चंपत हो गया ।

दरवाजा वह बंद करके ही सोयी थी । कंपकंपी आ गयी उसे फिर से । दरवाजा बंद कर बत्ती बुझा दी और लेटी हुई वह उसी पर फिर से विचार करने लगी— नींद आने का प्रश्न नहीं था, उसकी आंखें भटा-सी खुली थीं और वह सोच रही थी :

आज से आठ वर्ष पहले तेरह-चौदह बरस के एक निरीह किशोर के रूप में हरिया उसके घर में नौकरी करने आया था— काम ठीक न करने पर वह उसे फटकारती, डपट सुनाती, कभी वह भी जवाब दे डालता, ज्यादा डपटने पर गुपना-सा मुंह बनाये पड़ा रहता, वह उस पर झल्लाती कि वह उस तरह क्यों पड़ा है, काम कैसे होगा ? किसी तरह वह उठता और काम घसीटने लगता ।

यों, वह हरिया का पूरा ध्यान रखती, सवेरे खुद नाश्ता ले न ले, उसके लिए वह चाय के साथ ब्रेड, रस्क या बन तैयार रखती, कभी वह उसे परांठे बना लेने का आदेश भी दे देती ।

'आप भी लेंगी एक परांठा ?'

'ले लूंगी ।' कुछ देर विचारने के बाद हरिया के जवाब में वह कह देती, उसे मालूम था, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

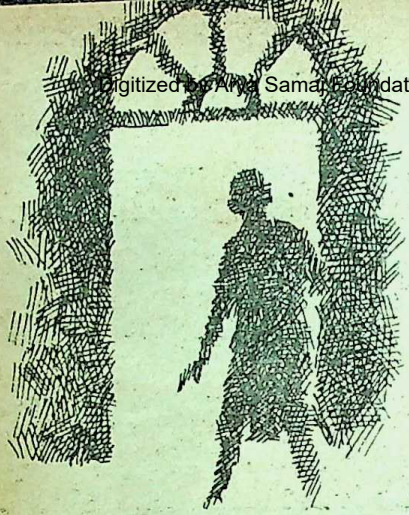

परांठा खाएगी, तभी वह अपने लिए बनाएगा, नहीं तो टाल कर जाएगा।

आठ वर्ष का अरसा एक-दूसरे को परचने, एक-दूसरे के साथ संबंध बनाने के लिए कम नहीं होता— आठ बरस से हरिया उसके साथ था, उसके घर में— आठ बरस से वह अपने गांव नहीं गया था, घर में कोई था ही नहीं, जाकर ही क्या करता। मां-बाप की उसे याद तक नहीं थी, इसी घर के लोगों के सुख-दुःख में वह बराबर का साझीदार रहा था।

तब उसे आज यह क्या हुआ ? दमयंती याद करने लगी थी। उस दिन क्या कुछ घटित हुआ था— याद करने लगी तो स्मृति में सब-कुछ खुलता चला गया— कैसे उसने उस दिन अलस्सबेरे उसे चाय बनाकर दी थी, रोज ही देता था, दिन का खाना दमयंती ने उस दिन खुद बनाया था, सब चीजों के अलावा हरिया को खाने के लिए दही भी दिया था।

शाम को वह अंगरेजी खबरों के समय तक उसके साथ बैठा टी. वी. देखता रहा था। उसे याद आया, 'चित्रहार' के साथ उसने एकाध बार किसी फिल्म के गुबरैले के नायक-नायिका के बारे में भी पूछा था, जैसे वह कभी-कभार भूल लेती थी। उस दिशा में हरिया का ज्ञान उससे अधिक था। हां, उसे याद आया, उस शाम को वह उससे दो-तीन बार टकराया था, जान-बूझकर या उसे भ्रम रहा होगा, उसने भ्रम ही माना था, इसलिए वह बच-बच गयी थी, एकाध बार रसोई के दरवाजे को पूरा घेरे खड़े हुए उसको उसने हटने के लिए भी कहा था— बस्स और तो कुछ नहीं हुआ था। टी. वी. बंद करके रोज की तरह जैसे वह पति के न होने पर दरवाजे की चटखनी चढ़ाकर अपने बैडरूम में सो जाती थी, वैसे ही उस रात भी सो गयी थी— गलती से चटखनी खुली रह गयी होगी, तभी न वह भीतर उसके कमरे में घुस सका।

● ● ●

दमयंती की आंख अगली सुबह देर से खुली थी, उस घटना के घटित होने के बाद रोज रात जागते ही बीती थी। कमरे से बाहर आकर देखा तो घर में हरिया का कहीं पता नहीं था— थोड़ी देर उसने इंतजार किया, शायद दूध लेने गया हो और अभी लौटनेवाला हो, नहीं लौटा तो रात की दहशत उसे फिर डसने लगी : कैसा घुग्घू-सा बना बैठा था, आंखें कैसी चमक रही थीं, आखिर वह कमरे में आया ही क्यों ? अखबार में पढ़े और देखे-सुने बहुत-से हादसे उसकी आंखों के सामने रेंग आये, मालिक के न रहने पर नौकर ने मालकिन से जोर-जबरदस्ती की, उसकी हत्या कर डाली और सारा माल लेकर चंपत हो गया। मालिक के होते हुए भी इस प्रकार के किस्से घटित होते वह सुनती रही थी— रामसरन चार दिन से घर पर नहीं था, वे

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अकसर ही दौरे पर रहते हैं, वह हरिया के सहारे अकेली रहती आयी है— दोनों बच्चों के हॉस्टिल में रहकर पढ़ने के कारण हरिया ही उनके लिए बच्चा बना रहा है।

'बच्चा है, अब पूरे इक्कीस का होने जा रहा है, मसें निकल आयी हैं, कब से शेव करने लगा है, पूरा आदमी हो गया है और वे दोनों उसे आज तक बच्चा ही समझते रहे, पर आज उसने जो करतब किये !' दहल सीने में फिर जाग उठी थी। क्या कर रहा था वह ? कितनी बार उसका मन किया है, कि तलुओं में तचन होने पर वह उससे तेल लगाने के लिए कह दे, कितनी मालकिनों को उसने नौकर से पिंडलियों तक तेल चसवाते देखा है, पर उसने वह हिमाकत कभी नहीं की, नौकर का हाथ वह अपनी देह से क्यों छुवाये ? हालांकि कितनी बार वह हरिया को 'बेटा' कहकर भी पुकारती रही है, तब ? तब आज उस 'ऊत के ऊत' के मन में वह बात कैसे आयी ? कल को वह फिर उस प्रकार की हरकत कर सकता है। आज तक उसने हरिया पर उस प्रकार की कोई पाबंदी नहीं लगायी थी, खाने-पीने और घर-द्वार की सभी चीजें उसके लिए खुली रहती थीं, पर अब लगता है, कि उसे कुछ हदें तो निर्धारित करनी पड़ेंगी, कम-से-कम रात को अपने दरवाजे को अच्छी तरह जांच कर तो सोना पड़ेगा और... ।

अभी तक वह आंगन में बैठी सोच रही थी, हरिया नहीं आया तो वह रसोईघर में पहुंची, देखकर आश्चर्य हुआ कि दूध हरिया ने लाकर रख दिया था, तश्तरी से ढककर उस पर एक कागज का टुकड़ा कटोरी से दबा देख दमयंती

हरिया के भीतर कुछ-कुछ कचोट रहा था, एक गड़बड़झाले की तरह... अपने कौतूहल की उसे इतनी बड़ी सजा मिली थी, मालकिन का यकीन खोकर वह उधर तब रहता भी तो कैसे ?

ने उठाया तो पहचाना, वह तो हरिया की लिखत थी, वह पढ़ने लगी—

बीबीजी,

रात को जब मुझे बहुत देर तक अपने कमरे में नींद नहीं आयी, तो मैं आपके कमरे में ट्रांजिस्टर लेने गया था, दरवाजा खुला था, इसीलिए मैं भीतर आ सका— आप मुझे माफ कर दीजिए, ऐसी खता अब आयंदा नहीं होगी। ग्लानि की वजह से मैं आपको अपना मुंह भी नहीं दिखा पा रहा।

आपका सेवक
हरिया

... ट्रांजिस्टर लेने आया था, तो माथे पर हाथ रखने का मतलब ? ठोढ़ी पर अंगुली टिकाये वह फिर सोचने लगी और सोचते ही वही पुरानी ग़िजगिजी उसे फिर घेरने लगी : आज तक घर-परिवार ठीक तरह चल रहा था, हरिया की इस हरकत ने अचानक उस पूरी व्यवस्था में आग लगाकर रख दी है, विश्वास के ताने-बानों को जलाकर राख कर दिया है। हरिया की घूरती आंखें उसके मस्तिष्क की सिलेट पर फिर खिंच आयीं, एकदम चीते की तरह तेज गहरे तक घूरती हुई, मानो चीता बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रमण करने को हो हो, बस अभी वह आक्रमण करेगा और उसे फाड़कर खा जाएगा चपर चपरऽऽचप्पऽ !! जैसे बस वह मौके की तलाश में ही हो।

... 'ग्लानि की वजह से चले गये हैं, इधर की ग्लानि के बारे में नहीं सोचा, कि मुझे भी कुछ-कुछ हो रहा होगा, मैं अपने मन में उगी गलाजत से कैसे निस्तार पाऊंगी ? कैसे तकूंगी तुझे मैं ? क्यों किया तूने वह सब ? ट्रांजिस्टर के लिए पुकार भी तो सकता था तू... ।' सोचते-सोचते ही उसने दूध गरम किया और थोड़ा-सा दूध ले लिया। रात में पूरी नींद न सो पाने के कारण देह में अजब तरह की थकान भरी हुई थी, दूध पीकर वह फिर लेट गयी, सोच के बगूले उसे फिर चीथने लगे : 'कब तक नहीं आएगा आखिर ? रात को क्यों आया था ? क्या था उसके मन में ?' वह समझ ही नहीं पा रही थी, जो कुछ समझ पा रही थी, वह बहुत डरावना और धुंधला था... ।

● ● ●

दिन छिपे वह लौटा था, दिन के उजाले में शायद मालकिन को अपना मुंह न दिखाना चाह रहा हो। उसके उतने सवेरे चले जाने और खाना वगैरा न खाने के बारे में दमयंती ने कुछ नहीं पूछा। रात न जाने कैसे कट गयी ? दमयंती पूरी रात डरती रही थी, शायद हरिया भी पिछली रात की बीती घटना को याद करता रहा हो। सवेरे कमरे में झाड़ू लगाने पहुंचा, तो दमयंती रामसरन की कमीज के उधड़े कॉलर में तुरपन भर रही थी—

'बीबीजी, मुझे माफ कर दीजिए।' हरिया की आवाज सुनकर वह चौंकी।

'ठीक है, इतना ही बहुत है, कि मैं तुझसे कुछ कह नहीं रही हूं, अपना काम करो और यहां से चले जाओ।' साहेबाना ढंग से आदेश देते हुए उसने अपनी नजर सुई की नोक पर टिका ली। आंखें उसकी कॉलर पर थीं, पर दिमाग उसका तेजी से सरक रहा था— यह हुआ तो क्या हुआ। मन में रह-रहकर उबाल उठ रहा था, 'उसे पता है, मैं चूहे तक से डरती हूं, फिर भी उसने मुझे इस तरह डराने की कोशिश की, भला क्यों ?' हरिया की माफी मांगने वाली बात उसे बेसिर पैर की लगी, उसे अब कोई स्पष्टीकरण नहीं चाहिए; पति के लौटने की प्रतीक्षा वह बड़ी बेसब्री से करने लगी, आखिर कोई तो हो, जिससे वह अपनी दहल-दहशत की बात कह सके, जो उसे सलाह-मशविरा दे सके, समझा सके।

उस दिन दोपहर के खाने के बारे में भी उसने हरिया से कुछ नहीं कहा था, खाना उसी ने बनाया है, तो उसे खा भी लेना चाहिए, जैसे वह रोजाना उससे सब्जी-अचार वगैरा लेने के लिए कह देती थी, आज वैसा कुछ नहीं कहा। तीसरे पहर रसोई में घुसी तो देखा खाना ज्यों-का-त्यों ढंका रखा था, हरिया ने उसे खिला दिया, पर खुद नहीं खाया था।

'मक्कार कहीं का सोचता है, मैं जिद करूंगी, कि खाना खा लो महाराज ! सो मैं करने से रही, भूख लगे तो खा लेना, नहीं तो ऐसी-तैसी में जाओ ' दमयंती ने हरिया से कुछ नहीं पूछा था। दोनों रातों को उसने चटखनी को दो-चार बार देखा, कहीं वह खुली तो नहीं रह गयी। उसकी इतनी हिम्मत पड़ी है, तो आगे कुछ भी कर सकता है वह, विचारों की फिरकनी फिर

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमने लगी थी।

सवेरे उठकर रसोई में जाकर देखा, हरिया ने रात का खाना फिर नहीं खाया था, बस उसे खिलाकर भूखा ही सो गया था, 'बदमाश उल्लू की दुम! सोचता है अब मैं उससे घुल-मिलकर बातें करूंगी, मनाऊंगी... !' मनाना तो दूर, उसने हरिया को किसी तरह का आदेश देना भी छोड़ दिया था।

'बीबीजी हमें माफी दे दो !' अगली सुबह झाड़ू लगाते हुए हरिया ने फिर कहा।

'माफी तो तुझे अब साहब आकर देंगे। जब वे तेरी पिटाई करेंगे, तब तुझे पता चलेगा...।' दमयंती ने उसे फिर दुरदुरा दिया और अपने काम में लगी रही।

रामसरन घर लौटे तो हरिया घर में नहीं था, पूछने पर पता चला, कि वह बिना कहे चला गया है।

"बिना कहे !!" पत्नी की बात सुनकर रामसरन चौंके थे, "बिना कहे तो वह नीचे सड़क तक पर नहीं जाता था, लगता है, उसके पर निकल आये हैं।"

"ऐसा ही लगता है।" मन में सोचा, 'जरूर पर ही निकल आये होंगे, तभी न आधी रात को उसने उसके बैडरूम में घुसने की हिम्मत की थी।'

"पर तुम गुमसुम क्यों हो, हरिया न सही, उसका कोई दूसरा भाई-बंद आ जाएगा, आज दफ्तर पहुंचकर मैं बात करूंगा।" अटैची रख रामसरन ने कपड़े बदल लिये थे।

"नहाओगे नहीं ?"

"अभी नहीं, पहले एक कप चाय दे दो।"

"मैं सोचती हूं, अब हमें नौकर नहीं

नौकरानी रखनी चाहिए, ये नौकर तो यों ही छंटे हुए होते हैं।" दमयंती ने चाय का प्याला और नाश्ते की रकाबी सामने रखते हुए कहा।

"वह भी देख लेंगे। क्यों, हरिया ने कोई शरारत की ?" कुछ क्षण रुककर रामसरन ने जोड़ा।

"शरारत क्या करेगा, पाजी हो जाते हैं ये लोग।"

अभी तक दमयंती पति का इंतजार कर रही थी कि वे आएं तो वह अपने मन का गुबार निकाल पूरी दास्तान सुनाये, पर अब उसे ध्यान आया रामसरन की प्रकृति लापरवाह किस्म की है, कभी-कभी वे खुद उसको ही दोषी ठहरा देते हैं, हो सकता है, पूरी बात सुनकर कहें कि 'तुम तो बेकार तनिक-सी बात का तिल का ताड़ बना लेती हो, उसे समझा-बुझा देतीं और बात को रफा-दफा कर देतीं, अच्छे ईमानदार नौकर आजकल मिलते ही कहां हैं।' स्त्री के मन को गहराई से माप पाने की सामर्थ्य हर किसी में होती भी कहां है ! अपने पति के बारे में तो वह यह जानती ही थी। फिर अब जिस राह चलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं तो उसके पल्ले क्या मिला। हरिया तो अब जा ही चुका है तो बेकार है— दमयंती ने अपनी बात उस दिन अपने में ही समो ली थी।

● ● ●

और आज इतने दिन बाद जब काफी कुछ मन से निकल चुका था, तो उसे फिर इस तसवीर ने...। तसवीर के नीचे लिखी इबारत उसे फिर दहलाने लगी।

'क्या करना चाहिए था उसे ? माफी दे देनी चाहिए थी ? माफी, यानी सब-कुछ भूलकर उस पर नये सिरे से फिर ममत्व बरसाने लगना ? माफी, यानी उसके साथ बैठकर बहसियाना कि देख इतने दिनों बाद तूने जो यह हरकत की है उसने तेरे प्रति मेरी भावना को बिलकुल कुचल कर रख दिया है और क्यों की थी तूने वह हरकत ? तूने यह नहीं सोचा कि इस सबका मुझ पर क्या असर पड़ेगा, क्या-क्या सोचने लगूंगी मैं कितनी दूर तक... ?'

दमयंती हरिया को माफी नहीं दे पायी थी। चीते की तरह उसकी उस समय की चमकती छोटी-छोटी आंखें उसके मन पर अब भी खिंची थीं,वह उस समय भूल गयी थी कि उसकी अपनी आंखें उस क्षण दहशतजदा होती हुई भी कहीं अधिक भयानक थीं— घृणा, ललकार, उपेक्षा, आक्रोश, विरक्ति उनमें उबली पड़ रही थी, उबलती रही थी आद्योपांत, उसके जाने के दिन तक।

हरिया के भीतर कुछ-कुछ कचोटता रहा था, एक गड़बड़झाले की तरह, जिसने उसे पूरी तरह अस्वस्थ बना डाला था, वह मालकिन से माफी मांगता रहा था, अधिक कुछ कहने की उसे तमीज ही नहीं थी, वह कुछ नहीं समझ पा रहा था, बस इतना जानता था कि मालकिन उसे अच्छी लगती थीं— उनकी लौंग, उनका माथा, माथे पर सजी बिंदी, कानों में हिलते बुंदे— अपने कौतूहल की उसे इतनी बड़ी सजा मिली थी, मालकिन का यकीन खोकर वह उसे तब रहता भी तो कैसे— मरने की उसमें हिम्मत नहीं थी, मरना वह चाहता भी नहीं था— वह उस अज्ञात टोली में शामिल हो गया था, जिसके कारनामे वह खुद भी नहीं जानता था, तब !

—३/६ भगवान नगर
देहरादून

दो नर्सों में एक रोगी के बारे में बातें हो रही थी।

एक : मेरे खयाल में उसकी पत्नी उसे अच्छा होने नहीं देगी।

दूसरी— क्यों, क्या बात है ?

पहली : आज जब वह आयी, तो उसने रोगी से प्रश्न किया कि सिल्क की नयी साड़ी कितने में आ जाएगी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

● संपादक

१. **एक** प्रदर्शनी में टिकट की दर २५ प्रतिशत कम कर देने से दर्शकों की संख्या प्रतिदिन ३० प्रतिशत बढ़ जाती है। बताइए, टिकट की बिक्री की प्रतिदिन की रकम पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

२. **सुप्रसिद्ध** कैलास पर्वत, जहां शिव का निवास माना जाता है, मानसरोवर झील के पास तिब्बत में है। भारत में इसी नाम का पर्वत कहां है? जो उस क्षेत्र के निवासियों के लिए शिव-स्थान के रूप में एक पवित्र तीर्थ-स्थल है ?

३. **देश** में ब्रिटिश शासनकाल में पंचायत-प्रणाली का पुनरुद्धार किसने और कब किया था ?

४. **दुनिया** में समुद्र के नीचे बनी सबसे लंबी गुफा कौन-सी है, जिसमें रेल मार्ग भी है ?

५. **क. भारत** में किस घड़ी को राष्ट्र के समय-पाल (टाइमकीपर) के रूप में माना जाता है ? ख. गत वर्ष के अंतिम दिन (३१ दिसम्बर की मध्यरात्रि) उसमें ठीक समय के संचालन के लिए क्या परिवर्तन किया गया था ?

६. **इस** वर्ष के पहले दिन देश में खनिज तेल की एक महत्त्वपूर्ण खोज के संबंध में समाचार मिला था। बताइए, कहां ?

७. **सोवियत** रूस के किस कवि ने ऋग्वेद तथा अथर्ववेद का रूसी भाषा में अनुवाद किया है ?

८. **सुप्रसिद्ध** अमरीकी साहित्यकार मार्क ट्वेन का असली नाम क्या था ? 'मार्क ट्वेन' का क्या अर्थ है ? यह छद्म नाम उसने कब अपनाया था ?

९. **टेस्ट** क्रिकेट में किन गेंदबाजों को सबसे अधिक विकेट लेने का श्रेय प्राप्त है ? १. क. भारत के किस गेंदबाज ने टेस्ट क्रिकेट में पहली बार पदार्पण करने पर दोनों पारियों में ८-८ विकेट लिये ?

ख. इससे पूर्व दुनिया के किस खिलाड़ी का ऐसा रेकॉर्ड रहा था ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरित मानस में समाजवाद का अनुशीलन

● डॉ. चिन्तामणि शुक्ल

आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण संभवतः पुरातन संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों में शोभा की वस्तु बनकर रह जाती, यदि महाकवि तुलसीदास ने रामायण के मूल कथानक को सरलभाषा और लोक शैली में निबद्ध कर रामचरित मानस के रूप में बोधगम्य और लोकप्रिय न बनाया होता ! रामचरित मानस में प्रमुख लोकोपयोगी ग्रंथों में वर्णित आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं सामाजिक सिद्धांतों को 'बहुजन हिताय' अत्यंत सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है । विषय वस्तु की व्यापकता को तुलसीदास ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

गावत बेद पुरान अष्टदस, छओं सास्त्र सब ग्रंथन को रस
मुनि जन धन संतन को सरबस, सार अंस संमत सबही की

मानस के मर्मज्ञ आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसादजी द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने बताया है कि इस महान ग्रंथ में न केवल धर्मशास्त्र और साहित्य बल्कि नीतिशास्त्र समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र—जैसे व्यापक शास्त्रों के गूढ़ तत्व सर्व सामान्य के अनुसरण हेतु प्रस्तुत किये गये हैं । श्री राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से तुलसीदास ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के आदर्श स्वरूपों का विवेचन किया है । आदर्श सामाजिक व्यवस्था, आदर्श शासन तंत्र एवं हितकारी अर्थ व्यवस्था का वर्णन यत्र तत्र विभिन्न पात्रों और स्थलों की परिकल्पना करते हुए अत्यंत रोचक शैली में किया गया है।

सच्चा समाजवाद क्या है ?

आज भौतिकतावादी अर्थ प्रधान युग में विश्व के अधिकांश भाग में समतावादी दृष्टिकोण और समाजवादी अवधारणा समग्र जीवन पद्धति को प्रभावित कर रही है। व्यापक अर्थ में समाजवाद से तात्पर्य प्रत्येक क्षेत्र में समानता एवं संपन्नता लाने की प्रतिबद्धता की दृष्टि से सामाजिक संरचना में भेदभाव और वर्गांतरकारी शक्तियों का दमन, राजनीतिक व्यवस्था में वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आर्थिक व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरित मानस में न केवल धर्मशास्त्र और साहित्य वरन नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र-जैसे व्यापक शास्त्रों के गूढ़ तत्व सर्व-सामान्य के अनुसरण हेतु प्रस्तुत किये गये हैं। समाजवाद जिन आदर्शों एवं सिद्धांतों की व्याख्या करता है, रामचरितमानस में वे अपने पवित्र रूप में मौजूद हैं।

में सभी को उन्नति के समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु जनकल्याणकारी शासनतंत्र की स्थापना से है। ऊंच-नीच का भेदभाव, संपन्न-विपन्न के मध्य उत्पन्न खाई के कारण वर्ग-संघर्ष और सत्ताकेंद्रों पर वर्चस्व बनाये रखने हेतु परस्पर टकराव को जिस व्यवस्था में दूर किया जा सके, वही सच्चा समाजवाद है शासन चाहे राजतंत्र द्वारा संचालित हो या प्रजातंत्र से— मूल उद्देश्य बहुसंख्यक समाज के हित, सुख-शांति एवं समृद्धि के लिए प्रयास होना चाहिए, तभी समाजवाद की स्थापना की जा सकती है।

रामचरित मानस में नैतिक आदर्श, और मानवीय मूल्य

राष्ट्रीय नीतियों में जनमत का प्रभुत्व, सामाजिक कल्याण और मानवीयता परिलक्षित होना समाजवाद का प्रमुख लक्षण है। समाजवाद के प्रणेता विद्वानों ने जिन सिद्धांतों की विवेचना की है, वे रामचरित मानस में बड़े सुंदर ढंग से प्रतिपादित हुए हैं। सामाजिक समानता के प्रमुख उदाहरण राम का शबरी, निषाद, केवट, राक्षसकुलोत्पन्न विभीषण के साथ सहृदयतापूर्वक मानवीय समतापूर्ण व्यवहार स्पष्ट होता है, वहीं जटायु, सुग्रीव, जाम्बवंत और हनुमान— जैसे मानवेतर प्राणियों के साथ भेदभाव रहित ममतामय स्नेहिल व्यवहार के अनूठे दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं।

मानवीय मूल्यों और नैतिक आदर्शों की स्थापना के सार्वभौमिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए, तुलसी ने आदर्श पारिवारिक संबंधों, गुणों और आचरण-धर्म का उल्लेख किया है। राम एक आदर्श पुत्र, भाई और पति के रूप में, राम एक साधक, एक शासक और धर्मपरायण शिवपरायण के रूप में अपने आचरण से मानव धर्म की मर्यादाओं का बड़े प्रभावशाली रूप से दिग्दर्शन कराते हैं, जो समाजवादी समाज की स्थापना के लिए स्व-अनुशासन और सामाजिक नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं। नैतिकता के मापदंड की रक्षा करते हुए तुलसी ने कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुजबधू भगिनी सुतनारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ।।

निस्वार्थ प्रेम और सौहार्द्रपूर्ण मित्रता के आधारभूत लक्षण बतलाते हुए परस्पर सहयोग, सद्भाव और सहानुभूति की शर्त आवश्यक है— इस संबंध में तुलसीदास ने लिखा है—

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ।।
देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ।।

इस प्रकार समतावादी समाज में पवित्र रिश्तों और मैत्री भाव, परस्पर साहचर्य और कल्याण की भावना को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता का बोध कराया गया है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता, वैचारिक अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य और नीति-परामर्श में निर्भयता के संबंध में रामचरित मानस के अंतर्गत कई आख्यान हैं । राजा दशरथ अपने पुत्र राम को राजतिलक करने संबंधी विचार हेतु प्रजातंत्रात्मक प्रक्रिया के तहत निर्णय लेते हैं। तुलसी ने लिखा है—

श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुं जरठपनु अस उपदेसा ।।
जौं पांचहि मत लागै नीका । करहु हरषि हियं रामहि टीका ।।

इसी प्रकार लंका-प्रस्थान के समय राम द्वारा वानर आदि सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श कर पुल निर्माण का निर्णय लेना तथा लंका में रावण द्वारा हनुमान को दंडित करने के लिए मंत्रिपरिषद व नागरिकों से परामर्श करते समय राजदूत का वध नीति विरुद्ध बताया जाना— प्रजातंत्र में जनमत की महत्ता के द्योतक हैं । तुलसी के अनुसार—

नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ।।
आन दंड कछु करिअ गोसांई । सबही कहा मंत्र भल भाई ।।

सेना अधिनायक के रूप में रामचंद्र सीता-खोज से लेकर लंका-विजय तक सभी निर्णय परस्पर विचार-विमर्श के बाद ही लेते हैं । अयोध्या के राजा के रूप में राम ने कहा कि

जौ अनीति कछु भाष्यों भाई, तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।

इस प्रकार संपूर्ण रामचरित मानस में नीति, साहचर्य और समानता के सिद्धांतों पर आधारित समाज की स्थापना पर जोर दिया गया है।

समाजवाद का प्रत्यक्ष और प्रमुख लक्षण आर्थिक-समता, संपन्नता और समान अवसरों की उपलब्धि कहा गया है । तुलसीदास ने राम की नगरी अयोध्या के नागरिकों की जीवन शैली, समृद्ध-सामाजिक संपन्नता और परिपूर्णता का उल्लेख करते हुए वर्णन किया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लता बिटप मांगे मधु चवहीं । मनगतो सेन पय स्रवहीं ।
प्रगटीं गिरिन्ह बिबिध मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ।।
सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ।।
सागर निज मरजादां रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हिं नर लहहीं ।।
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । कलस मनहुं रबि ससि दुति निंदत ।।

बिधु महि पूर मयूखन्हिं, रबि तप जेतनेहिं काज ।
मांगे वारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ।।

प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और पर्याप्तता का प्रमाण उपर्युक्त में पूर्णतः स्पष्ट है। समाजवादी अर्थ व्यवस्था में लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए प्रजा के हित को सर्वोपरि माना गया है। राजधर्म और शासक के उत्तरदायित्व की व्याख्या करते हुए तुलसी कहते हैं—

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।।

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोइ ।।

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुं एक ।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक ।।

ऐसे लोकहितकारी शासन में संपन्नता और स्वस्थता, समाज के जीवन स्तर की उच्चता आदि शुभलक्षण समाजवाद की उत्कृष्ट छवि के परिचायक हैं। रामराज्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास लिखते हैं—

अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहु ओरा ।।
राम राज बैठें त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ।।
बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना ।।
सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ।।
हरषित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ।।

इस प्रकार आर्थिक विषमता, अशिक्षा, अज्ञान, अस्वस्थता आदि से रहित समाज की कल्पना रामचरित मानस में की गयी है।

अपने आचरण द्वारा सर्वोच्च मानक की स्थापना

वर्तमान युग में संपूर्ण विश्व आर्थिक असमानता, प्राकृतिक संसाधनों पर एकाधिकार, वर्ग संघर्ष एवं अनाचार-अत्याचार का शिकार हो रहा है। इक्कीसवीं सदी के द्वार पर इन घातक विसंगतियों से परिपूर्ण समाज 'समाजवाद' की सुख-समृद्धि कैसे भोग पाएगा। विस्तारवादी, साम्राज्यवादी और शोषणवादी शासकों से सर्वसाधारण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हित की आशा नहीं की जा सकती । शासक को त्याग, संतोष और शांति के सर्वोच्च मानक स्वयं के आचरण के द्वारा स्थापित करना चाहिए । रामचरित मानस में राम को राजा बलि और राजा रावण पर विजय प्राप्त करते हुए बताया गया है । विजयोपरांत राम विजित राज्य-संपदा किष्किंधा में सुग्रीव और लंका में विभीषण को सौंप देते हैं तुलसीदास ने लिखा है—

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएं दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।।

सदियों से पीड़ित, शोषित और दलित श्रमिकों के प्रति समाजवादी समाज का सहानुभूति पूर्ण व्यवहार और श्रम का समादर नितांत आवश्यक है । इसके लिए संपन्न और सत्तासीन व्यक्तियों को अपने स्वभाव और आचरण के माध्यम से अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना आवश्यक है, तभी श्रम की प्रतिष्ठा होगी । रामचरितमानस में श्रम की प्रतिष्ठा और उचित पारिश्रमिक के सिद्धांत की व्याख्या का रोचक वर्णन इस प्रकार किया गया है—रामकेवट की नाव से नदी पार करते हैं । वे राजपुत्र हैं और केवट उनके राज्य की प्रजा ।

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।।
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ।।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ।।
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ।।
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ।।
फिरती बार मोहि जो देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ।।

इस प्रकार एक ओर श्रम की प्रतिष्ठा, एक संपन्न सत्ता प्रतीक द्वारा और दूसरी ओर उचित पारिश्रमिक से मानसिक संतोष, एक श्रमिक द्वारा प्रगट करना, आर्थिक समीकरण का बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुतीकरण माना जा सकता है । भक्ति और तपस्या को एक आध्यात्मिक अनुष्ठान के रूप में रखकर तुलसीदास ने रामचरित मानस में सुख-शांति के लिए गूढ़ मंत्र को अत्यंत सरल रूप में बताया है—

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा, जोग न मख जप तप उपवासा ।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई, जथा लाभ संतोष सदाई ।

रामचरित मानस के गंभीर चिंतन से आर्थिक संपन्नता, समता और सुख शांति के लिए अनेक सिद्धांतों को समझने में सहायता मिलती है । शोषणमुक्त वर्ग-हीन समाज में ही सही सुख-समृद्धि आ सकती है । अन्यथा दीनता-दारिद्र्य की किंचित छाया मात्र से विश्व की सादी संपन्नता का प्रकाश धूमिल हो सकता है । प्रसिद्ध अर्थशास्त्री गुन्नार मिर्डल ने कहा है— 'पावर्टी एनी व्हेयर इज थ्रेट टू प्रास्पर्टी एव्हरी व्हेयर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए रामचरित मानस— जैसे महान ग्रंथ में वर्णित गूढ़ सिद्धांतों का अनुशीलन कर विपन्नता को दूर कर संपन्नता लाने हेतु समाजवादी व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए। विपन्न बहुसंख्यक समुदाय के हितों की कब्र पर अल्पसंख्यक संपन्न वर्ग की गगन-चुंबी इमारतें जब तक बनती रहेंगी, तब तक—कार्लमार्क्स के अनुसार : संपन्न और विपन्न वर्गों का वर्ग-संघर्ष टाला नहीं जा सकता। दीन-हीन भूखा व्यक्ति समाज के विध्वंस का कारण बन सकता है। वह कुछ भी कर सकता है। नीति शास्त्रियों ने कहा है— "विभुक्षित किं न करोति पापम्"। रामचरित मानस में तुलसी ने इसे सरल शब्दों में इस प्रकार कहा है—

मागउं भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू॥

इसलिए राष्ट्र में आर्थिक शक्ति के संकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति पर प्रभावशाली अंकुश आवश्यक है। राष्ट्र के संसाधन और राष्ट्रीय सत्ता-साधन किसी शासक की बपौती नहीं, बल्कि शासक उनका संरक्षक और समाज का विश्वासी सेवक है। महात्मा गांधी ने इस प्रवृत्ति को ट्रस्टीशिप सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किया है। रामचरित मानस में यही तथ्य राम वनवास के समय भरत द्वारा चरण पादुका (राज चिह्न) के द्वारा सत्ता-संचालन का कथानक प्रस्तुत किया गया है। सत्तासीन व्यक्ति (शासक) समाजवाद के अंतर्गत मात्र एकत्यागी और लोकहितकारी सेवक बनकर प्रजातंत्रीय शासन का सूत्रधार बन सकता है। रामचरित मानस में आज भी सच्चे समाजवाद की स्थापना हेतु पवित्र अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। यह महान ग्रंथ पूजाघर की कृति नहीं वरन समग्र मानवीय जीवन शैली का मार्ग दर्शक ग्रंथ है।

—२२, विवेकानन्द नगर, यादव कॉलोनी, गढ़ारोड, जबलपुर (म. प्र.)

तुलसी के विविध उपयोग

— बच्चों का पेट फूलता हो तो तुलसी के पत्तों का रस गुनगुनाकर एक चम्मच पिलाइए तथा उसी से पेट पर मालिश कीजिए।

—ज्वर वह चाहे मियादी हो, मलेरिया या फिर शीत ज्वर तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर सेवन कीजिए, लाभ मिलेगा।

— चेहरे की सुंदरता के लिए तुलसी के पत्तों तथा नींबू के रस का समान भाग मिलाकर नियमित लेप की तरह लगाइए। झाइयों एवं धब्बे दूर करने में लाभकारी सिद्ध होगा।

— जिन्हें आलस्य, बेचैनी, शारीरिक दर्द (हाथ-पैरों) की शिकायत हो, उन्हें कुछ दिन तक नियमित तुलसी के पत्तों का उपयोग करना चाहिए। तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर, चूर्ण बनाकर शहद में मिला लें, फिर उसे गुनगुने दूध के साथ नियमित सेवन करें।

— तुलसी के पत्तों को सेंधा नमक के पानी में उबालकर सेवन करने से वायु विकार, श्वांस-दमा आदि में लाभकारी होता है।

—प्रस्तुति : वेणु गोपालन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बब्बर शेर का वैकल्पिक घर

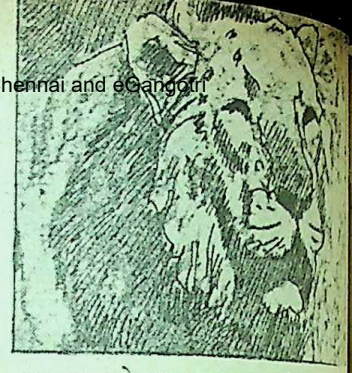

• कृष्ण मुरारी तिवारी

बब्बर शेर ; जिसे सिंह के नाम से भी जाना जाता है। सिंह : हमारे देश में शौर्य, शक्ति, पौरुष और बहादुरी का प्रतीक।

प्राचीन साहित्य में चाहे वह महाभारत हो या पंचतंत्र की कहानियां, रचनाकारों ने सिंह अथवा बब्बर शेर को ही स्थान-स्थान पर उद्धृत किया है। यद्यपि व्याघ्र भी इसके समतुल्य है पर सिंह का स्थान व्याघ्र से ऊपर है। अशोक की लाट में सिंह ही अंकित है। पंचतंत्र का 'पिंगलक' सिंह है, न कि व्याघ्र। पर कैसी विडंबना है कि बीसवीं सदी में सिंह हमारे देश के केवल एक कोने-सौराष्ट्र क्षेत्र—में सीमित हो गया है, जबकि व्याघ्र अब भी देश में अनेक स्थानों पर पाया जाता है।

कहते हैं, कुछ सदियों पहले एशियायी सिंह एशिया माइनर, अरब, फारस और भारत में बहुतायत से पाया जाता था। तेरहवीं सदी में इजरायल में सिंह का सफाया हो गया। उन्नीसवीं सदी के अंत तक ईराक और ईरान में इसका अंत हो गया। पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में अंतिम शेर सन् १८४२ में मारा गया था।

श्री कृष्ण मुरारी तिवारी से 'कादम्बिनी' के पाठक अपरिचित नहीं। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए उन्होंने देश की वन-संपदा एवं वन्य जीव-जंतुओं के संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी इन सेवाओं के लिए भारत ने उन्हें 'पद्म श्री' अलंकरण से विभूषित भी किया है। सेवा-निवृत्ति के बाद श्री तिवारी वन संबंधी अनेक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संगठनों से संबद्ध हैं।

सफाया सिंह का

हमारे देश में दो शताब्दी पहले सिंह [illegible] के उत्तर में गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार प्रांतों में स्वच्छंद विचरण करते थे, [illegible] धीरे-धीरे इनकी संख्या घटती गयी। अभिलेखों के अनुसार गुजरात के कच्छ क्षेत्र में अंतिम सिंह सन् १८३० में मारा गया था। दिल्ली के पास अंतिम सिंह सन १८३४ में गोलियों से शिकार हुआ था। बिहार में सिंह का अंत सन् १८१४ में हुआ। मध्यभारत में अंतिम बब्बर सिंह सन् १८७३ में मारा गया था। [illegible] १८८४ में भी एक सिंह के होने का [illegible] मिलता है। इसके पश्चात सौराष्ट्र को छोड़ [illegible] में सिंह प्रायः लुप्त प्रायः हो गया।

इतना शक्तिशाली वन्य-पशु किस [illegible] एक छोटे से क्षेत्र में सीमित हो गया, यह [illegible] पहेली हो गयी है। कदाचित सिंह [illegible] व्यवहार में उतना चालाक नहीं था, [illegible] व्याघ्र। कहते हैं, व्याघ्र के शिकार की तुलना [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह का शिकार करना बहुत आसान है।

मेरे एक मित्र भारतीय नागरिक सेवा (इंडियन सिविल सर्विस) के सदस्य थे। वे बतलाते थे कि सिंह का पूरा परिवार जिसमें चार-पांच सदस्य होते थे, शिकारी कुछ घंटों में साफ कर देते थे।

अंतर सिंह और व्याघ्र के स्वभाव में

कारण, सिंह जब अपने मारे शिकार को खाने में व्यस्त रहता है तो शिकारी निशाना लगाकर एक सिंह को धराशायी कर देता है, अन्य बचे सदस्य गोली की आवाज से दूर भाग जाते हैं, पर एक आध घंटे में पुनः शिकार को खाने आ जाते हैं। शिकारी अब दूसरे सिंह को मार गिराता है। पुनः बचे सिंह भाग जाते हैं, पर फिर आ जाते हैं। इस प्रकार पूरा परिवार साफ हो जाता है।

व्याघ्र के साथ ऐसा नहीं होता। जरा भी खटका हुआ, वह भागकर दूर चला जाता है और फिर शायद ही लौटकर आता है।

चतुर व्याघ्र

एक बार मैं एक पालतू पशु खानेवाले व्याघ्र को मारने मचान पर बैठा था। संध्या होने लगी थी। मैं निराश हो चुका था। परंतु थोड़ी ही देर में देखा कि व्याघ्र अपने शिकार को खाने पहुंच गया। उसने शिकार खाना शुरू ही किया था। मैंने मचान पर बैठे-बैठे यह सोचा कि बहुत से नरभक्षी तथा पालतू पशु-पक्षियों का शिकार किया है, पर अभी तक यह नहीं देखा है कि व्याघ्र शिकार किस प्रकार खाता है। अतः मैंने निर्णय लिया कि मैं चार-पांच मिनट व्याघ्र को

सन् १९५६ में सिंहों के संरक्षण के लिए उत्तर प्रदेश में एक संरक्षित अभयारण्य बनाया गया। समारोहपूर्वक उसमें गिर-वन से लाये तीन सिंह भी छोड़े गये। कालांतर में उनकी वंश-वृद्धि पर संतोष भी व्यक्त किया गया। पर सच्चाई क्या थी ?

शिकार खाते देखूंगा।

मेरा मचान बहुत अच्छा था। मुझे व्याघ्र साफ-साफ दिखायी दे रहा था। हवा भी बहुत धीमी थी। मैं दम साधे उसे देखने का प्रयत्न कर रहा था। पर कुछ ही क्षणों पश्चात व्याघ्र ने अपनी गरदन ऊपर उठायी और फिर धीरे से झुरमुट में ओझल हो गया। मैंने सोचा, वह शायद किसी कारण से चला गया है। अपने शिकार पर फिर आएगा। मैंने घंटों प्रतीक्षा की पर व्याघ्र पुनः लौटकर नहीं आया। हो सकता है कि व्याघ्र को हवा से मेरी उपस्थिति का पता चल गया हो। यों व्याघ्र जरा-सी आवाज पर एकदम भाग जाता है। शायद यही मूल कारण है कि सिंह सीमित हो गया और व्याघ्र आज भी देश के अनेक भागों में पाया जाता है।

गिर-वन के सिंह

सौराष्ट्र क्षेत्र से भी सिंह का सफाया हो गया होता, यदि तत्कालीन जूनागढ़ के नवाब इस क्षेत्र को अपना व्यक्ति शिकारगाह न बनाये रखते। नवाब साहब ने शायद अपने लिए तो कम पर अपने विशिष्ट शिकारियों विशेषकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह व्यवहार में उतना चतुर नहीं होता, जितना व्याघ्र अर्थात शेर ! अपने इसी स्वभाव के कारण सिंह शिकारियों के शिकार होते रहे ।

वाइसराय, कमांडर-इन-चीफ आदि के लिए अधिक, शिकारगाह बनाये थे । वे इन विशिष्ट व्यक्तियों को सिंह के शिकार पर आमंत्रित करते थे और उनके कृपापात्र बनते थे । काठियाबाड़ क्षेत्र में नियुक्त एक अंगरेज सेना अधिकारी ने अपने तीन साल के प्रवास में अस्सी सिंहों को मौत के घाट उतार दिया था । इसी प्रकार गिर वन में एक अन्य अंगरेज सेना अधिकारी ने दस दिन में चौदह सिंहों का काम तमाम कर दिया था ।

जब तक बहादुर शिकारी तीर-तलवार या भालों से इन वन्य पशुओं का शिकार करते रहे, तब तक इनकी संख्या में विशेष कमी नहीं आयी पर बंदूकों के आविष्कार ने वन्य-पशुओं पर कहर ढा दिया और उनकी संख्या बड़ी तेजी से घटने लगी ।

लॉर्ड कर्जन की दूरदर्शिता

कहते हैं, इस शताब्दी के प्रारंभ में जूनागढ़ के नवाब ने लॉर्ड कर्जन को सिंह के शिकार के लिए आमंत्रित किया परंतु जब लॉर्ड कर्जन को यह पता लगा कि उस समय सिंहों की संख्या केवल बारह रह गयी है, तो उन्होंने आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया । यही नहीं, उन्होंने नवाब से यह अपेक्षा की इस वन्य-जंतु का संरक्षण किया जाए ताकि यह प्रजाति लुप्त-प्रायः होने से बच सके ।

लॉर्ड कर्जन के इस अनुरोध को नवाब ने तुरंत मान लिया और सिंह का शिकार बंद करने की घोषणा कर दी और सिंह एक संरक्षित वन-पशु की श्रेणी में आ गया । सन् १९६८ की गणना के अनुसार गिर वन में १७७ सिंह गिने गये । सन १९७४ की गणना के अनुसार इनकी संख्या १८० हो गयी । और सन् १९७९ की नवीनतम गणना के अनुसार इनकी संख्या २०० बतायी जाती है । गिर वन अभयारण्य का क्षेत्र सन् १९६५ में १,२६५ वर्ग कि.मी. निर्धारित किया गया । बाद में १४७ वर्ग कि.मी. का वन क्षेत्र इसमें और जोड़ दिया गया । इस प्रकार इस समय इस अभयारण्य का क्षेत्रफल १,४१२ वर्ग कि.मी. है ।

उत्तर प्रदेश शासन की पहल

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद ही यह सोचा जाने लगा था कि गिर-वन सिंहों का देश में एक और अभयारण्य स्थापित किया जाए ताकि इस वन्य पशु को लुप्त-प्रायः होने से बचाया जा सके । तत्कालीन उत्तर प्रदेश शासन ने सन् १९५६ में यह निर्णय किया कि सिंह का वैकल्पिक अभयारण्य बनारस-चंद्रप्रभा नदी की घाटी के जंगलों में स्थापित किया जाए । यही नहीं, अन्य वन्य पशुओं के संरक्षण के लिए भी उत्तर प्रदेश सरकार ने सशक्त कदम उठाया । एक वन्य पशु संरक्षण संगठन भी स्थापित किया गया । इस संगठन के प्रमुख एक वरिष्ठ वन संरक्षक बनाये गये तथा उनके अधीन पांच उप वन संरक्षक नियुक्त किये गये । कहना न होगा, देश के सभी राज्यों की तुलना में उत्तर प्रदेश ने वन्य पशु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संरक्षण की दिशा में एक अग्रणी कदम उठाया।

उस समय मैं प्रदेश के लैंसडाउन वन प्रभाग (गढ़वाल जिला) में उप-वन संरक्षक था। सन् १९५६ में जब मेरे एक साथी ने मुझे यह बताया कि प्रदेश सरकार एक वन्य पशु संरक्षण विभाग बनाने पर विचार कर रही है तो विश्वास नहीं हुआ कि इस प्रकार का उच्च स्तरीय संगठन, जिसमें एक वन संरक्षक होगा और पांच उप-वन संरक्षक पद के अधिकारी होंगे, सरकार सृजित करेगी। इसके कुछ ही समय पहले मैंने जोरदार सिफारिश की थी कि ग्रामीणों के लिए ईंधन, चारा-पत्ती, लकड़ी आदि उपलब्ध करने के लिए चार-पांच नये वन प्रभाग बनाए जाएं, पर शासन ने इसे स्वीकार नहीं किया था। वैसे अंतरंग सत्य यह है कि वन्य जंतु संरक्षण विभाग एक व्यक्ति-विशेष को ध्यान में रखकर बनाया गया था। जो हो, कभी-कभी न्यस्त स्वार्थों के लिए किये गये कार्यों का भी अच्छा परिणाम हो जाता है। यह निर्णय इसी का एक उदाहरण है।

पर आश्चर्य तो मुझे तब हुआ, जब अक्तूबर, १९५६ में मुझे ही वन्य जंतु संरक्षण संगठन के अंतर्गत चंद्रप्रभा क्षेत्र का उप-वन्य पशु संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

चंद्रप्रभा अभयारण्य

चंद्रप्रभा अभयारण्य वाराणसी से दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग पचास कि.मी. दूरी पर प्रारंभ होता था। इस अभयारण्य का क्षेत्रफल लगभग पैंतालिस वर्ग कि.मी. रखा गया। यही वह क्षेत्र है, जहां हिंदी के अमर

उपन्यासकार स्वर्गीय देवकी नंदन खत्री ने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्ष व्यतीत किये थे।

यहां चीतल, सांभर नीलगाय, चिनकारा-जैसे वन्य-पशु भी पर्याप्त मात्रा में देखे जाते थे। एक दो शेर (व्याघ्र) तथा पैंथर के होने की भी सूचना मिली थी। इस क्षेत्र के वन पर्णपाती प्रजातियों के थे, जिनमें साल, अर्जुन, और, शीशम, बेहड़ा, बेर, बेल, कोराया, खारवत, झिंगन बांस आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। केवल कुछ स्थानों को छोड़कर सारा क्षेत्र वन का था, अर्थात वृक्षों की घनावट अधिक नहीं थी। यहां भूमि की बनावट पठारी क्षेत्र की तरह है। ऊंची नीची पहाड़ियां, जगह-जगह चट्टानें। भूमि की गहराई कुछ सेंमी. से लेकर एक मीटर की होगी। नदियां-नाले स्थान-स्थान पर पहाड़ों को काटकर बहते हैं। गर्मी में अत्यधिक गरमी पड़ती है, जाड़ा काफी ठंडा होता है। वर्षभर में लगभग १,००० मि.मि. औसत वर्षा होती है।

सिंहों के लिए वैकल्पिक 'घर'

प्रथम पंच-वर्षीय योजना के अंतर्गत चंद्रप्रभा नदी पर बांध बनाकर जल का मध्यम वर्ग का एक जलाशय भी बनाया गया था। इस जलाशय के पानी से चंद्रप्रभा नहर का निर्माण किया गया था, ताकि बनारस जिले के चकिया-चंदौली क्षेत्र में सिंचाई सुनिश्चित की जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके। जलाशय का क्षेत्र अभयारण्य के अंदर पड़ता था, अतः यह आशा की जाती थी कि पानी की उपलब्धि सतत रूप से बनी रहेगी। इस प्रकार हर प्रकार से यह क्षेत्र सिंह के वैल्पिक घर के लिए उपयुक्त प्रतीत हो रहा था। पर एक कठिनाई थी, वह यह कि इस क्षेत्र के अंतर्गत अनेक छोटे-छोटे गांव थे, जहां के निवासी थोड़ी-बहुत खेती करते थे और जीविका-पालन के लिए गाय, भैंस रखते थे। इनके जानवरों की संख्या हजारों में थी। अतः प्रारंभ में शासन को यह राय दी गयी कि जब तक अभयारण्य क्षेत्र के अंतर्गत गांव बने रहते हैं, गिर-वन के सिंहों का छोड़ा जाना उपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि सिंह इन किसान के जानवरों को खा जाएंगे। पर शासन ने यह सुझाव नहीं माना और आदेश हुआ कि पैंतालिस वर्ग कि.मी. का क्षेत्र कंटीले तारों से घेर दिया जाए।

मुझे इस बाड़ की उपयोगिता पर तनिक भी विश्वास नहीं था। अंदर के गांव के आने-जानेवालों के लिए स्थान-स्थान पर गेट लगाने का प्रावधान किया गया। कई स्थान ऐसे थे, जहां गहरे नाले आ जाते थे, उन्हें कंटीले तारों से बंद करना संभव नहीं था।

मैंने अपने वन्य-पशु संरक्षक को इन कठिनाइयों से न केवल अवगत कराया, बल्कि उन्हें यथास्थान लाकर स्थिति को भी दिखाया। वे मुझसे सहमत हो गये कि बाड़ उपयोगी नहीं होगी, फिर भी उन्होंने कहा कि वे लखनऊ जाकर शासन से परामर्श करने के पश्चात् ही अंतिम आदेश प्रसारित करेंगे।

लखनऊ पहुंचकर

उन्होंने मेरे व्यावहारिक सुझाव को अमान्य कर दिया और आदेश यही हुआ कि बाड़ अक्तूबर, १९५७ के अंत तक पूरी हो जानी चाहिए। इसके लिए चौदह लाख रुपये की स्वीकृति भी दे दी गयी। बाड़ का काम युद्ध स्तर पर प्रारंभ कर दिया गया।

राज्य स्थित सचिवालयों और केंद्र सरकार के सचिवालयों के वरिष्ठतम अधिकारी जनता, विशेषकर गरीब, अनपढ़ मजदूर वर्ग से कितने दूर हो गये हैं, यह उसका उदाहरण है।

ग्रामीणों की व्यथा-कथा

इस बीच मेरे साथ एक ऐसी घटना हुई। जो आज भी मुझे याद है। यह बात संभवतः सितम्बर, १९५७ की होगी। मैं एक दिन बनारस से चंद्रप्रभा अपनी सरकारी जीप स्टेशन-वैगन से जा रहा था। चंद्रप्रभा नहर के पास मेरी मोटर रुक गयी। चालक उतरकर उसे ठीक करने लगा। मैं भी नीचे उतर आया। जैसा कि प्रायः ऐसे स्थानों पर होता है थोड़ी देर में कौतूहलवश गांव के लोग एकत्र हो गये।

ऐसे अवसरों पर अकसर उनमें से कई एक सांत्वना देने लगते हैं, कुछ अपने घर से दूध-दही लाकर स्वागत करने लगते हैं। हमारे गरीब ग्रामीणों में अब भी मनुष्यता के अधिक गुण हैं। वे प्रायः निश्छल, सीधे-साधे और सत्यवादी होते हैं। मैं तो अपने ग्रामीण भाइयों को आज के पढ़े-लिखे विशेषकर विश्वविद्यालयों से आंग्ल भाषा में प्रशिक्षित व्यक्तियों से बहुत अच्छा समझता हूं।

मैंने ग्रामीणों से उनकी स्थानीय भाषा में बातचीत करना शुरू किया। वे बड़े आत्मीय हो गये। मैंने एक वृद्ध सज्जन से पूछा कि नहर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनने से वे बड़े खुशहाल हो गये होंगे। उत्तर में कई व्यक्ति एक साथ मिलकर बोले, "नहीं साहब, जब से यह नहर बनी है हम लोग भूखों मर रहे हैं। हमें तो आप जंगल की जमीन दे दीजिए ताकि हम लोग परिश्रम कर खेती से अपना गुजारा कर सकें।"

मैं यह सुनकर अवाक् रह गया पूछा "ऐसा क्यों ?"

उन्होंने बताया कि इस गांव के लगभग पचास घर हरिजनों के हैं। उनकी परंपरागत जीविका का साधन था चमड़े की मोट और बांस के छींटे बनाना। इनका उपयोग खेत में पानी देने के समय किया जाता था। परंतु जब से नहर से सिंचाई शुरू हो गयी थी, उनके रोजगार बंद हो गये थे। नहर से तो लाभ हुआ पर बड़े-बड़े किसानों को, जिनके पास खेती के लिए जमीन थी।

विकास योजनाएं-एक प्रश्न

मेरी गाड़ी ठीक हो चुकी थी। ग्रामीणों से यह कहकर कि 'मैं उनकी कठिनाइयों का समाधान निकालने का प्रयत्न करूंगा', आगे चल दिया। चंद्रप्रभा पहुंचते-पहुंचते संध्या हो गयी थी। रात में मुझे बहुत देर तक नींद नहीं आयी। मैं यही सोचता रहा कि कैसी हैं हमारी विकास योजनाएं कि उनके कार्यान्वयन ने एक व्यक्ति-समूह को भूख के कगार पर ला दिया। वैसे यह सोचना कि नहर का बनाना सही नहीं था, यह भी गलत होगा। क्योंकि यदि सिंचाई के साधन बढ़ाये नहीं जाएंगे तो कृषि-उत्पादन में वृद्धि होना संभव नहीं और बिना पर्याप्त

कृषि-उत्पादन के देश का विकास नहीं हो सकता है। अतः सिंचाई के लिए नहर का बनाना आवश्यक और न्यायोचित था। तो फिर क्या गरीब हरिजनों की समस्या का कोई समाधान हो सकता था ?

मैंने सोचा कि जब इस नहर को बनाने के लिए सर्वेक्षण हुआ होगा तो उस सर्वेक्षण में यह भी सम्मिलित किया जाना चाहिए था कि नहर से सिंचाई वाले क्षेत्र में कितने ग्रामीण ऐसे होंगे, जिनकी जीविका का साधन बंद हो जाएगा। सर्वेक्षण दल यदि इस समस्या को विशेषज्ञ समिति में रखता तो हो सकता है यह सुझाव दिया जाता कि नहर के दोनों ओर चालीस-पचास मीटर की पटरी और अधिग्रहीत की जाए और उसमें भूमिहीन हरिजनों से चार-पांच वर्षों तक वृक्षारोपण कराया जाए, ऐसी वृक्ष प्रजातियों का, जैसे बबूल, बांस, आम, महुआ, कटहल आदि। बबूल और बांस की पत्ती पर भेड़-बकरी पालने का काम शुरू कराया जा सकता था और फिर इन जानवरों के चमड़े का उपयोग चप्पल-जूता आदि बनाने में हो सकता है या इस प्रकार हरिजनों को यथास्थान काम उपलब्ध कराया जा सकता था।

काश, हम अपनी विकास योजनाओं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबों को केंद्र मानकर योजना बनाते तो आज तीस करोड़ व्यक्ति भीषण गरीबी-रेखा के नीचे न रहते। मैंने इस विषय पर एक वृहद् नोट तत्कालीन अशोक मेहता समिति (१९५८) को भी दिया था। परंतु लालफीताशाही में इस प्रकार के सुझाव सरकारी आलमारियों में धूल से ढक गये और जहां तक मुझे ज्ञात है, विकास योजनाओं को बनाने में इस प्रकार का दृष्टिकोण कहीं भी नहीं अपनाया जा रहा है। इस समय तो गरीबी उन्मूलन 'जूठन-छोड़न उपयोग' 'ट्रिकिल डाउन इफेक्ट' द्वारा की जा रही है अर्थात् यदि पांच सितारा होटल बनेगा तो अनेक गरीबों को बरतन साफ करने, प्लेट उठाने और कुछ को बचे-खुचे खाने के उपयोग करने का अवसर तो मिलेगा ही।

गिर-वन के सिंह उत्तरप्रदेश में

अक्तूबर के अंत तक पूरे पैंतालिस वर्ग कि.मी. क्षेत्र की घेर बाड़ पूरी हो गयी। उधर गुजरात सरकार से निवेदन किया गया कि वे तीन सिंह-दो मादा और एक नर को पकड़कर वाराणसी भेजने का प्रबंध करें। इस काम की देखभाल के लिए यहां से भी अधिकारी और कर्मचारी भेजे गये। इस प्रकार सिंह छोड़ने का यह प्रथम प्रयास था। यह भी सोचा गया कि यदि सिंह सीधे वन क्षेत्र में छोड़े जाएंगे तो वातावरण एकदम भिन्न होने से शायद वे जीवित न रह सकें। अतः निश्चय हुआ कि वन क्षेत्र के अंतर्गत किसी उपयुक्त स्थान पर एक और बाड़ वाला स्थान बनाया जाए और वहां पर पंद्रह-बीस दिनों के लिए सिंह रखे जाएं।

अप्रत्याशित घटना!

तीन मीटर ऊंची यह बाड़ कंटीले तारों से बनायी गयी और इसमें दो दरवाजे वाला गेट बनाया गया। यह भी निश्चय हुआ कि सिंह छोड़ने का उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री संपूर्णानंद से कराया जाए। इसके लिए गेट के पास एक मचान बनायी गयी। जहां से गेट को खोलकर सिंहों को बाड़े के अंदर करना था। प्रयत्न यह किया गया था कि कम-से-कम भीड़ होने पाए, ताकि सिंह छोड़ने पर परेशान न हो जाएं। फिर भी काफी भीड़ एकत्र हो गयी थी। नियत समय पर एक-एक कर सिंह छोड़े गये। तीनों सिंह बाड़ के अंदर पहुंच गये और गेट बंद हो गया। पर देखते-देखते एक अप्रत्याशित घटना घटी। एक सिंहनी छलांग लगाकर बाड़े के बाहर आ गयी। दर्शकों में भगदड़ मच गयी। मुख्यमंत्रीजी को समझाया गया कि कोई खतरा नहीं है। कैसी विडंबना थी कि सिंहनी अपनी जान बचाने के लिए बाड़ के बाहर कूदकर पास के एक झुरमुट में छिप गयी। दर्शकगण यह समझकर कि उनकी जान अब खतरे में है भाग खड़े हुए। बहरहाल, बिना किसी खतरे के यह समारोह समाप्त हो गया। हां, यह अवश्य हुआ कि दर्शकों में से कइयों के पैंट खराब हो गये।

बाड़ के बाहर निकल गयी सिंहनी प्रायः कई दिन तक बाड़ के बाहर चक्कर लगाती रही। उसको खाने के लिए अलग से पड़्डे दिये जाते थे। लगभग एक माह बाद बाड़ का गेट खोल दिया गया। अब तीनों सिंह साथ हो गये। अगले वर्ष यह सूचना मिली कि सिंहों का परिवार तीन से बढ़कर पांच हो गया है। उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ दो बच्चे भी देखे गये। धीरे-धीरे उनकी संख्या सात, फिर दस, फिर तेरह तक पहुंच गयी। विश्वविख्यात वन जंतु विशेषज्ञ स्व. ई.पी.जी. ने अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों में कहना प्रारंभ कर दिया कि भारतवर्ष में एशियाटिक सिंहों के वैकल्पिक घर का प्रयोग सफल हो गया।

सच्चाई कुछ और थी ?

सच्चाई कुछ और ही थी। सिंहों की संख्या की सूचना स्थानीय वन्य-जंतु परिरक्षण संगठन के छोटे कर्मचारी देते थे। वे शायद बिना पूर्ण सत्यापन किये सिंहों की संख्या बढ़ाते गये। सच तो यह था कि लगभग छह वर्ष के अंर्तगत ही सिंह उस क्षेत्र में रहे ही नहीं। मुझे स्वयं इस क्षेत्र में सन् १९६२ तथा सन् १९६३ में भ्रमण करने का अवसर मिला। मैंने स्थानीय जनता से सिंहों के बारे में पूछताछ की। तरह-तरह की परस्पर विरोधी सूचना प्राप्त होती थी। कोई कहता कि सिंह बिहार के जंगलों में भाग गये, जहां संभवतः उन्हें लोगों ने मार डाला है। कोई कहता था कि रात्रि में उसने सिंह-जैसे जानवर को देखा है। मैंने स्वयं सिंहों को देखने का बहुत प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। मैंने विभाग के उच्च अधिकारियों को यह सूचना दी। विभाग की ओर से विभाग के अति अनुभवी एवं सिद्धहस्त शिकारी अधिकारी को, जो वन संरक्षक के पद पर थे, यह कार्य सौंपा गया कि वे यथा-स्थान निरीक्षण कर यह सूचित करें कि कितने सिंह जीवित हैं। गांववालों ने उन्हें बताया कि उन्होंने अमुक स्थान पर एक सिंह को देखा है। जब वन संरक्षक ने इस स्थान पर रात-दिन एक कर गहन निरीक्षण किया तो उन्हें एक तेंदुआ दिखायी दिया। उनके साथ चल रहा ग्रामवासी तेंदुए को देखकर चिल्लाया कि 'यही है बघवा।'

सीधे-सीधे ग्रामीणों के लिए तेंदुआ, शेर, सिंह सभी 'बघवा' थे। प्रशासन को अंतिम रूप से सूचना दी गयी कि चंद्रप्रभा क्षेत्र में सिंह नहीं हैं। अब विभागीय अधिकारियों की सत्यवादिता पर बड़ी ठेस लगनेवाली थी। बजाय यह कहने के कि सभी सिंह मर गये, विभागीय रिपोर्टों में यह कहा जाने लगा कि कुछ सिंहों को गांव वालों ने मार दिया, कुछ ने बिहार की ओर जाकर जान खो दी और कुछ चंद्रप्रभा की बाढ़ में बह गये। प्रशासन को अंतिम रूप से सूचना दी गयी कि चंद्रप्रभा क्षेत्र में सिंह नहीं हैं। अंतिम रूप से यह स्वीकार किया गया कि सिंहों के वैकल्पिक घर का प्रयोग असफल हो गया।

विभागीय आंकड़े जनता की आंख में किस प्रकार धूल झोंक सकते हैं, उसका यह ज्वलंत उदाहरण है। आंकड़ों के अनुसार देश की गरीबी मिट रही है। पिछले दशक में एक हजार करोड़ वृक्ष लगाने का दावा सरकार करती है, पर कितने वृक्ष लगकर बड़े हो गये हैं इसका निर्णय तो जनता को ही करना पड़ेगा। कुछ लोगों को भय है कि कहीं इस कार्यक्रम की नियति भी सिंहों के वैकल्पिक घर की-सी न हो जाए ?

—सी-३८ पार्क जे-२
महानगर विस्तार
लखनऊ-२२६००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

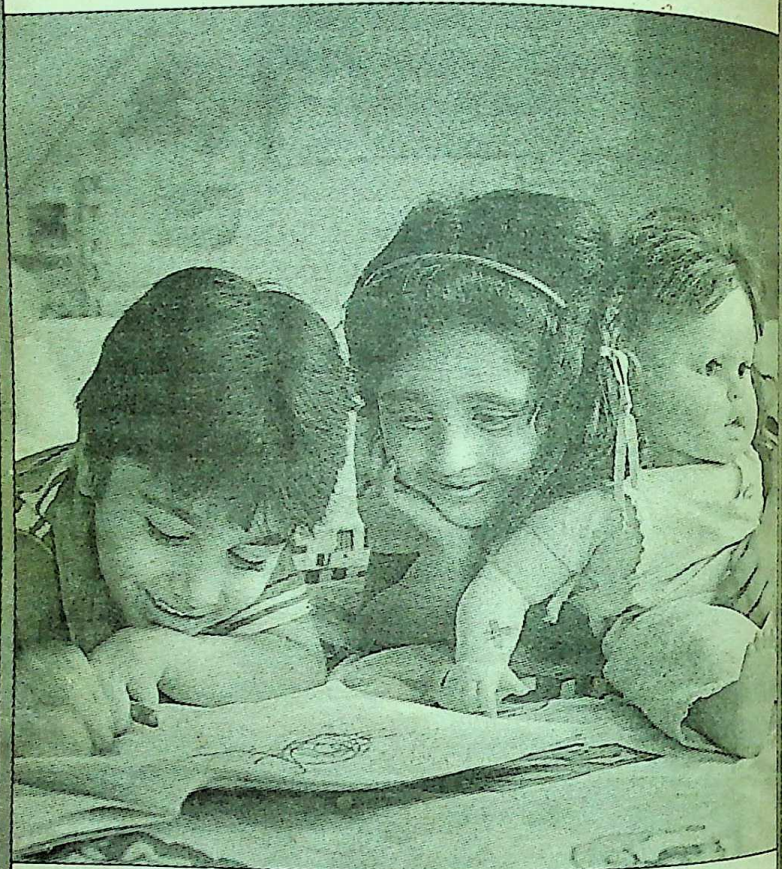

शुक्र है बोरोलीन करीब

सुगन्धित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

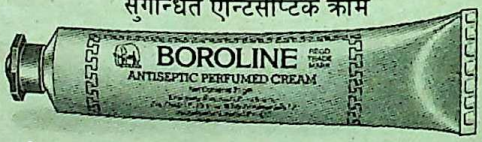

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल आज भी अव्वल

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७००००३

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

Response 1033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाली द्वीप का महामेरु : गुनुंग अगुंग

● अभिराज डॉ. राजेंद्र मिश्र

जावा में उपलब्ध पूर्णवर्मा के शिलालेख से यह स्पष्ट हो चुका है कि चंपा (वियतनाम) कंबुज (कंपूचिया) द्वारावती, सुखोदय, अयोध्या (थाईलैंड) सुवर्णभूमि (बर्मा) तथा कटाइद्वीप (वर्तमान केडाह, मलयेशिया) की ही तरह सुवर्णद्वीप (जावा, सुमात्रा, बाली) में भी हिंदू धर्म एवं संस्कृति की स्थापना ईसा की प्रथम शती में ही हो चुकी थी। सुमात्रा का श्रीविजय साम्राज्य, जिसकी राजधानी पालेम्बंग थी, चीन तक प्रख्यात हो चुका था अपनी सैन्यशक्ति एवं समृद्धि के लिए। उधर मलय प्रायद्वीप में शैलेंद्रों का उत्कर्ष भी पराकाष्ठा पर था। दक्षिणापथ-नरेश राजेंद्र चोल से शैलेंद्रों का दशकों तक संघर्ष होता रहा। शैलेंद्र दो बार चोलों के दुर्धर्ष जहाजी बेड़े से छिन्न-भिन्न हो गये परंतु अंततः संघर्ष स्थायी मैत्री में परिणत हो गया।

संस्कृत काव्य में विजय-वर्णन

शैलेंद्रों की एक शाखा ने मध्यजावा के मतराम नगर में अपना राजवंश सातवीं शती के अंतिम चरण में स्थापित किया। सन्नाह इस वंश का प्रथम शासक था। सन्नाह के दिग्विजयी पुत्र संजय ने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया। मध्यजावा के केडू प्रांत में स्थित बुकिर पहाड़ी पर एक विशाल शिवमंदिर के ध्वंसावशेषों में संजय का चंगल प्रशस्ति लेख मिला है जिसकी तिथि शक संवत् ६५४ (७३२ ई.) है। इसके १२ संस्कृत पद्यों में संजय की विजयों का काव्यमय वर्णन है। मजपहित-वंशी अंतिम जावा नरेश १४७८ ई. में मुसलिम आक्रमण में मारा गया।

इस प्रकार, सातवीं शती से पंद्रहवीं शती के अंत तक जावा निरंतर हिंदू संप्रभुता के अधीन

बाली का मानचित्र भी अद्भुत रूप से मूलभूमि भारत के समान था। यहां तक कि हिमालय-जैसा 'गुनुंग अगुंग' तथा लंका-जैसा 'नूसा-पनीडा' द्वीप भी क्रमशः बाली के उत्तर एवं दक्षिण में थे। इस प्रकार बाली को 'अपना' भारतीय भुवनकोश स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। सुमेरु, अमरावती, गंगा— बाली के धर्माचार्यों ने अपने ढंग से अपने ही द्वीप में स्थापित किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। मतरम, कडिरी, सिंहसारि तथा मजपहित नामों से विख्यात चार राजवंशों के शासन-काल में भारतीय शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्मों का जावा तथा पास के अन्यान्य द्वीपों में भी प्रभूत विकास हुआ। भारतीय पुराणों के संपूर्ण 'भुवनकोश' को जावा के श्रेष्ठ कवियों, विचारकों एवं दार्शनिकों ने यवद्वीप में ही रूपायित कर दिया। सुमेरु, हिमालय, अमृततोया गंगा, विंध्य— सभी जावा में स्थापित हो गये।

पूर्वी जावा में विद्यमान सुमेरु पर्वत (वर्तमान माउंट सुमेरु) द्वीप की संपूर्ण पराभौतिक चेतना का केंद्रबिंदु था। अर्जुनविजय ककविन् के लेखक बौद्धकवि तंतुलर ने (१४वीं शती ई.) ग्रंथ के मंगलाचरण में ही इष्टदेवता के रूप में **'ओम् श्रीपर्वतराजदेव हुरिपिङ् सर्वप्रमाणेञ्जगत्'** कहकर सुमेरु की वंदना की। नागरकृतागम के कवि प्रपंच (तंतुलर का ही समकालीन) ने भी 'पर्वतनाथ एवं गिरींद्र' के रूप में, कौरवाश्रम ककविन् के लेखक ने 'राजपर्वत' के रूप में तथा अर्जुनविवाह के लेखक म्पू कण्व ने वीरअर्जुन की तपस्यास्थली के रूप में ('इंद्रपर्वत' के रूप में) सुमेरु की वंदना की। महाभारत में वर्णित हिमालय का 'इंद्रकील' शिखर ही कण्व-कल्पित इंद्रपर्वत है। पंतरन् शिवमंदिर (पूर्व जावा) में भी 'अचलपति' की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी जिसके दर्शनार्थ मजपहित का सार्वभौम सम्राट् हयम वुरुक (राजसनगर) प्रतिवर्ष आता था, ऐसा उल्लेख प्रपंचकृत नागरकृतागम में मिलता है।

पिछले दस महीनों के गहन अध्ययन एवं अध्यापन-क्रम में मैंने अनुभव किया कि समस्त द्वीपों में स्थायी शांति कभी नहीं रही। भारत की ही तरह राज्यलिप्सा के मोह में द्वीपों में भी निरंतर षड्यंत्र, हत्या, युद्ध, छल, छद्म एवं सत्तांतरण का बोलबाला रहा। जनता कभी सुख की नींद नहीं सो सकी। जावा में सम्राट् एरलंग, कृतनगर तथा हयम वुरुक के शासनकाल अपवाद माने जा सकते हैं।

बाली द्वीप और भारत की समानता

परंतु जावा का पड़ोसी बाली द्वीप प्रथम के आरंभ से ही सुख की नींद सो रहा था। न तो राजसत्ता का उतार-चढ़ाव था न रक्तपात ! यहां की हिंदू-संस्कृति जावा से प्रभावित थी ही, परंतु भारत के साथ उसका अपना सीधा संबंध भी था। बाली में विकसित शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म जावा की तुलना में कहीं अधिक परिष्कृत, मौलिक और अपनी मूलभूमि के समीप था। यहां की 'प्राचीन बालीभाषा' (ओल्ड बालीनीज्) की कवि-भाषा (ओल्ड जावानीज्) के समान संस्कृत-बहुल थी। प्राचीन बाली की लिपि भी दक्षिण भारतीय पल्लव लिपि पर आश्रित थी। जावा के साथ इन सारी समानताओं के बावजूद बाली का शांत, निष्कंटक वातावरण दार्शनिक, चिंतन एवं कर्मकांडीय व्यवस्था सर्वथा अनुकूल था।

फलतः बालीद्वीप ने जावा से एकदम अलग होकर अपनी अस्मिता स्थापित की। बाली का मानचित्र भी अद्भूत रूप से मूलभूमि भारत के समान था। यहां तक कि हिमालय के 'गुनुंग-अगुंग' तथा लंका जैसा-'नूसा-पेनिदा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

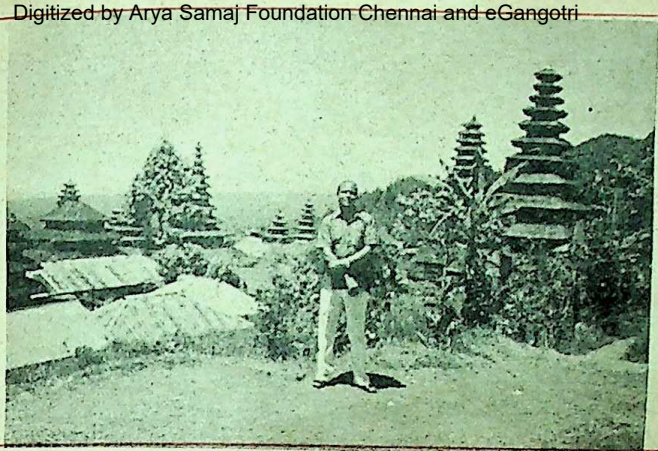

महामेरु का सर्वाधिक प्रसिद्ध ऊंचा शिखर। दायीं ओर है कुंतुग कुंग राजवंश का पितर मंदिर। बायीं ओर है ग्यारह शिखरोंवाला ब्रह्मा मंदिर

द्वीप भी क्रमशः बाली के उत्तर एवं दक्षिण में थे। इस प्रकार बाली को 'अपना' भारतीय भूमंडलकोश स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। सुमेरु, अमरावती, गंगा— बाली के धर्माचार्यों ने अपने ढंग से, अपने ही द्वीप में स्थापित किये। जावा से महान् धर्मचिंतक कुतुगुपन सम्राट उदयन के शासनकाल (१०वीं शती ई.) में तथा प्रसिद्ध तांत्रिक धर्माचार्य दंदार्यं (उपनाम द्विजेंद्र, बहुराहु) सोलहवीं शती में, गेलेलनरेश बाटुरेंगांगा के समय में आया। इन्हीं श्रेष्ठ आचार्यों ने बाली के हिंदू धर्म, कर्मकांड एवं आचार-संहिता को एक मौलिक रूप दिया।

१०५६० फुट ऊंचा गुनुंग-अगुंग बाली प्रांत की राजधानी डेनपसार से, ईशान कोण में प्रायः ७० कि. मी. दूर है। नगर के पूर्वी छोर पर, भूमध्यरेखावर्ती सानुरबीच राजमार्ग पर पहुंचते ही पर्वत का भव्यमाल स्पष्टतः दीखने लगता है।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा !

कविकुलगुरु कालिदास कुमारसंभव का प्रारंभ करते हुए ही कहते हैं— 'उत्तर दिशा में देवतात्मा (हिमालय नामक नगाधिराज) है !' वर्ष के प्रथम दिन अर्थात् पिछली एक जनवरी को मैं अपने कनिष्ठ मित्र वायान रेदिग के साथ बाली द्वीप के अपने महामेरु अथवा सुमेरु के दर्शनार्थ चला तो, नगर से बाहर निकलते ही सुमेरु-शिखर दृष्टिपथ में आ गया और मैं स्वभावतः कुमारसंभव का उपर्युक्त श्लोक गुनगुनाने लगा। गुनुंग-अगुंग के विषय में काफी कुछ पढ़ रखा था। बाली के पुराणों, मिथकों तथा जनश्रुतियों में रचे-बसे महामेरु के सारे संदर्भ मेरी स्मृति में थे। बस भावना, कल्पना एवं सपनों की उस चिर-संस्तुतित पर्वत प्रतिमा का चाक्षुष प्रत्यक्ष भर करना बाकी था।

बाली इंडोनेशिया गणतंत्र का सत्ताईसवां राज्य है। पूर्व-पश्चिम में प्रायः २१० कि. मी. तथा उत्तर-दक्षिण में १२० कि. मी. विस्तृत, पूरा द्वीप आठ 'केबूपतान' (कमिश्नरियों) में विभक्त है— बुलेलेंग, जेंब्रान, तबानान, बादुंग, गियान्यार, बांगली, क्लुंगकुंग तथा करंगसम ! गुनुंग-अगुंग द्वीप के पूर्वोत्तर भाग में करंगसम में स्थित है। डेनपसार से गियान्यार होते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लुंगकुंग तक हम थोड़ा उत्तर झुकते हुए, सीधे पूर्व दिशा में गये। क्लुंगकुंग से वाहन बदलकर १६ कि. मी. सीधे उत्तर दिशा में बढ़े। इसके बाद ही प्रारंभ हो गयी महामेरु की चढ़ाई।

वाहन जैसे-जैसे ऊंचा उठ रहा था धरातल वैसे-ही-वैसे और अधिक खुलता जा रहा था। पहले तो पाश्ववर्ती सीमाएं दिखीं, फिर दूरवर्ती सीमाएं भी दिखने लगीं और 'तीर्त-जांबुल' पहुंचने पर तो सारा द्वीप ही 'कंदुक'-जैसा प्रत्यक्ष दीखने लगा। यह अपनी ही दृष्टि की अक्षमता एवं विवशता थी कि हम संपूर्ण बाली को नहीं देख पा रहे थे। फिर भी द्वीप की दक्षिणी, पूर्वी सीमांत-भूमि, मध्याह्न रवि की ऊष्मा से उद्दीप्त प्रशांत महासागर की कल्लोल-बहुला जलराशि के साथ, प्रत्यक्ष दीख रही थी।

तीर्त-जांबुल : सुमेरु उष्णीष

गुनुंग-अगुंग के मुख्य शिखर से प्रायः सात कि. मी. पूर्व ही एक छोटे शिखर की पूरी परिक्रमा करनी पड़ती है। इसे बुकिर जांबुल अथवा जांबुल शिखर कहते हैं। परंतु बाली के पुराण ग्रंथों में इसे सुमेरु का उष्णीष (पगड़ी) मानकर एक पवित्र तीर्थ का महत्त्व दिया गया है। उष्णीष विशुद्ध संस्कृत शब्द है तथा जांबुल उसका स्थानीय पर्याय ! दोनों ही शब्द उशना बाली तथा जतूर योग आदि बाली के ग्रंथों में प्रयुक्त हैं।

तीर्त-जांबुल में प्रकृति का अखंड वैभव है। लतावितानों एवं घने झुरमुटों की अटूट परंपरा, हजारों रंग की वनस्पतियां जिन्हें मैंने दक्षिण भारत अथवा हिमालय की अंतरंग यात्राओं में भी नहीं देखा था— वे सब दिखीं। बांस, केले और नारियल ने 'द्वीप-पुरुष' के शरीर की रोमराजियां हैं। द्वीप में आप एक कि. मी. भी ऐसा नहीं चल सकते जो सघन वेणुवनों अथवा केले झुरमुटों से न गुजरता हो। संपूर्ण द्वीप हरीतिमा से ओत-प्रोत है। यद्यपि तीर्त-शिखर पर भी अनेक भव्य स्थान हैं देखने फिर भी समयाभाव के कारण हम वहां रुके। बस, वाहन में बैठे-बैठे 'पर्वत-उष्णीष' का बाह्यरूप देखते सुमेरु ओर बढ़ गये।

महामेरु के दिव्य-दर्शन

मध्याह्न से कुछ पूर्व ही हम सुमेरु पहुंच गये थे। टैक्सी बस-स्टेशन पर गयी। यहां से महामेरु के श्रीचरणों की दूरी प्रायः दो कि. मी. है। पूर्वाभिमुख चलना पड़ता है। किराये पर साइकिलें, स्कूटर्स तथा मोपेड उपलब्ध परंतु मैंने पैदल चलना ही ठीक समझा। उत्तरोत्तर ऊंची होती जा रही थी, अधिक चलते-चलते सांस फूलने लगी। परंतु के दोनों ओर पोर-पोर गदराये चंपक-पुष्प तीव्र गंध मानो सारी थकावट निगलती थी। सारा वातावरण महमहा उठा था। की घनीभूत गंध, गाढ़े रस-जैसी मीठी प्रतीत हो रही थी।

कुछ ही क्षणों में मैं और रेटिना श्रीचरणों में आ पहुंचे। अब पूर्व दिशा में समक्ष बाली के अचलदेवता का भव्य और हमारे चारों ओर स्थित थे इस पर के प्रायः २५ मंदिर ! इतने समीप आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

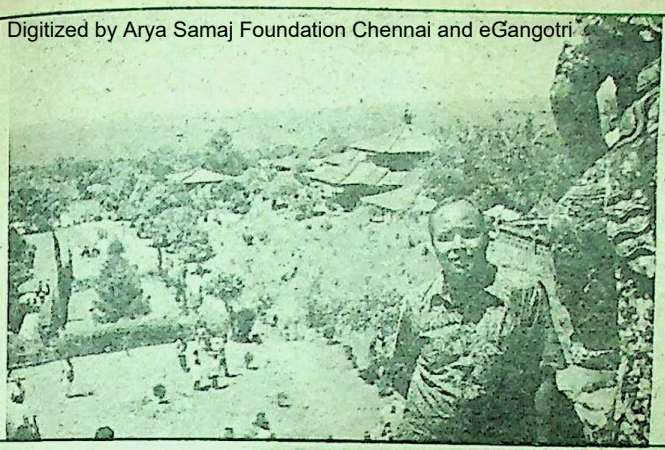

वैसाकीह मंदिर के प्रांगण से महामेरु का दर्शन

भी हम शिखर से प्रायः पांच-सात कि. मी. दूर थे। पर्वत का निचला प्रायः दो तिहाई भाग तो सांद्र हरीतिमा से भरा-पूरा दीख रहा था। परंतु ऊपर का एक तिहाई भाग एकदम उजाड़ एवं वनस्पति-शून्य ! शिखर पर एक विशाल दरार भी स्पष्ट दीख रही थी, जिसका रहस्य मैं रेदिग से यात्रापथ में ही सुन चुका था।

सन् १९६३ ई. में एक दिन अचानक महामेरु राख, लावा तथा शिलाखंड उगलने लगा। सारा द्वीप यह दृश्य देखकर कांप उठा। खौलते लावे की नदी हजारों घरों को निगल गयी। सब कुछ इतना अप्रत्याशित था कि लोग भाग भी नहीं सके। और भागते भी कहां ? राख के बादल इतने घने थे कि बाली में तीन दिन तक सूर्य दीखा ही नहीं। दिन एवं रात का भेद ही मिट गया। रेदिग का गांव शिवांग महामेरु से प्रायः ७० कि. मी. दूर है, परंतु वहां भी जमीन पर एक इंच मोटी महीन राख की पर्त जम गयी थी।

करंगसम रिजेंसी का शहर अमलापुर पुराने स्थान से काफी दूर दक्षिण में पुनः बसा है। पुराना नगर लावे की चपेट में ढह गया। 'तीर्त गंगा' की यात्रा में मैंने उस भैरव विनाश-लीला के अवशेष देखे। राख के विशाल पर्वत चारों ओर बिखरे पड़े हैं। यदि उस राख का भवन-निर्माण में उपयोग किया जाय तो पूरी शती में भी शायद ही उसका दशांश खर्च हो सके। मेरे मित्र रेदिग तब प्राइमरी स्कूल के छात्र थे। परंतु द्वीपवासियों की दहशत तथा स्वयं अनुभूत महामेरु-कोप की स्मृति अभी भी उन्हें है।

कौन जाने महामेरु का 'ज्वालामुख' कितना लंबा-चौड़ा है ? फिर भी उसे दूर से ही स्पष्टतः देखा जा सकता है। तीन दिनों की उसी अजस्र अग्निवर्षा में महामेरु का शिखर दग्ध हो गया। सारी वनस्पतियां जलकर राख हो गयीं। जब मैं शिवांग में रेदिग के दादा से मिला तो उन्होंने बताया कि अपने बचपन में उन्होंने एक बार पहले भी महामेरु का यही रूप देखा था, परंतु वह 'उजान अओन' अर्थात् राख-लावा की वर्षा इतनी भयावह तथा संहारक नहीं थी। दादाजी प्रायः अस्सी वर्ष के हैं अतः सुमेरु का पुराना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वालामुख वर्तमान शती के प्रथम दशक में फूटा होगा।

वस्तुतः पूरा बाली द्वीप भयंकर ज्वालामुखियों की पेटी में स्थित है। गुनुंग-अगुंग के पश्चिमोत्तर कोण में स्थित माउंट-बाटुर भी १९१७ तथा १९२६ में बुरी तरह सक्रिय हो उठा था। एक अधिकृत विवरण के अनुसार सन् १७ के ज्वालामुखी में पैंसठ हजार घर, ढाई हजार मंदिर तथा १३७२ व्यक्तियों का विनाश हुआ था।

चूंकि बालीवासियों की दृष्टि में महामेरु भगवान् 'अतितिय अर्थात् अचिंत्य (परमेश्वर शिव) का ही विग्रहभूत है अतः द्वीप की धर्मप्राण जनता ने इस ज्वालामुखी को भी प्रलयंकर शिव का 'महासंहारक कोप' ही माना। बाली के गांव-गांव में अतितिय की कोपशांति के लिए पुरा पुसेह (विष्णु-मंदिर), पुरा देसा (ब्रह्मा-मंदिर), पुरा दलेम (शिव-मंदिर) तथा पुरा दद्या (पितरों का मंदिर) में महीनों पमंकू (पुजारी) तथा पेडंडा (वेदज्ञ आचार्य) विशिष्ट पूजा संपन्न करते रहे।

मिथकीय व्यक्तित्व : जनश्रुतियों का आवरण

यह कहना कठिन है कि गुनुंग-अगुंग को महामेरु अथवा सुमेरु की गरिमा कब प्राप्त हुई, परंतु बाली के विद्वान् पंडितों, शास्त्रविदों एवं प्रबुद्ध लोगों की दृष्टि में वह एक शाश्वत देवनिलय है। भारतीयों के लिए जो महिमा कैलास अथवा मेरु की है, जावावासियों के लिए जो महिमा माउंट-सुमेरु की है, वही गरिमा एवं महिमा माउंट-अगुंग की भी है बाली के लिए। बाली के 'ततुर' ग्रंथों (=तत्त्व दर्शन, धर्मशास्त्र) में तो इसे संपूर्ण पृथ्वी की नाभि (केंद्रबिंदु) माना गया ततुर-व्याख्याओं के अनुसार यह 'ब्रह्मांड (कॉस्मिक माउंटेन) है तथा संपूर्ण मानव पिता (संरक्षक) है। निश्चय ही बालीवा की माउंट-अगुंग के प्रति ये धारणाएं ही आयातित हैं क्योंकि श्रीमद्भागवत अनेक पुराणों में उपलब्ध भुवनकोश में की परिकल्पना भी इसी रूप में की गई

परंतु इन मिथकों पर जनश्रुतियों का भी कम नहीं है। एक जनश्रुति के जावा के इसलामीकरण के बाद, माउंट पर रहनेवाले, संस्तब्ध हिंदू देवतओं बाली-द्वीप जाने का निश्चय किया। तब द्वीप एकदम समतल तथा जनशून्य था को अपने रहने के लिए, प्रतिष्ठा एवं गरि ही अनुकूल, ऊंचे स्थानों की आवश्यकता फलतः उन्होंने चारों दिशाओं में चार पर्वतों में निर्मित किये—उत्तर में बाटुर, पश्चि बटुकरु, पूर्व में अगुंग तथा दक्षि पर्वत-जैसा ही एक ऊंचा पठार—जि पेजातू !

एक अन्य जनश्रुति, जिसका कुछ 'जतूरयोग' नामक एक (ताड़पत्र-लिखित पांडुलिपि) में भी मि के अनुसार बाली एवं लोंबोक द्वीप के जावा से ही स्थानांतरित होकर यहां आये विवरण के अनुसार महामेरु गुनुंग-अगुंग पर्वत है। इसके पश्चिम में बटुकर, उ बाटुर, पूर्व में माउंट रेंजाम (लोंबोक एकमात्र पर्वत) तथा दक्षिण में बुकित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थित है।

पुराकथाओं एवं जनश्रुतियों का शब्दार्थ नहीं अपितु संकेत ही ग्रहण करना चाहिए। अगस्त्य की आज्ञा से दंडवत् लेटा विंध्य, प्रत्येक वृक्ष को चंदन बना देनेवाला मलय अथवा भारत-लंका के बीच समुद्र में छिपा बैठा मैनाक कम आश्चर्य नहीं पैदा करते। मानी बात है कि जावा का इसलामीकरण एक ऐतिहासिक घटना है जो १५ वीं शती के अंतिम चरण में घटी। पिता की मृत्यु के बाद, भयभीत मजपहितवंशी राजकुमार अपने कुटुंबियों, पुरोहितों एवं सामंतों के साथ, सागर पार कर बाली द्वीप भाग आया और वर्तमान क्लुंगकुंग रिजेंसी में स्थित गेलगेल नगर में उसने स्वयं को 'देव अगुंग' नाम से बाली का अधिपति घोषित कर दिया।

परंतु १५ वीं शती में ये पर्वत बाली में निर्मित हुए हों अथवा जावा से उठकर बाली द्वीप में आये हों—दोनों ही लोकपरंपराएं सार्थक प्रतीत नहीं होतीं। संभवतः इनकी परिकल्पना गांव-गिरांव के अर्धशिक्षित किस्सागो ग्रामवृद्धों द्वारा जनता के मनोरंजनार्थ की गयी होगी। अन्यथा सत्य यही है कि माउंट-अगुंग तथा बाली के अन्य पर्वत सृष्टि के प्रारंभ से ही यथास्थान स्थित हैं। भारत तथा जावा के हिंदुओं की ही पद्धति पर बाली द्वीप के हिंदुओं ने भी, संभवतः आव्रजन के प्रारंभिक चरण में ही (प्रथम शती ई.) माउंट-अगुंग को अपना 'महामेरु' मान लिया होगा!

देवभूमि : तपोभूमि

प्राचीन जावी तथा प्राचीन बाली भाषाओं में गुनुंग का अर्थ है—'पर्वत' और अगुंग का अर्थ है श्रेष्ठ, महान्! इस प्रकार गुनुंग-अगुंग का अर्थ है—श्रेष्ठ पर्वत, पर्वतराज! यह शब्द हिमालय के लिए प्रयुक्त 'नगाधिराज' अथवा जावी कवियों द्वारा अपने सुमेरु के लिए प्रयुक्त पर्वतराज, राजपर्वत, गिरींद्र अथवा अचलपति से कतई भिन्न नहीं है। बाली द्वीप के पुराणों (ब्रह्मांडपुराण) तथा पर्वों (गद्य ग्रंथों) में उपलब्ध विवरणों के अनुसार हिंदू धर्म इस द्वीप में महर्षि मार्कंडेय एवं अगस्त्य (शिवगुरु) द्वारा लाया गया। दोनों महर्षियों ने महामेरु अगुंग पर घोर तप किया। कालांतर में कुतुरान तथा बहुराहु (द्विजेंद्र नीरार्थ) ने भी यहां तपस्या की तथा अनेक मंदिरों का निर्माण किया।

परंतु महर्षि मार्कंडेय द्वारा स्थापित पंचदेवता मंदिर सर्वाधिक प्राचीन है। राजमार्ग की समाप्ति के बाद जब हम प्रशस्त समतल भूमि पर पहुंचते हैं तो मंदिर-शिखरों का एक अद्भुत दृश्य हमें चारों ओर दीखता है। जावा के समस्त हिंदू-मंदिर (प्रांबवान् बोरोबुदुर, पंतरन् आदि) भारतीय मंदिरों-जैसे ही शिखर-शैली के हैं। परंतु बाली के सभी मंदिर 'मेरुशैली' के हैं। ये मेरु निश्चित रूप से विषम-संख्या में होते हैं तथा उत्तरोत्तर छोटे होते जाते हैं। इनका निर्माण पत्थर, लकड़ी अथवा द्वीप में उपलब्ध एक चिरस्थायी 'खस'-जैसी घास से होता है।

यद्यपि बाली में शैव, वैष्णव तथा बौद्ध तीनों ही संप्रदायों के लोग हैं। प्रत्येक गांव में अनिवार्यतः शिव, ब्रह्मा एवं विष्णु के मंदिर हैं। फिर भी व्यवहारतः शैव संप्रदाय का वर्चस्व सर्वोपरि है। भगवान् अतितिय (परम शिव) ही द्वीपाधीश्वर हैं। वही स्वयं को त्रिधा विभक्त कर ब्रह्म शिव (ब्रह्मा) सदाशिव (विष्णु) तथा परम शिव (शिव) रूप में अवस्थित हैं। भटार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु, भगवान इन्द्र, भगवान वसु आदि सब देवता अतितिय के ही अंश हैं। इन समस्त देवों के साथ, अचिंत्य परमेश्वर शिव महामेरु गुनुंग-अगुंग पर निरंतर निवास करते हैं। इस प्रकार माउंट-अगुंग बाली द्वीप की शाश्वत देवभूमि एवं तपोभूमि है।

वैसाकीह मंदिर एवं त्रिमूर्ति

समतल प्रांगण के समक्ष सर्वप्रथम जो पर्वताकार विशाल मंदिर दीखता है उसे 'वैसाकीह' मंदिर अथवा 'मदर टेंपल' कहते हैं क्योंकि यही देवालय संपूर्ण द्वीपवासियों का मूल देवालय है। वस्तुतः यह महामेरु का 'पुरा दलेम' (शिव मंदिर) है परंतु इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके प्रांगण में शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु (त्रिमूर्ति) के पद्मासन (अधिष्ठान-पीठ) परस्पर समन्वित-शैली में स्थापित किये गये हैं। यह त्रिदेव-ऐक्य तथा भूतभावन शिव की सर्वदेवमूलकता का रूपांकन है। अन्यथा संपूर्ण द्वीप में, प्रत्येक गांव में तीनों देवों के मंदिर एक-दूसरे से प्रभूत दूर तथा पृथक् होते हैं। शिव मंदिर तो अनिवार्यतः 'शेत्र' (क्षेत्र अथवा श्मसान) के पास होता है।

महामेरु पर भी ब्रह्मा एवं विष्णु के पृथक् मंदिर हैं। फिर भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को हम एक साथ वैसाकीह मंदिर में देख सकते हैं। मंदिरों में प्रवेश सर्वथा वर्जित है। केवल पर्वों पर प्रवेश संभव है, वह भी मंदिर की वेषभूषा में (बाली द्वीप की लुंगी, कमर में फेंटा तथा सिर पर मुकुट-जैसी भव्य पगड़ी। अपनी अन्य यात्राओं में तीर्थ एंपुल (तंपाक सिरिग) पंतरन ससीह मंदिर (पेजेंग) तथा दुर्गा [illegible] (कुतरी गांव) के दर्शनार्थ [illegible] कार्यालय से ये पारंपरिक वेष-भूषाएं [illegible] गो कि रेदिग से मेरा परिचय जानने [illegible] किसी ने मुझ से 'शुल्क' नहीं स्वीकार [illegible]

गुनुंग अगुंग के प्रायः २५ [illegible] भलीभांति देखने के लिए कई दिन [illegible] क्योंकि प्रत्येक मंदिर जानलेवा चढ़ाई [illegible] सारे मंदिर सात-आठ कि. मी. की [illegible] हैं। पर्वों के अवसर पर इन देवालयों की [illegible] देखते ही बनती है। संपूर्ण द्वीपवासी [illegible] तथा हजारों पर्यटक महामेरु पर केंद्रित [illegible] हैं। पारंपरिक पूजाएं, प्रतिमाभिषेक, [illegible] कर्मकांडीय उपचार संपन्न किये जाते हैं। [illegible] तथा शिव के अतिरिक्त पंचदेव, नवग्र[illegible] एकादश रुद्र के मंदिर, क्लुंगकुंग के [illegible] का पुरा दद्या (पितर मंदिर, फेमिली [illegible] सबका अद्भुत श्रृंगार किया जाता है।

अपराह्न दो बजे तक मैं इन भव्य देव[illegible] को परखता रहा। मंदिरों की बस्ती में, [illegible] ऊंचे स्थल पर पहुंच चुका था। यहां से [illegible] दिशा में बटुकरु पर्वत के शिखर प्रत्यक्ष [illegible] रहे थे। महामेरु के सैकड़ों मंदिर-मंदि[illegible] ध्वजों की तरह फहराते प्रतीत हो रहे थे। [illegible] दृश्य गंधर्वनगर-सा प्रतीत हो रहा था।

लौटने की चिंता होने लगी थी क्योंकि [illegible] ने बताया था कि डेनपसार के लिए [illegible] वाहन चार बजे तक ही मिल पाते हैं। [illegible] विनत भाव से महामेरु को अपनी [illegible] प्रणामांजलि अर्पित की और रेदिग के [illegible] पड़ा बस-स्टेशन की ओर!

—विजिटिंग प्रोफेसर (संस्कृत), [illegible] यूनिवर्सिटी, डेनपसार, बाली द्वीप (इंडोने[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

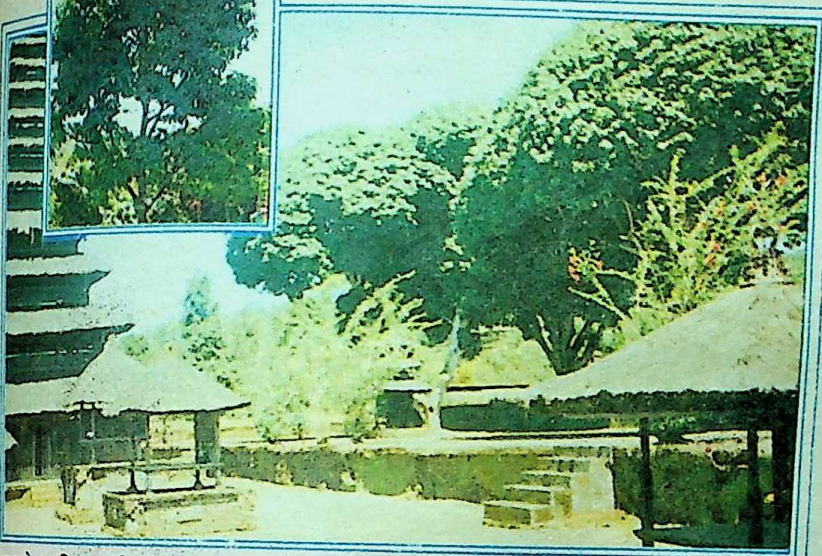

पुगापुसेह (विष्णु मंदिर) का एकादश मेरुयुक्त एक दृश्य

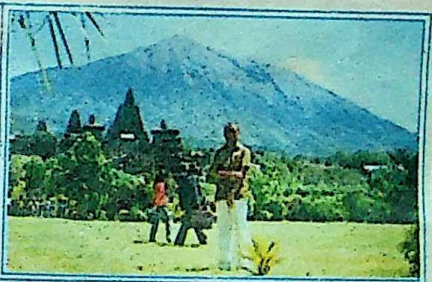

सन १९६३ के ज्वालामुख की दरार स्पष्ट दिखायी दे रही है।

महामेरु परिसर का प्रमुखतम वैसाकीह मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया : हिमांशु मजरकी

भेड़ाघाट का जलप्रताप :
यहां रचती है नर्मदा
नये-नये अचरज

छाया : प्रेम कपूर

छाया : अनुराग श्रीवास्तव

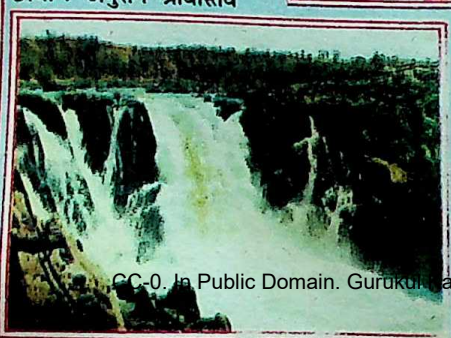

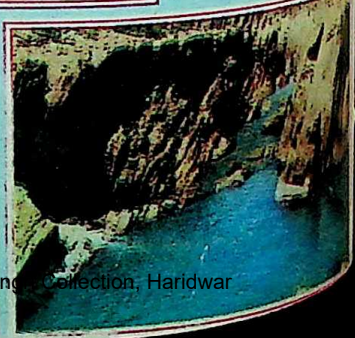

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थरदार पन्नों पर पुलकावलि के छंद

● डॉ. श्रीराम परिहार

नर्मदा के पत्थरों-रेत पर बनी छोटी-छोटी झोपड़ियां। बीच में से पतली-संकरी गली। गली के दोनों ओर की टापरियों में लकड़ी के पटिये रखकर बनाया गया तीर्थ-स्थल की दुकानों का स्वरूप। उन दुकानों— जैसी दुकानों पर बैठी सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश, गौरी-शंकर राधा-कृष्ण, शिवलिंग की संगमरमरी मूर्तियां। साथ ही जीवन का श्रृंगार करनेवाले बेडौल पत्थरों के सुघड़ आभूषण। इतने सारे भगवानों और मनुष्य की सूरत को संवार देने की कूवत रखनेवाले अनेक पत्थरों के उपकरणों को बनाते हुए, बेचते हुए नर्मदा-तीरी लोग। उम्र के अलग-अलग सांचे में ढले चेहरे-हीन-चेहरे। बाहर से आये पर्यटकों के चेहरों को तौलती हुई आंखें। मूर्तियों का मोलभाव — बिखरे जीवन को दोनों हाथों से समेटती सूरतें। पीछे दक्षिण तरफ सतपुड़ा की ऊंची-ऊंची अचल पहाड़ियां। बहुत नजदीक से गिरती, पड़ती, उठती, इठलाती, शांत बहती 'नरबदा।'

"आओ बाबू। सरसुती, लच्छमी, गनेस, गौरा-संकर, किसन भगवान लै जाओ।" एक छोटी-सी दुकान पर बैठी बारह-पंद्रह बरस की किशोरी ने मुझे पुकारते हुए कहा। पत्थरों का छोटा मंच बनाकर उस पर लकड़ी का एक पटिया रखा था और उस पर दस-पंद्रह विभिन्न आकृतियों की मूर्तियां जमीं हुई थीं। ऊपर जंगली घास की बनी छपरी, लकड़ी के पतले चार खंभों पर टिकी थी। उसकी चितकबरी छाया में धूल जमे गुलदाउदी के फूल-सरीखी लड़की अपनी मेहनत को आकार दे रही थी। एक संगमरमर के सफेद झक पत्थर के टुकड़े पर वह लोहे की सलाई से कुछ उकेर रही थी। मैंने रुककर पूछा —

"सरस्वती की मूर्ति कितने की है?"

"चालीस रुप्पया की।"

नर्मदा के जल पर बैठा पत्थर-पत्थर बटुक की तरह नदी की भागवत कथा बांच रहा है। इस सनातन नदी की देखा-देखी रेवा तटवासी कला-सृजक नदी की संस्कृति को बेडौल पत्थरों पर उकेर-उकेरकर जीवन के नये आयाम खोज रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तीस में आ सकती है बस ?"

"नई बाबूजी ! मूर्ति बड़ी है और खपसूरत भी। जाहे बनाबे में बड़ी मेहनत लगी है।"

"अच्छा लाओ, पैंतीस लगा लो।"

"अच्छी बात है, लै जाओ बाबू, तुमरे हाथ की बोनी सही।"

"अरे दिन के बारहबज रहे हैं, अभी तक बोनी नहीं हुई ? झूठ बोलती हो।"

"नई, मैं झूठ नहीं बोल रई। नरबदा मैया के किनारे बैठ के कोई कैसे झूठ बोल सकत है ?"

"यह तुम क्या बना रही हो ?"

"लच्छमीजी की मूरती।"

"तुम्हारा नाम ?"

"सुरसुती।"

"सब मूर्तियां तुमने ही बनायीं ?"

"नई, मैं मोटे-मोटे हाथ-पांव बना देत हूं। बाकी सब हमरे बब्बा करत हैं।"

"तुम्हारे बब्बा कहां गये ?"

"पहाड़ पै पत्थर लैबे।"

मैं पैंतीस रुपये में सरस्वती की मूर्ति ले लेता हूं। सोचता हूं, यह सरस्वती होकर लक्ष्मी बना रही है। आगे बढ़ता हूं। सामने दिखायी देता है — भेड़ाघाट का वह जल-प्रपात जहां नर्मदा ने नये-नये अचरज रचे हैं। जहां सत्य तरल होकर बूंद-बूंद में बंट रहा है। जहां झर-झर झरती बूंदियों की गोराई एवं लुनाई मिलकर प्रबल सम्मोहन और विराट सौंदर्य सिरजती हैं। जहां लहर-लहर पर तैरता शिव किनारों को, धवल शिलाखंडों को, उन पर खड़े मनुष्यों को और मनुष्य के अस्तित्व को जिंदा रखनेवाली धूल-धूसरित प्रकृति को रह-रहकर छू रहा है। जहां अनवरत धारा से रेवा का जल ऊंचे नीचे की ओर उतर रहा है। पृथ्वी के गर्भ जाकर वापस सतह पर प्रकट होकर ऊपर रहा है। संगमरमरी स्पर्शों के ठुमक-ठुमककर प्रवाहित होता धारा जीवन-रेख खींच रहा है।

मैं इस जल-महोत्सव-स्थल के सामने वाले पथरीले टीले पर बैठ जाता एक अजीब सम्मोहन में आंखें फंस जाती पूरी देह वशीकरण में बंध जाती है। कहीं वंशी-रव-सा घुलने लगता है। सबके रहकर भी मेरी चेतना भीड़ से छिटककर जल-पात के सनातन-स्वर की भीड़, तान, अलाप में डूब जाती है। इस स्वर में जीवन जगत के छंदों की गुनगुनाहट थिरक रही ईश्वर धरती पर अवतरित होता है, तो उसे ऊंचे से नीचे की यात्रा करनी पड़ती है। को बनाते समय उसे स्वयं अनगिनत खंड होकर तत्वों, जीवों, पदार्थों, कण-कण में जाना होता है। पुनः इन सबसे जुड़कर वह को अपना प्रतिरूप या समरूप की सत्ता है। वह खंड-खंड होकर भी अखंड है। भीतर अलग-अलग होकर भी आत्म एक है। ब्रह्म धरती पर आकर और महान जाता है। उसकी इयत्ता और महत्ता में शक्ति और आकर्षण की श्रीवृद्धि होती है। यहीं वह जीवन का मूल होते हुए चौदह मालिक बन जाता है। जब-जब स्वर्ग से पर ब्रह्म का अवतरण हुआ, तब-तब धरती आंगन ने बधावा गाये हैं। ईश्वर का है। इसीलिए जल ऊपर से नीचे गिर रहा अनवरत गिर रहा है। शंकर की चासनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

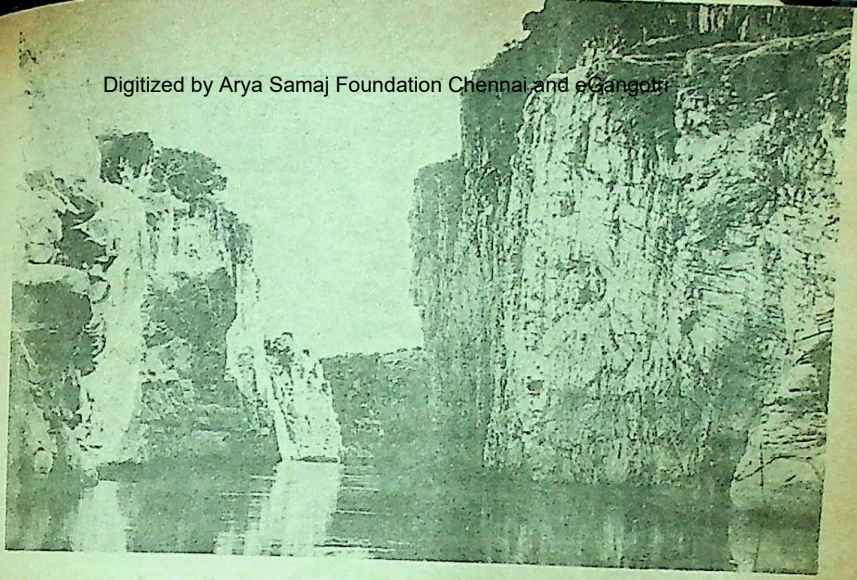

मीठा-मीठा गिर रहा है। गिरकर दूध का कुंड बन रहा है। उबलता हुआ दूध-कुंड। लेकिन यह दूध शीतल है। जीवनदायी है। आंखों को नमी और मन को अपूर्व तृप्ति देनेवाला है। इस दूध-धारा, अनूठे कुंड, और वहां से एक नया संगीतमय संदेश लेकर बहती नर्मदा को जीवन में एक बार भी देखने से जीवन सफल हो जाने के बिंदु के करीब अपने को खड़ा पाता है। यह जल बूंद-बूंद में विभाजित होकर फिर अखंड बन रहा है। जन्म-मरण के श्वेत-श्याम पत्थरों केबीच जीवन (जल) बनकर अगम दिशा की ओर बढ़ रहा है। जब यह मैदान में पहुंचकर खेतों के अधरों को रसवंती मुसकान देता है, तो अंडज, पिंडज, उद्भिज सब इसकी पूजा करने लगते हैं। शरीर अंजुरी बन जाता है और देह-जनित अस्तित्व जल के इस शिवत्व पर श्रद्धा तथा प्रेम बनकर अर्घ स्वरूप चढ़ जाता है।

सर्वप्रथम विधाता ने जल बनाया फिर उसमें बीज छोड़ा, उससे ही सृष्टि का निर्माण हुआ। जल विधाता की पहली कृति है। उससे जीवन बना। जल का एक पर्याय जीवन भी है। परम चेता के सृजन में कला को पहली बार रवानी मिली। पानी की सर्वप्रथम निर्मित बूंद कला की पहली आकृति थी। बूंद में बेमिसाल मिश्रण शक्ति होती है। जल-बिंदुओं का स्वाभाविक सम्मिश्रण जलनिधि बनने का दमखम रखता है। बूंद की प्रकृति है — ढुरककर दूसरी बूंद से जा मिलना और विराट तरल संसृति रच देना। बूंदों के सात्विक जुड़ाव के सुपरिणाम में गर्भ में मोती निपजते हैं। रत्नगर्भा सिंधु को संसार रत्नाकर कह उठा। जल आकाश को भूमि से जोड़ता है। स्वयं नभ से खिसककर धरती से जुड़ता है। यह जमीन से जमीन को भी जोड़ता है। जलविहीन धरती फट जाती है। टुकड़ों-टुकड़ों में बंट जाती है। विभाजन की रेखाएं उभर आती हैं। सूखी जमीन जैसे ही गीली होती है, उसकी छाती की दरारें गुम हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं। जमीन व्यापक बन जाती है। सोंधी बन जाती है। उसका दूध सुगंधा बन जाता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हमारी अवधारणा के सूत्र यहीं से जनमते हैं।

कला की तासीर भी जुड़नशील होती है। वह जोड़ती है, तोड़ती नहीं। वह अंतरात्मा के उस कक्ष से निकलती है, जहां मनुष्य जाति, वर्ण, सत्र, धर्म से परे विशुद्ध मानव होता है। कलाकार वस्तु को तीसरी आंख से देखता है। वह अपनी-अपनी प्रतिभा के प्रकाश में संसार की तहों में घुसता है और उसमें गड्डमड्ड पड़े लावण्य को अनंत संभावनाओं के साथ पेश करता है। यह वह जगह है जहां कलाकार का दृष्टि-बोध और वस्तु का भीतरी मधुरस घुलता है, तथा मूर्ति, चित्र, साहित्य, संगीत, अभिनय और नृत्य के नये-नये सांचों में कला ढलने लगती है। दुनिया और खूबसूरत हो जाती है।विश्वकार पहला और सबसे बड़ा कलाकार है। ईश्वर और मनुष्य की कला में फर्क यह है कि उसकी कला निरंतर गतिमान है। सदैव उससे कुछ न कुछ नया बनता रहता है और दुनिया को नित्य नूतनता की टेक मिलती रहती है। मनुष्य की कला एक बार बनकर, बस बनी रहती है। कविता, मूर्ति, चित्र एक बार रचकर छोड़ दिया जाने पर उसमें स्वयं-स्वतः कोई नया रचाव नहीं होगा। उससे बेहतर बनाने के लिए आदमी को दूसरी रचना करनी होगी। इतिहास-लिखती भेड़ाघाट की इन धौली चट्टानों पर खड़े होकर मैं एक साथ कला की तीन धाराओं से धुंआधार में दृष्टि-स्नान करता हूं। जल की यह धार प्रथम मौलिक रचना है। जल से उद्भूत जीव-सृष्टि दूसरी धारा है। जीवों द्वारा वस्तुओं एवं तत्वों पर अपनी तीसरी आंख से सुंदरता की रख-रेख उकेर देना, बूंद से समुद्र बनने का दावा करनेवाली विरल किंतु अक्षुण्ण तीसरी धारा है।

कीरती भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहं हित होई।

रचना की उदात्त भूमिका एवं उपादेयता उसके कल्याणकारी स्वरूप में ही है। सत्य की ताकत और सुंदरता का प्रतिफलन वसुधा का लोकहित में है। लोक मंगल में है। प्रकृति के अणु-अणु की इतिश्री दान में है। प्रकृति अनवरत देती है। निरंतर त्यागती है। जन-जन में अविराम मंगल-कुंकुम छिड़कती है। भागीरथी ब्रह्मा के कमंडल से, शिव के मस्तक से, हिमालय से नीचे उतरती है। नर्मदा 'अमरकंटक' से निकलकर भेड़ाघाट में प्रपात बनाती है। दोनों निम्नगा हैं। भरे बादल आकाश से धरती पर बुंदनिया बरसाते हैं। वृक्ष फलों से लदकर नीचे की ओर झुकता है। फल शाखा से टूटकर भूमि पर गिरता है। फूल खिलकर, मुरझाकर भू-लुंठित होकर, बीज रूप में शेष रहकर ही जीवन का उत्सर्ग मानता है। रवि रश्मियों की गरमाहट एवं चंद्रमा की किरणों की नरमाहट को जमीन पर विचरकर ही बढ़ावा मिलता है। पहाड़ों पर से पत्थर लुढ़ककर कलात्मक हाथों में सजकर मूर्ति बनता है। जल की तरह निर्मल ; फूल की तरह सौरभित व्यक्ति भी घमंड के सिंहासन से उतरकर जनमानस में खड़ा होता है। वह सबके बीच रहकर सबका अपना बनता है।

कला का विशिष्ट और सार्थक रूप यही है। इसीलिए तुलसी ने कृति के सर्वोत्तम उदाहरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में शिवत्व पूरित गंगा को रखा। शंकर की जटा से उतरकर गंगा धरती पर आयी है। नर्मदा भी शिव के औदार्य से मंडित है। मेकल शैल-सुता के जन्म से संबंधित कथाओं में से एक यह भी है कि वह अमर (महादेव) कंठ से निकली है। नीलकंठ के नीले कंठ से निकली है नर्मदा। भोले बाबा को जहर को गले में रोककर उसकी ज्वलनशीलता खतम करने में कितनी मशक्कत करनी पड़ी होगी ? कितने दिन बाबा कावरे-बावरे घूमे होंगे ? कितने उजरे-आंधरे दिन-रात के आयामों पर नटराज ने समाधिस्थ होकर आत्मसंघर्ष किया होगा ? शिव ने विष पचा-पचाकर अखिल कल्याणमय रूप पा लिया। अपनी सीधाई और निस्पृहता से गरल की तिक्त नीलिमा को निष्प्रभावी बना डाला। यह शंकर-जैसे कल्याण-साधक के ही बूते की बात थी। अन्यथा ऐसा बैंडा काम कौन करता ? संसार के सबसे बड़े माहुर को, युग की जबरदस्त तीखी कटुता को शिव ने मथ-मथकर कला के जन्म का संवेदना बिंदु बना डाला। विषपायी के उसी कंठ से निकली है — कला की अमृतधारा। भेड़ाघाट की दूधधारा। रसों की सहस्रधारा। आम्रकूट की नर्मधारा। जन-जन के सूखे गलों की तृप्ति-धारा। पथ के पत्थरों को भिगोती अभिषेक-धारा। घाट-घाट पर धूमधड़ाका करती उत्सव-धारा। विंध्य-सतपुड़ा के बीहड़ों में उछलती-कूदती विजय-धारा। जम्मू-द्वीप के मध्यदेश की जीवन-धारा। शिव की हर्ष-धारा। नर्मदा की लहर-लहर खुशहाली के छंद लिखती है, जिसकी बूंद-बूंद में शिव का शिवत्व घुला हुआ है —

'नर्म (हर्षम्) ददाति इति नर्मदा।'

साफ जाहिर है जिसके हृदय में हर्ष की फुरहरी उठेगी, वही अपनी क्रियाओं से दूसरों को हर्षित करेगा। जिसका मन सूखी धरती को खुशी के कणों से भिगो देने के लिए आमादा होगा, वही तो बुझे-बुझे नेत्रों में स्फूर्ति जगाएगा। विषण्ण चेहरों पर चमक लाएगा। उछलेगा, कूदेगा, नाचेगा, झूमेगा और अपने साथ ही सबमें ऐसा करने की कौंध पैदा कर देगा। शिव-कन्या भी ऐसा ही करती है। 'रेवते इति रेवा'। रेवा का अर्थ है — उछलने वाली। उछलने, कूदनेवाली रेवा ने 'अमरकंठ' से लेकर सिंधु के देश तक धरती के पत्थरदार पन्नों पर पुलकावलि के छंद लिखे हैं। निर्जनों एवं बीहड़ों को अनुबंध लिखे हैं। मैदान की अपेक्षा अधिकतम रास्ता पर्वतीय तय करने के बावजूद जल की महिमा, धारा का सौंदर्य और जीवन की मस्ती को छुट्टे हाथों से लोगों को लुटाया है। संस्कृति की आदिम लय यहां अभी जिंदा है। इसीलिए तो 'नरबदा मैया की जय' और 'मैया अमरकंठ वाली की जय' के जयकारों से इसके तटबंध सजे हैं। जय-जयकार उसकी होती है, जो झंझटों, झंझावतों और संघर्षों में से साबुत निकलकर काल की छाती पर धजा फहराता है। जो निरभिमान होकर स्वाभिमानपूर्वक जगत के फफोलेदार तलुओं में ठंडक बनकर लिपट जाता है। प्रलयंकारी शिव इसी अर्थ में 'महादेव' है। जबरदस्त उथल-पुथल के बाद गले से फूटी शिव की कला, रेवा की दूध-सी धवल जलधार बनकर बह रही है। नर्मदा ने पग-पग पर अपने मार्ग को कलात्मकता दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी अक्खड़ सृजनशीलता का सर्वोत्तम उदाहरण 'धुंआधार' की मनोरमता है। धुंआधार में गिरती जलधाराओं ने पत्थरों को काटकर, तराशकर कलाकृतियों से खचाखच भरा संग्रहालय बनाया है। नर्मदा के जल पर बैठा पत्थर-पत्थर बटुक की तरह नदी की भागवत-कथा बांच रहा है। इस सनातन नदी की देखा-देखी रेवा तटवासी, कला-सृजक नदी की संस्कृति को बेडौल पत्थरों पर उकेर-उकेरकर जीवन के नये आयाम खोज रहे हैं।

पीछे से मेरे कंधे पर मित्र का हाथ आकर कहता है —"अब चलो भी।" मैं जत-पत संभलता हूं। नर्मदा की गिरती तीन धाराओं, दूधिया कुंड, बहते फेनिल नीर में से उबरकर अपनी औकात के तट पर आ टिकता हूं। पाता हूं कि नर्मदा मैया ने फुहारों से आशीर्वाद देकर हमें आपादमस्तक नम कर दिया है। ब्रह्म से नदी (जल), नदी से जीव और जीव से जीवन की अनवरतता को शाश्वत रखने की सहज साध में नर्मदा स्वयं एक संस्कृति बन गयी है। लौटते में देखता हूं कि जहां से मैंने सरस्वती की मूर्ति ली थी, दुकान पर उसी जगह लक्ष्मीजी की मूर्ति बैठ गयी है। बाहरी लोग अपनी-अपनी तिकड़म से लक्ष्मी को खरीदने की फिराक में आ-जा रहे हैं। रूखे गालों और पपड़ाये होठों वाली वह बच्ची अपनी पानीदार आंखों में चौकन्नी है। जिंदगी के न जाने किस मोड़ से आज तक उसका बब्बा फटी मिरजई पहने बूढ़ी आंखों में चिनगारी लिये अनगढ़ पत्थरों को मूर्तियों में बदल रहा है।

— कुंडेश्वर वार्ड, खंडवा (म.प्र.)

ऊंचे पहाड़ों, खानों व समुद्र के नीचे या अस्पताल में एकाएक ऑक्सीजन गैस खत्म हो जाने पर प्राण संकट में पड़ जाते हैं। अब इसका भी उपाय निकल लिया गया है। रूस ने मिश्रित नमक तथा इन-ऑरगैनिक पैरॉक्साइड के संयोग से ऐसी मिश्र धातुएं बनायी हैं, जिन्हें गर्म करने पर इतनी मात्रा में ऑक्सीजन तत्काल मिल जाती है, जो आपातकाल में व्यक्ति को घंटों जिंदा रख सकती है।

रूस द्वारा विकसित विद्युत-चालित इंजन बी.एल-२६ एफ आज विश्व का सब से अधिक शक्तिशाली रेल इंजन है, जो दस हजार टन वजन की मालगाड़ी को तेजी से खींच सकता है।

हाल ही की खबर है कि अमरीका में दस हजार से अधिक डॉक्टर बेरोजगार हैं। अपने देश में तो हालत और भी खराब है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इस समय भारत में चालीस हजार से अधिक डॉक्टर बेरोजगार हैं। देश के आजाद होने के समय सन १९४७ में कुल बीस मैडिकल कॉलेज थे, जिनसे हर वर्ष दो हजार डॉक्टर तैयार होते थे। आज १०६ मैडीकल कॉलेज हैं जिनसे हर वर्ष तेरह हजार डॉक्टर बाहर निकलते हैं। जहां सन १९५१ में छह हजार व्यक्ति पर एक डॉक्टर का अनुपात था, आज तीन हजार पर एक डॉक्टर का अनुपात है। इसका मतलब यह है कि अभी डॉक्टरों की देश को बहुत जरूरत है, फिर भी मजेदार बात यह है कि हमारे देश में लगभग चालीस हजार डॉक्टर बेरोजगार हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथक : एस्कीमो (उत्तरी अमरीका) ● बाला दुबे

कदाचित आदम-परिवार एक विशाल जन-समूह की भांति पृथ्वी के कोने-कोने में विचरण कर रहा होगा। बर्फ के रेगिस्तान से लेकर रेत के समुद्र तक यह परिवार बंटता गया, पर अपने साथ बड़े-बूढ़ों की कहानियां, शिष्टाचार और रीति-रिवाज लेता गया तभी तो मनुष्य जाति की मिथक कथाएं एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। केवल नाम और स्थानीय वर्णन बदल जाते हैं। विश्व के उत्तर में फैले बर्फीले आंगन में ऐस्किमो जाति के आचरण भी पुराने संस्कार एवं व्यवहार से मिलते हैं।

समुद्र की साम्राज्ञी सैडना

ऐस्किमो जाति के लोग आज भी इस कथा को अपने बच्चों को सुनाते हैं। न जाने कहां से और कैसे दो हिम-राक्षस उत्पन्न हो गये और उनके एक पुत्री पैदा हुई। यह पुत्री जल्दी-जल्दी बढ़ने लगी। विशेष तौर से उसे कच्चे मांस खाने की आदत पड़ गयी और वह हमेशा अपने को भूखी महसूस करने लगी। एक बार जब उसके माता-पिता सो रहे थे तो नींद उचटने पर उन्होंने देखा कि उनकी पुत्री उन्हीं के आगे मांस खा रही है। यह देखकर राक्षस डरे और अपनी मांस-भक्षिणी पुत्री को एक नाव में बैठाकर समुद्र के किनारे ले गये। वहां जाकर उन्होंने उस लड़की की उंगलियां काट डालीं, जो समुद्र में गिरते ही बड़ी-बड़ी व्हैल मछलियां बन गयीं। यह देखकर राक्षस-दंपति और भी डरे और उन्होंने लड़की को समुद्र में फेंक दिया और

अपने घर वापस आ गये। यही लड़की बाद में सेडना कहलायी और पूरे समुद्र पर उसने अपना अधिकार जमा लिया। ऐस्किमो जाति का विश्वास है कि मछली, सील वालरस एवं अन्य समुद्री जंतुओं की माता सेडना ही है और समुद्री तूफान उसी का करिश्मा है। सेडना से 'शमन' नामक तंत्र के सिद्ध लोग तंद्रा में मिलते हैं और उससे आदेश लेते हैं।

शमन-सिद्धि की विधि भी और देशों के विश्वास-विचार से मिलती- जुलती है। पहले एक ब्रह्मचारी बीहड़ में भूखा प्यासा सिद्धि करता है और फिर उसे मनुष्य में प्रेत आत्मा दिखायी पड़ती है और उससे बातें करती है। इसके बाद सिद्ध अपने टप्पर में वापस आ जाता है। जब धार्मिक त्योहार होते हैं तब शमन के ऊपर प्रेतात्मा सवार हो जाती है। वह झूमने लगता है और अन्य लोग उसके सिर पर जोर-जोर से ढोल बजाते हैं। इसके बाद वह अद्भुत तंद्रा में अजीब भाषा में चिल्लाता है, जिसका अर्थ सयाने लगाते हैं और बंधुजनों को बतलाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कई अन्य महत्त्वपूर्ण मसलों पर विचार करना चाहता था, पर वह चाहे कुछ भी करे, जी को कचोटनेवाला यह विचार दिमाग से निकल नहीं पा रहा था कि उसकी गृह-व्यवस्था चलानेवाली महिला उसे लूटती रही थी। वह उसके पास इतने सालों से रह रही थी कि उसे अपनी चीजों का ध्यान रखने की आदत ही छूट गयी थी। कपड़ों की आलमारी की ही बात लो। सबेरे वह उसे खोलता और रखे हुए कपड़ों के ऊपर से एक साफ शर्ट निकाल लेता। समय-समय पर जोहांका आती और उसके सामने यह कहते हुए एक फटी हुई शर्ट रख देती, कि सभी शर्ट इसी हालत में हैं अतः आपको कुछ नयी शर्ट खरीद लेनी चाहिए।

दुखती रग

• कारेल चापेक

तब वह बाहर जाता और आधा दर्जन शर्ट खरीद लेता, हालांकि एक अस्पष्ट-सा खयाल उसे आये बिना नहीं रहता कि शर्टें खरीदे हुए उसे कोई ज्यादा समय नहीं हुआ। ऐसा ही कुछ कॉलर और टाई, कपड़े और जूते, साबुन और अन्य वस्तुओं के विषय में होता। उसे फिर भी जब भी वह अपना वॉर्डरोब खोलता तो उसे घिसे-फटे और बदरंग कपड़े ही वहां मिलते। परंतु उसे इन बातों की ओर ध्यान देने की जरूरत भी नहीं थी क्योंकि, जोहांका ही यह सब देखती थी।

अब उसे यह धारणा बनानी पड़ रही थी कि उसे [illegible] से लूटा जाता रहा है। हुआ यह कि उसे किसी संस्था द्वारा [illegible] आमंत्रित किया गया। सालों से वह [illegible] आयोजनों में कभी नहीं गया था। उसके [illegible] का दायरा इतना सीमित था कि इस अप्रत्याशित आमंत्रण ने उसे पूरी तरह चकरा दिया। [illegible] खुशी तो बेहिसाब हुई पर वह घबराया [illegible] सर्वप्रथम, वह यह तलाश करने लगा कि [illegible] पास कोई बढ़िया-सी शर्ट है या नहीं। [illegible] आलमारी से सभी शर्ट निकाल डालीं, पर [illegible] एक भी ऐसी नहीं निकली, जो कफ या कॉलर पर फटी न हो। उसने जोहांका को बुलाया [illegible] पूछा कि इनसे कोई और अच्छी शर्ट है [illegible] नहीं ?

जोहांका कुछ झिझकी, एक क्षण के लिए मौन रही, फिर बोली, 'आपको नयी [illegible] खरीदनी चाहिएं, पुरानी शर्टें इतनी जीर्ण-[illegible] हो गयी हैं कि उनकी अब मरम्मत करना [illegible] है।' हालांकि, उसे अस्पष्ट-सी याद थी [illegible] उसने कुछ शर्ट थोड़े दिन पहले ही खरीदी [illegible] तब भी वह चुप रहा। फिर तुरंत ही [illegible] जाकर खरीदने के लिए अपना कोट पहन [illegible] लगा। कोट की जेबें टटोलने पर उसे कुछ [illegible] कागजात मिले, जिनमें शर्ट्स का बिल [illegible] जिसका भुगतान सात सप्ताह पहले किया [illegible] था। आधा दर्जन नयी शर्ट।

वह बाजार नहीं गया, न उसने कोई [illegible] खरीदी। वह कुछ सोचता हुआ कमरे [illegible] चहलकदमी करने लगा। उसे याद आये [illegible] कई साल, जो उसने एकाकीपन में गुजारे [illegible] उसकी पत्नी की मृत्यु के समय से ही [illegible] उसके घर की व्यवस्था चला रही थी, और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पर कभी विशेष ही संदेह या अविश्वास नहीं हुआ था; पर अब उस पर यह भावना हावी हो रही थी कि अब तक उसे लूटा जाता रहा है। उसने कमरे में चारों ओर देखा; वह नहीं कह सकता था कि कौन-सी चीज वहां नहीं है। परंतु उसे यकायक ध्यान आया कि कमरा खाली और उजाड़-सा लग रहा है। वह याद करने की कोशिश करने लगा कि क्या वहां कुछ और चीजें नहीं हुआ करती थीं। हताश होकर उसने वह संदूक खोला, जिसमें उसकी पत्नी के स्मृति-चिह्न रखे हुए थे, ड्रेसें, कपड़े आदि। संदूक में कुछ फटी-पुरानी चीजें ही थीं। इतनी सारी चीजें जो उसकी पत्नी ने छोड़ी थीं, उन सब का क्या हुआ ?

उसने संदूक को बंद किया और शाम की दावत के बारे में सोचने लगा तो फिर उसे विगत वर्षों की याद रह रह कर आने लगीं। वे अब उस समय की तुलना में, जबकि वह उन्हें जी रहा था, अधिक एकाकी, कटु और दुःखद लगने लगीं। निश्चित रूप से वह पिछले वर्षों में कभी-कभी संतुष्ट भी रहा था, मानो नींद में सुला दिया गया हो; परंतु अब उसे एक एकाकी मनुष्य की गहरी नींद को देखकर घबराहट हो रही थी, जिसके सिर के नीचे के तकिये को भी अजनबी हाथों ने लूट लिया हो। उसने अपने आपको नितांत अकेला पाया और ऐसा तेज दर्द महसूस करता हुआ, जो उस दिन से भी जबकि वह अंतिम क्रियाकर्म करके लौटा था, अधिक असह्य था। उसे ऐसा लगा कि वह वृद्ध और क्लांत हो गया है, जिसके प्रति जिंदगी अत्यंत क्रूर रही हो।

हालांकि, एक बात उसकी समझ में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी कि जोहांका मेरी चीजें क्यों चुरा रही है ? वह उनका क्या करेगी ? उसे अचानक याद आया। जोहांका का कहीं पर एक भतीजा भी है, जिसे वह मूर्खता की हद तक प्यार करती है। अब याद आया, कुछ समय पहले ही उसने मुझे अपने भतीजे का फोटो भी दिखाया था : घुंघराले बाल, चपटी नाक और विशेष तौर पर अशिष्टता प्रदर्शित करती हुई मूंछ। तो इस प्रकार मेरी सब चीजें उसकी पास गयी हैं। इस बात का ध्यान आते ही उसका क्रोध भड़क उठा, वह रसोई की ओर दौड़ा और जोहांका को पुकारा, 'खूसट बुढ़िया !' और फिर उसे भयभीत व रोती हुई छोड़कर वापस अपने कमरे में लौट आया।

वह उससे फिर दिनभर नहीं बोला, वह गहरी सांस भरती रही, जैसे कि उसका अपमान किया गया हो, और जो भी चीजें उसके हाथ में आती, इधर-उधर बिखेरती रही, बिना यह जाने कि इस बखेड़े का कारण क्या है।

दोपहर बाद उसने अपनी आलमारियां उलट-पलट डालीं। उसे एक के बाद एक वे सब चीजें याद आने लगी जो कभी उसके पास थीं —विभिन्न पारिवारिक वस्तुएं, जो उसे अब विशेष तौर पर मूल्यवान लग रही थी। उनमें से एक भी नहीं बची थी। यह तो ऐसा हुआ मानो कोई भारी आग लगी हो और सब कुछ राख हो गया हो। वह ऐसी स्थिति में क्रोध और एकाकीपन के कारण रो पड़ा।

वह खुली हुई आलमारियों के बीच हांफता हुआ, अपने हाथ में एकमात्र अवशेष —अपने पिता का बटुआ, जिसमें दोनों किनारों पर छेद थे —लिये हुए बैठा था। वह उसे कितने समय से लूट रही होगी कि अब कुछ भी नहीं बचा ? अब उस पर गुस्सा हावी होने लगा था, यदि इस समय वह उसके सामने होती तो वह उसे मार बैठता। मैं उसका क्या करूं ? उसने भावावेश में अपने आप से कहा। उसे तुरंत विदा कर दूं ?... उसे पुलिस में दे दूं ? लेकिन कल मेरे लिए खाना कौन पकाएगा ? मैं किसी रेस्तोरां में खा लूंगा, उसने निश्चय किया, लेकिन मेरे लिए पानी कौन गरम करेगा और कौन आग जलाएगा ? कुछ समय बाद उसने बहुत प्रयास करने पर अपने दिमाग से चिंताओं को हटाया। उसने अपने आपको आश्वस्त किया कि यह मामला कल तय करूंगा, कुछ न कुछ हो ही जाएगा।

जब शाम होने लगी तो उसने अपने आपको संभाला और रसोई तक जाकर जोहांका को कुछ ऐसे काम करने के लिए तुरंत बाहर जाने को कहा, जो कुछ मुश्किल किस्म के थे और जिनमें अधिक समय लगना था। जोहांका ने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन एक शहीद की दुःखभरी मुद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

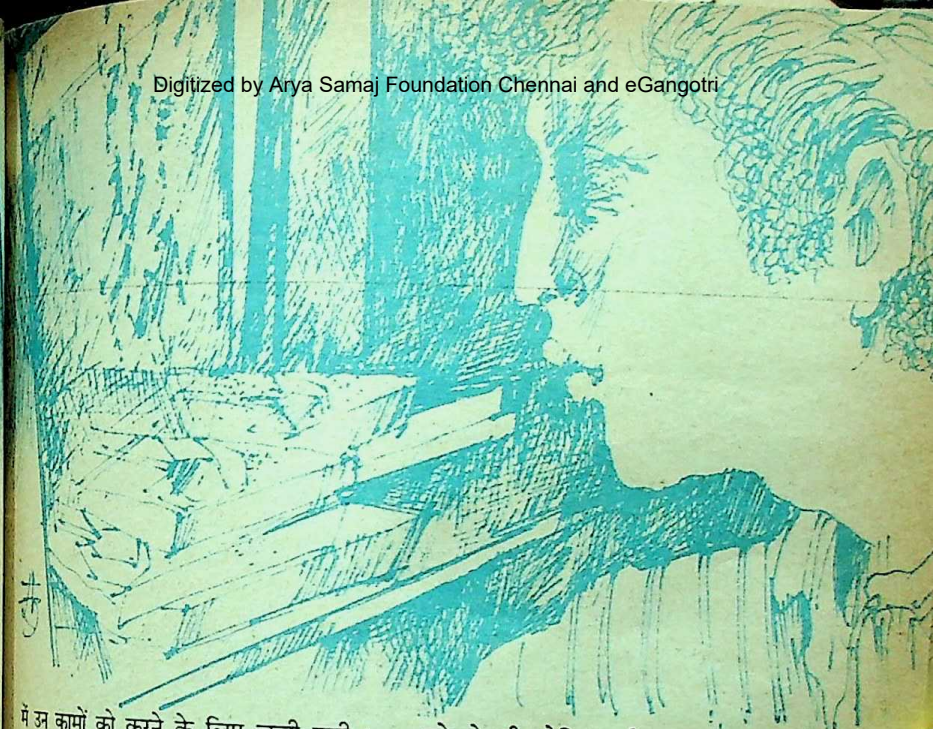

में उन कामों को करने के लिए चली गयी।

जोहांका के जाने पर जब दरवाजा बंद हुआ तो वह अकेला रह गया। धड़कते हुए हृदय से वह रसोई पर पहुंचा, और फिर चिटकनी पर हाथ रख कर झिझका, उसे आतंक ने आ घेरा, जब उसने महसूस किया कि वह जोहांका की आलमारी खोलने के लिए अपने आपको कभी भी तैयार नहीं कर पाएगा। यह उसे एक चोर-जैसा काम लगा। लेकिन जब वह पीछे हटने की सोच ही रहा था कि चिटकनी अपने आप खुल गयी। उसने दरवाजा खोला और भीतर चला गया।

रसोई इतनी साफ थी कि वास्तव में चमक रही थी। वहां जोहांका की आलमारी थी, किंतु वह बंद थी और ताली कहीं नजर नहीं आ रही थी। उसने आलमारी के ताले को चाकू से खोलने की कोशिश की, पर वह सफल नहीं हुआ। उसने ताली की खोज में सारी रसोई को छान मारा। स्वयं अपनी प्रत्येक ताली काम में ली। आखिरकार, एक घंटे तक जूझने के बाद, उसे पता चला कि आलमारी का ताला कतई बंद नहीं था, और वह हुक-बटन से खोला जा सकता था।

आलमारी में अलग-अलग खानों में उसके वस्त्र इस्तरी किये हुए ढंग से जमे रखे थे। सबके ऊपर उसकी छह नयी शर्टें थीं, जो अभी भी दुकान के नीले रिबन से बंधी हुई थीं। एक कार्डबोर्ड के डिब्बे में उसकी पत्नी का नील नग जड़ा हुआ ब्रूच था, उसके पिता के सीप लगे कफलिंक, हाथीदांत की पट्टी पर उसकी मां का चित्र। ओफ, क्या यह भी जोहांका के लिए कुछ काम का था? उसने आलमारी से सारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजें बाहर निकाल डालीं : उसे मिली अपनी जुराबें और कालर, एक साबुन का डिब्बा, टूथ ब्रश, एक पुरानी रेशमी बास्केट, तकिये के गिलाफ, सेना में अफसरों को दी जानेवाली पुरानी पिस्तौल, और एक अंबरी रंग का, धुंए से मैला व बिलकुल बेकाम मुंह से बजानेवाला बाजा। ये वाकई उसके वार्डरोब में रखी हुई वस्तुओं का ही हिस्सा थीं। अधिकांश वस्तुएं बहुत पहले ही भतीजे के पास पहुंचा दी गयी थीं। गुस्से का उफान खत्म हुआ, पर शिकायतभरी गहरी वेदना बची रही। तो यह सब ऐसे हुआ है...। जोहांका, जोहांका, तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया ?

एक-एक करके वह सारी वस्तुएं अपने कमरे में ले गया और उन्हें मेज पर सजा दिया। एक बढ़िया प्रदर्शनी-सी लग गयी। जो वस्तुएं जोहांका की थीं, वे जोहांका की आलमारी में फेंक दीं। वह उन्हें सफाई से जमाना चाहता था, किंतु वह असफल रहा और आलमारी ऐसे ही खुली रह गयी, जैसे लूटी गयी हो। तब उसे डर लगा कि जोहांका लौटेगी, और उससे गंभीरतापूर्वक बात करनी पड़ेगी... यह विचार उसे इतना अरुचिकर लगा कि वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा। कल मैं उसकी खबर लूंगा, उसने अपने आप से कहा, आज उसके लिए इतना समझना ही पर्याप्त होगा कि मुझे पता चल गया है। उसने एक नया शर्ट चुना जो कि कागज के समान कड़ा था, जिस पर वह अपनी सारी कोशिश के बावजूद कालर न लगा पाया। इस डर से कि जोहांका किसी क्षण आ सकती है, उसने जल्दी से अपनी पुरानी शर्ट पहनी हालांकि, वह फटी हुई थी। और तैयार होकर चोर की तरह बाहर खिसक गया तथा बारिश में भी तब तक सड़कों पर चक्कर लगाता रहा, जब तक कि दावत में जाने का समय हो गया।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावत में उसने अपने आपको एकाकी अनुभव किया। उसने पुराने परिचितों से आत्मीयता की बातें करने की कोशिश की, लेकिन किसी रूप में, उसे पता नहीं कैसे, पिछले कई वर्ष उसके और दूसरे लोगों के बीच दूरी का कारण बन गये थे। परंतु, उसे किसी से भी शिकायत नहीं थी। वह अलग खड़ा रहा और मुसकराता रहा, रोशनी की चमक और शोर-शराबे से विभ्रांत-सा। फिर किसी अज्ञात कारणवश वह एक नयी चिंता से ग्रस्त नहीं हो गया —जरा देखो, तो मैं कैसा लग रहा हूं। मेरी शर्ट से धागे लटक रहे हैं, मेरे कोट पर दाग और जूतों का तो कहना ही क्या ! उसकी इच्छा हुई कि वह जमीन में धंस जाए। वह चारों ओर छुपने की जगह तलाशने लगा, लेकिन हर तरफ चाक-चौबंद लोग लक-दक चमक रहे थे। वह कहां दुबके ? वह दरवाजे की ओर कदम बढ़ाने से डर रहा था ? पसीना छूटने लगा, वह दिखा तो ऐसा रहा था मानों स्थिर खड़ा हो, पर साथ ही बिना किसी की नजर में आये बहुत धीरे-धीरे दरवाजे तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। दुर्भाग्यवश, एक पुराना परिचित, जो कि हाई स्कूल में उसका सहपाठी रहा था, उसके सामने आ गया, जिससे उसकी परेशानी और बढ़ गयी।

उसने हड़बड़ी में कुछ ऐसा जवाब दिया कि वह नाराज हो आगे बढ़ गया। वह फिर अकेला हो गया, और दरवाजे से बाहर निकल घर की ओर दौड़ पड़ा। अभी आधी रात भी नहीं बीती थी।

रास्ते में उसे जोहांका का खयाल फिर आया। जल्दी-जल्दी चलने से उसका मस्तिष्क सक्रिय हो गया, और उसने अपने मन में योजना बना ली कि उसे जोहांका को क्या कहना चाहिए। एक अस्वाभाविक सहजता से लंबे, प्रभावपूर्ण, गंभीर शब्द वाक्यों में जुड़ने लगे, पुरजोर डांट से भरा लंबा प्रवचन और अंत में दया। हां, दया, क्योंकि आखिर में वह उसे क्षमा कर देगा। वह उसे बेघर नहीं करेगा। जोहांका रोयेगी और विनती करेगी, तब अपने को सुधारने का वचन देगी, वह चुपचाप अप्रभावित हुए सुनेगा, और अंत में गंभीर होकर कहेगा; 'जोहांका, मैं तुम्हें अपनी कृतघ्नता के लिए पश्चाताप करने का एक अवसर दूंगा, ईमानदार और विश्वसनीय बनो, इससे ज्यादा मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता। मैं एक बूढ़ा आदमी हूं, मैं क्रूर नहीं बनना चाहता।'

इस उत्तेजना में उसे पता ही नहीं चला कि कब घर पहुंच गया। जोहांका के कमरे में प्रकाश था। उसने परदे में से रसोई में झांका, हे ईश्वर, यह क्या हो रहा था ? जोहांका, रोने से लाल और फूला हुआ मुंह लिये, रसोई में इधर-उधर दौड़ रही थी और अपनी चीजें एक ट्रंक में डाल रही थी। वह गहरी चिंता में पड़ गया। ट्रंक क्यों ? वह विभ्रांत, आतंकित और बिलकुल बदहवास-सा दबे पांव अपने कमरे में गया। क्या जोहांका जा रही थी ?

उसके सामने मेज पर वे सब वस्तुएं रखी थीं जो जोहांका ने चुराई थीं। उसने उन्हें छुआ, किंतु उनके वापस मिलने की उसे तनिक भी खुशी नहीं हुई। 'तो यह बात है' उसने अपने आपसे कहा, 'जोहांका को पता चल गया है कि मैं उसकी चोरी की बात जान गया हूं और सोचती है कि उसे तुरंत निकाल दिया जाएगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

—इसीलिए वह अपना सामान समेट रही है। ठीक है मैं उसके दिमाग में यही विचार रहने दूंगा —कल तक के लिए। यह उसके लिए पर्याप्त सजा होगी। हां, मैं उससे कल बात करूंगा। किंतु शायद-शायद, वह अभी ही आ जाएगी और मुझसे क्षमा मांग लेगी। वह मेरे सामने रो पड़ेगी, घुटनों के बल झुकेगी, इत्यादि-इत्यादि।

वह घटना के अगले मोड़ की प्रतीक्षा में वैसे ही बैठा रहा। घर में एक मौन, अविच्छिन्न मौन छाया हुआ था। उसने रसोई में जोहांका के हर कदम की आवाज सुनी, गुस्से में ट्रंक बंद करने की आवाज सुनी, और फिर शांति। यह क्या था? वह चौंककर खड़ा हो गया और सुनने लगा : एक लंबा खिंचा हुआ रुदन। फिर वह धीरे-धीरे उन्मादपूर्ण सिसकियों में बदल गया। बाद में फर्श पर जोर से घुटने टिकने और दबी-दबी सी रुलाई की आवाज। जोहांका रो रही थी।

यों तो वह कुछ-कुछ तैयारी कर चुका था, पर यह अप्रत्याशित था। धड़कते हृदय से वह खड़ा रहा और रसोई में जो कुछ हो रहा था उसे सुनता रहा।

उसने स्वयं को दृढ़ बनाने के लिए कमरे में चहल-कदमी शुरू कर दी, पर फिर भी जोहांका नहीं आयी। समय-समय पर वह रुक जाता और सुनता, उसका विलाप बिना रुके चल रहा था। अब जोहांका का रुदन असह्य हो रहा था। उसने निश्चय किया, अभी उसके पास जाऊंगा, और कहूंगा, 'देखो, तुम्हारे लिए यह एक सबक होना चाहिए, जोहांका, और अब रोना बंद कर दो। मैं यह सब भुला दूंगा, लेकिन आगे से ईमानदारी से रहना।'

अचानक दरवाजा जोर से खुला और [illegible] रोती हुई जोहांका खड़ी थी। रोने से सूजा हुआ उसका चेहरा भयानक लग रहा था।

"जोहांका", वह चौंककर बोला।

"क्या—यह बरताव—मेरे साथ उचित है?" जोहांका फूट पड़ी। [illegible] धन्यवाद—जैसे मैं कोई चोर हूं—बड़ी शरम की बात!"

"लेकिन, जोहांका," वह दुविधा में पड़ा हुआ चीखा, "तुमने मेरी चीजें ली हैं [illegible] सभी-तुम देख रही हो? तुमने ये ली [illegible] नहीं!?"

लेकिन जोहांका ने यह नहीं सुना। [illegible] गहरी वेदना से चिल्लायी, "मुझे क्या सहन [illegible] रहा है —बड़ी शरम की बात-मेरी आलमारी की तलाशी लेना —मानो— मैं [illegible] चोर-उचक्की हूं। मुझे इस प्रकार लज्जित [illegible] —मुझे— आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था, महाशय —मुझे अपमानित करने [illegible] आपको कोई अधिकार नहीं —कभी नहीं— मेरे मरने दम तक भी— इस बरताव की उम्मीद नहीं थी। क्या मैं वास्तव में चोर हूं? मैं [illegible] चोर, वाह! क्या मैं वाकई चोर हूं? मैं [illegible] परिवार को देखते हुए। इसकी मुझे [illegible] उम्मीद नहीं थी —मेरे साथ यह व्यवहार बिलकुल उचित नहीं था।"

"किंतु, जोहांका," वह कुछ ठंडा [illegible] हुआ बोला, "कुछ समझदारी से काम लो। [illegible] चीजें तुम्हारी आलमारी में कैसे पहुंच गयीं? यह आलमारी तुम्हारी है या मेरी?"

"मैं कुछ नहीं सुनाना चाहती," जोहांका

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबक उठी, "हे ईश्वर, कितनी शर्म की बात ! जैसे मैं कोई चोर थी —मेरी आलमारी की तलाशी ली !" फिर वह भयानक रूप से उत्तेजित हुई चिल्लायी, "इसी वक्त मैं चली जाऊंगी। मैं यहां सुबह होने तक भी नहीं रुकूंगी। नहीं, कभी नहीं।"

"लेकिन देखो," उसने आतंकित होकर विरोध किया, "मैं तुम्हें निकालना नहीं चाहता। तुम यहीं रहोगी। और जो कुछ हुआ है, ईश्वर हमें इससे भी बुरी घटना से बचाये। मैंने तुम्हें इसके बारे में अभी तक एक शब्द भी नहीं कहा है। सो रोना बंद करो।"

"किसी दूसरी को रखो," जोहांका ने आंसुओं से अवरुद्ध हुई आवाज में कहा, "मैं यहां कल सुबह तक भी नहीं रुकूंगी। जैसे कि मैं कोई जानवर हूं —सब कुछ सहन कर लूं —मैं नहीं रुकूंगी। भले ही पटरी पर रात काट लूंगी।"

"लेकिन क्यों, जोहांका," उसने असहाय होते हुए तर्क किया। "क्या मैंने तुम्हारी भावनाओं को चोट पहुंचाई है ? किंतु तो भी तुम यह मना नहीं कर सकती... ।"

"नहीं, मेरी भावनाओं को चोट नहीं पहुंचायी," जोहांका और भी आहत स्वर में चिल्लायी, "मेरी भावनाओं को चोट पहुंचाने की बात नहीं —मेरी आलमारी की तलाशी लेना —जैसे कि मैं कोई चोर हूं। ऐसा व्यवहार मेरे साथ किसी ने नहीं किया। मैं कोई उठाईगीर नहीं हूं।" वह आंसू बहाती हुई चीखी और जोर से दरवाजा बंद तेज कदमों से बाहर चली गयी।

वह भारी उलझन में पड़ गया। पछताने के बदले जोहांका का यह हंगामा। इसका क्या मतलब ? वह कौए की तरह चुराती है, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन ऐसा बताये जाने पर उसकी संवेदना को मार्मिक चोट लगती है। क्या यह औरत पागल हो गयी है ?

परंतु धीरे-धीरे उसके लिए उसे दुःख-सा होने लगा। बात यह है, उसने अपने आपसे कहा, हरेक की अपनी दुखती रग होती है, लेकिन उस पर हाथ रखते ही आप उसकी भावना को सर्वाधिक चोट पहुंचाते हैं। आह, मनुष्य अपने दोषों के बीच भी कितनी विशाल नैतिक संवेदना छुपाये रहता है। अपने दुष्कर्मों में भी दर्द और मार्मिकता की हद तक संवेदनशील। किसी की छुपी हुई बुराई की ओर जरा-सा इशारा कर दो और जवाब में सुनने को मिलेगी केवल मात्र व्यथा और रोष की चीख। क्या हम नहीं देख पाते कि अपराधी के विषय में निर्णय देने में हम अपराध के शिकार हुए मनुष्य के बारे में भी निर्णय देते हैं ?

रसोई से दबी-दबी रुलाई की आवाज आ रही थी। वह भीतर जाना चाहता था पर दरवाजे का ताला बंद था। वहीं खड़े रहकर वह उसे समझाने लगा, थोड़ा डांटा भी, और फिर उसे शांत करने का प्रयास करने लगा, पर उसे सुबकने की आवाज ही सुनायी दी। वह असहाय सहानुभूति लिये अपने कमरे में लौट आया। वहां मेज पर चुराई हुई वस्तुएं सजी हुई थीं : बढ़िया नयी शर्टें, कई अन्य वस्त्र, स्मृति-चिह्न, और भी बहुत-सी कई वस्तुएं। उसने उन्हें अपनी अंगुली से सहलाया, किंतु स्पर्श में कुछ उदासी और एकाकीपन था।

—रूपांतर : सत्यनारायण पुरोहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी लेखकों की दृष्टि में अफ्रीकी भारतीय

भारतीयों की हार न मानने की क्षमता से वे भयभीत हैं

● श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी

सैकड़ों वर्षों से अफ़्रीका में रह रहे भारतीय उसके अविभाज्य अंग बन चुके हैं। अफरीका के विकास का कोई भी इतिहास भारतीयों के महान योगदान के उल्लेख के बिना कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता। वे भारतीय ही थे, जिन्होंने अपने अपार परिश्रम, अध्यवसाय एवं अथक प्रयासों से अफरीका की काया-पलट करके घने जंगलों के स्थान पर सुंदर व आधुनिक नगर बसा दिये; निर्जन, शुष्क, अनुर्वर, बेकार पड़े प्रदेशों को हरा-भरा कर दिया; पहाड़ों को समतल भूमि में बदला, रेल की हजारों मील लंबी पटरियां बिछाकर पता नहीं कितने प्रदेशों और देशों को आपस में जोड़ दिया, उन क्षेत्रों को रहने लायक बना दिया, जिनका नाम सुनते ही रोएं कांप उठते थे।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं, घनघोर अंधेरी रात में भीषण जंगल के बीच स्थित एक छोटे से रेलवे स्टेशन के उस निःशस्त्र, एकाकी भारतीय कर्मचारी की, जो निर्जन प्लेटफार्म पर बेधड़क टहल रहे खूंख्वार शेर की परवाह न करके अपने कर्त्तव्य-पालन में डटा रहा ? यहां के जंगलों में नगर ऐसे ही नहीं बस गये। भारतीय मजदूरों ने यदि उनके भवनों का निर्माण किया है, तो भारतीय व्यापारियों ने उनमें आर्थिक स्पंदन उत्पन्न किया है और विद्यालयों, कार्यालयों तथा अन्यत्र कार्यरत भारतीय कर्मचारियों ने उनके आकार को स्पष्ट करके व्यवस्थित एवं आकर्षक बनाया है।

अफरीका पर लिखनेवालों ने भारतीयों के योगदान को तो स्वीकार किया है, पर उनकी नव-समृद्धता एवं विषम से विषम परिस्थिति में भी हार न मानने की क्षमता से वे भयभीत भी रहे हैं। एक लेखक ने व्याजनिंदा से उन्हें 'सर्वव्यापी' (ऑम्नीप्रजेंट) कहा है क्योंकि, यहां का शायद ही कोई नगर या उपनगर ऐसा हो, जहां कोई न कोई भारतीय न मिल जाए। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'इनसाइड अफरीका' में जॉन गुंथर ने नैरोबी (केन्या की राजधानी) के केंद्र में क्रम से स्थित १५-२० भारतीय दूकानों के नामपट्टों की सूची देते हुए लिखा है कि लगता है कि आप भारत के किसी नगर में हैं।

यूरोपीयों ने इन भारतीयों में अपनी मानसिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिच्छवि देखी और उन्हें भारत की उपनिवेशवादिता का अग्रदूत माना (जो कालांतर में भ्रममात्र ही सिद्ध हुआ)। अफरीका से भारत एवं भारतीयों के संबंधों की चर्चा करते हुए अलेक्ज़ेंडर कैंपबेल ने अपनी पुस्तक 'द हार्ट ऑव अफरीका' में लिखा है कि कुछ भारतीय अफरीका में उस समय भी व्यापार कर रहे थे, जबकि यूरोपीयों का वहां कहीं कोई नाम-निशान भी नहीं था। उन्होंने यह भी लिखा है कि रेल की पटरियों के निर्माण में, जिसने श्वेतों के प्रवास को संभव बनाया, भारतीयों ने प्रमुख भाग लिया। इसी पुस्तक में वे अन्यत्र लिखते हैं—

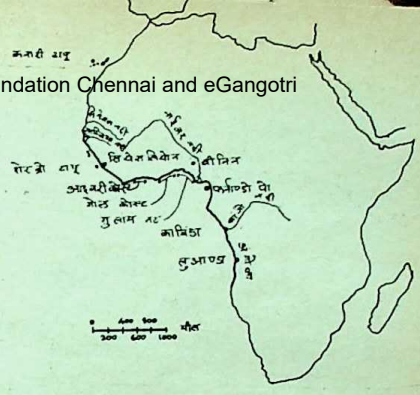

डर्बन (दक्षिण अफरीका का एक प्रमुख नगर) प्रांत में चीनी उद्योग पर ही बसाया गया था। काले जुलू (एक जनजाति) इतने असभ्य, जंगली और घमंडी थे कि वे श्वेतों के (गन्ने के) खेतों में काम करने के सर्वथा अनुपयुक्त थे। अतः श्वेतों ने भारत से 'कुलियों' का आयात किया। दुर्भाग्यवश, अपनी आवश्यकता समाप्त हो जाने पर भी इन कुलियों ने भारत वापस जाने से मना कर दिया। उन्होंने वकील और व्यापारी उत्पन्न किये और बढ़ते गये।

'एक श्वेत डर्बनवासी ने घृणाभरे गुस्से से कहा, 'एक भारतीय तेल से भीगे एक चीथड़े की महक पर जिंदा रह सकता है।' यद्यपि कुछ भारतीय संपन्न हो गये, पर उनमें से अधिकांश अत्यंत दयनीय, निर्धन बने रहे। श्वेतों में दरिद्रों से अधिक संपन्नों के प्रति अरुचि रही।'

× × ×

'श्वेतों ने जुलू लोगों को भड़काया कि उनके उत्पीड़क भारतीय हैं, श्वेत नहीं; जिससे भाले चमकाते और युद्ध-गीत गाते हुए जुलुओं ने भारतीयों पर आक्रमण कर दिया। उन्हें सड़कों पर मारा, उनके भंडार लूट लिये, उनके घरों में आग लगा दी और उस जलती हुई आग में भारतीयों को भी झोंक दिया। अनेक श्वेत खड़े-खड़े देखते रहे और सहमति जताते रहे। (वास्तविकता ज्ञात होने पर भारतीय एवं अफरीकियों का संयुक्त मोर्चा बना, उपनिवेशवादियों ने भारतीयों को सत्ता में भाग देने की पेशकश की थी।)'

× × ×

'दक्षिण अफरीकी श्वेत नेता परेशान रहे कि किसी दिन भारतमाता के जलयान आकर रंगभेद-नीति को नष्ट करके श्वेतों के वर्चस्व को समाप्त कर देंगे।'

'वेलेंस्की (रोडेशिया, अब जिम्बाब्वे, के भूतपूर्व

अफरीका पर लिखनेवालों ने भारतीयों के योगदान को तो स्वीकार किया है, पर उनकी नवसमृद्धता एवं विषम से विषम परिस्थिति में भी हार न मानने की क्षमता से वे भयभीत भी रहे हैं। ऐसे लेखक प्रायः यूरोपीय ही रहे हैं और उनके लेखन में भारतीयों के प्रति उनका पूर्वाग्रह ही व्यक्त हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानमंत्री के विचार से मेहरा (पं. जवाहरलाल) होगा है।

मलान (दक्षिण अफरीका के हिटलरवादी भूतपूर्व प्रधानमंत्री) और मेलेसोव (तत्कालीन रूसी नेता) सभी की गृद्धदृष्टि ब्रिटिश अफरीका पर लगी है।'

× × ×

'एक श्वेत कृषक ने कहा, 'भारत की औपनिवेशिक दृष्टि विश्व के इस भाग (केन्या) पर लगी है। वह अफरीका में हमारा स्थान लेना चाहता है।'

भारतीयों की अपनी अलग पहचान बनाये रखने की प्रवृत्ति के कारण तंजानिया के भूतपूर्व राष्ट्रपति जूलियस न्येरे ने उन्हें एक नयी जनजाति (ट्राइब) कहा था और आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा था कि उसका क्या किया जाए। उनकी संपन्नता से ईर्ष्याग्रस्त ईदी अमीन (उगांडा के भूतपूर्व तानाशाह) ने उन्हें उगांडा से निष्कासित कर दिया था (पर उनके साथ ही उगांडा की सुख-शांति एवं समृद्धि भी निष्कासित हो गयी।)। अन्य देशों में भी उनकी स्थिति अच्छी नहीं रही। लघु भारत मारिशस को तो कुछ राजनेता अफरीकी देश ही नहीं मानते।

अफरीकी परिवेश में भारतीयों की राजनीतिक उदासीनता तथा निष्क्रियता की चर्चा करते हुए डॉ. फ्रेड जी. बर्क ने अपनी पुस्तक 'आफ्रिका'ज क्वेस्ट फॉर ऑर्डर' में लिखा है—

'उगांडा, केन्या और तंजानिया की एशियाई (भारतीयों को अब एशियाई कहा जाता है ताकि इनके साथ पाकिस्तानी, बंग्लादेशी और श्रीलंकाइयों का भी समावेश हो सके) व्यापारी प्रतिभाओं के लिए अपनी आर्थिक संपन्नता को समकक्ष राजनीतिक संपन्नता में परिवर्तित कर पाना असंभव है, क्योंकि वे जातीय अल्पसंख्यक हैं, जबकि सत्ता का निर्धारण संख्या के बाहुल्य से

× ×

'अधिक उत्तरदायी एवं प्रबुद्ध (अफरीकी) राजनीतिज्ञ बड़ी विषम स्थिति में हैं। उनका का राजनीतिक भविष्य कभी-कभी उन्हें नीति का सहारा लेने के लिए विवश करता जबकि देश के आर्थिक भविष्य के लिए एशियाइयों को आश्वस्त करते रहते हैं कि वे देश को छोड़ें, न अपनी पूंजी ही बाहर

केन्या में अपने शिकार-अनुभवों आधारित अपनी पुस्तक 'ग्रीन हिल्स ऑफ अफरीका' में अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने भारतीयों के योरोपीयों एवं अफरीकियों की घृणा अरुचिपूर्ण विचारधारा का उल्लेख एक प्रकार इस प्रकार किया है—

'कैंडिस्की (आस्ट्रियावासी)—'एक साइसल— बागान से पैसे बना सकता

'किसी भी चीज से', पॉप ने कहा।

'हां, जहां हम असफल हो जाते हैं, भूखों मर सकते हैं, वह पैसा बनाता

×

'कैंडिस्की ने हमें बतलाया कि भारतीय देश पर अधिकार किये ले रहे हैं। युद्ध-काल में उन्होंने (अंगरेजों ने) सेनाओं को यहां लड़ने भेज दिया; भारत में रखने के लिए क्योंकि, उन्हें दूसरे सैन्य-भय था। उन्होंने आगा खां से वायदा चूंकि भारतीयों ने अफरीका में लड़ाई अतः वे निर्बाध रूप से यहां आकर और व्यापार कर सकते हैं। × × × भारतीयों देश पर अधिकार कर लिया है। वे खाये-पिये रह लेते हैं और सारा का भारत भेज देते हैं। जब वे पर्याप्त पैसा तो देश वापस चले जाते हैं, पर जाने से किसी गरीब रिश्तेदार को अपनी जगह जाते हैं, ताकि वह देश का शोषण करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं भारतीयों की मनोवृत्ति का परिचय जॉन पॉल के 'मोजांबिक : मेमायर्स ऑव रिवोल्यूशन' में वर्णित एक घटना से इस प्रकार मिलता है—

'यूसुफ की दूकान उस क्षेत्र में सबसे बड़ी थी और खूब चलती थी। सन १९६१ में भारत ने गोवा पर कब्जा कर लिया तो पुर्तगालियों (मोजांबिक तब पुर्तगाली उपनिवेश था) ने उसका बहिष्कार कर दिया। युसूफ परेशान था कि क्या करे, पर उसने समाधान खोज ही लिया। अगले दिन दूकान के सामने एक बड़ा-सा नोटिस बोर्ड लटक रहा था—'मैं भारतीय नहीं, पाकिस्तानी हूँ। और बहिष्कार समाप्त हो गया।'

यूरोपीयों के विपरीत अफरीकी लेखकों एव पत्रकारों ने भारत में अपने लिए एक आदर्श के दर्शन किये। उसे अपना अग्रज माना; उसके नेताओं के प्रति श्रद्धा-भाव रखा। अपने स्वातंत्र्य-आंदालन के समय नाइजीरिया के एक समाचार पत्र ने काले लोगों को भारतीय ईसा 'कृष्ण' की अनुकृति कहा था। गांधी-शताब्दी वर्ष में अनेक देशों में सड़कों, अस्पतालों आदि का नामकरण गांधीजी के नाम पर किया गया था।

छात्रवृत्तियों के माध्यम से अथवा अन्य प्रकार से भारत में रह चुके अफरीकी लोग उसके प्रति अच्छी भावना लेकर लौटते हैं और उसे अत्यंत विकसित देश मानते हैं। भारतीय फिल्मों के माध्यम से भी भारत की नयी छवि उभर रही है। इस महाद्वीप में जहां उनकी अपनी फिल्में न के बराबर हैं। अपेक्षाकृत सस्ती एवं अधिक रुचिकर होने के कारण भारतीय फिल्में यहां अत्यंत लोकप्रिय हैं। पर अनुकरण उन्हें प्रिय नहीं हैं, वह चाहे पूर्व का हो या पश्चिम का। 'सोमोली न्यूज' ने एक बार भारतीय फिल्मों से प्रभावित हो रहे युवकों को 'शम्मी कपूर न बनने' की सलाह दी थी।

भारत के प्रति भूखा-नंगा का भाव समाप्त हो जाने पर भी संपेरों, जादूगरों एवं ज्योतिषियोंवाली छवि आज भी उजागर है!

नोबेल-पुरस्कार से विभूषित अपनी कृति 'द हार्ट ऑव द मैटर' (पश्चिम अफरीका की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास) में ग्राहम ग्रीन ने एक भारतीय ज्योतिषी का वर्णन किया है, जो जल की गति का परीक्षण करके भविष्यवाणी करता है। रास्ते चलते लोग भारतीयों के सामने हथेली फैला देते हैं और रेखाओं को पढ़ देने का अनुरोध करते हैं!

कुछ वर्ष पूर्व सोमालिया में अपने दूतावास की एक कार जब एक पंप पर पेट्रोल लेने गयी तो उसके अंदर एक सांप दिखा, जो मुश्किल से निकाला जा सका। 'सोमाली न्यूज' ने चुटकी लेते हुए लिखा, 'वहां कोई संपेरा नहीं था!' (जो बीन बजाकर उसे वश में कर लेता।)

P.O. Box 159,
Awassa (Sidamo),
ETHIOPIA (Africa)

उमर खैय्याम की रुबाइयों की एक पूरी प्रति यार्कशायर के जेम्स फैदरस्टोन नामक व्यक्ति ने ५/१६ इंच के आकार के कागज पर तैयार की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १९८२ में पेशावर मठ के स्वामीजी ने 'मात्तूर' नामक एक छोटे-से गांव को, एक आयोजित सभा में 'संस्कृत ग्राम' का नाम दिया। उन्होंने मात्तूर गांव को आशीर्वाद दिया, 'एष ग्राम संस्कृत ग्राम् भवतु।' स्वामीजी की इस घोषणा और आशीर्वाद के साथ ही ग्रामवासी प्रयत्नपूर्वक संस्कृत के विकास में जुट गये। ग्रामवासियों ने सिद्ध कर दिखाया कि प्रयत्नपूर्वक संस्कृत-जैसी देवीय भाषा भी जन-साधारण की भाषा बन सकती है। सभी इसे सीख सकते हैं और बोल सकते हैं।

'प्रशिक्षण वर्ग' द्वारा संस्कृत जाननेवालों को शिक्षा दी गयी कि औरों को संस्कृत कैसे सिखायी जाए। गृहिणियों के लिए दोपहर को अलग कक्षाएं खोली गयीं। आज एक सौ से भी अधिक संगठन संस्कृत की प्रगति और प्रचार में लगे हुए हैं। तुंग नदी के दूसरे किनारे पर बसा होसाली गांव भी इस ओर प्रगति कर रहा है। इन गांवों में पांच सौ से भी अधिक लोग संस्कृत में वार्तालाप कर सकते हैं और अधिकांश लोग इसे समझ सकते हैं।

दो हजार की आबादीवाला यह गांव

दक्षिण भारत में है एक संस्कृत ग्राम

● सुलक्षणा

यह अनोखा गांव कर्नाटक राज्य के शिमोगा शहर से दस किलोमीटर की दूरी पर है। विजयनगर राज्य में कृष्णराजपुर के नाम से जानेवाला गांव ही आज का मात्तूर है। पूरे देश में यह ही एक ऐसा गांव है जो 'संस्कृत ग्राम' के नाम से प्रसिद्ध है। सन १९८२ में 'हिंदू सेवा-प्रतिष्ठान' ने मात्तूर को संस्कृत गांव घोषित किया। इस संस्था ने यहां 'संस्कृत संभाषण शिविर' आरंभ किये, जहां मौखिक रूप से संस्कृत का प्रचार हुआ। फिर 'अभ्यास वर्ग' के अंतर्गत व्याकरण सिखाया गया और अंत में

होते ही संस्कृत के मंत्रोच्चार में रंग उठता है। छोटे बच्चों के झुंड के झुंड प्राचीन वेश-भूषा— धोती और अंगवस्त्र धारण किये संस्कृत कक्षाओं में मंत्रोच्चार सीखना आरंभ कर देते हैं। खेतों पर काम करने जाते हुए किसान आपस में संस्कृत में वार्तालाप करते दृष्टिगोचर होते हैं। गांव में अधिकतर घरों के बाहर बोर्ड टंगे हैं, जिनपर घोषणा की गयी है कि अमुक घर में संस्कृत में वार्तालाप कर सकते हैं। यह घोषणा-पत्र ग्रामवासियों का संस्कृत के प्रति का घोषणा-पत्र है। घर के अंदर भी अधिकांश

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो हजार की आबादीवाला गांव मात्तूर भोर होते ही मंत्रोच्चार से गूंज उठता है। कक्षाओं में संस्कृत के मंत्रों का उच्चारण करते हुए किशोर छात्र, खेतों पर जाते हुए संस्कृत में वार्तालाप करते हुए किसान मन को पुलकित कर देते हैं।

सामानों के ऊपर संस्कृत के नाम की चिपकियां चिपकी हैं। रसोईघर के सामानों के ऊपर भी संस्कृत में नाम लिखे हैं। हर घर में कन्नड़ के शब्दों का संस्कृत में अनुवाद का चार्ट मुख्य कमरे में टंगा है। हर गृहिणी अब संस्कृत के नामों से परिचित हो चुकी है। दुकानों के बाहर भी ऐसे ही चार्ट टंगे हैं और अब ग्राहक तथा दुकानदार भी संस्कृत में वार्तालाप करते हैं। शाम ढलते ही सामूहिक रूप में संध्यावंदन होता है, नदी के तट पर बैठे ब्राह्मण पूजा, मंत्रोच्चार और संस्कृत में वाद-विवाद करते नजर आते हैं।

संस्कृत में छपनेवाली 'चंदा मामा' और 'अमर चित्रकथा' यहां रुचि के साथ पढ़ी जाती है। मृच्छ कटिकम् जैसे प्रसिद्ध नाटक यहां संस्कृत में खेले जाते हैं। गांव के अधिकतर समारोह संस्कृत में होते हैं। संस्कृत में ही बच्चों के लिए पहेली प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं। 'कन्नड़-संस्कृत कोष', 'व्याकरण सहसी' और 'व्याकरण वाक्यानी' आदि कुछ पुस्तकें छापी गयी हैं, जो जन-साधारण को प्रतिदिन बोली जानेवाली संस्कृत का ज्ञान कराती हैं। इस प्रकार संस्कृत प्रचार के लिए हर संभव उपाय किया गया है। इसी प्रयास और मात्तूर वासियों की लगन व परिश्रम ने सिद्ध कर दिया है कि संस्कृत भी जन-साधारण की भाषा बन सकती है।

इस 'संस्कृत ग्राम' में प्राचीनता के साथ ही आधुनिक विकास के चिह्न भी दृष्टिगोचर होते हैं। गांव में बिजली, रेडियो, टी.वी., बैंक, स्कूल, और स्वास्थ्य केंद्र भी स्थापित हो चुके हैं। प्राचीनता पर गर्व करनेवाला संस्कृत ग्राम प्राचीनता और आधुनिकता का संगम बन गया है। भारत का यह अकेला और अनोखा संस्कृत ग्राम सराहनीय और अनुकरणीय बन गया है।

—६५, डॉ. सी.पी. रामास्वामी रोड,
फोर्थ स्ट्रीट, अभिरामपुरम मद्रास-६०००१८

दाढ़ीवाला बाज अब दुर्लभ नहीं

दाढ़ीवाला बाज लुप्तप्रायः दुर्लभ पक्षियों में समझा जाता है। लुप्तप्रायः होने का कारण भी यह बाज स्वयं है, क्योंकि पहले तो यह पराधीनता की स्थिति में अंडे देता ही नहीं, दूसरे, दो ही अंडे देता है और उनमें से भी एक को ही सेता है, दूसरे को नहीं। कजाकिस्तान के अल्माअता के चिड़ियाघर में इसकी वंश-वृद्धि के लिए प्रयोग किये गये हैं। पशु-पक्षी वैज्ञानिकों ने अंडा सेने के यंत्र की सहायता से बाज के एक जोड़े द्वारा छोड़ गये दूसरे अंडे को कृत्रिम रूप से सेया और उससे एक स्वस्थ बच्चा पैदा करने में सफल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

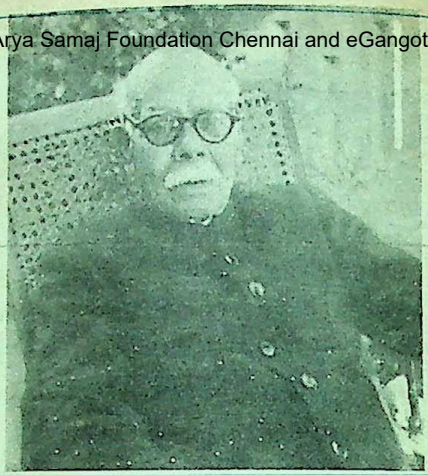

जन्म-शताब्दी वर्ष

बाबू गुलाबराय जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

● डॉ. शिव शंकर गुप्त

हिंदी साहित्य जगत के मनीषी और यशस्वी साहित्यकार स्वर्गीय बाबू गुलाबराय के समीक्षक, निबंधकार एवं दार्शनिक रूप से सभी प्रबुद्धजन परिचित हैं। वे साहित्य में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थक थे, पर कुछ लोग ही उनके दार्शनिक विचारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पहचान पाये हैं।

बाबूजी बचपन से ही अद्भुत घटनाओं एवं प्राकृतिक विलक्षणों में रुचि लेते थे। सौर-मंडल, आकाश-गंगा, जीव की उत्पत्ति, विकास आदि पर पुस्तकें पढ़कर मित्रों से चर्चा करते थे। उनके निजी पुस्तक संग्रह में इस तरह की बहुत-सी पुस्तकें थीं। वे अपने स्थान विज्ञान के विद्यार्थियों की प्रयोगशालाओं में किये जा रहे प्रयोगों में रुचि लेते थे। बाबूजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, 'यद्यपि मैं विज्ञान का विद्यार्थी न था, तथापि मैं प्रोफेसर डॉ. एन.सी. नाग (जो आगरा कालिज में फिजिक्स व केमिस्ट्री के प्राध्यापक थे) से बहुत प्रभावित था। उनसे गुरु-शिष्य का संबंध स्थापित करने के लिए मैंने उनकी फोटोग्राफी की कक्षा में प्रवेश लिया। डॉ. नाग बिजली के

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुंबक के उपयोग से तरह-तरह के करिश्मे लेबोरेट्री में दिखाते थे। उन्होंने एक ग्रामोफोन रिकार्ड भी बनाया था, जिसमें सब प्रोफेसरों की आवाज भरी थी। वायरलेस पर हो रहे प्रयोगों की श्रृंखला में वे बिना तार के बिजली का बल्ब जला कर दिखाते।'

मुझे बचपन की यह बात याद है कि बाबूजी ने चूल्हों पर रखी डेगची से निकलती भाप से खिसकते ढक्कन को दिखाकर हमें वॉटसन के वाष्प ईंजन से लेकर स्टीफेनसन के रेलगाड़ी के

तोड़ने पर बहुत ऊर्जा उत्पन्न होती है। और इस ज्ञान से एक ओर विनाश के लिए बम भी बनाया जा सकता है, तथा दूसरी ओर बिजलीघर या अन्य सृजनात्मक कार्यों में इस शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। कलाएं, इस ज्ञान का क्या रूप दिया जाए उसके लिए शिक्षा देती है — साहित्य रचकर, संस्कृति, धर्म, आचरण के मापदंड बनाकर, मानव प्रवृत्तियों का संचालन कर तथा सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की भावनाओं को यथार्थ रूप देकर।

बाबू गुलाबराय ने अपनी आत्मकथा 'मेरी असफलता' में लिखा है कि 'मुझे अध्ययन में भी पराई पत्तल का भात अच्छा लगता था। आर्ट्स (कला) का विद्यार्थी होकर भी विज्ञान में रुचि रखता था। संस्कृत के बजाय फिजिक्स पढ़ता तथा तर्क-शास्त्र मेरा विशेष विषय रहा है।'

ईंजन के अविष्कार की कहानी सुनायी थी — बच्चों में विज्ञान में उत्कंठा जागृत करने के लिए ही उन्होंने विज्ञान-वार्ता एवं विज्ञान-विनोद जैसी पुस्तकें लिखीं, जिससे बच्चे जगदीशचंद्र बसु, मारकोनी, गेलिलियो, रमन आदि वैज्ञानिकों के आविष्कारों की कहानी पढ़कर अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण बना सके।

एक बार मैंने बाबूजी से पूछा था कि विज्ञान और कला में क्या अंतर है, तो उन्होंने सहज भाव से कहा कि 'मेरे गुरु प्रो. डॉबिसन कहते थे कि 'साइंस टीचस् टू नो, व्हाइल आर्ट टीचस् टू डू।' इसकी व्याख्या कर उन्होंने बताया कि विज्ञान नग्न सत्य की जानकारी प्राप्त कराता है जबकि कला कर्म करना सिखाती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान जानकारी देता है कि परमाणु को

इसी सिलसिले में उन्होंने कहा कि चिकित्सा-विज्ञान के साथ मानविकी की शिक्षा विकसित देशों में अनिवार्य है, जिससे कि डॉक्टर एक मशीन बनकर कार्य न करे, बल्कि रोगी का उपचार संवेदनापूर्वक मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर करे। काश, इस धर्म परायण भारत की परंपरा के अनुरूप हम कार्य करने में आचरण को महत्त्व देते।

बाबूजी के एक बहुमुखी प्रतिभा के अध्यापक थे डॉ. हंटले, जो दर्शनशास्त्र पढ़ाने के साथ ही बायलॉजी, केमिस्ट्री का भी ज्ञान देते थे। स्नायु संस्थान का ज्ञान बाबूजी ने अपने मनोविज्ञान के शिक्षक प्रोफेसर ईरिक डू से प्राप्त किया था। जब मैं मेडिकल कालिज में चिकित्सा-विज्ञान की पढ़ाई कर रहा था, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबूजी मुझे मस्तिष्क के भागों तथा उनके कार्यों के विषय में बताते कि किस तरह कंप्यूटर की तरह बाहरी इंद्रियों से संदेश निस्पंदक हो, पहचाना एवं व्याख्येय होकर प्रभावित होता है। साथ में वे अपने गुरु प्रो. ईरिक डू के वाक्य को दोहराते कि स्नायु संस्थान दुनिया की सबसे मनोरंजक वस्तु है। इस पर मैं कहता था कि स्नायु संस्थान को समझना सब से मुश्किल काम है। बाबूजी ने अपनी पुस्तक 'मन की बातों' में बड़े सरल तरीके से मनोविज्ञान को समझाया है।

बाबूजी ने एक स्थान पर लिखा है कि 'मैंने ऐसे गुरुओं से शिक्षा प्राप्त कर, परीक्षा की ओर तो कम ध्यान दिया और विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र के अतिरिक्त अध्ययन में अधिक समय बिताया।' मैं कभी सोचता हूं कि आज के विद्यार्थी का ज्ञान केवल परीक्षा पास करने तक ही सीमित रहता है। बाबूजी के समय जब कि विज्ञान की शिक्षा के लिए आधुनिक साधन उपलब्ध न होने पर भी कितना महत्त्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंठा रहती थी। ऐसे ही जिज्ञासु को सही माने में विद्यार्थी कहा जा सकता है पर ऐसे जिज्ञासु छात्र बिरले ही होते हैं।

कुत्ते काटे से ज्ञान

एक बार बाबूजी को कुत्ते काटने पर कसौली (शिमला) इंजेक्शन लगवाने जाना पड़ा। उस समय कुत्ते काटने का इलाज केवल इसी स्थान पर होता था। वहां उन्होंने अपनी जिज्ञासा हेतु पाशच्युर इंस्टीट्यूट में किस तरह खरगोशों के मस्तिष्क में रेबीज के वायरस को पोषण (कल्चर) कर वेक्सीन तैयार की, इस विधि की जानकारी ली। वहीं स्थित [illegible] अनुसंधान संस्थान में उन्होंने सांप के [illegible] प्लेग, कॉलरा आदि के प्रतिरोधक टीके [illegible] की जानकारी भी ली। बाबूजी ने कसौली [illegible] लौटकर हम लोगों को विस्तार से बताया [illegible] जहरीले सांप के विष को निकालकर [illegible] घोड़ों को इंजेक्शन दिया जाता है। फिर [illegible] दिन बाद उन घोड़ों के खून में प्रतिरक्षी [illegible] प्रतिरोधक सीरम उपचार हेतु तैयार किया [illegible] है। बाबूजी जब किसी वैज्ञानिक संस्थान [illegible] जाते तो वहां हो रहे कार्य में पूर्ण रुचि लेते [illegible]

मेरी मां अकसर बीमार रहती थी। [illegible] दस्त, पेट दर्द, खून की कमी, सर्दी, [illegible] आदि रोग लगे ही रहते। उन दिनों एलो[illegible] दवाओं में मिक्सचर का प्रचलन था। पेट [illegible] दर्द के लिए कारमीनेटिव, बिसमथ [illegible] मिक्सचर या उसमें पड़े बेलाडोना या अन्य [illegible] दवाएं वे बराबर लेती थीं। उनके नाम [illegible] बाबूजी को याद ही न थे, बल्कि उन्हें [illegible] जायफल, दालचीनी, पीपरमेंट आदि [illegible] सुगंधित तत्व एवं सोडा आदि की जानकारी [illegible] थी। इसी प्रकार बेलाडोना की उत्पत्ति [illegible] उसके आंख की पुतली को चमकाने के [illegible] कारण उसका नाम एक सुंदर लड़की [illegible] जाने का रहस्य वे जानते थे। मैं उन [illegible] भेषज्य चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई कर रहा [illegible] वे इन दवाओं के बारे में चर्चा करते। वे [illegible] थे कि मैं घरेलू एवं आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी [illegible] भी अध्ययन करूं तथा उनका [illegible] चिकित्सा प्रणाली के मापदंडों के आधार [illegible] गवेषणा कर सही मूल्यांकन करूं। उन [illegible] प्रोत्साहन पर मैंने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद तथा केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में एलरजी, दमा, संधि रोग, मधुमेह चिकित्सा में उपयोगी देशी जड़ी-बूटियों पर अनुसंधान किया। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में अभी कुछ ही देशी दवाओं का समावेश हो पाया है। अब इस ओर बहुत से वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित हुआ है।

बाबूजी का आधुनिक चिकित्सा प्रणाली पर पूरा विश्वास था। उनका मत था कि इस प्रणाली में रोग निदान वैज्ञानिक मापदंडों, प्रत्यक्ष प्रमाण जैसे — एक्स-रे, अन्य भौतिक उपकरणों से शरीर की परख, खून, टट्टी, पेशाब की जांच पर आधारित होने से बीमारी का कारण तथा उसका प्रभाव बताया जा सकता है। इसी प्रकार उपचार केवल अनुभव पर ही आधारित न हो कर ज्वलंत प्रयोगों पर भी प्रमाणित होता रहा है। इसलिए वे कहते थे कि इलाज के लिए अविकसित चिकित्सा प्रणाली की अनजानी राहों में भटकने में क्यों समय गंवाया जाए, जबकि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली उपलब्ध हो सकती हो।

स्वयं परीक्षण करते थे

बाबूजी स्वयं भी मधुमेह एवं रक्तचाप के रोगी थे। वे कहा करते थे कि कुछ अंशों में तो यह रोग मैंने विरासत से पाये हैं। परंतु मेरे अव्यवस्थित दिनचर्या एवं आलस्य ने रोगों को बढ़ावा दिया है। यह जानकर कि इस रोग से देवता और पितृ कोई भी मुक्त नहीं हो पाये, उन्हें निराशा नहीं सताती थी। गणेशजी कपित्थ जम्बूफल (जामुन) का सेवन करते थे तथा शिवजी बिल्वपत्र। इसी रोग के उपचार में इनका

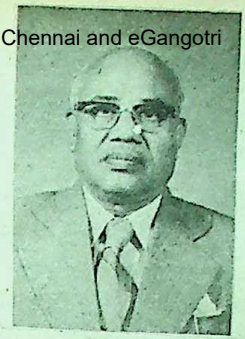

लेखक

सेवन कर चिंता से मुक्त रहते होंगे। बाबूजी भी शायद उनका अनुकरण कर जामुन, कुंदरू, करेला आदि अनिवार्य रूप से लेते हुए भी चिंताग्रस्त रहे, जिससे उनका रक्तचाप बढ़ता गया। बाबूजी कहते थे कि मधुमेह से अब बहुत वर्षों का नाता हो गया है। उसकी विधियां समझने लगा हूं। अपने अनुभव से तीन मुख्य उपचार समझे हैं। रसना का संयम, भ्रमण तथा इंसुलिन। मधुमेह के विषय में बाबूजी बेटिंग एवं बेस्ट के कुत्ते के अग्न्याशय से इंसुलिन निकालने का प्रायोगिक गणवेफन से लेकर इंसुलिन की थोड़ी व लंबी अवधि की किस्में, उनके लेने के तरीकों की जानकारी किताबों से पढ़कर अपनी जिज्ञासा पूरी करते। वे स्वयं मूत्र परीक्षण कर इंसुलिन की मात्रा निर्धारित करते, खाने का परहेज बरतते। बाबूजी का कहना था कि मधुमेह स्वयं तो इतना भयंकर नहीं होता जितना कि उसके अनुचर जैसे, फोड़े, फुंसियां, मोतिया बिंद, रक्त चाप, हृत्शूल आदि, (जिनका कष्ट उन्हें झेलना पड़ा) अपने रक्तचाप की जांच मुझसे करवाते तथा दवा तो वे हृदय-रोग विशेषज्ञ की सलाह से ही लेते थे, यद्यपि उनकी सलाह पर अध्ययन व चिंतन कम न कर सके। वे कहते थे अध्ययन व चिंतन ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक प्रकाश है

प्राचीन लोक-कथाओं पर उत्कृष्ट बाल-साहित्य

विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-1	7.50	देश-विदेश की लोक कथाएं	7.50
विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-2	8.00	सिन्धी लोक कथाएं	12.00
विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं भाग-3	13.00	स्वर्ण भूमि की लोक कथाएं	12.50
पूर्वांचल की लोक कथाएं	12.00	उपनिषद की प्राचीन कथाएं	7.50
उत्तर प्रदेश की लोक कथाएं	14.50	वैदिक काल की कहानियां	6.00
भारत के लोक गाथा गीत	25.00	आटपाट नगर की कहानियां	11.00
रोचक ऐतिहासिक कहानियां	8.00	श्राद्ध की दक्षिणा तथा अन्य हास्य कथायें	14.00
बिहार की लोक कथाएं भाग-1	7.50	कश्मीर की लोक कथाएं	12.00
बिहार की लोक कथाएं भाग-2	7.00	जैन कहानियां	10.00
अनकही शौर्य कथाएं	10.00	ईसप की गीत कथाएं भाग-1	11.00
बाल कहानियां	7.00	ईसप की गीत कथाएं भाग-2	12.00

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित सभी पत्रिकाओं में से किसी एक पत्रिका का वार्षिक ग्राहक बन जाने पर समस्त प्रकाशनों की खरीद पर 10 प्रतिशत की छूट, विभिन्न विषयों पर भारत की सभी भाषाओं में उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध हैं।

40.00 रूपये से कम आदेश पर पंजीकरण शुल्क (रजिस्ट्रेशन फीस) अतिरिक्त भेजना होगा। पुस्तकें स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं से लें अथवा सीधे लिखें।

व्यापार व्यवस्थापक
विक्रय केन्द्र,
प्रकाशन विभाग,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001

सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस, नई दिल्ली
बिहार स्टेट को-आपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ-पटना-800004
10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
8, एसप्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
कामर्स हाउस (दूसरी मंजिल) करीम भाई रोड, बेलार्ड पियर, बम्बई-400038
एल.एल.ए. आडिटोरियम, अन्ना सलाई, मद्रास-600002
स्टेट आर्कीलाजिकल म्यूजियम बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन, हैदराबाद-500004
प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001

DAVP87/611

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा जीवन है। दवाओं से जीना मंजूर है।

आयुर्वेद पद्धति के पक्षधर

बाबूजी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को स्वस्थ्य निरोग रहने का एक तरीका मानते थे। आयुर्वेदिक व यूनानी औषधियों को प्रतिरोधक, बलवर्धक रूप में मान्यता देते थे। पर चाहते थे कि वैज्ञानिक तरीकों पर उनका मूल्यांकन तथा मानकीकरण हो, जिससे कि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में समावेश किया जा सके। होम्योपैथी के अपने घनिष्ठ मित्र डॉक्टर एस.सी. सरकार से कहते, 'अभी मैं अटकल-पच्चूवाली चिकित्सा प्रणाली का गिनीपिग बनने को तैयार नहीं, यद्यपि इतना सस्ता, सुलभ उपचार कल्पना के बाहर है।' बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था में पौरुष ग्रंथि के आपरेशन से बचने के लिए, एक हितैषी की सलाह पर बाबूजी ने होम्योपैथिक दवा ली। पर शायद, सही दवा न होने के कारण उनका पेशाब बनना कम हो गया। जिससे आपरेशन करना जरूरी हो गया। पर शल्य चिकित्सा की तैयारी में ही उनकी हृदय गति रुकने से जीवनलीला ही समाप्त हो गयी।

बाबूजी को बागवानी का शौक था। वनस्पति विज्ञान के प्रो. एन.एन. मुकर्जी से वे साहित्य ग्रंथों में उल्लिखित पेड़-पौधों का वर्गीकरण वैज्ञानिक नाम, उनके लुप्त होने के कारण तथा उन वृक्षों की उपयोगिता के बारे में चर्चा करते थे। कुछ पेड़ जैसे अशोक, कौलश्री, कदंब, ताड़ आदि उन्होंने घर के बगीचे में लगवाएं, जो आज भी उनकी याद दिलाते हैं।

अंधविश्वास के बारे में उनका मत था कि कुछ मान्यताएं अनुभव के आधार पर संकेतक बन गयी, और कुछ समाज अपना उल्लू सीधा करने हेतु अंधविश्वासों को मान्यता दिलाते रहे। घर के बाहर निकलते ही छींक आने पर बाहर निकलना अपशगुन का सूचक समझा जाता है। बाबूजी का कहना था कि बाहर निकलते ही छींक आना बाहरी वातावरण दूषित होने का संकेत देता है। छींक प्रत्युर्जत्ता (एलरजी) का प्रतीक हैं। तब मैंने इसका वैज्ञानिक आधार इस तरह जोड़ा-दूषित पर्यावरण में एतरजन बाहर निकलते ही सांस द्वारा नाक में प्रतिरक्षी के संपर्क में आते ही प्रतिजन (एंटीजन) एवं प्रतिरक्षी (एंटीबाडी) की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप कोषिकाओं से प्रकोपक तत्व हिस्टेमीन परित्याग होने पर छींक आती है। इस जानकारी से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। वे बोले कि शायद बिल्ली का रास्ता काट जाना भी आगे आनेवाली विपत्ति का सूचक हो, क्योंकि बिल्ली, खरगोश राह के सामने आती तेज रोशनी, आग, तूफान से बचने के लिए बिलकुल लंब दिशा में भागते हैं। ऐसी थी उनकी प्रेक्षक दृष्टि या अवलोकनात्मक दृष्टिकोण। आगे उन्होंने कहा कि पुराने जमाने में ये सूचक ग्रामीण अंचल में सार्थक होंगे, पर अब सड़क पर की लाल बत्रिया तथा मौसम की सूचना देनेवाले यंत्रों के लगने पर इन जानवरों के सूचक के अर्थ कम हो जाते हैं और इस तरह की मान्यताओं में अंधविश्वास को भूल जाना चाहिए।

— 'गुलाब कुटीर'
ई-१/३८, अरेरा कालोनी, भोपाल-४६२०१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

राजनीति की रणनीति

● प्रेम दीपक

न जाने इन पत्नियों को क्या मर्ज है कि वे हमेशा वही बात करेंगी कि जिसका उत्तर हमारे पास नहीं होता। किसी और के पास होता है। जैसे कि सरकार के पास होता है। महंगाई बढ़ रही है, चीजें नहीं मिल रही हैं, गली में सफाई का बुरा हाल है ! बताइए इस बारे में हम क्या कर सकते हैं ? अधिक से अधिक अधिकारियों को शिकायत कर सकते हैं। जबकि वे यह भी जानती हैं कि इन शिकायतों का कोई असर नहीं होता। फिर भी वे अपनी रट लगाये रखेंगी।

ऐसी ही एक बात पत्नी आज सुबह कहने लगी, "सुनते हो, आजकल शहर में चोरियां बहुत हो रही हैं।"

सोचा, 'तो मैं क्या करूं।' मैं शेव बना रहा था। इस असमय की रागिनी को सुना तो ठोढ़ी पर एक कट लग गया। मैं तड़प उठा और क्रोध निकाला अपने उत्तर में। बोला, "मुझे तो ऐसा नहीं लगता। तुम तो बस हर बात का बतंगड़ बनाना जानती हो !"

"अखबार भी पढ़ते हो कि नहीं," पत्नी तुनककर बोली, "कल शहर में दो भयानक चोरियां हुई हैं। एक में तो घर की मालकिन को भी मार डाला चोरों ने !"

'तुम्हें नहीं मार सकते वे।' मैंने मन में सोचा। यह खबर मैंने भी अखबार में पढ़ी थी मगर इसे गंभीरता से नहीं लिया था। इसका कोई कारण नजर नहीं आया था। शहर बड़ा शहर है, एकाध चोरी हो जाए तो हैरानी कैसी ? हैरानी तो उस दिन होती है, जिस दिन चोरी नहीं होती। यही मैंने कहा, "चोरी नहीं होगी तो चोर खाएंगे कहां से। कर्फ्यू लगा है तुमने ?"

"अजीब आदमी हो तुम। तुम्हारे होगा जब तब ठिकाने आएंगे जब चोरी हमारे घर में होगी।" पत्नी बुरा-सा मुंह बनाकर बोली।

मैं चिढ़ गया। चिड़चिड़ी आवाज में बोला, "तो तुम क्या चाहती हो मुझसे ? क्या मैं पिस्तौल का लाइसेंस लूं ?"

पत्नी माथे पर हथेली चिपकाकर बोली, "तुमसे तो बस कुछ भी कहना ही फिजूल है। पिस्तौल रखकर तुम क्या कर लोगे, हैं ? उल्टे तुम्हें थप्पड़ मारकर चोर तुमसे पिस्तौल छीनकर ले जाएगा !"

शहर में चोरी की घटनाएं बढ़ती देखकर एक महल्ला-कमेटी का गठन किया गया। बैठकें हुईं, पदाधिकारी नियुक्त किये गये, लेकिन परिणाम क्या निकला ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस उत्तर पर हंसना चाहता था, मगर हंसा नहीं। इसलिए कि यह बात मेरे पौरुष पर आघात थी। मगर यह भी तो एक सत्य था कि हमारी सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार पर है। मैं क्या कर सकता हूं। आजकल आदमी सब काम खुद तो नहीं कर लेता। क्या मैं जूते बनाता हूं, गेहूं उगाता हूं, कपड़ा बुनता हूं। ऐसे ही सुरक्षा का प्रबंध भी मेरा काम नहीं है। कौन समझाये अब यह बातें इस मूर्ख औरत को।

"तो फिर तुम क्या चाहती हो मुझसे ? जो काम सरकार का है, क्या मैं अपने हाथ में ले लूं ?" मैंने पत्नी को समझाने की चेष्टा की।

"यह मैं नहीं जानती। तुम्हें कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए !" पत्नी ने आज्ञा दी। बल्कि यूं कहिए कि बेमतलब मुझे शून्य में ले जाकर छोड़ दिया।

अब मैं भी राजनीति की रणनीति को समझ गया था। दुनिया कैसे बढ़ रही है, समझ गया था, और मैं यह भी समझ गया था कि असल मुद्दा आगे बढ़ना होता है। आगे, आगे और आगे !

अब कुछ तो मुझे करना ही था। वह मैंने किया। यानी महल्ले वालों से बात की। बैठे-ठालों को सोचने का एक नुक्ता दिया। और मैं यह देखकर चकित रह गया कि वे भी 'कुछ न कुछ' करने के लिए तुरंत राजी हो गये। तुरंत कई तजबीजें सामने आ गयीं। इनमें एक जो प्रमुख थी, वह महल्ले एक महल्ला-कमेटी बनाने की थी। आखिर महल्ले में सुरक्षा ही तो एक समस्या नहीं थी। यहां तो समस्याओं का अंबार था। और दूसरी आश्चर्य की बात यह थी कि इस महल्ला-कमेटी के लिए जो मीटिंग बुलाने का काम था, तथा खर्च था, इसे भी वहन करने के लिए पड़ोसी श्री टोडरमलजी तैयार हो गये। टोडरमलजी ने हाल ही में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना तीन मंजिला मकान बनवाया था और सुना था कि पैसे की उनके पास कोई कमी नहीं है।

तो जनाब, तय हो गया और निश्चित दिन मीटिंग हुई, टोडरमलजी के घर। मीटिंग का खासा अच्छा प्रबंध किया था उन्होंने। हमारे वहां पहुंचते ही हमें एक ठंडा पेश किया गया। फिर मीटिंग की कार्रवाई शुरू हुई। भाईचारा कितना आवश्यक है, इस गुणगान के बाद समस्याएं सामने रखी गयीं। इनमें प्रमुख समस्या स्वयं टोडरमलजी की थी। उन्हें पुलिसवाले तंग करते थे और कहते थे कि आपने नया मकान बनवाया है, हमें पांच हजार रुपये दीजिए। कारपोरेशन वाले तंग करते थे और कहते थे कि आपने मकान बनाने में कई अनियमितताएं बरती हैं, हमें पंद्रह हजार रुपये दीजिए। यह सरासर जुल्म था उन पर। ऐसा तो किसी के साथ भी हो सकता था।

खैर साहब। महल्ला-कमेटी बन गयी। प्रधान के पद के लिए टोडरमलजी को चुना गया। सेक्रेटरी एक वकील साहब को। वकील साहब को सेक्रेटरी इसलिए चुना गया था कि उनकी पहुंच थाने में थी और अदालत में भी। और यह बात तो किसी से छिपी नहीं कि कोई शरीफ आदमी और सब जगह जा सकता है, केवल उन दो स्थानों पर नहीं।

मीटिंग के बाद चाय-पानी का प्रबंध था। इस चाय-पानी में गुलाब जामुन थे, समोसे थे, पीस थे, बरफी थी, समोसे थे, पकौड़े थे, चाय थी। मैंने तो इन सब का एक-एक संकोच के साथ उठाया और रह-रहकर यह रहा कि हमें टोडरमलजी की नम्रता का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए। इतना ही कर सकते थे।

यह मीटिंग तो हो गयी। अगली मीटिंग के लिए मेरी भविष्यवाणी थी कि यह कभी नहीं होगी। कारण कि जिन्हें जो मतलब था, वे निकाल ले गये थे। जिन्हें उलझाना था, वे भी बन चुके थे। अब क्या रखा था मीटिंगों में। मगर मैं गलत निकला। बिल्कुल कुएं का मेंढक। लोग आजकल बहुत अच्छा सोचते हैं। अगली मीटिंग के लिए शीघ्र ही आ गया।

अगली मीटिंग का प्रबंध पहली मीटिंग से कुछ और अच्छा लगा मुझे। अब की प्रधानजी तथा सेक्रेटरी के लिए कुर्सियां थीं तथा उनके आगे एक मेज थी, जिस पर फूलों का गुलदस्ता सजा था। यह पता हुआ कि हमारी महल्ला-समिति के पैड छप गये थे, और इन पर प्रधान तथा सेक्रेटरी का नाम सुनहरी अक्षरों की तरह छपा था। उस समय मेरे दिल का हाल जान सकते हो। आइडिया मेरा और झंडा किसी और का गया था। नींव में मैं था और महल किसी का बन गया था।

अब की बार जो मीटिंग हुई, उसका एजेंडा यह था कि प्रधानजी को स्पेशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलीफोन एलाट होना चाहिए, एक डेपुटेशन की नियुक्ति की जानी चाहिए, जो प्रधानजी के नेतृत्व में पुलिसवालों से मिले और उन्हें हमारे महल्ले की समस्याओं से अवगत कराये तथा अन्य दूसरी छोटी-छोटी बातों पर विचार।

कहना नहीं होगा कि सारे 'रिज्यूलेशन' पास हो गये। डेपुटेशन का एक सदस्य मुझे भी बनाया गया। सच पूछिए तो मैं बनाया नहीं गया था बल्कि इसमें जबरदस्ती धकेला गया था क्योंकि और कोई इस फालतू काम के लिए तैयार नहीं था। मैं मन ही मन कुढ़ा तो बहुत, भुनता भी रहा, मगर बोला कुछ नहीं।

मगर मैं अपने रोष को रोक नहीं सका। मैंने इसे निकाला चाय पार्टी में, जो बाद में हुई। डटकर हर चीज के दो-दो पीस खाये और गुलाब जामुन के तो चार पीस गड़प कर गया, क्योंकि इन्हें मैंने पहली बार इतना स्वादिष्ट पाया था।

डेपुटेशन पुलिस अधिकारियों से मिला। इधर-उधर कई पत्र भी भेजे गये। इनसे प्रधानजी का नाम रोशन हुआ। मगर इस बीच एक घटना भी घटी। हमारे महल्ले में एक चोरी हो गयी। वह भी किसी ऐरे-गैरे की नहीं, बल्कि हमारे सेक्रेटरी वकील साहब की। उनकी कार चोरी हो गयी थी।

बात गंभीर थी। खूब बावेला मचा। इस बात को लेकर प्रधानजी ने महल्ला-कमेटी की एक हंगामी मीटिंग बुलायी। मैं तो ऐसी किसी मीटिंग की पहले से प्रतीक्षा कर रहा था। वास्तव में प्रधानजी की रणनीति को समझ गया था। दुनिया कैसे आगे बढ़ रही है, समझ गया था। और मैं यह भी समझ गया था कि असल मुद्दा आगे बढ़ना होता है। आगे, आगे, और आगे! महल्ले-वहल्ले की सुरक्षा नहीं।

मीटिंग शुरू हुई। मैं कुछ देर हवा को सूंघता रहा। प्रधानजी ने सारा दोष पुलिस पर मढ़ा। सेक्रेटरी साहब बौखलाये हुए थे, इसलिए वे नहीं बोले। तब मैंने अपना प्रहार शुरू किया। पहले धीमे-धीमे, फिर गरजकर साफ जताया कि यह महल्ला कमेटी बराये नाम थी। यह कमेटी अपने वास्तविक धर्म यानी जनता की सेवा के, और-और काम करने लगी थी। इस कमेटी ने अपने महल्ले की समस्याओं को तो छुआ तक नहीं था। केवल कुछ चिट्ठियां लिखने तक ही अपने को धन्य माना था। आवश्यकता है कि या तो इसे भंग किया जाए या इसमें नयी रूह लायी जाए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि आगे क्या हुआ। वही हुआ, जिसकी मुझे आशा थी। मैंने इस राजनीति को अच्छी तरह समझ लिया था। इस शतरंज में मेरी जीत का मोहरा भी वही था, जिसका प्रयोग दूसरों ने किया था। जनता। जनता की सेवा। और मेरा काम हो गया। उसी मीटिंग में ही एक एडीशनल सेक्रेटरी की पोस्ट का निर्माण किया गया। इस पर मेरी नियुक्ति हुई। इस बात के कुछ रोज बाद मेरे घर में भी टेलीफोन लग गया। सफलता की जब यह कुंजी मेरे हाथ आ गयी तो एक राज की बात और आप पर खोल दूं। जानते हैं अब मेरी दृष्टि कहां है? तो सुनिए। आगे। आगे। वहीं, जहां प्रधानजी तथा सेक्रेटरी की है।

—४/३६ राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली-११००६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

क्या आप जानते हैं कि इस पृथ्वी पर आप जहां कहीं भी हों सूर्य और इसके साथी अन्य नक्षत्रों के प्रभाव से घिरे हुए हैं; इसलिए आपको सफलता प्राप्त करने के लिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। इसे आप केवल एक सप्ताह में हासिल कर सकते हैं। मेले-ठेलों में हाथ दिखाने, पक्षियों से अपना भविष्य पूछने या अधकचरी पुस्तकों को पढ़ने के बजाय आप निम्नलिखित ज्ञानवर्धक पुस्तकों का अध्ययन करें :

ज्योतिष रत्नाकर—देवकीनन्दन सिंह
मूल्य (सजिल्द) १५०, (अजिल्द) १२०

केदारदत्त जोशी :
ग्रहलाघव (सजिल्द) ९०, (अजिल्द) ५०
ताजिक नीलकण्ठी (सजिल्द) १००
(अजिल्द) ७०
मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा
(सजिल्द) ९५, (अजिल्द) ६५
लघु पाराशरी २०
बृहज्जातक (सजिल्द) १००
(अजिल्द) ७०
सिद्धांत शिरोमणि, गोलाध्याय
(सजिल्द) १६०
(अजिल्द) १२०

जगजीवन दास :
ज्योतिष रहस्य (सम्पूर्ण) १००
दशाफल विचार २४

चन्द्रदत्त पंत:
चन्द्रहस्तविज्ञान (सजिल्द) १००
(अजिल्द) ७५
वर्षचन्द्रप्रकाश ५
प्रश्नचन्द्रप्रकाश २५
लग्नचन्द्रप्रकाश ३६
विविध योग चन्द्रप्रकाश १८

मुरलीधर चतुर्वेदी :
सारावली (सजिल्द) ९०; (अजिल्द) [illegible]
होरारत्नम (दो भागों में)
प्रथम भाग (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]
द्वितयि भाग (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]
वृहद्दैवज्ञरंजनम् प्रथम खण्ड
(सजिल्द) १३०; (अजिल्द) [illegible]
द्वितीय खण्ड (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]

एन.पी. ठाकुर :
सचित्र हस्तरेखा सामुद्रिक शिक्षा [illegible]
शुकदेव चतुर्वेदी :
ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार
(सजिल्द) ६५; (अजिल्द) [illegible]

दीवान राम चन्द्र कपूर :
लघुपाराशरी भाष्य (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]
काल चक्र

रामचन्दर पाण्डेय :
ज्योतिर्विदाभरणम (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]

ब्रजबिहारीलाल :
चमत्कार चिन्तामणि (सजिल्द) [illegible]
(अजिल्द) [illegible]

मोती लाल बनारसी दास
बंग्लो रोड, दिल्ली-७

शाखाएं: अशोक राजपथ, पटना • चौक, [illegible]
[illegible] रोड, मैलापुर, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति : सूर्य १३ से मेष में, मंगल मकर में, बुध १७ से मेष गुरु में, शुक्र वृषभ में, शनि धनु में, राहु कुंभ में, केतु सिंह में, हर्षल नेप्च्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेगा।

मेष

मास मध्यम फलदायक होगा। आर्थिक स्थिति में अस्थिरता होगी। मित्रों के कारण तनाव तथा चिंता का सामना करना होगा। १ से ८ के मध्य परोपकारी कार्यों में धन व्यय होगा। पारिवारिक वातावरण में खिन्नता का उदय होगा। व्यस्तता अधिक होगी, ९ से १५ के मध्य नवीन योजना को साकार करने में धन व्यय होगा। शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। १५ से २३ के मध्य लाभदायी उद्देश्यों की पूर्ति होगी। यात्रा का योग उपस्थित होगा। परीक्षा प्रतियोगिता अथवा रचनात्मक कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से संपत्ति संबंधी कार्य पूर्ण होंगे। मासांत में पारिवारिक सुखद समाचार प्राप्त होगा। मन में उल्लास तथा प्रसन्नतादायी स्थिति होगी।

वृषभ

मास अनुकूलतम होगा। भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु श्रेष्ठ समय रहेगा। आध्यात्मिक अभिरुचि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लेखन में सफलता मिलेगी। १ से ८ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से महत्वपूर्ण योजना पूर्ण होगी। यात्रा फलदायी होगी। ९ से १५ के मध्य प्रियजनों के सहयोग से आर्थिक योजना पूर्ण होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। १६ से २४ के मध्य नवीन कार्यों में झुकाव होगा। संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। लेखन अथवा रचनात्मक कार्य से सुख मिलेगा। मासांत में सुखद समाचार प्राप्त होगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा।

मिथुन

मास में कलात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, उदारतावादी प्रकृति से आर्थिक संकट होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा। कर्क

संपत्ति अथवा वाहन पर व्यय होगा। एक से ८ के मध्य साहित्य, कला, संगीत के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सृजनात्मक कार्यों से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ९ से १५ के मध्य महत्वपूर्ण योजना की पूर्ति होगी। नवीन स्थान की यात्रा लाभदायी होगी। १६ से २४ के मध्य पारिवारिक अस्थिरता पर धन व्यय होगा। विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। जीवन साथी की चिंता रहेगी। मासांत में वाहन अथवा संपत्ति पर धन व्यय होगा।

मास श्रेष्ठ तथा सफलतादायी होगा। दि[illegible] काल से चली आ रही समस्याओं का [illegible] होगा। कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि मिलेगी। [illegible] ८ के मध्य उच्चाधिकारी वर्ग के सहयो[illegible] उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य मिलेगा। जीवन साथी [illegible] उल्लेखनीय भूमिका होगी। ९ से १५ के [illegible] पारिवारजनों का सहयोग मिलेगा तथा [illegible] में वृद्धि होगी। १६ से २४ के मध्य [illegible] संसाधनों में वृद्धि होगी। संपत्ति संबंधी [illegible] में सफलता मिलेगी। मासांत में विवादों [illegible]

पर्व और त्यौहार

१ अप्रैल-गुड फ्राइडे, २ चैत्री पूर्णिमा, ३ झूलेलाल जयंती, ५ संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, १० शीतलाष्टमी, १३ एकादशी व्रत, १४ प्रदोष एवं मासशिवरात्रि व्रत, १६ स्नानदान अमावस्या, १८ परशुराम जयंती, रमजान माह आरंभ, १९ अक्षय तृतीया, २० वैनायकी गणेश चतुर्थी, २१ जगद्गुरू शंकराचार्य जयंती, २२ रामानुजाचार्य जयंती, २३ गंगा सप्तमी, २४ बगुलामुखी, २७ एकादशी व्रत, २९ प्रदोष व्रत, ३० नृसिंह चतुर्दशी।

राशियां और प्रभाव

मास में मंगल उच्च राशि में रहेगा। गुरू की शनि पर पूर्ण दृष्टि होगी। हर्षल शनि नेप्चयून वक्री हो रहे हैं। जो कि वृषभ, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, मीन को श्रेष्ठ, मेष कन्या कुंभ के लिए मध्यम तथा शेष को सावधानी अपेक्षित है। मास में पाश्चात्य देशों में आंतरिक विरोधाभास तथा श्रम समस्याएं बढ़ेंगी। अंतरराष्ट्रीय आदर्शों की स्थापना में अवरोधक स्थितियों का उदय होगा। मुस्लिम राष्ट्रों में परस्पर संबंधों में विखराव होगा। आपसी युद्ध की संभावना बलवती होगी।

भारत में मध्यावधि चुनावों की चर्चा अधिक होगी, किंतु संभावना नहीं है। विपक्षी एकता के प्रयास होंगे। सत्ता पक्ष में आंतरिक षड्यंत्र तथा अंतर्कलह बढ़ेगा, संगठन स्तर पर महत्वपूर्ण निर्णय होंगे। जन जीवन को लाभान्वित करने की योजना प्रसारित होगी। मुद्रा प्रसार बढ़ेगा। सीमावर्ती राज्यों में तनाव विद्यमान रहेंगे।

आकाशीय वातावरण सुहावना होगा। कहीं-कहीं स्वल्प वृष्टि की संभावना है। किंतु मासांत में कहीं अतिवृष्टि संभावित होगी।

सोना चांदी तथा धातुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। उपभोक्ता वस्तुओं पर मास मध्य में मंदी का दौर आएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत होगा। लेखन, सृजन तथा रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आकस्मिक सुखद समाचार भावी योजना हेतु उत्साहवर्द्धक होगा।

सिंह

मास में प्रतिकूल स्थिति के बावजूद पराक्रम एवं साहस से सफलता मिलेगी। जीवन साथी के कारण मनोबल बढ़ेगा। प्रियजनों से सावधानी अपेक्षित है। १ से ८ के मध्य प्रियजनों के कारण मानसिक खिन्नता तथा तनाव का सामना करना होगा। शत्रु पक्ष के द्वारा प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने के प्रयास होंगे। ९ से १५ के मध्य स्वपराक्रम एवं साहसिक प्रयासों से वांछित कार्य पूर्ण होंगे, यात्रा कष्टदायी होगी। विपरीत स्थितियों के बावजूद राजकीय सहयोग मिलेगा। १६ से २४ के मध्य जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। कार्यों की अधिकता होगी। लेखन संबंधी कार्यों के प्रति रुझान बढ़ेगा। मासांत में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आजीविका संबंधी कार्यों में उन्नति होगी। नवीन योजना को टालना हितकर होगा।

कन्या

मास मिश्रित फलदायी होगा पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा, शत्रु पक्ष से चला आ रहा विवाद बढ़ेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग प्राप्त होगा। १ से ८ के मध्य अनावश्यक यात्रा से व्यय बढ़ेगा। शासन-सत्ता अथवा अधिकारी वर्ग के सहयोग से योजना पूर्ण होगी। ९ से १४ के मध्य अस्वस्थता तथा मानसिक तनाव बढ़ेगा। रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। १५ से २३ के मध्य नवीन वाहन अथवा भवन का सुख मिलेगा। व्यक्तिगत विकास में प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। मासांत में अस्वस्थता का निवारण होगा पारिवारिक सहयोग अच्छा मिलेगा। सुखद समाचार प्राप्त होगा।

तुला

मास अनुकूल एवं उल्लेखनीय प्रगति पूर्ण होगा। आर्थिक मांगलिक कार्य तथा पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान में सफलता प्राप्त होगी। एक से ८ के मध्य परिवारजनों के साथ संबंधों में मधुरता होगी। जीवन साथी एवं उनके संबंधियों के कारण लाभ की प्रबल संभावना होगी। ९ से १५ के मध्य पराक्रम में वृद्धि व नवीन कार्य में सफलता मिलेगी। राजकीय अधिकारियों से विरोधाभास होगा। धैर्य एवं संयम से कार्य करें। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। रचनात्मक कार्यों से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक जीवन में संतुलन बनाये रखें। मासांत में उच्चाधिकारियों के साथ संबंधों में मधुरता होगी। अधीनस्थ वर्ग के कारण लाभ प्राप्त होगा। संपत्ति के कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

मास में नवीन योजनाओं में प्रगति होगी। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा। आमोद-प्रमोद पर धन व्यय होगा। १ से ८ के मध्य आजीविका के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। नवीन योजना की पूर्ति में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ९ से १५ के मध्य आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। प्रतियोगिता, परीक्षा, राजकीय कार्य एवं रचनात्मक गतिविधियों में वृद्धि होगी। १६ से २४ के मध्य अकारण विरोधाभास व्यर्थ विवाद तथा संपत्ति के कार्यों की चिंता होगी। मासांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भौतिक सुखों को साकार करने के लिए अनुकूल समय होगा। शासन अथवा राजनीतिक व्यक्तियों के साथ सावधानी रखना हितकर होगा।

धनु

कार्यों की अधिकता होगी। पारिवारिक विषमता के बावजूद जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों में धीमी गति से प्रगति होगी। १ से ८ के मध्य उच्चाधिकारियों की कृपा से नवीन दायित्व तथा अधिकार की वृद्धि होगी। परिश्रम की अधिकता होगी। यात्राओं से अस्वस्थता का सामना करना होगा। ९ से १५ के मध्य रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। पदोन्नति, विभागीय परिवर्तन, प्रतिष्ठा व मान सम्मान का लाभ मिलेगा। १६ से २४ के मध्य आजीविका संबंधी कार्यों में सावधानी रखें।

मकर

मास में आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक उपलब्धियां होंगी। उपलब्धियों को साकार करने का अनुकूल समय होगा। कार्यों की अधिकता से दिनचर्चा अव्यवस्थित रहेगी। १ से ८ के मध्य प्रियजनों से भेंट होगी, परिचय क्षेत्र में वृद्धि होगी। आजीविका संबंधी कार्यों में उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ९ से १५ के मध्य आर्थिक लाभ होगा। रचनात्मक एवं धार्मिक कार्यों से सामाजिक स्थिति श्रेष्ठ होगी। संपत्ति संबंधी अनुकूल निर्णय होंगे। प्रियजनों एवं जीवन साथ के सहयोग से विशिष्ट कार्य पूर्ण होंगे। इच्छित स्थान की यात्रा होगी। मासांत में कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता होगी। संयम से कार्य करें।

कुंभ

मास में आर्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे। शत्रु पक्ष अवरोध उपस्थित करेंगे। १ से ८ के मध्य राजकीय कार्य एवं प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्द्धक होगा। ९ से १५ के मध्य नवीन योजना में मित्र का सहयोग मिलेगा। शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारियों के सहयोग से आकस्मिक लाभ मिलेगा। आवेग अथवा भावुकता के कारण कष्ट का सामना करना होगा। १६ से २४ के मध्य पद-प्रतिष्ठा अथवा स्थानांतरण की दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे।

मीन

मास में अभीष्ट सफलता प्राप्त होगी। संपत्ति संबंधी विवाद हल होगा। आजीविका संबंधी कार्यों में उन्नति तथा लाभ वृद्धि होगी। जीवन साथी के कारण मनोबल बढ़ेगा। १ से ८ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। नवीन योजना में प्रगति होगी। ९ से १५ के मध्य स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी। पारिवारिक कार्यों में व्यय बढ़ेगा। शत्रु पक्ष से तनाव बढ़ेगा

परिवारजनों के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। अनावश्यक विवाद को टालना हितकर होगा। मासांत में साहस एवं पराक्रम के कारण शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। जीवन साथी का सहयोग मनोबल देगा।

ज्योतिष आचार्य
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर, गोविन्दपुरा
भोपाल (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

भारतेन्दु समग्र : भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी का जन्मदाता कहा जाता है। उन्होंने अपनी विराट प्रतिभा से हिंदी साहित्य की प्रायः प्रत्येक विधा को समृद्ध किया। 'भारतेन्दु समग्र' में उनकी समस्त रचनाएं संग्रहित हैं। साथ ही अनेक दुर्लभ चित्र भी दिये गये हैं। तीन खंडों में उनकी सभी रचनाओं का सिलसिलेवार प्रकाशन किया गया है।

११४४ पृष्ठों के इस वृहद ग्रंथ का मूल्य मात्र तीस रुपये हैं और इस दृष्टि से प्रत्येक हिंदी प्रेमी उसे खरीद कर अपने पास रख सकता है। एक जहां हिंदी में सामान्य से सामान्य पुस्तक का मूल्य तीस-चालीस रुपये से कम नहीं होता, वहां भारतेन्दु के समस्त साहित्य को मात्र तीस रुपये में उपलब्ध कराना हिंदी के प्रकाशन-जगत में एक क्रांतिकारी कार्य है। इसका सारा श्रेय हिंदी के प्रतिष्ठित प्रकाशन गृह हिंदी प्रचारक संस्थान को है। संस्थान ने अपनी प्रचारक ग्रंथावली परियोजना के अंतर्गत शरत, बंकिम, देवकीनंदन खत्री, प्रसाद, प्रेमचंद्र आदि की ग्रंथावलियां प्रकाशित करने का कार्य हाथ में लिया है। प्रकाशक के अनुसार इन्हें 'हम... इतनी कम कीमत पर राष्ट्र को उपलब्ध कराएंगे कि पुस्तकों का मूल्य आम आदमियों की जेब के बाहर होने की आम शिकायत समाप्त हो जाएगी।' निस्संदेह इस सारस्वत अनुष्ठान के लिए हिंदी प्रचारक संस्थान बधाई ही नहीं, हिंदी जगत की कृतज्ञता का भी अधिकारी है।

भारतेन्दु समग्र

संपादक— हेमन्त शर्मा, प्रकाशक—हिंदी प्रचारक संस्थान पो. बा. ११०६, पिशाच मोचन, वाराणसी-२२१००१, मूल्य—तीस रुपये

राम कथा विविध आयाम : बहुभाषिक राम काव्य मर्मज्ञ डॉ. रमानाथ त्रिपाठी की षष्टपूर्ति पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ को रामकथा को समर्पित किया गया है। इस ग्रंथ में तीन खंड हैं। प्रथम खंड में विभिन्न दृष्टिकोणों से रामकथा के विकास, उसकी महत्ता, रामलीला, लोकजीवन में राम की स्थिति आदि पर विचार किया गया है। द्वितीय खंड में देश की प्रादेशिक भाषाओं में रामकथा की स्थिति पर शोधपरक लेख हैं। तीसरे खंड में विदेशों में प्रचलित रामकथा पर महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गयी है। इनके अतिरिक्त डॉ. रमानाथ त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालनेवाले अनेक लेख भी इस ग्रंथ में संग्रहित हैं। रामकथा में रुचि रखनेवाले पाठकों के लिए यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण ज्ञानवर्धक सामग्री उपलब्ध कराता है। आम तौर पर अभिनंदन ग्रंथ व्यक्ति-विशेष की विरुदावलि ही होते हैं, और बहुत अधिक पठनीय या उपयोगी नहीं होते। डॉ. त्रिपाठी ने अपने अभिनंदन के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित होने वाले ग्रंथ को रामकथा को समर्पित करने का आग्रह कर एक नयी दृष्टि दी है।

रामकथा विविध आयाम
प्रधान संपादक— डॉ. भागीरथ मिश्र, प्रकाशक— डॉ. रमानाथ त्रिपाठी— भिनंदन ग्रंथ समिति, २६ वैशाली, प्रीतमपुरा, नयी दिल्ली-११००३४, मूल्य— दो सौ पचास रुपये।

अधूरा सफर : स्वर्गीय कमल व्यास की कविताओं एवं स्फुट विचारों का संकलन है। कमल व्यास बहुमुखी प्रतिभा के धनी युवक थे। मात्र २६ वर्ष की अवस्था में एक दुर्घटना में उनका प्राणांत हो गया था। कमल व्यास प्रखर पत्रकार, प्रतिभा संपन्न नाट्यकर्मी एवं सशक्त कवि थे। 'अधूरा सफर' में संकलित उनकी कविताएं समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और जीवन के प्रति अगाध आस्था का अच्छा परिचय देती हैं।

मैंने संघर्ष को
जीवन माना है
संघर्ष को आनंद
से जोड़ा है,
दुख को
सुख से
जोड़ा है।

***

क्या दुख झेले बिना
कोई महान बना ?
क्या बिना आंधी-तूफान झेले
कोई पौधा वृक्ष बना ?
क्या कोई मूर्ति
बिना छेनियों की मार सहे
पूज्य बनी ?

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये : मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से तीन वर्ष तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है।

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है। केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोट:- कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर हैं, अपने डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगियों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी उम्मीद न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखें।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने ठीक ही लिखा है— 'कमल व्यास की कविताओं में जीवन रस ग्रहण करने की प्रवृत्ति प्रधान है। वे युवकोचित मूल्यों को स्वीकार करते हैं और उन मूल्यों को बनाये रखते हुए जीवित रहने के कायल हैं।'

अधूरा सफर
कवि—स्व.कमल व्यास
प्रकाशक— कमल श्री प्रकाशन, सी-३१, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली, मूल्य— साठ रुपये।

उपयोगी संदर्भ ग्रंथ

प्रज्ञान-वार्षिकी-ज्ञानकोश : हिंदी में विश्वकोश स्तर की प्रामाणिक जानकारी देनेवाले कोशों का प्रायः अभाव ही है। प्रज्ञान-वार्षिकी-ज्ञानकोश इस अभाव की पूर्ति बखूबी करता है। भारत शीर्षक प्रथम खंड में देश के भूगोल, इतिहास, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, संविधान, संसद, न्यायपालिका, संघीय अधिकारियों, राज्यों, उनकी प्रशासनिक व्यवस्था, दो महत्त्वपूर्ण अधिनियमों, सेना, केंद्रीय मंत्रालयों, केंद्र शासित क्षेत्रों के अतिरिक्त प्रमुख व्यक्तित्वों का परिचय दिया गया है। साथ ही राष्ट्रीय पुरस्कारों, सांख्यिकी के अंतर्गत प्रमुख आर्थिक आंकड़ों, योजना, उसकी उपलब्धियों आदि के अलावा कृषि, उद्योग, खनिज, शिक्षा, ऊर्जा, जन-कल्याण, संचार, परिवहन आदि अनेक विषयों पर उपयोगी जानकारी दी गयी है।

इस तरह विश्व, क्रीड़ा, विज्ञान संबंधी खंडों से भी पाठक को संक्षिप्त लेकिन पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

यह ज्ञानकोश एक उपयोगी संदर्भ ग्रंथ है और प्रकाशक अगले वर्ष से इसे अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित करने की योजना बना रहे हैं। निस्संदेह ऐसे संदर्भ ग्रंथों का प्रकाशन स्वागत योग्य है।

प्रज्ञान-वार्षिकी-ज्ञानकोश : प्रधान संपादक : भवानन्द उनियाल, प्रकाशक : प्रज्ञान मीडिया सर्विसेज़ प्रा. लि., सी-३, शॉपिंग सेंटर नं. १, पश्चिमी मार्ग, वसंत विहार, नयी दिल्ली-५७, मूल्य : सौ रुपये पेपर बैक।

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. पहले की अपेक्षा ढाई प्रतिशत कमी, २. हिमाचल प्रदेश की चम्बा घाटी में मणि महेश झील (१३,००० फुट) के किनारे स्थित १८,५६४ फुट ऊंचा कैलास पर्वत, ३. गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन ने १८८१ ई. में, ४. टोकियो में ५३.८ कि. मी. लंबी सेइकन गुफा, ५. क. राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (दिल्ली) की पारमाणविक घड़ी, ख. एक सेकंड पीछे किया गया, ६. अमलापुरम (आंध्रप्रदेश) से साढ़े ८ कि. मी. दूर बंगाल की खाड़ी में २,०८३ मीटर की गहराई पर एक तेल-कूप से तेल निकला, ७ व्लादीमिर तिखोमिरोव, अनूदित ग्रंथ का नाम 'सुनो पृथ्वी, सुनो आकाश', ८. सैमुअल लैंगहार्न क्लीमेंस; 'मार्क ट्वेन' का अर्थ है 'सुरक्षित जल', जो नाविक नदी में नौका के लिए सुरक्षित गहराई के संबंध में प्रयुक्त करते थे, लेखक ने यह नाम २८ वर्ष की अवस्था में (१८६३ ई.) अपनाया, ९. बोथम (ब्रिटिश) तथा रिचर्ड हैडली (न्यूजीलैंड)— प्रत्येक ने ३७३ विकेट लिये (जनवरी के प्रारंभ तक के आंकड़े), १०. क. नरेन्द्र हिरवानी, वेस्ट इंडीज के विरुद्ध (मद्रास में चौथ टस्ट में, जनवरी १९८८), ख. ऑस्ट्रेलिया के ब्राब मर्सी ने १९७२ में इंगलैंड के विरुद्ध १६ विकेट लिये थे, ११. हाथी का पांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

आयुर्वेदिक चिकित्सा जगत में विख्यात राष्ट्रपति
मानद वैद्य कविराज वेदव्रत शर्मा प्रत्येक अंक
बीमार और पीड़ित व्यक्तियों के आयुर्वेद पद्धति
उपचार के उपाय बताएंगे। आप यदि किसी रोग
ग्रस्त हैं तो नीचे का फार्म भरकर पोस्टकार्ड
चिपकाकर भेजिए।

रामकुमार, मुजफ्फरनगर

प्रश्न : पैर में ऊपर से नीचे की ओर दर्द होता है। जब दर्द शुरू होता है, तब बहुत बेचैन हो जाता हूं। कई बार दर्द सहन नहीं होता। डॉक्टरी दवा लेने पर दर्द कम हो जाता है। पुनः जब होता है, तब उसी तरह परेशान हो जाता हूं। कृपया कोई उपचार सुझाएं।

उत्तर : 'रास्नागूग' दो-दो गोली सुबह, दोपहर और रात गर्म पानी से लें। 'अश्वगंधारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। दही, चावल व शीतल पेय प्रयोग न करें।

जनार्दन प्रसाद, अमरावती

प्रश्न : सीने में दर्द, बेचैनी, भूख न लगना व सिर में भारीपन। डॉक्टरों को दिखलाया, पर कोई निदान नहीं हुआ। सभी एक्सरे परीक्षण कराये। उसमें सब कुछ ठीक है। कृपाया दवा व परहेज लिखें।

उत्तर : 'पोहकरमूल' सौ ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। आधा-आधा चम्मच सुबह, शाम गर्म पानी से लें। 'सितोपलादिचूर्ण' साठ ग्राम, 'श्रृंगभस्म' तीस ग्राम, 'मुक्ता शुक्ति भस्म' पंद्रह ग्राम। इन सभी दवाओं की साठ मात्रा बनायें। दोपहर व रात एक-एक मात्रा शहद से लें। देर से पचनेवाली वस्तुएं, दही, चावल व शीतल पेय सेवन न करें।

देवीलाल, कारक

प्रश्न : गले में खराश तीन माह से, खां
भूख न लगना, कब्ज, सिर दर्द व कमजोरी
होना, शाम के समय शरीर का गर्म बना रह
वैद्यजी कृपया इनसे छुटकारे का उपाय बता

उत्तर : 'तालीशादिचूर्ण' साठ ग्राम, ट
भस्म' पंद्रह ग्राम, चन्द्रामृत रस दस ग्राम,
सभी दवाओं की साठ मात्रा बनायें, सुबह,
शहद से लें। द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच
बाद पीयें। च्यवनप्राश अवलेह एक-
चम्मच रात में दूध से लें।

अरविन्द, रामगढ़ शेखा

प्रश्न : सारे शरीर में लाल-लाल दाने हो
हैं। खाज बहुत आती है। विद्यालय आते-
धूप में बहुत परेशानी होती हैं। बहुत सी दवा
हैं कोई फायदा नहीं हुआ। उचित दवा लि

उत्तर : 'सारिवाद्यासव' दो चम्
चंनदनासव दो चम्मच भोजन के बाद
समय पीयें। खटाई व तेल का सेवन न क

एक बदनसीब युवक, दा

प्रश्न : पेट खराब रहता है। हाजमा ठीक
है। कब्ज रहती है। सिर भी गर्म रहता
कमजोरी महसूस होती है। नींद कम आती
गृहस्थ जीवन में पत्नी संतुष्ट नहीं हो पाती,
हीन भावना बनी रहती है। कृपया कोई सुझाव

उत्तर : वृहदपूर्णचन्द्र रस छह ग्राम लेकर सौ
प्रवाल पंचामृत रस छह ग्राम लेकर

कारखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह-शाम शहद से लें। अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें।

राम कृष्ण भण्डारी, स्योहारा

प्रश्न : बीस साल से बवासीर व भगंदर रोग से पीड़ित हूं। उम्र पचपन साल है। आपरेशन नहीं करवा सकता। कृपया दवा लिखें।

उत्तर : त्रिफलागूगल एक वटी अर्शोध्नी एक वटी सुबह-शाम पानी से लें। आरोग्यवर्धनी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें। धीरे-धीरे स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा।

महेन्द्र सिंह, कोटपूतली

प्रश्न : आंव की शिकायत रहती है। पेट में भारीपन रहता है। शारीरिक कमजोरी निरंतर बनी रहती है थोड़ा काम करने पर एकदम थकान हो जाती है।

उत्तर : 'कुटजारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें।

क.ख.ग., जबलपुर

प्रश्न : स्वप्न दोष की शिकायत है। सप्ताह में दो बार हो जाता है। बराबर कब्ज बनी रहती हैं। ठंड बर्दास्त नहीं होती। कमजोरी महसूस करता हूं। अनेक प्रकार की औषधियां सेवन कीं, कोई लाभ नहीं। बत्तीस वर्षीय अविवाहित युवक हूं।

उत्तर : आमलकी रसायन आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें। पीपल्यासव दो चम्मच चंदनासव दो चम्मच भोजन के बाद पीयें।

अरुण कुमार, बंबई

प्रश्न : छह माह से सिर में चक्कर, माथे पर हल्का-हल्का भारीपन, सीने में जलन, नींद का कम आना, ब्लडप्रेशर भी रहता है। कृपया दवा लिखें।

उत्तर : सूतशेखररस की दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें। अविपत्तिकरचूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें।

योगेन्द्र, हैदराबाद

प्रश्न : उम्र छब्बीस साल, शरीर पर काले रंग के चकत्ते बनते जा रहे हैं। शुरुआत एक-दो से हुई अब शरीर के अन्य स्थानों पर हो रहे हैं। देखने में भद्दे लगते हैं। वैसे स्वस्थ हूं। इस रोग से मानसिक तनाव होने लगा है। अविवाहित हूं। कृपया उपचार बतायें।

उत्तर : केशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें, सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। आरोग्यवर्धनी की दो गोली रात को पानी से लें।

नाम ---------- आयु ----------

रोग के लक्षण ---------- कब से है ----------

अब तक क्या इलाज किया ----------

वैद्य की सलाह

द्वारा—संपादक—'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

वहशी तुम — मधु श्री

तुमने हमें देख लिया है फिर
अकेले में, असहाय
तुम्हरी आंखों से रिसकर
एक भूख की क्रूरता तुम्हारे चेहरे पर रेंग आयी है
अब तुम दूसरे ग्रह के वासी से लग रहे हो
जिसने मानवी नहीं देखी हो,
और जो सिर्फ चबाने, निचोड़ने
वहशीपन की अंतिम सीमा पर ही जा कर छोड़ने
का आदी रहा हो।

हमारी आंखों में भी खून उतर रहा है,
मगर एक असहाय खून
हमारी आत्मा की चीत्कार
भीचे हुए दांतों फटी हुई आंखों
स्वयं और तुम्हारे बीच
अभेध्य दीवार बनने को आतुर हाथों में
फंस के रह जाती है।
हमारी आंखों का खून अब रिरिया रहा है
स्वयं को कांच और तुम्हें बहशी हाथों में दबे
हथौड़े की भूमिका में देखकर
मगर कुछ नहीं होता
कोई सुनवाई नहीं होती
बस भगवान को नीचा दिखाते हुए क्षण
गुजरते हैं
और अब-हमारी आंखें भयानक रूप से सूनी हो
गयी हैं
वहां अब खून भी नहीं,
वह खून तो तुम्हारे होठों पर लग चुका है!

आत्म-कथ्य

निरंतर बढ़ते अत्याचार एवं हिंसा के खिलाफ मेरा आक्रोश कलम की नोक पर जमा होता है और छुरे की तरह कागज के जिस्म को चीरता है।

द्वारा श्री बी. प्रसाद
देवी मंडप रोड, हेसल, रातु रोड, रांची-८३४००५

हवा

—प्रदीप चंद्र पांडेय "?"

दूषित होती जा रही है हवा
खुद ही खुद को खा रही है हवा

नैतिकता का दामन अब छोड़के
अनैतिकता को ला रही है हवा

इंसान से इंसानियत कितनी दूर है
दरार बनती जा रही है हवा

भ्रष्टाचारी, भुखमरी और बेकारी में
कैद होती जा रही है हवा

हवा की तलाश में जब-जब फिरे
हव बनती जा रही है हवा।

आत्म-कथ्य

जब भी कभी मेरे दो मौलिक भाव आपस में उलझ जाते हैं, तब मैं अपना मानसिक संतुलन खो बैठता हूं। मेरी यही अस्थिर अवस्था पूर्णतः जिम्मेदार है, मेरे लेखन हेतु। गर्ल्स स्कूल के सामने, छतरपुर (म.प्र.)

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहे

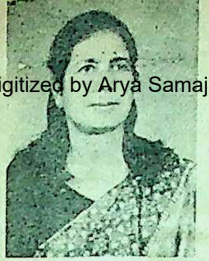

— डा. कृष्णा चतुर्वेदी

कर गणेश की वंदना कलम गही है हाथ ।
वाणी की महिमा अनत झुका हुआ है माथ ॥

भाई बंधु सब छुट गये झूठा था सब मेल ।
मित्र सखा सब चल दिये धन का देखो खेल ॥

नेताओं की भीड़ है, नेताओं की बाढ़ ।
प्रजा को उल्लू बना दिया बातों की ले आड़ ॥

देश प्रेम तो है नहीं फिर भी करते राज ।
जनता की चिंता नहीं खूब बिगाड़ा काज ॥

नेता तो कोई नहीं, अभिनेता हैं आज ।
काम सुधारा कुछ नहीं काम बिगाड़ा आज ॥

पार्लियामेंट के ये सदस्य करते रहते युद्ध ।
नेतापन की आड़ में उल्लू करते सिद्ध ॥

जनता को शिक्षा नहीं शहरी हैं सब काम ।
धीरे-धीरे एक दिन जनता होगी बाम ॥

भ्रष्टों का बड़-राज है दुःखी हो गये लोग ।
समझेंगे सब मर्म जब भाग जाएंगे शोक ॥

तुमको हमको नियम हैं उनको नियम न कोय ।
नेता चाहे जो करें, जनता मरती रोय ॥

कैसी मस्जिद बाबरी कैसा जन्म स्थान ।
जहां लोग मर कर रहे तहां खुदा नहि राम ॥

ऊंचे-ऊंचे ठाठ सब ऊंची ऊंची बात ।
करम तो नीचे करें कैसा यह आघात ॥

नेताओं के रूप लख लख नेतन के काम ।
शीश शर्म से झुक गया हुआ विधाता वाम ॥

तोपों का सौदा किया बोफरजी के संग ।
नाक कटाई देश की सरकारी ये ढंग ॥

सिपाही को तो मिल गया फ्री परचेज का बांड ।
जहं तहं मुंह मारत फिरै, पुलिस भई ज्यों सांड ॥

आत्म-कथ्य

अपने आसपास के परिवेश को शब्दों में टांकने का कार्य ही कविता है मेरे लिए । जन्म फीरोजाबाद शिक्षा-दीक्षा बंबई और दिल्ली । संप्रति लक्ष्मीबाई कालेज में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत ।

डब्ल्यू. यू. एस. होस्टल छात्र मार्ग, दिल्ली

नये लेखकों के लिए सूचना

'प्रवेश' स्तंभ नयी पीढ़ी के अप्रकाशित हस्ताक्षरों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए अनेक वर्षों से गतिशील है । नवोदित रचनाकारों को अधिक से अधिक प्रकाश में लाया जा सके, इसलिए अब इस स्तंभ में तीन/चार रचनाकारों को प्रकाशित किया जाएगा । टाइप या सुपाठ्य लिपि में गीत/गजल/ मुक्त छंद तथा हास्य व्यंग्य की रचनाएं आत्मकथ्य तथा चित्र सहित इस स्तंभ में प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं । बिना चित्र के किसी रचना पर विचार नहीं किया जाएगा । वही सूचना वापस की जाएगी जिसके साथ टिकट लगा लिफाफा होगा । रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा । लिफाफे पर स्पष्ट लिखिए 'प्रवेश के लिए ।'

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

—डॉ. सतीश मलिक

स्वास्थ्य बिगड़ रहा है ?

अम्बेश कुमार, भागलपुर : मैं १६ वर्षीय आई. एस- सी. का छात्र हूं। मेरी समस्या है—अपने पर विश्वास न जगा पाना। किसी कार्य के आरंभ करने से पूर्व कार्य क्षमता होने पर भी यह विश्वास नहीं होता कि मैं उस कार्य को कर सकूंगा कि नहीं। मैंने वर्ष' ८७ में माध्यमिक स्तर की परीक्षा दी। मैं यह विश्वास नहीं कर पाया कि मैं जो लिखता हूं वह पूर्णतया सत्य है। इससे मुझे परीक्षा में उत्तीर्ण न हो पाने का संदेह बना रहता था। जबकि मैं परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में सफल रहा हूं।

मैं सदा चिंताओं में डूबा रहता हूं। किसी कार्य में मन नहीं लगता। स्वास्थ्य भी बिगड़ रहा है। कृपया उपाय सुझाएं।

आपको आवृति बाध्यता (ऑबसेसिव कंपलसिव न्यूरोसिस) की बीमारी है। परंतु घबराएं नहीं, इसका इलाज संभव है। सबसे पहले आप इस बात को जान व समझ लें कि बचपन से ही कुछ इस प्रकार की मानसिकता आप में पड़ गयी कि आप हर चीज को बहुत गहराई में देखने व सोचने लगे। हरेक चीज में मीन मेख निकालना, हर परिस्थिति व घटना का धनात्मक व ऋणात्मक पहलू सोचना भी आपने बचपन में ही सीखा। मुख्य रूप से हर बात का ऋणात्मक पहलू सामने रखना। वास्तव में आपका मन हर बात पर एकदम विश्वास नहीं करता। अनिश्चितता की स्थिति में रहता है। हर बात में ऋणात्मक पहलू पर सोचने की प्रवृति, शुरू में थोड़ी मात्रा में मनुष्य के लिए लाभदायक है, हानिकारक नहीं, क्योंकि वह उसको हटाने के उपाय सोच सकता है। परंतु अधिक मात्रा में यह प्रवृति मनुष्य को निराशावादी बना देती है, तथा बाद में अवसाद या हताशा उत्पन्न कर देती है। चूंकि यह प्रवृति हानिकारक है अब आपको नये सिरे से आशावादी होना अपने अच्छे गुणों को भी देखना—उनके बारे में अपने आपको सचेत रखना आपका सबसे बड़ा कर्तव्य है। आपको अपने ही जीवन से कई उदाहरण मिल जाएंगे, जब आपके हाथ सफलता लगी होगी। परीक्षा में लिखते समय इस असमंजस या कशमोकश में पड़ना कि जो मैं लिख रहा हूं वह सत्य है या नहीं ? अत्यधिक तनाव का चिह्न है। ऐसा न हो यह तब ही संभव है, जब पहले से पूर्णतः तैयार हों, ताकि परीक्षा देते समय आप शांत भाव से लिख सकें। इस प्रकार के शक तब नहीं जन्मेंगे।

नस फटना

सुनील, तीन सुकिया (आसाम) : मैं २० वर्ष का बी. काम का छात्र हूं। जब भी गर्मी में ठंडे पानी से व जाड़े में गर्म पानी से स्नान करता हूं, तब ही सिर आग की भांति गर्म हो जाता है। आंखों में जलन होती है, मस्तिष्क की नसों में तनाव फैल होता है। जैसे नस फट रही हो। क्या ऐसा साइकल नाम की बीमारी से होता है अथवा अन्य कारण हैं ?

आपने यह नहीं लिखा कि यह समस्या बचपन से ही है या फिर कितने समय पूर्व आरंभ हुई। क्या आप किसी तनावपूर्ण स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गुजर रहे थे या हैं आप यह कैसे करें। गुनगुना पानी इस्तेमाल करें—न ठंडा-न गर्म। साथ ही एकदम सिर पर पहले पानी न डालें। सारे शरीर पर डाल लेने के पश्चात, धीरे-धीरे सिर पर डालें। घबरायें नहीं। यदि कुछ और समस्या साथ में नहीं है तो आपकी समस्या तापमान के प्रति शरीर का अधिक संवेदनशील होना है।

मिरगी के दौरे

क. ख. ग., कानपुर : मेरा ८ वर्ष का बेटा है। सन् '८६ में दो बार मिरगी के दौरे पड़े दिमाग का कैट स्कैन कराने पर 'मल्टीपल ट्यूबरकुलोमा' निकला। यह किस वजह से होता है। पिछले पंद्रह महीनों से वह गार्डिनल ६० मिली ग्राम सोने से पहले व नपेदिक की दवा ले रहा है। क्या गार्डिनल का कोई प्रतिकूल प्रभाव शरीर पर पड़ता है। व कितने दिन तक लेना चाहिए। तपेदिक का उपचार कितने दिन तक चलता है। डाक्टर साहब आपकी सलाह चाहता हूं। दौरा तो बंद हो गया, परंतु दवा का प्रतिकूल प्रभाव न पड़े—इससे घबराता हूं।

आपके डाक्टर ने अच्छा किया कि मिर्गी की केवल दवा ही नहीं लिखी साथ में सभी प्रकार की जांच भी कराई और सही रोग को पकड़ लिया। मल्टीपल ट्यूबरकुलोमा तब होता है, जब बच्चे को तपैदिक की बीमारी हो जाए। ऐसा तब होता है, जब उसे बी. सी. जी. का टीका जो तीन महीने की आयु तक में ही लग जाना चाहिए, न लगे। माता को टी. बी. हो। मां के दूध या गाय-भैंस का दूध जो निर्जीवीकृत न हो, और यदि उन्हें तपेदिक हो तो यह बीमारी आ सकती है। या फिर श्वास द्वारा भी पहले फेफड़ों फिर खून द्वारा शरीर के और अंगों में फैल जाती है। बी. सी. जी. का टीका लगने से शिशु सुरक्षित रहता है और टी. बी. नहीं होती। दिमाग में खून द्वारा कीटाणु पहुंच कर ट्यूबरक्लोम बन जाते हैं। मिर्गी के लिए गार्डिनल २ वर्ष भर लेनी चाहिए। इसका

> आप अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

प्रतिकूल प्रभाव अत्यधिक नींद हो सकती है परंतु रात में देने से तथा लंबे समय तक लेने पर ऐसा प्रभाव सामने नहीं आता। साथ ही टी. बी. का इलाज कम से कम दो साल का करें, दवा न छोड़ें। मिर्गी की दवा दो साल पश्चात धीरे-धीरे ही कम की जाएगी। आपको अच्छे डाक्टर को निरंतर दिखाते रहना चाहिए जो समय-समय पर आपको बता सके।

पसीना ही पसीना

दीपनारायण शुक्ला, शहडौल : १६ वर्ष का ग्यारहवीं कक्षा का छात्र हूं, रात में जब सोता हूं तब कई बार नींद खुलती है और पसीने से भीग जाता हूं, डर भी लगता है। लगभग दो बजे रात से कुछ ठीक होने लगता है। फिर सोने के बाद गलत सपना दिखाई देने लगता है। तबीयत ठीक नहीं लगती। आपका ही सुझाव मानूंगा।

आपको चिंतित करने वाले सपने आते हैं। स्वप्न मन की स्थिति का सही प्रतिबिंब देता है। तनाव का कारण आपको अपनी परिस्थितियों में ढूंढना होगा। किशोरावस्था वैसे तनावपूर्ण आयु होती है। 'सैक्स' संबंधी डर व भ्रम भी इस आयु में ही आरंभ होते हैं। पढ़ाई भी जटिल होती है और कैरियर संबंधी चिंताएं भी अग्रसर रहती हैं। मित्रों से संबंध, मुझे मित्र चाहते हैं या नहीं—ऐसी चिंताएं भी घेरे रहती हैं। कई बार घरेलू परिस्थितियां भी साथ मिल जाती हैं। यह सब कारण एक साथ मिलकर ऐसी परिस्थिति पैदा कर देते हैं। आप धीरज से काम लें अपने आपको समझने की कोशिश करें, यदि कोई डाक्टर ट्रैंकुलाइजर दे तो ८-१० दिन से अधिक न लें। क्योंकि समस्या का सही हल, उसके कारणों को समझ उनसे जूझने में होता है न कि दवाइयों से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

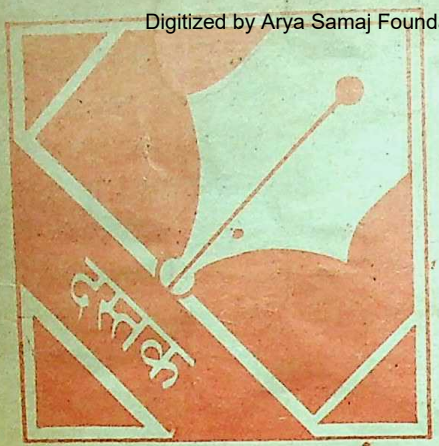

प्यास और तरबूज

नदी पार करके गांव जा रहा था। वर्षों बाद गांव जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। नदी की रेत में चलते-चलते दोपहर हो चुकी थी। ऊपर आकाश में तपता सूर्य और नीचे गरम रेत। चलना दूभर हो रहा था। जोरों से प्यास लगी थी, कंठ सूखा जा रहा था। अभी गांव लगभग तीन मील की दूरी पर था।

एक कंटीली झाड़ी के पास रुककर इधर-उधर नजर दौड़ायी। पास ही तरबूजे के खेत में एक बारह-चौदह वर्षीय लड़का खड़ा था। मैं उसके पास गया तथा उससे पूछा, "एक तरबूज बेचोगे ?" वह इनकार करते हुए बोला, "मैं तरबूज नहीं बेचता, मैं तो सिर्फ रखवाली करता हूं।"

उसके इनकार से मुझे काफी गुस्सा आया, पर क्या करता, एक बार और आग्रह करते हुए कहा, "बेटा बड़ी जोरों की प्यास लगी है। यहां कोई साधन नहीं है। एक तरबूज बेच दो, काफी देर से धूप में चलता जा रहा हूं।"

यह सुनते ही लड़का खेत में गया और एक बड़ा-सा तरबूज तोड़कर ले आया। तरबूज मुझे थमाते हुए वह बोला, "लो खा लो प्यास मिट जाएगी, बिलकुल पका हुआ है।"

मैं पैसे निकालकर उसे देने लगा। क्या लड़का पीछे हटते हुए बोला, "मैंने तरबूज बेचा नहीं है। तुम्हें प्यास लगी थी, इसीलिए तरबूज दिया था। मैं तरबूज बेच नहीं सकता क्योंकि पिताजी ने मुझे उसे बेचने से मना किया है परंतु खाने के लिए तो दे ही सकता हूं।"

उस ग्रामीण बालक की बातें सुनकर मेरे दिमाग पर बार-बार यह दस्तक होने लगी, काश हम सभी इसी ग्रामीण बालक की तरह सहृदय, दयालु, आज्ञाकारी तथा पैसे के मोह से अलिप्त होते !

— राकेश कुमार पांडेय

राजा बाजार, क्वार्टर नं-सी-१६
मोतीहारी-८४५४०१ (बिहार)

उत्साह की वैसाखी

जीवन के अठारहवें वसंत में कदम रखा, यूं प्रतीत हुआ, ज्यों कैशोर्य गया और कुछ नवीन-सा पाया, बी. ए. की परीक्षा दे एक प्रतियोगितात्मक परीक्षा देने नागपुर गया। द्रुत गति से जाती रेल से जो, गिरा कमलापुर चिकित्सालय, सेवाग्राम में ही आंखें खुलीं सोलह दिन लंबी अचेतनता से जागने पर विचित्र हुआ दीपावली बीच में ही बीत गयी, शरीर में अनेक जख्म, कृत्रिम श्वास व्यवस्था, सामने टंगी रक्त की बोतल से टपकता बूंद-बूंद रक्त पर दृष्टि जमाये ही ज्ञात हुआ कि दुर्घटना में जीवन से

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच गया पर जिन पैरों पर जीवन का बोझ उठाने का विचार था, वह नहीं रहे। स्वाभाविक रूप से कलेजा कांप उठा, आंखें नम हो आयीं पर मन में एक नवीन ज्योति-सी जल उठी। इस ज्योति को प्रकाश प्रदान किया दिन-रात निरंतर बिना किसी खीझ व नैराश्य से काम करते सेवा-भावी चिकित्सक व अन्य कर्मचारियों ने। फिर भी यदाकदा आंखों के आगे अंधेरा छा जाता था। इतने में एक दिन सामने से उसे आते देखा, वह आयी, सिरहाने खड़ी हो गयी। मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया और नवीन संकल्प लिया। प्रतिफल है कि पूना से कृत्रिम पैर लगाकर चलना सीखा, कोल इंडिया में लिपिक पद पाया, व्यक्तिगत रूप से प्रथम श्रेणी में एम. ए. किया, श्रम-कल्याण अधिकारी पद पर पहुंचा, संप्रति रास न आया, त्यागपत्र दिया, प्रथम श्रेणी में बी. एड. किया और आज सुखद गृहस्थ जीवन बिता रहा हूं। आज भी हर प्रातः सिरहाने पर खड़ी 'वह' वैशाखी जीवन द्वार पर दस्तक देती है— नवीन संघर्ष के लिए, नव जीवन के लिए। — **गिरीशचन्द्र भट्ट**

ग्राम एवं पत्रालय अलगढ़ा जनपद, पिथौरागढ़

बचपन की प्यारी दस्तक

मैं और मेरा छोटा भाई विनिश आपस में हमेशा लड़ा करते थे। हम लोग बात-बात में उलझ जाते तथा कोई भी किसी तरह झुकने को तैयार न होता। वह तो हमें अपना दुश्मन मानता ही मेरे मन में भी उसके लिए रोष ही भरा होता। इच्छा होती इसकी शिकायत कर इसे खूब डांट सुनवाऊं। वह भी मेरे विषय में कुछ ऐसा ही सोचता रहता। एक दिन हम दोनों की लड़ाई में घर की बहुत ही कीमती वस्तु उसके हाथ से टूट गयी। आवाज सुनकर मां और पापा दौड़े आये। उसको तो काटो तो खून नहीं, उसकी दशा देखने लायक थी, एक क्षण मैंने भी सोचा आज बड़ा मजा आएगा, उसे डांट सुनवाकर। पर पता नहीं, उस क्षण जो उसकी आंखों में देखा, कितना सहमा हुआ था, वह असहाय-सा। इसे किसी सहारे की जरूरत है, शायद ऐसा मुझे लगा। पता नहीं उसकी उन आंखों ने मेरे मन में किस प्रकार की दस्तक दी कि मैंने झट से उसका इलजाम अपने सर ले लिया। उसे जो प्राप्त हुआ, वो मैं आज भी महसूस करती हूं। मां ने डांटते हुए कहा कि असावधानी पूर्वक रहना छोड़ो। तुम्हें पता नहीं घर में कितनी मुश्किल से चीजें आती हैं। पर पापा ने सर पर हाथ रखकर कहा कि कोई जानकर थोड़े ही तोड़ा है, गलती से टूट गयी। देखो इसे तो हमसे भी ज्यादा दुख हो रहा है। उस समय तो बात वहीं खतम हो गयी। पर मेरे भाई के दिल में मेरे इस व्यवहार ने ऐसी दस्तक दी कि उसका सारा स्वभाव तथा व्यवहार ही बदल गया। आज हम दोनों भाई-बहनों में बड़ा प्यार है।

नीविता नारायण

द्वारा विष्णुदेव नारायण सितारा भवन, शिवाजी-पथ, यारपुर, पटना-१००००१

जो आदर्श हमने सच्चे अंतःकरण से बनाया है, मन, वचन और काया एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है, वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा।

—स्वेट मार्डेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष समस्या और समाधान

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि-६९ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। सभी पाठकों केप्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं — जयधरनाथ मिश्र ज्योतिषी

कु. सुमन, हमीरपुर

प्रश्न : मानसिक शांति व भाग्योदय कब तक होगा।

उत्तर : शनि की महादशा में आपका भाग्योदय होगा

कु. साधना पटेल, जबलपुर

प्रश्न : नौकरी एवं विवाह कब होगा।

उत्तर : नौकरी नहीं। विवाह अगले वर्ष हो जाएगा।

आशा धारीवाल, भोपाल

प्रश्न : क्या विदेश में बस जाऊंगी ?

उत्तर : कुछ ही वर्ष विदेश में रहने का योग है। अंतिम समय स्वदेश में ही रहने का है।

पूनम गुप्ता, चंडीगढ़

प्रश्न : क्या इस वर्ष एम.बी.बी.एस. में प्रवेश मिल जाएगा ?

उत्तर : १२वां बृहस्पति नेष्ट होने से इस वर्ष नहीं अगले वर्ष अवश्य सफलता मिलेगी।

रमेशचंद्र, सिवनी

प्रश्न : मकान कब बनेगा ऋणयुक्त या ऋणमुक्त ?

उत्तर : राहु की ही महादशा में पहले ऋण से मकान बनेगा। उसके बाद मुक्ति भी शनि के अंतर में हो जाएगी।

पृथ्वीवधर्नन मिश्र, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : संतान कब तक, रत्न भी सुझावें ?

उत्तर : तृतीय मंगल संतान भाव को बिगाड़ते हैं। एक मूंगा ११ रत्ती का तथा स्फटिक की १०८ दाने की माला पहनें तो। वर्ष में ही योग प्रबल होंगे।

कृष्ण स्वरूप खत्री, दतिया

प्रश्न : कृपया मेरा मानसिक अवसाद व भय के कारण बतायें।

उत्तर : पांचवां गुरु बुध के घर में चंद्रमा के साथ होने से भय व मानसिक अशांतिकारक है। अतः ९ रत्ती का पुखराज, मोती तथा ७ रत्ती का पन्ना पहनो तो सन् '८९ में ही ठीक हो जाएगा।

पीयूष कान्त पांडेय, दिल्ली

प्रश्न : मेरी पदोन्नति कब होगी ?

उत्तर : शनि की महादशा में शुक्र का अंतर लगते ही पदोन्नति की प्रबल संभावना है।

दीपक कटारिया, गंगानगर

प्रश्न : विवाह किस सन में व कहां होगा ?

उत्तर : २५वें वर्ष में सन् '९१ में शादी पूर्वोत्तर दिशा में श्रेष्ठ घर में होगी।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदकिशोर चतुर्वेदी, पलामू

प्रश्न : अगली प्रोन्नति कब तक ? केतु की महादशा में अनिष्ट से बचने का उपाय बताएं ।

उत्तर : प्रोन्नति सन '८९ में । केतु के लिए लहसुनिया ९ रत्ती का पहनें ।

प्रकाशचंद्र वर्मा, औरंगाबाद

प्रश्न : विवाह कब और कैसी लड़की से होगा ?

उत्तर : विवाह ३१वें वर्ष तथा लड़की गेहुएं रंग की पश्चिम दिशा की होगी ।

अमिता जोशी, उज्जैन

प्रश्न : सर्विस कब लगेगी तथा किस विभाग में ?

उत्तर : इसी वर्ष सर्विस प्राप्त होगी । बैंक अथवा राजकोष संबंधी विभाग प्राप्त होगा ।

दिलीप कुमार सिंह, रांची

प्रश्न : आर्थिक तंगी कब दूर होगी ? उच्च पद की प्राप्ति कब तक होगी ?

उत्तर : बुध की महादशा में शनि का अंतर होने पर लाभ यश दोनों प्राप्त होंगे ।

७१

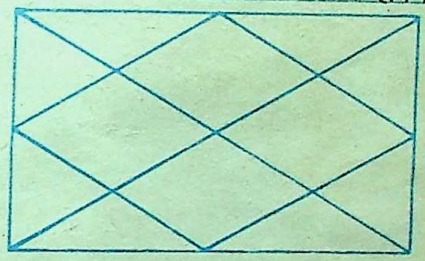

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख).....महीना.....सन.....

जन्म-स्थान.....जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा....वर्तमान .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—७१) 'कादम्बिनी', हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० अप्रैल, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी.सी. शर्मा, कानपुर

प्रश्न : जीवन की अवधि कितनी है, किस वर्ष मृत्यु की संभावना है ?

उत्तर : लग्नेश के नीच हो जाने से तथा केंद्र में सूर्य शुक्र की युति होने से अल्पदीर्घायु योग बनता है।

विक्रम सूर्यवंशी, आगरा

प्रश्न : भाग्योदय कब ? कृपया रत्न भी बताएं ?

उत्तर : गुरु चांडाल योग की महादशा समाप्त होने पर भाग्योदय तथा अच्छा-सा माणिक धारण करें।

रामहरी अग्रवाल, लखनऊ

प्रश्न : लड़की की शादी कब और किधर होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष आपके यहां उत्सव होगा। पुत्री की शादी के संबंध में कन्या की जन्म कुंडली भेजें।

उमेशचंद्र गोयल, जीन्द

प्रश्न : मुकदमें में कब तक और क्या फैसला होगा ?

उत्तर : मुकदमें में विजय अवश्य होगी तथा शुक्रांतर में ही फैसला सन '९० में हो जाएगा।

निर्मेष शर्मा, नीमच

प्रश्न : पांव से विकलांग हूं नौकरी कब और कैसी होगी ?

उत्तर : नौकरी मध्यम श्रेणी में सन '९० के पूर्वार्द्ध तक ही प्राप्त होगी। शुक्र के अस्त होने से तथा चंद्र भौमयुति के कारण ही अपंग दोष पैदायसी होता है।

कन्हैया लाल जोशी, देवरिया

प्रश्न : उधार दिया गया ऋण कब तक प्रा[illegible] होगा ?

उत्तर : प्राप्त होने की संभावना ! सन [illegible] के उत्तरार्द्ध में लाभ योग उत्तम।

योगेश कुमार अग्रवाल, सूरत

प्रश्न : जीवन में शारीरिक कष्ट का [illegible] होगा या नहीं ?

उत्तर : लग्नेश शरीर का मालिक बुध [illegible] भाव ९वें में बैठने से लाजवर्त मूंगा तथा [illegible] का चंद्रमा बनवा कर पहनें तो शीघ्र ला[illegible] होगा।

आनन्दसिंह, देहरादून

प्रश्न : मकान कब बनेगा उन्नति के लि[illegible] कौन सा रत्न ?

उत्तर : ११ रत्ती का मूंगा पहनें। म[illegible] बनने में अभी ३ वर्ष का समय ल[illegible]

देवकीनंद जोशी, नैनीताल

प्रश्न : बहन की शादी तथा अपना म[illegible] कब तक ?

उत्तर : केतु महादशा के अंतर्गत ५ वर्ष [illegible] भीतर ही बहन की शादी व मकान बन जा[illegible]

सुरेशचंद्र शर्मा, शाजापुर

प्रश्न : शासकीय नौकरी कब लगे[illegible]

उत्तर : सन '८८ में ही आपका भ्र[illegible] प्रबल है। अतः इसी वर्ष नौकरी प्राप्त हो[illegible]

अवधेश तिवारी, कानपुर

प्रश्न : मानसिक शांति एवं स्वास्थ्य रत्न [illegible] कृपया रत्न परामर्श करें ?

उत्तर : स्वास्थ्य एवं शांति के लिए नीलम [illegible] रत्ती का मोती पहनें शीघ्र लाभ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य

कृषि-क्रांति और देवासुर संग्राम

● भगवान सिंह

देवासुर-संग्राम : एक अत्यंत लोकप्रिय पौराणिक आख्यान। देवता अथवा सुर एवं असुर कौन थे, उनके मध्य क्यों और कब संग्राम हुआ आदि विषयों पर श्री भगवान सिंह ने अपने शोधग्रंथ 'हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य' (प्रकाशक—राधाकृष्ण प्रकाशन २/३८, अंसारी रोड दरियागंज, नयी दिल्ली) के 'कृषि क्रांति और देवासुर संग्राम' शीर्षक अध्याय में प्रकाश डाला है। 'सार-संक्षेप' में प्रस्तुत है इसी अध्याय के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद का रचना-काल हड़प्पा-सभ्यता के परिपक्व चरण से भी पीछे जाता है ; ब्राह्मणों और पुराणों आदि में यत्र-तत्र अपने रचनाकाल से सात-आठ हजार वर्ष पहले के जातीय अनुभवों को लिपिबद्ध किया गया है, देवता और सुर शब्दों का प्रयोग पहले उन जनों के लिए आरंभ हुआ, जो नयी उत्पादन पद्धतियों की ओर अग्रसर हुए थे और आगे चलकर उत्पादन के स्रोतों पर अधिकार करके और श्रमकार्य पर दूसरों को नियुक्त करके उनके उत्पादों को खसोटने लगे, असुर और राक्षस शब्द मूलतः प्राचीनतर उत्पादन-पद्धतियों या कहें आखेट और आहार-संग्रह से और कृषि का आविर्भाव हो जाने के बाद, कुछ मामलों में पशुपालन से चिपके रहे जानेवाले जनों के लिए प्रयोग में आते रहे और देवों-सुरों की तरह बाद में इन्हें अतिमानवी रूपाकार दिया गया।

देवासुर संग्राम दो उत्पादन-पद्धतियों के बीच छिड़ा संघर्ष है, जो हजारों वर्ष चलता रहा है : स्वर्ग की कल्पना मूलतः नगर-केंद्रों और व्यापारियों के विदेशी अड्डों के रूप में की गयी थी, कालांतर में इसे द्युलोक में पहुंचा दिया गया।

कृषि की ओर मनुष्य ने कब और किन परिस्थितियों में कदम बढ़ाया, यह अधिकारी विद्वानों के बीच अरसे से विवाद का विषय बना हुआ है। ऐसा लगता है कि आखेट और आहार-संग्रह के चरण में ही मनुष्य ने वन्य रूप में पैदा होनेवाले स्थानीय अनाजों का उपयोग करना आरंभ कर दिया था और इसके हजारों वर्ष बाद उसने स्वयं इनको उगाना आरंभ किया। वन्य अनाजों को जिस भी अनुपात में हो, नवीं-दसवीं सहस्राब्दी में ही आहार का अंग बनाया जाने लगा था और इनकी विधिवत खेती सातवीं सहस्राब्दी में आरंभ हो गयी थी। जिन स्थलों या क्षेत्रों से वन्य अनाजों के उपयोग के और फिर बाद में कृषि के प्रमाण मिलते हैं, उनके विषय में यह सोचा जाना स्वाभाविक ही है कि स्थानीय जनों ने स्वयं बिना किसी बाहरी प्रेरणा या प्रभाव के खेती का आरंभ किया होगा। पर ऊपर से बहुत सीधा-सा दीखनेवाला यह प्रस्ताव भी कुछ निकट से जांच की मांग करता है।

हमें यह नहीं भूलना होगा कि आखेट और आहार-संग्रह के चरण में मनुष्य यायावर था, जो जहां-तहां, आहार की सुलभता होने पर या विशेष मौसमों में सुरक्षा के तकाजों से अस्थायी पड़ाव भी कायम करता चलता था। जिन दो हजार वर्षों के लंबे दौर में उसका अपना प्रयास वन्य अनाजों के संग्रह तक सीमित था, उस दौर में उसने अपने अटन क्षेत्र में जहां भी उपयुक्त अनाज मिलते रहे होंगे, वह उनका संग्रह करता रहा हो सकता है और इस तरह उसके पूरे अटन क्षेत्र के भीतर वन्य अनाजों का संग्रह कुछ ही शताब्दियों के बीच प्रचलित हो गया होगा। इस तरह उस समूचे भूभाग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें वन्य अनाज उग रहे थे और ऐसे कबीलों में, जो इसके संपर्क में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में आ सकते थे, बहुत जल्द ही यह ज्ञान फैल गया होगा। ऐसी स्थिति में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर हम इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि वन्य अनाजों का खाद्य-पदार्थ के रूप में प्रयोग सर्वप्रथम कहां आरंभ हुआ।

वस्तुतः अनाज के सूख जाने पर इसको जुटाकर रखने और फिर इसको भून और कूटकर सुखाद्य बनाने का चरण स्वयं भी एक मध्यवर्ती चरण रहा लगता है। इसके लिए एक अल्पतम तकनीकी विकास की जरूरत थी। पर वन्य अनाजों में दाने आने से लेकर इनके गदराने तक वह इनको छील और मसलकर या, जहां जरूरी हुआ, सीधे बालियों को आग पर झुलसकर इससे भी हजारों वर्ष पहले से खाता आ रहा था, जिसकी तिथि नियत करना कठिन है। कुछ देशों की स्थानीय परंपराओं में इस चरण के अवशेष आज भी पाये जा सकते हैं, जैसे—भारत में होली और नवान्न के अवसरों पर जौ आदि की बालियों को सीधे आग की लपट पर झुलसकर, मसलकर प्रसाद के रूप में खाना या विभिन्न पकवानों में एक-दो दाने उस आदिम चरण की यादगार के रूप में डालना।

कृषि की ओर कदम क्यों ?

आहार-संग्रह के चरण से आगे बढ़कर मनुष्य ने कृषि की ओर कदम क्यों बढ़ाया ? यह सवाल भी कम टेढ़ा नहीं है। आरंभ में सरल भाव से यह सोच लिया गया था कि आहार-संग्रह और आखेट के चरण में मनुष्य का जीवन बहुत कष्टमय था और वह दिन-रात आहार जुटाने की ही चिंता में लगा रहता है। इस दारुण स्थिति से उबरने के लिए ही उसने कृषि का सहारा लिया। पर विगत दो दशकों में हुए कुछ अध्ययनों ने इस सरलीकरण को खंडित करके इस समस्या को एक असाध्य गुत्थी का-सा रूप दे दिया। रिचर्ड ली ने दक्षिण अफरीका के कुंग बुशमेन कबीले के अध्ययन के बाद यह दावा किया कि कुंग कबीला जिस सूखे और उजड़े पर्यावरण में रहता है, उसमें भी कबीले की महिलाएं केवल दो घंटे के श्रम से अपने पूरे परिवार की गुजार के लिए पर्याप्त आहार जुटा लेती हैं और यह आहार पोषकता की दृष्टि से भी बहुत अच्छा होता है। पुरुष जब-तब शिकार करते हैं और इसके लिए दल बनाकर निकलते हैं और प्रायः कई दिनों की भाग-दौड़ के बाद ही उनके हाथ कोई शिकार लग पाता है, पर उनका शिकार पर निकलना उतना आहार की तलाश के लिए नहीं होता, जितना अपना शौर्य और कौशल प्रकट करने के लिए। अकसर तो वे कई-कई दिन शिकार पर ही नहीं निकलते। इस नयी खोज ने आहार-संग्रही मनुष्य के विषय में प्रचलित मान्यता को तो बदला ही, साथ ही इसने एक नयी उलझन पैदा कर दी। यदि मनुष्य आहार-संग्रह और आखेट से अपना गुजर कर सकता था तो उसने कृषि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालैंड ने इस गुत्थी को कुछ और उलझा दिया था। उन्होंने तुर्की में वन्य रूप में उगे गेहूं की हाथ से कटाई करने का और फिर एक कामचलाऊ दस्ता लगे आदिम किस्म के हंसिये से कटाई का प्रयोग किया और पाया कि जिस प्रकार के आदिम हंसिये का उपयोग वहां के मनुष्य ने पहली बार किया था, उससे वह नंगे हाथों की तुलना में केवल बीस प्रतिशत अधिक अनाज जुटा सकता था। अंतर इतना कम था कि यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर मनुष्य ने इतने जतन से हंसिये का आविष्कार क्यों किया। इतना ही नहीं, उसने यह भी पाया कि एक परिवार केवल तीन हफ़्ते के श्रम से वन्य रूप में उगे अनाज का इतना संग्रह कर सकता था कि इससे पूरे परिवार का गुजारा पूरे साल हो सके। वन्य गेहूं पोषण की दृष्टि से भी काश्त के गेहूं से श्रेष्ठ होता है। अब उनके सामने भी यही सवाल था कि मनुष्य ने आहार-संग्रह के मुक्त जीवन को छोड़कर किसानी की ज़हमत क्यों मोल ली ? यदि ऐसा किया भी तो कटाई के वे आदिम हथियार क्यों बनाये, जिनके बिना उसका काम लगभग उतनी ही आसानी से चल सकता था।

हिमयुग का सिद्धांत

कृषि की ओर मनुष्य के अग्रसर होने की विशेष परिस्थितियों को पश्चिमी एशिया को सामने रखते हुए ही कल्पित करने के प्रयत्न किये जाते रहे हैं, क्योंकि खेती के अपेक्षाकृत पुराने प्रमाण पहले इस क्षेत्र से ही आये थे। इनमें से एक था चाइल्ड का प्रसिद्ध हिमयुग का सिद्धांत। इसके अनुसार विगत हिमयुग के दौरान पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफरीका की जलवायु आज की अपेक्षा अधिक आर्द्र और ठंडी हो गयी थी और इसकी समशीतोष्णता के कारण यहां वनस्पतियों और आखेट के पशुओं का बाहुल्य हो गया था और जीवन बहुत आसानी से चल रहा था। पर दस हजार ई. पू. के लगभग जब हिमयुग समाप्त होने लगा तो यहां की जलवायु अपेक्षाकृत अधिक शुष्क और गरम हो गयी। पहले जहां आबादी का बिखराव पूरे क्षेत्र में था, वहां अब वह क्रमशः सिमटकर नदियों के पार्श्वों पर और कुछ नखलिस्तानी क्षेत्रों में आ गयी और इस तरह जो दबाव पैदा हुआ, उससे बचने के लिए मनुष्य ने स्वयं खेती करना आरंभ कर दिया और लगभग इसी के साथ, या इसके कुछ ही बाद, पशुपालन भी करने लगा। ब्रेडवुड को लगता रहा कि विगत १२,००० वर्षों के दौरान इस क्षेत्र की जलवायु में कोई खास परिवर्तन हुआ ही नहीं है, अतः उनके अनुसार कृषि का एक नाभिकीय क्षेत्र था जो जैसा कि स्वाभाविक है, पश्चिम एशिया में ही था, जहां की अपनी मेघा और विशिष्ट परिस्थितियों के कारण कृषि का विकास हुआ और वहीं से इसका अन्यत्र प्रसार हुआ। कुछ दूसरे अध्येता मानते रहे हैं कि हिमयुग के दौर में ही जब पश्चिमी एशिया में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़प्पा-सभ्यता और वैदिक साहित्य : दो खंडों में प्रकाशित इस महत्त्वपूर्ण कृति में लेखक भगवान सिंह ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि हड़प्पा सभ्यता और वैदिक संस्कृति में कोई विरोध नहीं था। संभव है, हड़प्पा संस्कृति वैदिक संस्कृति का यह पक्ष था, जिसे हम नगरीय कहते हैं।

प्रथम खंड में ग्यारह अध्याय हैं। इन अध्यायों में लेखक ने आर्य आक्रमण के मिथक, वैदिक संघर्षों की प्रकृति, वैदिक-उद्यमियों के खनिज स्रोत, आवास नगर के अतिरिक्त आर्थिक आधार, समाज-लेखन और शिक्षा, धर्म और विश्वास के साथ साथ भाषा और यूरोपीय जन-जैसे विषयों पर प्रकाश डाला है।

द्वितीय खंड में सात अध्याय हैं। इनके शीर्षक हैं—वैदिक रचनाकाल, सभ्यता की दिशा में प्रथम चरण, कृषि क्रांति और देवासुर संग्राम, अतिरिक्त उत्पादन और स्वर्ग की तलाश, प्रभाव-विस्तार और आव्रजन, नगर-सभ्यता का उदय, हड़प्पा-सभ्यता का पतन, सरस्वती घाटी से पलायन और वैदिक समाज का पुनर्समायोजन।

इस शोधपूर्ण ग्रंथ अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष दिये हैं। ये निष्कर्ष लोकमानास में बसी कुछ मान्यताओं के विपरीत भी जाते हैं लेकिन वे अपने अतीत को एक नयी तर्क-सम्मत दृष्टि से देखने की भी प्रेरणा देते हैं। इतिहास और पुरातत्व में रुचि रखनेवाले लोगों के लिए ही नहीं, सामान्य पाठकों के लिए भी यह शोधपूर्ण ग्रंथ पठनीय है।

जलवायु अधिक खुशगवार थी, यहां की उर्वरता और संपन्नता के कारण आबादी में तेजी से वृद्धि हुई और इसके दबाव में ही खेती का आविष्कार करना पड़ा। इन विविध प्रस्तावों में से किसी को सर्वथा त्याज्य या स्वीकार्य नहीं पाया गया है और इन्हें जटिल समस्या को सुलझाने के लिए की गयी अटकलबाजियों से अधिक महत्त्व नहीं दिया जा सकता।

वास्तविकता आधुनिक विद्वानों के अनुमानों की अपेक्षा पौराणिक विवरणों के अधिक निकट प्रतीत होती है, जिनसे प्रकट होता है कि मनुष्य ने कृषि का आरंभ इसलिए किया कि आहार-संग्रह के चरण में कबीलाई अनियमितता के कारण और मौसम की अनिश्चितता के कारण वन्य अनाजों की प्राप्ति में जो अनिश्चितता बनी रहती थी, उसे दूर किया जा सके।

कृषि के आरंभ के संदर्भ में हिमयुग आदि की भूमिका का कोई खास महत्त्व नहीं है।

कृषि का आविष्कार

कृषि का आविष्कार सर्वप्रथम कहां हुआ, इस बात का निश्चय करना, जैसा कि हम कह आये हैं, आसान नहीं है। मोटे तौर पर इतना ही कहा जा सकता है कि उस पूरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र में जहां विभिन्न अनाज वन्य रूप में उगते थे, इनका संग्रह और उपयोग आहार-संग्रह काल से करते आ रहे जनों में से ही किसी ने इस दिशा में पहल की होगी। पर जैसा कि हम देख आये हैं, इस मामले में बार-बार पश्चिम एशिया का नाम दुहराया जाता रहा है, जो ठीक नहीं है। हमें जो सूचनाएं उपलब्ध हैं, उनके आधार पर यह कहना अधिक सही होगा कि अपेक्षाकृत एक छोटी काल-सीमा के भीतर, कुछ ही शताब्दियों में, एक बहुत विशाल क्षेत्र में मनुष्य ने उन अनाजों में से कुछ को एकाधिक क्षेत्रों में उगाना आरंभ कर दिया, जिससे प्रथम दृष्टि में यह लगता है कि इन सभी क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से कृषि का विकास हुआ और इनके बीच किसी सबसे प्राचीन और अन्य सभी के प्रेरक की खोज कर पाना कम-से-कम पुरातात्विक आधार पर तो असंभव-सा ही है।

उदाहरण के लिए पुरातत्व के आधार पर यह कैसे तय किया जा सकता है कि ईराक, तुर्की, सीरिया, जोर्डन आदि के वे स्थल जहां सातवीं सहस्राब्दी ई. पू. में यव की खेती आरंभ हो गयी थी, भारत की विंध्य तलहटी—मगहरा, कोल्डिहवा—राजा लुंकरनसर तथा सांभर झील के बीच उससे कुछ पूर्ववर्ती धान की खेती को कैसे प्रेरित कर सकता था, या इसके ठीक विपरीत कैसे घटित हुआ हो सकता था?

पुरातात्विक दृष्टि से इस उलझी स्थिति का एक ही हल दिखायी देता है और वह यह कि भारत से लेकर भूमध्य सागर के तट तक को घेरनेवाले महाअटन क्षेत्र में विचरण करनेवाले आहार-संग्रहियों और शिकारियों ने कृषि का आरंभ होने से पहले हजारों वर्षों से वन्य अनाजों को भी अपने आहार का अंग बना लिया था, यद्यपि यह उनकी जरूरत पूरी करने की दृष्टि से बहुत अपर्याप्त था। फिर, इस विशाल क्षेत्र में यह कहीं भी पहली बार इन वन्य अनाजों को स्वयं उगाने का प्रयोग हुआ, इसकी सूचना कुछ ही शताब्दियों के भीतर पूरे क्षेत्र में फैल गयी और इसमें अलग-अलग स्थानों पर स्थायी बस्तियां बसाकर स्थानीय वन्य अनाजों की नस्लों की ही खेती आरंभ हुई और इस तरह अलग-अलग अंचलों की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लोगों को स्वतः प्रयोग करते और अपनी भूलों से सीखते हुए आगे बढ़ना पड़ा।

कृषि के आविष्कार के लिए सबसे उपयुक्त क्षेत्र कौन-सा रहा हो सकता है, इस पर कुछ विद्वानों ने विचार करते हुए इसके लिए निम्न पांच शर्तें सुझायी थीं

१. अन्न प्रजातियां वहां वन्य रूप में पैदा होती रही हों;

२. जलवायु सह्य रही हो;

३. वर्ष के कुछ महीनों में तापमान बहुत ऊपर चला जाता रहा और सूखे की नौबत आ जाती रही हो;

४. मनुष्य वहां पहले से आबाद रहा हो; तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

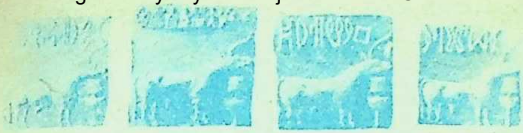

हड़प्पा से प्राप्त मुद्राओं की छाप

५. शिकार और वनस्पतियों का स्थानीय स्रोत स्थानीय आबादी का भरण-पोषण करने की दृष्टि से अपर्याप्त रहा हो।

यदि इन शर्तों को भारत पर घटित करें तो पाएंगे कि ये सभी इसे कृषि के मामले में पहल करने की दृष्टि से सबसे उपयुक्त क्षेत्र या कहें सबसे उपयुक्त क्षेत्रों में से एक सिद्ध करती है। भारतीय पुरातात्विक साक्ष्य, जो राजस्थान की सांभर झील के पास से, उत्तर प्रदेश के महगरा और कोल्डिहवा से प्राप्त हुए हैं, अपनी निजी पहल से बहुत प्राचीन काल में ही खेती के आरंभ के विषय में हमें आश्वस्त करते हैं। इनमें यदि किसी तरह की कमी रह जाती हो तो वह भारतीय परंपरा से पूरी हो जाती है, जिसके अनुसार यव की खेती या कहें रबी की खेती से पहले देव अन्य धान्यों—खरीफ के धान्यों—की खेती भी करते थे। पर फिर वे ऐसे क्षेत्र में आ गये, जहां धान की खेती अधिक कष्टसाध्य थी, अतः उनका सारा प्रयत्न रबी की खेती तक ही सिमट कर रह गया।

ब्राह्मणें में इस प्राचीन परंपरा को इस रूप में दुहराया गया है कि जब अन्य सभी औषधियों ने देवों का साथ छोड़ दिया तो भी यव ने उसका साथ नहीं छोड़ा, अतः सभी औषधियों के सार तत्व को उन्होंने यव में रख दिया। इसीलिए जब अन्य औषधियां पानी के अभाव में मुरझाने लगती हैं, तब भी यह हरा रहता है। प्रकारांतर से कहें तो, उन्होंने कृषि-कर्म उस क्षेत्र में आरंभ किया, जिसमें धान अधिक आसानी से उगाया जा सकता था और वहां से बाद में हटकर उस क्षेत्र में पहुंचे, जहां यव आसानी से पैदा हो सकता था। महत्त्वपूर्ण अनाजों के उल्लेख में भी संभवतः इसीलिए धान के बाद यव का—व्रीहियवौ—नाम बार-बार लिया जाता है।

इन्हें सूत्र रूप में रखें तो, मौसम की अस्थिरता, जंगली कबीलों की संयमहीनता, सूखे आदि के गंभीर संकटों के दौर जिनमें खाद्य पदार्थों का अकाल-सा उत्पन्न हो जाता रहा, मनुष्य को इस समस्या का कोई स्थायी हल ढूंढ़ने को बाध्य करने लगा और इस विषय में सामूहिक सोच-विचार, जिसे प्रतीकात्मक रूप में प्रजापति के पास जाने और उनसे मार्गदर्शन लेने के रूप में रखा गया है, वन्य अनाजों पर आश्रित रहने के स्थान पर स्वयं अपनी पहल से इनकी व्यवस्थित खेती करने का कारण बना।

भारतीय साहित्य में कृषि-क्रांति के दौरान किये गये प्रयोगों और संघर्षों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवासुर संग्राम के रूप में पेश किया गया है और कृषि को यज्ञ का पुरातन रूप कहा गया और इन विवरणों में जितने स्पष्ट और विस्तार से हम इस इतिहास को सुरक्षित पाते हैं,वह अन्यत्र किसी परंपरा में दुर्लभ है । अतः इन विवरणों पर दृष्टि डालना और इससे भी पहले सुर-असुर और यज्ञ आदि के मूल आशय को स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा।

सुर और असुर

सुर और असुर शब्द एक-दूसरे के विलोम हैं । इसके बावजूद परंपरागत व्याख्याकार असुर शब्द की व्युत्पत्ति 'असु' नामक एक कल्पित धातु से करते रहे हैं, जिसका मूल अर्थ क्षेपण, प्राण आदि किया जाता रहा है । असुर शब्द का प्रयोग वैदिक साहित्य में अनेक बार देवों के विशेषण के रूप में भी हुआ है, इसी से संभवतः इसे सुर का विलोम न मानकर इसके लिए कोई भिन्न मूल तलाशने की आवश्यकता अनुभव हुई । निघंटु के अनुसार, 'असु' प्रज्ञा, प्राण व जीवन का पर्याय है । सायण असुर को क्षेपणशील, निरसनशील, प्रेरक, प्राणदाता, बलदाता आदि अर्थों में ग्रहण करते हैं। सामान्यतः एक धातु से दर्जनों और कभी-कभी सैकड़ों शब्द निकलते हैं, पर यह 'असु' धातु ऐसी है, जिससे केवल एक शब्द असुर निकला । यह तथ्य हमारे मन में इस व्युत्पत्ति के प्रति संदेह पैदा करता है । वस्तुतः सुर और असुर शब्द केवल व्युत्पत्ति की दृष्टि से ही नहीं, अर्थ-विकास की दृष्टि से भी एक-दूसरे के विलोम हैं और इनको इसी रूप में ग्रहण करते हुए हम इनके मूल अर्थ को और इनके आपसी संबंधों और विरोधों को समझ सकते हैं ।

सू—जिसका मूल रूप चू भी हो सकता है, मूलतः जलवाची है, पर इसका प्रमुख भाव (चूने) टपकनेवाला या निकलनेवाला है, और यह बूंद के टपकने की ध्वनि का अनुकार रहा प्रतीत होता है । पर साथ ही पानी की धार के पतले छिद्र से तेजी से निकलने की ध्वनि भी ध्यान देने के योग्य है जो भी हो, पैदा होना, निकलना, पैदा करना इसके धातुगत अर्थ बने, जिनसे सुत, सुता, सवन, सुवन सविता, प्रसविता, सुत-र, सुत्या, स्व(भोजन, धन) आदि शब्द निकले हैं । जिन शब्दों का प्रयोग जल के लिए हुआ है, उन्हीं में से कुछ का प्रयोग प्रकाश, कांति आदि के लिए भी हुआ है । सू—चू के प्रजनन और प्रचुरतावाले भाव से 'सु' उपसर्ग अधिक और अच्छे का भी द्योतक बना । प्रचुरता में प्र-चुः-ता को स्पष्ट लक्ष्य किया जा सकता है।

अतः सुर शब्द का व्यवहार मूलतः उत्पादक (कृषिकर्मी) के लिए आरंभ हुआ लगता है और इसके विपरीतार्थक रूप में असुर शब्द का प्रयोग प्रचलित हुआ । इसकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि असुरों को अकर्मा, नि-अक्रतू, अव्रत, अधायु, गृधनु, अयज्यू, अराध, अनप्रस आदि भी कहा गया है, जिनका अर्थ है काम न करनेवाला, दूसरों की कमाई पर पलनेवाला, कंगाल आदि । इनके विपरीत देवों को सुकर्म, सुक्रतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुविद, व्रतचरिष्णु, सराध, श्रम और तप करनेवाला आदि बताया गया है जो उनकी कर्मठता का सूचक है। इस तरह मूलतः सुर शब्द मोटे तौर पर वही अर्थ रखता था, जो अर्थ 'आर्य' शब्द।

कृषि यज्ञ

यज्ञ का संबंध उपभोग और उत्पादन से रहा है और बाद में इसे एक आनुष्ठानिक रूप दे दिया गया।

यज्ञ का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष इसका उत्पादन पक्ष है। पशुचारण काल में संभव है, पशुवृद्धि को यज्ञ का रूप माना जाता रहा हो और मैथुनवाले या रेतःसेकवाले पक्ष पर जोर उस काल का भी अवशेष हो सकता है, अन्यथा मैथुनवाले मामले में तो राक्षस भी यज्ञपरायण ही थे। जो भी हो, यज्ञ को आगे के चरण में कृषि-कर्म से या उत्पादन के उन्नत चरण से जोड़ लिया जाता है और फिर यह आनुष्ठानिक रूप ले लेता है।

यदि हम यज्ञ के विवरणों पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इसका संबंध कृषि-कर्म से ही था। ऋग्वेद में एक पहेली बुझायी जाती है कि इस पृथ्वी का परम अंत क्या है? भुवन की नाभि क्या है? और अगली ऋचा में उत्तर दिया जाता है कि यह यज्ञ की वेदी ही पृथ्वी का परम अंत है और यज्ञ ही भुवन की नाभि है। ब्राह्मणों आदि में पृथ्वी को ही बताया जाता है। इस वेदी से ही सब कुछ प्राप्त किया गया, अतः इसका नाम वेदी पड़ा। जहां तक पृथ्वी है वहां तक वेदी है। जहां तक वेदी है, वहीं तक पृथ्वी है। धरती को तीन अंगुल जोतकर खेती की जाती है, अतः वेदी की मोटाई भी तीन अंगुल की है। वस्तुतः जो जुती हुई खेती की भूमि या उर्वी है, वही वेदी है और उसी से हर चीज पैदा होती है।

कबीलाई सामूहिक सोच-विचार और निर्णय को भारतीय परंपरा में प्रतीकात्मक रूप में प्रजापति के पास जाने और उनके सुझाव पर नये तरीके अपनाने के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन निर्णयों में पहला था वन्य अंचलों का बंटवारा, ताकि प्रत्येक कबीला मनमानी लूट-खसोट छोड़कर अपने क्षेत्र की वन-संपदा की रक्षा करे और प्राकृतिक संपदा का भरपूर उपयोग कर सके। यह बंटवारा मध्य-पाषाण काल तक पूरा हो चुका लगता है। दूसरा विकास था कुछ अधिक दूरदर्शी लोगों द्वारा पशुसंपदा का प्रबंध और पशुपालन की दिशा में प्रस्थान और इन दुहरे प्रयासों के बाद संभवतः हजारों वर्षों बाद सूखे आदि की स्थितियों में सस्यों की रक्षा के लिए सिंचाई आदि का प्रबंध और फिर ऐसे क्षेत्रों में, जहां ये धान्य प्रकृत रूप में नहीं पैदा होते थे, दूसरी वनस्पतियों की सफाई करके इनके लिए क्षेत्र-विस्तार।

देवासुर संघर्ष

देवासुर संघर्ष का आरंभ इस अंतिम दौर में शुरू होता है। कारण, कृषि के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र विस्तार करने समय उन जनों ने जिन्हें देव की संज्ञा प्राप्त हुई, जंगलों को जलाना आरंभ कर दिया और यह एक ऐसा निर्णय था, जिसका विरोध दूसरे कबीले ही नहीं, अपितु इन कबीलों के भी बहुत-से लोग कर सकते थे। इस वन-दहन अभियान को ही उस प्राथमिक यज्ञ का नाम दिया गया है, जो प्रथम धर्म था और जिसका क्रमशः विस्तार किया जाता रहा है। यह संघर्ष कहां आरंभ हुआ, या कहें कृषि की दिशा में ये आरंभिक प्रयोग किस क्षेत्र में आरंभ हुए, इसके विषय में हमें क्षीण संकेत ही मिल पाते हैं।

देवों की दिशा पूर्व बतायी गयी है। यह अग्नि से और पुरोहितों से संबंधित है। मात्र दिशा से क्षेत्र का निर्धारण कठिन है। हम इतना ही कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य के रचनाकाल में वैदिक जन जिस क्षेत्र में रहते थे, उससे पूर्व कहीं यह प्रयोग किया गया होगा। जिन जनों ने इस दिशा में पहल की थी, उनकी परंपरा के अनुसार उनके पूर्वज दक्षिण की ओर से उस क्षेत्र में आये प्रतीत होते हैं; कारण, दक्षिण को पितरों की दिशा बताया गया है और उत्तर को मनुष्यों की दिशा। इस पहल से पहले तक न कोई देवता था, न ही असुर। यदि सुर का अर्थ उत्पादक है तो इस उत्पादन कार्य का आरंभ होने से पहले न तो कोई सुर हो सकता था, न ही इसका विलोम असुर शब्द अस्तित्व में आ सकता था। संभव है, वे सभी मनुष्य ही कहे जाते ही रहे हों। संभव है, मनु नाम के एक आदि पुरुष की कल्पना बाद के चिंतन की देन हो और आर्थिक अवस्था में आनेवाले प्रत्येक परिवर्तन के साथ इस आदि पुरुष का एक नया रूप जुड़ता गया हो। मन्वन्तरों के साथ या मनुष्य के सांस्कृतिक जीवन में घटित होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तनों के साथ अलग-अलग मनुओं की कल्पना की गयी प्रतीत होती है, जिसका फलक आगे के युगों में अधिक बढ़ा दिया गया। यह मात्र एक संभावना है, इसके विषय में कुछ भी निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता।

जब जंगलों को जलाकर कृषि के लिए विस्तृत और तृण-गुल्म-रहित भूमि तैयार करने का काम आरंभ हुआ तो पहली बार ये आग लगानेवाले लोग देव कहे जाने लगे। और कृषि उत्पादन के साथ वे सुर या उत्पादक हो गये। पहले मनुष्य कंदमूल का कच्चा ही सेवन करता था, पर इस अभियान के साथ वह पके भोजन के दिशा में भी प्रयोग करने जा रहा है। देवता अग्नि के माध्यम से ही अपना भोजन ग्रहण करते हैं। अपक्व भोजन मानुषी या वन्य जीवन से जुड़ा हुआ है और पका भोजन इस देव-समाज से। अतः यज्ञ और व्रत के अवसर पर देवताओं को पक्वान्न का भोग चढ़ाने से पहले मनुष्य केवल वही आहार ग्रहण कर सकता है, जो इससे पहले वह वन्य मनुष्य के रूप में ग्रहण करता था।

देवताओं और असुरों के बीच हुए संघर्ष में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि देवताओं ने असुरों को शस्त्र से पराजित नहीं किया। उन्होंने वन-दहन से, महा-हवि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़प्पा में प्राप्त विविध प्रकार के भाण्ड

असुरों को पराजित किया। उन्होंने अपनी नयी उत्पादन पद्धति से या शाकमेध से असुरों को पराजित किया। उन्हें ब्रीही और यव से या वरुण-प्रघासों से असुरों पर विजय मिली। वे यज्ञ के द्वारा असुरों को परास्त करने में सफल हुए। असुरों का विरोध यज्ञ से है। उनकी शत्रुता क्षत्रियों से नहीं, ब्राह्मणों से या उन महायज्ञ के प्रवर्तकों से है। वे ही राक्षसों के अपहंता हैं। अग्नि ही राक्षसों के अपहंता हैं। संवत्सर प्रजापति या जनता का पालक है। यज्ञ जनता का पालक या प्रजापति है। यह विस्तृत धरती भोजन पात्र है, प्रजापति है। प्रजनन या उत्पादन ही प्रजापति है।

देवता और असुर जब इस रूप में विभाजित नहीं हुए थे तब वे एक ही पिता की और एक ही माता पर आश्रित संतानों की तरह थे। दोनों प्रजापति के पुत्र हैं। पर कृषि की ओर अग्रसर होने के साथ वे सौतेले (प्रतिस्पर्धी) भाई बन गये। पिता तो एक ही रह गया, पर माताएं दो हो गयीं। एक की माता वह फल, फूल, कंद, आखेट सब कुछ स्वतः देने वाली धरती या दिति और दूसरे की माता वह धरती, जिसको जलाकर तृण-गुल्म-हीन बना दिया गया है। यह अदिति है। यह स्वतः कुछ नहीं देती, इससे श्रम और तप से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

आरंभिक कठिनाइयां

जिन लोगों ने कृषि की दिशा में पहल की उनके सामने कई परेशानियां थीं। पहली समस्या तो यह कि सभी इस बात पर सहमत नहीं थे कि वनस्पतियों को, जो स्वतः फल-कंद देती हैं, जलाकर अपने एक विश्वस्त साधन-स्रोत को समाप्त किया जाए। कुछ लोग ही इसके पक्ष में हो सकते थे, शेष इसका विरोध कर रहे थे। जिन्होंने यह रुख अपनाया कि इनकी रक्षा की जाए उनको राक्षस कहा गया। इस तरह राक्षस और असुर दोनों समानार्थी हो गये।

एक दूसरी आशंका यह थी कि क्या यह बृहद् प्रयोग सचमुच सफल हो पाएगा? संभवतः ऋतु-काल का जो अध्ययन किया गया था, वह बहुत सही नहीं था। देवता पहले बीज बोने के लिए बिलकुल ठीक समय का चुनाव नहीं कर पाते थे। वन्य फसलें यूं भी समय से पहले पककर तैयार हो जाती हैं। शतपथ ब्राह्मण में इस प्रसंग को एक रूपक के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। ऋतुओं ने देवों से यज्ञ में अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिस्सा मांगा, पर देवों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। ऋतुएं देवों से रूठकर सुदूर
से असुरों की ओर चली गयीं, जो कि इनको अप्रिय और इनसे द्वेष करने वाले सौतेले
भाई थे। इसके बाद असुरों को खूब समृद्धि मिली। वनस्पतियां बिना जोते-बोये उनके
लिए खूब फसलें दे रहीं थीं, वे पककर तैयार हो चुकी थीं जब कि देव अभी जोतने-बोने
में लगे हुए थे। वे इस पर सोच-विचार करने लगे और तय किया कि ऋतुओं को
वापस बुलाया जाए। देवताओं ने अग्नि को ऋतुओं को मनाकर लाने को भेजा और
अग्नि ने ऋतुओं को बताया कि उसने ऋतुओं को यज्ञ में हिस्सा देने के लिए देवताओं को
मना लिया है। इत्यादि।

ऋतुओं का यह विपर्यय एक बहुत बड़ी कठिनाई थी। एक बार तो लगा कि
खेती का काम देवों को सदा के लिए छोड़ देना पड़ेगा। कारण, ऋतुओं के अतिरिक्त
स्वयं यज्ञ के भी रूठकर चले जाने का उल्लेख पाया जाता है और यहां भी देव उन्हें
किसी तरह मनाकर लाने की कोशिश करते हैं। एक बार जंगलों को जला देने के बाद
उनके पास दूसरा चारा भी क्या था ? जले हुए जंगल में वनस्पतियां नष्ट हो चुकी थीं
और उन्हें उगने में वर्षों का समय लगता, यज्ञ का यह रूठना संभवतः समय से वर्षा
आदि न हो पाने के कारण नियत मौसम में बोआई आदि न हो पाने या बोआई के बाद
सूखे आदि से संबंधित है। अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन के साथ पहला अनुभव
अधिक दारुण होता ही है। यदि क्षेत्रीय विभाजन न हो चुका होता तो शायद देवों के
विचार छोड़कर देवों ने भी अपनी पुरानी लीक अपनायी होती और कहीं अन्यत्र निकल
गये होते। पर अब तो उनके जीने-मरने का सवाल पैदा हो गया था इसलिए वे उन्हें
जुड़े रहे।

अपने आरंभिक चरण में खेती जमीन को बिना जोते बोये ही की गयी लगती
है। जंगल को जलाया और फसल का समय आने पर उसी की राख आदि में बीज
बिखेर दिये, जब तक भूमि की उर्वरता रही तब तक खेती की और फिर नये जंगलों को
जलाया। (यह झूम खेती भारत के अनेक जंगली कबीलों में इस शताब्दी तक चलती
है।) पर जल्द ही यह समझ लिया गया कि यदि जमीन को जोता जाए तो एक ही खेत
में बहुत लंबे समय तक खेती की जा सकती है। बोआई ठीक किस समय की जाए,
जमीन में कितनी नमी होनी जरूरी है, एक नियत भूभाग में कितने बीज डालें, या बिखेरें,
धान्यों के बीजों के बीच कितनी दूरी होनी चाहिए, बोने के लिए रखे गये बीज कैसे रखे
चाहिए, उन्हें कीड़ों आदि से कैसे बचाकर रखा जाए कि उनकी उर्वरता बनी रहे,
तमाम बातें क्रमशः प्राथमिक प्रयोगों और कठिनाइयों से समझ में आती गयीं।

यज्ञ में मुहूर्त का विचार, अर्थात इसके लिए बिलकुल उपयुक्त ऋतु-काल का
ध्यान, जिसे कर्मकांडीय यज्ञों ने अपनी तार्किक परिणति पर पहुंचा दिया और जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे चलकर फलित ज्योतिष को जन्म दिया, फसल को बोआई के लिए उपयुक्त ऋतुकाल या कहें इस कृषि-यज्ञ के आरंभ के लिए उपयुक्त मौसम की पहचान की देन है। विद्वान यह मानते हैं कि भारत में ज्योतिष के विकास में यज्ञों का बहुत बड़ा हाथ है, कारण इनके लिए उपयुक्त ग्रहों नक्षत्रों का ध्यान रखा जाता था। उनका यह विचार ठीक है। वे सिर्फ इस बात का ध्यान नहीं रखते कि यह यज्ञ का कौन-सा रूप था, जिसके लिए ऋतु काल का उचित ध्यान इतना जरूरी था। इसके पीछे अपरिहार्यता क्या थी, इसका वे कोई संकेत नहीं देते। केवल दिन और रात के चक्र से बोआई के लिए सही समय का ज्ञान नहीं हो सकता था। चंद्रमा भी इसमें सहायक नहीं हो सकता था। वर्षा और गरमी का परिवर्तन बहुत दूर तक सहायक नहीं हो सकता था। यहीं से ग्रहों-नक्षत्रों की ओर आदमी का ध्यान जाता है और आज तक ग्रामीण किसान इन ग्रहों-नक्षत्रों के आधार पर ही अपनी कृषि के लिए, विशेषतः बोआई के लिए, समय का विचार करते हैं।

बोने से पहले बीजों की परीक्षा भी आवश्यक थी। अनाजों पर कीड़ों आदि का असर हो जाना एक आम-सी बात थी। पर इसके बावजूद बीज उग सकते थे। बोने से पहले एक बार यह देख लेना जरूरी था कि उनके उगने की संभावना है भी या नहीं और बोने का ठीक समय आ गया है या नहीं। आज भी किसान बोआई से पहले, इसका मुहूर्त विचार-समय-विचार करते हैं। एक कलश या लोटे में पानी लेकर किसान खेत पर जाएगा और इसके एक कोने में बीजों को बिखेरकर पानी डालकर चला जाएगा। वास्तविक बोआई इसके हफ़्तों बाद शुरू होती है। आज इसका रूप रस्मी ही रह गया है। आरंभ में इन परीक्षणों का रूप वैज्ञानिक था। रामनवमी के दिन आज भी ब्राह्मण जई या जौ के इन कल्लों को यजमान की चोटी में बांधते हैं। यह जई और विजयादशमी का पर्व है।

कुछ विद्वान मानते हैं कि राम कथा का संबंध कृषि से है। राम का अर्थ किसान और सीता का हलाई है। इस दृष्टि से ये तथ्य कुछ रोचक हैं। जो भी हो, कृषि-यज्ञ की सफलता असुरों पर एक विजय थी, इसे बार-बार दुहराया ही गया है। सीता जनक या उत्पादन कर्मी, कृषिकर्मी पिता की दुहिता है और इसका जन्म मानव पिता और माता से नहीं होता, अपितु असुरों द्वारा मारे गये उन ब्राह्मणों के रक्त से होता है, जो घड़े में भरकर जमीन में रख दिया गया था। यह उस बलिदान की सजीव मूर्ति है, जो कृषिकर्मियों को इस नवप्रवर्तन के लिए करना पड़ा था। कृषि-क्रांति निश्चय ही नीरव क्रांति नहीं थी। इसके साथ भी बलिदानों की एक कथा है, जो अनेक रूपकों और परवर्ती कथाओं और चरित्रों से मिलकर कुछ दुर्बोध हो चली है।

इस विषयांतर को छोड़कर हम इस तथ्य पर आएं कि अपने आरंभिक प्रयोगों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

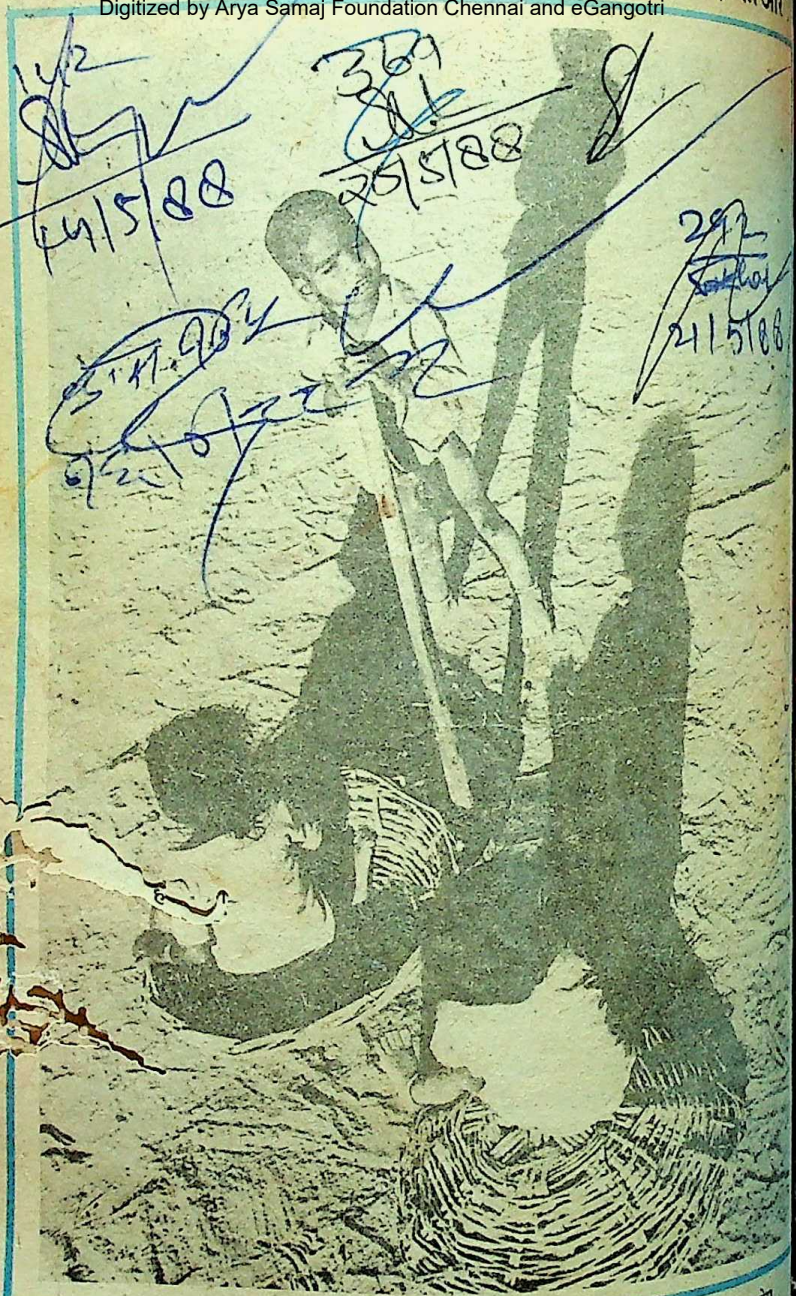

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस
नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

...ड़ रहा है मन
...आकांक्षाओं के ?

...ना के निर्वासन
...प्रसंग
...चरित्र को
...कित करने का
...यंत्र

...न टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइफ़बॉय है जहां तन्दुरुस्ती है वहां

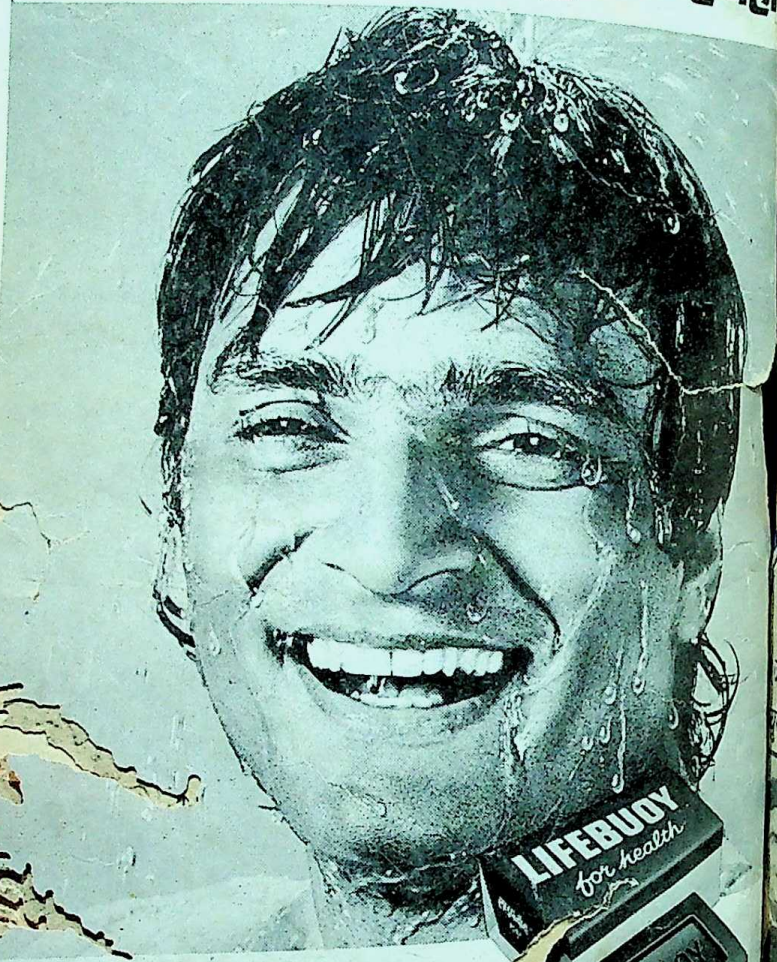

लाइ ...बॉय

मैल में छिपे कीटाणुओं को ध ... डालता है.

हिन्दुस्तान लीव ... र का एक उत्कृष्ट उत्पादन

LINTAS L 93 16

ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांतों का रोग जिनको सताये
उनके लिये है घरेलू उपाय

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

एम डी एच

दंत मंजन

लौंग युक्त

जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी प्रा० लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015. फोन : 537987, 537341 539609

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लूकॉन-डी सुपरहीरो.

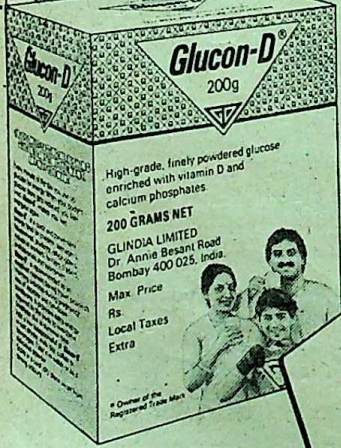

असली, रंगारंग पैक देख कर लीजिए.

थका देनेवाली गर्मी के दिन में आपके बच्चे को चाहिए ग्लूकॉन-डी : ग्लूकोज, विटामिन-डी और कैल्शियम फॉस्फेट से भरपूर तुरंत शक्ति देनेवाला पेय.

फलों के रस, दूध, चाय कॉफी या पानी में मिला कर पीजिए-पिलाइए ग्लूकॉन-डी पूरे परिवार के लिए ताजगीदायक पेय.
100, 200, 500 ग्राम पैक में उपलब्ध

ग्लूकॉन-डी

शक्ति देनेवाला पेय... सुपरहीरो की खास

HTA 1649

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला अंक

पर्यटन विशेषांक

यों में घूमने के
ले हैं। जलती और
लती धूप से बचने
आप कहां जाएं ?
लाह के लिए
अंक पढ़िए :

ालय की गोद
सैलानियों के
ीक स्थल
मीर : सौंदर्य
बीच आप
ले नहीं !
भी सस्ती।
ों में खड़े
पहाड़ :
ही, माउंट
ऊटी
वित्र नदियां
कावली के

- समन्दर में तैरने के लिए लक्षद्वीप, गोवा और कोवालम
- देखें हाथियों को पेरियार में

विशेष रोचक रचनाएं

- सैर तो कीजिए पर देखिए साथ कौन है : सेवकराम ओखाड़ू
- व्यंग्य : अब नेता पैदल चलेंगे : गोपाल चतुर्वेदी
- अंदमान अब कालापानी नहीं है !
- पर्यटन-विभाग के सचिव क्या कहते हैं ?

चुने हुए श्रेष्ठ लेखक उनकी अपनी यात्राएं मार्ग और आपका बजट

सभी कुछ (एक अंक में) : गरमियों में हमारा विशेष—

उपहार पर्यटन विशेषांक

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **फलाकांक्षा**—क. फल खाने की इच्छा, ख. अच्छी फसल, ग. फल की कामना, घ. सौभाग्य।

२. **संसृति**—क. सृष्टि, ख. संसारचक्र, ग. सत्संग, घ. समाज।

३. **कटूक्ति**—क. कड़वा, ख. झूठ, ग. अप्रिय बात, घ. व्यंग्य।

४. **शतावधान**—क. सावधान, ख. प्रतिभाशाली, ग. सौ वर्ष जीनेवाला, घ. एक साथ बहुत-सी बातों पर ध्यान देनेवाला।

५. **हर्षोत्कर्ष**—क.प्रसन्नता, ख. अत्यधिक प्रसन्नता, ग. खुशी में पागल हो जाना, घ. खुशी का त्योहार।

६. **अधोगति**—क. धीमी चाल, ख. पतन, ग. रुकावट, घ. ढाल।

७. **पंगुता**—क. कमी, ख. भ्रष्टता, ग. लंगड़ापन, घ. गिरावट।

८. **बड़वानल**—क. विस्तार, ख. भारी असंतोष, ग. बड़ापन, घ. जंगल की आग।

९. **पांडित्य**—क. लिखना-पढ़ना, ख. पुरोहिताई, ग. विद्वत्ता, घ. बड़प्पन।

१०. **पर्यवसान**—क. अत्यधिक पंडित, ख. अंत, ग. सीमा, घ. बिगाड़।

११. **अभीप्सा**—क. शाप, ख. लालसा, ग. इच्छा, घ. तृष्णा।

१२. **अननुभूत**—क. जो पहले न हुआ हो, ख. अविश्वसनीय, ग. जिसका अनुभव न हुआ हो, घ. अज्ञात।

१३. **स्थावर**—क. स्थानीय, ख. बदलने वाला, सुस्त, घ. अचल।

१४. **थिरना**—क. घूमना, ख. स्थिर होना, फेरना, घ. टलना।

अर्थ

१ग. फल की कामना। गीता के अनुसार मनुष्य को कर्म करना चाहिए, **फलाकांक्षा** नहीं।

२. ख. संसारचक्र, संसार (जहां जीवन-मरण की क्रियाएं गतिशील हैं)। **संसृति** देव की अगम्य लीला की अभिव्यक्ति-मात्र है।

३. ग. अप्रिय बात, कड़वी बात। अपनी **कटूक्तियों** से किसी पर प्रहार मत करो। (कटु+उक्ति)

४. घ. एक साथ बहुत-सी बातों पर ध्यान देनेवाला। प्रशासक यदि **शतावधान** न हो तो प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से कर सकता है।

५. ख. अत्यधिक प्रसन्नता। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण उसके लिए **हर्षोत्कर्ष** लीन हैं। (हर्ष+उत्कर्ष)

६. ख. पतन, अवनति। प्रबुद्ध व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि समाज को **अधोगति** से बचाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से बचाएं।

७. ग. लंगड़ापन। आज **पंगुता** शारीरिक सक्रियता में बाधक नहीं है। (विशेषण+पंगु)

८. घ. जंगल की आग, बड़वाग्नि। ब्रिटिश काल में देश भर में असंतोष **बड़वानल** की भांति फैल गया था।

९. ग. विद्वत्ता। अपने **पांडित्य** पर गर्व नहीं करना चाहिए।

१०. ख. अंत, समाप्ति। इस कांड का **पर्यवसान** सन्निकट है।

११. ग. इच्छा। **अभीप्सा** मन की सहज प्रवृत्ति है। (विशेषण-**अभीप्सित**, इच्छित। अभीप्सु=इच्छुक)

१२. ग. जिसका अनुभव न हुआ हो। उसने जीवन में कुछ **अननुभूत** प्रयोग किये हैं।

१३. घ. अचल, स्थायी। मनुष्य **स्थावर** वृक्ष नहीं, जंगम प्राणी है।

१४. ख. स्थिर होना। मटमैला जल कुछ देर शांत रहने के बाद **थिरने** लगेगा। (बोलचाल)

पारिभाषिक शब्द

प्रोमोशन=पदोन्नति
डिमोशन=पदावनति
नामिनेशन=मनोनयन
डिनामिनेशन=अभिधान
इप्सो फैक्टो=यथातथ्यतः
इप्सो जूरे=विधितः
डि नोवो=नये सिरे से
टैक्सेशन=कराधान
सर-चार्ज=अधिभार
सुपर-टैक्स=अधिकर

समस्या-पूर्ति— १०६

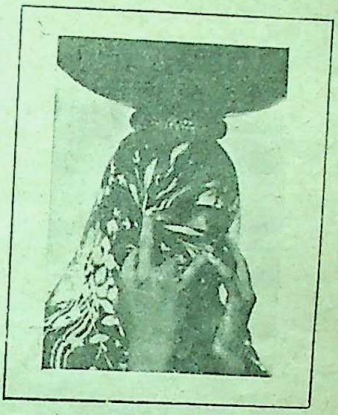

शरमाये

प्रथम पुरस्कार

सांझ भई पनघट को जाती
नैनों में मदिरा छलकाए
आड़ी, तिरछी नजरें देखें,
घूंघट में गोरी शरमाए

अनिल कुमार द्विवेदी

७०/३४ तेलियाना, कानपुर-२०८००१

द्वितीय पुरस्कार

प्रीतम की मन में आस लिये
खाली गागर में प्यास लिये
पली अकेली पनघट की ओर
मस्ती में होके भाव-विभोर
पलकों नयनों में लाज लिये
गोरी बरबस ही शरमाये

—कु. खुदेजा हक

द्वारा- श्री फैजानुल हक, शासकीय कुक्कुट, पालन प्रक्षेत्र, कोण्डा गांव. जिला- बस्तर (म. प्र.) ४९४२३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

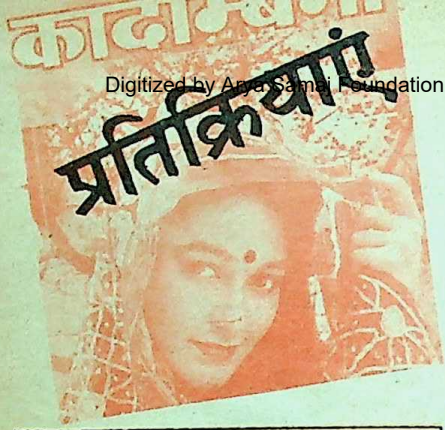

सूचना

इस अंक से चुने हुए पत्रों को पुरस्कृत किया जाएगा। वही पत्र पुरस्कृत किये जाएंगे जो किसी विचार या समस्या पर आधारित होंगे। दो पत्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिये जाएंगे। उपयुक्त पत्र न होने पर पुरस्कार रोका जा सकता है। पुरस्कृत पत्र पर ५० रु. और प्रोत्साहन पत्र पर ३० रु.।

—सम्पादक

पुरस्कृत पत्र

कादम्बिनी का अप्रैल अंक हाथ में आया और निबंध-सूची पर दृष्टि दौड़ गयी। सरपट दौड़ती हुई दृष्टि को अवरोध दिया एक चौंकाने वाले शीर्षक ने। "दक्षिण भारत में है एक संस्कृत ग्राम"— बस ये ही वे शब्द थे, जिन्हें देख मैंने सोचा कि कतिपय पाश्चात्य पत्रिकाओं की भांति इस बार कादम्बिनी ने भी अप्रैल मास में हमें "अप्रैल फूल" बनाया है। लेकिन जब अपनी सतर्क सोचों पर स्वयं ही अपनी पीठ थपथपाता एक ही सांस में समूचा निबंध पढ़ गया, तो कर्नाटक के "मात्तूर" गांव की छवि विश्व के नौवें आश्चर्य के रूप में सामने आयी।

वस्तुतः एक ऐसे गांव के अस्तित्व की सच्चाई को स्वीकार कर पाना सहज नहीं प्रतीत हो रहा था, जहां भोर के पराती-गान से लेकर समस्त दैनंदिन व्यापार, वार्ता, वाद-विवाद आदि देववाणी में ही संपादित होते हों। इतिहास साक्षी है कि संस्कृत जितनी ही पुरानी कई अन्य प्राचीन भाषाएं आज भी अपने समुज्जवल अस्तित्व में हैं लेकिन कालरूपी क्रूर केतु ने संस्कृत के चितचोर रूप की अप्रतिम आभा को क्षीण कर दिया। उसी मोहक मंजु, मनोहर संस्कृत को भारत-भूमि पर जन-भाषा के रूप में प्रतिष्ठापित करने की दिशा में उदात्त गांव ने निश्चय ही सुबह के तारे की भूमिका निभाई है।

—चन्द्र भूषण झा
सेंट स्टीफंस कालेज, इंदौर

प्रोत्साहन पुरस्कार १

कादम्बिनी के रसास्वादन का अवसर समय प्राप्त होता है और युग-सापेक्ष जीवन सत्यों को विविध साहित्यिक विधाओं के अनंतर दृष्टिगोचर कर हमें युग-मूल्यों के निकट जाने का सौभाग्य मिलता है। जहां आज की पत्र-पत्रिकाएं बाह्य-आस्थाओं, विज्ञापनों और कृत्रिम परिवेश में प्रस्फुटित भावनाओं को केवल अंकित करती हैं, वहां यह पत्रिका आज भी कुछ निष्पक्ष संवेगों को स्थान दे पाती है, यह गौरव का विषय है। वैसे प्रायः अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं बड़े लेखकों और कवियों की जागीर या शिविर बनी हुई हैं और वे क्या दे रहे हैं, किसकी मानवीय चेतना है उनमें, उनकी कृतियों में, किससे छिपा नहीं है पर नाम चलता है, चलाया जाता है। कारण कुछ भी हों, रचनाएं शब्द-दंभों और भाव-दर्पों की ही विषैली छवि क्यों न हों, प्रकाशित होंगी। कोई संपादक इस प्रवाह को नहीं रोक पाता है, क्योंकि वह भी इसी पड़ाव से आया है और वही नींव है। उसकी, तब प्रकाशित रचनाएं कैसी होंगी— यह तो सब जानते हैं।

एक बात यह भी है पत्रिकाएं कौन पढ़ता है, अवसर किसे? वे तो अन्य सौंदर्य-प्रसाधनों के समान टेबिल की शोभा मात्र हैं, फिर मूल्यांकन कैसा? चलो कादम्बिनी कुछ आस्थावान है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही, पढ़ लेते हैं और विविधाओं की क्षणिकाओं में फंसा व्यक्ति कुछ टटोल लेता है। इसके लिए कृतज्ञ हैं हम कादम्बिनी के— यह और अधिक युग सापेक्षित तथा निष्पक्ष आकार लेकर अपने स्तर के अस्तित्व को सशक्त बनाएगी, ऐसी अपेक्षा है।

—जानकी प्रसाद स्वर्णकार, प्राचार्य
नवोदय विद्यालय पवारखेड़ा होशंगाबाद (म. प्र.)

२

कादम्बिनी का मार्च अंक होली मनोरंजन विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ है। आपका कालचिंतन बड़ा विरोधाभास लगता है। एक ओर मस्तिष्क को विद्युत-धारा के समान झटका देता है और दूसरी ओर हृदय में संदेह और संशय भर देता है। आपने लिखा है कि— "वह सब करना चाहिए जो कर सकते हैं हम।" बात बहुत प्रेरक और उत्साहवर्द्धक है। लेकिन भय एवं विस्मय से मन को भर देता है। क्योंकि दुष्ट व्यक्ति की मुट्ठी में मृत्योपरांत उसकी अंतिम आकांक्षा का एक टुकड़ा था और उसमें लिखा था— 'मेरे शव के गले में रस्से का फंदा बांधो और घसीटते हुए गांव के हर रास्ते घुमाते मुझे ले जाओ श्मशान तक। और ऐसा करने पर गांव हवालात में बंद हुआ।'

यह परिणाम देखकर मन सिहर उठता है। तब आपने लिखा है कि "निगल सकें तो निगलें धरती को, समंदर को, हम उसको जिसको हम निगलना चाहते हैं।" अपनी बलवती इच्छाओं को साकार करने के लिए हम करने के लिए तो सब कुछ कर लेंगे, लेकिन ऐसा करने देगा, यह रूढ़िग्रस्त पापी समाज, उलझा हुआ संविधान, गलित परंपरा और सरकार की कुटिल राजनीति। ऐसा तो न होगा कि मन चाहे काम के कारण जीवित रहने पर इस दुस्साहस का अभिशाप अकेले मुझे भोगना पड़ेगा या मरणोपरांत सारे समाज को हमारे कारण दुष्परिणाम उस दुष्ट के समान भोगने को बाध्य होना पड़ेगा ?

—मोहन सदन
पत्रालय आलमनगर
मधेपुरा (बिहार)

अंधेरे व ऊबड़-खाबड़ पथ में एक विद्वान साहित्यकार के प्रति जो आस्था की किरण हृदय में रह रही है, उसे आप क्यों नष्ट करते हैं।

मुझे कितनी आशा थी कि 'कादम्बिनी' की सदस्य बनकर मैं आस्थाओं का किनारा पा लूंगी। किंतु आपकी लापरवाही मेरे धैर्य को तोड़े दे रही है। यों तो मैं पढ़ ही लेती थी, पर सदस्या बनने का तो एक ही प्रलोभन था कि स्वयं के लिए कुछ निर्देशन पा सकूं। नवंबर व दिसंबर की प्रतियां एक साथ भेजकर जैसे छुट्टी पा ली।

अबकी बार आपको जवाब देना होगा कि आप क्यों नहीं भेज पा रहे हैं ? आपके लाखों पाठक हैं क्या वे इसी तरह परेशान होंगे ? फिर मेरे साथ यह सौतेला व्यवहार क्यों ?

(हमने प्रसार विभाग के पास आपकी शिकायत भेज दी है। भविष्य में ऐसा नहीं होगा। .सं.)

—मिसिज कुलश्रेष्ठ
जि. मुरैना (म. प्र.)

हिंदी की असली सेवा

हिंदी की असली सेवा अब शुरू हुई। किंतु अब हिंदी का वास्तविक कार्य शुरू हुआ। भारतेंदु समग्र ११४४ पृष्ठों का वृहत् ग्रंथ मात्र तीस रुपयों में दिया जा रहा है। इसे प्रकाशन जगत का एक चमत्कार ही कहा जाएगा। इधर एक लंबे अर्से से साहित्य से बिल्कुल अलग हूं। अन्यथा कभी पांच सवारों में से रहा हूं। अपने साहित्यिक जीवन के बहुत प्रारंभ से इस प्रकार के सस्ते साहित्य के प्रकाशन और प्रचार-प्रसार में मेरी विशेष रुचि रही है। इस विषय पर थोड़ा बहुत कभी लिखा भी है। अतः कादम्बिनी (अप्रैल ८८ पृ. १७१) के ही शब्दों में हिंदी प्रचारक संस्थान वाराणसी के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ़
गोदरेज खुद-ब-खुद फ़ैलने वाला हेयर डाई
दूसरी तरफ़ फिर भी गोदरेज हेयर डाई
इस्तेमाल करनेवाले ज़्यादा ही होंगे !

३ ख़ास कारणों से :

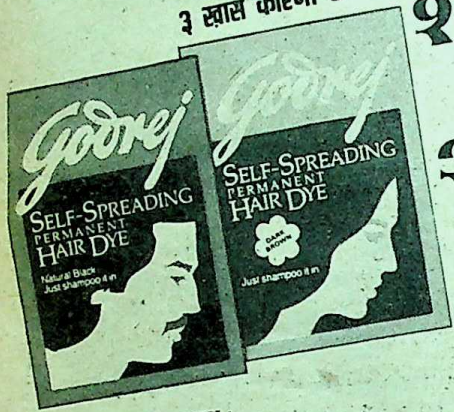

दो कुदरती रंगों में उपलब्ध :
काला और गहरा भूरा

१ गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला हेयर डाई बालों को कुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कंडीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. **बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके जब तक आप ख़ुद न बताएँ.**

२ गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. **जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितनी.**

३ आप गोदरेज ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाले हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह ख़ास तौर से आपके बालों और त्वचा की हिफ़ाज़त के लिए बनाया गया है. **पूर्ण-सुरक्षा- यही गोदरेज का वादा है.**

गोदरेज® ख़ुद-ब-ख़ुद फैलने वाला पर्मानेंट हेयर डाई

CLARION/B/GS/50/173 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यंत समयोपयोगी एवं कल्याणकारी सारस्वत अनुष्ठान का हार्दिक स्वागत करता हूं और संयोजकों को उसके लिए बधाई देता हूं। उनका यह उपक्रम चिरजीवी हो। वे भी चिरजीवी हों।

—कृष्णानंद गुप्त
उरई, (उ. प्र.)

'कादम्बिनी' अप्रैल,'८८ का अंक पढ़ा। अत्युत्तम साज-सज्जा, सुरुचिपूर्ण मुख-पृष्ठ, अत्यधिक पठनीय सामग्री, विविध रोचक स्तंभ, सुंदर छपाई, स्तरीय कागज आदि सब कुछ होते हुए भी गागर में सागर सदृश्य पत्रिका का मूल्य भी सिर्फ पांच रुपये वस्तुतः प्रशंसनीय ही नहीं सराहनीय भी है, धन्यवाद। कहानी 'दुखती रग' यथार्थ रूप से इंगित करती है कि पत्नी के बिना घर, पति, बच्चे आदि सभी अधूरे हैं। गृहस्वामी को 'गृहस्थी की धुरी' शायद गलत नहीं कहा गया। अकेले व्यक्ति का गृहस्थ जीवन 'पतझड़' सदृश्य ही है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपने-अपने अतीत के सायों से घिरे, वर्तमान को घसीटते हुए मानसिक द्वंद्व से जूझते वक्त गुजारते हैं।

—मोहनोत गणपत जैन, जोधपुर।

'कादम्बिनी' के अप्रैल-अंक में भारत के शीर्षस्थ आचार्य एवं विचारक आद्य शंकराचार्य पर इंदिरा मोहन द्वारा लिखित लेख ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणादायी लगा। सनातन धर्म की विश्वव्यापी महानता के इस उदार प्रतिनिधि की १२००वीं जयंती के अवसर पर हम उन्हें नमन करते हुए उनके द्वारा बताये गये अद्वैत-वेदांत के सिद्धांतों का अनुशीलन करते रहेंगे, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है।

मनुष्य अपने दोषों के बीच भी कितनी विशाल नैतिक संवेदना छुपाये रखता है, इसकी अनुभूति कोरल, चापेक की चेक कहानी 'दुखती रग' पढ़कर मालूम हुई।

—रामगोपाल शर्मा, दुर्ग

हंसिकाएं

अतिश्योक्ति

उसकी मुस्कानों की धूप
पास के व्यक्ति पर यों पड़ी
फोटो खींचने के लिए भी
फ़्लैश की जरुरत न पड़ी

वापस

मनुष्य विधाता की श्रेष्ठतम रचना है
बार-बार जन्म लेता है, लौट-लौट आता है
जैसे कोई संपादक
रचना लौटाता है

खाता

मोटा बैंक के खाते की ओर
संकेत करके बताता रहा
खाता ही, खाता रहा

सूखा

देश में सूखा यों पड़ा
भाषण देते समय भी बारबार
गला खखारना पड़ा

विज्ञापन

चाल कोई भी चलें
पहनें सदा, हमारी कम्पनी
की चप्पलें !

डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कादम्बिनी'—अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य आज की समकालीन परिस्थितियों का कथा-साहित्य के माध्यम से आकलन करना है। इस दृष्टि से सामाजिक और राजनीतिक इन दो विषयों से संबंधित कहानियां इस प्रतियोगिता में शामिल की जाएंगी। किसी भी कहानी की शब्द-संख्या तीन हजार शब्दों से अधिक न हो। इससे लंबी कहानियों को प्रतियोगिता के बाहर किया जा सकता है।

कहानी कागज के एक ओर टाइप की हुई मूल प्रति होनी चाहिए। फोटोकापी अथवा कॉर्बन कापियों पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रत्येक कहानी के साथ यह प्रमाण-पत्र देना आवश्यक है :

—"मैं घोषित करता/करती हूं कि . . . . . (कहानी का शीर्षक) मेरी अपनी मौलिक कृति है और इसका कथानक किसी भी रूप में कहीं से प्रभावित नहीं है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि अन्यत्र न तो पहले कहीं प्रकाशित हुई और न प्रसारित हुई है।"

जिस लिफाफे में यह कहानी भेजें, उस पर यहां प्रकाशित कूपन अवश्य लगा दें।

कहानियों का निर्णय एक निर्णायक मंडल करेगा और संपादक का निर्णय अंतिम और मान्य होगा। रचनाओं के संबंध में किसी भी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। प्रतियोगिता के लिए भेजी जानेवाली कहानियों के साथ कोई लिफाफा न भेजें, क्योंकि पुरस्कार-निर्णय के बाद कोई भी रचना लौटायी नहीं जाएगी।

कहानी प्रतियोगिता के लिए

संपादक
'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन लि.
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा के आयाम

आशा ने कुदरत को दिया जवाब

"अटेंशन प्लीज .... कृपया ध्यान दीजिए।" ... दिल्ली से आकर अहमदाबाद की ओर जानेवाली ... "अजमेर रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन प्रातः एक सुरीली आवाज सहज ही हर यात्री की श्रवण-शक्ति को मधु रस प्रदान करती है।

वह तो लेक्चरार बनना चाहती थी ... लेकिन कुदरत ने उसे विकलांग बना दिया।

तब वह गवर्मेंट कालेज अजमेर में इतिहास विषय में एम. ए. कर रही थी। इम्तहान को अभी ६ महीने ही थे कि उसके सिर में एक फोड़ा उठा, जिसने उसकी आंखों की रोशनी छीन ली। अकस्मात हुए इस हादसे ने उसे रुला-रुला दिया। उसके सपने बिखरने लगे। उसे पढ़ने के लिए सख्ती से मना कर दिया गया। बम्बई में हुए इलाज ने उसके सिर में उठा वह फोडा तो दूर कर दिया, लेकिन उसके भाल पर गेंदाकार गड्ढा बना दिया, साथ ही उसकी नेत्र-ज्योति को भी हमेशा-हमेशा के लिए मध्यम बना दिया। बहुत जिद करने पर डॉक्टर ने उसे मात्र ५ मिनिट पढ़कर १० मिनिट

आराम करने के सख्त निर्देश दिये। 'एम. ए. हिस्ट्री फर्स्ट-डिवीजन करना है' आशा की यह साध थी, और इसके लिए वह हर जोखिम उठाने को तैयार थी। उसका अंतिम निर्णय यही था कि "जो अनहोनी हो गयी, उससे बड़ी तो अब क्या होगी ... भले ही अब मैं लेक्चरर न बन पाऊं, पर प्रथम श्रेणी में पास होकर सर्विस तो करूंगी ही।"

आखिर २६ वर्षीय आशा ५-५ मिनिट पढ़कर तथा अपने मित्रों से पुस्तक का पाठ सुनकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो ही गयी। एम. ए. करते ही उसने 'रेलवे अनाउंसर शिप' सर्विस के लिए फार्म भर दिया। विधाता ने भी उसका साथ दिया और वह अनाउंसर बन ही गयी।

आज आशा का यही कहना है —"भले ही मैं कालेज में लेक्चर देकर शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन न कर सकी, पर यहां तो रोज हजारों-हजारों यात्रियों को निर्देश-स्नेह देती रहती हूं। आखिर हुआ तो मार्ग दर्शन ही।"

—कुमकुम जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

क्या आप जानते हैं कि इस पृथ्वी पर आप जहां कहीं भी हों सूर्य और इसके साथी अन्य नक्षत्रों के प्रभाव से घिरे हुए हैं; इसलिए आपको सफलता प्राप्त करने के लिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। इसे आप केवल एक सप्ताह में हासिल कर सकते हैं। मेले-ठेलों में हाथ दिखाने, पक्षियों से अपना भविष्य पूछने या अधकचरी पुस्तकों को पढ़ने के बजाय आप निम्नलिखित ज्ञानवर्धक पुस्तकों का अध्ययन करें :

ज्योतिष रत्नाकर—देवकीनन्दन सिंह
मूल्य (सजिल्द) 150 : (अजिल्द) 120

बी.एल. ठाकुर : रू.

सचित्र ज्योतिष शिक्षा	
ज्ञान खण्ड	35
गणित खण्ड : प्रथम भाग	100
गणित खण्ड : द्वितीय भाग	40
फलित खण्ड : प्रथम भाग	75
फलित खण्ड : द्वितीय भाग	50
फलित खण्ड : तृतीय भाग	60
वर्षफल खण्ड : चतुर्थ भाग	45
प्रश्न खण्ड : पंचम भाग	40
मुहूर्त खण्ड	16
संहिता खण्ड	30

केदारदत्त जोशी :

ग्रहलाघव (सजिल्द) 90;	(अजिल्द) 50
ताजिक नीलकण्ठी	(सजिल्द) 100
	(अजिल्द) 70
मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा	
	(सजिल्द) 95, (अजिल्द) 60
लघु पाराशरी	20

लक्ष्मीकान्त कन्याल :

ज्योतिष तत्व प्रकाश	60

गोपेश कुमार ओझा :

अंक विद्या (ज्योतिष)	10
जातकपारिजात (दो भागों में)	
प्रथम भाग	(सजिल्द) 100
	(अजिल्द) 70
द्वितीय भाग	(सजिल्द) 100
	(अजिल्द) 80
फलदीपिका	(सजिल्द) 85
	(अजिल्द) 55
सुगम ज्योतिष प्रवेशिका	30
हस्तरेखा विज्ञान	(सजिल्द) 70
	(अजिल्द) 45
त्रिफला (ज्योतिष)	25
भारतीय लग्नसारिणी	30
जातकादेश मार्ग (चन्द्रिका)	45

मुकुन्द वल्लभ :

अर्घमार्तण्ड	16
कर्मठगुरु	30
फलित मार्तण्ड	50
षड्वर्ग फल प्रकाश	8

मोती लाल बनारसी दास

बंगलो रोड, दिल्ली-7
शाखाएं : अशोक राजपथ, पटना * चौक, वाराणसी
* 120 रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास
* 24 रेसकोर्स रोड, बंगलौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ न सही मन में हौसला तो है

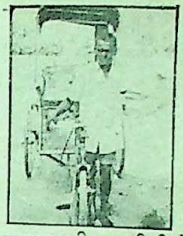

काशी के लोग पिछले कई सालों से एक हाथवाले रिक्शा चालक को देख रहे हैं। बनारस की सड़कों पर चाहे कड़कड़ाती धूप हो, या फिर बरसात या जाड़ा ही क्यों न हो, सभी मौसमों में एक हाथ न होने के बावजूद, उक्त रिक्शा चालक रिक्शे के हैंडिल को एक ही हाथ से संभाले हुए सवारियां बैठाकर रिक्शा खींचता रहता है।

३५ वर्षीय हरीराम की कहानी भी कुछ अजीब ही है। रिक्शा चलाने के पहले उसके दोनों हाथ सही सलामत थे। जब वह छोटा था तो बचपन में अपने गांव आजमगढ़ में जामुन के पेड़ पर से जामुन तोड़ते समय गिर पड़ा। परिवारवालों के पास इतना पैसा नहीं था कि उसका सही ढंग से इलाज करा सकें। परिणामस्वरूप उसका टूटा हुआ हाथ अंदर ही अंदर सड़ गया, तब डाक्टरों ने उसके हाथ को काट देने की सलाह दी। गरीबी में पले होने के कारण गांव में वह पढ़ भी नहीं सका। काफी दिनों तक परिवारवाले उसका बोझ उठाते रहे, लेकिन परिवारवालों का ताना सुनकर एक दिन वह शहर की ओर भाग आया और उसने बड़ी हिम्मत करके रिक्शा चलाना शुरू कर दिया। पहले तो हैंडिल को बैलेंस करने में उसका एक हाथ कांपता था, लेकिन बाद में वह एकदम सही तरीके से रिक्शा चलाने लगा। अब वह रुपये कमाकर अपने गांव भी भेजता है।

बनारस की जामभरी सड़कों पर रिक्शा चलना क्या पैदल चलना भी मुश्किल होता है, ऐसे में हरीराम एक हाथ से सड़कों पर रिक्शा चलाकर एक मिसाल ही कायम कर रहा है।

—राधे श्याम कमल

ज्ञान गंगा

कन्यादात्रे तु ह्यधनं दस्यवे सधनं नरम्।
गुप्तं जिघांसवे नैव विज्ञातमपि दर्शयेत्॥

(शुक्रनीतिः ३/१०१)

— जानकर भी कभी कन्या देनेवाले को 'तुम्हारा यह जामाता (दामाद) दरिद्र है, तथा डाकू को 'यह धनी है' एवं मारनेवाले को 'यह यहां मारे जाने के भय से छिपा हुआ है' नहीं कहना चाहिए।

संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्राभार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

(मनुस्मृतिः ३/६०)

— जिस कुल में पत्नी से पति और पति से पत्नी सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल का निश्चित कल्याण होता है।

अलेख्यमाज्ञापयति ह्यलेख्यं यत्करोति यः।
राजकृत्यमुभौ चोरौ तौ भृत्यनृपती सदा॥

(शुक्रनीति २/२९.२)

— जो राजा बिना लिखे आज्ञा देता है और जो भृत्य बिना लिखित राजाज्ञा के अनुसार राजकार्य करता है, वे दोनों (राजा और भृत्य) चोर हैं, अर्थात् अनुचित करनेवाले निंदनीय हैं।

(प्रस्तुतिः महर्षिकुमार पांडेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष : २८, अंक ७
मई, १९८८

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

रतनलाल जोशी
सीता-निर्वासन : रामचरित्र को कलंकित करने का षड्यंत्र २३

डॉ. रमानाथ त्रिपाठी
सीता की अग्नि-परीक्षा का प्रसंग भी क्षेपक है ! २८

ब्रजनारायण अग्रवाल
कौन तोड़ रहा है युवा मन की आकांक्षाएं ? ३२

रघुकुल तिलक
सांप्रदायिक वैमनस्य : क्यों और कब तक ३५

डॉ. धर्मवीर भारती
सम्मान पका हुआ फल है ४२

रेखा रस्तोगी
वृक्ष : जिसकी छाया में गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ ६३

डॉ. परमानंद पांचाल
सरमद, जो औरंगजेब के हाथों शहीद हुए ..... [illegible]

फारुक आफरीदी
रूठी भटियाणी रानी उमादे आजीवन नहीं झुकी ..... [illegible]

डॉ. रमेश कुमार त्रिपाठी
संसार का अस्तित्व निरर्थक है ! ..... [illegible]

मुकुन्द दास
आखिर वह रहस्य क्या था ? ..... [illegible]

मनि किशनलाल
क्या मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व है ? ..... [illegible]

अशोक श्रीवास्तव 'अंजान'
शास्त्र और विज्ञान में सूर्य की महिमा ..... [illegible]

भगवती प्रसाद डोभाल
घर-घर बिजली पहुंचाए सूरज ..... [illegible]

अली सरदार जाफरी
मैं अपनी जिंदगी इनसान की खोज में बिता रहा हूं ..... [illegible]

डॉ. राजेन्द्र रंजन
लोक-संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया ..... [illegible]

स्थायी-स्तंभ

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए ... ६, समस्यापूर्ति ... ७, प्रतिक्रियाएं ... ८, आस्था के आयाम ... १३, ज्ञान-गंगा ... १५, कालचिंतन ... १८, समय के हस्ताक्षर ... २१, पैनी नजर (कारटून) ३० हंसिकाएं ..... १० सीपिकाएं ..... ५९, विधि-विधान ... ६०, वचनवीथी ... १११, बुद्धि-विलास ... १२१, आइए चलें जंगल की ओर ... १२६, इनके भी बयां जुदा-जुदा ... १५४, वैद्य की सलाह ... १५६, ज्योतिष समस्या और समाधान ... १६४,

आवरण : प्रमोद भानु शाली (युवती)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

राम गोपाल बंसल
कहां है प्राचीन त्रिगर्त ९४

शांति लाल जैन
सफरनामा भारतीय ट्रेड यूनियन आंदोलन का १०१

ब्योहार राजेन्द्र सिंह
मैंने मौत को कई बार पास से गुजरते हुए देखा १०८

डॉ. भालचंद्र तिवारी
कहाँ सीमुर्ग प्रदेश ही तो बैकुंठ धाम नहीं है ? ११६

सुखबीर
सट्टा बाजार : कलाकृतियों का १२२

कृष्ण प्रकाश त्रिपाठी
हमारे खगोलीय तीर्थ १२८

कहानियां, हास्य-व्यंग्य एवं संस्मरण

विमल मित्र
एक टैलिग्राम ४८

गीता पुष्प शॉ
बहुत पछताये बॉस से दोस्ती करके १४२

निवेदिता बुढलाकोटी
टुकड़ों बंटी धूप ८१

चन्द्रमौली
नीले रंग की साड़ी ११२

कविताएं

दिविक रमेश
जल : एक छाया चित्र १३८

ऊषा भसीन
विवेक

गिरीश चंद्र माथुर
कलम १४५

मनजीत टिवाणा
दीवार, तैराक,

रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'
नदी १५५

जगदीश गुप्त
तीन कविताएं ८९

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक
कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१
वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

एक पाठक की जिज्ञासा : 'अमोघ शक्ति और दीर्घ-जीवन का रहस्य ?'

□

—युगों और सदियों के स्रोत सतत निरंतरता में व्याप्त हैं।

—निरंतरता ही उनकी शक्ति है। उसे विच्छिन्न कर दें तो शक्तियों के स्रोत सूख जाएंगे।

—सूखी हुई नदी मात्र अपनी संज्ञा का परिचय देती है और किसी याचक की तरह तरसती-तड़फती है। नदी का वैभव उसके सूखेपन में नहीं है।

—रिक्त पात्र हर हथेली और हाथ का खिलौना है। वह सार्थक तभी बनता है जब रिक्त न हो। पात्र भरा होगा तो अर्थवत्ता से जुड़ा रहेगा। पात्र की पहचान उसकी भीतरी संपन्नता पर निर्भर है, अन्यथा वह हीरों से जड़ा हो या सोने से आवृत्त, आखिर है क्या— मात्र दर्शन और अपने खोखलेपन के कारण दूसरों का क्रिया-केंद्र।

—बांबी में सर्प हो तो वह चेतना है। रिक्त बांबी मात्र दर्शन है।

—शक्ति के अनेक केंद्र हैं। वह लघुतम से लेकर विशालतम में विभाजित है।

—दुर्गम पर्वत का एक छोटा-सा गड्ढा भी महाशक्ति का केंद्र हो सकता है और विशाल जलाशय से भरा तालाब मात्र सौंदर्य-चेतना का प्रतीक ही समझा जाएगा।

—प्रकृति से पुरुष तक शक्ति-संतुलन के अपरिमित द्वार खुले पड़े हैं।

—प्रकृति एक नादान बालक की तरह खेलती है तो संपन्न युवक की तरह वैभव के ताजमहल भी खड़ा करती है। दोनों स्थितियों में उसका मूलाधार शक्ति है।

—शक्ति-क्षीण होना पराजय का अंतिम चरण है।

—लेकिन दुख का अत्यंत विच्छेद मुक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—पराजित की मुक्ति और गतिशीलता के शालवन कभी एक नहीं हो सकते ।

□

—पुरुष की शक्ति प्रकृति की प्राणवान ऊर्जा से उद्भूत हुई है ।

—प्रकृति को पुरुष ने आदि बिंदु के रूप में स्वीकार किया है; रेखाएं उसने स्वयं बनायी हैं । रेखाओं को चित्रात्मकता पुरुष ने ही दी है ।

—इस प्रक्रिया में कई बार इतना परिवर्तन हुआ है कि आदि बिंदु का अस्तित्व शोधकर्त्ताओं के लिए रह गया है ।

—कितना भी कमजोर हो कोई पुरुष उसमें कोई न कोई ऊर्जा तो होती ही है ।

—संपूर्ण ऊर्जा-हीनता निष्क्रियता का अंतिम द्वार है, जिसे सार्थक बोध में शव कहा जाता है ।

—शव सुरक्षा के लिए नहीं है इसलिए उसे या तो अग्नि के हवाले कर दिया जाता है, या धरती का वह भोज्य बनता है; कई बार गिद्धों और बाजों का भक्षण है वह और कभी प्रयोगशाला का अस्तित्व ।

—पुरुष की ऊर्जा कितनी भी बलवती हो, वह वायु के साथ उसी तरह जुड़ी है, जैसे अजगर किसी वृक्ष को बांध लेता है या बंध जाता है ।

—वायु शून्य ही ऊर्जा-हीनता है ।

—दुनियां के भीषण वाहनों को वायु ही सम्हाले हैं ।

□

—यहां आकर एक निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है :

- शक्ति अणु और परामाणुओं

—जैसे लघुतम केंद्रों से उद्भूत है ।

- शक्ति का अस्तित्व चैतन्य है ।
- शक्ति सीमित भले प्रतीत हो, वह असीम है ।
- शक्ति-पुरुष की हो या प्रकृति की उसका उदय असीम अनंत आकाश के नीचे चादर-सी फैली पृथ्वी के गर्भ से है ।

—अर्थात् शक्ति का सामर्थ्यवान केंद्र पृथ्वी है ।

—धरा के बीज-बिंदु से ही पुरुष और प्रकृति दोनों ने स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण किया है।

—आकाश गंगा की खोज करनेवाले स्वर्णमृग को ढूंढ़ रहे हैं।

—विज्ञान अपनी उपलब्धि का प्रचार कितना भी करे, अनंत आकाश में ग्रह-नक्षत्रों की खोज अंततः एक रिक्तता में ही समाप्त होगी।

—आकाश की कुछ सीमा तक उपकरण छोड़े जा सकते हैं या स्थिर किये जा सकते हैं, अंततः उन्हें अनवरत धरा खींचेगी और वे धरा के अनुचर ही सिद्ध होंगे।

—जो परिदृष्य है, उससे ही स्पष्ट है कि सभी कुछ धरा को वैभवमय करने के लिए किया जा रहा है।

□

—आकाश यदि अनंत है, तो वह अस्तित्व हीन है।

—शून्य का स्व-अर्थ नहीं होता, उसे अर्थवान बनाया जाता है।

—आकाश अर्थहीन है, शून्य और संज्ञा हीन है।

—धरा सामर्थ्यमयी चेतना है। उसके गर्भ में अपार संपत्ति है।

—भ्रमित शून्य में जाने के लिए मेरुदंड का काम पृथ्वी करती है।

—पृथ्वी अनश्वर है। कहीं कुछ कटे तो गर्भ से बहुत कुछ उभरता भी है।

□

—इसलिए दीर्घ जीवन का रहस्य धरा है, धरा को इसीलिए पृथ्वी कहा जाता है : जो प्रथक्नीय न हो।

—अमोघ शक्ति और ऊर्जा भी पृथ्वी से मिलती है।

—पुरुष की समीपता पृथ्वी से जितनी गहरी होगी उतनी ही उसकी प्राण-वायु और घ्राणशक्ति का विस्तार होगा।

—यही विस्तार अमोघ-शक्ति है।

—यही विस्तार दीर्घ-जीवन है।

—रहस्य अन्यत्र नहीं है, न वह अमरबेल में लिपटा है और न अमलताश में फूला है।

—संभवतः पृथ्वी पूजन का विधान यहीं से उपजा है। पृथ्वी को भोग्या इसीलिए कहा है, सामर्थ्य की सीमा यहीं निश्चित की गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय के हस्ताक्षर

'कादम्बिनी' के इस अंक से पाठक कई परिवर्तन पाएंगे। रूप, साज और सज्जा में सुधार किया ही जा रहा है, सामग्री का चयन भी अधिक सावधानी पूर्वक किया गया है। 'कादम्बिनी' को हर वर्ग के पाठकों के योग्य अनुकूल बनाना हमारा प्रयत्न होगा। इस दृष्टि से दो पृष्ठों के कार्टून का एक नया स्तंभ इसी अंक से शुरू किया गया है। हिंदी और भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ लेखकों की रचनाएं विशेष रूप से हमने अपने पाठकों के लिए मंगवायी हैं। रचनाओं में विविधता है—इतिहास, पुरातत्व, दर्शनीय स्थानों से लेकर साहित्य के विभिन्न अंगों और उपांगों पर विद्वानों की पठनीय रचनाएं हैं।

दूरदर्शन में प्रसारित किया जा रहा 'रामायण' सीरियल लोकप्रिय है, इसमें संदेह नहीं है। लोकप्रियता को देखते हुए उसके २६ से अधिक अंश और बढ़ाये जा रहे हैं। रावण-वध और राम राज्याभिषेक के बाद रामचरित के अनेक प्रसंग क्षेपक के रूप में हैं और परंपराओं से चली आ रही लोक-वार्त्ताओं तथा लोक-कथाओं पर आधारित हैं। इस स्थिति में रामानंद सागर २६ अंशों को किन-किन रूपों में विस्तार देते हैं, यह सोचना कठिन है। एक बात अवश्य है कि किसी भी देश की संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए उन महापुरुषों पर गलत आक्षेप नहीं लगाये जाने चाहिए, जो संस्कृति के सबल प्रतीक हैं। यदि उनके चरित्रों में ही संदेह किया जाने लगे, तो शेष क्या रहेगा। दुनिया भर के प्राचीनतम देशों में महापुरुषों की मर्यादा अक्षुण्ण रखी गयी है। राम हमारे देश के ऐसे ही चरित्र हैं, जिन्होंने न केवल इस देश की भूखी और गरीब जनता को संबल दिया है, विदेशों में बसनेवाले भारतीयों को जीने की प्रेरणा भी दी है। मारीशस, सूरिनाम, फिजी और अफरीका के अनेक ऐसे

मई, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश हैं, जहां भारतवंशी 'रामचरित मानस' का गुटका और 'हनुमान चालीसा' लेकर गये थे। उन्हें अंगरेज, फ्रांसीसी और पुर्तगालियों के बर्बरतापूर्ण व्यवहार का शिकार होना पड़ा था। खून-पसीना एक कर आज वे भारत से ज्यादा संपन्न और सुखी हैं और इसका श्रेय श्रीराम के कठिन और कर्त्तव्यसाध्य चरित्र को देते हैं। मारीशस में तो लिखा ही है :

रामा सब सुख देहु
रामा सब दुख हर लेहु।

ऐसे रामचरित्र को व्यवसाय के नाम पर कलंकित न किया जाए, इसके लिए हमने दो— विद्वानों के लेख विशेष रूप से इस अंक में प्रकाशित किये हैं। इन लेखों से स्पष्ट हो जाएगा कि वास्तविक रामकथा का मूल और अंत क्या है। उसे क्षेपकों के सहारे आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। हम आशा करते हैं कि रामानंद सागर और दूरदर्शन के अधिकारी इस मामले में बुद्धि से काम लेंगे, ताकि आज जिस लोकप्रियता के साथ यह सीरियल आगे बढ़ा है, वह विवाद का विषय न बने।

इस अंक के बाद कादम्बिनी के प्रत्येक अंक में कुछ न कुछ परिवर्तन आपको देखने को मिलेंगे। अगला अंक 'पर्यटन विशेषांक' है। इस अंक की मूल भावना यहां के दर्शनीय या धार्मिक स्थानों की चर्चा नहीं है, बल्कि उन स्थानों के बारे में पूरी जानकारी देना है, जहां हमारे पाठक गरमियों के दिनों में जा सकते हैं। प्रयत्न हमने किया है कि यथासंभव पूरी सूचना दी जा सके। हमें विश्वास है वह अंक पाठकों को रुचिकर ही नहीं लगेगा, उपयोगी भी सिद्ध होगा।

'कादम्बिनी' का एक पाठक वर्ग है और इस प्रसन्नता इस बात की है कि पत्र-पत्रिकाओं की भीड़ में इसकी पहचान अलग बनी हुई है। जो सचमुच बौद्धिक भोजन चाहते हैं, वे किसी और पत्रिका को पढ़ना पसंद नहीं करेंगे। यह देखते हुए पाठकों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि 'कादम्बिनी' में उन्हें और क्या चाहिए, वे लिखें। ऐसे पत्र यदि संपादक के निजी नाम पर लिखे जाएं, तो सुविधा होगी। वैसे अपनी ओर से भी हम कुछ और नये स्तंभ तथा पठनीय सामग्री जोड़ रहे हैं। फिल्म का एक विशेष स्तंभ शीघ्र ही पाठकों के सामने आएगा, जो आम पत्र-पत्रिकाओं में छपनेवाले स्तंभों से एकदम भिन्न होगा। उससे भारतीय फिल्म-उद्योग की एक झांकी सामने आएगी और उन व्यक्तियों के जीवन के अंतरंग सत्य पढ़ने को मिलेंगे, जो आज के भारतीय फिल्म-उद्योग के आधार स्तंभ हैं।

युवा पाठकों और ग्रामीण पाठकों की ओर भी ध्यान दिया जाएगा, ताकि उनकी भावनाएं भी हमारे साथ बने। उनकी समस्याएं सामने आएं और विचार का अवसर मिले।

राजनीति को भी 'कादम्बिनी' से दूर रखने का इरादा नहीं है। लेकिन संतुलित ढंग से आज के राजनैतिक वातावरण और व्यक्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न करेंगे। कुल मिलाकर हमारा प्रयत्न होगा कि 'कादम्बिनी' एक संपूर्ण पत्रिका के रूप में आपके सामने और निखरकर आये। अगले अंक से 'समय के हस्ताक्षर' के अंतर्गत ही एक मौलिक और व्यंग्यात्मक स्तंभ का आरंभ करने जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता-निर्वासन : रामचरित्र को कलंकित करने का षड्यंत्र

● रतनलाल जोशी

वाल्मीकि रामायण का वर्तमान रूप विद्वानों की कसौटी पर विवाद का विषय है। रामायण का मौलिक स्वरूप यह नहीं था, महाभारत एवं पुराणों की तरह इसके अंग-प्रत्यंग में भी बहुत-कुछ जुड़ता चला गया। फलतः वाल्मीकि ने जिस उद्देश्य से रामायण लिखी उस उद्देश्य पर ही आज कई प्रश्नचिह्न लगे प्रतीत होते हैं। मूल कथा को अपने-अपने कथा-प्रसंगों से अलंकृत करने के मोह में बाद के कवियों ने वाल्मीकि के चरित्रादर्श राम को भांति-भांति के आक्षेपों का लक्ष्य बना दिया है। ऋषि-ऋण चुकाने की इस रीति-नीति को कृतघ्नता का नाम दिया जाए तो अनौचित्य नहीं होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रामायण' के प्रणेता वाल्मीकि मुनि कर्विमनीषी थे। प्रसिद्ध है कि नारद से उन्होंने जिज्ञासा की थी कि मुझे वह महापुरुष बताइए जो चरित्र-युक्त हो— **'चारित्र्येण च को युक्तः १'** उत्तर में नारद ने उन्हें राम का परिचय दिया था। वाल्मीकि ने इन्हीं राम को अपनी मनोभूमि में उतारकर मानव-समाज को शाश्वत-सनातन चरित्रादर्श के दर्शन कराये हैं। अपने महाकाव्य में वाल्मीकि ने राम को सर्वत्र 'मूर्तिमंत धर्म' कहा है— **'रामो विग्रहवान् धर्मः।'** अपने रामचरित में वाल्मीकि ने सर्वत्र गद्गद् भाव से राम के गुणों की महिमा गायी है— उनके राम जीवन के सभी श्रेष्ठ संस्कारों की अभिव्यक्ति हैं। आदर्श पुत्र, भाई और मित्र के साथ वे आदर्श पति भी हैं। सीता के साथ राम सदैव अभिन्न रहे, अनन्य रहे— **'अनन्या हि मया सीता'** वाल्मीकि का काव्य आद्योपांत इस तथ्य से मुखरित है। सीताहरण के बाद सीता के विछोह में राम ने जो मर्मांतक पीड़ा सही, उसकी एक झलक हनुमान ने अशोक वाटिका में बंदी सीता को देते हुए कहा था—

अनिद्रः सततं रामः सुप्तोऽपि च नरोत्तमः
सीतेति मधुरां वाणीं व्याहरन् प्रतिबुध्यते।

—सुंदरकांड ३६, ४४

—हे माता, आपके विरह में राम को न तो खाने-पीने की सुध-बुध रहती है और न उनको नींद ही आती है। और, यदि कभी पलक झपक भी जाते हैं तो वे 'सीता', 'सीता' की रट लगाते उठ बैठते हैं। आपके बिना राम को एक क्षण भी कल्प-सम बीतता है।

वाल्मीकि द्वारा वर्णित सीता-राम के दाम्पत्य-प्रेम को तुलसी ने अपने 'रामचरित मानस' में श्रद्धा-भक्ति के साथ यों प्रणाम किया है—

गिरा-अरथ जल-बीचि सम
कहिअत भिन्न न भिन्न!

महामहोपाध्याय स्वामी भगवदाचार्य ने वाल्मीकि रामायण पर अभी कुछ वर्ष पूर्व अपनी शोधपूर्ण स्थापनाएं प्रकाशित करवाई हैं। उनकी मान्यता है कि रामायण के कई प्रचलित संस्करणों में सीता की अग्निपरीक्षा के समय जो दुर्वाक्य राम के मुख से कहलाये हैं वे वाल्मीकि के चरित्रादर्श से मेल नहीं खाते। किसी ने राम एवं सीता के चरित्र को मलिन-पंकिल करने के उद्देश्य से रामायण के मूल पाठ के साथ यह कुत्सित प्रसंग जोड़ दिया है। अग्निपरीक्षा का राम-सीता-संवाद वाल्मीकि के **'चारित्र्येण च को युक्तः'** तत्व-दर्शन के साथ न्याय नहीं करता। यहां वाल्मीकि अपने लक्ष्य से च्युत प्रतीत होते हैं। जिस **'जितक्रोधो द्युतिमान कोऽनसूयकः'** अर्थात् 'क्रोधजयी, उज्ज्वलमना एवं अनिंदक' राम की खोज में वे तपोरत थे, वह राम अपनी सती-साध्वी पत्नी को ऐसी अभद्रता से दुत्कारें, भगवदाचार्य जी इसे वाल्मीकि की वाणी नहीं मानते। अतः उन्होंने अपनी संशोधित वाल्मीकीय रामायण में से अग्निपरीक्षा का प्रसंग ही निकाल दिया है। तुलसीदासजी ने भी अपने 'रामचरितमानस' में मायावी सीता का ही अग्निपरीक्षण करवाया है, असली सीता तो पहले ही अग्नि में गुप्तवास के लिए चली गयी थी। 'मानस' के अरण्यकांड में तुलसी ने राम सीता से कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में रामायण युद्ध कांड की 'इति' पर ही समाप्त हो जाती है। युद्ध कांड के १०६वें सर्ग में वाल्मीकि ने भी कथा का समापन करते हुए लिखा है कि राम ने अपने भ्राताओं सहित अनेक वर्षों तक सुख पूर्वक राज्य किया। सीता निर्वासन का प्रसंग कहीं उठता ही नहीं। महान ग्रंथों के साथ दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा रही है कि उनमें क्षेपक जोड़कर कई लोगों ने अपने विचारों को मूल लेखक का कह कर प्रसन्नता का अनुभव किया है।

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला,
मैं कछु करबि ललित नर लीला;
तुम्ह पावक महुं करहु निवासा।
जौं लगि करौं निसाचर नासा।

अध्यात्म रामायण में भी सीता की छाया-मूर्ति ने ही अग्नि में प्रवेश किया था। तमिल के महाकवि कंबन ने भी अपने रामायण महाकाव्य में सीता की अग्निपरीक्षा के प्रसंग को वाल्मीकि के दोष-परिहार के ही रूप में व्यक्त किया है। सीता के सतीत्व पर लांछन से वे विचलित हो उठते हैं।

राम कथा के स्रोतों के रूप में वाल्मीकीय रामायण अध्यात्म रामायण, कंबन रामायण और तुलसीकृत रामचरितमानस ही सर्वोपरि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इनमें वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है। किंतु उसमें कवियों-कथावाचकों एवं मत-मतान्तर के विरोधियों-समर्थकों के इतने हस्तक्षेप हुए हैं कि आज उसकी कथावस्तु में असली-नकली का भेद करना कठिन हो गया है।

जरमनी के भारतविद्याविद् प्रो. याकोबी वाल्मीकि रामायण में उत्तरकांड और बालकांड को बाद का लिखा हुआ मानते हैं। अधिकांश भारतीय विद्वानों का भी ऐसा ही मत है। प्रो. याकोबी की भांति वे भी मूल रामायण को अयोध्याकांड से लेकर युद्ध कांड तक ही वाल्मीकि द्वारा लिखित बताते हैं। कुछ शोधकर्ता बालकांड के कतिपय प्रक्षिप्त अंशों को निकाल देने के बाद उसे तो वाल्मीकि की कृति मान लेते हैं, किंतु उत्तरकांड को वे मूल रामायण का अंश स्वीकार करने के पक्ष में कतई नहीं हैं। क्योंकि इसमें कुछ ऐसी कथाएं आयी हैं जो अन्य प्राचीन ग्रंथों में नहीं मिलतीं। स्वयं वाल्मीकि रामायण के बालकांड के प्रथम सर्ग में रामकथा की जो विषय-सूची दी गयी है उसमें भी उत्तरकांड में वर्णित घटनाओं का उल्लेख नहीं है। युद्धकांड में ही रामकथा को समाप्त कर दिया गया है। सीता-निर्वासन उत्तरकांड की मूल कथा है। अध्यात्म रामायण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

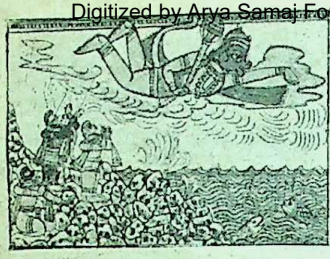

तुलसीदास-विरचित 'रामचरित मानस' एवं कंबन-प्रणीत तमिल रामायण में भी मूल वाल्मीकि रामायण के अनुकरण पर अयोध्या में राम-राज्याभिषेक तथा रामराज्य की स्थापना पर रामकथा को समाप्त कर दिया गया है। सीता के निर्वासन को सुप्रख्यात आधुनिक तमिल रामायण के लेखक चक्रवर्ति राजगोपालाचारी भी वाल्मीकि के रामचरित्रादर्श की कसौटी पर असंगत घटना मानते हैं। अपनी रामकथा 'दशरथ-नंदन श्रीराम' के कथानक में उन्होंने इसे सम्मिलित नहीं किया है। वे इसे प्रक्षिप्त प्रमाणित करते हैं। वास्तव में, क्या यह आश्चर्य एवं दुःख की बात नहीं है कि जिस कविर्मनीषी वाल्मीकि ने गुण-वैष्ट्रिय की एक-एक स्वर्ण-किरण जोड़कर राम के पुरुषोत्तम-व्यक्तित्व को ज्योतिर्मय सूर्य के रूप में मानव-मार्ग-प्रकाशनार्थ उदित किया, वही वाल्मीकि सीता-निर्वासन— जैसे लांछन से उसे राहुग्रस्त करने की दुष्चेष्टा भी करें? **''चारित्रेण च को युक्तः'** के ऊर्ध्वारोहण का क्या यही अंतिम सोपान हो सकता है? रामराज्य की सार्थकता भी इससे उज्ज्वल नहीं, धूमिल ही होती है। रावण-वध के पश्चात् सीता की निर्मलता में अडिग प्रतीति होते हुए भी लोकापवाद से मुक्त होने के उद्देश्य से राम ने सीता की अग्निपरीक्षा करवायी। तदुपरान्त अग्निदेव से सीता को ग्रहण करते हुए राम ने कहा था—

अनन्य हृदयां सीता मच्चिपरिरक्षिणीम्
अहमप्यवगच्छामि मैथिलीं जनकात्मजाम्

o o o o o

नेयमर्हति वैक्लव्य रावणान्तःपुरे सती
अनन्या हि मया सीता
भास्करस्या प्रभा यथा !
विशुद्धा त्रिषुलोकेषु मैथिली जनकात्मजा
न विहातु मया शक्या कीर्तिरात्मवता यथा

—मैं जानता हूं कि सीता मेरे प्रति अनन्य हृदया है, मेरे अनुसार ही उनकी गति-मति है। सती-साध्वी सीता रावण के अंतःपुर में रहते हुए भी विचलित नहीं हो सकती थी, क्योंकि वे सूर्य की प्रभा के समान मुझसे अभिन्न हैं। जनकात्मजा सीता तीनों लोकों में परम पवित्र हैं। अतः जिस प्रकार मनस्वी पुरुष कीर्ति का त्याग नहीं करते, उसी प्रकार मैं भी सीता का परित्याग नहीं कर सकता।

अग्निपरीक्षा के उपरांत राम ने सीता के पातिव्रत में अपना यह दृढ़ विश्वास शिव, ब्रह्मा, इंद्र समेत समस्त देवगण, ऋषिमुनियों एवं सुग्रीव, विभीषण आदि सभी बानर-सेनाध्यक्षों के सम्मुख व्यक्त किया था। स्वर्ग से राजा दशरथ ने भी आकर राम-सीता को आशीर्वाद देकर सीता के निर्मल चरित्र की प्रशंसा की थी।

सीता और लक्ष्मण के साथ राम अयोध्या आये, उनका राज्याभिषेक हुआ। रामराज्य की स्थापना हुई। राम की प्रजावत्सलता का यशो-सौरभ दिग्-दिगंत में व्याप्त हो गया। वर्षों तक राम-सीता का प्रेम-पगा दाम्पत्य निर्विघ्न सुख के साथ बीता। सीता गर्भवती भी हुईं। इस दीर्घ काल-अवधि के बाद फिर क्यों राम ने

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन को तथाकथित लोकापवाद ने व्यथित किया ! अग्निपरीक्षा के बाद लोकापवाद कहां रह गया था ? स्वयं राम के सम्मुख अग्निपरीक्षा हुई थी, राम ने अपने विश्वास की भी सबके सामने पुष्टि की थी । फिर दृढ़संकल्पी राम की प्रणय-प्रतीति-ग्रंथि अचानक क्यों तार-तार बिखर गयी ? वाल्मीकि ने राम के तेजस्वी स्वभाव की विशेषता बताते हुए कहा है—

द्विस्परं नाभिसंधत्ते
द्विस्सृथापयति नाश्रितान्
द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो
रामोद्विर्नाभिभाषते !

—राम लक्ष्य-वेध के लिए दो बार धनुष पर तीर नहीं चढ़ाते । अपने आश्रितों को अन्य आश्रय में जाने का विकल्प नहीं देते । याचकों को दोबारा मांगने की विवशता नहीं आने देते । राम दो बार वचन नहीं देते, एक बार जो वचन दे दिया उसका पूरा पालन हो जाता है ।

अतः उत्तरकांड में वर्णित सीता-निर्वासन का प्रसंग न तो राम के उदात व्यक्तित्व के अनुरूप गौरव-गाथा है और न वाल्मीकि की रामकथा के साथ उसकी कोई औचित्यपूर्ण प्रासंगिकता ही सम्भव हो सकती है ! रामायण-प्रणयन के बाद के काल-प्रवाह में सामाजिक-राजनीतिक-धार्मिक अंतर्द्वंद्वों, महत्वाकांक्षा के संघर्षों तथा जातिगत स्पर्धाओं ने मूल वाल्मीकीय रामकथा को भी अपने उद्देश्य की सिद्धि का निमित्त बनाया है । फलतः कथाप्रवाह में कई क्षेपक जुड़ते चले गये और 'उत्तर-रामायण' के रूप में उत्तरकांड भी 'पाट में टट' के पैबंद की तरह संलग्न हो गया ।

वस्तुतः रामायण युद्धकांड की 'इति' पर ही

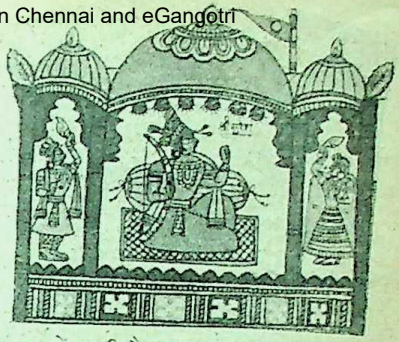

समाप्त हो जाती है । युद्धकांड के १०६-वें सर्ग में वाल्मीकि कथा का समापन करते हुए लिखते हैं—

दशवर्ष सहस्राणि, दशवर्ष शतानि च
भ्रातृभिः सहितः
श्रीमान् रामो राज्यमकारयत् ।

अर्थात— इस प्रकार अयोध्या में राज्यारोहण के पश्चात राम ने अपने भाइयों के साथ ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य किया ।

इसके पश्चात् रामायण-पाठ की फलश्रुति १२८-वें सर्ग तक चल कर यह आशीर्वाद-आश्वासन देते हुए समाप्त हो जाती है—

आयुष्यमारोग्यकरं यशस्यं
सौभ्रातृकं बुद्धिकरं शुभंच
श्रोतव्ययेतन्नियमेन सद्भि-
राख्यानमोजस्करमृद्धिकामैः ।

अर्थात— यह रामायण महाकाव्य आयु, आरोग्य, यश और भ्रातृ-प्रेम को बढ़ाने वाला है । यह निर्मल बुद्धि और मांगल्य का दाता है, सुख, समृद्धि की कामना वालों को चाहिए कि उत्साह का वर्धन करनेवाली इस कथा का नियमपूर्वक श्रवण करें ।

१२, फीरोज गांधी मार्ग, लाजपतनगर-३
, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता की अग्नि परीक्षा का प्रसंग भी क्षेपक है !

डॉ. रमानाथ त्रिपाठी

राम के चरित का ऐतिहासिक प्रमाण वाल्मीकि-रामायण ही है। इस ऐतिहासिक महाकाव्य में तथ्यों की गंगा-यमुनी धारा है। आरंभ में यह आदिकाव्य उन महामानव राम के महान कार्यों का वर्णन करता था, जिन्होंने अपने त्याग-बलिदान, पराक्रम और नैतिक आदर्शों के बल पर परिवार और समाज में मर्यादाएं बांधीं। कालांतर में वे महान से महानतर होते गये, वे पूर्ण पुरुष भगवान हो गये। अतः वे अंश उन उनका ब्रह्मत्व पूरी शक्ति से प्रतिपादित है कालांतर में विकसित हुआ प्रतीत होता है।

ऐसा ही एक प्रसंग सीता की अग्नि-परीक्षा का है।

इस प्रसंग के अनुसार अग्नि-परीक्षा के लिए लक्ष्मण ने अप्रसन्न मन चिता तैयार कर दी। सीता शपथ लेकर अग्नि में प्रवेश कर गयीं। उन्हें

सीता- निर्वासन का प्रसंग

राम का रूप विकृत करने के लिए आरोपित

राम अयोध्या लौटे, माता कैकेयी के प्रति उनका आचरण एक बार फिर उनकी उदारता का ही जय-घोष करता है। तदनन्तर उपस्थित होता है राम-कथा का करुणतम पृष्ठ— सीता-निर्वासन का प्रसंग। राम-राज्य में कुत्ते, गीध, उलूक तक को न्याय प्राप्त होता है, परन्तु सीता को नहीं। अग्नि-परीक्षा लेने के बाद भी राम उन्हें निर्वासन दे देते हैं यह प्रसंग राम का रूप विकृत करने के लिए बौद्धों द्वारा राम-कथा पर आरोपित किया गया। राम-कथा का आदि मूल आधार वाल्मीकि रामायण है, जिसमें राम के राज्याभिषेक के साथ ही ग्रन्थ की फलश्रुति कह दी गई है। फलश्रुति तो ग्रन्थ के अंत में ही होती है। सर्वप्रथम गुणाढ्य ने अपनी बड्डुकथा में इस प्रसंग की अवतारणा की है। नारद ने वाल्मीकि को राम-कथा की जो अनुक्रमणिका बतलायी है, उसमें भी सीता-निर्वासन का उल्लेख नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर हाहाकार मच गया। राम की आंखों में आंसू आ गये।

कुबेर, यमराज, इंद्र, वरुण, शिव, ब्रह्मा और दशरथ वहां आये। देवता बांह उठाकर बोले— "आप संपूर्ण विश्व के उत्पादक हैं— कर्ता सर्वस्य लोकस्य। आप सीता की उपेक्षा कैसे कर रहे हैं। ब्रह्मा ने भी उन्हें विष्णु बताकर उनका स्तवन किया। इस स्तवन की फलश्रुति बतायी गयी कि जो इसका श्रवण करेगा, उसका कभी पराभव नहीं होगा।

तभी अग्निदेव सीता को गोद में लेकर प्रकट हुए। वे बोले— सीता सर्वथा शुद्ध है। राम ने कहा— "लोगों में सीता की पवित्रता का विश्वास दिलाने के लिए परीक्षा आवश्यक थी, क्योंकि इस शुभा को दीर्घकाल तक रावण के अंतःपुर में रहना पड़ा था। परीक्षा न लेता तो लोग कहते कि राम मूर्ख और कामी है। जिस प्रकार समुद्र अपनी तटभूमि नहीं लांघ सकता, उसी प्रकार रावण इस पर अत्याचार नहीं कर सकता था। यह अपने ही तेज से सुरक्षित रही है। सूर्य के साथ जिस प्रकार प्रभा अभिन्न है, उसी प्रकार यह मुझसे अभिन्न है। यह तीनों लोकों में शुद्ध है, मैं इसे नहीं छोड़ सकता।

महादेव भी राम को ब्रह्म बता कर उन्हें अपने धाम लौटने के लिए कहते हैं। दशरथ उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

विद्वज्जन अग्नि परीक्षा को प्रक्षिप्त मानते हैं। राम सीता के प्रति कठोर वचन कहते हैं और अग्निपरीक्षा के बाद कहते हैं कि मुझे संदेह नहीं था, सीता तीनों लोकों में शुद्ध है।

'इस प्रकार का दिखावा समस्त वाल्मीकि रामायण की भावधारा के विरुद्ध है और अवतारवाद स्वीकार होने के पश्चात् ही सम्भव था।'— *श्री कामिल बुल्के, रामकथा, अनु. मई, १९८८, ५६५।*

इस प्रसंग के प्रक्षिप्त होने के कुछ और भी कारण हैं—

१. बालकांड के सर्ग एक और तीन में रामकथा की संक्षिप्त अनुक्रमणिका दी गयी है। प्रथम सर्ग वाली सूची में अग्निपरीक्षा है, तीसरे सर्गवाली सूची में नहीं। उत्तरकांड के सर्ग १२४ में भारद्वाज ने तपबल से रामकथा जानकर उसका जो वर्णन किया, उसमें यह प्रसंग नहीं है। इसी प्रकार सर्ग १२६ में हनुमान भरत को जो कथा सुनाते हैं, उसमें भी अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं है।

२. महाभारत का रामोपाख्यान पर्याप्त प्राचीन है। इसमें भी अग्नि-परीक्षा नहीं होती। सीता की शपथ और देवताओं की साक्षी से राम सीता को स्वीकार कर लेते हैं।

३. उत्तरकाण्ड में राम सीता की पवित्रता के लिए अग्नि परीक्षा का उल्लेख नहीं करते।

हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर छोड़, जो चाहो, सो लो...

तुम्हारे पति को छोड़ देंगे, बहन कुछ देर हमारे सिपाहियों को कसरत तो कर लेने दो

सुख के लिए...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

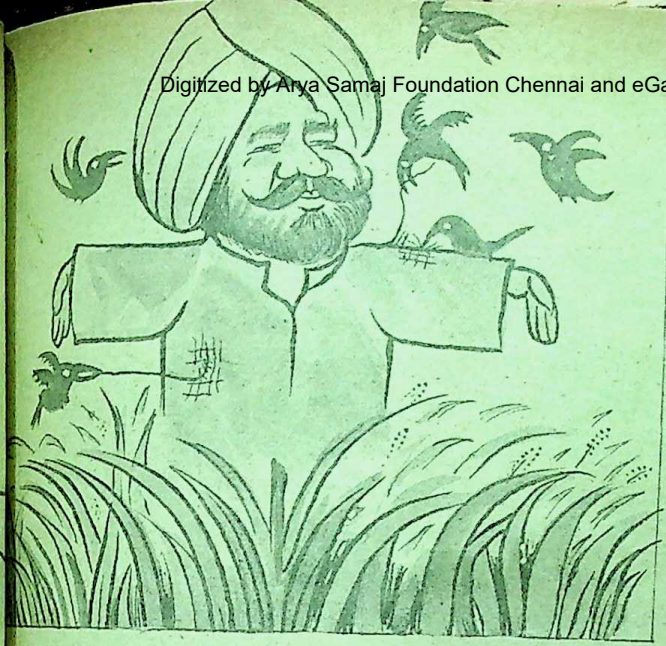

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरअसल स्वप्न देखने के लिए भी उचित वातावरण होना चाहिए, परिस्थितियां होनी चाहिएं। अच्छे स्वप्न तभी आकार लेते हैं, अन्यथा उन्हें 'दिवास्वप्न' कहकर लांछित कर दिया जाता जाता है। युवा पीढ़ी को अपने सपने बुनने की स्वतंत्रता ही कहां मिली है !

कौन तोड़ रहा है आकांक्षाएं युवा मन की ?

● ब्रजनारायण अग्रवाल

भरी दोपहर यदि सांझ बनकर ढल जाए, तो उसका दर्द बहुत गहरा होता है — सारी पहचान रात के अंधेरे में खो जाने की आशंका और फन उठाए कई सवाल तब पीढ़ियों के अंतर को लांघ जाते हैं। उस समय सिर्फ पीछे मुड़कर यह टटोलने की इच्छा होती है — यह कैसे हुआ ? किसने किया ? क्यों किया ?

भारत ही नहीं, पूरे विश्व में युवा पीढ़ी के तेवर तेजी से बदल रहे हैं। अतीत और वर्तमान जैसा भी है, भविष्य भी तो साफ नहीं है — बहुत ही ऊबड़-खाबड़, धुंधला और टूटता हुआ नजर आता है। इसकी कोख से कभी कुंठा और हताशा पैदा होती है, तो कभी सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देने वाली हिंसा। दोनों ही स्थितियां प्रौढ़ या बूढ़ी हो चुकी पीढ़ी को चौंकाती हैं, उनके माथे पर चिंता की गहरी लकीर खींच देती हैं।

विरासत में नया रास्ता ?

जो सामने है, उसे वैसा ही मान लिया जाए, तो शायद कोई समस्या पैदा न हो। लेकिन **अनुशासन** जब **अंधानुकरण** में बदलता है, तब समाज जड़ होने लगता है। इसलिए परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है ... जीवन की अनिवार्यता है। हर युवा मन जो है, उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग हट कर चलने के लिए मचलता है। बने-बनाए रास्ते पर चलने में सुविधा तो है, लेकिन रोमांच नहीं है, साहस भी नहीं है। इसीलिए हर नई पीढ़ी को विरासत में नया रास्ता चाहिए, नया रोमांच चाहिए, नयी पहचान चाहिए, नया साहस चाहिए और नया संकल्प चाहिए।

मुश्किल यह है कि नयी पीढ़ी को विरासत में वह नहीं मिलता, जो उसे चाहिए, जो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। दो महायुद्धों और उनके बाद प्रायः हर दिन छोटे-बड़े कई युद्धों की पीड़ा भुगतने के बाद दुनिया की यह आदत हो गयी है कि वह कहती कुछ है, करती कुछ है। 'कथनी और करनी' का यह अंतर अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के दायरे में ही रहता, तो शायद गनीमत होती।लेकिन यह तो जीवन के हर क्षेत्र में सुरसा के मुंह की तरह फैलता जा रहा है। शासन-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था, परिवार-व्यवस्था— सभी तो इसके चंगुल में फंसकर छटपटा रही हैं। दरअसल बुजुर्ग पीढ़ी के लोग युद्धों से जूझने में इस कदर व्यस्त हैं कि अपने से बाद आने वाली पीढ़ी को वे विरासत में सिर्फ स्थायी तनाव ही दे पाये हैं।

सपने बुनने की स्वतंत्रता ?

अपनी इस विवशता को समझ कर बुजुर्ग यदि युवा पीढ़ी को नया रास्ता चुनने की आजादी दे देते, तो स्थिति शायद ज्यादा अच्छी होती। भ्रष्ट और संवेदनाशून्य शासन-व्यवस्था, सड़ी-गली समाज-व्यवस्था तथा खोखली मर्यादाओं के नाम पर जड़ हो रही परिवार-व्यवस्था में कोई पीढ़ी आशा-आकांक्षाओं का नया आकाश भला कैसे रच सकती है। इसीलिए बहुत से लोग जब यह शिकायत करते हैं कि युवा पीढ़ी के स्वप्न टूट रहे हैं, तो हमारे लिए उनसे सहमत होना कठिन हो जाता है। दरअसल स्वप्न देखने के लिए भी उचित वातावरण होना चाहिए, परिस्थितियां होनी चाहिएं। अच्छे स्वप्न तभी आकार लेते हैं, अन्यथा उन्हें 'दिवास्वप्न' कहकर लांछित कर दिया जाता जाता है। युवा पीढ़ी को अपने सपने बुनने की स्वतंत्रता ही कहां मिली है !

इस सवाल को किसी 'वाद' से जोड़ने या खंड-खंड में बंटी दुनिया की भौगोलिक सीमाओं में समेटने की कोशिश हम नहीं करेंगे। यह सवाल पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ है, जो वैज्ञानिक प्रगति के कारण बहुत छोटी हो गई है। उत्तर हो या पूरब, दक्षिण हो या पश्चिम, सभी जगह तो युवा मन अशांत है, बुरी तरह टूटा हुआ है। जो देश विज्ञान और टेक्नालॉजी के शिखर पर चढ़कर भौतिक ऐश्वर्य और विलासिता में झूम रहे हैं, उनके युवक भी भारत जैसे 'पिछड़े' हुए देश में 'मंदिर-मंदिर, द्वारे-द्वारे' कुछ ढूंढ रहे हैं — वह जो उनके अपने देश में, अपने समाज में या अपने परिवार में खो गया है।

बीत गये हैं या रीत गये हैं

और भारत में ? लंबी गुलामी झेलने के बाद राजनीतिक आजादी मिले चालीस साल हो चुके हैं और युवा पीढ़ी यानी देश की तीन-चौथाई आबादी यह सवाल पूछ रही हैं — इतने साल बीत गये हैं या 'रीत' गए हैं ? कुछ बड़े शहरों को भूल जाइए।उनके बाहर फैले शेष ८० प्रतिशत भारत को देखिए — कहीं नजर नहीं आती समय के प्रवाह को अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुट्ठी में बंद रखनेवाली नयी पीढ़ी। भूख-गरीबी और सड़ी-गली व्यवस्था 'दोपहर' तो क्या, 'सुबह' को भी निगल जाती है। होटलों या चायघरों में जूंठी प्लेटों को साफ करते और चाटते हुए आठ साल के बच्चे की क्या कोई आकांक्षा हो सकती है? उसके हिस्से में आशाएं-आकांक्षाएं आती ही नहीं हैं। ये सब भविष्य की चीजें हैं। उसके हिस्से में सिर्फ चिंता होती है — भविष्य की नहीं, सिर्फ वर्तमान की। सवाल है कि ये लोग कहां जाएं? बहुत से लोग भारत छोड़कर जा तो रहे हैं, लेकिन अब वहां से खदेड़े भी जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में क्या हो?

दुनिया के दो हिस्सों पर नजर डालने के बाद आप क्या निष्कर्ष निकालेंगे? वामपंथी विचारधारा सारा दोष पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पर मढ़कर अपने हाथ झाड़ लेगी, लेकिन इधर सोवियत संघ और चीन दोनों में 'पूरी व्यवस्था को अधिकाधिक उदार' बनाने का जो दौर चल रहा है, उसका क्या कारण है? रोटी-रोजगार, कपड़ा-मकान मिलने पर भी वामपंथी देशों की युवा पीढ़ी बेचैन क्यों हो गयी है?

गहराई से सोचें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि व्यवस्था कैसी भी हो, वामपंथी हो या पूंजीवादी, लोकतांत्रिक हो या राजतांत्रिक, धार्मिक हो या धर्म-निरपेक्ष, उसकी बुनियाद में कोई जबरदस्त खोट आ गया है। विरासत में देने लायक उसके पास शायद कुछ बचा ही नहीं है।

राजनीति में तानाशाही

राजनीतिक व्यवस्थाएं चंद लोगों की तानाशाही में बदल गयी हैं। अमरीका में लोकतंत्र महंगा है तो भारत में वह 'भीड़तंत्र' में बदल गया है। कम्युनिस्ट शासन-व्यवस्था विश्वव्यापी समानता की बात करते-करते अब राष्ट्रीय सीमाओं में सिकुड़-सिमटकर दूसरे विकासशील देशों का शोषण करने में जुटे हुए हैं। मतलब यह है कि हर राजनीतिक व्यवस्था विषमता बढ़ा रही है। ऐसे में नयी पीढ़ी को अनुभवी पीढ़ी से विरासत में सभी 'वादों' के 'विवादों' से मुक्त कोई नयी राजनीतिक व्यवस्था चाहिए, जिसमें उदारता और मर्यादा दोनों हों। लेकिन यह है कहां?

धार्मिक या धर्म-निरपेक्ष दोनों व्यवस्थाएं पाखंड फैला रही हैं। पश्चिम एशिया, खासकर ईरान, इराक, लेबनान, इजरायल आदि देशों के युवा हाथों में धर्म के नाम पर जो घातक हथियार थमा दिये गये हैं, उसके लिए दोषी कौन है? ये हथियार युवा पीढ़ी ने अपने आप तो उठाये नहीं हैं! विरासत ने उन्हें सशस्त्र सैनिक नहीं, भाड़े के सैनिक बना दिया है। धर्म-निरपेक्ष भारत में पंजाब का नौजवान 'स्टेनगन' से खेल रहा है। दरअसल दुनिया का कोई भी धर्म घायल इंसान के घावों पर मरहम लगाने में समर्थ नहीं रहा। क्यों?

भविष्यवक्ताओं से केवल एक प्रश्न

भारत में परिवार-व्यवस्था तरह-तरह के बंधनों का प्रतीक बन गयी है। ऐसे में बेकार युवक पटरियों पर बैठने या अखबारों में छपनेवाले भविष्यवक्ताओं से सिर्फ एक सवाल पूछता नजर आता है — 'मेरा भविष्य क्या है? भटकन से मुझे कब मुक्ति मिलेगी? कब हल होंगे रोजी-रोटी के सवाल!'

—बी. टी. ४४, शालीमार बाग, दिल्ली-११००८८

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

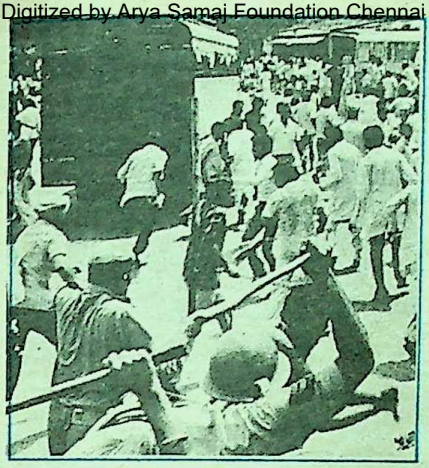

सांप्रदायिक वैमनस्य : क्यों और कब तक ?

● रघुकुल तिलक
भूतपूर्व राज्यपाल (राजस्थान)

ह सभी मानते हैं कि हिंदू-मुसलमानों का वर्तमान तनाव, जो कभी भी हिंसक दंगों के रूप में फूट पड़ता है, ब्रिटिश सरकार की देन है। दोनों संप्रदायों के बीच प्रशासन की सुविधा के लिए फूट डालने की नीति का प्रारंभ सन १९०९ में हुआ। ब्रिटिश सरकार की ओर से पहले तो मुसलमानों को पृथक निर्वाचन की मांग करने के लिए उकसाया गया और फिर इस मांग को विधान में स्वीकार कर लिया गया। इस नीति का परिपाक सन १९४७ में हुआ जब

हिंदू-मुसलिम संप्रदायों के बीच सद्भाव स्थापित करने का कार्य राजनेताओं पर नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि उनका प्रयत्न कभी-कभी हानिकर भी सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मों के आधार पर देश के टुकड़े कर दिये गये। परंतु, इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार की ओर से फूट डालने का एक और उपाय किया गया। वह यह था कि सरकारी इतिहासकारों और ईसाई पादरियों के द्वारा हमारे इतिहास को विकृत करके वास्तविक इतिहास के रूप में पेश किया गया। उसमें हिंदू धर्म को एक ऐसे संप्रदाय के रूप में पेश किया गया, जिसमें न केवल मूर्ति-पूजा होती है, बल्कि वृक्षों और पशुओं को भी पूजा जाता है, विधवाओं को जिंदा जला दिया जाता है और नवजात बच्चियों का वध कर दिया जाता है। हिंदुओं के सामने इस्लाम का जो रूप रखा गया, वह एक क्रूर और नृशंस जंगली जातियों के चाल-चलन का था, जिसमें तलवार द्वारा दूसरे लोगों को अपने धर्म में मिलाया गया और पृथ्वी के अनेक भागों में खून-खराबा किया गया।

यह सर्वथा झूठा चित्र नहीं है, परंतु इसमें कहीं-कहीं और कभी-कभी होनेवाली घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर सामान्य सत्य के रूप में पेश किया गया है, मानो इनके अतिरिक्त दोनों धर्मों में और कुछ है ही नहीं। प्रत्येक संप्रदाय और जाति में कुछ विश्वास और कुछ क्रियाएं ऐसी होती हैं, जो सतर्क और विवेकपूर्ण देखने पर असभ्य और अमानवीय प्रतीत होंगी। परंतु केवल इन्हीं को किसी धर्म की विशेषता मानकर पेश करना और जो उसके वास्तविक और उदात्त तत्व हैं, उनको दबा देना एक जघन्य अपराध है। दुर्भाग्यवश, यह अपराध हुआ और हम सभी इसके शिकार बन गये। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि हमने न केवल परस्पर संप्रदायों के बारे में गलत बातों पर विश्वास कर लिया, बल्कि स्वयं अपने इ[illegible] को भी भुला दिया।

तलवार के बल पर ही नहीं

मुस्लिम संप्रदाय को ही देखें। यदि [illegible] मुसलमानों को यह स्मरण होता कि पैग[illegible] निधन के बाद पहली सदी में ही इस्लाम [illegible] प्रायद्वीप से निकलकर ईरान और मध्य-[illegible] होता हुआ भारत तक पहुंच गया था, और [illegible] ही एक सरल धर्म और अनुशासित [illegible] प्रचार भी करता गया था, तो क्या वह पाकिस्तानवादियों के इस तर्क को स्वीकार [illegible] लेते कि जहां भी गैर-मुस्लिमों की अधिक[illegible] संख्या है, वहां रहने में खैरियत नहीं है। [illegible] उनको यह याद रहता कि अरब के लोग [illegible] झोपड़ियों से निकलकर स्पेन और इंडोने[illegible] तक फैल गये थे, तो क्या यहां के मुसल[illegible] केवल उन्हीं क्षेत्रों में सुरक्षा महसूस करते [illegible] उनकी बहुसंख्या है। मुसलमान अरब से निकलकर स्पेन और इंडोनेशिया तक फैले [illegible] इन देशों में एक उच्च संस्कृति और जीवन [illegible] का प्रचार किया, जिसमें यूनानी और भारतीय साहित्य और दर्शन के अनुवाद भी शामिल [illegible] क्या इस्लाम केवल तलवार के सहारे इतने [illegible] क्षेत्र में फैलकर इतने लंबे अरसे तक कायम [illegible] सकता था ?

जिस समय यूरोप में कट्टरपंथी ईसाई [illegible] लोगों को जीवित जला रहे थे, जो पोप द्वारा व्याख्यात धर्म के प्रति जरा भी शंका या [illegible] प्रगट करते थे, उस समय अधिकतर मुस्लिम शासक सांप्रदायिक अल्पसंख्यकों पर केवल जजिया नामक कर लगाकर उनकी पूरी [illegible] करने की व्यवस्था किया करते थे। यह [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक

...विदित है कि पैगंबर ने अपने अंतिम हज के ...वसर पर यह स्पष्ट कहा था कि सभी मनुष्य ...दम के औलाद हैं और अल्लाह की दृष्टि में ...ष्य-मनुष्य के बीच केवल श्रद्धा और ...चार के आधार पर भेद माना जाता है । ...त के मुसलमान इस बात को भी शायद ...ल जाते हैं कि पहली बार इस्लाम ने ही ...वात (समानता), जमाअत (लोकमत), ...मा (सहमति द्वारा निर्णय), इजतिहाद (जहां ...त में स्पष्ट आदेश न हो, वहां अपनी ...-बूझ से काम लेना) के विचारों को प्रस्तुत ...या था । वह इस बात को भी भूल जाते हैं ...इस्लाम में इब्न खल्दून-जैसे मौलिक ...क भी पैदा हुए, जिसकी रचना मुकद्दिमा ...में प्रसिद्ध इतिहासकार टायनबी ने लिखा ...कि इससे बेहतर इतिहास के कार्यकरण पर ...दूसरा ग्रंथ किसी भी देश में नहीं लिखा ...।

...हमको यह भी नहीं भूलना चाहिए कि एक ...य ऐसा था, विशेषकर पंद्रहवीं शती में, जब ...और गुरु नानक और कबीर-जैसे मनीषियों ...दूसरी ओर सूफी संतों ने दोनों संप्रदायों के बीच सेतुबंधन का प्रयास किया था । वेदांतियों का कहना था कि सर्वम् खल्विदम ब्रह्म (यह सब कुछ ब्रह्म है) और सूफी संत बेहदत-अल-वुजूद (अल्लाह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है) को मानते थे । दोनों में क्या अंतर है ? यह सेतुबंधन का प्रयास अकबर-जैसे दूरदर्शी सम्राट के समय और आगे बढ़ाया गया और यदि बीच में औरंगजेब-जैसे कट्टरपंथी शासक न आ गये होते, जिसके उपरांत मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हुआ, जिसमें अंगरेजों का भारत में प्रवेश हुआ, तो इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच अवश्य ही एक नया समन्वय उपस्थित हो जाता ।

इन तथ्यों का स्मरण करने की इसलिए जरूरत है कि हम अच्छी तरह से समझ लें कि इस्लाम का वास्तविक रूप वह नहीं है, जो

सांप्रदायिक वैमनस्य की समस्या का वास्तविक और कारगर उपाय केवल यही है कि हम सब मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर धर्म-निरपेक्षता की सच्ची भावना पैदा करें, एक दूसरे के धार्मिक विश्वासों का आदर करते हुए सांप्रदायिक भावना को सार्वजनिक जीवन में स्थान न दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश शासकों द्वारा अथवा हमारे ही बीच के कुछ कट्टरपंथियों द्वारा प्रस्तुत किया गया । हमें इस्लाम के इतिहास को समझने और उसका अध्ययन करने की आवश्यकता है । भारत के मुसलमानों को अपने भविष्य के बारे में आशंकित अथवा भयभीत होने का कोई कारण नहीं है । उनका अतीत शानदार रहा है और भविष्य भी उज्ज्वल रहेगा । केवल आवश्यकता इस बात की है कि वह अपने ही शिकवे-शिकायतों में उलझे न रहकर ऐसे आंदोलनों और गतिविधियों में जनता के साथ शरीक हों, जिनका संबंध सारे राष्ट्र से है, जिसमें वह स्वयं भी शामिल हैं । उन्हें एक ऐसे समाज की स्थापना के लिए आंदोलन में सक्रिय भाग लेना चाहिए, जिसमें सभी के साथ ईमानदारी, बराबरी और न्याय का व्यवहार हो । इस्लाम में निर्धनों की जरूरतों की उपेक्षा करके धन इकट्ठा करने को बड़ा अपराध माना गया है, जिसके लिए परलोक में तो दंड मिलेगा ही पर जिसके कारण इस लोक में भी समाज का विघटन हो जाता है । ऐसी अवस्था में क्या भारत और अन्य देशों के मुसलमान इस बात को पसंद करेंगे कि अरबों रुपया स्विट्जरलैंड के बैंकों में गुप्त रूप से जमाकर दिया जाए, जबकि भारत में इतनी अधिक गरीबी है और जहां पर ऐसे अनेक स्थान हैं, जहां से पीने का पानी लाने के लिए लोगों को मीलों दूर जाना पड़ता है ?

हिंदू होने का गर्व

हिंदू धर्म के विषय में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि मुझे हिंदू होने का इसलिए गर्व है कि मेरा धर्म मुझे किसी भी ऐसी बात को मानने से नहीं रोकता, जिसे मेरा विवेक और बुद्धि स्वीकार करे । मुझसे केवल सद्विचार और सदाचार की अपेक्षा की जाती है और यह भी कि मैं सभी प्राणियों के साथ न्याय और करुणा का व्यवहार करूं । इसके अतिरिक्त मुझे पूरी छूट है कि मैं एक ईश्वर में विश्वास करूं अथवा अनेक देवताओं को मानूं या किसी भी देवता को न मानूं । हिंदू धर्म का मूल तत्व श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में बताया गया था—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः

(श्रीमद्भगवद गीता, ४.११)

अतः एक मुसलमान जो मस्जिद में नमाज अदा करता है और एक हिंदू जो मंदिर में पूजा-अर्चना करता है, दोनों ही की मंजिल एक है, भले ही उनके रास्ते अलग हों । इसी बात को एक उर्दू शायर ने इस तरह कहा है—

मजाहिब क्या हैं राहें मुख्तलिफ हैं एक मंजिल की
है मंजिल क्या जहां सब कुछ है पर राहें नहीं होतीं

इसलिए जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को केवल धार्मिक विश्वास और विधि के आधार पर घृणा की दृष्टि से देखता है, वह वास्तव में सच्चा हिंदू नहीं है ।

अभी हाल में मेरठ में और कुछ अन्य स्थानों पर जो घटनाएं हुईं उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिंदू और मुसलमान दोनों ही जहां-जहां अल्पसंख्या में हैं, भय और आशंका का जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

जरूरत है विश्वास की

इस भय और आशंका को दूर करने का अन्यतम उपाय यह है कि हिंदू और मुसलमान दोनों ही अपनी रक्षा के लिए केवल अपने ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या दूसरे संप्रदाय के विश्वसनीय पड़ोसियों और दोस्तों पर भरोसा करें। पुलिस और सेना पर भरोसा करना छोड़ दें। यह एक दुर्भाग्य का विषय है कि आजादी के बाद कांग्रेस जो बराबर सत्ता में रही है, उसने मुसलमानों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया है कि केवल वही धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करती है और उसी का पुलिस और सेना पर अधिकार है, इसलिए केवल वही अल्पसंख्यक मुसलमानों की रक्षा कर सकती है। हमारे मुसलमान भाइयों ने भी इस बात का सहज ही विश्वास कर लिया और कांग्रेस की नीतियों और कार्यक्रमों पर बिना ध्यान दिये आंख मूंदकर उसका समर्थन करना आरंभ कर दिया। इसीलिए अन्य संप्रदाय के लोग जो कांग्रेस की आलोचना करते थे या समझ-बूझकर उसका समर्थन करते थे उनके और मुसलमानों के बीच वैमनस्य पैदा हो गया। किंतु अब हमारे मुसलमान भाई वास्तविकता को समझने लगे हैं, क्योंकि उन्होंने अनेक बार देखा है कि पुलिस अथवा फौज उनकी रक्षा करने में नितांत असफल रही है। इस असफलता के दो मूल कारण हैं। एक तो पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के लोग विशेषकर नीचे स्तर पर इतने शिक्षित और समझदार नहीं होते कि वह निष्पक्ष होकर कार्य कर सकें। वह सहज ही सांप्रदायिक भावना के शिकार हो जाते हैं। दूसरा कारण यह है कि वह सदैव हर स्थान पर दंगा-फसाद रोकने के लिए उपस्थित नहीं रह सकते। सामान्यतः वह तभी पहुंच पाते हैं जब उपद्रव समाप्त हो लेता है और यदि वहां कुछ आदमी मारे गये हैं, तो उनको दफनाया या जला दिया जा चुका होता है। इसके बाद संदिग्ध व्यक्ति के विरुद्ध पुलिस धर-पकड़ का अपना काम शुरू करती है, जो प्रायः सांप्रदायिक पक्षपात के साथ किया जाता है। कहा जाता है कि मेरठ में पिछले वर्ष हाशिमपुरा और मलियाना में ऐसा ही हुआ।

ऐसी परिस्थितियों से बचने का केवल एक ही उपाय है कि एक संप्रदाय के लोगों को दूसरे संप्रदाय की दोस्ती और सद्भावना पर भरोसा करना चाहिए। ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे जहां हिंदुओं ने अपनी जान खतरे में डालकर मुसलमानों की रक्षा की है और मुसलमानों ने भी अपने हिंदू पड़ोसियों को बचाने में अपनी जान जोखिम में डाली है। ऐसी घटनाएं, हालांकि अपवाद रूप में हुई हैं लेकिन वे सामान्य व्यवहार का रूप ले सकती हैं। अगर हम आपस के संबंध ठीक रखें तो कोई कारण नहीं कि हमको अपनी रक्षा के लिए पुलिस और फौज का सहारा लेना पड़े। केवल आवश्यकता इस बात की है कि हमें जो झूठा इतिहास पढ़ाया गया है और एक दूसरे के विरुद्ध जो विष हमारे मन में भरा गया है, उसे निकाल डालें। एक दूसरे के सुख-दुख में शरीक हों और एक दूसरे की निःस्वार्थ भाव से सेवा और सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहें। इससे अवश्य ही आपस में संबंध सुधरेंगे और हमें सुरक्षा एवं सम्मानपूर्वक जीवित रहने के लिए सरकार का मुंह न देखना पड़ेगा।

हमको एक दूसरे के बारे में यथार्थ स्थिति जानने की भी कोशिश करनी चाहिए। जो मनगढंत इतिहास हमको पढ़ाया गया है, उसे भूलकर वास्तविक इतिहास का अध्ययन करें। मेरा तो सुझाव है कि प्रत्येक शिक्षित मुस्लिम को

पड़ें, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू धर्म के तत्व और इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और प्रत्येक शिक्षित हिंदू को इस्लाम के बारे में । इन विषयों पर अनेक अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं मसलन, हिंदू धर्म के विषय में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की 'हिंदू व्यू ऑव लाइफ' बहुत अच्छी पुस्तक है । इसी प्रकार सैयद अमीर अली की पुस्तक 'स्पिरिट ऑव इस्लाम' से इस्लाम के विषय में बहुत अच्छी जानकारी मिल जाती है ।

वोट की राजनीति

दोनों संप्रदायों के बीच सद्भाव स्थापित करने का काम राजनेताओं पर नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि उनका प्रयत्न कभी-कभी हानिकर भी सिद्ध होता है । उदाहरण के तौर पर हम देखें कि शाहबानो के मामले में सरकार ने किस प्रकार अपना रुख बदल दिया, जिसके कारण आरिफ मोहम्मद खान को मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देना पड़ा । इसी प्रकार देवराला में जो सती की घटना हुई, उसके विषय में वहां के अनेक हिंदू नेता चुप्पी साधे रहे— इससे स्पष्ट है कि ये लोग वोट मिलने की आशा में कट्टरवादियों को खुश करने के लिए कुछ भी कह सकते हैं और कुछ भी कर सकते हैं । इस कार्य को हमें निर्दलीय प्रबुद्ध नागरिकों एवं समाज सेवकों और शिक्षा क्षेत्र के योग्य अध्यापकों के ऊपर अधिक छोड़ना पड़ेगा ।

इस समय अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि को लेकर बाबरी मस्जिद समिति और राम जन्मभूमि मुक्ति समिति के बीच एक ऐसा विवाद खड़ा हो गया है, जिसका कुप्रभाव सारे देश में फैल रहा है । यह विवाद सड़कों पर लड़ाई-झगड़ा करने से हल नहीं हो सकता और कोई भी सम्मान उपाय को अपनाने की अनुमति नहीं दे सकता और न ही यह आशा की जा सकती है कि विवाद आपस की बातचीत से हल हो जाए क्योंकि दोनों पक्षों ने एक कड़ा रवैया अपना लिया है और इसको एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बना बैठे हैं । इसको हल करने का एक ही उपाय मालूम होता है कि दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हो जाएं कि इसको हल करने की प्रक्रिया हो । एक उपाय यह हो सकता है कि इसका निर्णय उच्चतम न्यायालय पर छोड़ दिया जाए पर इसमें मुसलमानों को यह आशंका हो सकती है कि वहां हिंदुओं का बहुमत है इसलिए निर्णय निष्पक्ष नहीं होगा । दूसरा उपाय यह हो सकता है कि इसको पंच फैसले पर छोड़ दिया जाए । राम जन्मभूमि मुक्ति समिति किसी एक व्यक्ति को नामजद कर दे, जो न हिंदू हो न मुसलमान । इसी प्रकार बाबरी मस्जिद समिति भी किसी ऐसी ही व्यक्ति को नामजद करे और फिर ये दोनों एक तीसरे व्यक्ति को चुन लें जो वह भी हिंदू या मुसलमान नहीं होना चाहिए । इसके बाद यह समिति बहुमत से या सर्वसम्मति से जो निर्णय करे, उसको दोनों पक्ष स्वीकार कर लें । यहां नामों का उल्लेख करना उचित नहीं होगा, परंतु हमारे देश में अनेक व्यक्ति हैं जो न हिंदू हैं और न मुसलमान, परंतु निष्पक्षता योग्यता और निष्पक्षता पर पूर्ण विश्वास किया जा सकता है और इस मामले को हल करने में हमें इनका सहयोग लेना चाहिए ।

उदार दृष्टिकोण अपनाएं

अभी हाल में मुझे इस क्षेत्र में जाने का अवसर मिला । मुझे यह देखकर आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और खुशी भी हुई कि वहां के स्थानीय हिंदू और मुस्लिम नागरिकों में इस विषय को लेकर कोई विशेष तनाव नहीं है। यह केवल दूर रहनेवाले लोगों के द्वारा ही विशेष रूप से बढ़ाया जा रहा है। वहां मुझे यह भी बताया गया कि कुछ उदारचेता शिक्षित मुस्लिम नौजवान इस प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं कि विवादग्रस्त-स्थल से अपना दावा हटा लिया जाए और यह स्थान राम जन्मभूमि मुक्ति समिति को सौंप दिया जाए। यदि यह प्रस्ताव वरिष्ठ मुस्लिम नेता भी स्वीकार कर लेते हैं, तो यह पंच फैसले से भी अधिक अच्छा रहेगा और इससे दोनों संप्रदायों के बीच सद्भाव और सहयोग का वातावरण बनेगा।

यह स्पष्ट है कि यदि पाकिस्तान के साथ हमारा सच्ची व पक्की मित्रता और सहयोग का संबंध स्थापित हो जाए तो यह हमारे देश की सांप्रदायिक समस्या के समाधान की ओर बहुत बड़ा कदम होगा। यह सच है कि कश्मीर के प्रश्न पर पाकिस्तान का कड़ा रवैया, उसका अणु अस्त्र-शस्त्र बनाने का कार्यक्रम और सिख आतंकवादियों को उसकी तथाकथित सहायता बहुत बड़ी बाधक अड़चनें हैं। परंतु यदि दोनों ओर से नेकनियती से कोशिश हो, तो इनका समाधान असंभव नहीं है। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री अनेक समझौते कर चुके हैं और इस ओर उनकी विशेष रुचि है। यदि वह पाकिस्तान के साथ भी एक स्थायी संधि-समझौता करने का प्रयास करें और इसमें सफल हो जाएं तो इस समझौते का महत्व उनके अन्य सब समझौतों से अधिक होगा। यदि दोनों राष्ट्र एक स्थायी संधि अथवा सहराज (कंडोमिनियम) के आधार एक साथ आ जाएं तो न केवल अरबों रुपया सुरक्षा के बजाय विकास के लिए बचा सकेंगे, बल्कि शक्तिशाली ताकतों की शतरंज के मोहरे मात्र बने न रह कर विश्व शांति के लिए कारगर प्रयास कर सकेंगे।

प्रायः कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि यदि पुलिस और अन्य राजसेवाओं में मुसलमानों की संख्या बढ़ा दी जाए और उसको उनकी जनसंख्या के अनुपात में बनाये रखा जाए तो उनके मन में अधिक सुरक्षा की भावना पैदा होगी। इस समय प्रायः सभी सरकारी नौकरियों में खुली प्रतियोगिता और परीक्षा द्वारा भर्ती होती है और इस प्रक्रिया में मुसलमानों के लिए यह भी संभव है कि वह अपनी योग्यता के आधार पर जनसंख्या के अनुपात से अधिक संख्या में आ जाएं। परंतु यदि वह पर्याप्त संख्या में उत्तीर्ण नहीं हो पाते तो उसका उपाय यह नहीं है कि कानून के द्वारा उनकी न्यूनतम संख्या सुरक्षित कर दी जाए, क्योंकि इससे वह सदैव अल्पसंख्या में बने रहेंगे और उनको प्रतियोगिता में सफल होने के लिए अपनी योग्यता बढ़ाने की कोई प्रेरणा भी न रह जाएगी। इससे आपस का वैमनस्य भी बढ़ेगा। इस समस्या का वास्तविक और कारगर उपाय केवल यही है कि हम सब मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर धर्म-निरपेक्षता की सच्ची भावना पैदा करें और एक दूसरे के धार्मिक विश्वासों का आदर करते हुए सांप्रदायिक भावना को अपने सार्वजनिक जीवन में कोई स्थान न दें, चाहे विधान सभाओं और लोकसभा के निर्वाचनों का प्रश्न हो या राजसेवाओं में भर्ती के लिए प्रतियोगिता का।

—१८९ किदवई नगर (पश्चिम)
नयी दिल्ली-११००२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मान उस सृजन-धर्मिता का है, जो आज अनेक दबावों और सृजन-विरोधी परिस्थितियों के जाल में फंसी है, लेकिन फिर भी अपने पंख फैलाकर मनचाही उड़ान भरने के लिए आतुर है।

.... लेखक के पास और है ही क्या एक आवाज के अलावा, एक तड़पभरी पुकार के अलावा।

प्रस्तुत है विख्यात कवि और कथाकार डॉ. धर्मवीर भारती का अत्यंत मर्मांतक और संवेदनशील वक्तव्य, जो उन्होंने 'आथर्स गिल्ड ऑव इंडिया' के चौदहवें अधिवेशन में दिया था।

सम्मान पका हुआ फल है

● डॉ. धर्मवीर भारती

मैं सम्मान को एक अलग नजरिये से देखता हूं। क्या सम्मान एक व्यक्ति का सम्मान होता है ? नहीं, मेरा मानना है कि व्यक्ति, चाहे मैं होऊं या कोई और, व्यक्ति केवल प्रतीक है। असल में, यह सम्मान तो उस सृजन-धर्मिता का है, जो आज अनेक दबावों और सृजन-विरोधी परिस्थितियों के जाल में फंसी है, लेकिन फिर भी अपने पंख फैलाकर मनचाही उड़ान भरने के लिए आतुर है। उड़ पाये या न उड़ पाये पर अपने कमजोर पंखों से आसमान नाप लेने की उसकी तड़प जिंदा है। सचमुच, सृजन की उस तड़प का ही सम्मान होता है। और इसी नाते यह मेरे सारे प्यारे जाने-अनजाने लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्तों का सम्मान है, जो सृजन-धर्मा हैं, सृजन-रत हैं या सृजन-आकांक्षी हैं यानी दोस्तो, यह आप सबका सम्मान है। इसलिए आपका दिया, आप सभी का सम्मान— इसके लिए कृतज्ञता शब्द बहुत छोटा है। मैं तो यही कहूंगा— 'त्वदीय वस्तु गोविंदम् तुभ्यमेव समर्पये।' या कबीर के शब्दों में कहूं तो—

मुझ में मेरा कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागे है मोर ?

अब पूछिए कि इस तरह के सम्मानों का प्रतीकार्थ क्या हैं ? विनोबाजी की व्याख्या मालूम है आपको ? एक बार विनोबाजी को कोई अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिला (ठीक से याद नहीं है, शायद मैगसेसे पुरस्कार), तो उन्होंने बड़ी विनम्रता लेकिन, किंचित विनोद, से कहा कि 'सम्मान तो पेड़ पर लटका हुआ, पका हुआ फल है। क्या जाने कब कौन उस पेड़ के नीचे से गुजरे और किसकी गोद में वह फल टपक पड़े।' मैं नहीं जानता, शायद यह बात कुछ सम्मानों या कुछ पुरस्कारों के लिए सच होती हो, पर भारतीय लेखकों के इस प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा एक लेखक को दिये गये इस सम्मान को मैं बहुत गहरा अर्थवान सम्मान मानता हूं।

अर्थवान : किस अर्थ में ?

आइए, इसका अर्थ खोजने के लिए एक बार फिर उस बात पर लौटें, जो मैंने अभी कही थी— जाल की बात और उड़ान की बात। सृजनात्मकता के संदर्भ में यह उड़ान का बिंब मुझे सबसे पहले महाकवि इकबाल की कविता में मिला था— उन्होंने लिखा था—

ऐ तारिये लाहूती ! उस रिज्क से मौत अच्छी
जिस रिज्क से आती हो परवाज में कोताही

उड़ान सच है, तो दाना भी सच है

बहुत बड़ी बात है, ओजस्वी बात है, लेकिन बहुत अदब से मैं एक छोटी-सी तरमीन पेश करने की इजाजत चाहूंगा। उड़ान अगर अपनी जगह सच है, तो रिज्क या दाना भी आज की दुनिया में अपनी जगह सच है। हम अगर सामाजिक जिम्मेवारियों से परे कोई औलिया, फकीर या दरवेश हों तो बात दीगर, तब हम दाने के जाल से मुक्त हो सकते हैं, मगर हम सहज साधारण मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन जीनेवाले लेखक दाने के यथार्थ को अनदेखा कैसे कर सकते हैं ? और दाने तो तरह-तरह के हैं— राज-शक्ति के दाने, पुरानी सामाजिक मान्यताओं के दाने, धार्मिक कट्टर पंथ के दाने, राजनीतिक मतवादों के दाने, पारिवारिक बंधनों के दाने, आर्थिक आवश्यकताओं के दाने और ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमाम दाने जहां बिखरे हैं, वहीं एक बड़ा-सा जाल है—तनावों का, दबावों का, अभावों का, जो सृजन-धर्मिता के विरोधी हैं, उसके सहायक नहीं, उड़ान को कुंठित करते ही हैं। क्या लेखक कोई ऐसा अजूबा प्राणी हो सकता है, जो राजनीति, समाज, परिवार, रोजी-रोजगार के दायित्वों से सर्वथा मुक्त हो ? नहीं, वह तो इस जाल में फंसा है ही, फिर भी उड़ान का उसका सपना अकुंठित है। अजीब द्विविध स्थिति है उसकी। वह जाल में फंसा भी है और उड़ान भी भरना चाहता है। उड़ान के अपने सपने में भी वह नितांत अकेला है और जाल के बंधन के दर्द में भी। अकेलापन जैसे उसकी नियति ही है। लेकिन उसे एक सहारा जरूर मिलता है, अगर उसके समानधर्मा लेखक एक दूसरे की नियति के सहभागी बन सकें।

मेरे हमसफीरो न खामोश रहना

जहां तक मुझे याद है, इस स्थिति के बारे में भी इकबाल के ही रंग का एक दूसरा शेर है— जाल में सभी पक्षी फंसे हैं, वे अपनी बंधनयुक्त नियति को स्वीकार कर चुके हैं, पर एक बंदी पक्षी दूसरे बंदी पक्षियों से कहता है :

मेरे हमसफीरो, न खामोश रहना
मैं आवाज दूं— तो तुम आवाज देना

यह आवाज एकसूत्रता का आधार बन जाती है। लेखक के पास और है ही क्या, एक स्वतंत्र आवाज के अलावा, एक तड़पभरी पुकार के अलावा। जाल का बंधन हो पर एक की आवाज दूसरे को सहारा देती है, उनके पंखों में जान फूंकती है। और एक क्षण ऐसा आ सकता है कि जब सभी पक्षी एक साथ उड़ने की ठान लें, तो जाल उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, वे जाल को लिये-दिये उड़ सकते हैं।

हम सहभागी हैं

मैं लेखकों के इस प्रकार के मंच और उसके द्वारा दिये गये सम्मान को वही पुरजोश आवाज मानता हूं, जो समानधर्मा लेखकों से कहती है कि जाल के बावजूद हम सब एक दूसरे के दर्द, साहस और सपने के सहभागी हैं और अगर हम साथ हैं, तो जाल हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह आपका दिया हुआ सम्मान उसी संदर्भ में गहरे अर्थों वाला है, विनोबा का पका हुआ फल नहीं है, इकबाल की प्राणवान आवाज है तारिये लाहूती के नाम— लेखकों के नाम—सृजनकर्त्ताओं के नाम, कि हारो मत, जाल के बावजूद मिलकर उड़ो, आसमान को नापो !

यूं, मैं तो दाने और जाल के अस्तित्व को भी नकारात्मक मात्र नहीं मानता। 'ठंडा लोहा में' मैंने कहा था, 'जीवन है कुछ इतना विराट इतना व्यापक, उसमें है सब के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह, सब का महत्व !' दाने और जाल का भी एक अर्थ है । उसकी चुनौती न हो, तो आपके संघर्ष की शान ही क्या रहेगी ? वह भी कैसा युद्ध जहां दुश्मन हो ही नहीं ? और नीचे धरती पर पड़ा दाना नहीं होगा, तो इसकी माप कैसे होगी कि आपकी उड़ान कितनी ऊंची थी । जाल नहीं होगा तो कैसे साबित होगा कि आपके पंख कितने साहसी हैं । इस प्रकार के लेखक-सम्मिलन मंच और सम्मान उसी साहस को जगानेवाले शक्ति-सूत्र हैं । व्यक्तिगत अहंकार को जगानेवाले नहीं, सृजन की ललकार को शत-शत कंठों से मुखरित और गुंजरित करनेवाले ।

तब लेखक की छवि क्या थी ?

यह तो हुई साहित्य-सृजन के विराट ब्रह्मांड की बात । अब कुछ पिंड की बात करूं ? यानी अपनी और अपनी पीढ़ी की बात । यत्पिंडे तत्ब्रह्मांडे । इसी को यों क्यों न कहूं कि यत्ब्रह्मांडे तत्पिंडे । उस समय जो साहित्य के ब्रह्मांड में था, वही पिंड में पुंजीभूत हुआ । हमने जब वादिये गुरबत में कदम रक्खा था, यानी जब हम में सृजन की चेतना, साहित्य की चेतना जागी थी, तब साहित्य का आलम क्या था ? और उसमें सृजनधर्मी व्यक्तित्व की, लेखक की छवि क्या थी ? एक ओर छायावादी लेखक था जो या तो सामाजिक मान्यताओं को सर्वथा नकारकर अपनी बोहेमियन जिंदगी जीनेवाला अक्खड़ निराला व्यक्तित्व था; या भौतिक जगत और पार्थिव परिस्थितियों को सीमा का भ्रम मानकर सीधे असीम से साक्षात्कार करनेवाला, रहस्यानुभूतियोंवाला रहस्य-लोक का अति विशिष्ठ प्राणी था, उसकी विशिष्ठता न केवल उसके लेखन में थी, वरन उसकी सजधज में भी थी । उसके घने रेशम से लहरे बालों में भी थी । इस अति विशिष्ट प्राणी पर सहज सामान्य धरातल और उसकी उलझनें लागू ही नहीं होती थीं ।

मसीहे सलीब पर चढ़ाए जा चुके थे

दूसरी ओर वह लेखक था, जो राजनीतिक मतवादों का कवच धारणकर एक बंधे-बधाए फार्मूले के अनुसार यथार्थ को और जीवन स्थितियों को देखता था । लेखक या चिंतक का मूल कर्म यानी अपने निजी सत की खोज और उसकी सार्वजनिक सार्थकता का प्रश्न दोनों के लिए असंगत था क्योंकि, एक का सत असीम से अवतरित होता था और दूसरे का सह पार्टी के कर्णधारों द्वारा निर्धारित होता था । दुर्भाग्य से हमें और हमारी पीढ़ी को लेखक के ये दोनों व्यक्ति असहज, बनावटी और बहुआयामी जन-सामान्य के जीवन से दूर लगते थे (वैसे अपवाद हर जगह होते हैं, और अपवाद वहां भी थे लेकिन बहुत कम) । हमको न योगी स्वीकार था न कमिसार । चिंतन के स्तर पर न हम व्यक्ति को निस्संग, अपने में संपूर्ण मानते थे, न सामूहिकता को सर्वोपरि । हम चाहते थे कि हमारा ऐसा सृजन-व्यक्तित्व बने, जो सहज सामान्य जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीता हुआ निजी और सामाजिक सत्य का प्रामाणिक साक्षात्कार कर सके। साहित्यक शब्द पुनः अच्छी गरिमा को प्राप्त हो, न वह आडंबर, और अति विशिष्टता के आभिजात के बोझ से दबे और न पार्टियों का अलमबरदार बने। व्यक्ति और समूह का कहीं तालमेल बैठ सके, इसलिए हम तलाश में थे उस सहज धरातल के, जो सृजन का सर्वांग संपूर्णता और सच्ची प्रामाणिकता दे सके— मैंने एक कविता में कहा था—

मेरी वाणी गैरिक वसना....
भटके हुए व्यक्ति का संशय
इतिहासों का अंधा निश्चय
ये दोनों जिस में पा आश्रय
बन जाएंगे सार्थक समतल
ऐसे किसी अनागत पथ का
पावन माध्यम भर है मेरी
अर्पित वाणी, आकुल रसना
गैरिक वसना मेरी वाणी

वह द्वितीय महायुद्ध के बाद का विचित्र युग था। सारे ऐतिहासिक अनुमान गलत सिद्ध हुए थे, सारे नैतिक मूल्य ध्वस्त हो चुके थे। मतमतांतर झूठे पड़ चुके थे। मसीहे सलीब पर चढ़ाए जा चुके थे और तानाशाह मसीहाई के लबादे ओढ़कर लबे सड़क मजमा लगा रहे थे, देश आजाद हो गया था, पर टुकड़ों में बंट गया था। जिसने आजादी की लड़ाई की अगुआई की वह गोलियों का शिकार हो चुका था। सारी विडंबना यह थी कि कौन किसे दोष दे ? टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा उसको दोनों ही पथों ने तोड़ा है, पांडव ने कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा। रास्ता बीहड़ था और टूटी मर्यादाएं कांच के टूटे टुकड़ों की तरह सारे रास्ते में बिखरी हुई थीं। उसमें से किसी अनागत पथ की गैरिक वसना तलाश कितनी संकटपूर्ण थी, यह आप कल्पना कर सकते हैं, फिर भी हमने और हमारी पीढ़ी ने, दोनों पक्षों के लोगों ने अपनी सीमित क्षमता के अनुसार तलाश करने का साहस किया। हमने जो पाया, वह उसी साहस का प्रतिफल था, और जो खोया या खोते चले गये, वह अपनी क्षमताओं की सीमा या अभाव के कारण था। उसके विस्तृत विश्लेषण का यह अवसर नहीं, पर इतना अवश्य [illegible] होता है कि हम कुछ भी खो दें, लेकिन अगर साहस और सपना बचा रहता है, तो [illegible] बनी रहती है।

इस संदर्भ में निजी तौर पर अपने बारे में कुछ कहना मुझे अशोभनीय बड़बोलापन लगता है। वैसे भी कवि अपनी बात अपनी कविता में ही पूरी तौर पर कह पाता है, अतः अपनी बात अपनी एक इधर की कविता से ही करूंगा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि

क्योंकि सपना है अभी भी
इसलिए तलवार टूटी, अश्व घायल
कोहरे डूबी दिशाएं
कौन दुश्मन कौन अपने लोग सब कुछ धुंध-धूमिल
किंतु कायम युद्ध का संकल्प है अपना अभी भी
क्योंकि है सपना अभी भी
तोड़ कर अपने चतुर्दिक का छलावा
जब कि घर छोड़ा, गली छोड़ी, नगर छोड़ा
कुछ नहीं था पास बस इसके अलावा
विदा वेला वही सपना भाल पर तुमने तिलक की तरह आंका था
(एक युग के बाद अब तुमको कहां यह याद होगा ?)
किंतु मुझको तो इसी के लिए जीना और लड़ना
है धधकती आग में तपना अभी भी
क्योंकि है सपना अभी भी
तुम नहीं हो
मैं अकेला हूं मगर
यह तुम्हीं हो जो
टूटती तलवार की झंकार में
या भीड़ की जयकार में
या मौत के सुनसान हाहाकार में
फिर गूंज जाती हो
और मुझको
ढाल छूटे, कवच टूटे हुए मुझको
फिर तड़प कर याद आता है कि—
सब कुछ खो गया है, दिशाएं, पहचान, कुंडल-कवच
लेकिन शेष हूं मैं, युद्धरत मैं, तुम्हारा मैं
तुम्हारा अपना अभी भी
क्योंकि है सपना अभी भी
इसलिए तलवार टूटी, अश्व घायल
किंतु कायम युद्ध का संकल्प है अपना अभी भी

आशीर्वाद दें कि यह सपना और यह संकल्प मुझे कभी चैन से बैठने न दे, हमेशा कचोटता रहे, भटकाता रहे, दुखाता रहे क्योंकि, दुख मुझे शब्द देता है, मुखर बनाता है। सुख तो मुझे स्तब्ध कर जाता है, जैसे आज कर गया। उसी स्तब्धता का प्रणाम और विनम्र धन्यवाद।

—६ शाकुंतल
साहित्यकार सह निवास, बांदरा (पूर्व), बम्बई

मई, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक टेलीग्राम

● विमल मित्र

"कार्ल मार्क्स से एक बार कुछ सवाल पूछे गये थे। इन सवालों में एक सवाल था— सुख क्या है ? और कार्ल मार्क्स ने जवाब दिया था— स्ट्रगल। अर्थात संघर्ष।"

ये बातें बिलासपुर के जी.आर.पी. के पुलिस सुपरिंटेंडेंट मिस्टर रामाशीष शर्मा ने कहीं। उस वक्त रेलवे इंस्टीट्यूट के ऑफिसर्स क्लब में हम लोगों का सांध्यकालीन अड्डा चल रहा था। हम लोगों का अड्डा हर रोज शाम को वहां जमा करता। वैसे इस अड्डे का कोई विशेष उद्देश्य नहीं हुआ करता था। हम लोग जो दिनभर जी-तोड़ परिश्रम किया करते थे, वे अपना काम-काज निपटाकर जरा विश्राम लेने के लिए यहां जुटा करते। जो ताश के शौकीन होते, वे ताश लेकर एक कोने में बैठ जाते। इनडोर गेम्स के शौकीन विलियर्ड खेलने में मशगूल हो जाते। अगर मौसम अच्छा होता तो कुछ लोग सामने कोर्ट में बैडमिंटन खेलने लग जाते। या फिर कोई पुस्तकालय से किताब लेकर एक कोने में बैठकर पढ़ने लगते।

फिर भी अधिकांश लोग इस अड्डे में दिलचस्पी लिया करते।

यह क्लब एक कस्मोपोलिटन क्लब था। ऐंग्लो-इंडियन से शुरू कर पंजाबी, मद्रासी, बंगाली और महाराष्ट्रिय— सभी तरह के लोग हमारे दल में थे। अलग-अलग कल्चर होने पर भी हमारा नजरिया समान था। इसकी वजह यह थी कि हम सभी रेलवे के साथ आर्थिक दृष्टिकोण से एक ही सूत्र में बंधे हुए थे।

मिस्टर शर्मा की बातें सुनकर राजगोपालाचारी ने कहा, "स्ट्रगल आपने भला क्या देखा है मिस्टर शर्मा ? यह जिंदगी ही एक स्ट्रगल है; चाहे इसमें दुःख हो, चाहे सुख।"

मिस्टर मुदालियर ने कहा, "स्ट्रगल में कभी दुःख रह ही नहीं सकता।"

मिस्टर शर्मा ने कहा, "मैं भी यही कहता हूं। मैं कार्ल मार्क्स के कथन से पूरी तरह सहमत हूं।"

इतनी देर तक मिस्टर सेनगुप्त एक किनारे बैठे ट्रांजिस्टर सुन रहे थे। इस बार वे भी नजदीक आये और उन्होंने पूछा, "किस बात पर बहस चल रही है ?"

मैंने उन्हें सारा प्रसंग समझा दिया।

मिस्टर सेनगुप्त ने सारी बातें सुनने के बाद कहा, "मैं भी कार्ल मार्क्स से सहमत हूं। मैं यह साबित कर सकता हूं कि जिसके जीवन में स्ट्रगल नहीं है, उसके जीवन में कोई सुख ही नहीं है।"

राजगोपालाचारी ने कहा, "मैं इस बात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मानता मिस्टर सेनगुप्त ! मैं आपकी बातों का विरोध करता हूं। मैंने ऐसा भी आदमी देखा है, जिसने अपने पिता से विरासत में करोड़ों रुपये पाये हैं और जो खूब ही मजे में पैर के ऊपर पैर रखकर कभी जरमनी जाता है, कभी अमरीका जाता है, तो कभी जाता है स्विट्जरलैंड। उसे कोई दुःख नहीं। वह खूब आराम से जिंदगी बसर कर रहा है।''

मिस्टर रामाशीष शर्मा ने कहा, ''वह सुख किस तरह का सुख है, जानते हैं ? ठीक उसी तरह का सुख और आराम, जिसे एक सूअर गंदी नाली की कीचड़ में मुंह डालकर महसूस करता है। यह सुख उसी तरह का सुख है। उसे आप सुख कहना चाहते हैं, तो शौक से कहिए। इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं।''

मिस्टर मुदालियर ने कहा, ''जो रुपयों को ही सुख का प्रधान उपकरण मानते हैं, वे और कुछ भी हो सकते हैं, पर मनुष्य हर्गिज नहीं। यह बात मैं कसम खाकर कह सकता हूं।''

मिस्टर राजगोपालाचारी ने पूछा, ''तो फिर दुनिया में सभी लोग 'हाय रुपया-हाय रुपया' की रट क्यों लगाते हैं, जरा आप ही बताइए मिस्टर मुदालियर ? आखिर क्यों ? हमारे डिवीजनल सुपरिंटेंडेंट से शुरू कर क्लास फोर्थ के स्टाफ तक सभी रुपया-रुपया क्यों रटते रहते

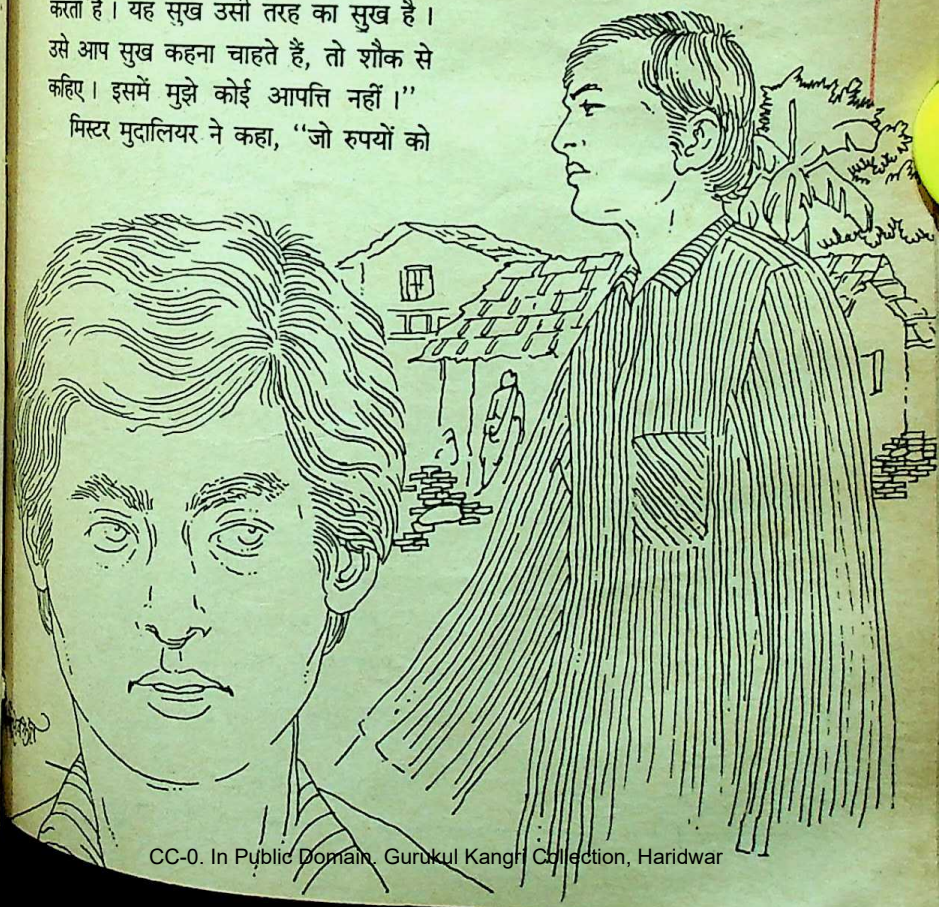

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ? रुपये के पीछे कौन नहीं दौड़ता ? क्या आप एक भी मिसाल दे सकते हैं ?"

मिस्टर रामाशीष शर्मा ने कहा, "जिन्होंने रुपये-रुपये की रट नहीं लगायी, वे लोग ही दुनिया में अमर हो गये हैं। जिस तरह सुकरात, बुद्ध, शंकराचार्य, यीशू मसीह, चैतन्य देव और महात्मा गांधी... ।"

"उनकी बातें छोड़ भी दीजिए साहब ! वे आदमी नहीं देवता थे। लेकिन रुपये से दुनिया में भला कौन-सी चीज नहीं खरीदी जा सकती, क्या आप बता सकते हैं ?"

मिस्टर सेनगुप्त ने कहा, "तो फिर मैं आपको एक अंगरेजी कौटेशन सुनाता हूं। आप भी इसे कंठस्थ कर लीजिए।" यह कहकर वह कौटेशन सुनाने लगे : जिसका भावार्थ था— कि रुपयों से तुम बिछौना खरीद सकते हो, नींद नहीं। रुपयों से तुम किताबें खरीद सकते हो, दिमाग नहीं। रुपयों से तुम भोजन खरीद सकते हो, भूख नहीं। रुपयों से तुम आभूषण खरीद सकते हो, सौंदर्य नहीं। रुपयों से तुम मकान खरीद सकते हो, घर नहीं। रुपयों से तुम दवा खरीद सकते हो, स्वास्थ्य नहीं। रुपयों से तुम विलास-द्रव्य खरीद सकते हो, संस्कृति नहीं। रुपयों से तुम मनोरंजन की चीजें खरीद सकते हो, खुशी नहीं। रुपयों से तुम धर्म खरीद सकते हो, मुक्ति नहीं।

इसके बाद किसी के भी मुंह से कोई बात नहीं निकली। सभी खामोश हो गये।

बिलासपुर के दूरस्थ रेलवे यार्ड से सिर्फ शंटिंग की आवाज बीच-बीच में कानों से टकराने लगी। हमारी अड्डेबाजी पलभर में जैसे बेमजा हो गयी।

मिस्टर सेनगुप्त फिर कहने लगे, "देखिए, मैं भी आप लोगों की तरह यही समझता था कि दुनिया में रुपया ही सब कुछ है। लेकिन कार्ल मार्क्स की वह उक्ति पढ़ने के बाद मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मैंने देखा है कि दुनिया में ऐसी बहुत-सी चीजें हैं, जिन्हें रुपयों से खरीदा नहीं जा सकता। यह समझाने के लिए मैं अपने एक दोस्त के जीवन की आंखों-देखी घटना सुनाना चाहूंगा। क्या आप इस घटना का ब्यौरा सुनना चाहेंगे ? क्या आपके पास इतना वक्त है ?"

सभी एक सुर में बोल उठे, "सुनाइए, सुनाइए... ! सुनाइए मिस्टर सेनगुप्त !"

मिस्टर सेनगुप्त अपने दोस्त का किस्सा सुनाने लगे—

देखिए, मेरा एक दोस्त था। उसका नाम था सुव्रत। वह एक गृहस्थ परिवार का लड़का था। विधवा मां के सिवाय उसके परिवार में और कोई दूसरा नहीं था। कभी हम एक ही साथ पढ़ा करते थे। मैं हर साल फर्स्ट होता था और वह होता था— कह सकते हैं कि लास्ट। लेकिन इसकी वजह से हमारी दोस्ती में कभी फर्क नहीं आया था। क्लास में सभी लड़कों को फर्स्ट आना होगा, ऐसी तो कोई बात है नहीं। असल बात यह होती है कि किसके जीवन में शेषपर्यंत क्या हुआ ! इसी का विचार किया जाता है। रवींद्रनाथ का मूल्यांकन यदि उनके बचपन के समय के उनके परीक्षा-फल के आधार पर किया जाए तो इससे बढ़कर भूल संभवतः कोई दूसरी नहीं होगी। एक ग्रीक कहावत है— 'नो बडी केन बी कॉल हेप्पी अनटिल ही डाइज।' अर्थात् कोई आदमी तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं भी आप लोगों की तरह यही समझता था कि दुनिया में रुपया ही सब कुछ है। लेकिन मैं गलत था क्योंकि मैंने देखा कि दुनिया में ऐसी बहुत-सी चीजें हैं, जिन्हें रुपयों से खरीदा नहीं जा सकता।"

तक सुखी नहीं कहा जा सकता, जब तक कि उसकी मृत्यु न हो जाए !

मैं बीच-बीच में सुव्रत से कहा करता, 'तू अच्छी तरह मन लगाकर क्यों नहीं पढ़ता, सुव्रत ?' सुव्रत कहता, 'अच्छी तरह पढ़ाई कैसे करूं, तू ही बता ! मुझे तो घर के सारे काम निपटाने के बाद ही पढ़ाई का वक्त मिल पाता है। मां बूढ़ी हो चुकी है। अकेला मैं कितने काम करूं ? मुझे बाजार जाना पड़ता है, घर में झाड़ू लगानी पड़ती है, बरतन मांजने पड़ते हैं। पिताजी के जो थोड़े-से रुपये बैंक में जमा हैं, उनसे मिलनेवाले सूद से ही घर का खर्च चलाना पड़ता है। अच्छी तरह घर चल नहीं पाता। लेकिन फिर भी किया क्या जा सकता है ?'

मैं कहता, 'तो फिर रात में जगा कर।' सुव्रत कहता, 'तो क्या तू यह समझता है कि रात में जागता नहीं ? परीक्षा आने पर एक-डेढ़ महीने तक तो मैं रात में आंखों में कड़वा तेल लगाकर जगा करता हूं।'

इससे ज्यादा और कुछ मैं कहता नहीं। इससे ज्यादा कुछ कहने में मुझे तकलीफ होती।

इस तरह हम दोनों ने हायर सेकेंडरी की परीक्षा पास की। मुझे मिली फर्स्ट डिवीजन और वह किसी तरह थर्ड डिवीजन से पास हो पाया था।

उसके बाद डिग्री कोर्स। यहां भी मैंने ऊंचे नंबरों से परीक्षा पास की और उसे मिले सब से कम नंबर।

उसके बाद मैंने कंपीटीटिव परीक्षा देकर 'डिवीजनल ट्रैफिक ऑफिसर' की ऑल इंडिया नौकरी हासिल की और वह कानून की परीक्षा पास कर सिटी सिविल कोर्ट में वकालत करने लगा। वह महीनेभर में सौ रुपये भी कमा पाता था या नहीं ? जब मैं कलकत्ता जाकर उसे मिलता, तो उसकी दुरावस्था की कहानी मुझसे छिपी नहीं रहती। उस समय भी वह केला बगान की उसी झोपड़पट्टी वाले घर में रहा करता था। एक पुराना खंडहरनुमा एकतल्ला मकान ! तब तक उसकी मां रोग-शोक से जर्जर होकर इस असार संसार से विदा हो चुकी थी। सुव्रत अपनी मां का अच्छी तरह इलाज भी नहीं करा पाया था। रुपयों की तंगी ऐसी ही थी !

मुझे देखकर सुव्रत कहता, 'तुम लोग हो राजा के बेटे— राजपुत्र। तुम लोगों की बात ही अलग है। हम लोगों के दुःख की कहानी भला कौन सुनेगा, तू ही बता ! फिर भी इन दुःखों के बीच जिंदा हूं, यही कुछ कम है क्या ?'

मैं सुव्रत की बातों का भला क्या जवाब देता ? उसकी गरीबी के निर्लज्ज चिह्न उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर पर, पोशाक पर, घर में— सर्वत्र दिखायी पड़ रहे थे। उसके लिए मन में बेहद तकलीफ होती थी, किंतु भला मैं उसकी दुरावस्था कैसे दूर करता ?

सुव्रत ने कहा, 'मैं तुझे एक खबर सुनाना चाहता हूं। हम लोगों के कोर्ट में जो लॉयर्स एसोसियेशन है, उसमें इस बार मुझे प्रेसिडेंट बनाया गया है।' मैंने पूछा, 'इसे तुझे भला क्या लाभ होगा ?' सुव्रत ने कहा, 'लाभ कुछ भी नहीं। रुपये-पैसों के मामले में मुझे कोई लाभ नहीं होगा। फिर भी एक फायदा जरूर हुआ है। वह यह कि कोर्ट में बैठने के लिए मुझे एक चेंबर मिल गया है। पहले सभी के साथ मुझे एक ही हॉल में बैठना पड़ता था। अब मुझे अलग चेंबर मिल गया है।'

मैंने पूछा, 'इतने सीनियर एडवोकेटों के रहते हुए उन लोगों ने तुझे प्रेसिडेंट क्यों बनाया ?

सुव्रत ने कहा, 'कोई दूसरा एडवोकेट क्यों प्रेसिडेंट होना चाहेगा ? किसे इतनी गरज पड़ी है ? किसके पास इतना फालतू वक्त है ? और सारे एडवोकेट अपने-अपने काम में बेहद व्यस्त रहते हैं। मैं ही हूं एकमात्र ब्रीफलेस एडवोकेट। इसीलिए सभी ने प्रेसिडेंट बनाने की जिम्मेवारी मेरे ऊपर मढ़ दी है।'

मैंने पूछा, 'फिर भी क्या इससे तुझे कोई लाभ होगा ?' सुव्रत ने कहा, 'लाभ और क्या होगा ? मैंने तो कहा न कि सिर्फ मुझे अलग से एक चेंबर मिल गया। बस, इतना ही। इसके सिवाय और कुछ भी नहीं।'

★ ★ ★

कहानी सुनाते-सुनाते मिस्टर सेनगुप्त एक बार थोड़ी देर के लिए रुके।

उसके बाद उन्होंने कहना शुरू किया— और ताज्जुब की बात यह कि अलग चेंबर मिलना ही सुव्रत के लिए विधाता का आशीर्वाद साबित हुआ। उस समय भला क्या सुव्रत ने ऐसा सोचा था ? क्योंकि कुछ ही सालों के बाद वह गरीब सुव्रत, वह ब्रीफलेस एडवोकेट सुव्रत, स्कूल और कॉलेज का लास्ट ब्वाय सुव्रत हठात् पचास-साठ लाख रुपयों का मालिक बन जाएगा, भला ऐसा कौन उस समय सोच पाया था ?

क्लब में बैठे जो लोग मिस्टर सेनगुप्त के मुंह से सुव्रत का किस्सा सुन रहे थे, वे खूब उत्तेजित हो उठे। उन्होंने पूछा, "यह कैसे मुमकिन हुआ मिस्टर सेनगुप्त ? आपका दोस्त लाखों रुपयों का मालिक कैसे बन बैठा ?"

राजगोपालाचारी साहब ने पूछा, "क्या आपके दोस्त ने खूब स्ट्रगल किया था ? स्ट्रगल किये बिना तो कोई इतने रुपये अर्जित कर नहीं सकता। या फिर आपके दोस्त के नाम कोई लॉटरी खुल गयी थी ?"

मिस्टर सेनगुप्त ने कहा, "नहीं, कतई नहीं। उसने स्ट्रगल बिलकुल नहीं किया। उसे लॉटरी में रुपये मिले हों, ऐसी बात भी नहीं। सिर्फ एक एक्सिडेंट के बदौलत सुव्रत इतने रुपयों का मालिक बन बैठा था। सिर्फ एक एक्सिडेंट...।"

मिस्टर सेनगुप्त की बातें सुनकर सबों के कान खड़े हो गये। उन्होंने पूछा, "एक्सिडेंट ? कैसा एक्सिडेंट ?"

मिस्टर सेनगुप्त ने हठात् अपने पैंट की जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकालकर सबों को दिखाते हुए कहा, "यह देखिए, यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलीग्राम... ।"

सभी हैरान रह गये । आखिर एक टेलीग्राम के साथ इस कहानी का क्या संबंध हो सकता है !

मिस्टर सेनगुप्त ने कहा, "यह टेलीग्राम आज कुल तीन घंटे पहले मुझे मिला है । टेलीग्राम मिलते ही आप लोगों को दिखाने के लिए मैं साथ लेता आया हूं ।"

मिस्टर मुदालियर ने पूछा, "यह किसका टेलीग्राम है ? इस टेलीग्राम में क्या लिखा है ?"

और भी बहुत-से लोगों ने यही सवाल दोहराया ।

मिस्टर सेनगुप्त ने टेलीग्राम को मोड़कर पुनः अपनी जेब के हवाले किया । उन्होंने कहा, "इस टेलीग्राम में क्या लिखा है, यह मैं इस वक्त नहीं बताऊंगा । जब मैं कहानी शेष करूंगा, उस समय यह टेलीग्राम मैं आपको पढ़कर सुना दूंगा । इसके बाद सुव्रत का क्या हुआ, यही किस्सा पहले सुनाता हूं ।"

सुव्रत के दुःख-भरे जीवन की कहानी मैं आपको पहले ही सुना चुका हूं । उसने शादी भी की थी । उसके बाद उसे एक लड़की भी हुई थी । यह सारी बातें मैं नहीं जानता था, क्योंकि उस समय मैं बिलासपुर में अपनी नौकरी में बहुत ही व्यस्त था । जब मुझे कुछ फुरसत मिली, तब तक कितने ही साल गुजर चुके थे । मैंने सोचा कि अब कलकत्ता जाकर छुट्टी मनायी जाए । मैंने उस बार लंबी छुट्टी ले ली थी । एक अरसे से सुव्रत की कोई खबर नहीं मिली थी । छुट्टी लेकर कलकत्ता जाने के बाद मुझे सुव्रत की बात याद आयी । मैं उसके केलाबगान

वाले खंडहरनुमा घर में गया था । उसका नाम लेकर पुकारने पर एक अनजान आदमी घर से निकलकर बाहर आया ।

मैंने पूछा, 'सुव्रत सरकार घर में हैं क्या ?'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'वे तो अब यहां नहीं रहते । उन्होंने अपना नया मकान तैयार किया है । इस समय वे अपने नये मकान में ही रहते हैं ।'

मैं तो उस आदमी की बातें सुनकर हैरान रह गया । सुव्रत को आखिर इतने रुपये कहां से मिले कि उसने अपना नया मकान तैयार कर लिया है ? कहां से उसे इतने रुपये मिले... ?

मैंने फिर पूछा, 'क्या आप सुव्रत सरकार के नये मकान का पता बता सकते हैं ?'

उस आदमी ने सुव्रत का पता बताया । मैंने पता अपनी डायरी में नोट किया । पहले जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते को हरीसन रोड कहा जाता था, उसका नाम बदलकर अब महात्मा गांधी रोड कर दिया गया है। उसी महात्मा गांधी रोड के पश्चिम की तरफ भीमराज ज्वालाप्रसाद की एक तीनतल्ला हवेली है। यह हवेली एक करोड़पति की हवेली के रूप में कलकत्ता में जानी जाती है। भीमराज ज्वालाप्रसाद का नाम लेते ही सभी जान जाएंगे। वे लोग इतने प्रसिद्ध आदमी हैं।

सो ठीक उसके पूरब में एक गली है। उस गली पर जो पहला मकान है, वही है सुव्रत का घर। मैं घर के सामने कुछ क्षणों तक ठगा-सा खड़ा रह गया। मैंने देखा कि बिलकुल नयी बिल्डिंग थी। दीवारों पर, दरवाजों पर और खिड़कियों पर नये रंग की आभा बिखर रही थी। गेट के पास दीवार पर एक सफेद संगमरमर जड़ा हुआ था। उसके ऊपर लिखा था— 'सुव्रत सरकार, एडवोकेट'।

मैं जितना देखता जाता था, उतना ही ज्यादा हैरान होता जाता था।

आखिरकार, कॉल-बेल दबाने पर एक आदमी ने दरवाजा खोला। उसने पूछा— 'आप किससे मिलना चाहते हैं ?'

मैंने पूछा— क्या सुव्रत सरकार घर पर हैं ?

उस आदमी ने पूछा, 'आपका नाम ?'

मैंने अपना नाम बताया।

फिर क्या था, थोड़ी ही देर में दौड़ता हुआ सुव्रत आया और उसने मुझे पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया। उसने कहा, 'अरे, इतने दिनों के बाद तू आया है ? तुझे मेरा पता-ठिकाना कहां से मिला ?'

मैंने सब कुछ विस्तारपूर्वक बताया। मैंने यह भी बताया कि किस वजह से मैं इतने दिनों तक उससे संपर्क नहीं कर पाया था।

मुझे देखते ही सुव्रत मानो खुशी से पागल हो गया था। वह चीखते हुए अपनी पत्नी को पुकारने लगा। कहने लगा, 'गौरी, इधर आओ तो ! देखो, कौन आया है !!'

सुव्रत की स्त्री गौरी भी आयी। परस्पर नमस्कार का आदान-प्रदान हुआ। कभी यह सुव्रत केलाबगान की झोपड़पट्टी में रहा करता था, इस घर में बैठकर ये सारी कल्पनाएं करना भी जैसे पाप लगने लगा।

मैं भोजन करके ही गया था। अतः यहां खाने का सवाल था ही नहीं। सुव्रत एवं उसकी पत्नी ने भी भोजन कर लिया था। उसके बाद मैंने सुव्रत से पूछा, 'तू आज कोर्ट में नहीं जायेगा क्या ?'

सुव्रत ने कहा, 'मैं तो अब कोर्ट में जाता ही नहीं।'

'क्यों ?'

सुव्रत ने जवाब दिया, 'भाई, अब कोर्ट में जाकर क्या होगा ? पहले मुझे रुपयों के लिए कोर्ट में जाना पड़ता था। अब तो मेरे पास बेशुमार रुपये हैं। इस वक्त मैं करीब पचास-साठ लाख रुपयों का मालिक हूं।'

मैंने पूछा, 'आखिर इतने रुपये तुझे कहां से मिले ?'

सुव्रत ने कहा, 'यह रामकहानी बहुत ही लंबी है। इसे सुनाने में बहुत वक्त लगेगा।'

मैंने कहा, 'सुव्रत, तू यह किस्सा सुना ही सही। इसे सुनने की बड़ी इच्छा हो रही है।'

सुव्रत ने कहा, 'यह जो पास में भीमराज ज्वालाप्रसाद की हवेली देख रहे हो न, इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमराजजी ने मुझे इतने लाख रुपये दिये हैं।'

'लेकिन उन्होंने तुझे रुपये क्यों दिये ?'

सुव्रत ने उस दिन जो घटना सुनायी, उसे सविस्तार सुनने के बाद मैं हैरान रह गया। अगर कोई लॉटरी में पांच-दस लाख रुपये पाता है, तो सुनकर हम चौंक उठते हैं। हम लोगों को ईर्ष्या होती है। हमारे मन की शांति नष्ट हो जाती है। लेकिन सुव्रत को लाखों रुपये मिलने का किस्सा सुनने के बाद मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा।

घटना इस प्रकार है।

★ ★ ★

कलकत्ता में उस समय पहली बार युक्त फ्रंट का शासन आया था। चारों तरफ थी राजनीतिक अस्थिरता। सड़कों पर रोज ही जुलूस निकलते। आदमी को जिंदा रहने का हक देना होगा...। आदमी को काम देना होगा, खाना देना होगा और देना होगा सिर छुपाने के लिए मकान। आदमी को शिक्षा देनी होगी, ताकि वह मानव-समाज में सिर ऊंचा करके खड़ा रह सके।

और जो यह सब नहीं दे सकेंगे, यह सब देने से इनकार करेंगे, उनका हम नामो-निशान मिटाकर ही दम लेंगे। अमरीका ने सन १७७५ में इसी मांग को लेकर लड़ाई की थी और अंगरेजों को देश से खदेड़ दिया था। सन १७८९ में फ्रांस की जनता ने इसी बात को लेकर संघर्ष किया था। रूसो के द्वारा लिखित पुस्तक ने उन्हें प्रेरणा दी थी कि 'मैन इज बोर्न फ्री, बट एवरीव्हेयर ही इज इन चेंस' अर्थात, मनुष्य जब जन्म लेता है, तब वह स्वाधीन होकर

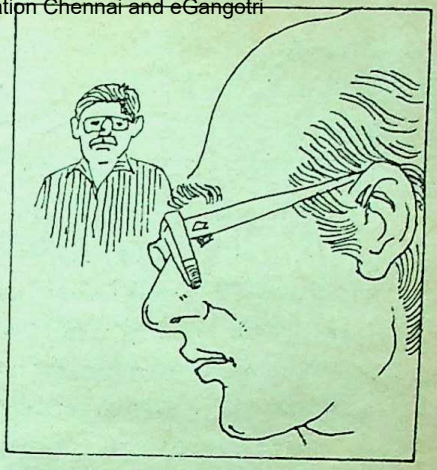

ही जन्म लेता है। लेकिन मनुष्य के ही षड्यंत्रों में घिरकर उसे आजीवन गुलामी की जिंदगी बसर करनी पड़ती है। इसके बाद सन १९१७ में रूस के लोग भी इसी हक को प्राप्त करने के लिए जार-तंत्र के विरुद्ध कमर कसकर खड़े हो गये थे। वहां के लोगों को उस समय विजयश्री भी मिली थी।

इस बार थी हिंदुस्तान की बारी।

यहां भी थी वही हक की लड़ाई। 'हमारी मांगें पूरी करो, नहीं तो गद्दी छोड़ दो। हम से जो टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा...।'

उस दिन मीलों लंबा जुलूस महात्मा गांधी रोड से गुजर रहा था। यकायक रास्ते पर ही एक हिंसक कांड हो गया। पास ही थी भीमराज ज्वालाप्रसाद की हवेली। यकायक उसी हवेली के ऊपरी तल्ले से जुलूस में चलनेवाले निरीह लोगों को लक्ष्य कर बंदूक गरज उठी। गोली लगते ही कई लोग वहीं सड़क पर धराशायी हो गये। देखते ही देखते अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के नाम पर नामांकित पथ खून से लाल हो उठा। उसके बाद ही शुरू हुई पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सरगर्मी। पुलिस के अफसर भीमराज ज्वालाप्रसाद की हवेली में घुस पड़े— खूनी की खोज करने के लिए। कुछेक नौकर और दरबान पकड़े गये। पुलिस अफसर ने उनसे पूछा, 'गोली किसने चलायी है ?'

'हम लोग कुछ नहीं जानते। हम लोगों ने गोली नहीं चलायी है हुजूर।'

'तुम लोगों के पास जरूर बंदूक है। हम लोग हवेली की तलाशी लेंगे।'

पुलिस ने हवेली की तलाशी ली। उन्होंने चप्पा-चप्पा छान मारा, लेकिन कहीं भी बंदूक न मिली।

'आपके मालिक भीमराज जी कहां हैं ?'

'वे घर पर नहीं हैं।'

लेकिन पुलिस इतनी बेवकूफ नहीं थी। पुलिस ने समझ लिया कि गोली इसी हवेली से चलायी गयी है। लेकिन गोली चलानेवाला मौका पाकर पुलिस की आंखों में धूल झोंककर नौ-दो ग्यारह हो चुका है।

उस दिन भीमराजजी नहीं मिले। लेकिन दूसरे दिन उन्हें गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन ले जाया गया। उनकी एक रात हवालात में ही बीती। दूसरे दिन उन्हें अदालत में हाजिर किया गया। भीमराजजी पर खून करने का अभियोग लगाया गया और भीमराजजी की तरफ से वकील हुए सुव्रत सरकार।

★ ★ ★

मैंने सुव्रत से पूछा, 'उसके बाद ?'

सुव्रत ने कहा, 'उसके बाद भीमराजजी के वकील के रूप में मैंने अदालत में यह प्रमाणित कर दिया कि जुलूस के ऊपर जिस दिन गोली चली थी, उस दिन मेरे मुवक्किल भीमराज दिनभर मेरे चेंबर में ही बैठे हुए थे। मैं बार एसोसिएशन का प्रेसिडेंट हूं। इसलिए मुझे लाइब्रेरी में एक अलग चेंबर मिला हुआ है। आखिरकार मैजिस्ट्रेट ने भीमराजजी को बेकसूर घोषित कर दिया। आज मेरे पास जो कुछ दौलत है, वह भीमराजजी की वजह से ही है। यह मकान, गाड़ी और बैंक-बैलेंस— सब मिलाकर मैं इस वक्त पचास-साठ लाख रुपये का मालिक हूं। तुम लोग सभी पढ़ाई में मुझसे अच्छे रहे हो। लेकिन तुम में से कोई भी इतने रुपये कमा पाया है क्या ? तुम ही बताओ, एक जिंदगी में भला कोई इससे ज्यादा और क्या चाहेगा ?'

उसके बाद मैं उसी रात बिलासपुर लौट आया।

जो लोग मिस्टर सेनगुप्त से सुव्रत सरकार का किस्सा सुन रहे थे, वे पूछ बैठे, "उसके बाद ?"

मिस्टर सेनगुप्त ने कहा, "अब आप ही बताइए कि मेरा दोस्त इतने रुपयों का मालिक क्यों बना ? क्या उसने कोई स्मगल किया था ? गोली चलने की वह घटना अगर नहीं घटती, तो क्या वह इतने रुपयों का मालिक बन पाता ?"

मिस्टर मुदालियर ने पूछा, "और वह टेलीग्राम ? उस टेलीग्राम की बात तो आपने बतायी ही नहीं।"

मिस्टर सेनगुप्त ने कहा, "हां लगभग दो घंटे पहले मुझे एक टेलीग्राम मिला है। अब उस टेलीग्राम के बारे में ही बताता हूं। पिछले दुर्गा-पूजा में मैं फिर कलकत्ता गया था। लगभग बारह वर्षों के बाद फिर सुव्रत से

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलाकात हुई। मैंने देखा कि सुव्रत और भी बूढ़ा हो गया था। सिर के सारे बाल सफेद हो चुके थे। वह पहचान में ही नहीं आ रहा था।

वह बाहर के कमरे में एक तख्तपोश पर लेटा हुआ था। सोफा-सेट वगैरह जो कुछ भी थे, इस बार नजर नहीं आ रहे थे। वह मुझे देखने ही बैठने लगा था, लेकिन मेरे मना करने पर वह फिर लेट गया। मैंने पूछा, 'सुव्रत, तू बीमार है क्या ?'

'नहीं।'

'तो फिर ? तू इस तरह बेवक्त क्यों लेटा हुआ है ? अगर तबीयत खराब नहीं है, तो फिर तुझे क्या हुआ है ?'

तभी एक महिला कमरे के भीतर आयी। लेकिन मुझे देखते ही वह ठिठककर खड़ी रह गयी।

सुव्रत ने कहा, 'यह मेरी लड़की है— कांता।'

कांता को मैंने पहले नहीं देखा था। मैंने उससे पूछा, 'बेटी, तेरे पिताजी को क्या हुआ है ?'

कांता ने जवाब दिया, 'मां के गुजर जाने के बाद पिताजी ऐसे ही हो गये हैं।'

'तुम्हारी मां गुजर गयी, गौरी भाभी इस दुनिया में नहीं रही ?'

'हां।'

'आखिर उनकी मौत कैसे हुई ?'

'कैंसर से !'

यह कहकर कांता ने अपनी मां की चिकित्सा की पूरा रामकहानी सुना डाली। कांता से ही मुझे पता चला कि सुव्रत ने भारत में कैंसर के जितने भी बड़े-बड़े अस्पताल हैं, उनमें अपनी पत्नी की चिकित्सा करायी थी। आखिरकार, वह अपनी पत्नी को इलाज के लिए अमरीका, जरमनी, इंगलैंड— हर जगह ले गया था। इतना बड़ा मकान जो था, उसे भी बंधक रखना पड़ा था। उसने अपनी पत्नी के इलाज में कोई कमी नहीं रहने दी थी।

मैं सुव्रत से क्या कहूं, यह समझ में ही नहीं आ रहा था। पिछली बार सुव्रत ने ही मुझे कितना-कुछ कहा था। उसकी बातें मेरे कानो में मानो पुनः गूंजने लगीं। सुव्रत ने कहा था, 'तुम लोग सभी पढ़ाई में मुझ से अच्छे रहे हो। लेकिन तुम में से कोई भी इतने रुपये कमा पाया है क्या ? तुम ही बताओ। एक जिंदगी में भला कोई इससे ज्यादा और क्या चाहेगा ?'

सुव्रत ने बड़ी ही तकलीफ से कहा, 'जानता है रे, एक सुयोग्य लड़का देखकर मैंने कांता के हाथ पीले कर दिये थे। लेकिन शादी के सात दिनों के बाद ही विधाता ने उसकी मांग का सिंदूर पोंछ डाला। वह अभागी विधवा होकर मेरे पास लौट आयी है।'

उसके बाद मैं और कितनी देर तक सुव्रत के पास बैठा रहा, पता नहीं। जीवन का सारा गणित ही मानो गलत हो गया।

मुझे याद है कि लौटते वक्त मैंने सुव्रत की लड़की कांता को अपना बिलासपुर का पता लिखा दिया था। मैंने कहा था कि अगर संभव हो सके तो अपने पिताजी के स्वास्थ्य के संबंध में मुझे चिट्ठी लिखकर खबर देना। देखो, भूल न जाना। अगर मुझे छुट्टी मिली, तो मैं जल्दी ही फिर कलकत्ता आऊंगा।

यह सारी बातें हैं आज से करीब छह महीने पहले की। उसके बाद आज तीन घंटे पहले ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे यह टेलीग्राम मिला है। यह देखिए ! यह कहकर मिस्टर सेनगुप्त ने अपनी जेब से फिर वह मुड़ा हुआ टेलीग्राम बाहर निकाला।

मिस्टर रामाशीष शर्मा ने पूछा, "इस टेलीग्राम में क्या लिखा है ?"

मिस्टर मुदालियर, मिस्टर राजगोपालाचारी सभी अधीर हो उठे। उन्होंने पूछा, "बताइए न मिस्टर सेनगुप्त, इस टेलीग्राम में क्या लिखा है ?"

मिस्टर सेनगुप्त टेलीग्राम पढ़ने ही जा रहे थे। तभी कटनी ब्रांच की रेल के इंजन की सीटी बज उठी।

सीटी के थमते ही मिस्टर सेनगुप्त ने वह टेलीग्राम पढ़ा। टेलीग्राम में लिखा था—

'पिताजी ने पिछली रात आत्महत्या कर ली— कांता।'

कटनी ब्रांच की ट्रेन के इंजन ने पुनः एक बार सीटी बजा दी। लेकिन सभी को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सीटी की आवाज नहीं थी, वह थी आर्त्तध्वनि। ऐसा लगा मानो ट्रेन के इंजन ने चलना शुरू करने के पहले कई बार आर्त्तनाद किया था।

मिस्टर सेनगुप्त थोड़ी देर के लिए रुके। उसके बाद वे फिर कहने लगे, "सुव्रत ने जीवन में जो कुछ चाहा था, वह पाया था। दूसरी तरफ जो उसने नहीं चाहा, वह भी शायद उसे मिला था। ऐसा क्यों हुआ ? मुझे लगता है कि सुव्रत ने सुख चाहा था, कल्याण नहीं। जो सुख चाहता है, वह सिर्फ पाना ही चाहता है, किंतु जो कल्याण की कामना करता है, वह पाने के साथ-साथ कुछ देना भी चाहता है। इसलिए 'पाने' के साथ 'देने' के सामंजस्य का ही दूसरा नाम है कल्याण। इसीलिए मुझे वह अंग्रेजी कहावत फिर से याद आ रही है कि 'नो मैन कैन वी काल्ड हैप्पी अनटिल ही डाइज'। अर्थात, कोई आदमी तब तक सुखी नहीं कहा जा सकता, जब तक कि उसकी मृत्यु न हो जाए। अब आप ही बताइए कि सुव्रत ने आत्महत्या किया था या नहीं ! और यह भी बताइए कि स्वार्थ-सिद्धि को संघर्ष कहा जाएगा या नहीं।

अनुवाद : शंभुनाथ पाडिया 'पुष्प'

विश्व में एक अरब लोग रहते हैं बिना छत

एक अरब से अधिक लोग, जो विश्व की जनसंख्या का तकरीबन २५ प्रतिशत हैं, या तो बिना घर के हैं या अत्यधिक असुविधायुक्त घरों में या स्वास्थ्य की दृष्टि अनुपयुक्त वातावरण में रहते हैं। लगभग १० करोड़ लोगों के पास घर नहीं और ये सब गलियों में, पुलों के नीचे खाली स्थानों, दरवाजों के बाहर और गलियारों में रात बिताते हैं।

एक अनुमान के अनुसार लेटिन अमरीका में दो करोड़ बच्चे और युवा गलियों में रहते और सोते हैं। अफरीकी शहरों के ८० प्रतिशत से अधिक निवासी गंदी बस्तियों और छिन्न हुए मकानों में रहते हैं। ब्रिटेन में बेघर लोगों की संख्या २ लाख ५० हजार है जबकि संयुक्त राष्ट्र में इनकी संख्या २५ लाख से भी अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीपिकाएं

पतझड़

पाने को
नये का साथ
छोड़ देते हैं
पुरानों का हाथ

सूर्यास्त

निकला था
सूरज
देने को प्रकाश
रोक गया।
देखकर
दुनिया का संत्रास

—राजेन्द्र परदेसी

आधी सदी

उड़ती हुई गर्द हूं राहों की
आंख में चमक है गुनाहों की
जिंदगी ! अभी तूने देखा क्या है
सिर्फ आधी सदी हूं आहों की

उजाला

रात के दिन में/सबके सामने
दियासलाई की/तीली की आग से
मैंने अपना/दिल जला दिया अब
चारों तरफ/उजाला ही उजाला है. . .

—केदारनाथ कोमल

अर्थहीनता

पत्तों के
साथ-साथ
किसी लंबी सड़क पर
उठता-बैठता
हवा को
धूल बना जाता
कोई संवाद

जिंदगी

खामोशी से
जमीन कुरेदता. . . . .
एक अकेलापन

तुम और मैं

तुम—
मौसम एक
बदलता हुआ
मैं—
इंतजार एक बूढ़े की तरह
हांफता हुआ

—उषा कांता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधान

पत्नी की हठ

पदमकुमार जैन, श्रीडूंगरपुर : सन १९७८ में मेरा विवाह हुआ था। इसके पश्चात मेरी पत्नी बड़ी कठिनाई से दो बार मेरे घर आयी, वह भी पांच-दस दिन के लिए। सन १९८० से तो वह किसी भी स्थिति में मेरे पास आने के लिए तैयार नहीं है, जबकि मैं उसकी हर बात मानने के लिए सहमत हूं। किंतु उसका कहना है 'न तो मैं तुम्हारे घर रहूंगी, और न तलाक के लिए लिखकर दूंगी।' उसने मुझ पर पुरुषत्वहीन होने का आरोप लगाया है। उसके इस आरोप के उत्तर में मैं बंबई के ख्याति-प्राप्त चिकित्सकों से स्वयं का निरीक्षण करवाकर उनसे पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं सक्षम होने का प्रमाणपत्र भी ले चुका हूं।

तीन वर्ष पूर्व मैंने न्यायालय में मामला दायर किया था। वह आज तक न्यायालय में उपस्थित नहीं हुई, न मेरे मामले में कोई कार्रवाई हुई। कृपया उचित सलाह दें।

आपका झगड़ा न्यायालय में पहुंच चुका है। अब मुकदमे की क्या स्थिति है? न्यायालय के समन आपकी पत्नी ने लिये या नहीं? अगर अभी तक वह समन उसे नहीं मिले हैं तो समन मिल जाएं, इसके लिए शीघ्र कदम उठाने चाहिए। अगर साधारण रूप से समन दिया जाना संभव नहीं है, तो आप दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ५ नियम २० के अंतर्गत समन दिये जाने की कार्रवाई कर सकते हैं। इस नियम के अंतर्गत समन समाचार-पत्र में छापकर या घर के बाहर चिपकवाये जा सकते हैं। समन (सूचना) की अर्हता पूरी होने के बाद भी यदि आपकी पत्नी न्यायालय में उपस्थित नहीं हो, तो आप न्यायालय से एकतरफा कार्रवाई करने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। इससे आपके मुकदमे का निर्णय हो सकेगा।

पति द्वारा विश्वासघात

कखग : सन १९८० में मेरा विवाह वैदिक रीति से हुआ था। विवाह के दो-तीन मास बाद ही पति एवं उनके परिवार के अन्य लोगों ने दहेज को लेकर मुझे तंग करना शुरू किया। मैं सरकारी नौकरी में हूं, अतः मैंने इस परेशानी को गंभीरता से नहीं लिया। शादी के बाद पति मुझे यह सलाह देते रहे कि तुम मायके रहकर नौकरी करो और पैसा जोड़ो। बाद में मैं तुम्हें लिवा ले जाऊंगा। मैं स्वेच्छा से दो-तीन बार ससुराल भी गयी, लेकिन पति सामने नहीं आये।

बाद में उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया। अब उनके तीन बच्चे हैं। मेरे पति केंद्रीय सेवा में हैं। सलाह दें कि क्या मैं न्यायालय की शरण में जाऊं? क्या मुझे न्याय और पति को कठोर सजा मिलेगा?

हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह अवैध है। दूसरी महिला को कानून पत्नी के रूप में मान्यता नहीं देता। इस प्रकार का विवाह करनेवाला व्यक्ति दंड का अधिकारी भी होता है। केंद्रीय सेवा में लगे व्यक्ति को तो दूसरा विवाह करने की कतई अनुमति नहीं है, क्योंकि केंद्रीय सेवा में लगे व्यक्ति का पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह सेवा नियमों के भी विरुद्ध है।

आप न्यायालय में जाएं या नहीं, यह निर्णय तो आपको करना है। परंतु यदि आप न्यायालय में जाती हैं या पति के कार्यालय में इसकी शिकायत करती हैं, तो आपके पति के विरुद्ध कार्रवाई निश्चित ही हो सकती है।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

पति की बेरुखी

एम. सिंह, हलद्वानी : मैं आठ माह से अपने सास-ससुर के पास थी। पति दूसरे शहर में नौकरी करते थे। मार्च में पति का तबादला हमारे नजदीक के शहर में हो गया। उस शहर का रास्ता मात्र एक घंटे का है। वहां वे अपने पैतृक मकान में बड़े भाई-भाभी के साथ रहते हैं। पति मुझे अपने साथ नहीं रखना चाहते। कहते हैं, 'पिताजी लाये हैं। वे ही जानें।'

वे अब मेरी व्यक्तिगत डायरी और पत्र (जिसमें अपने प्रति पति के व्यवहार से दुःखित होकर मैंने एक मित्र से सलाह मांगी थी) के आधार पर संबंध-विच्छेद चाहते हैं। ससुर भी मुझे अपने साथ नहीं रखना चाहते। पति पहले से ही मना करते हैं। मैं अपने पति से अलग नहीं रहना चाहती। मैं हर हालत में उन्हीं के साथ रहना चाहती हूं। क्या व्यक्तिगत डायरी और पत्र के आधार पर वे विवाह-विच्छेद कर सकते हैं? ज्ञातव्य रहे, मैं पति के पास ही रहना चाहती हूं। इधर मैं दो माह से पिता के यहां हूं।

अभी तक आप दोनों पति-पत्नी हैं। पति के साथ रहने का आपको अधिकार है। आप अपने पति के पास जाकर रह सकती हैं। हो सकता है, आपके जाने से सद्भाव का वातावरण बन जाए।

कानून आपको पत्नी के रूप में अधिकार प्राप्त करने में सहायक हो सकता है। इसके लिए आपको दांपत्य अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत आवेदन करना होगा। पति के व्यवहार के आधार पर दुखी होने के बाद भी उनके साथ रहने की इच्छा-प्रदर्शन से यह माना जाएगा कि आपने उनके पुराने व्यवहार को भुला दिया है तथा आप पारिवारिक जीवन चलाने की दिशा में पहल करना चाहती हैं।

संपति का बंटवारा

श्यामकिशोर 'सरस', बाराबंकी : हमारे पिता एक किसान हैं। उन्होंने हमारे चाचा को शिक्षा दिलायी। फलतः वे पोस्ट ग्रेजुएट हैं। उन्होंने अपनी पत्नी अर्थात हमारी चाची के जेवर बेचकर पैसा बैंक व बीमे में जमा कर दिया। बाद में संपत्ति का बंटवारा करा लिया। अब वे कहते हैं कि उन्होंने जेवर बेचकर घर का खर्च चलाया। क्या पिता ने जो घर-खर्च किया, उसकी भरपाई हो सकती है?

घर-खर्च में जो रकम आपके पिताजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा दी, अब उसकी भरपाई होना संभव नही होगा।

मालिकाना हक कैसे मिले ?

भजनलाल शर्मा, हनुमानगढ़ : पिताजी ने सन १९६३ में एक सज्जन से एक प्लाट एक हजार रुपये में खरीदा था। उस समय एक रुपया पचास पैसे वाले सरकारी स्टांप पेपर पर इकरारनामा लिखा गया था, जिस पर बेचनेवाले व सौदा करानेवाले दलाल के हस्ताक्षर हैं। इकरारनामा लिखने के समय पांच सौ रुपये दिये गये थे और शेष पांच सौ रुपये रजिस्ट्री कराते समय देने की बात तय हुई थी। प्लाट बेचनेवाले सज्जन के पिता जीवित नहीं थे, दादाजी थे। प्लाट दादाजी के नाम ही था। रजिस्ट्री होने से पहले ही दादाजी की मृत्यु हो गयी अतः इस गमी के मौके पर पिताजी ने बिना लिखा-पढ़ी किये शेष पांच सौ रुपये उन सज्जन को दे दिये और उन्होंने प्लाट पर कब्जा पिताजी को दे दिया। इसके बाद वह सज्जन न जाने कहां चले गये, कुछ पता नहीं। इस तरह प्लाट की रजिस्ट्री नहीं हो सकी। कुछ वर्ष बाद हमने उस प्लाट पर एक दुकान बनवा ली। बिजली का मीटर हमारे नाम है, पिछले आठ साल से नगर पालिका को इसका हाउस टैक्स भी हम दे रहे हैं। इसका सही मालिकाना हक हमें कैसे मिले, इसके लिए हम क्या करें ? दुकान को किराये पर दें तो कोई परेशानी तो नहीं होगी ?

बिजली के मीटर के आपके नाम होने या संपत्ति-कर देने के आधार पर आप जमीन के स्वामी नहीं माने जा सकते। स्वामित्व के लिए इकरारनामे या विक्रय-पत्र का पंजीकरण होना आवश्यक है। परंतु सन १९६३ से जमीन का कब्जा आपके पास है। इसलिए आपको उस प्लाट से कोई निकाल नहीं सकता। मैं समझता हूं कि दुकान किराये पर देने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। किरायेदार से किरायेनामा अपने पक्ष में लिखवा लें तथा उसमें यह भी उल्लेख करवा लें कि वह दुकान पर आपका स्वामित्व स्वीकार करता है।

अशांति फैलाने की कोशिश

रवीन्द्रनाथ सिंह, छतारी जौनपुर : दो-तीन वर्ष पूर्व मेरे चाचा, जो बंबई में रहते हैं, मेरे पिताजी से अलग हो गये हैं। संपत्ति का भी बंटवारा हो गया है। जब भी वे बंबई से आते हैं, अशांति फैलाने की कोशिश करते हैं। मकान का भी बंटवारा हो चुका है, पर जब वे बंबई जाते हैं, तो अपने घर में ताला लगा जाते हैं और वापस आने पर दूसरा घर मांगते हैं। क्या हम कोई कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं ?

बंटवारा हो चुकने के बाद, प्रत्येक व्यक्ति का अपने हिस्से पर ही अधिकार रहता है। आपकी इच्छा से आपके भाग में रहने की बात तो स्वीकार की जा सकती है, परंतु वह आपके चाचा का अधिकार नहीं हो सकता। बंटवारा करते समय प्रलेख बनाये गये होंगे। अगर नहीं बने तो बंटवारा प्रमाणित करने के लिए क्या प्रलेख आपके पास हैं ?

उचित यह रहेगा कि अपने अधिकार की घोषणा के लिए न्यायालय में दावा कर दें। इसमें बंटवारे के आधार पर अपने अधिकार का उल्लेख करके न्यायालय से अधिकार घोषित करने के साथ-साथ दूसरे पक्ष पर आपके मामले में हस्तक्षेप करने से रोकने की भी प्रार्थना की जा सकती है।

ब्रिटेन में गत १९८४ से अब तक राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित चार धूम्रपान-निषेध दिवस के कारण लगभग १७,००० लोगों की अकाल मृत्यु होने से बच गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

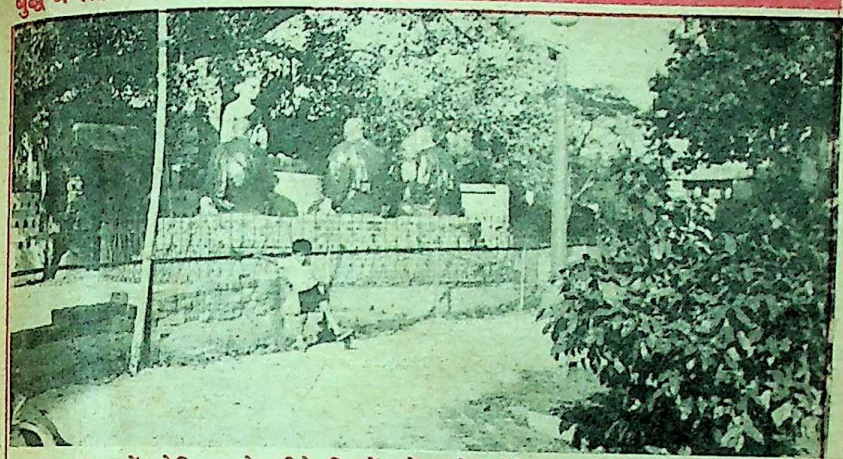

सारनाथ में बोधिवृक्ष के नीचे शिष्यों को उपदेश देते हुए भगवान बुद्ध

अश्वत्थ : वृक्ष राजाय ते नमः

वृक्षः जिसकी छाया में गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ

● रेखा रस्तोगी

प्रायः संसार के सभी देशों में वृक्षारोपण पुण्य कार्य समझा जाता रहा है। यह बात और है कि भौगोलिक स्थितियों के अनुसार कुछ वृक्ष ठंडे देशों के लिए उपयोगी और मान्य हैं, तो कुछ अन्य वृक्ष गरम देशों के निवासियों के लिए उपयोगी होने से श्रद्धा के विषय बन गये हैं। मिस्र, यूरोपीय एवं एशियायी देशों में अधिकतर मल्बरी ट्री, पाम ट्री या क्रिसमस ट्री— जैसे पेड़ों को अधिक मान्यता दी गयी है। भारत-जैसे गरम देश में अधिकांशतः छायादार पेड़ ज्यादा उपयोगी रहे हैं।

भारत में वृक्ष उसकी संस्कृति के प्राण एवं स्पंदन हैं। आदि काल से भारतवासी वृक्षों के नीचे पले, बढ़े, खेले, पढ़े और यहां तक कि भारतीय मनीषियों एवं तपस्वियों ने ज्ञान-प्राप्ति के लिए वृक्षों को चुना, उनकी छाया में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। पीपल एक ऐसा ही वृक्ष है, जिसके नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसी से पीपल को बोधिवृक्ष की संज्ञा से भी जाना जाता है। भारतीय धार्मिक कथाओं, लोक-गीतों और लोककलाओं में वृक्षों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसी कारण वृक्ष उनके हर त्योहार पर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उत्सवों से जुड़ गये।

एक प्राचीन पेड

घने पत्तों वाले और छायादार वृक्षों में पीपल का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। यह अति प्राचीन पेड़ है। मोहन-जो-दड़ो की खुदाई में प्राप्त मिट्टी की चौड़े पट्टी पर बनी एक ऐसे पेड़ की आकृति मिली है, जिसकी पत्तियां बीच में मोटी, आगे से नुकीली हैं, जिसके मध्य में एक मोटी नस है, इसके दोनों ओर छोटी-छोटी नसें ऊपर को उठी हुई अंकित हैं। यह आकृति आज से लगभग ३,५०० वर्ष पूर्व की है। पुरातत्ववेत्ताओं एवं वनस्पति के वैज्ञानिकों का मत है कि यह पेड़ पीपल के पेड़ से मिलता है। निश्चय ही पीपल का पेड़ उस समय के मानव-समाज में आज की तरह सम्मानित था।

पीपल को संस्कृत में 'अश्वत्थ' कहा गया है। भगवान कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय में पीपल को 'अश्वत्थः सर्ववृक्षणाम' कहकर सब वृक्षों में सर्वोपरि स्थान दिया है। विष्णु पुराण में वृक्षों के प्रसंग में पीपल का महत्त्व बताते हुए उल्लेख किया गया है। पीपल भगवान विष्णु का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मा और शिव का निवास भी इस वृक्ष के भिन्न-भिन्न भागों में माना गया है।

मूलतो ब्रह्मरूपाय, मध्यतो विष्णुरूपिणो, अग्रतः शिव रूपाय वृक्ष राजाय ते नमः।

ब्रह्मा के समान जड़वाले, विष्णु के जैसे मध्य भागवाले और शिव के रूप जैसे अग्रभागवाले, वृक्षों के राजा (पीपल) को नमस्कार है।

विष्णु पुराण में भी एक स्थल पर इस वृक्ष की विशालता का बोध कराते हुए यह भी कहा गया है कि जिस प्रकार एक नन्हे से बीज में विशाल पीपल का पेड़ छिपा है, उसी प्रकार ब्रह्म में सारा ब्रह्मांड समाहित है। लोक विश्वास है कि इस वृक्ष की परिक्रमा करने से तीनों देवों की पूजा संपन्न हो जाती है। साथ ही ऐसी भी लोक-मान्यता है कि शनिवार के दिन इस वृक्ष पर अन्य सभी देवता एकत्रित होते हैं, अतः शनिवार को पूजा करने से मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

अश्वत्थ अर्थात पीपल को विष्णु का प्रतीक माना गया है। उस वृक्ष के भिन्न-भिन्न भागों में ब्रह्मा और शिव का वास भी माना गया है। लोक-विश्वास है कि पीपल की परिक्रमा करने से तीनों देवों की पूजा संपन्न हो जाती है।

बिहार में गया नामक ऐतिहासिक तीर्थस्थल पर प्राचीन विशालकाय पीपल का पेड़ मंदिर के पार्श्वभाग में स्थित है। कहा जाता है कि गौतम को इसी पेड़ की छत्र छाया में 'अंतर्ज्योति ज्ञान' प्राप्त हुआ था। उन्होंने कई वर्ष इसी वृक्ष के नीचे कठिन तपस्या करते-करते व्यतीत किये थे। जब उन्हें 'बोध' हुआ तो इस वृक्ष के सघन पत्ते आनंद से झूम रहे थे, तभी से इस वृक्ष को 'बोधिवृक्ष' कहा जाने लगा। आज तक बौद्धधर्म के अनुयायी इस वृक्ष को बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रस्तर-शिल्प-कृति में बोधिवृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध

आदर और श्रद्धा के साथ देखते हैं। इसके पत्तों को पूजा-स्थल पर रखते और प्रसाद रूप में वितरित करते हैं। किन्हीं शुभकार्यों में जैसे शिशु का पहले-पहल स्कूल जाना या अन्य ज्ञान-विषय के कार्यों में शुभारंभ पर आशीर्वाद देने की वस्तुओं में पीपल का पत्ता ज्ञान-विषयक सामग्री के रूप में रखा जाता है।

बोधिवृक्ष और अशोक

बोधिवृक्ष के प्रति सम्राट अशोक की असीम श्रद्धा थी। बौद्ध धर्म में विश्वास एवं भक्ति होने के कारण अशोक शास्त्रोक्त विधि-विधानों के साथ इस वृक्ष की पूजा, अर्चना करता था और यहां तक कि वह वृक्ष को तरह-तरह से सुसज्जित करके उसका मनोरम शृंगार भी करता था। अशोक के इस वृक्ष को सुसज्जित करने के अद्भुत शौक के उन्माद के विषय में किंवदंती है कि उसने अपने रत्न-भंडार से अनेक बहुमूल्य रत्न-मुक्ताओं के हारों को इस बोधिवृक्ष पर समर्पित कर दिये थे। जब कई रत्नहारों के रत्न-भंडार से अदृश्य हो जाने का कारण, अशोक की पटरानी तिष्यरक्षिता को पता लगा तो उसने क्रोधित होकर इस बोधिवृक्ष में आग लगवा दी। क्या चमत्कार था कि भयंकर आग की धू-धू में करती लपटों की लपेट में आकर भी यह वृक्ष पूरा नहीं जल पाया और लपटों के शांत होने पर कुछ ही दिनों सौभाग्य से अर्द्ध दग्ध अंगों से फिर कोपलें फूट आयीं और कुछ सदियों तक पुनः यह अपनी यशोगाथा के साथ झूमता रहा और लहरहाता रहा। लेकिन नहीं, अभी उसके संकट यहीं समाप्त नहीं हुए।

कुछ सदियों पूर्व वह स्त्री के भयंकर कोप का भाजन हुआ था, तो सातवीं शती में बौद्धधर्म के कट्टर विरोधी एक शासक ने इस वृक्ष को कटवाकर निर्मूल कर दिया था। किंतु भूमि के नीचे गहराई तक पहुंची इसकी जड़ें वर्षाऋतु में जल से पुनर्जीवन प्राप्त कर, पुनः शाखाओं और नव पल्लवों से सुशोभित हो गयी। सहनशील, साहसी, दृढ़ संकल्पी तपस्वी स्वरूप इस वृक्ष को प्राकृतिक प्रकोप का भी सामना करना पड़ा। सन १८७६ में प्रलयंकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूफान से इस वृक्ष को पुनः क्षति का सामना करना पड़ा, तूफान के थपेड़ों से जूझते हुए यह वृक्ष जड़ सहित धरती पर आ गिरा। तब बौद्धधर्म अनुयायियों ने बुद्ध की प्रतीक इस वृक्ष की तन्मयतापूर्वक सेवा सुश्रुषा की और और उसे बुद्ध का वरदान ही समझिए कि नवांकुरों ने प्रस्फुटित हो, सभी सेवाधर्मियों को प्रफुल्लित कर दिया।

दीर्घायु पीपल

पीपल का वृक्ष एक ही पिंड का तना है। इसका वानस्पतिक नाम फाइकस रेलिमासो है। इसे उगाने के लिए मानव को किंचित मात्र भी श्रम नहीं करना पड़ता चिड़ियों द्वारा कुतरे या अधखाये अंजीर के समान असंख्य बीजों वाले फल यत्र-तत्र जमीन और पुराने भवनों की छतों, दीवारों पर गिर जाते हैं। वहीं पर ये फलों के बीज नमी पाकर फूट पड़ते हैं। कभी-कभी तो ये बीज दीवार की नालियों और पाइपों के पीछे से भी पीपल के पेड़ के रूप में लटकते रहते हैं।

पीपल की आयु बहुत लंबी होती है। या यों कहिए कि इस वृक्ष की बड़ी पुरानी शाखाओं के कोटरों में बीज गिरते रहते हैं, फलते-फूलते रहते हैं, शाखाओं में से पुनः नन्हे-नन्हे पेड़ निकलते रहते हैं। पेड़ के बहुत पुराने होने पर इसकी जड़ें ऊपर को आने लगती हैं, तथा जटाएं नीचे जमीन की ओर धंसती जाती हैं, जिससे इस पेड़ की जड़ें और मजबूत बन जाती हैं।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के जिले में शुक्रताल में एक पीपल है, जिसे ढाई हजार वर्ष पुराना बताया जाता है। इसी प्रकार हरिद्वार एवं कनखल में स्थित अनेक पेड़ काफी पुराने हैं। ईसा से तीन सौ और चार सौ शताब्दी पूर्व बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार सर्वत्र एशिया में हो गया था, तब इस वृक्ष का भी भगवान बुद्ध के प्रतीक रूप में सुदूर देशों में आरोपण किया गया था। ईसा से २८८ वर्ष पूर्व एक पीपल भारत से लंका ले जाया गया था। यह वृक्ष अब विशालकाय सघन वृक्ष के रूप में आज भी स्थित है। इस वृक्ष के लिए एक विभाग बनाया गया है, जो पिछली शताब्दियों से इसके फलने-फूलने और देखभाल करने का लेखा-जोखा रखता है।

एक उपयोगी वृक्ष

पीपल के वृक्ष के विषय में जनधारणा है कि इसके नीचे झूठ नहीं बोलना चाहिए और न ही किसी को धोखा देना चाहिए। पीपल के वृक्ष की छाल, पत्ते और लकड़ी भी मनुष्य के लिए अनेक प्रकार से उपयोगी और लाभदायक है। इसकी छाल से निकाला गया रस दांतों और मसूड़ों के लिए लाभदायक होता है। इसके चौड़े पत्तों पर लाख के कीड़ों को पाला जाता है। पीपल की लकड़ी से बक्से और बड़े-बड़े डिब्बे तैयार होते हैं, जिनमें सामान पैक करके बाहर भेजा जाता है। इस प्रकार दैत्याकार विशाल और महाकाय पीपल का योगी वृक्ष अनेक प्रकार से उपयोगी है। अब भी भारत के जनमानस में वही आदर और सम्मान बनाये हुए है।

—९/२०९, सेक्टर-३
राजेन्द्रनगर, साहिबाबाद-२०१००५
कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकार : गौरांग चरण

पारंपरिक शैली में चित्रित बुद्ध

नयी दिल्ली स्थित श्रीलंका बौद्ध विहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया : सूरज एन. शर्मा

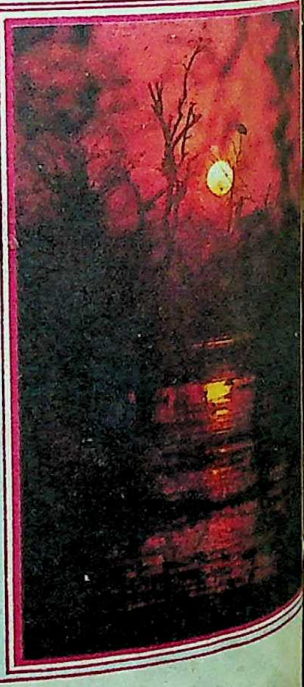

संपूर्ण जगत की आत्मा सूर्य को ही माना गया है। सूर्य ही प्रकृति का मुख्य केंद्र है। शारीरिक शक्तियां, स्थिति, विकास, सभी कुछ सूर्य के द्वारा ही निर्भर है। भारतीय धर्म और संस्कृति का एक प्रमुख अंग है सूर्योपासना। सूर्य के नजदीकी संपर्क से ही हमें पूर्ण स्वस्थता का अनुभव होता है।

शास्त्रों में सूर्योपासना की महिमा का गुणगान किया गया है। हमारे आचार्यों ने सूर्य की गुणवत्ता-महत्ता को सैकड़ों वर्ष पहले ही खोज लिया था। इसी कारण सूर्य को देवताओं की संज्ञा में पिरोया गया है। सूर्य की अनेक क्रियाएं धार्मिक कर्मकांड में सम्मिलित की गयी हैं। सूर्य यज्ञ, सूर्य नमस्कार, सूर्य योग, सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणायाम, सूर्योपासना, आदि प्रमुख धार्मिक कर्मक्रियाएं हैं।

यजुर्वेद में सूर्य महिमा को मानव कल्याण का स्रोत कहा गया है। 'देवताओं के द्वारा धारण किये गये चक्षु रूप सूर्य, पूर्व दिशा में ही उदित होते हैं। सूर्य कृपा से हम सौ साल तक जगत को देखें। सौ साल तक बिना कष्ट के जीवित रहें। सौ साल तक बोलें, सुनें और दीनता रहित रहते हुए सौ शरदों को पूरा करते हुए और अधिक जीवनकाल तक मौजूद रहें।'

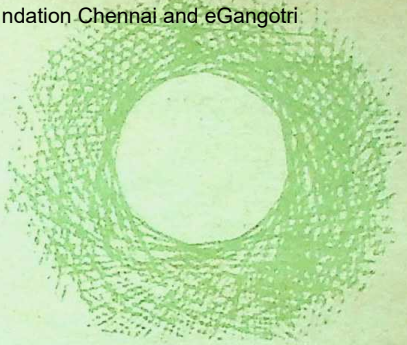

हेतु एकदम सही उपाय माना गया है। यदि सूर्य सूक्त के मंत्रों के साथ-साथ हवन भी किया

शास्त्र और विज्ञान में सूर्य की महिमा

● अशोक श्रीवास्तव 'अंजान'

संध्या वंदनबाड़ी में सूर्य को अर्घ्यदान दिया जाता है, इसलिए सूर्य को अर्घ्यदान का प्रमुख पात्र भी माना जाता है। अर्चना करते समय सूर्य की ओर मुख किया जाता है। गायत्री मंत्र हिंदू धर्म का उच्च और श्रेष्ठतम मंत्र माना जाता है और गायत्री का देवता सूर्य ही है। ऋग्वेद में भी सूर्य महिमा उपदेश है।

रोग-शत्रु सूर्य

शास्त्रों में सूर्योपासना की अनेक विधियां हैं। सूर्योपासना की विधियों से कई रोगों के निवारण की भूमिका निभायी और संपादित की जा सकती है।

सूर्य सूक्त का पाठ शक्ति, साहस, स्फूर्ति, आरोग्य प्राप्ति और बलिष्ठता एवं मनःविकास

जाता रहे तो अत्यधिक लाभों की कामना पूर्ण की जा सकती है।

सूर्य की किरणें मानव के शरीर और मस्तिष्क को तो स्वस्थ रखती ही हैं साथ ही रोगों से छुटकारा तथा कीटाणुओं को नष्ट भी करती हैं। रोगों से संरक्षण और उनके निवारण की अपार सामर्थ्य है सूर्य किरणों में, किंतु इन्हें निश्चित और सही विधि के अनुसार ही ग्रहण करने से उत्तम व आशाजनक लाभ की प्राप्ति

सूर्य की धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु वैज्ञानिक दृष्टि से भी विशेष महत्ता है। सूर्य किरणों में रोग प्रतिरोध और रोग विनाश की अद्भुत शक्ति बतायी जाती है।

मई, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। हर समय धूप में बैठने पर हमेशा लाभ नहीं होता। अतः व्यक्ति को उतनी ही धूप लेनी चाहिए जितनी वह सहन कर सके और रोग दूर हो सके। धूप लेने का सबसे उत्तम समय प्रातःकाल का ही होता है।

सूर्य स्नान का मतलब है व्यक्ति के नग्न शरीर पर सूर्य की किरणें पड़ना। सूर्य की श्रेष्ठ स्नान विधि, प्रातःकाल धूप में व्यायाम, टहलना तथा खेलना-कूदना है। व्यक्ति के लिए यही विधि उत्तम है। रोगी व्यक्ति को चारपाई, तख्त पर बैठाकर या लिटाकर धूप स्नान कराया जा सकता है। वैसे साधारणतः एक घंटे तक सूर्य स्नान किया जा सकता है। जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा हो वह उचित वस्त्र पहनकर नग्न शरीर पर अपनी इच्छानुसार ही धूप ग्रहण कर सकता है, लेकिन रोगी व्यक्ति के लिए यह विधि हानिकारक भी हो सकती हहै। रोगी को धीरे-धीरे ही धूप लेने की विधि अपनानी चाहिए और इसके लिए रोगी को प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए।

अत्यधिक कमजोर रोगी को ज्यादा समय तक सूर्य स्नान नहीं करना चाहिए। सूर्य स्नान करते समय थोड़ी-थोड़ी देर बाद व्यक्ति के शरीर का तापमान बढ़ जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति को पानी द्वारा स्नान जरा रुककर ही करना चाहिए। सूर्य स्नान के बाद अगर थोड़ा-सा व्यायाम कर लिया जाए और फिर उसके बाद जल स्नान किया जाए तो बहुत ही श्रेयष्कर रहता है। सूर्य स्नान से पहले रोगी के शरीर में अगर तेल की हलकी मालिश कर दी जाए तो रोगी को इसका पूरा लाभ मिलता है। यह विधि तभी अपनायी जा सकती है जब रोगी धूप सहने के योग्य न हो। बच्चों के लिए यह विधि सोने में सुहागा-जैसी ही है।

उपर्युक्त सभी नियमों के द्वारा किया गया सूर्य स्नान सभी तरह से लाभप्रद ही होता है।

सूर्य स्नान में वैज्ञानिक मत

डॉ. चार्ल्स एफा हैलेन तथा लंदन के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डब्लू. एम. फ्रेजर का मत है कि संसार में जितनी भी शक्तियां विकसित हुई हैं, वे सभी सूर्य के कारण ही हुई हैं। सूर्य की किरणें न होतीं तो कुछ भी विकसित होने की कल्पना नहीं की जा सकती थी। डॉ. फ्रेजर लिखते हैं कि 'सूर्य किरणों में जीवाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य उनमें निवास करनेवाली अल्ट्रा वायलट किरणों के कारण ही होती हैं।' डॉ. हानेग का मत है कि रक्त का पीलापन, पतलापन, लौह (आयरन) की कमी, कमजोर पेशियों की शिथिलता, थकान आदि रोगों में सूर्य की सहायता से उपचार करना बहुत लाभप्रद है।

फ्रांस के विश्वविख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मार्सेल पोमेलोक्स का मत है कि सूर्य और हृदय का बहुत ही नजदीकी रिश्ता है। उनका का कहना है कि जब सौर मंडल में तूफान आ चुकते हैं, तब हृदय के दौरे पड़ते हैं। तूफानों के पहले पड़नेवाले दौरों की तादाद तूफानों के बाद चौगुनी हो जाती है। वे आगे लिखते हैं— सूर्य में जितनी रोग नाशक शक्ति है, उतनी संसार की किसी भी वस्तु में नहीं है।

—लक्ष्मीनारायण
लक्ष्मीनारायणजी मंदिर के
सूरजपोल
जयपुर (राज
कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर-घर बिजली पहुंचाये सूरज

● भगवती प्रसाद डोभाल

सूर्य-उपासना भारत में ही नहीं, संपूर्ण विश्व में की जाती है। विभिन्न नामों से इसकी महिमा पर, नतमस्तक मनुष्य जाति करती है। करना भी स्वाभाविक है क्योंकि इस पृथ्वी पर जल व स्थलचर जीवों के जीवन-चक्र को चलाने वाला एकमात्र सूर्य है।

काल-बोध कराने वाले इस सूर्य की कृपा सिर्फ जीवों पर ही नहीं, वरन पृथ्वी के जल-थल के समीकरण को भी संतुलित करने में भी है। अब आप प्रश्न कर सकते हैं कि कैसे? हां, ध्रुवों की बर्फ को पिघलाकर वह समुद्र की सतह को कम नहीं होने देता और साथ ही हिमयुग की प्रलयंकारी मार से स्थल को बचाता है।

स्रोत सूख रहे हैं

मनुष्य ने 'होमोसैपियन' वर्ग के रूप में इस धरती पर अपनी २०,००० पीढ़ियां समाप्त कर चुकी हैं। इसलिए आदिकाल से अब तक वह अपने बुद्धि कौशल से प्रकृति का विभिन्न रूपों में दोहन कर रहा है। धीरे-धीरे इस दोहन से असंतुलन की ओर हमारे पैर बढ़ रहे हैं। अनुमान है कि २१वीं सदी के मध्य तक हम ऊर्जा के उन स्रोतों को सुखा देंगे, जिससे आजकल निर्बाध रूप से हमारी दिनचर्या चल रही है। इसी से आप अनुमान कर सकते हैं कि सन् १७७६ में भाप इंजन का आविष्कार हुआ, इस आविष्कार ने मनुष्य को द्रुत-गति से औद्योगिकीकरण की ओर धकेला। आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि बगैर 'रेल' के हमारा जीवन संभव है। रेल की पटरी मनुष्य के जीवन में फिलहाल इस प्रकार से बैठ गयी है जैसे मनुष्य के शरीर में रक्त-संचार के लिए

सौर-ऊर्जा से संचालित घड़ी

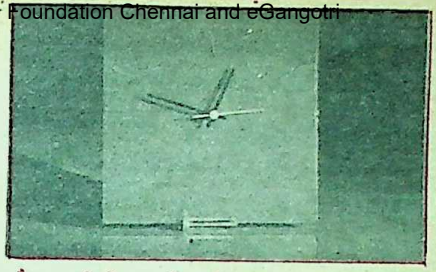

सौर-ऊर्जा से चलनेवाली कार

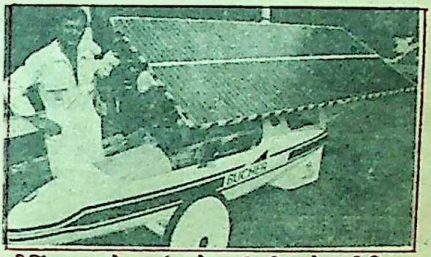

स्वीमिंग पूल के पानी को सूर्य रश्मि से गर्म किया जा रहा है।

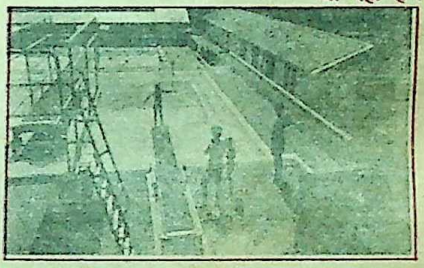

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धमनी और शिराएं। इन दो सौ वर्षों में हमने आधारित होना।

अपने 'काला सोना' का सर्वाधिक प्रयोग कर लिया है। ऊर्जा के इस स्रोत की हमारे पास अधिक समय तक रहने की गुंजाइश भी नहीं है। इस लिए आज वैकल्पिक स्रोतों की ओर हमारी बुद्धि तीव्र गति से दौड़ रही है। बहुत सारी सर खपाई के बाद अब एक निरंतर ऊर्जा स्रोत की ओर ध्यान गया है। और वह ऊर्जा स्रोत है —सूर्य। भू-गर्भ के सारे ऊर्जा स्रोत समाप्त होने के बाद हमारे पास सूर्य ही सबसे बड़ा ऊर्जा का भंडार है। आप इसी बात से अनुमान कर सकते हैं कि पृथ्वी पर ऊर्जा की खपत जितनी एक वर्ष में होती है, उतनी ऊर्जा सूर्य हमें मात्र २० मिनट के तपने पर देता है। संघीय जर्मन गणराज्य ने अनुमान लगाया है कि ३०० खरब किलोवाट प्रतिघंटा सौर-ऊर्जा एक वर्ष में जर्मनी को सूर्य देता है। सोचें, यदि इस ऊर्जा का हम भंडारण करें तो हमारी चिंताएं समाप्त हो सकती हैं। अभी दुनिया के वैज्ञानिक ऐसी विधि नहीं खोज सके हैं, जिसमें सौर ऊर्जा का भंडारण हो, लेकिन मनुष्य-बुद्धि ने हार नहीं मानी है। एक न एक दिन सौर ऊर्जा को अपने नियंत्रण में अवश्य करेगा।

सौर-ऊर्जा के प्रयोग पर बात करते ही मैं उस युग में जा पहुंचा हूं, जब सूर्य का प्रयोग आर्कमिडीज ने शत्रुओं को मारने के लिए किया था। जिस रास्ते से शत्रु सेना आक्रमण करने आ रही थी, उस रास्ते पर आर्कमिडीज ने बड़ा लैंस फिट कर फोकस किया था, परिणामस्वरूप शत्रु-टुकड़ियां सूर्य की उस आग में झुलसकर मर गयी थीं। यानी कहने का सार है कि भविष्य में हमारा ऊर्जा स्रोत पूर्ण रूप से सूर्य पर

ऊर्जा कैसे ?

सूर्य-ऊर्जा का विद्युत ऊर्जा में परि आजकल 'फोटो सेल' से किया जा रहा है 'सेल' सूर्य की रश्मियों को एकत्रित कर उत्पन्न करती हैं। इन छोटी नीली 'फोटो सेल' को सिलिकन से बनाया जाता यह अर्ध-संचालित सिलिकन की चिप्स को सीधे ऊर्जा में प्रकाश विद्युत प्रभाव बदलती हैं। इसलिए इन 'चिप्स' का सबसे अधिक है।

विश्व में इस समय दो मुख्य विषयों अनुसंधान तेजी से चल रहे हैं। एक तो इन 'चिप्स' (फोटो सेल) के निर्माण को सस्ता किया जाए, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध हो सकें। दूसरा सौर ऊर्जा के की तकनीकी खोजी जाए।

यह चिप्स इतनी संवेदनशील होती हैं चाहे सूर्य की रौशनी उस पर पड़े या किसी की, शीघ्र क्रिस्टल के भीतर विद्युत प्रतिरोध कर विद्युत बहने लगती है।

इन सिलिकन चिप्स को बनाने के लिए पर सिलिकन का अथाह भंडार है। यह खनिज यौगिकों के साथ उपलब्ध हो है। लेकिन चिप्स की बनाने की विधि जटिल है। यह चिप्स तभी सार्थक होंगी १०×१० से.मी. की वर्गाकार आधा मोटी चिप्स बनायी जाए।

यद्यपि इन चिप्स को बनाया तो जा है, तथापि थोड़ी-सी भूल वातावरण को कर सकती है क्योंकि 'चिप्स' के उत्पादन समय जो विशिष्ट रसायन प्रयोग में लाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, वे थोड़ा भी चूक से वातावरण में विसर्जित हुए तो जीवन खतरे में पड़ सकता है। इस खतरे से यूरोपीय समुदाय की वातावरण-समिति पहले ही सचेत कर चुकी है।

१९७५ से जर्मनी में सौर ऊर्जा से प्राप्त एक किलोवाट विद्युत की कीमत में लागत जहां ३ लाख मार्क आती थी वहां अब तीस हजार से भी कम लागत आने लगी है। कम कीमत के कारण अधिकांश छतों की सज्जा 'सौर टाइल्स' से होने लगी है। आज लगभग जर्मनी की ३०,००० छतें 'सौर टाइल्स' से आच्छादित हैं। ये छतें सौर ऊर्जा एकत्रित करने का काम करती हैं। इस प्रकार की छतें सूर्य किरणों को अपनी काली सतह से सोखती हैं, उसके बाद इसे ऊष्मा में परिवर्तित कर देती हैं। शीतकाल में ये छतें ज्यादा प्रभावशाली नहीं होतीं क्योंकि उस दौरान सूर्य की ऊष्मा कम हो जाती है। सिर्फ जर्मनी के दक्षिणी हिस्से में वर्षभर इन छतों का ऊर्जा के लिए उपयोग किया जाता है।

सूर्य ऊर्जा का प्रयोग

सन् १९८१ से एड्रेनो में 'यूरिलियोज' सूर्य ऊर्जा केंद्र, जो माउंट एटना के पास स्थित है, विद्युत उत्पादन का कार्य कर रहा है। यहां पर १२८ सौर दर्पणों के द्वारा दिन में सूर्य की रौशनी को विस्तरित कर पानी में फोकस कर भाप में बदला जाता है। यह भाप टरबाइन को चलाती है। फलस्वरूप उससे एक मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है।

जर्मन से तकनीक सहयोग के आधार पर भारत में फार्म बनाये जा रहे हैं। इसका प्रयोग अब कुवैत और सऊदी अरब भी अपने अपने देशों में करने लगे हैं।

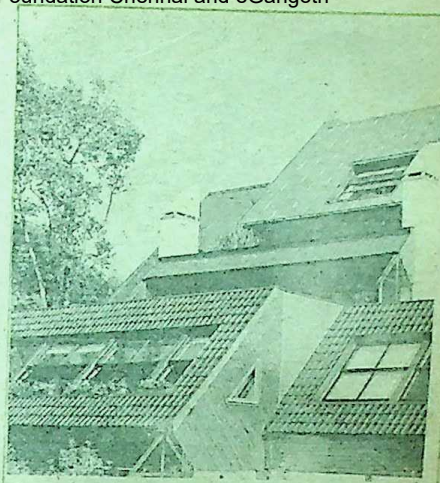

सूर्य की ऊष्मा को एकत्रित कर घरों में पानी गर्म किया जा रहा है।

भारत के लिए आवश्यक है कि इस तकनीक में और विस्तार करे। इसी के माध्यम से पर्यावरण में संतुलन हो सकता है। हमारे यहां ईंधन के लिए जिस तरह जंगल काटे जा रहे हैं, उसे रोकने के लिए सूर्य ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जंगल कटने बंद हो जाएं तो सूखा और अन्य चीजों से बचा जा सकता है।

भारत सरकार कब इस तथ्य को समझेगी, यह देखना है। पर्यावरण विभाग की दृष्टि जब इस ओर जाएगी, तब ही तीव्रगति से सौर ऊर्जा का उत्पादन शुरू हो सकेगा। ●

पीड़ा तो स्वयं को संभाल पाती है, परंतु आनंद का भार बांटने के लिए तो किसी मनुष्य का साथ होना आवश्यक है।

—मार्क ट्वेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अपनी जिंदगी इनसान की खोज में बिता रहा हूं

● अली सरदार जाफरी

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो सोचता हूं कि मैंने एक भरी-पूरी जिंदगी जी है, मगर ऐसा नहीं लगता कि मैंने वह पा लिया है जो मैं पाना चाहता था, मुझे और बेहतर कविताएं लिखनी थीं, पुस्तकों की रचना करनी थी। ज्यादातर समय रोजी-रोटी के चक्कर में बीत गया, वक्त का एक बहुत बड़ा हिस्सा बेकार चला गया। पर मैं सोचता हूं कि मेरे बाद के कलमकार उस काम को पूरा करेंगे, जो मैं नहीं कर पाया। वे उस सौंदर्य के दर्शन करेंगे, जिसे मैं नहीं देख पाया।

एकदम शुरुआती जिंदगी में ही मैं प्लूटार्क, सोलन और लाइकरगस के साहित्य से परिचित हो गया था, जिससे उनके जीवन में वैज्ञानिक और गैर-सांप्रदायिक अध्ययन को सुदृढ़ आधार मिला। इमाम हुसैन की महानता और कर्बला में उनके द्वारा उठाये गये कष्टों का वर्णन करनेवाले अनीस के मर्सिये मुझे आकर्षित करते थे। गरीबी के कारण बेचैनी ज्यों-ज्यों थी, ये मर्सिये ज्यादा आकर्षित करते थे एक अरबी स्कूल में भरती करा दिया गया मैं बहुत जल्दी वहां से भाग खड़ा हुआ एक अंगरेजी स्कूल में दाखिला ले लिया स्कूल पास करने के बाद मैं अलीगढ़ विद्यालय में आ गया। सन १९३६ में में शरीक होने के कारण मुझे यूनिवर्सिटी पड़ी। बाद में पचास वर्षों के बाद यूनिवर्सिटी ने मुझे डी. लिट् की मानद सम्मानित किया। अलीगढ़ विश्वविद्यालय निकाल दिये जाने पर मैं बी. ए. की डिग्री करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय गया। इसके बाद मैं वकालत पढ़ने लगा मैंने अपने दोस्त मजाज की प्रेरणा दिया। मजाज ने मुझसे कहा था, "क्या क्या काम ! हम तो कानून के पाबंद नहीं उसे तोड़नेवाले लोग हैं।

पहली बार मुझे जवाहरलाल नेहरू को देखने का मौका मिला था। मुझे उनमें उम्मीद की रोशनी भी दिखायी पड़ी। मुझे लगा कि इस इनसान के पास मेरे सवालों के जवाब हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व के अस्तित्व की चिंता

आज अपने क्रियाशील जीवन के अंतिम चरण में मुझे सौंदर्य की अपेक्षा इस विश्व के ही अस्तित्व की चिंता रहती है। मुझे चेखव की बात याद आती है, उसने एक स्थान पर थियेटर के संबंध में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि 'अगर किसी नाटक के पहले दृश्य में दीवार पर टंगी बंदूक दिखायी जाती है तो अंतिम दृश्य में उसका इस्तेमाल होना ही चाहिए।' यह एक अत्यंत गंभीर कथन है। यदि हमें इस संसार की रक्षा करनी है तो हमें नाटक के आधारभूत नियमों को बदलना पड़ेगा।

हिंदू महारानी और मोहर्रम

मूल रूप से मैं बलराम पुर का निवासी हूं। बलरामपुर लखनऊ के उत्तर में स्थित एक नगर है। पहले यहां तालुकेदारी की रियासत थी, जिसका शासक महाराजा कहलाता था। हमारा परिवार विशुद्ध धार्मिक, पवित्रतावादी किंतु उदार विचारोंवाला था। इसलिए परिवार में ईद-मोहर्रम की तरह ही दशहरा-दिवाली के पर्व भी मनाये जाते थे। मोहर्रम के दस दिनों में प्रतिदिन 'कर्बला' की लड़ाई में बलिदान होनेवाले शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। दसवें दिन 'ताजिया' निकालकर दफनाया जाता है। अजाखाने में 'ताजिया' देखने आनेवालों का तांता हर रोज लगा रहता है। मेरे बचपन के दिनों की बात है— मोहर्रम के नौवें दिन की रात को अजाखाना के दरवाजे जनता के लिए बंद कर दिये जाते थे। सुबह खोले जाने पर उसमें इत्र, मिठाइयां और इबादत की दूसरी चीजें रखी मिलती थीं। कहा जाता था कि रात में शहीदों का अफसोस करने जिन्न आते थे

श्रीमती गांधी से सोवियत लैंड पुरस्कार ग्रहण करते हुए अली सरदार जाफरी

और मिठाइयां इत्यादि रख जाते थे। बचपन में हम भोलेपन में इस पर विश्वास कर लेते थे। बाद में बड़े हुए तो हमें मालूम हो गया कि बलरामपुर की हिंदू रानी उस रात को अजाखाने में आकर मिठाइयां आदि रख जाती थीं। इस बात से पहले समय में हिंदू-मुसलमानों के आपसी भाईचारे का पता चलता है।

अद्भुत वाद-विवाद

बलरामपुर तथा हिंदुस्तान के दूसरे शहरों में उन दिनों बड़े दिलचस्प समारोह होते थे। ऐसे समारोह भारत वर्ष के अतिरिक्त अन्य किसी भी देश में देखने को नहीं मिलते। इसलाम धर्म का अच्छा अध्ययन किये हुए हिंदू पंडित (इनमें से अधिकांश आर्य समाजी होते थे) और हिंदू धर्म-की पुस्तकों का अध्ययन किये हुए मुसलिम उलेमाओं के बीच मुबाहिसे— शास्त्रार्थ हुआ करते थे। निश्चित समय और स्थान पर दोनों धर्मों के विद्वान उपस्थित होकर एक-दूसरे के धर्मों के संबंध में शंकाएं रखते, वाद-विवाद करते तथा एक-दूसरे की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमजोरियों को उजागर करते थे। इन मुबाहिसों या शास्त्रार्थों के समारोह छह-छह, सात-सात दिनों तक चलते। समारोह स्थल के आसपास मेला-सा लगता। इन शास्त्रार्थों में आज की तरह कटुता और आक्षेपपूर्ण आलोचना नहीं होती थी बल्कि अत्यंत स्वस्थ आध्यात्मिक और विद्वतापूर्ण विचार-विमर्श किये जाते थे। आज सार्वजनिक मंच पर इस तरह की सभाओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अब तो दंगे हो जाएंगे। दोनों समुदायों में स्पष्ट मतभेद होते हुए भी कट्टरता किसी भी तरफ नहीं होती थी। शादी-ब्याह या दूसरे ऐसे मौकों पर दोनों समुदाय प्रेम-पूर्वक मिलते तथा साथ काम करते थे। हां, खाने का प्रबंध दोनों का अलग-अलग रहता था।

प्यारभरा माहौल

इसी तरह त्योहारों का हाल था। हम लोग दीवाली मनाते, रामलीला देखते थे। रामायण की कथा मैंने रामलीला से ही सीखी। एक बार रामलीला में हनुमान बननेवाला आदमी बीमार हो गया। पर्वत उठाने के लिए हनुमान बननेवाला कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला तो एक मोटे-ताजे खान साहब को हनुमान बनने के लिए चुना गया। खान साहब ने पहले तो टाल-म-टोल की पर बाद में मान गये। उन्होंने पूंछ लगाकर और हनुमान का मुखौटा पहनकर पर्वत उठाने का अभिनय शुरू कर दिया। लेकिन पहाड़ उनसे उठाया नहीं जा रहा था। बहुत कोशिश की पर पहाड़ उठने का नाम नहीं ले रहा था। तभी अचानक खान साहब ने कानफोड़ आवाज में 'या अली !' का नारा लगाया और पहाड़ उठा लिया। दर्शकों के लिए पहाड़ उठाने की लीला का महत्व था 'या अली' वाली बात पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। ऐसा अच्छा प्यारभरा माहौल रहता था उन दिनों।

गरीबी से पहला साक्षात्कार

मेरे पिताजी शस्त्रागार के असैनिक अधिकारी थे। मेरे चाचा एक बहुत अच्छे शिकारी और निशानेबाज थे। जंगल में हमारे घर से कुछ दूर नहीं था। बस साइकिल उठाओ और एक-दो गांव पार करते ही जंगल में पहुंच जाओ। यहीं मेरा गरीबी से पहला साक्षात्कार हुआ। ऐसा नहीं था कि घर में गरीबों से हमारा परिचय न हो पर तब तक गरीबी मेरे लिए एक खयाल भर थी। गांवों में से गुजरते हुए गरीबी का असली रूप खुली आंखों देखने का प्रत्यक्ष अवसर मिला। जिंदगी के इस रूप ने मुझे अंदर से हिला दिया। गरीबी हटाने का कोई उपाय मैं नहीं जानता था। तब तक मैं यही जानता-समझता था कि गरीबी ईश्वर की दी हुई चीज है और इनसान इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। अपढ़ आदमी गरीब रहता है और पढ़ा-लिखा अमीर। मेरे मन में यह सवाल तब नहीं उठता था कि कोई अपढ़ क्यों है, क्यों वह पढ़ नहीं पाया ?

किसान-आंदोलन

मुझे सन तो याद नहीं पर उस दिन बलरामपुर में किसानों का एक बड़ा आंदोलन हुआ और उपद्रव में तहसीलदार मारा गया। रियासत की पुलिस ने सारे गांव को तहस-नहस कर डाला और पक्के तौर पर तो नहीं कह सकता पर शायद कुछ बलात्कार की घटनाएं भी हुईं। मैं तब तकरीबन तेरह-चौदह साल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होऊंगा। पं. जवाहर लाल नेहरू संयोग से नुमाइंदे बनकर इस हादसे की जानकारी लेने के लिए आये थे। जलसे में उनके भाषण के दौरान मैं ठीक उनके पीछे ही मौजूद था। पहली बार मुझे जवाहर लाल नेहरू को देखने का मौका मिला था। मुझे उनमें उम्मीद की रोशनी भी दिखायी पड़ी। मुझे लगा कि इस इनसान के पास मेरे सवालों के जवाब हैं।

सन १९३३ से १९३९ के बीच का समय दुनिया के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस दौरान दुनिया ने जरमनी में फासिज्म का उदय देखा। इसी दौरान हिंदुस्तान में साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष हुआ और इसी दौरान दूसरे विश्वयुद्ध की गर्जना सुनायी पड़ी मैं तब अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी में था और वामपंथी समाजवादी था। इसी वक्त कांग्रेस ने भी समाजवाद को अपने सिद्धांत के रूप में अपनाया। पं. जवाहर लाल नेहरू ने सन १९३६ में लखनऊ में अपने अध्यक्षीय भाषण में समाजवाद के सिद्धांत में अपने विश्वास की पुष्टि की।

इस समय तक मैं पूरे जोर-शोर से कविताएं लिख रहा था और गालिब और इकबाल को नजदीक से जानने-समझने लगा था। मुझे जिंदगीभर इस बात का अफसोस रहेगा कि मैं इकबाल से नहीं मिला जब कि मिल सकता था। वह पी. एच. डी. की डिग्री लेने सन १९३४ में अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी आये थे, न मालूम क्यों मैं उनका स्वागत करने, उनके लिए अपना आदर प्रकट करने क्यों नहीं गया। मेरे दूसरे साथी उनसे मिलने गये थे। सिब्ते हसन ने उनसे उनकी शायरी में दिखायी देनेवाले

फैज अहमद फैज के साथ

समाजवाद की रूपरेखा के बारे में सवाल पूछे। मुझे बताया गया कि इकबाल ने मुसकराते हुए कहा था, 'मैं आजाद खयाल नौजवानों को पसंद करता हूं खासतौर से उन्हें जो अलग तरह सोचने की हिम्मत रखते हैं।'

विद्यार्थी आंदोलन

लखनऊ यूनिवर्सिटी में एम. ए. अंगरेजी की पढ़ाई के दौरान मैं छात्र-आंदोलन में जुट गया था। दिल्ली यूनिवर्सिटी के चांसलर तथा हिंदुस्तान के मुख्य न्यायाधीश सर मॉरिस ग्वायर ने, जो महात्मा गांधी के दोस्त भी थे दिल्ली के दो छात्रों की एम. ए. की डिग्री छीन ली थी, जिसकी वजह से देशभर में उनके खिलाफ विरोध और गुस्सा था। मैं तब लखनऊ यूनिवर्सिटी के छात्र संघ का जनरल सेक्रेटरी था। आज के सुप्रसिद्ध संसदीय व्यक्तित्व श्री जी. एल. बंसल यूनियन के प्रेसीडेंट थे। इस घटना के फौरन बाद ही सर ग्वायर हमारी यूनिवर्सिटी में दीक्षांत भाषण करने के लिए आये। हमने यूनियन की तरफ से घोषणा कर दी कि उन्हें भाषण नहीं देने दिया जाएगा। यह एक दृढ़तापूर्ण निश्चय था। सर ग्वायर के अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार द्वारा यूनिवर्सिटी में प्रवेश करने पर छात्रों ने उनका घेराव किया। वह प्रखर बुद्धि के व्यक्ति थे कार से बाहर नहीं आये। उन्होंने पूछा, "छात्रों का नेता कौन है ?" और किसी ने मेरा नाम बता दिया। उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा, "तुम क्या चाहते हो ?" मैंने कहा, "हम चाहते हैं कि आप बिना दीक्षांत-भाषण किये लौट जाएं।" वह वापस चले गये। इससे उत्तर प्रदेश के अंगरेज गवर्नर बौखला गये उन्होंने वाइस चांसलर सर हबीबुल्ला को लिखा कि जी. एल. बंसल और मुझे यूनिवर्सिटी से निकाल दिया जाए। वाइस चांसलर ने आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। जी. एल. बंसल और मुझे वाइस चांसलर के आफिस में बुलाया गया और आग उगलने वाले पर्चों के बारे में पूछा गया जो कि यूनिवर्सिटी में बांटे गये थे। मैंने कहा कि अपने हस्ताक्षर मैंने खुद किये थे और बंसल के भी मैंने ही किये थे। मुझसे पूछा गया कि क्या बंसल को इसकी जानकारी थी। मैंने जवाब दिया कि 'हां हम दोनों में सहमति है कि अगर हम में से कोई एक न हो तो दूसरा उसके हस्ताक्षर कर सकता है।' जब बंसल से पूछा गया तो उन्होंने भी मेरे कथन की पुष्टि कर दी और कहा कि वह इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं। इसके बाद मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया। यह मेरी पहली गिरफ़्तारी थी। यह सन १९४० की बात है। मुझे लखनऊ और बनारस की जेलों में रखा गया।

यूनिवर्सिटी की सबसे सुंदर लड़कियां

सन १९३९ में जब मैंने लखनऊ यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया, तो उन दिनों तीन मिन्हास बहनों— सुलताना, अमीना और खुर्शीद नामों की धूम मची हुई थी। यूनिवर्सिटी के प्रमुख राजनीतिक समूह थे— कांग्रेस, कम्युनिस्ट और फॉरवर्ड बलॉक। कांग्रेस और कम्युनिस्टों में कुछ हद तक आपसी तनाव था, पर फॉरवर्ड ब्लॉक बिलकुल अलग था। मिन्हास बहनें स्नातकोत्तर छात्राएं थीं। सुलताना राजनीति की पढ़ाई कर रही थी। तीनों बहनों में से वही अकेली एक राजनीतिक दल फॉरवर्ड ब्लॉक से जुड़ी थी। मेरे एक दोस्त शायर और जेल में मेरे साथी थे अली सरदार जैदी। वह फॉरवर्ड ब्लॉक के सदस्य थे। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, "आओ! मैं तुम्हें यूनिवर्सिटी की सबसे सुंदर लड़कियों में से एक से मिलवाऊं।" मैंने कहा, "बहुत खूब, चलो।" वे मुझे कैफेटेरिया ले गये। वहां सुलताना से मेरी पहली मुलाकात हुई। वह मुझे पसंद आयी और हमारी बातें होने लगीं। उस दिन बातचीत के दौरान मैंने उससे कहा, "तुम वीनस डिमिलो की तरह हो।" एक या दो मुलाकात के बाद उसने मुझे वीनस डिमिलो की तस्वीर लाकर भेंट की तो मैंने उसे यह कहते हुए ले लिया— कि— 'खिलौने दे के बहलाया गया हूं।' लेकिन उस वक्त उसकी सगाई हो चुकी थी और शादी की तैयारियां चल रही थीं। हमारी मुलाकातें जारी रहीं, लेकिन हमने कभी अपने दायरे को पार नहीं किया।

जेल डायरी

लखनऊ जिला जेल के दिन बहुत [illegible] थे। क्योंकि भगत सिंह के कुछ साथी अंडमान से लौटकर वहां मेरे साथ ही थे। वहीं एक [illegible] साहब थे — सज्जाद जहीर जिन्होंने प्रगतिशील [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक संघ की स्थापना की थी। वे उन्हें सैंट्रल जेल में रखा गया था। हम अपनी-अपनी जेल से एक-दूसरे को पत्र लिखकर विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करते रहते थे। अकसर दोनों जेलों के वार्डन ही हमारी चिट्ठियां लाते ले जाते थे। एक दिन हमारी चिट्ठी जेलर ने पकड़ ली। वह अनपढ़ था— चिट्ठी में 'कीट्स' का नाम देखकर उसने समझा कि यह कोई संकेत-शब्द था जिसे हम राजनीतिक संदेश भेजने के लिए प्रयोग कर रहे थे।

सुबह होने तक

लखनऊ से हमें बनारस सैंट्रल जेल भेज दिया गया। वहां करीब ७-८ महीने रहा। इसके बाद जून, १९४१ में मुझे रिहा कर दिया गया, लेकिन बलरामपुर में ही नजरबंद कर दिया गया। दिसम्बर,१९४१ में लखनऊ रेडियो पर उभरते हुए शायरों का एक मुशायरा था इसमें शामिल होने के लिए मैं लखनऊ आया और पहली बार यहीं फैज अहमद फैज से मुलाकात हुई। मेरे और फैज के अलावा बाकी पांच शायर थे— मजाज, मखदूम, मोइनुद्दीन, जब्बी और जां निसार अख्तर। एन. एन. रशीद को भी आना था पर वह नहीं आ पाये। हमें सुनने के लिए लखनऊ के तमाम उस्ताद शायर आये थे। हम सबको पच्चीस-पच्चीस रुपये इस मुशायरे के लिए मिले। शाम को हम सबने मिलाकर जश्न मनाया। हम गोमती के किनारे इकट्ठा थे और मुझे धुंधली-सी याद है कि जब मजाज ने अपनी नज्म 'आवारा' पढ़ी तो गोमती के दूसरे किनारे से लोग वाह-वाह कर रहे थे। वहां से सब लोग मेरे घर आये। घर में बहुत मामूली-सी सजावट थी। सजावट की इकलौती चीज जो ध्यान अकर्षित करती थी वह स्पेन के गृह युद्ध की एक महिला गुरिल्ला सैनिक की तसवीर थी जिसके नीचे लिखा था— 'आखिरी दम तक'। एक टोकरी को उलटकर उस पर लगायी गयी मोमबत्तियों की हलकी रोशनी उस महिला सैनिक के कसे हुए पुष्ट वक्षस्थल पर पड़ रही थी। हम सुबह होने तक शेरो-शायरी करते रहे।

इकबाल

इकबाल निस्संदेह उर्दू शायरी के आसमान के सबसे चमकदार सितारे थे। मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि उनकी शायरी का मुझ पर गहरा असर था। हालांकि विचारों के अनुसार मैं मार्क्सवादी हूं और इकबाल अध्यात्मवाद के अनुयायी थे। लेकिन इनसान और इनसानियत के बारे में हम दोनों के विचार समान थे।

इकबाल का मानना था कि ईश्वर की सृष्टि अधूरी है और इनसान ईश्वर का प्रतिनिधि है तथा इसे पूरा कर सकता है और इस प्रक्रिया में नयी शक्ति उत्पन्न होती है। आखिरी मंजिल कभी पायी नहीं जा सकती लेकिन इनसान खुद को पहचान लेता है। इस मंजिल तक पहुंचने में इनसान ईश्वर के नजदीक आ जाता है लेकिन उसका सीमित अहंकार उसे ईश्वर में लीन नहीं होने देता। बूंद समुद्र नहीं बनती पर मोती बन जाती है, जिसमें समुद्र की सारी आभा समायी होती है। इसलिए इकबाल कहते हैं कि वह 'इनसान के शायर' हैं।

इकबाल को गर्व था कि उनके पूर्वज ब्राह्मण थे (उनके पूर्वज ब्राह्मण थे और बाद में उन्होंने इसलाम ग्रहण कर लिया था।) वे कहा करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे कि 'मेरे पूर्वज ब्राह्मण थे। उन्होंने अपनी जिंदगी ईश्वर की खोज में बितायी, मैं अपनी जिंदगी इनसान की खोज में बिता रहा हूं।'

विभाजन

बंटवारे का बहुत भयानक असर पड़ा। इसने मुझे पूरी तरह हिलाकर रख दिया। हमारे बहुत-से रिश्तेदार आगरा और बलरामपुर से पाकिस्तान चले गये। मेरे दोस्तों और रिश्तेदारों ने मुझे पाकिस्तान चलने के लिए समझाने और राजी करने की बहुत कोशिशें कीं। मैं इससे भी इनकार नहीं करता कि पाकिस्तान के साथ मेरे भावनात्मक संबंध थे विशेष रूप से लाहौर से। लेकिन पाकिस्तान बनना समस्या का हल नहीं था। इसलिए मैं शुरू से आखिर तक विभाजन के खिलाफ रहा। मैं अब पाकिस्तान की निंदा नहीं कर रहा हूं बल्कि उस दुःखद घटना का विश्लेषणभर कर रहा हूं। आज हम सिर्फ कोशिश कर सकते हैं और दोनों देशों के बीच शांति कायम रख सकते हैं।

दो ही साल पहले जब मैं कराची गया था एक परिचित पत्रकार ने मुझसे पूछा, "क्या आपको पाकिस्तान में बस जाने की इच्छा नहीं होती ?" मैंने जवाब दिया, "यकीनन नहीं।" उन्होंने पूछा, "क्यों ?" शायद हलकी-सी हैरानी हुई थी मेरे ऐसे जवाब से। मैंने जवाब दिया, "नौजवान ! मैं उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले का रहनेवाला हूं, जहां की अरहर की दाल बहुत मशहूर है, दरअसल यह बड़ा किफायती भोजन है। और मैं इस दाल को खाना नहीं छोड़ सकता।" उन साहब ने शायद सोचा होगा कि मैं मजाक कर रहा था। पर नहीं देशप्रेम का संबंध व्यक्ति के शरीर से भी होता है। किसी जगह की मिट्टी, उसकी हवा, उसका पानी इन सब चीजों का महत्त्व होता है। क्या वास्तव में जो उत्तर प्रदेश छोड़कर गये हैं वे दाल की कमी नहीं महसूस करते ? क्या लाहौर से बिछुड़नेवाले पंजाबी उस शहर की कीमती यादें मन में नहीं पाले रहते ? यकीनन वे बिछुड़न महसूस करते हैं। जब इंडियन एयर लाइंस का पहला जहाज अपहरण करके लाहौर ले जाया गया था, एक पंजाबी लेखक ने मुझसे कहा था, "सरदार ! काश ! मैं उस जहाज में होता !"

मैं थोड़ा-सा चकराया, "क्यों ? तुम क्या करते ?" उसने जवाब दिया, "जहाज से उतरकर लाहौर की जमीन छू लेता, बस !" यही भावना सब में होती है।

प्रस्तुति— धनंजय सिंह

ताजे खून की एक बूंद से भी अब नदियां, धाराओं और झीलों के पानी में प्रदूषण की मात्रा का पता लगाया जा सकता है। वैज्ञानिकों के द्वारा किये गये शोध से यह बात प्रकाश में आयी है।

वैज्ञानिकों का कहना की मछली के खून से पानी में प्रदूषण की मात्रा का पता लगाया जा सकता है। इनके अनुसार मछली में यह गुण विशेष तौर पर पाया जाता है कि वह अपने आसपास के प्रदूषित पानी का आसानी से पता लगा लेती है। यदि प्रदूषित पानी कीटों आदि के कारण होता है तो वह उन्हें खाकर उसे शुद्ध कर देती है और यदि पानी में रासायनिक या अखाद्य पदार्थ के कारण प्रदूषण होता है तो वह उस स्थान को छोड़ देती है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टुकड़ों बंटी धूप

● निवेदिता बुढलाकोटी

मैं चुपचाप बैठी-बैठी भाभी की आंखें देख रही थी। बिलकुल शांत निस्पृह, मुसकराती हुई आंखें ! जिनमें न तो कोई संताप था, न किसी के प्रति कोई द्वेष । मैं सोच रही थी कितना फर्क है भाभी की इन आंखों में और सोलह साल पहले की इन्हीं आंखों में । बड़े घर की एकलौती लाडली बेटी की आंखें, जो बात-बात पर बरस पड़ती थीं और बात-बात पर रूठ जाती थीं । पर अब ये शायद रूठना और बरसना भूल गयी हैं ।

बड़ी भाभी इस घर में ब्याह कर आयी थीं तो पंद्रह साल की थीं और भैया थे छब्बीस के । बड़े भैया क्योंकि पहली मां के बेटे थे और हम अम्मा के, सो हम लोग छोटे-छोटे थे । मंझले भैया भाभी के बराबर थे और फिर दो-दो साल के अंतर पर मंझले और छोटे भैया । मैं भैया से भी तीन साल छोटी थी यानि आठ साल की । भाभी के पिताजी अपनी मातृहीना पुत्री को वे जल्दी-से-जल्दी किसी उपयुक्त वर को दे देना चाहते थे, जिससे वे मुक्त हो सकें । वे स्वयं प्रोफेसर थे अतः जमाई के रूप में अपने प्रिय शिष्य नारायण (बड़े भैया) से अधिक सुयोग्य उन्हें कोई अन्य व्यक्ति लगा ही नहीं । नारायण बीस वर्ष की अल्प आयु में ही अपनी मेधा से उन्हीं के विभाग में प्रवक्ता हो गया था और उन्हीं की तरह दार्शनिक स्वभाव का था ।

जब उन्होंने अम्मा और पिताजी के पास यह प्रस्ताव भेजा तो अम्मा ने उस पर खूब विचार किया था । पिताजी के सोचने का प्रश्न ही नहीं उठता था । जब से अम्मा इस घर में आयी थीं, यह काम केवल वही करती थीं । एक तो दूसरी पत्नी, ऊपर से तेज-तर्रार और सुंदर । फिर पिताजी के सोचने के लिए क्या बचता था । अम्मा ने विचारा कि छह साल से लड़के के पैसे पर हम सब ऐश कर रहे थे । अब कहीं लड़का हाथ से निकल गया और इधर-उधर से कोई ऐसी-वैसी ले आया तो ? इससे अच्छा है कि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे एक गाय अपने घर के खूंटे से बांध दें। फिर इससे अच्छी कौन होगी ? मां तो है नहीं, इसे कुछ सिखाने के लिए। पिता अपने में मस्त हैं। उम्र भी कम है, सो अपनी तरह सिखा-पढ़ा लेंगे। और बाप के बाद तो सब-कुछ इसका ही होगा। बस इस तरह भाभी हमारे घर आ गयीं।

शादी के बाद भी भैया हमेशा अपने काम, अपने शिष्यों में ही लगे रहते। अगर कुछ समय बच जाता तो उसमें वे ये जोड़-तोड़ भिड़ाते रहते कि किस भाई की फीस जमा करने के लिए कहां से पैसा उधार लिया जा सकता है। मुझे ये देखकर बहुत बुरा लगता कि ऐसे इनसान को भी पैसे का जोड़-तोड़ भिड़ाना पड़ता है। पर भैया को कोई अंतर नहीं पड़ता था। वे पैसे को पैसे की तरह लेते ही नहीं थे। वे तो इसको भी खाली समस्या के हल की तरह लेकर चलते थे।

पर भाभी ये सब नहीं सोच पातीं। उनकी आंखों में वे सपने पलते जो उन्होंने किताबों में पढ़े या फिल्मों में देखे थे। कभी भाभी और मैं पिक्चर देखने के लिए जिद पकड़ जाते। अम्मा झट अकड़ जातीं, कहतीं, "मैंने तो कभी ऐसे जिद की नहीं। कभी किसी से कुछ नहीं कहा। हमें ये सब त्रिया-चरित्र कहां आये। हमने कभी घर की देहली लांघकर देखी ही नहीं।" भैया भी टस-से-मस नहीं होते। वे बस अम्मा का मुंह देखते। उनके अवचेतन में शायद ये था कि सौतेले पुत्र होने के नाते जीवन में वह जिस अम्मा को खुश नहीं कर पाये, वे शायद भाभी की इस प्रकार अवहेलना करने से ही खुश हो जायें।

इस सबका अंत बाद में मेरे गुस्सा होने और भाभी के रोने से होता और फिर हम लोग बुरी तरह रोते-रोते थककर सो जाते। अम्मा, पिताजी और बड़े भैया बहुत पहले ही सो चुके होते। दूसरे भैया लोग इसमें कोई हिस्सा नहीं लेते थे क्योंकि उनको घर से कोई मतलब नहीं था।

रात में देर से सोने के कारण, दूसरे दिन हम दोनों सुबह देर से उठ पाते। अम्मा ऐसा मौका कभी न चूकतीं। वो किसी-न-किसी बहाने घर के सभी सदस्यों को एक-एक करके हमारे कमरे में भेज देतीं। यहां तक कि कभी-कभी तो किसी पड़ोसिन को भी पकड़ लातीं, कोई भी बहाना करके।

फिर, बाद में पड़ोसिनों के ताने सुनने पड़ते। "क्यों बहू, बूढ़ी सास का कम-से-कम इतना तो खयाल किया करो। वो बेचारी तो दिनभर काम में खटे और तुम खटिया तोड़ती रहो।"

मैंने अम्मा का स्वभाव पाया है। मैं भी किसी से दबनेवालों में नहीं हूं और किसी की बात का बुरा लगते ही उसके मुंह पर जवाब फेंककर मारती हूं। पर, जिस समय की ये बात है, मैं इन बातों को सोचने-समझने के लिए भी बहुत छोटी थी। जैसे-जैसे मैं बड़ी होने लगी, वैसे-वैसे इन बातों के अर्थ मेरे मन में आकार ग्रहण करने लगे। फिर, अम्मा और मेरा कोई आपसी द्वेष तो था नहीं। बल्कि मैं तो अम्मा की बेहद लाडली इकलौती बिटिया थी। वो चाहे, दिनभर खटती रहे, मगर अम्मा मेरा एक गिलास पानी भी खुद उठाकर पीना सहन नहीं कर पाती थीं।

हाई स्कूल पास करने तक मैं बिलकुल पक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

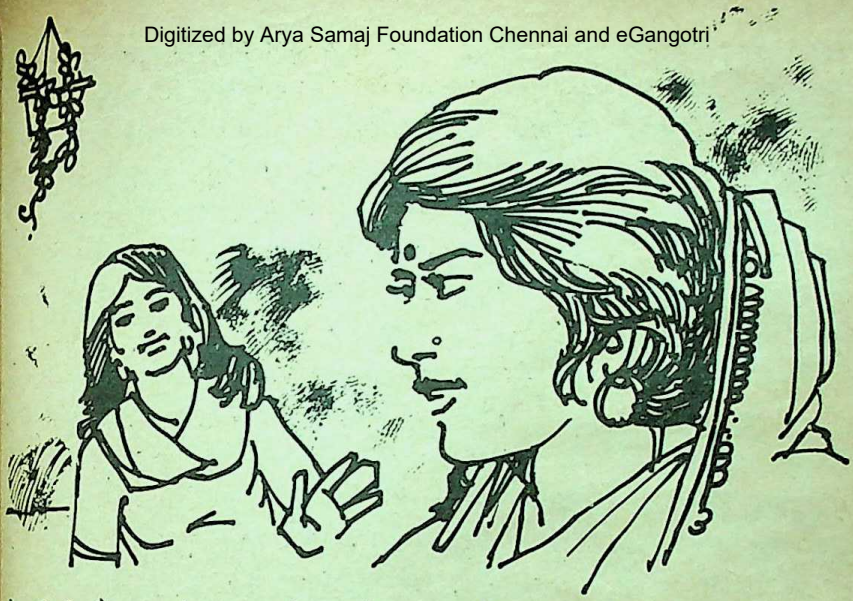

हो चुकी थी और अम्मा के संवाद मुझे याद हो चुके थे। अब, मैं भी अम्मा को उन्हीं के व्यंग्यवाणों से परास्त करने लगी। भाभी घर का सब काम अकेले ही करतीं और अगर कभी अम्मा मुझे उनका हाथ बंटाते देखतीं, तो नाराज होकर कहतीं, "तुझे अपनी पढ़ाई-लिखाई करनी है या नहीं ? इसको तो और कुछ करना नहीं है।"

मैं झल्ला उठती, "मैं इंटरमीडियेट में हूं, तो भाभी भी तो अपनी हाईस्कूल के बाद की पढ़ाई पूरी कर सकती हैं।"

"तुझे तो अच्छा घर और वर पाने के लिए ऊंची पढ़ाई करनी है, जबकि नारायण तो बेचारा इस मूरख को वैसे ही झेल रहा है।"

मैं भी कहां चुप बैठनेवाली थी। नहले पर दहला मारा, "मैंने तो भैया की भाभी को झेलते कभी नहीं देखा।"

"तुम अभी छोटी हो। ऐसे मामलों को नहीं समझतीं।" अम्मा ने आंखें तरेरीं।

"मैं छोटी नहीं हूं, बल्कि उसी उम्र की हूं जिस उम्र में भाभी इस घर में बहू बनकर आयी थीं और उनसे हर बात को सोचने-समझने की आशा की जाती थी। बस, मेरा प्रण है कि, या तो हम दोनों एक संग घर का काम करेंगी या दोनों एक साथ कालेज जायेंगी।"

मैंने अम्मा के क्रोध से बिना विचलित हुए अपना निर्णय सुनाया था। भाभी इस बीच लगातार मेरा हाथ खींच-खींचकर मुझे चुप कराने का प्रयत्न करती रहीं।

घर में एक कुहराम-सा मच गया। जब दो एक ही स्वभाव के लोगों की टक्कर होती है और दोनों ही न झुकना चाहें तो ऐसा ही होता है।

लगभग एक महीने तक घर में अबोला-सा रहा। कभी अम्मा खाना नहीं खातीं, तो कभी मैं भूख हड़ताल कर देती। अगर अम्मा एक प्लेट उठाकर फेंकती तो मैं भी गिलास के साथ वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार करने से न चूकती और कांच की किरचें बटोरने के लिए रह जातीं भाभी।

कुछ ही दिनों में मैंने अनुभव किया कि, अम्मा का पलड़ा मेरे पलड़े से भारी है। अम्मा के साथ पूरा घर था। बड़े भैया भी आंखें मूंदकर उन्हीं के पीछे थे। मैं बिलकुल अकेली थी। यहां तक कि बड़ी भाभी भी मेरा पक्ष नहीं ले रही थीं।

बड़े भैया सबेरे नौ बजे 'ब्रंच' यानि सुबह का नाश्ता और खाना एक साथ करके निकल जाते। लौटते रात को नौ बजे और सीधे डिनर पर बैठ जाते। उनकी पढ़ते हुए खाना खाने की आदत थी। थाली के सामने हमेशा कोई मोटी-सी पुस्तक खुली रहती। फिर भाभी चाहे अपना कलेजा भी पकाकर खिला दें, भैया को पता न चलता।

खाने के बाद बड़े भैया, बैठक में लेट जाते।

जब भैया भाभी की नयी-नयी शादी हुई थी, तो भैया कई बार अंदर चले जाते पर उनको अम्मा अंदर आते देखते ही शुरू हो जातीं, "नारायण, घर में छोटे-छोटे भाई बहन हैं, उन पर क्या असर पड़ेगा, ये तो सोचो। हमारे जमाने में तो मर्द हमेशा बाहर सोते थे और औरतें अंदर। मजाल है, जो किसी ने कभी पति-पत्नी को सामने पड़ते भी देखा हो। मगर अब मैं मर्दों को क्या कहूं जब औरतें ही मुंह उघाड़े घूमती हों।"

बस, भैया उलटे पैरों बैठक में चले जाते और भाभी घूंघट में अपना मुंह छिपा लेतीं। पता नहीं वे ऐसा अम्मा के भय से करतीं या अपनी आंखें छिपाने के लिए।

शुरू में भैया अम्मा की बातें सुनकर [illegible] लज्जा और संकोचवश ऐसा करते। फ़[illegible] धीरे-धीरे ये उनकी आदत में आ गया।

पर कभी भी भाभी ने मुंह से कुछ नहीं कहा और न ही मैंने पूछा। मैं जानती थी कि वे कुछ बता भी नहीं पायेंगी। एक दिन मैंने अम्मा से पूछ ही लिया, "भैया अंदर क्यों नहीं सोते हैं जो बैठक में पड़े रहते हैं?"

अम्मा उस समय तो कुछ नहीं बोलीं। वे जानती थीं कि तर्कों से मुझे हरा नहीं पायेंगी। इसलिए मेरे कालेज जाते ही उन्होंने बड़ी भाभी की अच्छी खबर ली। यहां तक कि महल्ले की दो-चार औरतों को भी जमा कर लिया। उनका विचार था कि भाभी ही छोटे-छोटे बच्चों को ऐसी गंदी बातें सिखाती हैं और उनके कहने पर ही मैंने ऐसा किया। मैंने कालेज से लौटकर पाया कि सब खा-पीकर सो गये थे बस भाभी खाने की मेज पर मुंह फुलाये हुए मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं। फिर तो हममें खूब झगड़ा हुआ। भाभी ने रोते हुए कहा, "मुझे फालतू में डांट खिलाकर तुझे क्या मिला?"

मैं भी ताव में आ गयी, "ठीक है, अब से मैं तुम्हारी लड़ाई नहीं लड़ूंगी। यही आंखें तो तुम मुझे दिखा रही हो, अम्मा को दिखातीं तो कुछ फायदा भी होता। पर वहां तो भीगी बिल्ली बन जाओगी। ठीक है, अब मैं मरते तक तुम्हारा नाम भी मुंह पर नहीं लाऊंगी।"

भाभी के आंसू और जोरों से बहने लगे पर, मुंह से आवाज न निकली। मुझे मालूम था कि अब कुछ नहीं बोल पायेंगी। इसलिए वे कुछ अनाप-शनाप मुंह में आया, बकतीं जाकर चारपाई पर मुंह ढांककर पड़ गयी। वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेटे-लेटे मैं कल्पना कर सकती थी कि भाभी डायनिंग टेबल पर सुन्न-सी बैठी होंगी और समझ नहीं पा रही होंगी कि क्या करें।

थोड़ी देर में, हिम्मत करके भाभी मेरे पास आयीं और चादर हटाते हुए बोलीं, "चल, खाना खा लें।"

मैंने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया, "मुझे नहीं खाना।"

अब भाभी भी अपने पैर पटकती हुई गयीं और बिस्तर पर जाकर उलटी पड़ गयीं। बात बिगड़ती देखकर मैंने उठते हुए एहसान-सा दिखाया, "अच्छा, चलो खा लेते हैं।"

भाभी भी उठीं और जैसे ही हम दोनों की आंखें मिलीं, हम खिलखिलाकर हंसने लगे। फिर तो हम पता नहीं कब तक हंसते रहे। उस समय भाभी मुझे बहुत प्यारी लगीं। आंसुओं से धुला चेहरा और दो-चार आंसू अभी भी आंखों में ओस की बूंदों से झिलमिलाते हुए। उनमें भाभी की हंसी सुबह की धूप-सी चमक रही थी।

ऐसा अकसर होता था। मुझे भी इस नोंक-झोंक में आनंद आता था क्योंकि रोने के बाद का भाभी का वह खिलखिलाता हुआ चेहरा मुझे बेहद प्यारा लगता। उनके माथे की लाल बिंदी मुझे पूर्व में उगते हुए नन्हें सूरज-जैसी दिखती।

उन दिनों के ऐसे न जाने कितने किस्से हैं। मगर, सब याद करने लगूं तो यहां शायद कई दिनों तक बैठी रह जाऊं। अगर, लिखने लगूं तो शायद एक पुराण बन जाये। पर कब तक ऐसे यादों में भटकती रहूंगी। कोई एक सूत्र तो थामना ही पड़ेगा, अस्तु, वही भाभी की इंटर की पढ़ाई को लेकर हुई अपनी और अम्मा की तकरार वाला सूत्र फिर थामे लेती हूं।

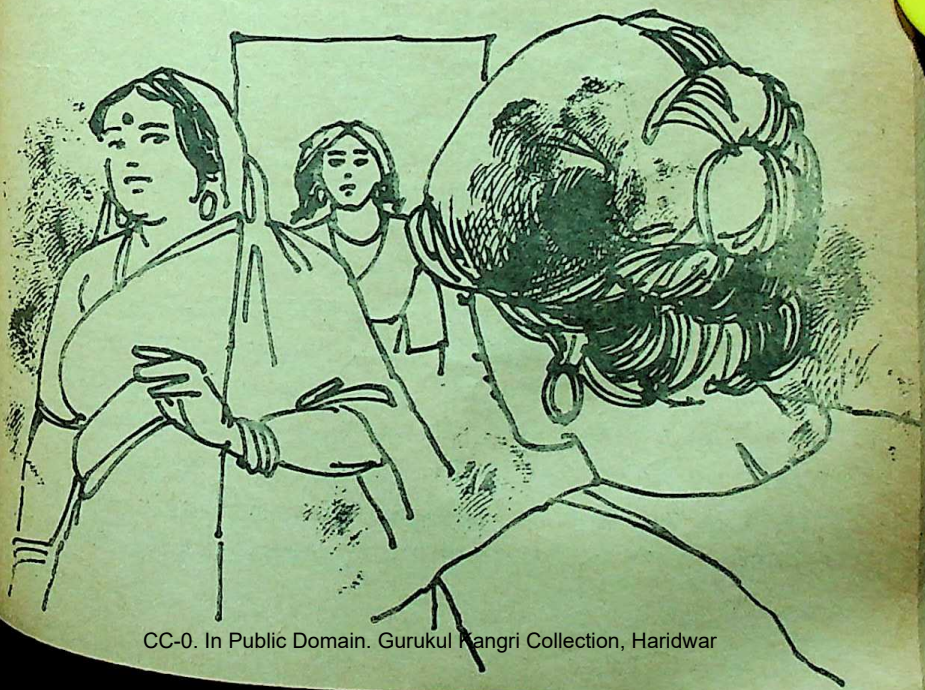

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मा और मेरे बीच के इस सारे झगड़े-झंझट के बाद, आखिर में यह तय हुआ कि मैं रैग्यूलर पढ़ूंगी और भाभी अपनी साइंस साइड छोड़कर मेरे विषयों से ही प्राइवेट इंटर करेंगी, जिससे नयी किताबें लेने का झमेला न हो। जो भी हो, भाभी ने मेरे साथ-साथ इसी तरह इंटर और बी. ए. किया। वे हमेशा खुद पढ़तीं और बाद में मुझे भी पढ़ा देतीं। परिणामस्वरूप दोनों बार भाभी प्रथम श्रेणी में और मैं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। कारण था, हम दोनों का पारिवारिक वातावरण। भाभी ने शुरू से ही खाली किताबें देखीं थीं और मेरा स्वभाव गया था, अम्मा पर।

मंझले भैया की शादी हो गयी और मेरे बी. ए. करते ही बड़े भैया ने मेरे लिए वर खोज डाला, नीरज। नीरज ने उन्हीं के निर्देशन में पी. एच. डी. पूरी की थी और अब पोस्ट डॉक्टरेट रिसर्च फैलोशिप पर पांच साल के लिए स्टेट्स जानेवाला था। शादी से पहले भाभी की सिसकियां मेरे पलंग को कई रातों तक कंपाती रहीं और मेरी विदाई पर तो वो ऐसे रोयीं जैसे उनकी ही विदाई हो रही हो। मैं जो आकाश में उड़ी तो फिर नीचे आयी ही नहीं, बस उड़ती रही। नीरज के प्रेम में भीगती रही। समय कब निकल गया, कुछ पता ही नहीं चला।

शादी के चार साल बाद हमारे घर में आयी, पिंकी। पिंकी के आने के साथ हर महीने भारत से उसके लिए एक पार्सल आने लगा। उन पार्सलों पर नाम तो अम्मा का होता। पर हर कपड़े की हर तुरपन में भाभी के हाथ में चुभी एक-एक सुई का दर्द मैं महसूस कर सकती थी। हर स्वेटर को बुनने में काटी गयी रातों की नींद जैसे मेरी आंखों में भर जाती। न जाने कैसे मैंने वह साल काटा। पांच वर्ष पूरे होते ही मैं स्वदेश लौटने और भाभी से मिलने के लिए उतावली हो उठी।

ससुराल में पंद्रह दिन रहने के बाद जब मैं मायके आयी तो मेरे सारे उत्साह पर तुषारपात हो गया। वहां सभी कुछ बदल गया था। मंझले और छोटे भैया की भी शादी हो गयी थी। मंझली भाभी की एक पांच साल की बेटी थी और गोद में था एक नवजात शिशु। मंझली भाभी का एक दो साल का बेटा था। घर में जैसे अनजाने चेहरों की एक भीड़-सी इकट्ठी हो गयी थी।

बड़े भैया के अलावा, बाकी भैया लोग अपनी नौकरियों पर बाहर थे और बस मुझसे मिलने आये थे। घर में भी काफी परिवर्तन आ गया था, मगर वो काफी अच्छा था। बड़ी भाभी की छाप अब हर कोने में महसूस की जा सकती थी। दिसम्बर के महीने के गुलाब और ग्लैडिऔलाई पूरे शबाब पर थे, छत पर फैली हुई वुडरोज की बेल के पीले फूल दूर से चमक रहे थे।

पिताजी का इस बीच स्वर्गवास हो गया था। अम्मा अपने पोते-पोतियों के बीच बहुत प्रसन्न थीं। तीनों बच्चे उन्हीं के पास रहते थे, क्योंकि मंझली और संझली भाभी नौकरी कर रही थीं। कहने को उनके बच्चे अम्मा पाल रही थी, पर वास्तव में बड़ी भाभी ही सब कुछ कर रही थीं। उसके ऊपर से इतने लोगों का सब काम, बड़ी भाभी को जैसे मुझसे भी बात करने की फुरसत नहीं थी।

अचानक मैं भूत से खींचकर वर्तमान में ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटकी गयी। बड़ी भाभी भी अब सारे काम निपटाकर, मंझली भाभी के छोटे-से बेटे को गोद में चिपटाये आ बैठी थीं।

अब हमारा पूरा परिवार इस कमरे में इकट्ठा हो गया। बस नहीं थे तो बड़े भैया जो घर की जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ और भी बाहर पहुंचते जा रहे थे। अम्मा ने अचानक बड़ी भाभी को टोका, "अरे, अरे, उसकी गर्दन के नीचे हाथ लगा। वह बेचारी तेरा मन बहलाने के लिए कितने विश्वास के साथ अपने बच्चे सौंप देती है तुझे। कम-से-कम उनके विश्वास का ही लिहाज किया कर।"

भाभी और तन्मय होकर उसे झुलाने लगीं। मैंने बात पलटते हुए कहा, "भाभी, पता है, आज नीरज कह रहे थे कि क्या जो सबसे छोटी लगती हैं, वही तुम्हारी सबसे बड़ी भाभी हैं ?"

मंझली भाभी इतरायीं, "हाय, आप कितनी लकी हैं, न बाल-बच्चों का झंझट, न कमर की नाप बढ़ने का डर !" बड़ी भाभी भी ऐसे मुसकरायीं जैसे सच में बड़ी भाग्यवान हों। मेरा पुराना तेवर फिर सर उठाने लगा था।

"भाभी तुम काम भी तो कितना करती हो। अब लान ही देख लो, कोई कह सकता है, कि कुछ साल पहले तक वहां एक सूखा झाड़ मिलना भी मुश्किल था।"

मंझली भाभी ने मंझले भैया को एक तिरछी निगाह से घायल किया, "काश आप भी बड़े भैया की तरह कंसिडेरेट होते।"

सब जोरों से हंस पड़े। उसमें बड़ी भाभी की मुसकान भी शामिल थी। छिः क्या भाभी इतने भद्दे मजाक भी सह सकती हैं। नीरज ने मेरा मुंह लाल होते देखकर बात पलटी, "अब तुम अपना सामान भी खोलोगी या ऐसे ही बैठी रहोगी ?" और वो मुझे घसीटकर अंदर ले आये। मैं अंदर आते ही सिसक पड़ी, "मुझे नफरत है बड़ी भाभी से। उनकी मुसकराहट देखकर मेरा उनके मुंह पर थप्पड़ मारने का मन करता है।"

नीरज ने समझाने की कोशिश की, "तुम समझती क्यों नहीं, इतने लोगों का सामना वे पिछले पांच साल से ऐसे ही कर रही होंगी। और भला वे करें भी तो क्या ?"

तभी बाहर अम्मा की आवाज सुनकर मैंने जल्दी से आंसू पोंछे और सूटकेस लेकर बाहर निकल आयी। मैं सभी भाइयों-भाभियों और उनके बच्चों के लिए एक-सा सामान लायी थी। अम्मा का सामान अलग था। सबको बांटने के बाद सूटकेस खाली हो गया और आखिर में उसमें एक जेवर का डिब्बा रह गया। मैंने उसे बड़ी एहतियात से निकाला और सबके सामने खोल दिया। उसमें एक गार्नेट का सेट था, एक-से, चौकोर टुकड़े, एक चेन में

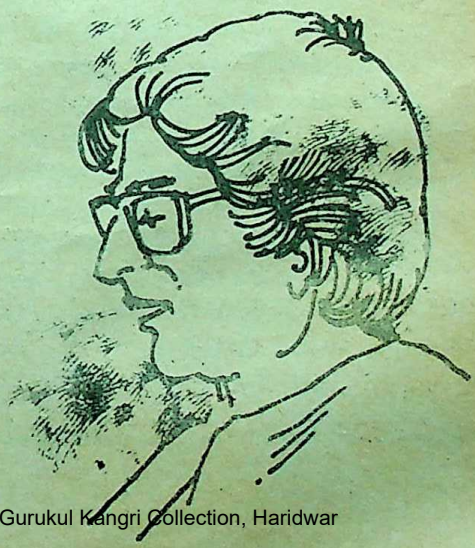

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी-थोड़ी दूरी पर लगाने में जैसे कारीगर ने अपनी सारी कला दिखा दी थी। छोटे-छोटे कान के बुंदे, एक अंगूठी और एक नाजुक-सा ब्रेसलेट उसको परिपूर्णता प्रदान कर रहे थे।

मैं धीरे से बोली, "पिंकी के होने की खुशी में नीरज ने अपनी आधी बचत लगाकर ऐसे दो सेट, एक अपनी मां के लिए और एक अम्मा के लिए खरीदे थे।"

मंझली, संझली और छोटी भाभी, अम्मा को घेरकर उनके पीछे पड़ गयी हैं कि वह तो अब इसे पहनेंगी नहीं। तीनों अपना-अपना पक्ष रख रही हैं कि उन्हें यह सेट क्यों मिलना चाहिए।

अचानक, मुझे भी पता नहीं कैसे, मैंने वह सेट बड़ी भाभी की गोद में रख दिया और बोली, "भाभी मेरी नजर में पिंकी की नानी तुम्हीं हो।"

भाभी के होंठ थरथराने लगे हैं। वे न तो हां कह पाती हैं और न ही ना। उनके मुंह से भी शब्द नहीं निकल पाता। सुन्दर धूप-जैसी हंसी की चमक के बिना भी उदास आंखों में वही चिर-परिचित बूंदें झिलमिलाने लगी हैं और वे मुझसे लिपट गयी हैं। मुझे लगता है, मानो उन कुछ ही अम्मा सहित परिवार के एक-एक सदस्य भाभी के उदात्त चरित्र की विशालता और व्यक्तित्व के बौनेपन की अनुभूति हो गयी है। मेरे मन का सारा बोझ उतर गया है। हां, तो वह मेरी प्यारी भाभी हैं जो मेरे बसती हैं फिर भी जिन्हें मैं ढूंढ़ती रही हूं से। इन्हीं की वजह से तो यह घर, घर है।

मेरे अंदर मायके आने का उत्साह लेने लगा है।

—१०, रेलवे अधिकारी कॉलोनी, रोड नं.
इज्जतनगर (बरेली) उ.प्र.

समुद्र के प्राणी प्रदूषण से दूर रहते हैं

उत्तरी समुद्र में अत्यधिक मात्रा में गंदगी और कचरा बहाये जाने के कारण वहां रहनेवाले जीव-जंतु उस क्षेत्र को छोड़कर कहीं और चले गये हैं। कचरे और गंदे पानी के नियमित समुद्र में मिलाये जाने से वहां का पानी जहरीला हो गया है। अब इस क्षेत्र में सूस, डाल्फिन और सील आदि नहीं दिखायी देते। यहां पायी जानेवाली आधे से अधिक मछलियां जल प्रदूषण के कारण चर्म कैंसर, गले और हड्डी की बीमारी की गिरफ़्त में आ गयी हैं।

इस समुद्री क्षेत्र में पाये जानेवाले कवचधारी प्राणी, सीप जंतु, लॉब्सटर, श्रिम्प, केकड़े सहित अधिकांश मछलियां कहीं और चली गयीं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रतिवर्ष समुद्र में २ लाख ६० हजार टन तरल गंदा पदार्थ उद्योगों से और अन्य स्रोतों से ७ लाख ७० हजार टन से अधिक गंदा पदार्थ व कचरा बहाया जाता है। यूरोप की सर्वाधिक गंदी नदी राईन की लगभग १ करोड़ ९० लाख टन गंदगी भी समुद्र में मिला दी जाती है।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन कविताएं

संवेदना-संकट

गोलियां
आवाज करती हैं मगर
आदमी ही हो गया बहरा

कौन रोके
रोज का यह रक्त-पात
आदमी की बुद्धि पर
कोई नहीं पहरा

देखता हूं
आदमी ही हो रहा
संवेदना हीन

और संकट कौन होगा
आज से गहरा ।

नयी सृष्टि ?

विश्वास टिकाने को
या
सर छिपाने को
अब
कहीं कोई जगह
नहीं बची है

मनुष्य !
तूने अपनी
यह नयी सृष्टि
कैसी रची है ?

जब भूकंप आता है

चलती हैं उलटी हवाएं
हिलाती हैं बेतरह पत्तियां
भीतर तक डोलती हैं डालें
दहशत से कांपती हैं नीवें
जब भूकंप आता है !

गिरती हैं दीवारें
टूटती हैं मीनारें
ढहते हैं राजमहल
मिटते हैं तानाशाह
जब भी गरीब
अपना सर उठाता है
भूकंप आता है

जब भूकंप आता है
सब कुछ बदल जाता है ।

जगदीश गुप्त
१८१-ए-/ १ नागावासुकि,
प्रयाग-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया

● डॉ. राजेंद्र रंजन

ब्रज की स्त्रियां जब सैयद के थान पर पूजा करने जाती हैं तो गीत गाती हैं—

दिल्ली में थान आगरे में डेरा धुर मक्के ते बजौ लंगाड़ौं माई हो।

अथवा :

सैयद सोये गोरि में दै दै गहरी नींद, जगावै बीबी फातिमा।

दूसरी ओर 'मुसलिम घरों में कुंवर कन्हैया के गीत' शीर्षक एक लेख में श्री महेश्वर दयाल ने एक जच्चा गीत उद्धृत किया है—

'अलबेली जच्चा मान करै नंदलाल से।'

हिंदू स्त्रियों ने इसलाम से 'बीबी फातिमा' को प्राप्त किया और मुसलिम स्त्रियों ने गोकुल से नंदलाल मांग लिया। लोकजीवन में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की निरंतर प्रक्रिया का यह एक उदाहरण है।

जाहरपीर, पंचपीर तथा मीयां— मसानी की पूजा-मानता सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अन्य उदाहरण हैं। इसलाम के प्रचारक पीर कहे जाने जाते थे परंतु आगे चलकर यक्षों के बामनवीरों का वीरतत्व भी पीर में अंतर्भुक्त हो गया। इन पंचपीरों में एक पीर चामड़ भी है। लोक-जीवन में मीयां के साथ विचरण करनेवाली देवी श्मशानी या पूजा का अनुष्ठान चिंतन को झकझोर जाहरपीर चौहान थे। ये पहले गोरक्ष शिष्य थे परंतु बाद में उन्होंने धर्म परिवर्तन लिया। कुमायूं से लेकर गुजरात स्थान-स्थान पर गोगागुरु या जाहरपीर के मेले जुड़ते हैं और हिंदू तथा मुसलमान समान विश्वास के साथ उनमें सम्मिलित हैं।

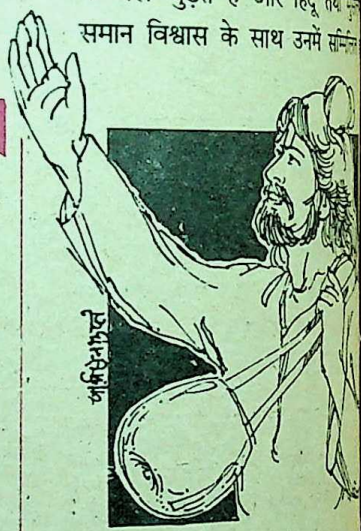

संस्कृति से आगत लोकविश्वास

जिन्न, चुड़ैल और मजार की पूजा-मनौती साथ ही ब्रज के लोकमंत्रों में भी इस्मदुल्ला और मुहम्मद साहब की आन का उल्लेख हैं। खोर देखनेवाले और गंडा-ताबीज बनानेवाले बहुत-से फकीर और स्थान मुसलमान हैं, और अनेक हिंदू नर-नारी दुआ लेने जाते हैं।

सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जब एक जाति दूसरे जनपदों में प्रव्रजित होती है तो उनके साथ उनकी लोकवार्ताएं भी चलती हैं और वे लोकवार्ता नये परिवेश में आकर एक नया ही रूप ग्रहण कर लेती हैं। ब्रज की 'सुरहिन और सिंह की गाथा' बुंदेली, राजस्थानी, अवधी और भोजपुरी में होती हुई कन्नड़ तक पहुंच गयी। नल की गाथा केरल और आंध्र तक गयी। इसलाम के साथ ही जो सूफी कहानियां हिंदी में आयीं, उनमें ईरान से लेकर अफगानिस्तान तक की जीवनयात्रा के अवशेष विद्यमान हैं, जैसे हीर-रांझा की कहानी। इसमें आबेहयात का प्याला, कब्र से लिपटकर रोना और प्रेयसी के साथ प्राण त्यागना— ईरानी लोक संस्कृति की कथारूढ़ि हैं। गोरखपंथी योगियों और गोपों की गीत-परंपरा के साथ नये रूप में सज-संवर कर हीर-रांझा की यही गाथा फिर पंजाबी से हरियाणवी, उर्दू, कौरवी और ब्रजी में होती हुई संपूर्ण उत्तर प्रदेश, पूर्वी राजस्थान और मध्य प्रदेश तक पहुंचती है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को घुमक्कड़ जन-समूहों से बड़ी गति प्राप्त होती है। जैसे दक्षिण के आलवार और नयनार, उत्तर के संत, बंगाल के बाउल, जोगी, नाथ, भक्त और संन्यासी भारत की संस्कृतियों का समन्वय करते रहे हैं। 'भक्ति द्राविड़ा ऊपजी लाये रामानंद।' दूसरी ओर सूफी हैं। सूफी भाव गहरे आदान-प्रदान से विकसित भाव-सृष्टि है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने तो बताया था कि पद्मावत भारतीय लोकसंस्कृति का आकर ग्रंथ है। अमीर खुसरो इस आदान-प्रदान के जीवंत और प्रखर प्रतीक थे, जिनका गीत ब्रज में बड़े भाव से गाया और सुना जाता है—

'काहे को ब्याही रे बिदेस सुन बाबुल मोरे।'

जब हम सारे भारत में एक-जैसी लोककथाओं, गाथाओं और मिथकों का प्रचार देखते हैं तो लगता है कि लोक सरस्वती ने रामायण, महाभारत और भागवत की गाथाओं को सारे भारत की धरती पर तीर्थों की लिपियों में लिख दिया है। हिमालय पार्वती का पिता है, समुद्र लक्ष्मी का पिता है। और यमुना सूर्य की पुत्री व यमराज की बहन है तथा धरती सीता की मां है। कहीं राम की अयोध्या है तो कहीं कृष्ण की द्वारका है और कहीं शिव का कैलाश है। कहीं राम ने बालुका का लिंग बनाकर शिव की पूजा की थी और कहीं पांडवों ने अज्ञातवास किया था। शिव-पार्वती का विवाह हिमालय के आंगन में हुआ था परंतु लोक-सरस्वती कहती है कि पार्वती द्वारा शिव पर उछाले गये चावलों में से सात चावल सात रंग की बालू बनकर कन्या-कुमारी के पास बिखर गये।

लोकजीवन में रसी-बसी कथाओं से हमें अनेकानेक जातियों की सांस्कृतिक परंपराओं का परिचय प्राप्त हो सकता है। यही नहीं, उनसे हम राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया के नियमों को भी जांच सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लवण और बलि

महाराष्ट्र के निवासी कहते हैं कि विष्णु ने लवणासुर को महाराष्ट्र के 'लाणार' नामक स्थान पर मारा था और ब्रज में लवणासुर की गुफा तथा उससे संबंधित अन्य कथाएं प्रसिद्ध हैं।

मथुरा में राजा बलि का टीला है। ब्रज के गांवों में होली पर घरगुली गायी जाती है— **राजा बलि के द्वार मची है होरी।** अब केरल में चलकर देखिए। वहां ओणम का त्योहार होता है और ओणम त्योहार की कहानी है कि जब वामन ने बलि से पाताल चले जाने को कहा तो बलि ने वरदान मांगा कि साल में एक बार अपनी प्यारी प्रजा को देखना चाहता हूं। तब वामन ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके कहा कि हर वर्ष श्रावण मास के श्रवण नक्षत्र में तुम यहां आकर अपनी प्रजा को देख सकोगे। तब से प्रतिवर्ष इस अवसर पर राजा बलि केरल आया करते हैं और उनकी प्रजा ओणम का त्योहार मनाती है।

नरसिंहम, रामचंद्रन, पार्थसारथि, गोपालन, राधाकृष्णन, रामानुजम और रामुलु इत्यादि दक्षिण भारत की व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं, विष्णु के ये अवतार उत्तर भारत के हैं।

इतिहासकारों ने प्राचीन भारत में नाग और सुपर्ण नामक प्रबल जातियों का उल्लेख किया है। नाग संस्कृति के तत्वों को हम बंगाल की मनसा-पूजा में देख सकते हैं। आंध्र में नागुल चवति (कार्तिक शुक्ल) को नाग प्रतिमा की दूध से पूजा की जाती है। केरल में पुल्लवर नामक जाति के पास नाग पूजा के गीतों का उत्तराधिकार है। कश्मीर में जलाशयों को नाग कहते हैं, जैसे— अनंतनाग तथा सुदूर गोआ में भी झरनों को नागझरी कहते हैं। ब्रज में बलराम के रूप में नागपूजा का प्रचार रहा है। गौर से देखें तो शिव, कृष्ण, विष्णु, जाहरवीर और पीपल के साथ नागदेवत्व की अंतर्भुक्ति स्पष्ट हो जाएगी।

गरुड़ और शुक्र

सुपर्ण-संस्कृति के प्रतीक 'गरुड़' विष्णु के वाहन रूप में स्वीकृत हैं। गरुड़पुराण गरुड़ टोटम की ओर संकेत करता है। तमिलनाडु में पक्षीतीर्थ है, वहीं पहाड़ पर दो गरुड़ प्रतिदिन आते हैं। लोक-अनुश्रुति है कि ये दो ऋषि हैं जो प्रतिदिन काशी से रामेश्वर जाते हैं और पक्षीतीर्थ पर विश्राम करते हैं। ब्रज में गरुड़गोविंद का मंदिर है। 'शुक्र' भारत की पौराणिक गाथाओं का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। गणेशचौथ की कहानी में आता है कि महादेव पार्वती को मुंडमाला पहनने की रहस्य-कथा सुना रहे थे। पार्वती सो गयीं और तोता हुंकारा भरने लगा। यह देखकर जब शिव क्रुद्ध हुए तो शुक भयभीत होकर भागा और व्यास पत्नी के गर्भ में छिप गया और शुकदेव के रूप में उत्पन्न हुआ। राम संबंधी कथाओं का एक दूसरा स्रोत भुशुंडि काक है। इस प्रकार ये कथाएं हमें गणगोत्र युग के आदान-प्रदान का संकेत करती हैं।

महादेव (शिव) में सांस्कृतिक तत्व

भारत में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की यह प्रक्रिया इतनी व्यापक और गहन है कि कभी-कभी तो यह पहचान करना ही कठिन हो जाता है कि किसने किसको क्या दिया? जैसे अनेक छोटी-छोटी जलधाराएं गंगा में पहुंचकर अपनी निजता को समर्पित कर देती हैं, उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम सारे भारत में एक-जैसी लोककथाओं, गाथाओं और मिथकों का प्रसार देखते हैं तो लगता है कि लोक सरस्वती ने रामायण, महाभारत और भागवत की गाथाओं को सारे भारत की धरती पर तीर्थों की लिपियों में लिख दिया है।

प्रकार अनेक संस्कृतियां भारतवर्ष की सांस्कृतिक परंपराओं में समा गयी हैं। हम महादेव-शिव में समाये हुए सांस्कृतिक तत्वों का विश्लेषण करें, तो पाएंगे कि सारे भारत की असंख्य जातियों, गणों और कबीलों के देवत्व महादेव में समा गये हैं। गंगा, चंद्रमा, नाग, रुद्र, शिव, लिंग, आगम, निगम, आर्य, अनार्य लोक और वेद— जाने क्या कुछ है महादेव में। महादेव अपने आप में सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बहुत बड़ा इतिहास हैं।

भाषागत आदान-प्रदान

लोकगाथाओं के साथ ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अध्ययन की एक दूसरी सामग्री भाषा है, क्योंकि भाषा का विकास भी लोक सांस्कृतिक प्रक्रिया के द्वारा होता है। डॉ. सत्येंद्रजी ने बताया था कि ब्रज का 'अलाय-बलाय' शब्द सुमेरियन-- सभ्यता के आलिगी-बालिगी दैत्यों का अपभ्रंश रूप है। डॉ. रामविलास शर्माजी ने बताया है कि मधुरा शब्द चूलि का पैशाची ध्वनितंत्र के अनुसार दक्षिण में मदुरई बना और उत्तर में मथुरा। भवमेशजी ने बताया है कि ब्रज में बल्लभ संप्रदाय का 'कुनवारी' शब्द तेलगु शब्द कुडवर्षा का विकसित रूप है। फारसी का छूछुक शब्द ब्रज में छोछुक कहा जाता है।

विभिन्न भाषाओं के बोलनेवाले जब एक दूसरे के समीप आते हैं तो एक नयी भाषा का विकास होता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उर्दू है। बंगाल में 'ब्रजबुलि' का विकास हुआ और आंध्र में दक्खिनी हिंदी का। आजकल प्रत्येक प्रांत में इतने अधिक अंगरेजी शब्द पहुंच रहे हैं कि आगे इन भाषाओं का रूप कुछ और ही हो जाएगा।

इस प्रकार समुद्र से हिमालय तक विस्तृत भूभाग में बसनेवाली अनेकानेक मानव-जातियों के आदान-प्रदान की अनंत कथाएं लोकजीवन में रसी-बसी हैं। इनके अध्ययन के द्वारा हम न केवल अनेकानेक जातियों की हजारों वर्षों से चली आ रही सांस्कृतिक परंपराओं से परिचय प्राप्त कर सकते हैं अपितु राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया के उन नियमों को भी पहचान सकते हैं, जिनके अंतर्गत शक, हूण, कोल, किरात, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, वानर, सुर, असुर आदि असंख्य जातियों और संस्कृतियां भारत की राष्ट्रीय संस्कृति में समा गयीं।

— लोक शास्त्र संस्थान
सामनी (अलीगढ़) २०४२१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नो व्यू की ओर बढ़ते हुए

कहां है प्राचीन त्रिगर्त

● रामगोपाल बंसल

महाभारत में बार-बार उल्लिखित त्रिगर्त देश, प्राचीनकाल से ही स्वर्गिक सौंदर्य से भरी देवभूमि कहलाता है। रावी, व्यास और सतलज की पवित्र जलधाराओं से सुशोभित इस अंचल पर प्रकृति ने अपने सारे वरदान उड़ेल दिये हैं। इतिहास के धनी इस प्रदेश को मनोहारी हिम शृंखलाओं, चंचल जलधाराओं, अनेक झीलों, दूधिया फेनिल झरनों और उछलते-शोर करते प्रपातों ने चित्रमयी बना दिया है। एक के पीछे एक उठती गयी पर्वतों की कतारों पर बिछे हरीतिमा के भव्य गलीचे नयनाभिराम हैं। सेव, आलू बुखारा, खुमानी, लीची, आड़ू, बादाम आदि के सुंदर बागान और पर्वतीय ढलानों पर मंजिलों में काटे गये क्रेजी-जैसे खेत, प्रकृति के सौंदर्य को और अधिक रंगीन बना रहे हैं।

इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि

हिमाचल प्रदेश की यात्रा करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन इरावती (रावी), विपाशा (व्यास) और शतद्रु (सतलज) की घाटियों (गर्तों) में बसा होने के कारण ही इस क्षेत्र को त्रिगर्त नाम मिला होगा। इसकी

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौगोलिक स्थिति की विभिन्नता युक्त इस तथ्य से हो रही है कि उत्तर भारत की दिग्विजय पर निकले पांडुनंदन अर्जुन ने कश्मीर के बाद त्रिगर्त को जीता था। महाभारत के सभा पर्व के अंतर्गत दिग्विजय पर्व में इसका उल्लेख है। विराट पर्व से लेकर शल्य पर्व तक पराक्रमी त्रिगों और उनकी महारथी नरेश, प्रस्थलेश्वर सुशर्मा का नाम जगह-जगह अंकित है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि हिमाचल प्रदेश के अनेक राजघराने त्रिगर्त नरेशों से अपनी वंशावली जोड़ते हैं। 'हेमकोष' में वर्णित त्रिगर्त राज्य इसी भू-भाग में था। भारतीय पुरातत्व तथा इतिहास के खोजी जनरल एलेक्ज़ेंडर कनिंघम का भी यही मत है।

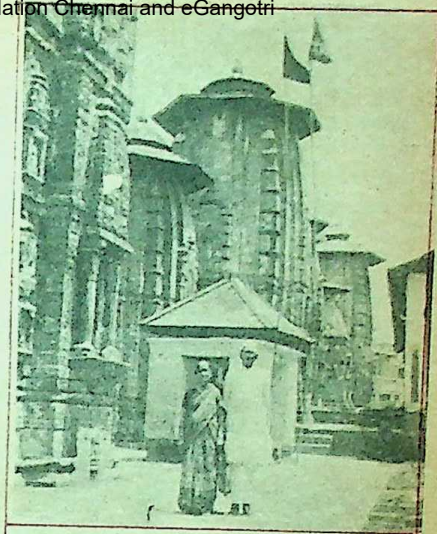

चंबा का मंदिर समूह

हिमाचल प्रदेश की यात्रा करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन इरावती, विपाशा और शतद्रु की गहरी घाटियों अर्थात गर्तों में बसा होने से ही इस क्षेत्र का नाम त्रिगर्त पड़ा होगा।

किन्नरों की क्रीड़ा भूमि

हिमाचल के सुंदर व गौरवर्णी नर-नारी आज भी गायन-वादन के शौकीन हैं। यहां 'परदा प्रथा नहीं है। रंग-बिरंगी चित्रमयी पोशाकों में इन्हें नाचते-गाते और सड़कों पर छोटे-बड़े जुलूसों में देखकर प्राचीन भारत के किन्नरों व गंधर्वों की छवि आंखों में घूमने लगती है। हिमाचल प्रदेश में आज भी किन्नर जाति है, और एक किन्नर क्षेत्र भी। बौद्ध ग्रंथ 'महावस्तु' में उल्लेख है कि हस्तिनापुर का राजा सुधनु, जो सुबाहु का पुत्र था, सुदूर देश की एक किन्नरी से प्रेमाबद्ध हो गया था। हस्तिनापुर का कुरु राज्य हिमाचल के किन्नर-कैलाश के नीचे तक फैला हुआ था।

कालांतर से इस ऐतिहासिक अंचल में कटोच, सुकेत व शतद्रु राज्य स्थापित हुए। इस क्षेत्र की एक प्रसिद्ध राजधानी कांगड़ा बनी। कांगड़ा के किले के भग्नावशेष बता रहे हैं कि वह उत्थान-पतन के अनेक युगों का साक्षी है। हिमाचल की शिल्पकला पर कुषाणकाल व ललितादित्य के कश्मीर की छाप है। खुदाई में मिले प्राचीन पॉलिश-युक्त मिट्टी के बरतन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप्पेदार सिक्के, काष्ठ व प्रस्तर की मूर्तियां तथा नक्काशीभरे फलक सभ्य जीवन के हजारों वर्षों की कहानी कह रहे हैं। कन्नौज साम्राज्य के काल में विकसित प्रतिहार शैली व उसके बाद फली-फूली नागर शैली के मंदिर-शिखर इस भूमि की शोभा में चार-चांद लगा रहे हैं।

पनघटों पर अनोखे शिला फलक

यहां के कला प्रेमी लोगों ने झरनों पर बनाये पनघटों (पनिहारों) को मनोरम नक्काशी-भरे शिला पट्टों से सजाया था। इन शिला फलकों पर इतिहास के अनेक उज्ज्वल पृष्ठ, जातक कथाओं की तरह अंकित हैं। कुछ पर मूर्तियों के आठ-आठ, दस-दस पैनल हैं। बेल-बूटों और पुष्पों की नक्काशी तो सुखद आश्चर्य से भर देती है। वरुण के वरदान—स्वच्छ एवं अनवरत झरनों की ऐसी सजावट भारत में अन्यत्र नहीं मिलती।

चंबा घाटी के नयनाभिराम दृश्य

धौलाधार (धवलाधार) नामक हिमालय की हिममंडित शृंखला, हिमाचल प्रदेश के शीश पर एक झिलमिलाता रजत किरीट है। पश्चिमी हिमाचल में स्थित चंबा घाटी के डलहौजी हिलस्टेशन से इसका प्रथम दर्शन ही पर्यटक को मुग्ध कर देता है। यहां एक के पीछे एक उठी हिमशृंखलाएं देखने का आनंद मिलता है। बीसियों हिमशिखरों से भरी इस माला में एक पिरामिड-रूपी हिम-दृश्य भी है। पश्चिमी सिरे पर एक विराट बर्फ का पठार दिखायी देता है। हिम से आप्लावित यह भाग सबसे अधिक चमकता रहता है।

डलहौजी से खजियार का बाइस कि.मी. लंबा मार्ग इतना छायादार और सुरम्य है कि उस पर चले बिना उसकी सुंदरता का अनुमान लगाना असंभव है। इस मार्ग के अनेक घुमावों से धौलाधार के बर्फीले दृश्य आंखों को बींध लेते हैं। खजियार की तश्तरीनुमा छोटी-सी झील के चारों ओर कंचहरा मखमली मैदान और उसके बाद उठती गयी, देवदार की सघन पंक्तियां गुलमर्ग से भी सलोनी हैं।

प्राचीन चंपा की ओर

डलहोजी से खजियार या बनीखेत होकर चंबा जानेवाले दोनों मार्ग अत्यंत रमणीक हैं। चंबा से पूर्व, सरू-देवपुर, परेल गांव के बीस कि.मी. के मार्ग में सदानीरा रावी के रंगीन दृश्य और बागानों व खेती से भरे उसके कछार इतने सुहावने हैं कि उन्हें देख-देख आंखें तृप्त हो जाती हैं। राजा साहिलवर्मन की बेटी राजकुमारी चंपावती के नाम पर बसी और पटरानी नयना के अमर बलिदान की गाथा से जुड़ी चंपा नगरी रावी की जलधारा से सौ फुट से ऊपर तक की ऊंचाई पर टंगी हुई है। इस चित्रमयी नगरी के चामुंडा मंदिर से धनुषाकार और कहीं सर्पाकार रूपों में रावी एवं धौलाधार के हिम दृश्य बहुत मनोहर हैं।

चंबा के दर्शनीय स्थल

चंबा नगरी में एक मनोरम मंदिर समूह है। इसके विशाल प्रांगण में खड़े छह मंदिरों में भगवान लक्ष्मीनारायण का सप्तरथ मंदिर साठ फुट ऊंचा है। नागर शैली के इस देवालय पर सुंदर आमलक और कलश सुशोभित हैं। इस मंदिर की बाह्य भित्ति पर उत्कीर्ण एक मूर्तिमाला में 'प्रेमालिंगन' करते मिथुन और काम मुद्रा में दर्षित युगल भी हैं। गौरीशंकर मंदिर में करीब ६॥×५ फुट के आकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

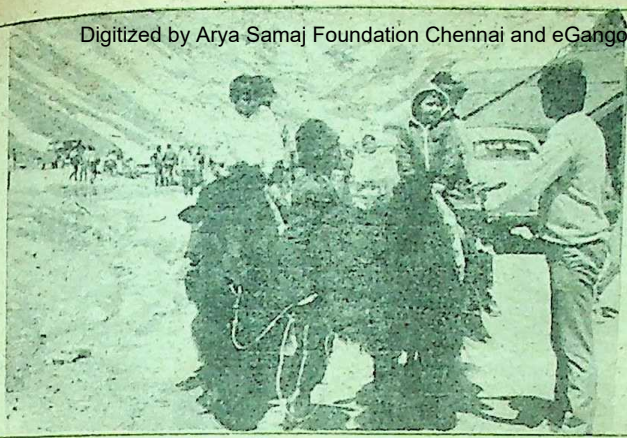

मढ़ी में याकों पर सवारी

शिव-पार्वती व नंदी की कांस्य प्रतिमा बहुत ही सुंदर व सजीव है। विशाल आकार की, सुडौल और पीली चमकती हुई यह प्रतिमा भारत की धातु-प्रतिमाओं में प्रथम श्रेणी की है। बर्फ से रक्षा हेतु इन सभी मंदिरों की ग्रीवा एवं आमलक के ऊपर तने हुए दुहरे छत्र बद्रीनाथ-केदारनाथ के मंदिरों-जैसे हैं। प्राचीन शिल्पकला के ये नमूने, इस अंचल के शिल्पियों का यशोगान कर रहे हैं। केंद्रीय पुरातत्व द्वारा संरक्षित इस मंदिर समूह के रख-रखाव पर अधिक ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

नगर के प्रसिद्ध चौगान के पास स्थित, राजा भूरी सिंह संग्रहालय में इस क्षेत्र की सभ्यता और संस्कृति की हजारों वर्ष की झांकी संजोयी हुई है। दूर-दूर के पनघटों से लाकर यहां संरक्षित, अनुपम नक्काशीभरे शिला-फलक और कांगड़ा तथा बसौली की चित्र शैली की बीसियों पेंटिंग्स देखकर आंखें तृप्त हो जाती हैं।

चंबा से उनहत्तर कि.मी. उत्तर पूर्व में स्थित भारमौर (प्राचीन राजधानी ब्रह्मपुर) और उससे पैंतीस कि.मी. आगे, करीब तेरह हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित मणिमहेश झील व मणिमहेश पर्वत तक का मार्ग पर्वतारोहियों का स्वर्ग है। यहीं पर हिम-सलिला रावी और थोड़ी दूरी पर व्यास के उद्गम स्रोत हैं।

मनोहारी कांगड़ा घाटी

इस चित्रमयी घाटी के नजारे, चंबा से भिन्न हैं। यहां आम्रकुंज हैं, शहतूत और सिल्क है। बांसों के सुंदर झुरमुट हैं। चपल जल धाराएं, चमकती हुई गुलबटियाओं से सुशोभित हैं। पठानकोट से पूर्व की ओर एक सौ चौंसठ किलोमीटर तक जा रही छोटी रेल अथवा कहीं दूर और कहीं साथ चल रहे सड़क पथ से आगे बढ़ते ही धौलाधार के हिमदृश्य साथ-साथ चलने लगते हैं। इस घाटी में विभिन्न ऊंचाइयों पर भिन्न प्रकार की हरीतिमा दिखायी देती है। सदा बहार सघन और मंझोले वृक्षों के अलावा, ओक, बलूत, चीड़ व देवदार से सुशोभित घाटियां भी हैं। फलों से लदे बागान, फसलों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरी धरती, पास-पास बसे रम्य गांव, और खेतों में बिखरी अगणित कॉटेज कह रही थीं कि हिमाचल की पचास लाख आबादी में से करीब बीस लाख अकेली कांगड़ा की सबसे अधिक उपजाऊ घाटी में समायी हुई है। शायद इसी कारण इसी सुरम्य घाटी में चित्रकला की प्रख्यात कांगड़ा शैली जन्मी और फली-फूली थी।

इस क्षेत्र का इतिहास वैदिक काल तक जाता है। अज्ञात अतीत से यहां एक श्रद्धा स्थल पूरे भारत का आकर्षण बिंदु बना हुआ है। ज्वालामुखी के नाम से प्रसिद्ध यह मंदिर ज्वालामुखी स्टेशन से २२ कि.मी. दूर सड़क मार्ग पर स्थित है। पहाड़ में घुसे मंदिर में, पर्वत से निकल रही गैस ७-८ जगह छोटी-बड़ी दीप-शिखाओं के रूप में प्रज्वलित है। मुगल सम्राट अकबर इसे देखकर श्रद्धावनत हो गया था। इस क्षेत्र में की गयी खुदाई के बावजूद, यह अनवरत ज्वाला एक महान रहस्य बनी हुई है।

अनुपम हिमदृश्य

कांगड़ा से नगरौटा होते पालमपुर जा रहे रेल व सड़क मार्ग से हिमदृश्यों की अदलती-बदलती छटा अवर्णनीय है। नगरौटा पर उसकी भव्यता व विराटता पर्यटक के पैरों को पकड़ लेती है। बुंदला खड्ड व झरने के ऊपर तनी बर्फ की चादर के नीचे बसे बुंदला और कंडी नामक गांव तो धरती पर स्वर्ग लगते हैं। सडक पर मिले ग्रामवासियों में से एक तो सहज रूप से बोल पड़ा, 'मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह मुझे बार-बार बुंदला में जन्म दे?'

ज्योतिर्लिंग के दर्शन

पालमपुर से सोलह कि.मी. आगे सड़क मार्ग पर स्थित यह मंदिर रेलवे स्टेशन से थोड़ा दूर है। बारह सौ वर्ष प्राचीन यह देवालय एक ज्योतिर्लिंग माना जाता है। अनुश्रुति यह है कि मूल देवालय की स्थापना पांडवों ने की थी। हिमाचल प्रदेश के इस सर्वांग सुंदर मंदिर की कला दर्शनीय है। उच्च शिखर से युक्त देवमंडप, पिरामिडाकार सभामंडप और प्रदेश मंडप से सजा यह शिवालय एक चहारदीवारी के भीतर अधिष्ठान पर रचा गया है। कैलाशपति को समर्पित यह देवगृह बहुत ही उपयुक्त स्थान पर बनाया गया है। मंदिर की दो भुजाओं पर गहरी व हरी-भरी घाटी है, जिसमें जलधारा बह रही है। केंद्रीय पुरातत्व द्वारा संरक्षित यह मंदिर अधिक उत्तम रख-रखाव का अधिकारी है।

बैजनाथ के आगे जा रही छोटी रेल का अंतिम स्टेशन जोगिंदर नगर है। यहां रज्जु मार्ग पर चलनेवाली कुरसियों से हिम और हरियाली से सुशोभित कांगड़ा घाटी के अंतिम दर्शन का सुख मिलता है।

कुल्लू-मनाली की अनुपम घाटी

जोगिंदर नगर से पक्षी मार्ग पर निकट दिखायी देते कुल्लू को दुर्भेद्य पर्वतों ने बहुत दूर कर दिया है।

जोगिंदर नगर से मंडी तक पहाड़ों को लांघता हुआ तीन घंटे का घुमावोंभरा मार्ग है। हिमाचल प्रदेश के केंद्र में स्थित व्यास नदी के किनारे सुशोभित मंडी नगर बहुत चित्रमय है।

पड़ौह के आगे कुल्लू और मनाली तक व्यास की उछलती-कूदती, कभी फेनिल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी मंथर, कहीं अनेक द्वीप बनाती और कहीं प्रपात की तरह गिरती जलधारा के साथ-साथ चलने का सुख असीम है। सेवों के लिए प्रसिद्ध कुल्लू से बीस कि.मी. आगे बसे कटरेन के चौड़े मैदान से हिममाला का विशाल दृश्य नगरोटा के हिम दृश्य से भी सुंदर है। इस पूरे मार्ग के दोनों ओर की धरती फलों के बागानों से सजी हुई है। कटरेन से बीस कि.मी. दूर स्थित मनाली तक के मार्ग से दाएं, बाएं और सामने गगन स्पर्शी हिममालाएं दिखायी देने लगती हैं।

मनाली की झलकियां

मनाली के तीन ओर हिम ओर हरीतिमा की सुषमा निराली है। प्रत्येक नजारा और संपूर्ण दृश्यपटल इतना सलोना है कि कश्मीर के पहलगांव से तुलना करते-करते पर्यटक मनाली के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है। उल्लेखनीय है कि लगभग सारा विश्व देखने के बाद स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू मनाली के सौंदर्य पर मुग्ध हो गये थे। मनाली को विश्व पर्यटन के मानचित्र पर लाने में उनकी देन स्मरणीय है।

बर्फ के ऊपर पर्यटक

मनाली से तीन कि.मी. आगे वसिष्ठ झरने के गंधयुक्त गरम जल के कुंड में सुखद स्नान का आनंद लेता हुआ पर्यटक, मनोरम सोलंग घाटी के दृश्यों में खो जाता है। एक घुमाव में ही सात झरनों की छटा, नेहरू कुंड और गर्जन करते रहेला प्रपात को देख पुलकित होता पर्यटक, कहीं-कहीं सुंदर भेड़ों और झबरीले बकरों के झुंडों में से निकल हिमरेखा पर पहुंच जाता है। इस स्थल को 'स्नो-व्यू' कहते हैं। यहां से सत्रह कि.मी. रोहतांग दर्रा है।

'स्नो-व्यू' पर पहुंचने के लिए पांच कि.मी. पहले से ही अनेक स्थानों पर बर्फ को मशीनों से काट-काटकर खोला गया है।

मनाली से मंडी होकर शिमला जा रहे सड़क मार्ग पर बिलासपुर में सतलज की घाटी के दर्शन होते हैं। यहां नदी का अर्ध चंद्राकार भव्य दृश्य और उसके कछार में अध-डूबे प्राचीन मंदिरों की झांकी निराली है।

—एडवोकेट, मुरैना (म.प्र.)

अब छिपकली की तस्करी

जापान में गत कुछ समय से छिपकलियों की चमड़ी का बंगला देश से तस्करी के जरिये आयात किया जाता रहा है। ये छिपकलियां संकटग्रस्त प्राणियों की सूची में है और अपने अंत के निकट हैं।

एक अनुमान के अनुसार ७० हजार से अधिक पीली गोह छिपकलियां और बंगाली छिपकलियां सन १९८६-८७ में बंगला देश से जापान को निर्यात की गयीं, जबकि संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए बने कानून में ऐसे प्राणियों की हत्या पूर्णरूप से प्रतिबंधित है। यहां छिपकलियों की तस्करी के लिए नये-नये तरीकों को उपयोग में लाया जाता रहा है। तस्कर इन छिपकलियों की 'कपड़ों के नमूने', 'व्यापार लेखा-जोखा', 'जेट बेग' और 'समुद्री मछली' के नाम से तस्करी करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत संघ के उत्सव भारत 1987-88

सोवियत नारी

सचित्र पारिवारिक मासिक

एक वर्ष - रु. २३.००
तीन वर्ष - रु. ४५.००

जहां महिलाएं अद्भुत कुशलता प्राप्त करती हैं

यही सही मायने में पूरे परिवार की पत्रिका है ! इसमें बच्चों के पालन-पोषण, घर- गृहस्थी, परिवार के स्वास्थ्य, नवीनतम फैशन, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, कसीदाकारी, पाक-विद्या और सारे संसार की नारियों की दिलचस्पी के अनेकानेक विषयों पर रोचक सामग्री व लेख छापे जाते हैं । 'सोवियत नारी' पत्रिका अंग्रेजी, हिंदी, बंगला समेत आठ भाषाओं में प्रकाशित होती है ।

सोवियत नारी

साथ में २३/४५ रुपये डिमांड ड्राफ्ट/मनी आर्डर रसीद संलग्न है

नाम _____

पता _____

यह विज्ञापन और भुगतान निम्न पते पर भेजिये

मैसर्स सेन्टर
एम.सी.डी. बिल्डिंग
नं. २, दूसरी मंजिल
देशबन्धु गुप्ता रोड, पहाड़गंज
नई दिल्ली-११००५५

नवचेतन बुक्स (प्रा.) लि.
५-ई रानी झांसी रोड
नई दिल्ली-११००५५

मनीषा ग्रन्थालय (प्रा.) लि.
४/३, बी. बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००७३

राजस्थान पीयरल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
धमेनीयाना मार्केट,
एम आई. रोड, जयपुर-३०२००१

06

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

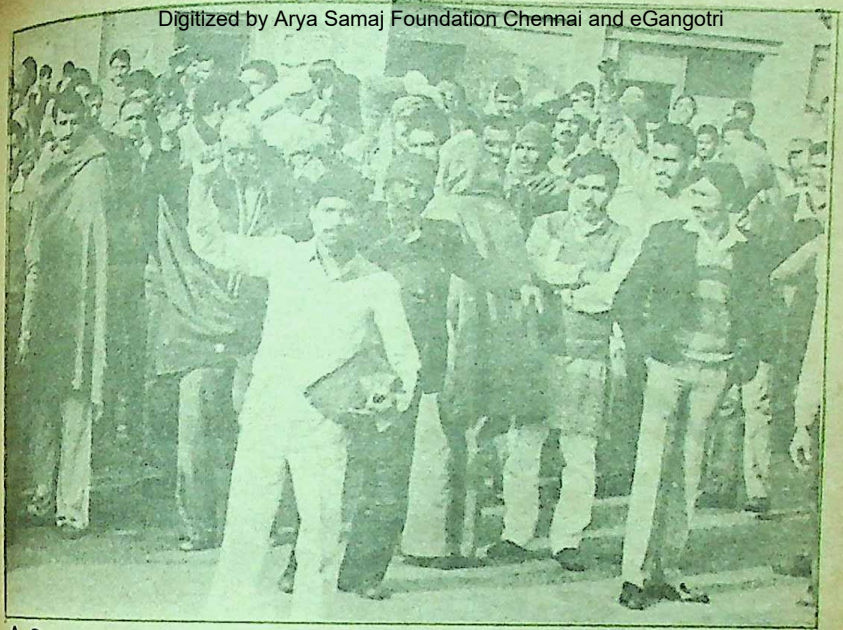

मई दिवस पर विशेष

सफरनामा भारतीय ट्रेड यूनियन आंदोलन का

● शांतिलाल जैन

हमारे देश में श्रम संघों की भरमार है, बाहुल्य है। वे टुकड़े-टुकड़े बिखरते हैं, फिर बनते हैं लड़खड़ाते हैं, गिरते हैं,फिर उठते हैं। कारण स्पष्ट है कि हमारे यहां आज के श्रमिक संगठन आंतरिक फूट से ग्रस्त हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि इनका सूत्र संचालन बाहरी व्यक्तियों के हाथ में है, जिनका दृष्टिकोण श्रमिकों की हित-साधना की अपेक्षा राजनीति से अधिक प्रभावित होता है। कारखानों में श्रमिकों की यूनियनों की नेतागिरी को 'सोने का अंडा देनेवाली मुरगी' कहा जाने लगा है।

यूनियन में राजनीति की घुसपैठ से श्रमिक संघ आंदोलन को गहरा धक्का लगा है। देश में जितने और कोई भी कारगर व प्रमुख श्रमिक संगठन हैं, वे सभी निरपवाद रूप से राजनीतिक दलों के 'पिछलग्गू' हैं और उसके संरक्षण व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेतों के अनुसार काम करते हैं। इंटक-इंदिरा कांग्रेस, एटक—साम्यवादी पार्टी, सीटू—मार्क्सवादी, भारतीय मजदूर संघ—भाजपा व मजदूर पंचायत—समाजवादियों के जाने-माने संगठन हैं और उनके जन्म, गठन, विघटन का इतिहास भी उनकी दलीय राजनीतिक संबद्धता को पुष्ट करता है, यद्यपि ऐसा नहीं होना चाहिए। राजनीतिक दलों से प्रभावित और उनकी श्रम शाखा के रूप में काम करने से भारतीय श्रमिक आंदोलन की ओर देखने से लगता है यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। ट्रेड यूनियन के सही 'मिशन' व दर्शन को समझने के लिए हमें हमारे देश में इसके क्रमिक विकास का अध्ययन करना चाहिए, ताकि हमें सही दिशाबोध मिल जाए व इनके अनवरत फैलाव को हम विराम दे सकें व श्रमिकों की एकता को एक नया परिवेश दे सकें।

भारत में श्रमिक संघ आंदोलन ने श्रमिकों को कितना जोड़ा, कितना तोड़ा, यह तो अलग बहस का विषय हो सकता है, पर इस तथ्य को नहीं नकारा जा सकता है कि हमारे मुल्क का ट्रेड यूनियन आंदोलन एक अंधियारे गलियारे में भटक रहा है। जिस विकासशील देश में एक दिन ऐसा नहीं जाता जबकि छोटे-छोटे मुद्दों पर श्रमिक बलवा न करते हों तथा जिस देश में कुछ उद्योग पटापट बीमार पड़ रहे हों, ऐसे प्रसंग में ट्रेड यूनियन आंदोलन के विविध क्षितिज हम सबके लिए चिंतन का एक सार्थक विषय है।

हमारा ट्रेड यूनियन आंदोलन आज अधिकांशतः ऐसे बाहरी लोगों का बोझ ढोता हुआ चलने लगा है जो श्रमिकों के [illegible] बनकर तो इस आंदोलन में प्रवेश कर [illegible] किंतु कालांतर में जिस मकसद से ऐसी [illegible] करते हैं उसके अपने 'होने' का तर्कसंगत [illegible] प्रयोजन परक नहीं बना पाते हैं— यह [illegible] निश्चय ही श्रमिकों व सेवायोजकों के [illegible] जोखिमपूर्ण है।

हमारे देश का ट्रेड यूनियन आंदोलन लगभग ६५ वर्ष की उम्र का हो चुका है। [illegible] श्रमिकों के संगठन के नजरिये से देखें तो [illegible] आंदोलन ९४ वर्ष पुराना हो चुका है।

पहला श्रमिक संगठन

सर्वप्रथम सन् १८९० में नारायण मेघाजी लोखडे ने 'बंबई मिल हेंडस एसोसिएशन' [illegible] स्थापना की थी। इसी दरम्यान में १८९[illegible] 'अमलगेमेटेड सोसायटी ऑव रेलवे सर्वेन्ट्स इंडिया एंड बर्मा' की स्थापना हुई। सन् १९[illegible] में कलकत्ता में प्रिंटर्स यूनियन शुरू की [illegible] सन् १९०७ में पोस्टल यूनियन बनायी [illegible] सन् १९१० में कामगार हितवर्धक सभा [illegible] बनी। इन सब मजदूर संघों का [illegible] सुधारवादी व समाजसेवी था।

उपरोक्त संगठनों के बाद भी पश्चिमी देशों [illegible] मापदंड का ट्रेड यूनियन आंदोलन भारत में [illegible] नहीं हुआ। प्रथम महायुद्ध के बाद के दशक [illegible] श्रम आंदोलन का हमारे देश में त्वरित [illegible] हुआ किंतु खेद का विषय है कि अभी तक [illegible] ब्रिटेन व संसार के अन्य देशों के आंदोलन [illegible] बराबरी की स्थिति तक नहीं पहुंच पाया [illegible] इसका मुख्य कारण यह है कि संगठन [illegible] ललक का अभाव है और दक्ष नेतृत्व की [illegible] है। यह अवश्य है कि हमारे देश में [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भारत में श्रमिक संघ आंदोलन ने श्रमिकों को कितना जोड़ा, कितना तोड़ा, यह तो अलग बहस का विषय हो सकता है, पर इस तथ्य को नहीं नकारा जा सकता है कि हमारे मुल्क का ट्रेड यूनियन आंदोलन एक अंधियारे गलियारे में भटक रहा है। जिस विकासशील देश में एक दिन ऐसा नहीं जाता जबकि छोटे-छोटे मुद्दों पर श्रमिक बलवा न करते हों तथा जिस देश में कुछ उद्योग पटापट बीमार पड़ रहे हों, ऐसे प्रसंग में ट्रेड यूनियन आंदोलन के विविध क्षितिज हम सबके लिए चिंतन का एक सार्थक विषय है।"

श्रमिक नेताओं के हृदय में श्रमिकों के हितों की प्रबल इच्छा रही है, किंतु इसके दूसरे छोर पर इसमें अवसरवादी तत्व प्रविष्ट हो गये जिनसे समूचे आंदोलन में प्रारंभ से ही बुनियादी विकृति आ गयी जिससे आज तक आंदोलन ने निजात नहीं पायी है।

पहले दरजे के नेतृत्व ने विवेकपूर्ण मर्यादा से काम लिया जबकि दूसरे दरजे के अवसरवादियों ने इस आंदोलन को अपने प्रचार का माध्यम बनाकर असंगत व असंभव मांगें उठाना शुरू कर दीं। धीरे-धीरे दोनों वर्ग के नेताओं ने कुछ शातिर श्रमिकों की सहायत से अपने आपको हड़ताल समितियों में परिवर्तित कर दिया। आंदोलन की इस प्रारंभिक अवस्था के पांच साल के भीतर अर्थात सन् १९१९ से १९२३ के बीच के समय में देश में अनेक श्रमिक संघों का गठन हुआ। ये संगठन रेलवे, डाक व संचार विभाग में तथा अहमदाबाद के सूती वस्त्र उद्योग में ज्यादातर पनपे। इसके बाद भिन्न-भिन्न संगठनों की गतिविधियों के लिए सन् १९२० में एटक जैसे केंद्रीय संगठन का गठन हुआ।

मान्यता की कठिनाइयां

जहां तक नियोजक का श्रमिक संघों को मान्यता देने का प्रश्न था, इसमें कई कठिनाइयां आयीं। एक तरफ जो श्रमिक संघों के पदाधिकारी बाहरी व्यक्ति होते थे उनसे नियोजक वार्ता ही नहीं करते थे। यह स्थिति उस समय चरम सीमा पर पहुंच गयी जबकि मद्रास उच्च न्यायालय ने सन् १९२० में बकिंघम मिल केस में मद्रास लेबर यूनियन के खिलाफ एक अंतरिम निषेधाज्ञा जारी की कि, 'वह श्रमिकों को नौकरी के करार को तोड़कर हड़ताल पर जाने को नहीं उकसाएं। क्योंकि वह नियोजन संविदा भंग करने का उद्दीपन है।' वस्तुतः इस आदेश द्वारा मजदूर नेताओं को यह चेतावनी दी गयी थी कि ट्रेड यूनियन बनाना भी दंडनीय हो सकता है। सन् १९२१ में न्यायालय द्वारा मद्रास लेबर यूनियन के एक नेता को बकिंघम की नेर्दिक मिल्स को ७५०००/- रु. अदा करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आदेश दिये गये क्योंकि उन्होंने हड़ताल में सक्रिय भाग लिया था। इसी आधार पर एन. एम. जोशी ने केंद्रीय विधायिका के सामने प्रस्ताव पास किया।

ट्रेड यूनियन एक्ट

सन् १९२६ में 'इंडियन ट्रेड यूनियन एक्ट' पारित हुआ, जिसमें ऐच्छिक पंजीकरण श्रमिक संघों को कुछ जिम्मेदारियों के बदले में अधिकार दिये जाने के प्रावधान रखे गये।

सन् १९३४ तक देश के व्यापार और व्यवसाय में पुनर्जीवन की लहर दौड़ गयी थी और चूंकि नियोजक अपने हित की अनेक योजनाएं छंटनी, मजदूरी में कटौती आदि लागू करना चाहते थे, इसलिए श्रमिक संघ की कार्यवाहियों में तेजी आयी तथा कुछ संघर्ष भी हुए।

श्रमिक संघ : संगठित शक्ति

दूसरे महायुद्ध की शुरुआत में भारत में श्रमिक संघवाद एक संगठित श्रम शक्ति बन चुका था। युद्ध इसके विकास का कारण बना। दशक के श्रम आंदोलन का मुख्य लक्ष्य मौजूदा आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना था। युद्ध काल व युद्ध के बाद के वर्षों में व्ययों में हुई तेजी से वृद्धि से श्रमिकों के गिरते जीवन स्तर को उठाने के लिए संगठित प्रयत्नों की महती आवश्यकता प्रतीत हुई। इसी कारण श्रमिक संघों व संगठित श्रमिकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई।

कुल मिलाकर स्वाधीनता के पूर्व के दो दशकों में ट्रेड यूनियन आंदोलन का तीव्र गति से विकास हुआ। औद्योगिक मजदूरों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता आयी तथा उन्होंने नियोजकों के खिलाफ सशक्त आंदोलन का सूत्रपात किया। इस वक्त आंदोलन साम्यवादियों के हाथ में था इसलिए उसमें एक निश्चित विचारधारा व लक्ष्य निरूपित हुआ। साम्यवादियों के बाद आंदोलन में उदारवादी व सुधारवादी तत्वों की प्रविष्टि हुई तथा आंदोलन एक राजनीतिक रंग में भी डूब गया।

आजादी के आंदोलन ने भी इस आंदोलन को ऊर्जा दी। चरमवादी वामपंथियों से लेकर घोर दक्षिणपंथी राजनीतिक दलों ने अपने-अपने श्रम संघ बनाने का निश्चय किया। १५ अगस्त १९४७ को देश को आजादी मिली। नये भारत की नींव पड़ी। इस समय कुछ श्रम संगठन ऐसे भी थे जो श्रम आंदोलन को राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त चाहते थे पर ऐसा संभव नहीं हुआ। यद्यपि आजादी के बाद श्रमिकों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में काफी सुधार आया है, मगर दुःख इस बात का है कि यह आंदोलन अपने अधिकारों के प्रति ज्यादा सचेत रहा है और कर्तव्यों की अनदेखी करता रहा है।

भारत के श्रम आंदोलन को आज अपना आत्म-मंथन करके स्थिति की यथार्थता को निर्भीकता व प्रखरता से पारिभाषित करना चाहिए।

स्वाधीनता के बाद : नये मोड़

आजादी के बाद मुल्क में औद्योगिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के नये आयाम स्थापित हुए जिनका असर आंदोलन पर भी पड़ा। लिहाजा उसके आकार-प्रकार बदले। उनकी सौदाकारी शक्ति में भी इजाफा हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र में वृहत कारखानों की स्थापना से भी आंदोलन प्रभावित हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं के नाम पर अनाप-शनाप पूंजी के रेले ने जहां समाज को अर्थवाद की ओर ठेला वहीं मुद्रा व महंगाई की मार ने निचले तबके की कमर तोड़ दी। इन आर्थिक सामाजिक तनावों से मजदूर संघ आंदोलन में भी तीखापन आया। इस आंदोलन ने 'स्ट्राइक कमेटी' के अपने स्वरुप में बदलाव किया। नयी तकनीक अपनाना शुरू की जो 'बंद', 'धरना' व 'घेराव' आदि के रूप में प्रकट हुई। आंदोलन की मांग का मुख्य आधार अपने सदस्यों की भौतिक वृद्धि रह गया।

सारे आंदोलन की प्रतिबद्धता ही बदल गयी। अनेक अवसरवादी तत्व इसमें आ मिले, जिन्होंने श्रमवाद के स्वस्थ सिद्धांतों को ही भुलावे में डाल दिया व अपनी तथाकथित बेरोजगारी के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेकना शुरू कर दिया। पेशेवर मजदूर नेताओं की नयी जमात खड़ी हो गयी। आंदोलन में अजीब बौखलाहट नजर आने लगी। वहां ध्वंस का आक्रोश पलने लगा और हिंसा के अंधे गलियारे में संगठन प्रविष्ट हो गया।

आज कारखानों में ट्रेड यूनियन की बहुलता हो गयी है तथा आज के परिप्रेक्ष्य में स्वस्थ ट्रेड यूनियन आंदोलन के विकास की लिए यह अत्यावश्यक है कि ट्रेड यूनियन एक्ट में व्यापक संशोधन किये जाएं। सरकार शीघ्र ही एक संशोधित विधेयक प्रस्तुत करने जा रही है, जिसमें

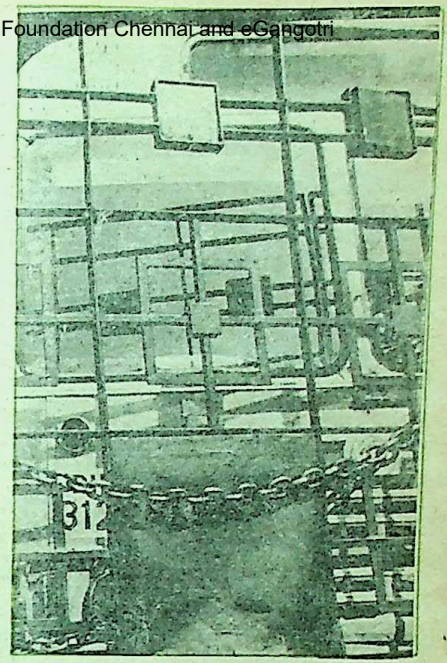

श्रमिक संघों के अनियमित विकास पर रोक लगेगी। इस विधेयक में बाहरी व्यक्तियों को यूनियन कार्यकारिणी रखने पर प्रतिबंध लगाने व हड़ताल की प्रक्रिया निर्धारित की जाएगी। इसमें यह भी प्रावधान है कि एक औद्योगिक इकाई में ४ से अधिक श्रम संघ न हो। इस संघ के पंजीकरण के लिए कुल श्रमिकों में से २५% का समर्थन प्राप्त हों। इसमें राजनैतिक नेताओं व मंत्रियों को किसी यूनियन में कोई भी पद ग्रहण से रोका जाएगा। सभी मुख्य श्रमिक संगठनों द्वारा इस विधेयक का विरोध किया गया है। जिन औद्योगिक इकाइयों में एक ही यूनियन होगी वही सामूहिक सौदेकारी ऐजेंट होगी। हड़ताल तब ही की जा सकेगी जबकि बारगेनिंग कांसिल के ३/४ सदस्य इस पक्ष में अपनी सहमति देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंगठितों के लिए ब्लू प्रिंट नहीं

आज के समय में श्रम शक्ति का एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र में है। आज २९६ मिलियन श्रमिकों में से केवल ३५ मिलियन श्रमिक ही संगठित क्षेत्र में है संगठित क्षेत्र का श्रमिक तो श्रम कानूनों का भी लाभ उठा लेता है और अपनी ताकत के बल पर प्रबंधकों से सौदेबाजी भी कर लेता है किंतु असंगठित श्रमिकों की ओर किसी का ध्यान नहीं है। श्रम आंदोलन से इनका कोई वास्ता नहीं हैं। खेतिहर मजदूर है, घरेलू नौकर है, छोटे-मोटे कारखानों में काम करनेवाले लोग है, बोरियां ढोनेवाले पल्लेदार हैं, बीड़ी बनानेवाली महिलाएं हैं। मकान बनानेवाले बेलदार हैं। पत्तल-दोने बनानेवाली आदिवासी महिलाएं हैं, सड़क बनानेवाले मजदूर है, हल बक्खर चलानेवाले बंधुआ मजदूर है और हरियाणा के ईंट भट्टों में काम करनेवाले लोग हैं। जिनका न कोई मजदूर संघ है, न कोई रहनुमा। ये वे लोग है जिनके साथ दुर्घटना हो जाने पर दुर्घटना के किसी राष्ट्रीय रजिस्टर में उनका नाम नहीं लिखा जाता। अतः प्रश्न तो यह है कि मजदूरों के हमदर्द होने का दावा करनेवाले मजदूर संघों के पास उनकी चिंता या सरोकार का क्या कोई नैतिक ब्लू प्रिंट है जब ये उठेंगे तो सारे मजदूर आंदोलन पर कहर ही ढा देंगे। तब वह कितने हिस्सों में बंटेगा, यह कल्पनातीत है।

नवीन तकनीक

मजदूर आंदोलन में आयी मौजूदा विकृति व मजदूर संघों की आयी बाढ़ के कारण परिस्थितिजन्य एक नया प्रयोग शुरू हो रहा है कि जागरूक श्रमिक जब यह एहसास करता है कि अपने हित संरक्षण की बजाए छुटभैये नेताओं द्वारा अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है तो वह तदर्थ संघर्ष समिति का निर्माण कर डालता है। जो किसी भी मजदूर संघ विशेष से प्रतिबद्ध व संबंधित नहीं होती है। सहारनपुर के प्रसिद्ध स्टार पेपर मिल में व राजस्थान की उद्योग नगरी कोटा के एक कारखाने में ऐसे प्रयोग किये गये जो नियोजकों के सहयोग से कामयाब रहे। यदि मजदूर संघों की बाहुल्यता बढ़ती ही गयी तो देरसबेर ऐसे प्रयोग अधिकांश औद्योगिक इकाइयों में होने लगेंगे, क्योंकि मजदूर नेताओं द्वारा किये जा रहे श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध एक जेहाद आंदोलन तो शुरू होगा ही।

आंदोलन कैसे सशक्त हो

वर्गसंघर्ष के सिद्धांत पर नाचते हुए टूट यूनियन आंदोलन को अब किनारे पर बैठे रहने के बजाए गहरे पानी में गोता लगाने की जोखिम उठाने की मानसिकता बनानी ही पड़ेगी अन्यथा आंदोलन कितना कटेगा-फटेगा व मुल्क की आर्थिक व्यवस्था को कितनी हानि पहुंचे, आज हम नहीं सोच सकते हैं। श्रमिक आंदोलन को आज के हालात में केवल हड़ताली यंत्र ही बनाकर न रह जाना है बल्कि राष्ट्र नव समाज के प्रति अपने दायित्व को भी उन्हें निभाना चाहिए। हमारे राष्ट्र की तो यह स्थिति है कि ऊंचे-ऊंचे वेतनभोगी भी अपना श्रम संघ बनाकर और वेतन भत्तों की मांग करते रहते हैं। प्रत्यक्षतः असाध्य रोग का एक ही निवारण है कि हम 'राष्ट्रीय वेतन नीति' को अंगीकार करें अन्यथा वेतन भाग से विषमता का एक पहाड़ खड़ हो जाएगा व नया वर्गसंघर्ष शुरू हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा। हमारे श्रमिक आंदोलन में एक जो बुनियादी कमी है वह है कि यह आंदोलन उपभोक्ता की कतई अनदेखी करता है, जबकि किसी भी श्रमिक आंदोलन के नियोजक, श्रमिक व उपभोक्ता तीन आवश्यक पक्ष है, किंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि उपभोक्ता वर्ग कतई उपेक्षित है। अतः श्रमिक आंदोलन में एक व्यापक उपभोक्ता आंदोलन को भी सजगता के साथ घुसपैठ करना चाहिए। ऐसा भी महसूस होता है कि आज ट्रेड यूनियन आंदोलन एक ऐसी असमंजसता की स्थिति में आ खड़ा हुआ है कि उसे यह समझने में कठिनाई हो रही है कि अगर परंपरागत भूमिका बदले तो किस मार्ग को अख्तियार करें। देश सर्वोपरि होता है व उसे भी आंदोलन देश की जरूरतों के मुताबिक होना चाहिए। हमारा देश विकासशील देश है व यह आवश्यक है कि इसके आर्थिक विकास हेतु श्रमिक आंदोलन भी अपनी भूमिका बदले व विकास के साथ सहयोगात्मक रुख अपनाये।

भारत के श्रम आंदोलन को आज अपना आत्ममंथन करके स्थिति की यथार्थता को निर्भीकता व प्रखरता से पारिभाषित करना चाहिए। पुराने ढांचे को व्यवस्थाओं की लीक से हटकर नये संकल्प लेने चाहिए क्योंकि जहां तक पुराना नहीं चरमाएगा, इसमें नया नहीं जुड़ेगा। इसलिए आवश्यकता इस बात की भी है कि परंपरा व व्यवस्था की निरंतर समीक्षा हो। भारत का श्रम आंदोलन इस बात को जितनी जल्दी समझे उतना ही उसकी सेहत के लिये बेहतर व हितकर होगा।

आंदोलन : नये संदर्भ

नवीनतम प्रसंग में संदर्भ बदल गये हैं। अतः भारत के आज के श्रमिक आंदोलन में यह आवश्यक हो गया है कि श्रमिकों के सभी वर्गों में विशेषतः ग्रामीण श्रमिकों में देश भक्ति राष्ट्रीय अखंडता, एकता, सौहार्द्र, सांप्रदायिक सहिष्णुता, सामंजस्य, धर्म निरपेक्षता की भावना को मजबूत बनाएं। आम श्रमिकों में नेतृत्व का विकास करें उनको राष्ट्र के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के प्रतिबद्ध उद्देश्यों के प्रति सजग करें, श्रमिकों में उनके दायित्वों व अधिकारों का बोध करवाएं।

इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि ट्रेड यूनियन आंदोलन में प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं को स्थान मिले। हमें मालूम होना चाहिए कि हाल ही में चीन ने लेनिन व माओ के सिद्धांतों की आज के हालात में अप्रासंगिकता का प्रश्न उठाया है।

'तृप्ति' बंदा रोड भवानी मंडी (राज.)

"मैंने पैट्रोल की बचत करनेवाली गोलियां बनायी हैं।"

"क्या उन्हें पैट्रोल में मिलाया जाता है ?"

"नहीं, मोटर के मालिक को एक गोली खानी पड़ती है, जिससे उसकी तबीयत खराब हो जाती है और वह कार चलाने के लिए योग्य नहीं रहता। इस प्रकार पैट्रोल की बचत हो जाती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने मौत को कई बार पास से गुजरते हुए देखा

● व्योहार राजेन्द्र सिंह

प्रत्येक जन्म दिन पर मैं मृत्यु का चिंतन किया करता हूं। इस पर मेरे मित्र मुझसे अनेक प्रश्न करते। उसका पहला कारण तो यह है कि मृत्यु सगी बहन के समान जन्म ही के साथ जन्म लेती है...

मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।

तथा

मृत्युहिं पुरुषः-व्याघ्र जन्मनासह जायते।
(महाभारत)

लोग वर्षगांठ मनाते हैं। मैं मृत्युगांठ मनाता हूं। जन्म की गांठ और जड़ होती जाती है किंतु मृत्यु खुलती जाती है। कहावत है कि—

वर्षगांठ की जात जब वर्षगांठ की जात।

मेरे एक वयोवृद्ध मित्र से जब कोई उनकी आयु पूछता है तो वे २० वर्ष की बतलाते हैं जबकि वे ८० वर्ष के होंगे। उन्होंने अपनी आयु १०० वर्ष मान रखी है। इसलिए उसमें से ८० वर्ष घटाकर २० वर्ष की आयु बताते हैं। मैं जन्मदिन पर मरण-त्योहार को इसलिए याद करता हूं कि जीवन में यदि कोई ध्रुव सत्य है तो वह मृत्यु ही है।

इस ध्रुव सत्य को छोड़कर अध्रुव का सेवन कौन करे! जो ध्रुव को छोड़कर अध्रुव का सेवन करता है उसका ध्रुव भी नष्ट हो जाता है। अध्रुव तो नष्ट है ही।

जीवन सबको प्यारा है किंतु जब उसका अंत मरण में ही होना है तो उसी को ही प्यार क्यों न किया जाए। वाल्मीकि ने ठीक ही कहा है—

जितने संग्रह हैं उनका अंत विनाश में, जितने संयोग हैं उनका अंत वियोग में, जितनी उन्नतियां हैं उनका अवनतियों में, और जितने जीवन हैं, उनका अंत मरण में होता है।

जन्म रूपी एक छोर जीवन डोर का छूट ही चुका है, तब दूसरे छोर को पकड़ने का प्रयत्न क्यों न करूं? जीवन नदी का एक किनारा तो टूट ही चुका है, अब दूसरे किनारे तक पहुंचने का प्रयत्न क्यों न करूं? स्वयं न करूंगा तो काल प्रवाह बहाकर ले ही जाएगा। गीता कहती है..

यदि मोह के वश कोई काम नहीं करोगे तो उसे प्रकृति करवा ही लेगी।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मरण को एक अतिथि माना है। क्योंकि वह बिना तिथि बताये आता है और उसी प्रकार चला जाता है। साथ में आतिथेय को भी लेकर जाता है।

अब दूसरा प्रश्न हो सकता है कि यह कैसे मालूम हो कि वह अतिथि समीप आ रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपरी चिह्न उसके आगमन की सूचना देते हैं।

फूले कांस सकल महि छाई। जनु वर्षा पर प्रगट बुढ़ाई॥

मराठी कवि मोरो पंत तो सफेदी को यमराज की सेना की ध्वजा बतलाते हैं। वह आती हुई दिख रही है—

कृतांत कटकामलध्वजा जरा दिसौ लागली।

मुझमें अभी उस धवल ध्वजा के थोड़े बहुत चिह्न दीखने लगे हैं।

एक दूसरे मित्र लिखते हैं कि मृत्यु इतनी सूक्ष्म होती है, इसका अनुभव आपको नहीं है अतः आपको कविता सूझ रही है किंतु ऐसी बात नहीं है। मैंने उसे कई बार पास से गुजरते हुए देख लिया है। वह भी मुझे देखकर आगे बढ़ गयी है। एक बार सन १९२७ में मद्रास कांग्रेस के अवसर पर मेरी मोटर में आग लग गयी और वह वृक्ष से टकराकर राख हो गयी किंतु मैं न जाने कैसे उसके बाहर निकल आया। दूसरी बार चिखलदा नामक हिल-स्टेशन की झील में तैरते हुए गोते खाने लगा, भाग्य से ऊपर पुल की लटकती हुई जंजीर हाथ में आ गयी। तो भी उसके सहारे ऊपर चढ़ने का प्रयत्न सफल नहीं हुआ। तब झील में तैरते हुए मित्रों ने पकड़कर बाहर निकाला।

तीसरी बार पटना में हृदय रोग का आक्रमण घातक हो गया। मैं हरिजन सेवक संघ के

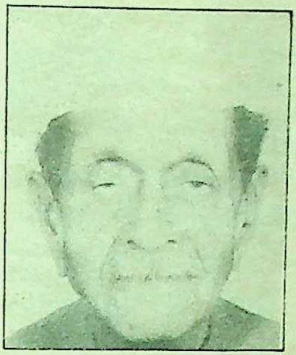

मध्यप्रदेश के वयोवृद्ध साहित्यकार एवं स्वाधीनता सेनानी व्योहार राजेन्द्र सिंह अब हमारे बीच नहीं हैं। निधन से कुछ समय पूर्व उन्होंने यह लेख हमें भेजा था। व्योहारजी को विनम्र श्रद्धांजलि सहित वही लेख यहां प्रकाशित किया जा रहा है।— संपादक

सम्मेलन में भाग लेने जा रहा था कि अचानक दर्द होना शुरू हुआ और पसीना आने लगा। मैंने समझ लिया कि अब अंत समय निकट है इसलिए नीचे लिखी चौपाई गुनगुनाने लगा—

समर मरन पुनि सुर सरि तीरा। राम काज छन भंगु सरीरा॥

अपने मित्र से मैंने गीता पाठ करने और गंगाजल पिलाने का अनुरोध किया। मेरे आतिथेय श्री गिरीन्द्र नारायण ने तुरंत एक गोली खिला दी, जिससे मुझे समाधान हुआ। डॉ.

जीवन में मैंने बहुत-सी योजनाएं बनायीं। वे अपूर्ण रह गयीं। इसका मुझे कोई दुःख नहीं है। यही संतोष कर लेता हूं कि कोई न कोई कभी न कभी इन्हें पूर्ण करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेन्द्र प्रसादजी ने सुनते ही अपने निजी डॉक्टर को भेज दिया जिनकी चिकित्सा में फिर बच गया। किंतु दूसरे दिन इसलिए मुझे अपने बचने का जितना हर्ष नहीं हुआ, जितना उनके जाने का दुःख हुआ।

इस प्रकार इसका पता नहीं चलता कि यमराज के दूत किसको लेने आएं और किसको लेकर चले जाएं। शायद वे 'सिंह' और 'प्रसाद' के भेद को भूल गये।

सन् १९४२ के आंदोलन में हम लोग जबलपुर से नागपुर और वहां से मद्रास के वेलोर जेल में प्रदेश के प्रमुख नेताओं के साथ भेज दिये गये थे। उस कारावास की कोई अवधि निश्चित नहीं थी। उस समय भी हृदय का दौरा आया और चला गया। अतः अवधि के पहले ही मुक्त कर दिया गया। वह अनुभव भी अधूरा रह गया। अस्तु—

आचार्य श्री राम शर्मा ने मरण के अनुभव का एक अच्छा उपाय बतलाया है, उसका भी प्रयोग कर रहा हूं। नित्य सोते समय यह अनुभव किया जाए कि हम मरण शैया पर पड़े हैं। सब लोग चारों ओर बैठे हैं। आत्मा देह से निकलकर कहीं ऊपर बैठ गयी है सब लोग शव को ले जा रहे हैं। हम भी उसके ऊपर हवा में चल रहे हैं। शव चिता पर रख दिया गया है और अग्नि-संस्कार हो रहा है। यह दृश्य दूसरों के समान हम भी देख रहे हैं। शव के जल जाने पर फूलों के साथ हम भी गंगा में प्रवाहित हो रहे हैं। किंतु उससे उलटी दिशा में जाकर उन चरणों में लीन हो गये हैं, जहां से गंगा का उद्गम हुआ है। हममें यह शक्ति आ गयी है कि जब इच्छा होगी फिर जन्म लेकर अपने अधूरे काम पूरा करेंगे।

ब्रह्मविद्या समाज (थियोसाफी) की मान्यता के अनुसार एक बार मनुष्य योनि प्राप्त हो जाने के बाद फिर दूसरी योनियों में जन्म नहीं होता। उस अवस्था को प्राप्त हो जाने पर जन्म लेना या न लेना कर्म के अनुसार नहीं किंतु हमारी इच्छा के अनुसार होता है। हम चाहें तो जन्म ले अथवा अनंत काल तक ब्रह्मलीन रहें।

विश्व का कल्याण चाहनेवाली आत्माएं बुद्ध के समान जन्म लेकर फिर से अपने कार्य में लग जाती हैं। आचार्य श्री राम शर्मा कहते हैं कि प्रातः काल उठने पर यह अनुभव करें कि मेरा पुनर्जन्म हो रहा है और मुझे फिर विश्व को ईश्वर का रूप समझकर उसकी सेवा के कार्य में लग जाना चाहिए। गुरुदेव कहते हैं कि विश्व के इस आनंद यज्ञ में मैं निमंत्रित हुआ हूं। अतः मेरा मानव जीवन धन्य हो गया है।

विश्वेर आनंद यज्ञे आमार्थ निमंत्रण।
धन्यहल धन्यहल मानव जीवन॥

जीवन में मैंने वैसे बहुत-सी योजनाएं बनायीं। वे अपूर्ण ही रह गयीं। इसका मुझे

पीड़ा

पीड़ा
तो एक
टुकड़ा है
धूप का !
लो—
घिर आयी
छाया
स्वप्नों की

—अमरीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई दुःख नहीं है। यही संतोष कर लेता हूं कि कोई न कोई कभी न कभी इन्हें पूर्ण करेगा। गुरुदेव ने एक गीत में कहा है कि जीवन में जो कुछ अपूर्ण हो गयी या समाप्त नहीं हुई, जो फूल बिना फूले हुए झड़ गया, वह दूसरे रूप में फूलेगा। जो नदी की धारा मरुभूमि में लुप्त हो गयी, वह कहीं न कहीं फिर प्रगट होगी। (गीतांजलि)

मैं अनुभव करता हूं कि जीवन में जो गाना मुझे आया था, वह गा नहीं सका। अभी तक उसकी स्वर साधना ही चल रही है। किंतु विश्वास है कि वह विश्व वीणा के तारों में कभी न कभी अवश्य झंकृत होगा। प्रभु ने जिस शरीर रूपी चादर को उढ़ाकर संसार में भेजा था, वह पूरी तरह से स्वच्छ नहीं रख पाया। कबीर के समान यह नहीं कह पाता कि—

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया।

मुझे अनुभव होता है कि प्रभु ने संसार को अपना संदेश सुनाने के लिए मुझे अपना दूत बनाकर भेजा था। वह संदेश न तो पूरी तरह अपने जीवन में उतार पाया और न संसार को स्पष्ट रूप से सुना पाया। संत ही उस संदेश से सच्चे वाहक बन सकते हैं।

एक संत के जीवन की घटना से ही समाप्त करूंगा। संत फ्रांसिस अपना बगीचा गोड़ रहे थे, किसी ने उनसे पूछा— 'यदि इसी समय आपकी मृत्यु आ जाए तो आप क्या करेंगे ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु ने जो काम मुझे दिया है उसे करता रहूंगा। अपने बगीचे को गोड़ता रहूंगा। इसी में प्रभु के चरणों में अर्पण करने के लिए फूल खिलेंगे।'

वचन-वीथी

आनन्द की पूर्ति सौंदर्य में दृष्टिगत होती है। आनन्द बाहरी हालात पर नहीं अंदरूनी हालात पर निर्भर है।

—डेल कार्नेगी

घोड़ा तो स्वयं को संभाल पाती है, परंतु आनंद का भार बांटने के लिए तो किसी मनुष्य का साथ आवश्यक है।

—मार्क ट्वेन

सुख और आनंद ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक छिड़कोगे उतनी ही ज्यादा सुगंधि आपके घर समाएगी।

—इमर्सन

अगर तुम आलसी हो तो अकेले मत रहो, अगर तुम अकेले हो तो आलसी मत बनो।

—जॉनसन

गतिशील मनुष्य के लिए सदा आशा है।

—गेटे

आत्म-परीक्षण में ईमानदारी का बोध होने से बढ़कर कोई और सुख नहीं होता।

—मेंशियस

उत्तरदायित्व योग्यता तथा शक्ति के साथ-साथ चलता है।

—जे.बी. हॉलैंड

देनेवाले का हृदय उपहार को प्रिय और मूल्यवान बना देता है।

—लूथर

जो कार्य आप पर है, उसे चुका दीजिए; और तब आपको पता चलेगा कि आपके पास अपना क्या है।

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या हैं।

—लॉक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीले रंग की साड़ी

● चन्द्रमौली

सुबह दस बज चुके थे। सूरज तेज था। 'चगनलाल एंड संस' कपड़े की दुकान मालिक खोलकर साफ करवा रहा था। साफ होते ही नियोन लाइट का स्विच ऑन कर अपने 'कैश बॉक्स' के पास वह बैठ गया था। गुमास्ते अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गये थे। वैसे तो ग्यारह बजे तक कारोबार में तेजी नहीं आती। शादी-वादी का सीजन भी तो नहीं था। कारोबार मंदा ही था।

चगन लाल एंड संस का मालिक कुंदनलाल इस बिजनेस का वारिस था। लेकिन उसने कई अन्य कारोबार भी शुरू कर किये थे। आमदनी दुगुनी-तिगुनी हो गयी थी। ऐशो-आराम से जिंदगी गुजर रही थी। फिर भी वह नियमित रूप से रोज कपड़े की दुकान पर ही बैठता था। उसके मन के किसी कोने में इस दुकान से गठबंधन-सा हो गया था। वह अपनी आशातीत तरक्की की पूंजी इस 'शॉप' को ही मानता था। यहां के कारोबार के बिना उसकी अपनी तकदीर बैठ जाने की आशंका उसे पल-पल चेताती थी।

आज भी कुंदनलाल अपनी सीट पर बैठे सड़क की ओर नजर फैला रहा था। खाली दुकान में किसी का मन नहीं लगता। जब खरीदारों की भीड़ जम जाती है उस समय देखना, कुंदनलाल का मुख फूल जाता है। शरीर सीट पर ही होता है लेकिन मन नाचने लगता है। कभी इधर साड़ियों के ढेरों पर तो कभी सूट लेंथ्स पर टिक जाता है। साड़ियां तो, उसकी दुकान में कई तरह की हैं, रांचीपुरम भारत की कांजीवरम रेशमी साड़ियों से लेकर सोने की बूटीदार पल्लू की महंगी बनारसी साड़ियां तक लाखों रुपये की लागत से खरीदकर रखी हैं। जब भी कोई ग्राहक आता है तरह-तरह के कपड़े दिखाने का शौक कुंदनलाल को बहुत है।

● ● ●

कुंदन लाल ने फिर से सड़क पर नजर दौड़ायी। धूप तेज थी। सड़क सूनी-सूनी सी थी। लगता था कि आज फिर बिजनेस ठप्प ही होगा। उसका मन निराशा से भर आया। अभी शादियों का मौसम शुरू नहीं हुआ।

कुंदनलाल अपनी दृष्टि मूंदने जा ही रहा था एक कार आकर सड़क पर रुकी। उसमें से एक अधेड़ सज्जन उतर आये और सीढ़ियां चढ़कर अंदर आ गये। कुंदनलाल के होंठों पर मुस्कान फैल गयी। उस आदमी का अंदाजा लेते हुए उन्होंने गुमास्ते को इशारा किया। सटपटाकर गुमस्ता काउंटर पर आ खड़ा हुआ। नम्रता से उसकी ओर झुककर कुंदनलाल बोला "आइए साहब ! पधारिए।"

लेकिन उसने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। अपने में खोये साड़ियों की आलमारी के पास खड़ा घूरता रहा। आलीशान गाड़ी से उतरनेवाला आसामी रईस ही होगा। लगता था कि वह निर्णय ले नहीं पा रहा था। कुंदनलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंदनलाल को मानो सांप सूंघ गया। 'शेखर-अरविंदा' जिसके नाम वह तोहफा पैक करके दिया था, क्या वह जीवित नहीं है ?

कुंदनलाल के मानस पटल पर वह नीले रंग की साड़ी उभर आयी।

का अनुभव बताता था कि ऐसे लोग बहुत कुछ खरीदते हैं।

"देखिए सर, मर्दों का काउंटर उस तरफ है। आइए मैं दिखाता हूं।" कुंदनलाल नम्रता से बोला।

"हूं" उसने कुछ बोला तो नहीं। लेकिन वहां से चलने का प्रयास भी नहीं किया। उसके चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया न देखकर कुंदन लाल तिलमिला गया। फिर उस आदमी ने साड़ियों की आलमारी की ओर इशारा किया।

कुंदनलाल ने तुरंत ढेर सारी साड़ियां निकालकर काउंटर पर डाल दीं।

"देखिए साहब ! ये हैं कांजीवरम की रेशमी साड़ी, पल्लू देखिए कितना खूबसूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये रही बनारसी साड़ियां शादियों में देनेवाली। बहुत खूबसूरत हैं। आपके लिए डिस्काउंट पर दे देता हूं। आप धर्मावरम साड़ियां भी देखना चाहेंगे। देखिए दक्षिण के कारीगरों का कमाल। बहुत चलती हैं ये साड़ियां। स्त्रियों के मन पसंद की हैं।" सांस भरते हुए कुंदनलाल एक पल के लिए रुक-सा गया।

"साफ रंग की औरतों पर सब रंग मिल-जुल जाते हैं। अगर आप हमारी राय लेना चाहें तो ये चार साड़ियां लेते जाइए। एक बनारसी, एक कांजीवरम, एक-एक धर्मावरम और पोचंपल्ली की।"

वह आदमी तो कौतुक से साड़ियों के ढेरों पर नजर दौड़ाता रहा, फिर अंगड़ाई लेते हुए अपनी अनभिज्ञता को प्रदर्शित करते हुए सड़क की ओर ताकने लगा। अचानक कुंदनलाल की दृष्टि भी उस तरफ मुड़ी। एक युवती धीरे से सीढ़ियां चढ़कर आ रही थी। एक पल के लिए वह आदमी उस तरफ देखता रह गया। फिर धीरे-से काउंटर पर नजर टिकाते हुए बोला, "रेशमी साड़ियों की जरूरत नहीं। कॉटन साड़ी ही दिखाइएगा।

कुंदनलाल निराशा के दौर से गुजरने लगा। फिर संभलकर कॉटन की साड़ियां आलमारी से निकालकर उसने काउंटर पर रख दीं। तब तक वह युवती भी काउंटर तक पहुंच गयी थी।

सूती साड़ियां भी अलग-अलग रंगों में आंखों के तारे-जैसे थीं। एक नीले रंग की साड़ी जिस पर सोने की जरी का पल्लू बुना हुआ था, उस पर हाथ फेरते हुए आदमी ने एक बार साड़ी अपने हाथों में लेकर फिर रख दी।

उस युवती ने उसी साड़ी को अपने हाथों में ले लिया। जरी पल्लू को हथेली से रगड़ते हुए कुंदनलाल से पूछा, "दाम क्या है?"

"पौने दो सौ मैडम। खोलकर दिखाऊं?" कुंदनलाल की नजर अब धीरे-से घूमकर उस युवती की ओर गयी। सालों के अनुभव से वह जानता था कि कपड़े के कारोबार में औरतों को वह जल्दी ललचा सकता है।

युवती ने साड़ी हाथ में लेकर अपने कंधे पर डाल ली। शीशे में अपने को निहारती-सी गयी।

"बहुत अच्छी लगती है आपके ऊपर। नया स्टाक आया है।" कुंदनलाल कह रहा था।

लेकिन युवती ने साड़ी काउंटर पर रख दी। फिर आह भरते हुए दृष्टि परे कर ली।

"पैक करवा दूं?" कुंदनलाल पूछ रहा था।

"नहीं। बहुत महंगी है।" युवती मन की बात कह गयी।

"खूबसूरत तो है। आप पर तो बहुत अच्छी लगती है। नये फैशन की है।" ललचाते हुए कुंदनलाल बोला,

"दाम भी तो मुनासिब हैं।"

"हां! हां! शायद मुनासिब तो हैं।" कहती हुई वह दूसरी साड़ियों की ओर देखने लगी।

वह व्यक्ति तो चुप्पी साधे साड़ी को और उस युवती को बारी-बारी से ताक रहा था। फिर धीरे से पूछा, "क्या यह साड़ी साफ रंग की युवती को अच्छी लगती है?"

"हां! हां! जरूर! बहुत अच्छी लगती है।" कुंदनलाल तुरंत बोला, "आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या है ?" उस युवती की ओर देखते हुए उसने फिर पूछा।

युवती की नजर अभी भी उसी साड़ी पर टिकी हुई थी। कुछ कोशिश से दृष्टि बदलती हुई वह बोली, "जी हां। मैचिंग तो है ही। बहुत अच्छी लगती है लेकिन....."

"अच्छी लगती है न ? सेठजी पैक कराइए। मैचिंग ब्लाऊज पीस भी दीजिए।" साड़ी के ऊपर से नजर परे न करते हुए उसने कहा।

कुंदनलाल मुसकराता हुआ उसके सामने आ गया "मैडम। अगर आपको कष्ट न हो तो एक मैचिंग ब्लाउज पीस भी सिलेक्ट कीजिए।"

मैचिंग ब्लाउज पीस भी खरीद लिया गया।

"गिफ्ट पैक बनवाइएगा—ऊपर लिखवाइए—'टू डियर अरविंदा—फ्रोम शेखर, गुल मोहर—अशोक नगर।'

कुंदनलाल पैक करवाने में व्यस्त था। खुद अपने हाथों से रंगीन कागज में पैक किया। ऊपर नीली रिबन लपेट दी। अपनी शॉप के कलेंडर के साथ नौकर को दिया, कार में रखने के लिए। वह आदमी मुड़कर जानेवाला ही था कि कुंदन मुसकराते हुए बोला, "बहुत अच्छा सिलेक्शन किया साहब ! मेम साहब को बहुत पसंद आएगी। अगली बार उनको भी साथ लेते आइएगा।"

उस आदमी ने सिर्फ 'हूं' कहा और कार स्टार्ट करके चला गया। उसके चेहरे पर कोई भाव प्रकट नहीं हुआ।

अब ग्राहक आने लगे। कुंदनलाल उस आदमी को भूल ही गया। दिन भर कारोबार में व्यस्त रहा। देर रात घर आकर नहा-धोकर खाना खा लिया। बिस्तर पर लेटे हुए अखबार हाथ में लेकर पढ़ना शुरू किया। सुबह की चटपटी में वह सिर्फ हैडिंग ही देख पाता था। रोज रात को खाने के बाद ही आराम से वह दैनिक पत्र पढ़ता था।

पूरा अखबार पढ़ ही लिया। दूसरे पन्ने पर आ गया; जहां शोक-समाचार वगैरह छपता था। पढ़ते-पढ़ते उस समाचार पर नजर आ गिरी 'डियर अरविंदा।

तुम्हें हमसे बिछड़े हुए दो साल हो गए। तुम्हारे बिना जीवन सूना ही है। तुम्हारी यादों को लेकर ही हम जी रहे हैं।"

तुम्हारा शेखर

गुलमोहर

अशोक नगर'

कुंदनलाल को मानो सांप सुंघ गया। 'शेखर-अरविंदा' जिसके नाम वह तोहफा पैक करके दिया था, क्या वह जीवित नहीं है ?

कुंदनलाल के मानस पटल पर वह नीले रंग की साड़ी उभर आयी।

सहायक महाप्रबंधक
भारतीय औद्योगिक वित्त निगम,
लाली चैंबर्स, एस.सी.ओ. ७६-७० (प्रथम मंजिल),
सेक्टर १७-डी, पोस्ट बाक्स सं. ९७,
चंडीगढ़-१६००१७

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मनुष्य का।

—लांगफैलो

काव्य समस्त ज्ञान का आदि और अंत होता है—वह उतना ही अमर है जितना मानव का हृदय।

—वर्ड्सवर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं सीमुर्ग प्रदेश ही तो बैकुंठधाम नहीं है ?

● डॉ. भालचंद्र तिवारी

जिस प्रकार वेदांत दर्शन के अनुयायी वैष्णवों ने मरणोपरांत पुण्यात्मा पुरुषों की आत्मा के महाप्रयाण एवं बैकुंठधाम की प्राप्ति का वर्णन किया है, उसी प्रकार सूफी दार्शनिक फरीद्दीन अत्तार ने भी संसार के पक्षियों का अपने स्वामी सीमुर्ग से मिलने जाने के रूप के माध्यम से आत्मा का परमात्मा से मिलन का बड़ा रोचक वर्णन अपने ग्रंथ 'मंति कुत्तैर' में किया है।

रामानुजाचार्य कृत 'श्री बैकुंठ गाथा', कोकाचार्य कृत 'अर्थ-पंचक' एवं 'वृहद् ब्रह्म संहिता' के अनुसार पहले मुमुर्षु भक्त की आत्मा सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होकर मस्तक पर उत्थान करती है, उसके पश्चात् कपाल-भेदन कर ब्रह्म-रंध्र मार्ग से उत्क्रमण करती हुई केवल सूक्ष्म शरीर का अवलंबन कर अर्चिरादि मार्ग से गमन करती है। उत्क्रमण काल में किसी ज्ञानी के संपूर्ण कर्मों का क्षय हो जाता है, परंतु उस समय कर्म न रहने पर भी देवयान मार्ग से चलने के उपयोगी कर्म-रचित सूक्ष्म-शरीर ज्ञान के प्रभाव से विद्यमान रहता है। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ज्ञान के सूक्ष्म-शरीर की उत्पत्ति नहीं होती, किंतु ज्ञान के द्वारा उसे प्रतिष्ठित रहता है सूक्ष्म-शरीर के रहने से, एक ओर जैसे प्राकृतिक सुख-दुःख-साधन स्थूल शरीर तथा सब प्रकार के कर्मों का निःशेष क्षय नहीं होता, दूसरी ओर, वैसे ही ज्ञान निमित्तक ब्रह्म-लोक प्राप्ति के लिए देवयान मार्ग से चलने का कोई उपाय नहीं रहता।

ज्ञानियों में जो आधिकारिक हैं, वे स्थूल-शरीर का अंत होने पर देवयान गति को नहीं प्राप्त होते, क्योंकि उन लोगों का प्रारब्ध कर्म अभुक्त रहने के कारण उस कर्म का फल-भोग करने के लिए उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ती है। भोग समाप्त हो जाने पर जब कर्म क्षीण हो जाते हैं, तब वे भी भवचक्र से छुटकारा पा जाते हैं। अर्चिरादि मार्ग से गमन ही देवयान गति कही जाती है।

अनेक हैं विश्राम भूमियां

इस मार्ग में बहुत ही विश्राम-भूमियां हैं। उनको पार कर आगे बढ़ना पड़ता है। मार्ग में सूर्य मंडल भेदकर तथा प्रकृति को पार करने के

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवादास्पद तर्क-वितर्कों के चलते हुए भी अनेक विद्वान यह मानते हैं कि सूफी-मत वेदांत का इसलामी संस्करण है। इस कथन में कुछ सत्य अवश्य निहित है तभी तो दो विभिन्न संस्कृतियों एवं भौगोलिक परिस्थितियों में विकसित धामों— बैकुंठधाम और सीमुर्ग प्रदेश में, मरणोपरांत आत्म के गंतव्य तथा गंतव्य तक पहुंचने की प्रक्रिया में साम्य मिलता है।

विरजा नदी प्राप्त होती है। विरजा नदी में स्नान करने से सूक्ष्म देह तथा उसमें संलग्न वासनारेणु धुल जाते हैं। साथ ही विशुद्ध सत्वावस्था प्राप्त होती है। अवगाहन से आत्मा रजो-विहीन होकर संकल्प मात्र से विरजा का अतिक्रमण करते हुए भगवद्धाम में प्रवेश करती है। यहां अमानव दिव्य-पुरुष आत्मा का स्वागत करते हैं। उनके अनंत जन्मों की सारी क्लांति तथा सब ताप और अवसाद उस दिव्य-पुरुष के मधुर स्पर्श से क्षणभर में मिट जाते हैं। मुक्त आत्मा को उस समय ज्योतिर्मय प चोपनि पदात्मक अर्थात त्रिगुणातीत शुद्ध सत्वमय भगवती तनु प्राप्त होता है। यह अनंत तेजोमय दिव्य तनु 'मंत्र-वपु' आदि विभिन्न नामों से प्रसिद्ध है। इस वपु में जरा नहीं है; जन्म-मृत्यु नहीं है; एवं यह समस्त विकारों से हीन है। यह भावमय एवं नित्य एक-रूप है। यह देह रचना का मुख्य उद्देश्य ज्ञानानंदादि आत्म-शक्तियों के विकास में सहायक होना है। यह भगवान के स्वस्थ गुण एवं विभूति आदि को प्रकट करती है। यह एक मात्र भगवत्सेवा के लिए ही उपयोगी है। इस प्रकार की लावण्यमयी देह प्राप्त कर आत्मा भगवान के निकट पहुंचती है। उस समय आत्माओं को अपना दास भाव एवं भगवान का प्रभु-भाव यह दोनों स्वाभाविक हैं, यह प्रतीत होता है। इस प्रकार आत्माएं भगवान के एक-निष्ठ परिचारक के रूप में परिग्रहीत होने के लिए प्रार्थनापूर्वक उन्हें प्रणाम करती हैं एवं उनके ही चरणों में आत्म-निवेदन करती है। तब भगवान प्रेमपूर्ण नेत्रों से उनकी ओर दृष्टिपात करते हैं एवं उनका देशकाल और अवस्था के अनुरूप सेवक भाव में वरण करते हैं। भक्त संजीवित होकर हाथ जोड़कर विनयपूर्वक प्रभु के आदेश पालन के लिए प्रतीक्षा करते हुए उनके निकट स्थित रहते हैं। इसके कारण आत्म-भाव के आत्यंतिक विकास से निरतिशय प्रीति प्राप्तकर अन्य विषयों के अनुष्ठान, दर्शन, यहां तक कि स्मरण करने में भी असमर्थ होकर सेवक भाव से भगवान के मधुर रूप का निर्निमेष दृष्टि से दर्शन करते हैं। तदनंतर भगवान उनकी ओर निहार कर सहास्य उनका आह्वान करते हैं एवं अपने श्रीचरणों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मस्तक पर स्थापित करते हैं, तब भक्त अमृत सागर में निमग्न होकर सदातन सुख में अवस्थान करते हैं।

हुद हुद बनाम गरुड़

अरब प्रदेश में हुद हुद पक्षी का लगभग वही स्थान है, जो भारत में पौराणिक गरुड़ पक्षी का। समस्त पक्षियों में हुद हुद विवेकशील एवं ज्ञान संपन्न माना जाता है। सूफी संत अत्तार ने आत्मा का प्रभु से मिलन का रूपक पक्षियों के माध्यम से निम्न प्रकार से बांधा है—

संसारभर के पक्षियों ने एकत्र होकर हुद हुद को अपना प्रमुख चुना; क्योंकि हुद हुद को आध्यात्मिक जगत के रहस्यों का पता है। हुद हुद ने पक्षियों को बताया कि उसका एक राजा (मालिक-प्रीतम) है, जिसका नाम 'सीमुर्ग' है। हम सभी का अंतिम लक्ष्य उससे मिलन ही है। लेकिन, उसके अकेले वहां पहुंच पाने में हुद हुद को आशंका है, किंतु सबके साथ चलने को वह तैयार है (यहां इसलाम की सामूहिक उपासना की छाया स्पष्ट है)। हुद हुद ने अनेक कहानियां कहीं, जिनको सुनकर पक्षियों के हृदय में राजा (मालिक-प्रीतम) से मिलने की उत्कंठा जागृत हुई। वे हुद हुद के नेतृत्व में अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर अग्रसर हुए। बीहड़ वन मार्ग को देखकर अनेक पक्षियों के हृदय में संशय उत्पन्न हुआ, जिसका निराकरण हुद हुद ने अनेक तर्कों से किया। वे फिर आगे बढ़े। एक पक्षी ने पूछा, 'प्रियतम के देश का रास्ता कितनी दूर है?' हुद हुद ने बताया, 'यह निश्चित नहीं बताया जा सकता, क्योंकि इस मार्ग से कोई भी यात्री वापस लौटकर नहीं आया। हां, सीमुर्ग के देश पहुंचने से पूर्व घने जंगलों से भरी सात घाटियां हैं। इनमें पहली घाटी खोज की, दूसरी प्रेम की, तीसरी ज्ञान की, चौथी निःसंगता की, पांचवीं एकत्व की, छठी भावाविष्टावस्था की और सातवीं फना की है।' इन कठिनाइयों का वर्णन सुनकर कुछ पक्षियों ने तो पहली मंजिल पर ही प्राण त्याग दिये। अंतिम मंजिल तक पहुंचने पर केवल तीस पक्षी ही रह गये। उन्होंने सीमुर्ग के प्रासाद में प्रवेश किया। उन्होंने उनके ऐश्वर्य को देखा, जो जात एवं सिफ़ से परे और मानवीय बुद्धि की पहुंच के बाहर था। इसके परश्चात् निरपेक्षता एवं परम-स्वातंत्र्य की बिजली कौंध गयी और एक ही क्षण में सैकड़ों जगत भस्म हो गये। इसे देखकर सारे पक्षी हतप्रभ हो गये। इसके बाद वे बड़े अनुनय-विनय के पश्चात् ही सीमुर्ग के सम्मुख उपस्थित हो सके। इसके पहले ही मालिक के कारनामों को पक्षियों के सम्मुख उपस्थित कर दिया गया। अपनी गलतियों को देखकर वे फना को प्राप्त हो गये। उनकी देह विनष्ट होकर धूल में मिल गयी। अतः इस प्रकार वे सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर पवित्र हो गये। तब परमैश्वर्य की ज्योति से उनमें नवजीवन का संचार हुआ। इस प्रकार जीवन के नष्ट हो जाने के बाद उन्होंने नवजीवन पाया और विनष्ट हो जाने के बाद अमरत्व। यह वफा की स्थिति है।

इसके बाद परम-ज्योति के आलोक में तीसों पक्षियों ने देखा कि उन तीसों की प्रतिच्छवि सीमुर्ग का चेहरा है और सीमुर्ग के चेहरे की प्रतिच्छवि वे तीसों हैं। उन दोनों में भेद नहीं है। इसके बाद उन तीसों की प्रतिच्छवि उस परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। न कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्री रहा न पथ-प्रदर्शक और न मार्ग। इस प्रकार ज्योति परम-ज्योति में निमग्न होकर अनंत विश्राम करती है। यही शह्र की स्थिति है।

वैष्णव साधना शुद्ध भक्तिपरक है, जबकि सूफी साधना प्रेमोन्मुख योगपरक। साथ ही दोनों देशों, (जहां कि वे विकसित हुईं) की संस्कृतियों में भी पर्याप्त अंतर है। अतः चरम लक्ष्य तक पहुंचने की दोनों मतों की कथाओं में कुछ कथन-भेद अवश्य है, किंतु भाव एक ही है। यह दोनों कथाओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है।

अद्भुत समानता

'मनुष्याणां सहसेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः।' (गीता ७/३) के आधार पर अनेक पक्षियों ने सीमुर्ग प्रदेश की यात्रा प्रारंभ की किंतु केवल तीस ही सीमुर्ग प्रासाद तक पहुंच सके। दोनों मतों की कथाओं के आधार पर हम उनकी समानता का अवलोकन करते हैं। किसी भी साधना के लिए प्राणायाम-परायण होना प्रथम अनिवार्यता है। इसके अनुसार वैष्णव साधक एवं भक्त यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा एवं समाधि के द्वारा प्राण (आत्मा) को सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से मस्तक पर उत्थान कराते हैं। ब्रह्मरंध्र, मार्ग से उत्क्रमण करता है। उसी प्रकार सीमुर्ग प्रदेश तक पहुंचने में मार्ग में मिलनेवाली सात घाटियां सूफियों की वकावस्था तक पहुंचने की साधना की, सात अवस्थाओं की प्रतीक है।

अनेक विद्वानों ने इन सातों अवस्थाओं का बड़ा सटीक वर्णन किया है। पंडित चंद्रबली पांडेय का कहना है— अब प्रियतम की खोज

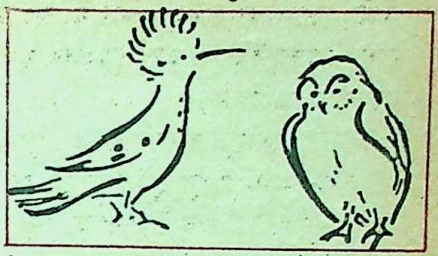

में उस समय निकल पड़ता है, जब इसमें मुरशिद इश्क की चिनगारी फूंक देता है। आशिक अपने माशूक को अपनाने के लिए अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध या 'जेहाद' करता है। वह 'जहद' की भूमि पर पहुंच जाता है। वृत्तियों के निरोध से प्रज्ञा का उदय होता है और वह मूवारिफ के मुकाम पर पड़ाव डालता है। मूवारिफ से आरिफ और आगे बढ़ता है और उसे सत्य (प्रियतम) की झलक मिलने लगती है और वह हकीक की भूमि पर ठहर जाता है। इस मुकाम पर उसे हक का आभास तो मिलता है पर उसका संयोग नहीं होता। इसलिए वह कुछ और आगे बढ़ता है और वस्ल की भूमि पर प्रियतम का साक्षात्कार कर उसी में निरत हो जाता है। प्रियतम में वह इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे प्रियतम के अतिरिक्त कुछ भी दिखायी नहीं पड़ता, यहां तक कि उसका अहंभाव भी नहीं रह जाता। तब उसे वफा का आनंद मिल जाता है और वह फना की भूमि में विहार करता है।'

इससे यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार मुमुर्ष वैष्णवों का सूक्ष्म-शरीर तथा उसमें संलग्न वासनारेणु विरजा में स्नान से धुल जाते हैं, साथ ही विशुद्ध सत्वावस्था प्राप्त होती है। अवगाहन से आत्मा रजो-विहीन होकर संकल्प मात्र से भगवद्धाम में प्रवेश करती है। यही स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूफी संत अत्तार के रूपक बिजली कौंधने तथा सैकड़ों जगत के भस्म होने के तत्पश्चात अपनी गलतियों (पापों) के एहसास होने तथा पश्चात्ताप से वासनारेणु तथा रजो-भाव के भस्म होने, परिणामस्वरूप शुद्ध सत्वमय नवजीवन प्राप्त करने से है। यह शुद्ध सत्वमयी आत्मा ही अलरुह है।

वैष्णवों की उपासना शुद्ध सगुणमयी है। वैसे तो सूफियों की उपासना भी प्रारंभिक स्तर पर सगुणमयी है, किंतु उच्च स्तर पर वेदांत-उपनिषदों-से प्रभावित शुद्ध निर्गुण है। अतः जिस तेज-स्वरूप को सगुण मानकर वैष्णव उसे भगवान की संज्ञा देते हैं और जिनके चरण-कमल के स्पर्श मात्र से मुमुर्ष अमृत सागर में निमग्न होकर सदातन सुख में अवस्थान करते हैं, उसे सूफियों ने 'तेजाऽसि' माना है अतः तीसों पक्षी जो अलरूह के प्रतीक हैं, और स्वयं तेजमय हैं, उस परम-तेज में विलीन हो जाते हैं।

रहा न कुछ अंतर तेहि माहीं
एक भई जीत पर छाहीं (प्रेम रस : शेख रहीम)

श्री कृष्णयामल तंत्र में वर्णित है कि ब्रह्मांड के ऊपर महाविष्णु लोक है, उसके ऊर्ध्व में देवी-लोक है, देवी लोक के बाद शिव लोक है। देवी शब्द से यहां दुर्गा या त्रिपुर सुंदरी को जानना चाहिए। शिव लोक सदाशिव धाम है। सदाशिव यागपीठ या महायोनि संयुक्त ज्योतिर्लिंग-स्वरूप है। इन्हीं की प्रकट-मूर्ति अर्द्धनारीश्वर है। श्रीकृष्णयामल के मत में यह शिवलिंग ही श्रीकृष्ण का लिंगात्मक तेज एवं देवी स्वयं राधिका हैं जो माया संबंध से योनिरूप में प्रकाशमान हैं। इस लोक तक ही गुणों की सीमा है। उसके बाद ज्योतिर्मयी अपार अनंत गुण समन्वित विरजा नदी है। इस नदी में स्नान करने पर प्रकृति और पुरुष का स्वभाव बदल जाता है। इसके ऊपर जाने पर शुद्ध सत्व जीव (आत्मा) निरंजन-निराधार-परमतेजोमय भगवत् तत्व में निमग्न हो जाता है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि भौगोलिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता के बावजूद दोनों मतों—वैष्णव एवं सूफी में जीवन के अंतिम लक्ष्य के संबंध में आश्चर्यजनक साम्य है। इस प्रकार चाहे हम ज्योति (आत्मा) का परमज्योति (परमात्मा) से, बूंद का समुद्र में या घटाकाश का महाकाश में मिलन कहें; मिलन की प्रक्रिया एवं लक्ष्य में पर्याप्त एक-रूपता है। प्रतीकात्मक भाषा में उस महामिलन स्थल को चाहे बैकुंठधाम कहें या सीमुर्ग प्रदेश— दोनों एक ही हैं।

— ५५७/१४-ब, ओम नगर,
आलम बाग, लखनऊ

विश्व में प्रतिवर्ष पुर्तगाल के क्षेत्रफल के बराबर भू-क्षेत्र से जंगल काट दिये जाते हैं। जंगल-कटाई में इंडोनेशिया सबसे आगे है क्योंकि यहां लकड़ी के निर्यात से सर्वाधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

गत वर्ष इंडोनेशिया सरकार ने १ करोड़ ८२ लाख रुपये मूल्य की लकड़ी का निर्यात किया। आज भी विश्व बाजार में प्लायउड और अन्य लकड़ी के सामान का निर्यात सर्वाधिक यहीं से होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

१. **एक** त्रिकोण के सबसे बड़े तथा सबसे छोटे कोणों का योग ११० अंश है। सबसे बड़े कोण को छोड़कर दो अन्य कोणों का अंतर ३५ अंश है। त्रिकोण के तीनों कोण कितने-कितने अंश के हैं ?

२. क. **इस्राइल** देश की सीमा किन-किन देशों से मिलती है ?

ख. वह किन क्षेत्रों पर बलात अधिकार जमाये हुए है ?

३. **चीन** का अंतिम राजा कौन था ? वहां राजशाही का अंत कब हुआ ?

४. **देश** में सबसे अधिक बिजली उत्पादन की क्षमता वाला **ताप-बिजलीघर** कौन-सा और कहां स्थित है ?

५. **दुनिया** में सबसे पुराना तथा सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर कहां है ?

६. **पश्चिम** दिशा में बहनेवाली देश की सबसे बड़ी नदी कौन-सी है, जिसे गंगा की तरह पवित्र माना जाता है। वह किन राज्यों में होकर बहती है ?

७. **भारत** के किस महान व्यक्ति ने रूस की १९१७ की अक्तूबर क्रांति के बाद वहां का भ्रमण करने पर कहा था कि यह "नये युग के विहान का सूचक भोर का तारा है।"

८. क. **मानव**-शरीर में **विभिन्न** रक्त-समूहों के क्या नाम हैं ?

ख. रक्तदान में किस रक्त-समूह को प्रायः प्रयोग में लाया जाता है ?

९. **अंतरिक्ष** में सबसे अधिक समय बिताने के बाद पृथ्वी पर लौटनेवाला व्यक्ति कौन है ? वह कितने दिन वहां रहा ?

१०. **अब** तक किन-किन सबसे लंबे रेलमार्गों पर बिजली की ट्रेनें चलने की व्यवस्था हो चुकी है ?

११. **देश** में सबसे ऊंची मीनार (टावर) कौन-सी और कहां है ?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

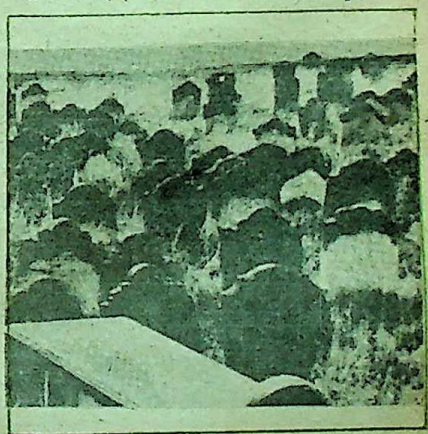

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

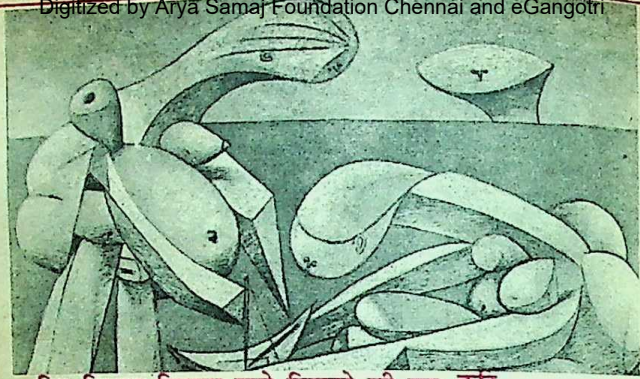

विश्व विख्यात चित्रकार पाब्लो पिकासो की एक कृति

सट्टाबाजार : कलाकृतियों का

□ सुखबीर

जॉर्ज विल्डेंस्टेन कलाकृतियों के व्यापार में आज संसार का सर्वश्रेष्ठ व्यापारी माना जाता है। वह होशियार व्यापारी ही नहीं, कला का बहुत बड़ा विद्वान और पारखी भी है। संसार के प्रसिद्ध कलामर्मज्ञों में उसकी गणना होती है। उसकी आंखें न केवल एक नजर में ही किसी चित्र की अच्छाई-बुराई को भांप लेती है, बल्कि उसके कलात्मक और व्यापारिक दोनों दृष्टिकोणों से उसके महत्त्व को भी आंक लेती हैं। जिस चित्र को वह अच्छा कह दे, उस पर जैसे— श्रेष्ठता की मोहर लग जाती है। कई बार जिन चित्रों के बारे में आलोचकों का मतभेद हो, वे विल्डेंस्टेन को दिखाये जाते हैं। उनके बारे में उसकी राय अंतिम राय समझी जाती है।

नीलाम होनेवाले चित्रों को, नीलामी से पहले, जब विल्डेंस्टेन देख रहा होता है, तो बहुत-से व्यापारियों की आंखें चित्रों के बजाए उस पर लगी होती हैं। वे देख रहे होते हैं कि वह किस चित्र के सामने अधिक देर तक खड़ा होता है। किस चित्र को ज्यादा ध्यान से देखता है। तब वे अनुमान लगाते हैं कि जिस चित्र को उसने ज्यादा ध्यान से देखा है, वह जरूर महत्त्वपूर्ण होगा, और वे सोचते हैं कि नीलामी के समय वे उस चित्र की बढ़-चढ़कर बोली देंगे। पर विल्डेंस्टेन होशियार व्यापारी है। वह व्यापारियों की इस चाल से पूरी तरह परिचित है। इसलिए वह चालाकी से काम लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने व्यापार संबंधी नाथन के दो मुख्य सिद्धांत थे—"खरीदते समय खतरा मोल लेकर भी खरीदो, और बेचते समय बेहद धीरज रखकर बेचो !" सो, वह चित्र खरीद कर कई-कई साल तक प्रतीक्षा करता रहता और सही मौका आने पर उन्हें बेचता। उन्हें खरीदते समय भी बड़े साहस से काम लेता था। वह सट्टाबाजार के गुर जानता था। उसके पास किसी एक चित्रकार के पचीस-तीस चित्र होते, तो नीलामी में उसी चित्रकार के किसी चित्र की वह बहुत बड़ी बोली देता। इस प्रकार अचानक वह उस चित्रकार का महत्त्व बढ़ा देता।

चित्रों को साधारणतः देखने के पश्चात वह बाहर आकर अपने एक सहायक से उस विशेष चित्र के बारे में बताता है जो उसे खरीदना होता है। फिर, जब नीलामी होती है, तब उस विशेष चित्र को उसका सहायक एक साधारण व्यापारी की भांति बोली देकर साधारण-सी कीमत पर खरीद लेता है। अन्य व्यापारियों का ध्यान उस चित्र की ओर नहीं जाता। वे तो उस चित्र पर बोली बढ़ाते हैं, जिस पर विल्डेंस्टेन ने बोली दी हो। सो, वे ठगे जाते हैं। जो चित्र विल्डेंस्टेन के सहायक ने एक हजार पौंड में खरीदा होता है, बाद में वही चित्र बीस हजार पौंड में बेचा जाता है। अगर विल्डेंस्टेन ने स्वयं उस चित्र पर बोली दी होती, तो बोली बढ़ती जाती और उसे दस या पंद्रह हजार पौंड उस चित्र के देने पड़ते।

वैसे, कई बार अच्छे चित्रों को खरीदते समय विल्डेंस्टेन को बड़े-बड़े व्यापारियों का सामना करना पड़ता है। वह अच्छे चित्रों को किसी कीमत पर भी जाने देना नहीं चाहता। ऐसे मौकों पर वह कई बार अपनी पूरी पूंजी तक लगा देता है। अच्छे चित्रों से उसे बेहद प्यार है। किसी दूसरे व्यापारी के सामने उन्हें न खरीद सकना वह अपना अपमान समझता है। उन्हें पाने के लिए वह बड़े से बड़ा खतरा मोल ले लेता है। अच्छे चित्र उसके प्राण हैं।

कला-प्यार : पैत्रिक गुण

कला का यह प्यार और व्यापार की सूझ विल्डेंस्टेन ने अपने पिता, नाथन विल्डेंस्टेन से

'एक्रोबैट एंड द कॉल'
पिकासो की एक और कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायी है। वह भी चित्रों का व्यापारी था और फ्रांस के बड़े व्यापारियों में उसकी गणना होती थी। उसने बचपन से ही अपने बेटे को कलाकृतियों को समझने और सराहने की सूझबूझ दी थी और चित्रों के संसार में उसका पालन-पोषण किया था। सो, बड़ा होने पर बेटा पिता से भी बड़ा कलामर्मज्ञ बना। वह फ्रांस का ही नहीं, संसार का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया।

नाथन विल्डेंस्टेन शुरू में चित्रों का व्यापारी नहीं था। पहले वह कपड़े की दुकान चलाता था। एक बार उसने एक चित्र खरीदा, जो कुछ समय पश्चात् काफी बड़ी कीमत पर बिक गया। नाथन ने सोचा, इस व्यापार में तो बहुत बड़ी संभावनाएं हैं! सो, वह दुकान छोड़कर अपनी छोटी-सी पूंजी से पुराने चित्र खरीदने लगा। उसने अठारहवीं शताब्दी के चित्रकार, बाउचर का एक चित्र दो सौ फ्रांक में खरीदा और दो साल के बाद बीस हजार फ्रांक में बेचा। फिर क्या था, वह पूर्ण रूप से इस व्यापार में पड़ गया। कुछ ही वर्षों में उसका सितारा ऐसा चमका कि वह पेरिस के सबसे बड़े पांच व्यापारियों में गिना जाने लगा। उसमें अच्छे-बुरे चित्रों को पहचानने की स्वाभाविक योग्यता थी। बहुत-से पुराने चित्र, जिनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता था, नाथन ने देखे, उनमें से कुछ एक खरीदे, और फिर उन्हें बड़ी-बड़ी कीमतों पर बेचा।

अपने व्यापार संबंधी नाथन के दो मुख्य दो सिद्धांत थे— "खरीदते समय खतरा मोल लेकर भी खरीदो, और बेचते समय बेहद धीरज रखकर बेचो।" सो, वह चित्र खरीदकर कई-कई साल तक प्रतीक्षा करता रहता और सही मौका आने पर उन्हें बेचता। उन्हें खरीदते समय भी वह बड़े साहस से काम लेता था। वह सट्टाबाजार के गुर जानता था। उसके पास किसी एक चित्रकार के पचीस-तीस चित्र होते, तो नीलामी में उसी चित्रकार के किसी चित्र की वह बहुत बड़ी बोली देता। इस प्रकार अचानक वह उस चित्रकार का महत्त्व बढ़ा देता। और जब वह चित्र बड़ी कीमत पर बिकता, तो बाद में नाथन के पास पड़े उस चित्रकार के वे पचीस-तीस चित्र भी उसी कीमत पर बिक जाते।

वास्तव में, नाथन विल्डेंस्टेन ने उन चित्रों का बहुत गहन और विशद् अध्ययन किया था। उसने अपने जीवन का अधिकांश समय अजायबघरों में घूमकर बिताया था और पुराने और नये चित्रों को बड़ी बारीकी से देखा था। फिर, उनके बारे में पूरी जानकारी वह अपने दिमाग में ही नहीं, दफ़्तर में जाकर अपनी फाइलों में भी अंकित करता। इसलिए, जब भी कोई चित्र उसके सामने आता, तो वह अपनी स्मरण-शक्ति या फाइलों में अंकित जानकारी के आधार पर बता सकता था कि उस चित्र का कलात्मक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से क्या महत्त्व है।

यह सारी कलात्मक और व्यापार संबंधी सूझबूझ बेटे को पिता से मिली, तो उसने चित्रों के व्यापार में आश्चर्यजनक बातें कीं।

आज जॉर्ज विल्डेंस्टेन के पास दो हजार से ऊपर ऐसे चित्र हैं, जो बड़ी से बड़ी कीमत पर बिक सकते हैं। इन चित्रों में रैंब्रांड, रूबेन, फ्रा एंजेलिको, एल ग्रेको, फ्रैंगोनाल्ड रेनुआ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिसारो, सेजां, वान गॉग, गोगैं आदि महान चित्रकारों के कई-कई चित्र हैं। यही चित्र उसकी सबसे बड़ी पूंजी हैं, और उन्हीं के आधार पर उसे कभी किसी व्यापारी के सामने हार नहीं खानी पड़ती। एक बार उसने उन्नीसवीं सदी के महान चित्रकार सेजां के एक साथ पचीस चित्र साढ़े तीन लाख पौंड में खरीदे थे। आज वही चित्र कई गुना अधिक कीमत पर बिक सकते हैं।

मित्रों और चित्रों का व्यापक दायरा

संसार में विल्डेंस्टेन के एजेंट और दोस्त फैले हुए हैं, जो उसे हर देश के चित्रों के बाजार संबंधी जानकारी देते रहते हैं, जिसे वह अपनी फाइलों में दर्ज करवाता जाता है। मौका आने पर वह इसी जानकारी के आधार पर निर्णय करता है कि कौन-सा चित्र किस कीमत तक खरीदा जाना चाहिए। इसीलिए वह जो भी चित्र खरीदता है, उसमें कभी घाटा नहीं खाता। इसी जानकारी के आधार पर वह अपने दफ़र में बैठा हुआ ही सारा व्यापार करता है। उसके दफ़र में बहुत-से कर्मचारी हैं, जो चित्रों संबंधी पूरी जानकारी अंकित करने में व्यस्त रहते हैं। चित्रों संबंधी इतना अच्छा और सही रेकार्ड शायद ही और कहीं मिल सकता हो। बहुत-से व्यापारी चित्रों संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए दफ़र में आते हैं। वे जानते हैं कि वहां से प्राप्त होनेवाली जानकारी पर पूरा भरोसा किया जा सकता है, और वे चित्र खरीदने में धोखा नहीं खा सकते।

आश्चर्य की बात है कि विल्डेंस्टेन इतने बड़े पैमाने पर व्यापार करने पर भी कभी किसी से मिलता नहीं है। उसके सहायक ही अन्य व्यापारियों से बातचीत करते हैं। उससे व्यापार करनेवाले कई व्यापारियों ने तो उसकी शक्ल भी नहीं देखी है।

अपनी युवावस्था में विल्डेंस्टेन ने चित्रकला के इतिहास संबंधी काफी खोज की थी। उन दिनों वह पिता के साथ अजायबघरों में घूमने या व्यापार में पड़ने के बजाए अपना अधिकांश समय पुस्तकालयों में बिताया करता था। उसने बहुत व्यापक अध्ययन किया और कला-संबंधी लेख लिखे, जो विद्वानों ने बहुत पसंद किये। उन्हीं दिनों वह कला संबंधी एक पत्रिका का संपादक भी बना और सफलतापूर्वक उसका संपादन करता रहा। उसने कला संबंधी कई पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। और आज अपने इस सारे काम के बल पर वह कला का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता है। सन् १९३४ में जब उसका पिता तेरासी वर्ष की आयु भोगकर संसार से विदा हुआ, तो उसके सारे व्यापार का बोझ उसके सिर पर पड़ा। तब उसने उस बोझ को पूरी जिम्मेदारी से संभाला, और कुछ ही वर्षों में संसार का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया।

१९-सन एंड सी, वरसोवा रोड, बंबई-६१

उससे अस्वाभाविक कुछ नहीं होता, जो भौतिक दृष्टि से असंभव हो।

—आर. वी. शेरिडन

अश्रुपूर्ण प्यार बहुत ही लुभावना होता है।

—वॉल्टर स्कॉट

सुंदर आचरण, सुंदर देह से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा वह उच्च कोटि का हर्ष प्रदान करता है, वह सभी कलाओं से श्रेष्ठ कला है।

—इमर्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकी जीवन बिताते हैं ओरांगउटान

ओरांगउटान को मलेशिया में 'जंगल' का आदमी कहा जाता है। इन क्षेत्रों में जानेवाले प्रारंभिक यूरोपीय अन्वेषकों ने भी उन्हें 'जंगली आदमी' समझने की भूल की थी। बोर्नियो के आदिवासियों का विश्वास था कि ओरांगउटान पहले मनुष्य ही थे, लेकिन ईश्वर की नकल करने के अपराध में उन्हें मनुष्य से पशु बन जाना पड़ा।

ओरांगउटान काफी वजनी होते हैं। लगभग ७० किली वजन होता है उनका। वे वृक्षों पर रात बिताते हैं। डालें झुकायीं और लगे विश्राम करने। कभी-कभी भारी वजन के कारण डालें टूट जाती हैं और ओरांगउटान धरती पर आ जाते हैं। वर्षा के दौरान ये घनी पत्तियोंवाले वृक्ष पर ही आश्रय लेते हैं।

ओरांगउटान एकाकी ही होते हैं। शिशु ओरांगउटान बड़ा होते ही माता का साथ छोड़ देता

यह है सुबीस, एक चिड़ियाघर की मादा ओरांगउटान। सुबीस अभी केवल दस माह की है। चूंकि मां ने उसे त्याग दिया अतः चिड़ियाघर के एक कीपर नील स्पूनर ने उसकी देखभाल का जिम्मा उठाया। सुबीस को अन्य ओरांगउटानों के साथ भी रखा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और निकल पड़ता है—एकाकी जीवन बिताने। उसका यह एकांत प्रणय-लीला के दौरान ही भंग होता है। उसके बाद वह पुनः एकाकी जीवन बिताने लगता है। नर ओरांगउटान अपनी मादा से लगभग दुगुने आकार का होता है। विशाल गलमुच्छे भी उसकी एक पहचान है। मादा ओरांगउटान आठ से नौ मास के गर्भ के बाद एक शिशु का जन्म देती है। जन्म के बाद तीन-चार वर्ष तक वह शिशु की देखभाल करती है, मसलन खुद उसे अपना दूध पिलाती है फिर फल-फूल, पत्तियां खाना सिखलाती है। वह उसे सदैव स्वच्छ भी रखती है। वर्षा के दिनों में वह उसे कभी-कभी नहलाती भी है।

एक रिपोर्ट के अनुसार वनों की कटाई के कारण ओरांगउटानों की संख्या घटती जा रही है। उनका शिकार भी किया जाता है। उनके बच्चों को पकड़कर सरकसों या चिड़ियाघरों में बेचा जाता है।

गोल बनाकर उड़ते हैं जिरैइया

जिरैइया : एक नन्हा पक्षी, पैर पीले, कबूतर-जैसी चोंच। ये पक्षी इधर-उधर बिखरकर दाना चुगते हैं, पर खतरे का आभास होते ही गोल बनाकर एक साथ उड़ते हैं। ये पक्षी अपने देश के अतिरिक्त पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका और बर्मा में पाये जाते हैं। ये अकसर नदी तट या सरोवरों के निकट पाये जाते हैं और वही रेतीले स्थल पर अपने अंडे भी देते हैं। इनका माथा सफेद होता है। गले पर एक काली पट्टी नर और मादा दोनों में समान होती है।

रोग नाशक होता है जामुन

संस्कृत कवियों ने अपने साहित्य में जामुन के वृक्ष का यत्र-तत्र उल्लेख किया है। विष्णु शर्मा, कालिदास आदि के साहित्य में जामुन के वृक्ष की विभिन्न प्रसंगों में चर्चा की है। करालमुख नामक मगरमच्छ को जामुन खिलानेवाले बंदर की मुसीबत और फिर उससे बचने की चतुराई की कहानी हम सब जानते हैं। जामुन पशु-पक्षियों का प्रिय फल है। प्रसिद्ध फोटोग्राफर रामेश बेदी ने अपनी एक पुस्तक 'हमारे पोषक फल' में लिखा है कि सांप भी जामुन खाता है। असम में बगीचों के मालिक जे.एच. मिचेल ने जो अजगर मारा था, उसके पेट में मुट्ठी भर जामुन मिले थे।'

जामुन को वायु नष्ट करनेवाला, मधुर, रुचिकर, कफनाशक और पित्तहर माना गया है। खांसी और दमे में जामुन की छाल उपयोगी मानी जाती है। जामुन खाने से दांत और मसूढ़े मजबूत होते हैं। मधुमेह में जामुन के बीजों का प्रयोग लाभदायक माना गया है। ये बीज यकृत की बिगड़ी हुई क्रिया की सुधारते हैं, जिससे शर्करा की पाचन में सहायता मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

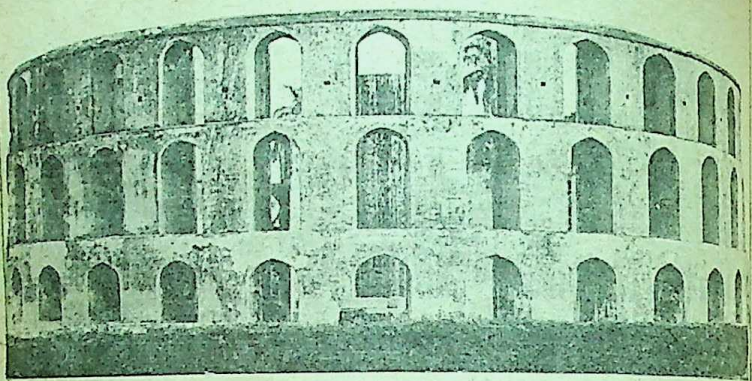

नई दिल्ली स्थित जंतर-मंतर

हमारे खगोलीय तीर्थ

● कृष्ण प्रकाश त्रिपाठी

जब से मनुष्य का अविभार्व इस पृथ्वी पर हुआ है तभी से वह आकाश के सूर्य, चंद्रमा और चमकते हुए तारों की ओर आकृष्ट होता रहा है। प्रागैतिहासिक काल में तो इनसे प्रभावित होकर मनुष्य ने इन आकाशीय पिंडों में देवत्व की कल्पना कर ली थी और इन्हीं की स्तुति में अपनी कल्पना और कवित्व शक्ति का उपयोग किया था, किंतु जब से उसमें विचार और विवेचना शक्ति पैदा हुई तब से वह समझने का प्रयत्न करता रहा है कि ये पिंड क्या हैं, ये क्यों चमकते हैं, इनका विस्तार कितना है, ये पृथ्वी से कितनी दूरी पर हैं, ये किस आधार पर टिके हैं आदि-आदि। यही कारण है कि विज्ञान की अन्य शाखाओं की अपेक्षा खगोलविज्ञान (एस्ट्रोनॉमी) सबसे पुराना है, यह एक विलक्षण बात है कि आधुनिक उत्कृष्ट यंत्रों के अभाव में भी अनेक देशों के प्राचीन खगोलवेत्ताओं ने इन पिंडों के बारे में अनेक बातें जान ली थीं। इस ज्ञान के उपार्जन में भारत खगोलवेत्ता अग्रणी रहे हैं और हमें इस बात का गर्व है कि खगोलविज्ञान के विकास में हमारे खगोलवेत्ताओं का योगदान आज भी उल्लेखनीय है।

प्राचीन वेधशालाएं

इस्लाम के उदय के कुछ ही साल बाद भारतीय गणित और खगोलविज्ञान के ग्रंथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल खगोलविज्ञान का अध्ययन कई शाखाओं में किया जाता है। केवल प्रेक्षण द्वारा तारों तथा ग्रहों के स्थानों को ठीक-ठीक नापने के विज्ञान को तारामिति (एस्ट्रोमिट्री) कहते हैं। इस कार्य के लिए प्रयुक्त अच्छे यंत्रों के निर्माण तथा उनके द्वारा नापने की कला को प्रयोगात्मक खगोलविज्ञान कहते हैं। गोलीय खगोलविज्ञान (स्फेरिकल एस्ट्रोनॉमी) में खगोलीय पिंडों की स्थितियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बगदाद में पहुंच गये थे। वहां अरबी में इनके अनुवाद हुए। इस्लामी खगोलवेत्ताओं ने यूनानी और भारतीय खगोलीय परंपराओं का समन्वय करके खगोलविज्ञान का विकास किया, नये वेधयंत्र विकसित किये और पश्चिम एशिया से मध्य एशिया तक वेधशालाएं बनवायीं। समरकंद के शासक उलूगबेग ने १५वीं सदी में राजधानी के पास एक बड़ी वेधशाला बनवाकर तारों की सूक्ष्म सारणियां तैयार करवायीं।

भारत में इस्लाम के प्रवेश के बाद यहां भी इस्लामी खगोलविज्ञान को स्थान मिला। १७वीं सदी (१६८६ ई.) में महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय का जन्म खगोलविज्ञान के अंधकारमय काल में परमउज्ज्वल प्रकाश स्तंभ की तरह हुआ। उन्होंने देखा था कि अकाशीय पिंडों की वेधप्राप्त तथा गणनाप्राप्त स्थितियों में अंतर रहता है। इसके लिए उन्होंने स्वयं नवीन सारणियां बनवाने का संकल्प किया। उन्होंने हिंदू, इस्लामी और यूरोपीय ग्रंथों का अध्ययन किया। कई विदेशी ग्रंथों को एकत्र किया और उनका अनुवाद करा लिया। कुछ विद्वानों को दूसरे देशों में भेजा ताकि वहां से काम सीखकर आएं। कुछ यूरोपीय तथा अन्य देशों के खगोलवेत्ताओं को अपने यहां आमंत्रित कर लिया। उन्होंने उलूगबेग की समरकंद की वेधशाला और अन्य वेधशालाओं के नमूने पर मुहम्मदशाह के शासनकाल में १७२४ ई. में दिल्ली से अपनी वेधशाला बनवायी। बाद में जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में भी वेधशालाएं स्थापित कीं। जयसिंह ने अपने स्वयं आविष्कृत वेधयंत्र (रामयंत्र, सम्राटयंत्र, यंत्रराज, मिश्रयंत्र, दिगंशयंत्र, जयप्रकाशयंत्र आदि) चूना-पत्थर से बहुत सूक्ष्मता से स्थापित कराये थे। उनके निर्माण में ज्यामिति के नियमों पर ध्यान दिया गया था और उन्हें याम्योत्तर तथा स्थान के अनुसार साधा गया। इन वेध यंत्रों से ७ साल तक वेध करके जयसिंह ने 'जिन मुहम्मद शाही' के नाम से सूक्ष्म खगोलीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारणी तैयार करवायी थी।

दूरबीन और नये सितारों की खोज

जयसिंह के बाद पाश्चात्य खगोलविज्ञान भारत में आसानी से प्रवेश पाने लगा, क्योंकि यहां अंगरेजों की शक्ति बढ़ने लगी। ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रमुख रूप से नौपरिवहन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मद्रास में अपनी पहली वेधशाला १७९२ ई. में स्थापित की। पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मद्रास वेधशाला में बहुत महत्त्वपूर्ण अनुसंधान कार्य हुआ। उस समय संसार की अच्छी वेधशालाओं में इसकी गिनती होती थी। यहीं सन १८३१-४३ में किये गये प्रेक्षणों के आधार पर टामस टेलर ने अपना प्रसिद्ध 'मद्रास कैटलॉग' बनाया था। इसी के आधार पर 'ब्रिटिश एसोसिएशन' का १८४५ ई. का कैटलॉग बना। १८५० ई. में विलियम स्टीफन नैकब ने ६ इंच व्यास की पहली दूरबीन स्थापित की। १८६६ ई. में ८ इंच व्यास की एक और दूरबीन लगायी गयी। इन्हीं यंत्रों की मदद से नारमन राबर्ट पागसन ने मद्रास वेधशाला से पांच बड़े ग्रहों तथा छह चरकांति तारों की खोज की थी।

सौर दूरबीनों का विकास

अंत में बीसवीं सदी की शुरुआत में कोडाइकनाल (तमिलनाडु) में एक सौर वेधशाला स्थापित की गयी। सन १९०४ में इसमें एक सौरवर्षक्रमदर्शी लगाया गया। इसी की मदद से सन १९०९ में जान एवरशेड ने पता लगाया था कि सौरकलंक से गैसों का बाहर की ओर वैज्यिक प्रवाह होता है। इसी खोज को अब 'एवरशेड प्रभाव' कहते हैं। सन १९६० के आरंभिक महीनों में वेधशाला में एक सौर दूरबीन लगायी गयी। इसी वर्ष इसके निदेशक वेणुबप्पू बने। उन्होंने बड़ी दूरबीनों को अन्यत्र स्थापित करने की योजना बनायी। उपयुक्त स्थलों की खोज के बाद कावलूर (तमिलनाडु) में नवम्बर १९६८ से देश में ही बनी १५ इंच व्यास की दूरबीन से प्रेक्षण (वेध) होने लगे। सन १९७१ में यह वेधशाला स्वायत्त शोध संस्था बन गयी तथा इसका नाम 'भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान' रखा गया। आज इसकी सुविधाएं चार केंद्रों बेंगलूर, कोडाइकनाल, कावलूर तथा गौरीबिदानूर में उपलब्ध है। बेंगलूर में प्रशासकीय कार्यालय और प्रकाशिकी व इलेक्ट्रानिकी प्रयोगशालाएं हैं। यहीं पर खगोलविज्ञान तथा ब्रह्मांडविज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर सैद्धांतिक अनुसंधान भी होता है। कोडाइकनाल में सौर अनुसंधान की तथा कावलूर में तारकीय अनुसंधान की सुविधाएं हैं। गौरीबिदानूर में रेडियो दूरबीन लगी है।

कावलूर में सन् १९७२ में एक मीटर व्यास की दूरबीन स्थापित की गयी। इसकी मदद से सौरमंडल के बारे में तीन बड़ी खोजें हुईं: सन १९७२ में वृहस्पति के उपग्रह गेनीमेड के चारों ओर वायुमंडल का पता लगाया गया, सन १९७७ में यूरेनस के चारों वलयों की खोज हुई और सन १९८४ में शनि के चारों ओर एक पतली वलय की पहचान हुई। वेणुबप्पू ने देश में ही २.३ मीटर व्यास की दूरबीन का निर्माण कराया। इन्हीं की स्मृति में प्रधानमंत्री ने ६ जनवरी १९८६ को इस दूरबीन का नाम वेणुबप्पू वेधशाला रखा। आज कावलूर में कई दूरबीनें हैं। अंतर्राष्ट्रीय खगोलविज्ञान संघ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक त्रैवार्षिक सम्मेलन सन् १९८६ में नयी दिल्ली में वेणुबप्पू की स्मृति में ही आयोजित किया गया और क्षुद्र ग्रह २५९६ का नाम वेणु बप्पू रखा गया।

सितारों का वर्गीकरण

बप्पू के अलावा इस सदी के अन्य प्रख्यात भारतीय खगोलवेत्ताओं में मेघनादा साहा, एस. चंद्रशेखर और जयंत नार्लीकर के नाम आते हैं। सन् १९२० में साहा ने पता लगाया गया था कि तारकीय प्रकाश का वर्णक्रम तारकीय वायुमंडल की भौतिक दशाओं के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। 'साहा समीकरणों' के आधार पर अब तारों का वर्गीकरण इनके तापमान के अनुसार संभव हो गया है। एस. चंद्रशेखर ने तारों के जीवन से संबंधित एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण खोज की। 'चंद्रशेखर सीमा' नाम से प्रसिद्ध इस खोज के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जयंत नार्लीकर ने ब्रिटिश वैज्ञानिक फ्रेड हायल के साथ मिलकर 'ब्रह्मांड का स्थिर अवस्था सिद्धांत' प्रतिपादित किया।

सन १९५५ में नैनीताल में उत्तर प्रदेश राजकीय वेधशाला स्थापित की गयी। अब तक इसमें कई महत्त्वपूर्ण प्रेक्षण किये गये हैं। यहां तारकीय अध्ययनों के लिए कई दूरबीनें हैं। सबसे बड़ी दूरबीन १०४ से. मी. व्यास की है। सौर अध्ययनों के लिए एक सौरवर्णक्रमदर्शी उपलब्ध है। अमरीका से एक सैटेलाइट-ट्रैकिंग कैमरा मंगाया गया है। यह वेधशाला ४ मीटर व्यास की तारकीय दूरबीन स्थापित करने की तैयारी में है। इससे धुंधले तारकीय पिंडों तथा मंदाकिनियों के अध्ययन में मदद मिलेगी। इस दूरबीन के लिए स्थल की खोज कुमाऊं की पहाड़ियों में हो रही है।

अंतरिक्ष की पड़ताल

बंबई स्थित टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान द्वारा ऊटकमंड के पास नीलगिरि की पहाड़ियों में एक विशाल रेडियो दूरबीन लगायी गयी है। यह दूरबीन वहिर्मंदाकिनीय रेडियो स्रोतों के अध्ययन में बहुत सहायक है। इसका उपयोग पल्सरों, ग्रहों, मंदाकिनीय पिंडों आदि के प्रेक्षण में भी किया जाता है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना के लिए एक विशाल मीटरतरंग रेडियो दूरबीन की परियोजना स्वीकृत हो चुकी है। यह पुणे के पास स्थापित की जाएगी। टाटा संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक्स-किरण, गामा-किरण तथा अवरक्त-किरण दूरबीनों का निर्माण किया है जिन्हें हैदराबाद से गुब्बारों द्वारा अंतरिक्ष में भेजा जाता है। विस्फोटमान खगोलीय पिंडों द्वारा उत्सर्जित अत्यधिक ऊर्जा संपन्न गामा किरणों के प्रेक्षण के लिए एक विशेष संसूचक निकाय पंचगनी में कार्यरत है।

अंतर्ग्रहीय अध्ययन

अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला ने हाल ही में अंतर्ग्रहीय अध्ययनों के लिए एक तीन स्टेशनोंवाला संसूचक समूह लगाया है। ये तीन स्टेशन हैं अहमदाबाद, राजकोट और सूरत। सन् १९७५ में उदयपुर की फतेहसागर झील के द्वीप में एक सौर वेधशाला स्थापित की गयी। विभिन्न सौर परिघटनाओं के प्रेक्षण के लिए ३.५ मीटर व्यास की एक सौर दूरबीन आस्ट्रेलिया से मंगायी गयी है। सौरमंडल की विभिन्न परिघटनाओं के सन् १९७६ से १९८४ के बीच यहां किये गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

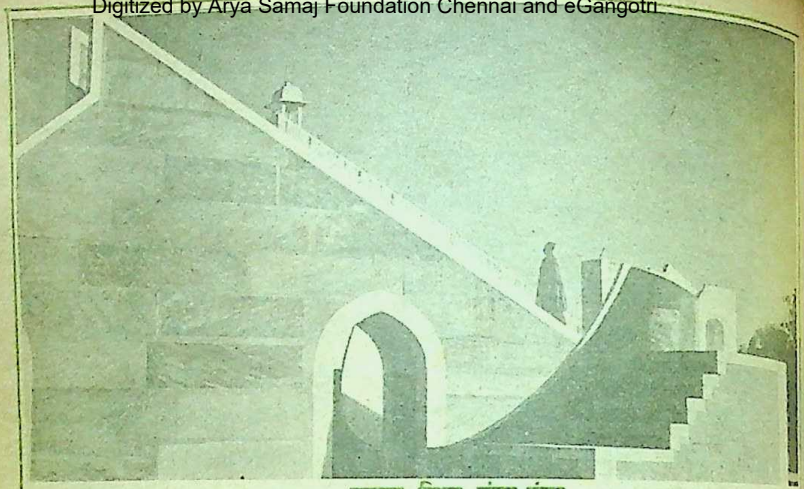

जयपुर स्थित जंतर-मंतर

प्रेक्षणों को पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया है।

हाल ही में माउंट आबू के पास गुरुशिखर में १.२ मीटर व्यास की एक दूरबीन अवरक्त क्षेत्र में प्रेक्षणों के लिए स्थापित की गयी है। आजकल विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग एक उच्च तुंगता वेधशाला की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थल की खोज करवा रहा है। इस वेधशाला में अच्छी किस्म के प्रेक्षण किये जा सकेंगे।

अगर हम भविष्य में इन सुविधाओं का अधिकतम उपयोग करना चाहते हैं तो हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में खगोलविज्ञान की दिशा के लिए प्रयास तेज करना चाहिए। दुर्भाग्य से हमारी स्कूली शिक्षा में खगोलविज्ञान लगभग गायब है, हां, एन. सी. ई. आर. टी. अपनी विज्ञान पुस्तकों में खगोलविज्ञान पर एक खंड शुरू करने का प्रयास कर रही है। अच्छा तभी रहेगा जब इतनी शिक्षा सभी स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल होगी।

महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर भी स्थिति संतोषजनक नहीं है। कुछ ऐसे केंद्र हैं जहां पूर्ण स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर खगोलविज्ञान का अध्यापन होता है और कुछ में सैद्धांतिक अनुसंधान भी होता है। इनमें हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय का खगोलविज्ञान विभाग ही ऐसा केंद्र है जहां प्रेक्षण की सुविधा है। हैदराबाद से ५० कि.मी. दूर स्थित रंगपुर में १.२ मीटर व्यास की दूरबीन लगी है। यहां कुछ छोटी दूरबीनें भी हैं। उस्मानिया विश्वविद्यालय तथा पटियाला स्थित पंजाबी विश्वविद्यालय में परास्नातक स्तर तक खगोलविज्ञान का अध्ययन होता है। पंजाबी विश्वविद्यालय में ६० से.मी. व्यास की दूरबीन चालू होनेवाली है।

—१४ सर पी. सी. बनर्जी हॉस्टल
इलाहाबाद वि. वि. इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली स्थित जंतर-मंतर

वेणु वप्पू वेधशाला, कावलूर

मैसोंजाल स्थित वेधशाला का हेकानन कैमरा

उदयपुर स्थित वेधशाला

छाया : मधुप पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

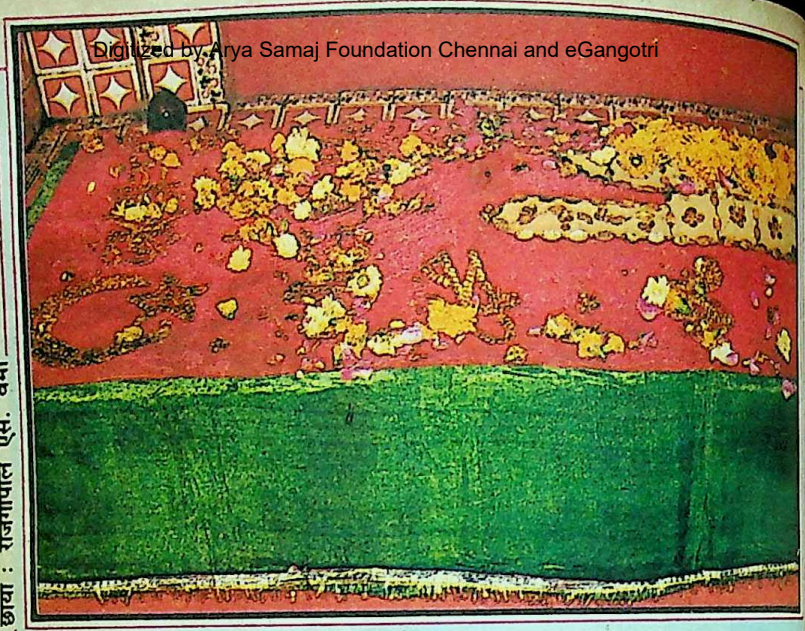

छाया : राजगोपाल एस. वर्मा

दिल्ली में जामा मसजिद के पूर्वी दरवाजे के सामने एक उपेक्षित-सी मजार है, जो प्रसिद्ध सूफी संत सरमद की कब्र है। यहां उनकी शहादत के संबंध में हर वर्ष उर्स का मेला लगता है। वैसे यह मजार साधारण-सी है, किंतु ऐतिहासिक दृष्टि से इसका बड़ा महत्त्व है, जो सम्राट औरंगजेब की कट्टरता, निर्दयता, मदांधता और असहिष्णुता की कहानी कह रहा है।

सम्राट औरंगजेब की आज्ञा से १०७० हिजरी में सूफी सरमद का सर कलम कर दिया गया था। औरंगजेब ने अपने बड़े भाई दाराशिकोह को, जो एक उच्च कोटि का विद्वान और दार्शनिक था, ठिकाने लगाकर अपने पिता शाहजहां को आगरे में कैद करके अपनी सत्ता के सभी संभावित शत्रुओं को हटाने का कार्य आरंभ कर दिया। उनमें से सरमद भी एक था। सरमद के संबंध में इतिहासकारों ने बहुत

सूफी संत सरमद की मजार

सूफी संत सरमद की मजार का बाहरी दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरमद की मजार के बाहर का दृश्य

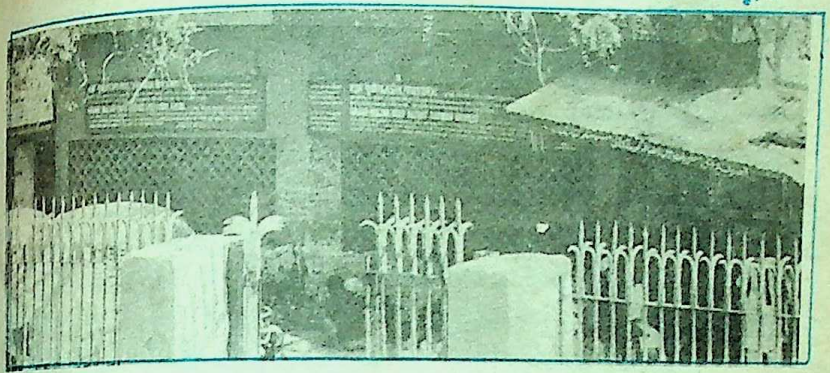

सरमद, जो औरंगजेब के हाथों शहीद हुए

● डॉ. परमानंद पांचाल

कम लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार खानी खां ने अपनी पुस्तक में जहां औरंगजेब की हर छोटी-बड़ी घटनाओं का उल्लेख किया है, वहां सरमद के कत्ल का कोई जिक्र नहीं किया। औरंगजेब के असहिष्णुतापूर्ण रवैये के कारण लेखक और कवि उससे डरते थे और उसका कोपभाजन नहीं बनना चाहते थे, नहीं तो इतनी बड़ी घटना का उल्लेख वे अवश्य करते।

सूफी सरमद भी मंसूर की भांति परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरी सत्ता में विश्वास नहीं करता था और यह कहा जाता है कि सरमद कलमे को भी पूरा नहीं पढ़ता था। वह सदा निर्वस्त्र घूमा करता था और कहता था मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है, जिसे मैं छिपाऊं।

व्यापारी से सूफी संत

सरमद के संबंध में जो जानकारी उपलब्ध होती है, उससे यह पता चलता है कि वह ईरान के एक यहूदी परिवार में पैदा हुआ था और बाद में मुसलमान बन गया था। सरमद ने इसलाम धर्म और दर्शन का गहन अध्ययन किया था। फारसी भाषा पर उसे अच्छा अधिकार था और वह फारसी में कविता भी करता था। उनकी रूबाइयों का एक संकलन फारसी जबान में प्रकाशित है।

सरमद मूल रूप से एक व्यापारी था और व्यापार के सिलसिले में वह हिंदुस्तान आया था। वह ईरान से सिंध होता हुआ दिल्ली पहुंचा था। जब वह सिंध के एक नगर ठट्ठा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, तो किसी के प्रेम में पड़ गया। बाद में वह प्रेम सांसारिक न रहकर ईश्वर प्रेम में परिवर्तित हो गया। उसने सभी सांसारिक वस्तुओं का त्याग कर दिया और निर्वस्त्र तथा दिगंबर अवस्था में घूमने लगा। अब वह धार्मिक संकीर्णता को लांघ चुका था और किसी भी दिखावे अथवा औपचारिकता में पड़ना नहीं चाहता था। उसने परमात्मा को सही रूप में पहचान लिया था। अब उसे किसी मंदिर या मसजिद की आवश्यकता नहीं रह गयी थी।

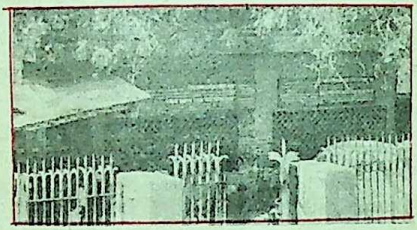

आलमगीर ने कंबल का कोना पकड़कर उठाना चाहा तो उसके नीचे कुछ ऐसे मानव सिर ताजे कटे हुए रखे थे, जिनसे रक्त बह रहा था। इसमें उसके तीनों भतीजों और उनके साथियों के चेहरे भी शामिल थे।

दाराशिकोह से संपर्क

सरमद जब दिल्ली आया तो शाहजहां के शासनकाल का आखिरी समय था। शाहजहां ने दाराशिकोह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। दाराशिकोह एक उदार और सभी धर्मों के प्रति निष्ठा रखनेवाला एवं विद्वान व्यक्ति था। वह राजनीति के क्षेत्र में औरंगजेब की तरह चालाक और कूटनीतिज्ञ नहीं था। जब सरमद की ख्याति दिल्ली नगर में फैल गयी तो दाराशिकोह ने भी उससे मिलने और उसका संगत-लाभ उठाने की इच्छा जाहिर की। उसने सरमद को बुलाया। वह उसके सूफी विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। फिर दोनों में घनिष्ठता बढ़ती गयी। जब औरंगजेब ने दिल्ली की गद्दी हथिया ली तो उसकी निगाह सरमद पर भी पड़ी।

औरंगजेब का षड्यंत्र

सरमद अब तक जनता में काफी लोकप्रिय हो चुका था। उसे सजा देना आसान काम नहीं था। शासन के ऊंचे अधिकारी और शाही खानदान के कुछ व्यक्ति भी उससे प्रभावित थे। इसलिए उस पर हाथ डालने का अर्थ था राज्य बगावत को न्यौता देना।

इसके लिए औरंगजेब ने एक षड्यंत्र की योजना बनायी और धार्मिक नेताओं तथा मुल्लाओं और मौलवियों को उसके खिलाफ कोई धार्मिक अपराध लगाने के लिए उकसाया जिससे कि उसे धार्मिक जुर्म में सजा दी जा सके। कट्टरपंथी तो ऐसा चाहते ही थे कि सरमद को नास्तिक करार देकर उसे सजा दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए। मुल्ला और मौलवी उसके विरुद्ध प्रमाण जुटाने में लग गये। दाराशिकोह के पुस्तकालय से सरमद का वह पत्र ढूंढ़ निकाला गया, जिसमें लिखा था—

दारा बेनाम सरमद

पीर व मुर्शिद ! मैं प्रत्येक दिन आपके दर्शन करने का इरादा करता हूं, लेकिन यह पूरा नहीं होता। यदि मैं वाकई 'मैं' हूं तो मेरा यह पक्का इरादा और उद्देश्य क्यों पूरा नहीं होता ? और यदि मैं कुछ भी नहीं तो, मेरा कसूर ही क्या है ? अगर हुसैन का वध परमात्मा की मर्जी से ही है, तो यज़ीद दंड का भागी क्यों ? और यदि परमात्मा की आज्ञा नहीं थी, तो इसका अर्थ है कि परमात्मा जो चाहता है, करता है। इसलाम के पैगंबर इसलाम के अपराधियों के विरुद्ध सेना इकट्ठी करते थे, लेकिन इसलाम की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा था। क्यों ? विद्वान कहते हैं कि यह एक सबक था परंतु जो लोग अपने व्यक्तित्व में ही पूर्ण हैं, उनके लिए सबक की क्या जरूरत है ?

सरमद ने जवाब दिया—

"मेरे प्रिय मित्र ! हमने जो कुछ पढ़ा, भूल गये, सिवाय जिक्रे महबूब, जिसे बार-बार करते हैं।"

सरमद के पीछे गुप्तचरों को लगा दिया गया, जिन्होंने यह रिपोर्ट प्रस्तुत की कि सरमद ने दाराशिकोह की विजय के लिए दुआ की थी। इसलिए बहुत संभावना है कि यह फकीर हुकूमत के खिलाफ किसी षड्यंत्र में सम्मिलित हो जाए।

ऐबों को छिपाऊं या सिर को

औरंगजेब जब शाहजहां की मसजिद में नमाज़ के लिए जा रहा था तो उसने रास्ते में सरमद को बैठे हुए देखा और उनसे कहा कि 'आप आम रास्ते पर नंगा न बैठा करें। कम से कम यह कंबल, जो आपके पास पड़ा है ओढ़ लें।' किंतु सरमद ने गुस्से से बाहशाह की ओर देखा और कहा, 'ला तू ही उढ़ा दे।' आलमगीर ने कंबल का कोना पकड़कर उठाना चाहा, तो कंबल के नीचे कुछ ऐसे मानव सिर ताजे कटे हुए रखे थे, जिनसे रक्त बह रहा था। इनमें उसके तीनों भतीजों और उनके साथियों के चेहरे भी शामिल थे। बादशाह ने यह दृश्य देखा तो घबरा गया। पकड़ा हुआ कंबल हाथों से छूट गया। अब सरमद ने कहा, 'अब तू बतला कि तेरे ऐबों को छिपाऊं या अपने सिर को।' औरंगजेब खामोशी के साथ सिर झुकाये वापस चला गया।

सरमद जब कल्मा पढ़ता तो 'ला-इल्लाहा' पढ़ता। उससे आगे पढ़ने से रुक जाता, लोग कहते कि 'आगे क्यों नहीं पढ़ते।' तो जवाब मिलता कि 'अभी मैं 'नफी' की मंजिल में हूं। जब परमात्मा के दर्शन करूंगा तभी पूरा कल्मा पढ़ सकता हूं। जिस वस्तु को मैंने नहीं देखा, उसे स्वीकार कैसे कर लूं।' इन्हीं सब बातों के कारण मौलवियों ने उसे नास्तिक होने का फतवा दे दिया।

लोगों ने इनसे बार-बार अनुरोध किया कि 'आप नंगा रहना छोड़ दें और पूरा कल्मा पढ़ा करें।' परंतु सरमद टस से मस न हुआ। उसके मित्र अहदे शाह ने भी कहा कि 'आपको अपनी जिंदगी प्यारी नहीं, परंतु हमें आपकी नितांत आवश्यकता है।' औरंगजेब ने काफी सोच-विचार और सलाहकारों के अनुरोध पर उसके मृत्यु दंड पर हस्ताक्षर कर दिये थे।

सरमद को जब इसकी सूचना मिला तो उसने मुसकराकर कहा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलः एक छाया चित्र

हिलने दो जल को
हिलता हुआ जल
बर्फ नहीं है
आंच है अभी
मौजूद
भीतर।

हिलता हुआ जल
हमें भी
नहीं होने देता जड़
नहीं होने देता आकृति
कोई स्थिर।

लंबाई
चौड़ाई में
देता है गुंजाइश
हिलता हुआ जल।

हमारे चारों ओर
लगाता है पंख,
हम हिलते हैं
हिल हिल जाते हैं
हमें हिलाता है
हिलता हुआ जल।

हिलने दो जल को
बर्फ नहीं है वह।

● **दिविक रमेश**

मोतीलाल नेहरू कालेज
मोतीबाग, नयी दिल्ली

"उमरेस्त कुहन शुद्ध के आवाज-ए-मनसूर
मन अज सिर तो जलवै दहम दार व रसन रा"

अर्थात्—मंसूर की फांसी की कहानी पुरानी हो गयी है। मैं अब उसे फिर से दोहराना चाहता हूं।

ज्ञातव्य है कि मंसूर को 'अनलहक' अर्थात 'नहीं है कोई परमात्मा के सिवाय' कहने पर फांसी की सजा दे दी गयी थी।

सरमद को भी १०७० हिज़री में जामा मसजिद के सामने, जहां आज उसका यह मज़ार है, सरेआम कत्ल कर दिया गया था। उसके वध के समय लोग कहते हैं कि उसे देखने के लिए वहां इतने लोग एकत्रित हुए कि चारों तरफ सिर ही सिर नज़र आते थे। जब जल्लाद ने अपनी चमकती हुई तलवार निकाली तो उसने सरमद के मुंह पर कपड़ा डालने का प्रयत्न किया। लेकिन सरमद ने इनकार कर दिया और जल्लाद से कहा कि वह अपना काम करे और एक शेर पढ़ा।

सरमद के कत्ल के बाद जनता में कोई आतंक न फैल जाए, इसके लिए शहर में मनादी करा दी गयी कि सरमद मुसलमान होकर खुदा को नहीं मानता और नंगा रहकर इसलाम को बदनाम करता है। यह घटना औरंगजेब के शासनारूढ़ होने के एक वर्ष बाद घटी। लोग कहते हैं कि जब सरमद का सर धड़ से अलग हुआ तो एक आवाज आयी जिसमें पूरा कलमा पढ़ा गया था। परंतु यह जनश्रुति ही है। आज शहीद सरमद का मज़ार भी उनके गुरु सैयद अब्बुल कासिम उर्फ हरे भरे शाह की बगल में ही मौजूद हैं।

— २३२-ए, पाकेट-१,
मयूर विहार, दिल्ली-११००९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूठी भटियाणी रानी उमादे आजीवन नहीं झुकी

● फारूक आफरीदी

आइन-ए-अकबरी और तुजुक जहांगीरी के अनुसार मारवाड़ का शासक राव मालदेव हिंदुस्तान के उन मशहूर राजाओं में से एक था, जिन्होंने दिल्ली के बादशाहों का आधिपत्य कभी भी स्वीकार नहीं किया। उसे अपने मजबूत किलों पर अभिमान था। मारवाड़ का यही शक्तिशाली शासक अपनी रूठी रानी को जीवन पर्यंत नहीं मना सका और आखिरी झलक देखे बिना ही संसार से विदा हो गया।

सन १५३६ में राव मालदेव का विवाह जैसलमेर के रावल जैसलमेर के रावल लूणकरण की कन्या रानी उमादे से हुआ था। उमादे अपने सौंदर्य, स्वाभिमान और साहस के लिए विख्यात थी। विवाह की पहली रात्रि को ही राव मालदेव की कोई बात रानी उमादे को खटक गयी और रानी ऐसी रूठी कि बहुत अनुनय-विनय के बावजूद उसने अपना मान नहीं छोड़ा।

इतिहासकार पंडित विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अनुसार सन १५३९ में अजमेर के डेरे पर एक बार राव मालदेव की आज्ञा से ईश्वरदास बारहठ के अत्यधिक अनुनय-विनय करने पर रानी उमादे का मान कुछ नरम हो गया था लेकिन इसी बीच राव मालदेव को बीकानेर की चढ़ाई के प्रबंध में उलझना पड़ा, जिससे बात आगे नहीं बढ़ पायी।

सन १५४२ में जब राव मालदेव को अपने विरुद्ध शेरशाह द्वारा चढ़ाई किये जाने की सूचना मिली, तब उन्होंने ईश्वरदास को लिखा कि तुम रानी उमादे को हिफाजत के साथ अजमेर से जोधपुर ले आओ और वहां के किले में शीघ्र ही युद्ध की सामग्री एकत्रित करने का प्रबंध करो।

रानी उमादे को जब यह संदेश मिला तो उसने ईश्वरदास से कहा कि शत्रु के आगमन की सूचना मिल जाने के बाद किला छोड़कर जाना क्षत्रिय धर्म की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं होगा। इससे मेरे पिता और पति दोनों कुलों पर कलंक लग जाएगा। उसने कहा कि अजमेर दुर्ग का सारा प्रबंध वह स्वयं अकेले ही संभाल लेगी। फिर उसने अपने पति राव मालदेव को कहलावा भेजा कि शत्रु का आक्रमण होने पर वह राणा सांगा की रानी हाडी कर्मावती की भांति जौहर न कर शत्रु से लोहा लेगी और इसमें सफल नहीं हुई तो वीर क्षत्राणी की भांति रण में लड़ते हुए प्राणोत्सर्ग कर देगी।

राव मालदेव के पास रानी का जब यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमादे—सौंदर्य, स्वाभिमान और साहस की प्रतिमूर्ति ! यद्यपि वह आजीवन पति से रूठी रही लेकिन समय-समय पर उसकी सहायता करने से भी वह पीछे नहीं हटी

संदेश पहुंचा, तो उन्होंने ईश्वरदास को फिर कहलवाया कि रानी को बता दें कि अजमेर में शेरशाह से वह स्वयं लड़ेंगे और वहां का प्रबंध हमारे ही हाथ में रहेगा। हां, जोधपुर किले का प्रबंध रानी उमादे को सौंपा जा सकता है, इसलिए वह जोधपुर चली आये तो उपयुक्त रहेगा।

स्वाभिमान की रक्षा

सामरिक परिस्थितियों को देखते हुए अजमेर का किला राव मालदेव के सेनापतियों को सौंप रानी जोरधपुर के लिए रवाना हो गयी। यह समाचार जब राव मालदेव की अन्य रानियों को मिला, तो वे सौतिया डाह से घबरा गयी। उन्होंने रानी उमादे का स्वाभिमान जगाने के लिए ईश्वरदास के चाचा आसाजी बारहठ को अपना हथियार बनाया। रानियों ने बहुत-सा लालच देकर आसाजी को इस कार्य के लिए तैयार किया था।

उधर रानी उमादे की सवारी जब जोधपुर से पच्चीस किलोमीटर पूर्व कोसाना गांव में पहुंची तो आसाजी बारहठ ने रानी के पास जाकर यह दोहा जोर से दोहराया—

मान रखे तो पीव तज
पीव रखे तज मान
दोय गयंदन बंध ही
एकण खम्भे ठांण

यह दोहा सुनते ही रानी उमादे बिफर गयी। उसने तत्काल अपना डेरा कोसाना में ही डालने की आज्ञा दी और आगे बढ़ने से मना कर दिया। ईश्वरदास ने रानी को बहुत समझाया और शेरशाह की सेना का भय भी दिखलाया, किंतु मान-मर्यादा को सर्वोपरि माननेवाली इस वीरांगना ने कोई बात नहीं सुनी। उसने राव वीरमदेव को भी कहला दिया कि वह जोधपुर नहीं आएगी। वे यदि कुछ सेना भिजवा दें, तो यहीं से जोधपुर दुर्ग की रक्षा का प्रबंध कर सकती है। इस पर राव मालदेव ने जोधपुर के हाकिम को कुछ फौज देकर वहां का प्रबंध करने के लिए भेज दिया।

युद्ध में शेरशाह की फौज ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया और उसका एक सेनापति खवास खां कोसाने की तरफ बढ़ा किंतु रानी उमादे के सरदारों का जमघट देखकर वह युद्ध करने की हिम्मत नहीं जुटा सका। और अंत में सन १५४३ में वह अपनी सेना के पड़ाव स्थान पर खवासपुरा नामक गांव बसाकर वापस लौट गया। यह गांव आज भी इसी नाम से आबाद है। कहते हैं कि इस गांव को बसाने के पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खवास खां ने रानी उमादे से सम्मति ले ली थी।

पति का घर नहीं देखा

ख्यातों में लिखा है कि सन १५४७ में यह रानी अपने बड़े पुत्र राम के साथ गूंदोज चली गयी और वहां से उसके साथ केलवा जाकर वहीं रहने लगी। राम को रानी उमादे दत्तक पुत्र समझती थी। यह राव मालदेव की कछवाहा वंश की रानी की कोख से जन्मा था। सन १५६२ में जब उमादे को राव मालदेव के स्वर्गवास की सूचना मिली, तो इससे वहीं पति का अनुगमन कर स्वर्गारोहण किया। इस स्वाभिमानी रानी ने जीवनभर अपने पति का घर नहीं देखा, लेकिन पतिव्रता का धर्म अवश्य निभाया।

इतिहास में एक उद्धरण मिलता है कि उमादे के पिता रावल लूणकरण ने एक बार राव मालदेव की हत्या का षड्यंत्र रचा था। यह बात जब रानी उमादे को मालूम हुई, तो उसने अपने पुरोहित राघव देव को मालदेव के पास यह सूचना लेकर भिजवाया। इससे मालदेव सावधान हो गये और घात से बच गये। पुरोहित राघव देव बाद में राव मालदेव के पास ही रह गया। इसका पुत्र चंडू ज्योतिष शास्त्र का अच्छा ज्ञाता था। उसके द्वारा चांद्र पक्षीय पंचांग आज तक जोधपुर से प्रकाशित होता है, जिसे ज्योतिष-विज्ञान के क्षेत्र में आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

राव मालदेव का सारा जीवन युद्ध में ही बीता। सन १५३२ में गुजरात के सुलतान बहादुर शाह ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी थी। युद्ध नीति में चतुर मालदेव ने अपनी राठौर वाहिनी को उसके मुकाबले भेजकर राणा विक्रमादित्य की सहायता की। इस सहायता को इतिहासकारों ने चित्तौड़गढ़ के 'दूसरे शाके' का अंग माना है।

—सूचना केंद्र, कचहरी रोड,
जोधपुर-३४२००१

प्रतिवर्ष अरबों टन कचरा फेंकते हैं हम

प्रतिवर्ष विश्व में अरबों टन कचरा फेका जाता है। यह कचरा, हो सकता है, हमें निकट भविष्य में किसी तरह की परेशानी पैदा न करे किंतु निश्चित ही यह पर्यावरण को बड़े पैमाने पर प्रदूषित करेगा।

कचरा पैदा करने में यूरोपीय समुदाय के देश सबसे आगे हैं। ये प्रति वर्ष १० अरब करोड़ टन कचरा फेकते हैं। इनमें एक अरब टन खेती का कचरा, तीन अरब टन कचरा सड़े पदार्थों से, दो अरब टन कचरा मनुष्य द्वारा। इनमें से आधा कचरा घरेलू कामकाज के बाद फेंके गये खराब पदार्थों से और धातुओं के अवशेषों और पुराने टायर व खराब तेल आदि से मिलता है। बीस करोड़ टन खदान उद्योगों से, कोयले की राख से १५ करोड़ टन। इसके अलावा ४ करोड़ टन कचरा जो कि अधिकतर काफी विषैला होता है रासायनिक पदार्थों से तैयार होता है।

ठीक इसी तरह विश्व के अन्य देशों में कचरा तेजी से बढ़ रहा है। विश्व में कचरे की मात्रा में वृद्धि की दर २.३ प्रतिशत प्रतिवर्ष है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

बहुत पछताये बॉस से दोस्ती करके

● गीता पुष्प शॉ

शर्माजी की पत्नी श्रीमती रामप्यारी शर्मा को बस एक ही शिकायत है अपने पति से कि वे उनका जरा-सा भी खयाल नहीं रखते। वे सारे दिन बच्चों में उलझी रहती हैं। घर संभालती हैं। खाना बनाती हैं। सिलाई-बुनाई करती रहती हैं, पर शर्माजी से कभी यह नहीं होता कि कहें—'रामप्यारी, चलो जरा आज सिनेमा दिखा लाएं।' 'चलो, जरा आज तुम्हारे लिए नयी साड़ी खरीद दें।' शर्माजी यह सब कर ही नहीं सकते, क्योंकि उनके पास फालतू पैसे नहीं हैं। फालतू पैसे इसलिए नहीं हैं, क्योंकि वे घूस नहीं लेते। और दूसरी बात यह कि उनके पास फालतू समय भी नहीं है। सुबह से शाम ऑफिस में खटते-खटते थक जाते हैं।

रामप्यारी बहुत दिनों तक सब्र करती रहीं। आखिर एक दिन उनके सब्र का बांध टूट गया और वे बरस ही पड़ीं अपने पति पर, "अरे एक तुम ही हो साधू-महात्मा। घूस नहीं लेंगे। अरे दूसरे बाबू लोग कैसे काम करवाने का मेहनताना कह कर घूस ले लेते हैं और ऐश करते हैं। भला इसमें क्या बुराई है? घूस ले कर ऐश करने की बात छोड़ो। तुम्हें तो ऐसे में हम लोगों को घुमाने-फिराने, सिनेमा दिखाने की फुरसत नहीं मिलती। फुरसत मिले भी कैसे? अपने साहब से दुश्मनी जो मोल ले रखी है। दूसरे लोग अपने बॉस की कैसी खुशामद करते हैं और धड़ाधड़ प्रमोशन पाते हैं। उनकी जी हुजूरी करते हैं तभी तो बॉस भी खुश रहते हैं। जब मांगो तब छुट्टी दे देते हैं। तुम भी जरा अपने बॉस की खुशामद करो। उनसे दोस्ती करो। खाने पर घर बुलाओ। मेलजोल बढ़ाओ। भला इसमें क्या बुराई है?"

जिंदगी में पहली बार शर्माजी को अपनी पत्नी की नेक सलाह पसंद आयी। उन्होंने मन में ठान ली कि अब वे भी बॉस से दोस्ती करके ही रहेंगे। उन्होंने झट दूसरे ही दिन बॉस को सपरिवार दावत पर आने का निमंत्रण दे डाला। इधर श्रीमती रामप्यारी सारे महल्ले के घर-घर में समाचार दे आयीं, 'इस हफ्ते हमें न पुकारना। हम खाली नहीं हैं। उनके साहब की दावत जो है घर में।' रामप्यारी से जो हो सका बनाया। पुलाव, मीट, रायते, खीर सब कुछ। ठीक समय पर बॉस अपने घर की पूरी पलटन के साथ दावत पर आये। रामप्यारी के बनाये स्वादिष्ट खाने की खूब प्रशंसा की। शर्माजी का पूरा परिवार हाथ बांधे खड़ा रहा। बॉस के परिवार को दौड़-दौड़कर और पूछ-पूछकर खिलाता रहा। अंत में बॉस ने कहा, "वो जरा हमारे ड्राइवर को भी बुलाकर खिला दो।" ड्राइवर बकासुर का अवतार मालूम देता था। जितना खाना बॉस के परिवार ने खाया, उतना ही वह अकेले डकार गया। फिर बॉस चलते-चलते बोले, "ऐसा है, घर पर तो आज खाना बना नहीं। यहां दावत जो थी। नौकर और कुत्ते के लिए भी खाना बांध दो।" शर्माजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन-ही-मन खीझ रहे थे। बॉस की खुशामद बड़ी महंगी पड़ रही थी। पर शार्माइन खुश थीं। बोलीं, "छोड़ो जी, भले हमें अब खिचड़ी खाकर सोना पड़े, पर देखो, बॉस कितने खुश हो गये हैं तुमसे ! फिर भला इसमें क्या बुराई है !"

बॉस को दावत खिलाने और दोस्ती का हाथ बढ़ाने में भलाई थी या बुराई वह तो दूसरे दिन से ही नजर आने लगा। बॉस ने शर्माजी को अपने चेंबर में बुलाकर कहा, "हरे शर्माजी, अब पता चला। सिनेमा हॉल तो आपके घर के पास ही है। कल ऑफिस भले देर से आइएगा, पर हमारे लिए जरा फर्स्ट शो के चार एडवांस टिकट लेते आइएगा।" शर्माजी ने खीसें निपोर दीं। शाम को ऑफिस खत्म हो गया, पर बॉस जान-बूझकर टिकट के पैसे देना भूल गये थे। शर्माजी मन-ही-मन कुढ़ रहे थे। न खुद कभी फिल्म देखी न बीवी-बच्चों को दिखायी। अब यहां बॉस के परिवार के लिए अपनी जेब के पैसे भी खर्च करो और लाइन में घंटों खड़े रहकर, धक्के खाकर सिनेमा के टिकट भी खरीदो। इतने पर ही छुटकारा नहीं था। बॉस ने अगले दिन फिर शर्माजी को चेंबर में बुलवाया। एक झोला देकर कहा, "शर्माजी, आपके रास्ते में तो सब्जी मंडी पड़ती है। जरा कुछ ताजी हरी सब्जियां खरीदते लाइएगा घर के लिए।" पर इस बार झोले के साथ सब्जी खरीदने के पैसे भी थे। शर्माजी ने कभी घर के लिए भी सब्जी नहीं खरीदी थी। घर जाकर बीवी के सामने झोला पटककर बोले, "बाज आये बॉस की दोस्ती से।" पर रामप्यारीजी ने उनकी हिम्मत बढ़ाते हुए कहा, अरे ठीक ही तो कहा साहब ने। जरा-सा काम कर दोगे तो साहब की नजरों में आ जाओगे। प्रमोशन भी जल्दी होगा। सब्जी खरीदने से छोटे नहीं हो जाओगे। भला इसमें क्या बुराई है !" मन मारकर शर्माजी सब्जी खरीदने चल दिये।

अब दिनों-दिन उनकी बॉस से दोस्ती बढ़ रही थी। बॉस शर्माजी को फाइलें कम देते। ऑफिस में ज्यादा देर रोककर भी नहीं रखते पर

बाहरी काम खूब करवाते। कभी 'कंट्रोल से चीनी ला दो,' 'गैस का इंतजाम कर दो,' 'बच्ची को स्कूल पहुंचा दो,' 'बच्चों को मेला घुमा दो,' वगैरह-वगैरह।

एक दिन उन्हें बॉस ने बड़ा-सा कपड़े का थान पकड़ाते हुए कहा, "शर्माजी, आपकी वाइफ सिलाई बड़ी अच्छी करती है। जरा हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के पैजामे सिलवा दीजिए।"

शर्माजी पैजामे का कपड़ा लेकर घर पहुंचे। रामप्यारी भड़क उठी, "मैं कोई दर्जी हूं जो तुम्हारे साहब के बच्चों के कपड़े सिऊं !" इस बार शर्माजी उनकी हिम्मत बढ़ाते हुए बोले, "अरे सी भी दो. . .भला इसमें क्या बुराई है।" अगली बार बॉस की बीवी ने अपनी साड़ियों में फौल लगवाने भेज दिये। रामप्यारी ने गुस्से में साड़ियां पटक दीं। बेचारे शर्माजीको बाजार से काम करवा के देना पड़ा।

एक दिन तो हद हो गयी। शर्माजी बॉस से मौसम की बातें कर रहे थे, "वाह साहब, कल रात क्या गजब की आंधी आयी थी। बेमौसम की आंधी। आपके बगीचे को तो बड़ा नुकसान हुआ होगा !" बॉस बोले, "अजी नुकसान कैसा ! हमने आंधी के पहले ही सारे पेड़ों के नीबू तुड़वा लिये थे। आपके घर भेजेंगे नीबू।" घर पहुंचकर शर्माजी बड़े खुश। "अरे, बॉस के बगीचे के नीबू आनेवाले हैं अपने घर।" रामप्यारी ने सुना तो गर्व से बोली, "भला इसमें क्या बुराई है !"

दूसरे दिन बॉस का ड्राइवर दस किलो नीबू और पांच किलो बड़ी-बड़ी मिर्च लाया। साथ में तीन बड़े-बड़े मर्तबान और एक पुर्जा भी था। पुर्जे पर लिखा था, "शर्माजी, आपकी वाइफ के हाथों का अचार बड़ा अच्छा लगा था। नीबू और मिर्च भेज रहा हूं। अचार डलवा दें।" पुर्जा पढ़ते ही रामप्यारी ने हड़ताल कर दी। साफ शब्दों में ऐलान कर दिया, "घर के लिए मुश्किल से एक-दो किलो का अचार बना पाती हूं। पंद्रह किलो का आचार मुझसे नहीं डलेगा। और तेल-मसाले क्या मुफ्त में आएंगे !" पर अब तो शर्माजी की प्रेस्टीज और होनेवाले प्रमोशन का सवाल था। उन्होंने साष्टांग दंडवत् कर रामप्यारीजी को मनाया। अचार बनाने के लिए मिन्नतें कीं। खुद बैठकर नीबू और मिचन्खकाटीं। मिक्सी में हल्दी, मिर्ची, मसाले पीसे। बीच-बीच में चाय बनाकर पत्नी को पिलाते रहे। अचार बनाने के लिए उन्हें एक दिन की छुट्टी भी लेनी पड़ी। पूरा खानदान बॉस का अचार बनाने में लगा रहा। अचार बनाते-बनाते खुद शर्माजी का कचूमर निकल गया। झल्लाकर बोले, "बहुत पछताये बॉस से दोस्ती करके।"

इस बार रामप्यारी मुसकराकर बोली, "अरे तुम पछताये होगे। मुझे तो बड़ा फायदा हुआ। बॉस का काम करने के बहाने ही सही, तुम जो घर का एक काम नहीं करते थे, खुद उठकर एक गिलास पानी नहीं पीते थे, अब सब्जी लाना, मसाले पीसना, चाय बनाना कितने सारे घर के काम सीख गये हो। पति लोग इसी तरह घर के कामों में पत्नी का हाथ बंटा दिया करें तो हर घर स्वर्ग बन जाए। फिर भला इसमें क्या बुराई है ?"

—९५, सब्जी बाग, पटना-८००००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेक

विवेक ने तोड़ा

आशा का भ्रमजाल
एक व्यक्तित्व
तूफान में ग्रस्त दीखा

थपेड़ों से टकराती

थककर

किनारे पर गिर पड़ी मछली
उसकी खुली आंख बताती है

वह चेतन है

लगता है

पहले बेहतर थी
शिकारी के जाल के बीच
पानी में आशावान
वह घर ले जाएगा
सहेजकर रखेगा

और घबराने लगी हूं

विवेक से

— ऊषा भसीन
४/२ वैस्ट पटेल नगर
नयी दिल्ली

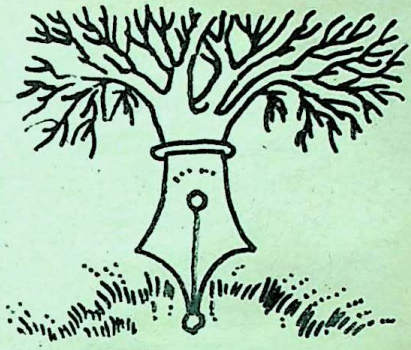

कलम

मैं लिखता हूं
चलता हूं
अक्षरों की होड़ में
शब्दों की होड़ में
रुकता हूं पूर्णविराम में
विराम के लिए
फिर उठता हूं भागता हूं
कागज के मैदान में
मेरी चाल निराली
बड़ी मतवाली
रुकती तब
जब होती खाली
मैं बुद्धिमानों का साथी हूं
रहता उनके हाथ
उनके बहुमूल्य विचारों को
देता मैं आकार
मेरी शक्ति बड़ी निराली है
तलवार भी इसके आगे खाली है
मेरी लिखी याद बन जाती
हर क्षण की पहचान बन जाती

—गिरीश चंद माथुर
सी-१०२ डी.डी.ए. फ्लैट्स
साकेत, नयी दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता

चंद महीने पूर्व की एक घटना है। जिन रास्तों से हमें अकसर आना-जाना पड़ता है उसमें अरावली पर्वतमाला की कई ऊंची-नीची गहरी घाटियां हैं। और इन्हीं घाटियों पर वन वे रोड है। यूं तो इन घाटियों में ये रोड काफी खूबसूरत लगते हैं, पर जब कोई अप्रत्याशित घटना घट जाती है तो वह जिंदगी की यादों में मील का पत्थर बन जाती है। एक रोज ऐसे ही सफर में बस द्वारा घाटी पर चढ़ रहे थे कि सामने से एक ट्रक आ गया। जगह कम थी लिहाजा बस को पीछे लेकर ट्रक के लिए रास्ता देना था। पर जैसे ही बस को पीछे लिया कोई यांत्रिक खराबी हो जाने की वजह से बस पीछे जाती हुई रुकी नहीं। रोड के दोनों तरफ करीब १००से १५० फीट की गहरी घाटी थी। मृत्यु मुंह फाड़े सामने नजर आने लगी। तभी बस दैवयोग से अचानक एक झटके के साथ रुकी। यात्रियों की चीत्कार अब बस से उतरने की भगदड़ में बदल गयी। पर किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि बस कैसे रुकी। मैं जब बस से नीचे उतरा तो देखा एक २०-२५ किलो वजनी अनगढ़ा श्वेत पत्थर पीछे के टायर से भिड़ा हुआ यमदूत को ललकार रहा था।

आजकल जब कभी भी मैं उस रास्ते से गुजरता हूं, उस श्वेत पत्थर के सामने सिर अनायास ही झुक जाता है।

—कैलाशचन्द्र त्रिपाठी

प्रबंधक, साहित्य संगम धौड़
त. जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा (राज.)

पश्चात्ताप

बात उन दिनों की है जब मैं चंडीगढ़ में किसी कार्यालय में सर्विस करती थी। रोज लोकल बस द्वारा कार्यालय जाना होता था। एक दिन जब बस से कार्यालय जा रही थी, तो बीच में किसी स्टॉप पर दो युवक चढ़े। उनमें से एक ने रंगीन चश्मा पहन रखा था। मैं साथ की, क्योंकि एक सीट खाली थी अतः थोड़ा हटकर मैंने उन्हें बैठने को कहा, उनमें से चश्माधारी युवक वहीं बैठ गया तथा दूसरा कहीं और जगह देखकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उस चश्माधारी युवक ने मुझे कंधे से छुआ। मैंने गुस्से में उसका हाथ पीछे कर दिया। जब दुबारा भी उसने यही हरकत की तो मैंने गुस्से में कहा "अंधे हो क्या ? दिखाई नहीं देता ?" इतने में अगला स्टॉप आ गया और दूसरा युवक उसका हाथ पकड़कर उतारने के लिए आया तथा सहारा देकर उसे नीचे उतारा। तब मुझे ज्ञात हुआ कि वह व्यक्ति वास्तव में ही नेत्रहीन था और मुझे अपना साथी समझकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूकर कुछ कहना चाह रहा था, बहुत पश्चात्ताप और ग्लानि हुई अपने आप पर ! मैं उनसे क्षमा याचना करती इससे पहले ही बस चल चुकी थी और वे लोग भी उतरकर दूर चले गये थे। लेकिन उस युवक की मूकता सारे दिन मेरी आत्मा पर दस्तकें देती रही मानों कह रही हो कि 'अंधे हम नहीं आप लोग हैं जो दुःख नहीं देखते।' तब से नेत्रहीनों के लिए कुछ-न-कुछ करने में जुटी हूं। अपने नेत्रदान की भी घोषणा की है शायद यही मेरा पश्चात्ताप हो और मूक दस्तकों का उत्तर भी।

—सविता सचदेव

न्यू बैंक ऑव इंडिया, सिरसा (हरियाणा)

अंतर्वेदना

घटना वर्ष १९८२ की है। मैं मेरठ बस स्टैंड पर दिल्ली जाने के लिए टिकट खरीदने हेतु लाइन में खड़ा था। मैंने अपना सामान बस में पहले ही रख लिया था। इसी बीच एक अपरिचित व्यक्ति मेरे पास आया और अपने लिए टिकट लेने हेतु पैसे दे गया। मैंने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, परंतु जब विंडो से टिकट लेकर ज्योंही बाहर निकला तो मैं उस आदमी को पहचान भी न सका और न ही वह व्यक्ति, जिसके लिए मैंने टिकट खरीदा था मेरे पास आया। इसी ऊहापोह में मैं कुछ समय तक वहीं पर खड़ा रहा परंतु इसी बीच बस चलने लगी और मैं अपने को लाचार पाकर जल्दी से बस में चढ़कर दिल्ली चला गया। गाड़ी में बस कंडक्टर ने जब सवारियों की गिनती की तो उसे एक यात्री कम नजर आया और मेरा हाथ बार-बार मेरी जेब में पड़े उस टिकट पर चला जाता जो कि मैंने उस अपरिचित व्यक्ति के लिए लिया था। मेरा मन बार-बार कचोटता जा रहा था कि न जाने वह व्यक्ति क्या सोच रहा होगा। उसके पास टिकट के लिए पैसे होंगे या नहीं, कहीं मुझे ठग तो नहीं समझ रहा होगा। मैंने लगभग २ वर्ष तक दोनों टिकटों को संजोकर रखा था कि शायद जीवन के किसी मोड़ पर वह व्यक्ति मुझे पहचान ले और मैं उसे यह प्रमाण दे सकूं कि मैं गलत व्यक्ति नहीं था। इस घटना ने मेरे नैतिक स्तर को इतना हिला दिया है कि आज तक भी मैं अपने आप को उस दोष से मुक्त नहीं कर पा रहा हूं और अपने आप को उस व्यक्ति का दोषी मानता आ रहा हूं।

—राजेन्द्र प्रसाद मलासी

ओरियंटल बैंक ऑव कामर्स
प्रादेशिक कार्यालय,
५३, गांधी रोड, देहरादून-२४८००१

२१ प्रकाशकों द्वारा अस्वीकृत कृति पर नोबेल पुरस्कार

ब्रिटिश उपन्यासकार विलियम गोल्डिंग को साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिला। तेइस वर्ष पहले उन्होंने 'लार्ड ऑव द फ्लाइस' उपन्यास लिखा था। इस उपन्यास को २१ प्रकाशकों ने छापने से इंकार कर दिया। लेकिन जब वह छपा तो लोकप्रियता की बुलंदियों तक जा पहुंचा। अब तो इस किताब को ब्रिटिश स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी शामिल कर लिया गया है। गोल्डिंग को साहित्य का नोबेल पुरस्कार सन १९८३ में मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्त्र : चिंतन

संसार का अस्तित्व निरर्थक है !

● डॉ. रमेशकुमार त्रिपाठी

ज्यां पॉल सार्त्र १९०५-१९८३ विश्वविख्यात फ्रांसीसी विचारक थे। दर्शनशास्त्र और साहित्य के क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियां अति उच्च स्तर की हैं। सार्त्र का 'नौसिया' नामक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध है। इसमें उन्होंने अपनी सुतीक्ष्ण निरीक्षण-शक्ति, प्रखर बुद्धि और तलस्पर्शी अंतर्दृष्टि के बल पर मनुष्य के स्वरूप के संबंध में अनेक सारगर्भित बातों का औपन्यासिक रोचकता के साथ निरूपण किया है। प्रस्तुत लेख में इन्हीं कुछ खास बातों के विवेचन का प्रयास किया गया है।

सार्त्र संसार के अस्तित्व को निरर्थक मानते थे। उनके अनुसार, इस निरर्थक संसार में मनुष्य की सत्ता भी निरर्थक है। उसके अस्तित्व का कोई प्रयोजन नहीं है। आदमी आकस्मिक रूप में जगत में उत्पन्न होता है; उसकी उत्पत्ति अनिवार्य या आवश्यक नहीं है। मानव-जीवन के प्रति सार्त्र का यह दृष्टिकोण निराशावादी है। मानव-जीवन की व्यर्थता के विरोध में अल्बर्ट कामू कहते हैं, 'जीवन की व्यर्थता का विचार अंत नहीं, बल्कि सिर्फ प्रारंभ हो सकता है।'

सार्त्र का मानना है कि मनुष्य अपने अस्तित्व की भयावह निरर्थकता को छिपाने के लिए नाना प्रकार के कार्य करता रहता है। जैसे, उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर काम-क्रिया में लिप्त होना। इसके अतिरिक्त, सार्त्र इस विचित्र एवं रोचक बात की ओर हमारा ध्यान खींचते हैं कि यद्यपि आदमी की सत्ता, वास्तव में, निरर्थक है; पर वह इसे कीमती समझकर इसकी सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में लगा रहता है, जैसे, खान-पान।

दुःखपूर्ण है मनुष्य का अस्तित्व

मनुष्य का अस्तित्व दुःखपूर्ण है। इस बात में सार्त्र और महात्मा बुद्ध के बीच समानता है। सार्त्र मानव-अस्तित्व को डरावना भी मानते हैं। वह कहते हैं, अस्तित्व से 'मुझे डर लगता है।' (पृ. २२७)। सार्त्र मनुष्य की सत्ता को उसके विचारों से जोड़ते हैं। व्यक्ति का अपनी सत्ता का बोध उसके विचारों में निहित है। आदमी को अपने अस्तित्व का बोध बना रहता है, क्योंकि उसके मन में विचार चलते रहते हैं। यदि आदमी सोचने से विरत हो सके, तो उसे संत्रास-युक्त सत्ता-बोध से छुटकारा मिल सकता है। लेकिन, इसकी प्राप्ति में उसका 'मैं' यानी अहं-भाव बाधक है। कहने का तात्पर्य है, यदि कोई व्यक्ति अपने विचारों से निवृत्ति पा सके, तो उसका अस्तित्व-बोध और इसके साथ ही अहं-भाव समाप्त हो जाएगा। तब उसकी कुछ-न-होने की स्थिति होगी, जो दुःखरहित होगी।

मानव-अस्तित्व त्रासदी है। इस तथ्य की पहचान का एक सरल ढंग यह है : आप किसी काम में लगे हैं। काम पूरा हो जाने पर आप खाली हो जाते हैं तो सहज ही अपने से सवाल करते हैं— 'अब क्या करें ?' हमारे अस्तित्व के संत्रास-युक्त होने के कई कारण हैं। एक तो यह है कि आदमी मूलतः स्वार्थी है। दूसरा, वह वस्तुतः अकेला है। वास्तव में, केवल शरीर ही उसका अपना है। मनुष्य अपने शरीर और उसमें उठनेवाले हवा-जैसे विचारों तक ही सीमित है। आदमी को कभी-कभी इस बात का गहरा अहसास भी होता है कि उसके व्यक्तित्व के कोई छिपे आयाम नहीं हैं। सार्त्र की यह धारणा हिंदू दृष्टि से नितांत भिन्न है कि मनुष्य के व्यक्तित्व का वास्तविक स्वरूप दैवी है, जो प्रच्छन्न रहता है।

अकेलेपन की मार

अकेलेपन की मार से कोई व्यक्ति बच नहीं सकता। हां, यह अवश्य है कि इस मार में दो कारणों से आदमी-आदमी के बीच अंतर हो सकता है। एक कारण मनुष्य के स्वभाव से संबंधित है, दूसरा उसकी परिस्थितियों से। अंतर्मुखी प्रवृत्तिवाला मनुष्य बहिर्मुखी स्वभाववाले की अपेक्षा साधारतः अकेलेपन की मार को अधिक झेलता है। अब परिस्थिति विषयक कारण पर विचार करें। मान लीजिए, आप सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। स्पष्टतः, आपका काफी समय लोगों के साथ बीतता है। ऐसी स्थिति में अकेलेपन के हमले से आपका कुछ बचाव हो जाता है। फिर भी, अकेलापन प्रत्येक

> ***'मैं लिखना बंद नहीं कर सकता, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता हूं तो विरक्ति से घिर जाऊंगा। मुझे ऐसा लगता है कि लिखते रहने से मैं इसे रोक सकता हूं।'*** —सार्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य की, न्यूनाधिक रूप में, अवियोज्य नियति है।

मनुष्य न केवल अकेला, बल्कि कमजोर है। आदमी की कमजोरी से जुड़ी है उसकी असहायता। अपनी कमजोरियों के कारण ही 'हम एक दूसरे के लिए कुछ नहीं कर सकते।' (पृ. ९८)। यह बात विरोधात्मक लग सकती है, क्योंकि हम समाज में रहते हैं और एक दूसरे के काम आते हैं। सहायता और सहयोग सामाजिक जीवन के गुण माने जाते हैं। लेकिन, गहराई से विचार करने पर सार्त्र के कथन में काफी सच्चाई जान पड़ती है। आदमी सुख-दुःख, वास्तव में, अकेले ही भोगता है। मान लीजिए, आप दुखी हैं। दूसरे लोग आपको कुछ सांत्वना दे सकते हैं; किंतु आपका दुःख हर नहीं सकते। आपको अपना दुःख भोगना ही पड़ता है। इसी तरह, मान लीजिए, आप अपना सुधार करना चाहते हैं। इस कार्य में भी दूसरों से कुछ मदद मिल सकती है। लेकिन, आत्म-सुधार का कार्य मुख्यतः आपके अपने प्रयत्नों पर ही निर्भर होगा। हमारे जीवन के सतही मामलों में दूसरों की सहायता काफी काम आ सकती है। परंतु, जहां तक जीवन के बुनियादी मसलों का सवाल है, व्यक्ति की जिम्मेदारी मुख्य है, दूसरों की मदद बहुत कारगर नहीं होती। यही कारण है कि सार्त्र ने व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर बहुत जोर दिया है। इस पर विशेष बल हम बुद्ध और जे. कृष्णमूर्ति के चिंतन में भी पाते हैं।

सहारे की जरूरत क्यों

हम अपने को कमजोर और असहाय पाते हैं तथा एकांत से घबराते हैं, इसलिए हमें सहारे की जरूरत होती है। सहारे के तमाम रूप होते हैं। इसका एक रूप आपका किसी स्त्री से प्रेम हो सकता है। वह और उससे संबंधित विचार आपको सहारा देते हैं। मिसाल के तौर पर, जब आप दोनों साथ बैठते हैं, तब दोनों को दुनिया अच्छी लगती है। जब आप दोनों बातचीत करते हैं, तब दोनों को समय का पता नहीं चलता। कुछ समय के लिए आप दोनों एक दूसरे के जीवन में अपने जीवन की सार्थकता पा सकते हैं। आप दोनों को लग सकता है कि दोनों का जीवन एक है। सहारे के एक अन्य रूप का जिक्र किया जा सकता है। मान लीजिए, आप किसी बात को लेकर काफी उद्विग्न हैं। अपने प्रियजन से उसके बारे में बातचीत कर आप हलका महसूस करते हैं, लेकिन, अकेला होने पर आपको उद्विग्नता फिर घेर लेती है, और उससे बचने के लिए आप जाने-अनजाने कोई-न-कोई तरीका ढूंढ़ निकालते हैं। जैसे, आप गुनगुनाने लगते हैं।

मानव-जीवन की त्रासदी में विरक्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य अपने अस्तित्व की भयावह निरर्थकता को छिपाने के लिए नाना प्रकार के कार्य करता है।

नीरसता, ऊब और घृणा का बड़ा स्थान है। जब हमारे मन में विरक्ति या घृणा पैदा होती है, तब इसका प्रभाव उस सब पर पड़ता है, जो-जो हम देखते-सुनते हैं, जैसे, मोर, संगीत। हम वस्तुतः विरक्ति या घृणा के भाव से घिर जाते हैं, उसके अंदर जीने लगते हैं। विरक्ति की उत्पत्ति के बारे में सार्त्र का खयाल है कि जब मनुष्य को इस बात की अनुभूति होती है कि इस उदासीन संसार में वह फालतू है, तो उसके मन में विरक्ति का भाव पैदा होता है।

नीरसता मानव-जीवन का अन्य अवांछनीय किंतु अपरिहार्य तत्व है। संसार हमें रोज-रोज एक-जैसा लगता है। इससे हमें जीवन नीरस लगता है। नीरसता के मूल में, सार्त्र के अनुसार, हमारी काहिली है।

ऊब : स्वभावगत दोष

ऊब, सार्त्र के शब्दों में, 'अस्तित्व का गहरा सार है; वह चीज है जिससे मैं बना हूं।' (पृ. २२४)। आदमी अकसर ऊब का शिकार होता है। ऊब, जैसा सार्त्र के कथन से स्पष्ट होता है, मानव स्वभावगत दोष है, जिससे मुक्ति संभव नहीं है। ऊब का एक उदाहरण देते हुए सार्त्र कहते हैं कि जब-तब मुझे ऐसी जम्हाई आती थी कि मेरे आंसू गालों तक ढुलक आते थे। इस प्रकार की जम्हाई गहरी ऊब की सूचक है।

विरक्ति, नीरसता, ऊब—जैसे संतापों से बचने के लिए मनुष्य नाना प्रकार के प्रयास करता रहता है। इसमें उसे कुछ सफलता भी मिलती है। विरक्ति से बचने के बारे में सार्त्र स्वयं कहते हैं : 'मैं लिखना बंद नहीं कर सकता, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता हूं तो विरक्ति से घिर जाऊंगा। मुझे ऐसा लगता है कि लिखते रहने से मैं इसे रोक सकता हूं।' (पृ. २४६)। हम जानते हैं कि लोगों के सिनेमा, टी.वी., रेडियो, अखबार आदि के देखने-सुनने, पढ़ने के पीछे एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक तत्व है—उपरोक्त भयावह संतापों से कुछ देर के लिए छुटकारा पाना।

प्रेम होता है मूल्यवान

प्रेम को सार्त्र एक ऐसी मूल्यवान चीज मानते हैं, जो आदमी को अकेलापन, असहायता, विरक्ति, नीरसता, ऊब आदि से काफी हद तक, उबरने में मदद करती है। संभवतः इन संतापों से त्रास पाने के लिए प्रेम से बड़ा कोई दूसरा सहायक आदमी का नहीं है। उदाहरणार्थ, यदि आपकी कोई प्रियतमा है, तो वह इन पीड़ाओं से, काफी हद तक, आपकी रक्षा करती है। आपको इसका अहसास तब होता है, जब वह आपके जीवन से अलग हो जाती है। प्रेम के महत्त्व के विषय में सार्त्र का कहना है कि वह ऐसी चीज है जो हमें ऐसे संसार में ले जाती है, जो 'निरर्थकता, बनावट, सूक्ष्मता से दूर' है। (पृ. २०६)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्ववादी दार्शनिक के रूप में सार्त्र मानते हैं कि विषयिता (सब्जेक्टिविटी) सत्य है। मोटे तौर पर, इसका अर्थ है कि मनुष्य के अनुभव, भाव, संवेग ही सत्य या यथार्थ हैं। इस मान्यता के कारण, उनके चिंतन में मन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। वस्तुओं की जीवंतता वस्तुतः हमारे मन पर निर्भर करती है। यह सामान्य अनुभव की बात है कि जब हमारा मन किसी चीज से भरा होता है, तब उसके अतिरिक्त बाकी सब कुछ हमें अयथार्थ लगता है। उदाहरणार्थ, जब आप किसी को प्यार करते हैं, तब प्रियतमा आपके मन में इस कदर बसी होती है कि उसके अलावा अन्य सब आपको यथार्थ और जीवंत नहीं लगता।

मन हमेशा जीवंत नहीं रहता

अफसोस की बात है कि हमारा मन हमेशा जीवंत नहीं रहता। मन की सजीवता के क्षण बहुत कम होते हैं। लेकिन, जब हमारा मन प्राणवान होता है, तब हम प्रत्येक क्षण में तन्मयता के साथ जीते हैं। हम जानते हैं कि हरेक क्षण 'अपूर्व और ऐसा है जिससे फिर से लाया नहीं जा सकता'। (पृ. ५९)। यह जानते हुए भी तन्मयता की स्थिति में हम उपस्थित क्षण को नष्ट होने से रोकने की कोशिश नहीं करते, क्योंकि इसे खत्म होने से हम रोक नहीं सकते। और, यदि हम ऐसी कोशिश करते हैं, तो असफलता के साथ इस क्षण को पूरी तरह से जी नहीं पाएंगे, क्योंकि तब मन संघर्ष की स्थिति में होगा।

यहां सार्त्र ने जीवन के लिए अति उपयोगी बात बतायी है। मानव-जीवन घटनाओं का प्रवाह है। प्रत्येक घटना सावधि है— प्रारंभ होती है, कुछ समय तक टिकती है, फिर नष्ट हो जाती है। जीने का सही ढंग यह है कि जो घटना घटे, हम उसको पूरी तरह से जिएं, उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप किये बिना। इस ढंग से जीनेवाला व्यक्ति 'हर चीज से उत्कटता के साथ जुड़ता है, लेकिन आसानी से अपने को उससे अलग भी कर लेता है।' (पृ. ८८)। परंतु, दुखद स्थिति यह है कि हम, सामान्य तौर पर, इस ढंग से जी नहीं पाते। फिर भी, जीवन के थोड़े क्षण जो इस तरह जिये जाते हैं, वे अविस्मरणीय हो जाते हैं।

मन की जीवंतता के सिलसिले में सार्त्र कहते हैं कि जब हम निश्चिंत होते हैं, दबाव या तनाव महसूस नहीं करते, तब हमारे अनुभव तीक्ष्ण और प्राणवान तो होते ही हैं, ऐसे भी होते हैं, जैसे उन पर हलकी मुसकान बिखरी हो। आज के भाग-दौड़वाले जीवन में ऐसे स्वर्णिम अनुभव कितने दुर्लभ हो गये हैं।

—५, नंद नगर, बी. एच. यू. वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर वह रहस्य क्या था ?

मुकुन्ददास

स्वर्गीय राजा गोकुलदासजी के भतीजे, दयालुता की मूर्ति मेरे पूज्य पितामह स्व. दीवान बहादुर वल्लभदासजी कुशल उद्योगपति, कर्मठ जनसेवी एवं धर्मपरायण व्यक्तियों में गिने जाते थे। जैसी ईश्वर में उनकी आस्था थी, वैसी ही उन पर प्रभु की कृपा भी थी। उनकी दानशीलता का यह आलम था कि जनता को पीने के पानी का कष्ट था तो अपने पास के लाखों रुपये खर्च करके विशाल परियट टैंक तथा जच्चा अस्पताल नहीं था तो लेडी एलगिन अस्पताल बनवा दिया। और भी निर्माण कार्य जैसे टाउन हाल आदि उन्होंने कराये थे। वे विद्वानों, पंडितों, कलाकारों, जनसेवियों आदि का न केवल आदर करते थे बल्कि उन्हें आर्थिक सहयोग भी देते थे।

वे नियमित रूप से पूजापाठ किया करते थे तथा कसरत और कुश्ती के भी बड़े शौकीन थे। अपने पैलेस की दूसरी मंजिल पर उन्होंने एक अखाड़ा भी बनवाया था, जिसमें वे मेरे पिता सेठ नरसिंहदासजी तथा साहित्यकार पितामह सेठ गोविंददासजी सहित परिवार के दर्जनों युवा-सदस्यों को अपने सामने कसरत कराते तथा कुश्ती लड़ना सिखाते थे। उनके बहुतेरे अंतरंग मित्र भी वहां कसरत करने आते थे।

वे हर दिन अपने प्रातःकालीन पूजन में भगवान शंकर की मिट्टी की छोटी-सी मूर्ति बनाकर उसे दायीं हथेली पर रखते तथा दिया जलाकर भगवान की आरती किया करते थे। आरती के बाद वे शंकर की मूर्ति विसर्जित कर

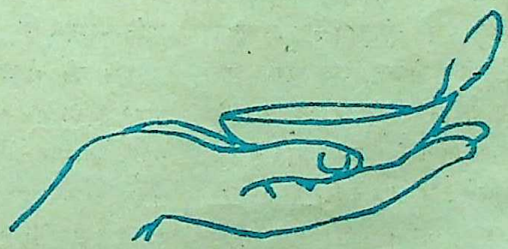

क्या दीपक का बुझना पूर्वाभास था ? या यह एक मनोवैज्ञानिक घटना थी ? यह सब कुछ आज तक रहस्य बना हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया करते थे। संभवतया किसी संन्यासी ने उनसे इस प्रकार की पूजा करने को कहा था। अनेक वर्षों तक उनका यह रोज का नियम चलता रहा।

एक दिन पूजन के समय किसी कारणवश उनका आरती का दीपक बुझ गया। जैसे ही दीपक बुझा, वैसे ही मेरे पितामह ने सभी परिवारजनों को बुलाकर कहा, "जल्द-से-जल्द जमीन-जायदाद की लिखा-पढ़ी करनेवालों को बुला लो। आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है। अब मैं नहीं बचूंगा।"

प्रपितामह का यह कथन सुनकर परिवार के सभी लोग किंकर्तव्य विमूढ़ होकर रह गये। यह अविश्वनीय दुखद समाचार जंगल की आग की तरह सारे शहर में फैल गया। उनके इष्ट मित्र पैलेस में आने लगे। डॉक्टरों ने उनकी जांच की तो उन्हें पूर्ण स्वस्थ पाकर उनसे आश्चर्य से कहा, "आप पूरी तरह से स्वस्थ हैं। आपको व्यर्थ का भ्रम हो गया है। अभी आप बहुत जिएंगे।" परंतु यह सब सुनकर भी उन्होंने अत्यंत शांत भाव से पुनः कहा, "यह सब कुछ व्यर्थ है। आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है।"

अंत में यही हुआ। उसी दिन रात्रि को वे सबको रोता-बिलखता छोड़कर परलोकवासी हो गये।

क्या दीपक का बुझना मृत्यु का पूर्वाभास था ? क्या उन्हें पहले से ही कुछ ज्ञात था ? अथवा यह एक मनोवैज्ञानिक घटना थी ? यह सब कुछ आज तक रहस्य बना हुआ है।

— डी. बी. वल्लभदास पैलेस हनुमानलाल, जबलपुर ४८२००२

इनके भी बयां जुदा-जुदा

दिल से तुम्हें भुलाने की कोशिश करेंगे हम
तुम से भी हो सके तो ना आना खयाल में।
—सीमाब अकबराबादी

मैं रोज घर से निकलता हूं इस सहारे पर,
कि जैसे आज मुकद्दर बदलने वाला है।
—वशीम बरेलवी

जान तेरी है तेरे हुक्म पे वापस होगी,
तेरी जानिब से तकाजा नहीं होने देंगे।
—गौहर उस्मानी

आपके एहद की पहचान यही है शायद,
कोई मरता हो मगर उसको ना पानी देना।
—प्रकाश नाथ परवेज

भीड़ में भी लुट रहे हैं आजकल तो काफिले,
हम तो सुनते थे कि तन्हाई में लुट जाते हैं लोग।
—बृज अभिलाषी

यही नहीं की दिया रास्ते में रख जाना,
जब आए शाम मेरा इंतजार भी करना।
—रा ना सहरी

हम अमन चाहते हैं मगर जुल्म के खिलाफ,
गर जंग लाजमी है तो फिर जंग ही सही।
—साहिर लुधयानवी

तू जानता नहीं मेरी चाहत अजीब है,
मुझको मना रहा है कभी खुद खफा भी हो।
—बशीर बद्र

कहते हैं कि आता है मुशीबत में खुदा याद,
हम पर तो वो गुजरी कि खुदा भी न रहा याद।
—जगन्नाथ आजाद

इक उम्र कट गई है तेरे इंतजार में,
ऐसे भी हैं कि कट न सकी जिनसे एक रात।
—फिराक गोरखपुरी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवार

स ग्राम, गोदत्ती
ी मात्रा बनायें ।
नी से लें । ब्रह्म
ाने से पहले दूध
यमित सिर पर

वह बहुत समय से
मेरे और उसके बीच की
दीवार तोड़ने की सोच रहा था

मैं सदैव दीवार तोड़ने की जगह
फांदकर पहुंचने की सोचती रही

एक दिन दीवार ढह गयी
जब कि हम दोनों ही
दीवार से कान लगाये एक दूसरे को सुन रहे थे

दीवार ढह गयी
मैं उसको पार कर सकती थी
अब मलवे के ढेर को पार करना कठिन हो गया ।

तैराक

वे कहते हैं
तुम बहुत बड़े तैराक हो
और मैंने
सीखा है तुम्हीं से
डूबकर मर जाना

● कु. मनजीत टिवाणा
१४८२/२ सैक्टर ४३ बी चंडीगढ़—१६००३६
रूपांतर : फूलचंद मानव

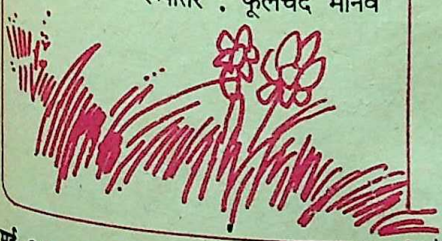

नदी

नदी ! तू भरपूर या सूखी रही है
मुझे लगता है कि तू मुझमें बही है

एक पर्वत था—जहां उद्गम हुआ था
एक सागर है—जहां संगम बनेगा
सैकड़ों उत्थान-पतनों की कहानी
काल ही शायद सुनेगा या गुनेगा ।

राह पाने को भटकना और बहना
ज़िंदगी की भी यही गाथा रही है

गर्व की है बात मन में ज्वार होना
गर्व की है बात पानीदार होना
भेद करके चक्रव्यूहों को चले जो
गर्व की है बात वह रफ़्तार होना

दूसरों की प्यास पलभर को न झेली
और अपनी प्यास जीवनभर सही है

आचमन से स्नान तक वाली कहानी
चली, जब तक रही पानी पर जवानी
फिर शरद हेमंत ने गंभीरता दी
ग्रीष्म ने दी त्याग की, तप की निशानी

किया हमने भी कि मौसम ने किया जो
कही हमने भी कि जो उसने कही है

पर्व कितने हुए, कितने लगे मेले
और फिर धारा अकेली, तट, अकेले
खनक चूड़ी की न पायल की झनक है
घट गये तो रह गये पनघट अकेले

फूल, कांटे, राख, बालू के घरौंदे
तीर का वातारण बिलकुल वही है

रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'
कोठी नं. १२ ए.बी. रोड,
शिवपुरी (म.प्र.) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

इनके भी ब
ा जगत में विख्यात
ा कविराज वेदव्रत शर्मा
और पीड़ित व्यक्तियों के
चार के उपाय बताएंगे।
दिल से तुम्हें भुलाने से ग्रस्त हैं तो नीचे का
तुम से भी हो सके में चिपकाकर भेजिए।

नवीन, दिल्ली

प्रश्न : उम्र चौबीस साल है। उच्च रक्तचाप से पीड़ित हूं। कभी-कभी हाथ-पैर ठंडे हो जाते हैं, दिल की धड़कन असामान्य रहती है। जब धड़कन बढ़ जाती है, तब बेचैनी होने लगती है। कृपया दवा व परहेज लिखें।

उत्तर : प्रवालपिष्टी दस ग्राम, आंवला चूर्ण अस्सी ग्राम की अस्सी मात्रा बनायें। सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें। अर्जुनारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच रात सोने से पूर्व दूध से लें। दही, चावल, खटाई, मिर्च, मसाले, गुड़ व तेल सेवन न करें। नमक भी कम मात्रा में प्रयोग करें।

सत्यपालसिंह, ऊधमपुर

प्रश्न : बहुत ही सरल कब्ज है। शौच के रास्ते दो बड़े-बड़े मस्से हैं। मस्सों में बड़ी जलन होती है। वैद्यजी दवा बतायें।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो सुबह-शाम पानी से लें। अभयारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पीयें। दही, चावल, मिर्च, मसाले, खटाई, प्याज, गुड़ व तेल का परहेज कर तीन माह दवा लें।

अशोक वर्मा, करोली

प्रश्न : विवाह हुए तीन-चार माह हो गये हैं। शीघ्र पतन का रोगी हूं। काफी परेशान हूं।

उत्तर : चन्द्रप्रभा वटी एक-एक सुबह दूध से लें। च्यवनप्राशावलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें। चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। खटाई, गुड़ व तेल का परहेज कर छह सप्ताह नियमित दवा लें।

एक बहन, शिवपुरी

प्रश्न : उम्र चालीस साल है। अनेक वर्षों से पेट दर्द की शिकायत है। काफी एलोपैथी इलाज किये एक्स-रे भी कराया। सभी परीक्षण भी कराये सब कुछ सामान्य है। वायु बहुत अधिक बनती है उचित दवा बतायें।

उत्तर : सोंठ, अजवायन, हरड़, सेंधा नमक दो-दो सौ ग्राम लेकर बारीक चूर्ण कर लें। एक-एक चम्मच सुबह, दोपहर व रात पानी से लें।

गुंजन, दिल्ली

प्रश्न : उम्र अठारह साल है। मेरे स्तन विकसित नहीं हैं, हीन भावना आती जा रही। कारण मेरी बहन का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक है। इसलिए मानसिक तनाव में रहती हूं। डर है कहीं विवाह के बाद दांपत्य सुख में दरार न आ जाए।

उत्तर : सरसों के शुद्ध तेल की प्रतिदिन मालिस करें।

दलवतराम, पिंडवाड़ा (राजस्थान)

प्रश्न : उम्र छब्बीस वर्ष है। सिर के बाल झड़ते हैं। अनेक उपाय किये। विशेष लाभ नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपचार बतायें।

उत्तर : मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम, गोदन्ती भस्म तीस ग्राम को लेकर अस्सी मात्रा बनायें। सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें। ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच रात सोने से पहले दूध से लें। महाभृंगराज तेल नियमित सिर पर लगायें।

हरिशंकरलाल सक्सेना, ग्वालियर

प्रश्न : मेरी आयु अड़सठ वर्ष है। कई वर्षों से पेचिस है। दिन में ६-७ बार शौच जाना पड़ता है। पेट में गुड़गुड़ाहट होती रहती है। हलका-हलका दर्द भी। गुदा मार्ग से चिकना पदार्थ भी निकलता है। अच्छी आयुर्वेदिक दवा लिखें।

उत्तर : कुटजघन वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें। चित्रकादि वटी एक-एक भोजन के बाद पानी से लें। तली वस्तुएं व मीठा सेवन न करें।

आशा, कानपुर

प्रश्न : उम्र अठाइस साल है। विशेष रोग नहीं है। दुबली बहुत लगती हूं, वजन बढ़ाने व मांसपेशियां मजबूत हों, इसका उपाय बतायें। अभी अविवाहिता हूं।

उत्तर : दो केले प्रतिदिन सुबह दूध के साथ प्रयोग करें।

एक परेशान बहन, जबलपुर

प्रश्न : आयु अड़तीस साल है। गर्भाशय के मुख पर छोटा जख्म हो गया है। दो बार बिजली लगवानी पड़ी। उस समय ठीक हो गया, लेकिन फिर दोबारा हो गया। मासिक स्राव भी अधिक आता है, क्रम भी ठीक नहीं है पहले दिन स्राव कम होता है। तीसरे-चौथे दिन बहुत अधिक व साथ में काली-काली गांठें भी आती हैं। सात-आठ दिन यही स्थिति चलती रहती है। साथ में पानी की शिकायत, कमर दर्द व कमजोरी है। गृहस्थ जीवन का सुख समाप्त हो गया। काफी चिंतित हूं। पति भी परेशान रहते हैं। कृपया कुछ सुझायें।

उत्तर : पुष्यानग चूर्ण साठ ग्राम, चंद्राशु रस दस ग्राम, मुक्ता शुक्ति भस्म दस ग्राम, त्रिफला गुगल तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें। सुबह-रात दूध से लें। अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। दही, गुड़, तेल, खटाई, मिर्च व मसाले सेवन न करें, छह माह नियमित दवा लें।

नेहा, ग्वालियर

प्रश्न : उम्र अठारह साल है। छह साल से टांगों में सफेद दाग है। काफी फैलने लगे हैं। परहेज व दवा बतायें।

उत्तर : खैर छाल दो सौ ग्राम, आंवला चूर्ण दो सौ ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बनायें। एक-एक चम्मच सुबह, दोपहर व रात को पानी से लें। खदिरारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद पीयें। खटाई, गुड़, तेल, दही व दूध के साथ नमकीन वस्तुएं सेवन न करें एक वर्ष नियमित औषधियां प्रयोग करें।

नाम ..... आयु .....
रोग के लक्षण ..... कब से है .....
अब तक क्या इलाज किया .....

वैद्य की सलाह

द्वारा— संपादक— 'कादम्बिनी'
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

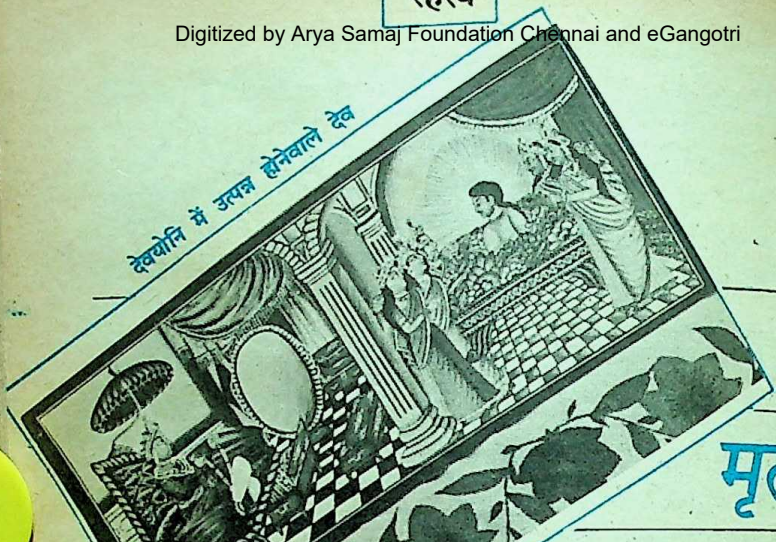

क्या मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व है ?

● मुनि किशनलाल

क्या परलोक है ? किसने देखा है उसे ? आज तक कोई परलोक से लौटकर नहीं आया जो यह कहे कि मैं दुखी या सुखी हूं । इस जगत में करोड़ों लोग परलोक में विश्वास नहीं करते हैं और करोड़ों ऐसे हैं, जो परलोक में विश्वास करते हैं । दोनों तरह की परंपराएं इस धरती पर विद्यमान हैं । परलोक में जिनका विश्वास नहीं है, पुनर्जन्म में उनका विश्वास कैसे हो सकता है ? परलोक अथवा पुनर्जन्म को इंकार नहीं किया जा सकता है तो उसे स्वीकार कर प्रयोगशाला में सिद्ध कैसे किया जा सकता है ? परलोक या पुनर्जन्म में किसी को विश्वास हो या नहीं, किंतु मृत्यु जगत की सच्चाई है । मृत्यु यथार्थ है, उससे प्रत्येक को गुजरना होता है । फिर भी मृत्यु की घटना का विश्लेषण करने के लिए कोई मृतात्मा वापस नहीं लौटी, जिसके द्वारा मृत्यु की पहेली को हल किया जा सके ।

प्रतिदिन हजारों लोगों की मृत्यु होती है । मरते हुए व्यक्तियों को आंखों के सम्मुख देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection; Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं फिर भी उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है कि मृत्यु क्या है ? कुछ लोग मृत्यु के नाम से ही घबराते हैं, मृत्यु उनके लिए एक विभीषिका है।

सम्राट श्रेणिक को अपनी सेना का एक हाथी अत्यधिक प्रिय था। उसकी देख-रेख के लिए अनेक कर्मचारी नियुक्त थे। सभी कर्मचारियों को यह हिदायत थी कि हाथी की मृत्यु का संवाद यदि किसी ने सुनाया तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूंगा। संयोग से हाथी बीमार पड़ा और मृत्यु हो गयी। सम्राट के पास इस अशुभ समाचार को लेकर कौन पहुंचे ? सभी एक दूसरे की ओर देखने लगे। किसी की भी यह हिम्मत नहीं हो रही थी कि महाराजा से निवेदन करे कि हाथी मर गया है। 'रोहक' नामक बालक ने कहा 'मैं जाता हूं महाराजा के पास।' और उसने वहां जाकर निवेदन किया, "महाराजा, आज हाथी कुछ खा नहीं रहा है और न ही पानी पी रहा है। वह किसी प्रकार की गति भी नहीं कर रहा है और श्वास-प्रश्वास भी नहीं कर रहा है। 'क्या हाथी मर गया ?' ऐसा हम तो नहीं कह सकते। हमने बहुत कोशिश की कि हाथी किसी तरह से खाये-पीये श्वास-प्रश्वास ले, लेकिन आखिर आप तक पहुंचना ही पड़ा। हाथी कुछ भी क्रिया नहीं कर रहा है।"

सम्राट, रोहक के कथन का आशय समझ गया।

मृत्यु : अलग-अलग समाधान

अलग-अलग परंपराएं मृत्यु के संबंध में अपना समाधान देती रही हैं। एक परंपरा मृत्यु को जीवन की परिसमाप्ति मानती है तो दूसरी परंपरा जीवन को अजर-अमर मानती है। उसका मानना है कि केवल स्थूल शरीर ही नष्ट होता है, संस्कारों के अनुसार जीव एक नवीन शरीर का विकास कर लेता है। पहली परंपरा कहती है कि मृत्यु के पश्चात दफनाया हुआ व्यक्ति कब्र में विश्राम करता है। कयामत के

जैन परंपरा के अनुसार पूर्वजन्म का निर्णय पूर्व अवस्था में भावनानुसार या मृत्यु के समय ही हो जाता है।

नरक योनि में उत्पन्न नारकीय जीव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय उसका लेखा-जोखा होता है। जिन्होंने खुदा के हुक्म को अदा किया है, वे जन्नत में जाते हैं। जो खुदा के हुक्म के विपरीत चलते हैं, वे दोज़ख में भेजे जाते हैं।

कर्म फल में विश्वास करनेवाली परंपरा पुनर्जन्म और पूर्व जन्म दोनों में विश्वास करती है, अर्थात मृत्यु उपरांत भी जीवन है। मृत्यु प्रतिक्षण घटित होती है। हर पदार्थ प्रतिक्षण परिवर्तित होता है। उसके साक्षी भी बनते हैं किंतु उसकी अनुभूति स्पष्ट नहीं होती। अनुभूति के लिए व्यक्ति को उससे गुजरना होता है। मृत्यु से गुजरे बिना उसका अनुभव कैसे होगा? मृत्यु से गुजरनेवाला लौटकर अपनी अनुभूतियों को विश्लेषित करे तब ही उसे यथार्थ का बोध हो सकता है।

मृत्यु के समय कई घटनाएं घटित होती हैं। शरीर चिकित्सक केवल इतना ही कहता है कि हृदय बंद हो गया, मस्तिष्क कार्य नहीं कर रहा है। श्वास बंद हो गया, तापमान नहीं है। मृत्यु के समय शरीर पर घटित होनेवाली घटनाओं से ही दूसरा व्यक्ति अनुमान लगा सकता है कि कुछ हो रहा है। मृत्यु के क्षणों में अकसर व्यक्ति मूर्च्छित हो जाते हैं, विरल व्यक्ति ही जागृत रहकर अनुभव करते हैं कि मृत्यु का अवतरण कैसे घटित होता है। जागृत मृत्यु-महिमा शास्त्रों में वर्णित है।

जैन परंपरा में मृत्यु

जैन परंपरा का ऐसा अभिमत है कि मृत्यु के तुरंत पश्चात प्राणी अपनी पूर्व निर्धारित गति (योनि) में उत्पन्न हो जाता है। पुनर्जन्म का निर्णय पूर्व अवस्था में भावनानुसार या मृत्यु के समय ही हो जाता है। ये चार गतियां— नरक, तिर्यच, मनुष्य एवं देव हैं। नरक और देवगति प्रत्यक्ष नहीं है। तिर्यच, (पशु आदि) और मनुष्य गति प्रत्यक्ष हैं। जैसे मनुष्य और तिर्यच अपनी योनि के आयुष्य को पूर्ण कर कर्मानुसार गतियों में जाते हैं वैसे ही नरक और देव योनि के जीव (अपने कर्म शरीर के साथ) भी परिभ्रमण करते हैं। मृत्यु के पश्चात जीव अपने कर्म शरीर सूक्ष्म शरीर के साथ पूर्व निर्धारित गति के लिए प्रस्थान कर जाता है और नवीन शरीर का विकास कर लेता है। यह कार्य

"मैं विश्वास करता हूं कि शारीरिक मृत्यु के बाद चेतना का अस्तित्व बना रहता है। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों और मनोवैज्ञानिक के रूप में किये गये अध्ययनों से सचमुच आश्वस्त हो गया हूं। मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व है।"

केनेथ टिंग

'लाइफ ऑफ़टर डेथ' के लेखक, प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मृत्यु के बाद कोई जीवन है ? इस विश्वास के पक्ष-विपक्ष में अनेक धारणाएं और परंपराएं प्रचलित हैं । एक परंपरा यदि मृत्यु को जीवन की परिसमाप्ति मानती है तो दूसरी परंपरा जीवन को अजर-अमर समझती है । डॉ. स्टेविंस नामक एक विशेषज्ञ ने पूर्व जन्म की स्मृतियों को अभिव्यक्ति देनेवाली सात सौ से अधिक घटनाओं का संकलन किया है ।

अलग-अलग गतियों (योनियों) में अपने ढंग से होता है ।

नरक योनि में उत्पत्ति स्थल कुंभी के सदृश होती है । कुंभियों का मुख छोटा और पेट बड़ा होता है । नरक से उत्पन्न जीव को जब बाहर निकालते हैं तब उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, भयंकर वेदना होती है । लेकिन नारकीय जीवों के शरीर का पदार्थ, पारद सदृश होता है, उसका जैन पारिभाषिक शब्द 'वैक्रीय शरीर' है । देव योनि में उत्पन्न जीव का शरीर सूक्ष्म वैक्रीय परमाणु से बनता है । ४८ मिनट के अन्दर ही वह नवजवान तुल्य हो जाता है । ज्ञान, गति और परावर्तन की उनकी अपनी विशेष क्षमता होता है, जिससे वे दूसरों के संबंध में जानकारी आने-जाने और अन्य कार्य सुगमता से कर सकते हैं ।

जीवन का अभ्युदय

मनुष्य और तिर्यच गति में उत्पत्ति और विकास का क्रम ज्ञात और स्पष्ट होता है । गर्भ में भ्रूण से लेकर शिशु तक के विकास की प्रक्रिया से आज का शरीर शास्त्री अच्छी तरह से परिचित है । तिर्यच को अपनी मृत्यु और पूर्व जन्म की स्मृतियां नहीं रहती । यदि कुछ स्मृति रहती भी है तो उसे अभिव्यक्ति नहीं कर सकता । मनुष्य ही ऐसा विकसित प्राणी है, जो पूर्व घटना को स्मृति में रखता है और उसे अभिव्यक्त भी कर सकता है । पूर्व जन्म की स्मृतियों को अभिव्यक्ति देनेवाली सैकड़ों घटनाएं आज भी यत्र-तत्र मिलती है ।

डॉ. स्टेविंस ने सात सौ से अधिक घटनाओं का संकलन और उनका वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया है । ये घटनाएं ईसाई, मुसलमान, हिंदू आदि विभिन्न धर्मों के माननेवालों की है । इनमें से कुछ घटनाएं इस लोक से संबंधित हैं और कुछ परलोक से ।

ऐसी ही एक पुस्तक है— 'पोस्टमार्टम जनरल ।' पुस्तक का प्रारंभ मोटर साइकिल की दुर्घटना से होता है, जिसमें स्कॉट अपने आपको मोटर साइकिल के पास मरा हुआ पाता है । वह मृत स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर रूप में बाहर होता हुआ अपने-आपको अनुभव कर रहा है । उस समय उसे ऐसी विचित्र स्थिति से गुजरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पोस्ट मार्टम जनरल' : एक ऐसी कृति जिसमें स्कॉट नामक एक व्यक्ति के एक दुर्घटना में मृत होने के बाद के अनुभव का विवरण है। इस लेख में प्रस्तुत है— स्कॉट के अविश्वसनीय प्रतीत होनेवाले अनुभव

होता है, जहां न प्रकाश है न अंधेरा। एक धूमिल वातावरण की अज्ञात व्यथा की विभीषिका उसको घेरे हुए है। चैतन्य का दीपक कुछ समय के लिए जला फिर बुझ गया। स्कॉट को मानो निंद्रा ने घेर लिया। कुछ समय पश्चात् निंद्रा टूटी। वह निपट अकेला था। उसे ऐसा आभास हो रहा था कि वहां चारों ओर से आवाजें आ रही थीं। वह सुन रहा था किंतु यह सब उसकी दृष्टि से अदृश्य और समझ से बाहर था। उसने समझने के लिए आवाज लगायी लेकिन कोई प्रत्युत्तर नहीं था। धीरे-धीरे वातावरण परिवर्तित हुआ। धूमिल वातावरण प्रकाशमान होने लगा। वह प्रकाश हेमंत ऋतु की संध्या का-सा था। वह वस्त्र-विहीन था परंतु उसे सर्दी महसूस नहीं हो रही थी। अब उसे अहसास होने लगा कि उसकी मृत्यु हो चुकी है, फिर भी वह आश्चर्यचकित था कि वह जीवित कैसे था। ऐसा हलकापन जीवित अवस्था में कभी अनुभव नहीं हुआ। कई सप्ताह वह इधर-उधर भटका। धीरे-धीरे वहां के वातावरण से परिचित हुआ।

"अब मुझे दूर और निकट की वस्तुएं स्पष्ट दिखायी दे रही थीं। निराशा और उद्वेग के बादल छटने लगे। कुछ कार्य करने की इच्छा प्रबल होने लगी। एकाएक मैं नगर की ओर आकर्षित होने लगा। मुझे भय का अनुभव होने लगा। लोगों की तीखी तेज आवाज, क्रूरता से भरे चेहरे अजीब लग रहे थे। तत्काल उस वातावरण से मैं दूर होता गया। उस क्षण मुझे लगा कि इस सारी परिस्थिति का जिम्मेदार मैं ही हूं। जिम्मेदारी की स्वीकृति के साथ परिवर्तन प्रारंभ हो गया।

"सहसा एक आवाज उभरी। धीरे-धीरे अंधकार प्रकाश में बदलने लगा। एक शुभचिंतक आया और कहने लगा, 'स्काट! मृत्यु के समय और उसके पश्चात तुम्हारे विचार घृणा और ईर्ष्या से भरे थे इसलिए चारों ओर अंधेरा था, अतीन्द्रिय चेतना का विकास नहीं हो पा रहा था। तुम अगर विकास चाहते हो तो अपनी प्रवृत्ति और भावों को बदलो। ज्यों-ज्यों पवित्रता, प्रेम का विकास होगा, सारा वातावरण बदल जाएगा। अमन और शांति का जीवन प्रारंभ हो जाएगा।"

स्कॉट उसके विचारों और व्यवहार से प्रभावित हुआ। परिचय पूछने पर उसने अपना नाम माइकेल बताया। स्कॉट और माइकेल साथ-साथ चल रहे थे। माइकेल, स्कॉट के प्रत्येक भावों को बिना कहे ही जान रहा था क्योंकि इस जगत के भाव रंगीन आकृतियों में स्वयं अभिव्यक्त हो रहे थे। मलिन और सुंदर आकृतियां उसके बुरे और अच्छी विचारों की स्वयं अभिव्यक्ति दे रही थीं। स्कॉट अपने बुरे विचार और भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था। उसे स्वयं अपने आपसे ग्लानि हो रही थी। करे तो भी वह क्या करे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माइकेल ने उसकी समस्या का समाधान देते हुए आश्वस्त किया कि तुम्हें अपनी भावनाओं को छिपाने की बजाय नियंत्रित करना आवश्यक है, क्योंकि यहां घृणा, ईर्ष्या, निर्दयता के विचार, विचार ही नहीं रहते अपितु शस्त्र का कार्य करते हैं।

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि

मृत्यु के बाद जीवन की निरंतरता केवल भारतीय शास्त्र ही स्वीकार नहीं कर रहे हैं अपितु आधुनिक विज्ञान के प्रमुख मनोवैज्ञानिक भी स्वीकार करने लगे हैं। हृदय वैज्ञानिक अमरीकी प्रोफेसर डॉक्टर माइकेल सवोम को मृत्यु के बाद जीवन में संशय था, इसलिए उन्होंने शोध में प्रवेश किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में कहा कि यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाण योग्य है कि ये व्यक्ति जो कुछ देखते हैं और बाद में उसका विवरण देते हैं वह वास्तव में घटित हुआ है। जब वे कहते हैं कि शरीर से बाहर हवा में तैरते हैं तो वास्तव में यह घटित हुआ प्रतीत होता है। यह स्वप्न या मतिभ्रम नहीं।

१२० व्यक्तियों में अड़तालीस व्यक्तियों ने अपने अनुभवों में इस बात की पुष्टि की कि मृत्यु के पश्चात् हमें ऐसे अंधेरे और प्रकाश से गुजरना होता है। कुछ एक को भयंकर दृश्य भी दिखायी देते हैं। ऐसी अवस्था का अनुभव डॉक्टरी कंडीशन के अनुसार मृत्यु के पश्चात् पुनः जीवन में लौटकर व्यक्तियों ने बताये हैं।

मनोवैज्ञानिक केनेथ टिंग भी स्वीकार करते हैं कि मृत्यु काल पर शोध से मृत्यु के संबंध में धारणा बदल गयी। अपनी पुस्तक 'लाइफ ऑफटर डेथ' में उन्होंने लिखा है। "मैं विश्वास करता हूं कि शारीरिक मृत्यु के बाद चेतना का अस्तित्व बना रहता है। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों और मनोवैज्ञानिक के रूप में अपने किये गये अध्ययनों से सचमुच आश्वस्त हो गया हूं। मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व है।'

वह वापस आ रही है

लंबे समय से समाप्त-सी लगनेवाली खतरनाक बीमारी लीशमैनियसिस वापस आ रही है। इसकी वापसी इटली से हुई है। 'एन्वायरमेंट न्यूज डाइजेस्ट' के अनुसार इटली के उष्ण क्षेत्रों के अनेक भ्रमणार्थी इसकी गिरफ़ में आये हैं।

कीटों से पैदा होनेवाली इस बीमारी की वापसी का मुख्य कारण इसके प्रति लापरवाही रहा है क्योंकि इसे लगभग समाप्त मान लिया गया था और १९५० के बाद इस बीमारी की तरफ से आंखें मूंद ली गयी थीं।

इस बीमारी के पैदा होने का कारण परजीवाणु, लीशमैनिया हैं और इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का काम बालू-मक्खी द्वारा किया जाता है। इस बीमारी के लक्षण चेहरे पर फोड़े-फुंसियों के रूप में स्पष्ट होने लगते हैं। कुछ समय बाद चेहरे को यह विकृत कर देती है।

इस बीमारी को दूर करने के लिए एंटीमोनी इंजेक्शन दिया जाता है किंतु यह इसको समाप्त करेगा ही इसकी कोई गारंटी नहीं है। ऐसी स्थिति में इसका एक मात्र उपाय मलेरिया उन्मूलन हेतु किये जाने वाले छिड़काव के समान कीटनाशकों का छिड़काव किया जाना है।

मई, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' प्रविष्टि-७० के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—जयधरनाथ त्रि

शान्ता गुप्ता, कालका

प्रश्न : विवाह कब और कैसी जगह होगा ?

उत्तर : इसी वर्ष आपके मकान से पश्चिम की ओर बड़े अच्छे और श्रेष्ठ घर में होगा।

सुमन, बरेली

प्रश्न : कया तलाक और पुनर्विवाह संभव है, कब तक, भावी जीवन कैसा ?

उत्तर : भावी जीवन अच्छा आनेवाला है। तलाक और पुनर्विवाह की संभावना छोड़ दें। बुध की महादशा में सब कुछ ठीक हो जाएगा।

श्रीमती राधा सख्यान, बंबई

प्रश्न : सफेद दाग कब ठीक होंगे, रत्न सुझायें ?

उत्तर : चंद्रमा की महादशा सन १९९३ में जब खत्म होगी, तब दाग ठीक होंगे। लाल रंग का मूंगा ११ रत्ती का पहनें।

विपिन बिहारी लाल शर्मा, भिंड

प्रश्न : जीवन में सर्वोत्तम समय कब से कब तक रहेगा ?

उत्तर : बुध की महा दशा में बुध का अंतर बीत जाने के बाद सर्वोत्तम समय शुरू होगा और वह ग्यारह वर्ष तक रहेगा।

प्रकाश चन्द्र वर्मा, औरंगाबाद

प्रश्न : बैंक सेवा की प्रोबेशनरी अफसर पद की परीक्षा में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : शुक्र की महा दशा में ये सभी अभिलाषाएं पूरी होंगी।

अरुणा, हाथरस

प्रश्न : स्वास्थ्य में सुधार कब तक ?

उत्तर : १५ जून के बाद से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ।

कु. रजनी अग्रवाल, महू

प्रश्न : विवाह कब, कहां और कैसा रहेगा ?

उत्तर : मंगली होने के कारण विवाह में सन दो बार अड़चने आयेंगी, पर अपनी ही जाति में श्रेष्ठ और संपन्न ससुराल अपने मकान से पूर्व की ओर प्राप्त होगी।

अशोक कुमार, गिरिडीह

प्रश्न : क्या विधान सभा चुनाव में सफलता होगी ?

उत्तर : विधायक होने की संभावना बहुत कम। ११ रत्ती का मूंगा पहनने पर लाभ की आशा।

जगन शुक्ल, जबलपुर

प्रश्न : अपना मकान और पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : मंगल की महादशा शुरू होने पर शीघ्र ही अपना मकान और पदोन्नति की संभावना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्षमणि बहुगुणा, टिहरी गढ़वाल

प्रश्न : जीवन में कुछ कर दिखानेवाला समय कब से कब तक रहेगा ?

उत्तर : शनि की महादशा प्रारंभ हो चुकी है, इसी में कुछ कर दिखाने का सुनहला मौका। अच्छी किश्म का पन्ना पहनें।

मोनिका पचौरी, भोपाल

प्रश्न : क्या प्रशासनिक सेवा में जाना संभव है ?

उत्तर : ग्यारह रत्ती का अच्छे श्रेणी का मूंगा पहनें, प्रशासनिक सेवा में जाना निश्चित है।

गोविन्द नारायण, इलाहाबाद

प्रश्न : ऋण निवृत्ति और आर्थिक सुधार कब तक, रत्न बतायें ?

उत्तर : हीरा अथवा स्फटिक पहनें, ऋण से मुक्ति और आर्थिक सुधार में अभी पांच वर्ष का समय लगेगा।

गोरखप्रसाद शर्मा, गोरखपुर

प्रश्न : आर्थिक तथा सामाजिक भाग्योदय कब ?

उत्तर : ५० वर्ष की उम्र के बाद आर्थिक और सामाजिक भाग्योदय प्रारंभ होगा। मूंगा तथा लाजवर्त पहनें।

श्यामदेव महाराज, धनबाद

प्रश्न : नया घर कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष घर बनने की संभावना।

७२

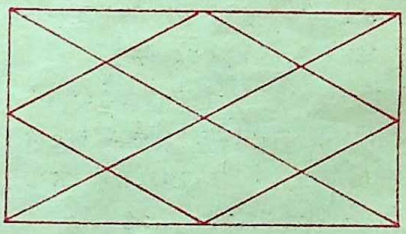

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख)..... .महीना.... .....सन.....

जन्म-स्थान.....जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा(वर्तमान).....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—७२) 'कादम्बिनी', हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजेन्द्र बहादुर सिंह, कलकत्ता

प्रश्न : व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने में बाधा आ रही है। दूर होगी या नहीं ?

उत्तर : एक सौ एक दाने की स्फटिक की माला पहनें, सभी बाधाएं, स्वयं दूर होती जाएंगी।

धनसिंह, अल्मोड़ा

प्रश्न : क्या जीवन में सुदिन आयेंगे ?

उत्तर : केंद्र कमजोर होने से सुदिन की आशा करना व्यर्थ। अच्छे श्रेणी का पुखराज पहनें तो कुछ लाभ होगा।

मनोजकुमार पांडेय, बिलासपुर

प्रश्न : क्या इस वर्ष पुनर्विवाह हो जाएगा ? दांपत्य सुख हेतु उपाय भी बतायें

उत्तर : अगले वर्ष तक विवाह हो जाएगा। हीरा अथवा स्फटिक पहनें।

टीका राम जैन, जीरापुर (राजगढ़)

प्रश्न : कठिनाइयां कब तक दूर होंगी ?

उत्तर : अभी अगले दो वर्ष तक कठिनाइयां बनी रहेंगी।

विजयपाल सिंह, लखनऊ

प्रश्न : पुत्र या पुत्री और संतान कब तक ?

उत्तर : संतान अवश्य होगी, लेकिन अभी और देर लगेगी। एक पुत्र का योग है।

सुभाष शर्मा, अजमेर

प्रश्न : नौकरी में तरक्की कब तक और सर्वोत्तम समय कब आयेगा ?

उत्तर : नौकरी में तरक्की के लिए अभी एक वर्ष का विलंब है। सर्वोत्तम समय में पांच वर्ष की देर।

सुरेश कुमार लखनऊ

प्रश्न : वर्तमान पद पर स्थाईत्व कब तक होगा और क्या पदोन्नति भी संभव है ? रत्न बतायें ?

उत्तर : इसी वर्ष नौकरी पक्की होगी और अगले वर्ष पदोन्नति संभव। अच्छे श्रेणी का पन्ना पांच रत्ती का पहनें।

दुर्गाप्रसाद अगरवाला, गौहाटी

प्रश्न: पिछले ९ मास से आजीविका हीन हूं। इसका समाधान कब तक ?

उत्तर : एक वर्ष के अंदर ही आजीविका की प्राप्ति होगी। अच्छे श्रेणी का पुखराज पहनें, लाभ होगा।

रेवती रमण, गया

प्रश्न : भाग्योदय कब होगा ? रत्न बतायें।

उत्तर : शुक्र की महादशा में राहु की अंतरदशा भाग्योदय कारक होगी। पुखराज सात रत्ती का अच्छा धारण करें।

पी. डी. तिवारी, मुरैना

प्रश्न : इच्छित स्थान में बदली, पदोन्नति कब-तक और मानसिक स्थिति ठीक कब होगी ? कोई रत्न बतायें

उत्तर : आठवें वृहस्पति के बदल जाने के बाद। इसी वर्ष स्थानांतरण। पदोन्नति दो वर्ष बाद। मानसिक शांति के लिए सात रत्ती का पन्ना पहनें।

चेतन प्रकाश शर्मा, सुमेरपुर

प्रश्न : रोजगार कौन से क्षेत्र में और आर्थिक सुदृढ़ता कब ?

उत्तर : मशीनरी के रोजगार में तथा आर्थिक संपन्नता में अभी १० वर्ष की देर।

श्रीगंगाधर ज्योतिष पाठशाला,
लालघाट, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मई से वृषभ में, मंगल १२ से कुंभ में, बुध 2 को वृष तथा २३ को मिथुन में, गुरु मेष में, शुक्र २ से मिथुन में, शनि धनु में, राहू कुंभ में, केतु सिंह में, हर्षल नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

मेष

मास उत्तम फलदायी होगा। साहसिक कार्यों में भाग्यदायी सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य व्यय की अधिकता होगी। यात्रा का योग आकस्मिक रूप से उपस्थित होगा। शासन सत्ता अथवा उच्च राज्याधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य वाहन-भवन संबंधी कार्यों में व्यस्तता होगी। श्रम की अधिकता से अस्वस्थता का भय होगा। पारिवारिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। १६ से २३के मध्य सृजन, लेखन, रचनात्मक कार्यों से लोकप्रियता मिलेगी। आर्थिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मासांत में इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होगा। महिलाओं के लिए सुखद तथा अनुकूल समय होगा। प्रियजनों से भेंट होगी। समय सुखद होगी। विद्यार्थियों को श्रम का अनुकूल फल प्राप्त होगा।

मई, १९८८

वृषभ

मास में परिश्रम तथा साहस से सफलता प्राप्त होगी। आजीविका संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रियजनों से विवाद होगा। १ से ७ के मध्य साहसिक कार्यों में आर्थिक सफलता मिलेगी। शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे। शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक विवादों से परेशानी का सामना करना पड़ेगा। संपत्ति व धन संबंधी चिंता होगी। १६ से २३ के मध्य विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग लाभदायी होगा। नौकरी में इच्छित स्थान पद-प्रतिष्ठा का योग है। मासांत में व्ययों की अधिकता होगी। कृषि अथवा भवन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। महिलाओं को स्वास्थ्य चिंता तथा पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि का योग होगा। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय होगा। किंतु साथियों से सावधान रहना चाहिए।

मिथुन

मास अनुकूल रहेगा। कलात्मक अभिरुचि बढ़ेगी। आकस्मिक यात्रा से लाभ। किंतु स्वजनों से विरोध होगा। १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी से सहयोग प्राप्त होगा।पद-प्रतिष्ठा एवं स्थानांतरण की दिशा में चल रहे प्रयासों में सफलता मिलेगी। ८ से १५ के मध्य इच्छित स्थान की यात्रा तथा मनोवांछित कार्य पूर्ण होगा। अधिक प्रयासों में सफलता मिलेगी। शत्रुपक्ष से विवाद होगा किंतु विजय आपकी होगी। १६ से २३ के मध्य संपत्ति, धन तथा न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी। पारिवारिक उत्तरदायित्वों की अपूर्णता से चिंता होगी। रचनात्मक एवं कलात्मक अभिरुचि बढ़ेगी। मासांत में प्रियजनों के कारण मानसिक तनाव होगा। भावुकता पर नियंत्रण रखें।महिलाओं को लाभ का योग होगा। सुखद समाचार मिलेंगे।विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा। विद्यार्थी वर्ग को रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। यात्रा उत्साहवर्धक होगी।

कर्क

मास में सम्मान तथा सफलता मिलेगी। अनियमित जीवन अस्वस्थता का कारण होगा।आजीविका में अधिक परिश्रम से

पर्व और त्यौहार

१ मई वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, मई दिवस, ५ मई संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, ८ भानुसप्तमी पर्व, ९ शीतलाष्टमी, १२ अंचला एकादशी, १३ प्रदोष व्रत, १४ मास शिवरात्रि, १५ स्नान, दान, श्राद्धादि की अमावस्या, १८ ईदुलफितर, १९ विनायकी गणेश चतुर्थी, २४ दुर्गाष्टमी, २७ पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत, २८ शनि प्रदोष, ३० व्रत पूर्णिमा, ३१ स्नान-दान की, अधिक ज्येष्ठी पूर्णिमा। नोट :—१६ मई को अधिक ज्येष्ठ मास आरंभ होगा। इसे मल मास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है।

राशियां और प्रभाव

मास में मंगल राहू युति पर शनि की दृष्टि होगी एवं इन्हीं राशियों में प्रत्यावर्त्तन का योग भी होगा। जो कि मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, धनु, मीन राशियों को शुभ, वृषभ, वृश्चिक, मकर को मध्यम तथा कन्या, तुला, कुंभ को अशुभ है।

मास में में साम्यवादी एवं पूंजीवादी राष्ट्रों द्वारा विश्वव्यापी शांति के प्रयासों की पहल होगी। मुस्लिम राष्ट्रों में परस्पर विवाद तथा हिंसक घटनाएं मास के उत्तरार्द्ध में प्रबल होंगी। बाजार में धातुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। उपभोक्ता वस्तुओं पर राजकीय नियंत्रण के बावजूद मूल्य नियंत्रण नहीं होगा।

भारत में केंद्रीय शासकों द्वारा जनहित कार्य योजनाओं को प्रसारित किया जाएगा। कुछ प्रदेशों में आंतरिक परिवर्तन स्पष्ट है। साथ ही मंगल राहू युति कुछ राजनेताओं के पतन का कारण होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बावजूद शनैः शनैः प्रगति होगी । १ से ७ के मध्य पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष सदैव की तरह समस्याएं उपस्थित करेगा ।किंतु पराक्रम से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । ८ से १५ के मध्य उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों कीअधिकता होगी । अधिक परिश्रम तथा दौड़धूप के कारण अस्वस्थता का सामना करना होगा ।आर्थिक योजना में सफलता मिलेगी । १५ से २३ के मध्य धन संपत्ति अधिकार एवं सामाजिक कार्यों की स्थिति से लाभ मिलेगा । लेखन, कला, संगीत अथवा रचनात्मक कार्यों में पुरस्कार मिलेगा । मासांत में आकस्मिक व्यय होगा, जिससे आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा । विद्यार्थियों का सफलतादायी समय रहेगा ।

सिंह

मास अनुकूल होगा । विशिष्ठ व्यक्ति से लाभ मिलेगा । बहुमूल्य वस्तु का क्रय होगा । १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से महत्त्वपूर्ण योजना पूर्ण होगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । ८ से १५ के मध्य रोजगार में उन्नति, अपेक्षित स्थान पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा । बहुमूल्य वस्तु पर धन व्यय होगा । सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । १५ से २४ के मध्य व्यर्थ दौड़-धूप । राजकीय कार्यों में विलंब,प्रियजनों की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । मासांत में लाभदायी स्थान की यात्रा, शिक्षा प्रतियोगिता,सृजन, लेखनादि कार्यों में वांछित प्रगति होगी । महिलाओं को आभूषणादि के क्रय का योग होगा । इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी । विद्यार्थियों के श्रम अधिकता से अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे ।

कन्या

मास में भावुकता तथा अंधविश्वास पर निर्भरता ही घातक होगी । पारिवारिक सुख एवं सहयोग मिलेगा । यात्रादि में कष्ट होगा । १ से ६ के मध्य राजकीय कार्यों में विलंब होगा । मित्रों तथा प्रियजनों के सहयोग से उन्नत अवसर मिलेंगे । ८ से १५ के मध्य शत्रुओं द्वारा गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयास होगा । भावुकता पीड़ादायी होगी । संयम तथा धैर्य से कार्य करें । १६ से २३ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । यात्राओं को टालना ही हितकर होगा । मासांत में उदर विकार तथा मानसिक विभ्रम होगा । महिलाएं अस्वस्थ तथा व्यर्थ पारिवारिक तनाव से गुजरेंगी । संतान अथवा प्रियजन संबंधी सुखद समाचार मिलेगा । विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम न मिलने पर निराशा होगी, किंतु उनकी भावी योजना हेतु श्रेष्ठ समय आ रहा है ।

तुला

मास में प्रियजनों की चिंता, आजीविका संबंधी उदासीनता तथा मानसिक विभ्रम का सामना करना होगा, किंतु मासांत में आर्थिक लाभ मिलेगा । १ से ६ के मध्य शत्रुओं द्वारा गुप्त षड्यंत्र व दौड़धूप की अधिकता तथा मानसिक क्लेश का सामना करना होगा । ८ से १५के मध्य शासन अथवा अधिकारी वर्ग की अप्रसन्नता रहेगी ।श्रम की अधिकता के बावजूद वांछित लाभ का अभाव होगा । १६ से २३ के मध्य नवीन साथी सी सहायता से पारिवारिक समस्या का निदान होगा । व्यर्थ यात्रा तथा व्यय से बचना चाहिए । यात्रा का योग होगा । मासांत में पद-प्रतिष्ठा अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानांतरण के प्रयास सफल होंगे। प्रियजनों से भेंट तथा परिचय क्षेत्र का विस्तार हितकर होगा। विद्यार्थियों को विलंब से सफलता मिलेगी। महिलाओं को अस्वस्थता तथा उदासीनता से बचना चाहिए।

वृश्चिक

मास में साहस एवं पराक्रम के द्वारा प्रतिकूल स्थिति अनुकूल होगी। रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य विरोधाभास के कारण अस्थिरता का योग होगा। संपत्ति, धन, वाहन संबंधी विवाद का प्रियजनों द्वारा निराकरण होगा। ८ से १५ के मध्य महत्त्वपूर्ण स्थान की यात्रा होगी। साहित्य, कला, संगीत अथवा रचनात्मक कार्यों में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। १६ से २४ के मध्य पदोन्नति, विभागीय परिवर्तन अथवा सम्मानजनक स्थिति का योग होगा। रुका हुआ धन मिलेगा।मासांत में आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। सामाजिक कार्यों में व्यय बढ़ेगा।महिलाओं को मासारंभ में विषमता, संघर्ष के बाद उत्तरार्द्ध में पारिवारिक प्रतिष्ठा मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्य में यश मिलेगा। विद्यार्थियों को मित्रों से सावधानी रखनी चाहिए। परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।

धनु

मास में उत्तरदायित्व की वृद्धि तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। १ से ७ के मध्य आपको मानसिक क्षमता के कारण शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। रोजगार की दिशा में प्रयास सार्थक होंगे। विश्वास तथा परिश्रम के कारण संपत्ति के कार्य में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी। १६ से २३ के मध्य परिवार में अंतर्कलह का सामना करना होगा। भावुकता पर नियंत्रण रखें। संपत्ति संबंधी कार्यों में विलंब होगा। मासांत में भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि होगी। अधिकार, पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। महिलाओं के लिए श्रेष्ठ समय रहेगा। अभीष्ट कार्यों की पूर्ति होगी। विद्यार्थियों को शिक्षा-दीक्षा में परिणाम अनुकूल मिलेंगे।

मकर

मासारंभ में विषम तथा संघर्षपूर्ण स्थिति होगी। उत्तरार्द्ध में पराक्रम एवं पुरुषार्थ से विजय मिलेगी। १ से ७ के मध्य कार्यों में व्यर्थ व्यवधान, सफलता में विलंब तथा निराशाजनक स्थितियों का सामना करना होगा। अथक परिश्रम के द्वारा स्वल्प सफलता मिलेगी। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों पर धन खर्च होगा। शत्रु पक्ष पर प्रियजनों के कारण नियंत्रण होगा। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी। १६ से २३ के मध्य व्यावसायिक अथवा आजीविका संबंधी कार्यों में आकस्मिक सफलता तथा लाभ मिलेगा। विवाद एवं तनाव दूर होगा। संपन्नता के प्रयास साकार होंगे। महिलाओं को सामाजिक जीवन में सफलता मिलेगी, भावुकता से कष्ट होगा। विद्यार्थी वर्ग को शिक्षा-दीक्षा में उन्नत सफलता व पुरस्कार प्राप्त होगा।

कुंभ

मास में सावधानी तथा संघर्ष से कार्य करें। १ से ८ के मध्य पारिवारिक अंतर्कलह तथा संपत्ति संबंधी विवाद का सामना करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजीविका संबंधी प्रयासों में व्यवधान होंगे। ९ से १५ के मध्य बारबार यात्राएं होंगी।अस्वस्थता व वाहन दुर्घटना से सावधान रहें। प्रतिकूल स्थितियों में संयम से कार्य करें। १६ से २३ के मध्य आर्थिक प्रयासों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग रहेगा। मासांत में निकटजनों की सहायता से अपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे। संपत्ति के विवादों का समाधान होगा। महिलाओं को मास में व्यर्थ भावनात्मक पीड़ा होगी।

मीन

नवीन योजना में सफलता मिलेगी। आर्थिक जीवन में प्रगति होगी। १ से ७ के मध्य संपत्ति अथवा उद्योग संबंधी प्रयास साकार होंगे। शत्रु पक्ष परास्त होगा। विवाद अथवा तनावसे मुक्ति मिलेगी। ८ से १५ के मध्य लाभदायक यात्रायें, पारिवारिक कार्यों में उन्नति तथा प्रसन्नता होगी। १६ से २३ के मध्य शासन-सत्ता उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ मिलेगा। प्रतियोगिता, लेखन, कला व संगीत में सफलता मिलेगी। मासांत में कार्य की अधिकता तथा तनाव बढ़ेंगे। भावुकता पर नियंत्रण रखना होगा। संयम तथा धैर्य से अधिक श्रम करें। महत्त्वपूर्ण उपलब्धि आपकी प्रतीक्षा कर रही है। महिलाओं को विशिष्ट कार्यों के कारण पारिवारिक व सामाजिक प्रतिष्ठा मिलेगी। विद्यार्थियों को अभीष्ट दिशा में सफलता सुनिश्चित है।

—ज्योतिष धाम
१२/४, पुराना सुभाषनगर गोविंदपुरा,
भोपाल-२३

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमजोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, मस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये: मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये हरेक रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शर्तिया कद लम्बा कीजिये!!!

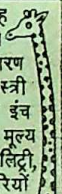

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोटः-कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर हैं, अमृतसर के डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगीयों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखे।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठी कहानी

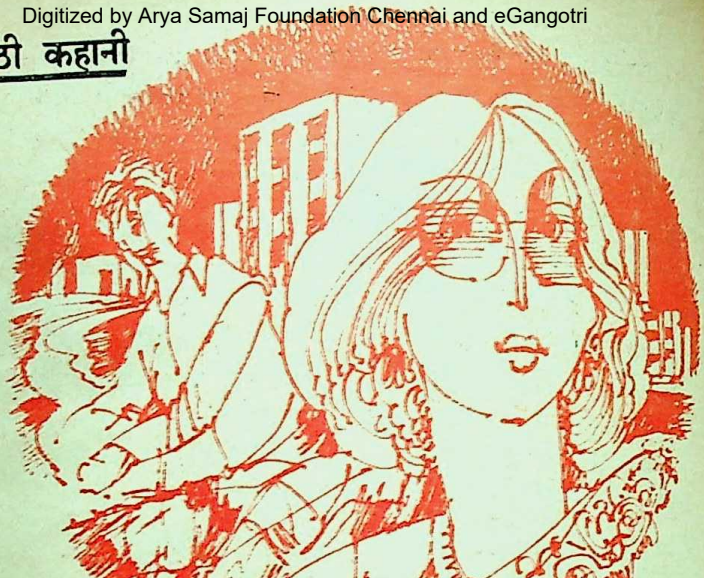

दो रूप

● अरविंद गोखले

१. आमने-सामने

दोनों में थोड़ा सा अंतर है, लेकिन दोनों आमने-सामने खड़े हैं। महिला... पुरुष।

खूबसूरत, चमचमाती मर्सिडीज... मजबूत, लाल हीरो होंडा, वातानुकूलित मर्सिडीज कार में पिछली सीट पर वह बड़े आराम से बैठी थी। थुलथुल बदन, झिलमिल करती रेशमी साड़ी, हीरे जड़े कर्णफूल, रंग-बिरंगा पर्स, हाथ में सोने के कंगन, कलाई घड़ी, यदा-कदा घड़ी की ओर दौड़ाती निगाहें और बाकी समय उस युवक पर गड़ी आंखें, नजरों में कुतूहल और तिक्तता भी...।

उसे वह पहली बार देख रही थी फिर भी वह भांप गयी। उसकी पतली दाढ़ी या 'लंबूजी' बदन को देख कर नहीं, बल्कि उसके वाहन को देखकर वह पहचान गयी थी। अभी हाल ही में तो उसने स्कूटर खरीदा था, वह भी पत्नी के नाम से। इसके लिए पत्नी को दफ्तर से ऋण लेना पड़ा था। ऋण प्राप्त करने की औपचारिक शर्तें पूरी न करने के बावजूद उसे ऋण मिला था। क्योंकि वह कंपनी के प्रबंध निदेशक की निजी सेक्रेटरी जो थी। ऋण का आवेदन भी उसी का और उसकी मंजूरी का पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी उसी का टाइप किया हुआ। यानी कि चित घड़ी उसी की और पट भी उसी का। साहब तो केवल दस्तखत करने भर के लिए था। मर्सिडीजवाली के पति को...।

सामने ही मर्सिडीज गाड़ी खड़ी देखकर वह ठिठक गया। वरना तो स्कूटर पार्क कर वह उस इमारत की लिफ्ट की दिशा में जाने को था। ऊपरी मंजिल पर उसकी पत्नी काम करती थी। वैसे तो वह पत्नी के दफ़र में कभी नहीं आया था। बिला वजह जाना उसे पसंद भी नहीं था। पत्नी का दफ़र अलग था और पति की फैक्टरी अलग। यानी कि दोनों का काम अलग, मंजिल अलग, सोच अलग। वहां से घर लौटने के बाद ही सहजीवन..., तब तक सब कुछ अलग-अलग लेकिन आज साप्ताहिक अवकाश के बावजूद वह बोर्ड की बैठक की वजह से दफ़र गयी थी। पांच बजे तक लौटने का वादा उसने किया था और अब छह बज रहे थे..., फिर भी उसका कोई अता-पता नहीं था। पहले छह बजे की मूवी के टिकट भी तो वह ले आया था। इग्मार बर्गमैन की उस मूवी को छूटा भी तो नहीं जा सकता था...। पत्नी के साथ ही जाना था। बैठक चल रही हो तो भी देर खींच कर... लेकिन मर्सिडीज को वहां देखते ही स्कूटर के साथ ही खरीदा हुआ वह गॉगल उसने आंखों पर रहने दिया और ठिठक कर देखने लगा। वह कार दो-चार बार उसके घर के दरवाजे के सामने भी खड़ी रही थी। पत्नी को लिवा ले जाने और घर छोड़ने के लिए पत्नी के बॉस का वाहन, वातानुकूलित मर्सिडीज। वह खुद तो अभी, पिछले दिनों तक स्कूटर भी नहीं खरीद पाया था। फिलहाल वह स्कूटर का मालिक बना तो है, लेकिन पत्नी की बदौलत। वह कंपनी के प्रबंध निदेशक की निजी सेक्रेटरी थी इसीलिए... उसे 'निजी' शब्द खटक रहा था। वह भी तुरंत भांप गया कि कार में बैठी महिला अपनी पत्नी के बॉस की घरवाली है। जिस तरह से सज-संवरकर और फैल कर वह कार में बैठी थी, उससे तो यह धारणा पक्की हो गयी थी। इसी कार में दो-तीन बार अपनी पत्नी का अनाहूत विराजना उसे अखरता रहा।

दूर से ही दोनों ने एक दूसरे को देखा। दोनों के जीवन-साथी पास की इमारत के एक कक्ष में, कंपनी के काम में अत्यंत व्यस्त थे। श्रीमतीजी को इस बात का एहसास होते ही वे बेचैन हो गयीं। उन्होंने फिर एक बार घड़ी की

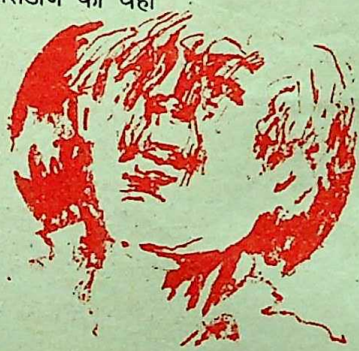

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर देखा और गरदन मोड़ ली। साहब बैठक के तुरंत बाद दिल्ली जाने वाले थे। रात साढ़े आठ बजे उड़ान थी। उन्हें विमान-तल तक छोड़ने के लिए ही तो श्रीमतीजी अटैची के साथ आयी थीं। पति को विदा कर घर लौटना और अकेले ही टी.वी. के परदे पर आंखें गड़ाना..., श्रीमती जी ऊब गयीं। वे शोफर को ऊपर भेजना चाहती थीं, ताकि... लेकिन वह चाय पीने कहीं चला गया था। और फिर शोफर को बैठक कक्ष में प्रवेश की इजाजत थोड़े ही मिलती ? वो तो श्रीमतीजी को भी शायद ही मिलती क्योंकि दफ़र में साहब किसी के कोई नहीं लगते थे। उनकी 'निजी' सेक्रेटरी ही उन पर थोड़ा-बहुत अधिकार जतला सकती थीं। वही निजी सेक्रेटरी इस भवन के सामने खड़े सज्जन की अर्धांगिनी थी।

श्रीमतीजी को एक अजीब सा अहसास हुआ..., दम घोंटू अनुभव प्र.नि. की पत्नी होने के बावजूद इतनी पाबंदी ?... बरसों साथ निभाने, घर-गृहस्थी बसाने के बावजूद ? और वह चुड़ैल आठ-आठ घंटे साहब का साथ निभाती है। उनकी दैनिक गतिविधियों को नियंत्रित करती हैं, बैंक के व्यवहार करती है, उनके दोपहर के भोजन की व्यवस्था करती है..., साहब की हर बात की जानकारी उसे होती है। एक परायी, नौजवान हसीना को... । घर में साहब की बातचीत में भी बीसियों बार उसका जिक्र आता है, वे उसे याद करते हैं। उसके बिना तो साहब का पत्ता भी नहीं हिलता, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता। पत्नी, घर-बार होते हुए भी... और वह चुड़ैल भी अपने हट्टे-कट्टे, तगड़े पति के बावजूद एक अधेड़ मर्द की बांदी बनी रहती है। इधर उसका पति इंतजार क... है, उसकी राह में पलकें बिछाये रहता है लेकि... वह अपने साहब की परिधि में ही विचरित... रहती है। अपनी सुंदरता और इंद्रधनुषी सप... को एक विवाहित, अधेड़ व्यक्ति द्वारा रौंद ... का उसे कोई मलाल नहीं... बड़ी अजीब ... दुखद स्थिति है यह !

श्रीमतीजी की बेचैनी को महसूस कर ... स्कूटर से उतर कर खड़ा हुआ। कमाऊ घरक... पति की आमदनी पर गुलछर्रे उड़ानेवाली ... महिलाओं से उसे सख्त नफरत थी। उसक... मेहनती पति साप्ताहिक अवकाश के दिन भ... दफ़र का काम कर रहा था और उसकी ... आराम-तलब बीवी बेचैन हो रही थी। क्लब ... ताश फेंटने या साड़ियों की खरीदारी के लि... जाने की बेताबी से सराबोर थी शायद। उस... पति की कर्तव्यनिष्ठा और महत्वाकांक्षा से ... उसे कोई सरोकार नहीं था। जो बातें उसक... पत्नी को मालूम हैं, वे साहब की धर्मपत्नी ... बिल्कुल पता नहीं..., श्रीमतीजी के पति ... मिजाज, तेवर, साहस, उद्योग जनित कर्मठ... को एक विशिष्ट आयाम प्राप्त हो रहा है ... उसकी अपनी पत्नी की बदौलत।

वातानुकूलित कार में शायद उन्हें तल्खी ... होने लगी थी, सांस घुट रहा था..., इसलिए ... दरवाजा खोलकर दरवाजे से बाहर आ ... शोफर की टोह लेने लगी थीं, लेकिन ... उतार कर फिर से उन्हीं की ओर टकट... लगाया वह युवक उन्हें दिखायी पड़ा। शुरू-शुरू में तो उन्हें उसकी इस हरकत ... बहुत गुस्सा आया, लेकिन बाद में उन्हें ... आने लगी। पत्नी के बॉस की घरवाली को घू...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण गुस्सा। बड़ा ही धृष्ट और बदतमीज इनसान। पत्नी उधर... लेकिन दूसरे ही पल उन्हें महसूस हुआ कि नारी-मुक्ति, खुद की कमाई आदि कल्पनाओं से जकड़ी हुई औरत के साथ किस तरह निभाता होगा यह आदमी ! नयी पीढ़ी की कमाऊ लड़कियों के नाज-नखरे और आजाद-खयाली से वे भली-भांति परिचित थीं। वैसी ही एक जवान लड़की का यह पति उसी के पैसों से दुपहिया वाहन खरीद कर अब उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। वह पति नहीं, शोफर ही है !... और वह भी साहब की महज एक कृपापात्र है, बस साहब जब कैबरे देखने जाते हैं तो वहां की लड़कियां भी इसी तरह से उनका कृपा पात्र बनने के लिए छटपटाती हैं, ठीक उसी तरह से... ! उन्हें लगा कि उनके-जैसी सहधर्मचारिणी, ब्याहता अर्धांगिनी तो ऐसी चुडैलों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। और इस लाचार मर्द से तो अपना पति लाख गुना बेहतर है !

बॉस की बीवी और सेक्रेटरी का पति आमने-सामने हैं। साढ़े छह बजे की मूवी-दिल्ली के लिए रात की उड़ान, दसवीं मंजिल पर स्थित दफ़र... बंद हुई लिफ्ट, सुनसान माहौल... भांति-भांति के विचार और आपे से बाहर हो रही जज्बातें। —इसी बीच कुछ आवाजें आने का आभास हुआ। लिफ्ट नीचे आयी। मंद-मंद मुसकान, भर्रायी हुई आवाज... और अब कंपनी के प्रबंध निदेशक अपनी निजी सेक्रेटरी के साथ बाहर आये। साहब रौबीले अंदाज में कार की ओर गये और सेक्रेटरी मचलती हुई, स्कूटर की दिशा में चली गयी।

श्रीमतीजी ने उस युवक की ओर देखा तक नहीं। वह कभी का जा चुका था।

दोनों का आमना-सामना होने पर भी कुछ नहीं हुआ, न कुछ बिगड़ा, न कहासुनी हुई।

२. पीठ-से-पीठ मिली स्थिति

वे दोनों एक दूसरे की ओर देखे बिना, सट कर बैठे थे।

रास्ते से हटाकर एक पेड़ के नीचे... बड़े से पत्थर पर...

दोनों गुमसुम से बैठे थे। लेकिन एक-दूसरे के बारे में नहीं सोच रहे थे। अब वे अजनबी हो गये थे मानो।

फिर भी वे पीठ-से-पीठ लगी अवस्था में इस दुनिया में आये थे। भाई-बहन के तौर पर... सगे, जुड़वा भाई-बहन।

रंग-रूप और मिजाज से लगभग एक से होते हुए भी उन दोनों में कुछ फर्क था। औरत-मर्द का फर्क तो था ही।

फिर भी वे दोनों एक से दिखते थे, उनका व्यवहार भी एक सा था। पहनावे और आवाज में ही फर्क था, बस बाकी तो उनकी चाल-ढाल, रुचि-अरुचि, हंसना-मुसकुराना,

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग-ढंग आदि में बहुत समानता थी। उनका जुड़वापन तुरंत जाहिर हो जाता था। बातें करने का दोनों का लहजा भी एक-सा था, एक के बिना दूसरे को सुकून नहीं मिलता था, दोनों एक-दूसरे के बिना जिंदा नहीं रह सकते थे और यह सब महसूस किया जा सकता था। इन दोनों की जीने की राह एक, एक-दूसरे के सहारे...।

फिर भी भरी जवानी में एक दूसरे से बिछुड़ गये।

बचपन में काफी लाड़-प्यार होता रहा... घर में भी और बाहर भी। जुड़वा बच्चे, और उनमें भी एक लड़का-एक लड़की। एक से कपड़े, एक सी सज-धज। कभी लड़कियों की तरह लहंगा-ब्लाउज, रिबन, कान के बुंदे, कभी लड़कों-सी पैंट-कमीज, एक से खिलौने, एक सी मिठाइयां... सब कुछ दोनों के लिए एक सा। बाहर के लोग भी काफी लाड़-प्यार करते थे। देखभाल करते थे...।

उम्र के साथ-साथ सब कुछ बदलता रहा। बालिग होने के बाद तो उसमें और भी परिवर्तन आ गया, पहनावे में और व्यवहार में भी भाई को मूंछ और दाढ़ी का उपहार मिला। बहन के बदन पर भी कई जगह बाल उगे आये और शर्मिंदगी से भी उसका पाला पड़ने लगा। अब वे दोनों अलग-अलग उठने,बैठने, सोने लगे।

यह सब तो अनिवार्य था और आवश्यक भी। नारी-पुरुष भेद की वजह से उन दोनों का विकास अलग-अलग तरह से होने लगा था। तथापि उनकी आपसी आत्मीयता पर कोई आंच नहीं आ रही थी। वे दोनों अधिकांश समय तक एक साथ रहते थे, एक दूसरे से अंतरंग बातें भी कर लेते थे। उन्होंने जिंदगीभर साथ निभाने, सुख-दुख में साथ-साथ रहने की कसमें भी खायीं और आपसी स्नेह व्यक्त किया।

उनकी यह अंतरंगता घर में और बाहर चर्चा का विषय बनने लगी। वे अपनी अलग-अलग गृहस्थी सजाने के बजाय दोनों अपनी संयुक्त गृहस्थी बसाने, सह-जीवन बिताने लगें, तो? यमयमी इंसेस्ट... !

वह उसकी... और वह उसका ... दोनों एक दूसरे के... स्थायी साथ। लेकिन उसके मर्दाना दिमाग ने यकायक सात समुंदर पार छलांग लगायी। खलासी बन कर, यात्री बन कर व्यापक रूप से सफर करने, देश-विदेश में जाने, अलग-अलग लोगों से मिलने, घर से, अपने आप से भी दूर रहने की उमंग उसके मन में जाग गयी।

फक्कड़ घुमक्कड़... निरुद्देश्य। विभिन्न देश... निपट अकेला। उसके बिना? या उसके बाद? वह यदि न चाहे, मना करे... तो? मैं यहीं उसके साथ, उसके लिए गिरते-उठते, लाचार बन कर... या कि उससे मशविरा किये बिना ही, उसे आहट आने से पहले ही निकल जाएं तो? समूचा साहस बटोरकर, भाग खड़ा होना...।

भाई को लगता था कि हमेशा की तरह अपने दिल में उमडने वाले तूफान को वह भांप लेगी !... जरूर भांप लेगी, मनाने की कोशिश करेगी, वह... लेकिन उसने नहीं पूछा। उसके पास समय ही नहीं था। वह अपने दिल में एक तूफान संजोए थी। मन की यायावरी को आंक रही थी। जब वह घर से दूर जाने की सोच रहा था तब उसके दिल में भी घर छोड़कर चल देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उमंग आयी। न यह दुनिया किसी काम की थी, न भाई की जरूरत... यहां से दूर... काफी दूर! दूसरे—

वह एक युवक से प्यार करने लगी थी। उसके लिए सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार थी। सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए उत्सुक थी। सर्वस्व !—

आज तक साये की तरह साथ रहे जुड़वा भाई को छोड़-छाड़ कर, उसे फलांग कर, उससे टूट कर ...।

उसने अपने दिल की बात भाई को नहीं बतायी। अपनी बदलती हुई मानसिकता को उससे छुपाने के लिए वह पहले की ही तरह पेश आती रही। लेकिन भीतर से किसी अन्य मर्द के साथ उसके तार जुड़े थे। भाई अपने को अंधेरे में, धोखे में रख कर उसका किसी दूसरे मर्द के साथ जुड़ना शायद गवारा न करता। दूसरे मर्द को उसके प्रियतम के रूप में शायद जब्त न कर पाता। कोई पराया मर्द अपनी जुड़वा बहन के तन-मन का मालिक बने, उसे मंजूर नहीं था। इस बात का हल्का-सा संकेत मिलते ही वह अपनी बहन पर डोरे डालने वाले मर्द को जान से मार डालता !... इसी वजह से तो वह अपने भाई से दिल की बात छुपाने की भरसक कोशिश करती रही थी।

अन्य मौकों पर तो छोटी-मोटी बात भी एक-दूसरे से छुपाना उनके लिए संभव नहीं हो सकता था। लेकिन अबकी बार दोनों अपनी-अपनी धुन में थे। दोनों के दिमाग में एक साथ अलग-अलग फितूर सवार थे, दोनों अ-सावधान और परस्पर विपरीत दिशा में मुंह किये हुए थे।

जिस दिन देर रात गये वह चुपचाप एक जहाज पर खलासी बन कर समुद्र पारी यात्रा के लिए चला गया, उसी दिन भरी दुपहरी में घर में बड़ा हंगामा कर वह खुल्लमखुल्ला एक मर्द के साथ रहने के लिए चली गयी। दोनों ने घर छोड़ा, बगावत की, साहस दिखाया, नया बसेरा ढूंढ लिया। वह विदेश चला गया और उसने मर्द के पास पनाह ली ।

ऊब कर, थक कर अंततः वह लौट आया। अतृप्त भटकन से तो छोटे से घरौंदे में सहोदर सखी के साथ... वह भी खीजकर, झगड़कर अपने पति से अलग हो गयी। सहोदर स्नेही के लिए पीठ-से-पीठ लगाकर इस दुनिया में आए वे दोनों अब 'दो जिस्म मगर एक जान हैं हम' इस बात का अहसास दिलाने के लिए बड़ी उम्मीद से एक दूसरे के क़रीब आये।

वे शायद कोई रास्ता खोज रहे थे, कुछ प्राप्त करना चाहते थे। एक अनोखी जिंदगी की रूपरेखा बनाने की कोशिश कर रहे थे।

— अनु. : प्रकाश भानभेकर, जी-२/१०,
शाहू नगर, माहीम मुंबई-१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

'पाश्चात्य सभ्यता'

—मनोज कुमार श्रीवास्तव

आज आदमी
पवित्र परंपराओं को
बेड़ियां समझ
लड़ रहा है।
इसीलिए
पश्चिम का सूर्य
पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

आत्म-कथ्य

विचारों के बादल जब गहरे होकर दिल पर छा जाते हैं, तब कुछ बूंदें बरस जाती हैं, कागज पर, कविता बनकर।

—पुराने पावर हाउस के पास
करैरा, शिवपुरी (म. प्र.)

संदीप सपन

गांव आना पड़ा

देखकर रंगे सियासत मुझको शरमाना पड़ा,
एक कातिल को मुझे जब हार पहनाना पड़ा।
रेलगाड़ी की तरह फितरत हुई इनसान की,
इसलिए अहसास को पटरी पे कट जाना पड़ा।
तंज के छींटे पड़े दुल्हन पे जब ससुराल में,
मेहंदी वाले हाथ से फिर जहर भी खाना पड़ा।
पूछ मुझसे बेबसी लाचारियां, मजबूरियां,
जब तेरी चौखट पे जाके मुझको लौट आना पड़ा।
आग चूल्हे में जलाकर मां की ममता रो पड़ी,
खाली हांडी ढांक कर बच्चों को बहलाना पड़ा।
आइने धोखे मुझे 'संदीप' जब देने लगे,
छोड़कर के शहर तेरा, गांव में आना पड़ा।

आत्म-कथ्य

विभिन्न मंचों से कविता पढ़ते-पढ़ते कादम्बिनी के प्रवेश स्तंभ में स्थान पाने का इच्छुक।

—७५०, सराफा जबलपुर

चंदरोज जिंदगी है

—कु. जयमाला शाह

जिसे हरदम खयाले बंदगी है,
वही बस कामयाबे जिंदगी है।

है दिल में गम तो चेहरे पर खुशी है,
अंधेरा घर में बाहर रोशनी है।
सुकूं कैसे मिले उसको जहां में,
जिसे उस बेवफा से लौ लगी है।

कभी एक हाल में रहने न पाये,
हमारी जिंदगी एक दिल्लगी है।

जला होगा हमारा आशियाना,
चमन वालो ये कैसी रोशनी है।

दिया है साथ इसने कब किसी का
निहायत बेवफा ये जिंदगी है।

''जय'' तुझे करना है जो वो कर गुजर
कि मेहमां चंदरोजा जिंदगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-कथ्य

व्यक्ति विशेष से नहीं, हर प्राणी मात्र से प्यार करना ही जिंदगी है। —१२ धान गली, इन्दौर

प्रवेश २१वीं सदी में

डा. सुदेश आहूजा

जीवन की सांझ में
जब सुनायी देती है
दूर से आती हुई
मंदिर की घंटियों की आवाजें
तो मुझे मेरे जीवन का
गुप्तकाल याद आ जाता है
और मैं . . .
जर्जर, ढलती, शिथिल जीवन-सांझ
को भूल जाती हूं
मेरे स्मृति पटल से
दूर हो जाते हैं
सुबह चाय के साथ पी चुके
अखबारों की सुर्खियों के वे शब्द
बलात्कार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बोफोर्स-कांड,
सूखा और उसमें बिकता
आदिवासी भू का सौंदर्य
भूल जाती हूं मैं कि
मेरे मंदिर का देव
आज भी कुछ लोगों के अर्घ्य से वंचित है
मुझे कालिदास के रघुवंश की
गंगा व यमुना की
मूर्तिमयी नृत्यांगनाएं याद आ जाती हैं।
भूल जाती हूं मैं
गंगा का प्रदूषण, सड़ती लाशें,
कुंभ के मेले में हुई डकैती और बलात्कार
मंदिर के दीपक की लौ की पवित्रता
सोचने पर विवश कर देती है...
कैसे जला पाती है यही लौ।
कम दहेज के बदले
बहू के स्वर्णिम भविष्य को
और तभी मेरे मस्तिष्क में
कोलाहल करने लगते हैं यह शब्द
बलात्कार, भ्रष्टाचार, लूट-पाट और
आगजनी की घटनाएं आदि-आदि
और मैं उस स्वर्णिम कल से
लौट आती हूं
बीसवीं सदी के लड़खड़ाते अवसान में
इक्कीसवीं सदी में प्रवेश के लिए
जिसके प्रवेश-द्वार पर लिखा है
एटम, परमाणु बंब
हथियारों की खरीददारी और दो
महाशक्तियों में समझौता नहीं ...
व्याकुल और संत्रस्त मन से
जिस द्वार में हम प्रवेश कर रहे हैं
उसकी नियति से सभी परिचित हैं
विनाश ! और विनाश ! महाविनाश !!!

आत्म-कथ्य

मरु प्रदेश की नियति है सरस्वती की विलुप्ति। वर्तमान में सांस्कृतिक भाषाओं का लोप अंतस् को मथ-सा जाता है। कविता उसी मंथन की परिणति है। -व्याख्याता संस्कृत बालिका महाविद्यालय चुरू (राज.)

'प्रवेश' स्तंभ नयी पीढ़ी के अप्रकाशित हस्ताक्षरों को आमंत्रित करता है। इस स्तंभ में तीन चार रचनाकारों को क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। टाइप या सुपाठ्य लिपि में गीत/गजल/मुक्त छंद तथा हास्य व्यंग्य की रचनाएं, आत्म-कथ्य तथा चित्र सहित इस स्तंभ में प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। लिफाफे पर स्पष्ट लिखिए 'प्रवेश के लिए।' —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुधा प्रेम-संबंधों के केंद्र में वैचारिक समझ की जगह लिजलिजी भावनात्मकता या शारीरिक आकर्षण ही होता है। फलतः प्रेम-संबंध बीच में ही टूट जाते हैं।

●

प्रेम का अर्थ अब प्रायः वैभव-प्राप्ति का 'शॉर्ट कट' ही रह गया है।

●

पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण, तेजी से बदलते समय और भौतिकवादी युग में प्रेम का अस्तित्व समाप्त हो चला है।

●

आज प्रेम में त्याग और समर्पण न होकर क्षणिक तुष्टि और उपभोग की लालसा अधिक है।

क्या प्रेम-संबंधों में आदर्श कोरा है ?

आयोजक : प्रदीप श्रीवास्तव

समर्पण नहीं सह-अस्तित्व ही आदर्श है

—श्रीमती शशिकला राय

प्रेम-संबंधों में आदर्श की बात जब उठायी जाती है तो कई प्रश्न एक साथ उठते हैं। आप संबंध के आदर्श स्वरूप पर केंद्रित होकर सोच सकते हैं, और प्रेम के वास्तविक जीवन तक उतरने की संभावना को आदर्श मानकर भी विचार कर सकते हैं।

क्या 'प्रेम' की कोई सर्व-स्वीकृत परिभाषा दी जा सकती है। शायद नहीं, क्योंकि हर उम्र, हर स्थिति में इसका रूप भिन्न होता है। इसकी व्याख्या करते समय 'पवित्र प्रेम', 'अपर प्रेम', 'निश्छल प्रेम' आदि शब्दों का हम प्रयोग न जाने कब से करते आ रहे हैं। यहां तक कहा गया कि प्रेम अपवित्र होता ही नहीं है।

बदलते परिवेश के साथ-साथ लोगों के विचार भी बदलते जा रहे हैं।

क्या प्रेम की आधारभूमि अब छल, प्रपंच और वासना पर ही टिककर रह गयी है, क्या प्रेम अब सूखे मरुस्थलों में हरीतिमा लानेवाली संजीवनी-शक्ति नहीं रह गया है ? प्रेम के विषय में क्या सोचता है आज का युवा वर्ग। पढ़िए उनके विचार :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श प्रेम मिटने की मांग करता है, समर्पण की मांग करता है, लेकिन प्रेम के वास्तविक जीवन तक पहुंचने के लिए सह-अस्तित्व की जरूरत होती है।

आज के संक्रमणशील और बेहद आर्थिक दबाव से ग्रस्त युग में मिटने या समर्पित होने की बात बेमानी है। हालांकि, ऐसी घटनाएं होती हैं, जिनमें आवेशजन्य समर्पण दिखलायी पड़ता है। लेकिन इस आवेश को आधुनिक समाज स्वीकृति नहीं देता। इस तरह के प्रेम संबंधों की परिणति अधिकांश दुःखद होती है। मजनूवत या लैलावत होना आज के प्रगतिशील समाज में हास्यास्पद है। यह आज का आदर्श नहीं है।

सह-अस्तित्व की भावना ही प्रेम-संबंधों का आदर्श हो सकती है। लेकिन, इसके लिए जितने विवेक की जरूरत है, वह अभी तक युवा वर्ग में बहुत कम दिखलायी पड़ता है।

बहुधा प्रेम संबंधों के केंद्र में वैचारिक समझ की जगह लिजलिजी भावनात्मक या शारीरिक आकर्षण ही होता है। इसी वजह से या तो ये प्रेम-संबंध बीच में ही टूट जाते हैं, या विवाह तक पहुंचकर भी चरमरा जाते हैं। नयी पीढ़ी को विचार-संपन्न बनाने की कोशिश ही इस दिशा में कारगर परिवर्तन ला सकती है।

आज भी लोग रूढ़िवादी हैं

—कुमारी कुमकुम मिश्रा

यदि प्रेम-संबंधों से तात्पर्य प्रेम-विवाह से ही करना है, तो इसे लेकर लोग आज भी उतने ही रूढ़िवादी हैं, जितने आज से बीसियों साल पहले थे। पढ़ने-लिखने के बावजूद आज विचारों में बदलाव और प्रगतिशीलता की कमी है। आज भी माता-पिता लड़कियों को ऊंची से ऊंची शिक्षा देते हैं, आत्मनिर्भर बनाते हैं लेकिन यदि वह किसी को पसंद कर शादी करना चाहे तो यह बात उनके गले के नीचे नहीं उतरती।

पुराने जमाने में तो लड़कियों को पढ़ाया-लिखाया ही नहीं जाता था, यहां तक कि उन्हें विवाह-पूर्व घर से बाहर झांकने तक की इजाजत नहीं होती थी। ऐसी स्थिति में किसी को पसंद करने का सवाल ही नहीं उठता। जब किसी को देखेंगे ही नहीं तो पसंद कहां से करेंगे ?

आज तो लड़कियां घर से ज्यादा बाहर काम कर रही हैं। खुलकर लड़कों से मिलती हैं, बातें करती हैं, तो यह भी संभव है कि उन्हें कोई पसंद कर ले, वे किसी को पसंद कर लें और उससे विवाह करना चाहें। पर आज भी जब कोई लड़की प्रेम-विवाह या अंतरजातीय विवाह के लिए कदम बढ़ाती है, तो उसे एक लड़ाई लड़नी पड़ती है घर से, समाज से।

वे लड़के और लड़कियां भी जो प्रेम-विवाह का समर्थन करते हैं, वक्त आने पर परंपराओं में यकीन करने लगते हैं। उनकी प्रगतिशील विचारधारा भी एकाएक पीछे मुड़कर पारंपरिक रीति-रिवाजों में उलझ जाती है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो 'प्रोग्रेसिव' कहलाने के नाम पर प्रेम तो करने लगते हैं, लेकिन विवाह के कठोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरातल पर पांव पड़ते ही छटपटाने लगते हैं।

कुछ लोग तो ऐसे भी देखने में आये हैं, जिन्होंने प्रेम किया, शादी भी कर डाली, लेकिन शादी करने के बाद जब प्रेम का नशा उतर गया, तो पछतावा करने लगे कि 'अरे, यह हमने क्या कर डाला, न बाजा न गाजा, न दान न दहेज, मजा ही नहीं आया शादी का। इससे तो अच्छा था माता-पिता की मर्जी से शादी करते, शादी करते ही नून, तेल, रोटी की फिक्र तो न करनी पड़ती।'

यूं तो शादी एक लाटरी है। टिकट लेते ही मन जमीन-आसमान की कुलाचे भरने लगता है, चारों तरफ हरा ही हरा नजर आता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि परिणाम सुखद ही हो।

प्रेम से संबंधित आदर्शों का एक दौर समाप्त हो चुका है

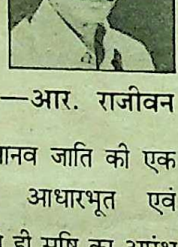

—आर. राजीवन

स्त्री-पुरुष का प्रेम मानव जाति की एक अत्यंत सशक्त, आधारभूत एवं स्वाभाविक प्रवृति है, इससे ही सृष्टि का आरंभ हुआ है और इससे ही सृष्टि का कार्य आगे बढ़ता है, उसका संचालन होता है। नर-नारी के आकर्षण एवं प्रेम के मूल में केवल 'सेक्स' ही नहीं है, बल्कि और कुछ भी है।

प्रेम एक ऐसी अनुभूति है, जिसकी कोई मिसाल नहीं। प्रेम सभी करते हैं, लेकिन उसे समझना सबके वश की बात नहीं। प्रेम की परिणति विवाह हो, यह जरूरी नहीं। यह भी जरूरी नहीं कि जिससे विवाह हो, उससे प्रेम भी हो; जिससे प्रेम हो उससे विवाह हो ही जाए। विवाह एक सामाजिक रिश्ता है, जो अपने साथ कुछ जिम्मेदारियां, कुछ बंधन देता है। विवाह में प्रेम हो या न हो, निर्वाह हो जाता है। प्रेमी सिर्फ प्रेम करता है। समाज इसे स्वीकार कर भी सकता है और नहीं भी कर सकता है। जमाना बदला। जमाने के साथ ही प्रेम की परिभाषाएं-मान्यताएं भी बदल गयीं। प्रेम का अर्थ अब प्रायः शरीर-सुख या वैभव-प्राप्ति का 'शॉर्ट कट' ही रह गया है। यद्यपि सारा मानव समाज ही प्रेम के रिश्तों-धागों व व्यवहार से सूत्रबद्ध है, फिर भी यह साफ तौर पर जाहिर है कि प्रेम से संबंधित भावुकताभरी मान्यताओं एवं ऊंचे आदर्शों का एक दौर समाप्त हो चुका है।

प्रेम में आदर्श कोरा है

—कुमारी छाया गर्ग

मेरे विचार से प्रेम में आदर्श कोरा है, बल्कि वास्तविकता तो यह है कि आज के युग में हर क्षेत्र में चाहे वह रोजगार का क्षेत्र हो, शिक्षा संस्थान हो, या चिकित्सा संस्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो— सर्वत्र आदर्श की स्थिति कोरे कागज के समान है। प्रेम एक ऐसा पवित्र बंधन है, जो स्त्री और पुरुष के बीच भावनात्मक स्तर पर होता है। आज स्त्री और पुरुष का प्रेम किसी रूढ़ि, नैतिकता, परंपरा की शृंखला से बंधा हुआ नहीं है। बल्कि उनके पारस्परिक विचार, आवश्यकताएं, सोचने का ढंग एक-सा होता है और साथ ही ये भावुक होते हैं, उनमें एक-दूसरे को जानने की असीम उत्कंठा होती है और इसी भावनात्मक दृष्टि से एक-दूसरे के निकट आते हैं। एक बात यह है कि प्रेम कोई योजनाबद्ध कार्य नहीं है और जो कार्य योजनाबद्ध नहीं होता, उसमें आदर्श की कल्पना करना चांद को पृथ्वी पर लाने जैसा है।

वर्तमान समय में प्रेम की आधारभूत मान्यताएं और परिभाषाएं बदल गयी हैं। आज के युग में प्रेम का अभिप्राय शारीरिक सुख मात्र रह गया है। एक समय था, जब प्रेम को भावनात्मक माना जाता था, लेकिन पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण, तेजी से बदलते समय और भौतिकवादी युग में प्रेम का अस्तित्व ही समाप्त हो चला है।

भारतीय समाज में विवाह-पूर्व शारीरिक संबंधों को अवांछनीय माना जाता है और जबकि आधुनिक युग के प्रेम-संबंधों में परम लक्ष्य शारीरिक सुख ही है, तो ऐसी स्थिति में आदर्श कहां ठहरेगा ? आदर्श को वह स्थान प्राप्त नहीं होगा जो भारतीय परंपरा के अनुसार उसे प्राप्त होना चाहिए। अतः मेरे विचार से वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए (प्रेम का परम लक्ष्य) प्रेम में आदर्श कोरा है, उसकी स्थिति कोरे कागज की है।

प्रेम को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता

—अशोक पांडेय

आज जब हम प्रेम की बात करते हैं, तो हमारी कल्पना में किसी पॉश कालोनी के पार्क में टहलते, बांहों में बांहें डाले युवा जोड़े के अलावा और कुछ नहीं आता। आज प्रेम का दायरा सिमटकर युवक-युवतियों की कामुक उच्छृंखताओं तक ही रह गया है। मैं मानता हूं कि प्रेम अशरीरी नहीं हो सकता। वायवीय प्रेम की कल्पना कबीर कर सकते हैं, पर इक्कीसवीं सदी में जाने के उत्सुक लोगों को कबीर से क्या वास्ता ?

जब हम अशरीरी प्रेम की बात करते हैं, तो प्रेम के विशद स्वरूप को भी देखना पड़ता है। प्रकृति का चराचर जीवों से प्रेम, पिता का संतान से प्रेम, पत्नी का पति से प्रेम, गुरु का शिष्य से प्रेम और राजा का अपनी सत्ता से प्रेम। अब यदि प्रकृति नाश न करने का आदर्श अपनाये तो पृथ्वी पर संतुलन कैसे स्थापित होगा ?

आज प्रेम में त्याग और समर्पण न होकर क्षणिक तुष्टि और उपभोग की लालसा ही अधिक है और जहां लोभ और स्वार्थ एक साथ डटे हों, वहां आदर्श कैसे ठहर पाएगा ?

(परिचर्चा का शेष आगामी में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षणिक क्रांति को समर्पित संत महात्मा हंसराज

लगभग छह दशक तक देश के सामाजिक चेतना अभियान में जुटे यह सादगी और सेवा की मूर्ति १५ नवंबर १९३८ को सदा के लिए शांत हो गयी। उनके साथियों ने उन पर राजनीति में कार्य करने के लिए बहुत जोर डाला था। तब वे हंसकर कहते थे, "अरे देश में राजनेताओं की कमी है क्या ? मैं तो नींव में पड़कर भवन को सहारा देनेवाला एक पत्थर हूं। जीवनभर रचनात्मक कार्यों में ही लगा रहना चाहता हूं।"..... और वे सचमुच ही पूरे जीवन रचनात्मक कार्यों में ही लगे रहे !

● वी.के. समदर्शी

उत्तरी भारत में जिन सामान्य व्यक्तियों ने शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर अपने आपको जन-मन में अमर कर दिया उनमें महात्मा हंसराज का नाम अलग ही नजर आता है। शताधिक डी.ए.वी. शैक्षणिक संस्थाएं उनकी शैक्षणिक क्रांति से लाभान्वित हो रही हैं।

होशियारपुर (पंजाब) के समीपवर्ती कस्बे बजवाड़ा में लाला चूनीलाल के घर गणेश देवी ने १९ अप्रैल १८६४ को हंसराज को जन्म दिया। पूत के लक्षण पालने में ही नजर आने लगे थे। मेधावी बालक पढ़ने में चतुर था, पर गरीबी आड़े आ रही थी। अभी वह १२ वर्ष का ही था कि पिता चल बसे। तब हंसराज भाई के पास लाहौर चले गये। वहां एक दि वह अपने भाई के साथ गणित की पुस्त खरीदने गये। देहाती बालक को छेड़ते हु दुकानदार ने कहा, "अरे बाबू। तुम्हारा देहाती भाई यदि एक सवाल हल कर दे तो इसे गणित की यह पुस्तक मुफ़ दे दूंगा।"

भाई बोला, "लालाजी ! मजाक न कीजिए इस तरह से।"

"नहीं मजाक नहीं है यह !"..... उसने सवाल पूछ लिया।

बालक हंसराज ने खड़े-खड़े ही उसको हल करके पुस्तक मुफ़ में प्राप्त कर ली। इससे बड़े

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई ने छोटे भाई को आगे पढ़ाने के लिए हर तरह की तकलीफें सहन करके बात नहीं बिगड़ने दी।

अप्रतिम प्रतिभा के धनी

तमाम तरह के संघर्ष करते हुए सन् १८८५ में बी.ए. में पंजाबभर में इन्हें द्वितीय स्थान मिला। इसके साथ ही साथ संस्कृत और इतिहास में भी विशेष योग्यता प्राप्त की। सन् १८७७ में स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रवचनों से वे बड़े प्रभावित हो उठे। वे भी आर्य समाज की प्रवृतियों में भाई के साथ भाग लेने लगे। ३० अक्तूबर १८८३ को जहर दे दिए जाने के कारण स्वामी दयानंद जी अजमेर में ब्रह्म लीन हो गये। तभी उनकी स्मृति में लाहौर के आर्यसमाजियों ने 'दयानंद एंग्लो वैदिक' (डी.ए.वी.) स्कूल एवं कालेज खोलकर महर्षि के विचारों को फैलाने के लिए नयी पीढ़ी को तैयार करने का संकल्प किया। उद्देश्य था कि युग की चेतना से जुड़ी शिक्षा के साथ वैदिक मूल्यों का भी नयी पीढ़ी को परिचय दिया जाए।

योजना बनी आठ लाख रुपये जुटाकर कॉलेज शुरू करने की पर मुश्किल से दस हजार रुपये ही जुट पाये। धनाभाव के कारण कॉलेज शुरू नहीं हो सका। हंसराज को इस स्थिति ने बहुत ही परेशान किया। उन्होंने योजना पर भाई लाला मूलराज के साथ विचार किया। दोनों भाई सोचते रहे। अंत में एक दिन हंसराज ने भाई से कहा, "भैयाजी ! मैं कॉलेज चलाने के लिए आर्यसमाज को अपना जीवन अर्पित करना चाहता हूं। बिना एक भी पैसा लिए मैं काम करूंगा पर आपकी सहायता के बिना पूरा नहीं होगा मेरा यह सकंल्प।"

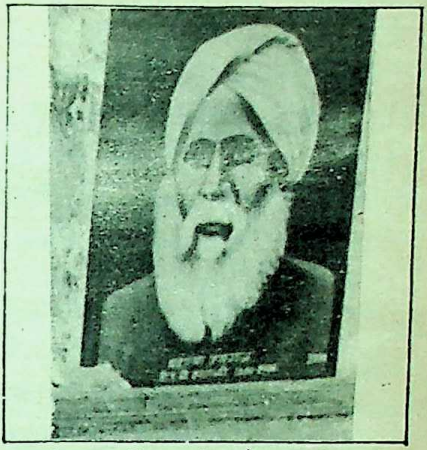

"तुम्हारा विचार ठीक है। फसल खाने के लिए नहीं सबके लिए ही बोयी जाती है। तुम ज्ञान की फसल बांटो। मैं हर माह तुम्हें पारिवारिक खर्च के लिए ४० रुपये मासिक देता रहूंगा।" लाला मूलराज ने कहा।

महात्मा हंसराज के नाम से वे अब आर्य समाज लाहौर के प्रधान से मिले और अवैतनिक रूप से शाला के लिए समर्पण की बात कही। इस प्रस्ताव से आर्य समाजियों में नयी चेतना जागी। जून १८८६ को विद्यालय खोल दिया गया। कुछ ही वर्षों में इस विद्यालय ने अन्य विद्यालयों को पीछे छोड़ दिया। सन् १८८९ में यह कॉलेज हो गया। महात्मा हंसराज ने अंगरेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास के साथ वैदिक संस्कृति में विद्यार्थियों को माहिर किया। छात्रावास में वे संध्या, हवन, व्यायाम, कुश्ती आदि पर भी ध्यान देते थे। एक माने में वह छात्र के समग्र विकास की अद्भुत प्रयोगशाला ही थी।

शैक्षणिक क्रांति के प्रयत्न

महात्माजी के मन में तो शैक्षणिक क्रांति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग धधक रही थी। वे कालेज से बचे समय में घर-घर जाकर 'दयानंद एंग्लो स्कूलों' की जरूरत पर विचार विमर्श करते। चंदा जुटाते, लोगों को स्कूलों में अध्यापन या अन्य कार्यों के लिए समय देने के लिए तैयार करते। साथ ही भवन के लिए साधन भी जुटाने लगे। वे कहते थे, **"पर हित के कारणे मोहि मांगत न आवे लाज।"**

उनका परिश्रम और निष्ठा ने रंग जमाया। लोगों में नयी चेतना जागी और डी.ए.वी. स्कूलों का पंजाब में जाल-सा बिछ गया। नाम मात्र के वेतन पर समर्पित अध्यापकों ने संस्थाओं का शैक्षणिक स्तर अच्छा रखा। इससे दोहरा लाभ हुआ। आर्य समाज की जन-मन में जड़े जमीं और स्कूलों के प्रति निष्ठा जमीं। पढ़नेवाले तेजी से भर्ती हुए।

सन् १९१२ में वह दयानंद कॉलेज कमेटी के प्रधान चुने गये। अब तक काफी स्थानों पर डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाएं चलने लगी थीं। स्वामी हंसराजजी ने अब सामाजिक सुधारों की तरफ भी ध्यान दिया। सन् १९१५ में डी.ए.वी. स्कूलों में बिना हित छात्रों का प्रवेश रोका गया। कुछ दिनों बाद एफ.ए. तक की कक्षाओं में केवल अविवाहित विद्यार्थियों को ही प्रवेश की व्यवस्था थी। इससे बाल विवाह रोकने के लिए जनमत जागृत हुआ।

समाज सुधार की पहल

वे हिंदू समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को देखकर बहुत परेशान रहते थे। उन्होंने अब पूरा समय आर्य समाज के प्रचार के लिए देना शुरू किया। छुआछूत मिटाने, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि के लिए उन्होंने काफी कार्य किया। 'दयानंद दलित उद्धार मंडल' स्थापित करके उन्होंने हरिजन कल्याण के लिए कई जगह रचनात्मक कार्य शुरू किये। 'दयानंद इंडस्ट्रीयल स्कूल' में दर्जी, लौहारी, सुतारी, जिल्दसाजी, प्रिंटिंग आदि के कामों की शिक्षा शुरू की इससे बेरोजगारी से विद्यार्थी मुक्त रहकर निजी उद्योग खोलने लगे। पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान, हिमाचल प्रदेश में ऐसे छोटे उद्योग बहुत हैं जो महात्माजी के औद्योगिक स्कूल के कारण ही पनप सके।

वे कभी भी उपदेश नहीं देते थे, बल्कि जो भी कहना होता था उस विचार को अपने काम से करके मिसाल के रूप में पेश करते थे। कन्याओं को शिक्षित करने के लिए उन्हें कट्टरपंथियों से कई बार शास्त्रार्थ भी करना पड़ा। कोई भी काम ऊंचा-नीचा नहीं है। यह बतलाने के लिए उन्होंने लाहौर में अपने चचेरे भाई को एक जूतों की दुकान खुलवा दी। कुछ रिश्तेदारों को लौंड्री के व्यवसाय में भी लगाया। हरिजनों को छात्रावासों में रखकर उन्होंने उनमें आत्म विश्वास जगाया और अछूतोद्धार का काम आगे बढ़ाया। दक्षिण भारत के मालाबार तट के अछूतों को भी उन्होंने आर्य समाजी बनाकर स्वावलंबी बनाने के लिए पर्याप्त कार्य किया था।

गरीबी से युद्ध

स्वामीजी ने बीकानेर, गढ़वाल, अवध, उड़ीसा, मध्य भारत की रियासतों में जब-जब भी अकाल पड़े खुद जाकर अकाल पीड़ितों के लिए काम किया। कांगड़ा, क्वेटा और बिहार के भूकंप पीड़ितों के लिए भी उन्होंने जो सेवा अभियान चलाये वे अपने आप में एक मिसाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन चुके थे।

स्वामी हंसराज मानते थे कि गरीबी के अभिशाप से देश को मुक्त करना है तो अल्प बचत और स्वदेशी वस्तु का उपयोग व्यवहार में बढ़ना चाहिए। कुरीतियों, शादी, विवाह, बालविवाह आदि में तड़क-भड़क रोकी जानी भी जरूरी है। विधवाओं को रचनात्मक कामों में लगाकर आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने की भी उन्होंने बहुत पहल की।

लगभग छह दशक तक देश के सामाजिक चेतना अभियान में जुटी यह सादगी और सेवा की मूर्ति १५ नवंबर १९३८ को सदा के लिए शांत हो गयी। उनके साथियों ने उन पर राजनीति में कार्य करने के लिए बहुत जोर डाला था। तब वे हंसकर कहते थे, "अरे देश में राज-नेताओं की कमी है क्या ? मैं तो नींव में पड़कर भवन को सहारा देनेवाला एक पत्थर हूं। जीवनभर रचनात्मक कार्यों में ही लगा रहना चाहता हूं।"..... और वे सचमुच ही पूरे जीवन रचनात्मक कार्यों में ही लगे रहे !

वे नहीं रहे, पर आज शताधिक डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएं उनकी रचनात्मक समर्पण भावना की कहानी कह रही हैं। डी.ए.वी. संस्थाओं के रूप में महात्मा हंसराज की कीर्ति अमर है। इस शैक्षणिक क्रांति को समर्पित संत को हम प्रणाम ही नहीं करें, उनके लक्ष्य की पूर्ति के लिए कुछ करें तभी सही श्रद्धा सुमन समर्पित होंगे। आइए हम यही करें।

द्वारा :- युग निर्माण प्रेस हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार

पी.ओ. जयपर-३०२०००३ (राज.)

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ७५,७० तथा ३५ अंश के कोण, २. क. मिस्र, जोर्डन, सीरिया, लेबनान, ख. गाजा पट्टी (मिस्र), जोर्डन नदी के पश्चिमी तट का क्षेत्र (जोर्डन) तथा गोलन हाइट्स (सीरिया), ३. हेनरी पू. वर्तमान शताब्दी के दूसरे दशक में चीन के गणराज्य होने पर १८ वर्षीय पू अपदस्थ, बाद में जापानियों से मिलने के अभियोग में १० वर्ष का कारावास, ४. सिंगरौली सुपर-ताप बिजलीघर (जि. मिर्जापुर, उ.प्र.)— दो-दो सौ मेगावाटवाली ५ इकाइयां तथा ५-५ सौ मे.वा. की २ इकाइयां (कुल बिजली उत्पादन क्षमता २,००० मे.वा.), ५. श्वेदागान पैगोडा (रंगून), ६. नर्मदा — मध्यप्रदेश तथा गुजरात में १३०० कि.मी. बहने के बाद अरब सागर में गिरती है, ७. रवींद्रनाथ टैगोर (१९१८), ८. क. ए, बी, एबी, ओ, ख. ए, ९. यूरी रोमानेंको (सोवियत), अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' में ३२६ दिन रहने के बाद सोयूज टी.एम.-३ से २९ दिसं. १९८७ को पृथ्वी पर लौटा, १०. बंबई-न. दिल्ली १३८४ कि.मी. रेलमार्ग (जन. १९८८), हावड़ा-दिल्ली, १४४१ कि.मी. रेलमार्ग (१९७६ ई.), ११. टी.वी. टावर, बंबई (३०० मीटर ऊंची), प. दिल्ली में २३५ मीटर ऊंची टी.वी. टावर निर्माणाधीन, जिसमें १६७ मी. की ऊंचाई पर एक घूमता हुआ रेस्तरां होगा, १२. कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

उपेक्षा से पीड़ित

क. ख. ग. चारबत्तिया : मैं अपने माता-पिता की एक ही लड़की हूं। मेरा एक भाई मुझसे बड़ा है व दूसरा छोटा। भाइयों की ओर मेरे माता-पिता का ध्यान केंद्रित रहता है। मुझे लड़की होने पर सबसे अधिक घृणा है। मैं २८ वर्ष की अविवाहित लड़की हूं। शादी के लिए बर की तलाश हो रही है, परंतु मुझे इसमें कोई रुचि नहीं। एम. ए. हिंदी साहित्य में कर दो साल प्राइवेट स्कूल में बच्चों को पढ़ाया, परंतु वहां की व्यवस्था में शिक्षा के प्रति घोर व्यावसायिकता देख कर मन भर गया। मैंने स्कूल छोड़ दिया तथा तब से घर पर बैठी हूं।

मेरी पढ़ने में अत्यधिक रुचि है, परंतु बचपन से ही लिखने में मात्राओं व अक्षरों की गलत लिखने की आदत ने अब तक पीछा नहीं छोड़ा। इससे मेरे अंदर हीन भावना आ गयी है। इसी कारण तृतीय श्रेणी में ही सारी परीक्षाएं पास कीं। मित्रों के उत्तर तक मैं नहीं देती कि कहीं कोई शब्द गलत लिख दिया तो हंसी उड़ाई जाएगी। कृपया रास्ता दिखायें।

आपकी अक्षरों को गलत लिखने की समस्या बचपन से है। याद कीजिए कि आपके पढ़ने में रुचि होते हुए भी आपको प्रोत्साहन नहीं मिला। लड़का और लड़की में भी संयोगवश मात्रा का ही अंतर है। आपको हर मौके पर यह महसूस कराया गया कि लड़की होना एक खराब बात है। इसीलिए आप अपने में प्रकृति प्रदत्त गुणों का विकास नहीं करवा सकीं। स्त्री होने की खुशी को मन ही मन आपने दमन किया। शादी की ओर अरुचि इसी बात का संकेत है। साथ ही ऊंचे आदर्श रखने के कारण स्कूल में व्यावसायिकतापूर्ण वातावरण आपको गवारा न रहा और आपने नौकरी छोड़ दी। आपकी समस्या मूल में उपरोक्त मनो-वैज्ञानिक कारणों से है। आपको हंसी उड़ने की परवाह न कर, मित्रों से नाता जोड़े रखना चाहिए। साथ ही कोई और नौकरी भी ढूंढ लें। अपनी प्रकृति स्त्री के गुणों से भरपूर बनाये रखें। प्रकृति व भगवान को दोष न दें। आज का समाज स्त्री को सम्मान का स्थान देता है, चाहे आपके घरवाले न दें, पर इससे घबराना नहीं चाहिए, उन्हें अपने तर्कों से समझाइए। जब आप इन गुणों को विकसित करेंगी, तब स्वयं हिंदी की मात्रा व शब्दों में त्रुटियां नहीं आने देंगी। फलस्वरूप प्रत्येक बात सहज हो जाएगी।

अपने को मारना

रामनाथ मिश्रा, कानपुर : मेरा सब से बड़ा पुत्र इस समय १७ वर्ष का है। शारीरिक रूप से सामान्य ही जन्मा था, किंतु अन्य बच्चों की भांति न होकर लगभग चार वर्ष की उम्र से चलना शुरू किया—जबकि हाथपैर ठीक थे। प्रारंभ से ही गुपचुप प्रवृति का है। कुछ पूछने पर उचित उत्तर ही देता है। किसी कार्य के लिए कहने पर ही करता है। स्वतः किसी कर्म की ओर उन्मुख नहीं होता। अपने से कम उम्र के बच्चों की डांट से डर जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कभी-कभी डांटने से क्रोधित होकर अपने आपको मारने लगता है। इस विचित्र आचरण के कारण ही उसकी पढ़ाई नहीं हो पाई। मैं शहर में नौकरी करता हूं। अतः वह अपने बाबा व मां के संरक्षण में रहता है। उसे विशेष किसी दबाव या आतंक के वातावरण में भी नहीं रखा गया है। उसके भविष्य को लेकर मैं चिंतित हूं। भोजन के लिए भी पूछने पर ही स्वीकार करता है। निद्रा सामान्य है। क्या वह पूर्ण रूप से सक्रिय हो सकेगा।

आपका पुत्र किसी मानसिक रोग से पीड़ित नहीं। वह बचपन से ही मंदबुद्धि बालक था। अविकसित बुद्धि के कारण ही देर से चलना फिरना शुरू किया तथा अन्य बच्चों की भांति न बन सका। वह शिक्षा भी ग्रहण नहीं कर सका। यह बीमारी पैदायशी थी, जिसके लक्षण आपको बाद में दिखे। वातावरण के दबाव या आतंक से यह बीमारी उत्पन्न नहीं होती। हां यदि उसकी क्षमता से ऊपर उसे कार्य दिया जाए या फिर सब लोग उससे ज्यादा उम्मीद करने लगें, या फिर उससे दबाव के साथ कार्य करवाने से भी उसका वर्ताव असामान्य हो जाता है। जैसे अपने आपको मारना। इस रोग की दवा तो कोई नहीं, परंतु आपको चाहिए एक बार मनोवैज्ञानिकों द्वारा उसकी बुद्धि का परीक्षण करायें। इस तरह उसकी क्षमता का सही पता लगा लें तब-ही उसे काम दें। हां, नौकरी देने वाले को सहानुभूति बरतनी चाहिए।

डर से मुक्ति

अशोक सिन्हा, भागलपुर : आज से आठ महीना पहले मेरा पेट खराब चलने लगा था। गले में भी हमेशा जलन महसूस करता था। उस समय मेरी एम. ए. फाइनल की परीक्षा भी चल रही थी। कोई भी दवाई स्थाई रूप से काम नहीं दे रही थी।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

मेरी चिंता भी बढ़ती जा रही थी। तत्पश्चात मुझे अनिद्रा की बीमारी हो गई। घबराहट बहुत बढ़ गई। एम. ए. की परीक्षा छोड़ देनी पड़ी। डॉक्टरों ने नींद की दवा दी जो मुझे बहुत दिन खानी पड़ी। आजकल ठीक हूं, परंतु हर रात सोने से पहले डर लगता है कि शायद नींद फिर न आए। डाक्टर साहब कृपया इस डर से मुक्ति दिलाएं।

आपका पेट व गले में जलन का कारण साइकोसोमेटिक हो सकता है यानी तनाव की वजह से आपको तकलीफ हो सकती है। अनिद्रा वास्तव में एक रोग न होकर, तनाव का एक लक्षण मात्र था दवा तथा उस परिस्थिति से निकलने पर जो ठीक हो गया। वास्तव में आपको परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। प्रारंभ से ही अपने तनाव के कारणों को समझ लें तथा उनसे जूझने की क्षमता बनाएंगे।

हड्डी पर हड्डी

अरविन्द, सागवाड़ा : मैं ३० वर्ष का शादी शुदा चार बच्चों का बाप व व्यवसाय से व्यापारी हूं। चार वर्ष पूर्व बारिश के समय नीचे गिर गया और एक साल बाद मुझे मामूली दर्द हुआ। तत्पश्चात रीढ़ की हड्डी के दाहिनी ओर कूल्हे से थोड़ा ऊपर होता था। एक्सरे व पेशाब की जांच कराई। सब ठीक थी। परंतु मुझे उसी जगह या फिर दाहिने पैर में घुटने और एड़ी के बीच हड्डी पर हड्डी चढ़ जाती है। ऐसा दस पंद्रह दिन में एक बार हो ही जाता है।

आपका दर्द गिरने के एक साल पश्चात शुरू हुआ। यदि यह गिरने के कारण होता तो तुरंत होता। साथ ही जिस जगह आपको दर्द होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां कोई हड्डी नहीं, केवल मांसपेशियां हैं। हड्डी पर हड्डी कभी नहीं चढ़ती— केवल मांसपेशियां संकुचित होती चली जाती हैं। आप या तो शारीरिक रूप से कमजोर हैं या आप संतुलित आहार नहीं खाते। क्योंकि कई बार किसी पौष्टिक पदार्थ, विटामिनों आदि की कमी से भी आपको ऐसा हो सकता है। मन में चिंता, तनाव चाहे वह घरेलू परिस्थितियों से हो अथवा व्यापार में, ऐसे लक्षण कमजोर व्यक्ति को ज्यादा होते हैं। यह सब परिस्थितियां मिलकर आपकी समस्या का कारण बनी स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, संतुलित आहार, व्यायाम, व योग द्वारा अपनी स्थिति पर काबू पाने की कोशिश करें।

कुसंगति से

उमेश मेवाड़ी : हलद्वानी, नैनीताल : बी. एस-सी. का छात्र हूं बचपन में कुसंगति व अज्ञानता के कारण हस्तमैथुन का गंभीर शिकार हो गया हूं। मेरे शिशन में अब टेढ़ापन आ गया है। मेरे दो प्रश्न हैं— १. हस्तमैथुन से भविष्य में शरीर पर कोई खास प्रभाव तो नहीं पड़ता है ?

२. शिशन का टेढ़ापन आगामी दांपत्य जीवन में कोई असमर्थता तो पैदा नहीं करता ?

हस्तमैथुन एक स्वाभाविक क्रिया है जो करीब-करीब हर कोई करता है। इस क्रिया से कोई हानि भी नहीं होती। हानि तब होती है, जब छात्र अपनी पढ़ाई व कैरियर की ओर ध्यान देना बंद कर देते हैं अपने आपको अत्यधिक अपराध बोध भावना, तनाव व चिंता का शिकार बना लेते हैं तथा हर समय इसी के बारे में सोचते रहते हैं। वह न तो खुल कर हंसते-खेलते हैं और न व्यायाम करते हैं। विपरीत सेक्स से बात करने में भी वे अपने को अपराधी पाते हैं। इन सब कारणों से ही अधिकतर लोग सेक्स न्यूरोसिस को अपने भीतर बना लेते हैं।

शिशन की ओर ध्यान न दें। दांपत्य जीवन में इसके कारण कोई असमर्थता उत्पन्न नहीं होती। आप एक युवक हैं— आपको इस समय खुली हवा में व्यायाम करना चाहिए, पौष्टिक आहार खाना चाहिए तथा अपने कार्य में या पढ़ाई में जुट जाना चाहिए। इस प्रकार नियमित क्रम व संयम में रहने से मानसिक व शारीरिक दुर्बलताओं से दूर रह सकेंगे।

रेल के चलने से भी डर

जी. के. मिश्रा, धनबाद : ३८ वर्ष का रेलवे में कार्यरत हूं। समस्या है कि रेल जब तीव्र गति से होती है, तब सांस बंद-सी होने लगती है। पानी पीने पर भी दम घुटने लगता है। रेल में न सही वैसे भी आंधी व तेज हवा में दम घुटता है तथा ठंडे में ठंडे पानी से नहाने पर भी ऐसा ही होता है।

एक बार लिफ्ट पर चढ़ने लगा, तो लगा सांस बंद हो जाएगी। बचपन में 'हंफनी' की बीमारी थी जो बनारस के हिंदू विश्वविद्यालय में सही हो गई। क्या मेरा रोग फिर से हो गया है ? डॉक्टर साहब मैं बहुत परेशान हूं।

— यह वही बीमारी कदापि नहीं। हां, आपके अचेतन मन ने तनाव को व्यक्त करने के लिए स्वसन तंत्र को चुन लिया। प्रायः शरीर के कमजोर हुए भाग को ही तनाव चुनता है। पहले आपको केवल तनाव में ही सांस बंद होने का डर लगा, परंतु बाद में यह लक्षण कई चीजों व परिस्थितियों से जुड़ता चला गया और अब 'फोबिया' में परिणत हो गया। फोबिया का इलाज बिहेवियर थैरपी द्वारा संभव है तथा ऐसा इलाज मनोरोग विभाग में मनोवैज्ञानिक करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

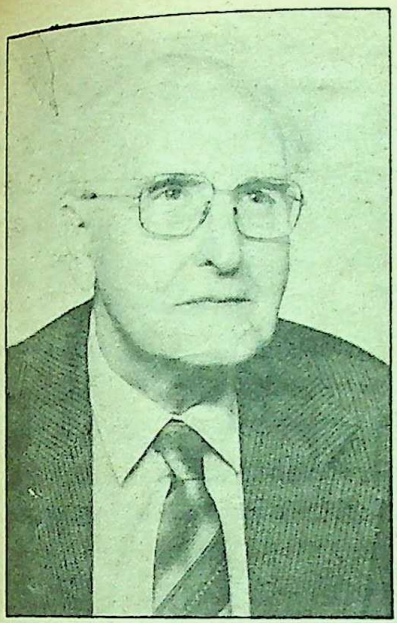

○ यारोस्लाव शूत्येपान

स्वदेश के लिए काम करना कितना सुंदर है

चेकोस्लोवाकिया में एक ऐतिहासिक नगर है जो लितोमिश्ल कहलाता है। वहां हर दो साल के बाद स्मेताना का त्योहार मनाया जाता है। वहीं प्रसिद्ध प्रतिभासंपन्न चेक आत्मा बेद्रिख स्मेताना २-३-१८२४ में पैदा हुए।

स्मेताना अपनी ६ वर्ष की अवस्था में सार्वजनिक सभा में संगीतकार के रूप में अपनी कला का सफलतापूर्वक प्रदर्शन करते थे। सन् १८४३ में प्राहा आकर स्मेताना को पैसे कमाने के लिए संगीत-अध्यापक का स्थान मिला। साथ-ही-साथ वे वाद्य-संगीत पढ़ने लगे। उस समय प्रसिद्ध जरमन संगीतकार लिस्त के मित्र बनकर पहले गरीब स्मेताना खुश हुए। उनके मित्र लिस्त जीवनभर के लिए स्मेताना के लिए न केवल मित्र वरन् नमूना भी रहे। वे दोनों एक दूसरे से मिलते रहे— कभी प्राहा भी और कभी वैमार (जरमनी) में। तभी उनकी शादी विख्यात प्यानो बजानेवाली महिला कोलारोवा से हुई।

सन् १८५६-१८६१ में स्मेताना स्वीडन के गेटेबोर्ग में फिलार्मान के निदेशक के पद पर काम करते थे। वहां उनको बहुत पैसे मिले लेकिन यह स्थान उनके तथा उनकी पत्नी के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकर था।

विशिष्ट 'पोलका' संगीत

उन्होंने आधुनिक और जातीय संगीत के लिए आधार डालने का अपने निजी कार्यक्रम के अनुसार प्रयत्न किया। इसमें संदेह नहीं कि अपनी संगीत-प्रतिभा के कारण वे संगीत और ओपेरा दोनों में विश्वमंच पर पहुंचकर बड़े उत्साह के साथ स्वीकृत हुए।

संगीत के 'पोलका' नामक एक स्वरूप ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

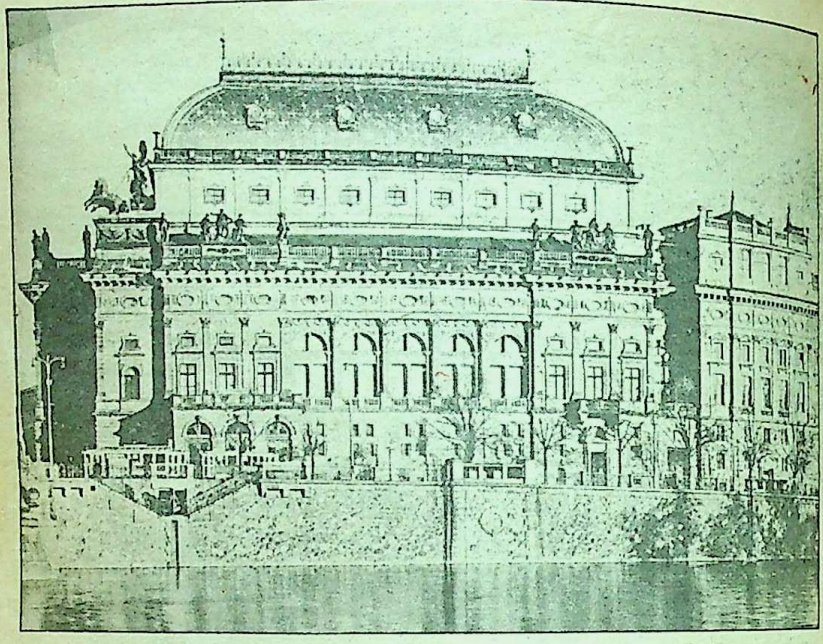

स्मेताना को सारी दुनिया में प्रसिद्ध किया। 'बेची हुई दुलहन' नामक ओपेरा में भी यही पोलका बार-बार गूंजता है।

बेची हुई दुलहन की कहानी निम्न कुछ वाक्यों में ऐसी है :

ग्रामीण मैदान में त्योहार मनाया जाता है। युवक-युवतियों के बीच दुलहन मार्जेंका है जो उदास है क्योंकि उसकी शादी अमीर दूल्हे वाशेक के साथ होनेवाली है। माता-पिता उसको विवश करते हैं कि वह अपने प्रेमी येन्यीक को जो गरीब बेघर युवक है छोड़ दे। ग्रामीण दलाल केत्सल आकर वाशेक की प्रशंसा करते-करते यह बताता है कि वह अपने पिता मीखा के बड़े देहाती मकान और खेती का वारिस हो जाएगा क्योंकि उसका सौतेला भाई दुनिया में गायब हो गया है। लेकिन दुलहन मार्जेसा वाशेक से जोरदार इनकार करती है। धन का लालची होने के कारण आढ़तिया केत्साल येन्यीक को मनाता है कि वह मार्जेंका से शादी न करे और वादा करता है कि ऐसा न करने से उसे ३०० सोने के सिक्के मिलेंगे। अंत में येन्यीक ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया परंतु इस शर्त से कि मार्जेंका केवल मीखा के बेटे के साथ विवाह करे और दलाल केत्साल के लिए समझौते पर हस्ताक्षर करता है। ग्रामीण

सबसे पहली कर्मचारियों की हड़ताल का उल्लेख ईसा से ३०९ वर्ष पूर्व का मिलता है। उस समय ग्रीक संगीतकार आरेस्टोस और उसके वाद्यवृंद के कर्मचारियों ने पहली बार हड़ताल की थी और हड़ताल का कारण यह था कि मंदिर के भोजनालय में उन्हें खाना खाने की इजाजत नहीं दी गयी थी।

☆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

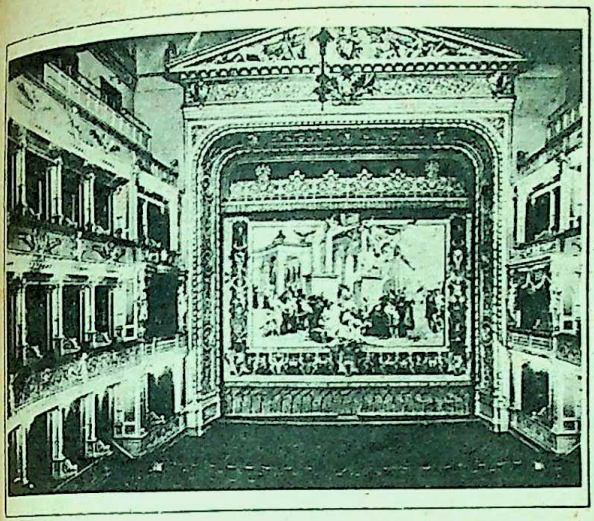

और वाशेक से प्रार्थना करती है कि वह रीछ के रूप में उनके साथ अभिनय करे। मार्जेंका यह युवक-युवतियां यह सुनकर गुस्से में आकर कहते हैं :

'येन्यीक ने अपनी दुलहन मार्जेंका को बेच दिया'

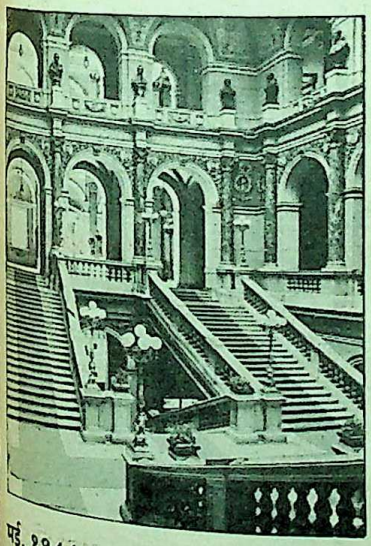

इस बीच उनके गांव में नट-मंडली आती है बात सुनकर कि येन्यीक ने उसको बेच दिया। येन्यीक से कहती है कि वह वाशेक से शादी करेगी। तब येन्यीक समझने लगता है कि उसे तुरंत सच बताना चाहिए। वह बड़े जमींदार मीखा के सामने खड़ा हो जाता है। यह कहकर कि वह उनका अपना खोया हुआ बेटा येन्यीक है और अपने मां-बाप से प्रार्थना करता है कि वे मार्जेंका से शादी करने के लिए आशीष दें।

सारे ग्रामीण खुशियां मनाते हैं। सिर्फ आढ़तिया केत्साल समझौता हारने पर गांव से चला जाता है।

सुखपूर्ण ओपेरा की नयी शैली

ऐसा आधुनिक ओपेरा लिखना आसान नहीं था। इसकी कहानी में बहुत ग्रामीण वातावरण, आदतें और परंपरागत जीवन शामिल था। ओपेरों में हमारे यहां उस समय तक रंगमंच पर विशेषकर दुःखपूर्ण दृश्य तथा घटनाएं दिखायी जाती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मेताना ने अपने नये ओपेरा द्वारा नयी शैली-सुखपूर्ण ओपेरा का श्रीगणेश किया। उसकी योजना पूर्ण सफल हुई। चेक देशों में यह ओपेरा पूरी जाति में उत्साह के साथ स्वीकृत किया गया। थोड़े समय बाद आस्ट्रिया की राजधानी वियेना में आकर वह एकदम सारे संसार में प्रसिद्ध हो गये। उनके संगीत की मूल-आत्मा जाति को इसलिए इतनी आत्मीय थी क्योंकि वे प्राचीन चेक लोकगीतों से निकलकर जनता के हृदय में घुसते रहे।

स्मेताना अपनी संगीत प्रतिभा तथा अपनी जाति के नेता होने के कारण संगीत द्वारा पूरे राष्ट्र को एक करने में सफल हुए। इसी को यानी अपने बड़े राष्ट्रप्रेम को उन्होंने अपने लिबुशे नामक एक समारोहपूर्ण ओपेरा में विशेष रूप से सिद्ध किया। इसी में स्मेताना ने चेक इतिहास के आधार पर यह दिखाया कि चेक जाति सारी बाधाओं को पार करके भविष्य में प्रसिद्धि प्राप्त करेगी। भविष्य ने बाद में यह दिखाया कि वे सही थे।

सन् १८८० से १८८३ तक स्मेताना की सारे बोहीमिया में बहुत अच्छी तरह मान्यता थी। उस समय प्राहा में राष्ट्रीय नाटकघर की नयी इमारत बनायी जा रही थी। जब नया नाटकघर आग द्वारा नष्ट हो गया तब स्मेताना ने विभिन्न चेक नगरों में संगीत-प्रदर्शनों कर पैसा कमाकर इससे नया नाटकघर बनाने के लिए दे दिया। गंभीर बीमारी आ रही थी। लेकिन स्मेताना को आशा थी कि वे जल्दी स्वस्थ हो जाएंगे। नये नाटकघर के उद्घाटन-समारोह के अवसर पर स्मेताना का समारोहपूर्ण ओपेरा "लिबुशे" खेला गया। लेकिन उनकी बीमारी और गंभीर हो जाने के कारण स्मेताना अपने ओपेरा को स्वयं चला न पाये।

उनकी मृत्यु के समय हमारे राष्ट्रीय नाटकघर में उनकी कृति 'बेची हुई दुलहन' प्रस्तुत की जा रही थी। अचानक नाटकघर के निदेशक ने परदे के सामने आकर स्मेताना के निधन की सूचना दी। सारी जाति रो पड़ी।

जब महान संगीतकार स्मेताना का मृत शरीर "विशेहरद श्मशान" को ले जाया जा रहा था उसी समय कब्रिस्तान की चारदीवारी से स्मेताना की प्रसिद्ध कृति 'लिबुशे' के तुरही-वाद्य समारोहपूर्वक बजाये जा रहे थे।

— ज्दानोवा ।
१६००० प्राहा ।
सी-एस-एस-आर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

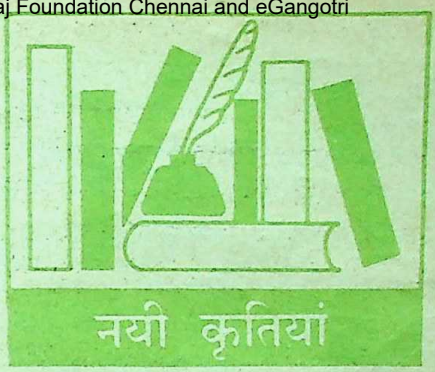

इंदिरा गांधी अंतरंग संस्मरण

श्री कृष्णकुमार बिरला की यह कृति अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। पहले यह पुस्तक मूल रूप से अंगरेजी में प्रकाशित हुई थी। तब भी पाठकों ने इसका स्वागत किया था। हिंदी पाठकों की मांग को देखते हुए इसे अब हिंदी में भी प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तक में श्री बिरला ने श्रीमती इंदिरा गांधी के संघर्षपूर्ण जीवन का उल्लेख करते हुए उनके अनेक गुणों पर प्रकाश डाला है। कठिन से कठिन अवसरों पर उनके धैर्य और गंभीर व्यक्तित्व की चर्चा है। इंदिरा गांधी की उदारता और आत्मीयजनों के प्रति उनकी निष्ठा का भी उल्लेख किया गया है।

श्री बिरला मात्र उद्योगपति ही नहीं, वे संसद सदस्य और कुशल प्रशासक भी हैं। उद्योगपति होते हुए भी गरीबी, सूखा और बाढ़ जैसे प्रश्नों को उन्होंने समय-समय पर संसद में उठाया है।

प्रस्तुत पुस्तक इंदिरा गांधी और श्री कृष्ण कुमार बिरला के बीच के नैकट्य और अंतरंग संस्मरणों का लेखा-जोखा है। भारतीय राजनीति में सत्ता-संघर्ष और उसके बीच से उभरता हुआ इंदिरा गांधी का शौर्यमय जीवन इस पुस्तक की विशेषता है। इससे पता चलता है कि १९७७ की पराजय के बाद इंदिराजी ने कितने संघर्ष झेले और जब वे फिर सत्ता में आयीं तो उन सारे व्यक्तियों को वे नहीं भुला सकीं, जिन्होंने बुरे दिनों में उनका साथ दिया था। श्री बिरला ऐसे ही व्यक्तियों में एक हैं। उन्होंने जनता पार्टी के शासन काल में भी इंदिरा गांधी का साथ नहीं छोड़ा और इसके परिणाम स्वरूप उन्हें स्वयं अनेक कठिन स्थितियों से गुजरना पड़ा। यहां तक कि एक बार श्री बिरला को देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग पुरस्कार योजना

हिन्दी में मौलिक लेखन के लिए पुरस्कार

हिन्दी के मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विज्ञान और प्रौद्योगिकी की चार शाखाओं अर्थात् इंजीनियरी विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीवन विज्ञान और रसायनिक विज्ञान के मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई पाण्डुलिपियों तथा प्रकाशित पुस्तकों के लेखकों को वर्ष 1988 में निम्नलिखित नकद पुरस्कार देने के लिए देश और विदेश में भारतीय नागरिकों से आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

प्रथम पुरस्कार : 15,000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार : 10,000/- रुपये
तृतीय पुरस्कार : 5,000/- रुपये

इस योजना के अंतर्गत नकद पुरस्कार पिछले तीन कैलेण्डर वर्षों में, प्रतियोगिता के वर्ष सहित, लिखी गई पाण्डुलिपियों तथा प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिये जायेंगे। पाण्डुलिपियों के साथ लेखक की यह लिखित वचनबद्धता संलग्न होनी चाहिए कि यदि पाण्डुलिपि को पुरस्कार के लिए चुन लिया गया तो पुरस्कार घोषणा के छः माह के भीतर उसे प्रकाशित करा लिया जायेगा। जो प्रविष्टियां इस प्रतियोगिता के अंतर्गत पहले भेजी जा चुकी हैं, उन्हें दोबारा स्वीकार नहीं किया जायेगा।

इस प्रयोजनार्थ निर्धारित आवेदन-पत्र तथा योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी डाक द्वारा या स्वयं आकर "श्री बी.पी. जुयाल, सहायक निदेशक (हिन्दी), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नया महरौली मार्ग, नई दिल्ली-110016 (टेलीफोन नं. 662260/274)" से प्राप्त की जा सकती है। आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि 31 मई, 1988 है।

डी.ए.वी.पी. 514(1)/88

2011

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर बाहर भागनी भी पड़ी।

पुस्तक में लेखक ने इंदिराजी के साथ अपने आत्मीय संबंधों का विस्तार से वर्णन किया है। इसी के साथ ही उन व्यक्तियों के उल्लेख हैं, जिन्होंने उन दिनों कई तरह की भूमिकाएं निबाही हैं। संजय गांधी के साथ श्री बिरला के गहरे संबंध रहे हैं। उसी क्रम में श्री राजीव गांधी से भी उनके संबंध बढ़े। सच कहा जाय तो इस पुस्तक के द्वारा श्री बिरला ने उस महान व्यक्तित्व को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की है। जिससे लेखक ने हमेशा अपार प्रेरणा, उत्साह, सद्भाव और आदर पाया है।

अत्यंत सहज, प्रवाहमयी और प्रांजलपूर्ण भाषा में श्री बिरला ने अपने अंतरंग संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। शैली गत विशेषता और घटनाओं के क्रम-बद्ध उल्लेख ने इस पुस्तक को इतना सरस बना दिया है कि यदि एक बार पाठक पुस्तक हाथ में ले ले तो वह उसे पूरा पढ़े बिना नहीं रहेगा। साथ ही श्री बिरला की उदारता और साहित्य के प्रति सहृदयता का भी पाठकों को इससे परिचय मिलेगा।

पुस्तक का प्रकाशन अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से किया गया है।

लेखक : कृष्ण कुमार बिरला, प्रकाशक : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., मस्जिद रोड, जंगपुरा, नयी दिल्ली, मूल्य- १२५ रु. पृष्ठ संख्या : २१८

—राजेन्द्र अवस्थी

बोधिवृक्ष : डॉ. जगदीश गुप्त 'नयी कविता' के सूत्रधारक कवि के रूप में स्वीकारे जाते हैं। 'बोधिवृक्ष' में उन्होंने गौतम बुद्ध की बैरागी वृत्ति को विश्वव्यापी करुणा और स्वार्थी शक्तियों के बीच बुद्धत्व के चरम उत्कर्ष तक पहुंचने की विजयवाहिका के रूप में आकलित करने की कोशिश की है। कवि का मानना है कि बुद्ध का 'बोधितत्व' आज भी पंचशील की भावना को जगाकर तथा उपेक्षाग्रस्त अंत्यजों को अपनाकर देश-विदेश की अनेक जीवंत समस्याओं के समाधान में सहायक हो रहा है। हिंसा के तांडव में रत दानवीय ताकत के सामने बुद्ध के चरित-प्रसंग और उनकी महा करुणा का संदेश कवि को आज भी मानव-मात्र के संत्रास से निवारण हेतु सबसे सार्थक प्रतीत होता है। सत्रह कविताकार साचों में निबद्ध यह काव्य प्रबुद्ध पाठकों के लिए पठनीय बन पड़ा है। इसमें कवि ने गौतम के अनेक ख्यात और परिचित प्रसंगों को आज की स्थितियों से संबद्ध करके नये अर्थों को उजागर करने की कोशिश भी की है। 'नापित प्रसंग' में आज की अंत्यज-समस्या को, 'अगुलिमाल' में डाकुओं की समस्या को और इसी प्रकार 'सुजाता' से संबद्ध स्त्री समस्या को स्पर्शित किया है। 'बोधिवृक्ष' तले रखी गई ये सत्रह कविताएं—लगता है अलग-अलग समयों और स्थितियों में रूपाकार पाती रही हैं। अतः उनमें अनस्यूत अपेक्षित भावधारा और शैलीगत समानता कम ही दीख पड़ती है।

बोधिवृक्ष : कवि—डॉ. जगदीश गुप्त। प्रकाशक—वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य-तीस रु.।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

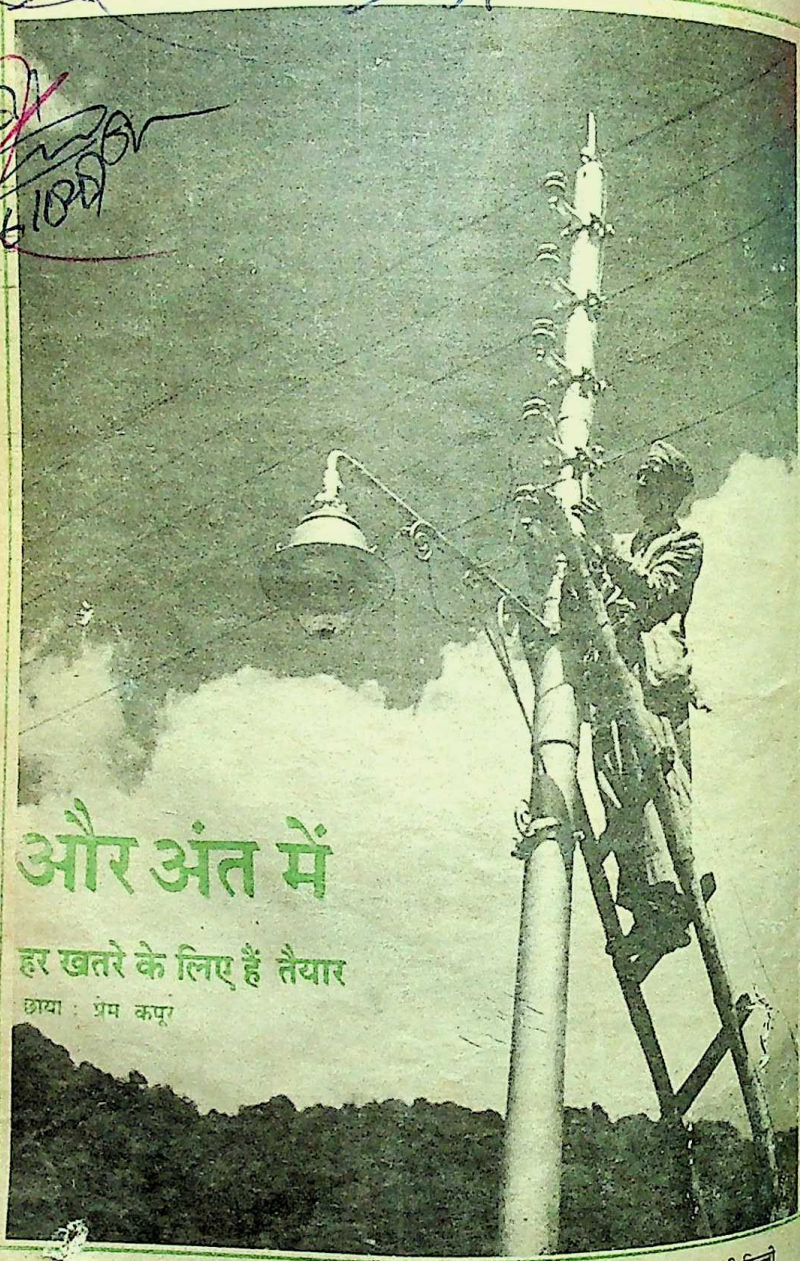

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

'८६

पर्यटन विशेषांक

मॉरीशस : हांगकांग और
सिंगापुर से टक्कर लेगा
कन्याओं से भरा
मालय

कदाशाटी में जंगली
जानवरों के साथ
समुद्र की लहरों पर
रात के भोज
अब
कालापानी नहीं है
कीजिए पर
कौन है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिस दिल में प्रकृ
प्रकृति उसे कभी नि

स्नॉहट, मनाली

कवि की कल्पना साकार र
स्थ! ऐसा ही है हिम
स्वागतार्थ तत्प है।
छटाए। शिम
कुल्लु-मनाल
धर्मशाला तथा
सौन्दर्य निखा
प्राप्त करना च
आइए और मंत्र
लीजिए — हिमाच

प्रकृति के सौन्द
के भीतर

अ

हिमाचल प्रदेश पर्य
विकास निगम लि
रिट्ज अनेक्सी, शिम 171 001

विस्तृत जानकारी हेतु हिमाचल प्रदेश पर्यटन के इन कार्यालयों से संपर्क करें :

- नई दिल्ली : चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, फोन : 3325320, 3324764
  पर्यटक सूचना कार्यालय, हिमाचल भवन, 27, सिकन्दरा रोड, फोन : 387473
- बम्बई : 36, वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर, कफ परेड, फोन : 219191/284, 211123
- कलकत्ता : 25, केमक स्ट्रीट, फोन : 446847
- शिमला : 28, कमान्डर-इन-चीफ रोड फोन : 472966
- चन्डीगढ़ : एस.सी.ओ. 1048-49, सेक्टर 22-बी, फोन : 26494
- शिमला : दि माल, फोन : 3311, पंचायत भवन, कार्ट रोड, फोन : 4589
- बंगलौर : मैनेजर, हिमाचल इम्पोरियम, राजेश काम्पलेक्स,
  13, मुबेन्द्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

पुस्तक महल की 30 पुस्तकों का एक अनूठा प्रोजेक्ट

मूल्य: 15/- प्रत्येक
डाकखर्च: 4/- प्रत्येक
के साथ चार पुस्तकें
मगाने पर डाकखर्च माफ

- प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री
- प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों सुलभ चित्रों से सुसज्जित
- सरस कथा शैली
- फोटोटाइप सैट
- बढ़िया कागज पर
- ऑफसैट छपाई

Some of these books are also available in English.
Price: Rs. 15/-
Postage: Rs. 4/-

इस शृंखला में प्रकाशित पुस्तकें
विश्व-प्रसिद्ध.... 1.खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामे 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स (भाग एक) 9. रिकॉर्ड्स (भाग दो) 10. वैज्ञानिक 11. विनाश-लीलाएं 12. दुर्घटनाएं 13. गुप्तचर संस्थाएं 14. जासूस 15. निकित्सा-पद्धतियां 16. प्रेरक-प्रसंग

शीघ्र प्रकाश्य:
• हत्यारे • राजनैतिक स्कैण्डल • खेलनियां • सभ्यताएं • जासूसी कांड • अध्यात्म • कला • खोजी यात्राएं • राजनैतिक हत्याएं आदि।

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार करना है।

इस शृंखला में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो खोजें में मिट्टी के तेल, चीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। अनसुलझे रहस्य में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेतों तथा रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो गुप्तचर संस्थाएं में सी.आई.ए., के.जी.बी. आदि का काला चिट्ठा है और जासूसी में हैं जासूसी के अद्भुत कारनामे।

इसी प्रकार अन्य पुस्तकें भी अपने-अपने क्षेत्रों से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाली एक सचित्र 'मिनी एनसाइक्लोपीडिया' हैं।

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टालों पर मांग करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते:

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006.
10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपेदिक के विरुद्ध अभियान

1. यदि आपको लगातार दो हफ्तों से भी अधिक समय से खांसी है या थूक में खून आता है, तो हो सकता है, आपको फेफड़ों की तपेदिक हो ।

2. अपने नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, औषधालय या तपेदिक केन्द्र पर स्वयं की, विशेष कर अपने थूक की, जांच कराएं।

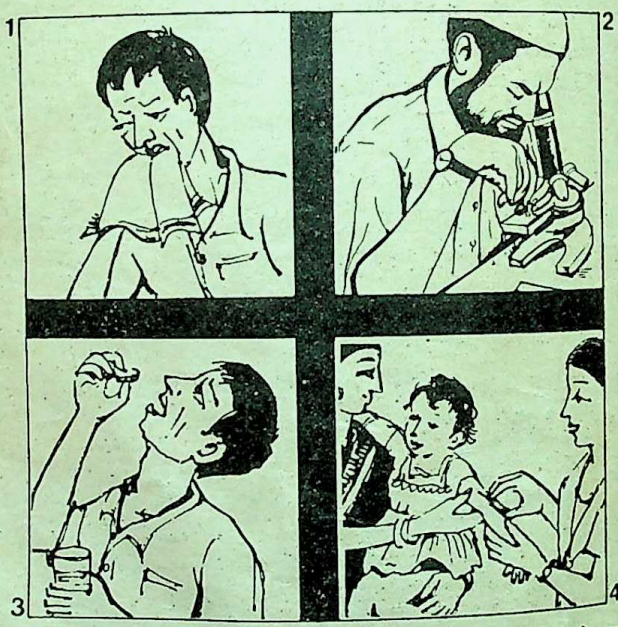

3. तपेदिक का इलाज किया जा सकता है, बशर्ते डाक्टर द्वारा बताई गई दवाइयां नियमित रूप से निर्धारित अवधि तक ली जाएं ।

4. बचाव हमेशा इलाज से बेहतर है, इसलिए अपने बच्चे को बी.सी.जी. का टीका लगवाएं ।

केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय,
कोटला रोड, नई दिल्ली-110002

davp 87/585

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे आपके नित्य जीवन का अभिन्न अंग

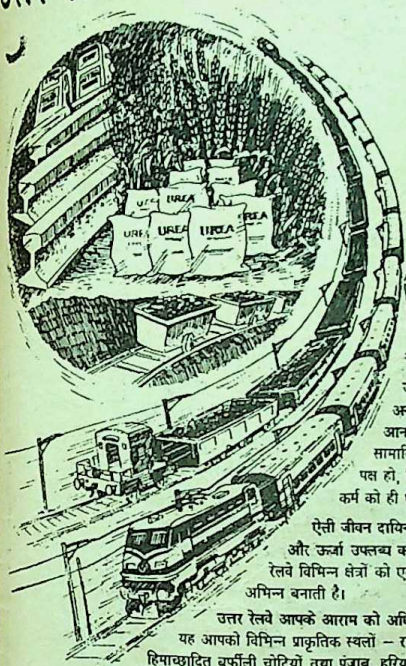

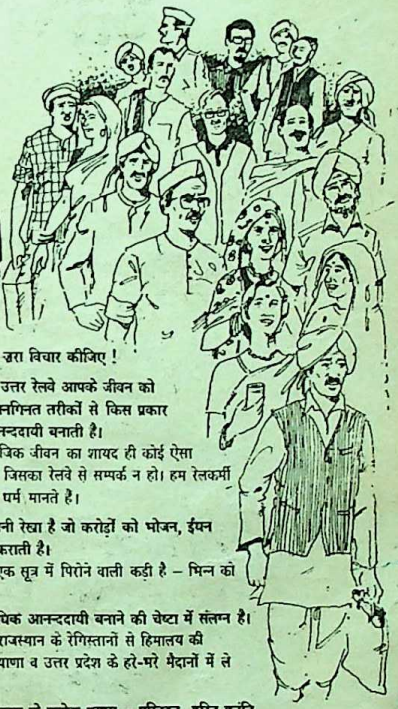

ज़रा विचार कीजिए !

उत्तर रेलवे आपके जीवन को अनगिनत तरीकों से किस प्रकार आनन्ददायी बनाती है।

सामाजिक जीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो, जिसका रेलवे से सम्पर्क न हो। हम रेलकर्मी कर्म को ही धर्म मानते है।

ऐसी जीवन दायिनी रेखा है जो करोड़ों को भोजन, ईंधन और ऊर्जा उपलब्ध कराती है।

रेलवे विभिन्न क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोने वाली कड़ी है – भिन्न को अभिन्न बनाती है।

उत्तर रेलवे आपके आराम को अधिक आनन्ददायी बनाने की चेष्टा में संलग्न है।

यह आपको विभिन्न प्राकृतिक स्थलों – राजस्थान के रेगिस्तानों से हिमालय की हिमाच्छादित बर्फ़ीली चोटियों तथा पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के हरे-भरे मैदानों में ले जाती है।

उत्तरी भारत में रेलवे लगभग सवा सौ वर्षों से राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक प्रयास – परिवहन, हरित क्रांति, ऊर्जा उत्पादन, तीव्र औद्योगीकरण आदि में सक्रिय योगदान दे रही है।

उत्तर रेलवे प्रतिदिन 900 मेल/एक्सप्रेस एवं सवारी गाड़ियों में 11 लाख यात्रियों का वहन करती है। साथ ही प्रतिदिन 2 लाख टन माल ढोया जाता है।

उत्तर रेलवे की दैनिक गतिविधियों में शामिल है –

- 47,000 टन अनाज का उत्तर के उपजाऊ क्षेत्र से देश के विभिन्न भागों को परिवहन
- 62,000 टन कोयला, उद्योगों के लिए पहुँचाना.
- 15,000 टन पेट्रोलियम पदार्थों का यातायात.
- 17,000 टन खाद ढोना.

ये सब देश में आत्म-विश्वास तथा आत्म-सम्मान की भावना की जागृति लाने में सहायक है।

रेल पटरियों का जाल, जीवन दायिनी शिराओं और धमनियों की भांति काम कर रहा है।

उत्तर रेलवे करोड़ों देश वासियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सतत प्रयत्नशील है।

भारतीय रेल

उत्तर रेलवे

उत्तरी क्षितिज में स्थिर और निरंतर चमकता हुआ नक्षत्र है – उत्तर रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी दुनिया ही पलट जाती...

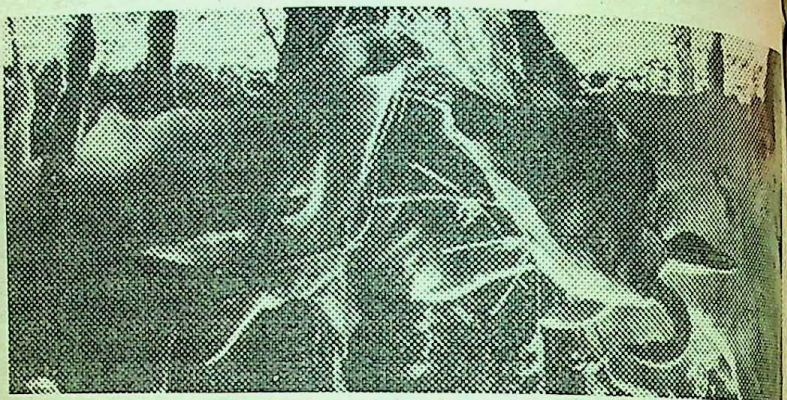

अगर मैं न्यू इन्डिया से पशुधन बीमा न करवाता.

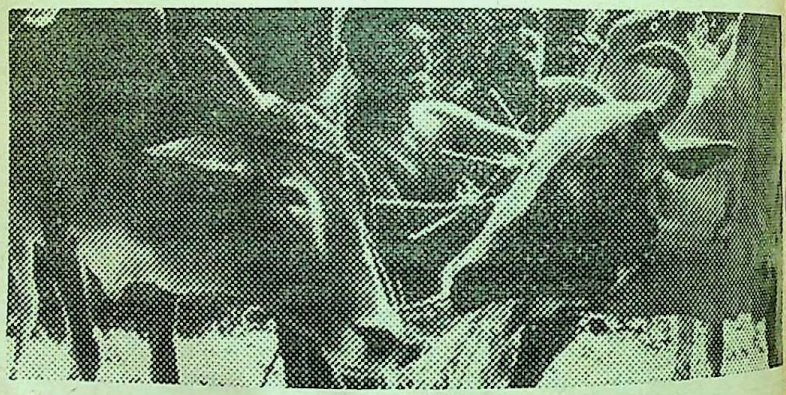

मेरे बैल मर गए लेकिन काम नहीं रुका, क्योंकि न्यू इन्डिया की बदौलत मैं नए बैल ख़रीद सका.

एक किसान के लिए उसके बैल कितने मूल्यवान होते हैं, यह बात वह और उसके परिवारवाले अच्छी तरह जानते हैं. लेकिन वे ही बैल अगर बीमार पड़ जाएं, दुर्घटना में बेकार हो जाएं... या मर जाएं तो? ऐसे में, न्यू इन्डिया एश्योरन्स एक सच्चे मित्र की तरह उसका सहारा बनता है.

पशुधन बीमा – न्यू इन्डिया एश्योरन्स का

सालभर में, जानवर की कीमत के हर 100 रुपए पर ज़्यादा से ज़्यादा 4 रुपए देने पड़ते हैं... बस! देशभर में न्यू इन्डिया एश्योरन्स के लगभग 1000 कार्यालय हैं. ज़्यादा जानकारी के लिए आज ही एजेंट से मिलें या अपने नज़दीकी कार्यालय में पधारें.

न्यू इन्डिया एश्योरन्स

भारत सरकार उपक्रम और निगम की एक आदर्श इकाई

पशुधन बिमा - नुकसान में आपका रक्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **वंशधर**— क. परिवार का मुखिया, ख. संतति, ग. अच्छे कुल का, घ. वंश में श्रेष्ठ।

२. **उद्देश्य**— क. कथन, ख. संकेत, ग. लक्ष्य, घ. इच्छा।

३. **गुणान्वित**— क. कई गुना, ख. अत्यधिक, ग. गुणयुक्त, घ. मिलते-जुलते गुण।

४. **अश्रु**— क. जिसकी आंखों में आंसू हों, ख. जो फूट-फूटकर रो रहा हो, ग. दयनीय, घ. विवश।

५. **छिन्नमूल**— क. अलग-थलग, ख. जो जड़ से फट गया हो, ग. विनाश, घ. लुप्त।

६. **निःसृत**— क. भेजा हुआ, ख. निकला हुआ, ग. टपकता हुआ, घ. छिपा हुआ।

७. **निदारुण**— क. अकेला, ख. कठिन, ग. निर्दय, घ. व्यर्थ।

८. **जठराग्नि**— क. भारी आग, ख. ज्वालामुखी, ग. पेट में भोजन पचानेवाली गरमी, घ. प्रबल भूख।

९. **उदीयमान**— क. बहता हुआ, ख. प्रसिद्ध, ग. प्रकट, घ. उदय होता हुआ।

१०. **आचारवान**— क. अचार रखने का बरतन, ख. सच्चा, ग. सदाचारी, घ. निष्ठावान।

११. **उत्कोच**— क. ऊंचाई, ख. नोचना, ग. चोटी, घ. घूस।

१२. **अग्रासन**— क. पूजा का स्थान, ख. प्रतिष्ठा का आसन, ग. बैठने की जगह, घ. आगे का भाग।

१३. **अगवानी**— क. पहले आना, ख. पेशगी, ग. स्वागत के लिए आगे बढ़ना, घ. अगहन में होनेवाली फसल।

१४. **तबका**— क. दर्जा, ख. समुदाय, ग. जगह, घ. तरक्की।

उत्तर

१. ख. संतति, संतान, वंश के रक्षक। उसके **वंशधरों** ने कुल के नाम को और ऊंचा किया है।

२. ग. लक्ष्य, मकसद। उच्च **उद्देश्य** की प्राप्ति उच्च साधनों के प्रयोग से ही संभव है। (विशेषण-**उद्दिष्ट**)

३. ग. गुणयुक्त, गुणवान। नैतिक शिक्षा ही नयी पीढ़ी को **गुणान्वित** बनाती है।

४. ख. जो फूट-फूटकर रो रहा हो। अकस्मात विपत्ति आने से वह **अश्रु** हो गया।

५. ख. जो जड़ से कट गया हो। कोई भी परंपरा सहसा **छिन्नमूल** नहीं हो सकती।

६. ख. निकला हुआ। गोमती नदी एक झील से **निःसृत** होकर काफी बड़े मैदानी इलाके में बहती है।

७. ग. निर्दय। किसी को **निदारुण** पीड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्ति-१०७

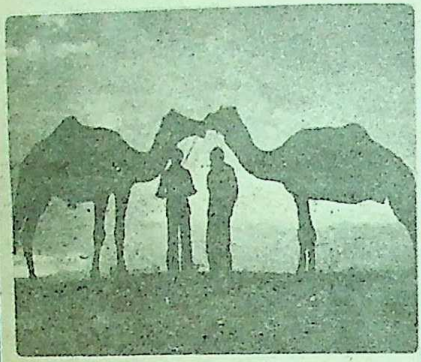

हैं मिलते

प्रथम पुरस्कार

जीवन की आपा-धापी में
एक दिन सब हैं गिरते
माया की नगरी में लोग
नाटक करते फिरते
अपना लगता केवल वह पल
जब कभी दो जीव हैं मिलते

— नंदलाल प्रजापति
एच एच-८६५ हिडालको कालोनी
पोस्ट : रेणुकूट, जिला मीरजापुर (उ. प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

गोधूलि की बेला में
मूक मंत्रणा का कोलाहल
सिंदूरी संझा को देता
सूरज अपना मौन निमंत्रण
संकेतों के आह्वान पर
इस बेला हम भी हैं मिलते

— रश्मि शर्मा
द्वारा श्री रतनलाल शर्मा,
ई-१०५ कमलानगर, दिल्ली-११०००७

महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति स्वयं भी सुखी नहीं रह सकता।

८. ग. पेट में भोजन पचानेवाली गरमी। यह कच्चा भोजन भी पचा गया, उसकी जठराग्नि प्रबल है।

९. घ. उदय होता हुआ। **उदीयमान** कलाकार को उचित प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

१०. ग. सदाचारी, अच्छे चरित्रवाले। **आचारवान** व्यक्तियों का संसर्ग लाभप्रद होता है।

११. घ. घूस, रिश्वत। प्राचीन काल में उत्कोच का वर्णन मिलता है, किंतु व्यापक रूप में नहीं।

१२. ख. प्रतिष्ठा का आसन। गुरुजन अग्रासन पर विराजमान हैं। (अग्र+आसन)

१३. ग. स्वागत के लिए आगे बढ़ना। नेता की **अगवानी** के लिए अनेक व्यक्ति उपस्थित हैं।

१४. ख. समुदाय, समूह। निचले तबके के लोगों को ऊपर उठाने की कोशिश करनी चाहिए। (अरबी)

पारिभाषिक शब्द

रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट = दूर संवेदी उपग्रह
लैंडमार्क = भू-चिह्न
न्यूक्लियर वेपन्स = नाभिकीय अस्त्र
रिसर्चर = शोधकर्मी
सिमिलैरिटी = सदृश्यता
ट्राफी = विजय-चिह्न
टेक्नीक = प्रविधि
आटोग्राफ = स्वाक्षर
रनवे = अवतरण-पथ
क्रास-ब्रीडिंग = संकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

दृष्टिहीनता बाधक नहीं

सर्वप्रथम सन १८८७ में एक महिला एन्नी शार्प ने दृष्टिहीनों के लिए अमृतसर में एक विशेष स्कूल खोला था। लेकिन तब से अब तक रोशनी से दूर अंधेरे में जीवन बितानेवाले लोगों के लिए, खास तौर पर उन्हें शिक्षित करने की दिशा में बहुत कुछ कार्य हुआ है। लेकिन हमारे देश में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो स्वयं दृष्टिहीन होते हुए भी, पहले तो स्वयं शिक्षा के क्षेत्र में चरमोत्कर्ष पर पहुंचे और फिर उन्होंने दूसरों को शिक्षा की ज्योति दिखायी। निःसंदेह उनका व्यक्तित्व-प्रेरणादायी है।

ऐसे ही एक विद्वान हैं डॉ. भरत मिश्र। बचपन में ही इनके नेत्रों की ज्योति चली गयी थी। लेकिन इन्होंने अपनी लगन और मेहनत से एम.ए. किया। फिर मगध विश्वविद्यालय से 'नागरिक स्वतंत्रता और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि ली और आजकल वह आरा के एक डिग्री कालेज में रीडर के पद पर कार्यरत हैं। उनकी इस उन्नति की यात्रा में अनेक अवरोध आये, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। मिश्रजी ने नेत्रहीनों के लिए शिक्षा सुलभ कराने के क्षेत्र में जो सराहनीय कार्य किया है, उसके फलस्वरूप इन्हें सन १९८५ में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया गया। इस वर्ष उन्होंने बिहार में दृष्टिहीन बालिकाओं के लिए एक विद्यालय खोला है तथा ब्रेल लिपि में दृष्टिहीनों के लिए पुस्तकें लिखी हैं।

'पद्मश्री' मिलने से पूर्व सन १९७९ में उन्हें उत्कृष्टतम विकलांग कर्मचारी के रूप मे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। डॉ. मिश्र को अपनी मातृभाषा भोजपुरी के अलावा हिंदी, अंगरेजी, बंगला, उर्दू, मैथिली, मगधी और अन्य कई भाषाओं का ज्ञान है। संगीत तथा हस्तकला के क्षेत्र में भी उनकी गहरी पहुंच है। हिंदी, अंगरेजी में अब तक उनकी पांच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। निःसंदेह डॉ. भरत मिश्र साहस और सफलता की एक ऐसी मिसाल हैं, जिन्होंने कई बार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपने देश का गौरव बढ़ाया है और आज भी वह चुपचाप विकलांगों के कल्याण में अपनी पूरी निष्ठा के साथ जुटे हैं। पचास वर्ष की उम्र में आज जीवन के प्रति जो आस्था और उत्साह उनमें है, वह वस्तुतः प्रशंसनीय है।

—ममता

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से 'पद्मश्री' ग्रहण करते हुए डॉ. भरत मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

मई अंक में 'सीता के निर्वासन का प्रसंग रामचरित्र को कलंकित करने का षड्यंत्र' लेख खरा-खरा है। साहित्य-संस्कृति तथा इतिहास के साथ तोड़फोड़ करनेवालों के गालों पर यह करारे तमाचे-जैसा लगनेवाला लेख है।

'कहीं सीमुर्ग प्रदेश ही तो बैकुंठधाम नहीं है' लेख एक उच्चकोटि की सामग्री की प्रस्तुति है, जो प्रश्न तो उठाती ही है, उनके समाधान भी जुटाती है। सच तो यह है कि यह लेख ईश्वर आराधना की विभिन्न पद्धतियों में एकरूपता का मार्ग दर्शाती है। वेद सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है तथा वैदिक आचरणों से परे न तो कोई आराधना-विधि है और न प्रभु तक पहुंचने का मार्ग। क्षेत्र विशेष तथा समयानुसार इसमें स्वाभाविक परिवर्तन तो होते रहे हैं परंतु मूल वेद ही रहे। अनेकानेक विद्वानों के अनुसार 'इस्लाम' भी वैदिक पद्धति है। इस संबंध में निम्न उद्धहरणों से काफी प्रकाश पड़ सकता है—

संस्कृत भाषा में 'मख' का अर्थ पूजा की अग्नि होता है। सभी जानते हैं कि इस्लाम के आने से पहले समस्त पश्चिम में अग्नि-पूजा का चलन था। 'मख' इस बात का सूचक है कि वहां एक विशिष्ट अग्नि मंदिर था। मक्का-मदीना वास्तव में मखमेदिनी अर्थात यज्ञ की भूमि का सूचक है।

इस्लाम-आराधक सामान्य रूप से विस्मयादिबोधक अत्यय एवं आराधना के लिए या अल्लाह (अल्लः) का प्रयोग करते हैं। यह शब्द भी विशुद्ध रूप से संस्कृत मूल का है। संस्कृत में अल्लः, अवकः और अंक पर्यायवाची हैं और इनका अर्थ माता अथवा देवी से होता है। मां दुर्गा का आह्वान करते समय 'अल्लः' का प्रयोग किया जाता है। अतः 'अल्लाह' शब्द इस्लाम में पुरातन काल से संस्कृत से ज्यों का त्यों ग्रहण कर प्रयोग में लाया जाना स्पष्ट होता है।

मुस्लिम माह 'रबी' सूर्य के द्योतक 'रवि' का अपभ्रंश लगता है, क्योंकि संस्कृत का 'व' प्राकृत में 'ब' में परिवर्तित हो जाता है।

यह आश्चर्यजनक साम्य है कि अधिकांश मुस्लिम त्योहार शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाये जाते हैं, जो एकादशी के पुरातन वैदिक महत्त्व का द्योतक हैं। सुअवसर पर चंद्रोदय की इस्लामी प्रथा वैदिक या मूल हिंदू रीति के अनुसार संकट-चतुर्थी आदि के व्रत तोड़ने की परंपरा से मेल खाती है।

इसी प्रकार संस्कृत में ईड का अर्थ पूजा है। पूजा से आनंद जन्मता है। आनंदोत्सव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में इस्लाम का शब्द 'ईद' विशुद्ध रूप से संस्कृत का ही है। हिंदू धर्म में राशियों का विवरण है एक राशि मेष है जिसका संबंध मेमने (भेड़) से है। पुराने समय जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था, तो नवीन वर्ष का आरंभ होता था। इस अवसर पर मांस भोजन का प्रचलन था। लोग ऐसा करके अपनी खुशी प्रगट करते थे। 'बकरी-ईद' का उद्भव इसी तरह हुआ होगा। 'ईद गाह' भी इसी तरह सामने आया होगा। जहां तक रमजान का सवाल है, वह संस्कृत की दो धातुएं 'नम्' और 'यज' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ झुकना तथा पूजा करना है।

प्रार्थना आरंभ करने से पहले शरीर के पांच अंगों की स्वच्छता मुस्लिमों के लिए अनिवार्य है। यह विधान भी 'शरीरशुद्धयर्थ पंचागन्यास' से ही व्युत्पन्न स्पष्ट होता है।

इससे प्रतीत होता है कि मूलाधार एक ही है केवल पूजाविधि परिवर्तित है।

—बृजकिशोर शुक्ल, भोपाल

बीकानेर से हमें ७५ वर्षीय एक वृद्धा मां का पत्र मिला है, जिसे हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। —संपादक

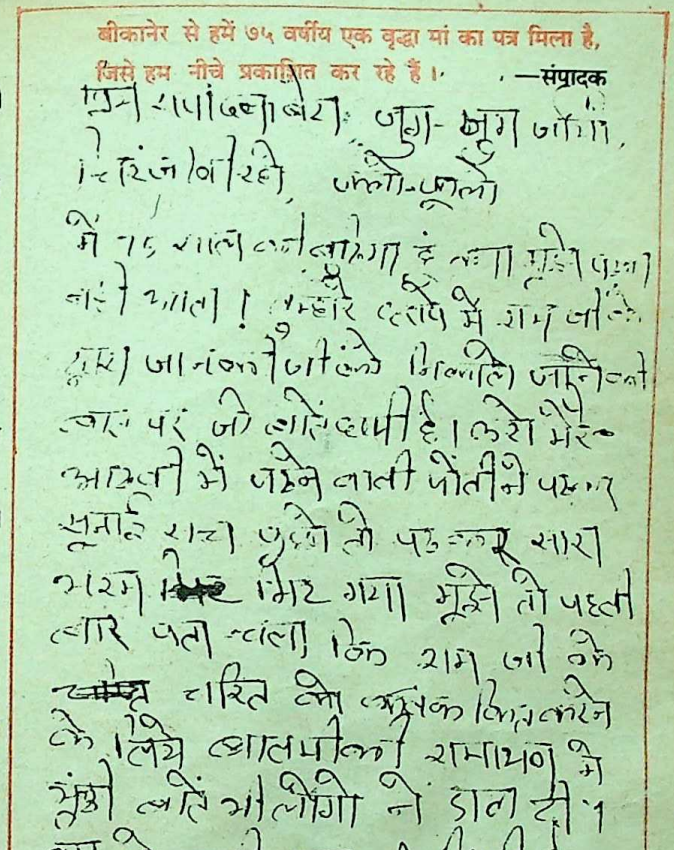

समाजवाद का अनुशीलन

अप्रैल अंक में सारगर्भित काल-चिंतन मन को भा गया। डॉ. चिंतामणि शुक्ल का लेख 'रामचरित मानस में समाजवाद का अनुशीलन' विशेष पसंद आया।

'कादम्बिनी' ही एकमात्र ऐसी साहित्यिक निधि है, जो मोह लेती है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि यह अपना नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल गये हम

प्रथम पुरस्कार : ६० रुपये, द्वितीय पुरस्कार : ४० रुपये

अंतिम तिथि : २० जून

पूर्णरूपेण चरितार्थ करने में सक्षम है क्योंकि, कादम्बिनी से रिसती जलराशि जिस प्रकार पृथ्वी के प्रत्येक भाग को समान रूप से आप्लावित करती है, वैसे ही यह पत्रिका भी उच्चस्तरीय साहित्य को समस्त विधाओं के माध्यम से आप्लावित करती है।

—डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, वृंदावन

कृषि क्रांति और देवासुर संग्राम

अप्रैल अंक के 'कृषि-क्रांति और देवासुर संग्राम' लेख में लेखक ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से उत्पादन के साधनों के आधार पर समाज का वर्गीकरण किया है। हजारों वर्षों से चली आ रही देवता और असुर की धारणा का लेखक ने एक नवीन रूप दिया है, जो भले ही सामाजिक रूप से स्वीकृत न हो, परंतु सोच को एक नई दिशा तो प्रदान करता ही है।

—रमेश चन्द्र, [illegible]

अप्रैल अंक में गिरीशचन्द्र भट्ट की उत्कृष्ट की वैसाखी एक ऐसी 'दस्तक' है, जो जीवन के बीहड़ पथ पर पुरजोर संबल बन जाती है। ऐसी दस्तक अगर जीवन के दरवाजे पर पड़े तो अंतर की ऊर्जा को धधका देती है।

मधुश्री की 'वह सी तुम' कविता सत्य की अनुभूति है, स्पष्ट अंतःसाक्ष्य है और वर्तमान सभ्यता के मुख पर उबकायी की थूक का दाग है। खीझ, घुटन, कुंठा एवं तनाव की कुक्षि से ऐसी ही आग्नेय कविता जन्म लेती है।

—दिवाकर महाजन, मधेपुरा (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय के हस्ताक्षर

गरमियों के दिनों में पहाड़ बुलाते हैं । उनकी आवाजें मैदानों में आकर फैल जाती हैं । मैदानों से आवाजों के गरम बबूले उठते हैं और वही पहाड़ों में जाकर लोरियां बन जाते हैं ।

पहाड़ों का अपना आकर्षण है । चारों ओर फैली हरियाली, दूधिया प्रपात, झीलें और नम हवाएं—ये सभी वे उपकरण हैं, जिनसे शरीर को सुख मिलता है और मस्तिष्क को भोजन । यहां की तरोताजा हवा हमारे फेफड़ों को वर्षभर लड़ने के लिए मजबूत बना देती है ।

'कादम्बिनी' के अनेक पाठक गरमियां बिताने के लिए पहाड़ों पर जाना चाहते हैं । प्रतिदिन बढ़ती हुई कीमतों के कारण उन्हें अपना बजट बनाने में बहुत कठिनाई होती है । हमने उनके लिए बजट बना दिया है और संकेत भी दे दिये हैं कि जितनी उनकी चादर हो, उतने पैर वे पसारें । किन-किन स्थानों में जाया जा सकता है, इसकी विस्तृत जानकारी इस अंक में मिलेगी । यहां अंक कई दृष्टियों से संग्रहणीय भी है । हर साल गरमियां आती हैं । तब यह अंक आपके लिए एक स्थायी डायरी है । प्रति वर्ष उसमें थोड़े-बहुत परिवर्तन की जरूरत पड़ेगी, जो हम करते रहेंगे ।

अगले अंक से हम घोषित स्तंभ प्रकाशित करने जा रहे हैं । उनमें मुख्य है— 'मेरा प्रिय पात्र' । आपको अपने सुपरिचित कलाकारों की रचना-प्रक्रिया और उनके पात्रों से आत्मीयता के साथ मिलने का अवसर मिलेगा । प्रत्येक वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखकर हमने सामग्री का वर्गीकरण किया है । सुविधा यह होगी कि पाठक अपने मन की रचना सबसे पहले पढ़ लें ।

अगस्त अंक फिर एक विशेषांक होगा । विस्तृत सूचना अगले अंक में ।

हम अपने पाठकों को नित नवीन सामग्री देने का प्रयत्न कर रहे हैं । हम चाहते हैं, पाठक भी हमें लिखें कि उन्हें 'कादम्बिनी' में और किस तरह की सामग्री चाहिए । वे अपने सुझाव संपादक को निजी रूप से भेज सकते हैं । उनका स्वागत किया जाएगा ।

हिंदी के अग्रणी साहित्य-मनीषी एवं कवि श्री वियोगी हरि के आकस्मिक निधन से हिंदी-जगत को अपूरणीय क्षति पहुंची है । 'कादम्बिनी' परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि ।

जून, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष २८ : अंक ८
जून १९८८

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

सेवकराम ओखाड़ू
सैर तो कीजिए, पर देखिए २०

शशिकांत मिश्र
पर्यटन उद्योग के लिए २८

राजेन्द्र अवस्थी
महासागर के बीच ३३

रणजीत सिंह
उसने फिर जन्म लिया ५०

राम गुप्ता
पारदर्शी झील में ५५

भगवतीशरण सिंह
सौंदर्य तीर्थों से ५८

क्रेजी ब्याय
सैलानियों का स्वर्ग ६४

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—७, आस्था के आयाम—९, प्रतिक्रियाएं—१०, समय के हस्ताक्षर—१३, काल-चिंतन—१६, कार्टून कोना—२६, गोष्ठी—४६, वैद्य की सलाह—४८, सीपिकाएं—११३, बुद्धि-विलास—११९, विधि-विधान—१२०, हंसिकाएं—१२६, ज्ञान-गंगा—१५१, आइए चलें जंगल की ओर—१५२, प्रवेश—१६८, दस्तक—१७२, नयी कृतियां—१७५, यह महीना और आपका भविष्य—१७९, तनाव से मुक्ति—१८३, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१८६।

आवरण : प्रमोद भानुशाली

आशीष
अरावली शिखर पर माउंट आबू ३८

डॉ. सुरेश धींगड़ा
देखें, हाथियों को पेरियार में ७८

दीप्ति नारद
अभिशप्त रहस्यों में डूबी ८३

एस. अहमद
भूतों का गांव मांडू ८८

गंगाप्रसाद विमल
बर्फानी सन्नाटे के बीच ९८

राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह
पर्यटन कूमायूं की पहाड़ियों में १०४

उग्रसेन गोस्वामी
अमरनाथ की राह पर १२४

डॉ. ट्यूट्रान
समंदर की लहरों पर १३३

भगवतीप्रसाद डोभाल
ग्रहों में मनुष्य बसेंगे १३८

नवीन पंत
हिमालय की गोद में १३४

मीनाक्षी शर्मा
सौंदर्य के बीच अकेले १४१

प्रदीप श्रीवास्तव
क्या प्रेम-संबंधों में आदर्श १४४

डॉ. सोमदत्त दीक्षित
अंदमान अब काला पानी नहीं १५७

कमला मनकेकर
समुद्र तट का सौंदर्य क्षेत्र १६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

रणवीर सिंह राही
जल प्रपातों से भरा मैनाल १७०

कहानियां, हास्य-व्यंग्य

अभिमन्यु अनत
छपते-छपते ३९
कर्तार सिंह दुग्गल
नसीबो अपने गांव लौट गयी ७३
गोपाल चतुर्वेदी
अब नेता पैदल चलेंगे ९२
निर्मला वाजपेयी
व्यर्थ १०७
जगतराम साहनी
मुक्त १४६

कविताएं

सूरज मुजफ़्फरपुरी
हमारी तलहटी/इतिहास की राह ६६
डॉ. श्याम सिंह शशि
अग्नि-सागर ९७
ओदोलेन स्मेकल
तनिक प्रीत : तनिक शीत १६७

सार-संक्षेप

कुंवरलाल व्यास शिष्य
चौदह मनुओं का इतिहास १८८

संपादकीय परिवार

सह संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक
कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली—११०००१
वार्षिक मूल्य : ५३ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

चरैवेति चरैवेति

चलते रहो, चलते रहो !

□

—अनंत पथ, गंतव्य अपरिचित, मार्ग अनजाना, अनचीन्हा; ज्ञात है मात्र लक्ष्य ।

—लक्ष्य सहज साध्य नहीं है । असीम चेतनामय मानव मस्तिष्क ब्रह्मांड से लेकर पृथ्वी और महासागर के अंतिम तल को अपनी पहचान में कैद करना चाहता है !

—कभी गुलबकावली के लिए राजकुमारों ने नदियों, पर्वतों और दुर्गम घाटियों की मर्यादाओं पर प्रतिघात किये थे ! अब ब्रह्मांड की अखंड श्रृंखलाओं पर वह अपने पद-चिह्न देखना चाहता है ।

—तब प्यार की तड़प और राजकुमारी के क्षणिक सौंदर्य को अपने भुजपाश में कैद करने की आशंका ! अब श्रेय प्यार नहीं मानव-शक्ति का अहंकार है ।

—इस अहंकार का मोहभंग पहली बार तब हुआ जब 'चंद्र-मुखी' शब्द भग्न हुआ और सौंदर्य-बोध के विगत सहज आयाम इच्छाओं के अपरिमित भंडार में विस्फोट के बाद चूर-चूर होने की स्थिति में आ खड़े हुए ।

□

—प्रश्न उठा : यही लक्ष्य था ? काल-चेतना के समस्त आयाम इसी नियति के लिए थे ?

—मोहभंग के बाद भी अहंकार की अभेद्य मानव-शक्ति जिज्ञासाओं के झुरमुट में निरंतर अब भी अग्रसर है । अब किसी सौंदर्य-बोध की दृष्टि का पहरुआ नहीं है वह, प्यार को समेटने का लक्ष्य भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, विजय-ध्वज पताकाओं से साम्राज्यवाद की कल्पना भी नहीं, मात्र शक्तियों के प्रदर्शन का प्रबंध-काव्य रह गया है !

—रह सकता है ? — सहज जिज्ञासा है ? रहेगा तो प्रबंध-काव्य समय की शिलाओं में नष्ट होकर मात्र लोक-काव्य नहीं रह जाएगा ?

—सृष्टि के विनाश और विध्वंस से लेकर नयी सृष्टि के निर्माण तक का इतिहास साक्ष्य है इसी सत्य का : अंततः स्वच्छ पत्र पर अंकित अक्षरों की समाप्ति लोक-स्वरों में हुई है।

—लोक-स्वरों को हमारी महान बौद्धिकता ने बांधा है; बांधा है, फिर बांधा है, अंततः तट से सिर पीटती महासागर की लहरों की तरह अथवा जीवन दायिनी पृथ्वी के प्रकोष्ट से उद्भूत रौद्र के प्रज्वलित लावा में उसका विलय हुआ है।

—मानव अपराजेय है; नकारात्मक न उसकी वास्तविक नियति है और न पराजय। फिर-फिर उठा है वह, नये नीड़ का निर्माण कर अपनी अनश्वरता का उसने परिचय दिया है !

□

- खोजी मन
- जिज्ञासु मस्तिष्क
- रक्त-शक्ति के स्रोत
- पहचान की प्यास
- विजयश्री का श्रद्धा-ध्वज

—ये सब मनुष्य की जीवनी-शक्ति हैं, अपरिवर्तित हैं !

—प्रेरणाओं के इन्हीं केंद्रों से यात्राओं का आरंभ हुआ : जल, थल, नभ सभी को रौंदने का क्रम चला।

—पहली बार मनुष्य चला था नंगे पैर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—नंगे पैर चलने से धरती की धड़कन सुनी जा सकती है।
—धड़कनों के अर्थ और भार को समझा जा सकता है।
—धरती की धड़कनों को जितना अधिक आत्मसात जिसने किया है, वह उतना बड़ा ही ज्ञान का ग्रंथ बना है।
—पुस्तक वही नहीं है जो शब्दों, अक्षरों से उभरी है, उससे बड़ी पुस्तक किसी मस्तिष्क में समाहित है।
—हां, आदमी एक पुस्तक है !
—आदमी एक महान ग्रंथ है, जो अब तक अलिखित है।
—यह मानव ग्रंथ कुछ पृष्ठों और इकाइयों में सीमित नहीं है, वह निरंतर विकासमान है; हर पल, हर क्षण एक नये अध्याय को जोड़ता चलता है।
—ज्ञान का यह विकास बंद कमरों में नहीं हुआ, न किसी पाठशाला में।
—निरंतर विकसित ज्ञान मनुष्य मन की आकुल-व्याकुल और अतृप्त प्यास है।
—भटकन के अनंत कोषों ने ज्ञान-कोषों को समृद्ध किया है।

□

—भटकना सहज नहीं है।
—भटकन जो उल्लेख्य है, वह सजग दृष्टि और नंगे पैरों के साथ जुड़ी हुई है।
—जितना देखेंगे, जितना भोगेंगे, जितना समटेंगे, जितनी विशाल हमारी भुजाएं होंगी, जितना खुला मस्तिष्क होगा, जिस सीमा तक परंपराओं को रौंद सकेंगे हम— विशाल उतना ही होगा हमारा ज्ञानागार।
—अर्जित ज्ञान भंडार को कभी किसी लक्ष्मीपति से भय नहीं होता। वह स्वयं अभय का वरदान है और अनंत सूर्यों से अधिक क्षमतावान प्रज्ज्वलित ज्वालामुखी है, चौर्यभय से पंथ जिसका अपरिचित है।
—तो देखिए, कितना देख सकते हैं।
—पढ़ने से ज्यादा देखिए तो, बहुत-सा लिखा हुआ अधूरा अथवा गलतियों से भरा होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—स्वीकारिए इसे कि हर लिखा शब्द सत्य नहीं है। जिस दिन वह सत्य हो जाएगा, समस्त रचना-प्रक्रिया को विश्राम मिल जाएगा और हम अंध-कूप में घिर जाएंगे।

—गलत को सुधारना, सुधरे को संवारना और फिर नयी संरचना से ज्ञान के अपरिमित भंडार में अपना होम डालना हमारी सहज प्रकृति है।

—खुले नयन, श्रव्य के सुलभ आयाम, परिचय प्रत्येक पल का, प्रत्येक दृष्टि का, प्रत्येक मौसम का और उस प्रत्येक प्रतीक का जो सहज हो अथवा श्रमशील, लूट लें हम लुटेरों की तरह तो सजा के नहीं पूजा के पात्र होंगे हम।

—हमारे ज्ञान के सामने विनत विश्व का हर अतृप्त प्राणी याचक बनकर आएगा, मात्र एक बूंद का एक अंश पाने के लिए।

—ब्रह्मांड में जितना भी विकसित हुआ है, जो कुछ, इसी संचय केंद्र के एक नन्हें अंकुर से ही उभरा है। उभरकर वट-वृक्ष भले बना हो, अपनी क्षुद्रता से वह परिचित नहीं है। यह क्षुद्रता घृणा नहीं है, न बौनेपन का एहसास है; अपने ज्ञानागार को क्रमशः विकसित करते रहने का उपक्रम है।

—ज्ञान गुणातीत है।

—ज्ञान परमशांति है।

—ज्ञान परम-प्रेम का उच्चशिखर है।

—ज्ञान का प्राण तत्व प्रेम है।

—प्रेम का स्वरूप मनुष्य चेतना है, जो महादेशों, देशों, जातियों, व्यक्तियों और शरीर के रोम-रोम को बांधता है।

□

—तो चलिए, कबीर की तरह अपना घर छोड़कर; वापस लौटेंगे या जहां आवास 'घर' की संज्ञा देगा, हम महाकाल के विराट् ज्योति पुंज होंगे : एक नये वाल्मीकि, नये कालिदास, नये होमर, अरस्तू या कुछ और ... नाम जो भी हो।

—इसीलिए प्रारंभ किया था मैंने

चैरैवेति चरैवेति

बस, चलते रहो, चलते रहो।

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैर तो कीजिए, पर देखिए साथ कौन है ?

● सेवकराम ओखाड़ू

चारों तरफ पहाड़ हैं, एक ओर बहता हुआ झरना है, जो पहाड़ों से निकलकर आ रहा है, लगता है किसी भूरे बालोंवाली लड़की के सिर के बीच मांग निकल आयी है । मांग सीधी और सपाट है । झरना पहाड़ी तो है, लेकिन मांग से कतई अलग नहीं— न कहीं कमर में लचक की तरह मोड़ और न कहीं ऊंची जगह से नीचे गिरकर दूध या फुहारों में बदला हुआ पानी । हवा शांत है । मौसम स्वप्नीला है । तभी राधा ने आवाज दी, "अरे, सुनते हो सब्जियां तो ले आओ, खाना कैसे बनाएंगे ?" मेरी आंखें समूचे सौंदर्य को भर लेना चाहती हैं, लेकिन राधा को घर की पड़ी है और सब्जी की, यहां क्या आये, एक बहुत बड़ी गलती की । लेना था होटल का कमरा, ले लिया फारेस्ट का रैस्ट-हाउस । यहां खाना बनाने की पूरी सुविधाएं थीं— घर से निकलते वक्त राधा से साफ कह दिया था कि खाना-वाना कहीं बनेगा नहीं, बना-बनाया खाना खाएंगे । घर का खाना तो रोज खाते हैं, सैर के लिए निकले हैं, तो घर भूलना पड़ेगा । खुदा बचाये इन औरतों से, इनने रसोई घर क्या देख ली, शापग्रस्त भौंरे की तरह उसी में घुस गये । सोचा भी तो होता कि सैर-सपाटे के लिए निकले हैं, तो एक विराट छवि चारों तरफ फैली है, उसे अपनी बाहों में समेट लें । क्या जाने वे कि हवा को समेटने में कितना मजा आता है ? क्या जाने वे कि झरने का पानी चुल्लू में लेकर पीने में क्या आनंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है ? क्या जाने वे होटल के सड़े खाने में भी क्या मजा है ?

मैंने राधा से कहा, "न आज सब्जी आएगी, न आज खाना बनेगा ।" वो बोली, "बाबी और चम्पू क्या खाएंगे ?" मैंने कहा, "जो हम खाएंगे, सो वो खाएंगे, यदि बच्चों की इतनी ही फिक्र है तो किसने कहा था कि साथ लेकर चलो ।"

राधा का जवाब था कि होटल में न जाने किस तरह के तेल का उपयोग किया जाता है ? कब का खाना बना होता है ? किसी की तबीयत खराब हो गयी तो क्या करेंगे ?

सच, संपादकजी, मैंने अपना गुस्सा वैसे ही पी लिया, जैसे पुलिस के डंडे को देखकर बड़े से बड़े पहलवान को भीगी बिल्ली बनना पड़ता है। इन औरतों को कौन समझाए कि सैर-सपाटे से आत्मा उसी तरह संतुष्ट होती है, जैसे चटनी और आचार से किसी घटिया खाने का स्वाद बदल जाता है । सच पूछा जाए तो जब घर से सैर के लिए निकलते हैं, खासकर गरमियों में लंबी छुट्टी बनाने के लिए, तो यह भूल जाना पड़ता है कि हम खाना खाने नहीं आये, चटनी और आचार का मजा लेने आये हैं । हमारे देश में न आचारों की कमी है न चटनियों की ।

हमारी जीभ जितने तरह के मसाले के लिए अभ्यस्त है, दुनिया के दूसरे लोग उस मजे के लिए तड़पते हैं, मसाले संचारी भाव हैं । और भाव-संचार का भ्रमण अत्यंत सुखद होता है । हर साल तो हम ऐसे ही सुख को पाने के लिए अकेले निकल आते थे । इस बार कंबख्त मालिकों ने ऐसे समय में बोनस दिया कि देवीजी घरेलू साज-सामान के साथ सैर करने के लिए निकल पड़ीं । उन्हें क्या पता कि सैलानियों का क्या मतलब होता है । मुश्किल तो यह है कि एक बार चंगुल में फंस गये तो अब छुटकारा कैसे मिले ? यह तो हमारे-जैसे फक्कड़ और अक्खड़ लोगों को है, जो घरवाली से दबते हैं । सो उस दिन हमने साफ मना कर दिया कि न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब्जी आयेगी, न खाना बनेगा । इस जंगल के बीच में बहते झरने के किनारे पहाड़ी होटलों में, जो भी खाने को मिलेगा, हम वही खाएंगे ।

इतना कहकर हम तो चले गये । हमने एक टट्टू लिया और खासा चक्कर लगाया उस कटोरीनुमा घाटी का, जहां दूसरे सैलानी बड़े मजे से निश्चिंत घूम रहे थे । रंग-बिरंगे कपड़े पहने कुछ अधढकी और कुछ, जैसे बोरों से कसी सुंदरियां, जिन्होंने ऐसे स्वांग बना रखे थे जैसे सरकस में काम करना हो । इन्हें देखकर कई बार तो हमने अपने टट्टू को भी रोका । परंतु उसी समय स्वर्ग से मैथिलीशरण गुप्त की आवाज आयी—

भ्रमर इधर मत भटकना
ये खट्टे अंगूर
लेना चंपक गंध तुम
किंतु दूर ही दूर

हाय, गुप्तजी आपने भी क्या मजे किये होंगे इन घाटियों में और सारे मजों का सार लिखकर यहीं छोड़ गये, जैसे अजगर अपनी केंचुली छोड़ जाता है । समझदारी की बात अगर कोई कहे तो उसे मान लेना चाहिए । संपादकजी, सेवकराम अब बच्चे तो हैं नहीं कि आग के गुण को देखना है, तो जलते हुए कोयले को पकड़े बिना नहीं रहेंगे । अब तो सीख यह ली है कि जितनी सीढ़ियां पुरुखों ने बना दी हैं, बहादुर बनना है तो उनके ऊपर सीढ़ियां बनाओ । हम तो हर समय अपने पुरुखों की इसी सीख को मांगकर चलते हैं, लेकिन हाय रे, वह दिन कि जब हम वापस लौटे तो राधा कोप भवन में । उसके दोनों बच्चे बीर-बहूटियां पकड़-पकड़कर माचिस में बंद कर रहे थे । हमने पहले तो उन दोनों को बुलाया, वे दौड़े-दौड़े चले आये । हमने कहा, चलो होटल में खाएंगे, तो दोनों ने तालियां बजायीं, बोले, "हां डैडी, खूब मजा आएगा ।" राधा को आवाजें लगायीं लेकिन वह कृष्ण की राधा तो थी नहीं, दस-बारह वर्षों से पिस रही भांग के सिल-बट्टे की तरह बिलकुल सपाट और अड़ियल भी कि भांग पीसी जाएगी तो एक ही तरह से यानी घर, घर है, और घर है तो खाना भी यहीं बनेगा । घर की परिभाषा भी तो मजेदार है न इनकी । एक अदद बैल जो दिन-रात खेत में जुता रहे और पूरे घर का पेट भरता रहे । फिर बच्चे कि चाहे वे बंदर की औलाद हों, चीखें तो बिजली की कड़क भी नाजुक लगे, पर सारे खून माफ उनके लिए ।

बहरहाल, अपनी शेफान की साड़ी पहनकर सज-धजकर वे चलीं तो आयीं, लेकिन उन्होंने नाटक रचा कि आज एकादशी है इसलिए उपवास । उपवास क्या था, हर तरह से नीचा दिखाना था कि मेरी मुर्गी की एक टांग और जो सोचा है वह करके दिखा देंगे । एक गलती तो हमने की है । तो और गलतियां हम करते ही जाएंगे । देवीजी के लिए कुछ फल-फूल खरीद लिये और हम सबने ठाठदार उस ढाबे में खाना खाया ।

पूरे समय वे नाक-भौं सिकोड़ती रहीं और उस ढाबे की गंदगी का इजहार करती रहीं । संपादकजी, हम सैर को क्या आये थे, शरीर भी थका, मन भी थका, और रात करवटें बदलती बीती । आपसे छिपाना क्या है, हमारे पड़ोस में एक कचनारी उमर का जोड़ा ठहरा था । उसके चोंचले जो हमने देखे, तो सांप लोट गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचा, सब सह लेंगे, आंखों को तरावट तो मिलेगी ।

पहाड़ियों के बीच सुबह हो, शाम हो या दोपहर, हमने यही रिश्ता कायम करना ठीक समझा, जहां-जहां से नेत्र-लाभ मिले, उसका जरूर भोग करना चाहिए । चाहे वह पुरुष हो या प्रकृति । कानों को बहरा कर लेना चाहिए और यदि रोज एकादशी का व्रत भी हो, तो फिकर नहीं करना चाहिए । शादी एक बेतुकी चीज है, इसका सारा ज्ञान यहीं होता है, तभी तो ऋषि-मुनियों ने अपने आश्रम ऐसे ही एकांत पहाड़ों में बनाये थे ।

दूसरे दिन हमने वह घाटी छोड़ दी और झील के किनारे एक बोट में आ जमे । वह खूबसूरत हाउस-बोट किसी तरह श्रीमतीजी को बेजान पत्थरोंभरी पहाड़ी से कुछ तो अच्छी लगी क्योंकि, वहां बात करने के लिए हाउस-बोट की घरवालियां भी थीं । उनसे अपना दुखड़ा रोने-धोने से श्रीमतीजी एकादशी भूल गयीं और आखिर में उन्होंने व्रत तोड़ दिया । हमने चैन की सांस ली— चलो, अब तो सैर-सपाटों में मजे आएंगे । मजे कितने आये, यह बयान करने की जरूरत नहीं है । लेकिन एक बात समझ में आ गयी कि घरवाली घरवाली ही है । यानी घर की रखवाली करनेवाली बहुत ईमानदार और सुघड़ पहरेदार । खामख्वाह उसे खुली हवाओं में ले जाओ, तो मजा किरकिरा हुए बिना नहीं रहेगा । बात साफ है । उसे अपने घर की याद आएगी क्योंकि, सालों से जिस कुरसी में बैठी है, आखिर उसके प्रति वफादारी तो रखनी ही पड़ेगी । घर से बाहर निकले तो, खुली हवाएं थपेड़े मारे, पानी अपनी ओर खींचे और कहीं खिंचाव बढ़ गया तो डूबे बिना नहीं रहा जाएगा । चारों तरफ पहाड़ सन्नाटे की स्वीकृतियां बजाएं तो भला वे क्यों अच्छी लगेंगी ? अच्छे तो लगते हैं लड़कों का रोना-चिल्लाना चीखना— लड़ना फिर पैर तोड़ना और तब सेवकराम पर मुसीबत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

अखिल भारतीय गीत-गजल-प्रतियोगिता

मई अंक में हमने 'कादम्बिनी'— अखिल भारतीय कहानी-प्रतियोगिता की घोषणा की थी। अब हम एक और अखिल भारतीय प्रतियोगिता आयोजित करने जा रहे हैं। यह है— 'कादम्बिनी'—अखिल भारतीय गीत-गजल प्रतियोगिता।

गीत-प्रतियोगिता

गीत-प्रतियोगिता का उद्देश्य हिंदी में नयी भावभूमि, नये रूप-विधान एवं नये बिंबों से युक्त गीत-विधा को प्रोत्साहित करना है। एक लंबी अवधि के बाद हिंदी में पुनः गीतों की वापसी हुई है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से हम हिंदी की छंद बद्ध काव्य-परंपरा को और अधिक गतिमान तथा शक्तिवान बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि नवोदित कवियों के साथ-साथ हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठ गीतकार भी इस प्रतियोगिता में सम्मिलित हों।

प्रथम पुरस्कार : १,००० रुपये द्वितीय पुरस्कार : ५०० रुपये
दो सांत्वना पुरस्कार : २००-२०० रुपये

गजल-प्रतियोगिता

हिंदी काव्य में आज गजल एक सशक्त विधा के रूप में उभर चुकी है। हिंदी गजलों की चर्चा चलते ही स्व. दुष्यंत कुमार का नाम सहसा स्मरण हो आता है। स्व. दुष्यंत

पहाड़ ढा देना कि इनकी मरहम पट्टी कराओ। खुदा ने तुम्हें सिर्फ इसीलिए बनाया

झील में अनगिनत शिकारे, लगता था नीले आकाश में चारों तरफ भरे हुए हैं तारे। हमने कहा, "राधा, चलो इकतारे में हम भी आसमां की सैर कर लें।" वह बोली, "शरम नहीं आती तुम्हें ? देख रहे हो सामने बेशर्मों की तरह लिपटे हुए घूम रहे हैं वे लोग, तुम्हारी यह चाह कभी पूरी नहीं होगी। और मैं इतनी निर्लज्ज और बेशर्म नहीं हो सकती।" मैंने एक लंबी आह भरी, बाबी और चम्पू की तरफ देखा और भीतर ही भीतर खूब जोर से हंसा। दस साल बाद राधा काश इसी जगह अकेली आये, और दोनों के तमाशे देखे। तब पता लगेगा कि उमर क्या होती है ? यह भी पता लगेगा कि घर छोड़कर बाहर निकले हैं सैलानी बनकर तो उमर को एक तरफ रख देना चाहिए।

मैं शिकारे के अंदर चला गया और चादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमार के बाद हिंदी में गजलें बहुत लिखी गयीं, पर बहुत कम कवि उर्दू गजलों के शास्त्रीय पक्ष का निर्वाह कर पाये।

इस प्रतियोगिता में हिंदी गजल का समूचा रूप-विधान उर्दू की शाश्वत मान्यता का आधार होगा। अंतर यही है कि उसमें उर्दू-फारसी के शब्दों का कम से कम (और कठिन शब्दों का तो बिलकुल ही नहीं) प्रयोग हो।

प्रथम पुरस्कार : १,००० रुपये द्वितीय पुरस्कार : ५०० रुपये

दो सांत्वना पुरस्कार : २००-२०० रुपये

अंतिम तिथि

कहानी-प्रतियोगिता : ३० जून, १९८८
गीत-प्रतियोगिता : ३० जुलाई, १९८८
गजल-प्रतियोगिता : ३० जुलाई, १९८८

लिफाफे पर इसे चिपकाइए :

गीत— प्रतियोगिता
संपादक : कादम्बिनी
हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-११०००१

गजल-प्रतियोगिता
संपादक : कादम्बिनी
हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-११०००१

ओढ़कर सो गया— झील हो या पहाड़, आखिर था तो वह एक घर ही, सो संपादकजी, आपके बहाने अपनी बात आपके पाठकों तक पहुंचाना चाहते हैं कि सैर सपाटे के दिन बहुत जानदार होते हैं। सैर करनेवाले लोग दो तरह के होते हैं— एक आंख बंद करके करते हैं, दूसरे आंख खोलकर। हम आंख खोलकर सैर करनेवालों में हैं। हमने कहीं पढ़ा था कि संसार की एक बड़ी पुस्तक हैं वे लोग, जो हमेशा सैर करते हैं आंख खोलकर। चलते-चलते सूरदास की हमें याद आ रही है—

भौंरा भोगी बन भ्रमै
मोद न मानें ताप
सब कुसुमनि मिल रस करै
कमल बधावे आप

संपादकजी, सेवकराम दुनियाभर का सैलानी है। अंत में सार तत्त्व यही मिला है उसे कि सैर तो कीजिए, लेकिन देखिए, साथ कौन है ? आप की राधा तो नहीं, जै रामजी की। ●

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पैनी नजर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन उद्योग के लिए निजी क्षेत्र आगे आएं

पर्यटन एवं नागर विमानन सचिव शशिकांत मिश्र की उषा बाला से 'कादम्बिनी' के लिए एक बातचीत

भारत सरकार की पर्यटन योजनाओं को आमतौर पर आलोचना की दृष्टि से देखा जा रहा है ? ऐसा क्यों ?

मुझे समझ नहीं आ रहा है कि जो पर्यटन नीति हमने निर्धारित की है, उसकी आलोचना क्यों हो रही है । जहां तक सरकार की आम पर्यटन नीति का प्रश्न है, उसका उद्देश्य स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा देना है । स्वदेशी पर्यटन न केवल अर्थ-व्यवस्था को बढ़ावा देता है बल्कि, राष्ट्रीय एकता को भी प्रोत्साहित करता है, रोजगार देता है, नये स्थलों का निर्माण करता है तथा स्वदेशी पर्यटन की नींव पर ही हम विदेशी पर्यटन की भव्य इमारत खड़ी कर सकते हैं । जहां तक विदेशी पर्यटन का प्रश्न है, यह हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी है । विदेशी पर्यटन आज की अर्थ-व्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाता है । विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी पर्यटन का योगदान महत्त्वपूर्ण है । संभवतः इन कुछ आधारों पर पर्यटन की आलोचना हो सकती है कि यह वातावरण और पर्यावरण को क्षति पहुंचा सकता है, पर्यटन का विकास अनियंत्रित तरीके से होता है । हम उपाय कर रहे हैं कि पर्यावरण की रक्षा हो सके, देश की पारंपरिक संस्कृति को कोई क्षति न पहुंचे और न हमारी सामाजिक मान्यताएं अथवा नैतिक मूल्य नष्ट हों ।

अंदमान-निकोबार तथा लक्षद्वीप आदि अनेक नये पर्यटन स्थलों के विकास के लिए हमने एक निश्चित और सीमित नीति निर्धारित की है, जिसके अंतर्गत हम केवल उन विशिष्ट पर्यटकों को यहां लाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिनसे अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित हो सके । समुद्र तट पर होनेवाले निर्माण-कार्य को नियंत्रित कर दिया गया है । तट पर बननेवाली इमारतों की तट से दूरी तथा उनकी ऊंचाई आदि के बारे में भी नियम बनाये गये हैं ।

विदेशों में पर्यटन को इस तरह बढ़ावा दिया गया है कि वहां वह उनके जीवन का एक अंग बन गया है । भारत में इस तरह के प्रयत्न क्यों नहीं किये जा रहे हैं, जबकि यहां भी सप्ताह में काम के पांच दिन हैं और दो दिन छुट्टी होती है ?

स्वदेशी पर्यटन में आशातीत वृद्धि हुई है । कारण, अब लोगों के पास अधिक अवकाश है, अधिक अतिरिक्त आय है । सरकार स्वदेशी पर्यटकों को रियायत दे रही है, सस्ते आवास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

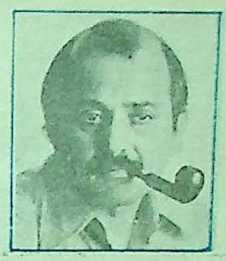

स्वतंत्रता के बाद पहले ३०-३५ वर्षों में पर्यटन की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका, क्योंकि तब देश के सामने दूसरी प्राथमिकताएं थीं। लेकिन आज पर्यटन की ठोस आधारभूत संरचना की नींव रखी जा चुकी है।

गृह उपलब्ध करा रही है, अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान कर रही है। आज मोटल, रेस्तरां, केफेटेरिया तथा सार्वजनिक आराम व सुविधाएं पहले से अधिक हैं। परिवहन सुविधाएं तथा हवाई यात्रा में रियायत पहले से दी जा रही हैं।

भारत में जितने भी सैर-सपाटे के स्थान हैं या पर्यटन स्थल हैं, सब उच्च वर्ग के लिए हैं, क्योंकि सरकार ने केवल बड़े-बड़े होटलों की ओर ध्यान दिया है। मध्य वर्ग के ठहरने के लिए स्थान बनाने पर कोई विचार नहीं किया गया है। इस संबंध में सरकार के पास क्या कोई योजना है ?

यह कहना उचित नहीं कि सरकार केवल पंचतारा होटलों का ही निर्माण कर रही है। सरकार ने आरंभ में कुछ होटलों का निर्माण किया था। इनमें अधिकांश पंचतारा होटल नहीं हैं। पंचतारा होटलों का निर्माण निजी क्षेत्र (प्राइवेट सेक्टर) द्वारा किया गया है। सरकार सभी राज्यों, राजमार्गों तथा सार्वजनिक क्षेत्रों में सस्ते आवास गृहों का निर्माण कर रही है, जिनकी किराये आदि की दरें बहुत संतुलित व उचित हैं। यह ठीक है कि जब हरियाणा में अशोक यात्री निवास का निर्माण किया गया था, तब ७५ रुपये प्रति शैया या ५५ रुपये प्रतिदिन किराया था। आज हर चीज की कीमत बढ़ गयी है, लोगों के वेतन बढ़ गये हैं, महंगाई भत्ता बढ़ गया है, तालिका (इंडेक्स) बहुत ऊपर पहुंच गयी है, तो आप पुराने किराये की आशा कैसे कर सकती हैं ? तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो यात्री निवास में अभी भी किराये की दर १५० रुपये या १३० रुपये है, जबकि पंचतारा होटलों में लगभग एक हजार रुपये है। आप स्वयं देखिए कि कितना फर्क है ?

पैकेज टूर पर्यटन को बढ़ावा नहीं देते। ये तो धार्मिक स्थलों और प्राचीन स्मारकों आदि देखने तथा उच्चवर्ग के परिवारों के घूमने-फिरने का माध्यम हैं। दूसरे यह कि इसमें यात्री को पूरी स्वछंदता भी नहीं मिलती। यह पर्यटन के अर्थ के विपरीत है। आपका क्या विचार है ?

पैकेज टूर उच्चवर्ग के लिए बिल्कुल नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । उच्चवर्ग अपना खर्च करके अपने आप यात्रा का इंतजाम करके कहीं भी जा सकता है, उन्हें पैकेज टूर की आवश्यकता नहीं है । पैकेज टूर सस्ते किराये और आवास की सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं और इसीलिए यह मूल रूप से मध्य वर्ग के लिए ही हैं ।

स्वदेशी और विदेशी पर्यटकों में बहुत अंतर होता है— क्या सरकार ने या आपके मंत्रालय ने इस पर विचार किया है ?

यह ठीक है कि स्वदेशी पर्यटकों और विदेशी पर्यटकों में अंतर होता है । स्वदेशी पर्यटक और विदेशी पर्यटक दो पृथक खंड हैं । उनकी आवश्यकताएं थोड़ी बहुत अलग-अलग हैं, परंतु ये हमेशा अलग-अलग नहीं होतीं । स्वदेशी पर्यटकों को सस्ती आवासीय व्यवस्था चाहिए, वह हम उन्हें देते हैं । यह ठीक है कि सरकार उतनी आवास व्यवस्था नहीं कर सकती, जितनी की उन्हें आवश्यकता है, क्योंकि सरकार के पास साधन सीमित हैं । इसलिए प्राइवेट सेक्टर के लोग आगे आएं और ऐसे आवासों का निर्माण करें । अभी प्राइवेट सेक्टर के लोग आगे नहीं आ रहे हैं, क्योंकि इस कार्य में अनेक कठिनाइयां हैं । सरकार इन कठिनाइयों को दूर करने का भरसक प्रयत्न कर रही है । उदाहरण के लिए, उन्हें सस्ती दर पर भूमि, आर्थिक अनुदान, संस्थाओं द्वारा आर्थिक सहायता, आयकर नियम में रियायत तथा ऋण भुगतान में भी काफी छूट दी जा रही है । जहां तक विदेशी पर्यटकों का प्रश्न है— विदेशी 'बजट टूरिस्ट' वर्ग भी सस्ती आवासीय व्यवस्था चाहते हैं, उनकी भी वही आवश्यकताएं हैं, जो स्वदेशी पर्यटकों की होती हैं ।

कितने और कौन-से पर्यटन स्थलों का पिछले वर्षों में विकास किया गया है ?

भारत में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद पहले ३०-३५ वर्षों में पर्यटन पर बहुत कम ध्यान दिया गया, क्योंकि हमारे पास अन्य अत्यावश्यक प्राथमिकताएं थीं, जैसे कृषि, आवास, विद्युत, सिंचाई, स्वास्थ्य, उद्योगीकरण, समाज-कल्याण आदि । इसलिए तब पर्यटन को कोई महत्व नहीं दिया गया और यह ठीक भी था । पर आज पर्यटन की एक ठोस आधारभूत संरचना की नींव रखी जा चुकी है । वास्तव में सातवीं योजना के दौरान ही पर्यटन को महत्व प्रदान किया गया, यह तीसरा वर्ष चल रहा है । इसलिए स्पष्ट है कि इसके लिए बहुत कम कार्य किया गया ।

फिर भी सरकार ने इस दिशा में ठोस कार्य किया है । भारत पर्यटन विकास निगम (आई. टी. डी. सी.) के माध्यम से अनेक स्थानों पर होटल खोले गये हैं । जिन स्थानों पर निजी पूंजी क्षेत्र के लोग जाने से कतराते थे, पर्यटन निगम ने वहां अपनी बसें तथा परिवहन सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं । राज्य सरकारों ने भी यही कार्य आरंभ किया है ।

मैं सोचता हूं कि आगामी दस-बारह वर्षों में भारतीय पर्यटन उद्योग में एक जबरदस्त परिवर्तन आएगा ।

क्या आप कोई नये पर्यटन स्थल विकसित करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहे हैं ?

बहुत सारे स्थल निर्माणाधीन हैं— केरल, अंडमान-निकोबार, लक्षद्वीप, गोआ, भुवनेश्वर, पुरी, कोणार्क आदि । इनके अतिरिक्त अन्य राज्यों और हिमालय के क्षेत्रों में गढ़वाल, उत्तर पूर्व में सिक्किम तथा उत्तर पूर्वी राज्यों में बहुत सारे स्थल विकास के लिए चुन लिये गये हैं ।

वहां पर ठहरने की व्यवस्था क्या आम आदमी को ध्यान में रखकर की जा रही है ?

हम जो भी योजनाएं बना रहे हैं, वे स्वदेशी तथा विदेशी दोनों पर्यटकों के लिए हैं । आपको यह याद रखना होगा कि सरकार के लिए सब कुछ उपलब्ध कराना संभव नहीं है, क्योंकि सरकार के पास इतना कोष नहीं है । स्वदेशी पर्यटकों के एक खंड के लिए ही कम से कम लगभग दस लाख कमरों की आवश्यकता पड़ती है । इसके लिए धन कहां से आये ? इसलिए हमने यह निश्चय किया है कि निजी क्षेत्र के लोगों को प्रेरित किया जाए, इसलिए जब हम यह कहते हैं कि हम स्थलों का विकास करने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो हमारा आशय यह होता है कि इन स्थलों पर हम वे सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहते हैं, जिससे निजी क्षेत्र के लोग आगे आएं । हम राज्य सरकारों को भी आर्थिक सहायता दे रहे हैं, ताकि वे विकसित हो रहे स्थलों पर सस्ते आवासों का निर्माण कर सकें । परंतु जो कुछ भी हमारे पास है, वह हमारी कुल आवश्यकता से भी बहुत कम है ।

कुछ उल्लेखनीय तथ्य

- **भारत-भ्रमणार्थियों के आगमन में ९ प्रतिशत वृद्धि हुई है । गत वर्ष पाकिस्तान तथा बंगलादेश के पर्यटकों को मिलाकर १०५ करोड़ पर्यटकों ने भारत-भ्रमण किया ।**
- **सन १९८८-८९ के केंद्रीय बजट में पर्यटन के लिए ५२.२ करोड़ रुपये निर्धारित किये गये हैं । पांच वर्ष पूर्व यह व्यय केवल ५.२२ करोड़ रुपये था ।**
- **सन १९८८ से पर्यटन को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में विषय के रूप में रखे जाने की योजना क्रियान्वित की जा रही है । इससे पर्यटन विकास में कार्य करने के इच्छुक युवक-युवतियों को रोजगार पाने में सुविधा होगी ।**
- **सन १९९० में लगभग बीस लाख विदेशी पर्यटकों के भारत आने की आशा है ।**

कुछ संपादकों तथा समाचार-पत्रों ने सुझाव दिये थे कि नर्मदा घाटी में पर्यटन के विकास की बहुत संभावना है । क्या इस पर सरकार विचार कर रही है ?

नहीं । पर्यटन भी राज्य का एक विषय है । हम राज्यों की योजनाओं में सीधे हस्तक्षेप नहीं करते हैं । इसीलिए इस प्रकार का कोई सुझाव यदि आता भी है, तो राज्य सरकार के पर्यटन विभागों को भेज दिया जाता है । वही उस पर उचित कार्रवाई करते हैं । किसी कारण यदि वे ऐसे सुझावों या योजनाओं को कार्यान्वित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं, तो उसे वह हमारे पास भेज देते हैं ।

सुना है कि अंदमान-निकोबार को 'फ्री पोर्ट' के रूप में विकसित किया जाएगा ।

नहीं, अंदमान-निकोबार को 'फ्री-पोर्ट' बनाने का कोई प्रस्ताव अथवा योजना नहीं है ।

हवाई यात्रा के किराये में कुछ कमी करने के बारे में सरकार का क्या विचार है ?

नहीं, किराये और बढ़ाए जाएंगे क्योंकि, ईंधन की कीमत बहुत अधिक है । आम आदमी में हवाई यात्रा की सामर्थ्य नहीं होती और जो हवाई यात्रा में समर्थ होते हैं, वे इससे भी अधिक किराया दे सकते हैं ।

अभी हाल ही में लक्षद्वीप में हवाई सेवा आरंभ की गयी है । कौन-कौन से द्वीपों पर आवास-सुविधाएं उपलब्ध हैं ?

छोटी-छोटी विश्राम कुटीर बंगारम, कल्पानी, कवरती आदि में हैं, जहां स्वदेशी पर्यटक रह सकते हैं । विदेशी पर्यटकों के लिए केवल बंगारम में ही रहने की व्यवस्था है ।

आप विदेशी लेखकों, पत्रकारों और कलाकारों को तमाम सुविधाएं देते हैं । उन्हें भारत आने का निमंत्रण, उनको भ्रमण-पर्यटन, आवास आदि की सुविधाएं हैं । क्या ऐसी ही भारतीय लेखकों-पत्रकारों व कलाकारों के लिए कोई योजनाएं हैं ?

नहीं, ऐसी हमारे पास कोई योजना नहीं है । हम केवल बाहर से लोगों को आमंत्रित करते हैं क्योंकि, हम विदेशों में भारत के प्रचार व प्रसार को ही प्रोत्साहन देना चाहते हैं और विदेशी लोगों को इसलिए आमंत्रित करते हैं, जिससे वे अपनी पत्र-पत्रिकाओं में भारत के बारे में लिखें ।

—एफ-४८, ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-११००१६

रामायण ताजिकिस्तान में भी लोकप्रिय

सोवियत संघ के एक गणराज्य ताजिकिस्तान में वहां की भाषा-ताजिक में अनूदित 'रामायण' की सारी की सारी-पंद्रह हजार प्रतियां, हाल ही में हाथों-हाथ बिक गयीं । रामायण का यह अनुवाद पद्य बद्ध है, जिसे इस भाषा के लोकप्रिय कवि बोबो खोजी ने किया है और 'अदीब' प्रकाशन ने छापा है ।

बोबो खोजी के अनुसार 'रामायण' और अन्य देशों के महाकाव्यों जैसे— यूनानी भाषा के 'इलियड' तथा 'ओडिसी', ताजिक-परशियन भाषा के 'शाहनामा', फिनिश भाषा के 'कालेवाला' और किरगीज भाषा के 'मानस' में बहुत-सी समानताएं हैं । इन सभी महाकाव्यों में 'अच्छे' और 'बुरे' के बीच शाश्वत युद्ध ही मुख्य विषय है । इन महाकाव्यों में अच्छाई, वीरता, स्वतंत्रता, न्याय और ईमानदारी आदि उन सभी तत्वों को, जो बुराई का सामना करते हैं, गौरव मंडित किया गया है । यही कारण है कि ये कालजेय महाकाव्य आज भी मानव को उदात्त विचारों से संपन्न बनाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

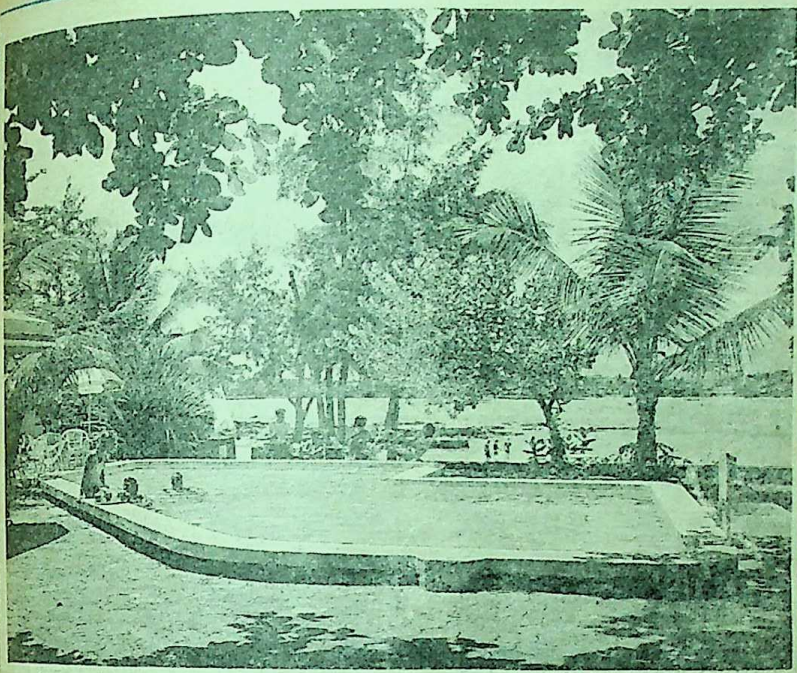

समुद्र तट पर बने होटलों का सौंदर्य

महासागर के बीच हीरे और पन्नों-सा चमकता द्वीप

— राजेन्द्र अवस्थी

हिंद महासागर के बीच बंबई से ४,७०० किलोमीटर दूर बसा मारीशस छोटे भारत के नाम से जाना जाता है। दूर-दूर तक फैले गहरे महासागर के बीच लगता है, हीरे और पन्ने की तरह यह द्वीप अचानक समुद्र के गर्भ से उभरकर सीधा खड़ा हो गया है। मीलों केवल अथाह पानी है। मारीशस के सबसे पास यदि कोई दूसरा टापू है, तो वह है, मैडागास्कर। वह भी ८८० किलोमीटर दूर। उसके आगे है ट्यूनियन और फिर सीशल्स। इनके बीच में शायद कुछ और छोटे-मोटे टापू हों, अन्यथा सीधे अफरीका की धरती मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीशस और भारत के संबंध बहुत पुराने हैं। सैकड़ों साल पहले बिहार और पूर्वी उत्तर-प्रदेश से कुछ लोग मारीशस गये थे। तब वहां फ्रेंच शासन था। इन गोरों ने भारतीयों को हंटर मार-मारकर कड़ी मेहनत में जोत दिया। इनका काम था कि सख्त पत्थरों से भरे हुए इस द्वीप से मिट्टी कैसे निकाली जाए ? इन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की जिसका फल है कि आज का मारीशस ऊंचे वृक्षों, गन्ने के हरे-भरे खेतों, नदियों प्रपातों, झरनों और पहाड़ों से आच्छादित है।●

खून-पसीना बहा है यहां !

मारीशस और भारत के संबंध बहुत पुराने हैं। सैकड़ों साल पहले बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से कुछ लोग मारीशस गये थे। तब वहां फ्रेंच शासन था। इन गोरों ने भारतीयों को हंटर

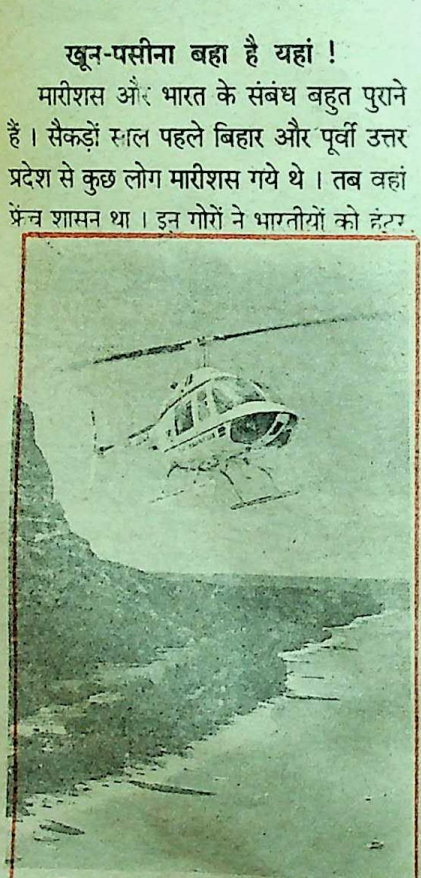

मारीशस का सुरम्य दृश्य : हैलीकॉप्टर से

मार-मारकर कड़ी मेहनत में जोत दिया। इनका काम था कि सख्त पत्थरों से भरे हुए इस द्वीप से मिट्टी कैसे निकाली जाए ? इन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की जिसका फल है कि आज का मारीशस ऊंचे वृक्षों गन्ने के हरे-भरे खेतों, नदियों, प्रपातों, झरनों और पहाड़ों से आच्छादित हैं।

खेतों के बीच में अब भी काले पत्थरों के ढेर भारतीय मजदूरों ने छोड़ दिये हैं, ताकि वे इस बात की याद हमेशा दिलाते रहें कि यह देश उनके खून और पसीने से बना है। अब तो मरीशस ने इतनी उन्नति कर ली है कि वहां के आम आदमी का रहन-सहन भी भारत के मध्यम वर्गीय परिवार से कम नहीं है।

आजादी के बीस साल

सर शिवसागर राम गुलाम को इस देश का गांधी कहा जा सकता है। उनके नेतृत्व में इस देश ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। और अंततः १२ मार्च, १९६८ को यह एक स्वतंत्र देश के रूप में पहचाना जाने लगा।

मारीशस की जनसंख्या बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक नहीं है। १,८६५ वर्ग किलोमीटर के इस द्वीप में केवल दस लाख लोग रहते हैं। इनमें हिंदू-मुसलमान, ईसाई और चीनी हैं। इतनी कम जनसंख्या के कारण मारीशस नयनाभिराम दृश्यों से आवृत्त है। इस द्वीप में १६० किलोमीटर का समुद्री किनारा है, जो चारों तरफ कोरल से घिरा हुआ है।

घेरे हैं खूबसूरत समुद्री किनारे

विदेशी, जिनमें भारतीय भी हैं, छुट्टियां बिताने के लिए यहां अकसर आते हैं। भारत से जाने के लिए तो विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं, बंबई से मारीशस जम्बोजेट प्रत्येक शुक्रवार को चलता है और मारीशस से वही जम्बो बुधवार को वापस आता है। 'ग्रुप टूर, (जिसका अर्थ है, केवल चार-व्यक्ति) में जाने पर पांच हजार रुपये से भी कम आने-जाने का विमान का किराया है। मारीशस में ठहरने के लिए ढेर-से होटल हैं और समुद्री किनारों में समय बिताने के लिए बहुत-सी सुविधाएं हैं। वैसे तो मारीशस की जलवायु लगभग एक-सी रहती है, लेकिन अप्रैल से जून तक और सितंबर से नवंबर तक के महीने विशेष रूप से

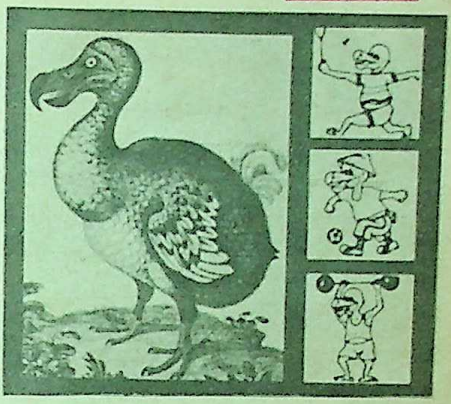

डूडो पक्षी : मारीशस का राष्ट्रीय पक्षी। आश्चर्य की बात यह है कि इसकी नस्ल अब समाप्त हो चुकी है।

अच्छे होते हैं।

मारीशस की सरकारी भाषा अंगरेजी है, लेकिन लोग बहुत धड़ल्ले से फ्रेंच बोलते हैं। हिंदी प्रायः सर्वत्र समझी जाती है। इसके सिवाय उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी, मंडारिन, हक्का और क्रियोल भी ऐसी भाषाएं और बोलियां हैं, जो यहां प्रचलित हैं।

भारी उद्योग लगेंगे

मैं कम-से-कम तीन बार मारीशस गया हूं,

स्वतंत्रता की बीसवीं वर्षगांठ पर भारतीयों का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

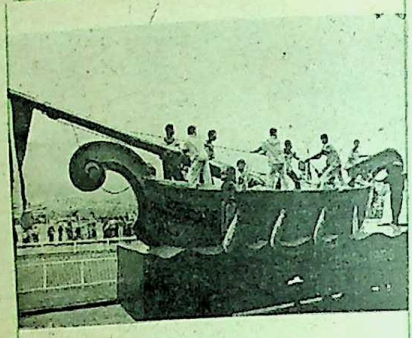

नौका विहार

कुछ समय पहले जब मारीशस गया था, तो मैंने उसमें बहुत परिवर्तन पाया। पूरे देश में जगह-जगह इंडस्ट्रियल कांपलेक्स बनाये जा रहे हैं, और विदेशियों को बड़े-बड़े उद्योग लगाने के लिए सरकार पूरी सुविधाएं दे रही है। थोड़ा-बहुत धन लेकर भी यदि कोई व्यक्ति बाहर से जाए, तो उसे अच्छा-खासा कर्ज मारीशस की सरकार से मिल जाएगा। मारीशस के वित्तमंत्री श्री नायडू, जो वहां के तीन उप-प्रधानमंत्रियों में से एक हैं, बहुत सुलझे हुए हैं और देश को विकसित करने में हर तरह की सहायता बाहर से ले रहे हैं।

यहां सिंगापुर और बैंकाक के मजे लीजिए

एक शाम प्रधानमंत्री श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध ने भोजन पर हमें आमंत्रित किया, तो उसमें उन्होंने घोषणा की थी कि मारीशस को शीघ्र ही सिंगापुर और हांगकांग की तरह फ्री पोर्ट में बदल देंगे। उनका वास्तव में कटाक्ष इस बात में था कि जितने भी भारतीय वहां गये थे, वे अपना अधिकांश समय शापिंग में खर्च कर रहे थे। मारीशस के बाजारों में दुनिया भर का सामान उपलब्ध है।

मारीशस के बाजारों में दुनियाभर का सामान उपलब्ध है। भारत की तो हर चीज वहां आसानी से मिलती है। इसका कारण यह है कि मारीशस में बड़े कारखाने तो हैं नहीं और न गन्ने के सिवाय और कोई खेती ही होती है, इसलिए उन्हें गेंहू, चावल और मसालों से लेकर छोटी-बड़ी मशीनों तक दुनिया के विभिन्न देशों से मंगानी पड़ती हैं। मारीशस का यदि औद्योगीकरण हो गया, तो वहां का नक्शा ही बदल जाएगा।

छोटा देश : गरम भी, ठंडा भी

मारीशस छोटा भले ही हो, लेकिन छोटे से इस द्वीप में ही हर तरह की जलवायु का अनुभव किया जा सकता है। इसके उत्तर में त्रियोले और आगे का सारा हिस्सा हमेशा गरम रहता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसी हिस्से के आखिर में खूबसूरत समंदर है, जहां बेहद सुविधाजनक होटल बने हुए हैं। पोर्ट ल्यूइस यहां की राजधानी है। इसकी जलवायु वर्ष भर लगभग समान रहती है। यहीं पर सारे सरकारी कार्यालय हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि पोर्टल्यूस से क्यूरिप बहुत दूर नहीं है, लेकिन ऊंचाई पर होने के कारण, यह मारीशस का सबसे ठंडा स्थान है। यहां कब और किस क्षण मूसलाधार पानी गिरने लगे, इसका अंदाज लगाना कठिन है। लेकिन १५-२० मिनट की ड्राइव के बाद ही चारों तरफ मौसम फिर सूखा

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

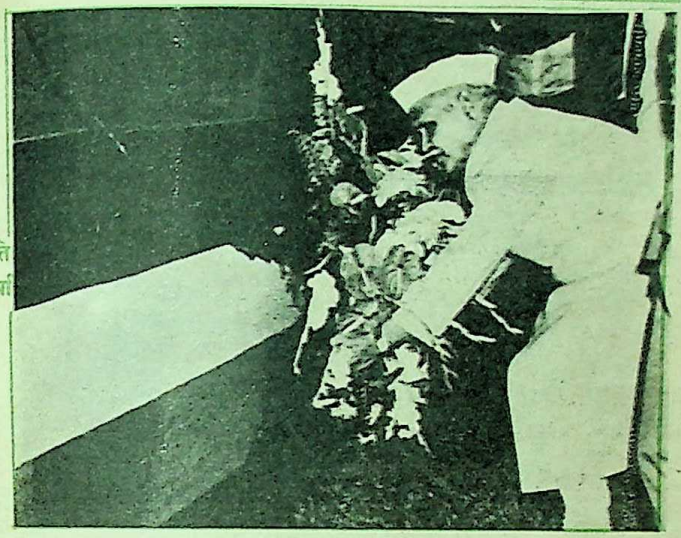

सर शिवसागर रामगुलाम की समाधि पर भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा

मिलता है। मुझे कई बार अपने मित्र राजेन्द्र अरुण और दीपचंद बिहारी के यहां जाने का अवसर मिला। दोनों क्यूरिप में ही रहते हैं। और इसीलिए पोर्टल्यूइस की गरमी यहां आकर हर बार शांत हुई है, इसके विपरीत त्रियोले में रहनेवाले अभिमन्यु अनत के यहां हमेशा खासी गरमी का सामना करना पड़ा है। एक छोटे-से देश में जलवायु का इतना बड़ा परिवर्तन शायद ही कहीं और देखने को मिले। सैलानियों के लिए मारीशस कई तरह से आकर्षण प्रदान करता है। यहां के आधुनिकतम होटलों में सभी क्रीड़ाएं हैं, तो यहां खूबसूरत हिंदुओं के मंदिर, चर्च और मस्जिदें भी हैं। हरे कृष्ण आंदोलन का अपना एक केंद्र है, और वहां पहुंचकर बेहद शांति का अनुभव होता है। जिन्हें मछली मारने का शौक है, उनके लिए विशेष समुद्री किनारे हैं और उनमें पूरी सुविधाएं दी गई हैं।

विष्णु शैय्या और विशाल कमल-पत्र

मारीशस का विशाल पार्क आकर्षण का बहुत बड़ा केंद्र है। मीलों लंबे इस पार्क में ही शिवसागर रामगुलाम का स्मारक बना है। यहां मैंने एक ऐसी विशेषता देखी, जो मैंने शायद अपने जीवन में पहली बार देखी होगी। एक बहुत बड़ा तालाब है, और उसमें कमल के इतने बड़े पत्ते हैं कि शायद एक पत्ते पर सात-आठ लोग बैठ सकते हैं। पत्तों के साथ ही खिले हुए सुंदर कमल के फूल भी और लाल रंग के लिली के पुष्प भी हैं।

कमल के इन पत्तों को देखकर प्राचीन भारतीय संस्कृति की याद आ जाती है, जिसमें कहा गया है कि कमल के पत्तों पर विष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान रहते थे। ये पत्ते इस बात के प्रतीक हैं कि भारतीय पुराणों की इस कल्पना में कोई आधार जरूर है। इसी बाग में एक ऐसा वृक्ष है, जिसमें सौ साल में एक बार फूल आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीशस की सरकारी भाषा अंगरेजी है, लेकिन लोग बहुत धड़ल्ले से फ्रेंच बोलते हैं। हिंदी प्रायः सर्वत्र समझी जाती है। इसके सिवाय उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी, मंडारिन, हक्का और क्रियोल भी ऐसी भाषाएं और बोलियां हैं, जो यहां प्रचलित हैं। सैलानियों के लिए मारीशस कई तरह के आकर्षण प्रदान करता है। यहां के आधुनिकतम होटलों में पश्चिमी क्रीड़ाएं हैं, तो यहां हिंदुओं के खूबसूरत मंदिर, चर्च और मस्जिदें भी हैं। हरे-कृष्ण संप्रदाय का अपना एक केंद्र है। और वहां पहुंचकर बेहद शांति का अनुभव होता है।

गोल्फ खेलते हुए

है और जब वह वृक्ष फूलता है तो पूरे देश के लोग उसे देखने के लिए वहां पहुंच जाते हैं। सौ साल में फूल आना एक बहुत लंबी उमर की पूरी पीढ़ी का बीत जाना है। इसी बाग में लौंग और दूसरी तरह के कम पाये जानेवाले वृक्ष भी हैं। बड़े मजे से एक पूरा दिन केवल इसी पार्क में गुजारा जा सकता है।

लोक-कथाओं में मुड़िया पर्वत

मारीशस में कुछ पहाड़ भी हैं, नदियां हैं, झरने हैं और प्रपात हैं। मुड़िया पहाड़ मारीशस के लोगों के लिए उतना ही पवित्र है, जितना भारत के लिए हिमालय। मुड़िया पहाड़ की विशेषता यह है कि मारीशस में किसी भी कोने में चले जाइए मुड़िया पहाड़ हर जगह से दिखायी देता है।

शायद इसीलिए वहां के लोगों ने प्राचीन साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक मुड़िया पहाड़ को महिमामंडित किया है। यहां के दूसरे पर्वत हैं, नोयर, पीटर बोना और पाऊंसा। एक ऊंचे पहाड़ के बीच में एक बहुत बड़ा और गहरा कुआं-जैसा बना है। अब यह चारों तरफ से और भीतर भी वृक्षों से आच्छादित है। कहा जाता है कि कई वर्षों पहले यहां बहुत बड़ा ज्वालामुखी फूटा था। उसके लावे से बहुत-से लोग मारे गये थे। अब ज्वालामुखी तो शांत है, लेकिन पहाड़ के ऊपर यह विशालकाय कुआं जैसी घाटी को स्मृति स्वरूप छोड़ गया है। वैसे यह पूरा पहाड़ बेहद खूबसूरत है, क्योंकि वहां से पूरा मारीशस एक द्वीप की तरह महासागर के बीच अलग दिखायी देता है। पहाड़ के चारों ओर से पूरे शहर का समूचा सौंदर्य आसानी से देखा जा सकता है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह एक : मिट्टियां सात

मारीशस में चार-पांच विशेष नदियां हैं, जिनमें मोका नदी, ब्लैक रिवर, एंगोलिस नदी, विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। एंगोलिस नदी के किनारे, एक जगह मगरमच्छ पालन का बहुत बड़ा केंद्र है। मारीशस में एक विशाल तालाब है, जिसका नाम गंगासागर है। इस नाम के पीछे बहुत बड़ा इतिहास है। शिवसागर रामगुलाम के समय गंगा का पानी भारत से ले जाया गया था और विधिवत मंत्रोच्चार के साथ उसे इस तालाब में मिला दिया गया। बस उसी दिन से यह मारीशस का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थल बन गया है। इससे इस बात का भी अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत और गंगा के प्रति मारीशस निवासियों की कितनी श्रद्धा है।

मारीशस का दूसरा बड़ा आकर्षण एक पर्वत और है, जिसमें एक ही जगह सात रंग की मिट्टियां अलग-अलग तहों में मिलती हैं। धरती पर ऐसा सतरंगा इंद्र धनुष संभवतः दुनिया में कहीं नहीं है।

विश्व संस्कृति का संगम

मारीशस साहित्य-संस्कृति और कला का भी केंद्र है। महात्मा गांधी संस्थान इन सारी कलाओं के प्रोत्साहन का केंद्र है। यहां फ्रेंच और अंगरेजी शैली के यदि नाटक होते हैं, तो भारतीय नृत्य-गीतों का भी आयोजन किया जाता है। हिंदी और फ्रेंच में यहां से पत्रिकाएं और पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। हिंदी में वसंत नाम से एक त्रैमासिक पत्र निकलता है। इस बार जब मैं मारीशस गया था, तो महात्मा गांधी संस्थान में मेरा भाषण हुआ था। मुझे एक साथ एक दर्जन से भी अधिक उन लेखकों से मिलने का सौभाग्य मिला, जो हिंदी में उपन्यास, कहानियां और कविताएं लिखते हैं। अभिमन्यु अनत, दीपचंद बिहारी, रामदेव धुरंधर, प्रह्लाद नारायण, कृष्णलाल बिहारी, राजेन्द्र अरुण, पुष्पा भूमा, सफीना खुदा बक्श और भानुमती नागराज, कुछ ऐसे नाम हैं, जिनकी याद मुझे अभी भी ताजा है।

गरमियों में कम पैसे में मजे के दिन बिताने हों, तो मारीशस सबसे अच्छी जगह है।

समुद्री किनारों के होटल

ले कापरी। आर. एन. सील। काजोरिना। आर. चाइडस। ईजल दे फ्रांस। रॉयल पाम। विरिंदा बैंगलो विलेज। हिबीकस विलेज वाकान्सैस। पैरिबेरे बीच अपार्ट मैंट्स। शालेंरोई। फ्रैंड्स अपार्टमैंट। कुक्स विले। ला फाएते। सैन्ट जेरासन। तूसक्रो। बीच कोम्बर क्लब ले शालां। मेरिदिएं पारादीस। रिविएरे नायरे होटल। तामारीन होटल। ला पिरोगे सन।

शहर के अन्य कुछ होटल

सिटी होटल। बूर्बों टूरिस्ट। तंदूरी। फ्रांस टूरिस्ट। रिवर साइड। गोल्ड क्रेस्ट होटेल। मैंडेरिन। कोन्टीनेन्टल। यूरोपा। शंघाई। टूरिस्ट रांदेवूस।

इनके सिवाय और भी बहुत-से होटल हैं, होटलों के सिवाय कुछ और भी स्थान हैं, जिनमें धार्मिक स्थान भी शामिल हैं और बहुत कम खर्च में ठहरा जा सकता है।

मारीशस के बाजार दुनिया भर की वस्तुओं से भरे पड़े हैं, इसलिए सारी दुनिया का विदेशी वैभव केवल इसी द्वीप से खरीदा जा सकता है। ●

अध्यापक, "बोलो, तुम खुशी-खुशी स्कूल किसलिए आते हो।"

छात्र, "पिताजी के डर से आता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीशस की कहानी —

छपते-छपते

● अभिमन्यु अनत

बच्ची को गोद में लिये विभा को कमरे में घूम-घूमकर अपनी बांहों को हिंडोले बनाये रखना पड़ा था। आधे घंटे से अधिक समय तक वह अपनी भोजपुरी, क्रिओली, हिंदी और फ्रेंच मिश्रित लोरी गुनगुनाती रही थी। निशा के सो जाने के बाद उसने उसे उसके छोटे-से पलंग पर सुला दिया और मच्छरदानी को ऊपर से खींचकर अपने कपड़े उतारे थे। कपड़े उतारते समय आईने में उसने रोबीन को अपनी ओर घूरते हुए देखा था। अपने ऊपर के अंदरूनी और हलके कपड़ों के साथ वह उसकी बगल में लेटने लगा था तो भी रोबीन की नजरें उसी के ऊपर थीं।

लेकिन उसकी उन नजरों में उन दोनों भावों में से कोई भी भाव नहीं था। वे भाव जो .....

विभा को पहले अपना प्रश्न याद आ गया था फिर रोबीन का उत्तर। शायद ढाई घंटे पहले...। अपने ऊपर से कपड़े के उस आखिरी टुकड़े को उतारकर जब वह अपने पति की ओर मुड़ी थी तो उसकी आंखों के उस भाव को देखकर उसके मुंह से निकल पड़ा था।

"इस तरह क्यों देख रहे हो?"

"तुम जितनी सुंदर हो उससे दोगुना अधिक सुंदर है तुम्हारा बदन।"

"क्या मतलब? मैं और मेरा बदन दो अलग चीजें हैं क्या?"

"बिलकुल।"

"पागल हो तुम?"

"कल तो तुमने मुझे कुछ और कहा था।"

"कल तुमने मुझे इस तरह थोड़े ही देखा था।"

"कल तो तुम आईने के सामने सिंगार कर रही थीं। वह तो एक दूसरी ही सुंदरता देखने का आनंद था। उस दूसरी बार रोबीन की आंखों में आनंद की जगह एक चाह थी और

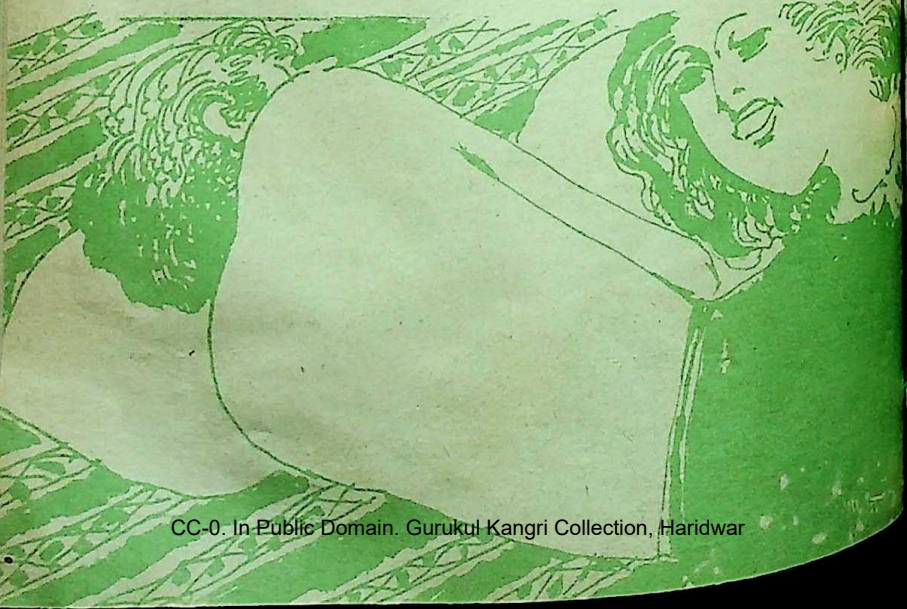

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस चाह में एक ज्वाला थी। इस बार उन आंखों में न तो वह आनंद था न वह चाह (।) रोबीन की बगल में लेटकर विभा पहले उसके चेहरे को देखती रही फिर अपनी अंगुलियों को उसकी नंगी छाती पर विचरने दिया। रोबीन ने जब काफी देर बाद भी अपने सिर को विभा की गरदन के ऊपर नहीं रखा तो खुद विभा वैसा कर बैठी। उसने अपने होठों को उसके दाहिने कान के पास ले जाकर धीरे-से कहा—

"क्या सोच रहे हो इस तरह ?"

वह कुछ नहीं बोला।

विभा ने पहले उसके कान के निचले भाग को चूमा फिर गरदन में अपने हाठों को फिसलने दिया। उसकी अंगुलियां रोबीन की छाती पर के काले बालों में उलझती-सुलझती रहीं। और जब उसी तरह कई मिनट कुछ सेकंडों की तरह फिसल गये और विभा ने अपने होठों और अंगुलियों के स्पर्शों का अपने पति पर कोई असर नहीं पाया तो उसने एक बार फिर पूछा—

"तुम फिर उसी बात को सोचने लगे न !"

उत्तर न मिलने पर विभा ने अपने सिर को रोबीन की छाती पर रख दिया। पसीने की ठंडक थी वहां।

अपने गरम चेहरे पर उस ठंडक से वह ठंडक नहीं पहुंचा सकी। कोई दस मिनट बाद उसने अपने सिर को अपने तकिये के हवाले कर दिया। कोई बीस मिनट बाद उसकी अपनी आंखें बोझिल होती गयीं।

.... और रोबीन अपलक अपने आगे के खालीपन को ताकता रहा।

अपने सिरहाने की धूमिल गुलाबी रोशनी में वह कोई दो मिनटों से छत से लटके फानूस को अपलक देख रहा था। उसके भीतर की बत्तियां बुझी थीं। इससे पहले अपनी आंखें खोलकर उसने करवट ली थी। उसे भी नींद नहीं आ रही थी। करवट बदलकर अपनी पत्नी के सांवले चेहरे को देखा था फिर बुदबुदाया था—

"क्या बजा होगा। विभा ?"

बस ऊंहू करके विभा ने करवट बदल ली

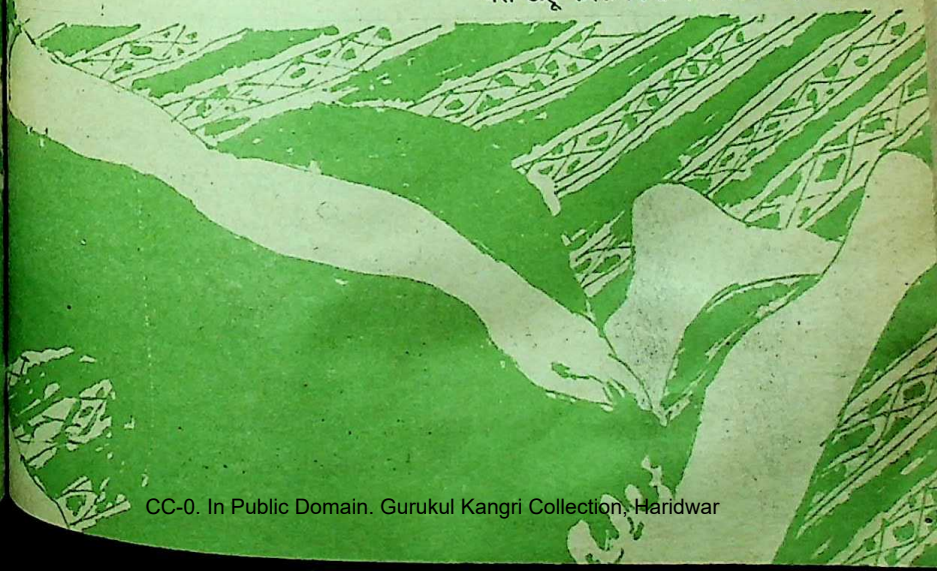

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

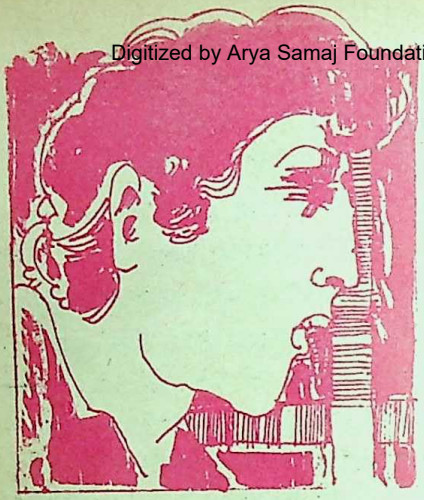

थी। अपने दोनों हाथों को तकिये पर सिर के नीचे ले जाकर वह कुछ जोर से बोला था—

"निशा आज दूध के लिए नहीं जागी ?"

विभा ने फिर से करवट ली और अपने चेहरे को उसकी ओर करके आंखें बंद रखे हुए ही उनींदे स्वर में बोली थी—

"सोने दो।"

"दिन में निशा को सुलाते-सुलाते बिलकुल नहीं सोयी थीं क्या ?"

"सो जाओ रोबी।"

और रोबीन ने अपनी पत्नी के उस अनुरोध को आदेश मानकर झट-से आंखें बंद कर ली थीं। आंखें बंद किये-किये कुछ ही क्षण बाद उसने फिर से पूछा था—

"बारह पार हो गया होगा ?"

"रोबी !"

उसने आंखें खोलकर विभा को निहारा था।

"तुम सोयी होती हो तो बहुत सुंदर दीखती हो।"

"सोने दो मुझे। तुम भी दिनभर के थके हो सो जाओ।"

नींद नहीं आ रही।"

विभा ने अपनी बोझिल पलकों को खोलकर रोबीन की ओर देखा।

"इस तरह बातें करते रहोगे तो नींद कैसे आएगी ?"

"चुप था तो भी नींद आयी थी।"

"चुपचाप सो जाओ।"

उसकी बोझिल पलकें झपक गयीं। रोबीन उसे देखता रहा था फिर पीठ के बल होकर ऊपर के फानूस को एकटक देखता रह गया था। अपनी शादी के तीसरे सप्ताह बाद वह अपनी पत्नी को साथ लेकर व्यूपीप की दुकानों के चक्कर काटने निकला था। विभा से बोला था कि अपनी तनख्वाह पहली बार उसके हाथों में रखने से पहले उसने उसकी पसंद का कोई तोहफा उसके लिए खरीदने को तय कर रखा था। उसकी जिद पर विभा उसके साथ हो गयी थी। रोबीन पहले उसे कपड़ों की दुकानों में घुमाता रहा। जब उधर की कोई भी चीज उसे पसंद नहीं आयी तो वह उसे लिये चीनी सामान की उस भव्य दुकान पर पहुंचा था जहां यह फानूस विभा को पसंद आ गया था। अपनी तनख्वाह की आधी रकम को दुकान पर छोड़कर वह इस फानूस को ले आया था। घर पर दूसरे दिन जब फानूस सजाया जा चुका था तो विभा को बांहों में कसकर उसने उसके कान में धीरे-से कहा था—

"तुम्हारी पसंद का जवाब नहीं।"

झूमर पर से आंखें हटाकर रोबीन विभा को निहारता रहा। जमुहाई आयी पर नींद नहीं। उसने कहा—

"विभा !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—.....

"विभा !"

"तुमने खिड़की बंद कर रखी है इसीलिए कमरे में इतनी उमस है।" आंखें बंद किये-किये ही विभा ने कहा।

"खोलने से मच्छर आ जायेंगे।"

"निशा पर तो झालर है।"

"तुम मुझे सोने क्यों नहीं देते ?"

"तुम्हें शुरू से यह घर पसंद नहीं। अब मुझे भी यह घर अच्छा नहीं लगता। आगे पीछे ऊंची इमारतों से घिरा हुआ है। हमें घर बदल लेना चाहिए।"

"सो जाओ।"

"नींद नहीं आ रही।"

"बड़बड़ाते रहोगे तो नींद कैसे आयेगी ?"

"कल पता नहीं बोर्ड का क्या निर्णय होगा।"

"सो जाओ रोबी।"

"तुम कहती हो कि निर्णय मेरे ही पक्ष में होगा।"

"हे भगवान ! खुद नहीं सो रहे हो कम-से-कम मुझे तो सोने दो।"

किसी रोगी-जैसे स्वर में विभा ने गुजारिश की। फिर भी रोबीन बोलता ही गया—

"मेरा भी तो यही विश्वास है। वे दोनों तो मेरे चार साल बाद एम. बी. सी. से जुड़े हो। मेरे अपने पास उनसे ज्यादा अनुभव और प्रमाण पत्र भी हैं। फिर भी डर बना हुआ है .... कई जगहों ...."

"मुझे सोने दो।" विभा ने तकिये को नीचे से खींचकर अपने कान पर रख लिया।

"अगर यह तरक्की मुझे नहीं मिली तो फिर

तरक्की का दूसरा अवसर पता नहीं कब मिले। विभा सुन रही हो ?"

"रोबी तुम .... तुम इस तरह व्यग्र रहोगे तो बिलकुल सो नहीं पाओगे। तुम्हारा सोना जरूरी है नहीं तो बोर्ड के सामने कल ठीक से पेश नहीं पाओगे।"

"मैं सोना तो चाह रहा हूं पर .... ओके विभा ...."

उसने करवट बदल ली। बगल के छोटे-से पलंग को देखने लगा जिस पर निशा सो रही थी अपने टेडी बीयर के साथ। अभी तीन ही महीने पहले इस पलंग को उसने मामूथ के यहां से लिया था। उसकी तीन किस्तें अभी चुकानी बाकी थीं। निशा सालभर की होने को थी। इधर इन दो सालों से रोबीन को बार-बार यह एहसास होता कि उसकी तनख्वाह पर्याप्त नहीं। अब उसे इस बात का भी एहसास होने लगा था कि विभा से उसकी अच्छी-खासी नौकरी छुड़वाकर उसने भारी भूल की थी। और इस बात का भी पछतावा होता कि अपनी अहम्मन्यता में आकर उसने ससुराल की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिलनेवाली संपत्ति लेने से इनकार कर दिया था। अब सोचता है कि उधर से जो कुछ मिल रहा था उसे लेकर अपनी बेटी के नाम तो कर सकता था। विभा ने जब कहा था कि वैसा करके वह भूल कर रहा था तो रोबीन बोला था कि उसे सहज धन से घृणा है। इधर कुछ महीनों से तो वह लॉटरी भी खरीदने लगा था। सहज धन की चाह पैदा हो गयी थी उसके भीतर।

वास्तव में वह सहज धन की ललक नहीं थी बल्कि एक सहज जीवन की। सहज जीवन की भी नहीं, एक बेहतर जीवन की चाह थी वह। अपनी पत्नी के लिए बेहतर व्यक्तित्व अपनी बेटी के लिए बेहतर परवरिश, बेहतर शिक्षा, बेहतर भविष्य और परिवार के लिए बेहतर घर, बेहतर कार, बेहतर स्टेटस। एक बार पहले जब उसने विभा के सामने यह बात रखी थी तो वह बोल गयी थी।—

"जिन लोगों के नाम गिनवा रहे हो उन्हीं लोगों की तरह तुम भी काले धंधे क्यों नहीं शुरू कर देते।"

"बीवियां अपने शौहर को समझने की कोशिश करती हैं।"

"सो मैंने उन लोगों में हूं जो कोशिश करके थक चुकी हैं।"

"कल कहोगी ऊब गयी हो।"

"तुमने तो कहना शुरू कर दिया है।"

"मैंने तो इस जीवन से ऊबने की बात की थी। वह भी तुम्हारे कारण। अकसर सुनता रहता हूं कि घर में यह नहीं है, वह नहीं है।"

विभा की ओर पीठ किये हुए वह उन्हीं अभावों के बारे में सोचता रहा। अभाव जो अब उसे खुद खटकने लगे थे। शादी के पहले दो वर्ष तो वह विभा से यही कहता रहा था कि 'देखो जमीन का यह छोटा-सा टुड़ा, यह छोटा-सा घर यह सभी कुछ अपनी कमाई के बल कर्ज लेकर खरीद-बनाया है। पांच वर्ष का कर्ज है इसके बाद यह परहेज की जिंदगी अपने-आप खत्म हो जायेगी।'

अब सोचने लगा था कि उस अवधि के समाप्त होने में अभी तीन लंबे वर्ष थे। उसे यह भी लगने लगा था कि विभा इस घर में कई चीजों के लिए तरसकर रह जाती है। कुछ बोलती नहीं। उस दिन भी कुछ भी नहीं बोली थी जब मामूथ की दुकान में उसकी पसंद के उस तीन हजार वाले छोटे-से पलंग की जगह रोबीन निशा के लिए तीन सौ रुपये देकर उधार पर बारह सौ वाला पलंग ले आया था।

इस बार बिन करवट बदले ही रोबीन ने विभा से कहा—

—"विभा ! तुम्हारा दिल क्या कहता है ?"

.....

"कल बोर्ड का निर्णय मेरे पक्ष में होगा या नहीं .... विभा ... तुम सो गयीं ?"

"सोने दो रोबी !"

"तुम्हें विश्वास है कि कल ...."

"कल, कल, कल ! बंद भी करो ...."

वह उठकर बैठ गया।

"मैं तुम्हारी बातों से तंग आ गयी। भगवान के लिए बंद करो।"

"चिल्लाओ नहीं ... निशा जाग जायेगी।"

"तुम औरों की परवाह क्यों करने लगे ?"

"सो जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे सोऊं तुम सोने दो तब तो ... चार घंटों से एक रट लगाये हुए हो।" वह जब उठने लगा तो विभा ने उसके हाथ को थाम लिया—

"कहां चले ?"

"तुम्हें सोने नहीं दे रहा हूं।"

विभा ने उसे खींच लिया।

"सो जाओ।"

और वह उसके बालों को सहलाने लगी। धीरे-धीरे विभा की पलकें बोझिल होती गयीं और रोबीन के सिर पर चल रही उसकी अंगुलियां शिथिल हो गयीं। रोबीन उसके चेहरे पर की नींद को देखता रहा। वह नींद की इच्छा लेकर आंखें बंद करके भी अपने जेहन के भीतर के उस व्यग्र हिस्से को नहीं बंद कर पा रहा था जिसके कारण मनचली नींद भीतर समा ही नहीं पा रही थी।

उसे जहां इस बात का विश्वास था कि वह जगह उसके सिवाय किसी और को मिल ही नहीं सकती वहीं उसे यह आशंका भी थी कि कहीं .... तीन महीने पहले जब उस ओहदे की बात चली थी तो सभी ने यही तो सोचा था कि स्वाभाविक रूप से वह रोबीन को ही मिलना था लेकिन फिर .... जब आवेदन पत्र भरे जाने लगे तो उसके लिए पांच प्रत्याशी सामने आ गये थे। एम. बी. सी. के भीतर के लोगों को इस बात का ताज्जुब हुआ था कि वह जगह तो कोर्पोरेशन के भीतर के अफसरों के लिए थी तो फिर दो बाहर के व्यक्ति उस होड़ में कैसे आ गये थे। यह बात तो अपने संस्थान के सीनियर अफसरों के यूनियन के अध्यक्ष के द्वारा ही रोबीन जान सका था कि न जाने किस होशियारी से संस्थान के निदेशक ने आवेदन पत्र के नियम और तकाजों में एक वाक्य यह भी जोड़कर बोर्ड से पारित करवा लिया था कि— 'अगर बाहर से रेडियो टी. वी. के कर्मचारियों से भी योग्य व्यक्ति इस जगह की आकांक्षा रखे तो उस पर भी ध्यान दिया जाएगा।' यही एक बात थी जिससे रोबीन आशंकित था। उसकी आशंका और भी बढ़ आयी थी जब उसे पता चला था कि बाहर के उन दो उम्मीदवारों में एक शिक्षा मंत्री का अपना साढ़ू भाई था।

रोबीन ने फिर से अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा—

"विभा। अपने मौसा से बात की होती तो शायद ....."

"तुमने बात न की अच्छा ही किया .... किसी की सिफारिश से मिली तरक्की पता नहीं खुशी दे या नही ..."

.....

"तुम्हें तो विश्वास है न कि कल जो कुछ होगा मेरे ही पक्ष में होगा। और फिर क्यों नहीं, मैं उन चारों से अधिक योग्यता लिये हुए हूं।"

.....

"कल सुबह ....."

विभा गहरी नींद में सो चुकी थी। रोबीन उसकी पीठ की ओर पीठ करके छोटे पलंग पर कोई अपनी बच्ची को देखता रहा। निशा के बंधन में कसे उसके टेडी बीयर के चेहरे पर धूमिल रोशनी थी। भालू की वे आंखें चमक रही थीं। वह भी जाग रहा था ठीक रोबीन की तरह।

संवादिता, त्रिओले, मारीशस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

रमेश पोद्दार, गुवाहाटी

प्रश्न : भारतीय महिलाओं ने किन क्षेत्रों में प्रथम होने का गौरव प्राप्त किया है ?

☐ केंद्रीय सरकार में प्रथम महिला मंत्री राजकुमारी अमृत कौर; किसी राज्य की प्रथम महिला मुख्य मंत्री— श्रीमती सुचेता कृपलानी; प्रथम महिला राज्यपाल— श्रीमती सरोजिनी नायडू; किसी राज्य की प्रथम महिला मंत्री— श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित; माउंट एवरेस्ट को विजित करनेवाली प्रथम महिला— बछेन्द्री पाल; प्रथम महिला प्रधान मंत्री— श्रीमती इन्दिरा गांधी; राज्य विधान सभा की प्रथम महिला स्पीकर— श्रीमती शन्नो देवी; इंगलिश चैनल को तैर कर पार करनेवाली प्रथम भारतीय महिला— कु. आरती साहा; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष— श्रीमती सरोजिनी नायडू; संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम महिला अध्यक्ष— श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित।

विजय किशोर, पटना

प्रश्न : संसार में किस धर्म के लोग सबसे अधिक हैं ?

☐ संसार में सबसे अधिक जनसंख्या ईसाइयों की है (१,६१,९२,७२,५६०), इसके बाद मुसलिम (८६,०२,२१,३९०) आते हैं, तथा तीसरा स्थान हिंदुओं (६४,७८,९४,९५०) का आता है, लेकिन इसमें १,६१,६०,११० सिख और ३३,६९,९५० जैन शामिल नहीं हैं।

पाठकों से

बहुत समय से गोष्ठी स्तंभ 'कादम्बिनी' में प्रकाशित नहीं हो रहा था। इसके संबंध में हमारे पाठक निरंतर हमें लिखते रहे हैं। उनकी इस मांग को ध्यान में रखते हुए इस अंक से हम 'गोष्ठी' स्तंभ फिर शुरू कर रहे हैं। अब यह निरंतर प्रत्येक अंक में प्रकाशित होगा। जो पाठक प्रश्न पूछना चाहें, वे पोस्टकार्ड में निम्नलिखित पते पर अपने प्रश्न भेजें। एक बार में केवल एक प्रश्न ही पूछा जा सकता है।

गोष्ठी,
द्वारा—संपादक 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
नयी दिल्ली-११०००१

अभिनव सक्सेना, इलाहाबाद

प्रश्न : संसार के प्राचीन धर्म कौन-से हैं ?

इसको इस प्रकार समझ लीजिए कि हिंदू धर्म को लगभग ३५०० वर्षों से अधिक का माना जाता है, बौद्ध धर्म की स्थापना ईसा पूर्व ५२५ में हुई थी, ईसाई धर्म का प्रारंभ काल २००० वर्ष पूर्व बताया गया है, इसलाम धर्म को स्थापित हुए लगभग १४०० वर्ष हो चुके हैं और चीनियों तथा तैवानियों के धर्म कनफ्यूशियन की शुरुआत ईसा पूर्व ५०० में हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुसूदन गहलौत, जोधपुर

प्रश्न : तेजाबी वर्षा क्या होती है ?

जब कोयला, तेल, गैस, आदि फॉसिल ईंधन जलाये जाते हैं तो उनके धुएं में सल्फर डाइ आक्साइड गैस जरूर होती है। हवा में मौजूद जल के वाष्पकणों से मिलकर यह गंधकी तेजाब बना देती है। यह तेजाब ओस, बर्फ या वर्षा के रूप में गिरता है तो उसकी अम्लीयता दस से सौ गुनी तक बढ़ जाती है। नाइट्रोजन आक्साइड भी जंगलों की हरियाली का दुश्मन है। यह रसायन पहले नाइट्रोजन डाइआक्साइड में और फिर नाइट्रेड में बदल जाता है। पानी के साथ मिलकर नाइट्रेट अब नाइट्रिक एसिड बनता है। यही वह तेजाब है जो वर्षा के साथ मिलकर पेड़ों को जला देता है। इसी प्रकार मोटर-गाड़ियों के धुएं से निकले अधजले नाइट्रोजन ऑक्साइड और हाइड्रोकार्बन मिलकर सूरज की गरमी बढ़ाकर ओजोन बनाते हैं। एक निश्चित मात्रा से अधिक बढ़ जाने पर ओजोन भी वनस्पतियों को हानि पहुंचाती है।

किरण साही, भागलपुर

प्रश्न : प्रवासी पक्षियों को रास्ता कौन बताता है ?

☐ पक्षियों को रात में चमकते सितारों से रास्ता मिलता है। और दिन में ये अपना मार्ग-निर्देशन सूर्य से प्राप्त करते हैं। प्राणियों में पृथ्वी के चुंबकत्व की भी पहचान होती है। जीवाणु से लेकर मधुमक्खी, मछली और चिड़िया ही नहीं, बल्कि तर्कशील मानव भी धरती के चुंबकीय क्षेत्र के मुताबिक अपना रुख बदलता है।

मीना गुप्त, नारनौल

प्रश्न : क्या पक्षी भी जीवन भर के लिए अपना जीवन साथी चुनते हैं ?

☐ कैनडा और अलास्का में पाया जानेवाला पक्षी कैनडा और गूस अपना जोड़ा जीवन भर के लिए बनाता है। अपनी सुरीली तान के लिए प्रसिद्ध और यूरोप, पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में पाये जानेवाले पक्षी चैफिंच (नंदिचटक) भी ऐसे ही हैं और ये भी अंडे मिलकर सेते हैं। तटों और झीलों के किनारे बसनेवाले कारमरैंट (जलकाक) की मादाएं चट्टानों पर सामूहिक रूप से अंडे देती हैं, किंतु अंडों को एक माह तक नर और मादा दोनों सेते हैं। यूरेशिया का लिनेट (चटक) नन्हा-सा पहाड़ी पक्षी, इसके भी नर और मादा मिलकर घर बनाते हैं और बच्चे पालते हैं। मध्य अमरीकी पक्षी क्वेटजल पेड़ के तने को फोड़कर नीड़ का निर्माण करते हैं और अंडे सेने तथा बच्चों को खिलाने-पिलाने में नर-मादा का जीवन भर सहयोग रहता है।

सुभाष यादव, टाटानगर

प्रश्न : भारत में विश्वविद्यालयों की संख्या कितनी है ?

☐ 'हैंडबुक आफ यूनिवर्सिटीज १९८६ के अनुसार— भारत में १९८० तक के आंकड़ों के अनुसार १०२ विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के समान माने जानेवाले नौ संस्थान हैं। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय महत्व के नौ अन्य संस्थान हैं। अब इनकी संख्या कुछ और बढ़ी होगी।

चलते-चलते

☐ कहते हैं संतोष आनंद का मूल है तो संतोष क्या है ?—

संताप का विष पीकर उसे हजम करना ही संतोष है।

सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

आयुर्वेदिक चिकित्सा जगत में विख्यात राष्ट्रपति के मानद वैद्य कविराज वेदव्रत शर्मा प्रत्येक अंक में बीमार और पीड़ित व्यक्तियों के आयुर्वेद पद्धति से उपचार के उपाय बताएंगे। आप यदि किसी रोग से ग्रस्त हैं तो नीचे का फार्म पोस्टकार्ड में चिपकाकर भेजिए।

कुमुद, देहरादून

प्रश्न : उम्र अड़तीस साल है। एक वर्ष से हलका बुखार रहता है। थर्मामीटर से देखने पर ९९° होता है। रक्त-मल-मूत्र की जांच करायी। मूत्र में इकोलाई इंफैक्शन बताया गया। आंखें जलती है—टांसिल भी हैं—पाचन शक्ति दुर्बल है। काफी इलाज कराया। काफी परेशान हूं स्थायी लाभ नहीं होता। उचित इलाज लिखें।

उत्तर : "तालीशादि चूर्ण' साठ ग्राम तथा "टंकण भस्म" चूर्ण पंद्रह ग्राम को साठ भाग में बांट लें तथा प्रति दिन एक-एक भाग सुबह-शाम शहद से लें। "गोसुरादि गुगल" एक वटी "चंद्रप्रभा वटी" एक वटी दोपहर-रात पानी से लें। "पुनर्नवासब" दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं। दही-चावल-खटाई-गुड़-तेल मिर्च मसाले का सेवन चिकित्सा के दौरान तीन माह तक न करें।

एक निराश रोगी

प्रश्न : बदहजमी-खांसी-जुकाम सिर दर्द प्रायः रहता है। बचपन की गलतियों के कारण उपरोक्त समस्याओं से ग्रसित हूं। साथ ही उत्तेजना बहुत अधिक रहती है। उचित परामर्श दें।

उत्तर : चूवयन प्राश-अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें। "सारिवाद्यासव" दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं। खटाई-गुड़-तेल शीतल पेय का सेवन न करें।

अंजलि, मेघालय

प्रश्न : कब्ज बना रहता है। भूख कम लगती है। अब दुर्बलता अनुभव होने लगी है। अठारह वर्षीय लड़की हूं।

उत्तर : अभयारिष्ट दो चम्मच तथा "अशोकारिष्ट" दो चम्मच भोजन के बाद लें।

राम कुमार, धनबाद

प्रश्न : उम्र बीस साल है। बारह माह से पैर के तलवे में बहुत पसीना आता है। पसीने में बदबू भी बहुत होती है। अच्छी-सी दवा लिखें।

उत्तर : पांच सौ ग्राम आंवला लेकर बारीक चूर्ण बनाएं, आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें।

राज बहादुर सिंह, मोदीनगर

प्रश्न : उम्र पचीस साल। पांच-छह वर्षों से जुकाम-नजले से परेशान हूं। आंखों से पानी बहुत आता है। कभी-कभी छींकें भी आ जाती हैं। थोड़ी भी मेहनत करने पर सांस फूलने लगती है। काफी इलाज कराये। स्थायी लाभ नहीं होता। उचित दवा व परहेज लिखें।

उत्तर : चित्रक हरित्तकी एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें। द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं। शीतल पेय तथा दही का सेवन न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमेश, उरई

प्रश्न : उम्र पचीस वर्ष। मैं मांसाहारी हूं। पिछले ६ वर्ष से चर्म रोग से पीड़ित हूं। अनेक एलोपैथी डॉक्टरों को दिखाया। सोराइसिस बताया है। शुरूआत सिर में तिकली से हुई थी। पूरे शरीर में छोटे-छोटे लाल चकत्ते खुरदरे रूप में फैले। जिनमें सफेद पपड़ी जम जाती है और खुजली होती है। कृपया प्रभावी उपाय बताएं।

उत्तर : पंचतिक्त घृत गूगल एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें। "खदिरारिष्टासव" दो-दो बड़े चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पिएं। एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें। दही-खटाई गुड़, तेल, मिर्च मसालों का सेवन न करें।

श्रीमती सावित्री, देहरादून

प्रश्न : चालीस वर्षीय महिला हूं। पिछले सात साल से गठिया रोग से परेशान हूं। घुटनों से दर्द शुरू होकर अब हर जोड़ में रहता है। बुखार भी रहने लगा है। एलोपैथी, होम्योपैथी दवाओं का प्रयोग काफी किया। उस समय लाभ मालूम हुआ किन्तु फिर वही स्थिति है। सारा घर परेशान है। घर का कार्य करने में भी अब असमर्थ हो रही हूं। अच्छा इलाज बताएं।

उत्तर : महायोगराज गूगल एक वटी सिंह गूगल एक वटी सुबह-शाम गर्म पानी से लें। हिंगलेश्वर रस दो-दो वटी दोपहर रात गर्म पानी से लें। दही चावल तथा शीतल पेय का सेवन न करें।

वीणा कपूर, जोधपुर

प्रश्न : मेरा छोटा लड़का जिसकी उम्र चौदह साल है। बोलता कम है, पढ़ाई लिखाई कुछ नहीं करता न ही उसको अक्षर ज्ञान है। पांच वर्ष की उम्र में पहली बार दौरा पड़ा था। अब कभी-कभी पड़ता है। झाग मुंह से नहीं आते। कई बार सिर पकड़कर बैठ जाता है।

उत्तर : शंखपुष्पी तीस ग्राम, वच तीस ग्राम दोनों का बारीक चूर्ण बनाकर साठ भाग बनाएं। सुबह-रात एक-एक मात्रा दूध से दें। सारस्वतारिष्ट एक चम्मच 'अश्वगंधारिष्ट' एक चम्मच भोजन के बाद पिलाएं। नियमित एक वर्ष औषधी सेवन कराएं। खटाई-गुड़ तेल मिर्च सेवन न करें।

नाम..... आयु.....

रोग के लक्षण ..... कब से है.....

अब तक क्या इलाज किया.....

वैद्य की सलाह

द्वारा—संपादक—'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनू बार-बार कहता था कि 'मम्मी, मैं ट्रक से मर गया हूं। मेरा घर मंदिर के पास है।. . . मेरे माता-पिता और मेरी बहन भी वहीं है। मैं जरूर वहां जाऊंगा।'

और एक दिन सचमुच सोनू अपने पूर्व जन्म के माता-पिता और बहन के पास पहुंच ही गया। तब क्या हुआ ?

उसने फिर उसी स्थान में जन्म लिया !

● रणजीतसिंह चावड़ा

ग्वालियर के बानमोर जनपद की एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी के एक वरिष्ठ कर्मचारी अरुणप्रसाद नायक एक दिन शाम को जब अपने घर लौटे, तो उनकी पत्नी किरणदेवी ने एक विचित्र खबर सुनाते हुए कहा, "अजी, हमारे सोनू को न जाने क्या हो गया है कि आज बार-बार वह यही रट लगाए है—'मैं ठाकर हूं। मेरा घर एक बहुत बड़े मंदिर के पास है।"

सोनू अरुणप्रसाद का मझला लड़का है। उसका नाम अभिषेक है, पर प्यार से सब उसे सोनू कहकर ही बुलाते हैं। उसके बड़े भाई का नाम मौनीश तथा छोटे का नाम निर्मेश है।

उस दिन के बाद सोनू की रट, धीरे-धीरे जिद में बदल गयी। ज्यों ही अरुणप्रसाद नौकरी से लौटकर घर आते, सोनू जिद करने लगता, "पापा, मुझे मंदिर ले चलो। मेरा घर मंदिर के पास है।"

कुछ दिन ऐसे ही बीत गये।

* * *

एक दिन सोनू बच्चों के साथ खेल रहा था। अचानक उसके मस्तिष्क में पूर्वजन्म की स्मृतियां कौंध उठीं। वह दौड़कर मां के पास जा पहुंचा और कहने लगा, "मम्मी, मैं ट्रक से मर गया हूं। मेरा घर मंदिर के पास है। मुझे वहां जाना है। मेरे माता-पिता और मेरी बहन भी वही हैं। मैं जरूर वहां जाऊंगा।"

सोनू की बातें सुनकर किरणदेवी फिर चिंता में डूब गयीं। उसने सोनू को समझाने की बहुत कोशिश की, पर वह वही रट लगाता रहा।

कुछ दिनों तक सोनू यही जिद करता रहा। इस बीच अरुणप्रसाद ने उसे स्कूल में भर्ती करा दिया, जिससे वह ट्रक से मरने की बात भूल जाए। किंतु सोनू का मन स्कूल में भी न लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

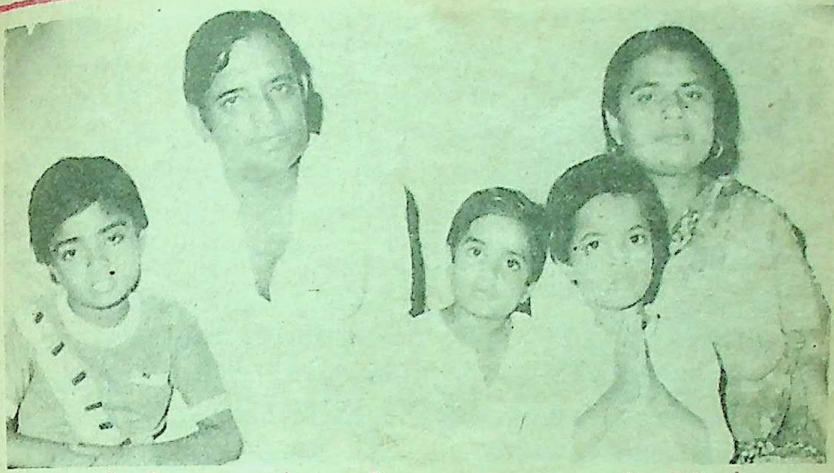

सोनू के इस जन्म के माता-पिता—अरुणप्रसाद नायक, किरणदेवी और भाइयों—मौनीश व निर्मेश के साथ हाथ जोड़े हुए सोनू

वहां से वह बार-बार भाग जाता था ।

एक रात नींद से जागकर वह जोर-जोर से रोने लगा, "मेरी बहन बीमार है । मुझे उसके पास जाना है ।"

सोनू की यह नयी बात सुनकर उसके माता-पिता बहुत घबरा उठे । सोनू को कहां ले जाएं, यह उनकी समझ में न आता था !

इसी पसोपेश में कुछ और दिन बीत गये ।

एक दिन अरुणप्रसाद का तबादला बानमोर से कैमोर हो गया । वे घर आकर सामान बांधने लगे । यह देखकर सोनू ने पूछा, "पापा, हम कहां जा रहे हैं ?"

"बेटे, हम कैमोर जा रहे हैं," अरुण प्रसाद ने जवाब दिया ।

"नहीं, पापा, हमें 'द्वारका' जाना है ।" सोनू को अचानक 'द्वारका' का स्मरण हो उठा ।

सोनू के मुख से 'द्वारका' शब्द सुनते ही अरुणप्रसाद चौंक उठे ! उनकी सभी समस्याएं अनायास हल हो गयीं । उनको सात साल पहले, सन १९७७ की घटना याद हो आयी । उन दिनों वे द्वारका की सीमेंट फैक्ट्री में नौकरी करते थे । सोनू का जन्म भी द्वारका के सिविल अस्पताल में, २० सितंबर, १९७७ को हुआ था । विश्व प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर भी द्वारका में ही है, जहां ले चलने की सोनू जिद करता था । इस प्रकार, यह तो निश्चित हो गया सोनू के पूर्वजन्म का घर द्वारका में ही है, पर उसे द्वारका ले जाना संभव नहीं था । अरुणप्रसाद का तबादला कैमोर हुआ था । अतः वहीं तत्काल पहुंचना था ।

"बेटे, पहले हम कैमोर जाएंगे, फिर वहां सामान रखकर द्वारका चलेंगे", अरुणप्रसाद ने सोनू को आश्वासन दिया ।

सोनू उस समय तो मान गया, पर कैमोर पहुंचने के कई दिन बाद भी जब उसके माता-पिता उसे द्वारका न ले गये, तब फिर से

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारका चलने की जिद करने लगा ।

आखिर, एक दिन अरुणप्रसाद की वह तकलीफ भी दूर हो गयी । २३ मई, १९८४ की सुबह अरुणप्रसाद को द्वारका फैक्ट्री में पुनः सर्विस ज्वाइन करने का आदेश मिला । यह समाचार सुनकर सोनू की खुशी का ठिकाना न रहा ।

१ जून, १९८४ को अरुणप्रसाद सपरिवार द्वारका पहुंच गये । उसी दिन शाम को वे सोनू को द्वारकाधीश के मंदिर ले गये ।

सोनू पल-दो पल तक मंदिर के प्रांगण में खड़ा रहा । फिर इधर-उधर देखकर रोने लगा । अरुणप्रसाद ने उसे समझाते हुए कहा, "चल, बेटे, हम भगवान द्वारकाधीश के दर्शन करें ।"

"नहीं, पापा, मुझे घर ले चलो । मुझे घर जाना है," कहते हुए सोनू रोने लगा ।

अरुणप्रसाद निराश होकर घर लौट आये ।

दूसरे दिन अरुणप्रसाद ने अपने सहयोगी कर्मचारियों से विचार-विमर्श किया और कहा, "आप में से कोई मंदिर के आस-पास रहनेवाले ठाकर परिवारों से परिचित हो, तो कृपाकर उनसे मिलें और यह जानकारी पा लें कि किसी के परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु ट्रक से तो नहीं हुई है ?"

अगले दिन कांतिलाल नामक कर्मचारी ने आकर अरुणप्रसाद को बताया, "साहब, मैंने मंदिर के आस-पास रहनेवाले ठाकर परिवारों से पूछताछ कर ली है । पता चला है कि मनसुखलाल दामोदर ठाकर का युवा पुत्र हितेंद्र आज से सात साल पहले ट्रक के नीचे दबकर मर गया था । मुझे लगता है, आपका सोनू जरूर पूर्वजन्म में हितेंद्र रहा होगा । मैंने मनुभाई को भी सोनू के बारे में सब कुछ बता दिया है । वे भी सोनू तथा आपसे मिलने के लिए उत्सुक हैं ।"

जब यह बात मुझे पता चली तो मेरे मन में भी सोनू को देखने की उत्कंठा जगी और मैं अरुणप्रसाद से मिलने के लिए ए.सी.सी. स्टाफ कालोनी जा पहुंचा । अरुणप्रसाद उस समय घर में ही थे । मैंने अपना परिचय दिया और सोनू के संबंध में औपचारिक पूछताछ करने लगा । सोनू बरामदे में अपने भाइयों के साथ खेल रहा था । इतने में मनसुखलाल का पुत्र कौशिक भी वहां आ गया और अरुणप्रसाद को अभिवादन कर कहने लगा, "नायक साहब, मेरे पिताजी ने आप सबको घर आने का निमंत्रण भेजा है ।"

कौशिक को देखकर सोनू तुरंत अंदर दौड़ गया और किरणदेवी से कहने लगा, "मम्मी, पापा के सामने हाथ जोड़कर जो लड़का बात कर रहा है, वह मेरा भाई है ।"

सोनू की बात सुनकर हम सब चौंक उठे । मैंने प्यार से उसे अपने पास बुलाया और पूछा, "क्या तुम इस लड़के का नाम जानते हो ?"

सोनू कई क्षणों तक कौशिक को देखता रहा और फिर बिना कुछ बोले अंदर दौड़ गया ।

अरुणप्रसाद ने कौशिक से कहा कि अपने पिताजी से कहना कि आज शाम को हमारे यहां ही आ जाएं । फिर परसों हम तुम्हारे यहां आ जाएंगे । कौशिक ने कहा, "ठीक है, हम शाम को आपके यहां आ जाएंगे ।"

मैं कौशिक के साथ उसके घर चला गया ।

* * *

उसी दिन ३ जून, १९८४ की शाम को मनसुखलाल के परिवार के साथ मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

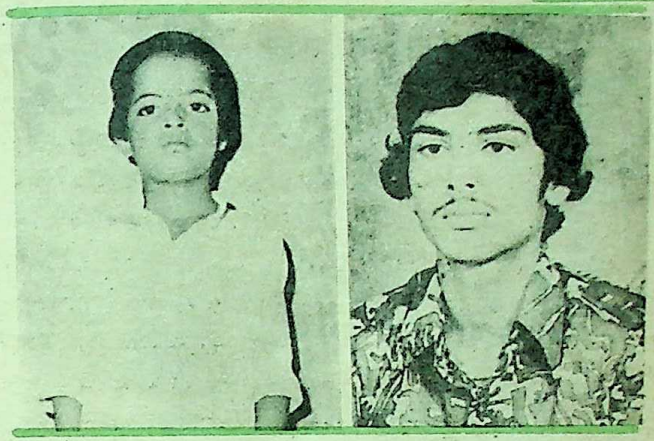

पूर्वजन्म का हितेन्द्र और इस जन्म का सोनू

अरुणप्रसाद के घर जा पहुंचा । मनसुखलाल की पत्नी दिवाली बहन के साथ उनकी बड़ी लड़की प्रवीणा भी आयी थी । सोनू बरामदे में ही खेल रहा था । हम लोगों को देखकर वह तुरंत अंदर दौड़ा और अपनी माता किरणदेवी से ऊंची आवाज में कहने लगा, "देख, मम्मी, मेरी दीदी और मेरे मम्मी-पापा आ रहे हैं ।"

सोनू के ये शब्द सुनकर सब आश्चर्यचकित रह गये । ठाकर-परिवार की आंखें हर्षाश्रु से छलक उठीं ।

किरणदेवी सबके लिए चाय-नाश्ता ले आयीं । यह देखकर सोनू बोल उठा, "मम्मी, मुझे चाय के साथ रोटी खानी है ।"

किरणदेवी उसके लिए रोटी ले आयी । वह रोटी के टुकड़े चाय में डुबोकर खाने लगा ।

इस दृश्य को देखकर प्रवीणा की आंखों में आंसू आ गये । उसने सोनू को अपनी गोद में उठा लिया और आंसू पोंछते हुए कहा, "हितेंद्र सोलह साल का हो गया था, फिर भी इसी तरह चाय-रोटी खाता था ।"

दूसरे दिन ठाकर-परिवार के घर पर मिलने का कार्यक्रम था । मैं नियत समय पर अरुण प्रसाद के घर पहुंच गया । अरुणप्रसाद और किरणदेवी तैयार होकर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे । सोनू का चेहरा खुशी से खिल उठा था । हम चारों द्वारकाधीश के मंदिर की ओर रवाना हुए ।

"यहां सब खुला-खुला क्यों दीखता है ?" सोनू ने इधर-उधर देखकर कहा, "यहां के सब मकान कहां चले गये ?"

"वे सब तो ढह गये ।" मैंने उत्तर दिया ।

वह विस्मित होकर आगे बढ़ा और सामनेवाली गली में मुड़कर एक दरवाजे के पास खड़ा हो गया । "यही मेरा घर है," कहकर सोनू ने दरवाजा खटखटाया ।

दिवाली बहन ने दरवाजा खोलकर हमारा स्वागत किया । मनसुखलाल झूले पर बैठे थे । सोनू दौड़कर उनके पास बैठ गया और दीवार पर टंगे हितेंद्र के चित्र को ध्यानपूर्वक देखने लगा ।

"यह किसका चित्र है, सोनू ?" मैंने धीरे से पूछा ।

"यह तो मेरा ही चित्र है ।" उसने दृढ़ता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाब दिया ।

उसके बाद वह खड़ा होकर इधर-उधर देखने लगा । उसने अपना कमरा भी दिखाया और उस कमरे में हुए परिवर्तन को देखकर आश्चर्य भी प्रकट किया ।

यहां तक तो उसकी सभी बातें सच-सच निकलीं, लेकिन जब मैंने उसके माता-पिता और ठाकर-परिवार के अन्य सदस्यों के नाम बताने को कहा तो वह केवल प्रवीणा का नाम ही बता पाया ।

इस पर अरुणप्रसाद ने प्रवीणा से कहा, "लगता है, सोनू के मन में आपके प्रति बड़ा लगाव है । एक बार रात में वह 'मेरी बहन बीमार है', कहकर चिल्लाकर जाग उठा था । क्या आप बीच में बीमार हो गयी थीं ?"

"हां, मुझे जोर का बुखार आ गया था," प्रवीणा ने बीमारी का स्वीकार किया ।

* * *

मनसुखलाल ठाकर के पांच पुत्र और एक पुत्री हैं । मृत पुत्र हितेंद्र सोलह वसंत पार कर चुका था और मैट्रिक में पढ़ता था । वह हनुमानजी का परम-भक्त था । हर शनिवार को वह नेशनल हाई-वे पर स्थित खारा हनुमानजी के दर्शन करने जाया करता था । ५ फरवरी, १९७७ की जिस शाम को ट्रक के नीचे दबकर उसकी मृत्यु हुई थी, उस दिन भी शनिवार ही था । वह हनुमानजी के दर्शन कर घर लौट रहा था कि पीछे से एक ट्रक उसे कुचलकर भाग चला ।

एक बार फिर मैं अरुणप्रसाद के घर गया और सोनू को लेकर हम तीनों खारा हनुमानजी मंदिर जा पहुंचे । हनुमानजी का मंदिर देखकर सोनू बोल उठा, "पापा, हम यहां क्यों आये हैं ?"

"दर्शन करने के लिए, बेटे ।" अरुणप्रसाद ने कहा ।

"सोनू, तुम यहां पहले कभी आये हो ?" मैंने स्वाभाविक ढंग से प्रश्न किया ।

"हां, हर शनिवार को मैं यहां दर्शन करने आता था ।" सोनू ने भी उसी तरीके से उत्तर दिया और आंखों पर हाथ रखकर कुछ याद करने लगा ।

"अच्छा, जिस जगह तुम्हें ट्रक ने कुचल दिया था, वह जगह हमें बता सकते हो ?" मैंने रहस्य जानने की उत्सुकता प्रदर्शित की ।

"हां, चलो मेरे साथ," कहकर सोनू आगे बढ़ा ।

"यही है वह जगह ।" सोनू ने दृढ़ता से कहा ।

"ठीक है," मैंने कहा, "अब यह बताओ कि ट्रक के सामने तुम गये थे या ट्रक पीछे से आया था ?"

"मैं तो सड़क पर जा रहा था," सोनू ने सही स्थिति का उद्घाटन किया, "ट्रक ने ही पीछे से आकर मुझे कुचल दिया था ।"

मेरी सभी शंकाओं का समाधान हो गया और उस दिन के बाद सोनू का हृदय भी शांत हो गया । अब वह खुशी से खेलता है, खाता है और सोता है ।

अनुवाद : डॉ. कमल पुंजाणी

□ **एक खुला प्रश्न : वे मेरी आलोचना क्या इसलिए करते हैं, वे मेरे विरोधी हैं या वे मेरे विरोधी हैं, इसलिए आलोचना करते हैं।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

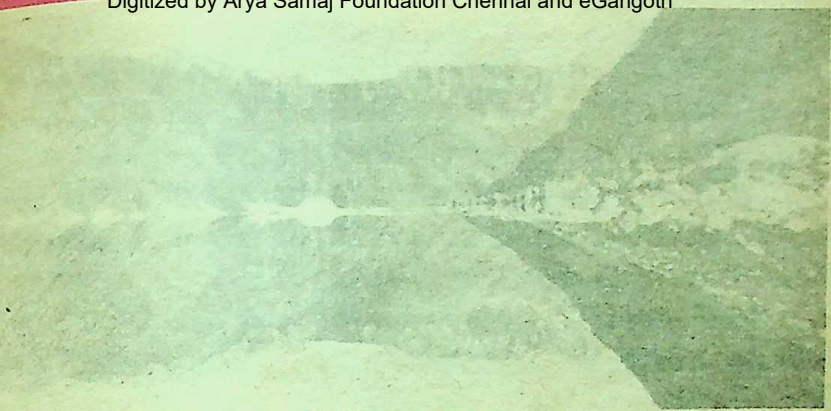

पारदर्शी झील : तारसर

पारदर्शी झील में वंशी के स्वर

● राम गुप्ता

कोल्हाई ग्लेशियर तारसर झील के अलौकिक सौंदर्य का अवलोकन किये बिना कोई भी यह नहीं कह सकता कि कि उसने वास्तव में कश्मीर को देख लिया है उसकी प्रकृति के अद्भुत स्वाद को चख लिया है। कहने के लिए हम श्रीनगर के मार्गों के सौंदर्य को प्राकृतिक देन कह सकते हैं। डल लेक में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश का प्रतिबिंब जब पड़ता है तब झील का सारा जल सिंदूरी रंग में रंग जाता है। इस तरह के प्राकृतिक दृश्यों को अद्भुत कह सकते हैं लेकिन प्रकृति ने कोल्हाई ग्लेशियर एवं तारसर झील को जो सौंदर्य प्रदान किया है वह बेजोड़ ही है।

पहलगाम से कोल्हाई ग्लेशियर २० मील और तारसर झील २६ मील की दूरी पर है।

संध्या के समय पहले किरणों के कारण पर्यटक इस भ्रम में पड़ जाता है कि सारा पर्वत स्वर्ण का बना है। रंग का बदलना गहरे रंगों की और बढ़ता चला जाता है। पीले के पश्चात नारंगी रंग अपना चमत्कार दिखाता है। नारंगी के पश्चात गहरा खूनी लाल उस ग्लेशियर को अपने रंग में डुबोता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहलगाम से जब उपर्युक्त स्थानों की यात्रा पर चलते हैं तब हमारा मार्ग शेषनाग झरने को पार कर, लिदर नदी के साथ-साथ आगे बढ़ता है। इस नदी के दोनों किनारों पर फर एवं चीड़ के घने वन और उनमें अनेक प्रकार की प्राकृतिक जड़ी-बूटियां उगी हुई मिलती हैं। लिदर नदी का तीव्रगामी जल विशाल चट्टानों से टकराता रहता है और उससे जो स्वर उत्पन्न होते हैं वे पर्यटकों के हृदय को स्वर्गीय आनंद से भर देते हैं। इसी मार्ग पर पहलगाम से ७ मील की दूरी पर आरू नामक बेहद खूबसूरत कश्मीरी कस्बा आता है। इस क्षेत्र में जंगली सेब तथा जंगली अखरोट प्रचुर मात्रा में पैदा होते हैं।

आरू से लिदरवाट तक के ७ मील लंबे मार्ग पर निरंतर ऊंचाई पर चढ़ना होता है। वन भी घने होते चले जाते हैं। हमारा मार्ग पगडंडी के रूप में ही बढ़ता चला जाता है। लिदरवाट का प्राकृतिक सौंदर्य अलौकिक है। यहां उत्तर से कोल्हाई झरना और पश्चिम से तारसर झरना बहते चले आते हैं। इसके संगम से ही लिदर नदी का निर्माण होता है।

लिदरवाट में ठहरने के लिए डाक बंगला है जिसका आरक्षण पहलगाम पर्यटन कार्यालय करता है। इस स्थान की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यवर्द्धक है। इस क्षेत्र के पानी से भूख लगने लगती है। जितना भी खाइए वह सब पच जाएगा। प्रत्येक पर्यटक अपने को हल्का, चुस्त एवं पहले से अधिक 'स्मार्ट' अनुभव करने लगता है। तारसर झील और कोल्हाई ग्लेशियर इस स्थान से भिन्न-भिन्न दिशाओं में हैं इसलिए अलग-अलग रास्ते चले गये हैं।

ग्लेशियर को हिमनद भी कहते हैं अर्थात जिस प्रकार गंगा आदि जलयुक्त नदियां हैं, उसी प्रकार इसमें जल के स्थान में बर्फ होती है। जहां जलयुक्त नदियां २४ घंटे में ६० मील तक का मार्ग तय कर लेती हैं, वहां ये हिमनद १ इंच से १० इंच तक का मार्ग २४ घंटे में तय कर पाते हैं।

ऊंचे शिखरों पर भयानक हिमपात होता है। इन शिखरों की दीवारें एकदम सीधी एवं सपाट होने से बर्फ ठहर नहीं पाती तो वह नीचे लुढ़कती है।

झील का भ्रम :

तारसर झील का जल बिलकुल पारदर्शी है। इससे इसकी गहराई के विषय में भ्रम हो जाना स्वाभाविक ही है। इस झील का महत्व, महाभारत की इस घटना के वर्णन से और अधिक स्पष्ट हो जाएगा : युधिष्ठिर आदि पांडवों के लिए मय नामक असुर ने महल बनाया था, उसमें एक विशेष तालाब भी था। अश्वमेध यज्ञ के समय जब दुर्योधन आया तब वह उस तालाब के जल को फर्श समझ गया था इसलिए ज्यों ही उसने पैर जल की सतह पर रखा त्यों ही वह तालाब में गिर गया। द्रोपदी यह सब देख रही थी, और उस समय दुर्योधन की इस अज्ञानता पर वह हंस पड़ी। ऐसा ही 'भ्रम' तारसर झील में भी होता है। जब तक पर्यटक का पैर झील के जल में नहीं पड़ जाता, तब तक वह भौचक्का-सा झील को ढूंढ़ता है।

तारसर लंबोत्तर वक्राकार रूप की झील है। यह समुद्र की सतह से १२,४५० फुट की ऊंचाई पर है। झील के प्रवेश स्थल की तरफ विशाल एवं समतल मैदान है, उस पर हरी-भरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

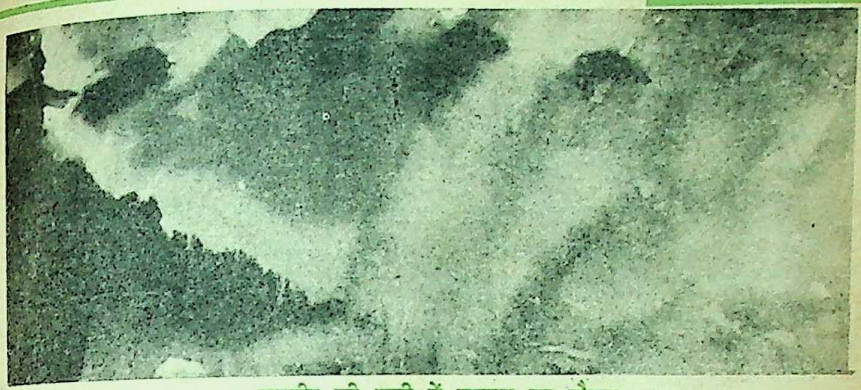

कश्मीर की घाटी में बरसात का मौसम

दूब बिखरी रहती है। उनमें छोटे-छोटे विभिन्न रंगों के फूल खिले रहते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने विशाल ईरानी गलीचा बिछा रखा है। झील के चारों ओर विशाल एवं बर्फीले शिखर है जब इनका प्रतिबिंब जल में पड़ता है तब प्रकृति का यह अद्भुत दृश्य भावुक पर्यटकों के हृदयों को आंदोलित कर देता है इस झील से एक झरना निकलता है जिसे हम तारसर झरने के नाम से जानते हैं।

दूर कोई वंशी बजाए

तारसर से ठीक पश्चिम में एक पर्वत को पारकर एक दूसरी प्राकृतिक झील है जिसको मानसर कहा जाता है। साधारणतः यहां के स्थानीय ग्वाले पर्यटकों को वहां जाने के लिए बहुत अनुत्साहित करते हैं।

झील का मार्ग अनजाना-सा एवं अधूरे रूप से मिलता है। कभी कभी मार्ग को ढूंढ़ने के लिए उतरना और चढ़ना भी पड़ता है जिसमें अधिक श्रम पड़ता है। विशाल एवं भयानक चट्टानों के कारण मार्ग कष्टप्रद हो जाता है, लेकिन प्रकृति ने इस क्षेत्र में अपने सौंदर्य भंडार को मुक्त हृदय से बिखेर दिया है। जिसको जितनी इच्छा, हो, उसे लूट सकता है। पत्थरों की टक्कर बराबर पर्यटकों को सचेत होकर चलने के लिए चेतावनी देती रहती है लेकिन फिर भी ठोकरें खाने को मिल ही जाती हैं, क्योंकि उस सुंदरता में पर्यटक इतना अधिक खो जाता है कि वह अन्य किसी भी प्रकार की चेतावनियां सुनने को तैयार नहीं होता। झील तक जाने के लिए इस मार्ग को ३०-३५ पर्यटक वर्षभर में उपयोग में लाते हैं। मुख्य कारण यही है कि मार्ग दुर्गम है। फिर भी साहसी, प्रकृति-प्रेमी पर्यटक चले आते हैं। जिन में विदेशी प्रमुख होते हैं। इन स्थानों पर अकेला जाना अपने को खतरे में डालना है। हिमानी, भालू और बाघ इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में होते हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न रंगों के सुंदर पक्षी पाये जाते हैं। कुछ के स्वर वंशीके स्वरों से बिलकुल मिलते हैं। पर्यटक इसी भ्रम में पड़ जाता है कि कहीं आसपास ग्वाला अपने पशु चरा रहा है और विश्रामावस्था में वंशी बजा रहा है।

१२३/४०९ फजलगंज
कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य तीर्थों से गुजरते हुए

● भगवतीशरण सिंह

पर्यटन और यात्रा में यात्रा होते हुए भी भाव-बोध का अंतर दोनों को अलग कर देता है। क्यों एक व्यक्ति किसी स्थान विशेष की यात्रा करता हुआ यात्री कहलाता है और दूसरा केवल यात्री। इसको समझने के लिए उसके भावनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता पड़ जाती है। वैसे कुछ अंतर स्थान विशेष के कारण भी पड़ता है। कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां पर्यटन का भाव लेकर या तो जाया ही नहीं जा सकता और यदि हठवश उस भाव से भी जाया जाए, तो यात्री ही होकर लौटना पड़ता है। उदाहरण के लिए बद्री-केदार— जैसे स्थानों में पर्यटन के लिए नहीं जाते और इस दृष्टि से जाने पर भी लौटने पर बद्री-केदार की यात्रा से ही लौटते हैं, पर्यटन से नहीं। अटन शब्द में यात्रा ही निहित है पर भाव या कि उद्देश्य के भीतर से निहितार्थ बदल जाता है। अटन शब्द में निरुद्देश्य भ्रमण का भाव है। पर वह सोद्देश्य होकर नये संस्कार ग्रहण कर लेता है। पर्यटन, देशाटन व तीर्थाटन, इन सभी में यात्रा होती है और उसी के कारण ये संभव होते हैं, पर न तो तीर्थाटन में और न ही देशाटन में

चंबा-खाजियार घाटी का एक मनोरम दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन का भाव होता है । तो यह भावात्मक स्तर पर होनेवाले यात्रा संबंधी उद्देश्य के भेद से एक केवल पर्यटन बनकर रह जाता है । अन्य दोनों में गुणात्मक परिवर्तन हो जाते हैं ।

भरमौर : सिद्धों का स्थान

बहरहाल बात पर्यटन स्थलों की चली थी हम यहां हिमालय के उस भू-भाग का ही थोड़ा-सा परिचय देकर आत्म-संतोष करेंगे, जो राजनीतिक इकाई की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश में पड़ता है और फिर कहें तो इस प्रदेश के भी सभी पर्यटन स्थलों का वर्णन संभव नहीं । यहां के कुछ स्थानों का जिक्र करते हुए एक-दो ऐसे स्थलों का जिक्र भी आवश्यक लगा,जो पर्यटन की दृष्टि से अभी न तो व्यवस्थित हो सके हैं और न उनका इस दृष्टि से विकास हुआ है । अठारह सौ से लेकर इक्कीस हजार फुट की ऊंचाइयों में हिमालय का यह क्षेत्र बड़ा ही सुरम्य और चित्ताकर्षक है । कश्मीर से लगा हुआ चंबा और पांगी का क्षेत्र बहुतों के लिए परिचित क्षेत्र होगा । पर शायद ही बहुत से लोग चंबा के उस गांव से परिचित होंगे, जिसका नाम भरमौर है । यह गांव ही रह गया

कांगड़ा घाटी का सौंदर्य अप्रतिम, अतुलनीय और इतिहास-प्रसिद्ध है । यहां का महिलाओं का सौंदर्य देखकर नूरजहां भी स्तब्ध रह गयी थी । किंवदंतियों के अनुसार यहीं महा पंडित रावण ने शिव मंदिर की स्थापना की थी ।

बर्फ से आच्छादित पर्वत-श्रृंखला : लाहुल का एक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, पर इसे घेरे हुए हिमालय का प्राकृतिक परिवेश इसे जिन कारणों से ऐतिहासिक महत्त्व देता है, वह इस गांव में बने मंदिरों की प्राचीन स्थापत्य-कला है । यह कभी सिद्धों का स्थान था । सिद्ध परंपरा के महंत अब भी वहां हैं ।

इसी प्रकार हिमाचल के किन्नौर जिले में भी कई ऐसे स्थान हैं, जो पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही आकर्षक और महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं । राहुलजी ने इन क्षेत्रों की यात्रा की थी और बड़ा ही रोचक वर्णन किया है । मुझे भी इसके अंतरंग भागों में बार-बार जाने का सुअवसर मिला है । किन्नौर की बात उठने पर उसके कोठी और कानम गांवों को नहीं भूल सकता । ये दोनों ही गांव बहुत प्राचीन हैं और भारत की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की झलक अपने यहां संजोये हुए हैं । इनके घरों की रचना विशेष रूप से आकृष्ट करती है । यहां के पुरुष और स्त्रियां, दोनों ही जिस प्रकार के वस्त्र और परिधान पहनते हैं, वह शरीर रक्षा के लिए आवश्यक और उपयोगी तो होते ही हैं, उनकी कलात्मक प्रवृत्ति और सुरुचि का भी परिचायक होते हैं । हिमाचल के प्रायः समस्त ऊपरी भागों में पुरुष व स्त्रियां दोनों में यह आकांक्षा पायी जाती है कि वे जहां तक और जब तक संभव हो अपने सौंदर्य की रक्षा करते रहे हैं और प्रत्यक्षतः भी सुंदर दिखायी दें । पर किन्नौर के लोगों में यह बात विशेष रूप से पायी जाती है । आमतौर पर गरीबी लोगों की सुरुचि और कलात्मक प्रवृत्ति को मार डालती है । मैदानी इलाकों के गरीबों में हताशा इतनी भर जाती है कि उनके मन में अपने को सजाने का कोई अरमान, कम से कम बाहर नहीं दिखायी पड़ता । लेकिन किन्नार लोगों में उनकी गरीबी भी इसमें कोई बाधा नहीं डालती । इन गांवों और यहां के लोगों को देखते से यह साफ जाहिर होता है कि ये गांव प्राचीन समृद्धि और संस्कृति के धरोहर रूप में खड़े हैं । इनके मकानों की बनावट लकड़ी पर की गयी पच्चीकारी और कलात्मकता से इनकी सुरुचि और इनका संस्कार स्पष्ट होता रहता है ।

पहलगाम से भी सुंदर

एक बार कश्मीर के पहलगाम में कुछ दिनों ठहरने के लिए गया था । वहां के पर्यटक कार्यालय में श्री सफाया नाम के एक बड़े अच्छे अधिकारी से भेंट हुई थी । लगभग बीस मिनट के अंदर ही उन्होंने मेरे रहने के लिए उचित स्थान और खाने के लिए राशन कार्ड आदि का प्रबंध कर दिया । जिस स्थान को उन्होंने मेरे लिए निश्चित किया था, जब मैं वहां अपना खेमा लगाने गया तो देखा कि वहां एक पर्यटक पहले से विराजमान हैं । मैंने सोचा कि एक पड़ोसी मिला, किंतु पर्यटक महोदय की पत्नी से, जो उस समय अपना सामान इत्यादि बांधने में लगी थीं, बातचीत करने पर पता चला कि वे लोग उसी दिन पहलगाम से वापस जा रहे हैं । उन्होंने स्वयं ही कहा कि यदि मैं चाहूं तो बजाय नया खेमा लगाने के उनके ही खेमे में रह सकता हूं । मेरे लिए यह अधिक उचित जान पड़ा और खेमा खाली होने की प्रतीक्षा में बैठ गया । बातचीत के दौरान पता चला कि उन्हें चंबा की घाटी में कुछ दिनों के लिए स्थान मिल गया है और वे लोग उसे पहलगाम से अधिक सुंदर मानते हैं । उन दिनों तक मुझे हिमाचल के दर्शन नहीं हुए थे । चंबा का नाम एक रियासत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में जानता था । सुनकर सहसा विश्वास नहीं हुआ कि चंबा पहलगाम से अधिक खूबसूरत जगह होगी । आज ऐसा मानता हूं कि थोड़ी-सी सुविधाएं दे देने पर कई दृष्टियों से चंबा पहलगाम से अधिक आकर्षक हो सकता है । रावी तट पर बसा हुआ यह छोटा-सा पुराना नगर है । रावी की समस्त घाटियां तो इसमें आती ही हैं चंद्रभागा (चिनाब) की प्रारंभिक और ऊपरी घाटी भी इसी जिले में हैं । यह चंद्रभागा का वह भाग है, जो लाहुल और किश्तवार के बीच पड़ता है । इसकी पुरानी राजधानी तो वर्मपुर थी, जो अब भरमौर के नाम से जाना जाता है । इसका पुराना नाम चंपा था जो चंपावती देवी के नाम पर पड़ा था । चंपा अनंत वर्मन के आक्रमण के बाद बसा । इस नगर के तीन आकर्षण हैं । सबसे पहला तो यहां का चौगान है, जो छोटी-छोटी अनधिकृत दूकानों से घिरता जा रहा है और यदि समय रहते इसे बचाया न गया तो यह नष्ट हो जाएगा । यह चौगान चंबा जानेवाले सैलानियों और स्वयं चंबा के निवासियों के लिए बहुत उपयोगी और आकर्षक हो सकता है । दूसरा आकर्षण वहां का राज संग्रहालय है, जिसमें चंबा की पुरानी कृतियां अच्छी तरह संग्रहीत हैं । चित्रकला के पारखियों और उसके इतिहास में रुचि रखनेवालों के लिए यह संग्रहालय देखने योग्य है । खाजियार गुलमर्ग की याद दिलाता है ।

पांगी चंबा का वह इलाका है, जिसके एक ओर चंद्रभागा पहाड़ी है, जो वर्ष में प्रायः चार से छह महीने बर्फ से ढकी रहती है । जिस समय ऊपरी हिस्सों में बर्फ गिरने लगती है और

चंबा के मंदिर में शक्ति देवी की कांस्य प्रतिमा

पांगी नदी का प्रवाह थमने लगता है, तो एक अपूर्ण दृश्य उपस्थित होने लगता है । बहती हुई तरल नदी कठोर होकर रुकने लगती है । यह दृश्य वहां के निवासियों को शीत ऋतु के आगमन की सूचना देता है और वे बड़ी धूमधाम से नृत्य और रास करते हुए घरों के भीतर चार महीने खाने-पीने का प्रबंध करने में जुट जाते हैं । जानवरों को भी घरों के अंदर रख लेते हैं और कपाट बंद कर लेते हैं । उनकी यह जिंदगी बड़ी कठिन जिंदगी होती है । इस प्रकार शीत व्यतीत करते हुए एक दिन फिर ऐसा आता है, जब इनका कोई अगुआ नीचे की ओर देखता है और देखता है कि नदी का तरल प्रवाह ऊपर उठता चला आ रहा है । हरियाली भी नीचे से ऊपर की ओर उठकर फैलने लगती है । यह सारी प्रक्रिया कुछ दिनों बड़ा रोमांच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताज़गी आई, रौनक़ छाई हमाम से!

हमाम जादू जगाए पहले से कहीं ज़्यादा
ताज़गी और रौनक़ लाए ताज़गी भरी
खुशबू तन-मन में बस जाए,
भरपूर मुलायम झाग सदाबहार हमाम
ताज़गी और रौनक़ के एहसास के लिए.

हमाम
सारे परिवार का साबुन

नया उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती है। तब फिर पांगी निवासी आनंद से विभोर होकर ऋतुराज के आगमन का स्वागत करते हैं।

स्तब्धकारी सौंदर्य

चंबा से चलकर कांगड़े की घाटी में उतरा जा सकता है। फिर सोचना पड़ता है कि किससे दबकर है। कांगड़े की चित्रकारी, उसकी शैली और कांगड़ा घाटी का सौंदर्य अप्रतिम, अतुलनीय और इतिहास प्रसिद्ध है। जिन्होंने कांगड़ा घाटी को आसमंतात देखा है, वही उसके सौंदर्य को समझ सकते हैं। केवल धर्मशाला और पालमपुर तक जानेवालों को उसकी विशेषताएं पूरी-पूरी नहीं मालूम हो सकतीं। कांगड़े की स्त्रियों के सौंदर्य की कहानी तो सनातन से चली आ रही है। कांगड़े की एक प्रसिद्ध कथा शायद रोचक होगी। कहते हैं कि जहांगीर जब कांगड़ा विजय के लिए आया था तो साम्राज्ञी नूरजहां भी साथ थीं। यहां की महिलाओं का सौंदर्य देखकर नूरजहां स्तब्ध रह गयी थी। कांगड़ा में ही वैजनाथ का वह प्रसिद्ध शिव मंदिर है जिसके बारे में यह कथा प्रसिद्ध है कि स्वयं महापंडित रावण ने इसकी स्थापना यहां की थी। हिमालय में तपश्चर्या करने के बाद जब भगवान शंकर उन पर प्रसन्न हुए थे और उन्होंने वरदान मांगने के लिए कहा था, तो रावण ने उनसे यही कहा था कि वह स्वयं उनके साथ लंका चलें। बात हार जाने के कारण शिव के पास दूसरा विकल्प नहीं था। पर वे हिमालय की प्राकृतिक सुषमा भी नहीं छोड़ना चाहते थे। शर्त यह हुई कि वे अपनी प्रतिमा के रूप में लंका चलेंगे पर रास्ते में कहीं भी यदि उस प्रतिमा को रखेंगे तो फिर उसे उठा नहीं सकेंगे। बैजनाथ पहुंचते-पहुंचते रावण को अशौच हुआ और ऐसी अवस्था में प्रतिमा वहीं रखनी पड़ी। फिर वह प्रतिमा वहां से उठायी नहीं जा सकी और शिव-लिंग की स्थापना इस प्रकार बैजनाथ में रावण के हाथों हुई। प्राचीन वास्तुकला का यह सुंदर नमूना है।

कांगड़ा में इस प्रकार के कई सुंदर स्थल हैं। कांगड़ा घाटी पहाड़ से घिरी हुई बहुत विस्तृत होने के कारण मैदानी इलाकों से मेल खाती है। फिर भी इस में पहाड़ी उतार-चढ़ाव का आकर्षण तो है ही। खेती के लिए यह बहुत ही उपयुक्त घाटी है और बड़ी उर्वर भी। कांगड़ा में चाय के बगान भी हैं। बहुतायत से चाय की उपज भी होती है और चाय बनाने के छोटे-छोटे कारखाने भी हैं। कांगड़ा में ही पंचरुखी से दो-तीन मील आगे अंद्रेता में प्रसिद्ध कलाकार शोभासिंह भी रहते थे। इनका बनाया सोहनी-महीवाल का चित्र भारत प्रसिद्ध हो चुका है। सोहनी-महीवाल की प्रेम-कथा कौन नहीं जानता ? किंतु उन दोनों प्रेमियों के सौंदर्य की अमरता देने का श्रेय शोभासिंह को ही है। कांगड़ा के प्रायः प्रत्येक सुरुचिपूर्ण घर में उनका बनाया हुआ सोहनी-महीवाल का चित्र लगा हुआ अवश्य पाया जाएगा और पुरानी शैली के कलाकार आज भी व्यग्र हैं कि किस प्रकार कांगड़ा की चित्रकला और उसकी शैली की रक्षा की जाए। यों तो कांगड़ा के सौंदर्य से आकृष्ट होकर और कई कलाकार वहां जा बसे हैं, लेकिन विशेषकर कांगड़ा चित्रकारों का ही आकर्षण केंद्र हैं।

— बी-२२ सेक्टर २६, महानगर
लखनऊ-२२६००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

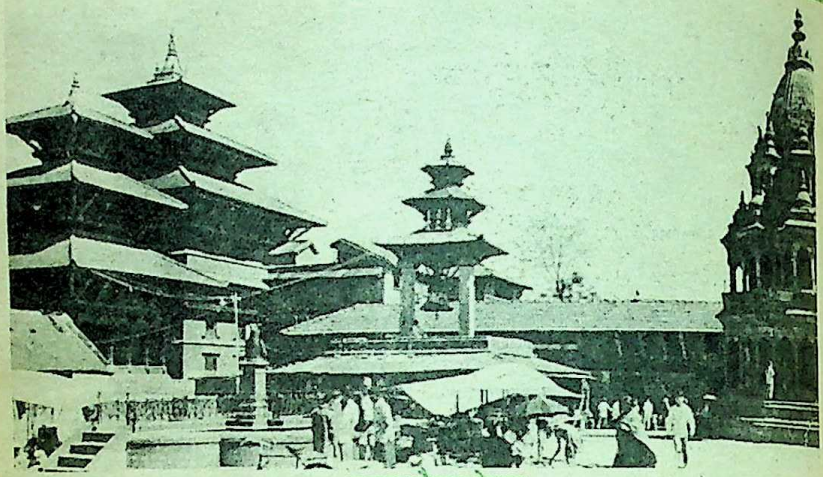

दरबार चौराहा नेपाल

सैलानियों का स्वर्ग नेपाल

● क्रेजी ब्याय

यूं तो भारत में पर्यटन स्थल की कमी नहीं है, फिर भी सैलानियों को भारत के बाहर अगर कोई जगह खींचती है तो वह है— नेपाल। यहां पर सिर्फ पर्यटक ही नहीं बल्कि नवदंपत्ति भी जीवन की शुरुआत करने यहीं आते हैं। भारत और नेपाल की सीमा उ. प्र. में गोरखपुर के सोनौली बार्डर से शुरू होती है।

आम आदमियों की जरूरतें मेरहवां बाजार से ही पूरी हो जाती है, मगर यहां से चलने के बाद जो पहला पड़ाव पड़ता है वो है बुटवल गांव। यहां पर भोले-भाले नेपाली गाय, भैंसे और भेंड़े चराते हुए मिल जाएंगे। यही नहीं झरने के बहते पानी में नहाती हुई और अपने कपड़े धोती महिलाएं आपको देखते ही हिरणियों की तरह सजग हो जाएंगी। इसलिए नहीं कि वह आपसे डर गयीं बल्कि इसलिए कि हो सकता है उन्हें आपकी सेवा करने के बदले कुछ भारतीय रुपये मिल जाएं।

प्रकृति का पुखराज : पोखरा

अगर नेपाल में एवरेस्ट हीरा है तो यह पड़ाव जिसका नाम पोखरा है, अपने आप में पुखराज है। जिस प्रकार हीरा अपने आप में काफी कीमती होता है उसी प्रकार पुखराज भी अपनी काफी कीमत रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

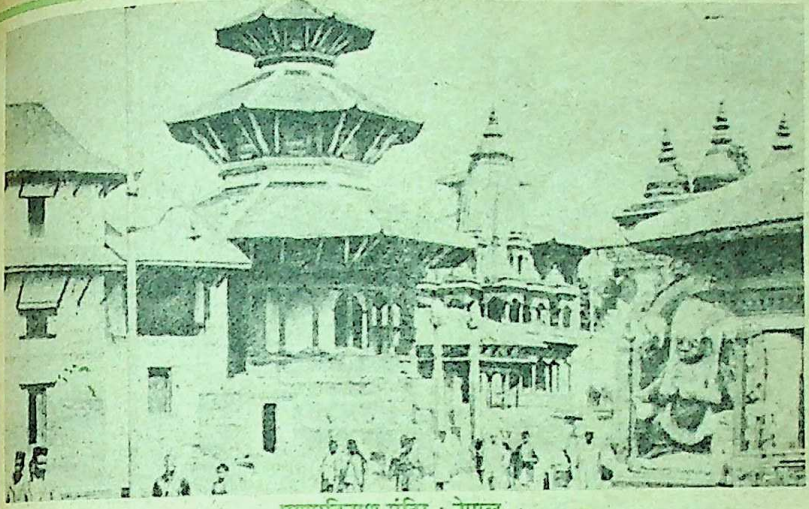

पशुपतिनाथ मंदिर : नेपाल

पोखरे की अपनी अलग ही छटा है। एक तरफ हिमालय की तीन चोटियां अपना सिर उठाये शान से खड़ी दिखायी पड़ती है ये हैं धवलागिरी, अन्नपूर्णा और माछी पूंछ। इसमें धवला गिरी पहले, बीच में माची पूंछ और अंत में अन्नपूर्णा की चोटी है। इन चोटियों पर सुबह की सुनहली किरणें पड़ती हैं तो ऐसा महसूस होता है कि वाकई में कोई तराशा हुआ सुनहला पुखराज खड़ा है।

पोखरे की सुंदरता में चार चांद लगाने के लिए यहां पर झील है जो सैलानियों को नौका विहार करने का मूक निमंत्रण देती रहती है। चांदनी रात में अगर झील में नौका विहार किया जाए तो बस ! दिल करता है कि ये रात कभी न ढले। सामनें चांदी का ताज पहने हुए अन्नपूर्णा की चमकती चोटी और उसमें कभी-कभी पपीहे की आवाज। जो पियू-पियू की आवाज करता हुआ अपने साथी की तलाश में उड़ता जाता है।

कला का भंडार : काठमांडू

इसके बाद आती है नेपाल की राजधानी काठमांडू। काठमांडू नाम यहां पर बने हुए काठ (लकड़ी) के मंदिरों की वजह से पड़ा है। अनेक मंदिर हैं जो काठ की कलाकृति के अनुपम उदाहरण हैं। यहां का मुख्य मंदिर है हनुमान दोश्वा। यह मंदिर भी काठ का बना है जिसमें हनुमान की मूर्ति है। यहां के मुख्य अराध्य देव शंकर हैं, जिनके नाम पर पशुपति नाथ मंदिर है। इस मंदिर में हिंदू ही जा सकते हैं। इसका मुख्यद्वार राजदरबार की तरफ है तथा पिछला द्वार बागमति नदी की तरफ है। इस मंदिर का भी रूप पैगोडा की तरह है। पंचमुखी महादेव के शिवलिंग को स्पर्श करना वर्जित है। कहावत है कि किसी जमाने में यह शिवलिंग पारस पत्थर का था।

बागमति यहां की एकमात्र नदी है। गरमियों में यह काफी छिछली हो जाती है मगर बरसात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते आते उसमें भयंकर पानी का बहाव रहता है।

काठमांडू में अधिकतर हिंदू संप्रदाय के लोग रहते हैं मगर विदेशी भी घूमते हुए मिल जाएंगे। कारण, यहां चरस, अफीम, गांजा भांग आदि मादक पदार्थ आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। रिक्शे यहां पर इतने महंगे है कि अगर अनजाने ही कोई बैठ जाए तो शायद पहली बार में ही सबक ले लेगा और फिर नहीं बैठेगा।

अकेला हिंदू राष्ट्र

विश्व का अकेला हिंदू राष्ट्र होने का गौरव नेपाल को ही है। यहां का मुख्य त्योहार शिवरात्रि और दशहरा है। इस देश में गौ हत्या पर प्रतिबंध पूरी तरह से लागू है मगर भैंसे और सूअर आम दुकानों पर कटते और बिकते हुए देखे जा सकते हैं।

नेपाल में राजतंत्र है लेकिन राज-परिवार और नरेश उदारमना हैं एवं वहां की जनता को लोकतंत्रीय पद्धति की अनेक सुविधाएं प्राप्त हैं। नेपाल और भारत के संबंध प्राचीन हैं और आज वे उत्तरोत्तर दृढ़ होते जा रहे हैं।

सी-२२/३६९० प्रताप महाराज स्ट्रीट, कबीर रोड,
वाराणसी-३

चतुर छात्र, "पहले उसे रोगी बनाने की दवा दूंगा। बाद में उसे स्वस्थ बनाने की दूसरी दवा दूंगा।"

प्रोफेसर प्रसन्न होकर बोले, "शाबास, ठीक कहा। तुम यहां पढ़ने में समय नष्ट मत करो। प्रेक्टिस शुरू कर दो। तुम सफलता प्राप्त करोगे।"

हमारी तलहटी

ये हमारी तलहटी नहीं
इसे जानो पहाड़ !
इन्हीं तलहटियों में
छिपी हैं
कितनी शक्तियां
मनुष्य इन्हीं तलहटियों से
उगाते हैं अन्न
और फूल
जो एक भोजन देता है
और दूसरा देता है
सौंदर्य की घाटियां

इतिहास की राह पर

इस राह से रोज
आता हूं और जाता हूं
इतिहास भी
इस राह होकर
एक दिन गुजरा है
और मैं भी
एक दिन सदा के लिए
इस रास्ते से गुजर जाऊंगा
और फिर इतिहास
की कड़ी में
मेरा भी नाम जुड़ जाएगा।

—सूरज मुजफ्फरपुरी
गुरुद्वारे के सामने रमना, मुजफ्फरपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भटगांव (नेपाल) में काली की प्रतिमा

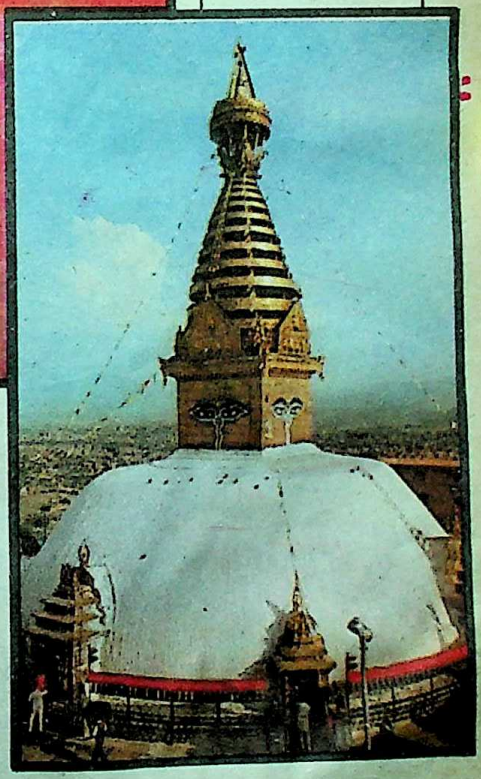

काठमांडू स्थित स्वयंभूनाथ का मंदिर

छाया : एस. एस. रतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

छाया एन. त्यागराजन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत में तपती धूप की परवाह न कर पर्यटक घूमते हैं ऐतिहासिक मंदिर देखने के लिए

माउंट आबू स्थित नकी झील : राजस्थान में ग्रीष्म में भी पर्यटकों के आकर्षण केंद्र

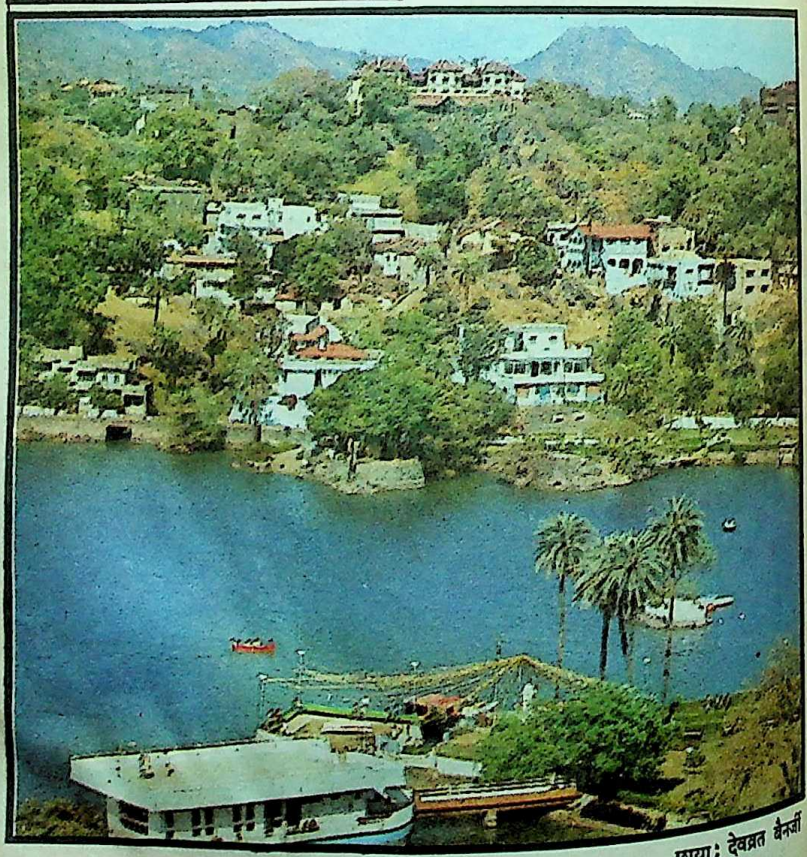

छाया : देवव्रत बैनर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेतीले राजस्थान में मरुकुंज है माउंट आबू । अरावली पर्वतमाला की प्राचीनतम शृंखलाओं में से एक यह पर्वत-शिखर अपनी अनुकूल भौगोलिक स्थिति के कारण साल के बारहों महीने हरियाली और फूलों की रंगीनी के साथ गुलजार रहता है। विश्व-प्रसिद्ध दिलवाड़ा के जैन मंदिर, मनोरम नक्की झील और अभयारण्य के कारण पर्यटकों के लिए अद्‌भुत आकर्षण का केंद्र है यह पर्वतीय स्थल : माउंट आबू ।

अरावली शिखर पर खड़ा है अकेला— माउंट आबू

● आशीष

थार के विशाल रेगिस्तान में गरम हवाओं, रेत के डूहों और जगह बदलती रेत का कोई अंत नहीं है । न प्यास बुझाने के लिए सुलभ पानी, न तपती धूप से बचने के लिए किसी वृक्ष की छांह, न बादलों की शीतलतादायी दृश्यावलि, बस एक अंतहीन सिलसिला है रेगिस्तान । लेकिन मरुधारा क्षेत्र के दक्षिण-पश्चिम में अरावली पर्वतमाला से थोड़ा ही आगे है आबू पर्वत । रेगिस्तान के बीच में जैसे एक शीतल हरीतिमाभरी राहत देनेवाला

दिलवाड़ा के जैन मंदिर में एक देवी प्रतिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अलौकिक पड़ाव हो। हां, आबू पर्वत सचमुच अलौकिक पड़ाव है। ग्रीष्म या हेमंत में ठंडी सरस हवावाला यह क्षेत्र पुराणों के वर्णनों से भी पुराना है। पुराणगाथाओं के अनेक देवताओं का क्षेत्र है यह। अब तो वेद विद्या के ईश्वरीय विद्यालय के कारण भी यह स्थान चर्चित हो आया है।

आबू पर्वत की समुद्र तल से सामान्य ऊंचाई चार हजार फीट है, लेकिन गुरु शिखर की ऊंचाई है पांच हजार छह सौ त्रेपन फीट। चारों तरफ हरे वृक्षों और फूलदार पेड़ों से लदा हुआ। कनेर, चंपा, अमलतास, गुलमोहर, पलाश व अन्य फूलों व वनस्पतियों के कारण यह स्थान सैलानियों और वनस्पति-विशेषज्ञों के मन को मोहता है। तीस किलोमीटर लंबे और बारह किलोमीटर चौड़े इस पर्वत पर सभी धर्मों के तीर्थ हैं, जिनकी यात्रा करना अत्यंत सुगम है।

राजपूताना के ऐतिहासिक वैभव को देखने के उपरांत जब भी इतिहास-प्रेमी इस पर्वत की

माउंट आबू में ठहरने के स्थान

१. सी.पी.डब्ल्यू.डी. डाक बंगला, २. रॉक व्यू डाक बंगला, ३. एस.ई.एस. डाक बंगला, ४. भारत सेवक समाज डाक बंगला, ५. राजस्थान सर्किट हाउस, ६. धौलपुर हाउस, ७. धौलपुर कांटेज, ८. स्टेट ट्रांसपोर्ट विश्रामगृह, ९. पर्वतीय विश्रामगृह१०. यूथ होस्टल हालीडे होम, ११. फारेस्ट रेस्ट हाउस, १२. दिलवाड़ा डाक बंगला

धर्मशालाएं

१. रघुनाथ धर्मशाला, २. दिलवाड़ा जैन धर्मशाला

होटल व लॉज

१. नक्की लॉज, २. शांति सदन, ३. राजेन्द्र होटल, ४. गुजरात लॉज, ५. अर्बुद लॉज, ६. नटराज होटल, ७. सूर्यदर्शन होटल, ८. पैलेस होटल, ९. माउंट होटल, १०. जयपुर हाउस होटल, ११. होटल लेक हाउस, १२. वनजीवन लॉज, १३. भारतीय निवास।

धर्मशालाओं में १० रुपये से २० रुपये तथा होटल में ४० रुपये से २०० रुपये तक कमरा उपलब्ध है।

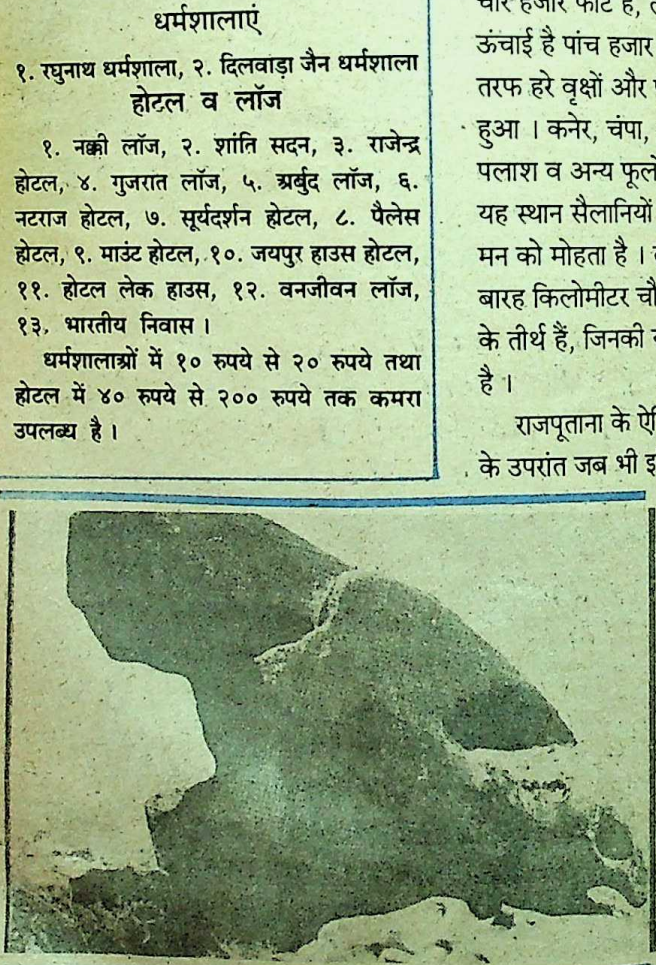

टॉड रॉक : एक अद्भुत स्थल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर आते हैं, तो उन्हें प्राचीन से लेकर मध्यकालीन इतिहास की अनेक झांकियां यहां मिलती हैं। अब्बुल फजल के अनुसार यह अर्बुदाचल पर्वतमाला है, जिसका पुरातात्विक महत्त्व निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जाता है।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण सभी दिशाओं से आबू पर्वत की ओर आया जा सकता है। निकटस्थ स्टेशन आबूरोड से यह स्थान केवल उन्तीस किलोमीटर दूर है। बंबई से यहां की दूरी रेल मार्ग द्वारा ७०५ किलोमीटर है, तो बड़ौदा से ३१३ किलोमीटर। अहमदाबाद से यहां की दूरी २१३ किलोमीटर है। अजमेर से ३३२ किलोमीटर तथा जयपुर से ४६८ किलोमीटर है। भारत की राजधानी दिल्ली से यह पर्वतीय सैरगाह ७७६ किलोमीटर दूर है।

इतिहास भी रोचक है

आबू पर्वत का इतिहास अत्यंत रोचक है। इतिहास की धारा में इसे अनेक राजाओं का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा है। सन ३२० में चंद्रगुप्त के दरबार में सीरियन राजदूत मेगास्थनीज ने इस पर्वत का उल्लेख किया था। अनेक विदेशी यात्रियों ने इस मनोहारी पर्वत का उल्लेख अपने यात्रा-वृत्तांतों में किया है। सभी विवरणों में आश्चर्य प्रकट किया गया है कि विशाल रेगिस्तान के बीच गरम और तपती रेत के अंबार के ऊपर एक हरी-भरी पर्वत-माला सतत अपने हरेपन से यात्रियों और सैलानियों को आकर्षित कर रही है।

१३वीं शताब्दी में आबू पर्वत अपने उत्कर्ष पर था। धन-धान्य, वन-संपदा से संपन्न इस पर्वत शिखर की ओर अनेक राजघराने ललचाई नजरों से देखते थे। बीसवीं शताब्दी में एक

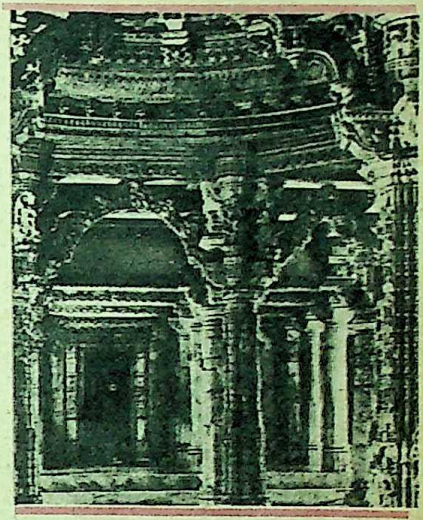

दिलवाड़ा का एक मंदिर : पत्थरों पर खुदी कविता

अंगरेज प्रशासक को यह स्थान इतना पसंद आया कि उसने मात्र सत्ताइस हजार रुपये में सिरोही के महाराव से पट्टा लिखवाकर सन १९१७ में यह पर्वत खरीद लिया। अंगरेजों ने इसका विकास एक पर्वतीय सैरगाह के रूप में तो किया ही, उन्होंने इसका कूटनीतिक उपयोग अपनी फौजों के संदर्भ में भी किया—यहां से वे पश्चिमोत्तर क्षेत्रों का जायजा ले सकते थे तथा रेगिस्तान में बसी बर्बर वनजातियों को भी वश में रख सकते थे। जो भी हो—धीरे-धीरे इस पर्वत का सौंदर्य अधिक निखरकर आने लगा और शहरों व मैदानों की भीषण गरमी से बचने के लिए लोग इस पर्वत की ओर आने लगे। महाराष्ट्र व गुजरात के बड़े शहरों के निकट होने के कारण यहां पर्यटकों का तांता बंधा रहता है। सारे नगर में रहने के लिए सस्ते से सस्ते होटल व धर्मशालाएं हैं, तो धनपतियों के लिए पांच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान का सबसे ऊंचा पर्वत-शिखर : गुरु शिखर

सितारा सुविधावाले होटल भी हैं, अनेक सरकारी प्रतिष्ठानों एवं दूसरे प्रतिष्ठानों ने यहां अपने विश्राम गृह भी बनाये हुए हैं । प्रांतीय सरकार व केंद्रीय सरकार के डाक बंगले भी यहां हैं व अन्य स्वायत्त संस्थानों के विश्राम गृह भी हैं ।

मंदिर संगमरमर के

वास्तुकला एवं पुरातत्व की दृष्टि से आबू पर्वत में अनेक दर्शनीय स्थल हैं । संगमरमर से बने दिलवाड़ा के मंदिर तो यहां के अन्यतम आकर्षण हैं । यह जैन संस्कृति के ऐसे निर्माण हैं, जिन्हें अतुलनीय कहा जा सकता है । मुख्य मंदिर चार हैं और उनकी समग्र वास्तुकला अद्वितीय है । सन १०३१ में विमल वसहि ने जिनालय का निर्माण कराया था । जैन धर्मावलंबियों के कुछ महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में यह एक है । आश्चर्य है कि जैन मतावलंबियों के मंदिर होते हुए भी ये पूर्ण आर्य संस्कृति से जुड़े हुए हैं । पावस में यहां राजस्थान के कोने-कोने से आकर लोग विशेष उत्सव में भाग लेते हैं ।

दर्शनीय स्थलों में कुछ के नाम इस प्रकार हैं—रघुनाथ मंदिर, धूलेश्वर मंदिर, भीम गुफा, अग्नतीर्थ, रेवती कुंज, अमरावती के खंडहर, गऊमुख, विशिष्ठाश्रम, हनुमान मंदिर, टॉड रॉक, नन रॉक तथा गुरु शिखर । इसके साथ यहां एक झील—नक्की झील, सदाबहार आकर्षणों में एक है ।

आबू पर्वत अरावली पर्वतमाला के एक सिरे पर स्थित है और वैज्ञानिकों का मत है कि वह अत्यंत प्राचीन पर्वत है । हमारे प्राचीन साहित्य में उसे हिमालय का पुत्र कहा गया है । इस बार क्यों न हिमालय परिवार के आबू पर्वत की सैर की जाए—जहां शुद्ध जल की नक्की झील आसमान को बिंबित किये आपकी प्रतीक्षा कर रही है ।

—३-ए/११ डब्लू. ई. ए., करौल बाग,
नयी दिल्ली-११०००५

क्रूज मिसाइल : एक नवीनतम बहुत ही घातक हथियार, जिसका उपयोग किसी भी क्षण आकस्मिक आक्रमण में किया जा सकता है । इन्हें जमीन, आकाश और जल के अंदर तीनों जगह चलाया जा सकता है । इनके द्वारा मार करने की भी क्षमता अलग-अलग है— जैसे लंबी दूरी की, मध्यम दूरी की और कम दूरी की । इनमें परंपरागत विस्फोटक भी होते हैं और नाभिकीय भी । एक नाभिकीय शीर्षवाला क्रूज मिसाइल एक साथ बीस हिरोशिमा-जैसा ध्वंस ढा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसीबो अपने गांव लौट गयी

● कर्तार सिंह दुग्गल

जागीरा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसकी पत्नी नसीबो उसे चैन नहीं लेने दे रही थी। यही जिद कि अब हम यहां नहीं रहेंगे।

"पगली, अपना घर भी कभी किसी से छोड़ा जा सकता है ?" जागीरा बार-बार उसे समझाता। लेकिन स्त्री हठ, और स्त्री भी वह, जिसने ऊपर नीचे तीन बेटियों के बाद बड़े अरमानों से बेटा जना हो। जागीरा उसके मुंह की ओर देखता रह जाता। कहां-कहां उसने मन्नतें नहीं मानी थीं। मन्नतों की बात सोचते हुए, नसीबो को याद आया कि आखिरी मन्नत उसने बई किनारे स्थित सुलतानपुर गुरुद्वारे में मानी था। 'बाबा की बेरी' के सात पत्ते उसने एक-एक करके सप्ताहभर चबाये थे। और इस बार वह निराश नहीं हुई थी। उसने चांद के टुकड़े-जैसा एक बेटा पैदा किया। यह तो चमत्कार था। और नसीबों के हाथ-पांव फूलने लगते; अभी तो उसने मन्नत भी पूरी नहीं की थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इधर वह सब कुछ समेट-सवाकर कहीं दूर जा बसने की सोच रही थी।

नसीबो ने अपनी आंखों से देखा था। वह बनिये के यहां माचिस की डिबिया खरीदने गयी थी। तीन नौजवान नकाब पहने हुए आये। बाजार में पहुंचकर उन्होंने अपना स्कूटर रोका और तड़तड़ गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। आंख झपकते ही उसके पांव के नीचे खून की तलैया बिछ गयी। न मालूम नसीबो कैसे बच गयी थी। जैसे 'ज्योतांवाली' ने उसे हाथ देकर बचा लिया हो। बेचारे बनिये के तराजू की डंडी उसके हाथ में वैसी की वैसी ही पकड़ी रह गयी, और वह औंधा जा गिरा। एक ओर उसका जवान-जहान बेटा एड़िया रगड़ रहा था। उसकी छाती में से खून का फव्वारा छूट रहा था। यही हाल सामने हलवाई का उन्होंने किया था। उसके बगल की दुकानवाले बजाज का किया था। और फिर जिस आंधी-तूफान की तरह आये थे, वैसे ही स्कूटर पर बैठकर लौट गये।

नसीबो बार-बार हाथ मलती। जैसे, किसी मक्खी-मच्छर को मारा जाता है। एकाएक आये और चार निर्दोष जानें ढेर करके लौट गये। किसी ने उनके सामने चूं तक नहीं की। आवाज तक नहीं निकाली। किसी ने उन्हें ललकारा नहीं, उनका पीछा तक नहीं किया।

हर रोज, हर दूसरे रोज ऐसी कोई दुर्घटना हो जाती। कहीं किसी को गोली से ढेर कर दिया जाता। कहीं कोई बैंक लूट लिया जाता। नसीबो सुनती और अपना साज-सामान, कपड़े-लत्ते संभालने लगती। न कुछ खाती, न कुछ पीती। यही ज़िद 'अब हम यहां नहीं रहेंगे। घर में कलेश मच जाता।

"लेकिन तुम जाओगी कहां ?" जागीरा हार कर उससे पूछता।

"कहीं भी निकल जाएंगे, भूखे रह लेंगे, लेकिन अब और नहीं टिकेंगे यहां", नसीबो अपने फैसले पर दृढ़ थी।

फिर यह खबर आयी कि पड़ौसी गांव में मंदिर के पुजारी की कोई हत्या कर गया था। उस बेचारे का भला किसी से क्या बैर हो सकता था। अस्सी साल का बूढ़ा। उसी मंदिर में तो अपने बेटे के मुंडन-संस्कार के लिए नसीबो गयी थी। पंडितजी ने कैसी श्रद्धा से पूजा करवायी थी। 'बेटी ! बेटी !' कहते, जैसे उनका मुंह न थकता हो।

अब जागीरा से अपनी पत्नी की और अनसुनी न की जा सकती थी। हर रोज घर में कहा-सुनी हो जाती थी। न चूल्हे आग, न घड़े पानी। आखिर, जागीरा ने हथियार डाल दिये। उसने चुपके से, दूर के किसी ग्राहक के साथ अपनी जमीन का सौदा कर लिया। लेकिन जब मकान बेचने की बारी आयी तो अड़ोस-पड़ोस को पता चल गया। हर कोई जागीरा को समझाने लगा। यूं कभी कोई बाप-दादा की जायदाद बेचा करता है। बेशक इधर-उधर कुछ खलबली मची हुई है। जवान-जहान लड़के बदतमीजी पर तुले हुए हैं। लेकिन यूं अपना घर-बार कोई नहीं छोड़ा करता। नसीबो परों पर पानी नहीं पड़ने देती। और जागीरा जोरू का गुलाम, एक बार उसने अपनी घरवाली से हां कर दी, तो फिर उसी के सुर में सुर मिलाने लगा। जो कोई उनके यहां आता, उसकी बात सुन लेता, लेकिन करता वही, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी बीवी ने ठान रखी थी ।

यूं किसी का गांव छोड़कर चले जाना, घर-घर में इसकी चर्चा होने लगी । आखिर पंचायत खुद चलकर जागीरा के यहां आयी । पंचों ने उसे समझाया । उसका बाल तक बांका नहीं होने दिया जाएगा । जो कोई भी उसकी ओर बुरी नजर से देखेगा, उनके सीनों से लांघ कर उसे आना होगा । हर किसी ने सौगंध खायी । उसकी रक्षा के प्रण किये । जागीरा से कोई जवाब न बन पड़ा । लेकिन, नसीबो टस से मस नहीं हुई । अपनी गोद के बच्चे को छाती से लगाये बार-बार जागीरा को याद दिलाती— कैसी-कैसी मन्नतों के बाद उनके यहां बेटा हुआ है । इसे कुछ हो गया तो हम कहीं के नहीं रहेंगे । बच्चे को छाती से चिपटाकर वह कहती ।

जागीरा अपनी पत्नी की बात तो न टाल सका, लेकिन यह सोचकर कि अब वे अपना गांव हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ जाएंगे, उसका कलेजा मुंह को आने लगता और वह घंटों खामोश अकेले में बैठे रहता ।

★ ★ ★

गरमी के दिन, उस रात अपने आंगन में सितारों की छांह तले वह अपनी घरवाली से कह रहा था, "नसीबो ! पता नहीं उस ओर इस जैसा आकाश हो या न हो । इस तरह के तारे हों या न हों । हमारे गांव के कुएं जैसा ठंडा-मीठा पानी और कहीं सुनने में नहीं आया । इस ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हवा जैसी हवा न मालूम उधर होगी कि नहीं।'' और नसीबो ने चोर नजर उसकी ओर देखा। जागीरा की पलकों में से टप-टप आंसू गिर रहे थे।

उस सारी रात जागीरा की आंख नहीं लगी। बार-बार उसे याद आता कि उसका पिता कैसे पीछे पाकिस्तान में छूट गयी जमीन को याद करके तड़पा करता था। उसे इस ओर का कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। मिट्टी तक में दोष निकालता रहता कि इसमें शोरा है। इस तरफ का चांद देखकर कहता— हमारी तरफ का चांद जैसे टिकिया की टिकिया मुसकाने बिखेर रहा हो। और आगे-पीछे हर कोई उसकी ओर देख-देखकर हैरान होता रहता। उन दिनों जागीरा स्वयं अपने पिता पर हंसा करता था।

गांववालों ने जब जागीरा को किसी भी तरह मानते हुए नहीं देखा तो उन्होंने फैसला किया कि उसके घर को कोई भी नहीं खरीदेगा, नहीं किसी दूसरे गांववाले को ऐसा करने दिया जाएगा। जागीरा हर कोशिश करके हार गया। किसी ने हामी नहीं भरी। गांववाले न खुद मोल लेने के लिए राजी होते, न किसी और को सौदा करने देते।

आखिर, हारकर एक रात जागीरा ने अपने मकान को ताला लगाया और चुपके से गांव से निकल आया। उसकी पत्नी का हठ पूरा हुआ। हर रोज, इधर-उधर कोई न कोई वारदात हो जाती थी। नसीबो सुनती और अपने मर्द पर बरसने लगती। घर में तूफान मच जाता।

स्टेशन पर पहुंचकर उन्होंने फैसला किया कि वे राजस्थान जाएंगे। जागीरा का एक दूर का भाई वहां जा बसा था। पिछले साल एक से अधिक बार उसने इन्हें बुलवा भेजा था। लेकिन जागीरा ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। नसीबो की संदूकची में चार गहने थे। वे सोचते, कहीं न कहीं तो ठोर-ठिकाना हो ही जाएगा। जो पहले उन्होंने सोचा था कि दिल्ली के शरणार्थी कैंप में वे जा टिकेंगे, यह इरादा उन्होंने छोड़ दिया था। किसी ने उन्हें बताया था कि शरणार्थी कैंप के लोगों को सरकार पंजाब लौट जाने के लिए मजबूर कर रही है।

दिल्ली पहुंचकर उन्हें राजस्थान के लिए गाड़ी पकड़नी थी। एक गाड़ी छूट गयी थी। दूसरी की वह बाट देख रहे थे। प्लेट-फार्म पर पड़े-पड़े जागीरा और उसका परिवार परेशान हो रहा था। इतनी भीड़ थी कि कंधे से कंधा छिल रहा था। तिल धरने की जगह नजर नहीं आती थी। जो गाड़ी भी आती, लदी हुई आती। जो गाड़ी चलती लदी हुई चलती।

जागीरा और नसीबो ने रात प्लेट-फार्म पर ही काटी। अगली सुबह उन्हें राजस्थान के लिए गाड़ी मिलनी थी। बुरे हाल। प्लेट-फार्म पर ही उन्होंने खाया-पिया। प्लेट-फार्म पर ही वे लेट गये। उनके साथ और भी कई मुसाफिर थे।

अगली सुबह गाड़ी के इंतजार में वे प्लेट-फार्म पर बेचैन हो रहे थे। जागीरा बच्चों की फरमाइशें पूरी करता हुआ बेहाल था। तीन लड़कियां, एक को मनाता, दूसरी रूठ जाती। दूसरी को संभालता तो तीसरी मुंह फुला लेती। नसीबो अपने बेटे को कलेजे से लगाये रहती। गाड़ी की कहीं कोई खबर नहीं थी। प्लेट-फार्म पर रेल की पटरी के दोनों ओर मुसाफिरों की भीड़ हर क्षण बढ़ रही थी। एक कोलाहल-सा मचा हुआ था। कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती थी। आस-पास के प्लेट फार्मों पर गाड़िया आ-जा रही थीं। भांति-भांति की सीटियां बज रही थीं। बाट देखते-देखते ऊबकर नसीबो सामने, खुले बेकार बह रहे नल पर पानी पीने के लिए गयी। बच्चे को अपने बाप के पास बिठा गयी। जागीरा अपने ख्यालों में डूबा हुआ था। कब गाड़ी आयेगी, कब वे गंगानगर पहुंचेंगे। वहां भी न मालूम उन्हें ठिकाना मिलेगा या नहीं। उनके दूर के भाई का कुछ नहीं कहा जा सकता था। एक बार उसने लिखा तो था कि यहां चले आओ। लेकिन इस बात को तो पूरा एक साल बीत गया था। हो सकता है, उसने इरादा बदल लिया हो।

इतने में उनका बच्चा रेंगता हुआ रेल की पटरी के ठीक बीच में जा बैठा। दायें-बायें टुकर-टुकर देखकर हंस रहा था, जैसे कोई फूल किसी वीराने में खिल उठा हो।

इतने में पटरी के दोनों ओर खड़े मुसाफिरों की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे के सांस नीचे रह गयी। दस कदम दूर शंटिंग कर रहा एक इंजन आ रहा था। नल से पानी पीकर पलटी नसीबो ने भी देखा और उसकी चीख निकल गयी। हर कोई स्तब्ध-सा खड़ा देख रहा था। इंजन अगले क्षण बच्चे को नीचे ले लेगा। किसी का हौसला नहीं पड़ रहा था कि रेल की पटरी के बीचों-बीच बैठे बच्चे को बचा ले कि सामने भीड़ को चीरता हुआ एक नौजवान सिख, एक तीर की तरह लपककर, पटरी पर कूदा और बच्चे को दबोचकर, लाइन पार करके दूसरी ओर निकल गया। इससे पहले कि वह रेल की पटरी लांघ पाता, इंजन उसके कंधे के साथ टकराया और उसका साफा उतर गया।

सामने प्लेट फार्म पर पहुंचकर नौजवान सरदार ने बच्चा नसीबो की बांहों में जा थमाया।

इंजन फर्राटे भरता हुआ आगे निकल गया था। दायें-बायें, 'वाह-वाह' करते मुसाफिरों ने नौजवान सरदार को जैसे सिर पर उठा लिया। हर कोई उसे गले लगा रहा था। हर कोई पंजाबी सरदार की दिलेरी और हिम्मत की दाद दे रहा था। सचमुच जान हथेली पर रखकर उसने बच्चे को बचाया था।

इतने में गंगानगर की गाड़ी सामने प्लेट फार्म पर आ रुकी। इंतजार कर रहे मुसाफिर जैसे गाड़ी पर टूट पड़े। नसीबो अपने लाल को छाती से लगाये, पत्थर का पत्थर बनी खड़ी थी। और फिर उसने अपने मर्द की ओर एक नजर देखा, "हम तो अपने घर लौटेंगे। अपने पंजाब। अपने सरदार पड़ोसियों के गांव।" उसके होंठों से अपने ही आप ये शब्द थिरक रहे थे।

और अगली गाड़ी से नसीबो अपने गांव लौट गयी।

—पी-७, हौजखास, नयी दिल्ली-११००१६

विश्व के आश्चर्यों में से एक पीसा की झुकी हुई मीनार इटली के दो विशेषज्ञों के अनुसार पिछले बारह महीनों में १.३० मिलीमीटर और झुक गयी है, जो पिछले वर्ष के झुकाव से थोड़ा-सा अधिक है। यह मीनार पिछले वर्षों से बराबर झुकती ही चली जा रही है, जबकि इसे रोकने के सभी वैज्ञानिक उपाय किये जा रहे हैं।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल प्राकृतिक सौंदर्य की स्वामिनी पेरियार झील : विभिन्न वनस्पतियों के जीवाश्मों की संपूर्ण भारत में एकमात्र झील है। यहां के सुरक्षित वन में वन्य-प्राणी अबाध विचरण करते हैं। अगर हाथियों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखना हो, तो पेरियार के अभयारण्य में ही देखा जा सकता है।

देखें, हाथियों को पेरियार में

• डॉ. सुरेश धींगड़ा

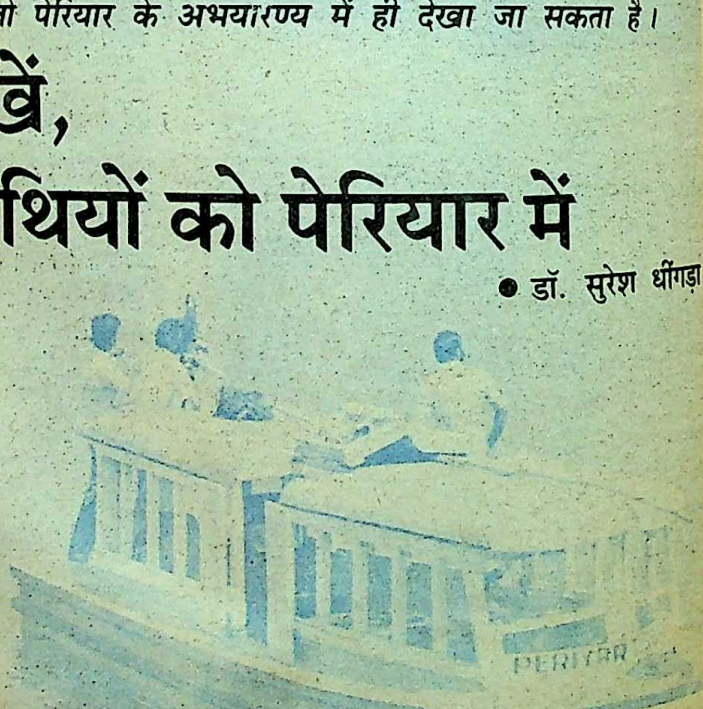

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल प्राकृतिक सौंदर्य की स्वामिनी पेरियार झील केरल के इडुक्की जिले के थेक्काड़ी तालुके का वह भाग है, जो एक बार देख लेने पर हमेशा के लिए आंखों में बस जाता है ।

संपूर्ण भारत में शायद, यही एक ऐसी झील है, जिसमें डूबी वनस्पतियां जीवाश्मों का रूप धारण करती जा रही हैं ।

दिलचस्प कहानी है इन 'जीवाश्मों' की । केरल और तमिलनाडु की सीमा के पास से बहती हुई पेरियार नदी अरब सागर में गिरती थी । पश्चिम में ये हरे-भरे जंगल, इलायची के बाग, उपजाऊ भूमि और शीतल बयार ! लेकिन, पूर्व में पहाड़ी ढलान उतरते ही शुरू हो जाते थे पानी के लिए तरसते मद्रास प्रेसिडेंसी के मदुरई और रामनाथपुरम् के सूखे मैदान । एक ओर व्यर्थ बहकर समुद्र से मिल जानेवाली सदानीरा पेरियार तथा दूसरी ओर एक-एक बूंद के लिए मोहताज खेत । इन खेतों को पानी पहुंचाने की कामना ने जन्म दिया पेरियार झील को ।

योजना बनाने और उसे पूरा करने का उत्तरदायित्व कर्नल जे. पेनिक्विक को सौंपा गया । उन्होंने योजना के अंतर्गत पेरियार पर मुल्लपेरियार बांध बनाकर उसका रुख पूर्व की ओर बहती वैगाई नदी की ओर कर दिया ।

बांध के निर्माण ने पेरियार को तो मोड़ दिया, किंतु साथ ही उसने २६ वर्ग किलोमीटर हरे-भरे जंगल को डुबो दिया । जल में डूबे पेड़-पौधे धीरे-धीरे मृत हो गये और अब लगभग 'जीवाश्म' लगते हैं ।

वस्तुतः पेरियार विश्व-प्रसिद्ध 'हाथी-मार्ग' का दक्षिणी सिरा है । यह कर्नाटक में बांदीपुर

के जंगलों से शुरू होकर तमिलनाडु में मुडुमलाई और अनामलाई होता हुआ पेरियार तक चला जाता है । ये चारों स्थान सुरक्षित वन हैं, जहां वन्य-प्राणी अबाध विचरण कर सकते हैं, पेरियार में वन्य प्राणी विहार का शुभारंभ तो सन १८९९ में ही हो गया था, २० अगस्त, १९७७ को इसे 'प्रोजेक्ट टाइगर' के अंतर्गत ले लेने पर यह वन हाथियों के साथ-साथ बाघों के लिए भी अभयारण्य बन गया ।

वन्य-पशुओं का स्वर्ग

इन पहाड़ियों में विशाल चरागाहों के बीच-बीच में अर्द्ध-सदाबहार वन, बांस के जंगल हाथियों, गौरों और सांबरों के लिए स्वर्ग है । इस प्राकृतिक वन का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र ३०५ वर्ग किलोमीटर का वह भाग है, जहां सदाबहार जंगल हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक इस वन में पाये जानेवाले वन्य-प्राणियों का संबंध है, पेरियार में पक्षियों की २६४ जातियां, स्तनपायी पशुओं की ५९ जातियां, जल-प्राणियों की ५० जातियां हैं। वृक्षों की लगभग २०९ जातियां हैं। रेंगनेवाले जंतुओं और जलथल (उभय) जंतुओं का प्रलेखन अभी नहीं हुआ।

इन वनों में दक्षिण-पश्चिमी भारत में पाये जानेवाले अनेक दुर्लभ और संकटापन्न प्राणी भी हैं। इनमें सिंह-पूंछवाले वानर, नीलगिरी लंगूर, मलाबार विशाल गिलहरी, उड़नेवाली गिलहरी, भौंकनेवाले हिरण आदि यहां अकसर दिखायी दे जाते हैं। पक्षियों की जितनी विभिन्नता पेरियार में है, संभवतः अन्य वनों में कम होगी।

परंतु, सबसे लुभावने दृश्य तब उपस्थित होते हैं, जब आप झील में मोटर बोट पर विहार करते समय झील के दूसरे किनारे पर हाथियों के झुंडों को नहाते, तैरकर झील पार करते या जंगली भैंसों का मुकाबला करते देखते हैं।

झुंड हाथियों के

इस प्राकृतिक वन में पशुओं की सुरक्षा और शांति के लिए झील पर यात्री-मार्ग निश्चित कर दिया गया है। हां, वनों में कुछ निरीक्षण स्तंभ बना दिये गये हैं, जहां बैठकर आप वन्य-जीवन का अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन आपसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि आप वहां विहार करनेवाले प्राणियों से छेड़छाड़ करें। हाथी - जैसा संवेदनशील प्राणी सामान्यतः भले ही हानिकारक न हो, चिढ़ने पर वह कुछ भी कर सकता है — विशेष रूप से अकेला और मस्त हाथी। अभयारण्य तो वैसे भी वन्य-प्राणियों के स्वभाव का अध्ययन करने का अच्छा अवसर प्रदान करते हैं। यहां पहुंच कर ही आप पहचान पाएंगे कि बाघ एकांत-प्रिय होता है और हाथी झुंड में रहना पसंद करते हैं।

हाथियों के ये झुंड तीन हाथियों से बने भी हो सकते हैं और आठ-दस हाथियों के भी। कभी-कभी ४०-५० हाथियों के झुंड भी पेरियार में मिल जाते हैं। इन झुंडों में ज्यादा हथनियां और बच्चे होते हैं। युवा हाथी प्रायः अकेले ही रहते हैं। युवा हाथी के अकेले रहने की प्रवृत्ति उसकी जान का बवाल भी बन जाती है। इन जंगलों में अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक संख्या में दांतोंवाले हाथी होते हैं। हाथी दांत के तस्कर और शिकारी इन्हीं के लिए इनका वध भी कर देते हैं। तस्करी की यह समस्या इतनी अधिक रही है कि पूर्ण विकसित दांतोंवाले हाथी अब इक्का-दुक्का ही दिखायी देते हैं। इसी समस्या के कारण पेरियार में बीस हथनियों के मुकाबले एक हाथी शेष है।

पेरियार पूरे वर्ष पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहता है। यहां न सर्दी अधिक पड़ती है और न गरमी। तापमान १५.५ डिग्री से ३० डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है और वर्षा औसत २५० सेंटीमीटर प्रति वर्ष। केरल पर्यटन विकास निगम ने इस क्षेत्र के लिए पर्याप्त सुविधाएं भी जुटाई हैं।

यहां से निकटतम रेलवे स्टेशन ११५ किलोमीटर दूर स्थित कोट्टयम है। मदुराई का हवाई अड्डा भी यहां से केवल १४५ किलोमीटर दूर है। इन दोनों स्थानों से पेरियार पक्के मार्ग से जुड़ा है। इनके अतिरिक्त हर शनिवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेरियार में ठहरने के स्थान

	होटल	श्रेणी	सिंगल	डबल	अतिरिक्त व्यक्ति	अतिरिक्त बच्चा
१	अरण्य निवास होटल (दूरभाष : कुमली-२३)	डीलक्स ई.पी.*	२४०	३००	३०	२०
		ए.पी	३५०	५२०	१४०	८०
		साधारण ई.पी.	१२०	१८०	२०	१५
		ए.पी.	२३०	४००	१३०	७५
		डीलक्स सुइट ई.पी.	२७०	३६०	५०	२५
		ए.पी.	३८०	५८०	१६०	८५
		वी.आई.पी. डीलक्स सुइट (वाता)				
		ई.पी.	३६०	४८०	६०	३०
		ए.पी.	४७०	७००	१७०	९०
२.	लेक पैलेस होटल (दूरभाष : कुमली-२४)	डीलक्स ए.पी.	४२०	६३१.४०	१४०	८०
३.	पेरियार हाउस (दूरभाष : कुमली-२६)	ई.पी.	३५	४०	१५	—
					(अतिरिक्त गद्दा उपलब्ध)	
		डोर्मिट्री (१० व्यक्ति)	१००			
					(अतिरिक्त प्रति व्यक्ति ५.००)	
		कांफ्रेंस हाल (१०.०० से १७.००)	१५०			
					प्रतिदिन (न्यूनतम)	

* ई.पी. : यूरोपियन प्लस (केवल आवास) : ए.पी. : अमेरिकन प्लस (आवास एवं भोजन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेरियार के अभयारण्य में तीन से लेकर चालीस हाथियों तक के झुंड घूमते देखे जा सकते हैं। झुंड में हथिनियां और बच्चों की संख्या अधिक होती है। दांतोंवाले हाथी दांतों की वजह से तस्करों द्वारा मारे जाते रहे हैं।

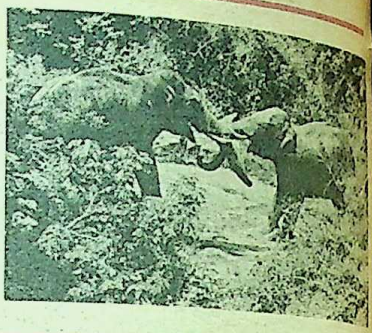

को सुबह ६ बजे पर्यटन निगम एर्नाकुलम और त्रिवेंद्रम से पेरियार के लिए कंडक्टेड टूअर चलाता है। इनमें एक दिशा में यात्रा का समय पांच से छह घंटे और किराया प्रति यात्री केवल सौ रुपये। ये बसें रविवार रात्रि नौ बजे लौट आती हैं। पेरियार में पर्यटन विकास निगम के अपने तीन होटल भी हैं, जिनमें सुविधाओं के अनुरूप अलग-अलग किराया देना पड़ता है। इनका आरक्षण होटल प्रबंधकों तथा केरल पर्यटन विकास निगम, स्वागत केंद्र, थम्पानूर, त्रिवेंद्रम की मार्फत या केरल पर्यटन, कनिष्क शापिंग प्लाजा, नयी दिल्ली से करवाया जा सकता है। वन के भीतरी इलाकों का आनंद उठाने के लिए वन-विभाग के विश्रामगृहों का उपयोग भी किया जा सकता है। इनका आरक्षण करवाने के लिए फील्ड डायरेक्टर, प्रोजेक्ट टाइगर, पांजीकुजी, कोट्टयम (दूरभाष : ८४०९) से संपर्क करना होगा।

अयप्पा के दर्शन भी

श्रद्धालु पर्यटकों के लिए यहां पर प्राचीन मंदिर भी हैं। पेरियार के दक्षिणी सिरे पर सबरीमलाई में अय्यप्पा मंदिर है। कहते हैं यहां किसी जैन श्रमण या बौद्ध भिक्षु ने निर्वाण प्राप्त किया था। इस मंदिर में प्रति वर्ष लाखों की संख्या में यात्री आते हैं।

थेक्काडी से १५ किलोमीटर दूर पेरियार के उत्तरी सिरे पर भग्नावशेषों के रूप में स्थित मंगला देवी का मंदिर है। इस मंदिर के जीर्णोद्धार की योजना बन रही है।

इन मंदिरों के अतिरिक्त पेरियार के आस-पास अनेक दर्शनीय स्थान हैं, जहां पर्यटक सुविधानुसार जा सकते हैं। थेक्काडी से ४३ किलोमीटर दूर पीरमाडी में चाय-बागान, गोल्फ कोर्स, घुमावदार पहाड़ी रास्तों का सौंदर्य और ट्रैकिंग की सुविधा व ठहरने के लिए टूरिस्ट बंगला सभी कुछ उपलब्ध है। मन्नार तो इस क्षेत्र का ग्रीष्म पर्यटन स्थल है ही। इस स्थान पर मुदिरापुजा, नल्लथानी और कुंडला नाम की तीन नदियों का संगम है। राजामलाई में अनामुडी चोटी का विशिष्ट महत्व है। एकदम सधी चढ़ाई चढ़कर जब आप शिखर पर पहुंचते हैं, तो सारी थकान भूल जाते हैं। ठंडी हवा के झोंके लेते हुए आप देखते हैं कोचीन शहर का विहंगम दृश्य तथा पूर्व में उतरती ढलानों के बाद तामिलनाडु के विशाल मैदान और आस-पास चरनेवाली धारीदार बकरियां।

—५ सी/३, न्यू रोहतक रोड,
नयी दिल्ली-११०००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समी छाया चित्र : कैलाश नारद

अभिशप्त रहस्यों में डूबी सतपुड़ा की रानी

● दीप्ति नारद

बीफाल से जो रास्ता तामिया की तरफ जाता है, वहीं पथरीले बीहड़ों में, सुनसान और सांय-सांय करती तलहटी में ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने से भी पहले बनी वह टूटी और विशाल इमारत आज भी मौजूद है, जॉन साहब का बंगला — जहां कंपनी का सबसे हृदयहीन और निष्ठुर जज जेकब जॉन अपने बंगले के खूब लंबे-चौड़े और प्रशस्त अहाते में अपनी खूनी अदालत लगाया करता था। ठगों और दूसरे जरायमपेशा कातिलों को सजाये-मौत सुनाने में पाशविक आनंद मिलता था उस क्रूर फिरंगी को। सजा की तामीली के लिए उसे किसी जल्लाद की जरूरत नहीं होती थी। आबनूस की लंबी मेज की एक तरफ वह बैठता और दूसरी तरफ होता फांसी की सजा पाया अभागा कैदी। उसके हाथों में फांसी का फंदा रहता। उसका अर्दली कोठी की फसील पर लगा घंटा जैसे ही बजाता, जॉन अपने हाथ का फंदा फेंकता, जो सीधे कैदी की गरदन में जाकर फंस जाता। जिंदगी का खेल तमाम होने में जरा-सी भी देर नहीं लगती।

जॉन साहब के उस भुतहा बंगले में उसकी आदमकद तसवीर आज भी लगी है। भादों की रात, मूसलाधार बारिश की झम-झम और चमकती बिजली के बीच या चुप-चुप ढलती शीत की कुहरीली रातों में जब रेशा-रेशा धुंध सतपुड़ा की पहाड़ियों पर बिखरने लगती है, तब अपनी तसवीर की चौखट से आज भी, दो सौ बरस गुजर जाने के बाद, फिरंगी हाकिम जॉन जिंदा-जावेद बाहर निकलता है और खून से सना फांसी का फंदा अपने हाथों में लिये कोठी के धूलधूसरित गलियारों और अब जंगल हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये बगीचे में टहलता रहता है । उसकी धधकती आंखों में लहराती खून की प्यास सदियां गुजर जाने के बाद भी बरकरार है ।

सिर्फ जॉन ही क्यों, मरने के बाद भी अपनी सुनसान कोठी में अतृप्त घूमनेवाले जबलपुर के कलेक्टर गिरीश मुकर्जी और सिंगानामा के जमींदार के वे दोनों अय्याश और औरतों की अस्मत लूटनेवाले बेटे भी तो सतपुड़ा की गहरी, निस्तब्ध और अंधेरी घाटियों में अभी तक भटक रहे हैं । कुछ सच्ची और कुछ काल्पनिक ये आतंक-कथाएं आज भी रात के अंधेरों में पत्थरों और पत्तियों पर ठिठक-ठिठक जाती हैं । सतपुड़ा की रानी की चेहरे पर पड़ा रहस्य का आवरण हर रोज और भी ज्यादा गहरा होता जाता है ।

सतपुड़ा की रानी यानी पचमढ़ी ।

यह आकस्मिक नहीं है कि समुद्र सतह से दस सौ सड़सठ मीटर की ऊंचाई पर बसी, सतपुड़ा के पहाड़ों में पाजेब-जैसी बंधी, लगभग पांच हजार की आबादीवाली यह छोटी-सी शांत और चित्रोपम बस्ती बरसों से फिरंगी और भारतीय लेखकों का रचनाफलक रही है । डब्ल्यू.डब्ल्यू. जेकब ने आज से लगभग एक सदी पहले पचमढ़ी को केंद्रित कर अपनी प्रख्यात रचना 'कीपिंग हिज प्रामिस' लिखी थी और यहीं आये थे हिंदी के प्रसिद्ध कवि भवानीप्रसाद मिश्र विपुल गीतात्मकता से छलकती अपनी गीत-गाथा 'सतपुड़ा के घने जंगल' लिखने । देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद भी यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से मुग्ध होकर पचमढ़ी चले आये थे । यहां की शीतल, लेकिन खुश्क जलवायु से उनके दमा को राहत मिली थी । राजेंद्र बाबू की स्मृति में मध्यप्रदेश शासन ने उनके मुकाम का नाम राजेंद्र गिरि रख दिया है ।

खोज फिरंगियों की

आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले सतपुड़ा के दूरस्थ अंचलों में बसे इस मनोरम आदिवासी इलाके को बतौर तफरीहगाह फिरंगियों ने खोजा था । तब नागपुर पुराने मध्यप्रदेश की राजधानी था । वहां के पागल बना देनेवाले उत्ताप से बचने के लिए गोरे हुक्कामों को किसी ऐसे ठंडे और खामोश इलाके की तलाश थी, जहां वे चंद दिनों के लिए ही सही, राहत तो महसूस कर सकें । इसीलिए सुरम्य झरनों, बेहद घने जंगलों और गहरी घाटियों से पटी इस ऊंघती हुई बस्ती को गौरांग महाप्रभुओं ने अपनी ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाया, जो आजादी के बाद भी काफी दिनों तक मध्यप्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनी रही ।

पचमढ़ी में हिमालय की बर्फीली तराइयां नहीं हैं और न ही नीलगिरी अथवा उटकमंड-जैसा आभिजात्य । इसके ठीक विपरीत गरीब आदमी के आराम के लिए पचमढ़ी शायद,

आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले सतपुड़ा के दूरस्थ अंचलों में बसे आदिवासी इलाके को बतौर तफरीहगाह फिरंगियों ने खोजा था और इसे ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया का सबसे सस्ता हिल स्टेशन है, जहां सिर्फ तीस रुपया रोज में आवास उपलब्ध है। मध्यप्रदेश के पर्यटनमंत्री श्री बी.आर. यादव प्रयास कर रहे हैं कि सस्ती दरों पर ऐसे आवास-गृह पचमढ़ी में ज्यादा से ज्यादा बनाये जा सकें। श्री यादव के प्रयत्नों से 'न्यू होटल' तथा 'ओल्ड होटल ब्लाक' तथा अन्य छोटे पैंतालीस पर्यटक-गृहों में एक साथ लगभग सौ व्यक्तियों के ठहरने की व्यवस्था की गयी है। इन आवासघरों का आरक्षण अनुविभागीय अधिकारी : लोककर्म विभाग, पचमढ़ी द्वारा किया जाता है। पर्यटकों की सुविधा के लिए शासन ने पचमढ़ी के दर्शनीय स्थल दिखाने के लिए टूरिस्ट बसों की भी व्यवस्था की है।

ऐसी मान्यता है कि अपने अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने पांच गुफाएं बनाकर यहां निर्वासन का दौर गुजारा। ये गुफाएं, जिनके नाम पर ही पचमढ़ी का नामकरण हुआ, आज तक मौजूद हैं और 'पंच पांडव' कहलाती हैं। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार ये गुफाएं अजंता और सांची के बीच की समयावधि में बनायी

चौरागढ़ में भगवान शिव के मंदिर पर त्रिशूल लगाते हुए भक्त

गयीं। उनके अभिमत में यह स्थल पांचवीं शताब्दी में बौद्ध विहार था।

साखू और कृष्णचूड़ा के घने और बीहड़ जंगलों के बीच पचमढ़ी का असली सौंदर्य बिखरा हुआ है। यहीं पर है वह प्रख्यात रजत

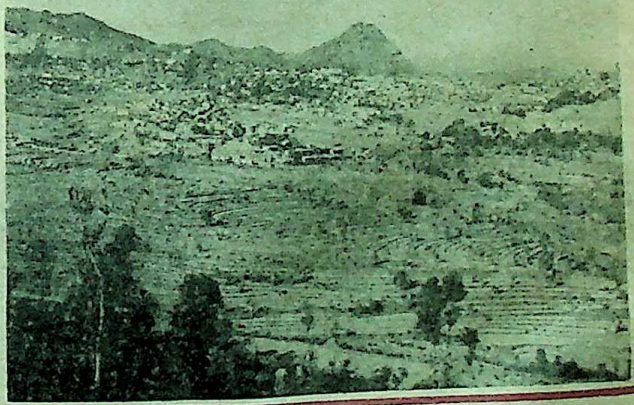

धूपगढ़ की चोटी से दिखायी देता पचमढ़ी का विहंगम दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रपात, जिसकी जलधारा साढ़े तीन सौ फीट की ऊंचाई से गिरती है और घने जंगलों में चांदी की लकीर की तरह बहती हुई गहरे अरण्य में खो जाती है। चारों ओर गहरे सन्नाटे में बजता निनाद अपने आप में एक समाधिस्थ योगी-सा अहसास कराता है।

बस्ती से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है पचमढ़ी का प्रख्यात तीर्थ 'बड़ा महादेव', जहां गुफाओं के भीतर स्थित शिवलिंग पर पानी की धारा गिरती रहती है। अहर्निश झरनेवाले इस जल का स्रोत प्राकृतिक है, जिससे शिवलिंग के इर्द-गिर्द एक सुरम्य कुंड बन गया है। हर वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर यहां मेला भरता है।

शिव को अर्पित त्रिशूल

महादेव की गुफाओं से लगभग तीन कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है ४,३१७ फीट ऊंची सतपुड़ा की दुर्लंघ्य और खतरनाक चोटी चौरागढ़, जहां जाने के लिए अब सीढ़ियां बना दी गयी हैं। यहां शिव की प्रतिमा है, जिसकी अर्चना शताब्दियों से एक विशिष्ट रूप में की जा रही है। शिव की मनौती माननेवाले अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर शिव को त्रिशूल अर्पित करते हैं। उपासकों द्वारा अर्पित किये गये इन त्रिशूलों से चौरागढ़ का चप्पा-चप्पा भर गया है।

चौरागढ़ के पास धूपगढ़ की चोटी है, ऊंचाई में चौरागढ़ से सिर्फ सत्तर फीट कम, जहां पर्यटकों के लिए विश्रामगृह बना दिया गया है। यहां से दिखनेवाला सूर्योदय और सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य मचमढ़ी का सर्वश्रेष्ठ आकर्षण है। चारों ओर घना जंगल है और उससे भी गहरी नीरवता। आहिस्ता-आहिस्ता उगने और डूबनेवाले सूरज की आभा वर्षों तक मन-प्राणों में बसी रहती है।

पचमढ़ी की दहलीज पर स्थित जटाशंकर की गुफाएं चौबीसों घंटे ठंडी रहती हैं। यहां तक चहलकदमी करते हुए ही पहुंचा जा सकता है। दो सौ फीट ऊंची पहाड़ियों से गिरते झरने के नीचे नहाते हुए लोगों का समूह यहां का स्थायी दृश्य-सा बन गया है।

यहीं पर अवस्थित है वह प्रख्यात हांडी खोह, जो एक विशाल हांडी की शक्ल लिये जमीन के भीतर तीन सौ फीट की गहराई तक चली गयी है। इसके भीतर रहनेवाले पचमढ़ी के आदिवासी बड़ी कुशलता से ऊपर चढ़कर बस्ती में आते हैं और अपना काम-काज निपटाकर वापस गहराइयों में ही लौट जाते हैं।

अवायनम पूल और सखाराम कुंड नाम से विख्यात दो सरोवर भी पचमढ़ी के घने जंगलों में, बस्ती के बीचों-बीच अवस्थित है, जहां पैदल ही पहुंचा जा सकता है।

आभिजात्य पर्यटकों के मनोरंजन के लिए राज्य शासन ने पचमढ़ी में स्केटिंग-रिंग और गोल्फ कोर्ट भी बनवा दिये हैं। इनके अलावा यहां एक सिनेमाघर भी है। दूर-दूर तक चली गयी सुंदर और स्वच्छ सड़कें तथा टेढ़े-मेढ़े रास्ते तामिया और दिंदवाड़ा तक चले गये हैं।

अकूत प्राकृतिक सुषमा और उसकी नयनाभिराम मनोरमता से भरपूर शैल-नगरी पचमढ़ी रेल, सड़क तथा वायुमार्गों से जुड़ी हुई है। सबसे निकट के हवाई अड्डे जबलपुर और भोपाल हैं, जहां से पचमढ़ी की दूरी क्रमशः डेढ़ सौ और दो सौ दस कि.मी. रह जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवपुरी पर्यटक ग्राम

तीस एकड़ के क्षेत्रफल में, हाल ही में निर्मित, शिवपुरी माधव नेशनल पार्क के घने जंगलों के मध्य, शिवपुरी पर्यटक ग्राम, एक अपने आप में अनोखा पर्यटन स्थल है। संगमरमर के समान श्वेत दीवालों पर आदिवासी चित्रकारी तथा डिजाइन, लाल खपरैल की छतें, 'गार्डन लाइट्स', सर्पाकार टेढ़े-मेढ़े रास्ते, जो हरे-भरे ढलानों पर निर्मित किये गये हैं, एक अनोखी और निराली छटा का प्रदर्शन करते हैं।

इस ग्राम में लगभग २१ द्विशय्या कक्ष-साधारण तथा वातानुकूलित दोनों प्रकार के उपलब्ध हैं। एक विशाल रेस्टरां भी है, जो लगभग १०० यात्रियों की एक साथ आवभगत करने में सक्षम है। इसके साथ ही एक 'बॉर', जलपान कक्ष और विश्राम कक्ष भी है। विश्राम कक्ष लगभग १०० प्रतिनिधियों के सम्मेलन की क्षमता में परिवर्तित किया जा सकता है। 'सांख्य सागर झील' के किनारे पर

शिवपुरी पर्यटक ग्राम का एक दृश्य

बसे इस अनोखे ग्राम से शिवपुरी शहर तीन कि. मी. दूर है और प्रसिद्ध छतरी, केवल १ कि. मी. पैदल रास्ता है। नेशनल पार्क के अंदर जाने का रास्ता ग्राम के दूसरे छोर से है। यहां पर पर्यटकों के घूमने तथा स्थल को देखने आदि के लिए मध्य प्रदेश पर्यटन निगम की गाड़ियां तुरंत उपलब्ध हो सकती हैं।

पचमढ़ी जाने के लिए सबसे सुविधाजनक स्थान पिपरिया है, जहां से पचमढ़ी सिर्फ पचास कि.मी. रह जाती है। बंबई-हावड़ा मार्ग पर स्थित पिपरिया गल्ले की मशहूर मंडी है। दिल्ली और उत्तर तथा दक्षिण भारत को रेल से जोड़नेवाले मशहूर रेलवे जंक्शन इटारसी से पिपरिया केवल चालीस कि.मी. के फासले पर है, और इस लिहाज से दुनिया का सबसे सस्ता हिल स्टेशन पचमढ़ी भारत के बीचों-बीच ही अवस्थित हो गया है, जहां हवाई जहाज, रेल अथवा सड़क मार्गों से कभी भी पहुंचा जा सकता है। पचमढ़ी ले जाने के लिए राज्य परिवहन की आरामदेह बसें हर घंटे पिपरिया से शैलनगरी की ओर रवाना होती हैं।

अबूझ रहस्यों में घिरी धूसर पहाड़ों की यह रूपसी अपने ऐंद्रजालिक वैभव का विस्तार अहर्निश पसारती ही जा रही है। उसके मायावी कोष की गहराइयां अकूत हैं। वे अकूत बनी भी रहेंगी — वर्षों, सदियों।

— हुकमचंद नारद रोड, जबलपुर ४८२००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

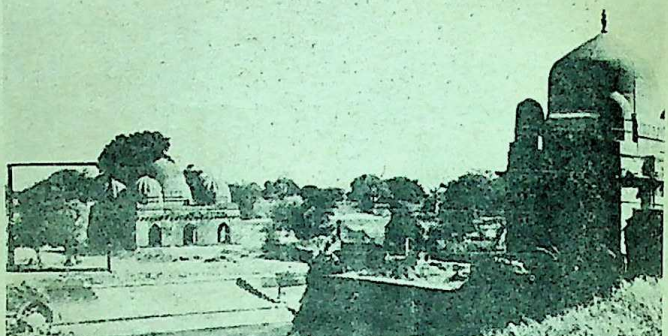

सभी छाया चित्र : एस. अहमद

भूतों का गांव मांडू

● एस. अहमद

आधा चांद खुरासानी इमली की डालियों में उलझा हुआ था। दरया खां का मकबरा और उसके आस-पास के बिखरे हुए खंडहर चांद की मलजुगी रोशनी में साये की तरह खड़े दिखायी दे रहे थे, झींगुरों की झांय-झांय या किसी परिंदे के पर फड़फड़ाने की आवाज सन्नाटे के सिलसिले को तोड़ रही थी। मकबरे के नीचे बने कुंड में मकबरे की परछाईं डोल रही थी।

उसने केमरे के लेंस में झांका। चांद मकबरे की बुर्जियों तक आ गया था। नीचे कुंड की परछाई, ऊपर चांद। अच्छा संतुलन था रेखाओं का, उसने कैमरे का बटन दबा दिया। किल्क की आवाज ने सन्नाटे को तोड़ दिया...वह लांग एक्सपोजर देकर बैठ गया...।

अचानक किसी के कदमों की आहट से वह चौंक उठा। उसने पास में रखी टार्च का बटन दबा दिया, लेकिन रोशनी नदारद। उसने टार्च को हिलाया तो उसका ढक्कन बाहर आ गया। उसने सामने देखा कोई चला आ रहा था। एक

ऊपर : मांडू का वह मकबरा और कुंड जिसके पेड़ों के पास हरिओम गुरजर ने अपना कैमरा लगा रखा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलके से डर का एहसास उसके भीतर कौंधा, पर यह सोचकर कि कोई गांववाला होगा, चुपचाप बैठा रहा । वह व्यक्ति चलता हुआ करीब आया और बैठ गया । फिर शुरू हो गया बातों का सिलसिला । पता ही नहीं चला, कब तीन घंटे गुजर गये । इस बीच उसने अलग-अलग कोणों से चांद और मकबरे को अपने कैमरे में कैद किया । आसमान पर किसी हवाई जहाज की आवाज को सुनकर वह चौंका और घड़ी देखी, हलके उजाले में कुछ समझ में नहीं आया ।

साथ में बैठे व्यक्ति ने उससे पूछा, "क्या आपका काम खत्म हो गया ?"

"हां, बस एक-दो तसवीर और लूंगा", उसने कैमरे का कोण बदलते हुए कहा

"अच्छा, तुम अपना काम करो मैं सोऊंगा । मुझे नींद आ रही है । अगर मेरी जरूरत पड़े तो बुला लेना, मैं सामनेवाली कब्र में लेटा हूं ।"

"क्या ?" उसका मुंह खुला का खुला रह गया । घबराहट और डर का एक सैलाब उसके ऊपर से गुजर गया ।

"डरो नहीं ! तुम्हें कुछ नहीं होगा ।"

और वह व्यक्ति वहां से जिस तरह आया था, उसी तरह चला गया ।

अब उससे वहां एक पल भी न रुका गया ।

ये कोई कहानी नहीं है । पिछली ९ फरवरी की रात के ८ और १० बजे के बीच घटी घटना है, जो बड़ोदा से 'मांडू इन कैमरा '८८' में शिरकत करने आये हरीओम गुरजर के साथ घटी । हरीओम बताते हैं कि वह व्यक्ति एक सफेद लंबा ढीला चोंगा पहने हुए था, उसकी लंबी सफेद दाढ़ी थी, रंग गोरा, बड़ी-बड़ी आंखें थीं । और उसने मुझ से कैमरे के संबंध में पूछा कि यह क्या है, किस काम आता है ।

हवाई जहाज की आवाज सुनने के बाद उसने हवाई जहाज के बारे में पूछा । साथ ही उसने मुझे मांडू के इतिहास के बारे में भी बताया । मैं तो शुरू में यही समझ रहा था कि कोई गांववाला है, जो मांडू के इतिहास के बारे में पर्यटकों को बताता होगा । लेकिन, जब

बीस-इक्कीस वर्षीय हरीओम गुरजर बड़ोदा के फाइन आर्टस कालेज के छात्र हैं । वह गत फरवरी को मांडू में आयोजित शिविर 'मांडू इन कैमरा '८८' में भाग लेने आये थे । वह रात में खंडहरों के फोटो ले रहे थे कि एक रहस्यमयी आत्मा ने उसके साथ घंटों तक बात की...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने मुझसे यह कहा कि मैं आप जैसे किसी की कब्र में लेटने जा रहा हूं, तो मैं घबरा गया और फौरन वहां से भाग लिया । सवेरे मैंने अपने साथियों को इस घटना के बारे में बताया ।

बीस-इक्कीस साल के हरीओम बड़ोदा के फाईन आर्ट कालेज के छात्र हैं । अब तो संयत लग रहे थे, लेकिन उनके साथी बताते हैं कि वह दूसरे दिन भी फिर वहां जाना चाहते थे । लेकिन, हम लोगों ने उन्हें नहीं जाने दिया ।

मांडू में इस तरह की यह घटना पहली हो, यह तो नहीं कहा जा सकता । लेकिन, प्रकाश में यही घटना आयी है । मांडू के गाइड जगदीश का भी यही कहना है कि पिछले दस वर्षों से वह यहीं गाइड का कार्य कर रहे हैं, लेकिन उन्होंने इससे पहले इस तरह की कोई घटना नहीं सुनी । लेकिन, मांडू के होटल और पान ठेलों पर यूं ही चली चर्चा के दौरान दो-एक लोगों ने इस तरह की घटनाओं का उल्लेख किया ।

कब्रों का नगर

वैसे, अगर ध्यान से देखा जाए तो मांडू 'सिटी आव जॉय' न होकर 'रूहों का मसकन' है क्योंकि, यहां पर चार या पांच महलों को अगर नजरअंदाज कर दें, तो तीन सौ से अधिक मकबरे और कब्रिस्तान होंगे । जिधर देखो, उधर मकबरों के खंडहर ही दिखाई देंगे ।

मांडू विंध्याचल पर्वत की एक खुली चौरस चोटी पर बसा हुआ है । चालीस किलोमीटर की परिधि में यह कुल २७ किलोमीटर के क्षेत्रफल को घेरे हुए है । किले की ऊंचाई समुद्रतल से १९०० से लेकर २३०० फीट है । चारों तरफ प्राकृतिक चट्टानों की चहारदीवारी है । जहां कहीं प्राकृतिक दीवारों की ऊंचाई कम हुई है, वहां पत्थरों की प्राचीरें बनायी गयी हैं । चारों तरफ जंगल और उसके बीच बसे आज के मांडू की जनसंख्या मुश्किल से दो हजार होगी, लेकिन आज से पांच सौ वर्ष पूर्व यहां की आबादी सात लाख थी ।

मांडू को आज से पांच सौ से सात सौ वर्ष पूर्व के सुलतानों द्वारा बसाया गया था । मांडू के महलों और मस्जिदों एवं मकबरों की शिल्पकला में अफगान, मुगल, तथा राजपूत शैलियों का मिश्रण पाया जाता है । खास तौर से खंबों का शिल्प आबू के मंदिरों के खंबों की याद दिलाता है ।

अगर हम मांडू के तेरहवीं शताब्दी से लेकर अंगरेजों के आने तक के इतिहास पर नजर डालें, तो पाते हैं कि पूरा का पूरा इतिहास-क्रम खून से सना हुआ है । मांडू पहले स्वतंत्र राज्य न होकर दिल्ली शासन का एक सूबा था, जहां सूबेदार रहा करता था । लेकिन सन १४०१ में सूबेदार दिलावर खां धौरी ने दिल्ली सल्तनत को कमजोर पाकर स्वयं को स्वतंत्र रूप से सुलतान घोषित कर दिया ।

दिलावर खां ने मांडू में अनेक महल, भवन और मस्जिदें आदि बनवायीं । इसके द्वारा बनवायी गयी जनानी मस्जिद, हिंडोला महल, मलिक मुधिउद्दीन की मस्जिद आदि उल्लेखनीय हैं । दिलावर खां खिलजी वंश का था । इस प्रकार सन १४०१ से १५२६ तक मालवा में खिलजी सुलतानों का राज्य रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्तान अमर प्रेम की

सन १५२६ में गुजरात के सुलतान बहादुर शाह ने मालवा पर अधिकार कर लिया, लेकिन बाद में जब हुमायूं ने मालवा पर हमला किया, तो बहादुर शाह गुजरात भाग गया । फिर शेरशाह सूरी ने मालवा पर आक्रमण कर उस पर अपना अधिकार कर लिया और वहां पर अपना सूबेदार नियुक्त कर दिया ।

सूबेदार शुजा खां का बड़ा लड़का वायजीद खां अपने पिता की मृत्यु के बाद सन १५५२ मे मालवा का सुलतान बना और उसने बाज बहादुर की उपाधि धारण की । आज मालवा की धरती बाज बहादुर और उसकी प्रेयसी रूपमती के प्यार की सुगंध से गमकती रहती है । हालांकि, सैकड़ों वर्ष बीत गये हैं, लेकिन मालवा राज्य की राजधानी मांडू की दरो-दीवार से बाज बहादुर और रूपमती के प्यार की तानें गूंजती रहती हैं । रूपमती बेहद सुंदर,नृत्य और गायन में निपुण एक लिहाज से रूप और गुणों की खान थी ।

कहते हैं कि बाज बहादुर भी गाने का बेहद शौकीन था, और बहुत अच्छा गाता था । जब वह दीपक राग गाता था, तो बुझे दीपक जल जाते थे, लेकिन राग की गरमी से उसका बदन झुलसने लगता था, तब उसकी प्रेयसी रूपमती मेघ मलहार राग गाती थी, जिससे वातावरण इतना नम हो जाता था कि जैसे बरसात की हलकी फुआरें बरस रही हों, जिससे बाज बहादुर को राहत मिलती थी ।

कहते हैं कि बाज बहादुर ने अपनी रूपमती के लिए मांडू से तीस किलोमीटर की दूरी पर बहती नर्मदा नदी का पानी नहरों के जरिये मांडू तक मंगवाया था । रूपमती उसी पानी में पूजा-स्नान आदि किया करती थी ।

आज के मांडू में न बाज बहादुर है न रूपमती है, यदि हैं तो केवल उनकी दास्तानें, और यादगारें जो महल और चौबारों की शक्ल में वहां खड़ी है । वक्त गुजर गया है, लेकिन निशान छोड़ गया है । मांडू को सुलतानों ने शादियाबाद का नाम दिया था, वह शादियाबाद आज 'भूतों का गढ़' होकर रह गया है, चारों तरफ जंगल और खंडहरों के बीच रहते लोग, जिनमें भील, राजपूत कुछ मुसलमान, जैन आदि है । मांडू सुबह पांच बजे जागता है और शाम ढलते ही सो जाता है, रात में जागती है केवल खंडहरों की रूहें ।

जिस रात को हरीओम के साथ घटना घटी, उसके दूसरे दिन मैंने स्वयं उस मकबरे का सुबह पांच बजे चित्र लिया, साये की तरह खड़ा मकबरा खुरासानी इमली के पत्ते-विहीन पेड़ों के पार्श्व में एक अलग प्रकार का चित्र प्रस्तुत कर रहा था । फिर दोपहर में दोबारा फेरा किया, माहौल कुछ भारीपन लिये हुए था । हो सकता है कि यह असर घटना की जानकारी हो जाने के कारण हो, लेकिन फिर भी अगर पूरे मांडू किले की परिधि का जायजा लिया जाए, तो मकबरों की संख्या रहनेवाले इंसानों से कहीं अधिक ही होगी,जो एक ही जगह पर इतने मकबरों का अपने आपमें एक रिकॉर्ड तो होगी ही ।

—एच-१, शांति नगर, रायपुर-४८२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब नेता पैदल चलेंगे

● गोपाल चतुर्वेदी

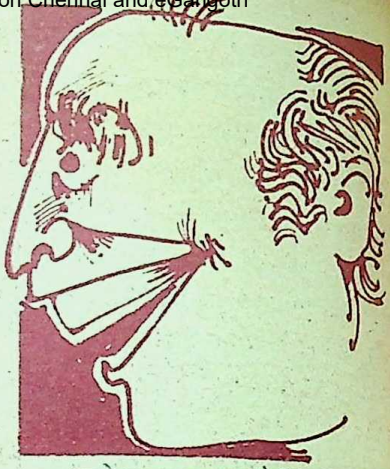

अतिथि प्रभु की चाय की इच्छा पूरी करने के लिए अपने एप्पू पड़ौस से विदेशी सहायता की शक्कर लेने गये हुए थे। जब लौटे तो हाथी से पात्र में चींटीभर चीनी थी। मेहमान निपटे तो हमने इस बेशकीमती लाल की गूदड़ी का निरीक्षण किया। छपे हुए कागज में जाने-माने पर्यटन-विशेषज्ञ और हमारे पड़ौसी मक्खी-मूछवाले मिश्रा का भारत अखंडता और घरेलू घुमक्कड़ी की भूमिका पर विवेचनात्मक लेख था। मिश्रजी किसी स्वयंभू पर्यटन-प्रचार संस्था के हिटलर हैं। इसी चक्कर में विभिन्न देशों से निमंत्रण हथियाते रहते हैं। अब तक कई बार संसार का भ्रमण कर पर्यटन के पर्यावरण में मुसल्सल मुक़खोरी का जहर घोल रहे हैं। संस्था के लिए चंदा उगाहते उनकी चांद के अधिकांश बाल असमय शहीद हो चुके हैं। जो बचे हैं वह संभावित शिकार की टोह में रेडियो-टी. वी. के 'एंटैना' की तरह खड़े रहते हैं। उनकी भौतिक सफलता के कारण उनके प्रति मेरा पीलिया-ग्रसित दृष्टिकोण मेरे खांटी भारतीय होने का निर्णायक सबूत है।

अपने स्वनाम-धन्य पड़ौसी के लेख ने हमें देसी पर्यटन पर सोचने के लिए प्रेरित किया। छुटपन से हमें छुट्टी मनाने की ऐसी स्वास्थ्यवर्धक आदत पड़ी है कि हम दास मलूका के अजगर की तरह, घर हो या दफ़्तर छुट्टी ही मना रहे हैं। गरमियों में लू से झुलसते हैं। जाड़ों में शीत से ठिठुरते हैं। काम कैसे और कब करें? वैसे भारत के बड़े और भाग्यशाली लोग वर्षभर विदेशों में काम करते हैं और फिर जैट-उड़ान की थकान मिटाने के लिए देश के किसी दूरदराज हिस्से में आराम। जब बड़े मानुष छोटी जगहों में जाते हैं, तो उनको देखकर लोग देश के ध्यान में डूब जाते हैं। जो मुल्क है, उसमें एक होने का अहसास उगता है। हमारे जैसे आम आदमी के पास अवकाश तो ढेर-सा रहता है, पर अपनी ठनठन-गोपाली के कारण वह अखंडता-अभियान में निजी योगदान देने से वंचित रह जाता है। अब सब तो सरकारी या रेल कर्मचारी हैं नहीं कि दौरे के नाम पर देशाटन कर लें या फ्री पास के सहारे सैर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

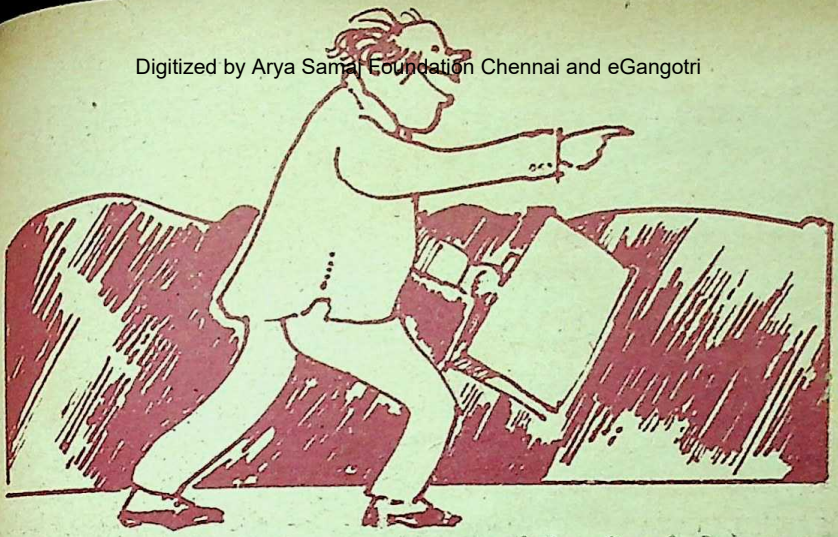

भगवान साकार हों तो मूर्ति को दंडवत-प्रणाम करने में मन लगता है। बिना देश दाह-धाम कैसे कोई उसके निराकार अस्तित्व में लौ लगा सकता है। अपना राष्ट्रीय मानस यह है कि जब समस्याओं का धूप असहाय हो जाता है, हम गांधी का छाता खोल लेते हैं। इसी फलसफे के तहत केंद्र सरकार विरोधी राज्य सरकारों से असहयोग-आंदोलन चलाती है। नमक सत्याग्रह के इतिहास को बतौर नाटक दोहराती है। वह तो गनीमत है कि रथ यात्रा तक गांधी को पहुंचाते-पहुंचाते सरकार बमुश्किल 'भारत छोड़ो' पर आकर रुक गयी। एकता और अखंडता की मुहिम में जहां सरकार गांधी-दर्शन को लेकर गफलत में पड़ी, उसी भीड़ से मक्खी-कट मूंछवाले मिश्राजी ने अपने अहम दस्तावेज में रास्ता सुझाया है। जग जाहिर है कि इस वतन का लीडर पहले अपनी और अपने परिवार की सेवा करता है, जबकि सामान्य आदमी देश और सामूहिक हित की चिंता में दुबलाता है। इसी विवशता के कारण, महज दुर्घटनावश अपने हाथ-लगे गूदड़ी-ज्ञान को सार्वजनिक सुविधा की दृष्टि से हम सुधी पाठकों को सप्रेम समर्पित कर रहे हैं—

पर्यटन के महत्त्व से भला कौन परिचित नहीं है। लोग एक दूसरे से मिलें, सफर के साथ-साथ और दुख-दर्द झेलने के दौरान दोस्त बनें तो विविधता में एकता के अनुसार भारत की अखंडता मजबूत होगी। निर्धन जनता को दृष्टिगत रखते हुए, पर्यटन के विभिन्न प्रकार व्यक्तिगत अनुभव और इस दिशा में की गयी खोज पर आधारित हैं तथा शर्तिया सस्ते, सहज व टिकाऊ हैं। यदि आपने इस लेख के सुझावों पर अमल किया, तो आप मनोरंजन की सेवा के साथ सैर का कलेवा भी खा सकते हैं।

मेरी खोज के अनुसार पर्यटन के निम्नलिखित आयाम हैं। इनमें से एक या अधिक का उपयोग आप अपनी पसंद और इच्छा के अनुसार करने को आजाद हैं। वैसे मेरे अधिकतर मित्र साहसिक और सामाजिक पर्यटन का बीड़ा एक साथ उठाते हैं। इससे आर्थिक बचत की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसिक पर्यटन :

पश्चिमी देशों में इसके अंतर्गत लोग कभी पहाड़ पर चढ़ते हैं, कभी बर्फ पर स्केटिंग करते हैं और कभी समुंदर में दौड़ते हैं । हमारे देश में इन सुविधाओं की कमी नहीं है, बल्कि स्थिति दूसरे मुल्कों से बेहतर है । आप तीनों का आनंद एक साथ ले सकते हैं । यदि विश्वास न हो तो भारतीय रेल के किसी डिब्बे में सवार होकर देखिए या दिल्ली की बस-सेवा में । प्रवेश के समय आपकी दशा लदे-फदे पर्वतारोही-सी होगी । इसके पश्चात आप रेल-पेल में फिसलते हुए इधर से उधर लुढ़केंगे और फिर जन-सागर में डूबकर रेल की दौड़ के साथ हो लेंगे ।

बसों में शायद, संभव न हो पर भारतीय रेल में कतई मुमकिन है और फायदेमंद भी । साहसिक पर्यटन से हमारा आशय है कि आप हिम्मत से काम लें और टिकट लेने की जहमत उठाये बिना अपनी मंजिल की ओर जानेवाली रेलगाड़ी में चल पड़ें । यदि रास्ते में धर-पकड़ जैसी अप्रत्याशित वारदात हो भी जाए, तो फिक्र की कोई बात नहीं । वर्तमान युग का सबसे सहज और लाभप्रद धंधा राजनीति है । इसमें प्रवेश की एकमात्र योग्यता किसी भी अपराध के लिए की गयी जेल-यात्रा है ।

सामाजिक पर्यटन :

इसे पारिवारिक भी कहा जा सकता है । भारत इस प्रकार के पर्यटन में अग्रणी है । पश्चिमी देशों में तो इसकी प्रथा ही समाप्त हो चुकी है । इसमें ठहरने-खाने की मुफ़ व्यवस्था रहती है । कई आदर्श और अनुकरणीय मेजमान-मेहमानों की समुचित खातिर के लिए उधार लेने और विशेष परिस्थितियों में चोरी करने से भी नहीं हिचकिचाते । बस, उनकी इज्जत की दृश्य या अदृश्य मूंछ नीची नहीं होनी चाहिए । हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि वह ऐसे मूंछदार मेजमानों की संख्या में इजाफा करे ।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि बढ़ते शहरीकरण और महंगाई तथा घटते हुए मकानों से आतिथ्य की परंपरा पर विपरीत प्रभाव पड़ा है । समाज-शास्त्रियों को आशंका है कि अतिथि के सत्कार की परिपाटी एक या दो दशक में टें बोल जाएगी । उनका मत तर्कसंगत लगता है । आज भक्त भी भगवान को जीवन के किसी न किसी इम्तहान के वक्त ही पूछते-पूजते हैं । मेहमान की बिसात ही क्या है ? बहरहाल, फिलहाल तो गंगा बह रही है । आप भी हाथ धो लें ।

धार्मिक पर्यटन :

घरेलू घुमक्कड़ी की सबसे प्रबल प्रेरणा धार्मिक है । हमारे तीर्थ यात्री उत्तर में मानव के पशु-अंशों के, पंडों में दर्शन करते हैं और दक्षिण में धर्मस्थलों के वाणिज्यीकरण के । इसके अलावा अपनी सदियों की धार्मिक नेतृत्व की विरासत के अनुरूप, हमारा देसी महजबी नेता बाहरी मुल्कों में जाकर प्रेम, शांति और अहिंसा का संदेश संसार को देता है । यह बात दीगर है कि इस प्रक्रिया में कभी वह फिल्मी अभिनेत्रियों में उलझ जाता है और कभी हथियारों के व्यापारियों में । पर मकसद उसका एक ही रहता है— लालच के गंदे जल में कमल की भांति खिले रहकर अपरिग्रह के दर्शन का व्यक्तिगत उदाहरण से अधिक-से-अधिक प्रचार । इस संदर्भ में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना अनुचित न होगा कि बड़े से बड़ा विदेशी नास्तिक भी हमारी आस्था के चुंबकीय आकर्षण में ऐसे फंस जाता है, जैसे मकड़ी के जाल में मक्खी। वह अपने देश इस अडिग विश्वास के साथ लौटता है कि और कहीं हो न हो, भगवान इस संसार के विशाल भारत-भूखंड में अवश्य विराजमान हैं। यदि ऐसा न होता तो किस प्रेरणा और निर्देश से यहां का प्रशासन चलता ? कंप्यूटर और कमंडल का सुखद सह-अस्तित्व अपने आप में एक अहम उपलब्धि है। जरूरत इस बात की है कि पर्यटकों का समय बचाने के लिए इस कशिश का दर्शन और प्रदर्शन एक ही परिवार में हो सके। आवश्यक है कि हर बड़े अस्पताल या वैज्ञानिक शोध केंद्र के साथ एक आध्यात्मिक उत्थान का संस्थान भी हो। डॉक्टर दवा दें, साधु-संत दीर्घायु के लिए यज्ञ करें। यदि विषय का मार्केश प्रबल है, तो मृत्यु पथ पर अग्रसर आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना हो। पंडित शुभ मुहूर्त सुझाएं तो वैज्ञानिक शोध शुरू करें। कुंडली के आधार पर प्रयोग की सफलता-असफलता की भविष्यवाणी की जाएं। ऐसा विदेशी पर्यटक कोई बिरला ही होगा, जो हमारे सिद्ध पंडितजी की मानसिक-शक्ति के आगे हाथ न पसारे या घुटने न टेक दे। यह तो हम आध्यात्मिक लोग हैं, वर्ना उनकी स्कॉच-व्हिस्की और अपनी तंत्र-चुस्की की लोकप्रियता बराबर की ही होती। बस थोड़ी 'मार्केटिंग' चाहिए।

सांस्कृतिक पर्यटन :

बहुत दिनों बाद सरकार देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति चेती है। रूस, अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस में हजारों कलाकार रात-दिन

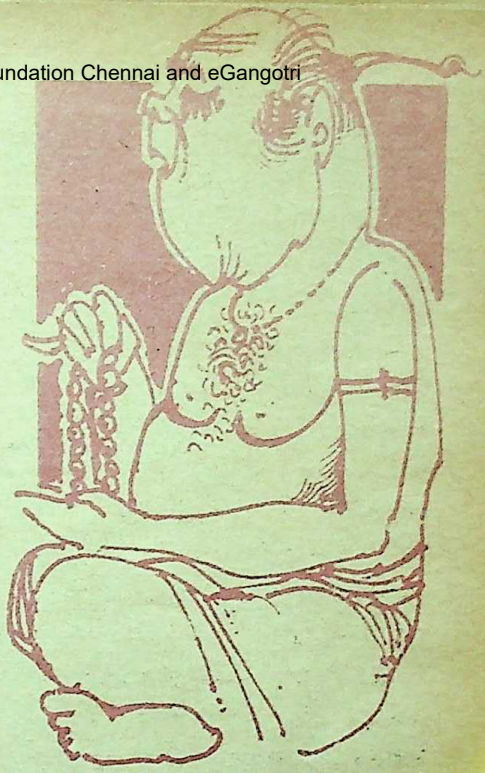

की मेहनत से अपनी कला प्रदर्शित कर चुके हैं और सैंकड़ों प्रबंधक अफसर और आयोजक इसी बहाने अब भी सैर-सपाटे में लगे हुए हैं। हमें यकीन है कि धीरे-धीरे हमारे लोक और शास्त्रीय नृत्य-संगीत रूसी सर्कस और पश्चिमी डिस्को के असर और प्रवेश से और सशक्त तथा रोचक बनेंगे। यह आशा भी की जा सकती है कि कम-से-कम कुछ बीन बजानेवाले तो भूख के संत्रास से उबरेंगे, सुननेवाले भले यथास्थिति में रहें। इस सांस्कृतिक निर्यात से देश की अर्थ-व्यवस्था पर भी बड़ा सुखद प्रभाव पड़ रहा है। इधर से संस्कृति जाती है और उधर से अति-आधुनिक तकनीकी आती है। दिक्कत यही है कि संस्कृति कहीं जाते-जाते चल ही न बसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों, सांस्कृतिक पर्यटन के अंतर्गत अधिकतर कवि, लेखक, संपादक, प्राध्यापक इधर-उधर कवि-सम्मेलन, गोष्ठी, वर्कशॉप, मौखिक परीक्षा आदि के कष्ट निपटाने के लिए घूमते-फिरते हैं। जहां बुद्धिजीवी देश की अखंडता की पहचान करवाते हैं, वहीं अपना और देश का आर्थिक संकट दूर करने के लिए संयम, सादगी और संन्यास के अनुशासन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कई हवाई जहाज का किराया लेकर जमीन से जुड़े रहने के लिए रेल के स्लीपर में सफर करते हैं। अधिकतर प्रथम श्रेणी का पैसा वसूलते हैं और बेटिकट यात्रा कर आम आदमी को साहसिक पर्यटन के लिए प्रेरणा देते हैं। अगर टी.टी. ने टिकट मांगने की गुस्ताखी की, तो उसे एक कविता सुना दी। यदि वह बला फिर भी न टली, तो उसे अपना संग्रह दे मारा।'

मक्खी-मूंछवाले मिश्राजी का जनोपयोगी और ज्ञानवर्धक आलेख तो यहां समाप्त हो गया। पर उन्होंने एक चूक हो गयी। देश में सर्वाधिक लोकप्रिय पैदल पर्यटन के विषय में उन्होंने कतई प्रकाश नहीं डाला है। अधिकांश भारतवासी अभी भी अपनी दोपहिया सवारी पर पूरी तरह निर्भर हैं। नेताओं में गांधी, विनोबा, चंद्रशेखर आदि इसके प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं। इधर जन-नायक जब हवाई सर्वेक्षण से जनता की कठिनाइयों का अध्ययन कर 'बोर' हो जाते हैं, तो वह पैदल पर्यटन के माध्यम से अपनी जनप्रिय छवि को सार्थक करते हुए पुलिस की सुरक्षा में पदयात्रा करने लगते हैं।

देश को पैदल-पर्यटन से बहुत आशाएं हैं। जब नेता पैदल चलेंगे तो अमूमन उनके पांव की बिवाई फटेगी, तो शायद वह दूसरों की पीर समझने लगें। क्या पता उनका जनता के दर्द, भूख, अभाव के प्रति समभाव का दृष्टिकोण भी बदल जाएं ?

—डी-१, २१० विनय मार्ग, चाणक्यपुरी,
नयी दिल्ली-११००२१

भूकंप आने की पूर्व सूचना पशु-पक्षी तो देते ही हैं, साथ ही प्रकृति भी देती है। प्रकृति यह पूर्व सूचना एक विशेष प्रकाश के माध्यम से देती है। भूकंप आने से पूर्व शाम को और रात को वायुमंडल में एक प्रकार का विशेष प्रकाश दृष्टिगोचर होता है। यह विशेष प्रकाश क्यों दिखाई देता है, इस पर ज्यार्जियाई विज्ञान अकादमी के बी. बालावाद्जे का कहना है कि भूकंप के पूर्व पृथ्वी-गर्भ के विद्युतीय क्षेत्रों में वृद्धि हो जाती है, जिससे विद्युत चुंबकीय विकिरण बढ़ जाने से एक विशेष प्रकाश दिखायी देने लगता है।

× × ×

काले बिच्छू के एक ग्राम विष का मूल्य आज अंतरराष्ट्रीय बाजार में बीस हजार अमरीकी डालर से अधिक है, इसका कारण यह है कि एक ग्राम विष के लिए आठ-नौ हजार काले बिच्छुओं की जरूरत होती है। इस विष का उपयोग विभिन्न प्रकार की औषधियां तैयार करने में किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि-सागर

● डॉ. श्यामसिंह शशि

डॉ. श्यामसिंह शशि ने 'अग्नि-सागर' प्रबंध काव्य (शीघ्र प्रकाश्य) में अपनी काव्य-यात्रा को एक नया आयाम दिया है। मनु कथा पर आधारित समय तथा समाज सापेक्ष इस नवीनतम काव्य-कृति के दसवें सर्ग 'चरैवेति' के कुछ अंश हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

— संपादक

युग बीत गये चलते-चलते
मनु थकते-सुस्ताते-उठते
बढ़ता जाता था ब्राह्म-दिवस
मन्वन्तर-दिन घटते जाते

संस्कृति जितनी विकसित होती
मूल्यों में अवमूल्यन आते
मनु-दर्शन के मौलिक लक्षण
नवयुग भी कैसे अपनाते

बन गये प्रवासी पुनः मनु
मन लगा आत्मविश्लेषण में
सब कुछ देखा—अनदेखा था
अब मुक्त विशेष्य-विशेषण में

मनु :
कुछ भी मेरा अब शेष नहीं
स्मृतियां मौलिक नहीं रहीं
कितना जोड़ा कितना छोड़ा
कुछ भी हो अब सविशेष नहीं

मेरा था जो मंतव्य नहीं
वह आज तुम्हारा इष्ट हुआ
इन छद्मनाम के मनुओं ने
मेरे लेखन को भ्रष्ट किया

मैं 'कालजयी' 'समवेत पुरुष'
या आदिपुरुष' 'युगपुरुष' कहो
मैं ऊर्जा का हूं अग्निहोत्र
या मुझको 'ज्वालापुरुष' कहो
मेरे मन को छूकर देखो

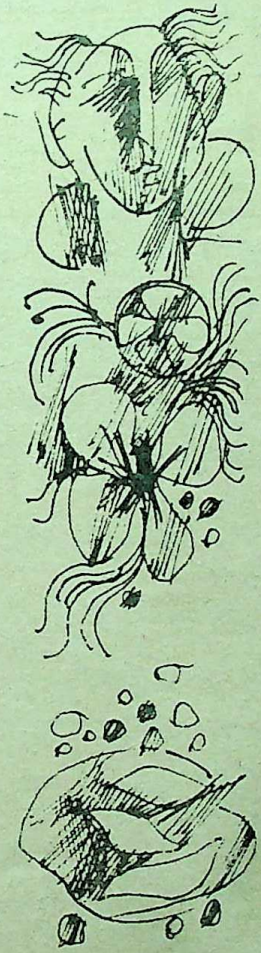

उसको अपने में पाओगे
मुझ में अपने को देखोगे
अपने से मिलने आओगे

मैं तो देता ही रहा सदा
तन भी अर्पित मन भी अर्पित
अर्जित जो कुछ भी था मेरा
सब कुछ समाज को ही अर्पित

मैं कब था अपने लिये जिया ?
मैंने क्या अपने लिये किया ?
मैंने समाज के जीवन में—
अपने जीवन को नित्य जिया !

× × ×

मनु आज अकेले थे पथ पर
श्रद्धा ईरा भी साथ न थी
मानव को देकर नवसमाज
अब चिर गवेषणा साथ चली

यह शोध कौन-सी है मनुवा
जिसको युग काल अधूरा था !
जितना डूबा उतना खोया !
कुछ भी तो हुआ न पूरा था !

कुछ और नया देने का मन—
जग सारा हो सुखमय सुंदर !
आशा-विश्वास लिए प्रतिपल
चलता जाता मन यायावर !

—निदेशक, प्रकाशन विभाग,
पटियाला हाउस, नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

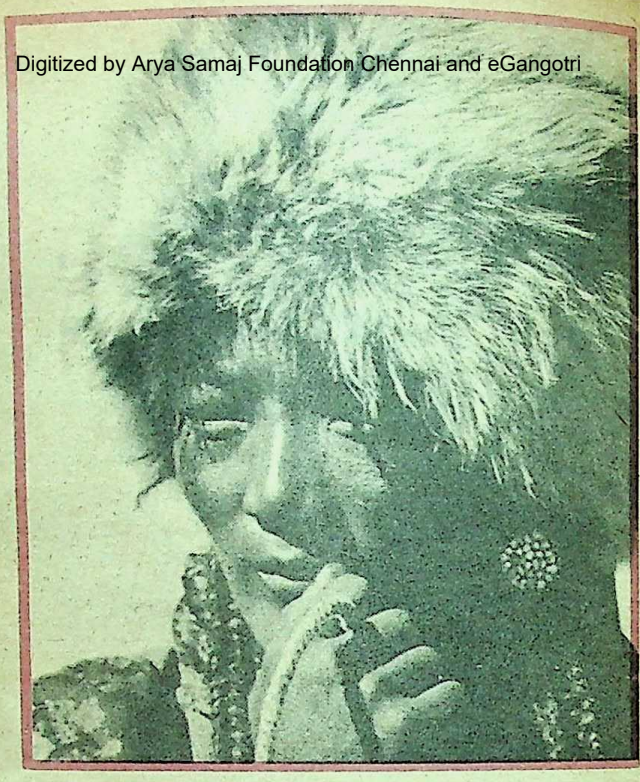

बर्फानी सन्नाटे के बीच

● गंगा प्रसाद विमल

तिब्बत का नाम लेते ही एक रहस्यपूर्ण देश का बिंब मन, स्मृति में छा जाता है। हजारों मीलों का एक विशाल पठार, जो हिमालय के उत्तर में, सिक्यांग के पूर्व में व चीन के दक्षिण में फैला हुआ है। दुर्गम और विकट यात्राओं का देश है यह। अभी तक बहुत कम लोग हैं, जिन्होंने तिब्बत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक यात्रा की है। शेष दुनिया को तिब्बत के बारे में ज्यादा कुछ पता ही नहीं है। अगर कुछ चीजें ज्ञात हैं, तो उनमें एक है तिब्बत के धर्मगुरु दलाई लामा का अपने देश से बाहर प्रवेश करना, अगर याद है तो यह बात कि तिब्बत पर चीन ने फौजी ताकत से आधिपत्य किया है और इस आधिपत्य के बाद अब तक तिब्बत एक लंबी गुमनामी का जीवन जी रहा है।

इस गुमनामी के दौर को तोड़नेवाली कुछ घटनाएं घटी हैं। पिछले बरस और इस बरस भी शांतिपूर्ण विरोध प्रकट करनेवाले तिब्बती बौद्ध धर्मावलंबियों पर चीनी सेना ने हिंसक आक्रमण किये हैं। इन दोनों घटनाओं में अनेक बौद्ध धर्मावलंबी तिब्बती मारे गये। सदियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिब्बत : एक रहस्यपूर्ण देश, जिसके बारे में दुनिया को कुछ ज्यादा पता नहीं है। एक गुमनामी का जीवन जी रहे तिब्बत की पैदल-यात्रा पर गयी एक आस्ट्रेलियाई लड़की की कथा-व्यथा।

चुप्पी और सन्नाटे में घिरे इस ठंडे रेगिस्तान की हलचल ने दुनियाभर के कान खड़े किये। आज लोग तिब्बत में जितनी दिलचस्पी रखते हैं, उतनी शायद किसी दूसरी चीज में नहीं। तिब्बत का धर्म, वहां के लामा, जड़ी-बूटियां, ध्यान-साधना, चित्रकारी और सहज-शांत लोग-पश्चिमी देशों के लिए तो विचित्र प्रकार के आकर्षण का केंद्र हैं।

तिब्बती बौद्धों के अनेक तीर्थस्थान भारत में भी हैं और भारत के शैव मतावलंबियों के धार्मिक केंद्र कैलास— मानसरोवर आदि तिब्बत में हैं। दोनों देशों की मैत्री बहुत प्राचीन है। आज से कुछ ही दशक पहले भारतीयों के लिए तिब्बत की यात्रा पर कोई प्रतिबंध नहीं था। कुछ अर्से के लिए अंगरेजों के काल में तिब्बत की जोखिमभरी यात्रा के लिए अनुमति लेनी पड़ती थी, किंतु यह प्रथा भी ज्यादा देर नहीं चली। परंतु जिस काल में तिब्बत की यात्रा के लिए कोई राजनैतिक व्यावधान नहीं थे, तब भी तिब्बत की बहुत कम यात्राएं की गयी हैं और अब... अब वहां यात्राओं के लिए बहुत कम अनुमति मिलती है। यह जानकर आश्चर्य ही होना चाहिए कि बाहर के लोग चाहें तिब्बत न जा पाते हों, पर तिब्बत के लोग अपने देश में लंबी-लंबी यात्राएं करते हैं— एक तो वहां के आदिवासी क्षेत्रों के लोग खानाबदोशों की तरह रहते हैं और एक जगह से दूसरी जगह अपनी चंवर गायों के साथ घूमते रहते हैं। दूसरे, वे तीर्थ-यात्रा के लिए भी हिमालय के उत्तरी हिस्से की दुर्गम यात्राएं करते हैं।

बर्फ की उस सीमा तक जहां अंधापन छा जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

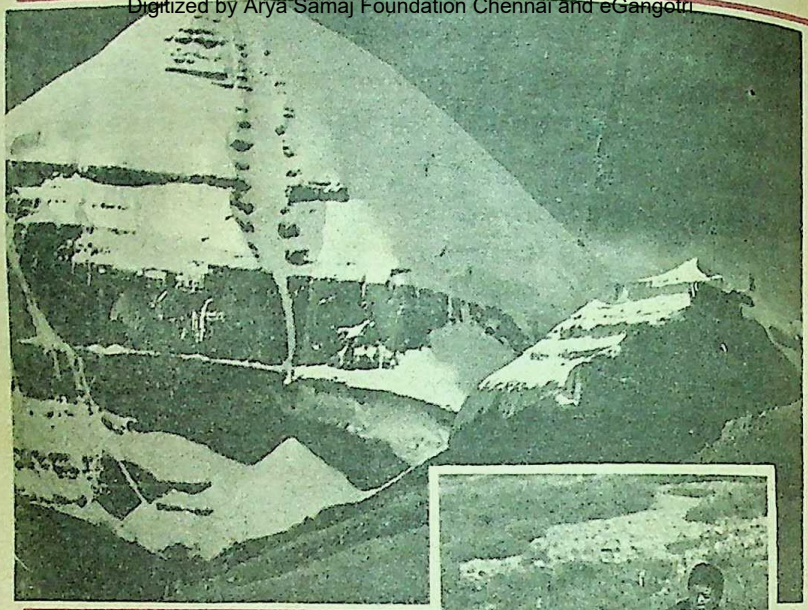

कैलास शिखर और उसकी परिक्रमा करते हुए भक्तगण

इन्हीं अनजान, अनाम खानाबदोशों के साथ दुर्गम पठार के बर्फीले रेगिस्तान में एक आस्ट्रेलियाई लड़की सोरेल विलवाय ने जो यात्राएं की हैं, उससे पता चलता है कि वर्तमान तिब्बत में जीवन-यापन की स्थिति क्या है ? अपनी यात्रा शुरू करने से पूर्व सोरेल ने तिब्बत के महानतम संत, अवतार दलाई लामा से भेंट की और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया ।

यात्रा तिब्बत की

सोरेल ने अपनी यात्रा तिब्बत-नेपाल सीमा पर बसे कस्बे बुरांग से आरंभ की, जहां से तिब्बत की राजधानी ल्हासा १५०० मील दूर, पूर्व की ओर स्थित थी । इस यात्रा में सोरेल ने पहला संकल्प यह किया कि वह तिब्बत के दुर्लंघ्य स्थानों की यात्रा पैदल ही करेंगी और इसकी प्रेरणा उसे मिली थी तिब्बत के एक खेल-प्रेमी जिग्मे सुर्खांग से ।

यात्रा में सामान ढोने के लिए सोरेल ने चंवर गाय के बजाय एक खच्चर लिया । लेकिन वह इतना बिगड़ैल खच्चर था कि यात्रा के पहले पड़ाव में ही वह जब विश्राम के लिए खोला गया, तो न जाने कहां भाग खड़ा हुआ । लिहाजा अपना सामान खुद सोरेल को लादकर ले जाना पड़ा । सोचिए, दुर्गम पहाड़ी प्रदेश, जोखिमभरा रास्ता और उस पर एक मन से अधिक बोझ ... पर इस साहसी लड़की ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी पैदल यात्रा जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्फ की चमक से उसकी आंखों में अंधापन छा गया। कुछ दिन के आराम के बाद जब बंजारों के एक तंबू में उसकी दृष्टि वापस आयी, तो उसने देखे बंजारों के हंसते-खिलखिलाते हुए प्यारे-प्यारे बच्चे।

एक बंजारा (नोमाड्स) परिवार

रखती रही। अपनी पीठ पर एक छोटा-सा तंबू, भोजन सामग्री, स्टोव, दूसरी जरूरी चीजें और सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी टाब्लर चाकलेट के पैकेट उठाये छोटी-छोटी कांटेदार झाड़ियों में अटकते, पांवों में पर्वतारोहियों—जैसे बोझीले जूते पहने यह लड़की आगे बढ़ती रही। और जब पांव का बोझ भारी हो गया, तो उसने जूते उतार फेंके और एक तीर्थ यात्री की तरह नंगे पांव चलने लगी। बारगा क्षेत्र पार करने के बाद उसे पता चला कि ल्हासा को जानेवाले रास्ते बाढ़ की वजह से बंद हो गये हैं। छालों से भरे, कटे-फटे पैरों की विपदा से वह मुक्त नहीं हो पायी थी कि अब ल्हासा जाना ही संभव नहीं था। न लौटने का कोई रास्ता, न आगे बढ़ने की कोई संभावना। बारगा में न कोई होटल था, न कोई ऐसी जगह जहां अकेली लड़की कुछ सोच भी सके। जिस जगह उसने ठहराने का इंतजाम किया, तो उसने उस कमरे की चाबी मांगी तो बताया गया कि कमरा तो है, पर उसमें कोई दरवाजा नहीं। फिर ताले-चाबी का प्रश्न ही कहां उठता ? पर भाग्य से बारगा से आगे की यात्रा में उसे तीर्थ-यात्रियों का एक दल साथियों के रूप में मिल गया। इस दल में थे भारत व तिब्बत के तीर्थ-यात्री, भिक्षुकगण, बंजारे (घुमंतू) लोग और उनकी भेड़ें, चंवर गाएं, घोड़े, खच्चर आदि। ये सब कैलास-मानसरोवर के यात्री थे। और सभी ने कैलास पर्वत की परिक्रमा में हिस्सा लिया। पहले तो उसके सह-यात्री पश्चिम की एक लड़की को देखकर भौंचक रह गये पर टूटी-फूटी तिब्बती सुनकर उनका मनोरंजन होने लगा। उनमें से कई सोचते होंगे कि इस लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने जाने कितने घोर पाप किये हैं कि यह शिवधाम कैलास की यात्रा पर आ निकली है । उनमें से कुछ ने उसके घर के बारे में पूछा, परिवार के बारे में और कुछ तो इतने भोले थे कि पूछने लगे कि 'तेरे परिवार के पास कितनी भेड़ें हैं ? कितनी चंवर गायें हैं ?' उनकी बहुत-सी बातें तो समझ के भी बाहर थी और वह चालाकी से हंसती उत्तर में बस बौद्ध मंत्र 'ऊं मणि पद्मे हूं' उच्चार देती । कैलास पर्वत की परिक्रमा के बाद थकान, पांव के छालों ने तो उसे नानी याद दिला दी और शायद, मंत्र की जगह कहने लगी 'ओह, मम्मी टेक मी होम' । क्योंकि, लौटते वक्त चीनी फौजियों के तीन कुत्तों ने उसे काट खाया था । फलतः फौजी डॉक्टर ने गरम पानी से जख्म धोकर टांके लगा दिये थे । इलाज ने दर्द ज्यादा ही बढ़ा दिया था, पर सोरेल ने हिम्मत नहीं हारी । मोंयसेर कस्बे में सोरेल के पैसे एक युवा-दंपति ने चुरा लिये जिनका बच्चा बहुत बीमार था । पर वे लोग पकड़े गये । और उन्हें निश्चय ही मानसिक कष्ट भी झेलना पड़ा होगा । मोंयसेर कस्बे से अपना बोझ हलका करने के लिए पास ही जानेवाले एक ट्रक पर उसने सामान लादा और खुद पैदल चल पड़ी, लेकिन ट्रकवाला कहीं न दिखायी दिया । फलतः एक लंबी यात्रा फिर बिना किसी सामान के करनी पड़ी । बाद में पता चला था कि यह सब टूटी-फूटी तिब्बती के कारण हुआ था क्योंकि, ट्रक ड्राइवर यह नहीं समझ पाया कि सामान अगले कस्बे में छोड़ना है ।

खंपाओं के बीच

पांच दिन की यात्रा के बाद अली कस्बे में वह ट्रकवाला सामान सहित दीखा, पर तब तक कई संगी-साथी बिछुड़ चुके थे । अली से आगे की यात्रा शुरू की, तो सोरेल को पता चला कि इस बार बर्फ जल्दी पड़ेगी । वह एक चोटी पार कर रही थी कि तिब्बती सड़क कामगारों ने उसे चेताया और तभी जोरों का धमाका हुआ । वहां एक डायनामाइट बिस्फोट हुआ था । वह बच तो गयी, पर धूल में डूबी सोरेल उस झटके से बहुत डर गयी । ग्येगाई कस्बे के मुखिया ने उसे आगे आनेवाले इलाकों के मुखियों के लिए पत्र दिये, ताकि यात्रा आसान हो । पर शोंग्बा कस्बे में उसे एक घर में नजरबंद कर दिया गया । इसलिए कि वहां के लोग उसके पासपोर्ट और यात्रा-परमिट को पढ़ नहीं पाये थे । आठ दिन बाद तब आजादी मिली, जब शोंग्बा का मुखिया कहीं दूर की यात्रा से लौटा । उसने सोरेल को एक मार्गदर्शक यारबो दिया । लेकिन यारबो कुछ दिनों बाद लौट गया और इस तरह कभी कोई पथ-प्रदर्शक मिला, कभी कोई । यांग्रा में उन दिनों पूरे तिब्बत के बंजारे अपना वार्षिक उत्सव मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे । जगह-जगह के बंजारे थे । वे अपने तंबुओं में शराब ढाल रहे होते या नाच-गा रहे होते । एक तंबू में जुआ चल रहा था । वहां एक खंपा को सोरेल की उपस्थिति अच्छी नहीं लगी और उसने अपनी तलवार से सोरेल पर वार कर दिया, लेकिन वह बाल-बाल बच गयी । खंपा की लाल-लाल आंखें उसे हमेशा भयभीत करती रहीं । वहां घुमंतुओं के बीच सोरेल ने जाना कि वे हजार-हजार मील की यात्राएं कर यांग्रा क्षेत्र में इकट्ठे होते हैं और अपनी आदिवासी संस्कृति का प्रदर्शन करते । यांग्रा के उत्सव के बाद वह घुमंतुओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दल के साथ आगे बढ़ी, लेकिन वे लोग अलग-अलग दिशाओं की ओर निकल गये। सोरेल, नामग्याल गारमा और लोबसेंगे एक बढ़ी नदी और १,२०० फीट के एक दर्रे को पार करते हुए आगे बढ़े कि वहीं बर्फ की चमक से सोरेल की आंखों में अंधापन आ गया। तीन दिन तक वह साथियों की मदद से बर्फीले अंधड़ को पारकर एक सभ्य बस्ती की ओर बढ़े। रास्ता न सिर्फ खतरनाक था, बल्कि बीहड़, थकाने और उबानेवाला था। अपनी हालत पर सोरेल को रोना आया, पर जब वे एक घुमंतू के तंबू में पहुंचे। आराम मिलने के साथ-साथ कुछ दिन बाद सोरेल की दृष्टि वापिस आयी तो उसने तंबू के अंदर हंसते-खिलखिलाते हुए प्यारे-प्यारे बच्चे देखे।

सोरेल का कहना है कि दुनिया की सबसे प्यारी जगह तिब्बत है। वहां के लोग बहुत ही अच्छे हैं। वे अपनी हर चीज में आपको हिस्सा दे देंगे, चाहे वह आखिरी खाना ही क्यों न हो। इस यात्रा के विकट अनुभवों में तरह-तरह के बंजारों से मिलना तो है ही— वे अपनी बुद्ध मुद्रा में, ईश्वर में आस्था रखनेवाले लोग सादे हैं। ल्हाजे नगर में उसे एक जीपवाले ने गरम पानी के सोते में चलने के लिए कहा, तो उसे पता चला कि बड़ा दिन पास है, वहां से पास ही कस्बे से वह जिग्मे को फोन करना चाहती थी कि अब ल्हासा पहुंचने ही वाली है पर पता चला कि जिग्मे ल्हासा के हवाई अड्डे पर जाते समय कार दुर्घटना में मर गया है।

ल्हासा, संसार का पवित्र नगर, पर वह सोरेल के दोस्त जिग्मे के बिना था। दलाई लामा ने अपने छोटे-छोटे दो सौ चित्र लोगों में बांटने के लिये दिये थे। शायद, उन दो सौ लोगों की दुआ थी कि सोरेल सही सलामत थी।

तिब्बत ने उसे एक शक्ति दी है। वह कहती है कि 'वह शक्ति प्यार है।' और उसके दिल में रहते हैं वहां के लोग, वहां के पहाड़ और पूरा का पूरा तिब्बत।

—३ए/११ डब्लू.ई. ए. करोल बाग,
नयी दिल्ली-५

सुपर कंप्यूटर रूस और अमरीका का

अमरीका का सुपर कंप्यूटर विश्व का सबसे उन्नत श्रेणी का कंप्यूटर है, जो प्रति सेकंड करोड़ों तरह के काम करता है। इसकी स्मरण-शक्ति अद्भुत और बेजोड़ है और इसे सभी क्षेत्रों में काम में लाया जा सकता है। भारत अमरीका से ऐसा ही सुपर कंप्यूटर खरीदना चाहता है, जिसके लिए अमरीका वर्षों से कभी 'हां', कभी 'ना' करते हुए शर्तें लगाता रहा है जैसे, एक— भारत इस सुपर कंप्यूटर का इस्तेमाल नाभिकीय हथियार बनाने में नहीं करेगा। दूसरे, सुपर कंप्यूटर की तकनीकी जानकारी भारत अपने मित्र देश रूस को नहीं देगा। लेकिन, अब यह दूसरी शर्त बेमानी हो गयी है, क्योंकि रूस के इंजीनियरों ने अपनी निजी तकनीक का विकास कर सुपर कंप्यूटर बना लिया है, जो किसी तरह अमरीकी सुपर कंप्यूटर से उन्नीस नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली का अपना कुछ नहीं है, न राजनीति और न प्राकृतिक सरदी-गरमी आदि। जब तुर्कों का शासन आया तो दिल्ली तुर्की बनी और जब मुगल शासक बनकर आये तो यहां की भाषा फारसी हो गयी फिर जब अंग्रेजी शासन की स्थापना हुई तो अंगरेजी भाषा के साथ-साथ अंगरेजियत की बू आ बैठी। इसी तरह जब राजस्थान में गरमी बढ़ी और वहां से बालू से भरी आंधी दिल्ली पहुंची तो गरमी का पारा ऊंचा हो गया। कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में बर्फ गिरी तो दिल्ली के लोग जाड़े से थरथरा उठे।

बहरहाल, पिछले वर्ष ऐसी ही एक परिस्थिति में दिल्ली का बैरोमीटर इतना ऊंचा उठ गया कि लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। यानि यह परिस्थिति हुई। बिहारी के शब्दों में—

कहलाने एकत बसत
अहि, मयूर, मृग, बाघ
जगत तपोवन सों किये
दीरध, दाध् निदाध

इसी परिस्थिति में मैंने और मेरे दो मित्रों ने यह तय किया कि कुछ सप्ताह हम लोग नैनीताल में बिताएं और हम दूसरे ही दिन वहां के लिए चल पड़े।

मुझे शहर की अपेक्षा पहाड़ की दूर-दराज की जगहें ज्यादा पसंद हैं, इसलिए मैं मित्रों को नैनीताल में ही छोड़ स्वयं एक खच्चर पर सामान लदवाकर उसके वाहक के साथ ऐसे ही किसी स्थान की तलाश में चल पड़ा। पहाड़ के विकट रास्तों को तय करता हुआ प्रायः सौ मील

पर्यटन कूमायूं की पहाड़ियों में

– राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर चला आया। संयोगवश वहां रहने का स्थान भी मिल गया, एक पुराना किसी रिटायर्ड साहब का बंगला जिसे छोड़कर वह भारत के स्वाधीन होते ही सपरिवार विलायत चले गये। अपने एक स्थानीय बेयरे और उसके परिवार को बंगले और उसके हाते की देख-रेख के लिए वे सर्वेंट क्वार्टर में रखते गये। अब तक वह और उसके उत्तराधिकारी एतदर्थ के लिए एक रकम विलायत से भेजते रहे हैं।

बंगले के 'केयर-टेकर' ने मुझे बड़े उत्साह के साथ रखा चारपाई पर बाबा आदम के समय का धोया हुआ चादर बिछा दिया एक तकिया रखा और मच्छरदानी चारपाई के चारो ओर लगा दी। मैंने बड़ी शांति के साथ रात गुजारी। तभी एक दिन सुबह मैंने देखा कि सामने के एक टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्ते से कुछ नीचे उतर रहा है। बाद में वह एक सयानी लड़की लगने लगी और कुछ ही देर में वह मेरे पास आ धमकी और बड़े सुमधुर शब्दों में धीरे-से बोली, "बाबूजी क्या मैं अंदर आ सकती हूं ?"

मैंने कहा, "खुशी के साथ चली आओ", और वह बरामदे के नीचे आकर बैठ गयी। वैसे कुमायूं की औरतें देखने में सुंदर, होती ही हैं। वह खासतौर पर सुंदर चित्ताकर्षक थी। बाल खुले हुए थे और उनमें जहां-तहां पहाड़ के फूल बिखरे हुए थे। सिर पर उसके एक टोकरी थी जो बड़े कद के पके हुए आड़ुवों से भरी हुई थी। "ये बड़े मीठे फल हैं बाबूजी" वह बोली, "मैंने एक खाकर देखा तो वह सचमुच ही बड़ा मधुर था। उसने बताया कि वह यहां से बीस

वह एक लड़के से प्यार करती थी, पर वह लड़का दूसरी जाति का था सो हम लोगों ने शादी नहीं होने दी बल्कि लड़के को डांट-डपटकर इस गांव से भगा डाला। यमुना इतनी दुःखी हुई कि उसी रात उसने नदी के तेज धारा में अपने को विसर्जित कर दिया। वह तेज धारा न जाने कहां ले गयी उसे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मील दूर ठाकुरों के एक छोटे-से गांव की लड़की है गांव में पहुंचना टेढ़ी खीर है, ये सिर्फ वहां के रहनेवालों के लिए संभव है कि वे आसानी से पहाड़ से नीचे आ सकें। गांव के बगल से एक बड़ी तेज धारवाली नदी भी बहती है।

अब वह प्रायः नित्य ही तरह-तरह के पहाड़ी फल लेकर आने लगीं और घंटे सवा घंटे बैठकर अपने क्षेत्र के रस्मों रिवाज आदि की चर्चा करती और कभी-कभी प्रेम के गीत जिसका अर्थ दरबान की दो लड़कियां (जो क्वार्टर से आकर बातों में शामिल हो जाती) मुझे हिंदी में समझा देतीं। गानेवाली लड़की कभी गाकर हंसती और कभी विषाद उसके चेहरे पर छा जाता। एक दिन वह खुले बालों की जगह जूड़ा बांधकर आयी जिसमें बड़े खूबसूरत ढेर-से फूल लगे हुए थे। इस वेश में वह आज और भी ज्यादा सुंदर लग रही थी बरबस ही उसने मुझे कालिदास के मेघदूत की इन पंक्तियों की याद दिला दी—

हस्ते लीला कमल मल के
बाल कुन्दानु विग्धं
नीता लोध प्रसव रजसा
पाण्डु ते मानन श्रीः

मैंने बगैर कुछ सोचे विचारे उसकी टोकरी से एक नीले रंग का बड़ा-सा फूल लेकर उसके जूड़े में लगा दिया।

वह शरमा उठी और एक गीत की दो पंक्तियां गाने लगीं। मैंने पूछा—इस गाने का अर्थ क्या है तो वह और भी शरमा गयी और उसने दरवान की सयानी बेटी से कहा कि, "बाबूजी को तू इसका अर्थ बता दे।"

उसने वैसा ही किया। 0 अर्थ था, "तूने मेरे जूड़े में फूल लगाया है, तू मुझसे शादी कर।" फिर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़ी। फिर इसके बाद वह हफ्तों बंगले पर नजर नही आयी। मैं चिंतित होकर उसकी तलाश में दो पहाड़ी कुलियों को लेकर उसके बताये हुए गांव में थके हुए होने पर भी जा पहुंचा और गांव-वालों से उसके संबंध में पूछा कि वह आंडू लेकर मेरे पास आया करती थी, पर दो हफ्ते से नहीं आयी। मैं उससे मिलने आया हूं। मेरी बातें सुनते ही गांववालों ने चुप्पी साध ली। पर उनमें एक वृद्ध व्यक्ति थे, वह बोले, 'बाबूजी ! यमुना (यही उस का नाम था) तो आज से चार साल पहले ही मर गयी। वह एक लड़के से प्यार करती थी, पर वह लड़का दूसरी जाति का था सो हम लोगों ने शादी नहीं होने दी बल्कि लड़के को डांट-डपटकर इस गांव से भगा डाला। यमुना इतनी दुःखी हुई कि उसी रात उसने नदी के तेज धारा में अपने को विसर्जित कर दिया। वह तेज धारा न जाने कहां ले गयी उसे ? सुमधुर स्वभाव की सरल कन्या थी।

मैं एक होटल में रातभर के लिए ठहर गया। उसी रात उषा-काल के समय मैंने एक स्वप्न देखा।

स्वप्न यह था— यमुना पहाड़ की एक चोटी पर खड़ी मुझसे कह रही है, 'बाबूजी ! मैं एक स्वप्न हूं मेरी प्रतीक्षा न कीजीए।'

और मेरी नींद टूट गयी मुझसे नैनीताल में अब और ठहरना संभव न हो सका। मैं उसी रात ट्रेन पकड़कर दिल्ली के लिए रवाना हो गया। यह एक ऐसी घटना थी जो चिरस्मरणीय है।

—बी०२, महावीरबाग नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

व्यर्थ

—निर्मला वाजपेयी

कई-कई रातें ड्यूटी पर बिता देनेवाले, सिंह साहब लापरवाही का लांछन औढ़कर ही सस्पेंड हुए थे। मरुभूमि में गड़ा रेगिस्तानी तंबू, तेज हवा के एक ही झोंके में न जाने कहां उड़ गया था।

सस्पेंशन के बाद कंपल्सरी रिटायरमेंट तक की ग्लानि भोगकर, जब वे कुछ सहज हुए, तो उन्होंने पाया कि उनके इर्द-गिर्द का वातावरण अजीब-सी अस्वाभाविकता से बोझिल हो चुका है। अब क्या वे परिवार की धुरी नहीं रहे ? बस, पद और पैसा कमाने की मशीनभर थे, जो अचानक टूट गयी है। इतने एकांत के सलीब पर लटकना कितना कठिन हो उठा है।

किंतु समय की थोड़ी-सी ही गति में, मरहम लगे उनके घाव भरने लगे थे और पति एवं पिता मात्र रह जाने का गौरव, संभालना ही सुखदायी लगने लगा था।

"चलो अच्छा हुआ, रात-दिन लटके रहने से छुट्टी मिली। कौन-सी चूड़ियां फूट गयीं।" उत्तर में रमा की डबडबायी आंखें देख, वे हक्के-बक्के रह गये थे।

"अरे ! तुमने तो हमेशा ढांढ़स बंधाया है, अब रो रही हो। देवेन सर्विस में है, रोली का डॉक्टरी का आखिरी साल है, प्रवीन पढ़ने में इतना तेज़ है, फिक्र किस बात की है ?"

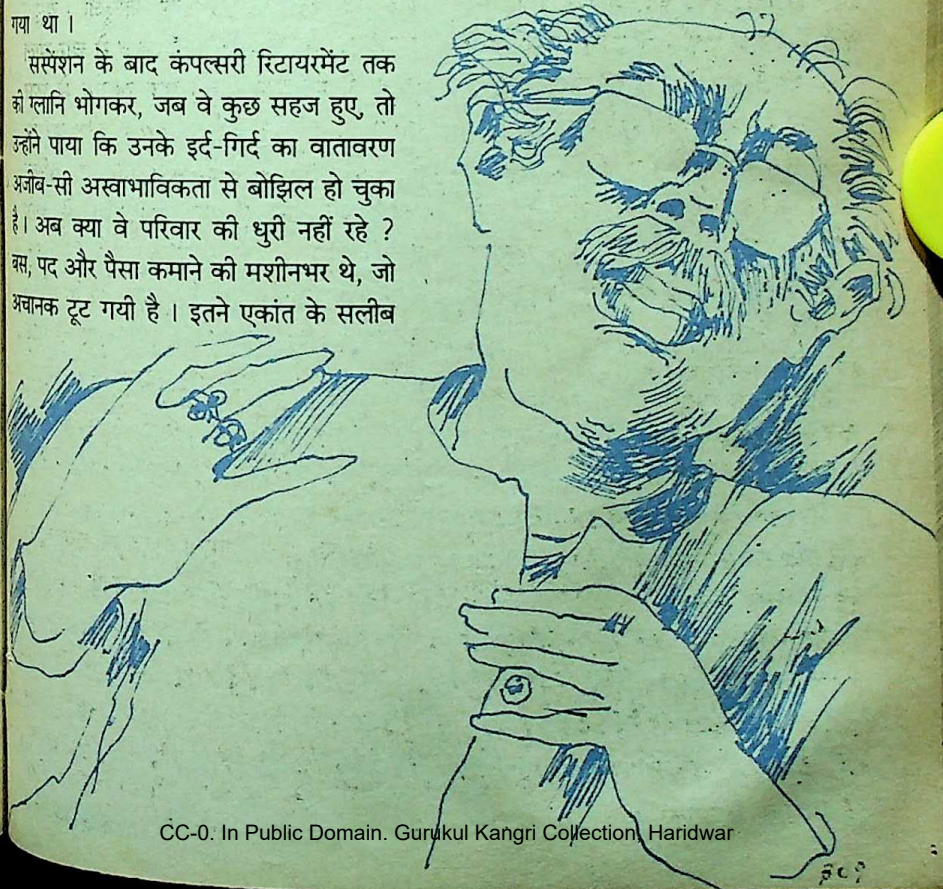

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे भीतर आकर तैयार हो गये। शीशे में देखा तो लगा कि जरूरत से ज्यादा सज-संवर गये हैं। उन्होंने कुर्ते को थोड़ा हाथ से मसल डाला! पजामे के दोनों हिस्से ऊपर तक उठाकर मुट्ठियों में भींच डाले। फिर मन ही मन अभ्यास-सा करने लगे कि कैसे जाएंगे। अंगुलियों से बाल भी उलझा डाले। अब मृतक के घर जाने के लिए बिलकुल ठीक हो गये थे।

रमा के अनुत्तर के साथ, तकलीफ देते हुए हिलते दांत को जुबान से ठेलकर, उन्होंने बात बदल थी, "क्योंजी, तुम्हारा तो एक भी दांत नहीं हिलता, हमारे साथ चलोगी कैसे ? कोई कहेगा कि दूसरी है या तीसरी..." वे बेकारी से हंसे थे, तो पत्नी निरर्थकता के आभास को झुठला बड़ी ही नाटकीयता से मुसकरायी थी, "दांत निकलवाने से ही क्या बूढ़ हो जाते हैं ? कोकिला जैन को भूल गये क्या... ?"

"कोकिला जैन-जैसी तो दस बनेगी तुममे ;

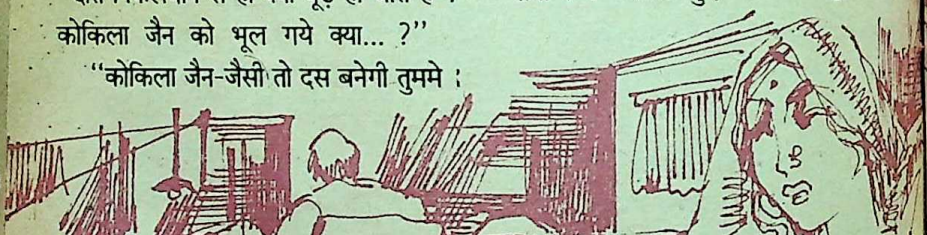

क्या इतने सजने-संवरने से ही कोई देखने काबिल हो जाता है... मूंछें देखी थीं उनकी ? ... और सुरमा कितना लगाती थीं।"

न जाने क्यों बड़ी व्यस्त-सी रमा उठ खड़ी हुई थी। वर्षों से उन्होंने पति के मुंह से इतनी हलकी बातें नहीं सुनी थीं। रमा के कमरे से चले जाने के बाद वे बड़ी देर तक असहाय से बेडकवर में पड़ी हुई लकीरें गिनते रहे थे।

दूसरे दिन देवेन को आना था वह सबेरे की ही गाड़ी से आ गया। रमा को बेटे की पसंद के व्यंजन बनाने में व्यस्त देख वे हड़बड़ाने लगे थे कि वे क्या करें।

अचानक जिस विषय से हरदम बचने की कोशिश करते थे उसी को लेकर देवेन इधर-उधर की बातें छेड़ बैठा।

"उस रात लापरवाही तो जरूर हो गयी थी पापा ! ! जानते हुए भी कि माथुर इतना पियक्कड़ था, उसी पर जिम्मवारी छोड़ दी आपने..."

"तो क्या दो बजे के बाद भी सिपाही की तरह वहीं पहरा देते रहते..." रमा थोड़ी कातर हो उठी थीं।

"जिम्मेवारी मजाक नहीं होती। उस रात घर न लौटते तो शायद यह स्थिति ही न आती।" खिसियाए बैठे रह गये थे सिंह साहब।

कितने तर्क, कितने उत्तर, कितनी सफाइयां और इतने ही मजबूत पक्ष, जिनको लेकर वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्पेंशन की भयानक बाढ़ और उतनी बड़ी सरकार से लड़े थे, बेटे के सम्मुख वही सब आधारहीन गुंबद व मीनारें की तरह लड़खड़ा-लड़खड़ाकर ढेर हो गये।

शाम को ही बेटी भी आ गयी तो वातावरण एक हद तक सामान्य हो गया था, इस भय के अतिरिक्त कि रोली भी कहीं उसी अप्रिय प्रसंग को न छेड़ बैठे।

भाई-बहन के हलके परिहास के बीच 'निकम्मी' शब्द के अर्थ में भ्रमित, पापा के मनकी ऊबनभरी घोंट स्थिति थोड़ी सुधर गयी।वे निश्चित नहीं कर पाये कि क्या करें, इसलिए वहीं पर बंधे खड़े रहे। बिटिया को न तो थर्मस भरने का आदेश, न ज्यादा

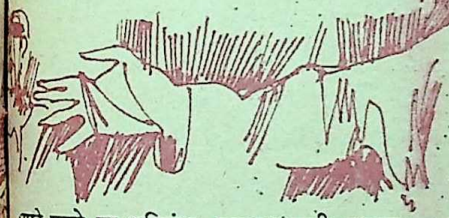

घूमने-फरने पर प्रतिबंध, सुबह जल्दी उठकर जल्दी से जाने की ताकीद भी नहीं। सहसा बहुत बड़ी हो गयी रोली के सामने वह अपने को बहुत छोटा समझने लगे। बाहर आकर उन्होंने प्रवीन से पूछा, 'भेजने जाएगा न दीदी को ?"

"नहीं पापा ! दीदी कोई मेहमान है क्या !"

वे ऊपर आ गये फिर अपने ब्रीफकेस के कागजों को बड़ी व्यस्तता के साथ उलटते-पलटते रहे, साथ ही आशाभरी निगाह से बार-बार दरवाजे को भी देखते रहे। शायद सामान संभालने के बाद रोली तेज-तेज कदमों से ऊपर आ जाएगी और दुलारभरा उलाहना देगी कि "हम तो गैर हैं, ऊपर चले आये आप तो पापा !"

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों गाड़ी का समय नजदीक आता गया पापा का जी भीतर-बाहर होने लगा। समझ में आया कि फुरसत के एक क्षण को बंटानेवाले तब कई थे, लेकिन तब यह क्षण भी तो अनुपलब्ध थे। अब फुरसत ही फुरसत है लेकिन, उनकी फुरसत की चाह करनेवाले सब व्यस्त हो गये हैं। क्षणभर आत्महत्या-जैसी मृत्यु की संभावना ने उनको भीतर तक कंपा डाला। प्रवीन ऊपर

आकर उनसे नीचे चलने का आग्रह करने लगा तो वे अपना धीरज खो बैठे, "नहीं, हम नहीं जाएंगे, जब उन सब को हमारी जरूरत नहीं है तो हम क्यों भागे-भागे पीछे-पीछे फिरते रहें।" वे झुक गये— जैसे रीढ़ की हड्डी एकाएक कमजोर पड़ गयी हो, कई मिनट तक झुके रहे...। प्रवीन ने घबड़ाकर उनका मुंह ऊपर उठाया, तो आंसुओं से उनके दोनों गाल तर थे। प्रवीन ने बड़ी बुजुर्गियत से अपनी कमीज से उनका मुंह पोंछ दिया,

"पापा ! कैसी तबियत है ?... पापा "!

"ठीक है बेटे, मैं थोड़ा आराम करूंगा, मुझे कुछ ओढ़ा दे। शायद सो जाऊं।"

वे लेट गये तो प्रवीन ने बड़ा संभालकर उन्हें दुलाई ओढ़ा दी थी। फिर तौलिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिगोकर उनका मुंह भी उसी ने पोंछ दिया था। बच्चों-जैसे बनकर उन्होंने प्रवीन से सब करवा लिया था।

फिर बोले, "नीचे जा प्रवीन नहीं तो वे चले जाएंगे।"

"कहीं ऐसा भी हो सकता है पापा, कि बिना हम दोनों से मिले वे चले जाएं।" कहकर प्रवीन नीचे उतर गया था।

पापा ने दुलाई से मुंह ढंक लिया। थोड़ी ही देर में उन्होंने अनुभव किया कि कई पदचाप ऊपर तक उभरते आये हैं, कि लोग ऊपर आये हैं...

"सो गये... शायद थक गये हैं। जगाने की जरूरत नहीं है।"

रोली की आवाज से ठंढे परायेपन का बोध पापा को ही हुआ था, क्योंकि सबेरे मम्मी ने ऐसी कोई बात नहीं छेड़ी। वे कल क्यों सुबक उठे थे, ऐसा प्रश्न उनसे किसी ने भी नहीं किया।

अचानक आठ दिन पहले पहले ही मोनो को लखनऊ ही छोड़ सुनीता बगैर सूचना के ही घर आ पहुंची थी। पापा सुबह की सैर के लिए चले गये थे। मम्मी घर पर मिलीं। सुनीता पापा के आने के पहले ही नहा-धोकर तैयार हो जाना चाहती थी। पापा घर पर आते ही उसकी पीठ थपथपाकर यही कुछ कहने लगेंगे, "दोनों वक्त खीरा खाकर रहती होगी। कितनी कमजोर हो रही है। आज पुडिंग जरूर बनेगी और मक्खन पड़ी मलका मसूर भी... चावल, आलू की टिकिया सब कुछ... यह लड़कियां पत्ते-जैसी हिलने में ही अपने को बड़ा स्मार्ट समझती हैं..."

कल्पना के उसी दोचित्ते वैभव से छूट, बाथरूम का दरवाजा खोल वह कमरे में आ गयी। तौलिए से बाल सुखाते-सुखाते उसने खिड़की से झांककर देखा, पापा लौट आये हैं, और बाहर के सहन की ओर पीठ किये खड़े हैं। ममी उसी के लाये हुए फलों को निकालकर ट्रे में डालती जा रही है। सुनीता ने ध्यान से देखा पापा ही हैं। पर बिना बोले-चाले इतनी देर चुपचाप खड़े रहना। क्या उस असंभावित घटना ने उन्हें ऐसा बना दिया है? बालों को थोड़ा-सा ढंक, बाहर आ सुनीता पापा के पैरों पर झुक गयी।

"कैसी है नीतू?"

"अच्छी हूं पापा, आप कैसे...?" ऊपर निगाह उठाते ही बात कट गयी।

"थक गयी होगी? क्या मोनो को आया के पास छोड़..." सहसा पापा चुप लगा गये।

राह-सी देखती सुनीता खड़ी रही, कि शायद पापा अब कहेंगे कि अगर साथ में मोनो को लिए आती तो मुझे उसकी आया थोड़े ही कह दिया जाता कि कहां से आ गयी यह साहबियत तुम लोगों में? लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उसने अनुभव किया कि पापा बेहद औपचारिक हो गये हैं उन्होंने यह तक नहीं कहा कि कैसे सर-वर ढके खड़ी है, इतने फल क्यों ले आयी पैसे पेड़ पर टंगे हैं क्या...' नहीं कुछ भी नहीं।

बहू के जाने के दिन पापा खुश-खुश मालूम पड़े। संभवतः उनके चार दिन बड़ी मुश्किल से कटे थे।

"आज मेरा टोस्ट नीतू बनाएगी, ममी बड़ी कंजूसी से मक्खन लगाती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनीता ने स्लाइस जितनी मक्खन की पर्त लगा प्लेट पापा की तरफ बढ़ायी तो वे बड़ी जोर-से हंसे, वही उत्फुल्लता व विश्वास की हंसी। उसे बुरा लगा, काश इन चार दिनों में पापा एक बार भी इतने हलके होकर हंस सकते। क्या उन्हें उसका आना अच्छा नहीं लगा !

और, उसी समय सुनाई पड़ा कि पड़ोसी पायलट गुप्ता का प्लेन क्रैश हो गया है। पापा की हंसी रुक गयी। मिसेज गुप्ता तो अभी बहुत यंग है। लव-मैरिज थी, बड़ी दुर्गति होगी। सोचते-सोचते क्यों अचानक पापा का मन थोड़ा हलका हो गया। जी चाहा कि उठकर रमा को जोर-जोर से पुकारने लगें। नौकर के बच्चे जो अकसर ही क्वार्टर से निकल कंपाउंड में आ जाते थे, जिन्हें वे नियम से डांटकर भगा देते थे, उन्हें आठ-आठ आने बांट देने का मन हो आया। बाल काढ़ लिये। क्या पहने हुए लिजलिजे कुर्ते, पैजामे को निकाल फेंके, दूसरा कलफ किया हुआ कुर्ता, पैजामा पहनकर जरा दूर रहनेवाले बूढ़े सैनी साहब के घर ब्रिज खेलने चले जाएं। अंगरेजी कविता की कोई टूटी-फूटी पंक्ति उनकी जीभ पर बार-बार मचलने लगी।

मन की इन अजीब अव्यवस्था का कारण क्या है ? बड़े असमय किसी की मृत्यु हो गयी है, फिर उनका मन अवसाद से दबता क्यों नहीं ?वह तो अपने को बड़ा हलका महसूस कर रहे हैं।

वे भीतर आकर तैयार हो गये। शीशे में देखा तो लगा कि जरूरत से ज्यादा सज-संवर गये हैं। उन्होंने कुर्ते को थोड़ा हाथ से मसल डाला ! पजामे के दोनों हिस्से ऊपर तक उठाकर मुट्ठियों में भींच डाले। फिर मन ही मन अभ्यास-सा करने लगे कि कैसे जाएंगे। अंगुलियों से बाल भी उलझा डाले। अब मृतक के घर जाने के लिए बिलकुल ठीक हो गये थे। रमा न जाने कब चली गयी थी।

बाहर आने पर लगा कि पड़ोस का घुटा हुआ अवसाद प्रचंड होकर बहने लगा है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर, गेट की तरफ भागती पायलट की युवती पत्नी को कई लोग संभाल रहे थे। वह झपटकर खंभे के पीछे हो लिये, फिर छिपे-छिपे बड़ी देर तक तमाशा देखते रहे। दुःख एवं पीड़ा की, स्वयं की, वर्षों भोगी सचाई को वह हर संबंधी के चेहरे पर ढूंढ़ते रहे। फिर चुपचाप ही बिना किसी को राहत बंधाये वे घर चले आये। आराम कुरसी पर फैलकर उन्होंने एक सिगरेट पी। अनुमानतः उन्होंने पड़ोसी होने का धर्म निभा दिया था।

फिर भी अनुभूतियों की आरंभिक तीव्रता थोड़ी-थोड़ी कम होने लगी थी। बड़े बेटे देवेन ने अपने ही स्थान पर मोनो के मुंडन का निश्चय किया तो सब लोगों को वहीं पर एकत्रित होना पड़ा था।

मुंडन के 'डिनर' के 'मेनू' की पूछताछ करने पर, देवेन के चुप ही रहने और सुनीता के यह बताने पर, कि मेनू बन चुका है, रमा ने पति को ऐसे घूरा था, जैसे वे कोई अपराध कर बैठे हों। वे चुपचाप वापस कमरे में चले आये थे। देवेन की शादी का ख्याल आता रहा। रमा ने डिनर के मेनू बनवाने के लिए दफ़्तर में उन्हें कितनी बार तंग किया था। कितनी बार अपना 'हूं' 'हां' करके जान छुड़ा लेना, कभी मीटिंग में होने का बहाना, या कभी फुसफुसाकर आफिस में मेनू तय करनेकी बेवकूफी पर पत्नी को डांट देना, उन्हें एक-एक कर सब याद आता रहा। उसीकी पृष्ठभूमि में आज की सुनीता की मेनू तैयार हो चुकने की बात थोड़ी भारी तो लगनी ही थी।

किंतु उस दिन तीव्रता का एहसास उन्हें पूरी तरह से ले डूबा, जब मोनो के मुंडन के अतिथियों से पूरा लान भर उठा था। लान और घर के बरांडे के बीच के पोर्टिकों में घर की सारी रोशनी समेटे बांधे पड़े तार पर धोखे से पापा का पैर जा पड़ा और जोर के झटके के साथ वह गिर पड़े थे।

उधर तार ढीला हो जाने से घर-भर में छाये अंधकार के कारण देवेन झुंझला उठा था, 'पापा आप भी ... क्यों बेकार में इधर-उधर का चक्कर लगाते हैं।'

अब उन्हें लगने लगा कि उनकी जिंदगी में विद्वानों के कहे हुए तीनों मोड़ स्पष्ट नजर आने लगे हैं। पहला, अकेली मां को बेहद प्यार करना, पहली पदोन्नति होते होते उनकी मृत्यु, दूसरे मोड़ का आरंभ, देवेन और उसकी मां का उन पर छा जाना — एक बार — जैसे सब कुछ भूल जाना ... मां तक को।

फिर काम की रवानगी कर्मरत उन्नति के सुकून ने दिल और दिमाग की हर तंत्री को आच्छादित कर दिया था। किंतु, तीसरा मोड़ क्या आया कि सब कुछ बिखर गया, भावनाएं, जीवनभर का अर्जित सुयश, नाते-रिश्ते, आदर स्नेह, कुछ भी तो नहीं बचा पाये अपने लिए।

किंतु इस मोड़ का अंतिम चरण प्रवीन, बी.ए. की परीक्षा देता उनका छोटा-बेटा — जैसे उन्हें टूटते तंतुओं के सहारे बांधे है। प्रवीन उनके जीवन के पहले मोड़ के प्रथम चरण — जैसा ही लुभावना है। अपनी स्वर्गीया मां के सम्मुख अपने-जैसा ही।

'शतरंज चलेगी प्रवीन ?'

'पापा आप भी ... हफ़्ते भर बाद मेरे एग्जाम्स हैं और आप ...'

'अरे हां ! आई.ए.एस. की परीक्षा आसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। रोली की धमाचौकड़ी में मुझे ध्यान ही नहीं रहा।' उन्होंने -जैसी गलती को स्वीकार किया।

'आजकल आप 'चेनस्मोकिंग' करने लगे हैं ?' प्रवीन की बात का जवाब दिये बगैर पापा सिगरेट के अगले हिस्से के राख हुए अंश को देखने लगे।

'यह तो हेल्थ को बरबाद' करना है पापा !' घबड़ाकर पापा ने प्रवीन का मुंह देखा, देवेन की आकृति की रेखाएं-इतना साम्य। प्रवीन के खड़े होने का ढ़ंग भी बिलकुल वैसा ही, एक पैर थोड़ा आगे, ऊंचा मस्तक किये पिता को नन्हे बच्चे की तरह देखते चले जाना।

'कम कर दूंगा प्रवीन।' डूबते हुए तिनके का सहारा पकड़ने की कोशिश करते-से वे बोले थे।

'आप कभी कम नहीं करेंगे। एक बार आदत बिगड़ी नहीं कि ...'

'आदत ... मेरी बिगड़ी आदत ... ?' पापा उतने आश्चर्यचित नहीं हुए जितने अवाक्। प्रवीन बिना कुछ कहे रुमाल में नाक साफ करता भीतर चला गया। वह टोक नहीं सके, नहीं तो कितनी बार वह इसी बात पर प्रवीन को झिड़क चुके हैं कि बाथरूम है, वाश बेसिन है, यह क्या आदत है ?

पापा थोड़ी देर बैठे रहे। अचानक न जाने क्या हुआ कि सिगरेट की डिब्बी फ्लश में फेंक दी और कमरे में जा लेटे।

विचारों के गर्त से अपने को बाहर खींच पाना—जैसे बहुत ही मुश्किल लगा था, कहीं प्रवीन आई.ए.एस. में आ गया तो ... तो ... ?

१४/५, तिलक मार्ग, नयी दिल्ली

सीपिकाएं

— रमाकांत

जिंदगी- एक

जिंदगी क्या है कि बस इक बर्फ का पहाड़ है
हमसे तो काटी न गयी उनसे पानी हो गयी !

जिंदगी- दो

बहल जाना और बहलाना ही इसका काम है
अस्ल में तो है खिलौना, जिंदगी बस नाम है !

जिंदगी—तीन

कोई नहीं चाहता जीना
जिंदगी को इस तरह !
कोई नहीं चाहता !
मरते हुए जीना !
करने पड़ते हैं
जीने के लिए
कितने-कितने नाटक
मरने के लिए
कुछ नहीं करना होता
बस
परदा गिराना होता है
जो कभी हम
कभी तुम
कभी कोई
कभी कोई
कभी कोई गिरा देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

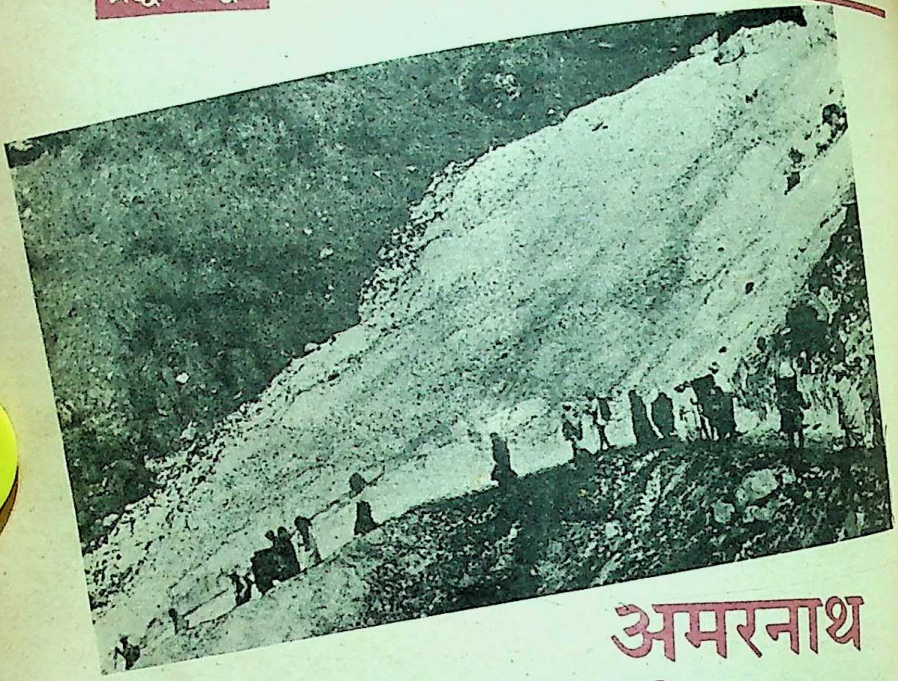

अमरनाथ की राह पर

—उग्रसेन गोस्वामी

हिमालय की सर्पिल कठिन डगर तेरे आंगन में खुली तो सर्द सरसराती हवा ने या कहूं सरपट दौड़ती धुंध ने शरीर में सिहरन पैदा कर दी, पर मन-जैसे पुलकित पल्लवित हो उठा है। समुद्र तल से करीब पंद्रह हजार फुट ऊंची तेरी चौड़ी सपाट छाती ने, आकाश के असीम विस्तार को नये आयाम देने शुरू कर दिये हैं। आसमान जब कभी निरभ्र होता है तो तू हिमालय की आस-पास की अनगिनत चोटियों के बीच एक ऐसे चंदोवे-सा लगता है, जिसकी हर सलवट, हर कोने में-जैसे नये नयानाभिराम रंगों का जमघट हो।

अभी-अभी मेरे पांव में बादल के टुकड़े लिपट गये हैं और मेरे चारों ओर छायी धुंध सिमटकर महागुनस की छाती से सट गयी है। पर अगले ही क्षण धुंध वाचाल हो इस तेजी से सरसराने लगी है कि मुझे अपने कान और चेहरे की रक्षा के लिए बरबस अपना ऊनी कवच तलाशना पड़ रहा है।

यह कैसी वाचाल वीरानी है, यह कैसी गुनगुनाती नीरवता है कि मात्र नंगे पत्थरों और यहां वहां छिटके बर्फ के तोदों के बीच मैं अकेला सांसधारी जीव होकर भी अकेलेपन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां छोटे-बड़े कई प्रपात हैं और कई घुमावदार नाके हैं जहां सीधे चलने की धुन में पानी खड़ी चट्टान पर अपना माथा तो पटकता है किंतु हारकर उसे मुड़ना पड़ता है। ऐसे स्थानों पर उफनती फेनिल फुहारों में चांदनी जाने कैसे-कैसे अनजाने अनचीन्हे रंग भर जाती है कि मानव दृग ठगे-से रह जाते हैं। मानव मन और मानव नेत्र ऐसी दृश्यावली से भले न अघाएं, किंतु मानव शरीर की तो अपनी सीमाएं हैं।

आक्रांत नहीं हूं। ऐसा क्या है, ऐ महागुनस, तेरे इस प्रकृति प्रदत्त क्रीड़ास्थल में कि मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग चाहे ठिठुरने के मारे जमे जा रहे हैं पर मेरा मन अठखेलियां कर रहा है।

पहलगाम यानी बैलगाम

कहानियों में सुना था कि कैसे शिव-पार्वती पहलगाम से चलकर हिमालय की सुंदर और अनूठी उपत्यकाओं को लांघते हुए करीब तेरह हजार फुट ऊंची अमरनाथ की उस हिमाच्छादित गुफा में पहुंचे थे, जहां पार्वती को भोले शंकर ने अमर कथा सुनायी थी। शिव-पार्वती की इस पारंपरिक डगर के विभिन्न पड़ावों के साथ कितनी ही किंवदंतियां जुड़ गयी हैं। किंतु इस मार्ग का सबसे ऊंचा महागुनस खंड जाने कैसे उन सब गाथाओं से अछूता रह गया।

कहते हैं पहलगाम से अमरनाथ की यात्रा शुरू करते हुए शिव ने अपने नंदी का वहीं त्याग कर दिया तथा वहां से उन्होंने पैदल यात्रा शुरू की। इसी किंवदंती को लक्ष्य करते हुए कुछ लोगों का कहना है कि पहलगाम वस्तुतः बैलगाम का बिगड़ा हुआ रूप है।

पहलगाम से कोई सोलह किलोमीटर दूर चंदनवाड़ी लिद्दर नदी की दो धाराओं और चीड़ के सुरम्य वन को अपनी बाहों में समेटे आसपास के पर्वत श्रृंगों से फिसलती वेगवती नन्ही सरिताओं के सुमधुर कलरव से गुंजरित हो रही है। यदि आप हर वर्ष रक्षाबंधन के अवसर

अमरनाथ का शिवलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर होनेवाली परंपरागत अमरनाथ यात्रा के सहयात्री हैं, तो चंदनवाड़ी के सौंदर्य पर आपको तंबुओं के भरे-पूरे शहर, अस्थायी होटल, रेस्त्रां में कुरसियों की बेतरतीब भरमार, स्थान-स्थान पर कार्यरत मुफ़ चायखानों और लंगर से उठते हुए धुंए और अपनी थकान मिटाने के लिए अध-लेटे बतियाते यात्रियों की शक्ल में कई बैढब परते पड़ी दिखाई दे सकती हैं।

त्याग की असमाप्त गाथा

शिव-पार्वती ने जब यहां की यात्रा की होगी तब तो उन्हें ऐसी परतें उघाड़कर यहां का प्राकृतिक सौंदर्य पान करने की आवश्यकता नहीं रही होगी। संभवतः यहां के मनोहारी परिवेश में शिव को अपने भाल पर सुशोभित अर्धचंद्र भी फीका लगा होगा। तभी तो, कहते हैं, उन्होंने अपने अर्धचंद्र का यहां त्याग कर दिया था।

चंदनवाड़ी से आगे बढ़ें तो पिस्सू घाटी की कोई दो हजार फुट ऊंची ऐसी जानलेवा सीधी चढ़ाई आती है कि उस पर हांफ़-हांफकर चढ़ते हुए कई बार ऐसा लगता है कि शिव ने शायद अपने अर्धचंद्र का चंदनवाड़ी में त्याग इसीलिए किया था कि शरीर कुछ तो हलका हो जाए। चंदनवाड़ी से करीब सोलह किलोमीटर और आगे चलने पर साढ़े ग्यारह हजार फुट की ऊंचाई पर शेषनाग का पठार आता है वहां जनश्रुति के अनुसार शिव ने अपने गले से शेषनाग का त्याग कर दिया था। इस पठार के एक ओर करीब पांच सौ फुट नीचे शेषनाग झील की गहरी, हरी और बेहद ठंडी झील का जल विस्तार पा रहा है। इसी झील से एक सरिता निकल कूदती, फांदती नीचे चंदनवाड़ी में दूसरी ओर से आ रही एक अन्य सरिता से गलबहियां डाल लिद्दर का नाम अपनाकर पहलगाम की ओर बढ़ चलती है। शेषनाग की झील को सदानीरा बनाये रखने के लिए झील के पृष्ठ और पार्श्व भागों में अवस्थित पर्वतीय ढलानों पर श्वेत धवल हिमानियों के पुंज सायं के सूर्य की रोशनी में बृहत् झाड़फानूसों-से झिलमिलाते लग रहे हैं।

शेषनाग से करीब तेरह किलोमीटर चलने के बाद पंचतरणी की खुली विस्तृत उपत्यका के दर्शन होते हैं। करीब बारह हजार फुट की ऊंचाई पर इतनी सपाट और समतल उपत्यकाएं हिमालय के ऊबड़-खाबड़ प्रांगण में बहुत कम मिलती है। उपत्यका के बीचों-बीच पंचतरणी नदी का विस्तृत पाट पास दूर की कितनी ही पर्वत श्रृंखलाओं का नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है। किंवदंती कहती है कि शिव अपने मस्तक पर सुशोभित गंगा को यहीं छोड़ केवल अपनी चिरसंगनी पार्वती को साथ ले अमरनाथ की ओर बढ़ गये थे।

वहीं हमें यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि अगली सुबह 'छड़ी मुबारक' के अमरनाथ के लिए प्रस्थान करने के बाद ही अन्य यात्रियों को आगे बढ़ने दिया जाएगा। हर वर्ष रक्षा बंधन के अवसर पर होनेवाली अमरनाथ की यात्रा का शुरू से यही विधान चला आ रहा है कि हर पड़ाव के, संबंधित महंत पहले 'छड़ी मुबारक' को लेकर प्रस्थान करेंगे और बाद में सभी यात्री उनका अनुगमन करेंगे। यों तो 'छड़ी मुबारक' की यात्रा जम्मू-कश्मीर राज्य की राजधानी श्रीनगर से शुरू होती है, किंतु पहलगाम के बाद हर पड़ाव से यात्रा का आरंभ 'छड़ी मुबारक' के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्व में करने की परंपरा का काफी कड़ाई से पालन किया जाता है। पूरी यात्रा की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि पहलगाम के बाद चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी के तीनों पड़ावों पर एक-एक रात विश्राम करने के बाद 'छड़ी मुबारक' रक्षा बंधन की प्रभात वेला तक अमरनाथ की गुफा में पहुंच जाए।

अतीत की जोखिमभरी यात्रा

आज तो यात्रा की व्यवस्था बड़े विस्तृत ढंग पर की जाती है, जिससे यात्रा के पूरे रास्ते पर सभी आवश्यक सुविधाएं प्रायः उपलब्ध रहती हैं। पुराने जमाने में तो निश्चित रूप से आज की अपेक्षा यह यात्रा कहीं अधिक कठिन और खतरनाक रहती होगी। यदि तब इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि समूची यात्रा एकजुट होकर 'छड़ी मुबारक' का अनुसरण करे, तो वह आवश्यक भी था और वांछनीय भी, क्योंकि तब किसी यात्री के कष्ट में पड़ जाने पर केवल उसके सहयात्री ही मदद हेतु आ सकते थे और ऐसा करना तब और भी जरूरी था, क्योंकि उन दिनों यात्रियों की संख्या बहुत कम होती थी।

इसलिए अधिक अच्छा यही होगा कि यात्रा-परंपरा में कुछ ढील दी जाए और यदि कुछ यात्री 'छड़ी मुबारक' के प्रस्थान से पहले अमरनाथ की ओर कूच करना चाहते हैं तो उनके मार्ग में अनावश्यक रुकावट न पैदा की जाए। इससे अमरनाथ की संकरी उपत्यका में रक्षा बंधन के दिन जमा होनेवाली भारी भीड़ को भी संतुलित किया जा सकता है।

अप्रतिम प्राकृतिक तराश

अमरनाथ के यात्रा-मार्ग के शेषनाग और

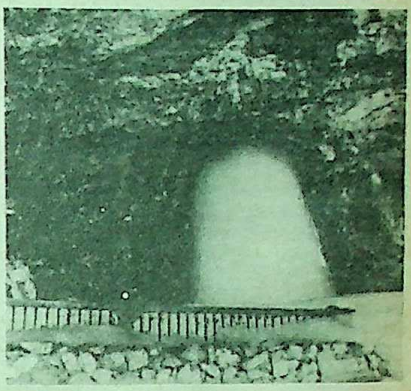

पंचतरणी दो ऐसे पड़ाव हैं, जहां यात्री को रुककर अपने आसपास बिखरी प्राकृतिक सुषमा का भरपूर आनंद उठाना चाहिए। हिम धवल चोटियों की छाया में पसरी पड़ी करीब तीन किलोमीटर लंबी और एक-डेढ़ किलोमीटर चौड़ी पंचतरणी की उपत्यका में श्रावणी पूर्णिमा के इस अवसर पर हिमालय के कई तेवर देखे जा सकते हैं— भिन्न रंग रूप के पहाड़ और युगों-युगों की प्राकृतिक तराश के बावजूद वजूद में आयी अलग-अलग आकार की चट्टानें और चट्टानी ढलानों पर सटे अलग-अलग रंग के हिम-तोंदे जो अभी तक पिघल नहीं पाये। हिमपात के दिनों में चट्टानें भी भरभराकर टूटती हैं और जिस रंग की चट्टान पर हिमपात होता है उसी रंग का मलबा ताजा पड़ी बर्फ के साथ मिल जाता है और बाद में जब हिम जमकर छोटे-मोटे ग्लेशियर का रूप लेती है तो मातृ-चट्टान उसे अपने रंग में रंग देती है। पंचतरणी के प्रांगण में इन दिनों काली, भूरी और चटख लाल बर्फ के बचे खुचे तोंदे प्रायः देखने को मिल जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचतरणी का पाट इतना चौड़ा है कि गरमी के शुरू के दिनों में जब इस क्षेत्र में जमा ढेरों बर्फ पिघलकर बहती होगी तो यहां एक भरा पूरा नद लहराता होगा। पंचतरणी (पंचतरपिणी) अब की बार चाहे पांच के स्थान पर तीन प्रवाहों में बह रही हो किंतु हर प्रवाह में भरपूर यौवन की तेजी होती है। पानी इतना ठंडा है कि भरी दोपहरी में भी दो चार मिनट ही खुलकर नहाया जा सकता है।

पंचतरणी से एक बार फिर हमें दमसोखू चढ़ाई चढ़कर अमरनाथ की ओर अग्रसर होना पड़ता है। अमरनाथ की गुफा जिस उपत्यका में अवस्थित है उसके तल में भी जलधारा बहती है जो अमरावती के नाम से जानी जाती है। करीब आधा पौन किलोमीटर तक तो अभी भी यह नदी ग्लेशियर से ढकी हुई है और यात्रियों के ठठ के ठठ नदी के इस हिमानी कवच को रौंदते चले जा रहे हैं। गुफा से कुछ पहले नदी तो ग्लेशियर का चोला उतार खुले में दर्शन देती है किंतु गुफा की ओर उठती ढलान पर जमा भीड़ को देख यह स्पष्ट हो जाता है कि 'हिम शिवलिंग' के दर्शन हम इतनी आसानी से नहीं कर पाएंगे।

भय और आनंद की अनुभूति

श्रद्धा विहीन प्रकृति प्रेमी के लिए गुफा में भले ही कोई विशेष आकर्षण न हो किंतु गुफा के बाहर बिखरी प्राकृतिक सुषमा से भला कौन आनंदित नहीं होता होगा। श्रद्धा का संबल जुटा युग-युगों से भीतरी हिमालय की संकरी राहों पर चलनेवाले यात्री यदि प्रकृति के भयावह तेवर झेलते चले आ रहे हैं तो उसकी लुभावनी भावभंगिमाओं से भी आनंद विभोर होते चले आ रहे हैं। वस्तुतः पर्वतारोहण के साहसिक सुख और पुण्य प्राप्ति के सुलभ अवसर के घालमेल के कारण ऐसे दुरूह कठिन पथ की यात्राओं की उपयोगिता कभी खत्म नहीं होगी।

यद्यपि रात को इस पथ पर यात्रा की सलाह तो कोई नहीं देगा, किंतु किसी कारणवश हमें रात को भी इस राह पर चलना पड़ा। पूर्णिमा की छिटकी चांदनी में आकाश के झिलमिलाते चंदोवे को सहारा देते-से उत्तुंग पर्वत शिखर और उन पर चमचमाते हिमखंड जाने कौन-से मायावी लोक में ले जाते हैं राही को। वापसी पर शेषनाग पहुंचते-पहुंचते रात काफी घिर आयी थी, किंतु हम रात को ही चंदनवाड़ी पहुंचना चाहते थे, ताकि दूसरी सुबह वहां से टैक्सी लेकर पहलगाम पहुंच सकें। शेषनाग के बाद काफी दूर तक यात्री का रास्ता शेषनाग झील से निकली तीव्रगामी सरिता के साथ ही चलता है। यहां छोटे-बड़े कई प्रपात हैं और कई घुमावदार नाके हैं जहां सीधे चलने की धुन में पानी खड़ी चट्टान पर अपना माथा तो पटकता है, किंतु हारकर उसे मुड़ना पड़ता है। ऐसे स्थानों पर उफनती फेनिल फुहारों में चांदनी जाने कैसे-कैसे अनजाने अनचीन्हे रंग भर जाती है कि मानव दृग ठगे-से रह जाते हैं। मानव मन और मानव नेत्र ऐसी दृश्यावली से भले न अघाएं, किंतु मानव शरीर की तो अपनी सीमाएं हैं। रात को दो बजे जब हम चंदनवाड़ी पहुंचे तो बेहोशी की ऐसी नींद में सोये कि दोपहर को ही आंख खुल पायी और सुबह सवेरे अमरनाथ पहुंच जाने की हमारी योजना धरी की धरी रह गयी।

१६८/१४ सी, ४ सी, जनकपुरी नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **एक** धावक एक रफ़्तार से कुछ दूर दौड़ने में कुछ समय लेता है। उसे दुगुनी रफ़्तार से दुगुना फासला दौड़ने में कितना समय लगेगा ?

२. **मानवतावाद** में महत्त्वपूर्ण अंशदान के लिए प्रथम 'अंतर्राष्ट्रीय घनश्यामदास बिरला पुरस्कार' किसे प्रदान किया गया है ?

३. क. **प्रथम** भारतीय दूर संवेदी उपग्रह किस नाम से, कब और कहां से छोड़ा गया ?

ख. ऐसे उपग्रह अन्य किन देशों ने छोड़े हैं ?

४. **भूमि**-से-भूमि पर दूरी की मार करनेवाले जिस प्रक्षेपास्त्र का निर्माण भारत ने किया है, उसका क्या नाम है ? उसका सफल परीक्षण कहां और कब किया गया ?

५. **भारत** की पहली परमाणु-शक्ति-चालित पनडुब्बी का क्या नाम है ? वह भारतीय नौसेना में कब शामिल हुई ?

ख. उसे कहां से प्राप्त किया गया ?

२. **दुनिया** की सबसे लंबी भूगर्भीय गैस-पाइपलाइन कौन-सी है ? उसका कौन-सा चरण हाल में पूरा हुआ ?

७. क. **देश** में इस समय सड़कों की कुल लंबाई कितनी है ? इनमें राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई कितनी है ?

ख. सीमा सड़क संगठन द्वारा निर्मित किस मार्ग की दुनिया के सबसे ऊंचे मार्गों में गिनती है ?

८. **द्वितीय** महायुद्ध के बाद यूरोप के किस देश में अब तक सबसे अधिक संयुक्त मंत्रिमंडल बने हैं ?

९. क. **महात्मा** गांधी की सुप्रसिद्ध दांडी-यात्रा कब हुई थी ?

ख. उसका उद्देश्य क्या था ?

१०. **दुनिया** में चीनी का सबसे अधिक उत्पादन कहां तथा किस वर्ष हुआ है ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधान

प्रकाशन की अनुमति

मथुरा सिंह, कलकत्ता : मैं बंगला से हिंदी का एक अनुभवी अनुवादक हूं। बंगला से किसी कहानी का हिंदी में अनुवाद कर किसी पत्रिका में प्रकाशन हेतु मुझे क्या करना चाहिए ? क्या लेखक की अनुमति अनिवार्य है ? लेखक यदि अनुमति न दें तो क्या करना चाहिए ? कृपया परामर्श दें।

किसी भी कृति को प्रकाशित करने के लिए लेखक से अनुमति लेना आवश्यक है। यह अधिकार यदि प्रकाशक ने ले रखे हों, तो उसकी अनुमति प्रकाशक से लेनी चाहिए। कृति का अनुवाद प्रकाशित करने के लिए भी यही नियम लागू होते हैं। लेखक या अधिकार-प्राप्त प्रकाशक की अनुमति के बगैर प्रकाशन करना उचित नहीं है। यदि लेखक अनुमति नहीं दे, तो उसका अनुवाद प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए।

तलाक

एस.एल. सिंह, बिलासपुर : मैं एक सुशिक्षित पचीस वर्षीय शादीशुदा युवक हूं। मेरी शादी एक साधारण पढ़ी-लिखी लड़के से हिंदू धर्म के विधानानुसार बिलासपुर में संपन्न हुई थी। मेरी बहन का विवाह भी (गौना नहीं) मेरी पत्नी के भाई के साथ हुआ है।

मेरे यहां मेरी पत्नी सुखपूर्वक रह रही है तथा घर के प्रत्येक सदस्यों का व्यवहार सद्भाव एवं प्रेमपूर्वक है। परंतु उसे उसके माता-पिता द्वारा यह सिखा दिया गया है, कि "तुम ससुरालवालों से किसी भी तरह झुकी मत रहना। अगर किसी भी प्रकार वह तुम्हें तंग करेंगे तो उसकी बहन (लड़की) को भी हम तंग करेंगे।" इसी बात को ध्यान में रखते हुए मेरी पत्नी घर का कोई काम नहीं करती। किसी का कहना नहीं मानती। घर के सदस्यों के कुछ भी कहने पर झगड़ती है। उसके व्यवहार से रुष्ट होकर मैंने एक बार उसे डांटा। इस पर उसने जहरीली दवा खा ली थी तथा एक बार कुएं में कूद गयी थी। इसी प्रकार आत्महत्या की कई कोशिशें करती है। इसी महीने उसके पिताजी हमारे यहां आये और घर के सदस्यों से बिना पूछे उसे अपने पास ले गये। उसके व्यवहार से हम सभी रुष्ट हैं। वह मेरे पास रहना चाहती है, परंतु मैं उससे संबंध विच्छेद करना चाहता हूं तथा अपनी बहन को उसके यहां नहीं भेजना चाहता।

क्या मैं उसको बिना किसी कानूनी व्यवधान के तलाक दे सकता हूं।

आप अपनी पत्नी को तलाक देना चाहते हैं। कानूनी व्यवधान से आपका क्या आशय है स्पष्ट नहीं होता। जहरीली दवाई खाना, कुएं में कूदना या आत्महत्या का प्रयास करना निश्चित रूप से पारिवारिक जीवन दूभर बनाता है तथा मानसिक परेशानी का कारण बन सकता है। इस कार्य को आपके प्रति क्रूरता भी माना जा सकता है। आप संबंध-विच्छेद हेतु याचिका न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि आप न्यायालय को यह विश्वास दिला सकें कि पत्नी के आत्महत्या के प्रयासों का कारण आप या आपके द्वारा किया गया कोई कार्य नहीं है तो न्यायालय से मदद मिल सकती है। जहां तक आपकी बहन का संबंध है, उसमें मुझे ऐसा कोई कारण नहीं दीखता जिस आधार पर उनका वैवाहिक संबंध विच्छेद हो सके। यदि उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुरालवाले चाहें तो उन्हें अपने पास बुलाने का आग्रह कर सकते हैं। उसके बाद भी यदि आपकी बहन ससुराल नहीं जाना चाहें तो उन्हें बाध्य नहीं किया जा सकता।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

नियुक्ति नहीं दी

राजकुमार श्रीवास्तव, शाजापुर : देवास शाजापुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक में सहखजांची पद के लिए सन् १९८३ में आयोजित लिखित परीक्षा में मैंने सफलता प्राप्त की, मौखिक साक्षात्कार में एक अधिकारी ने पांच हजार रुपए रिश्वत मांगी, मेरे मना करने के परिणामस्वरूप मुझे अयोग्य करार दिया गया। बैंक के सन् १९८४ के विज्ञापन अनुसार मैंने फिर लिखित परीक्षा दी व मौखिक दोनों में सफलता प्राप्त की। बैंक ने लिखा कि आप का चयन सूची की प्राविण्य सूची में पचपनवां स्थान है। आपका क्रम आने व पद रिक्त होने पर अगली सूचना बैंक द्वारा प्रेषित की जाएगी। बैंक ने बगैर सूचना दिये सन् १९८७ में फिर विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन मांगे। मैंने जब बैंक को व उच्चाधिकारियों को स्थिति से अवगत कराया तो जवाब मिला— "बैंक ने ५६ आवेदकों की सूची में से २३ की नियुक्ति की है व पद रिक्त नहीं होने के कारण वह सूची निरस्त कर दी है।" जब पद रिक्त हैं तभी तो सन् ८७ में रिक्त पदों का विज्ञापन प्रकाशित किया गया है फिर सन्' ८५ वाली सूची बैंक ने कैसे निरस्त कर दी क्या बैंक ऐसा कर सकती है ?

नौकरी के लिए चयन करते समय उम्मीदवारों की सूची बना लेना, उनमें से कुछ को सीधे सेवा में लेना तथा कुछ की प्रतीक्षा सूची बना लेना साधारणतया होता ही है। यह प्रतीक्षा सूची भी एक अंतराल के बाद नियमानुसार समाप्त हो जाती है और उस अवधि में सेवा में न आ सकनेवाले व्यक्ति कोई अधिकार नहीं प्राप्त करते। इसलिए सन्' ८५ वाली सूची सन्' ८७ में निरस्त होने को आधार बनाकर कार्यवाही करने का कोई औचित्य नहीं है। वैसे भी केवल पचीस व्यक्तियों की नियुक्ति हुई है और आपका सूची में पचपनवां स्थान है। अतः अगर सूची बनी रहती तो भी आपका वरीयता क्रम में अभी भी तीसवां स्थान था। यह ठीक है कि अगर बैंक में स्थान खाली हों, प्रतीक्षा सूची का निर्धारित समय शेष हो तथा बैंक गलत आधार पर आपके अधिकार को स्वीकार नहीं कर रहा हो तो उच्च न्यायालय में समादेश याचिका के द्वारा आवश्यक निर्देश देने की प्रार्थना की जा सकती थी।

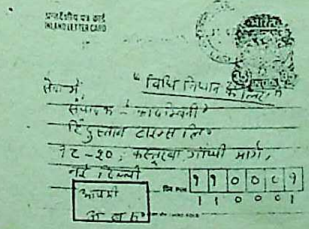

यह पत्र लश्कर, ग्वालियर से एक महिला ने अ. ब. स. नाम से हमें भेजा है और 'व्यापार' के संबंध में जानकारी चाही है। सार्वजनिक रूप से कादंबिनी जैसी पत्रिका में ऐसे पत्र लेखिका अपने पूरे पते से हमें लिखें तो उनकी समस्या का समाधान किया जा सकता है। सं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस एकांत द्वीप में पहुंचने का रोमांच अपने आप में एक कीमती अनुभव है। भूरी रेत के बीच घिरा यह द्वीप आंसू की एक बूंद की तरह चमकता है। नारियल वृक्षों की सघनता गर्म से गर्म मौसम में इसे एक रेशमी ठंडक की खुनक प्रदान करती है। बंगारम के बीचोबीच बहती झील और इस झील के दर्पण में झांकते नारियल के वृक्ष बड़े ही मनमोहक लगते हैं।

समंदर की लहरों पर तैरने के मजे

—डा. ट्यूट्रॉन

हिंद महासागर के तट पर कई छोटे-छोटे टापुओं से घिरा हुआ अत्यंत सुंदर द्वीप समुदाय है— लक्षद्वीप। यहां जाने के लिए पहले एक मात्र साधन— पानी के जहाज द्वारा कोचीन से ही संभव था। मगर अब इस जलयान सेवा के अतिरिक्त हेलीकॉप्टर तथा

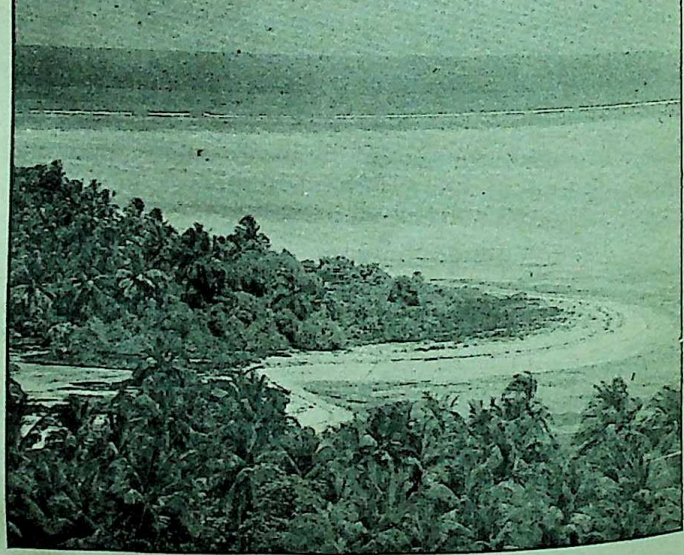

पिनीकॉय द्वीप का काव्यमय सौंदर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोचीन से अगाथी तक वायुयान सेवा भी शुरु हो गयी है। अगाथी से अन्य द्वीपों में जाने के लिए मोटर बोट्स तथा छोटे किस्म के जहाज अगाथी और लक्ष्यद्वीप की राजधानी 'कवरती' के बीच चलते हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए आजकल आवास गृहों का निर्माण भी तेजी से किया जा रहा है। संभवतः वर्ष के भीतर ही पर्यटक बहुत आसानी से समंदर की लहरों पर तैरते इन द्वीपों के सौंदर्य का आनंद लेने लगेंगे।

लक्षद्वीप के नीले द्वीप समूह

शायद लक्षद्वीप के सौंदर्य में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य है तो यही कि इस द्वीप तक पर्यटकों के काफिले बहुत कम पहुंचे हैं और यहां तक पहुंचने का ताजगीभरा 'सैलानी एहसास' उन्हें एक खुशफहमी प्रदान करता है, नारियल और पपीते से सजे इस हरेभरे सपनीले सौंदर्य को देखकर। भूरी रेत की सीमा रेखाओं में बंधे तैरते हुए टापू, सागर के अनंत फैलाव से बतियाते हुए निरंतर आमंत्रण देते रहते हैं— सैलानियों को।

लक्षद्वीप की भौगोलिक स्थिति

लक्षद्वीप भारत का केंद्र प्रशासित क्षेत्र है जो कि अरब महासागर में स्थित है। केरल से यह उत्तर की ओर ७१ डिग्री अक्षांश पर तथा ७४ डिग्री देशांतर पर स्थित है। यह देश का सबसे छोटा तथा मूंगा और प्रवाल का एक मात्र द्वीप समूह है। यह द्वीप समूह छोटे-छोटे ३६ टापूओं से मिलकर बना हुआ है, जिसका कुल क्षेत्रफल ३२ वर्ग किलोमीटर है। इनमें से दस द्वीपों पर सघन आबादी है और इन दस द्वीपों में से चार द्वीप भारतीय पर्यटकों के लिए पूरी तरह खुले हुए हैं। एक मात्र निर्जन द्वीप बंगारम भारतीय

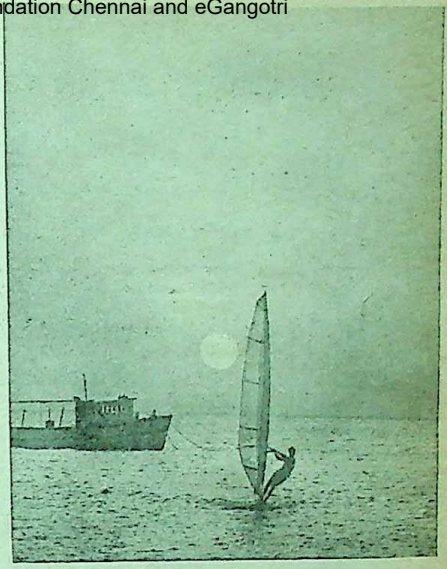

लक्षद्वीप में नौका विहार

तथा विदेशी पर्यटकों के लिए समान रुप से खुला हुआ है। इन चारों द्वीपों की जन संख्या तथा क्षेत्रफल इस प्रकार है—

द्वीप	जनसंख्या	क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)
कवरती	६६०४	३.६
कलपेनी	३५४३	२.३
कडमत	३११४	३.१
मिनीकॉय	६६५८	४.४

लक्षद्वीप के प्रायः सभी द्वीप उत्तर-दक्षिण दिशा में, अनियमित आकार में लंबवत फैले हुए हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन द्वीपों का निर्माण प्रवालीय-सक्रियता के फलस्वरूप हुआ है। ये शैवाल स्वच्छ तथा २३° से. से ३३° से. तापक्रम के बीच जीवित रहते हैं और ये प्रचुर संस्था में इन द्वीपों में पाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

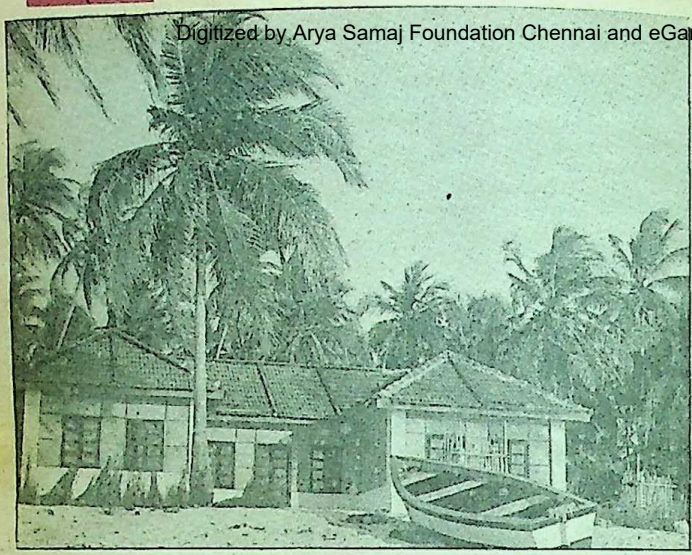

पर्यटक कुटीर

जाते हैं। इन्हीं के कारण समुद्र में शैवाल चट्टानों का निर्माण होता है। सुंदर और नयनाभिराम मछलियां इन्हीं शैवालों पर पूरी तरह निर्भर रहती हैं।

संवाद की भाषाएं

लक्षद्वीप में रहनेवाले लोग अधिकांश मुसलमान हैं। कुछ मलयालम (मलयाली) भाषी भी हैं। हिंदी लक्षद्वीप में अच्छी तरह समझी जाती है। मिनीकॉय के रहनेवाले 'महल' भाषा का उपयोग करते हैं। इस भाषा की विशेषता यह है कि यह दिवेही लिपि में सीधे हाथ से उल्टे हाथ की तरफ लिखी जाती है, उर्दू की तरह। द्वीपवासियों का मुख्यधर्म इस्लाम है सुन्नी मुसलमान यहां सबसे ज्यादा हैं। पर्यटकों को अंग्रेजी बोलने वाले गाइड भी बड़ी आसानी से यहां मिल जाते हैं।

लक्षद्वीप कैसे पहुंचे ?

लक्षद्वीप जाने के लिए अब जलयान एवं वायुदूत दोनों की सेवाएं पर्यटकों को उपलब्ध हैं। अब कोचीन से अगाथी द्वीप तक सप्ताह में दो बार (बुधवार तथा रविवार) आप वायुदूत सेवा द्वारा मात्र ३५० रु. में जा सकते हैं। समुद्री रास्ते से जाने के लिए 'भारत सीमा' तथा 'अमिनदिवी' जहाज प्रतिदिन कोचीन से लक्षद्वीप के लिए रवाना होते हैं। वहां जाने के लिए प्रायः तीन प्रकार के 'पेकेज टूर' आयोजित किये जाते हैं।

पैकेज (१)— कोचीन— कवरती, तीन दिन— कोचीन

पैकेज (२१) कोचीन— कडमत (सात दिन) तथा कलपेनी, कवरती मिनीकॉय —द्वीप, जैसा जलयान यात्रा का पहले से पूर्व घोषित कार्यक्रम हो। प्रवास तथा पुनः कोचीन की वापसी

पैकेज (३)— कोचीन— बंगारम (६ दिन) कवरती- कलपेनी या मिनीकॉय— कोचीन

यहां यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि जो यात्री 'पैकेज टूर' कार्यक्रम के अंतर्गत इन द्वीपों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यात्रा नहीं कर रहे हैं, उन्हें पूर्व अनुमति लेना जरूरी है और इस अनुमति के लिए उन्हें इस पते पर संपर्क करना होगा—

डैपेजर, एस. पी. ओ. आर. टी. एस. लक्षद्वीप कार्यालय, हार्बर रोड, विलिंगडन आइस लैंड कोचीन

अथवा इस पते पर आप संपर्क कर सकते हैं—

लाइजन ऑफीसर
लक्षद्वीप
२०२ कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

दूरभाष : (६९७५५ या ६३७४ या ६३११)

पर्यटकों को विशेष सुझाव

आप मन में यात्रा का अदम्य उत्साह लिए इन खूबसूरत द्वीपों की यात्रा पर चल पड़े हैं और फिर अपने सपनों के इन रेशमी, नीले, नयनाभिराम द्वीपों पर जब आप अपने आप को पाते हैं तो आपका मन बरबस ही कह उठेगा कि क्यों न इस खूबसूरती को अपनी जेब में रखकर घर ले चलूं। मगर जनाब !! नहीं !! ऐसा न करें। अगर आपने यादगार के लिए भी समुद्र किनारे बिखरे इस अप्रतिम सौंदर्य एवं वैभव को घर ले जाने की कोशिश की तो आप झंझट में पड़ सकते हैं। समुद्र किनारे बिखरे एक भी शंख को उठाने पर आप पर काफी जुर्माना किया जा सकता है। खाने के लिए आपको यहां केरल शैली के ढाबों पर ही निर्भर रहना होगा। यहां की दुकानों पर सब कुछ वही मिलता है जो कोचीन से लादकर जहाजों द्वारा लाया जाता है इसलिए हो सकता है आप को आपकी मन पसंद चीजें,— पत्रिकाएं, सिगरेट, बिस्किट आदि न भी मिल सकें अच्छा हो ऐसी जरूरी चीजें (खासकर शाकाहारी सैलानी) अपने साथ ही लेकर चलें।

पर्यटक कुटीर

रहने और ठहरने के लिए आपको 'टूरिस्ट हट' के अलावा संभवतः और कोई उचित स्थान न ही मिल सके क्योंकि होटल, स्नैकबार, आदि आपको वहां नहीं मिलेंगे। प्रत्येक द्वीप पर केवल एक-एक 'टूरिस्ट कांप्लेक्स' है जिसमें बार (स्नैक बार) तथा होटल है मगर प्रायः इनमें जगह मिलना मुश्किल ही होता है अतः आम यात्रियों के लिए पर्यटक कुटीर 'टूरिस्ट हट्स' हीं, उपलब्ध होती हैं। इन कुटियों में एक या दो शयन कक्ष होते हैं। प्रत्येक में दो बिस्तर, मच्छरदानी, छत का पंखा तथा सौंदर्य प्रसाधन कक्ष होते हैं। लहरों के किनारे बसीं ये 'पर्यटक-कुटियाएं' सहज ही सैलानियों का मन मोह लेती हैं।

दूरभाष की सुविधा यहां बहुत ही बढ़िया है। एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक रेडियो के माध्यम से दूरभाष किये जाते हैं। बेतार व्यवस्था के दूरभाषों द्वारा। भारत के किसी भी बड़े शहर से आप एस. टी. डी. के माध्यम से जरूरत पड़ने पर बात कर सकते हैं।

संस्कृति एवं इतिहास

लक्षद्वीप के प्राचीनतम अतीत का अध्ययन करने पर यह मालुम हुआ है कि सातवीं शताब्दी से पूर्व यह एक हिंदू-बाहुल द्वीप था मगर सातवीं शताब्दी आते तक यहां के निवासी प्रसिद्ध मुस्लिम फकीर उबैदुल्लाह के प्रभाव से इतने ज्यादा प्रभावित हुए कि लगभग सभी निवासियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। कहा जाता है कि उबैदुल्लाह मक्का के रहनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे तथा उन्हें स्वप्न में इस्लाम धर्म के मसीहा हजरत मुहम्मद ने आदेश दिया था कि वे धर्म का प्रचार करने निकल पड़ें। उनके आदेश का पालन करते हुए उबैदुल्लाह निकल पड़े। वे जिस जहाज में सवार थे, समुद्री तूफान में वह टूट गया। किसी तरह लकड़ी के गट्ठे के सहारे तैरते हुए वह इस द्वीप के किनारे लगे। और फिर यहीं रहकर आजन्म वे अपने धर्म का प्रचार करते रहे। तमाम बाधाओं और अवरोधों के बावजूद वे अपने कार्य में लगे रहे। फलस्वरूप सभी लोगों ने उन्हें अपना गुरु मान उनके धर्म को स्वीकार लिया। कहते हैं कि हजरत उबैदुल्लाह के आगमन से पूर्व यहां गुलामी लोग भी रहा करते थे।

यहां के निवासी सीधे, सरल तथा सौम्य होते हैं। अपराध लगभग न के बराबर हैं। समारोह और उत्सवों में महिलाएं तथा पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते हैं। सोने तथा चांदी दोनों के ही आभूषणों का यहां प्रचलन है।

लक्षद्वीप पर्यावरण एवं संस्कृति के संदर्भ में भारत का एक नया पर्यटन-तीर्थ है। प्रशासन ने कमियों को दूर करने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास शुरु कर दिये हैं ताकि सैलानियों को वह सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं ताकि बिना किसी अभाव मजे ले सकें।

हंसिकाएं

पर्यटन पर कुछ व्यंग्य

पर्याय

मन पर्यटक है यहां वहां भटकता है
इसे भी सर्वदा गाइड की आवश्यकता है।

निवेदन

जहां नारी की पूजा होती है
वहां देवता वास करते हैं...
ऐसे स्थानों की सूचना दें
ताकि देवस्थान पर्यटन स्थल बन सकें

संभावनाएं

उनकी सरला पत्नी ने शान से कहा
इन्होंने तो देश-विदेश में भ्रमण किया
और जब तक 'टूरिज़्म' विभाग में रहेंगे
स्वयं भ्रमित हैं औरों को भी
भ्रमित करेंगे।

देखभाल

गुफाओं में देवताओं की मूर्तियों पर
ढेरों धूल देखकर वे चिंहुके
देवताओं की भी आप देखभाल न कर सके?

बारूद

बारूद बिछाकर यदि विस्फोट कर सकें
रास्ते निकल आएंगे!
जीना पहाड़ है/ पहाड़ कट जाएंगे।

दिशा

विवाहिता ने यातायात अधिकारी को
सिंदूरी बेंदी का महत्त्व बताया
चौराहों पर खड़े व्यक्ति को
यही स्टाप का संकेत नजर आया।

डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

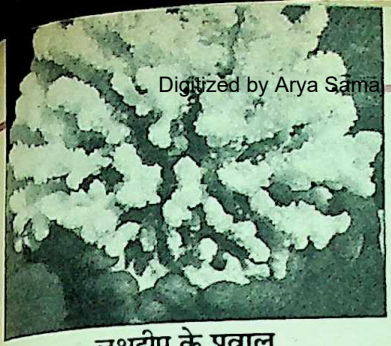

लक्षद्वीप के प्रवाल

अवकाश भरे तैरते द्वीप

कवरती :

कवरती लक्षद्वीप की राजधानी है। सैलानियों का स्वर्ग है, यह द्वीप। इस द्वीप में लगभग बावन मस्जिदें हैं। उजरा मस्जिद इन सारी मस्जिदों में सबसे ज्यादा खूबसूरत है। एक जनश्रुति है कि इसमें बहता पानी चमत्कारी है और अनेक रोगों से मुक्ति दिलाने का 'चिकित्सीय- चमत्कार इस धारा में छुपा हुआ है। यहां का मत्स्य केंद्र भी पर्यटकों के आकर्षण का एक बहुत बड़ा केंद्र है।

कलपेनी :

यह द्वीप झरनों की इंद्रधनुषी सुंदरता से चारों तरफ से घिरा हुआ है। रंग-बिरंगी मछलियों के इस तैरते खजाने पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो इस द्वीप का सौंदर्य कुछ और अधिक ही खिल उठता है। फित्ती तथा तिलाकम इसके सहद्वीप हैं। कांच की पैंदीवाली नाव में सवार होकर समुद्र में तैरती रंग-बिरंगी मछलियां ऐसी लगती है, मानो चित्रकार ने अपनी तूलिका से अनेक रंग बिखेर दिये हों।

कडमत :

विशिष्ट सौंदर्य का धनी द्वीप-कदमत। असीम गहराई और अनंत विस्तार का एक अविराम सिलसिला। तैराकियों का उत्सव केंद्र। अकेलेपन और तनहाइयों का स्वर्ग। 'पर्यटक-कुटीर' इसी एकांत के आंचल में टंकी हुई हैं। समुद्री लहरों का संगीत अनवरत सन्नाटे में बज-बजकर वातावरण को संगीतमय करता रहता है।

मिनीकॉय :

आज से सौ वर्ष पूर्व अंगरेजों द्वारा बनाये गये, संवारे गये इस द्वीप का सौंदर्य कुछ मामलों में अन्य द्वीपों के सौंदर्य से भिन्न है। यहां एक सुंदर लाइट-हाउस' बना हुआ है। पर्यटक इसकी ऊपरी मंजिल तक जा सकते हैं। यहां के झरनों का सौंदर्य शब्दों में व्यक्त ही नहीं किया जा सकता। वह तो अनुभूतियों का विषय है। एक खुशनुमा एहसास की तरह। नारियल की हरी वृक्षावली सबसे सघन इसी द्वीप में है।

संस्कृति एवं वेशभूषा में यह अन्य द्वीपों से भिन्न है। दस गांवों के एक समूह का प्रधान 'मूपन' कहलाता है। उसका सभी सम्मान करते हैं।

बंगारम :

इस एकांत द्वीप में पहुंचने का रोमांच अपने आप में एक कीमती अनुभव है। भूरी रेत के बीच घिरा यह द्वीप आंसू की एक बूंद की तरह चमकता है। नारियल वृक्षों की सघनता गर्म से गर्म मौसम में इसे एक रेशमी ठंडक की खुनक प्रदान करती है। बंगारम के बीचोबीच बहती झील और इस झील के दर्पण में झांकते नारियल के वृक्ष बड़े ही मनमोहक लगते हैं। झील का नीलापन ऐसा लगता है मानो धरती ने नीलम जड़ी अंगूठी पहन ली हो। गोधूलि वेला में जब शाम इस द्वीप में उतरती हैं तो लहरें पिघले सोने-सी चमक उठती हैं और नारियल के पेड़ों के सुरमई अंधेरों में लुकाछिपी करता सूरज उछलकूद करता अपने घर चला जाता है। इसके सौंदर्य का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक बार भी जो पर्यटक यहां आ गया, वह दुबारा यहां आने की लालसा मन में लेकर ही जाता है। इस द्वीप से फिर मिलने का एक भावुक वादा कर के।

प्रस्तुति : मधु मिश्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो विश्व शक्तियों का समवेत प्रयास

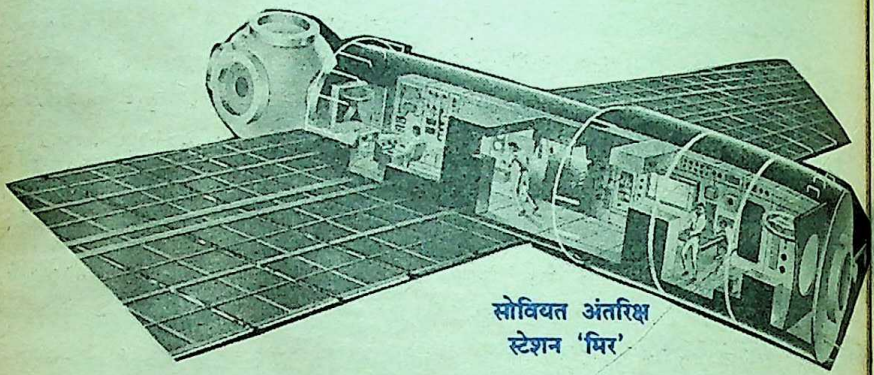

सोवियत अंतरिक्ष स्टेशन 'मिर'

ग्रहों में मनुष्य बसाये जाएंगे !

— भगवती प्रसाद डोभाल

अंतरिक्ष में ग्रहों के अध्ययन से हम शीघ्र आश्वस्त होना चाहते हैं कि मनुष्य के रहने के अनुकूल वहां कोई वातावरण है, यदि नहीं है तो वहां के आवश्यक जैविक तत्वों को कैसे प्राणियों के रहने के योग्य बनाया जा सकता है। यह कार्य आसान नहीं है। इसके लिए विभिन्न प्रयोगों की आवश्यकता है। अब तक अंतरिक्ष प्रयोगों में विश्व की दो महाशक्तियां अलग-अलग कार्य कर रही थीं, लेकिन मंगल ग्रह की यात्रा ने सोवियत रूस और अमरीका को एक ऐसी संधि के लिए बाध्य कर दिया है, जिसमें संयुक्त रूप से मंगल-ग्रह का अध्ययन किया जा सकेगा।

दोनों महाशक्तियों ने निर्णय लिया है कि २०वीं सदी के अंत तक मंगल ग्रह की मिट्टी पृथ्वी पर लाने का प्रयास और २१वीं सदी में पृथ्वी से मंगल ग्रह तक मनुष्य के विभिन्न अभियानों का संयोजन। मास्को में सोवियत रूस और अमरीका के प्रतिनिधियों ने करार पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका ने मंगल ग्रह के बाह्य भाग का अच्छी तरह से अध्ययन किया है और उनके पास मंगल के विस्तृत फोटोग्राफ हैं। दूसरी तरफ सोवियत संघ के पास सतह पर उतरनेवाले पर्याप्त लैंडिंग माडयूल हैं। और तकनीकी दृष्टि से अंतरिक्ष में अपने स्टेशन बनाने में सक्षम हैं।

हस्ताक्षर किये।

अब तक के अध्ययनों से पता चलता है कि मंगल एक लाल रंग का ग्रह है। अमरीका के 'मैरिनर' और 'वाइकिंग' मिशन इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि मंगल की सतह पर्वतों और गहरे प्रपातों से बनी है। प्राचीन काल में आयी बाढ़ों के निशान भी मिलते हैं। इतना तो निश्चित हो गया है कि सौर परिवार के इस मंगल ग्रह में पृथ्वी के बाद जीवन चल सकता है। अमरीका ने वाइकिंग यान सन १९७६ में मंगल ग्रह के अध्ययन के लिए छोड़ा था। उसने छह वर्ष तक मंगल की सारी गतिविधियां प्रेषित की। लेकिन आनेवाले समय में जो योजनाएं रूस और अमरीका बना रहे हैं, वह हमारे लिए सुखद होंगी, यद्यपि यात्राएं बड़ी जटिल होंगी, तथापि हमें विश्वास करना चाहिए कि मनुष्य की आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य ये अभियान सुरक्षित रख सकेंगे।

वैसे सन १९८० से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष कार्यक्रम रोमांचक दौर में आ चुका है। जबकि अमरीका और यूरोप इस दौरान कोई खास कार्य नहीं कर पाये हैं, पर सोवियत रूस काफी आगे बढ़ चुका है।

पिछले वर्ष सोवियत संघ ने विश्व के सबसे भारी अंतरिक्ष प्रेक्षक वाहन 'इनरजिया' का सफल परीक्षण किया है। साथ ही अंतरिक्ष में

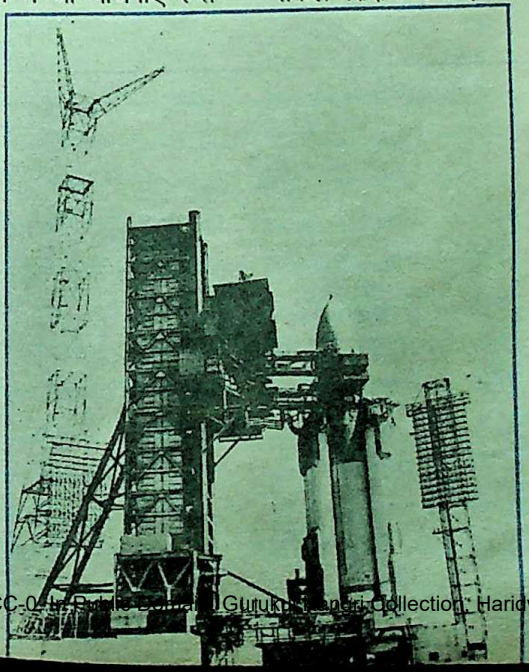

सोवियत राकेट 'इनरजिया'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के २७३ दिन रहने के रेकॉर्ड को भी तोड़ा है। इस समय सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों ने ३२० दिन 'मिर' अंतरिक्ष स्टेशन में हंसी-खुशी गुजारे हैं।

समस्याओं से निपटारा

मंगल ग्रह पृथ्वी से लाखों कि. मी. दूर है। इसलिए यह संभव नहीं है कि मंगल का अध्ययन सीधे पृथ्वी से करें। ऐसा करने में बहुत सारी बाधाएं आती हैं। और आएंगी। सबसे बड़ी बाधा पर्याप्त ईंधन का अभाव है। अंतरिक्ष की लंबी-लंबी दूरियों को यान तय करेंगे तब ईंधन का समाप्त होना स्वाभाविक है। दूसरी बाधा मंगल से लाये गये नमूनों का परीक्षण यदि पृथ्वी पर करेंगे, तो विभिन्न समस्यायें खड़ी हो सकती हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए वैज्ञानिकों ने सोचा कि अंतरिक्ष में कृत्रिम स्टेशन होना चाहिए जो पृथ्वी की कक्षा पर हो, इसी उद्देश्य की पूर्ति में सोवियत रूस अपने अंतरिक्ष स्टेशन 'मिर' में कामयाब हो चुका है।

स्पर्धा अभी भी दोनों महाशक्तियों में बनी हुई है। इसी के प्रतिफल में अमरीका ने सन् १९८६ में राष्ट्रीय अंतरिक्ष आयोग की नियुक्ति की। इस आयोग की स्थापना का मूल उद्देश्य ही यह है कि हमारे भविष्य के ५० वर्ष अंतरिक्ष कार्यक्रमों में किस प्रकार होंगे। और बृहद रूप में अंतरग्रहयीय यात्राएं किस प्रकार तैयार की जाएंगी। और कैसे सन २०१७ तक स्थायी रूप से मनुष्य का वास चंद्रमा पर व सन् २०२७ तक मंगल ग्रह पर किया जाए। अमरीका की योजना है कि सन् २०५० तक २० लाख मनुष्यों को इन ग्रहों में बसाया जाए। 'मनुष्य मंगल ग्रह पर' की परिकेल्पना को दोनों महाशक्तियां वास्तविक रूप देने में लगी हुई हैं।

अंतरिक्ष स्टेशन

इस संयुक्त कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहला कार्य वे पहले ही कर रहे हैं पृथ्वी के करीब अंतरिक्ष में स्टेशन की स्थापना, दूसरा अंतरिक्ष बागीचे का निर्माण। अमरीका टक्सोन में आजकल इस संबंध में प्रयोग कर रहा है। इस प्रयोग में वह २ एकड़ जमीन को पूरी तरह से बंद करके एक 'बायोस्फियर द्वितीय' का निर्माण कर रहा है। इस स्फियर की खूबी यह है कि इसको पूरी तरह पृथ्वी की सतह से ऊपर रखा गया है। इसके भीतर कृत्रिम वातावरण बनाया गया है। उसमें समुद्र, जमीन, नदियां, जंगल, जीव जंतु यानी उसे मिनी पृथ्वी का रूप दिया गया है। इसके भीतर दो वर्ष के लिए आठ वैज्ञानिकों को रखा जाएगा। वे अपना भोजन, रहन-सहन आदि उसी मनुष्य निर्मित वातावरण में बिताएंगे। यदि यह प्रयोग सफल हुआ तो आनेवाले अंतरिक्ष कार्यक्रमों में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मंगल ग्रह की यात्रा में इस पूरे बायोस्फेयर को उठाकर ले जाया जा सकता है। साथ ही अंतरिक्ष स्टेशन में यह वर्षों मनुष्य को पृथ्वी से दूर रख सकता है। इसी के माध्यम से वैज्ञानिक अपना जीवन अंतरिक्ष स्टेशनों व ग्रहों की सतह पर बिता सकेंगे।

बायोस्फेयर द्वितीय में चार महिला वैज्ञानिक व चार पुरुष वैज्ञानिकों को रखा जाएगा। वे वहां सभी प्रकार के प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार का प्रयोग सोवियत रूस साइबेरिया में कर रहा है। साइबेरिया का वातावरण मंगल ग्रह के वातावरण के अनुकूल तो नहीं होगा, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

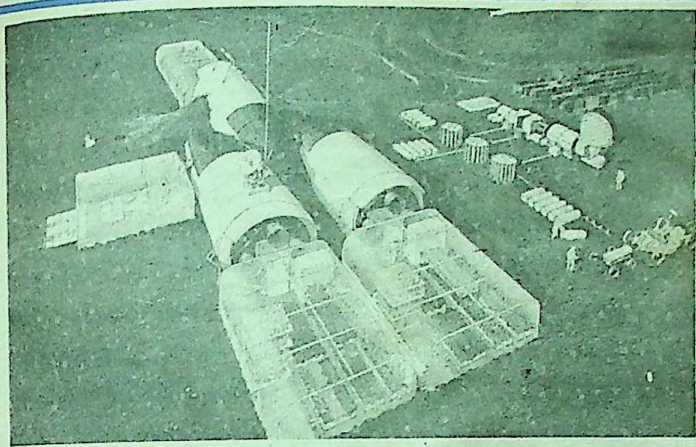

मंगल ग्रह अभियान में बसाई जानेवाली कॉलोनी।

इस प्रकार मंगल ग्रह अभियान संधि के अंतर्गत अमरीका तसवीरें रूस को देगा और सोवियत रूस मंगल ग्रह से लायी गयी मिट्टी को परीक्षण के लिए अमरीका को देगा। अब देखना है कि ये रोमांचक प्रयोग क्या गुल खिलाएंगे यदि अमरीका अपने अंतरिक्ष युद्ध के बजट को कुछ रचनात्मक कामों में लगाये तो मानव जाति को कुछ उपलब्धियां समय से पूर्व भी हो सकती हैं। लड़ाई के रास्ते छोड़ने से सहयोग के रास्ते रचनात्मक कार्यों को उत्प्रेरित कर सकते हैं।

साइबेरिया के वातावरण में तापक्रम की कमी थोड़ा सहायक अवश्य होगी। जैसा कि अनुमान है, मंगल ग्रह एक मृत ग्रह है। इसके गर्भ के अंदर उथल-पुथल खत्म हो चुकी है। इसी कारण यह ज्यादा ठंडा ग्रह है। इसकी सतह पर बर्फ़ की मोटी-मोटी पर्तें जमी हुईं हैं। अभी जीवन यहां मिला नहीं है, पर पृथ्वी से वहां जीवन ले जाया जा सकता है और फिर उसे वहां पनपाया जा सकता है। मनुष्य की यात्रा चंद्रमा की तरह आठ दिन की नहीं होगी। वहां की यात्रा उसे दो-तीन वर्ष में पूरी करनी पड़ सकती हैं। दूसरे अभी खगोल शास्त्रियों को मंगल के दो चंद्रमाओं की प्रकृति का भी पता नहीं है। सोवियत वैज्ञानिकों में बड़ा उत्साह है कि वह शीघ्रता से मंगल के पीछे छुपे हुए इन दो ग्रहों का भी अध्ययन कर सकेंगे। अमरीका का अलग से 'मार्स आबजरबर' भेजने का कार्यक्रम है। वह इसको सन १९९२ में भेजेगा।

मंगल ग्रह अंटारर्टिका से भी ठंडा है। वातावरण में हलकी ऑक्सीजन पर्त है जो सांस लेने में भी सहयक नहीं है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल पर उतरने की यात्रा

सोवियत संघ जुलाई में अपनी पहली मंगल ग्रह की यात्रा शुरु करेगा। इसके माध्यम से वह मंगल के दो चंद्रमाओं की स्थिति का पता करेगा। वह फोबो की सतह को २०० फुट ऊपर से 'लेसर' किरणों से ध्वस्त करने की कोशिश करेगा उसके बाद सतह पर उतरनेवाले दो यंत्रों को स्थापित करेगा उसमें एक पर कैमरे व मौसम मापी यंत्र होंगे। दूसरा 'रोबोट' होगा जो अपने सिप्रंगदार टांगों से मंगल की सतह पर घूमेगा। समझा जाता है कि इसके तीन अभियान होंगे। यह सन् १९९० के अंत में समाप्त होगा और अपने साथ पहले मंगल की सतह व गर्भ के नमूने पृथ्वी पर लाएगा। आज हमारे पास उपलब्ध जानकारियों के अनुसार अमरीका ने मंगल ग्रह के बाह्य भाग का अच्छी तरह से अध्ययन किया है और उनके पास मंगल के विस्तृत फोटोग्राफ हैं। दूसरी तरफ सोवियत संघ के पास सतह पर उतरनेवाले पर्याप्त लैंडिंग माडयूल हैं। और तकनीकी दृष्टि से अंतरिक्ष में अपने स्टेशन बनाने में सक्षम हैं। इस प्रकार मंगल ग्रह अभियान संधि के अंतर्गत अमरीका तसवीरें रूस को देगा और सोवियत रूस मंगल ग्रह से लायी गयी मिट्टी को परीक्षण के लिए अमरीका को देगा। अब देखना है कि ये रोमांचक प्रयोग क्या गुल खिलाएंगे यदि अमरीका अपने अंतरिक्ष युद्ध के बजट को कुछ रचनात्मक कामों में लगाये तो मानव जाति को कुछ उपलब्धियां समय से पूर्व भी हो सकती हैं। लड़ाई के रास्ते छोड़ने से सहयोग के रास्ते रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इनके भी बयां जुदा-जुदा

जिसको चाहें खरीद सकते हैं,
अब हमारे भी पास पैसा है।

—साहिर शेरी

शहर के हाकिम का ये फरमान है,
कैद में कहलाएंगे आजाद सब।

—जावेद अख्तर

फिर बताऊंगा उस तरफ क्या है,
ये समंदर तो पार कर जाऊं।

—हयात लखनवी

जिंदगी की वो कद्रें जिनकी हम अमानत हैं,
याद भी नहीं रहता जब फसाद होता है।

—इकबाल उम्र

कुछ लोग हकीकत का यूं नक्श मिटाते हैं,
सूरज को घटाते हैं साये को बढ़ाते हैं।

—हबीब हाशमी

मुंह मोड़ गये हमसे अरबाब-ए-वफा कितने,
अब दिल से मुहब्बत की पहचान नहीं होती।

—कृशन मोहन

शोर यूं ही न परिन्दों ने मचाया होगा,
कोई जंगल की तरफ शहर से आया होगा।

—कैफी आजमी

यूं उनसे दूर रह के भी तन्हा नहीं हूं अब,
ये शहरे आरजू की नई वारदात है।

—जकी तारिक

चला जाता हूं हंसता खेलता मौजे हवादिस से,
अगर आसानीयां हो जिंदगी दुश्वार हो जाए।

—अजगर गोंडवी

वैसे भी अब दिलों में ताअल्लूक नहीं रहा,
क्यों दरम्यां उठाते हो दीवार बेसबब।

—खालिद सईद

(प्रस्तुति : कुलदीप तलवार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

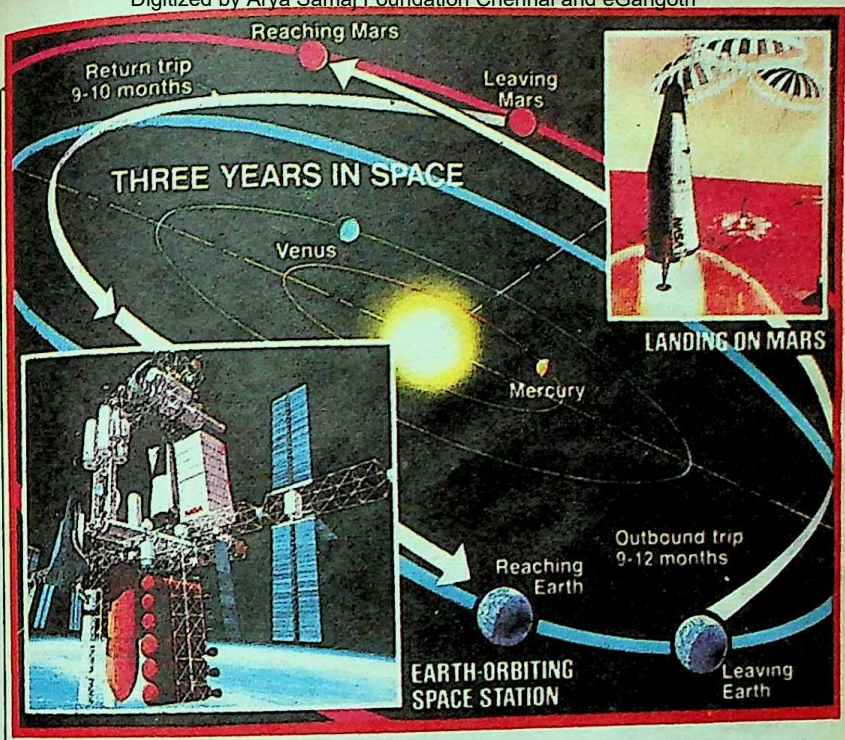

सोवियत संघ और अमरीका का यह अंतर उपग्रहयीय पर्यटन २१वीं सदी के मध्य तक साधारण व्यक्ति के लिए सुलभ हो सकेगा; विश्वास तभी हो सकता है, जब दोनों महाशक्तियां सह-अस्तित्व के सिद्धांत का पालन करें। वे उसी सहयोग से सौर-ग्रहों के परीक्षण जारी रखें।

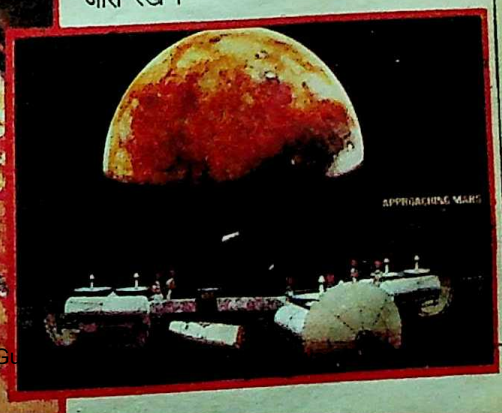

CC-0. In Public Domain. Gu

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय का सौंदर्य विश्व में अपनी तरह अकेला है। बर्फीली घाटियों और झरनों से भरा भारत का यह मुकुट सैलानियों के लिए स्वर्ग है। हर मौसम में हिमालय की छवि बदलती है, इसलिए हिमालय को देखते कभी आंखें थकती नहीं। यह धरती का स्वर्ग है।

छाया : राकेश लाम्बा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय का मध्यवर्ती क्षेत्र औसत गृहस्थ को तीर्थाटन, पर्वतारोहण, शिलारोहण, छुट्टी मनाने और घूमने का अनुपम अवसर प्रदान करता है

हिमालय की गोद में सैलानियों के स्वर्गीय स्थल

● नवीन पन्त

जेष्ठ की तपती दोपहरी, जब प्रचंड गर्मी से मनुष्य और पशु-पक्षी समान रूप से पस्त हो जाते हैं और चारों-ओर सन्नाटा छा जाता है, तब सभी का मन किसी ठंडी जगह जाने को करता है। बच्चों वाले गृहस्थों को तो आये दिन बच्चों की इस मांग का सामना करना पड़ता है। स्कूल-कालेज बंद हो जाते हैं और बच्चे रोजाना के ढर्रे से हटकर पर्वतों की गोद और वृक्षों की छाँह में कुछ दिन बिताने का मां-बाप से आग्रह करते हैं। जब से कुछ वर्गों के कर्मचारियों को एल.टी.सी. की सुविधा मिलने लगी है, तब से कहीं घूमने या सैर को जाने का बच्चों का दबाव बहुत बढ़ गया है। स्वयं बच्चों के माता-पिता भी कुछ दिन किसी रमणीक पर्वतीय स्थान पर बिता कर नया जीवन और नयी स्फूर्ति पाना चाहते हैं। कोई, कुछ भी क्यों न कहे, छुट्टी पर जाने का विचार पहली बार निम्न मध्य वर्ग में दिनों-दिन जोर पकड़ रहा है।

किस जगह जाएं

गर्मियों के दिनों में सैर को जाने का कार्यक्रम

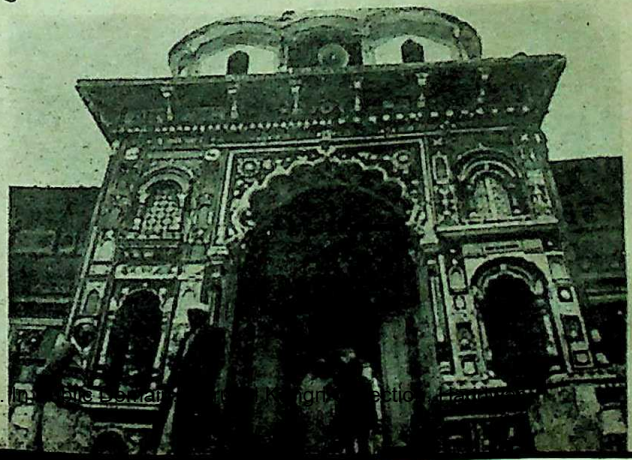

बद्रीनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद लेते हुए

बनाते समय हर व्यक्ति दो-तीन बातें चाहता है। इनमें से सबसे पहली और महत्वपूर्ण तो यह है कि सैर के लिए ऐसे स्थान को जाया जाए जहां गर्मी से राहत मिले। फिर, आज की बढ़ती हुई महंगाई में सैर का स्थान ऐसा हो, जहां जाने पर बजट के गड़बड़ाने का कोई खतरा नहीं हो अर्थात ठहरने का स्थान, भोजन, नाश्ता, परिवहन और अन्य आवश्यक सेवाएं मुनासिब दामों पर मिल सकें। तीसरे, और अंतिम हर व्यक्ति सैर या छुट्टी मनाने के लिए ऐसी जगह जाना चाहता है, जहां के लोगों की भाषा को वह समझ सके और जहां के लोग प्रेम और हार्दिकता से उसका स्वागत करें।

उत्तर भारत के लोग इस दृष्टि से भाग्यवान हैं कि वह अपनी छुट्टी मनाने के लिए हिमालय क्षेत्र में जा सकते हैं। हिमालय क्षेत्र जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों, पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले और सिक्किम तक फैला है। सैलानी अपनी सुविधा, क्षमता और साधनों के अनुसार गर्मियों में इनमें से कहीं भी जाने का कार्यक्रम

कुमाऊं मंडल विकास निगम और गढ़वाल मंडल विकास निगम यात्रियों के उत्तराखंड प्रवास को हर प्रकार से सुखद बनाने की कोशिश करता है।

बना सकते हैं।

हिमालय क्षेत्र में जेष्ठ की तपती दोपहरी में भी, जब देश के अन्य भागों में लोग लू के थपेड़ों से आक्रांत रहते हैं, तब सुखद मौसम रहता है। अधिकांश पर्वतीय क्षेत्रों में मई-जून में गुलाबी जाड़ा पड़ता है। जैसा मैदानी इलाकों में नवम्बर के मध्य में पड़ता है। कभी-कभार बादल घिर आने, हवा चलने, वर्षा होने या हिमालय की ऊंची पर्वतमालाओं में बर्फ गिरने से मौसम ठंडा हो जाता है। लेकिन उस दौरान भी अधिकांश स्थानों पर ऊनी स्वेटर ठंड रोकने के लिए काफी होता है। केवल बहुत अधिक ऊंचाइयों पर काफी ऊनी कपड़ों की जरूरत होती है।

हिमालय का मध्यवर्ती क्षेत्र औसत गृहस्थ को तीर्थाटन पर्वतारोहण, शिलारोहण, छुट्टी मनाने और घूमने का अनुपम अवसर प्रदान करता है। मध्य हिमालय क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय आठ जिले हैं। इनके नाम हैं नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी, चमोली और देहरादून। मोटे रूप में इन्हें कुमांऊं और गढ़वाल के दो मंडलों में बांटा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश के सभी जिले देश के अन्य भागों से विमान, रेलगाड़ी और बसों से जुड़े हैं। कुमाऊं के लिए पंतनगर तक और गढ़वाल के लिए देहरादून तक वायुदूत सेवा है। गढ़वाल मंडल के जिलों के लिए कोटद्वार, हरिद्वार और ऋषिकेश, कुमाऊं के लिए काठगोदाम और देहरादून-मसूरी के लिए देहरादून तक रेल सेवा उपलब्ध है। देहरादून, कोटद्वार, हरिद्वार, ऋषिकेश और बड़ी लाइन के और काठगोदाम छोटी लाइन का स्टेशन है। लखनऊ और आगरा फोर्ट से काठगोदाम के लिए छोटी लाइन की सीधी गाड़ियां हैं। बड़ी लाइन के यात्री बरेली में काठगोदाम के लिए छोटी लाइन की गाड़ी पकड़ सकते हैं। देहरादून महत्वपूर्ण नगरों से बड़ी लाइन के जरिए सीधा जुड़ा है।

मध्य हिमालय क्षेत्र के अधिकांश स्थानों के लिए सुगमता से टैक्सियां, छोटी टूरिस्ट बसें और चार्टर बसें मिल जाती हैं। इनके अलावा सभी स्थानों की यात्रा के लिए सार्वजनिक परिवहन भी उपलब्ध है। जो लोग अपनी कार ले जाना चाहते हैं, ऐसे लोगों की सुविधा के लिए मार्ग में सब जगह आसानी से पैट्रोल, गाड़ी पार्क करने और रात्रि विश्राम की सुविधा उपलब्ध है।

गर्मियों में पहाड़ जाने वाले प्रत्येक सैलानी अथवा तीर्थ यात्री को सबसे पहले अपनी यात्रा का कार्यक्रम तैयार करना चाहिए। अगर संभव हो तो यात्रा कार्यक्रम तीन सप्ताह पहले तैयार कर लेना चाहिए। इससे आवास के लिए स्थान आरक्षण कराने में आसानी होती है।

उत्तर प्रदेश पर्यटन निदेशालय, कुमाऊ मंडल विकास निगम और गढ़वाल मंडल विकास निगम यात्रियों के उत्तराखंड प्रवास को सुखद और आरामदेह बनाने के लिए हर संभव प्रयत्न करते हैं। उन्होंने यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक स्थानों पर पर्यटन आवास-गृह, यात्री निवास, पर्यटक विश्राम गृह और शयन शालाएं बनाई हैं। इनका किराया २० रुपये रोज से १४० रुपये रोज तक है। केवल देहरादून, मंसूरी, उत्तरकाशी भवाली और कौसनी में अधिक किराये के आधुनिकतम सुख सुविधाओं से युक्त 'काटेज' उपलब्ध हैं। कुछ स्थानों पर ४ शैयाओं वाले फैमिली सूट १२० रुपये रोज पर मिलते हैं। डारमिटरी अथवा शयनशाला का किराया १५ रुपये से २० रुपये रोज है।

एक झलक

झील के चारों ओर बसा नैनीताल इस क्षेत्र का सबस आकर्षक और सुंदर पर्वतीय नगर है। नैनीताल में ५० से अधिक बड़े होटल हैं। इनका किराया १०० रु. से लेकर १००० रु. रोज तक है। होटलों के अलावा यहां अनेक 'हालीडे होम', उत्तर प्रदेश राज्य संपत्ति विभाग के दर्जनों 'सूट' वी आई पी काटेज, सामान्य काटेज, नगर पालिका टूरिस्ट होम, यूथ होस्टल और विमिन्स सरकारी विभागों के निरीक्षण भवन और धर्मशालाएं हैं। इनके अलावा सराय, गुरुद्वारा और आर्य समाज मंदिर में भी आवास की सुविधा उपलब्ध है। नैनीताल के समीप सूखाताल, भीम ताल, सत ताल और काठगोदाम में भी पर्यटक आवास हैं। इनका किराया डारमेटरी के लिए १० रु. रोज से लेकर काटेज के लिए ५०, १०० और १५० रु. रोज है।

गढ़वाल मंडल

गढ़वाल मंडल विकास निगम ने ४० स्थानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पर्यटकों के रुकने की व्यवस्था की है। इन सभी स्थानों पर सात सौ से अधिक यात्री रात्रि विश्राम कर सकते हैं। इनमें से १८ स्थान टेलीफोन से जुड़े हैं। गढ़वाल मंडल में नौ स्थान ऐसे हैं जहां वर्षभर बर्फ पड़ती है। इन स्थानों की यात्रा पर जाने वाले पर्यटकों को पर्याप्त कपड़े बिस्तर और खाद्य सामग्री लेकर जाना चाहिए।

गर्मियों में कुछ लोग बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमनोत्री की यात्रा करना चाहते हैं। ऐसे यात्रियों की सुविधा के लिए गढ़वाल मंडल विकास निगम १५ मई के बाद दिल्ली और ऋषिकेश से "पैकेज टूर" आयोजित करता है। इसका पूरा विवरण मंडल के दिल्ली और ऋषिकेश कार्यालयों से प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग स्वतंत्र रूप से यात्रा करना चाहते हैं वे हरिद्वार, ऋषिकेश होकर बद्रीनाथ, केदार नाथ की यात्रा कर सकते हैं। बद्रीनाथ तक बसें जाती है लेकिन यमनोत्री गंगोत्री और केदारनाथ के लिए सात से १५ किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता है। गंगोत्री से आगे गोमुख ग्लेशियर है। यहां से भागीरथी निकलती है। उत्तरकाशी शहर में भगवान विश्वनाथ का मंदिर है ! इस मंदिर के पास एक शक्ति स्तभ है, जो चमत्कारों से भरपूर है। उत्तरकाशी से लगभग २० कि. मी. १०,००० फुट की ऊंचाई पर डोडीताल है। यह प्राकृतिक झील देखने योग्य है। उत्तरकाशी में ही नेहरूपर्वतारोहण संस्थान है। यहां पर देश-विदेश से प्रशिक्षणार्थी आते हैं। उन्हें यहां पर बेसिक प्रशिक्षण और एडवांस

पर्यटकों के लिए आवास सुविधा

पर्यटन स्थल	होटल/निगम की सुविधा
देहरादून	द्रोण
मसूरी	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
थनोल्टी	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
चंबा	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
देवप्रयाग	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
पौड़ी	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
लैंसडाउन	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
रुद्रप्रयाग	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
कोटद्वार	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
गौरीकुंड	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
केदार नाथ	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
जोशीमठ	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
बद्रीनाथ	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
उत्तरकाशी	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
गंगोत्री	टूरिस्ट रेस्ट हाउस
भोज वासा	टूरिस्ट रेस्ट हाउस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण दिया जाता है। पूरे हिमालय की चोटियों को नापने के लिए यह प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है।

गढ़वाल क्षेत्र में सुरम्य विश्व प्रसिद्ध फूलों की घाटी है। इसके लिए गोविन्दघाट से १६ किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ती है। इस घाटी को प्रकृति का अजूबा भी कहा जाता है। मंसूरी से २८ किमी. की दूरी पर धनोल्टी है। चीड़ और देवदार के वृक्षों से पूरी तरह आच्छादित इस नगरी को प्रकृति ने जी भरकर सजाया-संवारा है। यहां से आठ किलो मीटर की दूरी पर टिहरी की ओर सुरखंडा देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। यह १० हजार फुट की ऊंचाई पर है। यहां से आप पूरे हिमालय का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। जोशी मठ से १६ किमी. दूर ओली है। यह भारत का नया "स्कीइंग" केंद्र है। औली की हिमाच्छादित ढलानें विश्व की सुंदरतम ढलानों में है। आस्ट्रिया में प्रशिक्षित प्रशिक्षकों की देखरेख में दो तीन मीटर बर्फ से जमी इन ढलानों पर 'स्कीइंग' का पूरा आनंद लिया जा सकता है। केदारनाथ के ठीक नीचे कालीदेवी का मंदिर है। यह स्थान काली मठ से जाना जाता है। कालिदास की यहां का पुजारी होने के संबंध में भी मान्यता है।

कुमाऊं मंडल

कुमाऊं क्षेत्र में नैनीताल तो पर्यटकों की प्रिय नगरी है। नैनीताल वर्षों से उत्तर प्रदेश की गर्मियों की राजधानी रही है। औपचारिक दृष्टि से नहीं, अनौपचारिक रूप से उसे यह दर्जा आज भी प्राप्त है क्योंकि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल सहित राज्य सरकार के सभी मंत्री नैनीताल के एक-दो या अधिक चक्कर अवश्य लगाते हैं। उत्तर प्रदेश विधान सभा और परिषद की विभिन्न समितियों की भी बैठकें यहां होती रहती है।

नैनीताल में पर्यटकों की भीड़-भाड़ के कारण आवास की काफी दिक्कत होती है। अतः नैनीताल की यात्रा का कार्यक्रम बनाने से पहले वहां आवास की पक्की व्यवस्था कर लेनी चाहिए। नैनीताल के समीप अनेक रमणीक स्थान हैं, जहां कम दाम पर आवास की व्यवस्था हो सकती है। यदि समय से संपर्क किया जाए तो कुमाऊं मंडल विकास निगम भी इस काम में सहायता कर सकता है। पर्यटक अपने प्रयत्नों से भी भवाली, ज्योलीकोट, भीमताल, रामगढ़ में आवास प्राप्त कर सकते

नये पर्यटन स्थल

उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन विभाग और कुमाऊं एवं गढ़वाल विकास निगम ने कुछ नये पर्यटन स्थल विकसित किए हैं। ये भीड़भाड़ और कोलाहल से हटकर प्रकृति की गोद में हैं।

कुमाऊं विकास निगम ने जागेश्वर विनसर, शीतलाखेत और भवाली में पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटक आवास गृह बनाए हैं। इनका किराया २० रु. से २०० रु. रोज है।

गढ़वाल विकास निगम ने मसूरी टिहरी मार्ग पर धनोल्टी और जोशी मठ से १५ किलोमीटर दूर औली के पर्यटन स्थलों पर आवास आदि की सुविधाएं विकसित की है। इनका किराया २० रु. से १०० रु. रोज है। शाकाहारी भोजन १९ रु. में और मांसाहारी भोजन ३० रु. में मिल जाता है। अधिकांश स्थानों पर जनता थाली ९ रु. में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इसमें वे स्थानीय निवासियों की सहायता भी प्राप्त कर सकते हैं।

काठगोदाम से ८४ किमी. दूर रानीखेत अनुपम नगरी है। छह हजार फुट की ऊंचाई पर बसी यह सुरम्य नगरी ब्रिटिश शासन काल के दौरान गोरी फौजों की छावनी थी। आज कल यहां कुमाऊं रेजीमेंट का मुख्यालय है। रानीखेत में अनेक सरकारी विश्राम गृह, पर्यटक आवास गृह और होटल तथा दो धर्म शालाएं हैं।

रानीखेत के समीप रमणीक तथा दर्शनीय स्थान हैं। इनमें से प्रसिद्ध हैं, मजरवाली, ताड़ीखेत, द्वाराहाट, दूनागिरि, शीतलाखेत और मनिला। मजरवाली और मानिला से हिमालय का ऐसा मनोहारी दृश्य दिखाई देता है कि आंखें उठाए नहीं उठतीं।

पर्वत शिखर के ऊपर और उसके दोनों ओर बसा अल्मोड़ा कुमाऊं के राजाओं की राजधानी रहा है। इसके साथ ही यह नगर इस क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी है। रेल स्टेशन काठगोदाम से ९० किलोमीटर की दूरी पर स्थित अल्मोड़ा पांच हजार फुट की ऊंचाई पर बसा है। यहां बर्षभर सुहावना मौसम रहता है। पर्यटकों के लिए यहां पर्यटक आवास गृह, पर्यटक परिसर, और सरकारी विश्रामगृह हैं। नगर में एक दर्जन से अधिक होटल भी हैं।

अल्मोड़ा के समीप अनेक रमणीक स्थल हैं। कटार मल में १२वीं शताब्दी में निर्मित सूर्य मंदिर है। गणानाथ, जागेश्वर और बागेश्वर में भी प्राचीन मंदिर है। देवदार के वृक्षों से घिरा नदी तट पर सिथ्त जागेश्वर मंदिर पर्वतीय शैली का अनुपम मंदिर है। छह हजार फुट की ऊंचाई पर बसा कौसानी हिमाच्छादित पर्वतराज हिमालय के विराट रूप की अद्भुत छवि दिखाता है। कौशानी में किसी जमाने में चाय के बगीचे थे। अब यहां कविवर सुमित्रा नन्दन पंत की स्मृति में एक संग्रहालय है। महात्मा जी भी कुछ दिन कौसानी रहे थे। गरुड़ घाटी में बसे बैजनाथ में १२वीं और १३वीं शताब्दी में निर्मित ऐतिहासिक मंदिर हैं।

अल्मोड़ा से ३० किलोमीटर की दूरी पर कुमाऊं के पहले अंगरेज कमिश्नर सर हेनरी रामजे की इस्टेट विनसर है। अब यहां पर्यटन परिसर है। रामजे साहब २८ वर्ष तक कुमाऊं के कमिश्नर रहे। स्थानीय लोग उन्हें रामजी साहब कहते थे। सेवा निवृत्ति के बाद भी वह अल्मोड़ा नही छोड़ना चाहते थे। उनके पुत्र उन्हें बलपूर्वक ले गए।

अल्मोड़ा में ही पिंडारी का तीन किलोमीटर लंबा और चौथाई किलोमीटर चौड़ा विश्व प्रसिद्ध हिमनद (ग्लेशियर) है। पिंडारी की यात्रा नौ दस दिन में की जा सकती है। यात्रा के लिए मई जून का महीना सर्वोत्तम होता है। दिल्ली, काठगोदाम और नैनीताल से एक दिन में बागेश्वर पहुंचा जा सकता है। बागेश्वर से सोंग तक की यात्रा बस से की जाती है। उसके बाद पैदल जाना पड़ता है। यात्रा लंबी और कष्टप्रद है। लेकिन हिमनद पर पहुंच कर यात्री का मन अवर्चनीय आनंद से भर जाता है। आनंद की उस अनुभूति का वर्णन नहीं किया जा सकता। उसका केवल अनुभव किया जा सकता है।

२२, मैत्री अपार्टमैन्टस, ए-३, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वतों की गोद में कश्मीर घाटी जिसे 'हैप्पी वैली' भी कहते हैं का प्राकृतिक सौंदर्य अनेक दृष्टियों से विख्यात कवियों ने किया है। किसी ने कहा है "यह है— धरती पर एक स्वर्ग।" किसी ने कहा है, "यह भारत का चमकता ताज है।" तो किसी का यह विचार है कि "जिसने कश्मीर नहीं देखा उसने बहुत कुछ खो दिया है।" सरदी हो या गरमी, पतझड़ हो या बरसात कश्मीर पर्यटन का केंद्र रहा है। गर्मियों में तो हर एक की यही कोशिश रहती है कि किसी प्रकार कश्मीर पहुंचा जाए!

धर्म निरपेक्षता का केंद्र

जम्मू, लद्दाख और कश्मीर की सुंदरता तो शब्दों में नही लिखी जा सकती और न ही चित्रकार इसे अपने पूरे रंगों में भर सकता है। सैकड़ों कवियों ने इस धरती के गीत गाए और कई इतिहासकारों ने यहां के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन पर बहुत सी पुस्तकें लिखीं। धर्म निरपेक्षता यहां की परंपरा रही है। ऐसा बरसों पहले भी था और अब भी है। यहां मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे पास-पास हैं।

ऊंचे-ऊंचे पर्वत, गुनगुनाती पहाड़ियों से निकलती नदियां, रंग-बिरंगें फूल, शीतल जल के झरनें, नीली-नीली झील में खिले कमल, सुरीले लोकगीत, ताजे-मीठे फल ये कश्मीर के विशेष आकर्षण हैं। तब भी कश्मीर बस यही

डलझील

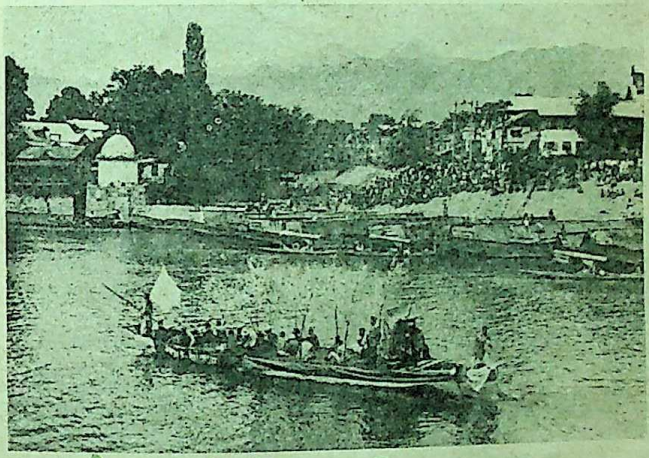

सौंदर्य के बीच आप अकेले नहीं हैं

● मीनाक्षी शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

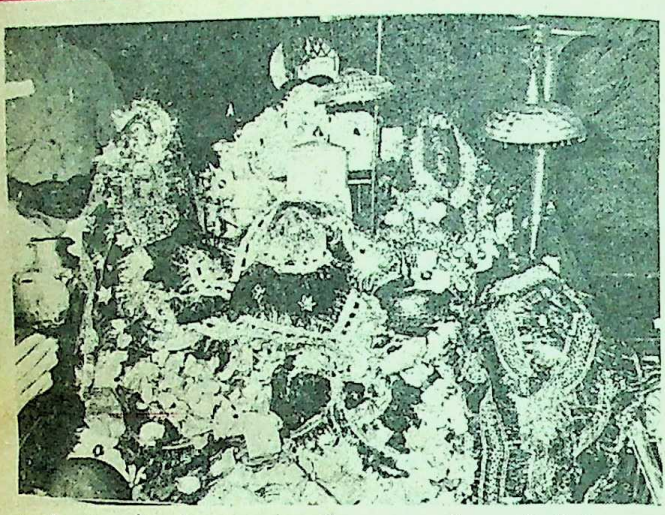

वैष्णो देवी

नहीं है वह और भी बहुत कुछ है।

पुलों का शहर

कश्मीर जाने वालों को चाहिए कि वे अपना कार्यक्रम पहले ही बना लें और पर्याप्त समय श्रीनगर के अलावा गुलमर्ग, पहलगांव और दूसरे स्थानों में व्यतीत करें।

श्रीनगर हवाई-जहाज द्वारा देश के मुख्य नगरों से जुड़ा हुआ है। गर्मियों में अतिरिक्त हवाई सेवाएं उपलब्ध की जाती हैं। 'इंडियन एयर लाइंस' कुछ रियायतें भी प्रदान करती है। जहाज से कश्मीर घाटी का दृश्य मन को मोह लेता है।

अधिकतर लोग रेल द्वारा जम्मू पहुंचते हैं। जम्मू जिसे मंदिरों का शहर कहा जाता है। इसे स्वर्ग का द्वार भी कहते हैं। वहां से सीधे कश्मीर के लिए बसें उपलब्ध हैं दिल्ली तथा कुछ और नगरों से श्रीनगर के लिए सीधे भी बसें उपलब्ध हैं। श्रीनगर में कम से कम तीन-चार दिन ठहरना जरूरी है ताकि आसपास के स्थानों को देखा जा सके। जेहलम नदी इस शहर के बीचों बीच से गुजरती है। इस पर सात कदल (पुल) हैं। हर पुल का अलग नाम है तथा इनके किनारों पर घनी आबादी के मोहल्ले हैं। कुछ लोग तो दरिया में ढूगों (बड़ी किश्ती) में रहते हैं।

मजे हाऊस बोट के

यहां की झील डल पर्यटकों के मन को मोह लेती है। सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय जो लालिमा झील पर छा जाती है वह देखते ही बनती है। इस झील के किनारों पर हाऊस बोटों की लंबी-लंबी कतारे हैं, जिनमें रहने का मजा ही कुछ और है। वह मजा पांच सितारा होटलों में भी नहीं है। इसके हर कमरे की सजावट कश्मीरी कला का एक नमूना है। सरकार ने इनका किराया श्रेणी अनुसार निर्धारित किया है। इन हाऊस बोटों के नाम भी बहुत रोमांचक हैं, जैसे—'द स्नो क्वीन', टाइगरस डेन इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

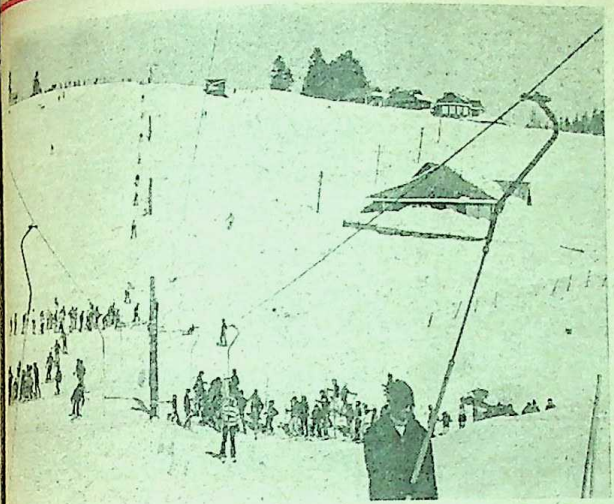

गुलमर्ग में स्कीइंग

मीलों-मील लंबी इस झील में पर्यटक शिकारों (नाव) द्वारा झील का भ्रमण करते हैं। इस झील में अधिक स्थानों पर कमल के फूल खिले हैं। झील में अनेक 'फ्लोटिंग गार्डन' यानी तैरते हुए बाग हैं। डल के साथ-साथ बुलवर्ड रोड है जिसके किनारे चिनार तथा देवदार के वृक्ष हैं तो दूसरी तरफ बिजली के बड़े-बड़े स्तंभ हैं। सायंकाल पानी में झलकता प्रतिबिंब अत्यंत ही लुभावना हो उठता है। डल में ही नेहरू पार्क और चार चिनारी में पर्यटकों की खूब रौनक रहती है।

डल के पास ही हरिपर्वत, हजरतबल, शंकराचार्य, परीमहल तथा मुगल गार्डंस देखने योग्य स्थान हैं। हरिपर्वत पहाड़ पर एक पुराना किला है जिसमें काली का मंदिर है और उसके साथ ही एक सूफी फकीर की दरगाह भी है। कहा जाता है कि माता पार्वती ने एक दुष्ट राक्षस का संहार करने के लिए झील में पत्थर फेका, जिससे हरिपर्वत अस्तित्व में आया।

हजरतबल झील के किनारे बहुत बड़ी मस्जिद है, जहां मुसलमानों के पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब के बाल सुरक्षित हैं। ख्वाजा नरूद्दीन ये बाल बीजापुर से कश्मीर सन १७०० ई. में लाए थे। कुछ विशेष अवसरों पर इन

ऊंचे-ऊंचे पर्वत गुनगुनाती पहाड़ियों से निकलती नदियां, रंग-बिरंगे फूल, शीतल जल के झरने, नीली-नीली झील में खिले कमल सुरीले लोकगीत, ताजे मीठे फल ये कश्मीर के आकर्षण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को जनता के दर्शन के लिए रखा जाता है। कश्मीर के भूतपूर्व मुख्य मंत्री मोहम्मद शेख अब्दुला ने यहां पर बहुत ही शानदार संगमरमर का टोम बनवाया इसके निकट ही कश्मीर विश्वविद्यालय, इंजिनियरिंग कॉलेज तथा शेख साहब का मकबरा स्थित है।

नजारें शंकराचार्य पहाड़ी से

डल के दूसरे किनारे पर शंकराचार्य की पहाड़ी के ऊपर प्राचीन शिव मंदिर है और शंकराचार्य का स्थान भी है। यहां से सारा श्रीनगर शहर, डल झील व कश्मीर घाटी दिखाई देती है। कुछ सालों पहले यहां टी. वी. टॉवर बनाया गया। यहां पांच कि. मी. लंबी सड़क भी बना दी गयी है।

कहा जाता है कि एक समय था जब मुगल बादशाहों ने यहां ७०० बाग लगवाए लेकिन अब कुछ ही बाकी बचे हैं इनमें शालीमार, निशात, चश्माशाही, अच्छाबल वेरीनाग, हारबन इत्यादि मुख्य हैं।

गुलमर्ग और पहलगांव बहुत प्रसिद्ध और आकर्षण के केंद्र हैं— गुलमर्ग का अर्थ है 'फूलों की वादी'। यह २,७३० मी. की ऊंचाई पर स्थित है और विश्व का सबसे कम खर्चीला शरदकालीन क्रीड़ा-केंद्र है। अब यहां २० करोड़ के खर्चे से गोन्डोला (केबलकार) निर्माणाधीन है। बर्फ-क्रीड़ा के लिए उचित सामान यहां आसानी से मिल जाते हैं। गुलमर्ग में 'पर्वतारोहण-भारतीय संस्थान' अपने प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित करता है।

श्रीनगर से ९६ कि. मी. की दूरी पर पहलगांव है। लिद्दर नदी के तट पर बसा यह अत्यंत आकर्षण केंद्र है। लगता है जैसे प्रकृति ने अपना सारा सौंदर्य यहां बिखेर दिया है। यहां पर राज्य सरकार के हट्स भी उपलब्ध हैं तथा कुछ पर्यटक तो तंबू में रहना पसंद करते हैं। यहीं से अमरनाथ की पावन गुफा को जाने का रास्ता है। हर वर्ष हजारों श्रद्धालु रक्षा-बंधन के दिन यात्रा करते हैं।

प्राचीन मंदिर और झीलें

इसके अलावा सोनमर्ग भी कश्मीर का उत्तम स्थान है। वेरीनाग, कोकड़नाग, अच्छाबल, लोलाब घाटी और वूलर झील (जो एशिया की सबसे बड़ी शीतल और मीठे जल की झील है) देखने योग्य स्थान है। ऐतिहासिक स्थानों में जैसे मारतंड के प्राचीन मंदिर, मटन, अवंतीपुरा यहां की प्राचीन सभ्यता के नमूने हैं।

कुछ पर्यटक तो लद्दाख की सैर भी करते हैं और वहां के सांस्कृतिक सामाजिक और धार्मिक जीवन का अध्ययन करते हैं। वहां के अधिक लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। लोग बहुत सीधे-सादे और हंसमुख हैं। वहां जाने वाले पर्यटक ऐसा अनुभव करते हैं। जैसे वे किसी नयी दुनिया में आ गये हैं, जहां का रहन-सहन, खानपान इत्यादि देश के अन्य भागों से बिलकुल भिन्न है। बस से आने वाले यात्री जम्मू आ जाते हैं और कुछ लोग जम्मू के मंदिरों और पुराने किलों को देखने जाते हैं। बहुत से श्रद्धालुगण माता वैष्णो देवी की गुफा के दर्शन के लिए भी जाते हैं। अब जम्मू से इस पावन स्थान के लिए हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है। अधिकतर लोग बस से कटरा और वहां से आगे १३ कि. मी. ऊंची पहाड़ी का रास्ता पैदल या घोड़ों पर तय करते हैं। अधिक वृद्ध और कमजोर लोग पालकी में जाते हैं। अब इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा में सहूलियतों और सफाई में कायाकल्प हो गया है।

कश्मीर में स्कीइंग

हिमाच्छादित सीधे खड़े पहाड़ों की दीवारों पर, 'ग्रेनाइट' (कणाश्म) के खंडों पर चढ़ना, भव्य-सुंदर घने जंगलों के बीच, सपरिवार पग-डंडियों पर लंबी पद यात्रा, जो हिम-नदियों तथा पहाड़ी झरनों तक पहुंचती हैं, द्रुतगामी जल-धाराओं में मछली-पकड़ना,विश्व के कुछ उच्चतम मैदानों में गॉल्फ खेलना, तंग दर्रों व घाटी मार्गों में द्रुत-गामी यात्रा, हैंग ग्लाइडिंग', बैलून यात्रा, सर्वश्रेष्ठ ढलानों पर 'स्कीइंग तथा 'स्की'-पर्वतारोहण, एक दूसरी पर्वत श्रृंखलाओं पर विद्युत गति से पहुंचना आदि कुछ ऐसी रोमांचकारी व साहसिक क्रीड़ाएं हैं, जो कश्मीर के उच्च हिम-शिखरों के अंचल में पर्यटकों के लिए विशिष्ट आकर्षण के केंद्र हैं। यदि आप अत्यंत साहसिक हैं, तो कश्मीर में भारत के साहसिक क्रीड़ा-स्थल के किसी भी क्षेत्र में अग्रगण्य हो सकते हैं।

साहसिक पर्वतारोहण

यदि आप पर्वतारोहण में विशेष रुचि रखते हैं, तो कश्मीर के चार विशिष्ट पर्वतीय क्षेत्र—कश्मीर; जांसकार; किश्तकार; तथा लद्दाख में 'अल्पाइन' तथा हिमालय पर्वत शिखरों पर अपनी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं। यहां पर पर्वतारोहण का समय मई के मध्य से अक्तूबर के अंत तक है। लद्दाख के शिखरों पर वर्षा-ऋतु का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, अतः पर्वतारोही इस क्षेत्र में जुलाई-अगस्त में भी पर्वतारोहण कर सकते हैं, जबकि अधिकतर हिमालय के स्थल ऐसे मौसम में बंद कर दिये जाते हैं।

शरद्कालीन क्रीड़ाएं

इस मौसम में जब से गुलमर्ग में, 'हील स्कीइंग' को सफलता पूर्वक आरंभ किया गया है, भारत में शरद कालीन क्रीड़ाओं के लिए कश्मीर का स्थल और अधिक विस्तृत व लोकप्रिय हो गया है। श्रीनगर से ५० कि. मी. दूर, २,७३० मी. की ऊंचाई पर स्थित गुलमर्ग विश्व का सबसे कम खर्चीला शरद्कालीन क्रीड़ाओं का पर्यटन स्थल है। यहां पर बहुत आरामदेह ऊष्ण-गर्म होटल हैं जहां पर ठंड का तनिक भी आभास नहीं होता। इनके साथ 'स्की-शॉप' भी है, जहां से सभी प्रकार के उपकरण आपको उपलब्ध हो सकते हैं। गुलमर्ग के ढलानों में, १० कि. मी. के क्षेत्रफल में, लगभग १,५०० मी. की ऊंचाई में भिन्नता पाई जाती है।

गुलमर्ग में 'स्कीइंग तथा पवर्तारोहण-भारतीय संस्थान' द्वारा १५ दिन का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है।

अधिक अवकाश के क्षणों में

लोलाब की घाटी में गुह्निवास; 'हैंग-ग्लाइडिंग' तथा 'हॉट-एयर बैल्निंग' का आनंद गुलमर्ग, सोना मर्ग तथा जॉसकार में उठा सकते हैं। यदि आप उपरोक्त किसी भी रोमांचक साहसिक कार्यों में या अवकाश के खेलों के इच्छुक हैं, तो जम्मू तथा कश्मीर के पर्यटक विभाग से सहायता तथा निर्देशन ले सकते हैं।

—द्वारा श्री ओ. पी. शर्मा
असिस्टेंट डायरेक्टर आव इफरमेशन, ५ पृथ्वीराज रोड नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

● जगतराम साहनी

बेशक, मेरे चेहरे पर उड़ रही हवाइयां ही, मेरी व्यथा हजार कोशिशों के बावजूद, अम्मा के आगे चुगली खाने को मजबूर हो रही होंगी। तभी तो उन्होंने मुझे देखते ही पूछा—हो आये ? बहू, पिंकी कैसी हैं ? साथ नहीं लाये ?

आज शाम मुक्ता के साथ मेरे विवाह की दूसरी वर्षगांठ और पिंकी के जन्मदिन की पहली वर्षगांठ मनाई जाने वाली थी। कोई सवा महीने से मुक्ता, लड़की के साथ अलग से एक सरकारी क्वार्टर में रहने लगी है। मैं उसी उत्सव से शरीक होने के बाद लौटा था। अम्मा तबीयत ठीक न होने के कारण मेरे साथ नहीं जा सकी थीं।

भरसक प्रयत्न से अपने को संयत करते हुए मैंने जवाब दिया— ठीक हैं। आपने दवा ली है ?

किंतु मेरे लहजे से वह ताड़ गयीं कि कुछ तो गड़बड़ जरूर है। इसलिए मेरे सवाल की परवाह न करते हुए उन्होंने दूसरा सवाल दाग दिया— "वह साथ क्यों नहीं आई ?"

मैंने टालना चाहा— "उसकी मर्जी।"

हैरान होकर कुछ देर टकटकी लगाए खामोश मुझे देखती रहीं। फिर पूछा, "कहती क्या है ?"

मेरा रूखा टका-सा जवाब था— "कुछ नहीं।"

"तुमने उसे साथ चलने को कहा ?"

मैं, ना में सिर्फ सिर हिला सका। मुंह से बोलने का साहस ही नहीं जुटा पाया।

"वह कहां छोड़नेवाली थी' ?" तड़ाक-से पूछा— "क्यों ?"... और उठकर बैठ गयीं। मैं लगा बगलें झांकने। डूबते को तिनके का सहारा, लपककर उन्हें कंधों से पकड़ते हुए कहने लगा, "आप लेटे रहिए न। उठती क्यों हैं ?"

वह लंबी-ठंडी सांस भरते हुए आसादभरे स्वर में बोलीं, "नीले मुझे अच्छा नहीं लग रहा, उसका न आना।"

मुझे नींद कहां आनी थी ? लेटे-लेटे सोचने लगा— कितने चाव और उम्मीदों के साथ गया था कि आज तो उसे जरूर लिवा लाऊंगा अपने साथ, किसी न किसी तरह, चाहे गिड़गिड़ा कर माफी ही क्यों न मांगनी पड़े।...

कल तो उत्सव की पूर्व संध्या के करीब-करीब सारे दिन ही मेरे इसी एक विचार ने मन की मानो नाकाबंदी-सी कर रखी थी कि कल हमारे विवाह की दूसरी और साथ में पिंकी के जन्मदिन की पहली वर्षगांठ है। पिंकी के जन्म की याद आते ही, न जाने मन क्यों कसैला हो आता था लाख जतन से उसे परे ठेल कर अपने से पूछता आ रहा था कि क्या मुझे इस समारोह में शरीक होना भी चाहिए था या नहीं ? फिर हर बार साथ में यह सवाल भी नागफनी के कांटे की तरह उग आता रहा था— क्या वह शादी की वर्षगांठ मनाएगी भी ? पिंकी का जन्मदिन तो वह निश्चित ही मनाएगी। तब तो मुझे हरगिज शामिल नहीं होना चाहिए ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तो तभी शक हुआ था, जब विवाह-मंडप में अग्नि के गिर्द वेदी पर बैठे पुरोहित ने उससे कहा था— "तुम प्रत्येक समान आयु के युवक को छोटा-बड़ा भ्राता मानोगी..., तो वह चौंककर हैरानी से उन्हें एकटक निहारने लगी थी और जैसे पूछ रही हो— यह कैसे संभव हो सकता है, पंडित जी ? फिर मुझे अपनी ओर देखते ही एकाएक आंखें शर्म के मारे नीची कर ली थी; चेहरे का रंग फक पड़ गया था। इसका मतलब क्या

इसी संदेह की वजह से मैंने, सुहाग-रात को भी, इधर-उधर की बातों में घेर-घाकरकर उससे सकुचाते हुए आखिर पूछ ही लिया था—

"तुमने पहले किसी से प्रेम किया था ?"

साफ नहीं था कि वह किसी से प्रेम कर रही थी ? फिर अपने-आप सोचने लगा था— हो सकता है, मेरी तरह यह भी मजबूर हो, बेचारी। विवाह का दूसरा नाम ही मजबूरी है भई। इसी कारण अपने लिए पुरोहित के उपदेश से पहले ही मैंने अपना सिर झुका लिया था।

इसी संदेह की वजह से मैंने, सुहाग-रात को भी, इधर-उधर की बातों मे घेर-घार कर उससे सकुचाते हुए आखिर पूछ ही लिया था— "तुमने पहले किसी से प्रेम किया था ?" फूल

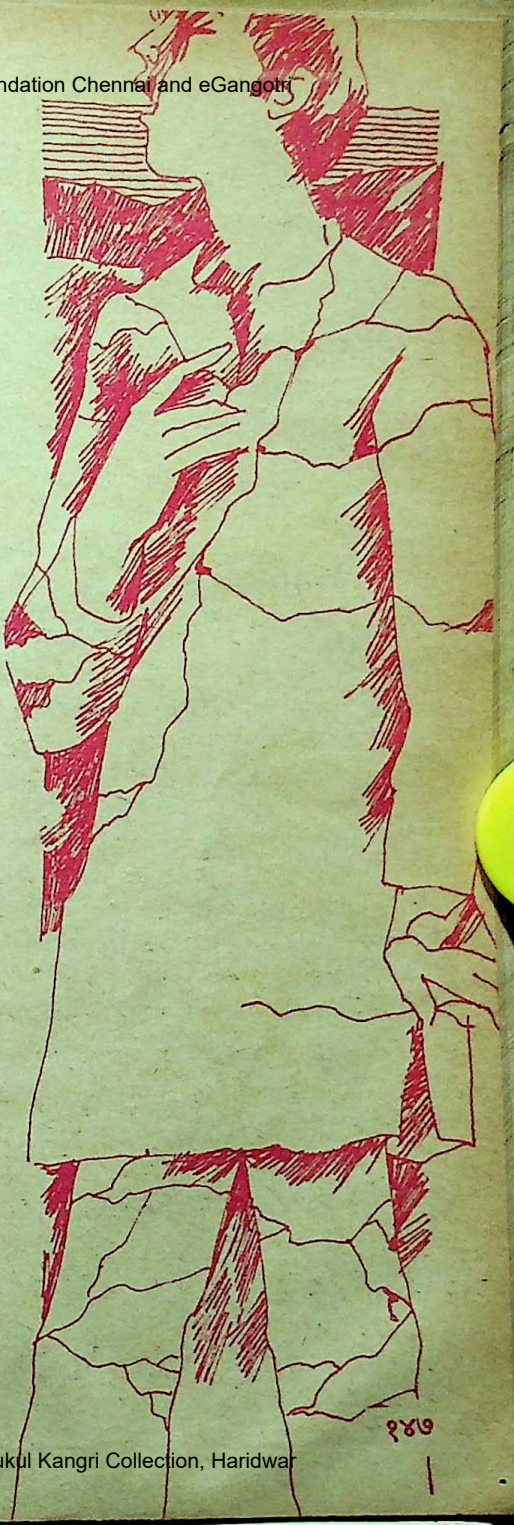

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समान स्मित-वदन वह झट बोल उठी थी—
"किया ही नहीं, कर भी रही हूं।"

मैं बहकावे में आकर पूछने लगा—
"इतनी ही शिद्दत से जितनी से कर रही हो ?"

सहज-भाव से बोली थी— "मैं तुलना नहीं कर सकती, प्रिय।" कहकर अपना सिर मेरी छाती पर रख दिया था। शरीर में एक झनझनाहट-सी सरसराने लगी थी। उसका सिर थपथपाते हुए अपनी स्थिति की बेचारगी के बोझ तले दबे पूछा था— परिणाम जीरो निकला था ?"

मैं लाजवाब-सा चुप रहा, कुछ क्षण। मन में आया जरूर कि कुछ और कुरेदूं; पर इस भय से कि कहीं यह भी ऐसे ही सवाल मुझसे न पूछने लग जाए, मैं खामोश रहा, बल्कि उसे कृत्रिम रति-क्रीड़ा में उलझाना चाहा। मुझसे पहले ही वह हुमक कर मेरे कपाल पर सस्वर चुंबन जड़ कर बोली—"हटाओजी इन पचड़ों को। क्या रखा है इनमें ? इसी क्षण की बात

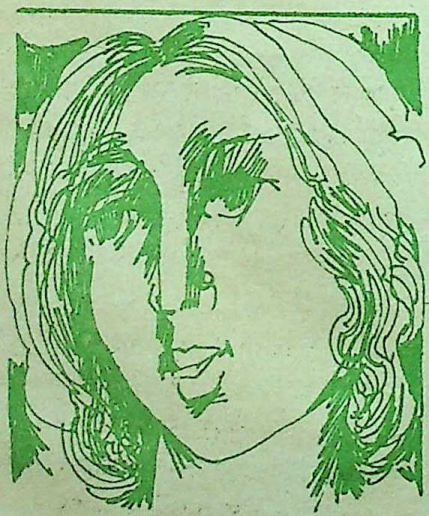

करो।... और मेरे छाती के बालों से अठखेलियां करने लगी थी।

उसकी ऐसी ही मोहक अदाओं की यादों में ही तो कल रात यह निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया था कि जरूर जाऊंगा और उसे साथ लिवा लाऊंगा, जैसे भी हुआ। याद पिंकी भी कम नहीं आती थी; यह अलग बात है कि लड़का होता तो बात ही दूसरी होती। पर जो 'है' वास्तव में, उसे 'चाहिए' की वेदी पर बलि चढ़ाना भी कहां की समझदारी है ?... मैं सोचता रहा था।

दरअसल, उस रात भी गलती मेरी ही थी। एक कॉक टेल पार्टी से धुत्त हो कर रात देर से घर लौटा था। पलंग पर धप से गिरते ही, न आव देखा न ताव, उस बेचारी सोई हुई को धर दबोच लिया था। हैरान— परेशान, लगी प्रतिरोध करने। पर मैंने उसकी एक न सुनी और लगा जोर अजमाइशी करने। फलस्वरूप सुबह होते ही वह घर से निकल पड़ी।

तभी तो उसने एक बार मेरी तरफ से ऐसी ही ज्यादती से तंग आ कर कह दिया था— "मुझे तो इस विवाह-प्रथा से ही घृणा होने लगी है। इसने तो स्त्री को एक कंजरी बना कर रख दिया है; इसके स्वतंत्र अस्तित्व को ताउम्र बेदाम गुलाम बना दिया है मर्द का।"....

मैंने धीरे से जब कहा— "बेदाम क्यों कह रही हो ? क्या उसे कीमती सुरक्षा नहीं मिलती बदले में न" तो वह अपने स्वाभाविक शान्त स्वर में कुछ सोचती हुई-सी बोली थी— "तुम ठीक कहते हो; पर यह बहुत ही, महंगा सौदा है उसके लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—"क्या विवाह को एक सौदा समझती हो ?"

—"तुम ही तो कह रहे थे कि वह प्यार के एवज में सुरक्षा पाती है। यह क्या व्यापार न हुआ ?"

—"विवाह का आधार तो प्रेम है न।"

—"मैं नहीं मानती यह। विवाह तो मजाक है प्रेम का। हां, आत्मीयता आधार हो सकती है; पर आत्मीयता भी प्रेम नहीं। प्रेम तो विलयन ही है। इसमें आत्मसुरक्षा की गुंजाइश ही कहां है ?"

तब उसी शाम को चाय पीते समय उसका टेलिफोन खनका था— "हम दोनों घंटेभर में आ रहे हैं।"

हमने चाय पीना तभी बंद कर दिया—अब इकट्ठे पियेंगे .... मैंने सोचा और एक पत्रिका लेकर बाहर के बरामदे में जा बैठा; कुछ देर बाद आंखें सामने सड़क पर बिछा दीं। वह स्कूटर में आईं। मैं उठ खड़ा हुआ। मुझ पर निगाह पड़ते ही उसने मेरी तरफ इशारा करते हुए पिंकी से कुछ फुसफुसाया। पिंकी देख कर तालियां बजाने लगी थी। मैं मारे खुशी के अपने पर जब्त न कर सका था। जोर से हांक लगाने लगा— अम्मा ऽऽ...मुक्ता ऽऽ...। और भाग कर गेट खोला। उनके पास पहुंचते ही पिंकी को उठा कर कंधे से चिपका लिया और लगा थपथपाने उसकी पीठ। कनखियों से देखा, मुक्ता का चेहरा खुशी से तमतमाने लगा था।....

अचानक ध्यान आया, जो अटैची-केस वह साथ ले गयीं थी, वह तो साथ नहीं लाई। मेरी सांस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीची ही अटकी रह गयी। पर उस समय चुप रहना ही श्रेयस्कर माना।

मुक्ता का पहला प्रश्न था— "अम्मा कैसी हैं ?"

मैंने हल्के मजाक में कहा— "तुम्हारे वियोग ने तो अच्छे भले को भी बीमार कर दिया है, तो पहले से बीमार की हालत क्या होगी। तुम बखूबी अंदाजा लगा सकती हो।"

—"ठीक-ठीक बताओ न, मजाक ...."

तभी उसे बरामदे में अम्मा दीख पड़ीं और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज-तेज कदमों से उधर चल पड़ी। मैंने छोटू को आवाज दे कर चाय बनाने के लिए कहा।"

—"मैं तो पी कर ही आ रही हूं।"

—"कोई बात नहीं, सर्दी है।"

चाय की पहली चुस्की लेकर मैंने पूछा—"कहां चली गयी थी, इतने सवेरे ?"

—"सुविधा कोहली के पास।"

—"वही, तुम्हारी कुलीग ?"

उसने हां में केवल सिर हिला दिया।— तू वहां गयी क्यों ? यह सवाल मन से उठकर जबां तक पहुंचने ही वाला था कि ख्याल आया कि इस सवाल-जवाब में कहीं मेरा भंडा न फूट जाय अम्मा के सम्मुख, मैं चुप रहा। फिर भी यह तो पूछ ही लिया—"अटैचीकेस नहीं लाई साथ ?"

सिर झुकाए वह धीरे से बोली— "इसलिए कि थोड़ी देर बाद वापस जाना है।"

सुनते ही मैं अवाक् रह गया। कुछ क्षण, कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि क्या कहूं। आखिर पूछा—"क्यों ?"

उसका सहज उत्तर था— "कुछ समय मैं अकेली रहना चाहती हूं।"

मां तब उससे संबोधित हुईं— "छोड़ो बहू अब ...। माफी मांग रहा है, बेचारा। तुम तो बड़े दिलवाली हो न।, बिटिया।"

वह देर तक सिर नीचा किये, पता नहीं क्या सोच रही थी। फिर बड़े धैर्य से दृढ़ स्वर में बोली— "अम्मा, आप की कसम, मेरे दिल में अब रती भर भी कड़वाहट नहीं। माफी का भी कोई सवाल नहीं। जो भी आदमी एक वक्त कुछ करता या कहता है, उससे हट कर उससे अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। जो कोई है, वह है ... अरे ! मै बहक गयी ! अम्मा, माफ करना। मैं बिनती करती हूं, मुझे कुछ समय आप ... अलग रहने दीजिए।"

"ना बेटी", मां झट बोल उठीं, लोग क्या कहेंगे ?"

इसने कहा— "लोग तो कहते ही रहते हैं, किसी का मुंह हम बंद नहीं कर सकते। ... मैं सच कहती हूं अम्मा, मुझे आप लोगों ने लौट आने पर मजबूर कर दिया तो मैं ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह पाउंगी।

अम्मा और मैं चिहुंक कर एक-दूसरे को देखने लगे। घना-बोझिल सन्नाटा छा गया। उसी ने मौन तोड़ा— अच्छा, आज्ञा चाहती हूं। कह कर उठ खड़ी हुई। मैं और अम्मा बुत बने बैठे रहे। उसने हम दोनों को बारी-बारी नमस्कार किया, पिंकी को गोद में थामे स्थिर कदमों से लौट चली। ..

खैर, जो हुआ सो हो गया; अब उपहार क्या-क्या हो कल के लिए ?

ऐन पांच बजे मैं उनके क्वार्टर के सामने पहुंच गया था। देखा, हमारी पुरानी आया और एक सुदर्शन युवक भाग-भाग कर गुब्बारे-झालरें टांग रहे हैं। रुकती कार पर निगाह पड़ते ही आया ने मुझे पहचान लिया और 'बीबीजी ऽऽ सा ऽऽब' हांक लगाती मेरी तरफ आयी। पीछे-पीछे वह युवक और मुक्ता हंसते-ठहाके लगाते नजर आये। एक लंबा-ठंडा सांस मैंने लिया और छोड़ दिया। दिमाग पर कई सवालों के हथोड़े बजने लगे—यह युवक कौन है ? इसकी क्या लगती है यह ? साथ रहता है इसके ? ... मुक्ता ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले मेरा परिचय कराया— आप पिंकी के पापा, मिस्टर अनिल। ... और आप हैं, मेरे कुलीग दूरदर्शन में, मिस्टर जे. पी. आनन्द। आपने इन्हें जरूर देखा होगा हिंदी सीरियल में। नये-नये ही हैं।

मैंने गुलदस्ता भेंट करते हुए कहा— "बधाई हो।" "थैंक यू" उसने मुस्कराते हुए ग्रहण किया और हम अंदर चल दिये। कुछ और लोग भी वहां थे। सबसे औपचारिक 'हेलो-हेलो' के बाद मैंने पिंकी को कंधे से लगा लिया और मुक्ता को एक तरफ बुला कर साड़ी का डिब्बा और इस पर रखा चेक उसके हाथ में थमा दिये। "सो काइण्ड ऑफ यू', उसने कृतज्ञता प्रकट की।

मोटर में बैठकर ज्यों ही इसे स्टार्ट किया, याद आया— अरे ! मैंने तो इन्हें साथ ले जाना था। अम्मा ने खास ताकीद की थी— बेटा ! किसी तरह भी बहू को राजी कर के साथ लाना जरूर। ... गाड़ी बंद कर दी। सोचा—चलूं, समझा-बुझाकर देख तो लूं, इसका अपना क्या रुख है। ...अगर वह चलने को तैयार हो गयी तो ? नहीं-नहीं, मेरे लायक अब यह नहीं रही। गाड़ी स्टार्ट की और चल दिया।

सारे रास्ते सोचता आया— यह मैंने क्या किया ? क्या करने आया था और कर क्या दिया ? मां को क्या जवाब दूंगा ? क्या उन्हें कह पाऊंगा कि वह तो किसी दूसरे युवक के चंगुल में फंस चुकी है ? मां भी तो क्या वह विश्वास कर पायेंगी ? क्या मैं खुद भी पूरे शक्की-मिजाज हो गया हूं। स्टीयरिंग पर हाथ शिथिल पड़ने के कारण गाड़ी डोलने लगी थी। सप्रयास अपने को संयत किया और मुश्किल से घर पहुंचा।

अब, क्या पता कब मौका आए फिर मिलने का ? क्या जानू कितनी और ऐसी सर्द रातें ठिठुरते गुजारनी होंगी ? भुगतना पड़ेगा अपनी करनी का फल, अवश्य। ओऽहोऽऽहोऽऽऽहो ! इतनी कड़ाके की सर्दी तो मेरी सारी उम्र में नहीं पड़ी।

—डी-६३ हौज खास, नयी दिल्ली-११००१६

ज्ञान-गंगा

इच्छंति देवाः सुत्वंतं न स्वप्नाय स्पृहयंति।
(ऋग्वेद ८/२/१८)

— देवगण कर्मशील पुरुष को चाहते हैं। वे आलसी पुरुष को नहीं चाहते।

तृणोनापि प्रयोजनमस्ति किं पुनर्न पाणिपादवता मनुष्येण।
(नीतिवाक्यामृतम् ३२/२९)

— तृणा की भी मनुष्य को जरूरत पड़ती है फिर हाथ-पैर वाले मनुष्य की जरूरत के विषय में क्या कहना ?

यथा कर्म तथा लाभ इति शास्त्रानिदर्शनम्।
(शांतिपर्व १७६/२०)

— जैसा कर्म होता है, वैसा लाभ होता है— यह शास्त्र का कथन है।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

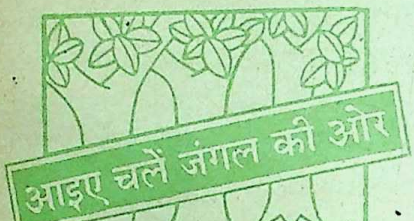

परिवर्तन आवश्यक है। प्रत्येक प्राणी वृद्धि करता है। इस बदलाव में कोई अपनी त्वचा छोड़ता है, कोई पंख और कोई स्केल। जानवरों पर अकसर पराश्रित कीट चिपके रहते हैं। उनको त्वचा से आसानी से नहीं निकाला जा सकता है। जैसे चीलर, जुएं, पिस्सू आदि। देखिए इन चित्रों में कितने प्रेम से वे एक दूसरे को सहयोग दे रहे हैं। कभी-कभी गुस्से को शांत करने के लिए भी ऐसा व्यवहार जानवर करते हैं। 'सामाजिक एकता' को मजबूत करने में यह हाव-भाव रोचक हैं।

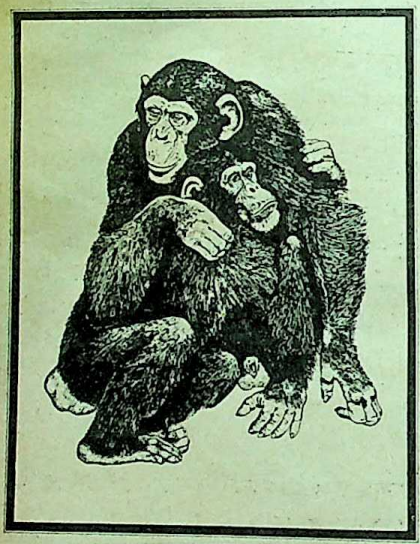

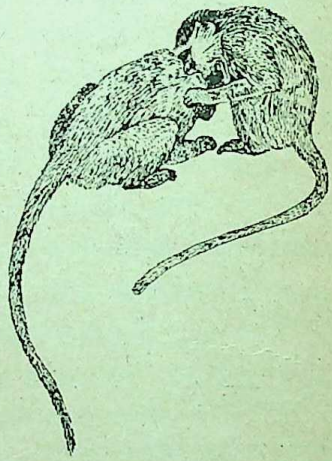

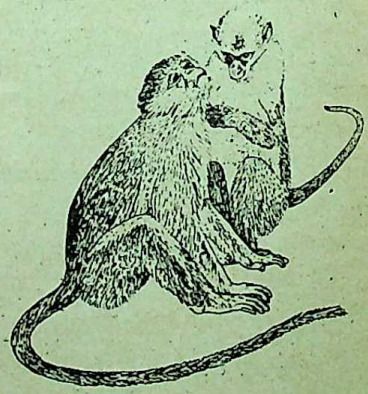

आलिंगन

आप माने न माने पर यह वैज्ञानिक सत्य है कि आलिंगन मनुष्य ही नहीं संपूर्ण स्तनधारी (मैमेलियन) करते हैं। विकास की दृष्टि से मनुष्य के करीब पाये जानेवाले वनमानुष अंकपाश में लेने का व्यवहार अपने से छोटे के साथ करते हैं। आलिंगन से वे प्यार ही नहीं प्रदर्शित करते, वरन कभी-कभी यह भी जताते हैं कि मैं तुमसे बड़ा हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर और मादा गुण एक साथ

नर और मादा कोशाओं के आपसी संयोग को 'गाइनेंड्रोमार्फ' कहते हैं। ड्रोसोफिलिया फल की मक्खी में ऐसे मिश्रित लक्षण मिलते हैं। इस प्रकार के लैंगिक मिश्रण तब उभरते हैं, जब कोशा विभाजन के समय एक्स क्रोमोजोम खो जाता है, तब उसकी पूर्ति के लिए (वाई) क्रोमोजोम जुड़ जाता है। इस प्रकार क्रोमोजोम के खोने से नर और मादा के विचित्र लक्षण वाला कीट पैदा हो जाता है। इस कीट का आधा भाग नर और आधा भाग मादा से युक्त होता है।

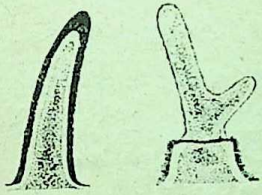

सींग और मृग-श्रृंग (एंटलर्स)

अधिकांश लोग इस बात से परिचित नहीं हैं कि सींग और मृग-श्रृंग (एंटलर्स) में क्या अंतर है। सींग त्वचा की बाहरी पर्त एपिडर्मिस की वृद्धि है। यह धीरे-धीरे बढ़नेवाली हड्डी है, जो तने हुए तंतुओं और बालों से ढकी होती है। जबकि एंटलर्स (मृग-श्रृंग) खोपड़ी के निश्चित हिस्से पर से उगते हैं, और हर समय ये उगते ही रहते हैं। यह श्रृंग त्वचा से बने होते हैं, और महीन बालों से घिरे रहते हैं।

चहचहाट एक दूसरे की पूरक

'युगल' चिड़ियाएं जीवनभर एक दूसरे के ही बनकर रहते हैं। इस काम में सहायक होती है उनकी प्रजाति की गाथा। प्रायः जब चिड़ियाएं जन्म लेती हैं, तब प्रजाति के गाने को विभिन्न हिस्सों में तोड़कर वे एक दूसरे के पूरक के रूप में गाती रहती हैं। यह तारतम्य उनके जीवन पर्यंत चलता रहता है। प्रकृति के अद्भुत संयोजन की यह मिसाल अनुकरणीय है। इसीलिए आप यदि ध्यान से उनकी चहचहाट सुनें तो एक जब चहकती है तो उसकी लय तब ही पूरी प्रतीत होती है, जब दूसरी चहकती है। उनकी यह आपसी चहचहाट मधुर लय का आभास देती रहती है।

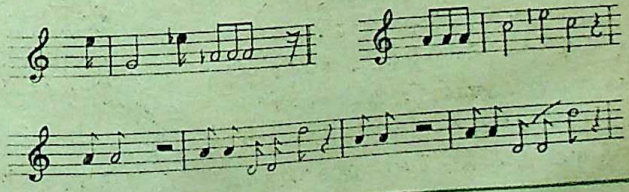

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- इस संबंध में मत है कि अधिकतर लोगों के लिए आजकल प्रेम भावनाहीन, आदर्शरहित तथा कोरा रह गया है
- दरअसल, प्रेम एक ऐसी भावना है, जो हमारे मन की कोमलतम अनुभूति से जुड़ी होती है और इसी अनुभूति से आदर्श भी प्रस्फुटित होता है।
- आज के जमाने में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सिर्फ प्रेम संबंध बनाये रखना चाहते हैं।
- जहां तक प्रेम का प्रश्न है, मैं कहना चाहूंगा कि आज प्रेम का स्वरूप ही पूरी तरह से परिवर्तित हो गया है।

क्या प्रेम-संबंधों में आदर्श कोरा है ?

आयोजक : प्रदीप श्रीवास्तव

'प्रेम' शब्द में ही एक मिठास व विश्वास छुपा है

—कुमारी रीता नारायण

हमें आरंभ से ही प्रेम से रहने की शिक्षा दी जाती है। पर आज जब युवा वर्ग के बीच प्रेम शब्द आता है, तो अधिकांशतः लोगों के चेहरे पर शर्म का गुलाबी रंग आ जाता है या आंखें झुक जाती हैं। पर मेरी समझ से तो ऐसा करना या होना प्रेम की

क्या 'प्रेम' की कोई सर्व-स्वीकृत परिभाषा दी जा सकती है। शायद नहीं, क्योंकि हर उम्र, हर स्थिति में इसका रूप भिन्न होता है। इसकी व्याख्या करते समय 'पवित्र प्रेम', 'अमर प्रेम', 'निश्छल प्रेम' आदि शब्दों का हम प्रयोग न जाने कब से करते आ रहे हैं। यहां तक कहा गया कि प्रेम अपवित्र होता ही नहीं है। बदलते परिवेश के साथ-साथ लोगों के विचार भी बदलते जा रहे हैं।

क्या सोचता है आज का युवा वर्ग। पढ़िए उनके विचार :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिभाषा को संकुचित करना है। फिर प्रेम के तो कई रूप हैं और प्रेम कैसा भी हो, इस शब्द में अपने आप में एक मिठास, विश्वास तथा आदर्श छुपा होता है। पर सवाल यह है कि क्या हम इस प्रेम के आदर्श, विश्वास या मिठास को बनाये हुए हैं या ये सब सिर्फ कोरा है।

इस संबंध में मत है कि अधिकतर लोगों के लिए आजकल प्रेम बिलकुल भावनाहीन, आदर्शरहित तथा कोरा रह गया है।

इसका मुख्य कारण शायद यह है कि हमारा अपना दृष्टिकोण प्रेम के संबंध में बहुत ही संकुचित है और रही-सही कसर पूरी करता है हमारा फिल्मी-समाज और समाज का नैतिक पतन। अगर हम शुरू से ही लड़के या लड़कियों के दिमाग में यह न बिठाएं कि वे एक-दूसरे से अलग हैं तथा यदि उन्हें शुरू से ही एक-दूसरे से खुलकर मिलने दें, तो शायद उनके बीच दोस्ती और सहयोग तो बढ़ेगा ही। साथ ही एक दूसरे के प्रति उनकी सेक्स के प्रति आकर्षण भी पैदा नहीं होगा। और तभी प्रेम का आदर्श भी बरकरार रह सकेगा।

नहीं, प्रेम-संबंधों में आदर्श कोरा कतई नहीं होता, बल्कि देखा तो यह जाता है कि अधिकांश प्रेम संबंध आदर्श के धरातल पर जन्म लेते हैं और आदर्श बनकर रह जाते हैं। दरअसल, प्रेम एक ऐसी भावना है, जो हमारे मन की कोमलतम अनुभूति से जुड़ी होती है और इसी अनुभूति से आदर्श भी प्रस्फुटित होता है। अतः हम प्रेम को आदर्श से अलग करके विश्लेषित नहीं कर सकते। लेकिन, समय और समाज ने प्रेम को अलग-अलग रूप में जाना है, अलग-अलग मानक बनाये हैं। आदर्श का एक मानक प्राचीनकाल से अभी तक प्रेम के साथ गुंथा रहा है। हालांकि, इस आदर्श की परिभाषा समय-समय पर बदलती रही है।

प्रेम-संबंधों की सफलता का मुख्य कारण निःसंदेह आदर्श होता है। एक आदर्श को लेकर चलनेवाला प्रेमी-युगल एक ऐसी मानसिक व आंतरिक शक्ति से भरपूर होता है कि उसके लिए बाधाओं को पार करना मुश्किल नहीं होता।

प्रेम और आदर्श एक-दूसरे के परिपूरक हैं

—संजय कुमार त्रिपाठी

सच्चे प्रेम में आदर्श कोरा नहीं हो सकता

—कुमारी अपराजिता मिश्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे समाज में आज भी प्रेम एक बहुचर्चित विषय है। एक जमाने के प्रेमियों की कहानियों जैसे, लैला-मजनू, सोनी-महिवाल, रोमियों-जूलियट आदि का हमारे समाज पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा है कि कई ऐसे लोग आज भी हैं, जो प्रेम नाम के शब्द से दूर रहना ही पसंद करते हैं और जो प्रेम करते हैं वे या तो अमर हो जाते हैं, माता-पिता के दबाव से अलग हो जाते हैं या फिर शादी के बंधन में बंध जाते हैं।

भारत की अधिकांश फिल्में भी प्रेम के विषय को लेकर ही बनायी जाती हैं। फिल्मों के असर से और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से आज की पीढ़ी का प्रेम का अहसास उन दिनों की पीढ़ी के अहसास से शायद कुछ भिन्न है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से यह पीढ़ी इस उम्र में प्रेम-संबंध रखना तो चाहती है पर निभाना नहीं चाहती। और जो निभाना चाहते हैं वे किन्हीं कारणवश निभा नहीं पाते।

समाज में जब तक भारतीय सभ्यता जिंदा है, तब तक सच्चे प्रेमियों के संबंधों में आदर्श कोरा नहीं हो सकता, हां, नसीब खोटा जरूर हो सकता।

—अनिल कुमार

आज प्रेम का स्वरूप ही बदल गया है

हां इक्कीसवीं शताब्दी की सरहद की तरफ उन्मुख आदमी के लिए आदर्श एक सुनने-सुनाने का मुद्दा भर रह गया है। उसकी अपनी भागती एवं तमाम विषमताओं से भरी जिंदगी ही उसे त्रस्त किये हुए है।

जहां तक प्रेम का प्रश्न है, मैं कहना चाहूंगा कि आज प्रेम का स्वरूप ही पूरी तरह से परिवर्तित हो गया है। पहले प्रेम एक निःश्छल एवं पवित्र भावना का नाम था, जिसमें एक दूसरे के प्रति मर्यादित दायरे में भावनात्मक समर्पण होता था। मर्यादित होने के नाते समाज के सभी तबकों में इसे आदर की दृष्टि से देखा जाता था।

मगर समय बीतने के साथ-साथ सामाजिक दायरों में आयी सिकुड़न तथा अपनी संस्कृति से नितांत भिन्न आयातित संस्कृति के मेल के फलस्वरूप जो एक नयी विचारधारा प्रचलित हुई, उसने प्रेम को उसके नैतिक धरातल से एकदम ढकेलकर उसके आदर्श स्वरूप को चकनाचूर कर दिया। अब तो प्रेम करना मात्र एक बहाना है, जिसके माध्यम से एक पक्ष दूसरे से अपनी इच्छा की पूर्ति करने का अवसर खोजता है। जब तक यह अवसर प्राप्त नहीं होता, तब तक तो यह 'आदर्श' बना रहता है। मगर अवसर की प्राप्ति होते ही कहां का आदर्श कैसा आदर्श ? 'मंतव्य' हावी हो जाता है आदर्श पर। दूसरे शब्दों में आज प्रेम में आदर्श की भूमिका एक छलावा से ज्यादा कुछ भी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन में सुना और पढ़ा था कि कालापानी नाम की एक जगह है। जिस अपराधी को देश निकाला देना होता था उसे कालापानी भेज दिया जाता था। इनमें अपराधी तो होते ही थे स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सैनानी भी होते थे। मैं जब बड़ा हुआ और नौकरी करने लगा तो मुझे शिक्षा निदेशक के रूप में कालापानी भेजा गया—यानी अंदमान निकोबार, पोर्ट ब्लेयर इसकी राजधानी है। कई वर्षों तक मैं वहां रहा। मैं कह सकता हूं अब अंदमान निकोबार द्वीप समूह कालापानी नहीं है। यह सौंदर्य लोक है और पर्यटन के लिए सर्वोत्तम है।

पोर्ट ब्लेयर पानी के जहाज से पहुंचा जा सकता है। जहाज कलकत्ता से चलता है और १२३५ किलोमीटर दूर पोर्ट ब्लेयर पहुंचता है। मद्रास से भी जाया जा सकता है। अब तो हवाई जहाज से भी पोर्ट ब्लेयर जुड़ गया है इसलिए आसानी से विमान द्वारा पहुंचा जा सकता है।

ठंड का न नाम न काम

अंदमान के सभी द्वीप तथा ग्रेट निकोबार ऐसे पर्वतीय भ्रमण स्थल हैं जहां समुद्र का अथाह नीला जल चारों ओर फैला है। घने सदाबहार वन भी देखने को मिलते हैं। इन पर्वतीय स्थलों में वर्षपर्यंत ठंड का न नाम है न काम। यहां की सुंदर दृश्यावली वायुयान से ऐसी दिखाई देती है मानो नीली पृष्ठ भूमि पर वनों और नारियल के झुरमुटों का हरा गलीचा बिछा दिया गया हो। लहराती बलखाती समुद्री पानी की खाड़ियां द्वीपों की धरती को अंदर घुस कर उन्हें घेरती मालूम देती हैं।

इन द्वीपों में न तो बड़े-बड़े आरामदायक

लहलहाते नारियल

अंदमान निकोबार का शांत और विवादरहित क्षेत्र विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है।

अंदमान अब कालापानी नहीं है

● डा. सोमदत्त दीक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

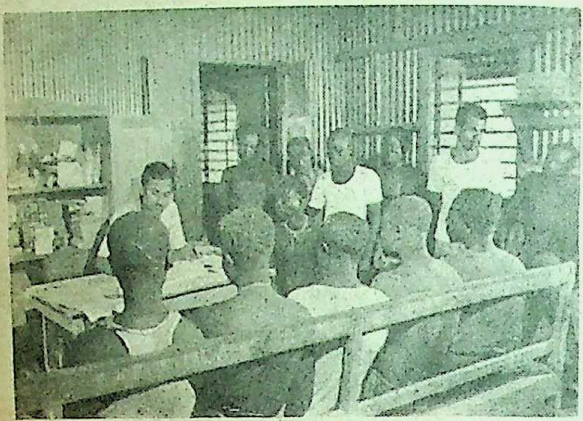

आदिवासी, सभ्यता की ओर

पांच सितारा होटल हैं (पोर्ट ब्लेयर में एक है), न ही कैसिनो जैसे जुए के अड्डे अथवा नाइट क्लब हैं। यहां एकमात्र परिवहन का साधन बस अथवा टैक्सी है। फिर भी विदेशी और देशी पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष निरंतर बढ़ती जा रही है। लोग पाषाण युगीन सेंटीनली, जरवा, ओंगी, अंदमानी और शोपेन आदिवासियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने; वनस्पति और प्राणिविज्ञान के अद्भुत नमूने देखने व एकत्र करने के लिए दूसरे देशों से आते रहते हैं।

अंदमान में अब पर्यटन विकास के लिए सस्ते और महंगे होटल चलाने, मनोरंजन केंद्र खोलने, यातायात के साधन जुटाने, प्रचार और विज्ञापन का देश के अंदर व विदेशों में विस्तार किया जा रहा है। प्रयास किए जा रहे हैं कि भारतवर्ष में प्रतिवर्ष कम-से-कम दस लाख विदेशी पर्यटक आया करें। अंदमान निकोबार का शांत और विवादरहित क्षेत्र विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है।

हमारे द्वीपों के सुरम्य समुद्रतट और समुद्र-स्नान स्थल तथा समशीतोष्ण वातावरण अनेक देशी और विदेशी सैलानियों को बार-बार आने के लिए प्रेरित करते हैं। इन द्वीपों में अनेक व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पर्यटन-उद्योग में व्यवसाय मिल सकेगा। इस समय भारत में लगभग पैंतालीस लाख लोग पर्यटन-उद्योग में काम कर रहे हैं।

सरकारी प्रबंध

भारत के विभिन्न प्रदेशों से द्वीपों तक पहुंचने के लिए भारत सरकार ने कई प्रबंध किये हैं।

वायुमार्ग से कलकत्ता से प्रति मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को प्रातः छह बजे बोइंग वायुयान लगभग दो घंटे में पोर्टब्लेयर वायुपत्तन पर पहुंच जाता है। इसी तरह मद्रास से भी वायुयान प्रत्येक रविवार, बुद्धवार और शुक्रवार को चलकर पोर्टब्लेयर पहुंचता है। इन्हीं दिनों में प्रातः नौ बजे पोर्टब्लेयर से वायुयान कलकत्ता अथवा मद्रास लौट जाता हैं।

जलमार्ग से कलकत्ता, मद्रास और विशाखापत्तनम तथा पोर्टब्लेयर के बीच जलयान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारे द्वीपों के सुरम्य समुद्रतट और समुद्र-स्नान स्थल तथा समशीतोष्ण वातावरण अनेक देशी और विदेशी यात्रियों को बार-बार आने के लिए प्रेरित करते हैं।

ते रहते हैं। मौसम और जलयान की दशा अनुसार, जहाज लगभग चार से पांच दिन में ा पूरी करते हैं। 'हर्षवर्धन' पूरा अनुकूलित जलयान है और प्रायः कलकत्ता पोर्टब्लेयर के बीच चलता है।

पोर्टब्लेयर से मद्रास जाते समय कार निकोबार द्वीप मार्ग में पड़ता है। इसी तरह ा बंदर उत्तरी अंदमान का द्वीप कलकत्ता ों पर पड़ता हैं। पोर्टब्लेयर से अंदमान द्वीपीय लयान मध्य और उत्तरी अंदमान तथा लिटिल दमान, कार निकोबार, कचाल, ननकौरी और निकोबार के लिए मिलते हैं। यहां वेल-बे बंदरगाह से पर्यटक पिगमैलियन ट तक की यात्रा करके शाम को जहाज ने से पहले लौट कर आ सकते हैं। वायुयान अथवा जलयान द्वारा द्वीपों की ा पर आने वाले यात्रियों को सुविधा के लिए ई अड्डे अथवा बंदरगाह पर टैक्सियां और ी बसें आदि मिल जाती हैं। पोर्टब्लेयर के य बस अड्डे से बसें शादीपुर, सरकारी प्रेस, गांव आदि होती हुई कारबाइंस-कोव क (बीच) सागर तट पर स्नान-स्थल के र मिलती हैं। कारबाइंस-कोव लगभग १२ .मी. की दूरी पर है। इसी तरह कई बसें ड़िया टापू तक जाती हैं। जहां सागर तट पर

आदिवासी तीर से मछली मारता हुआ

प्राकृतिक सुषमा के दर्शन करते हुए शंख-सीपी और कौड़ियां बालू में तलाश की जाती हैं। सीपी घाट के लिए बस मिलती हैं और सीपी घाट में गर्म मसालों और फल-फूल के सुंदर बगीचे की तरफ अब बंबई के कुछ फिल्म निर्माताओं का ध्यान भी आकर्षित हो चुका है। कुछ बसें तीस कि.मी. दूर वंडूर सागर तट तक ले जाती हैं जहां छोटी-छोटी नावों द्वारा थोड़ी दूरी पर स्थित छोटे द्वीपों ग्रब, रेडस्किन व जालीब्वाय तक जाया जा सकता है। इन द्वीपों के पास पानी शीशे की तरह निर्मल है—नीचे देखने पर कोरल का बगीचा, जेलीफिश व तितली मछली की तरह दिखाई देते हैं। इस क्षेत्र में और इसके पास के छोटे द्वीपों में समुद्र स्नान का मजा निराला है।

पोर्टब्लेयर शहर में भी बहुत कुछ देखने लायक है। पोर्टब्लेयर ही इस द्वीप समूह में एकमात्र नगर है और शेष सभी द्वीप ग्रामीण क्षेत्र माने जाते हैं। लगभग ५५ हजार की आबादी वाले इस नगर में भारतवर्ष के सब क्षेत्रों से आए हुए लोग और सभी बोलियां बोलने वाले मिल सकते हैं। पोर्टब्लेयर भारत की एकता का जीवित, जागृत और ज्वलंत उदाहरण पेश करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। पोर्टब्लेयर से किसी भी द्वीप में आसानी से पहुंचा जा सकता है।

अजीब कोठरियों का निर्माण

पोर्टब्लेयर की सैलूलर जेल एक राष्ट्रीय स्मारक है। जिसके केंद्रीय गुंबद से सात दिशाओं में तीन मंजिलों पर १००-१०० काल कोठरियां निकलती थीं। १८९६ से १९०६ तक १० वर्ष की अवधि में इसका निर्माण किया गया था। इसकी ६९८ कोठरियों में कैदी रखे जाते थे। इस बात का ध्यान रखा गया था कि कोई कैदी अपनी कोठरी से दूसरे कैदी को देख न सके। प्रत्येक कोठरी चार मीटर लंबी और २.७ मी. चौड़ी होती थी और उसमें ३ मी. की ऊंचाई पर लोहे की सलाखों से युक्त एक रोशनदान होता था। देश के महान सपूत जैसे वारींद्र नाथ घोष, वीर सावरकर, भाई परमानंद, पंडित परमानंद और बाबा पृथ्वी सिंह आजाद आदि ने इस जेल में अनके वर्ष बिताए थे। पर्यटक आज केवल ७ खंडों में से ३ खंड देख सकते हैं। बाकी खंड गिराकर गोविंद वल्लभ पंत अस्पताल बन चुका है। कालापानी की सजा पाने वाले कैदियों के कपड़े, चित्र, हथकड़ी-बेड़ियां, सजा में दिए जाने वाले काम और दंड देने की विधियों को एक संग्राहालय में प्रदर्शित किया गया है। यहां के फांसी घर में ३ लोगों को एक साथ फांसी पर चढ़ाने की व्यवस्था भी देखने को मिलती है।

हैड्डो बंदरगाह के समीप समुद्र के ऊपर एक पुल से जुड़ा हुआ छोटा-सा चैथम द्वीप है। इस द्वीप पर अंगरेजी जमाने में एशिया की सबसे बड़ी आरा मशीन का कारखाना खोला गया था। पर्यटक यहां पर पैडोक, कोको, चुगलम, पारवाल वुड, और सैटिन-वुड जैसी बहुमूल्य इमारती लकड़ियों के नमूने देख सकते हैं।

पोर्टब्लेयर में एंथ्रोपोलोजी विभाग का संग्रहालय भी दर्शनीय है। यहां पर इन द्वीपों की आदिमजातियों के रहने के आवास, शस्त्र प्रयोग की वस्तुओं और चित्रों के नमूने देखकर आज भी प्राचीन युग की याद ताजा की जा सकती है।

यहां के छोटे चिड़ियाघर में इन द्वीपों में पाए जाने वाले पशु-पक्षियों के दर्शन किए जा सकते हैं।

मत्स्य विभाग का संग्रहालय लगभग ३५० किस्म के समुद्री प्राणियों के बारे में ज्ञान कराता है और यहां पर तरह-तरह की मछलियों और अन्य जलचरों और समुद्र में पाये जाने वाले बिरले कोरल शंख और सीपियों के नमूने देखने को मिल सकते हैं। समुद्र में पाई जाने वाली बहुमूल्य वस्तु अमबर—जिसको आधार बनाकर विदेशों में इत्र आदि बनाए जाते हैं वह भी यहां देखने को मिल सकती है।

अंदमान निकोबार में कार्बाइंस कोव, रास द्वीप, माउंट हैरियट, सिप्पीघाट फार्म, मधुबन, चिड़िया टापू, वांडूर समुद्र, स्नान स्थल, राइट म्यो, बर्मा नाला, रंगत, माया बंदर, डिगलीपुर, कमोर्टा; बमपोका द्वीप, कचाल, ग्रेट निकोबार ट्रिंकेट, तिलनघोंग द्वीप, युलोमिलो, लिटिल निकोबार द्वीप, कोंडूल द्वीप आदि स्थान दर्शनीय हैं।

— ज्वाइंट एज्यूकेशनल एडवाइजर
मानव संसाधन मंत्रालय
शास्त्री भवन, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

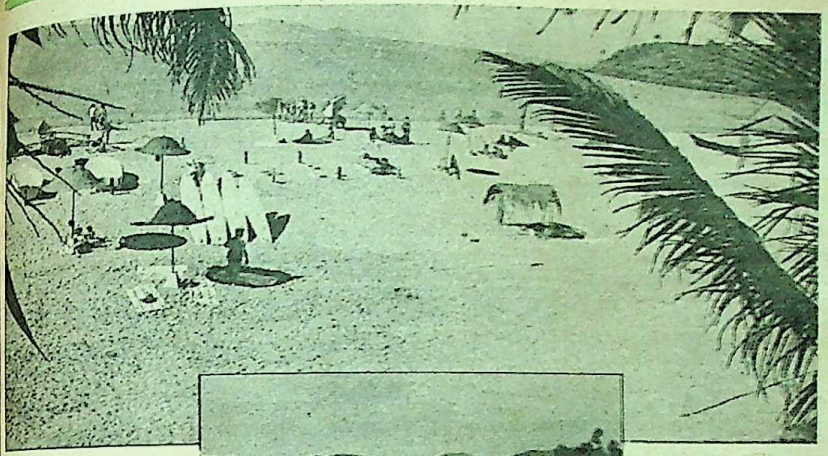

समुद्र तट का सौंदर्य क्षेत्र गोवा

—कमला मनकेकर

गोवा की खूबसूरत भूमि पर्यटकों के लिए वास्तव में स्वर्ग है। यह हर तरह के लोगों का मुक्त कंठ से स्वागत करती है। शहर के बोझिल, शोरयुक्त और तनावग्रस्त लोग यहां के ताजे जंगलों में शांति और चैन पाते हैं। भक्तगण यहां के गिरजाघर और मंदिरों में आध्यात्म की तलाश कर सकते हैं और शुद्ध पर्यटकों के लिए गोवा में खूबसूरत और सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होटलों का प्रबंध है।

गोवा; परशुराम सृष्टि

प्राचीन ग्रंथों में गोवा को परशुराम-सृष्टि के नाम से पुकारा गया है। कहते हैं कि परशुराम ने इस क्षेत्र को महाबली समुद्र से छीनकर, उत्तर के पहाड़ों से आये ब्राह्मणों को ध्यान और तप करने के लिए दिया था। श्रुति संहिता में इसे गोवापुरी के नाम से पुकारा गया है। गोवापुरी की लंबाई सात योजन अर्थात लगभग १४० किलोमीटर बतलाई गयी है। वर्तमान गोवा की लंबाई भी इतनी ही है। ऐसा भी विश्वास किया जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि महाभारत में वर्णित प्राचीन कोंकण के साथ भागों में से एक गोवा-राष्ट्र वर्तमान गोवा ही है।

रास्ते तय करता गोवा

ईसा से दो शताब्दी पूर्व आते-आते यह क्षेत्र दक्षिण के राजाओं के प्रभाव में आ गया। सातवाहन राजाओं ने गोवा में शासन किया; छठी शताब्दी में चालुक्य वंश और उनके बाद राष्ट्रकुट और कदंब का शासन रहा। और मध्यकाल में विजयनगर के राजाओं के अधीन रहा था। विजयनगर के पतन के बाद बीजापुर के आदिल शाही सुल्तानों का युग आया। सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में गोवा पुर्तगालियों के हाथ में आ गया। पुर्तगालियों के साथ ही गोवा में ईसाई धर्म और लातीनी संस्कृति का आगमन हुआ। पश्चिमी घाट के सहैयाद्री पहाड़ों और अरब सागर के बीच स्थित गोवा का लगभग एक तिहाई हिस्सा उष्ण और काजू के वनों से भरा हुआ है। जल इस भू-दृश्य का एक विशिष्ट आकर्षण है। विभिन्न प्रकार के खूबसूरत झीलों और छोटी-बड़ी नदियों से भरपूर गोवा की छटा निराली है। इन नदियों में जुआरी और मांडवी प्रमुख हैं। इन्हें प्राचीन ग्रंथों में गोमती और अग्नि-नाशिनी का नाम दिया गया हैं।

गोवा का समुद्र तट पर्यटकों के लिए विशेष तौर पर चर्चित रहा है। धान के खेत और उनके आसपास आम, काजू और कटहल के बागीचे, पेड़ों से लदे पहाड़, मकबेर, विरासत में मिले ऐतिहासिक अवशेष, मछलियां पकड़ते मछुआरे और फलों-फूलों की खूशबू से भरी ताजी हवा—गोवा के आकर्षण में चार चांद लगा देती है। गोवा में मुख्य रूप से हिंदू और इसाई जनसख्या बसती है। सांप्रदायिक सद्भावना जिसमें दोनों संप्रदाय के लोग एक दूसरे के त्यौहारों और रीति-रिवाजों में पूरी श्रद्धा से शामिल होते हैं। गोवा के मेहनती और ईमानदार लोग आमोद-प्रमोद प्रेमी हैं। नृत्य जैसे सामाजिक उत्सवों के मजे का वर्णन तो किया ही नहीं जा सकता।

मंदिर और गिरजाघर

पुर्तगालियों ने गोवा में विशाल गिरजाघरों का निर्माण किया। इसीलिए गोवा को "पूर्व का रोम" भी कहा जाता है। बोम जीसेज का भव्य चर्च तो पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। इसी में गोवा के प्रसिद्ध संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर सुरक्षित रखा हुआ है। बोम जीसेज के अलावा सी केथेडरल, संत काजेटन और असीसी के संत फ्रांसिस के गिरजाघर अपने आकर्षण और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

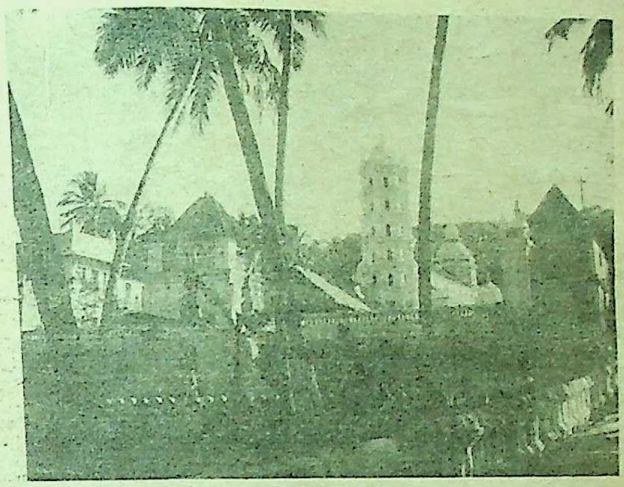

मंगेश मंदिर

चर्च

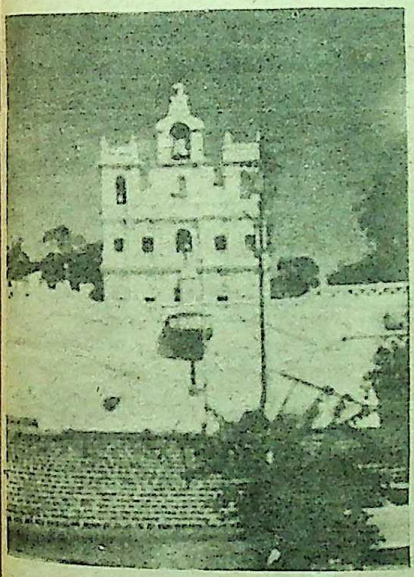

पर्यटन गोवा का प्रमुख उद्योग है। इसीलिए इस राज्य की प्रति व्यक्ति आय ४,७८३ रुपये प्रति वर्ष है।

भवन निर्माण कला के प्रसिद्ध उदाहरण हैं।

गोवा के मंदिर यद्यपि बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं, फिर भी उनकी भव्यता अनोखी है। उनमें कला, संगीत, नृत्य और शिल्प का अद्भुत संगम है। आसमान से बातें करते दीप स्तंभ और उनके साथ-साथ विशाल नाट्य एवं नृत्य कार्यक्रमों के लिए सभागृह आपको प्रायः प्रत्येक मंदिर में मिल जाएंगे। मंदिर के प्रांगण में आपको आधुनिक सुविधाओं से युक्त धर्मशालाएं भी मिल जाएंगी। पणजी से लगभग २५ किलोमीटर दूर पोंडा को 'मंदिरों की घाटी' के नाम से जाना जाता है। पुर्तगालियों से सुरक्षित रखने के लिए पूरे के पूरे मंदिर उखाड़कर यहां पर पुनः स्थापित किये गये। मंगेश, शांतादुर्गा, महाल्सा, रामनाथ इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवा : सामान्य सूचनाएं

क्षेत्रफल—३,७०२ किलो मीटर

जनसंख्या—१०,०७,७४९ (१९८१ जनगणना के अनुसार)

मौसम

गरमी : अधिकतम तापमान—३२.७° से.

न्यूनतम तापमान—२४° से.

सरदी : अधिकतम तापमान—३२.२° से

न्यूनतम तापमान—२१.३ से :

वर्षा : ३५० सें. मीटर (जून से सितम्बर तक)

आवश्यक वस्त्र : गरम मौसम के लिए सामान्य कपड़े। दिसम्बर और जनवरी में हल्के ऊनी वस्त्र पहने जा सकते हैं।

परिवहन एवं संचार :

हवाई जहाज—गोवा के लिए दिल्ली, बंबई, बंगलौर, कोचीन और त्रिवेंद्रम से इंडियन एयर लाइंस की नियमित उड़ानें हैं।

समुद्र : अक्तूबर से मई तक के साफ मौसम में मुगल लाईस नियमित तौर पर बंबई से गोवा के लिए जहाज चलाते हैं।

रेल :

मीटर-गेज रेलवे के द्वारा गोवा शेष भारत से जुड़ा हुआ है। मीराज-बंगलौर लाइन पर लोंडा जंक्शन में उतरा जा सकता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण रेलवे स्टेशन हैं—मारगोवा और वास्कोडीगामा।

सड़क :

सड़क द्वारा गोवा भारत के सभी प्रसिद्ध नगरों से जुड़ा हुआ है।

आंतरिक परिवहन :

टैक्सी और आटो-रिक्शा पूरे गोवा में उपलब्ध हैं। नियमित बस सेवा की व्यवस्था भी है। एक और आकर्षण है—मोटर साइकिल टैक्सी सेवा। मोटर साइकिल सवार अच्छे गाइड भी हैं। एक महिला भी इनके साथ बिना किसी भय के जा सकती है। आप चाहें तो सिर्फ मोटर साइकिल भी किराये पर ले सकते हैं। किराया है—१०० रुपये प्रति दिन। मोटर साइकिल चलाने के लिए पेट्रोल का खर्चा आपको देना पड़ेगा।

आवास :

गोवा में होटलों का जाल-सा बिछा हुआ है। बड़े-बड़े पांच सितारा होटल से छोटे-छोटे होटल तक—आपकी जेब की सीमा के अनुसार आपके ठहरने की व्यवस्था कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र स्नान का मजा लेते हुए

क्षेत्र के प्रसिद्ध और खूबसूरत मंदरि हैं।

सुनहरे समुद्र तट

गोवा का १०० किलोमीटर का समुद्र तट विदेशी पर्यटकों के लिए मनमोहक है। इन तटों में सभी प्रकार की सुविधाएं हैं। उत्तर गोवा के प्रसिद्ध तटों में अंजुना, बागा, कलंगुटी के नाम उल्लेखनीय हैं। दक्षिण में बोगमालो, मेजोरडा कोव्वा जैसे खूबसूरत तट हैं।

किले और पुरातत्व अवशेष

गोवा में प्राचीन वैभवता के प्रतीक रोचक किले हैं। सन् १६०४ में अग्वेदा किले का निर्माण पुर्तगालियों ने किया था। पुर्तगाली आधिपत्य के दौरान सुरक्षा की यह पहली कड़ी थी। इस किले का प्रयोग जेल के रूप में भी किया जाता था। गोवा महाराष्ट्र की सीमा पर बने टीराकोल किला तक पहुंचने के लिए आपको तीन नदियां पार करनी होंगी।

बिचोली में प्राचीन बौद्ध गुफाओं के अवशेष मिलते हैं। यह क्षेत्र धातु कार्य के लिए भी प्रसिद्ध है। पर्यटन सुविधाओं में भारत में गोवा का प्रथम स्थान है। ठहरने के लिए हर प्रकार के होटल मिल जाएंगे। सस्ते और महंगे—जैसे भी आपको पसंद हों।

पर्यटन गोवा का प्रमुख उद्योग है। इसीलिए इस राज्य की प्रति व्यक्ति आय ४,७८३ रुपये प्रति वर्ष है जबकि संपूर्ण भारत की प्रति व्यक्ति आय मात्र २,२७१ रुपये है। गोवा में मध्यम वर्ग की बहुलता है। पूरा राज्य स्वच्छ और सुंदर है। साफ-सुथरी सड़के इस क्षेत्र की खूबसूरती पर चार चांद लगा देती हैं। भारत की गरीबी के दर्शन आपको यहां पर कहीं नहीं मिलेंगे।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क नयी दिल्ली
अनुवाद : शिवशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ़ प्यार ही नहीं चुका सकता इनकी दवाओं के बिल.

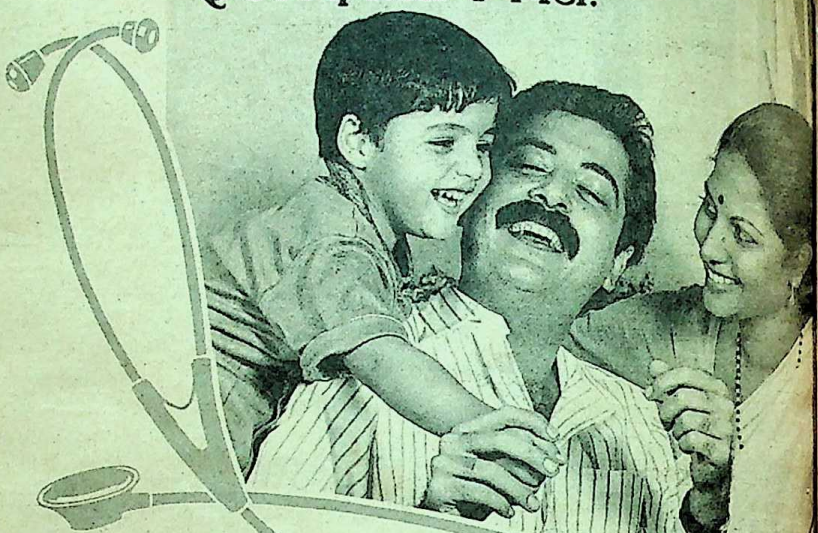

इसके लिए चाहिए मेडिक्लेम.

जी हां, मेडीक्लेम की हॉस्पिटलाइज़ेशन और डॉमिसिलियरी हॉस्पिटलाइज़ेशन बेनिफ़िट पॉलिसी आपके परिवार के लिए है एक अनोखा वरदान.

आपका ढेर सा प्यार... आपकी कंपनी की कोई भी मेडीकल योजना.... बड़ी-बड़ी बीमारियों, ऑपरेशन और दुर्घटना में इलाज पर होने वाले खर्च का बिल नहीं चुका सकती.

इसीलिए आपको चाहिए मेडीक्लेम. मेडीक्लेम के ज़रिए आप कई तरह के चिकित्सा लाभ हासिल कर सकते हैं– वह भी आपकी आवश्यकता, आपकी ज़रूरतों के अनुरूप.

यहां तक कि आप घर पर रहकर इलाज करने का खर्च भी पा सकते हैं.

साथ ही आप पारिवारिक-छूट और करों में छूट का लाभ भी उठा सकते हैं.

यदि आप अपने परिवार को सही मायने में प्यार करते हैं तो मेडीक्लेम योजना के अंतर्गत इनका बीमा कराइए.

जो आपको कम खर्च में दिलाए कहीं ज़्यादा सुरक्षा, कहीं ज़्यादा लाभ और यही है आपके प्यार का सच्चा सुबूत.

प्रिमियम प्रति वर्ष रु.	हॉस्पिटलाइज़ेशन रु.	डॉमिसिलियरी हॉस्पिटलाइज़ेशन रु.
२००	१०,५००	३,१००
२५०	१७,६००	—
३५०	२५,५००	—
६०० *	३७,७५०	५,२५०
८४० *	५२,७५०	७,४००
१,३०० *	८२,५००	११,५००

आयु सीमा ५ से ७० वर्ष

★ *अतिरिक्त प्रीमियम अदा करने पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा भी उपलब्ध.*

MEDICLAIM

मेडीक्लेम के प्रस्तुतकर्ता न्यू इंडिया एश्योरन्स

NEW INDIA ASSURANCE

A subsidiary of the General Insurance Corporation of India

खतरे का कोई भी नाम.... बीमा करना हमारा काम

CONTOUR ADS-NIA-278E-93

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेक कविता मूल हिंदी में

तनिक प्रीत : तनिक शीत

● डॉ. ओदोलेन स्मेकल

प्रीतम-प्रीतम के बीच
कभी न चले ऊंच-नीच
न कोई जात
न पददलित न अभिशात
सात्विक प्रीत—न हार न जीत !

चोट पहुंचाने पर
आंसू दुखिए पर न बहा
प्रेम को झुलसाकर
शिकारी शिकार आप रहा

प्रीति में लागू रहे सदा
जादू-टोना
स्पर्श-मात्र से
कंकर भी बने सोना

कभी तो यह भी हो जाता
रात की स्मृतियों में
प्रीत का दिवास्वप्न खो जाता

तोड़ने पर भी
न टूटेगी कभी वह प्रीत
जड़ें जिसकी हम दोनों
करें एक ही धार से सिक्त
प्रेम को मान
अनमोल दैन-भाग्य का दान
प्रेम जो तुच्छ-सा भी मांगता है, प्रतिदान
प्रेम नहीं— मात्र बलिदान।

जो प्राणी प्रेम को प्रेम से चुकाता
उसी का प्रेम-वारिधि कभी न रुक जाता
जीवन का कठोरतम दिन भी
उसके लिए कुसुमी

हम दोनों की एक-सम प्रीति
कभी मत तिसरा
न मेरी बांह पकड़ने की ललित रीति
न चोरी-छिपे मिलने की उन दिनों की स्मृति !

Roztylske Sady 59, 14100 Praha
4-Sporilov Czechoslovakia

आज की शकुंतला

● प्रभा भारद्वाज

एक युग में था
कोई दुष्यंत
था उसे अनुराग किसी शकुंतला से
एक ऋषि-कन्या—
दूसरा राजा—
कैसा अनूठा दोनों का मेल था
दोनों का प्रेम नियति का खेल था
दुष्यंत और शकुंतला शापित थे
इसलिए अंगूठी खोयी।
शकुंतला दुष्यंत के विरह में बहुत रोयी।

× × × ×

हम दोनों भी शापित हैं
मैं शापित शकुंतला
तुम मेरे शापित दुष्यंत
हम अपनी-अपनी विवशताओं में
एक-दूसरे को पहचानने में कितने असमर्थ हैं।
फिर भी एक-दूसरे का हम 'अर्थ' हैं।
फर्क इतना है—
शकुंतला की अंगूठी तो खो गयी थी
मैंने खुद ही उतार फेकी है अपने ही हाथों से।
क्योंकि इसके सिवा कोई चारा न था।

—द्वारा कादम्बिनी, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग

मैं

विधु कीर्ति

मैं,
दिखने में इक संपूर्ण व्यक्तित्व,
क्यों इतनी विवश हो जाती हूं ?
न करना चाहते हुए भी, बहुत कुछ कर जाती हूं
कई कुछ देख / सुन/ सह/ झेल जाती हूं
कैसे हो जाती हूं, मैं इतनी सशक्त ?
लेकिन—
फिर कहीं यही शक्ति, मुझे अशक्त कर जाती हैं।
कठपुतली-सी नाचने लगती हूं मैं,
बन जाती हूं तुम्हारी हर चाल का मोहरा कैसे ?
और—
तुम्हारे लक्ष्य-भेदन की प्रक्रिया में
झुक जाती हूं—
हर बार प्रत्यंचा बनकर

आत्मकथ्य

जीवन के उतार-चढ़ाव के खेल में खिलौना-सी बन जाती है जिंदगी। कभी-कभी परिस्थितियां इतनी विवश कर देती हैं कि अपने ही हाथों इंसान को स्वयं को ठगाना पड़ता है। और व्यक्ति बहुत ही अशक्त हो जाता है। अनचाहे ही दूसरे के हाथों का मोहरा बन जाना पड़ता है उसे। ऐसी ही मानसिक उद्विग्नताओं से गुजरते हुए कुछ शब्द लिपिबद्ध हो जाते हैं और कविता का रूप धारण कर लेते हैं।

३८७७ सैक्टर-२२ डी, चंडीगढ़-१६००२२

काल

आलोक मित्तल

मकड़ी खुश है फंसे कीट की मुसीबत में
आज की रोटी बक्श दी मेरे खुदावंद ने
जाल में उलझा निरीह कीट छटपटाता है
कोशिशें करता, बहुत है बेचारा
काल के जाल से ना बच पाता है

पर नहीं मकड़ी का पेट यूं भरता
और आएंगे बड़े जाल में कीड़े ज्यादा
जोश में जाल फिर बढ़ाती है
होश खो अपने बुने जाले में
नासमझ खुद ही उलझ जाती है

आत्मकथ्य

सम्प्रति पर्यटन-विकास निगम में कार्यरत आसपास के उष्ण वातावरण के बावजूद संवेदना की नम जमीन पर स्वयं ही अंकुरित हो जाते हैं, ये उत्पीड़न के बीज। इनका अस्तित्व, मां के लिए तो संतान जैसा ही है, चाहे इनका स्वरूप कुछ भी हो।

डीजी-२, १७० सी, विकासपुरी (बौंडेला) नयी दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजुरी भर प्यार

रचना मदान

आसमां से
टपका वो नूर
वो एक छोटी-सी बूंद
जब दे जाया करती है
मुझे अंजुरी भर प्यार
शर्मसार-सी हो जाया करती हूं— मैं
अपना इंसानी अक्स देखकर।
हवा की गुनगुनाहट, सरसराहट,
दे जाती है, जब मुझे
दरख्तों के वो
पीले पत्तों से लफ़्ज़
फिर एक बार,
शर्मिंदगी महसूस करती हूं,
काश,
जो मैं होती हवा
होती,
मैं इक नन्हीं बूंद
दे जाती किसी को
अंजुरी भर प्यार।

आत्मकथ्य

कविता अभिव्यक्ति है, कोमल भावनाओं की, आक्रोशित मन की, उद्वेलित हृदय की, टूटी आकांक्षाओं की, इसे किसी सीमा में बांध पाना ही मेरा उद्देश्य है।

ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर, बिहार।

दिन

योगेन्द्र कुमार

दिन
गेहूं की बाल की तरह
पकता रहा झरता रहा
और समय का चूहा
चुपचाप उसे कुतरता रहा
कुतरा हुआ दिन
आकाश में
लाल-पीली
काली-नीली
कतरनों से भर गया
आज मेरी जिंदगी का
एक और दिन घट गया

आत्मकथ्य

मैं तरह-तरह की फितरतवाले माहौल को अपने आस-पास पाता हूं, चाहे वह पतझड़ का दर्द हो या गुलमुहर का इठलाना, लिखना सार्थक जीने के लिए एक नैतिक व मानवीय प्रतिबद्धता है।

२-२-२३/३६ एस. बी. एच. कॉलोनी, बाग अंबरपेट, हैदराबाद—५०००१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

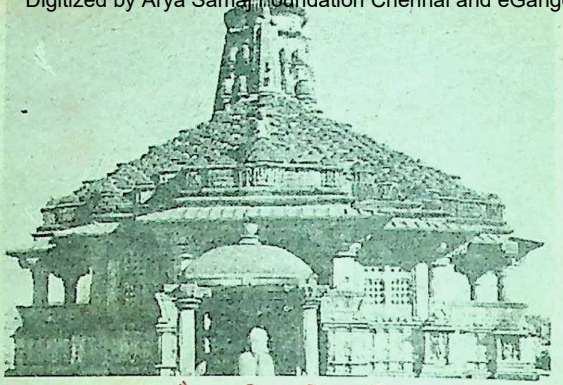

मैनाल स्थित शिव-मंदिर

जल प्रपातों से भरा मैनाल

—रणवीर सिंह राही

आइए, आपको राजस्थान की उस प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक भूमि पर लिये चलते हैं, जहां हरेक जिले, शहर एवं कस्बे और गांव का कोई न कोई इतिहास रहा है। यहां की धरा पर एक ओर जहां प्राचीनतम किले, गढ़ एवं मंदिर अपनी स्थापत्य-कला और उम्र की कहानी सुनाते से दिखायी देते हैं। वहीं दूसरी तरफ वीर रानियों के जौहर एवं महाराणाप्रताप की वीरता का इतिहास समेटे है।

तो चलिए इसी पावन धरा के उस छोर पर लिये चलते हैं, जो अपनी सुरम्यता और प्रकृति के हरे-भरे उपहार से प्रत्येक आगंतुक को अपने पास बुलाने का आमंत्रण देता है। जी हां, भीलवाड़ा से लगभग सत्तर कि. मी. दूर भीलवाडा-कोटा मार्ग एवं चित्तौड़-कोटा मार्ग पर स्थित मैनाल की बात कर रहा हूं। अभी पर्यटन की दृष्टि से यह जगह इतनी लोकप्रिय नहीं है कि मैं मैनाल का नाम लूं, और आप पहचान जाएं कि मैं किस जगह की बात कर रहा हूं।

शहर के कोलाहल से कोसों दूर मैनाल को प्रकृति का अनोखा वरदान मिला हुआ है। बनावटी आपको यहां कुछ भी नहीं मिलेगा, जो कुछ है, सब प्राकृतिक है। मैनाल चारों तरफ से हरी-भरी वादियों के बीच सैकड़ों फीट गहराई में कटी हुई चट्टानों पर अवस्थित है। इन्हीं चट्टानों के मध्य पानी का कुंड-सा बना हुआ है, जहां गर्मियों में लोग नहाकर अपनी तपन बुझाते हैं। यह पानी एक प्राकृतिक जलप्रपात से गिरता है।

अपने वेग से हरियाली को चीरते हुए यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वेग से हरियाली को चीरते हुए यह प्राकृतिक जल-प्रपात काफी ऊंचाई से गिरता है, जिससे छिटकी बूंदें नीचे आते-आते फव्वारों का रूप ले लेती हैं। टूटी-फूटी चट्टानों और हरी-भरी झाड़ियों से घिरा यह मैनाल इतिहास, पुरातत्त्व एवं धार्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

मंदिर की दीवारों पर अंकित भव्य मूर्तियां

प्राकृतिक जल-प्रपात काफी ऊंचाई से गिरता है, जिससे छिटकी बूंदे नीचे आते-आते फव्वारों का रूप ले लेती हैं। टूटी-फूटी चट्टानों और हरी-भरी झाड़ियों से घिरा यह मैनाल इतिहास, पुरातत्त्व एवं धार्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

मैनाल में नीलकंठेश्वर महादेव का बहुत पुराना मंदिर भी है जो कि अपनी स्थापत्य-कला एवं बनावट के लिए मशहूर है। यहां पर खुदी हुई मूर्तियों की तुलना अजंता एवं एलोरा की कलात्मक मूर्तियों से की जाती है। मुख्य मंदिर पर एक विशाल शिखर है, एवं उसके आगे कलात्मक छोटा शिखर है। मंदिर के ठीक सामने एक वर्गाकार स्थान बना हुआ है, जिसमें शिवजी का नांदी (बैल) बैठा हुआ है।

यहां के मंदिरों एवं खंडहरों के बारे में एक किवदंती भी इधर प्रचलित है, कि प्राचीन काल में इनका निर्माण भवब्रह्मा ने करवाया था। ये भवब्रह्मा या तो कोई ऋषि थे अथवा कोई राजा। मैनाल प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज चौहान की पत्नी रूठी रानी या सुहाव देवी के महलों के खंडहरों के रूप में भी जाना जाता है।

वर्तमान में इन खंडहरों की देखभाल भारत के पुरातत्त्व विभाग द्वारा की जाती है। यह सुरम्य स्थान आजकल पिकनिक स्पॉट के रूप में अपनी ख्याति फैला रहा है। यहां इस क्षेत्र से जुड़े शहर यथा भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बूंदी एवं कोटा के लोग अकसर पिकनिक मनाने एवं अपना मनोरंजन करने आते हैं।

वर्षाकाल के दौरान तो इस हरे-भरे स्थान के कहने ही क्या हैं? प्राकृतिक छटा एवं जल-प्रपात के गिरने के दृश्यों को तो कैमरे में कैद करने की इच्छा होती है। आइए मैनाल हम सबको अपने घर आमंत्रित कर रहा है।

राजस्थान सूचना केंद्र, बी-२, स्टेट एंपोरियम, बाबा खड़ग सिंह मार्ग, नयी दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत है 'कादम्बिनी' के युवा पाठकों के लिए स्तम्भ 'दस्तक' : इस स्तंभ के लिए युवा-पाठक किसी भी विषय पर २५० शब्दों में अपने विचार भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाएं प्रकाशित की जाएंगी और पारिश्रमिक भी दिया जाएगा।

—संपादक

चुनौती

छात्र जीवन से नौकरी में पदार्पण किया ही था, उग्र स्वभाव होने के कारण बर्दाश्त करने की क्षमता कम थी, और आफिस में अकसर सहयोगियों से मैं उलझ पड़ता था। शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों तक गयी ऐसे में एक वरिष्ठ सहयोगी श्री सुनील सिन्हा ने मुझे समझाते हुए कहा, "तुम गुस्सा करते ही क्यों हो ? इससे आखिर तुम्हारा ही नुकसान होता है।"

"दरअसल जब कोई मेरे स्वाभिमान को चुनौती देता है तो मैं गुस्से पर काबू नहीं रख पाता।" मैंने सफाई दी।

"तब तो मैं तुम्हारे स्वाभिमान को चुनौती देता हूं, अगर तुम्हारे अंदर जरा भी स्वाभिमान है तो आइंदा तुम गुस्सा नहीं करोगे।" सिन्हा साहब बोले। उसके बाद से मैं सभी सहयोगियों से प्रेम से मिलकर रह रहा हूं। आज, जब भी गुस्सा आता है तो सिन्हा साहब की चुनौती मन पर दस्तक देने लगती है और सारा क्रोध हवा हो जाता है। मेरे हृदय-परिवर्तन का सारा श्रेय उसी चुनौती को जाता है।

एस. के. सारस्वत

'भारतीय जीवन बीमा निगम', शाखा कार्यालय-पीलीभीत-२६२००।

मजबूरी में माना तो क्या माना ?

"मैं उस समय कक्षा सात का विद्यार्थी था। गांव से मिडिल स्कूल चार मील दूर था। अप्रैल की दोपहर को स्कूल से लौटते समय बहुत जोरों की प्यास लगी। कुछ दूरी पर एक कुंआ था—वहां एक वृद्ध व्यक्ति लोटा-डोर से पानी निकालकर पी रहा था। मैंने उस वृद्ध व्यक्ति से पानी पिलाने का निवेदन किया। मेरे लिए वे पानी निकालने लगे। उसी समय मुझे ध्यान आया कि मैंने इनसे इनकी जाति तो पूछी ही नहीं। ऐसा न हो कि वे अछूत हों। तब तक वे पानी निकाल चुके थे। मैंने उनसे पूछा —"चाचा ! आप कौन लोग हैं ? किस जाति के हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया—"बेटा, हूं तो मैं चमार जाति का।" और एक क्षण रुकने के बाद उन्होंने कहा—"तो बेटा, अब पानी नहीं पिओगे ?" मैं प्यास के कारण बेहाल हुआ जा रहा था। मैंने कहा—"बाबा, मेरी जान निकली जा रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मैं तो जरूर पानी पिऊंगा।" पानी पिलाने के बाद उस वृद्ध व्यक्ति ने हंसते हुए कहा—"देखो बेटा मैं चमार जाति का नहीं हूं। मैं अहीर (यादव) हूं। लेकिन मेरे चमार होने पर भी तुम पानी पीना न छोड़ते। हम लोगों में (अर्थात समाज में) (अर्थात— समाज में) यही कमी है कि अपने स्वार्थ के लिए तो जाति-पांति का भेद नहीं मानते अन्यथा इस जहर को हम बराबर समाज में फैलाते रहते हैं।"

उन अपढ़ से दिखनेवाले वृद्ध व्यक्ति के इन वाक्यों ने मेरे दिल-दिमाग में ऐसी दस्तक दी कि मैं हमेशा के लिए जाति-पांति के भेद-भाव को भूल गया।

धर्मकुमार

भारतीय स्टेट बैंक, कल्यानपुर, कानपुर।

सांस्कृतिक गतिविधियां

ज्योतिष शास्त्र में अनुसंधान की जरूरत

'भारत-निर्माण' की ओर से कांस्टीट्यूशन क्लब नयी दिल्ली में 'ज्योतिष एवं ग्रह-नक्षत्र' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मद्रास के प्रसिद्ध ज्योतिषी प्रो. जयशेखर का भाषण हुआ। उन्होंने भारत में ज्योतिष शास्त्र की गिरती हुई स्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि हमें इस क्षेत्र में शोध-कार्य करना चाहिए।

अनुभूति चतुर्वेदी

हिंदी की कवयित्री और ओडिसी नृत्य में दक्ष अनुभूति चतुर्वेदी : इन्हें अमरीका की 'नेशनल पोयट्स अकादमी' ने इस वर्ष का सर्वाधिक सम्मानजनक पुरस्कार "अन्तरराष्ट्रीय कविता पुरस्कार" प्रदान किया गया है। इसके पहले अखिल भारतीय दिनकर साहित्य सम्मेलन की ओर से भारत के उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा अनुभूति चतुर्वेदी को सम्मानित कर चुके हैं।

चित्र में 'भारत-निर्माण' के श्री एम. सी. भंडारी भाषण देते दिखायी दे रहे हैं। अन्य हैं बायें से दायें स्वामी अखिलेश, अमृता प्रीतम, प्रो. जयशेखर, माधुरी मोडवेल और वेदप्रकाश।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म हत्या मत कीजिये

बचपन की गलतियों के कारण पेशाब में वीर्य जाना, पेशाब का बार-२ तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, जुकाम, बदन व सिर दर्द, याद शक्ती कम होना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आंखों के आगे अंधेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, नज़र तथा हर तरह की कमज़ोरी आदि रोग मृत संजीवन बटी जड़ से नष्ट कर देती है। जादू की तरह असर करने वाली मृत संजीवन बटी साठ दिन की दवा का मूल्य 40/-रुपये। डाक खर्च 15/-रुपये अलग लगेगा। हमारी दवायों में सुच्चे मोती, सोना, भस्म, केसर कस्तूरी आदि का भी प्रयोग होता है!

केवल पुरुषों के लिये : मृत संजीवन तेल की मालिश से आठ दिनों में ही खून का दौरा न चलने से इन्द्री का छोटा पन, पतला पन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है। मृत संजीवन तेल मुर्दा शरीर पर डालने से भी बिजली के करंट की तरह असर दिखाता है। मूल्य एक शीशी 30/- रुपये, डाक खर्च अलग। दुगनी ताकत वाली खाने तथा मालिश की दोनों दवायों का मूल्य 140/- रूपये। तीन गुणी ताकत वाली दोनों दवायों का मूल्य दो सौ रुपये। शाही ईलाज आठ सौ रुपये कृपया रूपये पत्र या रजिस्टरड पत्र में कभी मत भेजिये। रुपये मनी आर्डर द्वारा भेज कर या लिखकर वी० पी० दारा मंगायें।

शरीर का कद लम्बा कीजिये!!!

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद वंशागत हो या दूसरे किसी कारण हो। अब 5 से 50 वर्ष तक की आयु तक के बच्चे स्त्री पुरुष हमारी दवा पी० एच० सी० द्वारा दो से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। एक माह की दवा का मूल्य 70 रूपये डाक खर्च 20 रुपये अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, शादी, प्राईवेट तथा सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता हैं। किसी तरह के व्यायाम करने की जरुरत नहीं दवा सारे शरीर के अनुपात में विकास करती है। कोई SIDE EFFECT नहीं है

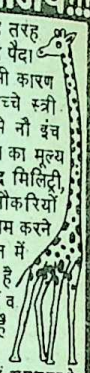

गारंटी :- कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च व अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगवायें।

नोट:- कुछ लोग जो न तो वैद्य, हकीम, डाक्टर हैं, अमृतसर के डाक घरों से हमारी डाक चुरा कर ले जाते हैं। रोगीयों को सावधान किया जाता है कि दवा का पार्सल छुड़ाने से पहले तस्सली कर लें कि पार्सल पर मेहरा क्लीनिक इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-143002 से ही आया है या नहीं, यदि पार्सल पर हमारा पता लिखा है तो पोस्ट मैन को रुपये देकर पार्सल ले लें, यदि आपकी तसल्ली न हो तो साफ साफ लेने से इन्कार कर दें। यदि पन्द्रह दिन में हमारा पत्र या पार्सल न मिले तो दूसरा पत्र लिखे।

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद P.O. खालसा कालेज, अमृतसर-2

शुद्ध रुद्राक्ष

राशि के नग नगीने

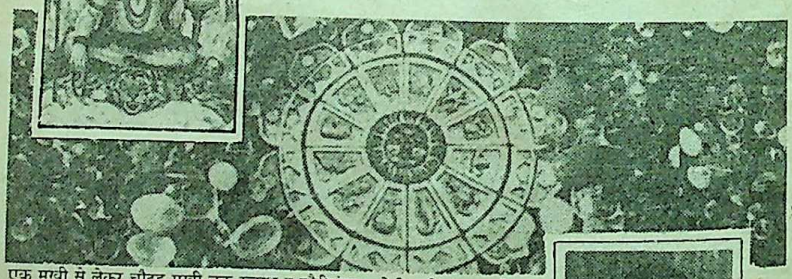

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष व गौरीशंकर, छोटी बड़ी रुद्राक्ष की मालाएं, हर प्रकार के राशि के नग नगीने, हीरा-मोती-पन्ना-मुंगा-माणिक-पुखराज-गऊमेद-नीलम-लहसूनिया-नवरत्न व उपरत्न।

हर प्रकार की पूजा की शुद्ध मालाएं। मूंगा-मोती-स्फटिक और अनेक प्रकार की थोक व फुटकर में मिलने का एकमात्र स्थान :

शिव रत्न केंद्र (रजि.)

शो रूम : सन्तल सराय (दूसरी मंजिल) गऊ घाट पोस्ट बाक्स नं. 55 हरिद्वार उत्तर प्रदेश फोन : 965

सूचिपत्र व रुद्राक्ष महात्म पुस्तक डाक द्वारा मुफ्त मगवायें। नोट : बिका हुआ माल वापिस लिया जाएगा, पसंद न आने पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

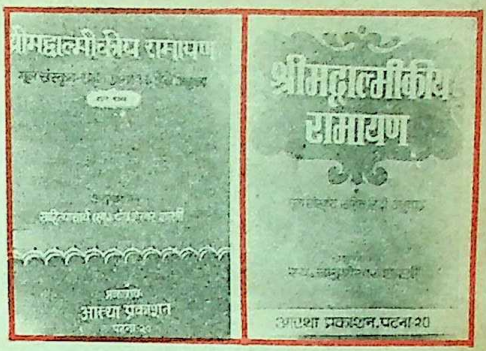

सन १९३०-४० में वाल्मीकीय रामायण का साहित्याचार्य चंद्रशेखर शास्त्री कृत हिंदी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। यों, वाल्मीकीय रामायण के अन्य अनुवाद भी प्रकाशित हुए थे, तथापि अपनी प्रामाणिकता, सरलता और श्लोकानुरूप अनुवाद के कारण स्वर्गीय शास्त्रीजी द्वारा किया गया अनुवाद अनेक विद्वानों द्वारा सराहा गया था। वर्षों से यह अनुवाद अप्राप्त था। अब स्व. शास्त्रीजी के पुत्र श्री प्रफुल्ल चंद्र ओझा 'मुक्त' के प्रयत्नों से इस अनुवाद के प्रथम दो कांड— बाल कांड और अयोध्या कांड पुनः प्रकाशित किये गये हैं। ये अनुवाद गद्य में हैं।

कई कारणों से तुलसीकृत रामचरित मानस का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है। मानस की तुलना में हिंदी अनुवाद के अभाव में वाल्मीकीय रामायण मात्र संस्कृत ज्ञाता विद्वानों तक ही सीमित होकर रह गयी थी। अब ऐसे अनुवादों के कारण वाल्मीकि रामायण का अध्ययन वे लोग भी कर सकते हैं, जो संस्कृत नहीं जानते। उनके माध्यम से उन्हें वाल्मीकीय रामायण में वर्णित अनेक अज्ञात एवं रोचक प्रसंगों की ही जानकारी नहीं मिलेगी, वरन वे महाकवि वाल्मीकि के रचना-कौशल का भी आनंद उठा सकेंगे। यद्यपि वाल्मीकि रामायण के हिंदी में और भी कई अनुवाद हैं, तथापि स्व. चंद्रशेखर शास्त्री कृत अनुवाद अपनी सहज सरल भाषा-शैली के कारण संभवतः अधिक लोकप्रिय होगा।

श्री मद्वाल्मीकीय रामायण, (बालकांड, अयोध्या कांड') अनुवादक— साहित्याचार्य (स्व.) चंद्रशेखर शास्त्री, प्रकाशक— आस्था प्रकाशन, बी-११६, लोहिया नगर, पटना-८०००२०
मूल्य : बालकांड— पचास रुपये, अयोध्याकांड— ७५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवन-पुत्र : डा. भगवती शरण मिश्र का उनके प्रथम बहुचर्चित ऐतिहासिक उपन्यास 'पहला सूरज' की तरह, बजरंग बली, केसरी नंदन, अंजनीसुत हनुमान की पौराणिक चरित-गाथा को मौलिक उद्भावनाओं के साथ नये संदर्भों में रूपायित करनेवाला सद्यः प्रकाशित आत्म कथात्मक श्रेष्ठ पौराणिक उपन्यास है। इधर पिछले कुछ दशकों से पौराणिक परिवेश को दृष्टिपथ में रखकर महाभारत के पात्रों, श्रीराम, श्रीकृष्ण के चरित्र को नये संदर्भ में कथा के माध्यम से उजागर करने की परिपाटी चल पड़ी है। इसी दिशा में सर्वश्री राजगोपालाचारी, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, नरेन्द्र कोहली आदि के बाद डॉ. मिश्र का यह प्रयास अभिनंदनीय है।

आलोच्य उपन्यास का लक्ष्य श्री हनुमानजी के देवत्व को नकारना नहीं, अपितु उसकी पुनर्स्थापना करना है। लेखक ने हनुमान सरीखे उदात्त पौराणिक पात्र को पाठकों के समक्ष खड़ाकर, उनके चरित्र के अनुद्घाटित पक्षों को उद्घाटित करने का सार्थक प्रयास किया है।

श्रीराम के अश्वमेधीय अश्व को बाधित करने के प्रसंग में एक सार्वभौम सम्राट की सार्वभौमिकता को चुनौती देकर राष्ट्र की एकता एवं अखंडता पर प्रहार करने की बात उठाकर लेखक ने श्री हनुमान की असहिष्णुता को आज के संदर्भ में सार्थक बताया है। आज देश को श्री हनुमान जैसे धर्म एवं कर्त्तव्यपरायण, शक्तिमान, बुद्धिमान, तेजस्वी और विवेकी पुरुष की सख्त आवश्यकता है, जो देश की अलगाववादी, फूटपरस्त प्रवृत्तियों एवं विध्वंसक शक्तियों से डटकर लोहा ले सके। लेखक ने इसी दिशा की ओर संकेत किया है। इसलिए, आलोच्य उपन्यास रोचक, पठनीय एवं उपयोगी है।

पवन पुत्र (उपन्यास), लेखक : डॉ भगवती शरण मिश्र, प्रकाशक : राजपाल एंड संज, दिल्ली, मूल्य : साठ रुपये।

—प्रो. विश्वंभर अरुण

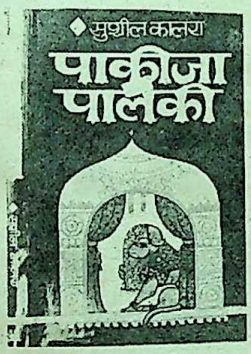

पाकीजा तेरी पालकी : सुपरिचित व्यंग्य-चित्रकार सुशील कालरा की व्यंग्य-रचनाओं का संकलन है। व्यंग्य चित्रकार की यह खूबी होती है कि वह कम से कम रेखाओं में सम-सामयिक जीवन की विडंबनाओं और विद्रूपताओं पर ऐसा कटाक्ष कर जाता है कि आप मात्र मनोरंजक कर के ही नहीं रह जाते हैं, वरण उन स्थितियों के कारणों पर सोचने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए भी बाध्य होते हैं, जिन पर व्यंग्य चित्रकार ने प्रहार किया है। सुशील कालरा की इन व्यंग्य रचनाओं में भी यही खूबी है। इनमें हास्य-व्यंग्य के नाम पर फूहड़पन या 'भरती की चीज' नहीं हैं। 'हम होंगे कामयाब' में जहां लेखक ने इक्कीसवीं सदी में जाने के नारे के खोखलेपन पर चोट की है, वहीं 'पाकीजा तेरी पालकी' में उस संस्कृति पर कटाक्ष है, जिसमें कुत्ता पालना 'स्टेटस सिंबल' ही नहीं, 'साईड बिजनेस' भी बन गया है। कुछ व्यंग्य रचनाओं में पति-पत्नी, सास-जामाता, प्रेमी-प्रेमिका के संबंधों को लेकर हास्य उत्पन्न किया है। 'रामपुर की राधिका' फिल्म-निर्माण के गोरखधंधे को उजागर करनेवाली रचना है।

त्रेता का बृहत्साम : सुप्रसिद्ध लेखक कुबेरनाथ राय के रामकथा पर केंद्रित भावप्रवण ललित निबंधों और विचारोत्तेजक लेखों का संकलन है। लेखक के अनुसार रामकथा वस्तुतः सूर्यगाथा या सौर महाकाव्य है। जिसके केंद्र में है वैदिक सवितातत्व। साम का चिरपरिचित अर्थ है महाकाव्य। "वैदिक भाषा में किसी वस्तु या सत्ता के अस्तित्व (प्राण) के चरम विस्तार की परिधि उसका 'साम' है। ...अतः त्रेता का 'साम' या बृहत्साम कहने का तात्पर्य हुआ त्रेता युग की प्राण-सत्ता (अस्तित्व सत्ता) की सीमांत रेखा या चरम बिंदु।"

सुप्रसिद्ध लेखक कुबेरनाथ राय के रामकथा पर केंद्रित भावप्रवण ललित निबंधों और विचारोत्तेजक लेखों का संकलन है। लेखक के अनुसार रामकथा वस्तुतः सूर्यगाथा या सौर महाकाव्य है। जिसके केंद्र में है वैदिक सवितातत्व। साम का चिरपरिचित अर्थ है महाकाव्य। "वैदिक भाषा में किसी वस्तु या सत्ता के अस्तित्व (प्राण) के चरम विस्तार की परिधि उसका 'साम' है। ...अतः त्रेता का 'साम' या बृहत्साम कहने का तात्पर्य हुआ त्रेता युग की प्राण-सत्ता (अस्तित्व सत्ता) की सीमांत रेखा या चरम बिंदु।"

त्रेता का अर्थ है यज्ञ-संस्कृति और द्वापर का तात्पर्य है पूजा-संस्कृति। त्रेता में वास्तविक देवता है आदित्य अर्थात विष्णु, जो सौर देवता है। गायत्री सौर शक्ति है।

रामकथा पराक्रम गाथा— वीर काव्य है। और मनुष्य की दृष्टि में रामायण, महाभारत या भागवत 'रसों के रस' अर्थात 'महारस' को अभिव्यक्त करते हैं। यह तो एक लेख की बानगी हुई। इस कृति में संकलित प्रायः प्रत्येक निबंध या लेख रामकथा के अतिशय जाने-पहचाने प्रसंगों को नये अर्थ देते हैं और पाठक की दृष्टि का विस्तार करते हैं। संपूर्ण कृति पठनीय से अधिक मननीय है।

त्रेता का बृहत्साम : लेखक— कुबेर नाथ राय, प्रकाशक— नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली, मूल्य— ५५ रुपये।

दुर्गाप्रसाद शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ ज्योतिष साहित्य

केदार दत्त जोशी :

ग्रहलाघव	स० ९०;	अ० ५०
ताजिक नीलकण्ठी	स० १००;	अ० ७०
मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा	स० ९५;	अ० ६५
लघुपारापरी		२०
बृहदजाकम्	स० १००;	अ० ७०
सिद्धान्त शिरोमणि गोलाध्याय	स० १६०;	अ० १२०

जगजीवन दास :

ज्योतिष रहस्य (सम्पूर्ण)	१००
दशाफल विचार	२४

चन्द्रदत्त पन्त :

चन्द्र हस्त विज्ञान	स० १००;	अ० ७५
वर्ष चन्द्र प्रकाश		५
प्रश्न चन्द्र प्रकाश		२५
लग्न चन्द्र प्रकाश		३६
विविध योग चन्द्र प्रकाश		१४

व्रजबिहारी लाल :

चमत्कार चिन्तामणि	स० १२०;	अ० ८०

मुरलीधर चतुर्वेदी :

सारावली	स० ९०;	अ० ६५
होरारत्नम (दो भाग)	स० २६०;	अ० १९०
बृहद्दैवज्ञञ्जनम् (दो खण्डों में)	स० २८०;	अ० २२०

एन.पी. ठाकुर :

सचित्र हस्तरेखा सामुद्रिक शिक्षा	२०

शुकदेव चतुर्वेदी :

ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार	स० ६०;	अ० ४५

रामचन्द्र पाण्डेय :

ज्योतिर्विदाभरणम्	स० १६०;	अ० १२०

ज्योतिष रत्नाकर—देवकीनन्दन सिंह
अजिल्द रु. १९०; सजिल्द रु. १५०

बी.एल. ठाकुर : मूल्य रु०

सचित्र ज्योतिष शिक्षा सात खण्ड व रस भागों में सम्पूर्ण) ४९१
(खण्ड : ज्ञान, गणित, फलित, वर्षफल, प्रश्न, मुहूर्त व संहिता)

मुकुन्द वल्लभ :

अर्ध मार्तण्ड	१६
कर्मठ गुरु	३२
फलित मार्तण्ड	५०
षड्वर्ग फल प्रकाश	८

लक्ष्मी कान्त कत्याल :

ज्योतिष तत्व प्रकाश	६०

गोपेश कुमार ओझा :

अंक विद्या (ज्योतिष)		१०
जातक पारिजात (२ भागों में)	स० २००;	अ १५०
फल दीपिका	स० ८५;	अ० ५५
सुगम ज्योतिष प्रवेशिका		३५
हस्त रेखा विज्ञान	स० ७०;	अ० ४५
त्रिफला (ज्योतिष)		२५
भारतीय लग्न सारणी		३०
जातकादेश मार्ग (चन्द्रिका)		४५

मृदुला त्रिवेदी :

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम	स० ६५;	अ० ४५

दीवान राम चन्द कपूर :

रमल प्रश्नोत्तरी		१४
लघु पराशरी भाष्य	स० ८०;	अ० ५०
काल चक्र		स० २४

मोतीलाल बनारसी दास
बंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७
शाखाएं : अशोक राजपथ, पटना * चौक, वाराणसी * १२० रायपेटा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास
२४, रेसकोर्स रोड, बंगलौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

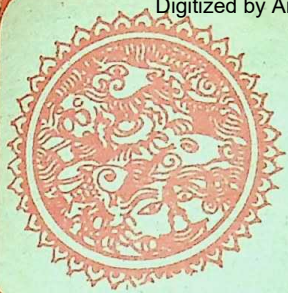

यह महीना और आपका भविष्य

— पंडित शिव प्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति: सूर्य १४ जून से मिथुन में, मंगल कुंभ में, बुध १० से वक्री होकर मेष में, गुरु १९ से वृषभ में, शुक्र वक्री ४ से वृषभ में शनि धनु में, राहु कुंभ में, केतु सिंह में, हर्षल नेप्च्यून धनु में, तथा प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे।

मेष

मास भाग्यवर्धक एवं उन्नतिकारक होगा। कठिनतम कार्यों में भी पुरुषार्थ एवम् साहसिक प्रयास सफलतादायी होंगे। १ से ७ के मध्य आर्थिक योजनाओं में सफलता, शासन-सत्ता अथवा राज्याधिकारियों से सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष पर विजय होगी। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों हेतु श्रम तथा व्यय अधिक होगा। लाभदायी कार्यों में विलंब होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी। १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। साहस एवं पुरुषार्थ से संपत्ति धन-संबंधी कार्यों में विजय प्राप्त होगी। जीवन साथी अथवा ससुराल पक्ष के कारण चिंता होगी। मासांत में शिक्षा-प्रतियोगिता परीक्षा अथवा सृजन-संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। महत्वपूर्ण उपलब्धि से प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वृषभ

मासारंभ में व्यय, यात्राओं की अधिकता से मानसिक तनाव रहेगा, उसी मास के उत्तरार्ध में उल्लासपूर्ण वातावरण का योग होगा। १ से ७ के मध्य कार्यों में व्यर्थ व्यवधान तथा सफलता में विलंब से मानसिक तनाव होगा। प्रतिकूल स्थितियों में भी उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से उत्साह रहेगा। ८ से १५ के मध्य पारिवारिक कार्यों के लिए यात्रा करनी होगी। व्यय अधिक होंगे, जीवन साथी के सहयोग से संतुलन विद्यमान रहेगा। १६ से २४ के मध्य राजकीय सफलता मिलेगी। मासांत में सुखद समाचार मिलेगा। धार्मिक एवं मांगलिक कार्य पूर्ण होगा। महिलाओं को मास अनुकूल एवं प्रतिष्ठादायक होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विद्यार्थियों को मनोनुकूल परिणामों से उत्साह होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथुन

मास संघर्ष एवं अनिश्चिततापूर्ण होगा। साहस एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित होगी। संयम तथा विवेक से निर्णय करना हितकर रहेगा। १ से ७ के मध्य पारिवारिक अस्वस्थता एवं व्ययों से चिंता होगी। शत्रु-पक्ष व्यर्थ कार्यों में अवरोध उपस्थित करेंगे। ८ से १५ के मध्य स्वास्थ्य-चिंता, वाहनादि से सावधानी रखें। भावुकता में आकर आर्थिक जोखिम न लें। १६ से २४ के मध्य शासन सत्ता तथा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से संपत्ति धन-कार्यों में सफलता मिलेगी। अधिकाधिक श्रम ही अभीष्ट फलदायक होगा। मासांत में लेखन सृजन लेखन-संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी।

कर्क

नवीन उत्तरदायित्व तथा कार्यों की अधिकता होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा एवं यश-वृद्धि होगी। आध्यात्मिक सत्संग अथवा तीर्थाटन का योग उपस्थित होगा। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता

व्रत, पर्व और त्यौहार

३. जून संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी ७. शीतलाष्टमी कालाष्टमी १०. पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत ११. शनि प्रदोष व्रत १२. मास शिवरात्रि १४. दर्श अमावस्या १५. चंद्र दर्शन १७. महाराणा प्रताप जयन्ती १८. वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी २०. विंध्यवासनी पूजा २२. बुधाष्टमी २४. गंगादशहरा २६ निर्जला एकादशी वैष्णवी २७. सोमप्रदोष २९. शुद्ध ज्येष्ठी पूर्णिमा संत कबीर जयंती

□ १४ जून को अधिक ज्येष्ठ मास (मलमास) समाप्त

राशियां और प्रभाव

मास में ६ ग्रह वक्री रहेंगे। बुध, शुक्र वक्री होकर, वृषभ राशि में जाएंगे। वहीं १९ जून को गुरु वृषभ राशि में आएंगे। गुरु के संक्रमण तथा ग्रहगोचर से सभी राशियां प्रभावित होंगी, जो कि मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, मीन के लिए शुभ, वृषभ, कन्या, धनु, मकर के लिए मध्यम तथा मिथुन, तुला को सावधानी अपेक्षित हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तनावपूर्ण स्थितियां होंगी। पाश्चात्य देशों में शस्त्रायुधों की प्रतिस्पर्धा दृष्टिगोचर होगी, वहीं चीन की क्रियाशीलता विश्व के शांति दूतों का ध्यानाकर्षण करेगी। शांत्रि-प्रयास निरर्थक होगा। प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारणों से दुर्घटनाओं की अधिकता होगी। जिससे जनधन को क्षति होगी।

भारत में सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव शिथिल होगा, राजकीय प्रभाव तथा प्रशासन स्थितियां पर नियंत्रण का प्रयास करेगा। केंद्रीय तथा प्रांतीय सरकारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। उ. प्र. राजस्थान तथा महाराष्ट्र में राजनीतिक सक्रियता अधिक होगी।

बाजार में खाद्यान्न वस्तुओं में आंशिक मंदी होगी। धातुओं के भाव तेज होंगे, किंतु मांग में कमी के संकेत स्पष्ट हैं।

मास के पूर्वार्द्ध में आंधी, तूफान, लू के प्रकोपों के समाचार मिलेंगे। उत्तरार्द्ध में कुछ प्रदेशों में वर्षा के योग हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा उच्चाधिकारियों के कारण उत्तरदायित्व एवं अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। ८ से १५ के मध्य भौतिक कार्यों के प्रयास साकार होंगे। संपत्ति विवाद हल होगा। किंतु स्वास्थ्य के प्रति सावधानी अपेक्षित है। १६ से २४ के मध्य रचनात्मक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में क्रियाशीलता होगी। उत्तम सत्संग अथवा तीर्थाटन का योग है। मासांत में लेखन सृजन-संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। पारिवारिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

सिंह

मास उत्साहवर्धक एवं प्रभावदायक होगा। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा अधिकारियों के मध्य प्रभाव वृद्धि होगी। आर्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास पूर्ण होंगे। ८ से १५ के मध्य परिवार में मंगल अधवा शुभ-कार्य की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। धन-संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। १६ से २४ के मध्य लेखन सृजन-परीक्षा प्रतियोगिता के अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। जीवन साथी के सहयोग से उल्लेखनीय उपलब्धि संभावित होगी। मासांत में प्रियजनों के कारण व्यय-भार बढ़ेगा!

कन्या

मास मध्यम फलदायी होगा। साहस तथा श्रम से महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा अधिकारियों की खिन्नता से कार्यों में बाधा उपस्थित होगी। शत्रु-पक्ष क्रियाशील रहेगा। ८ से १५ के मध्य शारीरिक पीड़ा एवं व्ययों की अधिकता होगी। जीवन-साथी का सहयोग मिलेगा। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। १६ से २५ के मध्य साहसिक प्रयासों से उच्च अधिकारी प्रसन्न होंगे। अपूर्ण कार्य अथवा धन-संपदा संबंधी विवादों में अनुकूल निर्णय होंगे। लेखन-सृजन एवं रचनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

तुला

मास में प्रतिकूल परिस्थितियों पर आत्मविश्वास से विजय मिलेगी। व्यय तथा पारिवारिक कार्यों में संयमित कार्य करें। १ से ७ के मध्य पारिवारिक कार्यों में संयमित कार्य करें। १ से ७ के मध्य पारिवारिक अस्वस्थता पर व्यय अधिक होगा। शत्रु-पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। भावुकता तथा आवेग पर नियंत्रण अपेक्षित है ८ से १५ के मध्य कार्यों में धीमी उन्नति राजाश्रय से होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यवधान होंगे। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी १६ से २४ के मध्य प्रियजन को पीड़ा होगी।

वृश्चिक

नवीन उत्तरदायित्व तथा कार्यों की अधिकता होगी। प्रियजनों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा। १ से ७ के मध्य शासन-सत्ता अथवा राजकीय कार्यों में प्रभाव वृद्धि होगी। राजनीतिक क्षितिज में महत्वपूर्ण उपलब्धि पूर्ण संभावित है। आर्थिक योजनाओं में प्रगति होगी ८ से १५ के मध्य विलासितादायी वस्तुओं पर व्यय होगा। रुका हुआ धन अथवा अन्य लाभ प्राप्ति का योग होगा। १६ से २४ के मध्य जीवन-साथी एवं परिवारजनों के सहयोग से संपत्ति संबंधी कार्य पूर्ण होगा। संतानादि के स्वास्थ्य की चिंता होगी। मासांत में सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में उत्साह बढ़ेगा।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनु

राजकीय कार्यों की अधिकता होगी। आर्थिक साधनों में वृद्धि होगी। अस्वस्थता तथा व्यर्थ यात्रा होगी। १ से ७ के मध्य जीवन-साथी अथवा पारिवारिक सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य प्राप्त होगा। कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता होगी। ८ से १५ के मध्य व्यर्थ विवाद का सामना करना होगा। भावुकता में लिया गया निर्णय घातक साबित होगा। शत्रु-पक्ष से सावधानी रखें। १६ से २४ के मध्य वरिष्ठ अधिकारी अथवा राजनेता का सहयोग मिलेगा। किंतु निकटजनों से विरोधाभास होगा। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी।

मकर

मास मध्यम फलदायी होगा। शत्रु-पक्ष की चिंता रहेगी। पारिवारिक जीवन में खिन्नता होगी। आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार होगा। १ से ७ के मध्य कार्यों में व्यर्थ व्यवधान तथा शत्रु-पक्ष के कारण चिंता होगी। जीवन साथी के सहयोग से आर्थिक साधन बढ़ेंगे। ८ से १५ के मध्य मनोरंजन, भ्रमण, लेखन-सृजन के प्रति रुचि बढ़ेगी। पारिवारिक परस्पर विवादों से मन खिन्न रहेगा। १६ से २४ के मध्य शासन-सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग, पद, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। आकस्मिक धन-लाभ होगा। मासांत में भावुकता पर नियंत्रण रखें।

कुंभ

मास में नवीन पदाधिकार प्राप्त होगा। पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा। १ से ७ के मध्य शासन अथवा सत्ता पक्ष का सहयोग रोजगार संबंधी स्थिति को समुन्नत करेगा। पारिवारिक सुख एवं आर्थिक योजनाओं में सफलता मिलेगी। ८ से १५ के मध्य सहयोगियों के कारण शत्रु-पक्ष से सुलह होगी। राजनीतिक लाभ मिलने की संभावना होगी। १६ से २४ के मध्य लेखन-सृजन के प्रति रुझान बढ़ेगा। व्ययों की अधिकता होगी। जीवन-साथी के कारण रुका धन मिलेगा। मासांत महत्वपूर्ण उपलब्धि हेतु प्रतीक्षित हैं। जोखिमपूर्ण कार्य लाभप्रद होंगे। महिला वर्ग को सृजन-संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा। विद्यार्थी वर्ग को सुखद सूचना मिलेगी। मित्रों के सहयोग से साहसिक कार्य पूर्ण होगा।

मीन

पारिवारिक सुख, कार्यों में सफलता एवं आर्थिक उन्नति के उत्तम योग होंगे। १ से ७ के मध्य विगत काल से चले आ रहे आर्थिक प्रयास पूर्ण होंगे। यात्रा-लाभदायी होगी। कलात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। ८ से १५ के मध्य राजकीय सहयोग से संपत्ति-संबंधी कार्य पूर्ण होगा। कार्य की अधिकता से अस्वस्थता तथा तनाव बढ़ेगा। १६ से २४ के मध्य प्रियजन के कारण भावनात्मक पीड़ा मिलेगी। भावनात्मक कार्यों में विवेक से कार्य करें। मासांत में जीवन-साथी के सहयोग से विवादास्पद प्रकरण का समाधान होगा। अनपेक्षित धन-लाभ भी संभव है, धार्मिक-कार्यों में व्यय होगा।

महिलाओं को रचनात्मक अथवा धार्मिक-कार्यों में यश-प्रतिष्ठा मिलेगी। आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा।

ज्योतिष धाम, १२/४ ओल्ड सुभाष नगर, भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

— डा. सतीश मलिक

प्रवीण शर्मा, जबलपुरः

कृपया बताएं कि क्या जमीन पर सोने से शरीर की गर्मी धरती सोख लेती है ? एवं व्यक्ति की सैक्स क्षमता घट जाती है क्या ?

दोनों प्रश्नों का उत्तर है 'बिल्कुल नहीं।' परंतु यदि आपका ऐसा तजुर्बा है कि जमीन पर सोने से सैक्स-क्षमता कम हो जाती है, तो इसका कारण आपके व्यक्तिगत जीवन से संबंधित किसी घटना से हो सकता है, जो कि संभव है अवचेतन मन से तो आप भूल चुके हैं, परंतु अचेतन मन में वह अभी भी सक्रिय है। आशा है आप अपने भीतर कारण खोज लेंगे।

शरीर की कंपन

कुमार, पटना :

पहले भी कई पत्र लिख चुका हूं। २० वर्ष का बी. ए. का छात्र हूं। अध्ययन के साथ-साथ सामाजिक उपन्यास तथा कहानी लिखने में काफी रुचि रखता हूं। ८-९ वर्ष से ही एक समस्या से मैं ग्रस्त हूं। समस्या यह है कि यदि मुझे जब भी किसी के सामने लिखने को कहा जाए, तो मैं काफी भयभीत हो जाता हूं। फिर जब लिखने लगता हूं तो हाथ-पांव कांपने लगते हैं। लिखावट पढ़ने योग्य नहीं रहती। भयभीत होते ही दिल की धड़कन तेज हो जाती है और विशेषकर दोनों हाथ कांपने लगते हैं। अकेले में लिखते हुए मैं स्पष्ट रूप से लिखता चला जाता हूं। ऐसा कभी-कभी तब होता है, जब मुझे कोई डांट देता है। नशा कोई नहीं करता। केवल सिगरेट, दोस्तों के दबाव में ही कभी-कभी सेवन करता हूं। शराब व वेश्यागमन कदापि नहीं।

यह तो बहुत अच्छी बात है कि आपको कोई बुरी लत नहीं, वैसे अधिक चाय, सिगरेट आदि भी कंपन-रोग से पीड़ित व्यक्ति को नहीं करना चाहिए। वास्तव में आपकी समस्या अत्यधिक तनाव व भय है, जिसके कारण कंपन व दिल की धड़कन उत्पन्न होती है। ऐसा तभी होता है, जब मनुष्य अपने से बड़े लोगों के बीच में घिरा होता है और उनके द्वारा 'कहीं मेरी आलोचना न हो जाए,' इस बात का भय बना रहता है। अपने में हीन भावना, दूसरे की आलोचना का डर, आत्मविश्वास की कमी, अत्यधिक अंतर्मुखी होना, ऐसी मनोस्थिति को उत्पन्न कर सकते हैं। बाद में कंपन के डर से ही कंपन आरंभ होने लगता है। इलाज के तौर पर आपको अपनी हीनग्रंथि को समझकर उस पर काबू पाना होगा। परिचित व्यक्ति जिनको आप अपने से उच्च न समझते हों, उनके सामने लिखने का अभ्यास करें— ऐसा अभ्यास अपने से थोड़ा-सा उच्च स्तर के व्यक्ति अथवा अपरिचित से करें। इस प्रकार आप स्वयं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने व्यवहार को सुधारकर अपना स्वयं इलाज कर सकते हैं। यदि सफलता न मिले तो मनोचिकित्सक या मनोवैज्ञानिक, जो अपनी पद्धति में व्यवहार-चिकित्सा (बिहेवियर थैरेपी) का प्रयोग करते हों, उनसे मिलें। आप पूर्णतः स्वस्थ हो सकते हैं।

क्या मैं मनोरोगी हूं ?

लव कुमार, सैरथल, राजस्थान :

१९ वर्ष का प्रथम वर्ष विज्ञान का छात्र हूं— इस वर्ष अनुत्तीर्ण रहा— लेकिन इसका कोई असर नहीं। अगस्त के माह में सर्दी-जुकाम से बचने के लिए मैंने डबल सैप्ट्रान नामक दवा ली, तत्पश्चात पेट खराब हो गया— पेट में गर्मी, गैस बनना, दिल घबराना शुरू हो गया। इसका मैंने इलाज करवाया, ठीक हो गया परंतु मैं अब कमजोर हो गया। अब मेरे दिमाग में तरह-तरह के विचार आते हैं— जैसे मुझमें कई तरह के रोग उत्पन्न हो गये हों। इस वक्त लिखते समय मुझे शर्म आ रही है, परंतु मैं गलत काम करने लगा था— तथा अब इस बात का इलाज चल रहा है। क्या मैं अब मनोरोगी हो गया हूं। क्या करूं सुझाव दें।

आपको सर्दी व जुकाम से बचने के लिए, स्वयं कोई भी एंटीबायटिक खाने की आवश्यकता नहीं। सर्दी व जुकाम से बचने के लिए ५०० मिलीग्राम विटामिन सी. लेना चाहिए, या फिर आंवला आदि का प्रयोग करना चाहिए। एंटीबायटिक की आवश्यकता केवल इनफेक्शन में होती है, जो डाक्टरी जांच द्वारा पता लगाकर की जा सकती है। एंटीबायटिक पेट में बैक्टीरिया को खत्म करके बी. काम्पलेक्स की कमी पैदा कर देता है। इस कारण पेट खराब, गैस आदि बनने लगती है। अत्यधिक दवाइयां शरीर की प्राकृतिक क्रिया को खराब करती हैं। गलत काम अधिकांशतः अविवाहित व्यक्ति ही करते हैं— इसमें शर्मा की कोई बात नहीं— न ही इसके बारे में अत्यधिक चिंता करने की आवश्यकता है। प्रतीत होता है कि स्थानीय डाक्टर आपको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा कर रहा है। आपको पौष्टिक आहार और व्यायाम की आवश्यकता है। आप देखेंगे कि आपका तन व मन दोनों स्वस्थ हो जाएंगे।

गलती आपकी है

कु. स. श., पिथौरगढ़ (उ. प्र.) :

१८ वर्ष की बी. ए. फाइनल की छात्रा हूं। एक वर्ष पूर्व बी. ए. में प्रवेश करते ही मन प्रफुल्लित हो गया, परंतु अब बिलकुल सूना हो गया है। प्रवेश करते ही मुझे एक लड़के ने प्रेम पत्र लिखकर पहुंचाया। मुझे अत्यंत क्रोध आया तथा मैंने तत्काल वह पत्र लौटा दिया। तदोपरांत मेरे संग ऐसे चार किस्से हुए और मैंने तत्काल नाकारा कर दिये। मेरी समझ में यह नहीं आता कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है ? मैं जबकि चुपचाप कालेज आती-जाती हूं, किसी से बोलती तक नहीं, सब लड़के मुझपर ही जोर देते हैं कि मैं किसी को तो अपना बना लूं। परंतु न मुझे कोई भाया, न मैं प्रेम में विश्वास करती हूं। मैं सोचती हूं— शायद मुझे प्रेम-पत्र वापस नहीं करने चाहिए थे। मुझे नींद भी नहीं आ रही। कृपया उचित मार्गदर्शन करें।

आप अपने व्यवहार, चाल-ढाल द्वारा अवश्य लड़कों को आकर्षित करती हैं— ऐसा शायद आप अनजाने में करती हैं। लगता है, आपके मन के भीतर इस विषय को लेकर एक द्वंद्व है— यानी एक मन कहता है किसी एक का प्रेम स्वीकार कर ले, दूसरा लोक-लज्जा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार कर अनुमति नहीं देता। दूसरे लोग चिढ़ाते हैं, आप चिढ़ जाती होंगी, तभी वह ऐसा करते हैं— उन्हें आपके व्यवहार से ऐसा पता चल जाता है कि आप उन्हें निरुत्तर करने की हिम्मत नहीं रखतीं।आप जो कुछ भी ठीक सोचती हैं करें, परंतु अपने मन के भाव जान लें तथा वैसा ही व्यवहार करें। यदि आप खुलकर इन लड़कों से बात करें, तो वह ऐसा कदापि नहीं करेंगे।

कपोल कल्पनाओं की आदत

म. प्र., पटना :

दो वर्ष पूर्व जब मैं नवीं कक्षा का छात्र था, तो एक शिक्षक ने पढ़ाते समय एक पुस्तक में कुछ गलती पायी। उन्होंने मुझसे कहा यह पुस्तक नकली लगती है आगे तुम किताब लेते समय उस दुकान की मोहर अवश्य लगवा लिया करो। तब से मेरी यह आदत-सी बन गयी है। अब जब भी पढ़ते समय कोई छपाई में अशुद्धि मिलती है— तो मैं उस पुस्तक को अपने मित्रों की पुस्तक से मिला लेता हूं— यदि वही अशुद्धि उस पुस्तक में पाता हूं, तब समझ लेता हूं कि यह किताब ठीक है। लड़कों से नोट्स उतारते समय भी शक रहता है कि कहीं गलत तो नहीं कर रहा हूं। और उन्हें दो-तीन और लड़कों से मिलाने के बाद ही विश्वास होता है। परिणामस्वरूप मैट्रिक द्वितीय श्रेणी में मैंने पास किया। मुझे बहुत दुख हुआ। एकांत में रहना पसंद करता हूं, व स्वयं कोसता रहता हूं या फिर सिनेमा देखना व सुंदर कपोल-कल्पनाएं करने की आदत हो गयी है।

आपको मन की अवस्था समझनी चाहिए। मन में ऐसी अकसर प्रवृतियां होती रहती हैं— यानी चाहे वह परिस्थिति अब गुजर गयी हो, परंतु मन फिर भी वैसी ही प्रतिक्रिया दिखाता रहता है। दूसरी प्रवृति ऐसी भी होती है कि हम

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें।— संपादक

सब 'निश्चित' की स्थिति में रहना चाहते हैं। इसीलिए आप बार-बार अपने नोट्स मिलाकर देखते हैं क्योंकि आपके मन में शक बना रहता है। तीसरी बात ध्यान रखने योग्य है कि आदत बनाकर मन मितव्ययता का सिद्धांत अपनाता है और इस तरह शक्ति संचालन करता है। जब तनाव अधिक होता है तो कल्पना व सिनेमा को मन बचाव का साधन बना लेता है। मन की प्रवृतियों को जान लेने से मनुष्य को उनपर काबू पाना चाहिए। उसे समझाना होगा कि यह सभी को एक-सा मानने की प्रवृति से दूर रहे। उसे सीखना होगा कि वह अनिश्चितता रहेगी इसे स्वीकार करना सीखे और परेशानी को बर्दाश्त करे। बचाव के साधन ढूंढ़ने के बजाय वह उन स्थितियों के बीच में रहना सीखे तथा अपने परिश्रम द्वारा तनाव का सामना करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

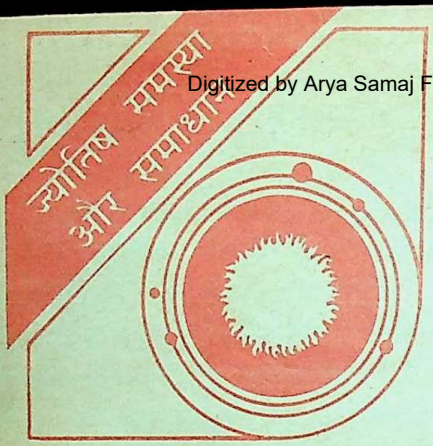

कु. निधि वर्मा, गाजियाबाद

प्रश्न : भाग्योदय विवाह कब ? रत्न भी बताएं।

उत्तर : भाग्योदय २५वें वर्ष में विवाह २१वें वर्ष में, हीरा अथवा स्फटिक की माला धारण करें

विजय ठकुरली, देवरिया।

प्रश्न : संतान कब ? रत्न भी सुझाएं ?

उत्तर : ३५वें वर्ष में कन्या का संतान योग है, रत्न पुखराज ९ रत्ती का धारण करें, लाभ होगा।

कुमारी रेखा जोशी, धार

प्रश्न : शादी कब तक होगी ?

उत्तर : ५वां वृहस्पति जून १६ से लगेगा, तभी से ८ मास के भीतर ही श्रेष्ठ घर-वर प्राप्त होगा।

सुदीप तिवारी, भोपाल

प्रश्न : मुकदमें में क्या फैसला और कब तक ?

उत्तर : मुकदमें में विजय होगी, पर १२वां गुरु नेष्ट होने से समय अभी २ वर्ष का लगेगा।

कु. पुष्प लता, रतलाम

प्रश्न : विवाह कब प्रेमी से होगा ? क्या माता-पिता के विरोध से या नहीं ?

उत्तर : प्रेमी से ही विवाह होगा माता-पिता मान जाएंगे पर इस वर्ष दिसंबर से योग है पति भाव का मालिक शनि अपने घर का है, अतः स्वयंवर योग प्रबल है।

श्रीमती एम. कपूर, कानपुर

प्रश्न : पुत्र प्राप्ति का योग है या नहीं हां, तो कब तक। रत्न बताएं।

उत्तर : पुत्र भावेश ग्रह बुध स्त्री ग्रहों के साथ होने से कन्या अधिक व १ पुत्र का योग २९वें वर्ष में लगेगा

नरेंद्र कुमार, अलवर

प्रश्न : क्या प्रशासनिक सेवा में जाना संभव है, कब तक ?

उत्तर : ग्रहों के कमजोर होने से इच्छापूर्ति में अवरोध होगा, श्रेष्ठ मूंगा धारण करें।

पीताम्बर शर्मा, बिलासपुर

प्रश्न : वाहन कब तक प्राप्त होगा ?

उत्तर : १२वां और जन्म का बृहस्पति सन ८९ में जब बदलेगा, तभी वाहन सुख प्राप्त होगा।

उपमा शर्मा, यमुना विहार, दिल्ली

प्रश्न : मैं शिक्षा कहां तक पाऊंगी ?

उत्तर : विद्या स्थान का अधिपति मंगल अपने ही घर में उच्च का है अतः पूर्ण विद्या का योग है शिल्प अथवा मेडिकल में सफलता प्राप्त करेंगी।

कु. विनीता, गांधीधाम

प्रश्न : जिसे मैं प्यार करती हूं क्या उससे मेरी शादी होगी और कब ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : सप्तम भाव अच्छा होने से मन मुताबिक पति की प्राप्ति योग प्रबल है, पर अभी २ वर्ष का समय लगेगा।

राधेश्याम शर्मा, अलवर

प्रश्न : संतान कब होगी, वर्ष व समय बतायें।

उत्तर : संतान भाव का मालिक बुध स्वगृही होने से सन ८९ में रात में संतान का सुख प्राप्त होगा।

मनीष मोहन, बंबई-३

प्रश्न : विवाह कब और कैसी लड़की से होगा ?

उत्तर : विवाह मनपसंद और सुंदर कन्या से सन ८९ के जनवरी मास में घर से पूर्व उत्तर के कोने में होगा ?

नवीन कुमार, कलकत्ता

प्रश्न : वर्तमान आर्थिक संकट से छुटकारा कब तक ? रत्न भी बतायें।

उत्तर : अष्टम बृहस्पति बदलने पर जुलाई से संकट से छुटकारा प्रारंभ रत्न हीरा अथवा स्फटिक की माला धारण करें।

कु. मंजूसिहाई, जबलपुर

प्रश्न : नौकरी कब किस सन में प्राप्त होगी ?

उत्तर : इसी वर्ष गुरु के बदलते ही

—जयधरनाथ मिश्र

श्रीगंगाधर ज्योतिष पाठशाला,
लालघाट, वाराणसी

७३

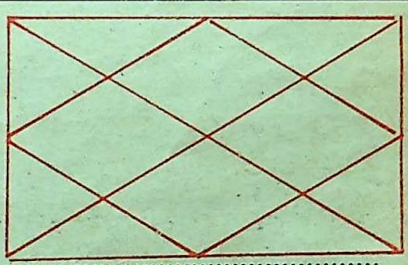

नाम .....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान ..... जन्म-समय .....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा.... (वर्तमान) व जन्म नक्षत्र .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—७३) 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जून, १९८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार-संक्षेप

चौदह मनुओं का इतिहास

● डा. कुंवर लाल 'व्यास शिष्य'

मनुओं के इतिहास क्रम का सही विवरण खोजने की अनेक कोशिशें हुई हैं। अनेक संस्कृत विद्वानों ने इस पर अपनी सम्मतियां दी हैं। परंतु यह कार्य इतना जटिल है कि इसकी सीधी-सपाट व्याख्या कोई विद्वान नहीं दे पाया। फलतः अनेक प्रकार की भ्रांतियों का जन्म हुआ। काल-क्रमानुसार मनुवंशों का मनमाना उल्लेख किया जाने लगा। पूर्ण जल-प्लावन एवं अंश जलप्लावन का भेद भी मिट गया। मनुवंश के इतिहास से जुड़े पृथ्वी के देशों के बारे में, प्रजापतियों के अन्य वंशकुलों के बारे में भी इसी प्रकार भ्रांतियों का प्रचलन होता रहा। ''चौदह मनुओं का इतिहास'' में विद्वान लेखक डा. कुंवरलाल 'व्यास शिष्य' ने तर्कयुक्त प्रणाली से नयी खोज की है तथा मनुवंशों के राज्य विस्तार के सूत्र भी खोज निकाले हैं। पुराणों के वर्तमान संस्करण से जिस इतिहास को निकालना दुष्कर कार्य है, उसे क्रमानुसार अत्यंत परिश्रम से डा. कुंवर लाल 'व्यास शिष्य' ने प्रस्तुत किया है। यहां उनकी नवीनतम पुस्तक का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत है। इस कार्य की विशेषता है, मनुवंशों की कुल परंपराओं का कालानुसार स्थापन एवं उनके राज्य विस्तारों, व्यवस्थाओं के बारे में तर्कपूर्ण संकेत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौदह मनुओं का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। इन मनुओं में दो मनु जलप्लावन के उपरांत सृष्टि के पुनर्रचेताओं में प्रख्यात हैं। आज सृष्टि के समस्तवासी इन्हीं मनुवंशों की संतानें हैं। 'इन मनुवंशों ने सृष्टि को जिस प्रकार की व्यवस्था, अनुशासन एवं जीवनानुकूल संस्थाएं दी हैं, आज हम उन्हीं के विकसित स्वरूपों का उपयोग कर रहे हैं। इन मनुवंशों में ज्ञान, प्रज्ञा, सृजनशक्ति एवं पराशक्ति की अद्भुत उपस्थिति से हमारे प्राचीन-शास्त्र भरे पड़े हैं। इन्होंने मनुष्य को जीवनानुरूप मूल्य-विधान दिया, तथा उसे सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया व उसे पशुरूपात्मक स्थिति से ऊपर उठाया।

चौदह मनुओं के क्रम की भ्रांतियों को निर्मूल करना हमारा लक्ष्य रहा है, यहां हम आदिवंशों के इतिहास की इस अनुपल५य यात्रा का वृतांत दे रहे हैं।

चौदह मनुओं का क्रम और कालक्रम— चौदह मनुओं में प्रारंभिक चार (स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत मनु) प्रियव्रत के वंशज ही थे, अतः इनका क्रम पुराणों में उचितरूप से संनिविष्ट है। स्वायाम्भुव मनु के अनंतर उसके वंशज प्रियव्रत के वंश में ये चार मनु— स्वारोचिष, उत्तम (या औत्तम), तामस और रैवत हुए और षष्ठ चाक्षुष मनु उत्तानपाद के पुत्र प्रसिद्ध लोकाधिपति ध्रुव के वंश में हुए जो आदिराज पृथु वैन्य के पूर्वज थे और इन्हीं के वंश में ही दक्षादि हुए। सप्तम प्रसिद्ध मनु वैवस्वत अर्थात् विवस्वान् के पुत्र थे और पांच सावर्ण मनुओं में से एक थे, चार सावर्ण मनु वैवस्वत मनु के प्रायः समकालीन थे, अतः सभी मनु भूतकालीन पुरुष थे, अतः इनका कालक्रम इस प्रकार था — १. स्वायम्भुव मनु, २. स्वारोचिष मनु, ३. उत्तम मनु, ४. तामस मनु, ५. रैवत मनु, ६. रौच्य मनु, ७. भौत्य मनु, ८. चाक्षुषमनु, ९. दक्ष या मेरुसावर्णिमन, १०. ब्रह्मसावर्णि (कश्यप) मनु, ११. धर्मसावर्णि सावर्णि मनु, १२. रुद्र सावर्णि मनु, १३. वैवस्वतमनु, १४. सावर्णमनु।

आदिम प्रजापतिगण— प्राचीनपुराणों (वायु और ब्रह्मांड) में प्राचीनतम द्वादश प्रजापतियों के नाम हैं— भृगु, अङ्गिरा, मरीचि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु, दक्ष, अत्रि, वसिष्ठ (नव ब्रह्माणः), रुचि, धर्म और नीललोहित (रुद्र) और त्रयोदश प्रजापति हुए स्वायम्भुव मनु। ये सभी त्रयोदश प्रजापति ब्रह्मा या स्वयंभू के मानस सुत (पुत्र) कहे गये हैं। कहीं पुराणों में सात, कहीं , आठ, कहीं नौ, कहीं दश और कहीं बारह और कहीं तेरह ब्रह्मा के मानसपुत्रों का कथन है। इनमें से अनेक किसी विशिष्ट प्रजापति के पुत्र कहे गये हैं, यथा रुचि को पुलह का पुत्र बताया गया है, धर्म को रुचि का पुत्र कहा गया है, इसी प्रकार कर्दमादि के संबंध में विभिन्न कथन हैं। प्रतीत होता है कि जब किसी प्रजापति के पिता का नाम विस्मृत हो जाता था, तब उसको ब्रह्मा का पुत्र बना दिया जाता था, यथा इक्ष्वाकु या पुरुरवा के अनेक वंशजों को ब्रह्मपुत्र बना दिया गया, यथा रामायण में आयु के वंशज (बलाकाश्व के वंशज) राजा कुश को ब्रह्मपुत्र कहा गया है। इतिहासपुराणों में और भी इस प्रकार के बहुत उदाहरण दिये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वायम्भुव मनु के प्रसिद्ध पुत्र— प्रियव्रत और उत्तानपाद तथा दो कन्याएं थीं— आकूति तथा प्रसूति। प्रसूति आदिम दक्ष की पत्नी बनी और आकूति प्रजापति रुचि की पत्नी हुई। रुचि के पुत्र दक्षिणा और यज्ञ (मिथुनसंतति) उत्पन्न हुए। यहीं पर पुराणपाठ कुछ भ्रामक हुआ है। यज्ञ के स्थान पर 'यम' पाठ होना चाहिए, क्योंकि यम की पत्नी का नाम दक्षिणा था, अतः उसके पति को 'यज्ञ' बना दिया, इस प्रकार के अनेक भ्रम पुराणों में बहुधा मिलते हैं।

मरीचिवंश और महर्षि परमेष्ठी कश्यप— स्वायंभुव मनु और भृगु के अनंतर मरीचि आदियुग के प्रधानपुरुष एवं प्रजापति थे, वरन् उनके वंशज (तथाकथितपुत्र) देवयुग के प्रधानतम वंशकर महर्षि कश्यप थे, जिनसे समस्त देवासुर एवं पंचजन जातियां समुद्भूत हुई। प्राचीनपुराणों में महर्षि कश्यप, प्रजापति मरीचि के साक्षातपुत्र कहीं भी कथित नहीं है, केवल महाभारत, में इन्हें मरीचि का साक्षात् पुत्र कहा है। बृहद्देवता में उन्हें प्रजापति मरीचि का पुत्र कहा है। पुत्र का अर्थ वंशज भी हो सकता है। पुराणपाठों में मरीचि के पुत्र साक्षात् कश्यप का उल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः कश्यप मरीचि के साक्षात् पुत्र नहीं वंशज थे, क्योंकि पुराणों में स्पष्ट लिखा है कि इसमें केवल प्रधान वंशकरों का उल्लेखमात्र है, पूर्ण वंशवृक्षों का नहीं, अतः कश्यप साक्षात् मरीचि के पुत्र नहीं, वंशज थे। स्वायाम्भुव मनु से दक्ष प्राचेतस तक ४५ पीढ़ियां कथित हैं और ये भी प्रधान-प्रधान पुरुष कथित हैं और यह अनुमान है कि स्वायम्भुव मनु से दक्ष प्राचेतसपर्यंत ४३ परिवर्तयुग हो चुके थे, अतः स्वायंभुव मनु के समकालीन प्रजापति मरीचि के कश्यप साक्षात् पुत्र नहीं हो सकते, जो प्राचेतस दक्ष के समकालीन और उनके जामाता थे। ऋषियों के दीर्घायुष्टव को स्वीकार करने पर भी मरीचि और कश्यप में न्यूनतम २५ पीढ़ियां अवश्य व्यतीत हुई होंगी, क्योंकि दोनों के समय में न्यूनतम १६००० वर्ष का अंतर है, मरीचि का समय २९००० वि. पू. और कश्यप का समय १४००० वि. पू. था। मरीचि के प्रत्येक वंशज की आयु १७०० वर्ष मानने पर भी न्यूनतम दस पीढ़ियों का अंतर मरीचि से कश्यप पर्यंत अवश्य होना चाहिए, अधिक हो सकता है, न्यून नहीं और वर्तमान पुराणपाठों में भी कश्यप को मरीचि का साक्षात्पुत्र कहीं कहा नहीं गया। पर्वस के दो पुत्र यज्ञवाम और काश्यप कहे गये हैं। यहां 'काश्यप' पद भी विचारणीय है। कश्यप का काश्यप एक गोत्रनाम है, कश्यप के प्रत्येक वंशज को कश्यप या काश्यप कह सकते हैं, आज भी अनेक काश्यपगोत्रीय पुरुष अपने को 'कश्यप' ही कहते हैं, अतः मूलकश्यप आदिमकश्यपदेवासुरपिता कश्यप से भी प्राचीनतर कोई प्राजापत्य मारीच कश्यप हो सकते हैं। हमारे इस मत की पुष्टि पुराणों के सप्तर्षिगण प्रकरण से होती है कि देवासुरजनक कश्यप का पूर्वज कोई अन्य कश्यप था, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न मन्वंतरों में, जो वैवस्वत मन्वंतर से पूर्वकालीन थे।

आदिम अङ्गिरा— आदिम अङ्गिरा मरीच्यादि और स्वायम्भुवमनु के समकालीन ३०००० वि. पू. के ऋषि थे, इन्हीं के किन्हीं वंशजों ने आदिराज पृथुवैन्य का अभिषेक किया था। बृहस्पति आंगिरस पृथुवैन्य और दक्षादि से भी बहुत उत्तरकालीन ऋषि थे, जो देवयुग (चतुर्थ परिवर्तयुग १३००० वि. पू.) में हुए। अतः आदिम अंगिरा और बृहस्पति आङ्गिरस में लगभग १७००० वर्षों का अंतर था। आदिम अङ्गिरा बृहस्पति के साक्षात् पिता कदापि नहीं हो सकते। उन दोनों में अनेक पीढ़ियों का अंतर था। बृहस्पति, अङ्गिरावंशीय होने के कारण ही आंगिरस कहे जाते थे।

आदिम प्रजापति अत्रि— आदिम प्रजापति अत्रि स्वायम्भुवमनुपुत्र उत्तानपाद के संरक्षक थे—

उत्तानपादं जग्राह पुत्रमत्रिः प्रजापतिः।
दत्रकः स तु पुत्रो राजा ह्यासीत् प्रजापतिः।
स्वायम्भुवेन मनुना दत्तोऽत्रेः कारणं प्रति॥

अतः उत्तानपाद अत्रि के दत्तकपुत्र थे, जो मनु द्वारा किसी कारण उन्हें दे दिये गये। अनुसूया आदिम अत्रि की पत्नी थी, उत्तरकालीन अत्रियों से अनुसूया का संबंध जोड़ना सर्वथा काल्पनिक है, यथा दाशरथि राम के समकालीन कोई अत्रि वंशी आत्रेय को भी रामायण में अत्रि कहा गया है और उनकी पत्नी को अनुसूया—

तं चापि भगवानत्रिः पुत्रवत् प्रत्यपद्यत।
अनसूयां महाभागां तापसीं धर्मचारिणीम्।

मूलरामायण (वाल्मीकीयरामायण प्रथम अध्याय) में भी अनसूया सीतासंवाद का संकेत न होने से यह संवाद पूर्णतः काल्पनिक सिद्ध होता है। आदि अत्रि, (अनसूयापति) और दाशरथि राम में २४००० (चौबीस सहस्र) वर्षों का अंतर था, इस दृष्टि से भी यह संवाद अनैतिहासिक सिद्ध होता है।

आदिम अत्रि के आदिमपुत्र या वंशज थे— सत्यनेत्र, हव्य, आपोमूर्ति, शनैश्चर और सोम। ये पांचों यामदेवों के समकालीन थे। सोम एक वंश का नाम था, क्योंकि बुधपिता सोम और आदिम सोम भी एक नहीं हो सकते। क्योंकि बुध सोमायन और आदिम अत्रि में भी न्यूनतम १५००० सहस्र वर्षों का अंतर था, अतः सोम भी एक वंश का नाम था। आदिम सोम से दक्ष की २७ कन्याओं का विवाह हुआ, जिनके नाम पर २७ नक्षत्रों के नाम पड़े। ये सोमपत्नी दक्षकन्याएं उत्तरकालीन प्राचतेस दक्ष की पुत्रियां थीं, अतः दक्षजामाता और श्वसुर सोम अत्रि का साक्षात् पुत्र न होकर वंशज ही था।

आदिम पुलस्त्य प्रजापति— आदिम पुलस्त्य और विश्रवा के पिता और कुबेर या रावण के पितामह पुलस्त्य में लगभग २२००० सहस्रवर्षों का अंतर था। यक्षराक्षसों के पितामह पुलस्त्य ५००० वि. पू. हुए अतः दोनों पुलस्त्यों के एक होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार एक पुलस्त्य महाभारतकाल से कुछ शतीपूर्व हुए जो पराशर (पाराशर्य) और भीष्मपितामह के गुरु थे। इस द्वापरयुगीन पुलस्त्य ने किसी पाराशर को विष्णुपुराण सुनाया था। अतः पुलस्त्य के वंशज भी सहस्रोंवर्षों के अनंतर भी 'पुलस्त्य' ही कहलाते थे।

आदिम प्रजापति पुलस्त्य की पत्नी प्रीति से तीन पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई। पुत्र थे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्तोलि, देवबाहु और अत्रिकन्या का नाम था— सद्वती। यह सद्वती अग्नि की पत्नी और पर्जन्य प्रजापति की माता थी।

स्वारोचिषमनु

मार्कण्डेयपुराण (अध्याय ५४) में कथा है कि वरूथिनी नामक अप्सरा से कलिगंधर्व के समागम से स्वारोचि का जन्म हुआ। स्वारोचि मुनि की तीन पत्नियां हुईं—मनोरमा, कलावती और विभावरी, इनसे स्वरोचि ने तीन पुत्र उत्पन्न किये—विजय, मेरुनंद और प्रभाव। स्वारोचि ने छः सौ वर्ष पर्यंत भोग किया और तीन पुरों का निर्माण किया। पूर्व में कामरूप पर्वत पर विजयपुर विजय हेतु, उत्तर दिशा में नंदवतीनगरी मेरुनंद को और दक्षिण में 'ताल' संज्ञकनगर प्रभाव संज्ञक पुत्र को दिया। तदंतर मृगी अप्सरा से स्वारोचि ने धृतिमान्संज्ञक पुत्र उत्पन्न किया, उसी का नाम स्वारोचिष मनु हुआ।

ब्रह्मांड पुराण (१/२/३५/८) से ऐसा आभास होता है कि स्वरोचि महर्षि ऋतु के पुत्र थे—

तुषितायां समुत्पन्नाः क्रतोःपुत्राः स्वारोचिषः।

अन्यत्र स्वारोचिषमनु को स्वायम्भुवमनु के अन्वय (वंश) का ही कहा है—स्वारोचिष, 'उत्तम, रैवत और चाक्षुषमनु स्वायम्भुवमनु, के ही अन्वय है।

स्वारोचिष के समय में देवों के दो गण थे—वाशिष्ठ और पारावत, इनमें द्वादशकुल के २४ देवता थे, जिन्हें छंदज भी कहा जाता था। इन देवों को ऋतु (यज्ञ) के पुत्र भी कहा गया है। उनके नाम हैं—वाशिष्ठगण में दिवस्पर्श, जामित्र, गोपद, भासुर, अज, भगवान्, द्रविण, आप, महौजा, चिकित्वान्, निभृत और अंश। पारावतगण में द्वादश देव थे—प्रचेता, विश्वदेव, समञ्ज, विश्रुत अजिह्म, अरिमर्दन, आयु, दान, महीमान, दिव्यमान, अज, उष, यवीय, होता और यज्वा।

तामसमनु

यह मनु भी प्रियव्रत का वंशज था। तामस के दश पुत्र हुए। धृति, तपस्य, सुतपा, तमोमूल, तपोरत, तपोधन, कल्माष, तन्वी, धन्वी और परंतप। वस्तुतः ये सब मनु के वंशज थे, केवल पुत्र नहीं जिस प्रकार आग्नीध्र को स्वायम्भुवमनु का पुत्र कहा गया है, परंतु थे वे पौत्र।

रैवतमनु

ऋतवाक् नाम के मुनि ने रेवती नाम की पुत्री का विवाह दुर्गम संज्ञकराजा से हुआ, जो प्रियव्रतवंश के राजा विक्रमशील की कालिंदी नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे। दुर्गम की अन्य पत्नियां थीं—सुमद्रा, शांततनया, कावेरी, सुराष्ट्रजा, सुजाता, कदंबा, वरूथजा विपाठा और नंदिनी। दुर्गम ने रेवती से रैवतमनु को उत्पन्न किया।

रैवतमनु से सप्तऋषि थे—वेदबाहु, यदुध्र, वेदशिरा, हिरण्यरोमा, पर्जन्य, सोमपुत्र, ऊर्ध्वबाहु, सत्यनेत्र आत्रेय। ब्रह्मांड में इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हैं—हिरण्यरोमा आङ्गिरस, वेदश्री भार्गव, ऊर्ध्वबाहु वाशिष्ठ, पर्जन्य पौलह, सत्यनेत्र आत्रेय, पौलस्त्य देवबाहु और सुधामा काश्यप। युग के इंद्र का नाम 'विभु' था जो अत्यंत विक्रांतपौरुष था।

चरिष्णुवाशिष्ठ के पुत्र या वंशज चार चार देवगण थे—अमृतात्मा, आभूतरज, विकुंठ और सुमेधा। इनमें प्रत्येक गण में चौदह देव थे। रैवत के पुत्रों के नाम थे—धृतिमान्, अव्यय, युक्त, तत्वदर्शी निरुत्सुक, अरण्य, प्रकाश, निर्मोह, सत्यवाक् और कवि। ब्रह्मांड में इनके नाम हैं—महावीर्य, सुसंभाव्य, सत्यक, परहा शुचि, बलबंधु, निरामित्र, कंबु, श्रृंग और धृतवान्।

रैवत का वायुपुराण में 'चरिष्णु' नाम भी मिलता है।

रौच्यमनु

आदिम दशविश्वस्त्रजों या प्रजापतियों में पुलह के पुत्र या वंशज रुचि प्रजापति थे, स्वायम्भुवमनु की पुत्री आकूति का विवाह रुचि के साथ हुआ था। अतः रुचि के वंशज रौच्य या तो कर्दम का नाम है या कोई अन्य वंशज। ब्रह्मांड और वायु में स्पष्ट रूप से रौच्य को रुचि का पुत्र और पुलह का पौत्र बताया गया है; इतने स्पष्ट वर्णन से सिद्ध है कि रौच्यमनु का समय स्वायंभुव मनु से कुछ शताब्दी के अनंतर ही था। रौच्य मन्वंतर के देवताओं को भी ब्रह्मा के मानस पुत्र और पुलह का पुत्र कहा है; अतः इन्हें भविष्य का मनु मानना महती बिडंबना और उत्तरकालीन भ्रांति है।

रौच्य मनु के समकालिक सप्तर्षि आदिम दश प्रजापतियों वशिष्ठादि के पुत्र या वंशज थे, न कि प्रचेतावरुण के पुत्र द्वितीय जन्म के वशिष्ठादि के पुत्र, इस तथ्य से भी रौच्यमनु का समय स्वायम्भुवमनु के पश्चात् (२८००० वि. पू. के पश्चात्) का नहीं हो सकता, क्योंकि रौच्यमनु समकालिक सप्तर्षि आदिम प्रजापतियों के निकट वंशज थे।

वे सप्तर्षि थे—धृतिमान् आङ्गिरस, अव्यय पौलस्त्य, तत्वदर्शी पौलह, निरुत्सुक भार्गव, निष्प्रकंप्य आत्रेय, निर्मोह कश्यप और सुतपा वाशिष्ठ।

भौत्यमनु

हरिवंश (१/७/४५) में रुचि की पत्नी भूति से उत्पन्न पुत्र ही भौत्यमनु हुआ। अतः रौच्य और भौत्य समकालिक मनु थे, पुनः एक पिता के दो पुत्रों में कितने वर्षों का अंतर हो सकता है, यह सम्यक्रूपेण बोध्यतथ्य है, इनमें तो शताब्दियों का क्या, कुछ वर्षों का ही अंतर था। भौत्यमनु को भविष्यकालिक मनु मानना पूर्ववत् विडंबना एवं भ्रांतिमात्र है।

वर्तमान पुराण पाठों के अनुसार चक्षु का समय स्वायम्भुव मनु से ३६ पीढ़ी पश्चात् और दक्षप्राचेतस (१४००० वि.पू.) से १० पीढ़ी पूर्व था। अतः चाक्षुष का समय स्वायम्भुव मनु से लगभग बारह सहस्त्र पश्चात् और दक्ष प्राचेतस से दो सहस्त्र पूर्व होना चाहिए अर्थात् चाक्षुषमनु का समय १६००० वि.पू. होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइफ़बॉय है जहां तन्दुरुस्ती है वहां

लाइफ़बॉय
मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

LINTAS L 98 1611 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए।

प्रजापतियुग या आदिमयुग में सभी मनु सुखराष्ट्रों के वंशप्रवर्तक प्रशासक थे, यथा वैवस्वत मनु ने भारतवर्ष में शासन का प्रवर्तन किया और अनेक क्षत्रिय जातियां उनसे उत्पन्न हुईं, इसी प्रकार प्राचीन मिश्र देश का आदि प्रवर्तक कोई मनु ही था, इसी प्रकार अन्य सुगण प्राचीन देशों के आदिम वंशप्रवर्तक प्रशासक थे, वे किन-किन देशों के राष्ट्रधर्मप्रवर्तक थे, आज इस इतिहास से हम प्रायेण अनभिज्ञ ही हैं, संभव है भविष्य में कुछ तथ्यों से हम अवगत हो जाएं।

पुराणों में रिपु से चक्षुपर्यंत (८ से ३७) पीढ़ियाँ ३००० वर्ष अज्ञात या लुप्त हैं, जो प्रियव्रत की वंशावली में समुपलब्ध हैं। वेद में मानुषयुग या मनु का समय १०० वर्ष है, चाक्षुषमनु, पुराणपाठानुसार दक्षप्राचेतस से १० पीढ़ी पूर्व हुआ, जिसका समय १००० वर्ष हुआ, क्योंकि २३ पीढ़ियां लुप्त हैं, तो चाक्षुष मनु से दक्ष तक न्यूनतम २३ पीढ़ियां अवश्य होनी चाहिए।

मेरुसावर्णि या दक्षसावर्णि

ब्राहमाण्डपु. में ही मेरुसावर्ण प्रथममनु के सप्तर्षि सही पढ़े गये हैं — मेधातिथिपौलस्त्य, वसुकाश्यप, ज्योतिष्मान्भार्गव, द्युतिमान् आङ्गिरस, वसुमान वासिष्ठ, हव्यवाहन आत्रेय और सुतपापौलस्त्य। एक ही स्थान पर दो पाठो से भ्रम की पुष्टि और असत्य का निराकरण हो जाता है, अधिकांश पुराणों में अश्वत्थामा आदि ही नाम हैं, केवल ब्रह्मांड में सत्यपाठ विशिष्ट है। ब्रह्माण्ड में स्पष्ट लिखा है कि मेरुसावर्णि (प्रथम) रोहित के देवत्रयगण

परामरीचिगर्भाश्च सुधर्माणश्च ते त्रय।
संभूताश्च महात्मानः सर्वे वैवस्वतेऽन्तरे॥
(ब्रह्माण्ड० १/४१/५५)

अतः वैवस्वतमनु के समकालीन उपर्युक्त चार मनुओं को भविष्य के मनु मानना पूर्णतः भ्रांतिमात्र है। इस मेरुसावर्णिमनु के इंद्र पार्वतीनंदन स्कंद षण्मुख कार्तिकेय देवों के इंद्र थे। स्पष्ट ही मेरुसावर्णि और स्कंद देवयुग (१३००० वि.पू.) के पुरुष थे।

धर्मपुत्र सावर्णमनु

द्वितीय सावर्णिमनु का नाम था धर्मपुत्र सावर्णि। इस युग का इंद्र था — शांति और सप्तर्षि थे हविष्मन् पौलह, सुकीर्ति भार्गव, आपोमूर्ति, आत्रेय, आपव वासिष्ठ, अप्रतिम पौलस्त्य, नाभग काश्यप और अभिमन्यु आङ्गिरस। मनु के दशपुत्र या वंशज थे — सुक्षेम, उत्तमौजा, भूरिसेन, शतानीक, निरामित्र, वृषसेन, जयद्रथ, भूरिद्युम्न और सुवर्चा।

रुद्रसावर्ण

एकादश पर्याय (युग) में रुद्रसावर्णि (काश्यप) में वृषसंज्ञक इंद्र हुआ और सप्तर्षि थे — हविष्मान् काश्यप, वपुष्मान् भार्गव, आरुणि आत्रेय, अनघ वाशिष्ठ, पुष्टिआङ्गिरस, निश्चर पौलस्त्य और अतितेजा पौलह। मनु के नवपुत्र हुए — संवर्तक, सुशर्मा, देवानीक, पुरोवह, क्षेमधर्मा, दृढ़ायु, आदर्श, पौंड्रक और मरु।

द्वादश-मनु — इंद्रसावर्णिया ब्रह्मसावर्णि

इसमें इंद्र (देवराज) ऋतधामा था और सप्तर्षि — धृति वासिष्ठ, सुतपा आत्रेय, तपोमूर्ति आङ्गिरस तपस्वीकाश्यप,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपोधनपौलस्त्य, तपोरतिपौलह और तपोधृति भार्गव । मनु के दश पुत्र — देववान्, उपदेव, देवश्रेष्ठ, विदूरथ, मित्रवान् मित्रसेन, चित्रसेन, अमित्रहा, मित्रबाहु और सुवर्चा ।

पुराणों में उपर्युक्त मनुनामों, इंद्रों और सप्तर्षियों के नामक्रमादि में पर्याप्त अंतर दृष्टिगोचर होता है । यद्यपि अन्य तुलनात्मक या समकालिक घटनाओं के अभाव में सावर्णिमनुओं के ऐतिह्य का महत्व न्यून ही है, परंतु पुराणोल्लिखित संपूर्णमानव इतिहास का सार प्रस्तुत करने की दृष्टि से इनका महत्व अतिरोहित है ।

तेरहवें मनु — वैवस्वत (श्राद्धदेव)

जलप्रलय के नायक वैवस्वतमनु विवस्वान् के पुत्र थे ।विवस्वान् आदित्य चतुर्थपरिवर्तयुग के 'व्यास' थे । उनके ज्येष्ठपुत्र मनु का जन्म चतुर्थ परिवर्तयुग (१३००० वि.पू.) — आज से लगभग १५००० वर्ष पूर्व हो चुका था । बाइबल में वर्णित नूह और पुराणोल्लिखित मनु एक ही व्यक्ति थे । बाइबिल में मनु का इतिहास इस प्रकार उल्लिखित है —"मनु की आयु जब ५०० वर्ष की थी, तब उनके तीन पुत्र उत्पन्न हुए — साम, हाम और जाफेट ।' 'मनु की आयु जब ६०० वर्ष थी तब जलप्रलय आयी' मनु (नूह की पूर्ण आयु ९५० वर्ष थी । यम वैवस्वत, मनु का अनुज था । अवेस्ता के अनुसार यम ने ईरान में १२०० वर्ष राज्य किया । वैवस्वतमनु जलप्रलय के पश्चात् ३५० वर्ष और जीवित रहे, अतः उनका देहांत छठे परिवर्तयुग के अंत या सातवेंयुग के प्रारंभ (१२००० वि.पू.) में हुआ ।

चौदहवें (अंतिम) मनुसावर्ण — पूर्वजमनु का वैमातृज भ्राता (अनुज) ही सावर्णमनु हुआ —

पूर्वजस्य मननोस्तात सदृशोऽयमिति प्रभुः ।
सावर्णत्वान्मनोर्भूयः सावर्ण इतिचोक्तवान् ॥

हरिवंश १/७/१९ पुराणपाठों में यह तथ्य स्पष्टतया अवशिष्ट है कि यह अंतिममनु दैत्यराज वैरोचनबलि के समकालिक था ।

तीन सौ साठ मानुषवर्षों का ऐतिहासिक परिवर्तयुग

इतिहासपुराणों के पुरातनपाठों में स्वायम्भुवमनु से महाभारतयुद्ध कालपर्यंत की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख 'परिवर्तयुग' या पर्याययुग' संज्ञक अतिविख्यात कालमान में किया जाता था । परंतु, उत्तरकाल में इस कालमान किंवा युगमान का पुराणपाठों में प्रायः लोप-सा हो गया तथा 'दिव्यमानुषगणना' के संबंध में एक महती भ्रांति उत्पन्न हो गयी जिससे पुराणों में 'मन्वन्तरसंबंधी' ऐतिहासिकगणना पूर्णतः गड़बड़ा गयी ऐसी स्थिति में पाश्चात्य षड्यंत्र से अभिभूत भारत में पाश्चात्य मिथ्याभिमानी और सच्चे इतिहासकार भी पुराणों के आधार पर प्राचीन (प्राग्महाभारतकालीन) कालक्रम पर यथार्थ प्रकाश नहीं डाल सके और अनेक विद्वान् युगों की मनमानी व्याख्या करते रहे ।

इन पंक्तियों के लेखक ने, किसी दिव्यशक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कृपा से सत्य का वरण किया और प्राचीन पुराणपाठों के घोर अंधकार में से 'परिवर्तयुग' का कालमान प्रकाशित किया है, जिसमें स्वायम्भुवमनु से वासुदेवकृष्णपर्यन्त महापुरुषों की तिथियां यथार्थरूप से निश्चित की जा सकती हैं।

प्राचीन मूल पुराणपाठों में स्वायम्भुव मनु के ७१ परिवर्तयुगों और वैवस्वतमनु के २८ परिवर्तयुगों का उल्लेख पूर्णसत्यकथन था। ये दोनों अंक इस प्रकार के हैं कि वे मिथ्याकल्पना नहीं हो सकते, परंतु उत्तरकालीन पुराण प्रक्षेपकार और लिपिकर्त्ता 'परिवर्तयुग' के अर्थ और कालमान को भूल गये, अतः उन्होंने इस 'परिवर्तयुग' को मुख्यतः चतुर्युग समझ लिया, कहीं-कहीं वर्तमान पुराणपाठों में इसी 'परिवर्तयुग' को त्रेता, द्वापर और कलियुग भी लिख मारा है। यही पुराणपाठत्रुटि की भ्रांति का कारण है तथा इसी त्रुटि से वर्तमान पुराणपाठों में 'मन्वन्तर' आदि का 'अयथार्थ कालमान' गढ़ा गया, जिसका इतिहास या सत्य से कोई संबंध नहीं।

स्वायम्भुवमनुवंशवृक्ष

स्वायम्भुव मनु का समय प्राचेतस दक्ष से ४३ परिवर्तयुग= १६००० वर्ष पूर्व था, अतः स्वायम्भुवमनु का समय न्यूनतम २९००० वि. पू. था। इस समय से पूर्व सूर्यदाह और तदनंतर जलप्लावन हुआ।

जीवोत्पत्ति में उतना करोड़ों वर्षों का समय नहीं लगा, जैसा कि विकासवादी कल्पना करते हैं, समस्त वनस्पति एवं जीव (प्राणि) सृष्टि शीघ्र कुछ वर्षों में हो गयी और जो वृक्ष, पशु, पक्षी या मनुष्य जिस रूप में आज हैं, उसी रूप में उत्पन्न हुए और प्रारंभ में बीजमात्र उत्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम मनुष्य स्वयंभू ब्रह्मा उत्पन्न हुआ, जो आकाश (अंतरिक्ष) में उत्पन्न होकर पृथ्वी पर स्थित हो गया।

स्वयंभू ब्रह्मा ने अपने शरीर को पुरुष और स्त्री के रूप में दो भागों में विभक्त किया, जो क्रमशः स्वायम्भुव मनु और शतरूपा कहलाए।

पुराणों के सप्तपातालों में एक अतल (महाद्वीप) पाताल का उल्लेख है, जहां नमुचि, महानाद, शंकुकर्ण, कबंध, निष्कुलाद, धनंजय आदि असुरों के नगर (पुर) बसे हुए थे। इसी 'अतल' को प्राचीन यूरोपवासी (यूनानी आदि) 'अटलांटिक' महाद्वीप कहते थे। प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने अपने ग्रंथ 'डायलोग्ज' में अटलांटिक (अतल) महाद्वीप के समुद्र में डूबने के वर्णन किया है, यह घटना वैवस्वतमनु के समय (१२००० वि. पु.) जल प्रलय काल में संभव है या उसके बाद की हो सकती है, परंतु इससे पूर्व 'अतल' महाद्वीप जो योरोप और अमरीका के मध्य में (जहां आज अटलांटिक महासागर है) था और यद्यपि असुरों की नगरियां वहां थी, अतः आज उपर्युक्त सात महाद्वीपों (प्लाक्षादि) की ठीक-ठीक पहचान एक दुःस्वप्न मात्र है। प्रियव्रतपुत्रहव्य या भव्य के सात पुत्रों के नाम पर शाक द्वीप के सात वर्ष (देश) प्रथित हुए जलदवर्ष, कुमार वर्ष, सुकुमार वर्ष, मणीवक वर्ष, कुमुदवर्ष मोदक वर्ष और महाद्रुम वर्ष।

जम्बूद्वीप के नौ भाग हुए और उनके दो-दो नाम होने के कारण हैं कि देश पर्वत के नाम पर भी प्रसिद्ध हुआ जैसे हिमालय के नाम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. उतना ही समय, २. बाबा आम्टे ('आनंदवन' के संस्थापक), ३. क. आई. आर. एस.—१ ए (९७५ किग्रा.), रूस के बेकोनूर उपग्रह-प्रक्षेपण-केंद्रसे वोस्टोक राकेट द्वारा विगत १७ मार्च को छोड़ा गया, ९०४ कि.मी. की ऊंचाई पर पृथ्वी की प्रदक्षिणा, ख. अमरीका, फ्रांस तथा जापान द्वारा, ४. 'पृथ्वी' (रेंज २५० कि.मी.), श्री हरिकोटा केंद्र से, २५ फरवरी, १९८८, ५. क. आई.एन.एस. 'चक्र', ३ फरवरी '८८ को नौसेना में शामिल, ख. सोवियत रूस से, ६. भारत की एच.बी.जी. (हजीरा-बिजयपुर-जगदीशपुर) गैस पाइप-लाइन (१,७५० कि.मी.), दूसरा चरण—गुना (म.प्र.) से आंवला (उ.प्र.), १२०० कि.मी. विगत मार्च में पूर्ण, ७. क. १८.३ लाख कि.मी. (राष्ट्रीय राजमार्ग—३१,८०० कि.मी.), ख. हिंदुस्तान-तिब्बत मार्ग (१९,००० फुट ऊंचा), ८. इटली (४९), ९. क. साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से १२ मार्च, १९३० को ८० सत्याग्रहियों के साथ आरंभ, [illegible] को दांडी (द. गुजरात) में समाप्त, [illegible] अंग्रेजों द्वारा लागये गये नमक-कानून को तोड़ना, १०. भारत में ८५ लाख टन, १९८६-'८७ में, ११. सिओल ओलम्पिक का प्रतीक चिह्न

हिमवर्ष और आग्नीध्रपुत्र नाभि के नाम [illegible] नाभिवर्ष, पुनः नाभि के पौत्र के नाम पर इस [illegible] का नाम भारतवर्ष प्रथित हुआ, जो आज [illegible] इसी नाम से जगत प्रसिद्ध है। हरिवर्ष [illegible] तुर्किस्तान, इलावृत को पामीर (मेरुपर्व[illegible] रम्यक को चीनीतातार, हिरण्मवान् [illegible] मंगोलिया, उत्तरकुरु को साइबेरिया, भद्राश्व [illegible] चीन और केतुमाल को वंक्षुप्रदेश (ईरान [illegible] कहते हैं।

जैनग्रंथों के अनुसार मरीचिऋषि ने ऋषभ [illegible] विद्रोह किया, वहां मरीचि को तपोभ्रष्ट मुनिवे[illegible] बताया गया है। इससे प्रतीत होता है कि ऋष[illegible] के मरीच्यादि ऋषियों से मतभेद [illegible] तज्जन्यसंघर्ष हुआ। जैन ग्रंथों में ऋषभपु[illegible] भरतानुज बाहुबली की विशेष महिमा और भर[illegible] से संघर्ष में भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। पुराणों में बाहुबली का कोई उल्लेख नहीं है परंतु जैनग्रंथों में भरत के ऊपर बाहुबली [illegible] महान विजय एवं उत्कर्ष दिखाया गया है। बाहुबली की गोमटेश्वर (आंध्र प्रदेश) [illegible] विशालमूर्ति उनकी ऐतिहासिकता को पुष्ट करत[illegible] है। विष्णुपुराण में एक हरिणी के गर्भपातजन[illegible] ममता से भरत को संसार से विरक्ति हो गय[illegible] और मुनिधर्म का पालन करने लगे। यहां प[illegible] भरत को सौवीरनरेश और परमर्षि कपिल क[illegible] समकालिक बताया गया है। इसमें भरत की सौवीरनरेश से समकालिकता तो भ्रामक है, परंतु कपिल से समकालिकता उचित एव[illegible] ऐतिहासिक है। भरत और कपिल का समय स्वायम्भुवमनु से छः पीढ़ी पश्चात् और लगभग डेढ़-दो सहस्राब्दी पश्चात् अर्थात् २९००० वि. पू. से २८००० वि. पू. था।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110516

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110516
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar